सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाश : (भाग 4)

उपमहाविद्या रहस्य

संस्कर्ता एवं प्रकाशक -
पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)

मयूरेश प्रकाशन
मदनगंज, किशनगढ़ (राज.)

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (४)

उपमहाविद्या रहस्य

'देवीखण्ड उत्तरार्द्ध'

(प्रथम भाग)

* श्रीनाथादि गुरुमण्डल पूजा प्रयोग
* सभी देवियों की मातृकायें
* भगवती त्रिपुर सुन्दरी की १५ नित्याओं का अर्चन
* श्रीविद्या खड्गमाला प्रयोग, वाञ्छाकल्पलता प्रयोग
* नवदुर्गा का यंत्रार्चन, ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं का यंत्रार्चन
* कौशिकी, अंबिका, शिवदूति, वाराही आदि कई यन्त्रार्चन
* गायत्री ब्रह्मास्त्र, गायत्री ब्रह्मदण्ड, ब्रह्मशिरादि प्रयोग
* श्यामा, प्रत्यङ्गिरा व बगलामुखी तन्त्रम्
* वीर साधना प्रयोग, श्मशान साधना, चिता साधना
* गुह्यकाली प्रयोग व कई देवियों के प्रयोग दिये गये हैं।

संस्कर्त्ता :

पं. रमेशचन्द्र शर्मा 'मिश्र'

प्रकाशक :

मयूरेश प्रकाशन

मदनगंज–किशनगढ़, जिला–अजमेर (राज.)

फोन – 01463–244198, 9829144050

* **प्रकाशक :-**
पं. रमेशचन्द्र शर्मा
मयूरेश प्रकाशन
छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज
किशनगढ़, जिला – अजमेर (राज.)
✆ : (01463) 244198, 9829144050

* **प्रथम संस्करण :** – अप्रेल, २००८
* **द्वितीय संस्करण :** – अक्टूबर, २०११

* **मूल्य :**– ५००/–
(पाँच सौ रुपये मात्र)

* **लेजर टाईप सेटिंग :**
माँ दधीमथि कम्प्युटर्स
किशनगढ़, अजमेर (राज.)

* **पुस्तक मंगवाने हेतु दूरभाष :**
✆ : (01463) 244198,
9214512223, 9829144050
9214511897

✤ मुख्य प्राप्ति स्थल ✤

1. सरस्वती प्रकाशन, अजमेर ✆ 2425505
2. ईश्वरलाल बुकसेलर, जयपुर ✆ 2575532
3. सुधीर एण्ड ब्रदर्स, जयपुर ✆ 2573655
4. किताब घर, जोधपुर ✆ 2637334
5. रत्नेश्वर पुस्तक० बीकानेर ✆ 2549712
6. गर्ग एण्ड कं०, दिल्ली ✆ 23951443
7. अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली ✆ 23936116
8. आनन्द प्रकाशन, दिल्ली ✆ 23923021
9. नाथ पुस्तकभण्डार, दिल्ली ✆ 23275344
10. D.P.B पब्लिकेशन, दिल्ली ✆ 23273220
11. K.K. गोयल & कम्पनी, दिल्ली ✆ 23253604
12. सरदार करमसिंह अमरसिंह बुकसेलर, हरिद्वार ✆ 225619
13. सरदार सोहनसिंह० इन्दौर ✆ 2532344
14. कुल्लुका ज्योतिष०, उज्जैन ✆ 4013150
15. श्रीबुक डिपो, उज्जैन
16. प्रसाद बुक एजेन्सी, पटना ✆ 9234797825
17. खण्डेलवालएण्डसन्स, वृन्दावन ✆ 2443101
18. गोवर्धन प्रकाशन, मथुरा ✆ 2415311
19. श्रीकृष्ण पुस्तक भण्डार, गया
20. दुर्गापुस्तकभण्डार, इलाहबाद
21. चन्द्रशेखर बुक सेलर, देवघर
22. किशोरीलाल पुस्तकालय, विलासपुर
23. प्रकाश बुक डिपो, लखनऊ
24. मोहन न्यूज ऐजेन्सी, कोटा

भीलवाडा, बडौदा, वाराणसी, उदयपुर, होशंगाबाद, पूना, सूरत, ग्वालियर अहमदाबाद, नीमच, मन्दसौर, भोपाल, ओंकारेश्वर, रायपुर, सासाराम, अयोध्या, कुरुक्षेत्र, C.P.Tank मुम्बई।

विषय सूची

॥ विविध देवानां मातृका शक्तय: ॥

॥ श्रीविद्या तंत्रम् ॥

॥ वाराही तन्त्रम् ॥

॥ मातङ्गि तन्त्रम् ॥

॥ प्रत्यङ्गिरा तन्त्रम् ॥

॥ बगलामुखी तन्त्रम् ॥

॥ कुब्जिका प्रयोगाः ॥

॥ गायत्री तंत्रम् ॥

॥ दुर्गा तन्त्रम् ॥

॥ ब्राह्मयादि अष्टमातृका वर्णनम् ॥

॥ रोगनाशक मन्त्राः ॥

॥ वीर साधना प्रयोगाः ॥

॥ गुह्यकाली तन्त्रम् ॥

॥ परिशिष्टम् ॥

[यह ग्रन्थपुष्प गुरुदेव के श्रीचरणों में
सादर समर्पित है]

लेखक – पं. रमेश चन्द्र शर्मा 'मिश्र'

गुरुदेव श्री श्री श्री १०८ श्री नथमलजी दाधीच कौलाचार्य
श्रीभुवनेश्वरी महाशक्तिपीठ, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
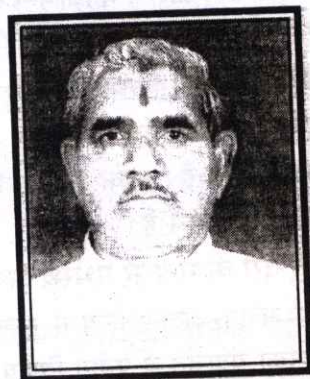
॥ निवेदन ॥

तंत्रशास्त्र असीम है, इसके गहन अध्ययन में सम्पूर्ण जीवन भी लग जाये तो कम है, फिर तंत्रशास्त्र में दी गई सिद्धियों को प्राप्त करने में समय लगायें तो हजारो वर्ष चाहिये अथवा अनेकानेक जन्मों के अभ्युदय से कुछ प्राप्त होवे।

इसलिये आचार्यों ने एक दीक्षामार्ग व दीक्षाकुल का ग्रहण करना उत्तम बताया है। जिस कुल का जो देवता होगा उसके अधीनस्थ शक्तियाँ धीरे-धीरे स्वयं उपस्थित होगी। एवं साधक उनके स्मरण मात्र व साधारण उपासना से उस फल को प्राप्त कर सकेगा।

दुर्गा, काली, श्रीविद्या, कादि, हादि, सादि किसी भी क्रम से उपासना करें तो अन्य सिद्धियाँ अल्प समय में प्राप्त हो जायेगी।

अर्थात् महाविद्या तथा सिद्धविद्याओं की उपासना से व्यक्ति का आत्म धरातल बहुत उच्च अवस्था में पहुँच जाता है। आत्म तरंगों की गति तीव्र व सूक्ष्म हो जाती है जिससे अन्य सामान्य सिद्धियाँ शीघ्र प्राप्त हो जाती है। इसलिये एक ही इष्ट साधना हेतु प्रयत्नरत रहना चाहिए।

जिस तरह आकाश में भेजे गये उपग्रहों से पृथ्वी के गर्भ में स्थित धातु, खनिज, पानी, तेल आदि स्थानों के चित्र प्राप्त किये जा सकते है उसी तरह उच्च अवस्था को प्राप्त साधक निम्न केन्द्रों की निम्न सिद्धियों को शीघ्र प्राप्त कर लेता है।

श्रीत्रिपुरसुन्दरी की साधना अधिक सरल है। सौम्य स्वभाव है, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती स्वरूपा है। राज्य, लक्ष्मी, वैभव, विलास तो इसकी साधना से प्राप्त होता ही है, योग की परम सीमा तथा समाधि की समस्त अवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त कर साधक भोग व मोक्ष दोनों को प्राप्त कर लेता है। श्रीत्रिपुरसुन्दरी की नित्यादि कलाओं का तथा इसके आम्नाय देवताओं का पूजन करने से साधना में परिपूर्णता आती है।

अतः पुस्तक में प्रारम्भ में विभिन्न देवताओं की कलाओं का वर्णन दिया गया है, उनके न्यास बहिर्मातृकान्यास की तरह करे।

श्रीत्रिपुरसुन्दरी की नित्याओं का पूजन यंत्र देकर काफी सरलीकरण किया गया है। कादि क्रम से नित्या प्रयोग कठिन है तथा श्रीविद्यार्णव तंत्रम् तथा श्रीतन्त्रराज में पूरा विवरण नहीं दिया गया है। अतः सारांश देकर संक्षिप्त यंत्र प्रयोग विधान दिया है। इसके अलावा त्रिपुरसुन्दरी के कई प्रकार के न्यास ६४ उपचार पूजा, आम्नाय पूजा, विभिन्न सहस्राक्षरी मंत्रादि दिये है।

त्रिपुरसुन्दरी के मन्त्र से गर्भस्थ अन्य देवताओं की उपासना पुस्तक के द्वितीय भाग उत्तरार्ध में दिये गये हैं।

नवदुर्गा अलग-अलग कल्प में अलग-अलग कही गयी है। वर्तमान में प्रचलित शैल्यपुत्र्यादि नवदुर्गा का वर्णन है परन्तु इनका यंत्रार्चन व प्रयोग विशेष कहीं देखने को नही मिलता है।

अग्निपुराण, कालिका पुराण, देवीपुराण, व अन्य ग्रंथो में इनके अष्टदलादि शक्तियों का वर्णन मिलता है। उसी आधार पर इनका यंत्रार्चन मानकर विधान प्रस्तुत किया है।

ब्राह्मी आदि अष्टमातृकाओं का कहीं स्वतंत्र यंत्रार्चन नहीं दिया गया है। अग्निपुराण में इनके कुल में उत्पन्न ८-८ शक्तियों का वर्णन किया गया है। उन्हीं को इन मातृकाओं के अष्टदल की शक्तियाँ मानकर यंत्रार्चन विधान की कल्पना की है। इसे हमारा काल्पनिक पूजाक्रम नहीं माने।

इसी तरह अम्बिका, कौशिकी, शिवदूती, शाकम्भरी, आदि देवियों के लिये कालिका पुराण तथा मेरुतंत्र में दी गई उनकी शक्तियों के आधार पर यंत्रार्चन प्रयोग दिया गया है।

गुह्यकाली व कामकलाकाली विषय में महाकाल संहिता में विशेष वर्णन है। यद्यपि महाकाल संहिता की भाषा क्लिष्ट है, मंत्राक्षरों के उद्धार में जो शब्द आये है वे मंत्र कोष से भिन्न है, इसका शब्दकोष अलग है। फिर भी प्रयोग विधान को काफी सरलीकृत किया है।

गुह्यकाली प्रयोग पुस्तक के प्रथम भाग में है तथा कामकलाकाली प्रयोग दूसरे भाग में दिये गये है।

महाकालसंहिता में गुह्यकाली के उपासनाभेद २४ यन्त्रोद्धार दिये गये हैं, किन्तु यन्त्रार्चन एक यन्त्र का ही दिया गया है।

अन्य कई मंत्र व विधान, देवीभागवत, देवीपुराण, अग्निपुराण, देवीरहस्य, रावणसंहिता, सिंहसिद्धान्तसिन्धु, हिन्दीतंत्रसार, श्रीविद्यारत्नाकर, धनुर्वेद, सांख्यायन तंत्र, रुद्रयामलतन्त्र, मन्त्रकोष, ब्रह्मवैवर्तपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, कूर्मपुराण, नारदपाञ्चरात्र, शारदातिलक, महाकालसंहिता आदि अनेक ग्रंथों से संकलित कर, गायत्री ब्रह्मास्त्र, ब्रह्मदण्ड, ब्रह्मशीर्ष आदि के ध्यान व प्रयोग पृथक-पृथक ग्रन्थों से संकलित व समायोजित कर प्रयोग रूप में साधको की सेवा में प्रस्तुत किये जाने का प्रयास किया गया है।

कुछ साधको का कहना है कि आप टीका नही देते, पूरा वर्णन नहीं करते। मेरा निवेदन है कि सम्पूर्ण टीका करने पर ग्रंथों की कुंजी पात्र - अपात्र के हाथों में चली जायेगी। ग्रंथ का विस्तार काफी हो जायेगा। फिर भी मेरा कहना

है, कवच, स्तोत्र, सहस्त्रनाम, में मूल टीका में भी वे ही नाम आयेंगे। क्रिया विधि, प्रयोगविधि कवच, स्तोत्र व सहस्त्रनाम के अन्तिम श्लोकों में दी गई होती है। थोड़े से प्रयास से अर्थ समझ में आ जायेगा। फिर भी समझ में नहीं आने पर किसी विद्वान की सहायता ली जा सकती है।

यंत्रार्चन क्रिया को पूर्णरूप से सरल किया गया है जो अति आवश्यक है।

मंत्र के पुरश्चरण, होम, तर्पण, मार्जन की प्रक्रिया सब देवता व मंत्रों की एक ही होती है। अलग- अलग कामना हेतु अलग-अलग होमद्रव्य व तर्पण द्रव्य होते है। जो सभी देवताओं के लिये समान है।

जैसे लक्ष्मी प्राप्ति हेतु- बिल्वफल, त्रिमधु, (घी, शक्कर, शहद)। शत्रुनाश हेतु- सरसों, कालीमिर्च। विद्वेषण हेतु- नीम पत्र, कटुतैल।

इनका प्रयोग अमुक-अमुक कामना हेतु काली, दुर्गा, बगला, लक्ष्मी मंत्रों के साथ समान रूप से किया जाता है।

होमादिं द्रव्य विशेष हेतु बगलामुखी तंत्र का अवलोकन करें।

पुस्तक की विशालता के कारण इसे दो भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है।
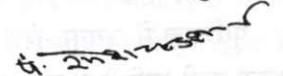
द्वितीय खण्ड में कामकलाकाली, महामाया वैष्णवी, सारिका, महाराज्ञी, ज्वालादेवी की पञ्चांग उपासना, पार्श्वनाथ, पद्मावती प्रयोग, जैनधर्मगत हिन्दुमंत्रो का विधान एवं अन्य सैकड़ो मंत्र दिये गये है।

उपमहाविद्या रहस्य दो भागों में प्रस्तुत करने के बाद भी लगता है साहित्य का मैं परिचय भी पूर्ण नही कर पा रहा हूं। अत: साधको से निवेदन है वे अपनी ज्ञान साधना से उपार्जित ज्ञान से मुझे भी लाभान्वित करायें।

यदि कहीं त्रुटि व शंका होतो मेरा मार्ग प्रदर्शन करे।

श्रीपराम्बा की कृपा व गुरु प्रेरणा से संकलित यह ग्रन्थ साधकों की सेवा में समर्पित है।

श्रीभगवतिचरणानुरागी

[पं० रमेश चन्द्र शर्मा]

॥ प्रस्तावना ॥

॥ आवश्यकता है मंत्रानुसंधान की ॥

कहा जाता है कि देवता मंत्रों के अधीन है एवं मंत्र गुरु के अधीन है। अत: गुरु ही मंत्रों में अपनी प्राण शक्ति फूंक कर मंत्र को चेतन्य करता है। देवता मंत्र के अनुसार धन वैभव देता है अथवा मारण मोहनादि कर्म कराये जाते है।

राजस्थान में भी अनेक चमत्कारी सिद्धपुरुष हिन्दु समाज में हुये है।

अनेकों प्रमाण है कि अमावस्या को पूर्णिमा का चांद दिखाना, आकाश में पालकी में गमन करना, द्रव्य, पदार्थो का स्वरूप बदलना, पाषाण मूर्ति से वार्ता करना, आदि अनेकों चमत्कार भैरव, पद्मावति, कुष्माण्डा, एवं यक्षिणी विद्या के माध्यम से किये गये है।

अन्न की राशि उडाना, व मन्दिर को अथवा वृक्ष को उडाकर अन्य जगह स्थापित करने के अनेक उदाहरण राजस्थान में अलग-अलग जगह जनश्रुतियों में है।

जैन धर्म में पूर्वकाल में भी भट्टारक विशेष मंत्रज्ञाता व सिद्धपुरुष होते थे । जैन ग्रंथों में भी हनुमान, सुग्रीव, अंगद, कुष्माण्डा, काली, भैरव, क्षेत्रपाल, कर्णपिशाचि, प्रत्यंगिरा, शरभराज, गणेश, लक्ष्मी, दुर्गा, चण्डिका, चामुण्डा, चक्रेश्वरि, वैष्णवी के अनेकों प्रयोग दिये गये है।

संवत्१७४६ में चांदखेडी में प्रतिष्ठा महोत्सव था। हाथियों से सजे रथ को यतियों ने कील कर रोक दिया तो भट्टारक जगत्कीर्ति ने बिना हाथियो के रथ को चला दिया।

पूर्वकाल में जयपुर नरेश की जोधपुर बारात गयी। बारातियों द्वारा अधिक पानी बर्बाद करने पर कह दिया की यदि इतना पानी चाहिये तो इन्द्र को साथ लाते। उस समय पं० विद्याधर जी तंत्रशास्त्री व यक्ष के अवतार माने जाते थे उनके अनुयायियो ने तत्काल घनघोर वर्षा आरम्भ करा दी।

अत: इस तरह के प्रयोग, मंत्र व विधि वेत्ताओं का अब पूर्ण अभाव है। जितने मंत्र संग्राहलयों में या अन्यत्र शास्त्रों में मिलते है उनमें इन सब चमत्कारी मंत्रों का अभाव है।

यदि प्रचलित पद्धति ही वे विद्वान काम में लेते थे तो अपनी तपस्या से देवताओं को अपने अनुकूल इतना बना लेते थे कि वो जो चाहे वह कार्य उन्हे करना पड़े।

अत: ऐसे अप्राप्य प्रयोग किसी को प्राप्त होवे तो उन्हे आगे बढकर इस कार्य में अनुसंधान करना चाहिये।

॥ देवता नही भक्ति बडी है ॥

बहुत से व्यक्तियों में अभिमान आ जाता है कि मै काली का उपासक हुं, दूसरा व्यक्ति अन्य छोटे देवताओं का उपासक है। इसलिये मैं उसका अहित कर सकता हूं। उदाहरणत: काली उपासक दूसरो की हानि व पीड़ा तो पहुँचा सकेगा परन्तु दूसरा व्यक्ति अन्य देवता का अन्यन्य भक्त व उपासक है, उसमें त्याग व श्रद्धा व सत्यता है तो कुछ समय बाद ही सब ठीक हो जायेगा वरन् झूठे व अहंकारी व्यक्ति को अपमानित होना पडेगा।

****

एक व्यक्ति श्मशानकाली का प्रयोग करता है दूसरा हनुमान उपासक है यदि एक-दूसरे पर मूठ चलाते है तो उसी का वार चलेगा जिसमें अपने देवता के प्रति भक्ति प्रबल हो, उपासना मंत्र अधिक सिद्ध किया, जो सत्य मार्ग पर चलने वाला हो, तथा जिसकी गुरु परम्परा अधिक बलवान हो उसकी विजय होगी।

कालीदास को माँ काली की सिद्दी प्राप्त थी, एक अन्य जैनाचार्य जिन्हे चक्रेश्वरि वैष्णवी की सिद्धि थी, उन्होने शास्त्रार्थ में कालीदास को परास्त किया।

तारा बौद्धों की इष्ट देवी कालिका के समान उग्र है, कुष्माण्डा इससे सौम्य स्वभाव की है। आचार्य अकलंक को कुष्माण्डा की सिद्धि थी। उन्होने राजा सहस्त्रतुंग की सभा, तथा हिमशीतल राजा की सभा में समस्त बौद्ध विद्वानों को परास्त किया।

अत: त्याग, तपस्या व भक्ति बडी है । यदि आपने तपस्या बहुत की परन्तु व्यर्थ में उसे लुटा दिया तो एक समय सामान्य व्यक्ति से भी पराजित होना पड़ेगा'

॥ अप्राकृतिक आपदा से निवारण ॥

वे घटनाये जो मनुष्य की कल्पना की परिधि में आती है, व्यक्ति उन्हे प्राकृतिक मानकर सहन कर लेता है। यदि दुर्घटनायें बार-बार होती है, अनायस ही ऋण, नुकसान होना, असाध्य रोगों का परिवार में होना, दीर्घकाल से चली आ रही आपदाओं का अन्त नही होना, देखकर अप्राकृतिक आपदाओं की कल्पना व्यक्ति करने लग जाता है। व्यक्ति सोचने लगता है कि मेरे मकान में कोई गलत आत्मा का साया तो नही है। किसी ने जादू, मूठ, टोना तो नही कर दिया है। परिवार की किसी अतृप्त आत्मा का प्रकोप तो नही है। राहु, केतु, शनि की दशा अथवा कालसर्प जनित दोष तो नही है।

इसी सोच के साथ व्यक्ति तंत्र मंत्र की साधना की खोज की ओर अग्रसर होता है।

१. वंशानुगत कीलन - बहुत से मारणादि प्रयोग ऐसे होते है कि उनका १०० वर्ष तक भी प्रभाव रहता है। मेरे अनुभव है कि कुछ परिवार ऐसे है जिनके पूर्वजों पर किया गया ५०-६० वर्ष पुराना प्रयोग अभिचार प्रयोग आज भी उनका विनाश कर रहा है।

किसी का वंश बांध दिया जाता है, या कोई परिवार शापित होता है, तो उसमें १-१ संतान ही आगे बढ़ेगी अथवा परिवार में दत्तक पुत्र लेने पड़ेंगे। अथवा परिवार में एक व्यक्ति किसी असाध्य बिमारी से ग्रसित रहेगा। ऐसे दीर्घकालीन प्रयोगों से मुक्ति आसान नहीं है। व्यक्ति ऋण, रोग, नुकसान से इतना ग्रसित हो जाता है कि उसे धर्म, तंत्र-मंत्र में खर्च करने की शक्ति नही रहती।

यदि टोने-टोटके के कारण मरे व्यक्ति की मुक्ति हेतु कोई कर्म किया जाता है, तो वह दुषित आत्मा उसे रोक देगी। उस आत्मा को कोई फल नहीं मिलेगा। व्यक्ति को स्वयं ही नित्य २ घण्टे काली, तारा, बगलामुखी, पञ्चमुखी हनुमान, भैरव, प्रत्यंगिरा व पक्षिराज शरभ के प्रयोगो में से किसी एक पर समय देना होगा।

बंधन खोलने हेतु मंत्र जप करे-

मंत्र - ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं महामाये उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

परिवार शापित होने की संभावना में मंत्र जप करे-

मंत्र - ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं हसक्षमलवरयूं हसक्षमलवरयीं शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा।

२. रक्षाकर्म – यदि किसी मंत्रवेत्ता के पास आप जाते है एवं वह उपचार शुरु करता है तो मौजूद दुष्टात्मा दुष्टतांत्रिक को जाकर सचेत करती है कि या तो मुझे अन्य जगह बता या उसकी क्रिया को काट करने का प्रयोग करे।

फलतः दुष्टतांत्रिक विघ्नकारक प्रयोग करता है ताकि परिवार में या मांत्रिक के यहाँ विघ्न हो जाये एवं डर कर बचाव कार्य से दूर हो जाये।

अतः जिस क्रिया व जिस तांत्रिक से थोडा भी फर्क पडे तो उस क्रिया पर ध्यान विशेष देना चाहिये।

रक्षा मन्त्र व कवच स्तोत्रादि का पाठ अधिक बार करें।

एक व्यक्ति ३० माला नित्य गायत्री मंत्र की करता था। ३ वर्ष से अभिचार कर्म से पीड़ित था, मैनें उसे विपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्र २ घण्टे करने की सलाह दी सप्ताह भर में उसे कुछ आराम महसूस होने लगा।

३. धूमावति विद्या – यदि व्यक्ति को विशेष अनुष्ठान, यंत्र, मन्त्र का कोई फल नही हो रहा है, तो वह समझे की उसे ग्रहों की मारकेश दशा चल रही, पूर्वजन्म के पापों के प्रायश्चित का फल उसे भोगना पड़ रहा है। मानो दुःख व दरिद्रता की देवी उसके यहाँ विराजमान है एवं अतिशय कष्ट पा रहा हो तो उसे धूमावति की उपासना करनी चाहिये।

धूमावति देवी वृद्धा एवं विधवा है। उसके रथ पर कौआ विराजमान है, अनेकों विघ्नों की देवी है, हाथ में शूप (छाजला) लिये हुये है जिसमें सारे संसार को समेटने की शक्ति है।

इस देवी की उपासना निर्जन स्थान या श्मशान में करे। यदि घर पर करे तो नित्य आवाहन कर नित्य विसर्जन करें। घर में मूर्ति या तस्वीर स्थापित नहीं करे। एक पान के पत्ते पर कुमकुम, सिन्दूर, या हिंगुल से त्रिशूल बनाकर धूप, दीप, गंधाक्षत, पुष्प व नैवेद्य अर्पण कर जप प्रारम्भ करे।

जप करते समय भावना करे कि मेरी दुःख, दरिद्रता, कलह, नुकसान, रोग, शत्रुतादि अनेक विघ्नो को तथा मेरे समस्त पापों को देवी अपने शूप में समेटकर प्रसन्न होकर मेरे घर से विदा हो रहीं है। देवी मेरे ऊपर किये गये अभिचार कर्म को अपने शूप में समेट रही है। समस्त शत्रुओं वा प्रेतादि दोषों को अपने उदर में समेट रही है। देवी प्रसन्न होकर मेरे समस्त विघ्नों को लेकर अन्यत्र जा रही है, एवं मुझे अभय प्रदान कर रहीं है जिससे रोग, दोष, भय, क्लेश, ऋण, पीड़ा, आदि इसके अंग देवता मुझे कभी पीड़ा नहीं दे सकेंगे।

पूजा करने के बाद उस पान के पत्ते को उठाकर अन्यत्र स्थान पर विसर्जित कर देवें। जहाँ किसी के पैर नहीं पड़े। १५-२० मिनिट या आधा घण्टा नित्य जप करे।

मंत्र – ॐ धूं धूं धूमावति आपद् उद्धारणाय कुरु कुरु स्वाहा।

एक व्यक्ति ने ५ लाख बगलामुखी मंत्र, ११ हजार बगलाखड्ग, ११ हजार शरभराज स्तोत्र के पाठ कराये परन्तु कमजोर दशा के कारण फल प्राप्त नहीं हुआ। यद्यपि ग्रहानुसार हमने पहले ही कह दिया था कि अभी आपको फल प्राप्त नहीं होगा। आपका अभीष्ट देर से सिद्ध होगा। पुनः ग्रहादशा व अभिचारादि दोषों को देखकर हमने विघ्नों की अधिष्ठात्री देवी धूमावति की उपासना हेतु कहा कि कुछ समय इसकी उपासना कर अपने पापों का प्रायश्चित मांगे तथा दुःख दरिद्रता से छुटकारा माँगें।

इस कर्म से उसे कुछ शांति प्राप्त हुई।

४. स्वाध्याय – यदि कुछ उपाय नहीं बन पड़ रहा है तो अपने स्वाध्याय व इष्ट आराधना को बढाइये। एक ही

इष्ट मंत्र का जप करें, अपने चारों ओर इष्ट देवता के प्रकाश पुञ्ज का ध्यान करें, भावना करें कि मेरे पाप नष्ट हो रहे हैं। विघ्नकारक तत्त्व, ऋण, रोग, शत्रु सब मुझ से दूर भाग रहे हैं। जिस तरह इष्ट मंत्र के पहले ''**ऐं**'' लगाने से सरस्वती प्रधान, ''**श्रीं**'' लगाने से लक्ष्मी प्रधान, ''**क्लीं**'' लगाने से काम प्रधान एवं शत्रुनाश ''**ह्लीं**'' लगाने से षड्ऐश्वर्य प्रधान मंत्र बन जाता है। उसी तरह इष्ट देवता के मूलमंत्र सहित देवता का ध्यान कामना देवता के रूप में करे। जैसे ''**ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**'' मंत्र आपको सिद्ध है लक्ष्मी प्राप्ति हेतु इसी मंत्र का जप करे परन्तु ध्यान करे कि वही दुर्गा अब लक्ष्मी रूप में सामने है। एक देवता की समष्टि दूसरे देवता के साथ तंत्र ग्रंथों में मानी गई है।

जैसे बगला का वशीकरणी रूप	-	**सुमुखि बगला।**
अभिचारनिवृत्ति रूप	-	**बगलाप्रत्यङ्गिरा।**
शत्रुनाश रूप	-	**बगलाकालरात्रि।**
उच्चाटन हेतु	-	**बगलाचामुण्डा।**

ऐसे मंत्र प्रयोग पुस्तक में दिये गये है।

गुह्यकाली दशसहस्राक्षरी मंत्र में काली के अनेक देवताओं के साथ समष्टि मंत्र दिये गये है।

परन्तु जैसा कर्म हो उसके अधिष्ठाता देवता के साथ मंत्र व देवता का समष्टिकरण करना जरूरी है।

जैसे स्तंभन में बगलामुखि विशेष है। महिषमर्दिनी दुर्गारूप है। एक बार मैने महिषमर्दिनी का स्तंभनमंत्र जप प्रारम्भ किया। जैसे - **ॐ ह्लीं महिषमर्दिनी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।**

रात्रि को स्वप्न आया जैसे मैं किसी स्त्री का ताडन कर रहा हुँ।

अर्थात् स्तंभन का यह मूल मंत्र तो बगलामुखि का है उसका अधिकार दूसरे देवता को दे रहा हुं अर्थात् मुझे **महिषमर्दिनीबगले** यह समष्टि मंत्र जपना चाहिये।

अर्थात् एक देवता या मंत्र का दूसरे के साथ समष्टि प्रयोग करना चाहिये।

॥ सहज समाधि ॥

साधक यदि श्मशानिक क्षुद्र सिद्धियों की ओर दौड़ता है तो यह उसकी कमजोरी है, यश प्रसिद्धि तो प्राप्त कर लेगा परन्तु मोक्ष मार्ग दूर से रहेगा।

क्षुद्र देवताओं से यदि काम लिया जाता है तो बदले में निमित्त पूजा व बलिकर्म की व्यवस्था करनी होती है। वृद्धावस्था व रोगी अवस्था में साधक यह कर्म पूर्ण नहीं कर सकता। अन्त समय में ये क्षुद्र देवता कहते है कि हमने जिंदगी भर तेरे कहे अनुसार कर्म किया अब तू कुछ नहीं कर सकता है तो हमारे साथ हमारे समुदाय में रहना होगा।

साधक जब तक जवान व स्वस्थ रहता है साधना में अधिक समय दे सकता है। षोडशोपचार पूजा, जप, स्तोत्रादि पठन भी खूब कर सकता है, ध्यान समाधि भी लगा लेगा परन्तु अस्वस्थ व वृद्धावस्था में यह सब नहीं कर सकता।

रोग व दर्द की अवस्था में हरिस्मरण भी नियमित नहीं कर सकता अतः प्रभु की याद ही बनाये रखना श्रेयस्कर होगा। अतः अजपाजप की साधना का अभ्यास करना चाहिये।

अतः साधक जप करते समय अभ्यास करे कि उसे नाद सुनाई देने लग जाये। नाद पर अभ्यास करेंगे तो धीरे-धीरे

मंत्र ही ध्वनि रूप में सुनाई देगा एवं एकाग्रता बढ़ने लगेगी। अपने इष्ट का ध्येय चित्र समाधि में महसूस होने लगेगा। फिर यह ध्येयचित्र का अभ्यास ऐसे बढ जायेगा कि सोते, जागते, चलते फिरते इष्ट का ध्येयचित्र कल्पना रूप में हमेशा महसूस होने लगेगा फिर विशेष पूजा पाठ की जरुरत कम रहेगी। यदि सोते समय ध्यान करने से योगनिद्रा का अभ्यास हो गया है तो किसी के आवाज देकर जगाने पर चित्त धीरे धीरे नीचे उतारें अन्यथा हृदय पर दबाव पड़ेगा गहरे पसीने आ जायेंगे।

जिस तरह फूल पर भँवरा बैठा हो एवं फूल बंद हो जाये तो फूल में बैठा छोटा कीडा भी भँवरे को लगातार देखने से भँवरे का स्वरूप धारण कर लेता है। उसी तरह अच्छे अभ्यास से परमात्मा का ध्यान नियमित रहने से अस्वस्थ रहने या वृद्धावस्था में भी प्रभु का सानिध्य प्राप्त होता रहेगा।

|| योगमार्ग के विघ्न ||

आलस्य, तीक्ष्ण व्याधियाँ, प्रमाद, स्थान संशय, अनवस्थित चित्तता, अश्रद्धा, भ्रान्तिदर्शन, दुःख दौर्मनस्य, विषय लोलुपता ये दस साधना के विघ्न है। यह है या नहीं इस प्रकार के संशय को स्थान संशय कहते है। तथा चित्त की अस्थिरता को अनवस्थित चित्तता कहते है।

श्मशान में चैत्यवृक्ष के नीचे, बाम्बी के निकट, जीर्णघर, चौराहा, उफनी नदी, व गरजे समुद्र तट पर, गली में, उजड़े उद्यान में, निंदित स्थान में तथा रोगी अवस्था में योग नहीं करे।

सुगंधित व शुद्ध प्रफुल्लित स्थान पर योगाभ्यास करे।

योग करते समय गर्दन, मस्तक, छाती सीधी रखें। होठ व नेत्र अधिक सटे हुए नहीं होवें। दाँतो से दाँतो का स्पर्श न करे। एडियों से दोनो अण्डकोशो और प्रजननेन्द्रियों की रक्षा पूर्वक दोनो जांघो के ऊपर भुजाओं को रखें। दाँये हाथ की हथेली के पृष्ठ भाग को बाँये हाथ की सीधी हथेली पर रखे, फिर नासिका के अग्रभाग पर दृष्टि जमाते हुये योग करे।

तंत्रों में लिखा है कि यदि जनता को मालूम हो जाये अमुक व्यक्ति अच्छा तांत्रिक है उसी दिन से उसका शोषण व तप क्षीण होना चालू हो जाता है। इससे भजन के लिये समय कम मिलेगा तथा आशीर्वाद देने में शक्ति अधिक क्षीण होगी।

|| साधना के चार सहायक अंग ||

यदि साधक चारों सहायक अंगो को समझ लेवे तो इसकी साधना में अलग ही अनुभूति होगी।

१. शास्त्र - सत्य का ज्ञान, सिद्धान्तों व शक्तियों और प्रक्रियाओं का ज्ञान।

२. उत्साह - काल हमारे सामने विघ्न उपस्थित करता है, यदि उत्साह पूर्वक बिना फल की इच्छा के कर्म करते रहें तो सफलता की सोपान सीढ़ी पर अवश्य चढ़ेंगे।

३. गुरु - गुरु अपने अनुभवों के आधार पर मार्ग प्रदर्शन करता है। साधक की प्राण शक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित कर उसके बन्धनों को काटता है।

४. काल - काल परिस्थितियों और त्रिगुण शक्तियों के मिलने तथा परिणाम स्वरूप विकास साधन का क्षेत्र है। जब तक अहंकार जीवित है काल हमेशा बाधक रहेगा। जब हम प्रभु के शरणापन्न होते है

तब भागवत क्रिया तथा हमारा पौरूष मिलकर एक हो जाते है तब काल भी साधक का सेवक हो जाता है।

॥ तंत्र एवं भक्ति भाव ॥

भक्ति की दो उपाधि मुख्य है-

१. **अन्याभिलाषा** - भोग कामना एवं मोक्ष कामना भेद से दो प्रकार की है। इस साधना में सकाम भाव अधिक रहता है।

२. **कर्म, ज्ञान, योगादि का मिश्रण** - हठयोग, यज्ञादि शास्त्रीय कर्म, ज्ञान विवेक ये भक्ति के अंग है। इन दोनो से भक्ति तो प्राप्त होती है परन्तु इसके प्रति प्रेम विरह जब तक नहीं होता तब तक भक्ति शून्य है अतः प्रेम पूर्वक भक्ति भाव समर्पण से साधना करे तो ही कुछ प्राप्त होगा।

॥ त्राटक ॥

मत्स्येन्द्र आदि आचार्यों ने कहा है कि मनुष्य एकाग्रचित्त निश्चल दृष्टि से किसी सूक्ष्म लक्ष्य अथवा लघु पदार्थ को तब तक देखें जब तक कि अश्रुपात ना हो जाये।

त्राटक तीन प्रकार के कहे गये है-

१. **बाह्य त्राटक** - चन्द्रमा, नक्षत्र, तारा, व दूरवर्ती लक्ष्य पर दृष्टि रखकर त्राटक करे तो वह बाह्यत्राटक कहलाता है। जिस साधक की पित्त प्रधान प्रकृति हो, नेत्र कमजोर हो, नेत्र में फूला, जाला, या अन्य रोग हो वह यह त्राटक नहीं करे।

२. **मध्य त्राटक** - काली स्याही से कागज पर लिखे हुये ॐ, बिन्दु, देवमूर्ति अथवा समीप लक्ष्य या मोमबत्ती, तिल के तेल की अचल बत्ती, लैम्प बत्ती के प्रकाश से प्रकाशित धातुमूर्ति पर त्राटक करने को मध्य त्राटक कहते है।

जिनकी नेत्र ज्योति पूर्ण हो, त्रिधातु सम हो, कफ प्रधान प्रकृति होवे वह इस त्राटक को करे।

उदाहरण :- साधक अपने सामने एक दर्पण रखें। फिर घी का एक दीया इस तरह रखें कि उसकी ज्योति दर्पण के मध्य में प्रतिबिम्बित होवे। दर्पण के मध्यभाग में सुगंधित तेल की एक बून्द डाल देवें। दर्पण मध्य में तेल की बूंद के पास जो ज्योति दिखे उस पर दृष्टि एकाग्र करे। बाहरी आवाज सुनाई नही देवें तथा ध्यान में तल्लीनता बढ़े इसके लिये दोनों कानों में कपड़े की दो गुटिका रख लेवें। केसर, इलायची, व जायफल का समभाग चूर्ण तैयार करे उसे रुई व कपडे की पोटली में सिलकर गुटिका बना लेवे।। उससे कानों में रखने से आवाजें सुनाई नहीं देगी बल्कि अन्दर का नाद खुलेने लगेगा। शुरु-शुरु में आँखों से गर्म पानी आयेगा एक सप्ताह बाद कम हो जायेगा। इस तरह धीरे-धीरे आधा घण्टा का अभ्यास करने पर भूत- भविष्य का ज्ञान होने लगेगा।

३. **आन्तर त्राटक** - आन्तर त्राटक व ध्यान में बहुत कुछ समानता है। हृंदय अथवा भ्रूमध्य में नेत्र बन्द कर एकाग्रता पूर्वक चक्षुवृति की भावना को आन्तर त्राटक कहा जाता है।

भ्रूमध्य में आन्तर त्राटकर करने से आरम्भ के कुछ दिन कपाल में दर्द हो सकता है, नेत्र की बरौनी में चञ्चलता प्रकट होगी, परन्तु कुछ समय बाद नेत्रवृति सामान्य हो जाती है।

हृदय देश में वृत्ति की स्थिरता के लिये प्रयत्न करने वालों को उपर्युक्त बाधा नहीं होगी।

जिसको नेत्ररोग हो, आँखा में जाला, फूला होवे मस्तिष्क, नासिका व हृदय में दाह रहता हो पित्त प्रधान प्रकृति वाला हो वह अन्य त्राटक नहीं करें। यही अभ्यास करें।

॥ ध्यान समाधि ॥

ध्यान के दो प्रयोजन है। प्रथमतया सभी साधक सिद्धियों की ओर दौड़ते है अन्य कुछ विरले साधक है जो मोक्ष कामना रखते है। ध्याता वैराग्ययुक्त क्षमाशील, श्रद्धालु तथा मोहादि से रहित होना चाहिये। ध्यान, ध्येय, ध्यानप्रयोजन को जानकर उत्साह पूर्वक अभ्यास करे। ध्यान से थक जाये तो जप करे। पुनः ध्यान करे, इस तरह क्रमशः कर अजपा जप का अभ्यास करें।

१२ प्राणायामों की एक धारणा होती है, १२ धारणाओं का एक ध्यान होता एवं १२ ध्यान की समाधि कही जाती है। समाधि में साधक स्थिर भाव में स्थिर रहता है और ध्यान स्वरूप से शून्य हो जाता है। सर्वत्र बुद्धि प्रकाश फैलता है विज्ञानमय शरीर में प्रवेश कर बाद में आनन्दमय कोश शरीर में प्रेवश कर परमानन्द को प्राप्त करता है।

वर्तमानकाल में तांत्रिक क्षेत्र में १०-१५ मुख्य तपस्वी रहे है जिनका वर्तमान में सानिध्य प्राप्त नहीं है। श्रीस्वामीजी राष्ट्रगुरुदतिया, गुप्तावतार बाबा, हमारे गुरु श्रीनथमल जी दाधीच, श्रीदेवीदत्तजी शुक्ल प्रयाग, स्वामी विद्यारण्य जी (मूर्खानन्द जी), आदि समकालीन सिद्ध पुरुष रहे है।

हमारे गुरु जी का उपासना क्रम ध्यानयोग रूप से विशेष था, वाममार्ग विषय पर यदा-कदा अनुसंधान तौर पर कर्म किया। कामाख्या में श्मशान उपासना की, चान्द्रायण, कृच्छचान्द्रायण व्रत वर्षो किये, सर्दी, गर्मी, वर्षा तपस्या की। ग्रीष्मकाल में पंचाग्नि तपस्या समय समाधि में कपाल २-३ इंच ऊँचा उठ जाता था। ऐसा लगे कि व्यक्ति कभी भी शरीर छोड सकता है। ऐसा उनके निरन्तर अभ्यास का फल रहा है।

उनकी प्रेरणा से जो सूक्ष्म ज्ञान मुझे प्राप्त होता है वहीं मैं साधक समाज के सामने रख पाता हुं।

॥ अङ्गदेवताओं की उपेक्षा नहीं करें ॥

साधनाकाल में प्रधान देवता के साथ भैरव, योगिनी, क्षेत्रपाल, हनुमान आदि अंग देवताओं का आगमन अवश्य रहता है चाहे आप इनका आवाह्न नहीं करें।

अतः प्रधान देवता के साथ इनका भी जप, स्मरण एवं बलिकर्मादि विधान होना चाहिये।

साधना का समय निश्चित होना चाहिये। दैनिक समय भी निश्चित करें, उसमें आधे घण्टे की भी उच्चावच नहीं करे। प्रधान देवता आयें अथवा नहीं आयें अंग देवता अवश्य आयेंगें। आपकी अनुपस्थिति देखकर नाराज होकर चले जायेंगे व क्रोध से आपके दैनिक कर्म के कार्य व्यापारादि में भी अशांति पैदा कर सकते हैं।

कभी- कभी आपकी अनुपस्थिति में ऐसा लगेगा जैसे कोई अंग देवता अथवा गुरु परम्परा की कोई आत्मा आपके यहाँ पूजा करके चली गई है। पात्र, पूजा साधन, वस्तुयें इधर-उधर रखी मिलेगी। कई तरह की गंध महसूस होगी। अपरोक्ष में परिवार केसदस्यों को घण्टे की ध्वनि सुनाई देगी।

उपेक्षित अंग देवता दैनिक कार्य, व्यापार में भ्रान्ति पैदा करेंगें। स्मरणशक्ति क्षीण होगी। कई बार वस्तुयें, पत्रावलि आदि जो मुख्य है, आपके रखे स्थान की अपेक्षा अन्यत्र रखी हुई मिलेगी।

॥ उपास्य देवता निर्णय ॥

इष्टदेवता चयन भी पूर्वोपासित जन्मान्त साधना से सम्बन्ध रखता है। कुछ उपासनायें अनायास ही प्रारम्भ हो जाती है। कुछ का निर्णय ग्रह, कुण्डली, व ग्रहदशानुसार किया जाता है। कुछ उपासना का निर्णय तात्कालिक घटनाओं के आधार पर किया जाता है।

जन्मकुण्डली से लग्न, पंचम, व नवम स्थान से विचार करें उनमें कौनसा ग्रह स्थित है, कौनसे ग्रहों की उन पर दृष्टि है। इनके स्वामी की क्या स्थिति है, इन सभी योग कारक पक्षों के आधार पर निर्णय करें। जो ग्रह बलि हो उसके आधार पर उपासना करें।

१. सूर्य - विष्णु, शिव, दुर्गा, ज्वालादेवी, ज्वालामालिनी, गायत्री, आदित्य, स्वर्णाकर्षण भैरव, की उपासना करे।

२. सूर्य शनि, सूर्य राहु - महाकाली, महाकाल, तारा, शरभराज, नीलकण्ठ, यम, उग्रभैरव, कालभैरव, श्मशानभैरव की पूजा करे।

३. सूर्य बुध, सूर्य मंगल, - गायत्री,, सरस्वती, दुर्गा उपासना।

४. सूर्य शुक्र - वासुदेव, मातङ्गी, तारा, कुबेर, भैरवी, श्रीविद्या की उपासना करे।

५. सूर्य केतु - छिन्नमस्ता, आशुतोषशिव, अघोरशिव,।

६. सूर्य शनि राहु - पाशुपतास्त्र। तंत्र मंत्र मारणादि षटकर्म से व्यक्ति अधिकतर पीड़ित होगा। रक्षा के लिये काली, तारा, प्रत्यङ्गिरा, जातवेद दुर्गा की उपासना करे।

७. सूर्य गुरु राहु - बगलामुखि, बगलाचामुण्डा, उच्छिष्टगणपति, वीरभद्र। केवल बगलामुखी उपासना से सिद्धि मिले परन्तु या तो सिद्धि दूसरों के लिये नष्ट होगी या देवी नाराज होकर वापस ले लेगी।

८. चन्द्रमा - लक्ष्मी, श्रीविद्या षोडशी, यक्षिणी, वशीकरणादि प्रयोग। शिव, कामेश्वर उपासना शुभ रहे।

९. चन्द्र मंगल - हनुमान, उच्छिष्टचाण्डालिनी, मातंगी, शबरी, नरसिंह, वनदुर्गा, भैरवी उपासना करे।

१०. चन्द्र बुध - बगला, कर्णपिशाची, उच्छिष्टगणपति, नरसिंह, सरस्वती, वैष्णवी, वाराही, हयग्रीव, दुर्गा उपासना शुभ रहे।

११. चन्द्र गुरु - बगलामुखि, भुवनेश्वरी, लक्ष्मी, पितृ, कुबेर, ब्राह्मी, शिव, कृष्ण, राम, दत्तात्रेय, अजपाजप, सोहं साधना करे।

१२. चन्द्र शुक्र - कृष्ण, लक्ष्मी, त्रिपुरसुन्दरी, भुवनेश्वरी, शाकम्भरी, यक्षिणी, वामन, दत्तात्रेय, तांत्रिक उपासनायें।

१३. चन्द्र शनि - दुर्गा, तंत्र-मंत्र सिद्धि, यक्षिणि, पिशाचि, भैरव, काली, तारा उपासना करें।

१४. चन्द्र राहु - भैरवी, काली, छिन्नमस्ता, धूमावती, वाराही, उग्रचण्डा, गणेश, विघ्नेश, हयग्रीव, शिव मृत्युञ्जय उपासना करें।

१५. चन्द्र केतु - हनुमान, स्वामीकार्तिकेय, छिन्नमस्ता, भैरव, उच्छिष्टगणेश, वासुदेव, विष्णु, गजेन्द्रमोक्ष स्तोत्र का पाठ करें।

१६. मंगल - हनुमान, भैरव, वीरभद्र, स्वामीकार्तिकेय, दुर्गा उपासना शुभ रहे।

१७. मंगल बुध - बगलामुखी, भैरवी, नारसिंही, ब्राह्मी आदि अष्टमातृका, दुर्गा, सरस्वती, कृष्ण, गणपति उपासना

श्रेष्ठ रहे।

१८. मंगल गुरु - हनुमान, गायत्री, विष्णु, शिव, पितृ, यक्ष, कुबेर, भिन्नपाद मंत्रों की उपासना शुभ रहे। संतान चिन्ता हेतु षष्ठी देवी के पाठ करे।

१९. मंगल शुक्र - वामन, लक्ष्मी, कामेश्वरी, ललिता, भुवनेश्वरी, कामाख्या, दुर्गा, अष्टभैरव, कृष्ण उपासना शुभ रहे।

२०. मंगल शनि - काली, तारा, श्मशान साधना, शरभ, भैरव, मंगलचण्डिका, उग्रदेवता की उपासना करें।

२१. मंगल राहु - निम्न श्रेणी की उपासना, भैरव, छिन्नमस्ता धूमावती, नीलतारा की उपासना करें।

२२. मंगल केतु - वाराही, दुर्गा, शिव, विष्णु, गणेश, हनुमान, व भैरव की उपासना शुभ रहे।

२३. बुध - गणेश, दुर्गा, विष्णु, सरस्वती, गंधर्व उपासना शुभ रहे।

२४. बुध गुरु - बगलामुखी, सरस्वती, गायत्री, विष्णु उपासना शुभ रहे।

२५. बुध शुक्र - कामाख्या, कामेश्वरी, लक्ष्मी, भैरवी, मातंगी, भुवनेश्वरी, कृष्ण उपासना शुभ रहे।

२६. बुध शनि - राम, शिव, हनुमान, उच्छिष्टगणपति, यक्षिणी सिद्धि, उपासना करें।

२७. बुध राहु - पिशाचि विद्या, गारुडी विद्या, धूमावति, विघ्नेशगणपति, व आशुतोषशिव की उपासना करें।

२८. बुध केतु - मृत्युञ्जय, शिव, गणेश, कार्तिकेय, हनुमान, भैरव, दुर्गा उपासना करें।

२९. गुरु - विष्णु, शिव, याज्ञिक कर्म, बगलामुखी उपासना करें। यदि गुरु कुण्डली में ६, ८, १२ वें स्थान में हो तो बगलामुखि उपासना में विलम्ब से लाभ होवे, गुरु-राहु, गुरु-शनि योग से भी विलम्ब से लाभ होवे। सिद्धि प्राप्त होवे किन्तु पुनः क्षय हो जावे। गायत्री उपासना अवश्य करें।

३०. गुरु - शुक्र, गुरु-शनि, गुरु-मंगल, गुरु-राहु, गुरु-केतु योग से साधना में विलम्ब आते है या सिद्धि विलम्ब से होती है जिससे साधना में श्रद्धा-अश्रद्धा पैदा हो जाती है। अतः गुरु का उपयोग करें।

३१. शुक्र - लक्ष्मी, तंत्र-मंत्र मार्ग का ज्ञाता होवे। शिव, मृत्युञ्जय, श्रीविद्या, त्रिपुरसुन्दरी, दुर्गा उपासना, हेरम्ब गणपति, मातंगी, शाकम्भरी, शबरी, उपासना शुभ रहे। शुक्र-शनि, शुक्र-राहु, शुक्र-केतु योग से क्षुद्र सिद्धियों की ओर साधक का मन दौड़ता है।

३२. शनि - शनि उपसना से पूर्व पापों का क्षय होता है। दुर्गा, काली, तारा, आसुरी दुर्गा, व उग्रदेवता भैरवादि की उपासना करता है।

३३. शनि-राहु, शनि-केतु, आदि के कारण भी मानसिक यातनायें प्राप्त होती है, अतः शत्रुओं को दण्ड देने हेतु उग्रसाधनायें करता है।

३४. कभी-कभी धूमावति की उपासना से भी ऐसे पापों व विघ्नों का निवारण होता है, परन्तु धूमावती उपासना आसान नही, सोच-समझ कर करें। क्योंकि धूमावती विघ्नों की अधिष्ठात्री है, अमंगल युक्ता है, अतः इसका आह्वान घर में नहीं करें।

॥ परिस्थिति अनुसार उपासना क्रम ॥

१. दरिद्रता, ऋण ग्रसित होने पर लक्ष्मी, भुवनेश्वरी, त्रिपुरा, बालासुन्दरी, गणेश के प्रयोग करें।

****
जेष्ठा लक्ष्मी से प्रार्थना करें कि वो हमारे घर से चली जाये। धन प्राप्ति हेतु अनेकानेक प्रयोग विभिन्न देवताओं के हैं, वे भी करे।

२. रोग प्राप्ति पर मृत्युञ्जय प्रयोग, अमृतवर्षिणी विद्या के प्रयोग व अन्य प्रयोग करें।

३. शत्रुबाधा - हनुमान, भैरव, शरभ, काली, बगला, दुर्गा, प्रत्यङ्गिरा कवच मन्त्रों का प्रयोग करें।

४. प्रेतादि उपद्रव - हनुमान, भैरव, शरभ, काली, तारा, बगलामुखी, दुर्गा, प्रत्यङ्गिरा, ज्वालामालिनी, अग्निदुर्गा, ब्रह्मास्त्र गायत्री, विलोम दुर्गा पाठ, तथा लोम-विलोम, अन्य मंत्र साधना, कुष्माण्डा, धूमावति, श्मशान साधनादि प्रयोग अच्छे तान्त्रिक से सलाह के उपरान्त करें।

ब्रह्मास्त्र शमन प्रयोग, कालरात्रि, अघोरास्त्र, पाशुपतास्त्र आदि अन्य विद्याओं के प्रयोग से पहले सुरक्षा कवच पढ़कर करें।

वाराही के उग्र प्रयोगों में धूम्रवाराही, निग्रहवाराही, अस्त्रवाराही, आदि प्रयोग किये जाते हैं। द्वेषभाव मिटाने हेतु मातंगी, आसुरीदुर्गा, नाकुली व अन्य संमोहन तंत्र करें।

|| पुरश्चरण के आवश्यक अंग ||

(१) स्थान

चौराहा, एकान्त, वन, खण्डहर, व श्मशान में उग्रसाधना करें। शांत जल, तालाब किनारे, सुगंधित उद्यान, शुद्ध स्थान व भवन में शांति हेतु उपासना करें।

गरजते हुये मेघ, समुद्र व वेग से बहती नदी एवं गिरते हुये जलप्रपात के पास उच्चाटन हेतु उपासना करें। नाभि पर्यन्त स्थिर जल में खड़े होकर साधना करने से शीघ्र सिद्धि मिले। नीम व कडुवे वृक्ष के नीचे बैठने से विद्वेषण, कटे हुये सूखे हुये पेड के नीचे साधना करने से शत्रु को अशांति होवे। वटवृक्ष, पीप्पल के नीचे शिव, शिवा, तथा विष्णु की उपासना करे। जिस पेड़ के नीचे बैठने से सुगंधित ठण्डी हवा प्राप्त हो वह शांतिप्रद होता है। उद्यान के एकान्त में उपासना करना भी श्रेष्ठ है। बिल्व वृक्ष के पास शिव तथा लक्ष्मी हेतु, शमी पेड़ व कनेर तथा चम्पा पेड़ के नीचे दुर्गा उपासना करे। दाड़िम का पेड़ भी शुभ है।

ब्रह्ममुहुर्त्त, उषाकाल में शांति व पौष्टिक कर्म करें। प्रात: ८ से १० बजे (बसन्तकाल) में आकर्षण, वशीकरणादि प्रयोग करें। मध्याह्न (ग्रीष्मकाल) में विद्वेषण, उच्चाटन कर्म हेतु उपासना करें। तृतीय पहर (वर्षाकाल) में स्तंभनादि प्रयोग करें। प्रदोषकाल (शिशरकाल) में मारणादि प्रयोग करें। रात्री १० बजे पश्चात् साधक का नाद श्रवण खुल जाता हैं अत: जप का अभ्यास करें।

मध्य रात्रि ११.३० से २ बजे (शरत्काल) में एकाग्रता बढ़ती है अत: मंत्र जप योगाभ्यास करे। षटकर्म की उपासना भी इस समय तांत्रिक करते है।

(२) स्वर ज्ञान

जब दाहिनी नासिका से स्वर चलता है तो सूर्य स्वर चलता है। सूर्य स्वर में मारण, मोहन, स्तंभन, उच्चाटन आदि कर्म शीघ्र सिद्धिप्रद होते हैं।

जब बाँयी नासिका से स्वर चलता है तो उसे चन्द्र स्वर कहते है। चन्द्र स्वर समय शांतिक व पौष्टिक कर्म करें।

यदि दोनो स्वर चल रहे हो तो योग का अभ्यास करें। दोनो स्वर बन्द हो तो उग्रकर्म करें।

स्वर यदि साफ चल रहा है तो शांति कर्म करें। स्वर यदि नीचे साफ चल रहा है तो स्तम्भन कर्म करे। यदि स्वर वायु नाक में इधर-उधर या ऊपर टकराती हुई, गोल घूमती हुई, रुकती हुई, चले तो मारण, मोहन, उच्चाटनादि कर्म करें।

(४) दिशा नियम

(क) पूर्व सुखशांति, उत्तर अर्थ लाभाय कहा है, पश्चिम दिशा रात्रिकाल में विशेष शुभ है। दक्षिण दिशा शत्रुनाश हेतु कही है।

(ख) **जपेत् पूर्वमुखे वश्ये दक्षिणं चाभिचारिकम् ।**

पश्चिम धनदं विद्याद् उत्तरं शान्तिकं भवेत् ॥

(ग) पूर्व में स्तंभन, अग्निकोण में उच्चाटन, दक्षिण दिशा में सभी अभिचार कर्म, नैर्ऋत्य में विद्वेषण, पश्चिम में शांति कर्म, वायव्य में वशीकरण, उत्तर अर्थलाभ, ईशान में ज्ञान-विज्ञान प्राप्ति हेतु शुभ दिशायें हैं।

(५) मंत्राणां पल्लवादि निर्णय

मंत्र के अंत में जो शब्द आता है उसे पल्लव कहते हैं। कामनानुसार अलग-अलग पल्लव लगाये जाते है।

शांति हेतु - **नमः, स्वाहा**। पुष्टि हेतु - **स्वधा** (स्वाहा भी लगाते है)। पैतृक कर्म प्रयोजन में विशेषतः स्वधा लगाते हैं। उच्चाटन व मारण में - **हूं फट्**। वशीकरण - **हुं फट्**। विद्वेषण - **हुं वौषट्**। विशेष उच्चाटन में - **हूं हूं फट् फट् स्वाहा**।

(६) मंत्राणां शिरो निर्णय

मंत्र के प्रारम्भ **ॐ नमो, नमः**, या अन्य कोई बीज मंत्र लगाया जाता है उसे शिर कहते है। शेष भाग को हृदय व शाखा कहते है। **ॐ भूर्भुस्वः (व्याहृति), नमः** या नमो प्रारम्भ में लगाने से मंत्र शांतिप्रद रहता है। प्रारम्भ में **ऐं** लगाने से सरस्वती प्रधान, **श्रीं** लगाने से लक्ष्मी प्रधान, **क्लीं** लगाने से कामप्रधान, **ह्रीं** लगाने से ऐश्वर्य प्रधान, मंत्र हो जाता है। **ॐ जूं सः** लगाने से मृत्युहारी व पुष्टिप्रधान मंत्र बन जाता है।

अतः कामनानुसार मंत्र में शिर व पल्लव का चयन किया जाता है।

(७) आसन भेद

ज्ञान सिद्धि में कृष्णाजिन, मोक्ष व श्रीकामना में व्याघ्रचर्मासन, मंत्रसिद्धि में कुश का आसन, प्रशस्त है। योगिनी तंत्र में लिखा है कि कृष्णाजिन पर अदीक्षित गृहस्थ को नहीं बैठना चाहिये। ब्रह्मचारी, वनवासी, और भिक्षुक को ही बैठना चाहिये। स्तंभन व बगलामुखी उपासना में पीतवर्ण, उच्चाटन व दुर्गा उपासना में लालवर्ण, लक्ष्मी उपासना में गुलाबी रंग व केसरिया रंग। वशीकरण व मातंगी उपासना में मृगचर्म या किञ्चित् धूम्रवर्ण। मारण उच्चाटन में कृष्णवर्ण आसन शुभ रहता है।

गृहस्थ को कुशा का आसन व ऊन का आसन सुलभ रहता है।

(८) मालामणि

ब्राह्म पूजा में पद्मबीजादि की मालायें प्रशस्त मानी गई है। रुद्राक्ष, शंख, पद्मबीज, (कमलगट्टा), जीवपुत्रिका, मुक्ता, स्फटिकमणि, रत्न, सुवर्ण, प्रवाल, चांदी, और कुशमूल इनमें से किसी एक की माला से गृहस्थ को जप करना

चाहिये।

शक्ति उपासना में लाल चन्दन व रुद्राक्ष माला का विशेष महत्त्व है। बगलामुखि के लिये हल्दी की माला। मातंगी व लक्ष्मी हेतु कमलगट्टे व लाल चन्दन। लक्ष्मी हेतु तुलसी की माला काम में नहीं लेवें। (विष्णु जप हेतु तुलसी माला काम में लेवे, लक्ष्मी व तुलसी के वैर है)। लक्ष्मी हेतु स्फटिक व रत्नों की माला भी काम में ले सकते हैं। दुर्गा हेतु रुद्राक्ष, लालचन्दन, तथा मूंगे की माला काम में लेवे। शांति कर्म हेतु सफेद चन्दन माला व स्फटिक माला का प्रयोग करें। वशीकरण मारणादि में काले वर्ण की माला या कमलगट्टे की माला का प्रयोग करें।

धूमांवति की उपासना में रुद्राक्षमाला, उग्रकर्म में अस्थि की माला से जप किया जाता है।

वाराही तंत्र के अनुसार भैरवी विद्या हेतु सुवर्ण स्फटिक, माणक, शंख व प्रवालमाला विहित बतायी है। तथा जीवपुत्रिका माला को त्याज्य बताया है।

त्रिपुरसुन्दरी उपासना में रक्तचन्दन, प्रवाल, रुद्राक्ष माला कही गयी है। गणेश उपासना में गजदन्त तथा विष्णु उपसना में तुलसी एवं शिव उपासना में रुद्राक्ष माला श्रेष्ठ है।

(९) माला संस्कार

शांति कर्म में श्वेत वर्ण, वश्यादि कर्म में लालवर्ण, स्तंभन में पीतवर्ण, मारण कर्म में कृष्णवर्ण के सूत्र से माला गूंथे। सूत्र को त्रिगुणित कर उसे पुनः त्रिगुण करे पश्चात् उसे शास्त्रविधि अनुसार कन्या या सुवासिनी से ग्रंथित करायें। जैसी मणी हो वैसे सूत्र होवे। प्रणव तथा अकारादि एक वर्ण का उच्चारण करते हुये (ॐ अं आं इं.......हं लं क्षं) माला गूंथे। बीच-बीच में ब्रह्मग्रंथि देते जाये। मेरुस्थल को भी ग्रंथि बंध करना चाहिये।

(१०) नैवेद्य फलम्

बगलामुखी उपासना में पीले फूल, पीला आसन, पीले वस्त्र (स्वयं व देवी के) तथा पीला नैवेद्य चढ़ावें। पौष्टिक लाभ के लिये क्षीरान्न व हलुआ तथा मीठे पूए का भोग लगाया जाता है। पुस्तक में मास, तिथि के आधार पर देवी नैवेद्य का वर्णन दिया गया है।

देवी तथा भैरवादि अंग देवताओं के बलिद्रव्य, नमकीन, पकोडी, उड़द से बनी मिठाई व दही, सिन्दूर, काशीफल की मिठाई (कोल्हे की मिठाई), भूनी हुई अदरक, किशमिश पर काला नमक व जीरा युक्त, दही भात आदि अर्पण करें।

(११) हवनीय द्रव्य व तर्पण

किसी भी देवता का कोई भी मंत्र हो हवनीय द्रव्य के अनुसार कामना फल प्राप्त होगा।

आयुवृद्धि हेतु - दूर्वा होम।

रोगनाश हेतु - गुडची, गिलोय।

लक्ष्मी प्राप्ति- क्षीरान्न, बिल्वफल, दाड़िम, सीताफल, बिल्वपत्र, मधु शर्करा घृत (त्रिमधु) युक्त होम करे।

शत्रुनाश हेतु व रोगनाश हेतु - सरसों व कालीमिर्च से होम करें। सरसों एक तोला व कालीमिर्च करीब २० दाने लेवें। कुछ विद्वानों का मत है कि लालमिर्च काम में लेवें परन्तु लालमिर्च से हवन करने से स्वयं साधक का हवन में बैठना मुश्किल हो जायेगा।

पुष्टिकामना हेतु - हलुआ, क्षीरान्न, पञ्चमेवा, मावामिष्ठान्न का होम करे।

स्तंभन कार्य हेतु - हल्दी तथा हरताल।

उच्चाटन हेतु - मेनसिल, कांटेदार फल, पुष्प।

संतान हेतु - कदलीफल।

वशीकरण हेतु - ब्राह्मी, शंखपुष्पी, सहदेवी।

शांतिकर्म व कलह निवारण हेतु - जटामांसी, विष्णुक्रान्ता, अपामार्ग, कपूरकाचरी, नागरमोथा, छाड़छडेला, अष्टगंध आदि सुगंधित द्रव्य काम में लेवें।

दुर्गा उपासना में रक्त कनेर व दाड़िम के पुष्प, दाड़िम शुभ है। कमल के पुष्प से अर्चा व होम करना सदैव सिद्धिप्रद है। चम्पापुष्प भी वशीकरण हेतु काम में लिये जाते हैं। पशुओं के रक्त, मज्जा मांस का प्रयोग मारण प्रयोगों में करते है।

इसी तरह हवन का दशांश तर्पण करे। तर्पणादि द्रव्यों का विशेष विवरण बगला तंत्र में दिया गया है।

॥ नाम राशि व नक्षत्र के आधार पर सिद्ध वृक्ष ॥

अपने प्रसिद्ध नाम या जन्म नक्षत्र के आधार पर वृक्ष का चुनाव कर उसकी लकड़ी से देवप्रतिमा बनाकर मन्त्र प्रयोग करें। यदि किसी पर मोहनादि षट्कर्म करना हो तो साध्य व्यक्ति के नाम का नक्षत्र देखकर उस वृक्ष की लकड़ी से साध्य व्यक्ति की पुतली बनाकर प्रयोग करें।

१. अश्विनी	कारस्कर	१०. मघा	रोहिणी	१९. मूल	सर्ज
२. भरणी	धात्री	११. पू. फा.	पलाश	२०. पू. षा.	वञ्जुल
३. कृत्तिका	उदुम्बर	१२. उ. फा.	प्लक्ष	२१. उ. षा.	पनस
४. रोहिणी	जम्बू	१३. हस्त	अम्बष्ठ	२२. श्रवण	अर्क
५. मृगशिरा	खदिर	१४. चित्रा	बिल्व	२३. धनिष्ठा	शमी
६. आर्द्रा	कृष्ण	१५. स्वाति	अर्जुन	२४. शतभिषा	कदम्ब
७. पुनर्वसु	वंश	१६. विशाखा	विकंकत	२५. पू. भा	निम्ब
८. पुष्य	पिप्पल	१७. अनुराधा	वकुल	२६. उ. भा.	आम्र
९. आश्लेषा	नाग	१८. ज्येष्ठा	सरल	२७. रेवती	मधूक

॥ जनन एवं मृताशौच निवृत्ति ॥

मंत्र के आगे ॐ लगाने से मंत्र के जनाना शौच की निवृत्ति होती है तथा मंत्र के पीछे ॐ लगाने से मंत्र के मृताशौच की निवृति होती है

अत: जप पूर्व ७ या २१ बार ॐ से पुटित कर मंत्र जप करे तो मंत्र जागृत हो जाता है।

इसी तरह माला प्रारम्भ करने से पहले ॐ एवं माला पूरी होने पर ॐ लगाने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।
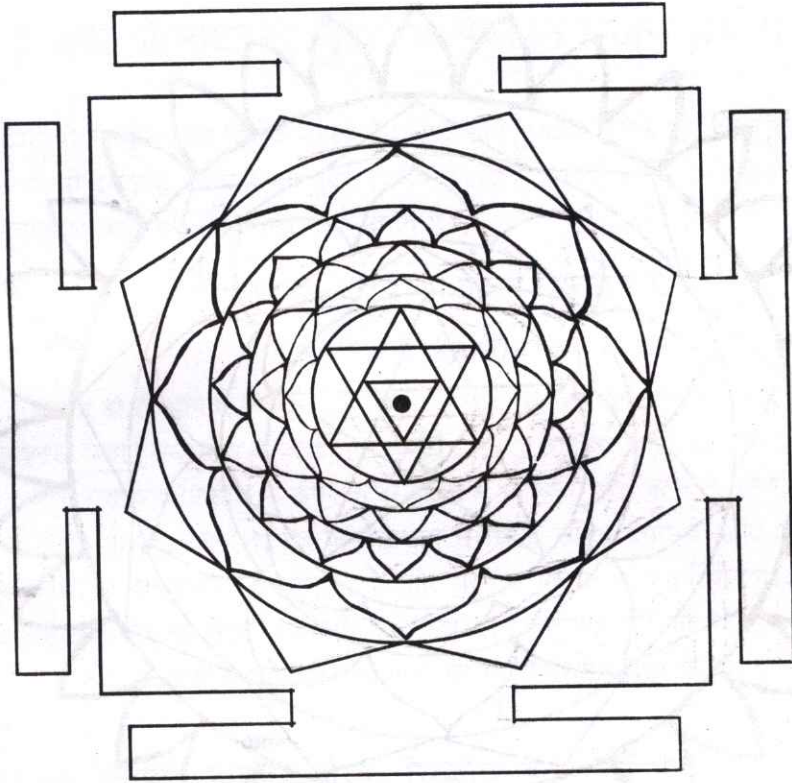
॥ श्री श्रीनाथादि गुरुत्रय यन्त्रम् ॥

[श्री गुप्तावतारबाबाजी की लेखमालानुसार]
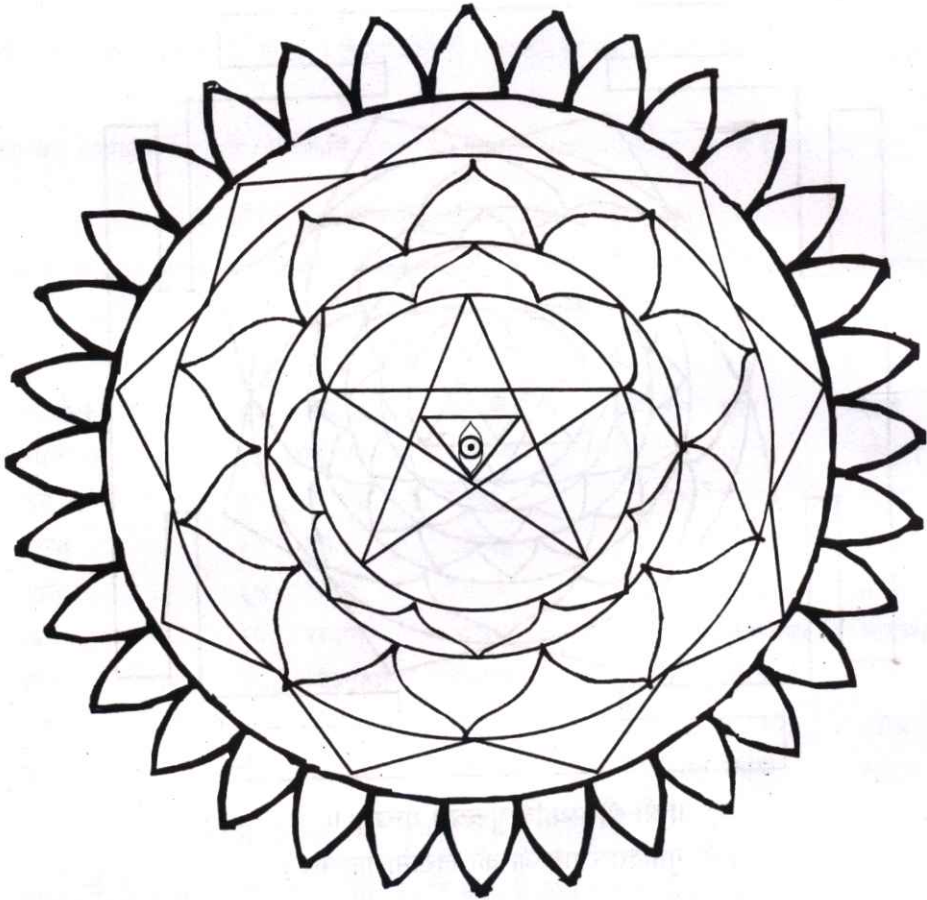
॥ श्री श्रीनाथादि गुरुत्रय यन्त्रम् ॥

॥ अथ श्रीनाथादि गुरुत्रय मण्डल पूजन प्रयोगः॥

तंत्र साधना में गुरुमंडल पूजन का विशेष महत्व है। श्रीनाथादि गुरुत्रयं श्लोक का ध्यान तो सभी करते है परन्तु पूजान्तर में कौन-कौनसे देवता है उनका ध्यान पूजन विशेष फलदायी होता है इसके २-३ प्रकारान्तर पूजन प्रयोग है। प्रस्तुत प्रयोग श्रीगुप्तावतार बाबा की लेखमाला के अन्तर्गत है।

॥ गुरुमण्डल यंत्र का पूजन विधानम्॥

(१) प्रथम यंत्र विधान

गुरु मंडल यंत्र बनाना हो तो मूल में बिन्दु, वृत्त, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल द्वादशदल बनायें। द्वादशदल के ऊपर षोडशदल पुनः अष्टदल पश्चात् अष्टकोण के बाद भूपूर बनायें। विन्दुः विश्वव्यापिनी, महाचिच्छक्ति भगवती मालिनी। वृतः मंत्रराजः। त्रिकोणः गुरुत्रय। षटकोणः- ऊपर के दो कोणो में गणपति, नीचे के तीनो कोणो में पीठत्रय और सबसे ऊपर शीर्षकोण में, भैरव ईशान। अष्टदलः पत्र के अग्रभाग में सिद्धि सहित दुर्गाम्बा आदि और दल के दोनों और सनकानन्दनाथादि सिद्धौघ। द्वादशदलः दिव्योघाः ११ और परमौघ पुरुषाः १-१२। षोडशदलः दसदूती, बटुकत्रय पदयुगं १६ दल। अष्टदलः वीरानष्ट भैरव। योगिनीः ६४। मण्डलं- चतुष्षष्टि योगिनी पश्चात् अन्तिम वृत्त में । नवकं अष्टकोण में ८ और अष्टकोण के ऊपर के कोण में नीचे एक। वीरावली पंचकः भूपूर के चार द्वारो में ४ और ईशान कोण में भगवान ईशान।

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं, सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् । वीरानष्ट-चतुष्कषष्टि-नवकं वीरावली पञ्चकम्, श्रीमन्मालिनि मंत्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

पाठान्तर भेद में कहीं-कहीं वीरावली सप्तकम् भी है।

(उपर्युक्त 'श्रीनाथादिगुरुत्रयं०' गुरुमण्डल के अर्चन का रहस्यमय 'मन्त्र' है।)

(२) द्वितीय यंत्र विधान

बिन्दु, वृत्त, द्विदल, त्रिकोण, पञ्चकोण, अष्टदल, दशदल, नवकोण एवं ६४ या ३२ दल बनायें। बिन्दु में भगवती मालिनी का तथा वृत्त में मंत्रराज का अर्चन करें। बिन्दु के दोनो ओर या द्विदल में पदयुग का अर्चन करे। गणपति का अर्चन भी वृत्त में करे।

त्रिकोण की तीनों रेखाओं में क्रमशः द्विव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ का पूजन करें। गुरुत्रय तथा पीठत्रय एवं अग्नि सूर्य सोमादि त्रयमण्डल, वटुकत्रय का पूजन भी त्रिकोण में करें।

अष्टदल कर्णिका में अष्टभैरव, मध्य में अष्टवीर का पूजन करें। दशदल में दूतीक्रम, नवकोण में मुद्रानव तथा ६४ या ३२ दल में विविध शक्तियों का पूजन करें। पञ्चकोण में पंचवीरावली, पंचकल्पलता आदि का पूजन करें।

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीगुरुमण्डलमहामन्त्रस्य हंस ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीगुरुमण्डलः देवता। ऐं बीजं। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकं। श्रीगुरुमण्डलप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास - **श्रीगुरुमण्डलमहामन्त्रस्य हँसऋषये नमः** शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। **ऐं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्रीगुरुमण्डलप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय: नमः अञ्जलौ।**

इस प्रकार विनियोग, ऋष्यादिन्यास कर मूलमन्त्र से करहृदयादिन्यास करे। फिर दिग्बन्धन करे। अनन्तर **'श्रीनाथादिगुरुत्रयं०'** इस मन्त्र को पढ़कर **'गुरुमण्डल'** का ध्यान करे तथा ब्रह्मरन्ध्र में श्रीनाथादिगुरुपंक्ति का चिन्तन एवं पूजन करे।

'श्रीनाथादिगुरु' तीन प्रकार के माने गए हैं - **१ दिव्यौघ, २ सिद्धौघ और ३ मानवौघ।**

अतः प्रथम 'दिव्यौघ' का पूजन करना चाहिए।

१. **दिव्यौघगुरु** - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीशिवानन्दनाथ पराशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीसदाशिवानन्दनाथ चिच्छक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीईश्वरानन्दनाथ आनन्दशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीरुद्रदेवानन्दनाथ इच्छाशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीविष्णुदेवानन्दनाथ ज्ञानशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीब्रह्मदेवानन्दनाथ क्रियाशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥**

२. **सिद्धौघगुरु** - प्रत्येक नाम के पूर्व - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं** और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** लगा लें- **१. श्रीसनकानन्दनाथ। २. श्रीसनन्दनानन्दनाथ। ३. श्रीसनातनानन्दनाथ। ४. श्रीसनत्कुमारानन्दनाथ। ५. श्रीशौनकानन्दनाथ। ६. श्रीसनत्सुजातानन्दनाथ। ७. श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ। ८. श्रीरैवतानन्दनाथ। ९. श्रीवामदेवानन्दनाथ। १०. श्रीव्यासानन्दनाथ। ११. श्रीशुकानन्दनाथ।**

३. **मानवौघगुरु** - (प्रत्येक नाम के पूर्व **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं** और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** लगा लें)। **१. श्रीनृसिंहानन्दनाथ। २. श्रीमहेशानन्दनाथ। ३. श्रीभास्करानन्दनाथ। ४. श्रीमहेन्द्रानन्दनाथ। ५. श्रीमाधवानन्दनाथ। ६. श्रीविष्णुदेवानन्दनाथ। कादिविद्या, हादिविद्या, षोडशी तथा परोपासकों के ओघत्रय पृथक् पृथक् हैं।**

जो जिस विद्या का उपासक हो, वह उपर्युक्त ओघत्रय के स्थान पर अपने-अपने देवता के ओघत्रय का पूजन कर सकता हैं।

४. **गुरुत्रय** - (१ गुरु, २ परम गुरु, ३ परमेष्ठि गुरु) - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः शिवः सोहंस्वरूपनिरूपणहेतवे स्वगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सोहं हंसः शिवः सोहं स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे परमगुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हंसः शिवः सोहं स्वात्मारामपरमानन्द पञ्जरविलीनतेजसे परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥**

५. **गणपति (महागणपतिं)**- ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

६. **पीठत्रय** - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हंसः शिवः सोहं अं आं सौः श्रीकामगिरिपीठ ब्रह्मात्मकशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हंसः शिवः सोहं श्रीपूर्णगिरिपीठ विष्णवात्मकशक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हंसः शिवः सोहं श्रीजालन्धरपीठ रुद्रात्मक शक्त्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥

७. **भैरव (अष्टभैरव)** - ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं मन्थानभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीषट्चक्र भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं रां फट्कारभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीऐकात्मभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीहविभक्ष्यभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीचण्डभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीभ्रमरभास्करभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥७॥

८. **सिद्धौघ**- (प्रत्येक नाम के आदि में **ह्रीं श्रीं सौः** अं और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें)। १ श्री महादुर्मताम्बा सिद्ध। २ श्री सुन्दर्यम्बा सिद्ध। ३. श्री करालिकाम्बा सिद्ध। ४. श्रीत्रिवाणाम्बा सिद्ध। ५. श्री श्रीमाम्बा सिद्ध। ६. श्री कराल्यम्बा सिद्ध। ७. श्री खरानताम्बा सिद्ध। श्रीविशालिन्यम्बा सिद्ध।

९. **वटुकत्रय** - (आदि में **ह्रीं श्रीं सौः क्लीं फट्** और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें)। १ श्रीस्कन्दवटुक। २. श्रीचित्तवटुक। ३. श्रीविरञ्चिवटुक।

१०. **पदयुग** - (आदि में **हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं** और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें)। १ श्रीप्रकाश। २. श्रीविमर्श।

११. **दूतीक्रम** - (आदि में **अं आं सौ. ह्रीं श्रीं सौः** और अन्त में **दूतिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें)। १ श्रीयोन्यम्बा। २ श्रीयोनिसिद्धनाथाम्बा। ३ श्रीमहायोन्यम्बा। ४. श्रीमहायोनिसिद्धनाथाम्बा। ५. श्रीदिव्ययोन्यम्बा। ६. श्रीदिव्ययोनिसिद्धनाथाम्बा। ७. श्रीशङ्खयोन्यम्बा। ८. श्रीशङ्खयोनिसिद्धनाथाम्बा। ९. श्रीपद्मयोन्यम्बा। १०. श्रीपद्मयोनिसिद्धनाथाम्बा।

१२. **मण्डल** - ह्रीं श्रीं ऐं अग्निमण्डल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यमण्डल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ह्रीं श्रीं सौः सोममण्डल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥

१३. **वीरानष्ट** - (आदि में **ह्रीं श्रीं फट् फां फीं** और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें)। १. श्रीसृष्टिभैरव। २. श्रीस्थितिभैरव। ३. श्रीसंहारभैरव। ४. श्रीरक्तवीरभैरव। ५. श्रीयमवीरभैरव। ६. श्रीमृत्युवीरभैरव। ७. श्रीभद्रवीरभैरव। ८. श्रीपरमार्थवीरभैरव। ९. श्रीमार्तण्डवीरभैरव। १०म श्रीकालाग्निरुद्रवीरभैरव।

मन्त्र में 'अष्ट वीर' बताए गए हैं, किन्तु व्याख्या में तथा तन्त्रग्रन्थों में १० बताए गए हैं। तन्त्रग्रन्थों के अनुसार ही व्याख्या की गई हैं, अतएव १० लिखे हैं।

१४. **चतुष्कषष्टि (६४)** - (आदि में '**ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं सौः ह्रीं**' एवं '**श्री**' और अन्त में **श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** जोड़ लें।) **१ मङ्गलानाथा। २ चण्डिकानाथा। ३ कलुकानाथा। ४ पट्टहानाथा। ५ कूर्मानाथा। ६ धनदानाथा। ७ गन्धानाथा। ८ गगनानाथा। ९ मतङ्गानाथा। १० चम्पकानाथा। ११ कैवर्तानाथा। १२ मातङ्गगमनानाथा। १३ सूर्यभक्ष्यानाथा। १४ नभोभक्ष्यानाथा। १५ स्तौतिकानाथा। १६ रूपिकानाथा। १७ दंष्ट्रापूज्यानाथा। १८ धूम्राक्षानाथा। १९ ज्वालानाथा। २० गान्धारानाथा। २१ गगनेश्वरानाथा। २२ मायानाथा। २३ महामायानाथा। २४ नित्यानाथा। २५ शालानाथा। २६ विश्वानाथा। २७ कामिनीनाथा। २८ उमानाथा। २९ श्रियानाथा। ३० सुभगानाथा। ३१ सर्वगानाथा। ३२ लक्ष्मीनाथा। ३३ विद्यानाथा। ३४ मीनानाथा। ३५ अमृतानाथा। ३६ चन्द्रानाथा। ३७ सिद्धानाथा। ३८ श्रद्धानाथा। ३९ अनन्तानाथा। ४० शम्बरानाथा। ४१ उल्कानाथा। ४२ त्रैलोक्यानाथा। ४३ भीमानाथा। ४४ राक्षसीनाथा ४५ मणिनाथा ४६ प्रचण्डानाथा। ४७ अनङ्गानाथा। ४८ विधिनाथा। ४९ अनभिहितानाथा। ५० नन्दिनीनाथा। ५१ महामननाथा। ५२ सुन्दरीनाथा। ५३ विश्वेश्वरीनाथा। ५४ कालनाथा। ५५ महाकालनाथा। ५६ अभयानाथा। ५७ विकारानाथा। ५८ महाविकारानाथा। ५९ सर्वगानाथा। ६० सकलानाथा। ६१ पूतनानाथा। ६२ सर्वरीनाथा। ६३ व्योमानाथा। ६४ ज्येष्ठानाथा। किसी पुस्तक में 'श्रीज्येष्ठानाथा' तीसरी संख्या पर है। किसी पुस्तक में 'अनङ्गविधिनाथा' एक पद कर दिया है। जहाँ एक पद है, वहाँ 'विधिनाथा' के स्थान में 'रविनाथा' लिखी गई है। हस्तलिखित तान्त्रिक पुस्तकों में पाठपरिवर्तन होना स्वाभाविक है।**

१५. **मुद्रानवक (नवमुद्रा) - १ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्रायै नमः। २ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रायै नमः। ३ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रायै नमः। ४ लूँ सर्ववशङ्करीमुद्रायै नमः। ५ सः सर्वोन्मादिनीमुद्रायै नमः। ६ क्रौं सर्वमहांकुशामुद्रायै नमः। ७ हसखफ्रें सर्वखेचरीमुद्रायै नमः। ८. हस्त्रौं सर्वबीजामुद्रायै नमः। ९ ऐं सर्वयोनिमुद्रायै नमः। नवमुद्राम्बायै नमः।**

१६. **वीरावलीपञ्चक** - (**पाँचवीरसमूह**) आदि में '**ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः**' और अन्त में '**नमः**' जोड़ लें। **१ लं ब्रह्मवीरावल्यै। २ वं श्रीविष्णुवीरावल्यै। ३ रं श्रीरुद्रवीरावल्यै। ४ यं श्रीईश्वरवीरावल्यै। ५ हं श्रीसदाशिववीरावल्यै।**

किसी-किसी आचार्य ने 'वीरावली' को पृथक् कर 'पञ्चकं' को अलग कर दिया है। 'पञ्चकं' पृथक् माननेवालों के मत में- १ पञ्चलक्ष्मी, २ पञ्चकोश, ३ पञ्चकल्पलता, ४ पञ्चकामदुघा और ५ पञ्चरत्नविद्या यह 'पञ्चपञ्चिका' ललिता त्रिपुर सुन्दरी दी गई है, किन्तु हमारी समझ में तो तत्पुरुष समास ठीक है। पञ्चब्रह्मों के नाम से 'वीरावलीपञ्चक' की कल्पना की गई है और यदि 'पञ्चपञ्चिका' भी सम्मिलित की जाए, तो हानि कोई नहीं। 'अधिकस्याधिकं फलम्' के अनुसार 'गुरुमण्डल' की वृद्धि ही है।

१७. **श्रीमन्मालिनिमन्त्रराज के सहित - (१) ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ। अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः। कं खं खं गं घं ङं। चं छं जं झं ञं। टं ठं डं ढं णं। तं थं दं धं नं। पं फं बं भं मं। यं रं लं वं। शं षं सं हं लं क्षं। हंसः सोहं मालिन्यम्बायै नमः। (२) ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं, ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं**

भीषणं भद्रं, मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्॥ यहाँ पर भी 'श्रीमालिनी मन्त्र' अलग दिखाकर 'मन्त्रराज' पद की अलग व्याख्या कर 'श्रीनृसिंह' का ध्यान तथा मन्त्र दिया गया है तथा 'वन्दे गुरोर्मण्डलम्' से पूर्वोक्त गुरुमण्डल की वन्दना समष्टिरूप से की गई है, किन्तु बहुतसी पुस्तकों में 'गुरुमण्डल' की व्याख्या भी पृथक् दी गई है।

॥ श्रीकुल के गुरु॥

श्रीकुल साधकों के कुल गुरु इस प्रकार है-

१. **दिव्यौघगुरु** - १. परप्रकाशानंदनाथ २. परशिवानंदनाथ ३. पराशक्त्यम्बा ४. कौलेश्वरानंदनाथ ५. शुक्लदेव्यम्ब ६. कुलेश्वरानंदनाथ ७. कामेश्वर्यम्बा।

२. **सिद्धौघ गुरु** - भोगानंदनाथ। क्लिन्नानंदनाथ। समयानन्दनाथ। सहजानंदनाथ।

३. **मानवौघ गुरु** - गगनानंदनाथ। विश्वानंदनाथ। विमलानंदनाथ। मदनानंदनाथ। भुवनानंदनाथ। प्रियानंदनाथ। श्रीशङ्कर भगवत्पाद।

॥ श्रीकुलगुरु परंपरा ॥

(विद्यार्णव तंत्रे)

श्री १०८ देशिकप्रवर स्वामी विद्यारण्यविरचित 'श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र' में गुरुओं के आयुधों का वर्णन दिया है। यथा-

खेटं कपालं च त्रिशूलं मुद्गरं तथा । खट्वाङ्गं शरचापौ च, दधानाश्च वराभये ॥
तुरीये यामिनीयामे, कुण्डलिन्या महौजसि । ते विसर्गादधोभागे, लाक्षारससमप्रभे ॥
चिन्तनीयाः प्रयत्नेन, विद्यासंसिद्धिहेतवे । एतान् कुलगुरुन् यत्नान्, न चिन्तयति साधकः ॥
तस्य पूजा जपश्चैव, स्नानदानादिकं वृथा । एतान् कुलगुरुन्, ध्यायेत्, ऊर्ध्वाम्नायर्णदीक्षितः ॥

ऊर्ध्वाम्नायक्रम में ओघत्रय (दिव्य, सिद्ध और मानव) गुरुओं को पृथक् पृथक् इस प्रकार बताया गया है-

१. **ग्यारह दिव्यौघ** - १ ब्रह्मा, २ विष्णु, ३ रुद्र, ४ ईश्वर, ५ सदाशिव, ६ इच्छाशक्ति, ७ ज्ञानशक्ति, ८ क्रियाशक्ति, ९ कुण्डलिनी, १० मातृका और ११ पर शक्ति।

२. **आठ सिद्धौघ** - १ आदिनाथ, २ परशक्ति, ३ अचिन्त्यनाथ, ४ अचिन्त्यशक्ति, ५ अव्यक्तनाथ, ६ अव्यक्तशक्ति, ७ कुलेश्वर और ८ कुलेश्वरी।

३. **मानवौघ** - १ तूष्णीश, २ सिद्धाम्बा, ३ मित्र, ४ कुब्जाम्बा, ५ गगन, ६ चाटुली, ७ चन्द्रगर्भ ८ बलिभागिनी ९ मुक्त, १० महिला, ११ ललित, १२ शङ्खाम्बा, १३ श्रीकण्ठ, १४ श्रीकण्ठाम्बा, १५ परमेश्वरी १६ कुमार, १७ सहजाम्बा, १८ रत्न, १९ ज्ञानदेवी, २० ब्रह्मा, २१ नादिनी, २२ अजेश्वर, २३ अजेश्वराम्बा, २४ प्रतिष्ठानन्दनाथ, २५ सहजाम्बा, २६ शिव, २७ प्रतिभाम्बा, २८ चिदानन्द, २९ सहजाम्बा, ३० श्रीकण्ठ, ३१ आनन्दविद्या, ३२ शिव, ३३ सहजाम्बा, ३४ सोम, ३५ सहजाम्बा, ३६ संविदानन्दनाथ,

३७ सहजाम्बा, ३८ विबुधानन्दनाथ, ३९ विबुधाम्बा, ४० भैरव, ४१ भैरव्यम्बा, ४२ आनन्दनाथ, ४३ अनन्दिन्यम्बा, ४४ कामेश्वर, ४५ कामेश्वर्यम्बा, ४६ कमलानन्दनाथ और ४७ सहजाम्बा।
ये मानवौघ गुरु हैं। ये द्विभुज हैं और वराभय धारण करते हैं।

॥ ऊर्ध्वाम्नायान्तर्गत शाम्भवक्रम में श्रीषोडशी महाविद्या के उपासकों का गुरुक्रम ॥

१. **दिव्यौघगुरु – १ श्री व्योमातीताम्बा, २ व्योमेश्यम्बा, ३ व्योमगाम्बा, ४ व्योमवारिण्यम्बा** और **५ व्योमस्थाम्बा** ये पञ्चाम्बाएँ दिव्यौघ गुरु हैं।

२. **सिद्धौघ गुरु – १. उन्मनाकाशानन्दनाथ, २ समनाकाशानन्दनाथ, ३ व्यापककाकाशानन्दनाथ, ४ शक्त्याकाशानन्दनाथ, ५ ध्वन्याकाशानन्दनाथ, ६ ध्वनिमात्राकाशानन्दनाथ, ७ अनाहताकाशानन्दनाथ, ८ विन्द्वाकाशानन्दनाथ और ९ द्वन्द्वाकाशानन्दनाथ**– ये नौ 'सिद्धौघ गुरु' हैं।

३. **मानवौघ गुरु – १ परमात्मानन्दनाथ, २ शाम्भवानन्दनाथ, ३ चिन्मुद्रानन्दनाथ, ४ वाग्भवानन्दनाथ, ५ लीलानन्दनाथ ६ सम्भ्रमानन्दनाथ, ७ चिदानन्दनाथ, ८ प्रसन्नानन्दनाथ और ९ विश्वानन्दनाथ**– ये नौ 'मानवौघ गुरु' हैं।

उक्तदिव्यौघ, सिद्धौघ और मानवौघ गुरुओं की पूजा के अनन्तर–स्वगुरुक्रम की पूजा होती है। प्रत्येक गुरुनाम के प्रारम्भ में '**श्री**' और अन्त में '**आनन्दनाथ नमः**' जोड़ लेना चाहिए।

जैसे – **श्रीकपिलानन्दनाथ नमः इत्यादि। कपिल, वशिष्ठ, सनक, सनन्दन, भृगु, सनत्त्, सुजत्तवामदेव, नारद, गौतम, शौनक, शक्ति, मार्कण्डेय, कौशिक, पराशर, शुक्र, अङ्गिरा, कण्व, जावालि, भरद्वाज, वेदव्यास, ईशान, रमण, कपर्दी, भूधर, सुभट, जलज, भूतेश, परम, विनय, भरण, पद्मेश, सुभग, विशुद्ध, समर, कैवल्य, गणेश्वर, सुपाथ, विबुध, योग, विज्ञान, अनङ्ग, विभ्रम, दामोदर, चिदाभास, चिन्मय, कलाधर, वीरेश्वर, मन्दार, त्रिदश, सागर, मृड़, हर्ष, सिंह, गौड़, वीर, अघोर, ध्रुव, दिवाकर चक्रधर, प्रमथेश, चतुर्भुज, आनन्द, भैरव, वीर, गौड़, पराचार्य, सत्यनिधि, रामचन्द्र, गोविन्द और श्रीशङ्कराचार्य।** इन गुरुओं की संख्या एकसप्तति अर्थात् इकहत्तर ७१ है।

'श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र' के अनुसार भगवान् शङ्कराचार्य के चौदह शिष्य दर्शाए हैं, जिनमें से **शङ्कराचार्य, बोधाचार्य, गीर्वाणाचार्य, पद्मपादाचार्य और आनन्दतीर्थाचार्य** – ये पाँच भिक्षु अर्थात् संन्यासी थे। शेष नौ शिष्य **सुन्दर, विष्णुशर्मा, लक्ष्मण, मल्लिकार्जुन, त्रिविक्रम, श्रीधर, कपर्दी, केशव और दामोदर गृहस्थ थे।** ये लोग अपने विषय के अद्‌भुत विद्वान थे और '**शङ्कर**' की उपाधि से विभूषित थे तथा भगवती की ही आत्मा माने जाते थे। पद्मपादाचार्य के **माण्डलिक, परपावक, निर्वाण, गोवर्धन, चिदानन्द** और **शिवोत्तम** – ये छः शिष्य थे। बोधाचार्य के शिष्य केरलप्रदेश के निवासी थे अर्थात् केरल प्रदेश में शाक्तधर्म को फैलानेवाले बोधाचार्य थे। **गीर्वाणाचार्य** के शिष्य **गीर्वाण पण्डित** तथा उनके शिष्य **विबुधेन्द्र** और उनके शिष्य **सुधीन्द्र** तथा उनके शिष्य **मन्त्रगीर्वाण** हुए और उनके भी अनेक शिष्य हुए। महात्मा **आनन्दतीर्थ** के अनेक गृहस्थ शिष्य हुए, जो पादुका, पीठ और सम्प्रदाय के विशेषज्ञ थे।

भगवान् शङ्कराचार्य के जो नौ गृहस्थ शिष्य बने थे, उनकी परम्परा निम्न प्रकार है – **सुन्दराचार्य** के शिष्य पीठनायक (पीठाधिपति), भिक्षु (संन्यासी) और गृहस्थ तीनों प्रकार के लोग थे। **विष्णु शर्मा** के शिष्य पण्डित

प्रगल्भाचार्य हुए और उनके शिष्य 'श्री श्रीविद्यार्णव तन्त्र' के रचयिता श्री १०८ स्वामी विद्यारण्य हुए। श्री स्वामी जी ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि इस ग्रन्थ की समाप्ति पर श्री महात्रिपुरसुन्दरी जगदम्बा ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर मुझे वर माँगने के लिए कहा, तो मैंने निवेदन किया कि हे माता! यदि आप प्रसन्न हैं, तो जो साधक मेरी पुस्तक में मेरा लिखा गुरुक्रम और मन्त्रों को देखकर श्रद्धापूर्वक मुझे अपना गुरु मानकर योग्य गुरु के अभाव में गुरुसन्तति के ज्ञान से दीक्षा के बिना भी तेरे मन्त्र का जप करें, उनको सब प्रकार की सिद्धि तुम्हारे प्रसाद से प्राप्त हो जाए, यही मेरी तुम्हारे चरणों में प्रार्थना हैं। श्री महात्रिपुरसुन्दरी 'एवमस्तु' कहकर अन्तर्धान हो गई। अतः इस 'गुरुक्रम' के ज्ञानमात्र से जगदम्बा सन्तुष्ट हो जाती हैं। विन्ध्यप्रदेश के सब निवासी मल्लिकार्जुन के शिष्य बने और वहाँ पर उनकी ही शिष्य परम्परा विद्यमान है।

महात्मा त्रिविक्रम के शिष्य उड़ीसा प्रान्त में व्यापत हुए। उड़ीसा का प्राचीन नाम 'जगन्नाथ प्रदेश' था। गौड़, मैथिल और वङ्ग प्रदेश के निवासी श्रीधराचार्य के मतानुयायी हैं अर्थात् उनके द्वारा वहाँ शाक्तधर्म का प्रचार हुआ। विश्वनाथपुरी 'काशी' तथा महाराज रामचन्द्र की पुरी 'अयोध्या' में तथा उनके चारों ओर कपर्दी के द्वारा इस सम्प्रदाय को व्याप्ति हुई अर्थात् वहाँ के निवासी आचार्य कपर्दी के शिष्य हुए। भगवान् शङ्कर के शिष्यों के अतिरिक्त इस सम्प्रदाय को चलानेवाला दूसरा नहीं हुआ।

अतएव लिखा है – **सम्प्रदायो हि नान्योऽस्ति, लोके श्रीशङ्कराद् बहिः।**

॥ कालीकुल के कुलगुरु ॥

१. परमानंदनाथ, २. प्रकाशनन्दनाथ ३. भोगानंदनाथ ४. समयानंदनाथ, ५. गगनानंदनाथ ६. विश्वानंदनाथ ७. भुवनानंदनाथ ८. स्वात्मानंदनाथ (इन आठ गुरुओं के अलावा **मदनानंदनाथ। लीलानंदनाथ** और **महेश्वरानंदनाथ** गुरु कहे हैं।)

(विद्यार्णव तंत्रे) काली मत के अनुसार गुरुक्रम इस प्रकार है-

॥ 'कालीमत' के अनुसार 'गुरुक्रम' ॥

१. **दिव्यौघगुरु – श्री प्रह्लादानन्दनाथ, सनकानन्दनाथ, वशिष्ठानन्दनाथ, कुमारानन्दनाथ, क्रोधानन्दनाथ, शुकानन्दनाथ, ध्यानानन्दनाथ, बोधानन्दनाथ और सुरानन्दनाथ।** ये नौ (नव) दिव्यौघ कुलगुरु हैं। ये द्विनेत्र, द्विभुज तथा वराभय धारण करनेवाले हैं।

२. **सिद्धौघ गुरु – श्री विरूपानन्दनाथ, चिन्मयानन्दनाथ और चित्शक्त्यम्बा** ये तीन 'सिद्धौघ' गुरु हैं।

३. **मानवौघ गुरु – श्री प्रबोधानन्दनाथ, सुवेशानन्दनाथ, अनन्तानन्दनाथ, सितानन्दनाथ, सुधानन्दनाथ, त्रिमूर्त्यानन्दनाथ और झिण्टीशानन्दनाथ** ये सात 'मानवौघ' गुरु हैं।

॥ 'कादिविद्या' के उपासकों की गुरुपरम्परा ॥

१. **दिव्यौघगुरु – परप्रकाश, परशिव, परशक्ति, कौलेश्वर, शुक्लदेव्यम्बा, कुलेश्वर और कामेश्वर्यम्बा।**

२. **सिद्धौघ गुरु – भोगानन्दनाथ, क्लिन्नानन्दनाथ, समयानन्दनाथ और सहजानन्दनाथ।**

३. **मानवौघ गुरु – गगनानन्दनाथ, विश्वानन्दनाथ, विमलानन्दनाथ और प्रियानन्दनाथ** – ये चार 'मानवौघ'

गुरु हैं।

इन सबकी यथास्थान पूजा कर पश्चात् नीचे दी गई 'गुरुसन्तति' की पूजा करे – **कपिल** से लेकर **व्यास** पर्यन्त पूर्वोक्त २१ गुरु सन्तति तथा **करुण, वरुण, विजय, समर, गुण, बल, विश्वम्भर, सत्य, प्रिय, श्रीधर, शारद, सकलेश, विलास, नित्येश, विश्वपुरुष, गोविन्द, विबुध, सिंह, वीर, सोम, दिवाकर, अचल, वाग्भव, नाद, मोहन, सुलभ, शिव, मृत्युञ्जय, वासुदेव, शरण, सनन्दन, आकाश, गोप्रिय, हर्ष, भर्ग, काम, महीधर, ईशान, गणेश, कपाल, भैरव और दिव** – ये ४२ गुरु तथा **गौड़** से लेकर **शङ्कर** तक ये सात गुरु अर्थात् **गौड़पादाचार्य, भगवत गोविन्दाचार्य, शङ्कराचार्य, पद्मपादाचार्य, हस्तामलकाचार्य, तन्त्रोटकाचार्य और वार्तिककार (सुरेश्वराचार्य)**। भगवान् शङ्कराचार्य के शिष्यों की उपाधि भी शङ्कराचार्य थी अतएव अद्यावधि भी चारों पीठों के आचार्य भगवान् शङ्कराचार्य के नाम से व्यवहृत होते हैं। इस सम्पूर्ण **'गुरुसन्तति'** की संख्या मिलाकर ७१ इकहत्तर होती हैं।

॥ गुरु त्रय ॥

श्रीविद्या का यन्त्रार्चन करते समय गुरुमण्डल का पूजन आवश्यक है। दियौघ, सिद्धौघ एवं मानवौघ गुरुओं का पूजन करना चाहिये। इनके साथ अपनी गुरु परम्परा के चार गुरु का पूजन करना चाहिये।

यथा – **१. अमुक स्वगुरुनाथ अमुकाम्बा (गुरुशक्ति) पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

२. अमुक परमगुरुनाथ अमुकाम्बा (गुरुशक्ति) पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३. अमुक परात्परगुरुनाथ अमुकाम्बा (गुरुशक्ति) पादुकां पूजयामि तर्पयामि ननः।

४. अमुक परमेष्ठीगुरुनाथ अमुकाम्बा (गुरुशक्ति) पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१. दिव्यौघ गुरु

दिव्यौघ गुरुक्रम ३ प्रकार से है।

(क) प्रकाशानन्द, परमेशानन्द, परशिवानन्द, कामेश्वरानन्द, मोक्षानन्द, कामानन्द, अमृतानन्द।

(ख) **मन्त्रमहादधौ** – परप्रकाशानन्द, परशिवानन्द, परशक्ति, कौलेश, शुक्लादेवी, कुलेश्वर, कामेश्वरी।

(ग) **विद्यार्णव तन्त्रे** – १५ नित्या क्रम में प्रकाशानंदादिगुरु क्रम लिखा है।

२. सिद्धौघ गुरु

(क) ईशानानन्दनाथ, तत्पुरुषानन्दनाथ, अघोरानन्दनाथ, वामदेवानन्दनाथ, सद्योजातानन्दनाथ का सशक्ति पूजन करें।

(ख) **मंत्रमहोदधौ** – भोगानंद, क्रीडानन्द, समयानन्द, सहजानन्द।

(ग) **विद्यार्णव तन्त्रे** – १५ नित्याओं के अर्चन में ज्ञानानंदादि गुरुत्रय बताये हैं।

३. मानवौघ गुरु –

(क) गगनानंदनाथ, विश्वानंदनाथ, विमलानंदनाथ, मदनानंदनाथ, आत्मानंदनाथ, प्रियानंदनाथ का सशक्ति पूजन करें।

(ख) **मन्त्र महोदधौ** - गगन, विश्व, विमल, मदन, भुवन, लीला, स्वात्मा एवं प्रियानंदादि गुरु कहे हैं।

(ग) **विद्यार्णव तन्त्रे** - १५ नित्याओं के अर्चन में स्वभावानंदादि गुरुत्रय बताये हैं।

॥ श्रीनाथादि गुरुत्रय मण्डल विविध परम्परा ॥

श्रीनाथादि गुरुत्रयमण्डल पूजन अनुष्ठान प्रकाश. भाग ३ में पृष्ठ संख्या १७ पर दिया जा चुका है।

यहां विद्यार्णव निबन्ध मत से पूजन क्रम दिया गया है। विशेष क्रम में कादि, हादि, सादि मन्वादि तथा परोपासकों के दिव्यौघादि गुरुक्रम का वर्णन भी है।

मन्त्र -

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं, सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् । वीरानऽष्ट चतुष्कषष्ठि नवकं वीरावलीं पञ्चकम्, श्रीमन्मालिनि मन्त्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

१. दिव्यौघगुरु - श्रीशिवानन्दनाथ पराशक्त्यम्ब, श्री श्रीसदाशिवानन्दनाथ चिच्छक्त्यम्बा, श्रीईश्वरानन्दनाथ आनंदशक्त्यम्बा, श्रीरुद्रदेवानन्दनाथ इच्छाशक्त्यम्बा, श्रीविष्णुदेवानन्दनाथ ज्ञानशक्त्यम्बा, श्रीब्रह्मदेवानन्दनाथ क्रियाशक्त्यम्बा।

२. सिद्धौघगुरु - श्रीसनकानन्दनाथ, श्रीसनन्दनानन्दनाथ, श्रीसनातनानन्दनाथ, श्रीसनत्कुमारानन्दनाथ, श्रीशौनकानन्दनाथ, श्रीसनत्सुजातानन्दनाथ, श्रीदत्तात्रेयानन्दनाथ, श्रीरेवतानन्दनाथ, श्रीवामदेवानन्दनाथ, श्रीव्यासानन्दनाथ, श्रीशुकानन्दनाथ।

३. मानवौघगुरु - श्रीनृसिंहानन्दनाथ, श्रीमहेन्द्रानन्दनाथ, श्रीमहेशानन्दनाथ, श्रीभास्करानन्दनाथ, श्रीमहेन्द्रानन्दनाथ, श्रीमाधवानन्दनाथ, श्रीविष्णुदेवानन्दनाथ।

॥ कादि क्रम विद्या के उपासकों के दक्षिणामूर्ति संप्रदायानुसार गुरुत्रय ॥

१. दिव्यौघगुरु - परप्रकाशानन्दनाथ, परशिवानन्दनाथ, पराशक्त्यम्बानन्दनाथ, कौलेश्वरानन्दनाथ, शुक्लदेव्याम्बानन्दनाथ, कुलेश्वरानन्दनाथ, कामेश्वर्यम्बानन्दनाथ, कौलेश्वरानन्दनाथ।

२. सिद्धौघगुरु - भोगानन्दनाथ, क्लिन्नानन्दनाथ, समयानन्दनाथ, सहजानन्दनाथ।

३. मानवौघगुरु - गगनानन्दनाथ, विश्वानन्दनाथ, विमलानन्दनाथ, मदनानन्दनाथ, भुवनानन्दनाथ, लीलानन्दनाथ, स्वात्मानन्दनाथ, प्रियानन्दनाथ।

ज्ञानार्णव तन्त्र के मत से षोडशी उपासना में भी ओघत्रय की यही परम्परा है।

॥ हादिविद्योपासकानां परम्परा ॥

१. दिव्यौघगुरु - परमशिवानन्दनाथ, कामेश्वर्यम्बानन्दनाथ, दिव्यौघानन्दनाथ, महौघानन्दनाथ, सर्वानन्दनाथ, प्रज्ञादेव्यम्बानन्दनाथ, प्रकाशानन्दनाथ।

२. सिद्धौघगुरु - दिव्यानन्दनाथ, चिदानन्दनाथ, कैवल्यानन्दनाथ, सिद्धानन्दनाथ, महोदयानन्दनाथ, अनुदेव्यम्बानन्दनाथ।

****

३. मानवौघगुरु – परानन्दनाथ, मनोहरानन्दनाथ, स्वात्मानन्दनाथ, प्रतिभानन्दनाथ, कमलानन्दनाथ, रामानन्दनाथ, विश्वानन्दनाथ (विश्वशक्त्यानन्दनाथ), चिदानन्दनाथ।

|| षोडश्युपासकानां परम्परा ||

विद्यार्णव निबन्धे

१. दिव्यौघ गुरु – व्योमस्थाम्बा, व्योमचारिण्यम्बा, व्योमाकाम्बा, व्योमेश्यम्बा, व्योमातीताम्बा।

२. सिद्धौघ गुरु – उमानाकाशानन्दनाथ, इन्द्वाकाशानन्दनाथ, अनाहताकाशानन्दनाथ, ध्वनिमात्राकाशानन्दनाथ, ध्वन्याकाशानन्दनाथ, शक्त्याकाशानन्दनाथ, व्यापकाशानन्दनाथ, समनाकाशानन्दनाथ, विन्द्वाकाशानन्दनाथ।

३. मानवौघ गुरु – परमात्मानन्दनाथ, विश्वानन्दनाथ, प्रसन्नानन्दनाथ, चिदानन्दनाथ, सम्भ्रमानन्दनाथ, लीलानन्दनाथ, वाग्भवानन्दनाथ, चिन्मुद्रानन्दनाथ, शांभवानन्दनाथ।

|| मन्वाविद्यानां परम्परा ||

१. दिव्यौघगुरु – अघोरानन्दनाथ, पुरुषानन्दनाथ, सिद्धानन्दनाथ, मोक्षानन्दनाथ, कामेश्वर्याम्बानन्दनाथ, परविमर्शानन्दनाथ, परप्रकाशनन्दनाथ, अमृतानन्दनाथ।

२. सिद्धौघगुरु – प्रकाशानन्दनाथ, उत्तमानन्दनाथ, सिद्धौघानन्दनाथ, सदानन्दनाथ।

३. मानवौघगुरु – शंकरानन्दनाथ, गोविन्दानन्दनाथ, सिद्धानन्दनाथ, सर्वानन्दनाथ, सर्वज्ञानन्दनाथ, परमानन्दनाथ, उत्तरानन्दनाथ।

|| परोपासकानामोघत्रयम् ||

१. दिव्यौघगुरु – पराभट्टारिकानन्दनाथ, श्रीकण्ठानन्दनाथ, अघोरानन्दनाथ।

२. सिद्धौघ गुरु – त्र्यम्बकानन्दनाथ, क्रोधानन्दनाथ, शक्तिधरानन्दनाथ।

३. मानवौघ गुरु – योगानन्दनाथ, श्रीरामानन्दनाथ, ज्ञानानन्दनाथ, मधुरादेव्यम्बानन्दनाथ, संविदानन्दनाथ, वीरानन्दनाथ, प्रतिभादेव्यम्बानन्दनाथ, आनन्दानन्दनाथ।

गुरुत्रयम् – १. श्रीमदुमाम्बासहित श्रीविश्वनाथानंदनाथ गुरु।
२. श्रीमदन्नपूर्णा सहित श्रीविश्वेरानंदनाथ परमगुरु।
३. श्रीमत्पराम्बा सहित श्रीपरमात्मानन्दनाथ श्री परमेष्ठिगुरु।

गणपतिम् – श्रीमहागणपति।

पीठत्रयम् – १. श्रीजालन्धरपीठरुद्रात्मकशक्त्यम्ब।
२. श्रीपूर्णगिरिपीठ विष्णुवात्मकशक्त्यम्ब।
३. श्रीकामगिरि पीठ ब्रह्मात्मकशक्त्यम्ब।

भैरव – १. श्रीभ्रमरभास्करभैरव। २. श्रीनामोनिर्मलभैरव। ३. श्रीचण्डभैरव। श्रीरविभक्ष्यभैरव (रविभैरव आम्नाय)। ५. श्रीएकात्मकभैरव (एकान्त आम्नाय)। ६. श्रीफट्कारभैरव। ७. श्रीषट्चक्र भैरव। ८. श्रीमन्थानभैरव।

सिद्धौघ गुरु – १. श्रीमहादर्मनाम्बा सिद्ध, २. श्रीविधिशालीनाम्बा सिद्ध, ३. श्रीखराननाम्बा सिद्ध, ४. श्रींकराल्याम्बा सिद्ध, ५. श्रीभीमाम्बा सिद्ध, ६. श्रीत्रिबाणाम्बा सिद्ध (शवीवीजाम्बा आम्नाय), ७. श्रीकरालिकाम्बा सिद्ध, ८. श्रीसुन्दर्यम्बा सिद्ध।

वटुक त्रय – १. श्रीविरंचिबटुक, २. श्रीचित्रवटुक, ३. श्रीस्कंदवटुक।

पदयुगम् – १. विमर्श चरणम्, २. श्रीप्रकाशचरणम्।

दूतीक्रम – १. श्रीपद्मयोनि सिद्धनाथाम्बा दूती (आम्नाय सप्तविंशति रहस्य में केवल आठ दूतियां प्रथम व द्वितीय के अलावा है।)

२. श्रीपद्मयोनि सिद्धनाथाम्बा दूती, ३. श्रीशंखयोनि सिद्धनाथाम्बा दूती, ४. श्रीदिव्ययोनिसिद्धनाथाम्बा दूती, ५. श्रीमहायोनिसिद्धनाथाम्बा दूती, ६. श्रीमहायोन्याम्बासिद्धनाथाम्बा दूती, ७. श्रीयोनिसिद्धनाथाम्बा दूती, ८. श्रीयोन्यम्बा दूती, ९. श्रीशंखयोन्याम्बादूती, १०. श्रीसिद्धयोन्यम्बा दूती।

मण्डलम् – १. सोममण्डल, २. अग्निमण्डल, ३. सूर्यमण्डल।

वीराऽनष्ट – १. श्रीसृष्टिवीर भैरव, २. श्रीकालाग्निरुद्रवीर भैरव, ३. श्रीमार्तण्डवीर भैरव, ४. श्रीपरमार्कवीर भैरव, ५. श्रीभद्रवीर भैरव, ६. श्रीमृत्युवीर भैरव, ७. श्रीयमवीर भैरव, ८. श्रीरक्तवीर भैरव, ९. श्रीसंहारवीर भैरव, १०. श्रीस्थितिवीर भैरव।

चतुष्कषष्टि – श्रीमंगलनाथ, श्रीचण्डिकानाथ, श्रीकन्तुकानाथ, श्रीपटह्यनाथ, श्रीकूर्मनाथ, श्रीधनदानाथ, श्रीगन्धनाथ, श्रीगगननाथ, श्रीमतंगनाथ, श्रीचम्पकानाथ, श्रीकैवर्तनाथ, श्रीमातंगनाथ, श्रीसूर्यभक्ष्यनाथ, श्रीनमोभक्ष्यनाथ, श्रीस्तौतिकानाथ, श्रीरूपिकानाथ, श्रीदष्ट्रापूज्यनाथ, श्रीधूम्राक्षनाथ, श्रीज्वालानाथ, श्रीगान्धारनाथ, श्रीगगनेश्वरनाथ, श्रीमायानाथ, श्रीमहामायानाथ, श्रीनित्यानाथ, श्रीशान्तानाथ, श्रीविश्वानाथ, श्रीकामिनीनाथ, उमानाथ, श्रीश्रियानाथ, श्रीसुभगानाथ, श्रीसर्वगानाथ, श्रीलक्ष्मीनाथ, श्रीविद्यानाथ, श्रीभीमानाथ, श्रीमीनानाथ, श्रीअमृतानाथ, श्रीचन्द्रनाथ, श्रीअंतरिक्षनाथ, श्रीसिद्धानाथ, श्रीश्रद्धानाथ, श्रीअनंतानाथ, श्रीशम्बरानाथ, श्रीउल्कनाथ, श्रीत्रैलोक्यानाथ, श्रीभीमानाथ, श्रीराक्षमीनाथ, श्रीमलिनानाथ, श्रीप्रगचण्डानाथ, श्रीअनंगविधिनाथ, श्रीरविनाथ, श्रीअनाभिमतानाथ, श्रीनंदिनीनाथ, श्रीअभिमतानाथ, श्रीसुन्दरीनाथ, श्रीविश्वेशानाथ, श्रीकालनाथ, श्रीमहालनाथ, श्रीअभयानाथ, श्रीविकारनाथ, श्रीमहाविकारनाथ, श्रीसर्वगानाथ, श्रीसकलानाथ, श्रीपूतनानाथ, श्रीषार्वरीनाथ, श्रीव्योमानस्थनाथ।

नवकम् – १. सर्वसंक्षोभणी, २. सर्वयोनि, ३ सर्ववीजेश्वरि, ४. सर्वखेचरी, ५. सर्वमहाङ्कुशे ६. सर्वोन्मादिनी, ७. सर्ववशंकरी, ८. सर्वाकर्षिणी, ९. सर्वविद्राविणी।

(आम्नाय सप्तविंशति के अनुसार)

१. मुद्रानवकाम्बा, २. (क) महिषमर्दिनी (ख) जयदुर्गाम्बा (ग) वनदुर्गाम्बा। ३. ताराम्बा, ४. महाकाल्यम्बा, ५. वाग्वादिन्यम्बा, ६. मिश्राम्बा, ७. अश्वारूढ़ाम्बा, ८. महार्धाम्बा, ९. तुरीयाम्बा।

वीरावली – १. सदाशिववीरावली, २. श्रीईश्वरवीरावली, ३. श्रीरुद्रवीरावली, ४. श्रीविष्णुवीरावली, ५. श्रीब्रह्मवीरावली।

ग्रन्थों में ललिता सुन्दरी की पंच-पंचिका विद्याओं का पूजन क्रम भी लिखा है। परन्तु गुरु मन्त्र में ५ ही वीरावली का उल्लेख है।

अन्य वीरावली – १. पंचलक्ष्मीवीरावली, २. पंचकोषविद्या वीरावली, ३. पंचकल्पलता वीरावली, ४. पंचकामदुधा वीरावली, ५. पंचरत्नेश्वरी वीरावली। इनका वर्णन श्री त्रिपुर सुन्दरी पूजन प्रयोग में है।

श्रीमन्मालिनी – मातृकावर्ण अं आं.......हं लं क्षं तक।

मन्त्रराज – नृसिंह मन्त्र।

॥ गुरुपादुका मंत्र साधना ॥

समस्त मंत्रों की सिद्धि हेतु गुरु पादुका मंत्र का जप करना चाहिये। सहस्त्रसार में '' **श्री गुरवे नमः** '' या '' **गौं गुरवे नमः** '' का जप करे। पश्चात् ''वृहत् पादुका'' मंत्र का जप करे।

ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं हसौः श्री अमुकानन्दनाथ श्री अमुकीदेव्यम्बा श्री गुरु पादुकां पूजयामि नमः से पादुका पूजन व ध्यान करे। पुरुष गुरु कवच या स्त्री गुरु कवच (गुरु यदि स्त्री हो तो) स्तोत्र पढ़ें।

विनियोगः – ॐ अस्य श्री गुरुपादुका मंत्रस्य श्री परमशिव ऋषिः विराट् छन्दः श्रीगुरुपरमात्मा देवता हं बीजं राः शक्तिः **क्रों कीलकं श्री गुरु प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः – श्रीपरमशिव ऋषये नमः शिरसि, विराट् छन्दसे नमः मुखे, श्रीगुरुपरमात्मा देवतायै नमः हृदि. हं बीजाय नमः गुह्ये, राः **शक्तये नमः पादयोः, क्रों कीलकाय नमः नाभौ, श्रीगुरुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यास – ह्सां हृदयाय नमः, **ह्सीं शिरसे स्वाहा, ह्सूं शिखायै वषट्। ह्सैं कवचाय हुं। ह्सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्सः अस्त्राय फट्।**

श्वेतं श्वेतविलेप माल्यवसनं वामेन रक्तोत्पलं, बिभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाश्लिष्टं प्रसन्नाननम् । हस्ताभ्यामभयं वरं दधतं शुंभस्वरूपं परं, हालालोहित लोचनोत्पलयुगं ध्याये शिरस्थं पदम् ॥

उसके बाद गुरु चतुष्टय की पादुका का पूजन अपने सहस्त्रार में करे। गुरु परम्परा के नाम याद हो तो अमुक एवं अमुकाम्बा की जगह गुरु एवं उनकी शक्ति का प्रयुक्त करे।

१. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं श्रीगुरु** (अमुकानंदनाथ) **तच्छक्ति** (अमुकाम्बा) **श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।**

२. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं श्रीपरमगुरु** (श्री अमुकानंदनाथ) **तच्छक्ति** (अमुकाम्बा) **श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।**

३. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं श्री परापर गुरु** (श्री अमुकानंदनाथ) **तच्छक्ति** (अमुकाम्बा) **श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।**

४. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं श्री परमेष्ठी गुरु** (श्री अमुकानंदनाथ) **तच्छक्ति** (अमुकाम्बा) **श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।**

॥ गुरुध्यानम् ॥

पद्मासीनं स्मितमुखं वराभय कराम्बुजम् ।
शुक्लमालाम्बरधरं शुक्लगंधानुलेपनम् ॥
वामोरुस्थितया रक्तशक्त्यालिङ्गित विहम् ।
तया स्वदक्षहस्तेन धृत चारु कलेवरम् ॥
वामेनोत्पल धारिण्या सुरक्तवसन स्त्रजा ।
सिक्त रक्तप्रभां विभ्रच्छिव दुर्गा स्वरूपिणम् ॥१॥
ध्यायेच्छिरसि शुक्लाब्जे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम् ।
श्वेताम्बरपरिधानं श्वेतमाल्यानुलेपनम् ॥
वराभयकरं शांतं करुणामय विग्रहम् ।
वामेनोत्पल धारिण्या शक्त्यालिङ्गित विग्रहम् ।
स्मेराननं सुप्रसन्नं साधकाभीष्ट दायकम् ॥२॥

तंत्र ग्रंथों में पराम्परागत गुरु के वर्ण भिन्न भिन्न बताये हैं। शाक्तों के लिये श्वेतवर्ण, शैवों के लिये गौरवर्ण। सौरों के लिये पीतवर्ण। गापापत्यों के लिये रक्तवर्ण तथा वैष्णवों के लिये श्याम वर्ण के गुरु का स्मरण करना चाहिये।

॥ स्त्रीगुरु ध्यानम् ॥

गुरु यदि स्त्री हो तो इस प्रकार ध्यान करे-

सहस्त्रारे महापद्मे किञ्जल्कगणशाभिते ।
प्रफुल्लपद्म पत्राक्षीं घनपीन पयोधराम् ॥
प्रसन्नवदनां क्षीणमध्यां ध्यायेच्छिवां गुरुम् ।
पद्मरागसमाभासां रक्तवस्त्र सुशोभनाम् ॥
रक्तकङ्कणपाणिं च रक्तनूपुरशोभिताम् ।
शरद्विन्दुप्रतीकाश रक्तोद्भासित कुण्डलाम् ।
स्वनाथवामभागस्थं वराभय कराम्बुजाम् ॥

॥ पादुका मंत्र साधना विधि ॥

१. ''**ऐं**''मन में इस बीज का उच्चारण करते हुए श्रीगुरुदेव के बगल में वाग्भवबीज '**ऐं**' के स्वरूप को देखे।

२. ''**ह्रीं**'' मन में यह बीज उच्चारण करते हुए श्रीगुरुदेव के ऊपर '**ह्रीं**' के स्वरूप का दर्शन करे।

३. "**श्रीं**" मन में यह बीज बोलते हुए श्री गुरुशक्त्यम्बा (श्रीगुरुशक्ति अम्बा) के दर्शन करे।

४. '**ह्सख्फ्रें**' श्री गुरुदेव की कटि (कमर) से ऊपर के अङ्ग को देखते हुए मन ही मन में इस बीज का उच्चारण करे।

५. '**ह्सक्षम्लव्र्यूं**' श्री गुरुदेव के कटि के नीचे श्री चरणों तक के शरीर को देखते हुए इस बीज का उच्चारण करे।

६. '**सृह्स्ख्फ्रें**' श्रीगुरुशक्त्यम्बा माँ की कटि से ऊपर के अङ्ग को देखते हुये मन में इस बीज का उच्चारण करे।

७. '**सृह्क्ष्म्ल्व्र्यीं**' श्रीगुरुशक्त्यम्बा माँ की कटि से नीचे श्री चरणों तक शरीर को देखते हुए मन में इस बीज का उच्चारण करे।

८. '**हंसः**' श्री गुरुपीठ हंस को देखते हुए मन में उच्चारण करे।

९. '**सोऽहं**' हंस के नीचे नाद को देखते हुए मन में उच्चारण करे।

१०. '**स्हौः**' नाद के नीचे बिन्दु को देखते हुए मन में उच्चारण करे।

११. '**सृहौः**' सहस्रदल पद्म (हजार पंखुड़ी के कमल) को देखते हुए मन में इस बीज का उच्चारण करे।

१२. '**श्रीगुरुशक्त्यम्बासहित श्री श्रीनाथदेवश्रीपादुकां**' श्रीगुरुशक्त्यम्बा एवं श्रीगुरुदेव के दर्शन कर '**हंस**' को देखते हुए मन में उक्त मन्त्र का उच्चारण करे तथा मन ही मन प्रणाम करते हुए, मन में ही '**पूजयामि तर्पयामि नमः**' का उच्चारण करे। यहाँ यह स्मरण रक्खे कि प्रणाम करने में सिर नहीं हिलना है। यह एक बार हुआ। इसी प्रकार जितनी बार जप कर सके, करे। कम से कम तीन, पाँच, सात, नौ या ग्यारह बार तो करना ही चाहिए, किन्तु पहले दिन जितनी बार करे, उतनी ही बार प्रतिदिन करना होगा। इस क्रिया के बाद 'योनिमुद्रा' से श्रीगुरुदेव के दाहिने हाथ में भावनापूर्वक 'जपसमर्पण' कर देना चाहिए।

॥ गुरु परम्परा ॥

॥ १. कालीकुल के साधकों के लिए पूजाविधि ॥

पूजा स्थान पर सिन्दूर से विन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, वृत्त, अष्टदल, तीन वृत्त, भूपुरात्मक यन्त्र लिखे।

भूपुर के चार द्वारों में गन्धाक्षतपुष्पों से क्रमशः – **१. गणेश**, **२. धर्मराज**, **३. वरुणदेव** और **४. कुबेर** का पूजन करे।

अष्टदलों में उसी प्रकार क्रमशः – **१. असिताङ्ग**, **२. रुरु**, **३. चण्ड**, **४. क्रोधेश**, **५. उन्मत्त**, **६. कपाली**, **७. भीषण** और **८. संहार भैरवों** का पूजन करे।

आठ त्रिकोणों में पूर्ववत् क्रमशः – **१. परमानन्दनाथ**, **२. प्रकाशानन्दनाथ**, **३. भोगानन्दनाथ**, **४. समयानन्दनाथ**, **५. गगनानन्दनाथ**, **६. विश्वानन्दनाथ**, **७. भुवनानन्दनाथ**, **८. स्वात्मानन्दनाथ** इन आठ कुलगुरुओं का पूजन करे।

मध्य में त्रिकोण के तीनों कोणों में क्रमशः – **१. मदनानन्दनाथ**, **२. लीलानन्दनाथ और ३. महेश्वरानन्दनाथ** का पूजन करे। तदनन्तर केन्द्रस्थ बिन्दु में गुरुदेव का पूजन करे। इसके बाद उसी विन्दु के ऊपर आसन बिछा कर श्रीगुरुदेव को सादर लाकर बिठाये। उनका विधिवत् पूजन कर उनकी अनुमति लेकर हृदय में अपने मूलमन्त्र से **दक्षिण कालिका** की पूजा कर **महाकाल** का पूजन करे। फिर वहीं **कामदेव** और **कामेश्वरी** का पूजन करे। अपने शिर में **गुरु**, **परम गुरु**, **परात्पर गुरु** और **परमेष्ठि गुरु** का पूजन कर सम्मुख विराजमान गुरुदेव को पुष्पमाला अर्पित

कर दक्षिणा प्रदान करे और उत्तम भोजन एवं पेय से उन्हें तृप्त कर उनके शुभाशीर्वाद प्राप्त कर।

॥ २. श्रीकुल के साधकों के लिए पूजाविधि॥

दो अधः त्रिकोण व एक ऊर्ध्व त्रिकोण अनुरूप नौ त्रिकोणात्मक यन्त्र पूजा स्थान पर बिल्व या अनार की कलम से रक्तचन्दन से अंकित करे। मध्य त्रिकोण के विन्दु १ स्थान एवं चारों ओर के आठों त्रिकोणों को लक्ष्य कर निम्न मन्त्र से पुष्पांजलि अर्पित करे-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परौघेभ्यो नमः- फिर विन्दुस्थान में महापादुका का पूजनतर्पण निम्न मन्त्र से करे-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयींस्हौः श्रीविद्यानन्दनाथात्मक चर्यानन्दनाथ श्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा श्रीमेधादक्षिणामूर्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। अब मध्य त्रिकोण के बांएँ कोण से प्रारम्भ कर पूर्वस्थ रेखा में निम्न मन्त्रों से पूजन तर्पण करे। प्रत्येक मन्त्र के आदि में

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं' (४) और अन्त में **'श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः'** जोड़ ले। यथा - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उड्डीशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ४ प्रकाशानन्दनाथ०। ४ विमर्शानन्दनाथ०। ४ आनन्दानन्दनाथ०**। अब इसी प्रकार दाएँ कोण से प्रारम्भ कर दक्षिण की रेखा में पूर्ववत् निम्न मन्त्रों से पूजन तर्पण करे - **४ षष्ठीशानन्दनाथ०। ४ ज्ञानानन्दनाथ। ४ सत्यानन्दनाथ। ४ पूर्णानन्दनाथ।**

तब अपने सम्मुख कोण से प्रारम्भ कर उत्तर (बाँई) रेखा में पूर्ववत् निम्न मन्त्रों से पूजनतर्पण करे - **४ मित्रेशानन्दनाथ०। ४ स्वभावानन्दनाथ०। ४ प्रतिभानन्दनाथ०। ४ सुभगानन्दनाथ०**। इसके बाद मध्य त्रिकोण की पूर्वस्थ रेखा के ऊपर तीन रेखाओं में क्रमशः दिव्यौघ, सिद्धौघ और मानवौघ गुरुओं का पूजनतर्पण करे।

पहले 'ओघत्रय' के प्रति निम्न मन्त्र से पुष्पांजलि अर्पित करे - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यौघसिद्धौघ मानवौघेभ्यो नमः।** अब नीचे से प्रथम रेखा में पूर्ववत् मन्त्रों से दिव्यौघ गुरुओं का पूजन तर्पण करे - **४ परप्रकाशानन्दनाथ। ४ परशिवानन्दनाथ। ४ पराशक्त्यम्बा०। ४ कौलेश्वरानन्दनाथ०। ४ शुक्लदेव्यम्बा०। ४ कुलेश्वरानन्दनाथ। ४ कामेश्वर्यम्बा०।**

द्वितीय रेखा में पूर्ववत् निम्न मन्त्रों से सिद्धौघ गुरुओं का पूजन तर्पण करे - **४ भोगानन्दनाथ०। ४ क्लिन्नानन्दनाथ०। ४ समयानन्दनाथ०। ४ सहजानन्दनाथ०**॥ सबसे ऊपर स्थित तृतीय रेखा में पूर्ववत् निम्न मन्त्रों से मानवौघ गुरुओं का पूजनतर्पण करे - **४ गगनानन्दनाथ०। ४ विश्वानन्दनाथ०। ४ विमलानन्दनाथ०। ४ मदनानन्दनाथ०। ४ भुवनानन्दनाथ०। ४ प्रियानन्दनाथ०। ४ श्रीशङ्करभगवत्पाद०**। इसके बाद प्रथम रेखा में अपने 'परमेष्ठिगुरु' का, द्वितीय रेखा में अपने 'परमगुरु' का और तृतीय रेखा में अपने 'गुरुदेव' का उनके नाममन्त्रों से पूजनतर्पण करे।

॥ ऊर्ध्वाम्नायोक्त सिद्धवीरौघ गुरुकवचम्॥

॥ गुरु ध्यानम्॥

ध्यायेच्छिरसि शुक्लाब्जे, द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम् ।
श्वेताम्बरपरीधानं, श्वेतमाल्यानुलेपनम् ॥१॥

वराभयकरं शान्तं, करुणामयविग्रहम् ।
वामेनोत्पलधारिण्या, शक्त्यालिङ्गितविग्रहम् ॥२॥
स्मेराननं सुप्रसन्नं, साधकाभीष्टसिद्धिदम् ।

॥ कवच स्तोत्रम् ॥

परनाथादिनाथश्च, ब्रह्मरन्ध्रे सहस्रके । दिव्यचक्रे च मे पातु, सर्वविश्वेश्वरेश्वरः ॥१॥
श्रीनाथः पातु शिरसि, सिद्धिदले तु श्रीपतिः । वाग्देवी दुर्गनाथश्च, दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥२॥
षोडशारे सदा पातु, कण्ठदेशे स्वरे तथा । ईश्वरो भैरवीनाथो, कालमीशानभैरवः ॥३॥
द्वादशारे च मे पातु, वीरभद्रो कालान्तकृत् । दशारे नाभि देशे च, रुरुनाथश्च भैरवः ॥४॥
परात्परगुरुर्देवो, चक्रनाथो सदाऽवतु । षड्दले कामनेत्रे च कामदेवो सदाऽवतु ॥५॥
मत्स्येन्द्रो मत्स्यनाथश्च, रक्षतु चाण्डकोषके । गोरक्षश्च वेदपद्मे, आधारे पातु मे सदा ॥६॥
चतुरारे भर्तृहरिः गुरुर्मे सर्वचक्रके । शीर्षादौ गुदपर्यन्तं, पातु नाथो गुरुश्च मे ॥७॥
पादादिशीर्षपर्यन्तं, विश्वनाथो विभुर्गुरुः । इष्टो इष्टपतिर्नाथो, विश्वसृक् पातु मे सदा ॥८॥

[विश्वसार तन्त्रे]

॥ इति ॥

॥ अथ मातृका पटल॥

सभी प्रधान देवताओं की अपनी अपनी कलामातृकायें होती है, उनका ज्ञान, स्मरण एवं स्वशरीर में न्यास करने से विद्या की जागृति होती है। प्रत्येक देवता की ५० मातृकाओं का न्यास करने हेतु "**वहिर्मातृकान्यास**" की जानकारी आवश्यक है। जो-जो स्थान वहिर्मातृकान्यास में बताये है उन-उन स्थानों पर प्रत्येक मातृका का न्यास करे। समयाभाव होतो उनमातृकाओं की नामावलि का पठन करें।

अं आं......कं खं.......शं षं सं हं लं क्षं इत्यादि वर्ण मातृकाओं के साथ प्रत्येक नामावली को चतुर्थी संबोधन युक्त बहिर्मातृका न्यास के स्थानों में न्यास करें।

॥ प्रयोग विधि ॥

(ॐ मातृका) अं प्रतिष्ठायै नमः शिरसि। आं विद्यायै नमः मुखे। ञं सिद्धयै नमः वाम कराङ्गुल्यग्रे। टं जरायै नमः दक्षोरुमूले। नं दीर्घायै नमः वाम पादाङ्गुल्यग्रे। पं तीक्ष्णायै नमः दक्षपार्श्वे। लं अरुणायै नमः हृदयादि शिरसि। क्षं असितायै नमः हृदयादि मुखे।

प्रत्येक देवता की मातृका की नामावलि का पुस्तक में अवलोकन करे।

आत्मशुद्धि के लिये न्यास करना जरुरी होता है। अन्तर्मातृका न्यास से चक्रशुद्धि तथा बहिर्मातृकान्यास से प्रत्येक अङ्ग में देवताओं की कला का न्यास होता है

॥ अन्तर्मातृकान्यासः ॥

इसके बाद मातृकान्यास करें। पहले अन्तर्मातृकान्यास करें। यथा -

विनियोगः - अस्य अन्तर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं अमुकदेवताया पूजाङ्गत्वेन (श्रीबालात्रिपुरापूजाङ्गत्वेन) देवभावाप्तये अन्तर्मातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि। इं गायत्री छन्दसे नमः ईं मुखे। उं सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये। एं हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये। ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः। अ अव्यक्तकीलकाय नमः अः ना। श्री बालात्रिपुरा पूजांगत्वेन देवभावाप्तये अन्तर्मातृकान्यासे विनियोगाय नमः अंजलौ।

प्राणायाम् - अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः इन स्वरों से पूरक। **कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं इन व्यंजनों से कुम्भक और यं रं लं वं शं षं सं हं** इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करें।

करन्यासः – अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्गन्यास – अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम्। ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥ ध्यानम् ॥

आधारे लिङ्गनाभौ प्रकटित हृदये तालुमूले ललाटे ।
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश दशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के ॥
वासान्ते वालमध्ये डफकठ सहिते कण्ठदेशे स्वराणाम् ।
हक्षौ तत्त्वार्थचिन्त्यं सकल दलगतं वर्णरूपं नमामि ॥
शारत्पूर्णेन्दुशुभ्रां सकललिपिमयीं लोलरक्तत्रिनेत्राम् ।
शुक्लालंकारभासां शशिमुकुट जटाभारहार प्रदीप्ताम् ॥
विद्यास्त्रक् पूर्णकुम्भान् वरमपि दधतीं शुद्ध पट्टाभिराढ्याम ।
वागदेवी पद्मपत्रां कुचभर नमितां चिन्तयेत् साधकेन्द्रः ॥

यह अन्तर्मातृकान्यास मेरुदण्ड में स्थित छहों चक्रों में करें। यथा –

॥ न्यासः ॥

कठे धूम्रवर्णे षोडशदले विशुद्धे – **ॐ अं नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ लृं नमः। ॐ लॄं नमः। ॐ एं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः।**

हृदये रक्तवर्णे द्वादशदले अनाहते – **ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः।**

नाभौ मेघवर्णे दशदले मणिपूरे – **ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः।**

लिङ्गमूले विद्युद्वर्णे षट्दले स्वाधिष्ठाने – **ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः।**

सुवर्णवर्णे चतुर्दले मूलाधारे – **ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः।**

भ्रूमध्ये श्वेतवर्णे द्विदले आज्ञाचक्रे – **ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः।**

॥ बहिर्मातृका (सृष्टि) न्यास ॥

इसके बाद बहिर्मातृकान्यास करें। पहले सृष्टिमातृका न्यास करें।

मतान्तरे सृष्टिन्यास स्त्री को एवं स्थितिन्यास पुरुष को करना चाहिये। बहिर्मातृकान्यास सृष्टि, स्थिति और संहार के

क्रम से तीन प्रकार का होता है। यह किसी मत से यह ब्रह्मचारी सृष्टिन्यास से प्रारंभ करते हैं परन्तु गृहस्थ संहारक्रम से न्यास करते हैं। परन्तु सृष्टिन्यास सर्वत्र प्रचलित है।

विनियोगः – **अस्य बहिर्मातृकान्यासे सृष्टिमातृकान्यास मन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः गायत्री छन्दः सृष्टिमातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं अमुकदेवताया (श्रीबालात्रिपुरा) पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये सृष्टिमातृकान्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास : – **ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। सृष्टिमातृका सरस्वती देवतायै नमः हृदि। हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये। स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः। अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ। श्रीबालात्रिपुरा पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये सृष्टिमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

प्राणायाम – **अं.......अः इन स्वरों से पूरक। कं.......मं** इन व्यंजनों से **कुम्भक और यं......क्षं** इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करें।

करन्यासः – **अं कं......ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं....ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। उं टं....णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। एं तं....नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ओं पं....मं औं कनिष्ठाकाभ्यां नमः। अं यं....क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

षडङ्गन्यास – **अं कं....ङं आं हृदयाय नमः। इं चं....ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं....णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं....नं ऐं कवचाय हुम्। ओं पं....मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं....क्षं अः अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

अर्द्धोन्मुक्त शशांक कोटिसदृशीमापीन-तुङ्गातनीम् । चन्द्रार्द्धाङ्कितशेखरां मधुदलैरालोलनेत्रत्रयाम् ॥ विभ्राणामनिशं वरं जपवटीं शूलं कपालं करैः । आद्यां यौवनगर्वितां लिपितनुं वागीश्वरीमाश्रये ॥

॥ न्यासः ॥

अं नमः ललाटे-मध्यमा+अनामिका

आं मुखवृत्ते-तर्जनी+मध्यमा+अनामिका

इं नमः दक्षनेत्रे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका

ईं नमः वामनेत्रे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका

उं नमः दक्षकर्णे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका

ऊं नमः वामकर्णे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका

ऋं नमः दक्षनासायाम्-अंगुष्ठा+कनिष्ठा

ॠं नमः वामनासायाम्-अंगुष्ठा+कनिष्ठा

लृं नमः दक्षगण्डे-तर्जनी+मध्यमा+अनामिका

लृ नमः वामगण्डे-तर्जनी+मध्यमा+अनामिका

एं नमः ऊर्ध्वओष्ठे-मध्यमा

ऐं नमः अधोओष्ठे-मध्यमा

ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ-अनामिका

औं नमः अधो दन्तपंक्तौ-अनामिका

अं नमः शिरसि-मध्यमा

अः नमः मुखे-अनामिका (अनामिका+मध्यमा)

कं नमः दक्षबाहुमूले-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

खं नमः दक्षकूर्परे--मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

गं नमः दक्षमणिबन्धे-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

घं नमः दक्षकरतले-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

ङं नमः दक्षकराग्रे-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

चं नमः वामबाहुमूले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

छं नमः वामकूर्पर-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

जं नमः वाममणिबन्धे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

झं नमः वामकरतले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

ञं नमः वामकराग्रे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

टं नमः दक्षोरुमूले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

ठं नमः दक्षजानुनि-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

डं नमः दक्षगुल्फे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

ढं नमः दक्षपादतले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

णं नमः दक्षपादाग्रे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

तं नमः वामोरुमूले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

थं नमः वामजानुनि-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

दं नमः वामगुल्फे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

धं नमः वामपादतले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

नं नमः वामपादाग्रे--कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

पं नमः दक्षपार्श्वे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

फं नमः वामपार्श्वे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

बं नमः पृष्ठे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

भं नमः नाभौ-अंगुष्ठ+कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा

मं नमः जठरे-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

यं त्वगात्मने नमः हृदि-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

रं असृगात्मने नमः दक्षांशे-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

लं मांसात्मने नमः ककुदि-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

वं मेदात्मने नमः वामांशे-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष करांगुल्यन्तम्।

षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम करांगुल्यन्तम्।

सं शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्ष पादान्तम्।

हं जीवात्मने नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम्।

लं परमात्मने नमः हृदयादि कुक्षौ।

क्षं ज्ञानात्मने नमः हृदयादि मुखे।

अब **स्थितिमातृकान्यास** करें। यथा -

॥ स्थितिमातृकान्यास ॥

विनियोगः - अस्य बहिर्मातृकान्यासे स्थितिमातृकान्यासमन्त्रस्य विष्णु ऋषिः गायत्रीछन्दः स्थितिमातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं अमुक देवताया (श्रीबालात्रिपुरा) पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये स्थितिमातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - विष्णवे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। स्थितिमातृका सरस्वती देवतायै नमः हृदि। हलो बीजाय नमः गुह्ये। स्वराः शक्तये नमः पादयोः। अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ। श्रीबालात्रिपुरापूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये स्थितिमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ

प्राणायाम - अं.......अः इन स्वरों से **पूरक**। कं.......मं इन व्यंजनों से **कुम्भक** और यं......क्षं इन वर्णों से **रेचक** प्राणायाम करें।

करन्यासः - अं कं......ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं....ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहाः। उं टं....णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट्। एं तं....नं ऐं अनामिकाभ्यां हुं। ओं पं....मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अं यं....क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्गन्यास - अं कं....ङं आं हृदयाय नमः। इं चं....ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं....णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं....नं ऐं कवचाय हुं। ओं पं....मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं....क्षं अः अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

पक्षीन्द्रासनसंस्थितां भगवतीं श्यामां पिशंगावृताम् । शखं चक्रगदाब्जपाशसृणिभिर्मालां दधानां पराम्॥
विद्याभीतिवरप्रदां त्रिनयनामापीनतुङ्गस्तनीम् । देवीं विष्णुमयीं समस्तजननीं ध्यायामि तामम्बिकाम् ॥

॥ न्यासः ॥

डं नमः दक्षगुल्फे। ढं नमः दक्षपादांगुलिमूले। णं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे। तं नमः वामोरु मूले। थं नमः

वामजानुनि। दं नमः वामगुल्फे। धं नमः वाम पादांगुलिमूले। नं नमः वाम पादांगुल्यग्रे। पं नमः दक्षपार्श्वे। फं नमः वामपार्श्वे। बं नमः पृष्ठे। भं नमः नाभौ। मं नमः जठरे। यं त्वगात्मने नमः हृदि। रं असृगात्मने नमः दक्षांशे। लं मांसात्मने नमः ककुदि। वं मेदात्मने नमः वामांशे। शं अस्थ्यात्मने नमः हृदादि दक्षकरान्तम्। षं मज्जात्मने नमः हृदादि वाम करान्तम्। सं शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्षं पादान्तम्। हं जीवात्मने नमः नाभ्यादि वामपादान्तम्। लं परमात्मने नमः हृदादि कुक्षौ। क्षं ज्ञानात्मने नमः हृदादिमुखे। अं नमः ललाटे। आं नमः मुखवृत्ते। इं नमः दक्ष नेत्रे। ईं नमः वाम नेत्रे। उं नमः दक्ष कर्णे। ऊं नमः वामकर्णे। ऋं नमः दक्षनासायाम्। ॠं नमः वाम नासायाम्। ऌं नमः दक्षगण्डे। ॡं नमः वामगण्डे। एं नमः ऊर्ध्व ओष्ठे। ऐं नमः अधो ओष्ठे। ओं नमः उर्ध्व दंतपंक्तौ। औं नमः अधो दंतपंक्तौ। अं नमः शिरसि। अः नमः मुखे। कं नमः दक्षबाहुमूले। खं नमः दक्ष कूर्परे। गं नमः दक्ष मणिबन्धे। घं नमः दक्ष करांगुलिमूले। ङंनमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे। चं नमः वाम बाहुमूले। छं नमः वाम कूर्परे। जं नमः वाम मणिबन्धे। झं नमः वाम करतले। ञं नमः वाम करांगुल्यग्रे। टं नमः दक्षोरुमूले। ठं नमः दक्ष जानुनि।

इसके बाद **संहारमातृकान्यास** करें। यथा–

॥ संहारमातृकान्यास ॥

विनियोगः – अस्य बहिर्मातृकान्यासे संहारमातृकान्यासमन्त्रस्य रुद्र ऋषिः गायत्रीछन्दः संहारमातृकासरस्वती देवता, मं इत्यारभ्य कं इति अन्तं हलानि बीजानि, अः आरम्भ अं इति अंतं स्वराः शक्तयः क्षं इति आरभ्य यं इति पर्यन्तः व्यंजनानि कीलकं अमुकदेवताया (श्रीबालात्रिपुरा) पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये संहारमातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – रुद्र ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। संहार मातृकासरस्वती देवतायै नमः हृदि। मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं बीजाय नमः गुह्ये। अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं शक्तये नमः पादयो। क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं कीलकाय नमः नाभौ। श्रीबालात्रिपुरापूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये संहारमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ

प्राणायाम – **अं.......अः** इन स्वरों से पूरक। **कं.......मं** इन व्यंजनों से कुम्भक और **यं......क्षं** इन वर्णों से रेचक प्राणयाम करें।

षडङ्गन्यास – अः क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं अं अस्त्राय फट्। औं मं भं बं फं पं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं नं धं दं थं तं एं कवचाय हुँ। ऊं णं ढं डं ठं टं उं शिखायै वषट्। ईं ञं झं जं छं चं इं शिरसे स्वाहा। आं ङंघं गं खं चं अं हृदयाय नमः।

करन्यास – अः क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं अं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। औं मं भं बं फं पं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं नं धं दं थं तं एं अनामिकाभ्यां हुँ। ऊं णं ढं डं ठं टं उं मध्यमाभ्यां वषट्। ईं ञं झं जं छं चं इं तर्जनीभ्यां स्वाहा। आं ङंघं गं खं कं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

॥ ध्यानम् ॥

धूम्रांगीं मुक्तकेशीं शशिमलिनमुखीं घोररूपां त्रिनेत्राम् ।
व्यस्तैर्हस्तैर्दधानां व्यजनकरधृतां दीप्तमग्निं वहाहाम् ॥

हाहाकाराट्टहासामभयवरकरां ज्वालयन्तीं दिशाश्च ।
भक्तेभ्य: प्रेमबद्धां दिशतु प्रतिदिनं भारतीं तां नमामि ॥

॥ न्यास ॥

क्षं ज्ञानात्मने नमः ललाटे। लं परमात्मने नमः मुखवृत्ते। हं जीवात्मने नमः दक्ष नेत्रे। सं शुक्रात्मने नमः वामनेत्रे। षं मज्जात्मने नमः दक्षकर्णे। शं अस्थ्यात्मने नमः वामकर्णे। वं मेदात्मने नमः दक्ष नासायाम्। लं मांसात्मने नमः वाम नासायाम्। रं असृगात्मने नमः दक्ष गंडे। यं त्वगात्मने नमः वामगण्डे। मं नमः ऊर्ध्वओष्ठे। भं नमः अधा ओष्ठे। बं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ। फं नमः अधो दंतपंक्तौ। पं नमः शिरसि। नं नमः मुखे। धं नमः दक्ष बाहुमूले। दं नमः दक्ष कूर्परे। थं नमः दक्ष मणिबन्धे। तं नमः दक्ष करांगुलिमूले। णं नमः दक्ष करांगुल्यग्रे। ढं नमः वामबाहुमूले। डं नमः वाम कूर्परे। ठं नमः वाममणिबन्धे। टं नमः वामकरांगुलिमूले। ञं नमः वामकरांगुल्यग्रे। झं नमः वामोरु मूले। जं नमः वामजानुनि। छं नमः दक्षगुल्फे। चं नमः दक्ष पादांगुलिमूले। ङं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे। घं नमः वामोरुमूले। गं नमः वामजानुनि। खं नमः वाम गुल्फे। कं नमः वामपादांगुलिमूले। अः नमः वामपादांगुल्यग्रे। अं नमः दक्ष पार्श्वे। औं नमः वाम पार्श्वे। ओं नमः पृष्ठे। ऐं नमः नाभौ। एं नमः जठरे। ॡं नमः हृदये। ऌं नमः दक्षांशे। ॠं नमः ककुदि। ऋं नमः वामांशे। ऊं नमः हृदयादि दक्ष करान्तम्। उं नमः हृदयादि वाम करान्तम्। ईं नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम्। इं नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम्। आं नमः हृदयादि कुक्षौ। अं नमः हृदयादि मुखे।

॥ इति ॥

॥ अथ विविध देवानां मातृका शक्तय:॥

॥ ओंकारस्य ५० वर्णमातृका॥

अथ श्रीविद्याधिकृत्य मातृका निरूपणम्

अथ वक्ष्ये जगद्धात्रीं मातृकां मन्त्र विग्रहाम् । सौकर्यार्थं हि मन्त्राणां न्यास पूजा जपस्य च ॥१॥
उद्धारे साधकानां च विशेषात् कालिकामते । तारस्य पञ्चभेदेभ्य: पञ्चाशद्वर्णगा: कला: ॥२॥
विवृत्तिश्च प्रतिष्ठा च विद्या शान्तिरनन्तरम्। इन्धिका दीपिका चैव रेचिका मोचिका परा ॥३॥
सूक्ष्माऽसूक्ष्माऽमृता ज्ञानाऽमृता चाप्यायिनी तथा । व्यापिनी व्योमरूपा स्युरनन्ता स्वरजा: कला: ॥४॥
सृष्टिऋद्धि: स्मृतिर्मेधा कान्तिर्लक्ष्मीर्द्युति: स्थिरा। स्थितिर्सिद्धिरिति प्रोक्ता: क्रमाच्च कचवर्गजा: ॥५॥
ततश्चापि जरा चैव पालिनी शान्तिरेव च। ऐश्वर्या च रतिश्चैव कामिका वरदा तथा ॥६॥
ह्लादिनी प्रीतिर्दीर्घा च क्रमात् स्यु: टतवर्गजा: । तीक्ष्णा रौद्री भया निद्रा तन्द्री क्षुत्क्रोधिनी क्रिया ॥७॥
उत्कारी मृत्युरेता: स्यु: क्रमाच्च पयवर्गजा: । षवर्गोत्थकला: प्रोक्ता: पीता श्वेतारुणाऽसिता ॥८॥
अनन्ता च तथा प्रोक्ता: पञ्चाशद्वर्णसम्भवा: ।

॥ चन्द्रमातृका १६ कलायें॥

अमृता मानदा पूषा तुष्टि: पुष्टी रतिर्धृति: ॥१॥
शशिनी चन्द्रिका ज्योत्स्ना कान्ति: श्री: प्रीतिरङ्गदा ।
पूर्णा पूर्णामृता कामदायिन्य: स्वरजा: कला: ॥२॥

॥ सूर्यमातृका १२ कलायें॥

तपिनी तापिनी धूम्रा मरीचिर्ज्वालिनी शुचि: ।
सुषुम्ना भोगदा विश्वा बोधिनी धारिणी क्षमा ।
कभाद्या वसुदा: सौराष्ठडान्ता द्वादशेरिता: ॥

॥ ५० सशक्ति रविमातृका: ॥

प्रारंभ में रवि से लेकर त्रयीमूर्ति तक सूर्य के नाम हैं तथा विद्या पुष्टि से सुरूपा बहुरूपा तक उनकी शक्तियों के नाम हैं। या तो अलग अलग न्यास करें, अथवा इस प्रकार न्यास करें –

यथा - अं रवि सहितायै विद्यायै नमः शिरसि.......क्षं त्रयीमूर्तये सहिताय बहुरूपायै नमः हृदयादि शिरसे (मुखे)।

रविः प्रभाकरो भास्वान् द्युमणिः पूषणो भगः । आदित्योऽर्को वेदमूर्तिः कर्मसाक्षी दिवाकरः ॥१॥
मित्रोऽर्यमोष्णरश्मिश्च द्वादशात्मा विभाकरः । स्वराणां मूर्तयश्चैते सूरः सूर्यो विभावसुः ॥२॥
अहस्करोऽरुणो व्रध्नो भास्वान् सप्ततुरङ्गमः । हरिदश्वो ग्रहाधीशो मार्तण्डो भानुरव्ययः ॥३॥
विकर्तनः सहस्रांशुर्मिहिरो मित्रमाठरौ । कर्मसाक्षी जगन्नेत्रस्तरणिः पद्मिनीप्रियः ॥४॥
चण्डांशुः पिङ्गलो दण्डो गभस्ती घृणिरंशुमान् । प्रद्योतनो जगच्चक्षुस्तपनो लोकबान्धवः ॥५॥
हंसस्तमोपहन्ता च त्रयीमूर्तिश्च मूर्तयः । विद्याहोपुष्टयः प्रज्ञाः सिनीवाली कुहूः पुनः ॥६॥
रुद्रवीर्या प्रभानन्दा स्यात्पोषण्यृद्धिदा शुभा । कालरात्रिर्महारात्रिर्भद्रकाली कपालिनी ॥७॥
विकृतिर्दण्डमुण्डिन्यौ सेन्दुखण्डा शिखण्डिनी । निशुम्भशुम्भमथनी महिषासुरमर्दिनी ॥८॥
इन्द्राणी चैव शङ्करार्धशरीरिणी । नारी नारायणी चैव त्रिशूलिन्यपि पालिनी ॥९॥
अम्बिका हारिणी चैव समृद्धिर्वृद्धिरेव च । पिङ्गलाक्षी विशालाक्षी मायां संज्ञा वसुन्धरा ॥१०॥

श्रद्धा स्वाहा सुधा भिक्षा देवकी कमलासना ।
त्रिलोकधात्री सावित्री गायत्री त्रिदशेश्वरी ॥
सुरूपा बहुरूपा च पञ्चाशच्छक्तयो रवेः ॥११॥

॥ अग्निमातृका १० कलायें॥

धूम्रार्चिरूष्मा ज्वलिनी ज्वालिनी विस्फुलिङ्गिनी ।
सुश्रीः सुरूपा कपिला हव्यकव्यवहे अपि ।
यादीनां दशवर्णानां कला धर्मप्रदा इमाः ॥

॥ रुद्रकला मातृकाः ॥

ऋषि दक्षिणामूर्ति, गायत्री छंद, अर्द्धनारीश्वर देवता है। मातृका के साथ ''हसौ'' युक्त कर न्यास करें।

न्यास विधि यथा - अं श्रीकण्ठाय नमः शिरसि।

श्रीकण्ठोऽनन्तसूक्ष्मौ च त्रिमूर्तिरमरेश्वरः । अर्घीशो भारभूतिश्च तिथीशः स्थाणुको हरः ॥१॥
झिण्टीशो भौतिकः सद्योजातश्चानुग्रहेश्वरः । अक्रूरश्च महासेनः षोडश स्वरमूर्तयः ॥२॥
पश्चात् क्रोधीशचण्डीश पञ्चान्तकशिवोत्तमाः । अथैकरुद्रकूर्मैकनेत्राह्वचतुराननाः ॥३॥
अजेशः सर्वसौमेशौ तथा लाङ्गलिदारुकौ । अर्द्धनारीश्वरश्च उमाकान्तश्चाषाढिदण्डिनौ ॥४॥
स्युरद्रिमीनमेषाख्यलोहिताश्च शिखि तथा । छगलाण्डद्विरण्डौ च महाकाल कपालिनौ ॥५॥
भुजङ्गेशः पिनाकी च खड्गीशाख्यो बकस्तथा । श्वेतो भृगुश्च नकुली शिवः सम्वर्तकः स्मृतः ॥६॥

॥ रुद्रशक्तिमातृकाः ॥

पूर्णोदरी स्याद्विरजा शाल्मली तदनन्तरम् । लोलाक्षी वर्तुलाक्षी च दीर्घघोणा ततः परम् ॥१॥
सुदीर्घमुखिगोमुख्यौ दीर्घजिह्वा ततः परम् । कुण्डोदर्यूर्ध्वकेशी च तथा विकृतमुख्यपि ॥२॥
ज्वालामुखी ततश्चोल्कामुखी च श्रीमुखी तथा । विद्यामुखी च कथिताः रुद्राणां स्वरशक्तयः ॥३॥
महाकालीसरस्वत्यौ सर्वसिद्धिस्ततः परम् । गौरी त्रैलोक्यविद्या स्यान्मन्त्रशक्तिस्ततः परम् ॥४॥
आत्मशक्तिर्भूतमाता ततो लम्बोदरी तथा । द्राविणी नागरी भूयः खेचरी चापि मञ्जरी ॥५॥
रूपिणी वीरिणी पश्चात् काकोदर्यपि पूतना । स्याद्भद्रकाली योगिन्यौ शङ्खिनी गर्जिनी तथा ॥६॥
कालरात्रिश्च कुर्दिन्या कपर्दिन्यपि वज्रिका । जया च सुमुखी चैव रेवती माधवी तथा ॥७॥
वारुणी वायवी चैव तथा रक्षोविदारिणी । ततश्च सहज लक्ष्मीर्व्यापिनी च ततः परम् ॥८॥
महामाया च कथिताः क्रमात्ताः रुद्रशक्तयः । अत्र रुद्राः स्मृता रक्ता धृतशूलकपालकाः ॥९॥
शक्तयो रुद्रपीठस्थाः सिन्दूरारुणविग्रहाः । रक्तोत्पल कपालाभ्यामलंकृतकराम्बुजाः ॥१०॥

॥ केशव मातृकाः ॥

ऋषि प्रजापति, छंद गायत्री, देवता अर्द्धलक्ष्मीहरि। क्लीं श्रीं युक्त करन्यास करे।

न्यास विधि यथा – अं केशवाय नमः शिरसि।

केशवो नारायणो माधवगोविन्दविष्णवः । मधुसूदनसंज्ञोऽन्यः स्यात् त्रिविक्रमवामनौ ॥१॥
श्रीधरश्च हृषीकेशः पद्मनाभस्ततः परम् । दामोदरो वासुदेवः सङ्कर्षण इतीरितः ॥२॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च क्रमात् स्युः स्वरमूर्तयः । पश्चाच्चक्री गदी शार्ङ्गी खड्गी शङ्खी हली पुनः ॥३॥
मुसली शूलधृत् पाशी अंकुशी च ततः परम् । मुकुन्दो नन्दजो नन्दी नरो नरकजिद्धरिः ॥४॥
कृष्णः सत्यः सात्त्वताख्यः शौरिः शूरो जनार्दनः । भूधरो विश्वमूर्तिश्च वैकुण्ठः पुरुषोत्तमः ॥५॥
बली बालानुजो बालो वृषघ्नो वृषभस्तथा । हंसो वराहो विमलो नृसिंहो मूर्तयो हलाम् ॥६॥

॥ केशवशक्ति मातृकाः ॥

कीर्तिः कान्तिस्तथा तुष्टिः पुष्टिश्चैव धृतिस्ततः । शान्तिः क्रिया दया मेधा हर्षा श्रद्धा ततः परम् ॥१॥
लज्जा लक्ष्मीसरस्वत्यौ प्रीती रतिरिमाः क्रमात् । जया दुर्गा प्रभा सत्या चण्डा वाणी विलासिनी ॥२॥
विजया विरजा विश्वा विनदा सुनदा स्मृतिः । ऋद्धिः समृद्धिः शुद्धिश्च भुक्तिर्बुद्धिर्मतिः क्षमा ॥३॥
रमोमा क्लेदिनी क्लिन्ना वसुदा वसुधा परा । पारायणा च सूक्ष्मा च सन्ध्या प्रज्ञा प्रभा निशा ॥४॥
अमोघा विद्युता चेति कादीनां मूर्तयो हरेः । केशवाद्या इमे श्यामाः शङ्खचक्रलसत्कराः ॥५॥
शक्त्यस्तु प्रियाङ्केषु निषाणाः सस्मितानना: । विद्युद्दामसमानाङ्ग्यः पङ्कजाभयबाहवः ॥६॥

****

॥ अथ काममातृका:॥

कामेश से लोभमूर्ति तक काम के ५० नाम तथा रति से लोभवर्द्धनी तक उसकी शक्तियों के नाम हैं। यथा विधि न्यास करें।

कामेश: कामद: कान्त: कान्तिमान् कामगस्तथा। कामाचारश्च कामी च कामुक: कामवर्द्धन: ॥१॥
वामोरामश्च रमणो रतिनाथो रतिप्रिय:। रात्रिनाथो रमाकान्तो, रममाणो निशाचर: ॥२॥
नन्दको नन्दनो नन्दी ततो नन्दयिता तत: । पञ्चबाणो रतिसख: पुष्पधन्वा महाधनु: ॥३॥
भ्रामणो भ्रमणश्चैव भ्रममाणो भ्रमस्तथा। भ्रान्तो भ्रामकभृङ्गौ च भ्रान्तचारो भ्रमावह: ॥४॥
मोहनो मोहको मोहो मोहवर्द्धन एव च। मदनो मन्मथश्चैव मातङ्गो भृङ्गनायक: ॥५॥
गायकश्चैव गीती च नर्तक: खेलकस्तत:। उन्मत्तो मत्तकश्चैव विलासी लोभवर्द्धन: ॥६॥
कामस्य मूर्तय: प्रोक्ता अकाराद्यर्णसञ्चये। रति: प्रीतिश्च तदनु कामिनी मोहिनी तत: ॥७॥
कमलासुविलासिन्यौ तत: कल्पलता तथा। श्यामा शुचिस्मिता चैव विस्मिता तदनन्तरम् ॥८॥
विशालाक्षी लेलिहाना ततश्चैव दिगम्बरा। वामा च कुब्जिका कान्ता, नित्या कुल्या च भोगिनी ॥९॥
कामदा चैव तत्पश्चात् प्रोच्यते च सुलोचना। सुलापिनी मर्दिनी च ततश्च कलहप्रिया ॥१०॥
बराक्षी सुमुखी चैव नलिनी जटिनी तथा। पालिनी च शिवा मुग्धा ततश्चैव रमा भ्रमा ॥११॥
लोला च चञ्चला चैव दीर्घजिह्वा रतिप्रिया। लोलाक्षी भङ्गिनीचैव पाटला मदना तथा ॥१२॥
माला च हंसिनी चैव तत: स्याद्विश्वतोमुखी। जगदानन्दिनी चैव रमणी कान्तिरेव च ॥१३॥
तत: स्याच्च कलङ्कघ्नी वृकोदर्यपि सा तथा। मेघश्यामा तथा लोभवर्द्धनी शक्तयस्तथा ॥१४॥
तत: कामान् स्मरेन्मर्त्यो दाडिमीकुसुमोपमान्। वामाङ्कशक्तिसहितान् पुष्पबाणेक्षुकार्मुकान् ॥१५॥
शक्तय: कुंकुमानिभा: सर्वाभरणभूषिता: । नीलोत्पलकरा ध्येयास्त्रैलोक्याकर्षणक्षमा: ॥१६॥

॥ अथ त्रिपुरामातृका:॥

त्रिपुरसुन्दरी उपासना में इन मातृकाओं के नाम से वहिर्मातृका न्यास करें।

यथा – **अं कामिन्यै नम: शिरसि।**

कामिनी मोदिनी चैव मदनोन्मादिनी तत:। द्राविणी खेचरी चैव घण्टिका च कलावती ॥१॥
क्लेदिनी शिवदूती च ततश्च सुभगा भगा। विद्येशी च महालक्ष्मी: कौलिनी च सुरेश्वरी ॥२॥
स्वराणां शक्तय: प्रोक्तास्ततश्च कुलमालिनी । व्यापिनी च भगा चैव वागीशी तदनन्तरम् ॥३॥
वषट्कारी पिङ्गला च भगसर्पिण्यत: परम् । सुन्दरी च ततो नीलपताका त्रिपुरा तत: ॥४॥
सिद्धेश्वरी ह्यमोघा च रत्नमालिन्यत: परम्। मङ्गला भगमाला च नित्या रौद्री तत: परम् ॥५॥
व्योमेश्वरी अम्बिका चाप्यट्टहासा तत: परम् । आप्यायिनी च वज्रेशी क्षोभिणी शाम्भवी तथा ॥६॥

स्तम्भिनी चाप्यनामा च रक्ता शुक्लापराजिता। संवर्तिका च विमला अघोरा घोरया युता ॥७॥
बिम्बादिभैरवी चैव सर्वाकर्षिणिका तथा। एताः पञ्चाशदाख्याताः पञ्चाशद्वर्णविग्रहाः ॥८॥

॥ अथ गणेशमातृकाः॥

विघ्नेश्वर से गणेश्वर तक ५० नाम गणपति के हैं तथा श्रीः से कालकजिह्विका तक ५० नाम उनकी शक्तियों के क्रमशः हैं।

न्यास विधि यथा – **अं विघ्नेश्वराय श्री शक्ति सहिताय नमः शिरसि।**

विघ्नेश्वरो विघ्नराजो विनायकशिवोत्तमौ। विघ्नकृद्विघ्नहर्ता च विघ्नराड् गणनायकः ॥१॥
एकदन्तो द्विदन्तश्च गजवक्त्रो निरञ्जनः। कपर्दी दीर्घवक्त्रश्च शंकुकर्णो बृषध्वजः ॥२॥
गणनाथो गजेन्द्रश्च शूर्पकर्णस्त्रिलोचनः । लम्बोदरमहानादौ चतुर्मूर्तिः सदाशिवः ॥३॥
आमोदौ दुर्मुखश्चैव सुमुखश्च प्रमोदकः । एकपादो द्विजिह्वश्च शूरो वीरश्च षण्मुखः ॥४॥
वरदो वामदेवश्च वक्रतुण्डो द्विरण्डकः । सेनानीग्रमिणीर्मत्तो विमत्तो मत्तवाहनः ॥५॥
जटी मुण्डी च खड्गी च वरेण्यो वृषकेतनः। भक्ष्यप्रियो मेघनादो गणपश्च गणेश्वरः ॥६॥
एते पञ्चाशदाख्याता मूर्तयो गणपस्य तु। श्रीः ह्रीस्तुष्टिश्च शान्तिश्च पुष्टिश्चैव सरस्वती ॥७॥
रतिर्मेधा च कान्तिश्च कामिनी मोहिनी जटा। तीव्रा च ज्वालिनी नन्दा सुरसा, कामरूपिणी ॥८॥
उग्रा च जयिनी सत्या विघ्नेशी च स्वरूपिणी। कामदा च ततः प्रोक्ता तथा च मदविह्वला ॥९॥
विकटा च ततो धूम्रा भूतिर्भूमिः सती रमा। ततश्च मानुषी चैव ततश्च मकरध्वजा ॥१०॥
विकर्णा भ्रुकुटी लज्जा घोणा चैव धनुर्धरा । ततश्च यामिनी रात्रिश्चन्द्रिका च शशिप्रभा ॥११॥
लोला च चञ्चलाक्षी च तथा ऋद्धिश्च दुर्भगा । सुभगा च शिवा दुर्गा कालिकालकजिह्विका ॥१२॥
विघ्नहारिणिका चैव शक्तयः स्युर्गणेशितुः ॥

॥ अथ योगिनीमातृका॥

ये योगिनियां 64 योगिनियों से भिन्न हैं। ये योगिनियाँ भगवति की अंग स्वरूपा एवं देविरूपा है।

अमृताकर्षिणीन्द्राणी चेशान्युमोर्ध्वकेशिनी । ऋद्धिदा च तथा ऋृषा लृकारा लृषिका तथा ॥१॥
एकपादा तथैश्वर्या ओकारा चौषधात्मिका । अम्बिका चाक्षरात्मा च सुराणां शक्तयः क्रमात् ॥२॥
कालरात्रिश्च खातीता गायत्री तदनन्तरम् । घण्टाधारिणिका चैव ततो ङार्णात्मिका तथा ॥३॥
चामुण्डा चैव च्छाया च जया झङ्कारिणी तथा । ञार्णात्मिका टङ्कहस्ता ततष्ठङ्कारिणी तथा ॥४॥
डामरी चैव ढङ्कारी णङ्कारी तामसी ततः । स्थानदेवी च दाक्षायण्यथ धात्री च नन्दिका ॥५॥
पार्वती चैव फट्कारी बन्धिनी भद्रकालिका । महामायायशस्विन्यौ रमा लम्बोष्ठिका ततः ॥६॥
वरदा शशिनी षण्डा तथा चैव सरस्वती । ततो हंसवती चैव ततः प्रोक्ता क्षमावतो ॥७॥

॥ अथ पीठमातृका:॥

निम्न ५० सिद्ध पीठों के स्मरण से स्वस्थान पीठ के समान पवित्र हो जाता है। तथा शरीर में न्यास करने से सिद्ध पीठों का निवास शरीर में स्वत: ही हो जाता है तो देवता उसके शरीर में अपना निवास प्रदान कर शक्ति प्रदान करते हैं।

कामरूपं च काशीकं नेपालं पौण्डवर्धनम् । पुरस्थिरं कान्यकुब्जं पूर्णगिर्यर्बुदे ततः ॥१॥
आम्रातकेश्वरं चैव एकाम्रं तदनन्तरम् । त्रिस्रोतः कामकोटं च कैलासं भृगुपत्तनम् ॥२॥
केदारं चन्द्रनगरं श्रीपुरोङ्कारके ततः । जालन्धरं मालवं च कुलान्तं देविकोटकम् ॥३॥
गोकर्णं मारुतेशं च अट्टहासं ततः परम् । विरजं राजगेहं च महापथमतः परम् ॥४॥
कोल्हमेलापुरं चैव कौलेश्वरमतः परम् । जयन्तिका चोज्जयिनी चरित्रं क्षीरकं ततः ॥५॥
हस्तिनापुरमुड्डीशं प्रयाग तदनन्तरम् । षष्ठीशमायानगरे जलेश्वरमतः परम् ॥६॥
मलयं च महीपीठं श्रीशैलं मेरुपीठकम् । ततो गिरिवरं चैव महेन्द्रं वामनं ततः ॥७॥
हिरण्यकं महालक्ष्मीपुरमुड्यानमेव च । छायाच्छत्रं महापीठं पञ्चाशद्वर्णगान्यथ ॥८॥

॥ अथ कामाकर्षिण्यादिमातृका:॥

कामाकर्षिण्यादि मातृका न्यास श्रीयन्त्र पूजा या चक्र पूजा समय करें तो उत्तम रहें।

कामाकर्षिणिका चैव बुद्ध्याकर्षिणिका तथा । अहङ्काराकर्षिणी च शब्दाकर्षिणिका तथा ॥१॥
स्पर्शाकर्षिणिका चैव रूपाकर्षिणिका तथा । रसाकर्षिणिका चैव गन्धाकर्षिणिका ततः ॥२॥
चित्तधैर्याकर्षिणिके स्मृत्याकर्षिणिका तथा । नामाकर्षिणिका चैव बीजाकर्षिणिका ततः ॥३॥
आत्माकर्षिणिका चैवामृताकर्षिणिका तथा । शरीराकर्षिणी चैव षोडशस्वरगाः क्रमात् ॥४॥
सर्वसंक्षोभिणी शक्तिः सर्वविद्राविणी ततः । सर्वाकर्षिणिका चैव सर्वाह्लादिनिका ततः ॥५॥
सर्वसंमोहिनी सर्वस्तम्भिनी सर्वजृम्भिणी । ततः सर्ववशङ्कारी सर्वरञ्जनिका तथा ॥६॥
सर्वोन्मादनकारी च ततः सर्वार्थसाधिनी । सर्वसंपत्प्रपूरा च सर्वमन्त्रमयी तथा ॥७॥
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कारी सर्वसिद्धिप्रदा ततः । सर्वसंपत्प्रदा चैव सर्वप्रियकरी ततः ॥८॥
सर्वमङ्गलकारी च सर्वकामप्रदा ततः । सर्वदुःखविमोचिनी संप्रोक्ता तदनन्तरम् ॥९॥
सर्वमृत्युप्रशमनी सर्वविघ्ननिवारिणी । सर्वाङ्गसुन्दरी चैव सर्वसौभाग्यदा तथा ॥१०॥
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वैश्वर्यफलप्रदा । सर्वज्ञानमयी चैव सर्वव्याधिविनाशिनी ॥११॥
सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा तथा । सर्वानन्दमयी चैव सर्वरक्षास्वरूपिणी ॥१२॥
ततः संप्रोच्यते चैव सर्वेप्सितफलप्रदा ॥

॥ अथ त्रिशक्ति (प्रपञ्च) मातृका, प्रत्यक्षरं नामद्वयम् ॥

प्रपञ्च न्यास करने से मन, बुद्धि, चित्त अहंकार के विकार दूर होते है। देह निर्मल हो जाती है।

प्रपञ्चरूपा श्रोर्द्वीपरूपा मायाब्धिरूपिणी । कमला गिरिरूपा च ततो वै विष्णुवल्लभा ॥१॥
ततः पत्तनरूपा च ततो वै पद्मधारिणी । पीठरूपा समुद्रादितनया क्षेत्ररूपिणी ॥२॥
लोकमाता वनरूपा ततः कमलवासिनी । ततश्चाश्रम रूपा च इन्द्रिरा च ततः परम् ॥३॥
गुहारूपा ततो माया नदीरूपा रमा ततः । तथा चतुररूपा च पद्मोद्भिज्जस्वरूपिणी ॥४॥
नरायणप्रिया चैव ततः स्वेदजरूपिणी । सिद्धलक्ष्मीस्तथा प्रोक्ता ततश्चाण्डजरूपिणी ॥५॥
जरामृजस्वरूपा च महालक्ष्मीस्ततः परम् । ततश्च लवरूपार्या त्रुटिरूपा ह्युमा तथा ॥६॥
कलारूपा चण्डिका च काष्ठारूपा च दुर्गिका । निमेषरूपा च शिवा श्वासरूपा ततः परम् ॥७॥
अपर्णा घटिकारूपा ह्यम्बिका च ततः परम् । मुहूर्तरूपा च सती ततः प्रहररूपिणी ॥८॥
ईश्वरी दिनरूपा च शाम्भवी च ततः परम् । सन्ध्यारूपा तथेशानी रात्रिरूपा च पार्वती ॥९॥
तिथिरूपा मङ्गला च वाररूपा ततः परम् । दाक्षायणी च नक्षत्ररूपा हैमवती ततः ॥१०॥
योगरूपा महामाया ततः करणरूपिणी । माहेश्वरी पक्षरूपा मृडानी मासरूपिणी ॥११॥
रुद्राणी शशिरूपा च शर्वाणी ऋतुरूपिणी । परमेश्वर्ययनरूपा काली वत्सररूपिणी ॥१२॥
कात्यायनी युगादिश्च रूपा गौरी तथैव च । ततः प्रलयरूपा च भवानी तदनन्तरम् ॥१३॥
पञ्चभूतस्वरूपा च ब्राह्मी च तदनन्तरम् । तथा च पञ्चतन्मात्ररूपा वागीश्वरी ततः ॥१४॥
कर्मेन्द्रियस्वरूपा च वाणी चैव ततः परम् । ज्ञानेन्द्रियस्वरूपा च सावित्री प्राणरूपिणी ॥१५॥
सरस्वती च तत्पश्चाद् गुणत्रयस्वरूपिणी । गायत्र्यन्तःकरणरूपा वाक्प्रदा च ततः परम् ॥१६॥
अवस्थात्रयरूपा च शारदा च ततः परम् । सप्तधातुस्वरूपा च भारती तदनन्तरम् ॥१७॥
दोषत्रयस्वरूपा च ततो विद्यात्मिका तथा । प्रपञ्चमातृका ख्याता सर्वसिद्धिप्रदा स्मृता ॥१८॥

॥ अथ कालीमातृका:॥

काली आराधना के अर्न्तगत इन मातृका न्यासों को करें।

यथा - **अं काल्यै नमः शिरसि....... क्षं चक्रिणी नमः** हृदयादि मुखे।

काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी । विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता तथैव च ॥१॥
नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रा मिता तथा । ब्राह्मी तथैव सम्प्रोक्ताः षोडश स्वरशक्तयः ॥२॥
नारायणी च माहेशी चामुण्डा च ततः परम् । कौमारी च तथैवोक्ता पञ्चमी चापराजिता ॥३॥
वाराही नारसिंही च भैरवी तदनन्तरम् । महदाद्या भैरवी च प्रोक्ता सा सिंहभैरवी ॥४॥
तथा धूम्राभैरवी च सम्प्रोक्ता भीमभैरवी । उन्मत्तभैरवी चैव वशीकरणभैरवी ॥५॥

मोहनाद्या भैरवी च ऐन्द्र्याग्रेयी ततः परम् । याम्या च राक्षसी चैव वारुणी वायवी तथा ॥६॥
कौवेरी च तथेशानी ब्रह्माणी वैष्णवी तथा । वज्रिणी शक्तिनी चैव दण्डिनी खड्गिनी तथा ॥७॥
पाशिन्यंकुशिनी चैव गदिनी शूलिनी तथा । मालिनी चक्रिणी चैव प्रोक्ता व्यञ्जनशक्तय: ॥८॥

॥ अथ तारामातृका त्रिषष्ट्यक्षराणाम्॥

तारा की 64 मातृकायें है अत: अं कुलेश नम: शिरसि से प्रारंभ कर उग्रेवरी तक वहिर्मातृका न्यास की तरह करें। चन्द्रगर्भा से काम्या तक दक्ष पार्श्व में तथा ज्ञानवती से हाकिनी तक वामपार्श्व में न्यास करें।

कुलेशी कुलनन्दा च वागीशी भैरवी तथा। उमा श्री: शान्तिका चण्डा धूम्रा काली कपालिनी ॥१॥
(..........) करालिनी । वाग्वादिनी च नकुली भद्रकाली शशिप्रभा ॥२॥
प्रत्यङ्गिरा सिद्धलक्ष्मीरमृतेशी च चण्डिका । खेचरी भूचरी सिद्धा कामाक्षी हिंगुला वसा ॥३॥
जया च विजया चाथाजिता नित्यापराजिता । विलासिनी तथा घोरा चित्रा मुग्धा धनेश्वरी ॥४॥
सोमेश्वरी महाचण्डा विद्या हंसी विनायिका । वेदगर्भा तथा भीमा उग्रा वैद्या च सद्गति: ॥५॥
उग्रेश्वरी चन्द्रगर्भा ज्योत्स्ना सत्या यशोवती । कुलिका कामिनी काम्या ज्ञानवत्यथ डाकिनी ॥६॥
राकिणी लाकिनी चाथ काकिनी शाकिनीत्यपि। हाकिनी च चतु:षष्टि: शक्तय: सिद्धिदायिका: ॥७॥

॥ अथ षोडशीमातृका:॥

त्रिपुरसुन्दरी की पूजा समय न्यास करें।

कामेशी भगमाला च नित्यक्लिन्ना ततः परम् । भेरुण्डावह्निवासिन्यौ वज्रेशी तदनन्तरम् ॥१॥
शिवादूती च त्वरिता ततश्च कुलसुन्दरी । नित्या नीलपताका च विजया सर्वमङ्गला ॥२॥
ज्वालामालिनी चित्रे च महात्रिपुरसुन्दरी । षोडशीमातृकायाश्च सम्प्रोक्ता: स्वरशक्तय: ॥३॥
ग्रसिनी प्रियवादिन्यौ कराली च कपालिनी । शिवा घोषा च दंष्ट्रा च वीरोमा वाक्प्रदा तथा ॥४॥
नारायणी मोहिनी च प्रज्ञा च शिखिवाहिनी । भीषणा वायुवेगा च भीमा चैव विनायिका ॥५॥
पूर्णा शक्तिश्च कङ्काली कुर्दिनी कालिका तथा । दीपनी च जयन्तिन्या पाविनी लम्बिनी तथा ॥६॥
संहारिणी छागली च पूतना मोदिका तथा । परशक्तिस्तथाम्बा च इच्छाशक्तिस्ततः परम् ॥७॥
महाकाली च सम्प्रोक्ता व्यञ्जनानां च शक्तय: ।

॥ अथ भुवनेशी मातृका:॥

ऋषि समुदिष्ट छन्द गायत्री देवताभुवनेशी। ह्रीं तथा अं आं इत्यादि मातृका युक्त कर न्यास करे।

जया से याकिनी तक अं आं....अ: स्वर युक्त व मंगला से काममध्यस्था तक कं.........क्षं वर्ण संयुक्त न्यास करें।

जया च विजया चैव अजिता चापराजिता । नित्या विलासिनी दोग्ध्री अघोरा मङ्गला तथा ॥१॥
डाकिनी राकिणी चैव लाकिनी काकिनी तथा । शाकिनी हाकिनी चैव याकिनी स्वरशक्तय: ॥२॥

मङ्गला च महाकाली कुण्डली कुलसुन्दरी । कपाली कमलावत्या चामुण्डा मेरुवासिनी ॥३॥
भुवनेशी सरस्वत्यौ कपिला कुलमालिनी । विनायिका जया नन्दा महालक्ष्मीश्च भैरवी ॥४॥
ब्रह्माणी च तथा ज्वालावली लिङ्गप्रभा तथा । मुण्डिनी च महावेगा उद्भवा वैष्णवी शिवा ॥५॥
महामाया तु चक्राङ्गी एकपादा सुरेश्वरि । कौवेरी मण्डली चैव वाराही च जलन्धरी ॥६॥
कामाख्या काममध्यस्था व्यञ्जनानां तु शक्तयः ॥

॥ अथ भैरवीमातृका:॥

त्रिपुरा से चामुण्डा तक **अं आं** स्वरों से व विशाला से महाबला तक **कं खं.......क्षं** से न्यास करें।

त्रिपुरा त्रिपुरेशी च तथा त्रिपुरसुन्दरी । त्रिपुराद्या वासिनी च त्रिपुराश्रीस्ततः परम् ॥१॥
त्रिपुरामालिनी चैव त्रिपुर सिद्धा ततः परम् । त्रिपुराम्बा ततश्चैव महात्रिपुरभैरवी ॥२॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा । वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा स्वरशक्तयः ॥३॥
विशाला च विशालाक्षी निर्मला मलवर्जिता । काली च कालकल्पा च कालरात्रिर्निशाचरी ॥४॥
ऊर्ध्वकेशी मुक्तकेशी वीराचैव महाभया । जयदा मानिनी माया प्रचण्डा बिन्दुमालिनी ॥५॥
विरूपा च विरूपाक्षी खट्वाङ्गी विश्वरूपिणी । रौद्री माया च प्रेताक्षी फेत्कारी भयनादिनी ॥६॥
धूम्राक्षी योगिनी घोरा विश्वरूपा भयङ्करी । भैरवी भीषणीया च लम्बोष्ठी च महाबला ॥७॥
व्यञ्जनानां विशेषेण संप्रोक्ताः शक्तयः क्रमात् ।

॥ अथ च्छिन्नमस्तामातृका:॥

लक्ष्मी से घोरा तक **अं आं......अः** स्वरयुकत न्यास व काली से नागयज्ञोपवीतिनी तक **कं खं .....क्षं** वर्ण युक्त न्यास करें।

लक्ष्मीर्लज्जा शिवा माया वाणी ब्राह्मी च वैष्णवी । रौद्रीश्वरी जया पद्मा वर्णिनी डाकिनी तथा ॥१॥
कराली विकराली च घोरा च स्वरशक्तयः । काली च खड्गिनी चण्डा भैरवी पिङ्गला तथा ॥२॥
इन्द्राणी चैव फट्कारी हारिणी योगिनी तथा । प्रकाशिनी वज्रिणी च सिता पीता रमा तथा ॥३॥
दिगम्बरी महाघोरा मुक्तकेशी चिदाश्रया । चामुण्डा छिन्नमस्ता च भीमा हूङ्कारिणी सिता ॥४॥
पद्मानना पद्मगर्भा पुष्पणी चारुहासिनी । विजया मङ्गला कान्तिर्मालिनी तारिणी तथा ॥५॥
महोदर्यस्थिमाला च नागयज्ञोपवीतिनी । व्यञ्जनानां च संप्रोक्ताः शक्तयः सर्वकामदाः ॥६॥

॥ अथ धूमावतीमातृका:॥

धूमावती से लम्बपयोधरा तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व कोटरा से सिद्धा तक **कं ....क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

धूमावती धूमनेत्रा धर्मटी मर्कटी तथा । घोररूपा च लम्बोष्ठी श्यामा श्याममुखी शिवा ॥१॥

काकध्वजा कोटराक्षी धूमा धूमान्धकारिणी । मुक्तकेशी महाघोरा तथा लम्बपयोधरा ॥२॥
स्वराणां शक्तयः प्रोक्ताः सर्वसिद्धिप्रदायिकाः । कोटरा कोटराक्षी च ऊर्ध्वकेशी दिगम्बरी ॥३॥
तमिस्त्रा तामसी चोग्रा विवर्णा मलिनाम्बरा । लम्बस्तनी च विरलद्विजा दीर्घा कृशोदरी ॥४॥
विधवा शूर्पहस्ता च रूक्षा रूक्षशिरोधरा । चलहस्ता चञ्चलाक्षी जटिला कुटिलैक्षणा ॥५॥
क्षुधातुरा पिपासार्ता तीक्ष्णा रौद्रा भयानका । उत्कारी क्रोधिनी मृत्युः क्रिया रिपुविमर्दिनी ॥६॥
सत्वरा काकजङ्घा च श्मशानालयवासिनी । महाकाली च गदिताः सिद्धा व्यञ्जनशक्तयः ॥७॥

॥ अथ बगलामातृका:॥

बगला से योगिनी तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व भगाम्बा से बहुभाषिणी तक **कं ....क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

बगला स्तम्भिनी चैव जम्भिनी मोहिनी तथा । वश्या चलाचला चैव दुर्द्धरा कल्मग तथा ॥१॥
धीरा च कल्पना कालकर्षिणी भ्रामका तथा । ततश्च मन्दगमना भोगिनी योगिनी तथा ॥२॥
एतास्तु सिद्धिदायिन्यः षोडश स्वरमूर्तयः । भगाम्बा भगमाला च भगवाहा भगोदरी ॥३॥
भगिनी भगजिह्वा च भगस्था भगसर्पिणी । भगलोला भगाक्षी च शिवा भगनिपातिनी ॥४॥
जया च विजया धात्री अजिता चापराजिता । जम्भिनी स्तम्भिनी चैव मोहिन्याकर्षिणी ह्युम ॥५॥
रम्भिणी जृम्भणी चैव कीलिनी वशिनी तथा । रम्भा माहेश्वरी चैव मङ्गला रूपिणी तथा ॥६॥
पीता पीताम्बरा भव्या सुरूपा बहुभाषिणी । एतास्तु शक्तयः प्रोक्ता व्यञ्जनानां तु सिद्धिदाः ॥७॥

॥ अथ मातङ्गीमातृका:॥

वामा से नागबुद्धि तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व सरस्वती से अनङ्ग शशिरेखा तक **कं खं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

वामा ज्येष्ठा च रौद्री च शान्तिः श्रद्धा तथैव च । वागीश्वरी क्रिया लक्ष्मीः सृष्टिश्चैव तु मोहिनी ॥१॥
प्रथमा भाविनी विद्युल्लता चिच्छक्तिरेव च । ततश्च सुन्दरानन्दा नागबुद्धिस्तथैव च ॥२॥
एताः संसिद्धिदायिन्यः षोडश स्वरशक्तयः । सरस्वती रतिः प्रीतिः कीर्तिः कान्तिस्तथैव च ॥३॥
पुष्टिस्तुष्टी रमा चैव मन्मथा मकरध्वजा । मदना पुष्पचापा च द्राविणी शोषिणी तथा ॥४॥
बन्धिनी मोहिनी वश्या ततश्चाकर्षिणी तथा । ह्ल्लेखा गगना रक्ता महोच्छुष्मा करालिका ॥५॥
अनङ्गकुसुमानङ्गमेखला च ततः परम् । अनङ्गमदना चैव अनङ्गमदनातुरा ॥६॥
अनङ्गमदनानङ्गवेगानङ्गादिसंभवा । अनङ्गभुवनपाला चानङ्गशशिरेखिका ॥७॥
मनोभवा च मातङ्गी कामा व्यञ्जनशक्तयः ।

॥ अथ लक्ष्मीमातृका:॥

ऋषि भृगु छंद गायत्री देवता **लक्ष्मी, श्रीं** युक्त कर न्यास करें।

प्रकृति से धन्या तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व हिरण्या से दिव्याशोका तक **कं खं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

प्रकृतिर्विकृतिर्विद्या सर्वभूतादिभावना । श्रद्धा विभूतिः सुरभिर्वाक्प्रदा कमलात्मिका ॥१॥
पद्मालया शची पद्मा शुद्धिः स्वाहा स्वधा तथा । धन्या चैव च संप्रोक्ताः षोडश स्वरशक्तयः ॥२॥
हिरण्या च तथा लक्ष्मीर्नित्यपुष्टा विभावरी । अदितिश्च दितिश्चैव दीप्ता च वसुधा तथा ॥३॥
करुणा धर्मनिलया पद्माक्षी भूतधारिणी । पद्मप्रभा वेदमाता पद्महस्ता ततः परम् ॥४॥
पद्मोद्भवा पद्ममुखी पद्मसुन्दरिका तथा । पद्मनाभप्रिया पद्मगन्धिनी पद्मिनी रमा ॥५॥
पद्ममालाधरा पद्मा सुप्रसन्ना प्रिया तथा । कान्तिः प्रिया च कमला अनघा हरिवल्लभा ॥६॥
अमोघा अमृता दिव्याशोका व्यञ्जनशक्तयः ।

॥ अथ कामेश्वरीमातृका:॥

ऋषि संमोहन, छंद गायत्री देवता कामेश्वरी, क्लीं युक्तकर करन्यास करे।

कामेश्वरी से दंष्ट्रिणीष्टदा तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व विश्वंभरा से दक्षा तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

कामेश्वरी महामाया वागीशी ब्रह्मसंज्ञिता । अक्षरा च त्रिमात्रा च त्रिपदा त्रिगुणात्मिका ॥१॥
सुरसिद्धगणाध्यक्षा गणमाता गणेश्वरी । चण्डिका चण्डमुण्डा च चामुण्डी दंष्ट्रिणीष्टदा ॥२॥
स्वराणां शक्तयः प्रोक्ताः सर्वसिद्धिप्रदायिकाः । विश्वम्भरा विश्वयोनिर्विश्वमाता वसुप्रदा ॥३॥
स्वाहा स्वधा तुष्टिऋद्धी गायत्री गोगणा खगा । वेदमाता वरिष्ठा च सुप्रभा सिद्धवाहिनी ॥४॥
आदित्यहृदया चन्द्रा चन्द्रभावानुमण्डला । ज्योत्स्ना हिरणमयी भव्या भवदुःखभयापहा ॥५॥
शिवतत्त्वा शिवा शान्ता शान्तिदा शान्तरूपिणी । सौभाग्यदा शुभा गौरी उमा हैमवती प्रिया ॥६॥
दक्षा च व्यञ्जनानां तु गदिताः शक्तयः क्रमात् ।

॥ अथ भगमालिनीमातृका:॥

भगमालि से कराला तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व आकाशनिलया से घोररूपा तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

भगमाली भगा भाग्या भगिनी च भगोदरी । गुह्या दाक्षायणी कन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥१॥
जया च विजया चैव अजिता चापराजिता । सुदीप्ता लेलिहाना च कराला स्वरशक्तयः ॥२॥
आकाशनिलया ब्राह्मी बाला च ब्रह्मचारिणी । ब्रह्मास्यास्यरत्ता प्रह्वी सावित्री ब्रह्मपूजिता ॥३॥
प्रज्ञा माता परा बुद्धिर्विश्वमाता च शाश्वती । मैत्री कात्यायनी दुर्गा दुर्गसन्तारिणी परा ॥४॥
मूलप्रकृतिरीशाना पुंस्प्रधानेश्वरेश्वरी । आप्यायनी पावनी च पवित्रा मङ्गला यमा ॥५॥
ज्योतिष्मिती संहारिणी सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी । अघोरा घोररूपा च व्यञ्जनानां च शक्तयः ॥६॥

॥ अथ नित्यक्लिन्नामातृका:॥

नित्यक्लिन्ना से चण्डी तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व घोरा से नन्दा तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

नित्यक्लिन्ना नित्यमदद्रवोमा विश्वरूपिणी । योगेश्वरी योगगम्या योगमाता वसुन्धरा ॥१॥

धन्या धनेश्वरी धान्या रत्नदा पशुवर्धिनी । कूष्माण्डी दारुणी चण्डी स्वराणां शक्तयः क्रमात् ॥२॥

घोरा घोरस्वरूपा च मातृका माधवी दशा । एकाक्षरा विश्वमूर्तिर्विश्वा विश्वेश्वरी ध्रुवा ॥३॥

शर्वा क्षमादिर्भूतात्मा भूतिदा भूतिवर्धिनी । भूतेश्वरप्रिया भूतिर्भूतमाला च यौवनी ॥४॥

वैदेही पूजिता सीता मायावी भववाहिनी । सत्त्वस्था सत्त्वनिलया सत्त्वासत्त्वचिकीर्षणा ॥५॥

विश्वस्था निश्वनिलया श्रीफला श्रीनिकेतना । श्रीः शशाङ्कधरा नन्दा व्यञ्जनानां च शक्तयः ॥६॥

॥ अथ भेरुण्डामातृका:॥

भेरुण्डा भैरवी साध्वी नताख्यानन्तसंभवा । त्रिगुणी घोषिणी घोषा लक्ष्मीः पुष्टा शुभालया ॥१॥

धर्मोदया धर्मबुद्धिर्धर्माधर्मपुटद्वया । ज्येष्ठा यमस्यभगिनी चैला कौशेयवासिनी ॥२॥

भ्रमणा भ्रामिणी भ्राम्या भ्रमा ज्ञानापहारिणी । माहेन्द्री वारुणी सौम्या कौवेरी हव्यवाहिनी ॥३॥

वायवी नैर्ऋतीशानी लोकपालैकरूपिणी । मोहिनी मोहजननी स्मृतिवृत्तान्तबाधिनी ॥४॥

यक्षाणां जननी यक्षी सिद्धिर्वैश्रवणालया । मेधा श्रद्धा धृतिः प्रज्ञा सर्वदेवनमस्कृता ॥५॥

आशा वाञ्छा निरीहेच्छा तथा भूतानुवर्तिनी । शक्तयः कथिताश्चैकपञ्चाशद्वर्णगाः क्रमात् ॥६॥

॥ अथ वह्निवासिनीमातृका:॥

वह्निवासिनिका वह्निनिलया वह्निरूपिणी । यज्ञविद्या महाविद्या ब्रह्मविद्या गुहालया ॥१॥

भूतेश्वरी ब्रह्मधात्री विमला कनकप्रभा । विरूपाक्षा विशालाक्षी हिरण्याक्षी शतानना ॥२॥

त्र्यक्षा च कामला विद्या सिद्धविद्या धराधिपा । देवमाता दितिः पुण्या दनुः कद्रूः सुपर्णिका ॥३॥

अपांनिधिर्महावेगा महोर्मिवरुणालया । इष्टा तुष्टिकरी च्छाया सामगा रुचिरा परा ॥४॥

ऋग्यजुःसामविलया वेदोत्पत्तिः स्तुतिप्रिया । प्रद्युम्नदयिता साध्वी सुखसौभाग्यसिद्धिदा ॥५॥

सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमङ्गला ।
धामिनी धमनी माध्वी मधुकैटभमर्दिनी ॥
बाणप्रहरिणी बाणा प्रोक्ता व्यञ्जनशक्तयः ॥६॥

॥ अथ वज्रेश्वरीमातृका:॥

महावज्रेश्वरी नित्या विधिस्था चारुहासिनी । उषानिरुद्धपत्न्यौ च रेवती रैवतात्मजा ॥१॥

हलायुधप्रिया माया गोकुला गोकुलालया । कृष्णानुजा कृष्णरजा नन्दस्य दुहिता सुता ॥२॥

कंसविद्राविणी क्रुद्धा सिद्धचारणसेविता । गोक्षीराङ्गा धृतवती भव्या गोपजनप्रिया ॥३॥
शाकम्भरी सिद्धविद्या वृद्धा सिद्धिकरी क्रिया । दावाग्निर्विश्वरूपा च विश्वेशी दितिसंभवा ॥४॥
आधारचक्रनिलया द्वारशालावगाहिनी । सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा स्थूला सप्रपञ्चा निरामया ॥५॥
निष्प्रपञ्चा क्रियातीता क्रियारूपा फलप्रदा । प्राणाख्या मन्त्रमाता च सोमसूर्यामृतप्रदा ॥६॥
छन्दःख्याता च चिद्रूपा परमानन्ददायिनी । निरानन्दा स्मृताश्चकपञ्चाशच्छक्तयः क्रमात् ॥७॥

॥ अथ शिवादूतीमातृका:॥

शिवादूती सुनन्दा चानन्दिनी विषघ्निनी । पातालखण्डमध्यस्था हृल्लेखा वनखेचरी ॥१॥
कला सप्तदशी शुद्धा पूर्णचन्द्रनिभानना । आत्मज्योतिः स्वयंज्योतिरग्निर्ज्योतिरनाहता ॥२॥
प्राणशक्तिः क्रियाशक्तिरिच्छाशक्तिः सुखावहा । ज्ञानशक्तिः सुखानन्दा वेदिनी महिमा प्रभा ॥३॥
ऋजुर्यज्ञा यज्ञसाम्नी सामस्वरविनोदिनी । गीतिः सामध्वनिः स्त्रोता हुंकृतिः सामवेदिनी ॥४॥
अध्वरा गिरिजा क्षुद्रा निग्रहानुग्रहात्मिका । पुराणी शिल्पिजननी इतिहासावबोधिनी ॥५॥
वेदिका यज्ञजननी महावेदिः सदक्षिणा । आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता गोरक्षा गदिताः क्रमात् ॥६॥
शक्तयश्चैकपञ्चाशत् सर्वकामप्रदायिकाः ।

॥ अथ त्वरितामातृका:॥

त्वरिता से शान्तिकरका तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व कौमारी से गदिता तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

त्वरिता तोतुला धात्री किराती कृषिवाणिजे । सर्वेश्वरी ध्रुवा सर्वा सर्वज्ञानसमुद्भवा ॥१॥
त्रिमात्री त्रिपुरा सर्वाकारा मेया ततः परम् । ब्रह्माणी शान्तिकरका संप्रोक्ताः स्वरशक्तयः ॥२॥
कौमारी विश्वजननी शूलहस्ता महेश्वरी । किङ्करी शक्तिहस्ता च दक्षयज्ञविनाशिनी ॥३॥
वरायुधा शंखरवा वैष्णव्यव्यक्तिरूपिणी । वराहमूर्तिर्वाराही नृसिंहा सिंहविक्रमा ॥४॥
सहस्राक्षी सुराढ्या च सर्वपापापहा शिवा । शिवदूती घोररवा क्षुरिपाशासिधारिणी ॥५॥
विकराली महाकाली कापाली पापहारिणी । महालक्ष्मीर्महाकुक्षिर्योगिनी वृन्दवन्दिनी ॥६॥
षट्चक्री चक्रनिलया चक्रगा योनिरूपिणी । गदिताः शक्तयस्त्वेताः व्यञ्जनानां च शक्तयः ॥७॥

॥ अथ कुलसुन्दरीमातृका:॥

बालोमा भैरवी शान्ता त्रिपुरा त्रिपुरेश्वरी । अहिंसा तिमिरघ्नी च भास्वरा सूर्यमण्डला ॥१॥
वरायुधा वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा । श्रुतिर्निरन्तरा वेद्या सिद्धिः सर्वार्थसाधिनी ॥२॥
पञ्चपञ्चात्मिका गुह्या गोनिवासा च गोधना । सांध्ययोगोद्भवा शक्तिर्मात्रा काष्ठा कलात्मिका ॥३॥
पीयूषा वाजिजिह्वा च रसाधारा इरंमदा । विद्युच्छतघ्नी सिंहाक्षी एकपिङ्गाङ्किता सदा ॥४॥

कपाली वेद्या वेताली भूतसंघनमस्कृता । स्पृष्टा स्पृष्टपदा भावा विभवा देशभाषिणी ॥५॥

सर्वारम्भा निरारम्भा आरम्भा भाववाहिनी । भारती भास्वरा चैव प्रोक्ता व्यञ्जनशक्तय: ॥६॥

॥ अथ नित्यामातृका:॥

नित्या से वृत्ता तक **अं आं....अ:** स्वर युक्त व भूतनाथा से कृत्तान्ता तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

नित्या च भैरवी सूक्ष्मा प्रचण्डा सद्‌गतिप्रदा । प्रिया शुद्धा च शुष्का च रक्ताङ्गी रक्तलोचना ॥१॥

खट्‌वाङ्गधारिणी शङ्खा कङ्काला कालवर्हिणी । हिमघ्नयना वृत्ता सम्प्रोक्ता: स्वरशक्तय: ॥२॥

भूतनाथा भूतभाव्या दुर्वृत्तजनसम्पदा । पुण्योत्सवा पुण्यगन्धा पुण्यपापविवेकिनी ॥३॥

दिग्वासा क्षोमवसना एकवस्त्रो जटाधरा । कपालमालिनी घण्टाधरा चैव घनुर्धरा ॥४॥

टङ्कहस्ता चला ब्राह्मी हाकिनी शाकिनी रमा । ब्रह्माण्डपालितमुखा विष्णुमाया चतुर्भुजा ॥५॥

अष्टादशभुजा भीमा विचित्रा चित्ररूपिणी । पद्मासना पद्मवहा स्फुरत्कान्ति: शुभावहा ॥६॥

मौनिनी मौलिनी मान्या मानदा मानवर्द्धिनी । जगत्प्रिया विष्णुगर्भा मङ्गला मङ्गलप्रिया ॥७॥

भूतिर्भूतिकरी भाग्या भोगीन्द्रशयना मिता । तप्तवामीकरी कृत्या आर्या वंशविवर्द्धिनी ॥८॥

अघौघशोषणी श्रावी कृत्तान्ता शक्तयस्त्विमा: । एकपञ्चादशदर्णानां सर्वसिद्धिप्रदायिका: ॥९॥

॥ अथ नीलपताकामातृका:॥

नीलपताका से कुसुमोचिता तक **अं आं....अ:** स्वर युक्त व शक्रयस्त्वेता से दृष्टरक्षया तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

अथ नीलपताका च नीला माया जगत्प्रिया । सहस्रवज्रा पद्माक्षी पद्मिनी श्रीरनुत्तमा ॥१॥

दिव्यक्रमा दिव्यभोगा दिव्यमाल्यानुलेपिनी । शुक्लाच्छवसना सौम्या सर्वर्तुकुसुमोचिता ॥२॥

स्वराणां शक्रयस्त्वेता: साधकाभीष्टदायिका: । सर्वैश्वर्यगुणोपेता प्रणवाग्राग्र सम्भवा ॥३॥

व्यञ्जना व्यञ्जका व्यक्ता सर्ववर्णानुवर्तिनी । जगन्माताभयकरी भूतधात्री सुदुर्लभा ॥४॥

कामिनी दण्डिनी दण्ड्या खड्गमुद्‌गरपाणिनी । शस्त्रास्त्रदर्शिनी बीजा विबीजा बीजिनी परा ॥५॥

वाचस्पतिप्रिया दीक्षा परीक्षा शिवसम्भवा । राजसी तामसी सत्या सत्वोद्रिक्ता विमोहिनी ॥६॥

अतीतानागतज्ञाना वर्तमानापदेशिनी । आप्तोपदेशिनी संवित्सत्त्वबोधा धराधरा ॥७॥

प्रकृतिर्विकृतिर्गङ्गा धूर्जटिर्विकृतानना । योगिप्रिया योगिगम्या योगिध्येया परापरा ॥८॥

वैष्णवी त्रिपदी दृष्टरक्षया कादिशक्तय: ।

॥ अथ विजयामातृका:॥

विजया जयदा जैत्री अजिता वामलोचना । प्रतिष्ठान्त: स्थिता माता जिना माया कुलोद्भवा ॥१॥

कृशाङ्गी वायवी क्षामा क्षामखण्डा त्रिलोचना । स्वराणां शक्तयस्त्वेता: कामा कामेश्वरी रमा ॥२॥

काम्या कामप्रिया कामा कामवारविहारिणी । तुच्छराङ्गी निरालस्या नीरुजा रुजनाशिनी ॥३॥
विशल्यरकरणी श्रेष्ठा मृतसञ्जीवनी परा । सन्धिनी चक्रनमिता चन्द्ररेखा सुवर्णिका ॥४॥
रत्नमालाग्निलोकस्था शशाङ्कावयवाङ्किता । तारातीता तारयन्ती भूरी भूरिप्रभा स्वरा ॥५॥
क्षेत्रज्ञा भूरिशुद्धा च मन्त्रहुङ्काररूपिणी । ज्योतिर्ज्ञाना ग्रहगतिः सर्वप्राणभृतां वरा ॥६॥
कादीनां शक्तयः प्रोक्ताः साधकाभीष्टसिद्धिदाः ॥

॥ अथ सर्वमङ्गलामातृका : ॥

सर्वमङ्गलिका से अनन्त तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व कामिका शक्ति से व्यालभूषणा तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

सर्वमङ्गलिका भव्या मङ्गला मङ्गलप्रभा । कान्तिः श्रीः प्रीतिरचला ज्योत्स्ना चैव विलासिनी ॥१॥
वरदा वारिजा व्यग्रा चारवी वास्तुदेवता । अनन्तशक्तिः सम्प्रोक्ताः स्वराणां शक्तयः क्रमात् ॥२॥
कामिकाशक्तिरतुला सर्वज्ञा ज्ञानदायिनी । युक्तिः सुयुक्तिरान्यवीक्षी कुक्षिबोधा मदालसा ॥३॥
ब्रह्मविद्या प्रभा वेश्या महायन्त्रा प्रवाहिणी । ध्याना ध्येया ध्यानगम्या योगिनी योगसिद्धिदा ॥४॥
अक्षराक्षरसन्ताना ब्रह्मविद्या शिवप्रदा । पञ्चब्रह्मात्मिका रुद्रविद्या वेद्यस्वरूपिणी ॥५॥
पञ्चतत्त्वात्मिका विद्या त्रिपुरा बीजतत्त्वगा । सर्वबीजात्मिका सिद्धिरज्ञानोपाधिगामिनी ॥६॥
कल्पान्तदहनज्वाला सद्वृत्तिर्व्यालभूषणा । कादीनां शक्तयस्त्वेताः साधकाभीष्टदायिकाः ॥७॥

॥ अथ ज्वालामालिनीमातृका : ॥

ज्वालिनी से रोमहर्षिणी तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व कान्ति से पूजक प्रिया तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

ज्वालिनी च महाज्वाला ज्वालामाला महोज्ज्वला । द्विभुजा सौम्यवदना ज्ञानपुस्तकधारिणी ॥१॥
कपर्दिनी कृताभ्या सा ब्रह्माणी स्वात्मवेदिनी । आत्मज्ञानामृता नन्दा नन्दिनी रोमहर्षिणी ॥२॥
स्वराणां शक्तयस्त्वेताः कान्तिः काली द्युतिर्मतिः । विषयेच्छा विश्वगर्भा आधारी सर्वभाविनी ॥३॥
कात्यायनी कालयाता कुटिला चानिमेषिकी । नाडी मुहूर्ताहोरात्रिस्तुटिः कालविभेदिनी ॥४॥
सोमसूर्याग्निमध्यस्था मायातीता सुनिर्मला । केवला निष्कला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा ॥५॥
स्वच्छन्दभैरवी व्योमा व्योमातीता परेस्थिता । स्तुतिः स्तव्या नुतिः पूज्या पूजार्हा पूजकप्रिया ॥६॥
कादीनां व्यञ्जनानां च सम्प्रोक्ताः शक्तयस्त्विमाः ।

॥ अथ विचित्रामातृका : ॥

विचित्रा से सुकेशी तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व सोमपा से पुरजिद्राज्ञी तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

विचित्रा चित्रवसना चित्रिणी चित्रभूषणा । अनुलोमापसन्धिश्च मध्यमानामिकात्मिका ॥१॥
तेजोवती पद्मगर्भा मन्दरेखा घृणावालः । विदुषी मौलिनी व्यक्ता सुकेशी स्वरशक्तयः ॥२॥

सोमपा सोमसङ्काशा वेताली तालसंज्ञिका । सोमप्रिया सोमवती मन्त्रपूता यजिक्रिया ॥३॥
मृणाली ऋक्प्रदा शुक्तिर्विन्ध्याद्रिशिखरस्थिता । गदिनी चक्रिणी बिम्बा रक्तोष्ठी चारुहासिनी ॥४॥
वाग्भवा चारुजा रक्ता सुप्रसादा सुलोचना । कौशिकी कन्दरा घोणा ककुद्मी कामलोचना ॥५॥
कामोत्सवा कामचारा अकामा पूजिता परा । तत्त्वावलोका पुरजिद्राज्ञी स्युः कादिशक्तयः ॥६॥

॥ अथ दुर्गामातृकाः॥

दुर्गा से सृष्टिराहुति तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व कला से विभावरी तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

दुर्गा च कौशिकी चोग्रा चण्डा माहेश्वरी शिवा । विश्वेश्वरी जगद्धात्री स्थितिसंहारकारिणी ॥१॥
योगनिद्रा भगवती देवी स्वाहा स्वधा सुधा । सृष्टिराहुतिरेवोक्ताः स्वराणां शक्तयः क्रमात् ॥२॥
कला माया रमा ज्येष्ठा स्तुतिः पुष्टिः स्थितिर्गतिः । रतिः प्रीतिर्धृतिर्नीतिर्विभूतिर्भृतिरुन्नतिः ॥३॥
क्षितिर्क्षान्तिः क्षतिर्कान्तिः शान्तिः क्लान्तिर्महाद्युतिः । क्षुत्पिपासा स्पृहा लज्जा निद्रा मुद्राचिदात्मिका ॥४॥
गिरिजा भारतीर्लक्ष्मीः शची संज्ञा विभावरी । कादीनां शक्तयः प्रोक्ताः सर्वसिद्धिप्रदायिकाः ॥५॥

॥ अथ सरस्वतीमातृकाः॥

सरस्वती से संमूढा तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व कामदा से स्वस्ति दक्षिणा तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

सरस्वती मन्त्रशक्तिर्वेदमाता जगन्मयी । मानसी हंसगा हंसी सरागा क्षेमकारिणी ॥१॥
अक्षया विजया प्रीतिर्लोमशा लोमहारिणी । विज्ञानदेहा संमूढा स्वराणां शक्तयः क्रमात् ॥२॥
कामदा कामिनी कान्ता परमेष्ठी निभोतमा । पुण्यानुबन्धा श्रेयस्का दयासारानुकम्पिनी ॥३॥
चतुःस्तना पञ्चयज्ञा सुरभिः सुरपूजिता । विश्वासजीविनी विश्वा कामधेनुः स्वकामदा ॥४॥
अविद्या दुहिता कान्ता कपिला मलवर्जिता । सुशीला जीववत्सा च शीलवत्सा सुवत्सला ॥५॥
नन्दिनी जयदाऽजेया दुर्जया दुःखहारिणी । स्वस्तिदा स्वस्तिकृत् स्वस्तिस्वरूपा स्वस्तिदक्षिणा ॥६॥
शक्तयः शुभ्रवर्णाश्च व्यञ्जनानां शुभप्रदाः ।

॥ अथ वाराहीमातृकाः॥

वाराही से रमा उमा तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व खड्गिनी से अक्षया तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

वाराही भद्रिणी भद्रा वाताली कोलवक्त्रका । जृम्भिणी स्तम्भिनी विश्वा जम्भिनी मोहिनी शुभा ॥१॥
रुन्धिनी वशिनी शक्ती रमोमा स्वरशक्तयः । खड्गिनी शूलिनी घोरा शङ्खिनी गदिनी तथा ॥२॥
चक्रिणी वज्रिणी चैव पाशिन्यंकुशिनी । शिवा चापिनी भवबन्धघ्नी जयदा जयदायिनी ॥३॥
महाघोरा महाभीमा भैरवी चारुहासिनी । पद्मिनी बाणिनी चोग्रा मुसलिन्यपराजिता ॥४॥
जयप्रदा जया जैत्री रिपुहा भयवर्जिता । अभया मानिनी पोत्री किटिनी दंष्ट्रिणी रमा ॥५॥
अक्षया कादिवर्णानां शक्तयः सिद्धिदायिकाः ।

॥ अथ त्रिमूर्तिमातृका:॥

केशव की केशव से अनिरुद्ध तक 16 मूर्ति है तथा ईशानोग्रोर्ध्वनयना से अस्थितालाधरा आठ शक्तियाँ है, इन आठ शक्तियों को पुन: गिनने पर 16 शक्तियाँ हो जाती है शिव की भव से वामदेव तक 12 मूर्ति है तथा करभद्रा से कृतिडामरी तक 12 शक्तियाँ है ब्रह्मा की ब्रह्म से विज्ञेया तक 10 मूर्ति है तथा यक्षिणी से क्षमा तक 10 शक्तियाँ है 16 स्वरों से केशव तथा उनकी शक्तियों के स्वर मातृका से न्यास व 12 रुद्र एवं 12 उनकी शक्तियों का **कं** से **भं** तक के वर्णों से तथा ब्राह्मादि 10 मूतियों के उनकी शक्ति सहित **मं** से **क्षं** तक वर्ण युक्त न्यास करें।

केशवो नारायणो माधवगोविन्दविष्णव: । मधुसूदनसंज्ञोऽन्य: स्यात् त्रिविक्रमवामनौ ॥१॥
श्रीधरश्च हृषीकेश: पद्मनाभस्तथैव च । दामोदरो वासुदेव: संकर्षण इति स्मृत: ॥२॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च स्वराणां मूर्तय: क्रमात् । ततश्चाक्षरशक्तिश्च आद्या चैवेष्टदा पुन: ॥३॥
ईशानोग्रोर्ध्वनयना ऋद्धि: स्याद्रूपिणी तथा । लुप्ता च लूनदोषा च ततश्चैककलापिका ॥४॥
(ऐं) कारिण्योघवती चौर्वकन्या स्यादञ्जनप्रभा । अस्थितालाधरा चैव स्वराणां शक्तय: क्रमात् ॥५॥
भव: शर्वश्चरुद्रश्च तत: पशुपतिस्तथा । उग्रश्चैव महादेवो भीम ईशान एव च ॥६॥
ततस्तत्पुरुषोऽघोर: सद्योजातस्तत: परम् । वामदेवस्तु विज्ञेया: कभादीनां च मूर्तय: ॥७॥
करभद्रा खगबला गरिमादिफलप्रदा । घोरपंदा पङ्क्तिमासा ततश्चन्द्रार्धधारिणी ॥८॥
छन्दोमयी जगत्स्थाना (झां) कृतिर्ज्ञानप्रभा तथा । टङ्कढक्कधरा चैव ततश्च (ष्ठं) कृतिडामरी ॥९॥
कभादीनां च वर्णानां प्रोक्ता द्वादश शक्तय: । ब्रह्मा यज्ञपतिर्वेधा: परमेष्ठी पितामह: ॥१०॥
विधाता च विरिञ्चिश्च स्त्रष्टा च चतुरानन: । हिरण्यगर्भो विज्ञेया यादीनां दश मूर्तय: ॥११॥
यक्षिणी रञ्जिनी लक्ष्मीर्वज्रिणी शशिधारिणी । षडाधारालया सर्वनायिका हसितानना ॥१२॥
ललिता च क्षमा चैव यादीनां दश शक्तय: । त्रिमूर्तिमातृका प्रोक्ता सर्वसिद्धिप्रदा मता॥१३॥

॥ अथ कामकलामातृकास्वराणामेव:॥

श्रद्धा से सुभगा तक **अं आं....अ:** स्वर युक्त न्यास करें।

श्रद्धा प्रीतीरतिश्चैव धृति: कान्तिर्मनोरमा । मनोहरा ततश्चैव प्रोक्तां सात्र मनोरथा ॥१॥
मदनोन्मादिनी पश्चात् मोहिनी शंखिनी तथा । शोषिणी च वशङ्कारी शिञ्जिनी सुभगा तत: ॥२॥
कामस्यैता: कला: प्रोक्ता: स्वराणां षोडशेष्टदा: ।

॥ अथ सोमकलामातृका:॥

पूपा से अमृता तक **अं आं....अ:** स्वर युक्त न्यास करें।

पूपा चेद्धा सुमनसा रति: प्रीतिर्धृतिस्तथा। ऋद्धि: सौम्या मरीचिश्च परतस्त्वंशुमालिनी ॥१॥
शशिनी चाङ्गिराच्छाया तत: संपूर्णमण्डला । तुष्ट्यमृताख्या कथिता कला: स्यु: सस्वरा विधो: ॥२॥

॥ अथ अपराजितामातृका:॥

प्रत्यङ्गिरा से कपालिनी तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व धृतशूलपातका से क्षांतिरूपा तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

प्रत्यङ्गिरा सिंहमुखी तथा ज्वालामुखी शिवा । वैष्णवी नारसिंही च त्रिमात्रा शाङ्करी परा ॥१॥
अर्द्धमात्रा भगवती शूलिनी शुम्भमर्दिनी । शशाङ्कधारिणी चैव भीषिका च कपालिनी ॥२॥
स्वराणां शक्तयः प्रोक्ता धृतशूलकपालकाः । उग्रा वीरा महाज्वाला हाकिनी विश्वरूपिणी ॥३॥
स्तुत्या च ज्वलिनी लक्ष्मीस्तमिस्त्रा सर्वतोमुखी । वरेण्या तोतुला मुख्या खातोता च ततः परम् ॥४॥
नृमुण्डमाला सिंही च हन्त्री भीमा च खण्डिनी । तारिणी भयदा चैव द्राविणी मृत्युरूपिणी ॥५॥
त्युत्कारी मृत्युहरिणी त्युन्नता च नतिप्रिया । मालिनी ञार्णरूपा च हंसिनी च शिखण्डिनी ॥६॥
कुण्डिनी क्षान्तिरूपा च कादीनां शक्तयः क्रमात् ।

॥ अथ भवानीमातृका:॥

भवानी से निष्कला तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व स्वच्छन्दा से हिरण्यरूपा तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

भवान्यनन्ता शरभी चक्रिणी करुणाकरा । एकमात्रा द्विमात्रा च त्रिमात्रा चापरा जया ॥१॥
अर्धमात्रा परा सूक्ष्मा षट्पदा च मनस्विनी । निष्कला शक्तयः प्रोक्ताः स्वराणां वसुधर्मदाः ॥२॥
स्वच्छन्दानन्दसन्दोहा व्योमाकारा निरूपिता । गद्यपद्यात्मिका चैव सर्वालङ्कारसंयुता ॥३॥
साधुबन्धपदन्यासा सर्वोक्तिघटनावली । षट्तर्ककर्कशाकारा सर्वतर्कविवर्जिता ॥४॥
आदित्यवर्णाऽवर्णा च तामसी पररूपिणी । ब्रह्माणी ब्रह्मसन्ताना वेदवाग्वादिनीश्वरी ॥५॥
पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिता । वेदा वेदवती सर्वा हंसविद्याधिदेवता ॥६॥
विश्वेश्वरी जगद्धात्री विश्वनिर्माणकारिणी । वेदिका वेदरूपा च कालिका कालरूपिणी ॥७॥
नारायणी महादेवी सर्वसत्त्वप्रवर्तिका । हिरण्यवर्णरूपा च कादीनां शक्तयः क्रमात् ॥८॥

॥ अथ खेचरीमातृका:॥

खेचरी से सुमङ्गला तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व भवबन्धविमोचिका से अक्षया तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

खेचरी शक्तिरतुला व्योमाम्बा व्योमरूपिणी । व्योमस्था व्योमरूपा च व्योमातीता जगन्मयी ॥१॥
शाम्भवी शम्भुवनिता शरणार्तिप्रभेदिनी । जगन्माता जगद्धात्री परविद्या सुमङ्गला ॥२॥
स्वराणां शक्तयस्त्वेता भवबन्धविमोचिकाः । परा परायणा भव्या मालिनी मदविह्वला ॥३॥
विद्या सूक्ष्मा प्रभा संध्या जगन्माया जगत्क्रिया । निशाचरी जया मायाऽमेया मोहविवर्धिनी ॥४॥
मोहनी रञ्जिनी वश्याऽवरा मातृस्वरूपिणी । वेदविद्या महाविद्या यज्ञविद्या यमान्तकी ॥५॥

****

सुखिनी सुखदा भोग्या भोगिनी दण्डिनी रमा । विशारदा विशालाक्षी ह्लादिनी चाक्षया तथा ॥६॥

कादीनां शक्तयः प्रोक्ताः साधकेष्टफलप्रदाः ।

॥ अथ चामुण्डामातृकाः॥

चामुण्डा से माया तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व कमला से क्षमोदरी तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

चामुण्डा चण्डिका चण्डा चण्डमुण्डविनाशिनी । नारायणी भद्रकाली विरजा विश्वमातृका ॥१॥

अजिता भार्गवी सौम्या दुर्गा दुर्गतिनाशिनी । आप्यायनी चण्डघण्टा मायोक्ताः स्वरशक्तयः ॥२॥

कमला खड्गिनी चैव गदिनी घण्टिका परा । चरित्रा च्छत्रिणी जङ्घा झङ्कारी जयदा ततः ॥३॥

टङ्कहस्ता च ठङ्कारी डामरी ढक्किका शिवा । तमोपहन्त्री स्थानेशी दयारूपा धनप्रदा ॥४॥

नव्या परा च फट्कारी बन्धिनी भयवर्जिता । महामाया च योगीषी रङ्गिणी लम्बकेशिनी ॥५॥

वरदा शाकिनी षण्डा सर्वेशी हलिनी तथा । ललिता च तथा क्षामोदरी स्यात् कादिशक्तयः ॥६॥

केवलां मातृकां न्यस्य चण्डाभक्तो भवेद्यदि । चामुण्डाशक्तिसहितां मातृकां विन्यसेद्बुधः ॥७॥

॥ अथ परामातृकाः॥

परा से मानिनी तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व कलाावती से हव्यवाहिनी तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

परा परायणा सूक्ष्मा विश्वा दाक्षायणी जया । विजया मानदा दक्षा योगिनी मानदा रतिः ॥१॥

कौमारी पार्वती दुर्गा मानिनी स्वरशक्तयः । कलावती च करुणा कामिनी कान्तिदायिनी ॥२॥

खातीता खेचरी गम्या गारुडी घनगर्जिनी । चारुहासा च चपला जगद्धात्री जया रमा ॥३॥

विश्वोद्धारा विश्वमयी विशालाक्षी विशोकिनी । वरदा वासुकी बाला परमेष्ठिनुता धृतिः ॥४॥

भास्वरा भावगम्यार्या भानुमण्डलवर्तिनी । फट्कारी लासिनी तारा हारिणी हव्यवाहिनी ॥५॥

ह्लादिनी क्लेदिनी क्लिन्ना गदिताः कादिशक्तयः ।

॥ अथ कुरुकुल्लामातृकाः॥

कुरुकुल्ला से रणत्काञ्ची विभूषणा तक **अं आं....अः** स्वर युक्त व धनधर्मसुखप्रदा से लोकधारिणी तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

कुरुकुल्ला कुरङ्गाक्षी विषहन्त्री विषापहा । विश्वेश्वरी विशालाक्षी गारुडी गजगामिनी ॥१॥

विनता विश्वजननी विश्वाख्या विश्वमातृका । राजसी तामसी सत्त्वा रणत्काञ्चीविभूषणा ॥२॥

स्वराणां शक्तयस्त्वेता धनधर्मसुखप्रदाः । कल्याणी कमला कान्ता सौपर्णी तार्क्ष्यशक्तिनी ॥३॥

नागहन्त्री नागमाता नागिनी नगजा प्रिया । नलिनी नन्दिनी भव्या सदापुष्पवती शिवा ॥४॥

मदद्रवा मदवती मादिनी मन्मथालसा । मोहिनी मुरजप्रीता मुनिमानसवासिनी ॥५॥

पोतस्था पुरजित्कान्ता पोतशक्तिः पुरप्रिया । दिगम्बरा दितिः सौम्या दिनेशी दीनवल्लभा ॥६॥

दयावती दमप्रीता दारुणी लोकधारिणी । कादीनां शक्तय: प्रोक्ता: साधकेष्टफलप्रदा: ॥७॥

॥ अथ पञ्चदशीमातृका:॥

सुन्दरी से सौम्या तक **अं आं....अ:** स्वर युक्त व कौलिनी से चन्द्रमण्डलमध्यगा तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

सुन्दरी सुभगा भव्या महामाया मनोन्मनी । त्रिपुरा वशिनी बाला महात्रिपुरदेवता ॥१॥
महाकामकला श्रेष्ठा नीला नीलसरस्वती । विश्वेशो विजया सौम्या संप्रोक्ता: स्वरशक्तय: ॥२॥
कौलिनी कुलमार्गस्था कुलान्तकनिवासिनी । सर्वविद्येश्वरी चैव सर्वमन्त्रेश्वरी तथा ॥३॥
सर्ववागीश्वरी सिद्धा सर्वसिद्धेश्वरी जया । सर्ववीरेश्वरी वीरा सर्वपीठेश्वरी शिवा ॥४॥
भैरवी भावनातीता भावगम्या महेश्वरी । महाविद्या महाजैत्री महात्रिपुरसुन्दरी ॥५॥
काली कात्यायनी दुर्गा वैष्णवी विष्णुवल्लभा । योगिनी योगमार्गस्था षट्‌चक्रपुरवासिनी ॥६॥
विमला विश्वनिलया विश्वाख्या विश्वविग्रहा । शशिनी शारदा चैव चन्द्रमण्डलमध्यगा ॥७॥
कादीनां शक्तयस्त्वेता: संप्रोक्ता: सिद्धिदायिका: ।

॥ अथ मालिन्यादिमातृका:॥

उर्ध्वआम्नायगत मन्त्रों की सिद्धि में यह विद्या सहायक है। मालिनी से क्रिया तक **अं आं....अ:** स्वर युक्त व गायत्री से संसारभयहन्त्री तक **कं.........क्षं** वर्ण संयुक्त न्यास करें।

मालिनी नादिनी चैव ग्रसिनी प्रियदर्शिनी । निवृत्ति: सुप्रतिष्ठा च विद्या शान्तिस्तत: परम् ॥१॥
चामुण्डा गुह्यशक्तिश्च वज्रिणी च करालिनी । कपालिनी शिवा चैव ज्ञानशक्ति: क्रिया तथा ॥२॥
स्वराणां शक्तयस्त्वेता ज्ञानमोक्षफलप्रदा: । गायत्रीच्छा च सावित्री देहिनी मुण्डमालिनी ॥३॥
फट्‌कारी च वषट्‌कारी स्वधा स्वाहाहुतिप्रिया । वामा ज्येष्ठा च रौद्री च ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥४॥
जया वेदमयी दुर्गा जयन्ती रक्तदन्तिका । जगज्जेत्री च चैतन्यमयी विश्वप्रबोधिनी ॥५॥
क्षमा शान्तिर्दया निद्रा रुद्रशक्ति: परायणा । हुंकारी खेचरी माया विश्वयोनिस्त्रयीमयी ॥६॥
संसारभयहन्त्री च संप्रोक्ता: कादिशक्तय: । न्यस्तव्या मातृकास्त्वेता ऊर्ध्वाम्नायाणुदीक्षितै: ॥७॥

॥ अथ पञ्चभूतमातृका:॥

इसमें पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश तत्त्व की मातृकाओं का वर्णन है। **तत्र शारदायाम्:-**

वाय्वग्निभूजलाकाशा: पञ्चाशल्लिपय: क्रमात् ।
पञ्च ह्रस्वा: पञ्च दीर्घा बिन्द्वन्ता: सन्धिसंभवा: ॥१॥
पञ्चश: कादय: षक्षलसहान्तसमन्विता: ।

तन्त्रराजे :-

प्राणाग्नीलाम्बुखात्मान: पङ्क्तय: पञ्च कीर्तिता: । मायाशक्त्यभिध: सर्ग: पञ्चभूतात्मक: प्रभु: ॥१॥

तस्मात्तस्यात्र विन्यासो नैकदेशः शिवात्मनः । वातो मरुच्चरः प्राणो वायुर्नादो रयो जवी ॥२॥
व्याप्तः स्पर्शश्च नामानि वर्णानां मरुतां क्रमात् । अग्निर्वह्निः शुचिस्तेजः प्रभा दावो शिखी द्युतिः ॥३॥
दाहो ग्रासश्च नामानि वर्णानां तेजसामपि । धरा क्ष्मा भूः स्थिरा ज्या कुर्गोत्रा भूमी रसा इला ॥४॥
नामान्येतानि वर्णानां भौमानां स्युः क्रमेण वै । जलं वारि वनं वाः कं पाथस्तोयं रसोऽम्बु हृत् ॥५॥
नामान्येतानि वर्णानामाप्यानां स्युर्यथाक्रमम् । विभुः खं खं द्युरभ्रं च व्योम शून्यं नभो वियत् ॥६॥
हंसश्च नामान्येतानि क्रमेण व्योमरूपिणाम् ।

॥ अथ भूतलिपिमातृका:॥

भूतलिपी (अं आं....अः, कं.........क्षं) के ज्ञान व उपासना व उनकी मातृकाओं के न्यास से मन्त्र शीघ्र सिद्ध होता है।

तत्र सिद्धसारस्वते: -

अथ वक्ष्ये महामन्त्रान् सरस्वत्याः सुकामदान् । तेष्वादौ भूतलिप्याख्यो मनुः संप्रोच्यते प्रिये ॥१॥
सारस्वते महातन्त्रे गोपितश्चातिदुर्लभः । विष्णोः सकाशाद्यं लब्ध्वा मुनयो वाञ्छितं फलम् ॥२॥
लेभिरे सकलं देवि किं बहूक्तेन सर्वदा । ह्रस्वानां पञ्चकं वर्ग आदितः परिकीर्तितः ॥३॥
द्वितीयः कथितो देवि शिवाद्याश्चतुरक्षराः । खं वायुवह्न्यम्बुधराः तृतीयः सम्प्रकीर्तितः ॥४॥
वर्गान्त्याद्यद्वितीयोपान्त्यतृतीयैः क्रमादमी । पञ्च वर्गा वान्तशान्तभृगुभिर्नवमो मतः ॥५॥
नववर्गात्मको मन्त्रो द्विचत्वारिंशदक्षरः । वर्गाणामादिमो वर्गः श्रीकण्ठोर्ध्वोष्ठखान्विताः ॥६॥
वर्गान्त्या वान्तसंयुक्ताः क्रमेण कथिता अमी । खं वायुवह्न्यम्बुधरा वर्गवर्णा मताः क्रमात् ॥७॥
वर्गो द्वितीयो भूहीनो वारिभूवियुतोऽन्तिमः । नवानामपि वर्गाणां देवताः कथिताः क्रमात् ॥८॥
विरिञ्चिविष्णुरुद्राह्वा अश्विनेयौ प्रजापतिः । लोकपालाः सक्रियादिशक्तयः परिकीर्तिताः ॥९॥

॥ अथ त्रिषष्ट्यक्षरमातृका मातृकार्णवे॥

त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः । प्राकृते संस्कृते वापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयम्भुवा ॥१॥
स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः । यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः ॥२॥
अनुस्वारो विसर्गश्चकपौ चापि पराश्रयौ । दुःस्पृष्टश्चेति विज्ञेय लृकारः प्लुत एव च ॥३॥

॥ अथ शाम्भवीमातृका:॥

शाम्भवी से विम्बी तक अं आं....अः स्वर युक्त व कुण्डोदरी से स्मृता तक कं.........क्षं वर्ण संयुक्त न्यास करें।

ऊर्ध्वाम्नायदीक्षितैर्न्यासः कर्तव्यः॥

शाम्भवी तामसी माया महामाया शिवोत्तमा । ऊर्ध्वकेशी विरूपाक्षी खेचरी शिववल्लभा ॥१॥
कुण्डोदरी च लोलाक्षी विष्णुमाया महोदरी । लम्बोष्ठी व्योमरूपा च विभ्वी च स्वरशक्तयः ॥२॥
कान्तिः श्रद्धा रतिः प्रीतिरम्बरा प्राणरूपिणी । शुचिः क्षितिश्च भुवना द्युतिः श्रीः परमा रमा ॥३॥

राजसी ग्रसिनी चण्डा राक्षसी च विशारदा । वाग्वादिनी जया भीमा शिवा शङ्करवल्लभा ॥४॥
सन्ध्या प्रज्ञा प्रभा ज्योत्स्ना विनदा विश्वरूपिणी । अस्थिमालाधरा पञ्चवक्त्रोग्रा क्षोभिणी मतिः ॥५॥
व्यापिनी च स्मृताः कादिवर्णानां शक्तयः क्रमात् । शाम्भवक्रमदीक्षायुक्साधकानां महेश्वरि ॥६॥
शाम्भवी मातृका प्रोक्ता सर्वाभीष्टफलप्रदा । एतां विन्यस्य चादौ तु ततो रश्मिक्रमं न्यसेत् ॥७॥

॥ अथ कालरात्रिमातृकाः॥

कालरात्रि से मोहवर्धिनी तक अं आं....अः स्वर युक्त व कामिनी से परोत्साहा तक कं.........क्षं वर्ण संयुक्त न्यास करें।

कालरात्रिर्महारात्रिः कटुका सुभगा शिवा । मोहिनी मोहरात्रिश्च विद्या कटुकपत्रिका ॥१॥
आथर्वणस्य दुहिता रञ्जिनी विश्वमोहिनी । मोहनास्त्रा मोहरूपा सौभाग्या मोहवर्धिनी ॥२॥
स्वराणां शक्तयस्त्वेताः साधकाभीष्टहेतवः । कामिनी कमनप्रीता द्राविणी क्षोभिणी परा ॥३॥
मदनोन्मादिनी चैव मन्मथा च मनोन्मनी । मनस्विनी मनोवासिन्यरुणा मदनोत्सवा ॥४॥
मादिनी मदसन्ताना मंजुवाणी मनोहरा । मनोरमा प्रिया कान्ता मंजुघोषा मदप्रिया ॥५॥
कामवर्धनिका चैव दारुणा दमनप्रिया । दण्डिनी विश्वनटिनी नलिनी विश्वमालिनी ॥६॥
हावा भावा भावगम्या भावातीता विनोदिनी । पञ्चबाणा परोत्साहा कादीनां शक्तयः क्रमात् ॥७॥

॥ हंसमातृका न्यासः॥

विनियोग – अस्य श्री हंसमातृका न्यास मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि गायत्री छंदः हरगौरी महादेवी मातृका देवता सर्वाभीष्टये न्यासे विनियोगः।

उद्यद्भानुस्फुटित ताडिदाकार मर्धाम्बिकेशं पाशाऽभीती वरद परशु संसधानं कराब्जैः ।
दिव्याकल्पै र्नवमणिमयैः शोभितं विश्वमूलं सौम्याग्नेयं वपुरवतु वश्चन्द्रचूडं त्रिनेत्रम् ॥

मातृका के प्रत्येक वर्ण के पहले ''हंसः'' युक्त करके न्यास करे। जैसे – **हंसः अं नमः शिरसि, हंसः आं नमः मुखवृत्ते....।**

॥ परमहंसमातृका न्यासः॥

विनियोग :- अस्य श्री परमहंसमातृका न्यास मंत्रस्य परमहंस ऋषिः, विराट् छन्दः, परमात्मस्वरूपिणी चिन्मयी देवता सर्वाभीष्ट साधने न्यासे विनियोगः।

श्रीमत्परात्ममनु जृम्भिदवर्णरूपां, मानैरगम्य पदवी परिचीय मानाम् ।
विद्याक्षसूत्र कलशान् दधतीं च मुद्रां, ध्यायेत् समस्त जननीं विशदां त्रिनेत्राम् ॥

''सोऽहं'' **क्षं नमः** से विलोमक्रम से **लं हं शं षं सं.....आं अं** तक करे।

॥ इति श्रीविद्यार्णवाख्ये तन्त्रे तृतीय श्वासे मातृकान्यास सम्पूर्णम्॥

॥ मातृका यन्त्र पूजनम् ॥

भूतलिपि सिद्धि के लिये उनके मातृका यंत्र का पूजन करने से सभी ५१ वर्णो की जागृति होकर मंत्र सिद्धि होती है।

षट्कोण अष्टदल एवं भूपुर युक्त यंत्र बनायें। यंत्र की पीठ शक्तियों का अर्चन करे-

ॐ मेधायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ धीयै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ स्मृत्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ विश्वेश्वर्यै नमः।
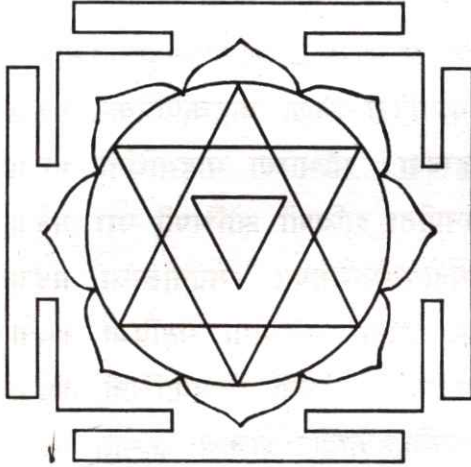
॥ मातृका पूजन यन्त्रम् ॥

षट्कोणे - **ॐ अं आं हृदयाय नमः। ॐ इं ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं ऊं शिखायै वषट्। ॐ एं ऐं कवचाय हुं। ॐ ओं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अं अः अस्त्राय फट्।**

अष्टदले - **क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग, य वर्ग, शं षं हं, लं क्षं** इन अष्टवर्गो को अर्चन करे।

अष्टदलाग्रे - ब्राह्मी आदि अष्टशक्तियों का अर्चन करे।

ऐं ब्राह्म्यै नमः। ह्रीं माहेश्वर्यै नमः। क्लीं कौमार्यै नमः। ह्रीं वैष्णव्यै नमः। हुं वाराह्यै नमः। क्ष्यौं नारसिंह्यै नमः। लं ऐन्द्र्यै नमः। स्फ्रें चामुण्डायै नमः।

अष्टदल एवं भूपूर के मध्य दश दिशाओं में अर्चन करे-

ॐ व्यापिन्यै नमः। ॐ पालिन्यै नमः। ॐ युक्तायै नमः। ॐ पावन्यै नमः। ॐ क्लेदिन्यै नमः। ॐ धारिण्यै नमः। ॐ मालिन्यै नमः। ॐ षष्ठ्यै नमः। ॐ हंसिन्यै नमः। ॐ शोत्यै नमः।

भूपुरे - भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों व उनके आयुधों का पूजन करे।

॥ इति ॥

|| अथ महाषोढा न्यासः ||

पूर्वार्द्ध खण्ड में षोढा महाषोढा न्यास दिये गये है। तथापि-

विनियोग :- अस्य श्री महाषोढा न्यासस्य ब्रह्मण ऋषिः। श्रीमर्द्धनारीश्वराय देवता प्रसन्नार्थे न्यासे विनियोगः।

|| अङ्गन्यास ||

ऐं ह्रीं श्रीं ह्सों स्हों ईशानाय नमः तर्जन्योः। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सें स्हें तत्पुरुषाय नमः मध्यमयो। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सुं स्हुं अघोराय अनामयो। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सि स्हि वामदेवाय कनिष्ठयो। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सं स्हं सद्योजाताय मूर्ध्नि। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सों स्हों ईशानाय मुखे। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सें स्हें तत्पुरुषाय हृदये। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सुं स्हुं अघोराय गुह्ये। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सि स्हि वामदेवाय पादयो। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सं स्हं सद्योजाताय मूर्ध्नि। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सों स्हों ईशानायोर्ध्व वक्त्राय मुखे। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सें स्हें तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय दक्षकर्णे। ऐं ह्रीं श्रीं हसुं स्हुं अघोराय दक्षिणवक्त्राय वामकर्णे। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सिं स्हिं वामदेवायोत्तर वक्त्राय चोर कूपे। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सं स्हं सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः सर्वाङ्गे।

|| प्रपञ्चन्यास ||

मातृकान्यास के मूर्ध्यन्यादि ५० स्थान है उन्हीं स्थानों में न्यास करे। जहां संकेत ६ है उनका तात्पर्य **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं स्हौं** समझे।

६ अं प्रपञ्चरूपायै श्रियै नमः शिरसि। ६ आं द्वीपरूपायै मायायै। ६ इं जलाधिरूपायै कमलायै। ईं गिरिरूपायै विष्णुवल्लभायै। ६ उं पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै। ६ ऊं पीठरूपायै समुद्रतनयायै। ६ ऋं क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे। ६ ॠं वनरूपायै कमलवासिन्यै। ६ लृं आश्रमरूपायै इन्दिरायै। ६ लॄं गुहारूपायै मायै। ६ ऐं नदीरूपायै रमायै।। ६ ऐं चत्त्वररूपायै पद्मायै। ६ ओं उद्भिजरूपायै। ६ नारायण रूपायै। ६ औं स्वेदजरूपायै सिद्ध लक्ष्म्यै। ६ अं अण्डज रूपायै राजलक्ष्म्यै। ६ अः जरायु रूपायै महालक्ष्म्यै। ६ कं लवरूपायै आर्यायै। ६ खं त्रुटिरूपायै उमायै। ६ गं कलारूपायै चण्डिकायै। ६ घं काष्ठारूपायै दुर्गायै। ६ ङं निमेष रूपायै शिवायै। ६ चं श्वासरूपायै अर्पणायै। ६ छं घटिकारूपायै अम्बिकायै। ६ जं मुहुर्त्तरूपायै सत्यै। ६ झं प्रहररूपायै ईश्वर्यै। ६ ञं दिनरूपायै शांभवे। ६ टं संध्यारूपायै ईशान्यै। ६ ठं रात्रिरूपायै पार्वत्यै। ६ डं तिथिरूपायै मङ्गलायै। ६ ढं वाररूपायै दाक्षायिण्यै। ६ णं नक्षत्ररूपायै हेमवत्यै। ६ तं योगरूपायै महामायायै। ६ थं करणरूपायै माहेश्वर्यै। ६ दं पक्षरूपायै मृडान्यै। ६ धं मासरूपायै रुद्राण्यै। ६ नं राशिरूपायै शर्वाण्यै। ६ पं ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै। ६ फं अयनरूपायै काल्यै। ६ बं संवत्सररूपायै कात्यायन्यै। ६ भं युगरूपायै गौर्यै। ६ मं प्रलयरूपायै भवान्यै। ६ यं पञ्चभूतरूपायै ब्राह्मयै। ६ रं पञ्चतन्मात्रारूपायै वागीश्वर्यै। ६ लं पञ्चकर्मेन्द्रियरूपायै वाण्यै। ६ वं पञ्चज्ञानेन्द्रियरूपायै सावित्र्यै। ६ शं पञ्चप्राणरूपायै सरस्वत्यै। ६ षं गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै। ६ सं अंतकरण चतुष्टय रूपायै वाक्प्रदायै। ६ हं अवस्थात्रयरूपायै शारदायै। ६ लं सप्तधातुरूपायै भारत्यै। ६ क्षं दोषत्रयरूपायै विद्यात्मिकायै नमः। ६ अं आं.........लं क्षं सकल प्रपञ्चाधिदेवतायै श्री पराम्बायै नमः स्हौं ह्सौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ नमः। इति सर्वाङ्गे।

॥ भुवनन्यास ॥

जहां मूल देवता लिखा है वहां इष्ट मन्त्र पढ़ें।

६ अं आं इं अतललोक निलय शतकोटि गुह्याद्य योगिनी मूलदेवता युताधार शक्त्यम्बादेव्यै नमः गुल्फयोः।

६ इं उं ऊं वितललोक निलय शतकोटि गुह्यतर अनंत योगिनी मूलदेवता नमः जङ्घयोः।

६ ऋं ॠं लृं सुतललोक निलय शतकोटि अतिगुह्याचिन्त्य योगिनी मूलदेवतायुत0 (मूलदेवता का इष्ट मंत्र) **जान्वो।**

सभी जगह **मूल देवतायुताधार शक्त्याम्बा देव्यै नमः** पूरा पढ़े। अथवा मूल मंत्र सहित पढ़े।

६ लृं एं ऐं महातललोक निलय शतकोटि महागुह्य स्वतंत्रयोगिनी मूलदेवता0- उर्वो ।

६ ओं औं तलातललोक निलय शतकोटि परमगुह्य इच्छायोगिनी मूल देवता0- स्फिचो ।

६ अं अः रसातललोक निलय शतकोटि रहस्य ज्ञान योगिनी मूल देवता0- **मूलाधारे ।**

६ कं.......ङं पाताललोक निलय शतकोटि रहस्य क्रिया योगिनी मूल देवता0- **स्वाधिष्ठाने ।**

६ चं.......ञं भूर्लोकनिलय शतकोटि रहस्य डाकिनी योगिनी मूल देवता0 - **मणिपूरके ।**

६ टं.......डं भुवर्लोकनिलय शतकोटि महारहस्य राकिनी योगिनी मूल देवता0 - **अनाहते ।**

६ तं.......नं स्वर्लोकनिलय शतकोटि परम रहस्य लाकिनी योगिनी मूल देवता0 - **विशुद्धे ।**

६ पं.......मं महर्लोकनिलय शतकोटि गुप्त रहस्य काकिनी योगिनी मूल देवता0- **आज्ञाचक्रे ।**

६ यं.......वं जनकर्लोकनिलय शतकोटि गुप्ततर रहस्य शाकिनी योगिनी मूल देवता0- **ललाटे ।**

६ शं.......हं तपोलोक निलय शतकोटि गुप्तरहस्य हाकिनी योगिनी मूल देवता0- **ब्रह्मरन्ध्रे ।**

६ लं.......क्षं सत्यलोक निलय शतकोटि महागुप्तरहस्य याकिनी योगिनी मूल देवता0- युताधार शक्त्यम्बा देव्यै नमः ।

६ अं.......कं क्षं सकल भुवनाधिपतये श्रीपराम्बादेव्यै नमः स्हौं ह्सौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।

व्यापक न्यासं कुर्यात् ।

॥ मूर्ति न्यासः॥

(**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौंः** इन ६ बीजों की जगह संकेत ६ दिया गया है।)

६ अं केशवायाक्षर शक्त्यै नमः शिरसि। ६ आं नारायणयाद्य शक्त्यै नमः मुखे।

६ इं माधवायेष्टदायै नमः दक्षांसे । ६ ईं गोविन्दायेशानायै नमः **वामांसे ।**

६ उं विष्णवे उग्रायै दक्ष पार्श्वे । ६ ऊं मधुसूदनायै उर्ध्वनयनायै नमः **वामे ।**

६ ऋं त्रिविक्रमाय ऋद्ध्यै नमः दक्षकट्यां । ६ॠं वामनाय रूपिण्यै वामकट्यां।

६ लृं श्रीधराय लुप्तायै दक्षोरौ । ६ लॄं हृषीकेशाय लूतदोषायै वामोरौ ।

६ एं पद्मनाभायैकनायिकायै दक्षजानुनि । ६ ऐं दामोदरायैकारिण्यै वामजानुनि ।

६ ओं वासुदेवायोद्यवत्यै दक्षजंघायां । ६ औं संकर्षणायौवकाय वामजंघायां ।

६ अं प्रद्युम्नायाऽञ्जनप्रभायै दक्षपादे । ६ अः अनिरुद्धायऽअस्थिमाला धारिण्यै वामपादे ।

६ कं भं भवाय करभद्रायै दक्षपादाग्रदूरुमूलपर्यन्तं । ६ खं बं शर्वाय खगबलायै वामपादाग्रदूरुमूल पर्यन्तम्।

६ गं फं रुद्राय गरिमफलप्रदायै दक्षपार्श्वे । ६ घं पं पशुपतये घोरपादायै वामपार्श्वे ।

६ ङं नं उग्राय पंक्तिनासायै दक्षोदूर्मूले । ६ चं धं महादेवाय चन्द्रधारिण्यै वामदोर्मूले ।

६ छं दं भीमाय छन्दोमय्यै कण्ठे । ६ जं थं ईशानाय जगत्स्थानायै वदने ।

६ झं तं तत्पुरुषाय झङ्कृत्यै दक्षकर्णे । ६ ञं णं अघोराय ज्ञानदायै वामकर्णे ।

६ टं ढं सद्योजाताय टङ्कढक्कधरायै भाले । ६ ठं डं वामदेवाय झङ्कृति डामर्यै शिरसि ।

६ यं ब्रह्मणे यक्षिण्यै मूलाधारे । ६ रं प्रजापतये रञ्जिन्यै स्वाधिष्ठाने ।

६ लं वेधसे लक्ष्म्यै मणिपूरे । ६ वं परमेष्ठिने वज्रिण्यै अनाहते ।

६ शं पितामहाय शशिधरायै विशुद्धौ । ६ षं विधात्रे षडाधारलयायै आज्ञाचक्रे ।

६ सं विरंचये सर्वनायिकायै अर्द्धेन्दो । हं स्त्रष्ट्रे हसिताननायै रोधिन्यां ।

६ लं चतुराननाय ललितायै नादे । ६ क्षं हिरण्यगर्भाय क्षमायै नमः नादान्ते ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौंः स्हौः सकलत्रिमूर्त्यात्मिकायै श्री पराम्बादेव्यै नमः स्हौंः ह्सौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।

व्यापक न्यासं कुर्यात् ।

॥ मन्त्रन्यास ॥

६ अं आं इं एकलक्ष कोटिभेद प्रणवाद्येकाक्षरात्मकाखिल मंत्राधि देवतायै सकल फलप्रदायै एककूटेश्वर्यम्बदेव्यै नमः मूलाधारे।

६ ईं उं ऊं द्विलक्षकोटिभेद हंसादिद्व्यक्षरात्मकाखिल मन्त्रा............. स्वाधिष्ठाने ।

६ ऋं ॠं लृं त्रिलक्षकोटिभेद वह्न्यादि त्र्क्षरात्मक त्रिकूटेश्वर्यम्बादेव्यै .... मणिपूरे।

६ ॡं एं ऐं चतुर्लक्षकोटिभेद चन्द्रादि चतुराक्षरात्मक चतुर्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै .... अनाहते ।

६ ओं औं अं अः पंचलक्षकोटिभेद सूर्यादिपञ्चाक्षात्मक पंचकूटेश्वर्यम्बादेव्यै............. विशुद्धौ ।

६ कं खं गं षड्लक्षकोटिभेद स्कंदादिषडक्षरात्मक षट्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै............ आज्ञाचक्रे ।

६ घं ङं चं सप्तलक्षकोटिभेद गणपत्यादिसप्ताक्षरात्मक सप्तकूटेश्वर्यम्बादेव्यै .... बिन्दौ ।

६ छं जं झं अष्टलक्षकोटिभेद बटुकाद्यष्टाक्षरात्मक अष्टकूटेश्वर्यम्बादेव्यै............. अर्धेन्दौ ।

६ ञं टं ठं नवलक्षकोटिभेदब्रह्मादिनवाक्षरात्मक नवकूटेश्वर्यम्बादेव्यै............. रोधिन्यां ।

६ डं ढं णं दशलक्षकोटिभेद विष्णवादि दशाक्षरात्मक दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै............. नादे ।

६ तं थं दं एकादशलक्षकोटिभेद रुद्राद्येकादशाक्षरात्मक एकादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै............. नादान्ते ।

६ धं नं पं द्वादशलक्षकोटिभेद वाण्यादिद्वादशाक्षरात्मक द्वादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै............. शक्तौ ।

****

६ फं बं भं त्रयोदशलक्षकोटिभेद लक्ष्म्यादि त्रयोदशाक्षरात्मक त्रयोदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै.............व्यापिकायां।

६ मं यं रं चतुर्दशलक्षकोटिभेद गौर्यादि चतुदशाक्षरात्मक चतुर्दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै............. समना स्थाने।

६ लं वं शं पंचदशलक्षकोटिभेद दुर्गादिपंचदशाक्षरात्मक पंचदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै............. उन्मनायां ।

६ षं सं हं लं क्षं षोडशलक्षकोटि त्रिपुरादिषोडशाक्षरात्मक षोडशकूटे श्वर्यम्बादेव्यै............. ध्रुवमण्डले ।

६ अं .... अः कं .... क्षं सकलमन्त्रादि देवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः स्हौः ह्सौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।

व्यापक न्यासं कुर्यात्।

॥ दैवत न्यासः॥

६ अं आं सहस्त्रकोटिऋषिकुलसेवितायै निवृत्यम्बादेव्यै नमः दक्षपादे ।

६ इं ईं सहस्त्रकोटियोगिकुलसेवितायै प्रतिष्ठाम्बादेव्यै नमः वामपादे ।

६ उं ऊं सहस्त्रकोटितपस्वीकुलसेवितायै विद्याम्बादेव्यै नमः दक्षगुल्फे।

६ ऋं ॠं सहस्त्रकोटिशान्तकुलसेवितायै शान्त्यम्बादेव्यै नमः वामगुल्फे ।

६ लृं लॄं सहस्त्रकोटिमुनिकुलसेवितायै शांत्यतीताम्बादेव्यै नमः दक्षजंघायां ।

६ एं ऐं सहस्त्रकोटिदेवताकुलसेवितायै हृल्लेखाम्बादेव्यै नमः वामजंघायां ।

६ ओं औं सहस्त्रकोटिराक्षसकुलसेवितायै गगनाम्बादेव्यै नमः दक्षजानुनि ।

६ अं अः सहस्त्रकोटिविद्याधरकुलसेवितायै रक्ताम्बादेव्यै नमः वामजानुनि ।

६ कं खं सहस्त्रकोटिसिद्धकुलसेवितायै महोच्छुष्माम्बादेव्यै नमः दक्षोरौ ।

६ गं घं सहस्त्रकोटिसव्यकुलसेवितायै करालिकाम्बादेव्यै नमः वामोरौ ।

६ ङं चं सहस्त्रकोटिअप्सरःकुलसेवितायै जयाम्बादेव्यै नमः दक्षोरुमूले ।

६ छं जं सहस्त्रकोटिगंधर्वकुलसेवितायै विजयाम्बादेव्यै नमः वामोरुमूले ।

६ झं ञं सहस्त्रकोटिगुह्यकुलसेवितायै अजिताम्बादेव्यै नमः दक्षपार्श्वे ।

६ टं ठं सहस्त्रकोटियक्षकुलसेवितायै अपराजिताम्बादेव्यै नमः वामपार्श्वे ।

६ डं ढं सहस्त्रकोटिकिन्नरकुलसेवितायै वामाम्बादेव्यै नमः दक्षस्तने ।

६ णं तं सहस्त्रकोटिपन्नगकुलसेवितायै जेष्ठाम्बादेव्यै नमः वामस्तने ।

६ थं दं सहस्त्रकोटिपितृकुलसेवितायै रौद्र्यम्बादेव्यै नमः दक्षदोर्मूले ।

६ धं नं सहस्त्रकोटिगणेश्वरकुलसेवितायै मायाम्बादेव्यै नमः वामोर्मूले ।

६ पं फं सहस्त्रकोटिभैरवकुलसेवितायै कुण्डलिन्यम्बादेव्यै नमः दक्षभुजे ।

६ बं भं सहस्त्रकोटिवटुककुलसेवितायै काल्यम्बादेव्यै नमः वामभुजे ।

६ मं यं सहस्त्रकोटिक्षेत्रेशकुलसेवितायै कालरात्र्यम्बादेव्यै नमः दक्षांसे ।

६ रं लं सहस्त्रकोटिप्रमथकुलसेवितायै भगवत्यम्बादेव्यै नमः वामांसे ।

६ वं शं सहस्त्रकोटिब्रह्मकुलसेवितायै सर्वेश्वर्यम्बादेव्यै नमः दक्षकर्णे

६ षं सं सहस्त्रकोटिविष्णुकुलसेवितायै सर्वज्ञाम्बादेव्यै नमः वामकर्णे ।

६ हं लं सहस्त्रकोटिरुद्रकुलसेवितायै सर्वकर्त्र्यम्बादेव्यै नमः भाले ।

६ क्षं सहस्त्रकोटिचराचरकुलसेवितायै कुलशक्त्यम्बादेव्यै नमः ब्रह्मरन्ध्रे ।

६ अं .... अः कं .... क्षं समस्त देवताधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः स्हौं ह्सौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।

व्यापक न्यासं कुर्यात्।

॥ मातृन्यासः॥

सभी नामों के पश्चात् **नमः** बोलते हुये न्यास करें।

मूलाधारे – ६ कं........ङं अनन्तकोटि भूचरी कुलसहितायै अं क्षां मङ्गलाम्बादेव्यै, आं क्षां ब्रह्माण्यदेव्यै अनंतकोटिभूतकोटिसहितायै अं क्षं मंगलनाथाय अं क्षं असिताङ्गभैरवाय नमः।

स्वाधिष्ठाने – ६ चं........ञं अनंतकोटिखेचरी कुलसहितायै ईं लां चर्चिकाम्बादेव्यै ईं लां माहेश्वर्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिवेताल कुलसहितायै इं लं चर्चिकनाथाय इं लं रुरुभैरवाय नमः ।

मणिपूरे – ६ टं........णं अनन्तकोटिपातालचरीकुलसहितायै ऊं हां योगेश्वर्यम्बादेव्यै ऊं हां कौमार्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिपिशाचकुलसहितायै उं हं योगेश्वरनाथाय उं हं चण्डभैरवाय नमः।

अनाहते – ६ तं ....नं अनन्तकोटिदिक्‌चरीकुल सहितायै ॠं सां हरसिद्धाम्बादेव्यै ॠं सां वैष्णव्यम्बादेव्यै अनन्तकोट्यपस्मारकुलसहितायै ॠं सं हरसिद्धनाथाय ॠं सं क्रोध भैरवाय नमः ।

विशुद्धचक्रे – ६ पं .... मं अनन्तकोटिसहचरीकुल सहितायै लृं षां भट्टिन्यम्बादेव्यै लृं षां वाराह्यम्बादेव्यै अनंतकोटि ब्रह्मराक्षसकुलसहितायै ऌं षं भट्टिनाथाय लृं षं उन्मत्त भैरवाय नमः।

आज्ञाचक्रे – ६ यं रं लं वं अनन्तकोटिगिरिचरीकुलसहितायै ऐं शां किलकिलाम्बोदेव्यै ऐं शां इन्द्राण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिचेटककुलसहितायै एं शं किलिकिलनाथाय एं शं कपालिभैरवाय नमः।

भाले – ६ शं षं सं हं अनन्तकोटि वनचरीकुल सहितायै औं वां कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वां चामुण्डाम्बादेव्यै अनन्तकोटि प्रेतकुलसहितायै औं वं कालरात्रिनाथाय ओं वं भीषणभैरवाय नमः।

ब्रह्मरन्ध्रे – ६ लं क्षं अनन्त जलचरीकुलसहितायै अः लां भीषणाम्बादेव्यै अः लां महालक्ष्यम्बादेव्यै अनन्तकोटि कूष्माण्डकुलसहितायै अं लं भीषणनाथाय अं लं संहार भैरवाय नमः।

६ अं........ अः कं .... क्षं समस्तमातृ भैरवाधिपायै श्री पराम्बादेव्यै नमः स्हौंः ह्सौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।

व्यापक न्यासं कुर्यात्।

॥ मातृकाभैरव न्यासः॥

मूलाधारे – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः कं खं गं घं ङंअनन्तकोटि भूचरीकुल सहितायै आं क्षां मङ्गलाम्बायै आं क्षां ब्रह्माण्यम्बादेव्यै अनंतकोटि भूचरकुल सहिताय अं क्षं मङ्गलनाथाय अं क्षं असिताङ्गभैरवनाथाय नमः।

स्वाधिष्ठाने - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः चं छं जं झं ञं अनन्तकोटि खेचरीकुल सहितायै चिर्चिकाम्बादेव्यै ई लां माहेश्वर्यम्बादेव्यै। अनन्तकोटि वेतालकुल सहिताय इं लं चर्चिकनाथाय इं लं रुरुभैरवनाथाय नमः।

मणिपूरचक्रे - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः टं ठं डं ढं णं अनन्तकोटि पातालचरीकुल सहितायै अं हां योगेश्वर्यम्बादेव्यै ऊं हां कौमार्यम्बादेव्यै। अनन्तकोटि पिशाचकुल सहिताय उं हं योगेश्वरनाथाय उं हं चण्डभैवनाथाय नमः।

अनाहते - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः तं थं दं धं नं अनन्तकोटि दिक्चरीकुल सहितायै ॠं सां हरसिद्धाम्बादेव्यै ॠं सां वैष्णव्यम्बादेव्यै। अनन्तकोटि अपस्मारकुल सहिताय ऋं सं हरसिद्धनाथाय ऋं सं क्रोधभैरवनाथाय नमः।

विशुद्धचक्रे - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः पं फं बं भं मं अनन्तकोटि सहचरीकुल सहितायै ॡं षां भट्टिन्यम्बादेव्यै ॡं षां वाराह्यम्बादेव्यै। अनन्तकोटि ब्रह्मराक्षसकुल सहिताय ऌं षं भट्टिनाथाय ॡं षं उन्मत्तभैरवनाथाय नमः।

आज्ञाचक्रे - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः यं रं लं वं अनन्तकोटि गिरिचरीकुल सहितायै ऐं शां किलिकिलाम्बादेव्यै ऐं शां इन्द्राण्यम्बादेव्यै। अनन्तकोटि चेटककुल सहिताय एं शं किलिकिलिनाथाय एं शं कपालीभैरवनाथाय नमः।

भाले - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः शं षं सं हं अनन्तकोटि सहचरीकुल सहितायै औं वां कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वां चामुण्डादेव्यै। अनन्तकोटि प्रेतकुल सहिताय ओं वं कालरात्रिनाथाय ओं वं भीषणभैवनाथाय नमः।

ब्रह्मरन्धे - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः लं क्षं अनन्तकोटि जलचरीकुल सहितायै अः लां भीषणाम्बादेव्यै अः लां महालक्ष्म्याम्बादेव्यै। अनन्तकोटि कूष्माण्डकुल सहिताय अं लं भीषणनाथाय अं लं संहारभैरवनाथाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं.........हं लं क्षं समस्तमातृका भैरवाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं। व्यापक न्यास करें।

॥ इति षोढान्यासः ॥

॥ अथ उर्ध्वाम्नायोक्त आवरण पूजनम् ॥

षोढ़ा, महाषोढ़ान्यास उर्ध्वाम्नाय क्रम में किये जाते है। महाषोढ़ान्यास के अंतर्गत न्यास देवताओं की आवरण पूजा करनी चाहिये।

अष्टदल गर्भस्थ त्रिकोण उसके बाहर २६ दल पश्चात् १६ दल उसके बाहर ३८ दल एवं १४ दल का कमल बनायें। उनके बाहर ५१ दल का कमल एवं भुपूर बनाये

त्रिकोणे – प्रथम रेखायां – **दिव्यौघेभ्यः पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नमः।** इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं** सहित नामावलि से अर्चन करे।

आदिनाथाय परशिवाय नमः।आदि शक्तिपरशिवायै नमः। सदाशिव अपरशिवाय। सदाशिवापरशिवायै। ईश्वरपरशिवाय, ईश्वरीपरशिवायै। रुद्रपरशिवाय रुद्राणीपरशिवायै। विष्णुपरशिवाय, वैष्णवीपरशिवायै।
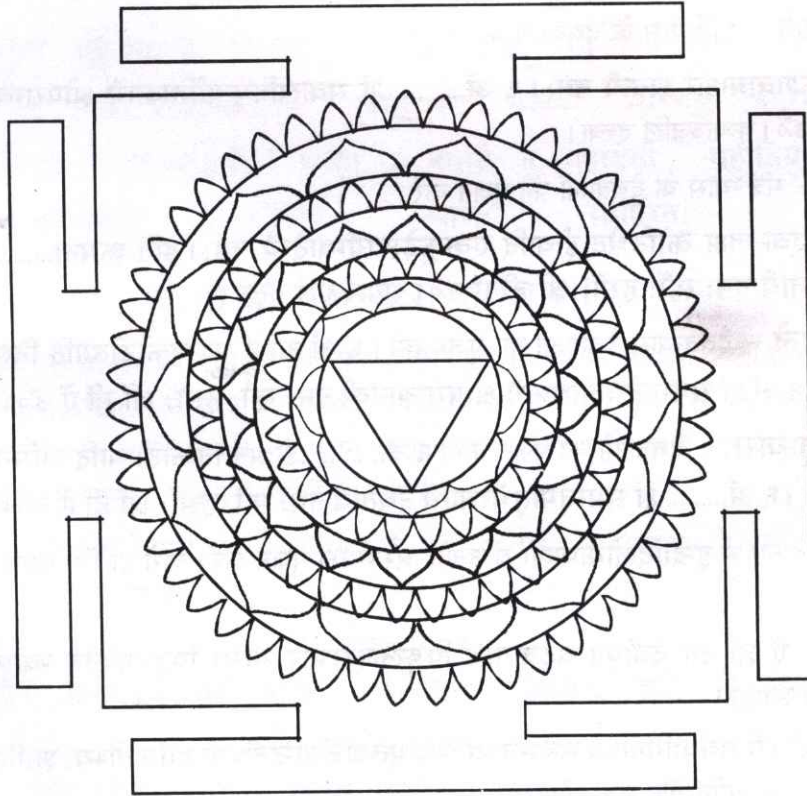
ब्रह्मपरशिवाय, ब्रह्माणीपरशिवायै नमः।

द्वितीय रेखायां - **सिद्धोघेभ्यः पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सनकमहाशिवाय नमः। सनन्दनमहाशिवाय, सनातन महाशिवाय सनत्कुमारमहाशिवाय सनत्सुजातमहाशिवाय ऋभुमहाशिवाय, दत्तात्रेयमहाशिवाय, रैवतकमहाशिवाय, वामदेवमहाशिवाय, व्यासमहाशिवाय, शुकमहाशिवाय नमः।**

तृतीय रेखायां- **मानवौघेभ्यः पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नमः। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नृसिंहसदाशिवाय नमः, महेशसदाशिवाय, भास्करसदाशिवाय, महेन्द्रसदाशिवाय, माधवसदाशिवाय, विष्णुसदाशिवाय नमः।**

एकपञ्चाशत ५१ दले - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौंः स्हौः एक पञ्चाशतद्दल पद्माय नमः।

दलाग्रे - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौंः स्हौः प्रपञ्चरूपायै श्रियै नमः। ६ आं ह्रीषरूपायै मायायै नमः। ६ का तात्पर्य प्रारम्भ के ६ बीजों से है। प्रपञ्च न्यास के देवताओं का यहां पूजन करे, पुष्पाञ्जलि देवें।

६ अं कं क्षं सकल प्रपञ्चाधिदेवतायै पराम्बादेव्यै नमः स्हौं ह्सौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥ इति पुष्पाञ्जलि दत्त्वा॥

चतुर्दशदले - चतुर्दशदलपद्माय नमः। ६ अं आं इं अतललोकनिलयेत्यादि शत्यम्बादेव्यै नमः।
इस तरह से भुवन न्यास के देवताओं का पूजन करें॥

६ अं......क्षं सकलभुवनाधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः स्हौंः ह्सौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ। पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा।

अष्टत्रिंशद्दले - मूर्तिन्यास के देवताओं का अर्चन करे।

यथा - **अ केशवायाक्षर शक्त्यै नमः। ६ अं......... क्षं सकलत्रिमूर्त्यात्मिकायै श्रीपराम्बा देव्यै नमः स्हौंः ह्सौंः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।** पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा।

षोडशदले - मंत्र न्यास के देवताओं का पूजन करें।

६ अं आं इं एक लक्ष कोटिभेद ईत्यादि एककूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः। इति क्रमात्........... । ६ अं ......क्षं सकलमंत्राधिदेवतायै नमः स्हौंः ह्सौंः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ। पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा।

षड्विंशतिदले - दैवतन्यास देवताओं का पूजन करे। **६ अं आं इं सहस्त्रकोटीत्यादि निवृत्यम्बादेव्यै नमः। इति क्रमात्......। ६ अं क्षं समस्तदेवताधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः स्हौः ह्सौंः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।** पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा।

अष्टदले मातृन्यासः- देवताओं का पूजन करे। **६ कं..........ङं अनंततकोटीत्यादि असिताङ्गभैरवाय नमः। इति क्रमात्.......... । ६ अं..........क्षं समस्तमातृभैरवाधि देवतायै नमः स्हौः ह्सौंः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।** पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा।

भुपूरे - पूर्वादिक्रम से **इन्द्रादिलोकपालों** व उनके **अस्त्रों** का पूजन करे। चारों द्वारों में **वटुकादि** के लिये बलि देवें।

पश्चिम द्वारे - **ऐं ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथ पिङ्गलजटाभार भासुर पिङ्गलत्रिनेत्र ज्वालामुख इमां पूजां बलिगृह्ण बलिगृह्ण स्वाहा।**

उत्तर द्वारे - **ऐं ह्रीं श्रीं सर्वयोगिनीभ्य सर्वभूतेभ्यः सर्वभूतवर्त्तिवन्दिनीभ्यो डाकिनीभ्यः शाकिनीभ्यस्त्रैलोक्य-वासिनीभ्यः इमां पूजां बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।**

****

पूर्वद्वारे – **ऐं ह्रीं श्रीं सर्वभूतेभ्यः सर्वभूपतिभ्यो नमः। भूता ये विविधाकारा इमां पूजां बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।**

दक्षिण द्वारे – **६ भैरवाधिष्ठितायाऽक्षोभ्यानन्दोदयायाभीष्ट सिद्ध्यर्थं अवतर अवतर क्षेत्रपाल महाशास्त्र मातृपुत्र कुलपुत्र सिद्धपुत्र अस्मिन् स्थानाधिपतये अस्मिन् ग्रामाधिपतये अस्मिन् देशाधिपतये मेघनाद प्रचण्डोग्रकृपाण भीमभीषण सर्वविघ्नाधिपते इमां पूजां बलिं गृह्ण गृह्ण तुरु तुरु मुरु मुरु चूर्णय चूर्णय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वविघ्नान् निवारय निवारय नाशय नाशय क्षां क्षीं क्षूं क्षेत्रपालाय वौषट्।**

अग्निकोणे – **राजराजेश्वरमावाह्य गंधादिभिः सम्पूज्यः।**

बलि आधार पात्र रखकर बलि देवे पूजा करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमुकक्षेत्रपाल राजराजेश्वर इमां पूजां बलिं गृह्ण गृह्ण सर्वविघ्नान् नाशय नाशय स्वाहा।

॥ इति उर्ध्वाम्नाय आवरण पूजनम् ॥

॥ नव चक्रेश्वरी न्यासः॥

साधक अपने आध्यात्मकेन्द्रों में ललितासुन्दरी के नवचक्रों का न्यास करे। सुन्दरी, त्रिपुरा, आद्या, त्रिपुर वासिनी प्रथम चार विद्यायें जानें, शेष यथा क्रम है।

यथा ब्रह्मरंध्रे तथाधारे स्वाधिष्ठाने च नाभिके । अनाहते विशुद्धौ च लंबिके भ्रूयुगान्तरे ॥१॥
विन्दुस्थाने क्रमेणैव नवचक्राणि विन्यसेत् । तत्र विद्याः समुच्चार्य त्रिपुरा त्रिपुरेश्वरी ॥२॥
सुन्दरी त्रिपुराद्या च तथा त्रिपुरवासिनी । त्रिपुराश्रीः पञ्चमी स्यात्षष्ठी त्रिपुरमालिनी ॥३॥
सप्तमी त्रिपुरासिद्धा त्रिपुराम्बाष्टमी भवेत् । नवमी तु महादेवी महात्रिपुरसुन्दरी ॥४॥
नवचक्रेषु विन्यसेदिति न्यासः समीरितः ।

॥ श्री चक्रन्यास कवचम् ॥

इस कवच के करने से श्री यंत्र की पूजा का फल प्राप्त होता है एवं श्री यंत्र के आवरण देवता साधक की रक्षा करते है। तथा इसमें श्रीविद्या खड्गमाला की तरह श्री यन्त्रचक्र देवताओं का पूजन भुपूर, १२ दल, १6 दल, ८ दल, १४ दल, १० दल, १० दल, ८ कोण देवता, त्रिकोण व पीठ पूजन देवताओं के न्यास स्थान लिखे हैं। १6 कलाओं का पूजन नहीं दिया गया है। बिन्दु में पीठ देवता, प्रधान देवताओं के नाम है।

जहां ङन्तं है उसका अर्थ है उस चक्र (आवरण) के सभी देवताओं को नमस्कार है। प्रत्येक च्र आवरण की समाप्ती के पश्चात् न्यास दिया गया है।

॥ पार्वत्युवाच ॥

कैलासशिखरासीनं शिवं पप्रच्छ पार्वती । श्रीचक्रन्यासकवचं ब्रूहि मे देव शङ्कर ॥१॥

॥ शङ्कर उवाच ॥

साधु पृष्टं त्वया देवि लोकानां हितकाम्यया । श्रीचक्रन्यासकवचं प्रस्फुटं कथयामि ते ॥२॥
शरीरं चिन्तयेदादौ निजं श्रीचक्ररूपकम् । त्वगाद्याकारनिर्मुक्तं ज्वलत्कालाग्निसत्प्रभम् ॥३॥

द्वादशान्ते चिदाकाशे शिवशक्त्यात्मकं गुरुम् । परतेजोमयं ध्यायेद्भोगमोक्षफलाप्तये ॥४॥
गणेशो जानु (मे?नी) पातु वामांसं क्षेत्रनायकः । योगिन्यो दक्षिणं (पान्तु) स्कन्धं वटुकभैरवः ॥५॥
दक्षपादाग्रमिन्द्रो मे पात्वग्निर्दक्षजानुकम् । दक्षपार्श्वं यमः पातु दक्षांसं निर्ऋतिर्मम ॥६॥
वरुणः पातु वामांसं वामपार्श्वं समीरणः । वामजानु धनाध्यक्षो वामपादाग्रमीश्वरः ॥७॥
ब्रह्मरन्ध्रं विधिः पातु मूलाधारमनन्तकः । चतुरस्रादिरेखायै नम इत्याद्यनुक्रमात् ॥८॥
व्यापकत्वेन विन्यसेत् कुसुमाञ्जलिमीश्वरि । निधिवाहनमारूढा वराभयकराम्बुजाः ॥९॥
पद्मरागप्रतीकाशाः प्रसीदन्त्वणिमादयः । दक्षांसपृष्ठमणिमा करांग्रंलघिमावतु ॥१०॥
दक्षस्फिचं तु महिमा ईशित्वं चरणाग्रकम् । वशित्वं वामपादेऽव्यात् प्राकाम्यं स्फिचकेतरे ॥११॥
इच्छासिद्धिस्तु वामांसं कराग्रं भुक्तिसिद्धिका । रससिद्धिः शिरो मेऽव्याच्छिरः पृष्ठं तु मोक्षदा ॥१२॥
चतुरस्रमध्यरेखायै नम इत्याद्यनुक्रमात् । व्यापकत्वेन विन्यसेत् कुसुमाञ्जलिमीश्वरि ॥१३॥
पादांगुष्ठौ तु ब्रह्माणी माहेशी दक्षपार्श्वकम् । कौमारी च शिरः पातु वैष्णवी वामपार्श्वकम् ॥१४॥
वामजानुनि वाराही चेन्द्राणी दक्षजानुनि । चामुण्डा पातु दक्षांसे महालक्ष्मीस्तु वामके ॥१५॥
चतुरस्रान्तरेखायै नम इत्याद्यनुक्रमात् । व्यापकत्वेन विन्यसेत् कुसुमाञ्जलिमीश्वरि ॥१६॥
मुद्रादेव्यः प्रसीदन्तु वराभयकराम्बुजाः । भक्तानुग्रहसंधानदेवतामोद हेतवे ॥१७॥
पादांगुष्ठद्वयं मुद्रा सर्वसंक्षोभिणी मम । सर्वविद्राविणी मुद्रा पार्श्वं रक्षतु दक्षिणम् ॥१८॥
आकर्षिणी मूर्ध्नि देशं वामपार्श्वं वशङ्करी । उन्मादिनी वामजानुं दक्षजानुं महांकुशा ॥१९॥
दक्षांसं खेचरी पातु वामांसं बीजमु[illegible]का । त्रिखण्डा द्वादशान्तं तु योन्यंगुष्ठद्वयं पदोः ॥२०॥
हृन्मध्यं त्रिपुरा पातु सिद्धिमुद्रासमन्विता । सर्वाशापूरकं ङऽन्तं षोडशाराय वै नमः ॥२१॥
व्यापकत्वेन विन्यसेत् कुसुमाञ्जलिमीश्वरि । कलादेव्यः प्रसीदन्तु पाशांकुशकरोद्यताः ॥२२॥
रक्तांग्यो रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः । कामाकर्षिणिका पातु कर्णपृष्ठं तु दक्षिणम् ॥२३॥
बुद्ध्याकर्षिणिका नित्या रक्षताद् दक्षिणांसकम् । अहङ्काराकर्षिणी मे कूर्परं पातु दक्षिणम् ॥२४॥
दक्षिणं पाणिपृष्ठं मे शब्दाकर्षिणिकावतु । स्पर्शाकर्षिणिका पायाद्दक्षिणोरुतटं मम ॥२५॥
रूपाकर्षिणिका जानु रसाकर्षी तु गुल्फकम् । गन्धाकर्षिणिका रक्षेद्दक्षपादतलं मम ॥२६॥
वामपादतलं देवी चित्ताकर्षिणिकावतु । पादाधोयावता गुल्फं धैर्याकर्षणिकावतु ॥२७॥
स्मृत्याकर्षिणिका जानुं वामोरुं नामाकर्षिणी । बीजाकर्षिणिका पातु करपृष्ठमदक्षिणम् ॥२८॥
कूर्परं पातु मे सव्यमात्माकर्षणकारिणी । अमृताकर्षिणी वामांसं शरीराकर्षिणी श्रुतिम् ॥२९॥
सिद्धिमुद्रान्विता यावदहृन्मध्यं त्रिपुरेश्वरी । सर्वसक्षोभणं ङेऽन्तं चक्राय नम इत्यपि ॥३०॥
व्यापकत्वेन विन्यसेत् कुसुमाञ्जलिमीश्वरि । अनङ्गकुसुमादेव्याः प्रसन्ना रक्तकंचुकाः ॥३१॥

****

वेणीकृतजगत्केशाः शरकार्मुकपाणयः । अनङ्गकुसुमा पातु दक्षशङ्खं सदा मम ॥३२॥
अनङ्गमेखलादेवी त्रायतां दक्षजानुकम् । अनङ्गमदनाशक्तिरूरुं पायात् सदा मम ॥३३॥
गुल्फमध्यान्तरं मेऽव्यादनङ्गमदनातुरा । अनङ्गरेखा वामाङ्गं रक्षतां गुल्फमन्तरम् ॥३४॥
अनङ्गवेगिनी पायादूरुप्रान्तं सदा मम । ममानङ्गांकुशा जानुदेशं रक्षतु वामकम् ॥३५॥
अनङ्गमालिनी शङ्खं वामे रक्षतु मेऽनिशम् । सुन्दरी सिद्धिमुद्राभ्यां पातु में हृदयान्तरम् ॥३६॥
सर्वसौभाग्यदं ङेऽन्तं चक्राय नम इत्यपि । व्यापकत्वेन विन्यसेत् कुसुमाञ्जलिमीश्वरि ॥३७॥
शक्तिदेव्यः प्रसीदन्तु बाणकार्मुकपाणयः । सर्वाभरणसम्पन्ना वैडूर्यमणिरोचिषः ॥३८॥
सर्वसंक्षोभिणी फालं तदन्तं द्राविणी मम । दक्षिणं पालयेद्गण्डं सर्वाकर्षिणिका सदा ॥३९॥
सर्वाह्लादकरी दक्षमंसान्तं पातु मे सदा । सर्वसम्मोहनीशक्तिः पार्श्वान्तं पातु दक्षिणम् ॥४०॥
सर्वसंस्तम्भिनी रक्षेद्दक्षमूरुं तु पृष्ठकम् । जङ्घान्तं जृम्भिणी दक्षं वामं सर्ववशङ्करी ॥४१॥
रञ्जिनी वामपूर्वं तु पृष्ठं पालयतान्मम । पार्श्वान्तं सर्वमव्यान्मे सर्वोन्मादनकारिणी ॥४२॥
सर्वार्थसाधिनी पायादंसान्तं दक्षिणेतरम् । वामं पातु कपोलं मे सर्वसम्पत्प्रपूरणी ॥४३॥
सर्वमन्त्रमयी भालं वामभागं ममावतु । पालयेद्द्वारकूपं मे सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी ॥४४॥
त्रिपुरवासिनी सिद्धिमुद्राभ्यां पातु हृन्मम । सर्वार्थसाधकं ङेऽन्तं चक्राय नम इत्यपि ॥४५॥
व्यापकत्वेन विन्यसेत् कुसुमाञ्जलिमीश्वरि। दशदेव्यः प्रसीदन्तु सर्वसिद्धिप्रदायिकाः ॥४६॥
कुन्दमन्दारहाराभा वराभयकराम्बुजाः । सर्वसिद्धिप्रदा मेऽव्याद्दक्षिणेक्षणकोणकम् ॥४७॥
पालयेन्नासिकामूलं सर्वसम्पत्प्रदा मम । नित्यं रक्षतु वामाक्षिकोणं सर्वप्रियङ्करी ॥४८॥
रक्षेत् कुक्षिं सकोणं मे सर्वमङ्गलकारिणी । तथैव कुक्षिवायव्यं सर्वकामप्रदावतु ॥४९॥
वामजान्वन्तरं पातु सर्वदुःखविमोचनी । सर्वमृत्युप्रशमनी दक्षिणं जानुकान्तरम् ॥५०॥
सदा पायादपानं मे सर्वविघ्ननिवारिणी । सर्वाङ्गसुन्दरी देवी रक्षतात् कुक्षिनैर्ऋतम् ॥५१॥
आग्नेयं पालयेत् कुक्षिं सर्वसौभाग्यदायिनी । हृन्मध्यं त्रिपुराश्रीर्मे सिद्धिमुद्रान्वितावतु ॥५२॥
सर्वरक्षाकरं ङेऽन्तं चक्राय नम इत्यपि । व्यापकत्वेन विन्यसेत् कुसुमाञ्जलिमीश्वरि ॥५३॥
अन्तर्दशारवासिन्यः प्रसीदन्तु ममानिशम् । देव्यः स्फटिकसङ्काशाः पुस्तकाक्षालिबाहवः ॥५४॥
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च दक्षिणघ्राणसृक्विणी । सर्वैश्वर्यप्रदा ज्ञानमयी च स्तनमुष्ककौ ॥५५॥
सीवनीमनिशं पातु सर्वव्याधिविनाशिनी । वामं मे वृषणं पातु सर्वाधारस्वरूपिणी ॥५६॥
सर्वपापहरानन्दमयी च स्तनसृक्विणी । वामनासापुटं पातु सर्वरक्षास्वरूपिणी ॥५७॥
अग्रदेशं नासिकायाः सर्वेप्सितफलप्रदा । हृत्पद्मं सिद्धिमुद्राभ्यां पातु त्रिपुरमालिनी ॥५८॥
सर्वरोगहराष्टारचक्राय नम इत्यपि । व्यापकत्वेन विन्यसेत् कुसुमाञ्जलिमीश्वरि ॥५९॥

वाग्देव्यो नः प्रसीदन्तु सिन्दूरकनकाम्बराः । पुस्तकाक्षालिविलसद्वरदाभीतिबाहवः ॥६०॥
दक्षिणं चिबुकस्यांशं वशिनी पातु सर्वदा। कण्ठं कामेश्वरी दक्षं हृदयं पातु मोदिनी ॥६१॥
विमला दक्षिणं नाभेस्तद्वाममरुणावतु । हृद्वामं जयिनी पातु कण्ठं सर्वेश्वरी तथा ॥६२॥
कौलिनी चिबुकं सिद्धा त्रिपुरा हृदयाम्बुजम् । सर्वसिद्धिप्रदान्तरालचक्राय नम इत्यपि ॥६३॥
व्यापकत्वेन विन्यसेत् कुसुमाञ्जलिमीश्वरि । कामकामेश्वरीबाणचापपाशांकुशाः क्रमात् ॥६४॥
परितो हृदि कोणस्य चतुरस्त्रं ममावतु । महामोक्षप्रदां योनिं हृदयोपरि राजिताम् ॥६५॥
कामेश्वर्यादिकं पातु नित्याषोडशकं मम । कामप्रदा रुद्रशक्तिः कामरूपनिवासिनी ॥६६॥
अग्रकोणं महायोनेः पातु कामेश्वरी मम । धर्मदा वैष्णवी शक्तिर्जालन्धकृतमन्दिरा ॥६७॥
दक्षकोणान्तरं योनेः पायान्मे वैष्णवी सदा। अर्थदा ब्रह्मणः शक्तिः पूर्णशैलुकृतालया ॥६८॥
वामकोणान्तरं पातु सुभगा भगमालिनी । त्रिपुराम्बा योनिमध्यं सिद्धिमुद्रा ममावतु ॥६९॥
उड्यानपीठनिलया परब्रह्मस्वरूपिणी । पञ्चश्रीकोशकल्पद्रुकामधुग्रत्नदैवतैः ॥७०॥
मण्डितासनसंस्थाना सर्वदर्शनसंस्थिता । स्तुता षडङ्गदेवीभिश्चतुः समयपूजिता ॥७१॥
महासौभाग्यजननी महामोक्षप्रदायिनी । हृदि दोरन्तरं पातु महात्रिपुरसुन्दरी ॥७२॥
सैव चक्रेश्वरी देवी सिद्धिमुद्रासमन्विता । आपादमस्तकं देवी पातु त्रिपुरभैरवी ॥७३॥
एतत्ते कवचं भद्रे रहस्यं सर्वकामदम् । तुरीयविद्यामुच्चार्य परब्रह्मस्वरूपिणी ॥७४॥
श्रीमहात्रिपुरशून्याशून्यवर्जितशक्तिपर बैन्दवचक्रवासिन्यनाख्या भासाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। तत्रैव नवचक्रेश्वरीः पूजयेत्। कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं त्रिपुरशून्याशून्य परबैन्दव चक्रवासिन्यनाख्याभासां श्री पादुकां पूजयामि नमः। इति विन्यस्य स्वमुद्रां प्रदर्शयेत्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तदद्य प्रकटीकृतम्। य इदं विन्यसेद्देहे साधकः स्थिरमानसः ॥७५॥
विमुच्य मानुषं भावं स सद्यः शिवतां व्रजेत् । त्रिकालं भावयेद्यस्तु तस्य सर्वाङ्गसङ्गतम् ॥७६॥
आमस्तं योगिनीवृन्दं स्फुरद्रूपं प्रकाशते । भूतप्रेतपिशाचाद्यैर्बाधितुं नैव शक्यते ॥७७॥
सिद्धवद्विचरेल्लोके तापत्रयविवर्जितः । यत्र योगी स्मरेदेतत् तस्मादारभ्य सर्वतः ॥७८॥
धरणी क्षेत्रतां याति यावद् द्वादशयोजनम् ।

॥ इति संहारश्रीचक्रन्यासः ॥

॥ अथ सृष्टिचक्र न्यासः॥

श्रीचक्र के बिन्दु के 16 कलाओं व त्रिकोण देवताओं का शिर में पूजन पश्चात् अस्त्र पूजन नेत्रादि में, भ्रू मध्य, कण्ठ हृदय, नाभि, मूलाधार चक्र में १४, १०, १०, ८ देवताओं के स्थान दिये गये हैं। ८, 16 देवता नाभि व पार्श्व में कहें है, तथा भूपुर में ब्राह्म्यादि व अणिमादि देवता जंघा से पाद तल में कहें हैं।

****

सचमूलदे व्याद्यणिमान्तः । तत्र क्रममाह योगिनी हृदये: ।
मूलदेव्यादिकं न्यासमणिमान्तं पुनर्न्यसेत् । शिरस्त्रिकोणे पूर्वादि कामेश्वर्यादिकं न्यसेत् ॥१॥
बाणा नेत्रे भ्रुवौ चापौ कर्णौ पाशद्वयं पुनः । सृणिद्वयं च नासाग्रं दक्षिणाद्यं च विन्यसेत् ॥२॥
मुण्डमालाक्रमेणैव न्यसेद्वाग्देवताष्टकम् । वैन्दवादीनि चक्राणि न्यस्तव्यानि वरानने ॥३॥
नेत्रमूले त्वपाङ्गे च कर्णपूर्वोत्तरे तथा । चूलिकायाश्च निम्नार्धे शेषार्धे कर्णपृष्ठके ॥४॥
कर्णमूले त्वपाङ्गे च तस्य मूले च विन्यसेत् । सर्वसिद्ध्यादिकं कण्ठे प्रादक्षिण्येन विन्यसेत् ॥५॥
हृदये मनुकोणस्थाः शक्तयोऽपि च पूर्ववत् । नाभौ त्वष्टदलं तत्र वंशे वामे च पार्श्वयोः ॥६॥
उदरे सव्यपार्श्वे च न्यसेदादिचतुष्टयम् । वंशवामान्तरालादि न्यसेदन्यचतुष्टयम् ॥७॥
स्वाधिष्ठाने न्यसेत् स्वस्य पूर्वादक्षावसानकम् । मूलाधारे न्यसेन्मुद्रादशकं साधकोत्तमः ॥८॥
पुरः सव्ये च वंशे च वामे चैवान्तरालके । ऊर्ध्वाधो दश मुद्राश्च ऊर्ध्वाधोवर्जितं पुनः ॥९॥
ब्रह्माण्याद्यष्टकं दक्षजङ्घायां ताश्च पूर्ववत् । वामजङ्घां समारभ्य वामादिक्रमतोऽपि वा ॥१०॥
सिद्ध्यष्टकं न्यसेच्छेषद्वयं पादतले न्यसेत् । कारणात् प्रसृतं न्यासं दीपाद्दीपमिवोदितम् ॥११॥
एवं विन्यस्य देवेशि स्वाभेदेन विचिन्तयेत् ।

श्रीविद्या का ब्रह्मरन्ध्र में पश्चात् गुरु का शिर के चारों ओर 16 स्वर युक्त मातृका पूजन करें।

श्रीविद्यां ब्रह्मरन्ध्रे तु पृष्ठतो गुरवः क्रमात् ।
तिथिनित्यास्ततो देवि मातृकास्वरसंयुताः ॥१॥
मातृकावन्न्यसेद्वक्त्रे सर्वसौभाग्यदायिनी ।
अःस्वरे परमेशानि श्रीविद्यां विश्वमातृकाम् ॥२॥
स्वरवद्विन्यसेन्नित्यां नीरजायतलोचने ।
भ्रूमध्ये हृदये नाभौ स्वाधिष्ठाने ततः परम् ।
मूलाधारे तथैवोरुयुगले जानुनोरपि ॥३॥
जङ्घयोः पादयोश्चैव क्रमाद्विन्द्वादिकेश्वरीः ।
विन्यसेत् साधकश्रेष्ठस्त्रिपुरान्तः समाहितः ॥४॥
ततस्तु व्यापकं कुर्यात् तत्तच्चक्रार्पणाणुना ।

॥ अथ स्थितिचक्र न्यास:॥

श्रीचक्र के नवचक्रों की ९ प्रकार के नाम त्रिपुरसुन्दरी देवता के दिये गये हैं, न्यास अरु जंघादि से पादाङ्गुलि अग्र तथा मूलाधार से सहस्त्रार तक न्यास व चक्र देवता के स्वरूप एवं डाकिन्यादि देवियों का स्मरण लिखा है।

निरूप्यते योगिनीहृदयेततस्तु करशुद्ध्यादिन्यासं कुर्याद्विचक्षणः। मूर्ध्नि गुह्ये च हृदये नेत्रत्रितय एव च ॥१॥
श्रोत्रयोर्युगले देवि मुखे च भुजयोः पुनः । पृष्ठे जानौ च नाभौ च विद्यान्यासं विधाय च ॥२॥

[पुनः] सृष्टिः स्यान्नवयोन्यादिपृथ्व्यतं संहृतिः पुनः । पृथ्व्यादिनवयोन्यन्तमिति शास्त्रस्य निश्चयः ॥१॥

इति तत्रैवोक्तत्वात्।

तथा- करशुद्धिकरी त्वाद्या द्वितीया चात्मरक्षिका । आत्मासनगता देवी तृतीया तदनन्तरम् ॥१॥
चक्रासनगता पश्चाद् सर्वमन्त्रासनस्थिता । साध्यसिद्धासना षष्ठी मायालक्ष्मोमयी परा ॥२॥
मूर्तिविद्या च सा देवी सप्तमी परिकीर्तिता । अष्टम्यावाहनी मुद्रा नवमी भैरवी परा ॥३॥
मूलविद्या तथा ख्याता त्रैलोक्यवशकारिणी । एवं नवप्रकाराः स्युः पूजाकाले प्रयत्नतः ॥४॥
एताः क्रमेण न्यस्तव्याः साधकेन कुलेश्वरि । पादाग्रजङ्घाजानूरुगुदलिङ्गाग्रकेषु च ॥५॥
आधारे विन्यसेन्मूर्तिं तस्यामावाहनीं न्यसेत् । मूलेन व्यापकन्यासः कर्तव्यः परमेश्वरि ॥६॥
अकुलादिषु पूर्वोक्तस्थानेषु परिचिन्तयेत् । चक्रेश्वरीसमायुक्तं नवचक्रं पुरोदितम् ॥७॥
आसां नामानि वक्ष्यामि यथानुक्रमयोगतः । तत्राद्या त्रिपुरादेवी द्वितीया त्रिपुरेश्वरी ॥८॥
तृतीया च तथा प्रोक्ता देवी त्रिपुरसुन्दरी । चतुर्थी च महादेवि देवी त्रिपुरवासिनी ॥९॥
पञ्चमी त्रिपुराश्रीः स्यात् षष्ठी त्रिपुरमालिनी । सप्तमी त्रिपुरासिद्धिरष्टमी त्रिपुराम्बिका ॥१०॥
नवमी तु महादेवी महात्रिपुरसुन्दरी । पूजयेच्च क्रमादेता नवचक्रे पुरोदिते ॥११॥
एवं नवप्रकाराद्या पूजाकाले तु पार्वती । एकाकारा ह्यादिशक्तिरजरामरकारिणी ॥१२॥

तथा च -

अकुले विषुसंज्ञे च शाक्ते वह्नौ तथा पुनः । नाभावनाहते शुद्धौ लम्बिकाग्रे भ्रुवोन्तरे ॥१॥
अधश्चोर्ध्वं सुषुम्नायाः सहस्रदलसंयुतम् । रक्तं श्वेतं च साहस्रदलस्थशक्तिभिर्युतम् ॥१॥
ऊर्ध्वाधोमुखमीशानि कर्णिकाकेसरान्वितम् । शक्तिरूपं महादेवि कुलाकुलमयं शुभम् ॥२॥
पङ्कजद्वयमीशानि स्थितं शाश्वतमव्ययम् । तयोर्मध्ये सुषुम्नान्तस्त्रिदशाधाराङ्कजम् ॥३॥
शक्तिरूपं शिवाकारं शर्वाण्याः सन्निजालयम् । तेषां रूपक्रमं चैव क्रमाद्वक्ष्येऽधुना शृणु ॥४॥
गुदमेढ्रान्तरं देवि पञ्चांगुलसमुच्छ्रितम् । गुदमेकांगुलं मध्ये द्वयांगुलविसारणम् ॥५॥
तस्य मूले महायोनिस्त्रिकोणाकाररूपिणी । सुषुम्ना योनिमध्यस्था तस्या मूले महेश्वरि ॥६॥
अधः पद्मं सहस्रारं कर्णिकाकेसरान्वितम् । तैजसं रक्तवर्द्दीमं तद्दलस्थितशक्तिभिः ॥७॥
प्रतिकिञ्जल्कसंस्थाभिः शक्तिभिः सहिता प्रिये । कर्णिकामध्यतो देवी कुलदेवी च संस्थिता ॥८॥
तत्पद्मोर्ध्वे सुषुम्नायां मध्ये त्वेकांगुलोपरि । पद्ममष्टदलैर्युक्तमष्टग्रन्थिसमन्वितम् ॥९॥
रक्तं स्वकर्णिकोपेतं रक्तकिञ्जल्कशोभितम् । ग्रन्थ्यग्रस्थं त्रिश्रृङ्गं च ब्रह्माण्याद्यष्टभैरवैः ॥१०॥
अष्टपत्रस्थितग्रन्थिस्थितवर्गादिशक्तिभिः । तदन्यशक्तिभिश्चैव संगताभिः समावृतम् ॥११॥
तन्मध्ये कौलशक्त्या च सेवितं संस्मरेत् ततः । एकांगुलप्रमाणोर्ध्वे षड्दलं कुलपङ्कजम् ॥१२॥

आधारपङ्कजं पीतं चतुष्पत्रं सुकेसरम् । अधोमुखं च तन्मध्ये कुण्डली परमेश्वरि ॥१३॥
स्वयम्भूमध्यगा चिन्त्या वरदादिभिरावृता । पार्थिवं पङ्कजं ह्येतत् तस्याधः पङ्कजं परम् ॥१४॥
तैजसं परमेशानि तन्मध्यस्थितशक्तयः । निष्कलाः परमेशानि विद्युत्पुञ्जनिभाः स्मरेत् ॥१५॥
तदूर्ध्वे कर्णिकामध्ये वह्निबिम्बं तदूर्ध्वगम् । पूर्णपीठं च तस्योर्ध्वे शाकिनी संस्थिता शिवे ॥१६॥
आधारपङ्कजस्योर्ध्वे सार्धद्वयंगुलकोपरि । तैजसं साष्टापत्रं च पीतकर्णिकया युतम् ॥१७॥
हृल्लेखा कर्णिकामध्ये स्थितानङ्गादिसेविता । एतस्मादद्वयंगुलादूर्ध्वे स्वाधिष्ठानं षडस्त्रकम् ॥१८॥
आप्यं च बन्धिनीशक्तिपूर्वाभिः शक्तिभिर्वृताम् । काकिनीमभिचिन्त्याथ नाभावष्टांगुलोपरि ॥१९॥
तत्पद्मं मणिपूरं च दशपत्रं सुशोभनम् । लाकिनीमध्यगं तच्च डामर्यादिभिरावृतम् ॥२०॥
चतुर्दशांगुलादूर्ध्वे मणिपूराख्यपङ्कजात् । पङ्कजं राकिणीमध्यं द्वादशारमनाहतम् ॥२१॥
पत्रस्थकालरात्र्यादिशक्तिभिश्च समावृतम् । मध्यस्थसूर्यबिम्बे तु नादोड्यानाख्यपीठकम् ॥२२॥
तस्मादेकांगुलादूर्ध्वे विशुद्धं षोडशारकम् । मध्यगा डाकिनी बाह्यपत्रेषु परमेश्वरि ॥२३॥
अमृताद्यक्षरान्तःस्था चन्द्रबिम्बं तदूर्ध्वतः । कण्ठोर्ध्वं परमेशानि लम्बिका चतुरंगुले ॥२४॥
तस्मादष्टदलं पद्मं रसिकादिभिरावृतम् । आज्ञाचक्रं द्विपत्राब्जं हक्षद्विदलसंयुतम् ॥२५॥
हंसवतीक्षमापार्श्वद्वये मध्ये तु हाकिनी । ततो ललाटगं वृत्तं बिन्द्वावरणमूर्ध्वतः ॥२६॥
सूर्यकोटिप्रतीकाशमतिदीप्तं महद्गुणम् । तन्मध्ये दशकोटीनां संख्यायोजनपङ्कजम् ॥२७॥
तत्कर्णिका समासीनः शान्त्यतोतेश्वरः प्रभुः । पञ्चवक्त्रो दशभुजो विद्युत्पुञ्जनिभाकृतिः ॥२८॥
निवृत्तिश्च प्रतिष्ठा च विद्या शान्तिरनुक्रमात् । परिवार्य्य स्थिताश्चैताः शान्त्यतीतस्य सुन्दरि ॥२९॥
वामभागे समासीना शान्त्यतीता मनोन्मनी । पञ्चवक्त्रधराः सर्वाः दशबाह्विन्दुभूषणाः ॥३०॥
बिन्दुतत्त्वं समाख्यातं कोट्यर्बुदशतैर्वृतम् ।

॥ त्रिपुरसुन्दरी पूजाङ्गत्वेन वहिश्चक्रन्यासः॥

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः चतुरस्र त्रयात्मक त्रैलोक्यमोहन चक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशति शक्तिसहित प्रकटयोगिनी रूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (पादयोः)।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मक सर्वाशापरिपूर चक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादि षोडशशक्तिसहित गुप्तयोगिनी रूपायै त्रिपुरेश्वरी देव्यै नमः (जान्वो)।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मक सर्वसंक्षोभण चक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्ट शक्तिसहित गुप्ततरयोगिनी रूपायै त्रिपुरसुन्दरी देव्यै नमः (ऊरु मूले)।

ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मक सर्वसौभाग्यदायक चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादि चतुर्दश शक्तिसहित संप्रदाययोगिनी रूपायै त्रिपुरवासिनी देव्यै नमः (नाभौ)।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सौः बहिर्दशारात्मक सर्वार्थसाधक चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादि दश शक्तिसहित कुलोत्तीर्ण योगिनी रूपायै त्रिपुराश्री देव्यै नमः (हृदये)।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें अंतर्दशारात्मक सर्वरक्षाकर चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वाज्ञादि दश शक्ति सहित निगर्भयोगिनी रूपायै त्रिपुरमालिनी देव्यै नमः (कण्ठे)।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मक सर्वरोगहर चक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्ति सहित रहस्ययोगिनी रूपायै त्रिपुरासिद्धा देव्यै नमः (मुखे)।

ऐं ह्रीं श्रीं हस्त्रैं ह्स्क्लॄीं ह्स्त्रौं त्रिकोणात्मक सर्वसिद्धिप्रद चक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादि त्रिशक्ति सहित अतिरहस्य योगिनी रूपायै त्रिपुराम्बा देव्यै नमः (नेत्रयोः)।

ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चदशी बिन्द्वात्मक सर्वानन्दमय चक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुध दशशक्ति सहित परापरातिरहस्य योगिनी रूपायै महात्रिपुर सुन्दरी देव्यै नमः (मूर्ध्नि)।

॥ अन्तश्चक्र न्यासः॥

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः चतुरस्त्र त्रयात्मक त्रैलोक्यमोहन चक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशति शक्तिसहित प्रकटयोगिनी रूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (अधः सहस्त्रारे)।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मक सर्वाशापरिपूर चक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादि षोडशशक्तिसहित गुप्तयोगिनी रूपायै त्रिपुरेश्वरी देव्यै नमः (मूलाधारे)।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मक सर्वसंक्षोभण चक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्ट शक्तिसहित गुप्ततरयोगिनी रूपायै त्रिपुरसुन्दरी देव्यै नमः (स्वाधिष्ठाने)।

ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मक सर्वसौभाग्यदायक चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादि चतुर्दश शक्तिसहित संप्रदाय योगिनी रूपायै त्रिपुरवासिनी देव्यै नमः (मणिपूरे)।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्क्लीं ह्स्सौः बहिर्दशारात्मक सर्वार्थसाधक चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादि दश शक्तिसहित कुलोत्तीर्ण योगिनी रूपायै त्रिपुराश्री देव्यै नमः (अनाहते)।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें अंतर्दशारात्मक सर्वरक्षाकर चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वाज्ञादि दश शक्ति सहित निगर्भ योगिनी रूपायै त्रिपुरमालिनी देव्यै नमः (विशुद्धौ)।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मक सर्वरोगहर चक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्ति सहित रहस्य योगिनी रूपायै त्रिपुरासिद्धा देव्यै नमः (लंबिकाग्रे)।

ऐं ह्रीं श्रीं हस्त्रैं ह्स्क्लॄीं ह्स्त्रौं त्रिकोणात्मक सर्वसिद्धिप्रद चक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादि त्रिशक्ति सहित अतिरहस्य योगिनी रूपायै त्रिपुराम्बा देव्यै नमः (आज्ञाचक्रे)।

ऐं ह्रीं श्रीं पञ्चदशी बिन्द्वात्मक सर्वानन्दमय चक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुध दशशक्ति सहित परापरातिरहस्य योगिनी रूपायै महात्रिपुर सुन्दरी देव्यै नमः (सहस्त्रारे)।

पुनः आज्ञाचक्र के एक अंगुल ऊपरी भाग में -

अं आं सौः - बिन्दौ। ऐं क्लीं सौः नमः - अर्धचन्द्रे। ह्रीं क्लीं सौः नमः - रोधिन्यां। हैं ह्क्लीं ह्सौः नमः -

****

नादे। ह्सै ह्स्क्लीं ह्स्सौ: नम: - नादान्ते। ह्रीं क्लीं ब्लें नम: - शक्तौ। ह्रीं श्रीं सौ: नम: - व्यापिकायां। हस्त्रैं ह्स्क्लृरीं ह्स्त्रौं नम: - समनायां। पञ्चदशी नम: - उन्मनायां। षोडशी नम: - ब्रह्मरंध्रे महाबिन्दौ।

॥ कामेश्वर्यादिन्यास:॥

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ नवयोनिचक्रात्मक आत्मतत्त्व सृष्टिकृत्य जाग्रत् दशाधिष्ठायकेच्छाशक्ति वाग्भवात्मक वागीश्वरीस्वरूप ब्रह्मात्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नम: (मूलाधारे)।

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ दशारद्वय चतुर्दशार चक्रात्मक विद्यातत्त्व स्थितिकृत्य स्वप्नदशाधिष्ठायक ज्ञानशक्ति कामराजात्मक कामकलास्वरूप महावज्रेश्वरी विष्ण्वात्मकशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नम: (अनाहते)।

ऐं ह्रीं श्रीं सौ: सकल ह्रीं सोमचक्रे पूर्णागिरिपीठे उड्डीशनाथ अष्टदल षोडशदल चतुरस्त्रचक्रात्मक शिवतत्त्वात्मक परापरशक्ति स्वरूप महाभगमालिनी रुद्रात्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नम: (आज्ञाचक्रे)।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौ: सकल ह्रीं परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथ समस्तचक्रात्मक सपरिवार परमतत्त्व सृष्टिस्थितिसंहारकृत्य तुरीयदशाधिष्ठायक इच्छाज्ञानक्रिया शान्ता शक्ति वाग्भव कामराज शक्ति बीजात्मक परमशक्तिस्वरूप श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी परब्रह्मात्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नम: (ब्रह्मरंध्रे)।

॥ मूलविद्या न्यास:॥

ऐं ह्रीं श्रीं कं नम: - शिरसि। **ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नम:** - मूलाधारे। **ऐं ह्रीं श्रीं ईं नम:** - हृदि। **ऐं ह्रीं श्रीं लं नम:** - दक्षनेत्रे। **ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नम:** - वामनेत्रे। **ऐं ह्रीं श्रीं हं नम:** - भ्रूमध्ये। **ऐं ह्रीं श्रीं सं नम:** - दक्षश्रोत्रे। **ऐं ह्रीं श्रीं कं नम:** - वामश्रोत्रे। **ऐं ह्रीं श्रीं हं नम:** - मुखे। **ऐं ह्रीं श्रीं लं नम:** - दक्षभुजे। **ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नम:** - वामभुजे। **ऐं ह्रीं श्रीं सं नम:** - पृष्ठे। **ऐं ह्रीं श्रीं कं नम:** - दक्षजानुनि। **ऐं ह्रीं श्रीं लं** - वामजानुनिं। **ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नम:** - नाभौ।

॥ षोडश्युपासकानां विशेष न्यासा:॥

इस न्यास के अर्न्तगत षोडशी मन्त्र से ही सभी न्यास किये जाते हैं।

मूल मन्त्र - कएईल ह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं श्रीं।

जहां मूलं शब्द है उसका तात्पर्य षोडशी मन्त्र से है।

१. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नम: शिरसि - (दाहिने हाथ की मध्यमा, अनामिका संयोग से)

तत्र तां दीपाभां स्त्रवत्सुधारसां महासौभाग्यदां ध्यात्वा।

भगवती का दीपज्योति की तरह सुधारस से महासौभाग्य देने वाली का ध्यान करें।

२. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नम: - वामाङ्ग में दण्डिनी मुद्रा से वामकर्ण होते हुये शिर से मस्तक तक न्यास करें।

३. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नम: - **मम शत्रुन् निगृह्णामि।**

शत्रु की जिह्वा को पकड़ने का ध्यान करते हुये, बायें पैर के नीचे न्यास करें।

४. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नम: - **त्रैलोक्यस्याहं कर्ता॥** (ललाट पर त्रिखण्ड मुद्रा में)

५. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नमः - (त्रिखण्ड मुद्रा से अपने मुख पर फेरें)

६. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नमः - (त्रिखण्ड मुद्रा से अपने दाहिने कान से बांये कान को मुख वेष्टन करते हुये)

७. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नमः - (त्रिखण्ड मुद्रा से गले से ऊपर मस्तक तक)

८. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नमः - (त्रिखण्ड मुद्रा से मस्तक से पैर तक तथा पैर से मस्तक तक व्यापक न्यास करें)

९. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नमः - (योनिमुद्रा से मुख का न्यास करें)

१०. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नमः - (योनिमुद्रा से ललाट का न्यास करें)

॥ सम्मोहन न्यासः॥

१. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं - मूल विद्या का स्मरण करें, भावना करें कि उसके प्रकाश से संसार की लालिमा है। अनामिका को ३ बार मूर्ध्नि पर घुमायें।

२. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं - अंगुष्ठ अनामिका संयोग से ब्रह्मरंध्र पर न्यास करें।

३. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं - अंगुष्ठ अनामिका संयोग से दोनों मणिबन्धों पर न्यास करें।

४. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं - अंगुष्ठ अनामिका संयोग से ललाट पर न्यास करें।

५. ऐं ह्रीं श्रीं मूलं - शाक्त तिलक धारण करें।

॥ महाषोडशी अक्षर न्यासः॥

॥ संहार न्यासः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः पदयोः। ह्रीं नमः जङ्घयोः। क्लीं नमः जान्वो। ऐं नमः कटिद्वये। सौः नमः पृष्ठे। ॐ नमः लिङ्गे। ह्रीं नमः नाभौ। श्रीं नमः पार्श्वयोः। कएईलह्रीं नमः स्तनयोः। हसकहलह्रीं नमः अंसयोः। सकलह्रीं नमः कर्णयोः। सौः नमः मूर्ध्नि। ऐं नमः मुखे। क्लीं नमः नेत्रयोः। ह्रीं नमः कर्णयुगसन्निधौ। श्रीं नमः कर्णवेष्टयोः।

॥ सृष्टि न्यासः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ह्रीं नमः भाले। क्लीं नमः नेत्रयो। ऐं नमः कर्णयो। सौः नमः नासापुटे। ॐ नमः गण्डयोः। ह्रीं नमः दन्तपंक्तौ। श्रीं नमः ओष्ठयोः। कएईलह्रीं नमः जिह्वायाम्। हसकहलह्रीं नमः कण्ठे। सकलह्रीं नमः पृष्ठे। सौः नमः सर्वाङ्गे। ऐं नमः हृदि। क्लीं नमः स्तनयोः। ह्रीं नमः उदरे। श्रीं नमः लिङ्गे।

मूल मन्त्र से व्यापक न्यास करें।

॥ स्थिति न्यासः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः अंगुष्ठयोः। ह्रीं नमः तर्जन्योः। क्लीं नमः मध्यमयोः। ऐं नमः अनामिकायोः। सौः नमः कनिष्ठिकयोः। ॐ नमः मूर्ध्नि। । ह्रीं नमः मुखे। श्रीं नमः हृदि। कएईलह्रीं नमः नाभौ। हसकहलह्रीं नमः कण्ठादिनाभ्यन्तम्। सकलह्रीं नमः मूर्धादिकण्ठान्तम्। सौः नमः पादाङ्गुष्ठयोः। ऐं नमः पादतर्जन्योः। क्लीं नमः पादमध्यमयोः। ह्रीं नमः पादानामिकयोः। श्रीं नमः पादकनिष्ठिकयोः।

॥ अथ स्वशरीरे श्रीचक्रन्यासः॥

अपने शरीर को श्रीचक्र मानें तथा ध्यान करें कि श्रीयन्त्र में जो-जो देवता हैं वे यथा यथा स्थान मेरे शरीर में विराजमान होकर मेरे शरीर को देवीमय बना रहें हैं।

शरीरं चिन्तयेदादौ निजं श्रीचक्ररूपकम्।
त्वगाद्याकार निर्मुक्तं ज्वलत्कालाग्नि सन्निभाम्॥

ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकट गुप्त गुप्ततर सम्प्रदाय कुलोत्तीर्ण निगर्भ रहस्यातिरहस्य परापररहस्य योगिनी चक्र देवताभ्यो नमः।

(इस मन्त्र से व्यापक न्यास करें।)
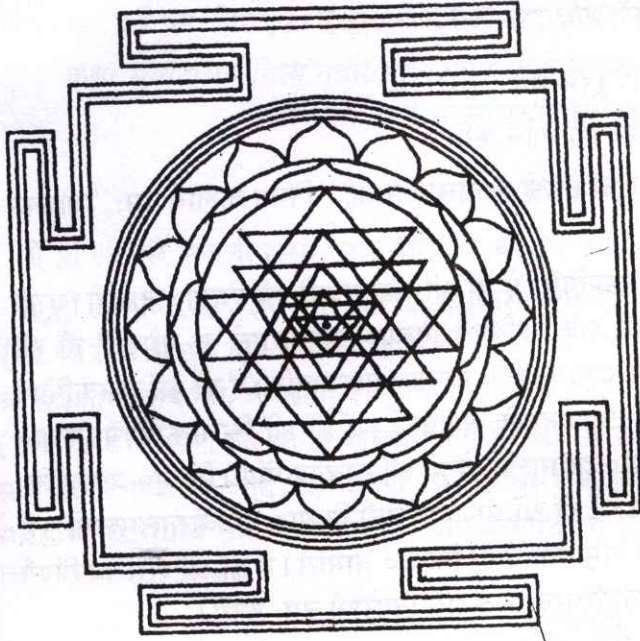
ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः दक्षौरौ। ऐं ह्रीं श्रीं क्षं क्षेत्रपालाय नमः दक्षांसे। ऐं ह्रीं श्रीं यां योगिनीभ्यो नमः वामांसे। ऐं ह्रीं श्रीं बं बटुकाय नमः वामोरौ। ऐं ह्रीं श्रीं लं इन्द्राय नमः पादाङ्गुष्ठद्वये। ऐं ह्रीं श्रीं रं आग्नये नमः दक्षजानुनि। ऐं ह्रीं श्रीं टं यमाय नमः दक्षपार्श्वे। ऐं ह्रीं श्रीं क्षं निर्ऋतये नमः दक्षांसे। ऐं ह्रीं श्रीं वं वरुणाय नमः मूर्धि। ऐं ह्रीं श्रीं यं वायवे नमः वामांसे। ऐं ह्रीं श्रीं सं सोमाय नमः वामपार्श्वे नमः। ऐं ह्रीं श्रीं हं ईशानाय नमः वामजानुनि। ऐं ह्रीं श्रीं हंसः ब्रह्मणे नमः मूर्धि। ऐं ह्रीं श्रीं अं अनंताय नमः मूलाधारे।

॥ त्रैलोक्यमोहनचक्र न्यासः॥

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहन चक्राय नमः। इस मन्त्र से व्यापक न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं आद्य चतुरस्त्र रेखायै नमः। दक्षांस पृष्ठ वक्ष्यमाण भागेषु। अपनी अंजुली में व्यापक न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं अणिमासिद्ध्यै नमः दक्षांस पृष्ठे। ऐं ह्रीं श्रीं लघिमासिद्ध्यै नमः दक्षपाण्यङ्गुल्यग्रेषु (दाहिने हाथ की अंगुलियों में)। **ऐं ह्रीं श्रीं महिमा सिद्ध्यै नमः दक्षोरुसन्धौ। ऐं ह्रीं श्रीं ईशत्वसिद्ध्यै नमः दक्षपादाङ्गुल्ये। ऐं ह्रीं श्रीं वशित्वसिद्ध्यै नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे। ऐं ह्रीं श्रीं प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः वामोरुसन्धौ। ऐं ह्रीं श्रीं भुक्तिसिद्ध्यै नमः वामपाण्यङ्गुल्यग्रेषु** (बायें हाथ की अंगुलियों में)। **ऐं ह्रीं श्रीं इच्छासिद्ध्यै नमः वामांसपृष्ठे। ऐं ह्रीं श्रीं प्राप्तिसिद्ध्यै नमः शिखामूले। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वकामसिद्ध्यै नमः शिरपृष्ठे।**

ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्त्रमध्यरेखायै नमः। व्यापक न्यास करें। **ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्मयै नमः पादाङ्गुष्ठद्वये। ऐं ह्रीं श्रीं माहेश्वर्यै नमः दक्षपार्श्वे। ऐं ह्रीं श्रीं कौमार्यै नमः मूर्धि। ऐं ह्रीं श्रीं वैष्णव्यै नमः वामपार्श्वे। ऐं ह्रीं श्रीं वाराह्यै नमः वामजानुनि। ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्राण्यै नमः दक्षजानुनि। ऐं ह्रीं श्रीं चामुण्डायै नमः दक्षांसे। ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः वामांसे।**

ऐं ह्रीं श्रीं चतुस्त्रान्त्य रेखायै नमः। व्यापक न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादाङ्गुष्ठद्वये। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वविद्राविण्यै नमः दक्षपार्श्वे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाकर्षिण्यै नमः मूर्धि। ऐं ह्रीं श्रीं सर्ववशङ्कर्यै नमः वामपार्श्वे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वोन्मादिन्यै नमः वामजानुनि। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमहाङ्कुशायै नमः दक्षजानुनि। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वखेचर्ये नमः दक्षांसे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वबीजायै नमः वामांसे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वयोन्यै नमः द्वादशान्ते। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वत्रिखण्डायै नमः पादाङ्गुष्ठद्वये। ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहन चक्रेश्वर्यै त्रिपुरायै नमः हृदये।

एताः प्रकट योगिन्यः त्रैलोक्य मोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदि चक्र समर्पणं न्यस्य॥

॥ सर्वाशापरिपूरकचक्र न्यासः॥

ऐं ह्रीं श्रीं सौः सर्वाशापरिपूरक चक्राय नमः। व्यापक न्यास करें।

आकर्षिणी शक्तियों का नित्याकला के रूप में न्यास करें। सभी के नाम के पश्चात् **''नित्या कलायै नमः''** जोड़कर न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं कामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः दक्षकर्णपृष्ठे। ऐं ह्रीं श्रीं बुद्ध्याकर्षिण्यै नित्या० दक्षांसे। ऐं ह्रीं श्रीं अहङ्काराकर्षिण्यै नित्या० दक्षकर्पूरे। ऐं ह्रीं श्रीं शब्दाकर्षिण्यै नित्या० दक्षकरतले च पृष्ठे। ऐं ह्रीं श्रीं स्पर्शाकर्षिण्यै नित्या० दक्षौरौ दक्षस्फिच। ऐं ह्रीं श्रीं रूपाकर्षिण्यै नित्या० दक्षजानुनि। ऐं ह्रीं श्रीं रसाकर्षिण्यै नित्या० दक्षगुल्फे। ऐं ह्रीं श्रीं गंधाकर्षिण्यै नित्या० दक्षपादतले, दक्षप्रपदे। ऐं ह्रीं श्रीं चित्ताकर्षिण्यै नित्या० वामपादतले, वामप्रपदे। ऐं ह्रीं श्रीं धैर्याकर्षिण्यै नित्या० वामगुल्फे। ऐं ह्रीं श्रीं स्मृत्याकर्षिण्यै नित्या० वामजानुनि। ऐं ह्रीं श्रीं नामाकर्षिण्यै नित्या० वामोरौ, वामस्फिचि। ऐं ह्रीं श्रीं बीजाकर्षिण्यै नित्या० वामकरतलपृष्ठयोः। ऐं ह्रीं श्रीं आत्माकर्षिण्यै नित्या० वामकर्पूरे। ऐं ह्रीं श्रीं अमृताकर्षिण्यै नित्या० वामांसे। ऐं ह्रीं श्रीं शरीराकर्षिण्यै नित्या० वामकर्णपृष्ठे। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरक चक्रेश्वर्यै त्रिपुरेश्यै नमः हृदये।

एताः गुप्तयोगिन्य सर्वाशापरिपूरक चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदये चक्र समर्पणं न्यस्यः॥

॥ सर्वसंक्षोभणचक्र न्यासः॥

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभण चक्राय नमः। व्यापक न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्ग कुसुमायै दक्षशंखे (ललाटास्थि)**। ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्ग मेखलायै नमः दक्षजत्रुणि** (बाहूमूलसन्धिः)**। ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गमदनायै नमः दक्षोरौ। ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गमदनातुरायै नमः दक्षगुल्फे। ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्ग रेखायै नमः वामगुल्फे। ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्ग वैगिन्यै नमः वामोरौ। ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गाङ्कुशायै नमः वामजत्रुणि। ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्ग मालिन्यै नमः वामशङ्खे। ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभण चक्रेश्यै त्रिपुरसुन्दर्यै नमः हृदये।**

एताः गुप्ततरयोगिन्य सर्वसंक्षोभण चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदये चक्रसमर्पणं न्यस्यः॥

॥ सर्वसौभाग्यदायकचक्र न्यासः॥

ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायक चक्राय नमः। व्यापक न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः ललाटमध्ये। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वविद्राविण्यै नमः ललाटदक्षभागे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाकर्षिण्यै नमः दक्षगण्डे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाह्लादिन्यै नमः दक्षांसे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंमोहिन्यै नमः दक्षपार्श्वे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वस्तंभिन्यै नमः दक्षोरौ। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वजृंभिण्यै नमः दक्षजङ्घायाम्। ऐं ह्रीं श्रीं सर्ववश्यङ्कर्यै नमः वामजङ्घायाम्। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरंजिन्यै नमः वामोरौ। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वोन्मादिन्यै नमः वामपार्श्वे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वार्थसाधिन्यै नमः वामांसे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै नमः वामगण्डे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमन्त्रमय्यै नमः ललाटवामभागे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः शिरपृष्ठे। ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरमालिन्यै नमः हृदये।

एताः सम्प्रदाययोगिन्य सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदये चक्रसमर्पणं न्यस्यः॥

॥ सर्वार्थसाधकचक्र न्यासः॥

ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधक चक्राय नमः। व्यापक न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धप्रदायै नमः दक्षनेत्रे, दक्षनासापुटे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसम्पत्प्रदायै नमः नासामूले, दक्षसृक्किणि। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वप्रियङ्कर्यै नमः वामनेत्रे, दक्षस्तने। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः वामबाहूमूले, दक्षवृषणे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वकामप्रदायै नमः वामोरुमूले, सीविन्यादक्षभागे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः वामजानुनि, सिविन्या (दानों अण्ड के मध्य की शिरा) **वामभागे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः दक्षजानुनि, वामस्तने। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वविघ्ननाशिन्यै नमः गुदे, वामवृषणे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः दक्षोरुमूले, वामसृक्किणि। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः दक्षबाहुमूले, वामनासापुटे। ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधक चक्रेश्वर्यै त्रिपुराश्रिये नमः हृदये।**

एताः कुलोत्तीर्ण योगिन्य सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदये चक्रसमर्पणं न्यस्यः॥

॥ सर्वरक्षाकरचक्र न्यासः॥

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकर चक्राय नमः। व्यापक न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञायै नमः दक्षनासापुटे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वशक्त्यै नमः दक्षसृक्किणि (ओष्ठप्रान्ते)। **ऐं ह्रीं श्रीं सर्वैश्वर्यप्रदायिन्यै नमः दक्षस्तने। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञानमय्यै नमः दक्षमुष्के। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः सीविन्यां दक्षभागे** (सिवनी = अण्डद्वय मध्यवर्तिनी शिरा) । **ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाधारस्वरूपायै नमः वाममुष्के, सीविन्यां वामभागे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वपापहरायै नमः वामस्तने। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वानन्दमय्यै नमः वामसृक्किणी। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः वामनासापुटे। ऐं ह्रीं श्रीं सर्वप्सितफलप्रदे नमः नासाग्रे। ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकर चक्रेश्वर्यै त्रिपुरमालिन्यै नमः हृदि।**

एताः निगर्भ योगिन्यः सर्वरक्षाकर चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदये चक्रसमर्पणं न्यस्यः॥

|| सर्वरोगहरचक्र न्यास:||

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहर चक्राय नमः। व्यापक न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं........अं अः ब्लूं वशिनिवाग्देवतायै नमः दक्षचिबुके। ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं क्ल् ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवतायै नमः दक्षकण्ठे। ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः दक्षहृदय भागे। ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः नाभिदक्षभागे। ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः नाभिवामभागे। ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयनिवाग्देवतायै नमः हृदयवामभागे। ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः वामकण्ठे। ऐं ह्रीं श्रीं शं षं सं हं लं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः वामचिबुके। ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहर चक्रेश्वर्यै त्रिपुरासिद्धायै नमः हृदि।

एताः रहस्य योगिन्यः सर्वरोहर चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदये चक्रसमर्पणं न्यस्यः॥

|| आयुध न्यास:||

हृदि त्रिकोण विभाव्य। त्रिकोण के चारों ओर आयुध न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यो वाणेभ्यो नमः त्रिकोण पृष्ठे।

ऐं ह्रीं श्रीं धं सर्वसम्मोहनाय धनुषे नमः त्रिकोणदक्षे (स्ववामे)। **ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं सर्ववशीकरणाय पाशाय नमः** त्रिकोणाग्रे। **ऐं ह्रीं श्रीं क्रों सर्वस्तम्भनाय अङ्कुशाय नमः त्रिकोणवामे** (स्वदक्षभागे)।

|| सर्वसिद्धिप्रदचक्र न्यास:||

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्सौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः। व्यापक न्यास करें।

हृदय में जो त्रिकोण की कल्पना की थी वहीं न्यास करें।

ऐं ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं कामरूपपीठस्थायै महाकामेश्वर्यै नमः त्रिकोणाग्रकोणे। ऐं ह्रीं श्रीं हसकहलह्रीं पूर्णागिरिपीठस्थायै महावज्रेश्वर्यै नमः तद्दक्षकोणे।

ऐं ह्रीं श्रीं सकलह्रीं जालंधरपीठस्थायै महाभगमालिन्यै नमः तद्वामकोणे।

ऐं ह्रीं श्रीं मूलमन्त्रं ओड्याणपीठस्थायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः तन्मध्ये।

हृदय में षोडशी की नित्याओं का उनके नाम से या मन्त्र सहित षोडश स्वरों से न्यास करें।

अं (कामेश्वरी नित्या मन्त्र) कामेश्वरी नित्यायै नमः।

आं भगमालिनि नित्यायै नमः। इं नित्यक्लिन्नायै नमः। ईं भेरुण्डायै नमः। उं वह्निवासिन्यै नमः। ऊं महावज्रेश्वर्यै नमः। ऋं शिवदूत्यै नमः। ॠं त्वरितायै नमः। लृं कुलसुन्दर्यै नमः। ॡं नित्यनित्यायै नमः। एं नीलपताकायै नमः। ऐं विजयायै नमः। ओं सर्वमङ्गलायै नमः। औं ज्वालामालिन्यै नमः। अं चित्रायै नमः। अः ललिता महानित्यायै नमः।

मूलमन्त्र से हृदय में **महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।**

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रद चक्रेश्वर्यै त्रिपुराम्बायै नमः हृदि।

एताः अतिरहस्य योगिन्यः सर्वसिद्धिपद्रे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदये चक्रसमर्पणं न्यस्यः ॥

॥ सर्वानन्दमयचक्र न्यासः॥

ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सर्वानन्दचक्राय नमः। व्यापक न्यास करें।

ऐं ह्लीं श्रीं मूलं श्रीललितायै नमः हृदि। ऐं ह्लीं श्रीं मूलं सर्वानन्दमय चक्रेश्वर्यै श्रीललितायै नमः हृदि।

एताः परापरातिरहस्य योगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदये चक्रसमर्पणं न्यस्यः ॥

देवि को योनिमुद्रा से प्रणाम करें। कराङ्गन्यासादि करें।

॥ अथ हादिविद्यान्यास ध्यानानि ॥

विनियोग – अस्य हादिपञ्चदशी श्रीविद्यामहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्रीदेवीभूषितोत्सङ्ग, श्रीकामेश्वरी देवता हसकल ह्रीं बीजं, सकल ह्रीं शक्तिं, हसकहलह्रीं कीलकं, श्रीदेविभूषितो श्रीकामेश्वर देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ अथ न्यास :॥

मन्त्र	कराङ्गन्यास	हृदयादिन्यास
हसकल ह्रीं सर्वज्ञताशक्ति धाम्ने	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
हसकहल ह्रीं नित्यतृप्तिशक्ति धाम्ने	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
सकल ह्रीं अनादिबोधेशक्ति धाम्ने	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
हसकल ह्रीं स्वतन्त्रता शक्ति धाम्ने	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
हसकहल ह्रीं नित्यमलुप्तशक्ति धाम्ने	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
सकल ह्रीं अनन्तशक्ति धाम्ने	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

श्रीदेविभूषितोत्सङ्ग सान्द्रसिन्दूररोचिषम् ।
हकारादिमनोर्वाच्यं वन्दे कामेश्वरं हरम् ॥
उद्यद्दिनकरप्रख्यं जपाकुसुमसन्निभम् ।
नवरत्नसमायुक्तं मुकुटेन विराजिताम् ॥
चतुर्बाहुमुदाराङ्ग मोहयन्तं जगत्त्रयम् ।
श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं ध्यायेत् परशिवं प्रभुम् ॥
एवं ध्यायेन्महादेवं भुक्तिमुक्ति फलप्रदम् ।

॥ अथ श्रीबाला मन्त्रः॥

मन्त्र – ऐं क्लीं सौः।

विनियोग – अस्य श्रीबाला त्रिपुरसुन्दरी मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋषिन्यास – दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्दसे नमः मुखे, श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदये, ऐं बीजाय नमः गुह्ये, सौः शक्तये नमः पादयोः, क्लीं कीलकाय नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यास – ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। सौः मध्यमाभ्यां नमः। ऐं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास – ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुम्। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

अरुणकिरणजालै रंजितासावकाशा
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता।
इतरकरवराढ्या फुल्लकल्हारसंस्था
निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणशीला ॥१॥

ऐंकाराङ्कितगर्भितानलशिखाः सौः क्लीं कलांबिभ्रतीम्।
सौवर्णाम्बुजधारिणींवरधरां धाराधराङ्गोज्जवलाम्॥
वन्दे साङ्कुश पाशपुस्तकधरां स्त्रग्भासितोद्यत्कराम्।
तां बालां त्रिपुरां पदत्रयतनु षट्चक्रसंचारिणीम् ॥२॥

मालासृणी पुस्तक पाशहस्तां, बालाम्बिकां श्रीललितां कुमारीम्।
कुमारकामेश्वर केलिलोलां, नमामि गौरीं नववर्ष वेषाम् ॥३॥

॥ इति ॥

॥ अथ श्रीयन्त्रस्य वृत्तत्रय पूजनम् ॥

षोडशदल व भुपूर के मध्य में तीन वृत्त बनाये जाते हैं। संप्रदाय भेद से उनके पूजन क्रम में भी भेद हैं।

(१) हयग्रीव सम्प्रदाय के अनुसार त्रिवृत्त में पूजन का उल्लेख नहीं है।

(२) आनन्दभैरव सम्प्रदाय में तीन वृत्त बनाये जाते हैं किन्तु उनके पूजन का उल्लेख नहीं है।

(३) दक्षिणामूर्ति सम्प्रदाय में तीन वृत्त बनाये जाते हैं तथा उनके पूजन का क्रम भी है।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गसाधक चक्राय नमः।

संहारक्रम में शुक्ल, अरुण एवं कृष्णवर्ण की वृत्तरेखाओं का पूजन करें।

संहारक्रमेण शुक्लारुणकृष्णवर्ण रेखात्रयस्य मायाबीज प्रकृतिकस्य गुण प्रकृति परादिवागात्मकस्य प्रथमवृत्तरेखायां देव्यग्रमारभ्या प्रादक्षिण्येन।

देवता के नाम से पहले (४ अर्थात्) **"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं"** तथा पश्चात् (श्री० अर्थात्) **"श्रीपादुकां पूजयामि"** जोड़कर अर्चना करें।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं कालरात्रि श्रीपादुकां पूजयामि। २. ४ खं खण्डिता श्री०। ३. ४ गायत्री श्री०। ४. ४ घण्टाकर्णी श्री०। ५. ४ ङ ङार्णा श्री०। ६. ४ चं चण्डा श्री०। ७. ४ छं छाया श्री०। ८. ४ जं जया श्री०। ९. ४ झं झङ्कारिणी श्री०। १०. ४ ञं ज्ञानरूपा श्री०। ११. ४ टं टङ्कहस्ता श्री०। १२. ४ ठं ठङ्कारिणी श्री०। १३. ४ डं डामरी श्री०। १४. ४ ढं ढङ्कारिणी श्री०। १५. ४ णं णार्मा श्री०। १६. ४ तं तामसी श्री०। १७. ४ थं स्थाण्वी श्री०। १८. ४ दं दाक्षायणी श्री०। १९. ४ धं धात्री श्री०। २०. ४ नं नारी श्री०। २१. ४ पं पार्वती श्री०। २२. ४ फं फट्कारिणी श्री०। २३. ४ बं बंधिनी श्री०। २४. ४ भं भद्रकाली श्री०। २५. ४ मं महामाया श्री०। २६. ४ यं यशस्विनी श्री०। २७. ४ रं रक्ता श्री०। २८. ४ लं लम्बोष्ठी श्री०। २९. ४ वं वरदा श्री०। ३०. ४ शं श्री०। ३१. ४ षं षण्ढा श्री०। ३२. ४ सं सरस्वती श्री०। ३३. ४ हं हंसवती श्री०। ३४. ४ क्षं क्षमवती।

द्वितीय वृत्त रेखायां अप्रादक्षिण्य क्रमेण -

१. अं अमृता श्री०। २. ४ आं आकर्षिणी श्री०। ३. ४ इं इन्द्राणी श्री०। ४. ४ ईं ईशानी श्री०। ५. ४ उं उमा श्री०। ६. ४ ऊं ऊर्ध्वकेशी श्री०। ७. ४ ऋं ऋद्धिदा श्री०। ८. ४ ॠं ॠकारा श्री०। ९. ४ लृं लृकारा श्री०। १०. ४ लॄं लॄकारा श्री०। ११. ४ एं एकपदा श्री०। १२. ४ ऐं ऐश्वर्यात्मिका श्री०। १३. ४ ओं ओङ्कारा श्री०। १४. ४ औं औषधि श्री०। १५. ४ अं अम्बिका श्री०। १६. ४ अः अक्षरा श्री०।

तृतीय वृत्त रेखायां प्रादक्षिण्य क्रमेण -

१. ४ अं कामेश्वरी श्री०। २. ४ आं भगमालिनी श्री०। ३. ४ इं नित्यक्लिन्ना श्री०। ४. ४ ईं भेरुण्डा श्री०। ५. ४ उं वह्निवासिनी श्री०। ६. ४ ऊं महावज्रेश्वरी श्री०। ७. ४ ऋं शिवदूति श्री०। ८. ४ ॠं त्वरिता श्री०। ९. ४ लृं कुलसुन्दरी श्री०। १०. ४ लॄं नित्या श्री०। ११. ४ एं नीलपताका श्री०। १२. ४ ऐं विजया श्री०। १३. ४ ओं सर्वमङ्गला श्री०। १४. ४ औं ज्वालामालिनी श्री०। १५. ४ अं चित्रा श्री०। १६. ४ अः ललितामहानित्या श्री०। १७. ४ कामेश्वरी श्री०।

एता मातृका योगिन्यः त्रिवर्ग साधकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारै संपूजिता संतर्पिता सन्तुष्टा संत्विति तासां समष्ट्यर्चनं विधाय कालरात्र्याः पुरतः ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरेशिनी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

गं गरिमा सिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऐं महायोनिमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऐं महायोनि मुद्रा प्रदर्श्य -

श्रीचक्र पूजनः- संहार क्रम में यह द्वितीय आवरण पूजा क्रम होगा।

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

इस रीति से सर्वाशापरिपूरक चक्र तृतीय आवरण होगा। पश्चात् शेष आवरणों की पूजा कर, दशावरण पूजा का संपादन करें।

अन्तश्चक्रन्यासेऽपि (वृत्त पूजने)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गसाधक चक्राधिष्ठात्र्यै कालरात्र्यादि सहित मातृका योगिनी रूपायै त्रिपुरेशिनी देव्यै नमः।

॥ इति त्रिवृत्तार्चनम् ॥

॥ अथ श्रीललिताया चतुःषष्ट्युपचारपूजाः॥

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य अनु० प्रकाशः भाग ३ में श्रीमहादुर्गा की वृहत् ६४ उपचारों से सश्लोक पूजा दी गई है। यहां श्रीललिता की ६४ भावोपचार पूजा दी गई है। जो वस्तु द्रव्य उपलब्ध हो उसे भगवती के चढ़ावें एवं जो वस्तु द्रव्य उपलब्ध नहीं हो उसकी भावना करके अक्षत पुष्प चढ़ावें।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै पाद्यं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः।

मानसिक पूजन करें तो केवल "**कल्पयामि नमः**" प्रत्येक उपचार के साथ कहें।

ऐं ह्रीं श्रीं आभरणावरोपणं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं सुगंधितैलाभ्याङ्गं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं मज्जनशाला प्रवेशनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै मज्जनशालामणि पीठोपवेशनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यस्नानीयोद्वर्त्तनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै उष्णोदक स्नानं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कनककलशाच्युत स्नानं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै सकलतीर्थाभिषेकं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै धौतवस्त्रपरिमार्जनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अरुणदुकूलपरिधानं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अरुणकुचोत्तरीयं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै आलेपमण्डल प्रवेशनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै आलेपमण्डलमणिपीठोपवेशनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै दिव्यगंध सर्वाङ्गीण विलेपनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै केशभारस्य कालागरुधूपं घ्रापयामि निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कुसुममाला निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै भूषणमण्डप प्रवेशनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै भूषण मण्डप मणिपीठोपवेशनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै नवमणिमुकुटं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै चन्द्रशकलं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै सीमन्त सिन्दूरं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै तिलकरत्नं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कालाञ्जनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै वालीयुगल निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै मणिकुण्डल युगलं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै नासाभरणं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अधरयावकं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै माङ्गल्यसूत्रं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कनकचिन्ताकं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै पदकं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै महापदकं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै मुक्तावलिं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै एकावलिं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै छन्नवीरं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै केयूरयुगलचतुष्टयं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै वलयावलिं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै ऊर्मिकावलिं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै काञ्चीदाम निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कटिसूत्रं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै सौभाग्याभरणं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै पादकटकं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै

रत्ननूपुरं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै पादाङ्गुलीयकं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै एककरेपाशं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अन्यकरे अङ्कुशं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै इतरकरे पुण्ड्रेक्षुचापं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अपरकरे पुष्पबाणान् निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै श्रीमन्माणिक्य पादुके निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै स्वसमानवेषाभिरावरण देवताभिः सह महाचक्राधिरोहणं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कामेश्वराङ्कपर्यङ्कोपवेशनं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अमृतासवचषकं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै आचमनीयं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कर्पूरवीटिकां (एला, लवंग, कर्पूर, कस्तूरी, केसर, जायफल, सुपारी, लौंग एवं पानपत्र) निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै आनन्दोल्लास विलासहासं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः।

॥ अथ मङ्गलारार्तिकम् ॥

कलधौतादिभाजने कुङ्कुम चन्दनादि लिखितस्याष्ट षट्चतुर्दलाद्यन्यतमस्य कमलस्य चन्द्राकार चरुगोलकवत्यां चणक मुद्गजुषि वा कर्णिकायां दलेषु च पयः शर्करापिण्डीकृत यवगोधूमादिपिष्टो पादानकानि त्रिकोणशिरस्कडमर्वाकृतीनि चतुरङ्गलोत्सेधानि घृतपाचितानि नवसप्तपञ्चान्य तम संख्यानि दीपपात्राणि निधाय तेषु गोघृतं कर्षप्रमितं (१ तोला) आपूर्य कर्पूरगर्भिता वर्तिका हृल्लेखया (ह्रीं मन्त्र से) प्रज्वाल्य ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं - इति नवाक्षर्या रत्नेश्वरी विद्यया अभिमन्त्र्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाभ्यर्च्य।

ऐं ह्रीं श्रीं जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा- इति मंत्र पूर्वकं गंधाक्षतादिना घण्टां संपूज्य तां वादयन् जानुचुम्बितभूतल तत्पात्रं आमस्तकमुद्धृत्य।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै मङ्गलारार्तिकं कल्पयामि नमः॥

समस्त चक्र चक्रेशीयुते देवी नवात्मिके ।
आरार्तिकमिदं तुभ्यं गृहाण मम सिद्धये ॥

इति नववारं श्रीदेव्या आचूडं आरणाब्जं परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत्।

प्रात:कालीन आरार्ति मङ्गला आरती कहलाती है। पश्चात् नैवेद्यादि अर्पण के बाद की आरती महाआरती कहलाती है।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै छत्रं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै चामरयुगलं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै दर्पणं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै तालवृन्तं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै गंधं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै पुष्पं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै धूपं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै दीपं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः।

॥ अथ नैवेद्यम् ॥

देव्याः पुरतः स्वदक्षिणे चतुरस्त्र मण्डलं निर्माय तत्र आधारोपरि नैवेद्यं निधाय मूलेन प्रोक्ष्य, वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य मूलेन त्रिवारं अभिमन्त्र्य आपोशनं दत्वा।

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै नैवेद्यं निवेदयामि (कल्पयामि) नमः। अथ श्रीललिता पानीयं उत्तरापोशनं हस्तप्रक्षालनं

गण्डूषं आचमनीयं ताम्बूलञ्च निवेदयेत् वा कल्पयेत्।

ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्रों ह्स्ख्फ्रें ह्सौः ऐं इति संर्वसंक्षोभिण्यादि नवमुद्रा प्रदर्शयेत्।

षोडश्युपासकास्तु हस्त्रैं ह्स्क्लरीं ह्सौः इति त्रिखण्डामपि प्रदर्शयेयुः।

॥ चतुरायतन पूजा ॥

नित्योत्सवे तु तत्तद् देवतामन्त्रैः तर्पणमात्रमेव । विस्तरेणापि लिख्यते यथेच्छं विधेयम् । नैऋते च गणेशानं सूर्यं वायव्य एव च । ईशाने विष्णुमाग्नेये शिवं चैव प्रपूजयेत् ॥

विशेष उत्सव में प्रत्येक देवता की विशेष मन्त्रों से पूजा करें। नित्योत्सव में साधारण पूजा करें।

॥ षडाधार पूजा ॥

ऐं ह्रीं श्रीं सां हंसः मूलाधाराधिष्ठान देवतायै साकिनी सहित गणनाथ स्वरूपिण्यै नमः। गणनाथस्वरूपिण्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं कां सोऽहं स्वाधिष्ठानाधिष्ठान देवतायै काकिनी सहित ब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः। ब्रह्मस्वरूपिण्यम्बा श्री पा. पू. त. नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं लां हंसोस्सोऽहं मणिपूरकाधिष्ठान देवतायै लाकिनी सहित विष्णुस्वरूपिण्यै नमः। विष्णुस्वरूपिण्यम्बा श्री पा. पू. त. नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं रां हंसश्शिवस्सोऽहं अनाहताधिष्ठान देवतायै राकिनी सहित सदाशिवस्वरूपिण्यै नमः। सदाशिवस्वरूपिण्यम्बा श्री पा. पू. त. नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं डां सोऽहं हंसशिवः विशुद्ध्यधिष्ठान देवतायै डाकिनी सहित जीवेश्वरस्वरूपिण्यै नमः। जीवेश्वरस्वरूपिण्यम्बा श्री पा. पू. त. नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं हां हंसश्शिवस्सोऽहं सोहं हंसश्शिव आज्ञाधिष्ठान देवतायै डाकिनी सहित परमात्मस्वरूपिण्यै नमः। परमात्मस्वरूपिण्यम्बा श्री पा. पू. त. नमः।

॥ आम्नायसमष्टि पूजा ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्त्रौं पूर्वाम्नाय समय विद्येश्वर्युग्मोदिनी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवेकुल ह्सौः। दक्षिणाम्नाय समयविद्येश्वरी भोगिनी देव्याम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्त्रीं ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयू ह्स्ख्फ्रें अघोरमुखि छ्रीं छ्रीं किणि किणि विच्चे ह्स्त्रौः ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौः। पश्चिमाम्नाय समयविद्येशेश्वरी कुब्जिकादेव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगेश्वरि कालिके फट्। उत्तराम्नाय समय विद्येश्वरी कालिकादेव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

षोडश्युपासकानां विशेष -

ऐं ह्रीं श्रीं मखपरयघच् महिचनडयङगंशफर उर्ध्वाम्नाय समयविद्येश्वर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तर वाग्वादिनी हस्ख्फ्रें हस्ख्फ्रें ह्स्त्रौः। अनुत्तर शाङ्कर्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

॥ अथ दण्डनाथा एवं मन्त्रिणी नामानि ॥

श्रीत्रिपुरसुन्दरी की दण्डिनी शक्ति **वाराही वार्त्ताली** है तथा मन्त्रिणी शक्ति **भगवति मातंगी** है। उनकी विविध नामों से पूजा करें।

॥ दण्डनाथानामानि ॥

ॐ पञ्चम्यै नमः। ॐ दण्डनाथायै नमः। ॐ संकेतायै नमः। ॐ समयेश्वर्यै नमः। ॐ समयसङ्केतायै नमः। ॐ वाराह्यैनमः। ॐ पोत्रिण्यै नमः। ॐ शिवायै नमः। ॐ वार्त्तात्यै नमः। ॐ महासेनायै नमः। ॐ आज्ञाचक्रेश्वर्यै नमः। ॐ अरिघ्न्यै नमः।

॥ मन्त्रिणी नामानि ॥

ॐ संगीत यौगिन्यै नमः। ॐ श्यामायै नमः। ॐ श्यामलायै नमः। ॐ मंत्रनायिकायै नमः। ॐ मंत्रिण्यै नमः। ॐ सचिवेशान्यै नमः। ॐ प्रधानेश्यै नमः। ॐ शुकप्रियायै नमः। ॐ वीणात्यै नमः। ॐ वैणिक्यै नमः। ॐ मुद्रिण्यै नमः। ॐ प्रियकप्रियायै नमः। ॐ नीणप्रियायै नमः। ॐ कदम्बेश्यै नमः। ॐ कदम्बवासिन्यै नमः। ॐ सदामदायै नमः।

अतः दण्डिनी एवं मंत्रिणी शक्तियों का पूजन करने से त्रिपुरसुन्दरी की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

॥ अथ ललिता नामानि ॥

ॐ सिंहासनेश्यै नमः। ॐ ललितायै नमः। ॐ महाराज्ञै नमः। ॐ वराङ्कुशायै नमः। ॐ चापिन्यै नमः। ॐ त्रिपुरायै नमः। ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। ॐ सुन्दरीचक्रनाथायै नमः। ॐ साम्राज्यै नमः। ॐ चक्रिन्यै नमः। ॐ चक्रेश्वर्यै नमः। ॐ महादेव्यै नमः। ॐ कामेश्यै नमः। ॐ परमेश्वर्यै नमः। ॐ कामराजप्रियायै नमः। ॐ कामकोटिकायै नमः। ॐ चक्रवर्तिन्यै नमः। ॐ महाविद्यायै नमः। ॐ शिवायै नमः। ॐ अनङ्गवल्लभायै नमः। ॐ सर्वपाटलायै नमः। ॐ कुलनाथायै नमः। ॐ आम्नायनाथायै नमः। ॐ सर्वाम्नायनाथायै नमः।

पश्चात् शृङ्गारनायिका पूजन करें – **ॐ शृङ्गारनायिकायै नमः।**

समय उपलब्धि हो तो सहस्त्रनामावली से अर्चना करें।

॥ मन्त्र पुष्पाञ्जलि ॥

शिवे शिवसुशीतलामृत तरङ्गगन्धोलस –
न्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि ।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीर नित्योज्ज्वले,
षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जिलिः ॥१॥

समस्तमुनि यक्षकिम्पुरुषसिद्ध विद्याधर, गुहासुरसुराप्सरोगण मुखैर्गणैः सेविते । निवृत्तितिलकाम्बर प्रकृति शान्ति विद्याकला, कलापमधुराकृते कलित एष पुष्पाञ्जिलिः ॥२॥
पुरन्दर जलाधिपान्तक कुबेर रक्षोहर, प्रभञ्जन धनञ्जय प्रभूतिवन्दना नन्दिते ।

****

प्रवालपद पीठिका निकट नित्यवर्ति स्वंभू, विरिञ्चि विहितस्तुते विहित एष पुष्पाञ्जलिः ॥३॥

यदानति बलादलङ्कृतिरुदेति विद्यावयस्तयो द्रविण सौरभाकृति कवित्व सविन्मयी ।
जरामरणजन्मजं भयमुपैति तस्यै समाहिताखिलसमीहित प्रसवभूमि तुभ्यं नमः ॥४॥

तरड़यति सम्पदं तदनु संहारत्यापदं सुखं वितरति श्रियं परिचिनोति हन्ति द्विषः ।
क्षिणोति दुरितानि यत् प्रणतिरम्ब तस्यै सदा, शिवशङ्करि शिवे परे शिवपुरन्धि तुभ्यं नमः ॥५॥

त्वमेव जननी पिता त्वमथ बान्धवस्त्वं सखा, त्वमायुरपरं त्वमाभरणमात्मनस्त्वं कला ।
त्वमेव वपुषः स्थितिस्त्वमखिलायति स्त्वं गुरुः, प्रसीद परमेश्वरि प्रणतिपात्रि तुभ्यं नमः ॥६॥

पश्चात् पूजा, उपचार, फल भगवति के अर्पण करें।

इत्येते कतिचिच्चतुष्षष्ट्युपचारातिरिक्ता उपचारास्तु पूर्ववत् धूपदीपेति सूत्रगातेनादिपदेन गृह्यन्ते ।

॥ कामकला ध्यानम् ॥

अथ बिन्दुना मुखं बिन्दुद्वयेन स्तन्नौ सपरांर्धेन ।
योनिरति सानुस्वारे तुरीयस्वरे कामकलात्मिकाम् ॥

इति ध्यात्वा, **सौः** इति देवि शक्तिः बीजं श्रीदेव्या हृदयत्वेन भावयेत्।

॥ बलिदान ॥

कुरुकुल्ला देवी व सर्वभूतों को बलि प्रदान करें।

बाणमुद्रा दिखायें। त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्त्रमण्डल बनाये।

ऐं व्यापक मण्डलाय नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्र त्रिः पठित्वा दक्षकरार्पितं वामकरतस्त्वमुद्रास्पृष्टं सलिलि बल्युपरि दत्वा वामपार्ष्णिघात करास्फोटौ कुर्याणः समुदञ्चित वक्त्रो बाणमुद्रया बलिं भूतैः ग्रासितं विभाव्य प्रणमेत्।

॥ अथ षोडशी उपासनां कुल्लुकादि साधना विद्याः॥

शक्ति उत्थानमुद्रा में स्वदेह को शून्यमय समझें। तीन बिन्दु एवं अर्द्धकला से कामकला का ध्यान करें। सहस्रार में गुरुमन्त्र व देवता का ऐक्यभाव का ध्यान करें।

मन्त्र जागृति हेतु **कुल्लुका, सेतु, महासेतु, निर्वाण मन्त्र, कामकला, संजीवनी, दीपनी** आदि मन्त्रों का जप करें।

॥ साधारण मन्त्राः ॥

(१) कुल्लुका मन्त्र - **ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा।**
इस कल्लुका मन्त्र से शिर में दशबार जप करें।

(२) सेतु (ॐ) - **ऐं ह्रीं श्रीं ॐ।** हृदय में १२ बार जप करें।

(३) महासेतु (ह्रीं) - **ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं** कण्ठ में १६ बार जप करें।
असाधारण मन्त्र के साथ ''**ह्रीं**'' का सहस्रार में जप करें।

(४) निर्वाण मन्त्र - **ऐं ह्रीं श्रीं अं आं.........हं लं क्षं** पश्चात् ''**ऐं**'' मूलमन्त्र **ऐं अं आं.........हं लं क्षं।**
यह मूलमन्त्र हुआ, इसका नाभि में ३ बार जप करें।

(५) कामेश्वरीमन्त्र (क्लीं) - **ऐं ह्रीं श्रीं ''क्लीं''।** स्वाधिष्ठान में ३ बार जप करें।

(६) कामकला मन्त्र (ईं) - **ऐं ह्रीं श्रीं ''ईं''।** मूलाधार में ३ बार जप करें।

(७) समष्टि मन्त्र - **ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकट गुप्त गुप्ततर सम्प्रदाय कुलोत्तीर्ण निगर्भ रहस्याति रहस्य परापराति रहस्य योगिनीभ्यो नमः।** ३ बार जप करें।

(८) उत्कीलन मन्त्र - **ई ए क ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।** ७ बार जप करें।

(९) संजीवनी मन्त्र - **ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं हैं हैं कल ह्रीं सौः सकल ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं।** ७ बार जप करें।

॥ ध्यानम् ॥

विद्युदक्षीं परां विद्यां कालिकां देशभाषिणीम् ।
खड्गमुण्डविकराख्यां व्याघ्रचर्मविभूषिताम् ॥
रक्तमाल्यम्बरधरां घोररूपां चतुर्भुजाम् ।
खड्गं शूलं कपालञ्च दधतीं तीक्ष्णनासिकाम् ।
सिद्ध्यर्थं चिन्तयेद् देवीं सर्वविद्यासुजीविनीम् ॥

प्राणमन्त्र - ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं हंसः कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं हंसः ह्रीं श्रीं। ७ बार जप करें।

दीपिनी मन्त्र - ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं कएईलह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हसकहल ह्रीं ॐ ऐं श्रीं क्लीं

ह्रीं हकलए ह्रीं हकहल ह्रीं हएकल ह्रीं ॐ ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं कहलए ह्रीं कहएल ह्रीं कहहल ह्रीं हंसः ॐ ह्रीं श्रीं हंसः सोहं सकल ह्रीं ।

इस ७४ अक्षर मन्त्र का ७ बार जप करें।

॥ असाधारण पञ्चमन्त्राः॥

(१) **महाकामेश्वर मन्त्र** – **ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ ह्रीं श्रीं हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं यरलवक्षमलवरयूं ॐ ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं।** दशबार जप करें।

(२) **पञ्चदशी मन्त्र** – **ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।** ३ बार जप करें।

(३) **षोडशी मन्त्र** – **ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।** ३ बार जप करें।

(४) **बाला मन्त्र** – **ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः।** ३ बार जप करें।

(५) **सुमुखि मन्त्र** – **ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं उच्छिष्ट चाण्डालि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा।** ३ बार जप करें।

(६) **तारा मन्त्र** – **ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं क्रीं श्रीं उग्रतारे सौः क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा।** ३ बार जप करें।

सूतक निवारण – मूल मन्त्र के आगे व पीछे ॐ का संपुट लगाने से मन्त्र का जननाशौच व मृताशौच दोष नष्ट हो जाता है।

॥ विघ्नहरण मन्त्राः॥

(१) ऐं ह्रीं श्रीं इरिमिलि किरि किलि परिमिरोम्।

(२) ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं नमो भगवति महात्रिपुरभैरवि मम त्रैपुर रक्षां कुरु कुरु।

(३) ऐं ह्रीं श्रीं संहर संहर विघ्नरक्षो विभीषकान् कालय हुं फट् स्वाहा।

(४) ऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं रक्ताभ्यो योगिभ्यो नमः।

(५) ऐं ह्रीं श्रीं सां सारसाय बह्वाशनाय नमः।

(६) ऐं ह्रीं श्रीं दु मु लु षु मु लु षु ह्रीं चामुण्डायै नमः।

एते कुल्लुकाद्या, विघ्नहरान्ता जपस्यपूर्वाङ्ग मन्त्राः।

अर्थात् ये मन्त्र जप प्रारंभ करने से पहले करें।

पुनः कुल्लुकादि मन्त्र स्मरणं कृत्वा।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भगवति त्रिपुरसुन्दरि स्वाहा।

इस कुल्लुका का शिर स्थान में जप करें। हृदय में सेतु ॐ का जप करे। कण्ठ में महासेतु – द्रीं का जप करें। महासेतु – ह्रीं का सहस्त्रार में जप करें।

ॐ श्रीं अं ऐं क्लीं सौः अं आं........हं लं क्षं इस पूर्वोक्त निर्वाण मन्त्र का नाभि में जप करें।

क्लीं काम बीज का स्वाधिष्ठान में तथा मूल मन्त्र का जिह्वा में जप करें।

पश्चात् माला का पूजन कर जप प्रारंभ करें। पश्चात् १५ नित्याओं के मन्त्र का स्मरण करें।

॥ त्रिपुरसुंदरी मेरुमंत्र॥

मन्त्र - ल स ह ह ई ए र कँ। इस देवी के सभी मंत्र इसी मेरु मंत्र से उत्पन्न हुये है।

(ज्ञानार्णवे) अर्धचन्द्र व बिन्दु हटाने से नौ अक्षर का मन्त्र बनता है।

॥ कामेश्वरी मंत्र॥

क ल ह्रीं। इन तीन वर्णों से कामराजादि सभी मंत्रों का उद्धार होता है।

॥ इति ॥

॥ अथ त्रिपुरसुन्दरी शापविमोचन प्रयोगः॥

साधक स्थिर चित्त होने के लिये रुद्राष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के ६ सूक्त पढे यथा "**तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु**"। "**शञ्च नो अभयं च नः**" से तीन बार आचमन कर इष्टदेव को प्रणाम कर शाप विमोचन हेतु संकल्प करे।

यज्जाग्रतो दूरमुदैतिदैवं तदुसुप्तस्य तथैवैति ।
दुरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥१॥
येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञेकृण्वन्ति विदथेषुधीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥२॥
यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्नऋते किंचनकर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥३॥
येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतमऽ मृतेनसर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥४॥
यस्मिन्नृचः सामयजू ०७ षि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथना भाविवाराः ।
यस्मिंश्चित्तठ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥५॥
सुषारथिरश्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयते ऽभीशुभिर्वाजिनइव ।
हृत्प्रतिष्ठंयदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥६॥
शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे
सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे भद्रं च मे
श्रेयश्च मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥७॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीविद्याशाप विमोचन मंत्रस्य वसिष्ठ नारद सामवेदाधिपतिर्ब्रह्मऋषयः गायत्रीछन्दः सर्वैश्वर्यकारिणी सवमंगला श्री राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं संकल्पित

****

मंत्रसिद्धर्थे श्री नन्दिकेश्वर कामराजोपास्य श्रीविद्या मंत्र सिद्धि हेतवे शापविमोचने विनियोगः।

शापोद्धार मंत्र - ॐ श्रीं श्रीविद्या स्वरूपिण्यै अक्षय फलदात्र्यै ब्रह्म वसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ताभव। ॐ कां कांति स्वरूपिण्यै राजवरदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशायाद् विमुक्ताभव। ॐ ह्रीं श्रीं सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ताभव।

इसके बाद मूलमंत्र व शापविमोचन मंत्रों से व्यापक न्यास करे।

ऋष्यादिन्यास :- अस्य श्री श्रीविद्या मंत्रस्य श्री सदाशिव ऋषये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नमः मुखे। श्रीत्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः नाभौ। श्रीं शक्त्ये नमः उपस्थे (गुह्मांगे)। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। विनियोगायः नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास :- ॐ क ए ई ल ह्रीं सर्वज्ञायै हृदयाय नमः। ॐ हसकहल ह्रीं नेत्रत्रयाय शक्त्यै शिरसे स्वाहा। ॐ सकल ह्रीं अनादिबोधायै शिखायै वषट्। ॐ क ए ई ल ह्रीं स्वतंत्रायै कवचाय हुं। ॐ हसकहल ह्रीं अतुलशक्तियुतायै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सकल ह्रीं अनंतास्त्रयुतायै अस्त्राय फट्। ॐ सहस्त्रारायै हुं फट् स्वाहा से दिग्बंधन करे। शेष न्यास पूजा विद्या देवीखण्ड के पूर्वार्द्धभाग के समान करे।

॥ अथ सुन्दरी क्रमोक्तविद्या स्वरूपाः॥

(१) सौभाग्य विद्या -

पञ्चदशाक्षरी - **(क) हकलस ह्रीं कहलस ह्रीं कलसह ह्रीं।** (विद्यार्णव तन्त्रे)

(ख) सकहल ह्रीं हकहल ह्रीं कहकल ह्रीं। (तन्त्रसार)

सप्तदशाक्षरी - **(क) सकहल ह्रीं हकहल ह्रीं कहकल ह्रीं हंसः।**

(ख) हकलस ह्रीं कहलस ह्रीं कलसह ह्रीं हंसः।

(२) भाषा विद्या -

(क) हसकल ह्रीं हलकहस ह्रीं सकल ह्रीं। (विद्यार्णवे)

(ख) हकलस ह्रीं कहलस ह्रीं कलसह ह्रीं। (हिन्दी तन्त्रसारे)

(३) सृष्टि विद्या -

(क) हलकस ह्रीं कसहलस ह्रीं कहसल ह्रीं।

(ख) हसकल ह्रीं हलकहस ह्रीं सकल ह्रीं। (तन्त्रसारे)

(४) स्थिति विद्या -

(क) हलकस ह्रीं हसकल ह्रीं हहकल ह्रीं।

(ख) हलकस ह्रीं कसहलस ह्रीं कहसल ह्रीं।

(५) संहृति विद्या -

(क) लकस ह्रीं सहकल ह्रीं हससहक ह्रीं।

(ख) हलकस ह्रीं हसकसहर ह्रीं हसकल हर ह्रीं।

(६) निराख्या विद्या -

(क) हकलस ह्रीं हकहस ह्रीं हसकल ह्रीं।

(ख) लकस ह्रीं ऐं सहकल ह्रीं हससहक ह्रीं।

(७) मधुमति विद्या -

(क) कहलस ह्रीं कहयल ह्रीं कससल ह्रीं

(८) स्वप्नावती विद्या -

हकलस ह्रीं हकहल ह्रीं हसकल ह्रीं।

(९) एकादश कूट -

कामराज विद्या व सुभगा विद्या के ३-३ कूट के साथ पञ्चमी विद्या के ५ कूट।

क ५ + ह ४ + सकलह्रीं, हसकलह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, कएईल ह्रीं, हसहलह्रीं, कहसल ह्रीं, हकलस ह्रीं।

अष्टादशाक्षर - **ऐं एं ईकल ह्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं सौः सकल ह्रीं। (हिन्दी तन्त्रसारे)**

इस मन्त्र के अन्त में हंसः बीज का योग करने से २० अक्षर का मन्त्र बनता है।

॥ अथ बीजावलिषोडशी मंत्र भेदा:॥

(तन्त्रसारे)

(१) बीजावलिषोडशी - श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं।

यह १५ अक्षर का यह मंत्र षोड़शी का ''रुद्रयामल'' में कहा है।

(२) पूर्णषोडशी (ब्रह्मयामले) - **श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं।**

(३) गुह्यषोडशी - ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं सौः क्लीं ऐं हसकहल ह्रीं हसकहल ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं।

(४) महाषोड़शी - ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्त्रीं ऐं क्रों क्रीं ईं हूं।

यह विद्या सभी आम्नायों में पूजिता है। इस मंत्र के जानने से मृत्यु पराजित होती है। (सिद्धयामले)

(५) रुद्रयामलोक्त - हसकलह ह्रीं सहकहल ह्रीं सकल ह्रीं।

(६) चिद् बह्मयैक्यमयी षोड़शी मन्त्राः

(१) क अ ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।

(२) सप्तदशाक्षर - **हसकलह ह्रीं सहकहल ह्रीं सकलह ह्रीं।**

ये दोनों मंत्र साक्षात् ज्ञान स्वरूप है।

(३) हसकल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं हंसः।

इस मंत्र से शिव तुल्य बल पाकर अष्टसिद्धि को प्राप्त करता है।

(७) अष्टादशाक्षरी -

(१) ऐं हसकल ह्रीं, क्लीं हसकहल ह्रीं, सौः सकल ह्रीं।

पहले लोपामुद्रा मंत्र के ९ लाख जप कर पश्चात् इस मंत्र का जप करे अन्यथा देवी शाप दे देती है। यह विद्या सर्वमंगलमयी है।

(२) ऐं क ए ई ल ह्रीं ह्रीं हसकहल ह्रीं श्रीं सकल ह्रीं।

यह विद्या भोग एवं मोक्ष की दायिनी है।

(८) परमाविद्या - ॐ ऐं क्लीं सौः कएलह ह्रीं सौः क्लीं ऐं सौः ऐं क्लीं सौः हसकल ह्रीं सौः क्लीं ऐं औः ऐं क्लीं सौः सकलहल ह्रीं हसौः क्लीं ऐं औंः।

इस मंत्र के १ लाख जप करने से सर्व कार्य सिद्ध होवे। साधक शिवतुल्य हो जाता है।

(९) त्रिपुर मालिनी - ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं सौः सकल ह्रीं। (योगिनि जालंधरे)

इस मंत्र के ९ लाख जप का पुरश्चरण होता है।

(१०) **कुलोड्डीश तंत्र** में लिखा है कि **श्रीं, सौः, ऐं, ह्रीं, ॐ, क्लीं, इन छः** बीजों को पूर्वोक्त सुंदरी मंत्रों के पहले योग करने से ६ प्रकार के मंत्र बनते है।

(११) **(कुलोड्डीश तंत्र) क्लीं ह्रीं श्रीं, ह्रीं श्रीं क्लीं, श्रीं ह्रीं क्लीं।** ये तीनों क्रमशः कामराज मंत्र और लोपामुद्रा मंत्र के पहले लगाने से तीन प्रकार के अष्टदशाक्षर मंत्र बनते है। आचार्य ने लिखा है कि "**क्लीं ऐं श्रीं**" ये तीन बीज कामराज और लोपामुद्रा मंत्र के पहले लगाकर मंत्रोद्धार करे।

(१२) **शक्तिकामराज मंत्र**- "**ईएकलह्रीं**" इस वाग्भव कूट को कामराजकूट **(हसकहलह्रीं)** और शक्तिकूट **(सकल ह्रीं)** का योग करने पर सुन्दरी मंत्र बनता है।

(१३) इसमें भी "**श्रीं सौः ऐं ह्रीं ॐ क्लीं**" इन छः बीजों का योग करने से ६ प्रकार के और **क्लीं ह्रीं श्रीं, ह्रीं श्रीं क्लीं, श्रीं ह्रीं क्लीं** इनका योग करने से तीन प्रकार के मंत्र बनते है।

(१४) **एईकल ह्रीं** इस वाग्भव कूट को कामराज कूट एवं शक्तिकूट के साथ मिलाने से- **एईकल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।**

(१५) कूटत्रय के प्रथम कूट में "**ॐ**" लगाने से **सुन्दरी**। द्वितीय कूट के पहले "**ॐ**" लगाने से **ब्रह्मसुन्दरी**। तृतीय शक्ति कूट के पहले "**ॐ**" लगाने से **अनन्तसुंदरी** मंत्र होता है।

(१६) त्रिकूट के अंत में "**हंसः**" बीज जोड़ने से - **कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं हंसः।** यह मंत्र दुःख दारिद्रय से छुटकारा दिलाता है। (हिन्दी तन्त्रसार में **कएईकल ह्रीं** लिखा है)

(१७) **पश्चिमाम्नाय में शक्तिलोपामुद्रा मंत्र - सहकल ह्रीं हसकल ह्रीं सकल ह्रीं।**

(१८) **लोपामुद्रा का अन्य मंत्र - हससकल ह्रीं हसकल ह्रीं सकल ह्रीं।**

(१९) **मंत्रान्तर नवाक्षर - हसह्रीं कह ह्रीं सह ह्रीं।** (यह रुद्र शक्ति मन्त्र शिव के पूर्व मुख से उद्भव हुआ)

(२०) एकादशाक्षरी - कल ह्रीं कहल ह्रीं सकल ह्रीं।

यह मंत्र सभी अभीष्ट सिद्धि प्रदान करता है।

(२१) कहक्षमल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।

(२२) सहक्षमल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।

(२३) हक्षमल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।

॥ त्रिपुरा (षोडशी) मंत्र भेदा:॥

(१) श्रीं ह्रीं सौः त्रिपुरे। (२) ऐं क्लीं सौः भैरवि। (३) ॐ ह्रीं सौः हिंगुले।

(४) श्रीं ह्रीं ॐ चण्डिके। (५) हसकहल ह्रीं चामुण्डे। (६) सकल ह्रीं श्रीं नारसिंहि।

(७) ॐ ह्रीं क्लीं ऐन्द्रि (८) क्लीं ह्रीं श्रीं देवि हैमवतीश्वरि। (९) श्रीं ह्रीं क्लीं मृडानि।

(१०) ऐं वारुणि। (११) कएईल ह्रीं दुर्गे।

(१२) श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहसल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्री महात्रिपुरसुन्दरि।

(देवी रहस्ये)

॥ खेचरी विद्या मंत्र ॥

इस विद्या की उपासना से शीघ्र गमन सिद्धि प्राप्त होती है। थकान प्राप्त नहीं होती है।

(१) मलह्रीं सौः खेचर्य्यै नमः।

(२) म्ल् ह्रीं सौः खेचर्य्यै नमः।

॥ ध्यानम् ॥

विनिन्द्रकमलोल्पलर्मुनिभिरर्चिताङ्घ्रिद्वयां सितां सितकराम्बुजां सितकरोज्ज्वलच्छेखराम् ।
रवीन्दुशिखिलोचनामभय पुस्तकौ विभ्रतीं स्मरामि हृदि खेचरीं भुवनमातरं सिद्धिदाम् ॥

॥ त्रिपुरसुन्दरी (लोपामुद्रा अन्य प्रकारा) मन्त्र:॥

लोपामुद्रा कथित यह मन्त्र प्रचलित लोपामुद्रा मन्त्र से भिन्न है।

महाकाल संहिता में इसका विस्तृत ध्यान मणिद्वीप, मण्डल, सिंहासन युक्त तथा भगवती के अङ्गाङ्ग का विशेष वर्णन है।

त्रिपुर सुन्दरीं देवीं बालार्क किरणारुणाम् । किंचिदर्द्धेन्दु कुटिल ललाट मृदुपट्टिकाम् ॥१॥
पिनाकधनुराकार सुभ्रुवं परमेश्वरीम् । आनन्दमुदितोल्लोल लीलान्दोलितलोचनाम् ॥२॥
स्फुरन्मयूख संघात विलसद्धेम कुण्डलाम् । स्वगण्डमण्डला भोगजितेन्द्वमृत मण्डलाम् ॥३॥
विश्वकर्मादि निर्माणसूत्र सुस्पष्ट नासिकाम् । ताम्रविद्रुम बिम्बाभरक्तोष्ठीममृतोपमाम् ॥४॥
दाडिमी बीजपंक्त्याभ दन्तपंक्ति विराजिताम् । स्मितमाधुर्य विजित माधुर्यरस सागराम् ॥५॥
अनौपम्य गुणोपेत चिबुकोद्देश शोभिताम् । कम्बुग्रीवां महादेवीं मृणाललिलितैर्भुजैः ॥६॥

रक्तोपलदलाकार सुकुमार कराम्बुजाम् । कराम्बुज नख ज्योतिर्विद्योतित नभस्थलाम् ॥७॥
मुक्ताहार लतोपेत समुन्नत पयोधराम् । त्रिवली वलिनायुक्त मध्यदेशोप शोभितम् ॥८॥
लावण्य सरिदावर्त्ताकार नाभि विभूषिताम् । अनर्घ्यरत्नघटित काञ्चीयुक्त नितम्बिनीम् ॥९॥
नितम्बविम्बद्विरद रोमराजि वरांकुशाम् । कदली ललितस्तंभ सुकुमारोरुमीश्वरीम् ॥१०॥
लावण्य कदलीतुल्य जंघायुगल मण्डिताम् । गूढगुल्फ पदद्वन्द्व प्रपदाजित कच्छपाम् ॥११॥
ब्रह्म विष्णु शिरोरत्न निघृष्टचरणाम्बुजाम् । तनुदीर्घाङ्गुली भास्वन्नखचन्द्र विराजिताम् ॥१२॥
शीतांशु शतसंकाशकान्ति - संतानहासिनीम् । लोहित्यजितसिन्दूर जवा दाडिमरागिणीम् ॥१३॥
रक्तवस्त्र परीधानां च रक्ताभरण मण्डिताम् । चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च पञ्चवाण धनुर्द्धराम् ॥१४॥
सर्वशृंगार वेषाढ्यां सर्वालङ्कारभूषिताम् । जगदाह्लाद जननीं जगद्रञ्जनकारिणीम् ॥१४॥

मन्त्र - भहलह्रीं भहहलह्रीं कलह्रीं।

॥ पञ्चमी मंत्रा : ॥

(१) **कएईल ह्रीं** - वाग्भवकूट।

(२) **हसकल ह्रीं** - कामराजप्रथम कूट।

(३) **हकहल ह्रीं** - कामराज द्वितीयकूट। (स्वप्नावती मन्त्र)

(४) **कहयल ह्रीं** यह कामराज का तृतीय एवं मधुमती मंत्र का मध्य कूट है।

(५) **हलस ह्रीं** - इसे शक्ति कूट कहते है। इन पांचों कूटों के योग पञ्चमी विद्या होती है।

कुलोड्डीश तंत्र के अनुसार- **कएईल ह्रीं हसकल ह्रीं हकयल ह्रीं (कहयल ह्रीं) कहसल** (हकहल) **ह्रीं हकलस** (हलस) **ह्रीं**। यह मंत्र हुआ। यह पंचमी विद्या त्रिभुवन में सौभाग्य दायिनी है। परन्तु इस मंत्र में उपरोक्त ५ कूटों से ३ कूट भिन्न है।

द्वितीय प्रकार की पंचमी विद्या -**जीव (स) प्राण (इ) मादन (क) इन्द्रबीज (ल) माया (ह्रीं) से पांचवा कूट "स इ क ल ह्रीं"** हुआ।

परन्तु तंत्रसार में मंत्र के प्रारूप में "**इ**" की जगह "**ह**" लिखकर मंत्र का प्रारूप इस तरह से दिया है - **कएईल ह्रीं हसकल ह्रीं हकहलह्रीं कहयल ह्रीं सहकल ह्रीं।**

शक्तिकूट दो प्रकार के है। अत: पूर्वोक्त क्रम से पंचमी विद्या के दो रूप होते है। इस पंचमी के वाग्भव कूट के स्थान पर प्रथम लोपामुद्रा के वाग्भव कूट को रखे फिर पूर्ववत् कामराज के तीनों कूट एवं शक्ति कूट की योजना करे। इस प्रकार से द्विविध पंचमी के २-२ करके चार रूप होते है। पहले के पंचमी के दो रूपों के वाग्भवकूट के स्थान में यदि शक्तिकामराज कूट के ई कारादिकूट या एकारादि कूट की योजना करे तो दो और रूप होकर पंचमी के आठरूप होते है। यह शत्रुनाशिनी, सिद्धिदायिनी, और सभी दोषों से रहिता है।

यामल में लिखा है कि पंचमी विद्या के दो रूप है। पांचकूटों में पांच पांच अक्षर लेकर एक रूप पंचकूटा है। उसके मध्य में तृतीय कूट के साथ स्वप्रावती नामक षडक्षर कूट (**हसकहल ह्रीं**) की योजना करे।

इस प्रकार पंचमी विद्या पच्चीस अक्षरों की होती है - **कएईल ह्रीं हसकल ह्रीं हसकहल ह्रीं कहयल ह्रीं सकल ह्रीं।** अगर इसके वाग्भवकूट के स्थान पर लोपामुद्रा का वाग्भव कूट ईकारादि या एकारादिकूट की योजना करे तो यह पंचमी चाररूपों वाली होती है।

पूर्वोक्त आठ और इन चारों रूपों के त्रिकूटात्मक कामराज कूट के तृतीय कूट में ''**कहहल ह्रीं**'' इन पांच बाणों की योजन करने से आठरूपों के आठ प्रकार और चार प्रकार होकर पंचमी चौबीस रूपों वाली होती है। तत्वबोध के अनुसार- ''**कहसल ह्रीं**'' यह कूट अति दुर्लभ है। उक्त विद्या भी पूर्ववत् आठ रूपों की है। पंचमी चार रूपों की है। अतः पंचमी विद्या के छत्तीस रूप होते है।

श्री क्रम में लिखा है कि हे देवि श्री क्रमोक्त सभी विद्याओं का प्राण सुनो। ''**श्रीं ह्रीं हंसः**'' इस मंत्र को वाग्भव कूट के पहले और ''**हंसः ह्रीं श्रीं**'' इस मंत्र को शक्ति कूट के अंत में लगाकर सात बार जप करे। ऐसा निर्देश दीपनी विद्या में हैं।

पंचमी विद्या के वाग्भव कूट के पहले **श्री बीज, माया बीज और हंसः बीज** लगावें, शक्ति कूट के अंत में हंस बीज, माया बीज और श्री बीज जोड़े तथा कामराज कूट के कूटत्रय में कामबीज लगावे अर्थात् पंचमी विद्या के वाग्भव कूट के पहले **श्रीं ह्रीं हंसः** का उच्चारण कर वाग्भव कूट का जप करे। फिर काम बीज ''**क्लीं**'' का जप कर कामराज के प्रथम कूट का जप करे। श्री बीज ''**श्रीं**'' का जप कर कामराज कूट के द्वितीय कूट का जप करे। माया बीज ''**ह्रीं**'' का जप कर कामराज के तृतीय कूट का जप करे। फिर शक्तिकूट का जप कर ''**हंसः ह्रीं श्रीं**'' का जप करे। जप के पूर्व सात बार जप करे। आदि में ''**ह्रीं**'' लगाकर मधुमती मंत्र का जप करने से सर्वाभीष्ट सिद्ध होते है।

॥ पारिभाषिकी षोडशी मंत्र ॥

ज्ञानार्णव में लिखा है कि कामराज, लोपामुद्रा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र, कुबेर, सूर्य, चन्द्र, मनु, अगस्त्य, नंदि, दुर्वासा पूजिता इत्यादि १२ मंत्रों में से प्रत्येक के आदि में ''**ह्रीं श्रीं**'' का योग करने से जो मंत्र बनते हैं वे सब मंत्र ''**पारिभाषिक षोडशी**'' मंत्र कहलाते है।

सभी मंत्र साक्षात् ब्रह्म स्वरूप हैं। इन दो बीजों के योग से भी त्रिकूट मंत्र पंचकूट, सभी वैष्णवी मंत्र अष्टकूट और चतुष्कूट, शंकर मंत्र षट्कूट बन जाते है। पूर्वोक्त सभी मंत्रों के आदि में ''**ॐ ह्रीं श्रीं**'' इन तीन बीजों का योग करने से पूर्वोक्त कहे मंत्रों में एक कूट की और वृद्धि हो जाती है। जैसे शिव मंत्र सप्त कूट हो जायेगा।

॥ महाषोडशी मंत्र ॥

बाला मंत्र - ''**ऐं क्लीं सौः**'' के मध्य बीज ''**क्लीं**'' को पहले लिखने से ''**क्लीं ऐं सौः**'' मंत्र बनता है। इसके साथ ''**श्रीं ह्रीं**'' का योग करने से ''**श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः**'' पंच बीजाक्षर मंत्र बनता है।

कामराज व लोपामुद्रा आदि के ३ कूट के मंत्र है। इनके साथ ''**ॐ ह्रीं श्रीं**'' या ''**ऐं क्लीं सौः**'' का संयोग करने से मंत्र षट् कूट मंत्र कहलाता है। इनके साथ पञ्च बीजों को अनुलोम विलोम करने से सोलह अक्षर मन्त्र हुआ। उक्त भेद में ''**कएईल ह्रीं**'' इत्यादि एक एक कूट को एक एक अक्षर मानकर सोलह अक्षर का मन्त्र माना है।

महाषोडशी मंत्र - माया तंत्र में लिखा है कि लक्ष्मीबीज (श्रीं) माया बीज (ह्रीं) कामबीज (क्लीं) वाग्भवबीज (ऐं) शक्तिबीज (सौः) प्रणव (ॐ) मायाबीज और श्री बीज के बाद कामराज पूजित विद्या फिर पुनः पूर्व के ५ बीजों को विपरीत भाव से पुटित करे। इस प्रकार से षोड़शी के मंत्र राज का उद्धार होता है।

अत: मंत्र – श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।

तंत्र में जहां कहीं के पुटित का उल्लेख है वहां बीजाक्षरों को अनुलोम एवं अन्त में विलोम क्रम से पुटित करे। योगिनी तंत्र में स्पष्ट लिखा है।

श्री बीज मायास्मर योनि शक्तिस्तारं च माया कमलापि विद्या ।
शक्त्यादि बीजैश्च विलोमतः सा श्री षोडशीयं च शिव प्रदिष्टा ॥

इसी प्रकार अनुलोम विलोम पुटित के लिये दक्षिणामूर्ति संहिता, नवरत्नेश्वर, श्रीक्रम संहिता, श्रुति, त्रैपुरी श्रुति, कुलामृत, यामल एवं निबंध ग्रंथ में उपरोक्त क्रम का ही उल्लेख है।

मन्त्र के आदि में ''**ह्रीं**'' लगाने से भुवन सुन्दरी ''**श्रीं**'' लगाने से कमल सुन्दरी, ''**क्लीं**'' लगाने से काम सुन्दरी, ''**ऐं**'' लगाने से वाक् सुन्दरी, ''**सौः**'' लगाने से शक्ति सुन्दरी ''ॐ'' लगाने से तार सुन्दरी मन्त्र बनता है।

योगिनी तन्त्र में ''**श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ कएईल ह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रींश्रीं**'' षोडशी मन्त्र है।

॥ दैन्यभेदिनी विद्या ॥

मंत्र – ॐ श्रीं ऐं यं रं लं वं दुर्गतारिण्यै दैन्यभेदिन्यै स्वाहा।

विधानम् – व्यक्ति संकटग्रस्त होकर तिरस्कार का एवं निर्धनता का जीवन यापन कर रहा हो तो उसे १० हजार जप कर पश्चात् होम करे तथा नित्य एक माला जप करे तो संकटमुक्त होवे।

॥ हृल्लेखा रहस्य विद्या ॥

इस रहस्य विद्या की उपासना अगस्त्य मुनि की पत्नि लोपामुद्रा ने की थी। श्री शंकराचार्य ने सौंदर्यलहरी में इसका अच्छा वर्णन किया है।

शिवः शक्तिः काम क्षितिरथ रविः शीतकरणः स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः ।
अमी हृल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिता, भजन्ते वर्णास्ते जनने तव नामावयवताम् ॥

प्रपञ्चसार तंत्र में भी लिखा है–

इति संलीनसूर्यांशे ग्रहषट्के तु षड्गुणाः। हृल्लेखेयं तथा मंत्रः स्मर्यतो स्मृतिकोविदैः ॥

इस तरह तीन तरह के मंत्र प्राप्त होते है।

(१) ॐ ह श क ल ह्रीं स्वाहा।
(२) ॐ ह स क ह क्लीं स्वाहा।
(३) ॐ ल व क ल ह्रीं स्वाहा।

प्रथम मंत्र का ध्यान मूलाधार चक्र में, दूसरे मंत्र का ध्यान नाभि से हृदय पर्यन्त, तीसरे मंत्र का ध्यान भृकुटी से ब्रह्मरंध्र तक करे।

॥ भोगदा विद्या ॥

यह विद्या हृल्लेखा विद्या से संबंधित है। सौंदर्यलहरी में इसके कूटाक्षरों का वर्णन है।

स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रित्यमिदमादौ तवमनौ, निधायैके नित्ये नित्यधिमहाभोगरसिकाः ।

भजन्ति त्वां चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः, शिवाग्नौ जुह्वन्तः सुरभिघृतधाराहुति शतैः ॥

मन्त्र - १. ॐ ह श क ल क्लीं महाभोगवति भोगिनि भोगदे स्वाहा

२. ॐ ह स क ल ऐं महाभोगवति भोगिनि भोगदे स्वाहा।

३. ॐ स व क ल श्रीं महाभोगवति भोगिनिभोगदे स्वाहा।

कृष्णा या कपिला गाय के घी से १०८ बार नित्य होम करे तो वैभवशाली योग बने।

॥ सिद्धलक्ष्मी रत्नेश्वरी॥

त्रिपुरसुंदरी श्री पंचरत्नविद्या में सिद्ध लक्ष्मी का स्थान प्रथम है। इसका प्रयोग शत्रुनाश कर वैभव प्रदान करता है।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फ्रें ख्फ्रें ऐं क्षमरीं महाचण्डतेजः सङ्कर्षिणि कालिमन्धाने ह्रीं सा स्वाहा। खफ्रें ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धियोगिनि हसखफ्रे ह्रीं श्रीं नित्योदितये सकलकुलचक्रनायिकायै भगवत्यै चण्डकपालिन्यै ह्रीं श्रीं हूं ख्फ्रें ह्रीं हूं हफ्रें क्ष्रैं क्रों क्लीं सः खफवयरें परमहंसि निर्वाणमार्गदे देवि विषयोपप्लव प्रशमनि सकलदुरितारिष्ट क्लेशदमनि सर्वापदंभोधितारिणि सकलशत्रुप्रमथिनि देवि आगच्छ आगच्छ हस हस वल वल नररुधिरान्त्रवसा भक्षिणि मम शत्रून् मर्दय २ खाहि २ त्रिशूलेन भिन्धि २ छिन्दि २ खड्गेन ताड़य २ छेदय २ व द क व ल ह्रीं हसक्षमलवरयूं हसक्षमलवरयीं मम सकलमनोरथान् साधय २ परमकारुणिके देवि भगवति महाभैरवरूपधारिणि त्रिदशवरनमिते महामंत्रमातः प्रणतजनवत्सले देवि महातिकाघनाशिनि ह्रीं प्रसीद मदनातुरां कुरु कुरु सुरासुरकन्यकां ह्रीं श्रीं क्रों फट् ठः ठः सहखफ्रें फ्रें फ्रें महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासन संस्थित सर्वसौभाग्यजननी श्री श्रीसिद्धमहालक्ष्मी देव्यै नमो नमः।

॥ दीपनीविद्या मंत्राः॥

१. **ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं** इस पंचाक्षर मंत्र का जप कर वाग्भवकूट (श्री विद्या का प्रथम कूट - **क ए ई ल ह्रीं**) का उच्चारण करे।

२. **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं** इस मंत्र का जप कर कामराज कूट (**हसकहल ह्रीं**) का जप करने से त्रिभुवन को क्षुब्ध किया जा सकता है।

३. स्वप्रावती मंत्र (त्रिपुरसुंदरी का स्वप्रावती मंत्र) के पहले **ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं** इस मंत्र का जप कर कार्य करे।

४. **ॐ ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं** इस मंत्र का जप कर मधुमती मंत्र (देखिये त्रिपुरसुंदरी के मंत्रों में) का जप करे।

५. **हंसः ॐ ह्रीं श्रीं हूं हंसः** इस मंत्र का पहले जप कर शक्ति कूट **सकलह्रीं** का जप करें। इस सारे मंत्र का नाम **''दीपनी विद्या'' है।** यही मंत्र समस्त विद्या का प्राण स्वरूप है। इसका केवल जप न करे। उक्त समस्त मंत्रों के साथ योग कर इसका जप करे। उक्त मंत्र के जप के पहले व अंत में सात बार जप करे। कामराजकूट, वाग्भवकूट, और शक्तिकूट इनके भी दीपनी मंत्र का जप करे। वाग्भव और शक्तिकूट का दीपनी मंत्र पूर्व में कही व उक्त पंचमी संबंधी दीपनी मंत्र के समान है।

कामराज कूट का दीपनी मंत्र -

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं। इस विषय में योगिनी हृदय में लिखा है कि स्वर व्यञ्जन भेद से उक्त विद्या समूह सैंतीस प्रकार का है। इनमें छत्तीस प्रकार छत्तीस स्वरूप है। इस विद्या का निरंतर छत्तीस तत्वों के परे ध्यान करे। क्लीव

स्वर को छोड़कर अकारादि स्वर व्यञ्जन वर्ण के बोधक दस है। एकादश स्वर अनुस्वार यावतीय विद्याओं के प्राण तुल्य है।

॥ अङ्गभूत विद्या मन्त्राः॥

त्रिपुरा की उपाङ्ग विद्यायें - बाला, अन्नपूर्णा एवं अश्वारूढा (वार्ताली, वाराही) है। वाराही दण्डिनी शक्ति है तथा **मातंगी मन्त्रिणी शक्ति** है। वाराही तथा बगलामुखी को भी अंगीभूत विद्या माना है। अतः बगलामुखी भी दण्डिनी शक्ति है।

बाला मन्त्र - ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं ऐं क्लीं सौः।

अन्नपूर्णा मन्त्र - ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमोभगवति अन्नपूर्णेश्वरि ममाभिलषिमन्नं देहि स्वाहा।

वाराहीवार्ताली (अश्वारूढ़ा) मन्त्र - ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा।

ये सभी कालनित्यायें है।

मूर्ति कल्पनम् - ऐं ग्लौं लृं षां ई वाराहमूर्तये ठः ठः ठः ठः हुं फट् ग्लौं ऐं। इतिमूर्तिकरिण्या विद्ययाचक्रे देव्या मूर्ति संकल्प्य।

॥ ध्यानम् ॥

पाथोरुहपीठगतां पाथोधरमेचकां कुटिलदंष्ट्राम् । कपिलाक्षित्रितयां घनकुचकुम्भां प्रणतवांछित वदान्याम् ॥

दक्षोर्ध्वतोऽरिखड्गौ मुसलमभीतिं तदन्यतस्तद्वत् । शङ्खं खेटहलवरान् करैर्दधानां स्मरामि वार्तालीम् ॥

॥ इति ॥

॥ अथ श्रीविद्या सर्वस्वभूता षडाम्नाय मन्त्राः॥

॥ अथ पूर्वाम्नाय मन्त्राः॥

तत्र त्रैलोक्य मोहन सर्वाशापरिपूरक सर्वसंक्षोभणाख्ये सृष्टिचक्रेपूर्वाम्नाय देवतां मुक्तातपत्रच्छायायामुविष्टां पद्मरागारुणां मुक्ताभरण वस्त्रमालानुलेपनां पाशाङ्कुश वराभयकरा रक्तमुकुटार्पित चन्द्रलेखां ध्यात्वा।

॥ गुरुमण्डलम्॥

१. गुरु – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिव सोहं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः, सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिव सोहं स्वरूपनिरूपण हेतवे श्रीगुरवे नमः। अमुकानन्द श्री. पा. पू. त. नमः।

२. परमगुरु – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सोहं हंसः शिव ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः, सहक्षमलवरयीं स्हौं हंसः शिवः सोहं हंसशिवः स्वच्छप्रकाशविमर्श हेतवे श्रीपरमगगुरुवे नमः।

३. परमेष्ठिगुरु – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं हंसः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वात्मारामपञ्जर विलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठि गुरवे नमः।

४. गणपति – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

५. पीठत्रयं – (क) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अं आं सौः कामगिरिपीठ ब्रह्मात्मशक्त्यै नमः।

(ख) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः पूर्णगिरिपीठ विष्णवात्मकशक्त्यै नमः।

(ग) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं ऐं जालन्धरपीठ रुद्रात्मशक्त्यै नमः।

॥ देवताः॥

१. शुद्धविद्याम्बा – ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ईं औः।

२. बालासुन्दरी – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं।

३. द्वादशार्धाम्बा – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः।

४. मातंगी मन्त्राः –

(क) हसन्ती श्यामा मातङ्गी – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके ममभयविघ्नापदं नाशं कुरु कुरु ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

(ख) राजश्यामलाम्बा मातङ्गी – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातंगीश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुख रंजिनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि त्रैलोक्यं मे वशमानय स्वाहा। सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं।

(ग) शुकश्यामलाम्बा मातङ्गी – ॐ नमो भगवते महाशुकाय त्रिभुवनालङ्काराय राजमदमर्दनाय शीघ्रं राजानं मे वशमानय स्वाहा।

(घ) शारिका मातङ्गी – ॐ ऐं ॐ नमो भगवति शां शारिके सकलकलाकोविदे विद्यां बोधय बोधय स्वाहा।

(ङ) वीणाश्यामलाम्बा मातङ्गी – ॐ नमो भगवत्यै वीं वीणायै मम संगीतविद्यां प्रयच्छ स्वाहा।

(च) वेणुश्यामलाम्बा मातङ्गी – ॐ नमो भगवते व्यं वेणवे मम साहित्यविद्यां प्रयच्छ स्वाहा।

(छ) लघुश्यामा मातङ्गी – ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातंगी सर्वजनवशंकरी स्वाहा।

५. गायत्री – ॐ भू र्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

६. गणपति मन्त्राः –

(क) क्षिप्रगणपति – ॐ श्रीं ह्रीं ग्लौं गणपतये सर्वकार्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

(ख) सिद्धगणपति – ॐ श्रीं ह्रीं सर्वकार्यविघ्नप्रशमनाय सर्वराजवश्यकराय सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणाय सर्वलोक वशीकरणाय आं ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा।

(ग) नवनीतगणपति – ॐ ग्लौं नवनीत गणपतये सर्वजनान् मे वशमानय स्वाहा।

(घ) शक्तिगणपति – ॐ श्रीं ह्री क्लीं ग्लौं ऐं वदवद वाग्वादिनी शक्ति गणपतये गीं भगवति स्वाहा।

(ङ) उच्छिष्टगणपति – ॐ हस्तिमुखाय लंबोदराय उच्छिष्टाय महात्मने आं क्रों ह्रीं क्लीं ग्लौं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा।

(च) एकाक्षरी गणपति – ॐ गं ॐ।

७. कार्तिकेय मन्त्रा –

(क) कुमार – ॐ ऐं क्षं क्षं कुमाराय नमः।

(ख) सुब्रह्मण्य – ॐ ह्रीं श्रीं सं सुब्रह्मण्याय वैरिधैर्य चलय चलय स्वाहा।

(ग) स्कन्द – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौः स्कंदाय नमः।

८. मृत्युञ्जय मनुः –

(क) ॐ हौं जूं सः।

(ख) ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

९. नीलकण्ठ मनुः – ॐ फ्रों त्रीं ठः।

१०. जातवेदो मनुः – ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा।

११. प्रत्यङ्गिरा मनुः –

****

(क) ब्राह्मी प्रत्यङ्गिरा – ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ नमः कृष्णवसने सिंहवदने महाभैरवि ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे क्ष्म्रों। ॐ नमो नारायणाय घृणिसर्य आदित्योम्। सहस्त्रार हुं फट्। अव ब्रह्मद्विषो जहि।

(ख) नारायणी प्रत्यङ्गिरा – ॐ ह्रीं खें फ्रें भक्षज्वालाजिह्वे करालवदने कालरात्रि प्रत्यङ्गिरे क्षों क्ष्म्रों ह्रीं नमस्तुभ्यं हन हन मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्षय भक्षय हुं फट् स्वाहा।

(ग) रौद्री प्रत्यङ्गिरा – श्रीं ह्रीं ॐ नमः कृष्णवसने विश्वसहस्त्रहिंसनि सहस्त्रवदने कालरात्रि प्रत्यङ्गिरे परसैन्य परकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनी सर्वभूतदमनि सर्वदेवान् बंध बंध सर्वविद्यां छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परतन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीं नमः।

(घ) उग्रकृत्या प्रत्यङ्गिरा – ह्रीं यां कल्पयन्ति नोऽरय क्रूरां कृत्यां वधूमिव। तां ब्रह्मणाप निर्णुद्म प्रत्यक् कर्तारमिच्छतु ॥

(ङ) अथर्वण भद्रकाली प्रत्यङ्गिरा – ऐं ह्रीं श्रीं ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालदंष्ट्रे प्रत्यंगिरे क्षीं ह्रीं हुं फट्।

१२. ब्रह्म – ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्। अकाररूपायै सृष्टिकर्त्रै ब्रह्मणे नमः।

१३. उन्मोदिनी – ह्स्त्रैं ह्स्क्लीं ह्सौः पूर्वाम्नाय समयविद्येश्वर्युन्मोदिनी देव्याम्बाय नमः।

१४. मूलमन्त्र – गुरुत्रयगणपति पीठत्रय सहितायै शुद्धविद्यादि समयविद्येश्वरि पर्यन्त चतुर्विंशति सहस्त्र देवता परिसेवितायै कामगिरिपीठास्थितायै पूर्वाम्नाय समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी पादुकां पूजयामि नमः।

॥ अथ दक्षिणाम्नाय मन्त्राः॥

चतुर्दशार द्विदशारात्मके स्थिति चक्रे दक्षिणाम्नाय देवतामुद्युत्सूर्य सहस्त्राभां नानालङ्कारभूषितां रक्तवस्त्रानुलेपनां वामाद्यूर्ध्वयोस्तदाद्यधःस्थोः करयोः पाशाङ्कुश पुस्तकाक्षमालाधरां ध्यात्वा-

॥ गुरुमण्डलम् ॥

१. भैरव

(सभी नाम मन्त्रों से पहले ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लगावें)

(क) फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं महामन्थान भैरवाय नमः।

(ख) फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं खचक्रभैरवाय नमः।

(ग) फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं फट्कारभैरवाय नमः।

(घ) फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं एकात्मानन्दभैरवाय नमः।

(ङ) फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं रविभक्षणभैरवाय नमः।

(च) फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं चण्डभैरवाय नमः।

(छ) फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं नभोनिर्मलभैरवाय नमः।

(ज) फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं डमरभास्करभैरवाय नमः।

२. सिद्धौघ -

(क) ह्रीं श्रीं सौः आं महादुर्मनाम्बा सिद्धाय नमः।

(ख) ह्रीं श्रीं सौः आं सुन्दर्यम्बा सिद्धाय नमः।

(ग) ह्रीं श्रीं सौः आं विश्वदलनाम्बा सिद्धाय नमः।

(घ) ह्रीं श्रीं सौः आं कपालिकाम्बा सिद्धाय नमः।

(ङ) ह्रीं श्रीं सौः आं बडवाम्बा सिद्धाय नमः।

(च) ह्रीं श्रीं सौः आं भीमाम्बा सिद्धाय नमः।

(छ) ह्रीं श्रीं सौः आं करालयम्बा सिद्धाय नमः।

(ज) ह्रीं श्रीं सौः आं खराननाम्बा सिद्धाय नमः।

(झ) ह्रीं श्रीं सौः आं शालिनाम्बा सिद्धाय नमः।

३. बटुकत्रयम् -

(क) ॐ ह्रीं श्रीं हुं फट् स्कन्द वटुकाय नमः।

(ख) ॐ ह्रीं श्रीं हुं फट् चित्रवटुकाय नमः।

(ग) ॐ ह्रीं श्रीं हुं फट् विरंचिवटुकाय नमः।

४. पदयुगं -

(क) हसकल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं प्रकाशानन्दनाथाय नमः।

(ख) हसकल हसकहल सकल ह्रीं विर्मशानन्दनाथाय नमः।

५. सौभाग्य विद्या - ऐं कएईल ह्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं सौः सकल ह्रीं।

६. बगलामनुः - ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

७. वाराहीमनु - ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्ताली वार्ताली वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अंधे अंधिनि नमः, रुन्धे रुन्धिनि नमः जंभे जंभिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तंभे स्तंभिनि नमः सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्त चक्षुर्मुख गति जिह्वा स्तंभनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्य ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं अस्त्राय फट्।

८. वटुकमनु - ॐ ह्रीं वं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वं वटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा।

९. तिरस्करिणीमनु - ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजन मनश्चक्षुः श्रोत्र तिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं।

१०. महामाया - ॐ ह्रीं ईं ॐ नमो भगवति महामाये मनोमये जगत् क्षोभिणि वरवरदे सर्वजनं मोहय मोहय ईं ह्रीं ॐ स्वाहा।

११. अघोरमनु - ह्रां ह्रीं हूं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः। हैं ह्रौं हः अघोराय स्वाहा। अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य स्वाहा।

कं कं हं क्षं सं हं ग्री ग्रीं प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष हं ह्रीं ह्रां सं हुं फट् स्वाहा।

१२. शरभ मनु - (१) ॐ नमो भगवते प्रलय कालाग्निरुद्राय दक्षाध्वरध्वंसकाय महाशरभाय मम शत्रुच्छेदनं कुरु कुरु स्वाहा।

(२) खें खां खं फट् प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट्। सर्वशत्रुसंहारकाय शरभ साल्वाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

१३. भेताल मनु - छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रैं छ्रौं छ्रः ऐं ह्रीं क्लीं झ्रां परेतभूतादिपतये महापिशाचकपालाय झ्रां झोटिंगदमनाय अधिपाय भो भो भेतालाय तुभ्यं नमस्स्वाहा। (पाठान्तर भेद से कही-कही भेताल के स्थान पर बेताल भी है)

१४. खड्गरावणमनु - ॐ ह्रीं क्लीं खं भूतेश ह्रीं ह्रां खड्गरावणाय नमः।

१५. वीरभद्रमनु - ॐ क्लीं ग्रीं वीरभद्र जय जय नमः स्वाहा।

१६. रौद्रमनु - ॐ नमो भगवते रुद्राय।

१७. शास्तृमनु - ॐ ह्रीं हरिहरपुत्राय पुत्रलाभाय शत्रुनाशाय मदगजवाहनाय महाशास्ते प्रत्यक्ष बेलायुधाय वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

१८. पाशुपतास्त्रमनु - ॐ श्लीं पशु हुं फट्।

१९. ब्रह्मास्त्रमनु - ॐ आं ह्लीं क्रों गलौं हुं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं बगलामुखि आवेशयावेशय आं ह्लीं क्रों बह्मास्त्ररूपिणि एह्येहि ह्लीं क्रों मम हृदये आवहावह संनिधिं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों मम हृदये सुखं चिरं तिष्ठ तिष्ठ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा।

२०. वायव्यास्त्रमनु - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आवायव्य या वायव्या व्यायवाया व्ययवाआ। और्वायव्य या वायव्या व्यायवायाव्यर्वा औं ॐ हन हन हुं फट् स्वाहा।

२१. भैरव मन्त्राः -

(क) ॐ नमो भगवते उग्रभैरवाय सर्वविघ्नान्नाशय हुं फट् स्वाहा।

(ख) ॐ ह्रीं आं अङ्गभैरवाय (देवदत्त) कोपशमनं कुरु कुरु स्वाहा।

(ग) हूं ह्रीं क्लीं अघोरभैरवाय (देवदत्त) मोहय मोहय स्वाहा।

(घ) ॐ नमो भगवते महाभीमभैरवाय लोकभयङ्कराय सर्वशत्रु संहारकाय हुं (देवदत्त) ध्वंसय ध्वंसय स्वाहा।

****

(ङ) वं रं ह्रूं ॐ नमो भगवते विजयभैरवाय सर्वशत्रु विनाशनाय विबुधवाहनाय नररुधिरमांस भक्षणाय (देवदत्त) उच्चाटयोच्चाटय हुं ताडय ताडय भस्मी कुरु स्वाहा।

(च) ह्रीं स्प्रं रक्त भैरवाय शव कपालमालालंकृताय नवाम्बुद श्यामाय एह्येहि शीघ्रं एहि मां पाहि एं ऐं आगामिकायै वद वद अखिलोपाधिं हर हर सौभाग्यं देहि मे स्वाहा।

(छ) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवते स्वर्णाकर्षणभैरवाय प्रणताभिष्ट परिपूरणाय एह्येहि करुणानिधे मह्यं हिरण्यं दापय दापय क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा।

२२. दक्षिणामूर्ति –

(क) ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा।

(ख) ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं श्रियं प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा।

(ग) कीर्तिदक्षिणामूर्ति – ॐ अः नमः शिवाय अः ॐ।

(घ) ज्ञानदक्षिणामूर्ति – ॐ ज्ञां नमश्चिन्मयमूर्तये ज्ञानं देहि स्वाहा।

(ङ) साम्बदक्षिणामूर्ति – ॐ श्रीं सौः श्रीसाम्बशिवाय तुभ्यं स्वाहा।

(च) वीरदक्षिणामूर्ति – ॐ ह्रीं ॐ दक्षिणामूर्तये सर्वसाध्यमेधां समुत्कर्षय स्वाहा।

(छ) संहारदक्षिणामूर्ति – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओंकार संहारमूर्तये नमः।

(ज) अपस्मार निवर्तक दक्षिणामूर्ति – नमो भगवते ॐ दक्षिणामूर्तये त्रिनेत्राय त्रिकालज्ञानाय सर्वशत्रुघ्नाय सर्वापस्मार विदारणाय दारय दारय भस्मीकुरु भस्मीकुरु एह्येहि हुं फट्।

२३. विष्णु – ऐं ह्रीं श्रीं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरतरेभ्यः सर्वभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः। उकाररूपाय स्थितिकर्त्रे विष्णवे नमः।

२४. भोगिनीदेव्यम्बा – ॐ ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले ह्सौः।

ऐं ह्रीं श्रीं मूलं भैरवाष्टकनव सिद्धौघ वटुक त्रय पदयुग सहितायै सौभाग्यविद्यादि समयविद्येश्वरी पर्यन्त त्रिंशत्सहस्त्र देवता परिसेवितायै पूर्णगिरिपीठ स्थितायै दक्षिणाम्नाय समष्टि रूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पादुका पूजयामि नमः।

॥ अथ पश्चिमाम्नाय मन्त्राः ॥

॥ ध्यानम् ॥

नवयोनिचक्रे सहस्त्राख्ये पश्चिमाम्नायाधि देवतां ,
पंचमुण्डासनां बालार्क सहस्त्रप्रभां मुण्डमालाधरां ।
रक्तवस्त्राभरणानुलेपनां वामाद्यूर्ध्वं तदाद्यधः ।
पाशाङ्कुशाभयवरकरां त्रिनेत्रां ध्यात्वा ॥

॥ गुरुमण्डलम् ॥

सभी नाममन्त्रों से पूर्व ''ऐं ह्रीं श्रीं'' पथा पश्चात् ''पादुकां पूजयामि तर्पयामि'' कहकर तर्पण करें।

॥ १. दूत्य ॥

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः योन्यम्बादूती श्री. पा. पू. त. नमः। अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः योनिसिद्धनाथाम्बादूती श्री. पा. पू. त. नमः। अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः महायोन्यम्बादूती श्री. पा. पू. त. नमः। अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः महायोनिसिद्धनाथाम्बादूती श्री. पा. पू. त. नमः। अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः दिव्ययोन्यम्बादूती श्री. पा. पू. त. नमः। अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः दिव्ययोनिसिद्धम्बादूती श्री. पा. पू. त. नमः। अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः शङ्खयोन्यम्बादूती श्री. पा. पू. त. नमः। अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः शङ्खयोनिसिद्धनाथाम्बादूती श्री. पा. पू. त. नमः। अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः पद्मयोन्यम्बादूती श्री. पा. पू. त. नमः। अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः पद्मयोनिसिद्धनाथाम्बादूती श्री. पा. पू. त. नमः।

॥ २. मण्डलम् ॥

ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः वह्निमण्डल श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः सूर्यमण्डल श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः सोममण्डल श्री. पा. पू. त. नमः।

॥ ३. वीरद्व्यष्टकम् ॥

ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें सृष्टिवीर भैरव श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें स्थितिवीर भैरव श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें संहारवीर भैरव श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें रक्तवीर भैरव श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें यमवीर भैरव श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें मृत्युवीर भैरव श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें भद्रवीर भैरव श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें परमार्कवीर भैरव श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें मार्तण्डवीर भैरव श्री. पा. पू. त. नमः। ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें कालाग्निरुद्रवीर भैरव श्री. पा. पू. त. नमः।

॥ ४. चतुःषष्टिसिद्धाः ॥

सभी नामों से पूर्व ''**ऐं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं**'' लगावें तथा पश्चात् **पादुका पूजयामि तर्पयामि** कहें।

ऐं श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं सौः श्रीं ह्रीं मङ्गलानाथ पादुका पूजयामि तर्पयामि।

चौण्डिकानाथ पा०, जेष्ठानाथ पा०, कन्तुकिनाथ पा०, पटहानाथ पा०। कूर्मानाथ पा०, धनदानाथ पा०, गन्धानाथ पा०, गगनानाथ पा०, मतङ्गानाथ पा०। चम्पकानाथ पा०, केवर्तानाथ पा०, मातङ्गमनानाथ पा०, सूर्यभक्षानाथ पा०, नभोभक्षानाथ पा०, स्त्रौतिकानाथ पा०, रूपिकानाथ पा०, दंष्ट्रानाथ पा०, धूम्राक्षानाथ पा०, ज्वालानाथ पा०, गन्धारानाथ पा०, गगनेश्वरानाथ पा०, मायानाथ पा०, महामायानाथ पा०, नित्यानाथ पा०, शांतानाथ पा०, विश्वानाथ पा०, कामानाथ पा०, उमानाथ पा०, श्रियानाथ पा०, सुभगानाथ पा०, विद्यानाथ पा०, महाविद्यानाथ पा०, अमृतनाथ पा०, चन्द्रानाथ पा०, अंतरिक्षानाथ पा०, सिद्धानाथ पा०, श्रद्धानाथ पा०, अनंतानाथ पा०, शम्बरानाथ पा०, उल्कानाथ पा०, त्रैलोक्यानाथ पा०, भीमानाथ पा०, राक्षसीनाथ पा०, मलिनानाथ पा०, प्रचण्डानाथ पा०, अनङ्गानाथ पा०, त्रिविधानाथ पा०, अनभिहितानाथ पा०, नन्दिनाथ पा०, महामनानाथ पा०, सुन्दरानाथ पा०, विश्वेश्वरानाथ पा०, कालानाथ पा०, महाकालानाथ पा०, अभयनाथ पा०, विकारानाथ पा०, महाविकरानाथ पा०, सर्वगानाथ पा०, सृगालानाथ पा०, पूतनानाथ पा०, शर्वरीनाथ पा०, व्योमानाथ पा०, पूर्णानाथ पादुका पूजयामि तर्पयामि।

॥ देवता ॥

१. लोपामुद्रामनु – हसकल ह्रीं, हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।

२. भुवनेश्वरीमनु - श्रीं ह्रीं श्रीं।

३. अन्नपूर्णामनु - ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवत्यन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा।

४. कामकला मनु - ऐं ह्रीं श्रीं अं आं.........लं क्षं ईं।

५. सुदर्शनमनु -

(क) ॐ सहस्त्रार हुं फट्।

(ख) श्रीं ह्रीं ॐ सुदर्शनचक्राय रिपुचित्तं भ्रामय स्वाहा।

६. महागरुड -

(क) ॐ क्षिं क्षिप स्वाहा।

(ख) ॐ नमो भगवते श्रीमन्महागरुडाय अमृतकोशोद्भवाय वज्रनख वज्रतुण्डपक्षालंकृत शरीराय श्रीमन्महागरुड विषं हुं फट् स्वाहा।

(ग) वं क्षं क्षिप स्वाहा।

७. कार्तवीर्यमनु - ॐ फ्रों छ्रीं क्लीं ब्लूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् स्वाहा। कार्तवीर्यार्जुनाय नमः।

८. नृसिंहमनु - ॐ क्ष्रों ईं हं उग्रं वीरं महविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् नृसिंह भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् हं इं क्ष्रौं ॐ।

९. नामत्रयमनु - ऐं ह्रीं श्रीं अच्युताय नमः। ऐं ह्रीं श्रीं अनंताय नमः। ऐं ह्रीं श्रीं गोविन्दाय नमः।

१०. राममन्त्राः -

(क) ॐ रां रामाय नमः।

(ख) ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं नित्यशुद्धबुद्धाय रामाय परब्रह्मणे नमः।

११. सीतामन्त्र - ॐ श्रीं सीतायै स्वाहा।

१२. गोपालमन्त्राः -

(क) क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।

(ख) ऐं ह्रीं श्रीं अन्नरूप रसरूप नमो नमः। अन्नाधिपतये ममान्नं प्रयच्छ स्वाहा।

(ग) ॐ क्लीं कृष्ण कृष्ण हरे कृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे। रामारमण विश्वेश विद्यामाशु प्रयच्छ मे क्लीं ॐ।

(घ) संतानगोपाल मन्त्र - क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण शरणागतवत्सल क्लीं॥

(ङ) गोपालमन्त्र - क्लीं कृष्ण क्लीं।

१३. सौरमनु - ॐ घृष्णिः (घृणिः) सूर्य आदित्य ॐ।

१४. धनवन्तरी मनु - ॐ नमो भगवते धनवन्तरये अमृतकलश हस्ताय सर्वामयविनाशनाय त्रिलोकनाथाय

विष्णवे स्वाहा।

१५. इन्द्रजालिमहामाया -

(क) ॐ ह्रीं ईं ॐ नमो भगवति महामाये मनोमये जगत् क्षोभिणि वर वरदे सर्वजनं मोहय मोहय ईं ह्रीं स्वाहा।

(ख) ऐं ह्रीं श्रीं वं सं झं जुं रं ह्रीं श्रीं मों भगवति चित्रविद्ये महामाये अमृतेश्वरि एह्येहि प्रसन्नवदने अमृतं प्लावय अनलं शीतलं कुरु कुरु सर्वविषं नाशय ज्वरं हनहन पैत्योन्मादं मोचय मोचय आज्योणं शमय शमय सर्वजनं मोहय मोहय मां पालय पालय मों श्रीं ह्रीं रं जुं झं सं वं श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा॥

१६. इन्द्रादिलोकपाल मन्त्राः -

(क) ॐ यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि मधवञ्छग्धि तव तन्न ऊतयो विद्विषो विमृधो जहि। लं इन्द्राय नमः।

(ख) ॐ रं इद्धादुलूक आपप्तु हिरण्याक्षो अधोमुखः रक्षसां दूत आगतः तमितो नाशयाग्ने। रं ॐ अग्नये नमः।

(ग) ॐ क्रों ह्रीं आं वैवस्ताय धर्मराजाय भक्तानुग्रहकृते नमः। ॐ यमाय नमः।

(घ) ॐ नमो विचित्राय धर्मलेखकाय यमवाहिकाधारिणे यमलवरयूं जन्म सम्पत् प्रलयं कथय स्वाहा। ॐ चित्रगुप्ताय नमः॥

(ङ) क्षं निर्ऋतये नमः।

(च) वं वरुणाय नमः।

(छ) यं वायवे नमः।

(ज) ॐ क्रीं यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा। ॐ कुबेराय नमः॥ ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः॥

(झ) ॐ हं ॐ नमो भगवते रुद्राय हं ॐ।

१७. इन्द्राक्षीमनु -

(क) ॐ ऐं घ्रीं ह्रीं हूं दुं लं श्रीं ईं इन्द्राक्षि रक्ष रक्ष मम शत्रून् दुःखग्रंथिं स्फोटय स्फोटय मम अरीन् भंजय भंजय मम रिपून मनोग्रंथिं शरीरग्रंथिं घातयघातय हुं फट् स्वाहा।

(ख) सर्ववादिनी इन्द्राक्षी - ॐ श्रीं छ्रां ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति इन्द्राक्षि भूतभविष्यद्वर्तमानकाल वादिनि प्रपञ्चकारिणि (अमुकं) मे कार्यं कथय सौः क्लीं ऐं छ्रां श्रीं ॐ स्वाहा।

१८. दत्तात्रेय मन्त्राः -

(क) आं ह्रीं क्रों ऐं क्लीं सौः श्रीं ग्लौं द्रां।

(ख) ॐ ह्रीं द्रां दत्तात्रेयाय द्रां ह्रीं ॐ।

(ग) ॐ ह्रीं द्रां दत्तात्रेय हरे कृष्ण उन्मत्तानन्द दायक दिगम्बरमुने बालपिशाच ज्ञानसागर द्रां ह्रीं ॐ।

१९. वासुदेव मन्त्र – ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

२०. नारायण मन्त्र – ॐ नमो नारायणाय।

२१. रुद्र मन्त्र – ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः। मकाररूपाय संहारकर्त्रे रुद्राय नमः॥

२२. कुब्जिका – ह्स्त्रैं ह्स्त्रीं ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं ह्स्ख्फ्रें अघोरमुखि छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे ह्स्त्रौः ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौः कुब्जिकायै नमः। पश्चिमाम्नाय समयविद्येश्वरी कुब्जिकादेव्याम्बा श्री पा. पू. त. नम.।

ऐं ह्रीं श्रीं दशदूती मण्डलत्रयवीर दशक चतुःषष्टि सिद्धनाथ सहितायै लोपामुद्रादि समयविद्येश्वरी पर्यन्त द्विसहस्र देता परिसेवितायै जालन्धरपीठ स्थितायै पश्चिमाम्नाय समष्टि रूपिण्यै श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः। श्री पा. पू. त. नम.।

॥ अथ उत्तराम्नाय मन्त्राः॥

समष्टिचक्रे उत्तराम्नाय देवतां कुब्जकाली पञ्चमुण्डासनां बन्धूककुसुमारुणां तादृश वस्त्राभरणानुलेपनां चन्द्रचूडां मुण्डमालाधरां त्रिनेत्रां वामोर्ध्वादितदधोऽन्तं पुस्तकाक्षमालां वराभयकरां ध्यात्वा–

नवमुद्राः– द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्रा। द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रा। क्लींसर्वाकर्षिणीमुद्रा। ब्लूं सर्ववशंकरी मुद्रा। सः सर्वोन्मादिनी मुद्रा। क्रों सर्वमहाङ्कुशा मुद्रा। ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरी मुद्रा। ह्सौः सर्वबीजाकर्षिणी मुद्रा। ऐं सर्वयोन्याकर्षिणी मुद्रा।

॥ वीरावली पञ्चक मनुः॥

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः लं ब्रह्मवीरावली पा. पू. त. नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः वं विष्णुवीरावली पा. पू. त. नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः रं रुद्रवीरावली पा. पू. त. नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः यं ईश्वरवीरावली पा. पू. त. नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हं सदाशिववीरावली पा. पू. त. नमः।

॥ देवता॥

१. तुरीय मनु – हसकल हसकहल सकल ह्रीं। तुरीयाम्बा पा. पू. त.।

२. महार्धा मनु – ऐं ईं औं मूलं सं सृष्टिनित्ये स्वाहा, हं स्थितिपूर्णे नमः, रं महासंहारिणी कृशे चण्डकालि फट्, रं ह्स्ख्फ्रें महानाख्ये अनंतभास्करि महाचण्डकालि फट्, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, हं स्थितिपूर्णे नमः सं सृष्टिनित्ये स्वाहा।

३. अश्वारूढा – आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा।

४. मिश्राम्बा – ऐं।

५. वाग्वादिनी– ऐं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा।

६. दुर्गा –

(क) वनदुर्गा – ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं दुं उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा

तन्मे भगवति शमय शमय स्वाहा।

(ख) शूलिनी दुर्गा – **श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रह हुं फट्।**

(ग) जातवेद दुर्गा – **ॐ ह्रीं दुं जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेवसिन्धुं दुरितात्यग्निः दुं ह्रीं ॐ।**

(घ) शान्तिदुर्गा – **ॐ ह्रीं दुं दुर्गा देवीं शरणमहं प्रपद्ये दुं ह्रीं ॐ।**

(ङ) शबरिदुर्गा – **ॐ ह्रां ह्रीं सौः ऐं श्रीं क्षं दुं शबरिदुर्गायै क्रों अमलवरयूं आदिशक्ति स्वरूपिणि अक्षरमये रक्षः कुल नाशिनि मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् विदारय विदारय रोगान् भस्मीकुरु भस्मीकुरु कृत्रिमान् दह दह प्राणान् वह वह आभिचारिकान् नाशय नाशय सर्वं मां रक्ष रक्ष शबरिदुर्गायै हुं फट् सवाहा।**

(च) ज्वलदुर्गा – **ह्रां ह्रीं सौः ग्लौं ऐं श्रीज्वलदुर्गे एह्येहि स्फुर प्रस्फुर आदिविष्णुसोदरि अस्त्रज्वलदुर्गे आवेशयावेशय। ज्वलदुर्गाय विद्महे जाज्वल्यमानाय धीमहि। तन्नो बडवानलः प्रचोदयात्।**

(छ) लवणदुर्गा – **ॐ खं चिटि चिटि चण्डालि महाचण्डालि सर्वजनं (अमुकं) मे वशमानय स्वाहा।**

(ज) दीपदुर्गा – **ॐ क्रों ह्रीं आं दुं दुर्गे एह्येहि आवेशयावेशय ह्रीं दुं दुर्गे आं ह्रीं क्रों ॐ हुं फट् स्वाहा।**

(झ) आसुरीदुर्गा – **ॐ श्रीं ह्रीं कटुके कटुकपत्रे असुभगे (सुभगे) आसुरी रक्तवरानने (रक्तवाससे) अथर्वणस्य दुहिते अघोरे अघोरकर्मकारिके (अमुकस्य) प्रतिस्थतस्य साध्यस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गुदं दह दह प्रसुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच नामरूपं दहदह तावद्दह तावत्पच पच यावन्मे वशमागच्छति तावन्मे वशमानय स्वाहा।**

७. **कालीमनु** – **क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं हुं ह्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं हुं क्रीं क्रीं क्रीं।**

८. **चण्डीमनु** – **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।**

९. **नकुली वाग्देवता मनु** – **ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृताः पिवः। सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्।**

१०. **पुलिन्दिनीमनु** – **ॐ ईं नमो भगवति शारदादेव्यत्यन्तामलभोज्यं देहि देहि आगच्छ आगच्छ आगन्तुकं हृदि संस्थं कार्यं सत्यं ब्रूहि ब्रूहि पुलिन्दिनि ईं ॐ स्वाहा।**

११. **रेणुका मनु** – **क्लीं नमो भगवति रक्तपंचमी रेणुकादेवि हन हन पच पच अखिल जगत् मे (जगन्मे) वशं कुरु कुरु स्वाहा क्लीं।**

१२. **लक्ष्मी मनु** – **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मि एह्येहि सर्वसौभाग्यं देहि मे स्वाहा।**

१३. **वागीशमनु** – **सं सरस्वत्यै नमः।**

१४. **मातृका मनु** – **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं अं आं..........हं लं क्षं ह्रीं श्रीं ॐ।**

१५. **स्वयंवरामनु** – **ॐ ह्रीं योगिनि योगिनि योगेश्वरि योगाभयङ्करि सकलस्थावर जङ्गम मुखहृदयं मम वशमाकर्षयाकर्षय स्वाहा।**

१६. **वामदेव ईश्वरमनु** – वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमोबलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। अर्धमात्राकाराय तिरोधान कर्त्रे ईश्वराय नमः।

१७. **समयाकालि** – ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगीश्वरि कालिके फट्। उत्तराम्नाय समय विद्येश्वरि कालिका देव्याम्बा पा. पू. त. नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं नवमुद्रापञ्चवीरावली सहितायै तुर्याम्बादि समयविद्येश्वरी पर्यन्त द्विसहस्त्र देवता परिसेवितायै ओड्याणपीठ स्थितायै उत्तराम्नाय समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पा. पू. त. नमः।

॥ इति उत्तराम्नाय पूजनम् ॥

॥ पञ्चदशीपक्षे चतुराम्नायः षोडशी पक्षे तु षडाम्नायः ॥

॥ अथ उर्ध्वाम्नाय मन्त्राः॥

अमृतार्णव मध्योद्यत्स्वर्ण द्वीपे मनोरमे । कल्पवृक्ष वनान्तःस्थे नवमाणिक्य मण्डपे ॥
नवरत्नमय श्रीमत्सिंहासनगताम्बुजे । त्रिकोणान्तः समासीनं चन्द्रसूर्यायुतप्रभम् ॥
अर्धाम्बिका समायुक्तं प्रविभक्त विभूषणम् । कोटिकन्दर्प लावण्यं सदा षोडशवार्षिकम् ॥
मन्दस्मितमुखाम्भोजं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् । दिव्याम्बरस्त्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम् ॥
पानपात्रं च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः । विद्यासंसदि विभ्राणं सदानन्दमुखेक्षणम् ॥
महाषोढोदिताऽशेष देवतागण सेवितम् । एवं चिताम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम् ॥
पुरूषं वा स्मरेद्देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत् । अथवा निष्कलं ध्यायेत् सच्चिदानन्दलक्षणम् ॥
सर्वतेजोमयं ध्यायेत् सचराचर विग्रहम् ।

॥ गुरु मण्डलम् ॥

१. **मालिनी मन्त्र** – ऐं ह्रीं श्रीं अं आं........हं लं क्षं श्रीं ह्रीं ऐं मालिन्यम्बा पा. पू. त. नमः।

२. **मन्त्रराज** – ह्रां ह्रीं ह्रुं फट्। मन्त्रराज श्री पा. पू. त. नमः।

॥ देवता ॥

१. **पराषोडशी** – श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ॐ सकल ह्रीं हसकहल ह्रीं कएईल ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं।

२. **पराभट्टारिका मनु** – सौः।

३. **पराशांभव मनु** – ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसौः अहमहं अहमहं हसौः ह्स्ख्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं।

४. **परशांभवी मनु** – ह्स्ख्फ्रें ह्रीं सौः श्रीं हूं।

५. **प्रसाद मन्त्र** -

(क) प्रसाद पराम्बा मंत्र - **ह्सौः।**

(ख) पराप्रसाद पराम्बा मंत्र - **स्हौः॥**

६. दहरविद्या - **हं सं रं ईं।**

७. **हंसविद्या - हंसः।**

८. **महावाक्यम् - प्रज्ञानं ब्रह्म। अहं ब्रह्मास्मि। तत्त्वमसि। अयमात्मा ब्रह्म। महावाक्याम्बा पा. पू. त. नमः।**

९. **शिव** -

(क) ॐ नमः शिवाय। शिवपञ्चाक्षर्याम्बा पा. पू. त. नमः।

(ख) ॐ ह्रीं नमः शिवाय। शिवपञ्चाक्षर्याम्बा पा. पू. त. नमः।

१०. तारक -

(क) ॐ।

(ख) ॐ ह्रीं।

११. **ईशान - ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणोधिपति र्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।**

मन्त्रातीत स्वरूपायानुग्रहकर्त्रे सदाशिवाय नमः।

१२. **मखपरयघच् महिचनचडयङ्गंशफर्। उर्ध्वाम्नाय समय विद्येश्वर्यम्बा श्रीमूलमन्त्रम् श्रीमन्मालिनि मन्त्रराज गुरुमण्डल सहितायै पराम्बादि समय विद्येश्वरी पर्यन्त अशीतिसहस्त्र देवता परिसेवितायै शांभवपीठ स्थितायै उर्ध्वाम्नाय समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिकां श्री पदुकां पूजयामि नमः।**

॥ इति उर्ध्वाम्नायः॥

॥ अथ अनुत्तराम्नाय मन्त्राः॥

॥ गुरुमण्डल॥

१. **महापादुका - ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रे हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः। श्रीविद्यानन्द -नाथात्मक चर्यानन्दनाथ श्री पा. पू. त. नमः।**

२. **संप्रदाय पादुका - श्रीं ह्रीं क्लीं अमृतवर्षिणी पादुका परमेश्वरी वौषट्। संप्रदाय श्री पा. पू. त. नमः।**

३. कादिविद्या गुरुपरम्परा की सभी नामावलियों से पूर्व ''ऐं ह्रीं श्रीं'' तथा नाम के पश्चात् **पादुकां पूजयामि तर्पयामि** कहें। यथा -

ऐं ह्रीं श्रीं परप्रकाशानन्दनाथ श्री पा. पू. त. नमः। परशिवानन्दनाथ, पराशक्त्याम्बा, कौलेश्वरानन्दनाथ,

शुक्लदेव्यम्बा, कुलेश्वरानन्दनाथ, कामेश्वर्यम्बा, भोगानन्दनाथ, क्लिन्नानन्दनाथ, समयानन्दनाथ, सहजानन्दनाथ, गगनानन्दनाथ, विश्वानन्दनाथ, विमलानन्दनाथ, मदनानन्दनाथ, भुवनानन्दनाथ, लीलाम्बा, स्वात्मानन्दनाथ, प्रियानन्दनाथ।

४. कामराज चरणाः –

१. ऐं ह्रीं श्रीं योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमास्मि सोहं स्वच्छप्रकाश परिपूर्ण परापरमहाप्रकाश परिपूर्णानन्दनाथ पा. पू. त. नमः।

२. ऐं कएईल ह्रीं हंसः रक्तचरण पा. पू. त. नमः।

३. ऐं कएईल ह्रीं हंसः रक्तचरणाम्बा पा. पू. त. नमः।

४. क्लीं हसकहल ह्रीं सोहं शुक्लचरण पा. पू. त. नमः।

५. क्लीं हसकहल ह्रीं सोहं शुक्लचरणाम्बा पा. पू. त. नमः।

६. सौः सकल ह्रीं हंसः सोहं मिश्रचरण पा. पू. त. नमः।

७. सौः सकल ह्रीं हंसः सोहं मिश्रचरणाम्बा पा. पू. त. नमः।

८. ऐ कएईल ह्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं सौः सकल ह्रीं हंस सोहं निर्वाणचरण पा. पू. त. नमः।

९. ऐ कएईल ह्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं सौः सकल ह्रीं हंस सोहं निर्वाणचरणाम्बा पा. पू. त. नमः।

॥ देवता ॥

१. पञ्चाम्बा – ऐं ह्रीं श्रीं आदिनाथ व्योमातीताम्बा पा. पू. त. नमः। ऐं ह्रीं श्रीं आदिनाथ व्योमेश्वर्यम्बा पा. पू. त. नमः। ऐं ह्रीं श्रीं अनामयानंदनाथ व्योममाम्बा पा. पू. त. नमः। ऐं ह्रीं श्रीं अनंतानंदनाथ व्योमचारिण्यम्बा पा. पू. त. नमः। ऐं ह्रीं श्रीं चिदाभासव्योमस्थाम्बा पा. पू. त. नमः।

२. नवनाथ – हं उन्मयाकाशानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। सं समाकाशानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। व्यापकानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। शक्त्याकाशानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। लं ध्वन्याकाशानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। वं ध्वनिमात्राकाशानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। रं इन्द्राकाशानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। यं चिदाकाशानन्दनाथ पा. पू. त. नमः ॐ व्यस्ताकाशानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। हसक्षमलवरय ॐ समस्ताकाशानन्दनाथ पा. पू. त. नमः।

३. मूलविद्या

(क) ह्रीं स्वच्छ प्रकाश परिपूर्ण परापर महासिद्धविद्या कुलयोगिनि ह्रीं।

(ख) प्रसादपरा विद्या – ह्सौः स्वात्मानं बोधय बोधय स्हौः।

(ग) अतिरहस्य योगिनि – ऐं ब्लूं क्लिन्ने क्लेदिनि महामदद्रवे क्लीं क्लेदय क्लां क्लीं मोहय मोहय क्लीं नमः स्वाहा।

(घ) शांभवीविद्या – हंसः स्वच्छप्रकाश परिपूर्णानन्द परमहंस महात्मने स्वाहा ह्सौः ह्स्क्ष्मय्रं।

(ङ) हृल्लेखा विद्या – ह्रीं नित्यस्फुरण चैतन्यानन्दमयी महाबिन्दुव्यापक मातृकारूपिणी ऐं ह्रीं श्रीं ईं।

(च) समयविमलामूलविद्या – **ऐं ह्रीं श्रीं स्वच्छप्रकाशात्मिके ह्रीं कुलमहामालिनि ऐं कुलमातृके ह्रीं ऐं समयविमले श्रीं।**

(छ) परबोधिनीमूलविद्या – **हंसः स्वच्छप्रकाश परिपूर्ण परापर महाप्रकाशात्मिके कुलकुण्डलिनि आज्ञासिद्धि महाभैरवि आत्मानं बोधय बोधय अम्बे भगवति ह्रीं हुं।**

(ज) कौलपंचाक्षरीमूलविद्या – **ॐ मोक्षं कुरु कुरु।**

(झ) चैतन्यमूलविद्या – **हसकल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।**

(ञ) अनुत्तर विद्या – **ऐं शुद्ध सूक्ष्म निराकार निर्विकल्प परब्रह्मस्वरूपिणी क्लीं परमानन्द शक्तिः सौः। शांभवानंदनाथानुत्तर कौलिनी मूलविद्याम्बा पा. पू. त.।**

(ट) विमर्शिनीविद्या – **हंसः सोहं स्वच्छानन्द परमहंस परमात्मने सवाहा। गुरूत्तम विमर्शिनी मूलविद्याम्बा पा. पू. त. नम.।**

(ठ) अनामाख्यमूलविद्या – **अनामाख्य व्योमातीतानन्दनाथ परापर व्योमातीत व्योमेश्वर्यम्बायै नमः।**

(ड) संकेतसार विद्या – **ऐं ईं ॐ।**

(ढ) अनुत्तर वाग्वादिनी विद्या – **ह्रीं भगवति विच्चे वाग्वादिनी क्लीं महाहृदय मातङ्गिनि ऐं क्लिन्ने ब्लूं स्त्रीं।**

४. **पंचदशाक्षरी – क ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं।**

५. **महाषोडशी – श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।**

६. **मूर्तिविद्या – हसकल हसकहल सकल ह्रीं सर्वानन्दमय वैन्दवचक्रे परब्रह्मस्वरूपिणी परामृतशक्ति सर्वमंत्रेश्वरि सर्वयंत्रेश्वरि सर्वतंत्रेश्वरि सर्ववीरेश्वरी सर्वयोगीश्वरी सकलजगदधिष्ठान देवतायै श्रीमहामूर्ति विद्यायै नमः।**

७. **षडाधार मनु –**

(क) गणनाथरूपिण्यकाम्बा – **सां हंसः मूलाधार अधिष्ठान देवतायै साकिनी सहित गणनाथ स्वरूपिण्यै नमः।**

(ख) ब्रह्मरूपिणी – **कां सोऽहं स्वाधिष्ठान अधिष्ठान देवतायै काकिनी सहित ब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः।**

(ग) विष्णुरूपिणी – **लां हंसः सोऽहं मणिपूरक अधिष्ठान देवतायै लाकिनी सहित विष्णुस्वरूपिण्यै नमः।**

(घ) सदाशिवरूपिणी – **रां हंसश्शिवस्सोऽहं अनाहताधिष्ठान देवतायै राकिनी सहित सदाशिवस्वरूपिण्यै नमः।**

(ङ) जीवेश्वर रूपिणी – डां सोऽहं हंसः शिव विशुद्ध्यधिष्ठान देवतायै डाकिनी सहित जीवेश्वर स्वरूपिण्यै नमः।

(च) परमात्मरूपिणी – **हां हंसशिवस्सोऽहं सोहं हंसः शिवः आज्ञाधिष्ठान देवतायै हाकिनी सहित परमात्म**

स्वरूपिण्यै नमः।

८. चरणविद्या -

(क) चरणविद्या - ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं क ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं हसकल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं हसकल ह्रीं हसकहल सकल ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं प्रकाशचरणाभ्यां नमः।

(ख) ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं क ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं हसकल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं हसकल हसकहल सकल ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं विमर्शचरणाभ्यां नमः।

९. भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्सौः। अनुत्तरशाङ्कर्यम्बा पा. पू. त. नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं परिपूर्णानन्दनाथादि नवनाथ सहितायै चतुर्दश मूलविद्यादि अनुत्तर शाङ्कर्यनन्तान्त देवता परिसेवितायै अनुत्तर आम्नाय समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका श्री पा. पू. त. नमः।

॥ इति अनुत्तराम्नाय ॥

॥ इति षडाम्नाय पूजा प्रयोगम् ॥

॥ अथ श्रीचक्रपूजायां त्रिपुरसुन्दरी महाध्यानम् ॥

ततो ध्यानं प्रवक्ष्यामि त्रिदशैः सेवनीयम्।
ततः पद्मनिभां देवीं बालार्ककिरणारुणाम्।
जपा कुसुमसंकाशां दाडिमी कुसुमोपमाम् ॥१॥

पद्मरागप्रतीकाशां कुंकुमोदर संनिभाम्। स्फुरन्मुकुट माणिक्य किङ्किणीजाल मण्डिताम् ॥२॥
कालालिकुल संकाश कुटिलालक पल्लवाम्। प्रत्यग्रारुण संकाश वदनाम्भोज मण्डलाम् ॥३॥
किञ्चिदर्धेन्दु कुटिल ललाट मृदुपट्टिकाम्। पिनाकधनुराकार भ्रूलतां परमेश्वरीम् ॥४॥
आनन्द मुदितोल्लोल लीलान्दोलित लोचनाम्। स्फुरन्मयूख सङ्घात विलसद्धेम कुण्डलाम् ॥५॥
सुगण्ड मण्डलाभोग जितेन्द्वमृत मण्डलाम्। विश्वकर्मा विनिर्माण सूत्र सुस्पष्ट नासिकाम् ॥६॥
ताम्रविद्रुम बिम्बाभरक्तोष्ठी ममृतोपमाम्। दाडिमीबीज वज्राभदन्तपंक्ति विराजिताम् ॥७॥
रत्नद्वीप समुद्भासि जिह्वां मधुरभाषिणीम्। स्मित माधुर्यविजित माधुर्य रससागराम् ॥८॥
अनौपम्यगुणोपेत चिबुकोद्देश शोभिताम्। कम्बुग्रीवा महादेवीं मृणाल ललितैर्भुजै ॥९॥
मणिकङ्कण केयूरभारखिन्नैः प्रशोभिताम्। रक्तोत्पलदलाकार सुकुमार कराम्बुजाम् ॥१०॥
कराम्बुज नख ज्योतिर्वितानित नभस्तलाम्। मुक्ताहार लतोपेत समुन्नत पयोधराम् ॥११॥

****

त्रिवलीवलयायुक्त मध्यदेश सुशोभिताम् । लावण्यसरिदावर्त्ताकार नाभि विभूषिताम् ॥१२॥
अनर्घरत्नघटित काञ्चियुक्त नितम्बिनीम् । नितम्बबिम्बद्विरद रोमराजीवाराङ्कुशाम् ॥१३॥
कदलीललित स्तम्भ सुकुमारोरुमीश्वरीम् । लावण्यकदली तुल्य जङ्घायुगल मण्डिताम् ॥१४॥
गूढगुल्फ पदद्वन्द्व प्रपदाजित कच्छपाम् । नूपुरैर्विलसत् पादपङ्कजाति मनोहराम् ॥१५॥
ब्रह्मविष्णुशिरोरत्न निर्घृष्ट चरणाम्बुजाम् । तनुदीर्घाङ्गुलीभास्वन्नख चन्द्र विराजिताम् ॥१६॥
शीतांशु शतसङ्काश कान्ति सन्तानहासिनीम् । लौहित्यजित सिन्दूररजपादाडिमरागिणीम् ॥१७॥
रक्तवस्त्र परिधानां पाशाङ्कुशकरोद्यताम् । रत्नपुष्प विनिष्टां च रक्ताभरणमण्डिताम् ॥१८॥
चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च पञ्चबाणधनुर्धराम् । कर्पूरशकलोन्मिश्र ताम्बूलापूरिताननाम् ॥१९॥
महामृगमदोद्दाम कुंकुमारुण विग्रहाम् । सर्वशृङ्गार वेषाढ्यां सर्वाभरणभूषिताम् ॥२०॥
जगदाह्लादजननीं जगद्रञ्जनकारिणीम् । जगदाकर्षणकरीं जगत्कारणरूपिणीम् ॥२१॥

सर्वमन्त्रमयीं देवीं सर्वसौभाग्य सुन्दरीम् ।
सर्वलक्ष्मीमयीं नित्यां परमानन्दनन्दिताम् ॥२२॥
एवं ध्यायेत् परेशानीं महात्रिपुरसुन्दरीम् ॥

इस प्रकार महात्रिपुर सुन्दरी का ध्यान कर श्रीयन्त्रार्चन करें। पञ्चपञ्चिका एवं नित्याओं का पूजन करें।

॥ अथ श्रीविद्यायां पञ्चकोश विद्या ॥

॥ १. श्री विद्या कोशेश्वरी ॥

मन्त्र - ऐं ह्रीं श्रीं (त्रिपुर सुन्दरी मूल मंत्र) महाकोशेश्वरी वृन्दमण्डितासन संस्थिता सर्व सौभाग्यजननी पादुकां पूजयामि।

॥ २. परंज्योति कोशेश्वरी ॥

मन्त्र - ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा।

विनियोग :- अस्य मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्री छन्दः परंज्योति कोशेश्वरी देवता ॐ बीजं ह्रीं हंसः सोहं शक्ति स्वाहा कीलकं श्री विद्या प्रीतये जपे विनियोगः।

श्री विद्यार्णव तंत्र में लिखा हुआ हैं-

प्रणवान्त्यद्वयं बीजशक्ती शेषं तु कीलकं । स्वाहा तु हृदयं सोऽहं शिरो हंसः शिखा भवेत् ॥
मायया कवचं तारबीजेन नयनत्रयम् । सृष्ट्यान्मंत्रेण देवेशि समग्रणास्त्रकं भवेत् ॥

मंत्र के प्रारम्भ में शिर बाद में शिखा मध्य में हृदय उत्तरार्ध में पल्लव गिना जाता है। उपरोक्त मंत्र में **स्वाहा** पल्लव है परन्तु विद्यार्णव तंत्र में इस टीका से मंत्र दूसरा बनता है जबकि मंत्र उपरोक्त ही लिखा है।

षडङ्गन्यास - (१) स्वाहा (२) सोहं (३) हंसः (४) ह्रीं (५) ॐ (६) मूलमंत्र अथवा ह्रीं से

षडङ्गन्यास करे।

यस्मादतिशयः क्वापि तेजसां नैव विद्यते ।
परं पदेव तत् परं ज्योतिश्च देवता ॥

ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा परंज्योति श्री पादुकां पूजयामि।

॥ ३. परनिष्कल देवता (शाम्भवी) कोशेश्वरी ॥

मन्त्र – ॐ परनिष्कल शांभवी ॥

विनियोग :- अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छंदः, ब्रह्म देवता, ''अ'' बीजं, ॐ शक्ति, मः कीलकं, श्री विद्या प्रीतये विनियोगः।

षडङ्गन्यास – अं आं, इं ईं, उं ऊं, एं ऐं, ओं औं, अं अः से हृदयादि न्यास करे।

अनुग्रहादिर्देवेशि बिन्दुनादकलात्मकः । पर निष्कलदेवीयं पर ब्रह्मस्वरूपिणी ॥
शुक्लाम्बर परीधाना शुक्लमाल्यानुलेपना । ज्ञानमुद्राङ्किता योगपतिवृन्देन सेविता ॥

॥ ४. अजपाकोशेश्वरी ॥

मन्त्र – ''हंसः''।

विनियोग :- अस्य मंत्रस्य अव्यक्त हंस ऋषिः, गायत्री छंदः, परमहंस देवता, ''हं'' बीजं, ''सः'' शक्ति, सोहं कीलकंमोक्षार्थे विनियोगः।

षडङ्गन्यास :- (१) सूर्यायस्वाहा (२) सोमाय स्वाहा (३) निरञ्जनाय स्वाहा (४) निराभासाय स्वाहा (५) अनन्ततनु सूक्ष्माय स्वाहा (६) अव्यक्त नयन प्रबोधात्मने स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

अस्य हंसस्य देवेशि निगमागम पक्षकौ, अग्नीषामवथो वापि पक्षौ तारः शिरो भवेत् ।
विन्दुत्रयं शिखा नेत्रे मुखेनादः प्रतिष्ठितः, शिवशक्ति पदद्वन्द्वं कालाग्नि पार्श्वयुग्मकम् ।
अयं परमहंस्तु सर्वव्यापी प्रकाशवान्, सूर्यकोटि प्रतीकाशः स्वप्रकाशेन भासते ।
संहाररूपी हंसोऽयं विवेकं दर्शयत्यपि, अजपा नाम गायत्री त्रिषु लोकेषु दुर्लभा ॥

॥ ५. मातृका कोशेश्वरी ॥

मन्त्र – श्री विद्यार्णव तंत्र में इतना ही लिखा है कि ''मातृका प्रागेव प्रपञ्चिता।'' अतः.....अं आं.....हं लं क्षं श्री मातृका कोशेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि से पूजन तर्पण करे।

॥ श्रीविद्यायां पञ्चकल्पलता विद्या ॥

॥ १. श्री विद्या कल्पलतेश्वरी ॥

मन्त्र – ऐं ह्रीं श्रीं ''त्रिपुरा मूलमंत्र''

महाकल्पलतेश्वरी वृन्दमण्डितासन संस्थिता सर्वसौभाग्य जननी श्रीविद्या कल्पलता श्री पादुकां पूजयामि।

॥ २. पारिजातेश्वरी ॥

मन्त्र – **(१) ॐ ह्रीं हस्त्रैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।** (इसका प्रयोग पूर्व में दिया जा चुका है।)

(२) ॐ ह्रीं हं सं क ल ह हैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।

(३) ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें फट् श्री त्वरिता कल्पलता देवतायै पादुकां पूजयामि नमः।

(४) ॐ ह्रीं हसकलह्रैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः पारिजातेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि।

हंसारूढां लसन्मुक्ता धवलां शुभ्रवाससं,
शुचिस्मितां चन्द्रमौलिं वज्रयुक्ता विभूषणाम् ।
विद्यां वीणां सुधाकुंभमक्षमालां च विभ्रतीम् ॥

॥ ३. पञ्चवाणेश्वरी ॥

मन्त्र – **द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः।**

विनियोग :- **अस्य मन्त्रस्य मदन ऋषिः गायत्रीछन्दः कामेश्वरीवत् बीजं, पञ्चवाणेशी देवता श्री विद्या प्रीतये विनियोगः।**

पञ्चाङ्गन्यास – **ॐ द्रां हृदयाय नमः। ॐ द्रीं शिरसे स्वाहा। क्लीं शिखायै वषट्। ब्लूं कवचाय हुं। सः अस्त्राय फट्।**

उद्यद्दिवाकरभासां नानालङ्कार भूषितां
बन्धूक कुसुमाकार रक्तवस्त्राङ्ग रागिणीम् ।
इक्षुकोदण्ड पुष्पेषु विराजित भुजद्वयाम् ॥

॥ ४. पञ्चकामेशी ॥

मन्त्र – **ह्रीं क्लीं ऐं क्लूं स्त्रीं।**

विनियोग :- **अस्य मंत्रस्य संमोहन ऋषिः गायत्रीछन्दः कामदा पंचकामेशी देवता श्री विद्या प्रीतये विनियोगः।**

एक एक बीज से उपरोक्त विधान की तरह पञ्चाङ्ग न्यास करे।

रक्तां रक्तदुकूलाङ्ग लेपनां रक्त भूषणां,
पाशांकुशौ धनुर्वाणान् पुस्तकं चाक्षमालिकाम् ।
वराभीती च दधतीं त्रैलोक्य वशकारिणीम् ॥

॥ ५. कुमारी ॥

मन्त्र – **"क्लीं ऐं सौः"।** ऋषादि त्रिपुरसुन्दरी वत्।

षडङ्गन्यास – **क्लीं, ऐं, सौः, सौः, ऐं, क्लीं** से षडङ्गन्यास करें।

उद्यत् सूर्यसहस्त्राभां माणिक्यवर भूषणां, स्फुरद्रत्न दुकूलाढ्यां नानालङ्कार भूषिताम् ।
इक्षु कोदण्ड वाणांश्च पुस्तकं चाक्षमालिकां, दधतीं चिन्तयेन्नित्यं सर्वराज वशङ्करीम् ॥

मंत्रमहोदधि के अनुसार पंचकल्पलता के अन्तर्गत- (१) श्री विद्या २. त्वरिता ३. पारिजातेश्वरी ४. त्रिपुटा ५.

पंचवाणेशी इत्यादि विद्यायें आती हैं-

त्वरिता मंत्र - ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षे ह्रीं फट् । श्री विद्या के पूर्वभाग में पूजन करे।

त्रिपुटा - "श्रीं ह्रीं क्लीं" श्रीं ह्रीं क्लीं मूलमंत्र त्रिपुटा श्री पादुकां पूजयामि। श्री विद्या के पश्चिम भाग में पूजन करे। मंत्र महोदधि में ऋष्यादि नहीं दिये गये हैं।

॥ श्रीविद्यायां पंचकामदुधा (कामधेनु) विद्या ॥

॥ १. श्री विद्याकामदुधा ॥

मन्त्र - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं (त्रिपुटा मूलमंत्र) महाकाम दुधेश्वरी वृन्दमण्डितासन संस्थिता सर्वसौभाग्य जननी श्रीविद्या कामदुधा श्री पादुकां पूजयामि।

॥ २. अमृतपीठेश्वरी ॥

मन्त्र - (१) ह्रीं हंसः संजीवनी जूं जीवं प्राणग्रंथिस्थं कुरु कुरु सः स्वाहा।

(२) ऐं क्लीं सौः।

॥ ३. अमृतेश्वरी ॥

मन्त्र - १. ऐं ब्लूं ॐ जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा।

ऋष्यादि प्राग्वत्। अमृताऽमृत रश्म्योघ संतर्पित चराचरम्। भवशान्त्यै त्वां भावयाम्यमृतेश्वरीम्॥

२. मंत्रमहोदधि में पूजन मंत्र - सौः क्लीं हैं अमृतेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि।

॥ ४. अन्नपूर्णा ॥

मन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

विनियोग :- अस्य मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः उष्णिक छंदः, अन्नपूर्णेश्वरी देवता, ह्रीं बीज, श्रीं शक्ति क्लीं कीलकं अन्नपूर्णा प्रीतये विनियोगः।

श्री विद्या के उत्तर भाग में पूजन करे।

उद्यत् सूर्यसमाभासां विचित्र - वसनोज्ज्वलां,
चन्द्रचूडामन्नदान - निरतां रत्नभूषिताम् ।
सुवर्णकलशाकार स्तनभारनतां परां,
रुद्रताण्डव सानन्दां द्विभुजां परमेश्वरीम्॥
वरदाभय शोभाढ्यामन्नदानरतां सदा॥

॥ ५. सुधाश्री ॥

मन्त्र - ह्स्त्री स्ह्रीं श्रीं क्लीं॥ श्री सुधा देव्यै नमः।

श्री विद्या के दक्षिण भाग में पूजन करे।

॥ पञ्चरत्नेश्वरी विद्या ॥

॥ १. श्रीविद्या रत्नेश्वरी ॥

मन्त्र – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं (त्रिपुरा मूलमंत्र) महारत्नेश्वरी वृन्दमण्डितासन संस्थिता सर्वसौभाग्य जननी श्री विद्या रत्नेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि।

॥ २. सिद्धलक्ष्मी रत्नेश्वरी ॥

१. इसका माला मंत्र पूर्व में दिया जा चुका है।

२. ऐं क्लिन्ने क्लीं मदद्रवे कुले ह्स्त्रौः। श्री सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।

श्री विद्या के पूर्वभाग में पूजन करे।

॥ ३. मातङ्गी रत्नेश्वरी ॥

मन्त्र – ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति मातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वराजवशङ्करि सर्वमुखरञ्जिनि सर्वस्त्रीपुरुष वशङ्करि सर्वदुष्टमृग-वशङ्करि सर्वलोक वशङ्करि ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं।

विनियोग :- अस्य मंत्रस्य मतङ्ग ऋषिः गायत्री छन्दः नादमूर्ति मातङ्गी देवता क्लीं बीजं ऐं शक्तिः सौः कीलकं सर्वजन वशमानार्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास :- ऐं, क्लीं, सौः, ऐं, क्लीं, सौः से हृदयादि न्यास करे।

आम्भोजार्पित दक्षांघ्रि क्षौमां ध्यायेन्मतङ्गिनीं
क्वणद् वीणा लसन्नाद श्लाघान्दोलित कुण्डलाम् ।
दंतपंक्ति प्रभारम्यां शिवां सर्वाङ्गसुन्दरीं ,
कदम्बपुष्प दामाढ्यां वीणावादन तत्पराम् ॥
श्यामाङ्गी शङ्खवलयां ध्यायेत् सर्वार्थसिद्धये ॥

॥ ४. भुवनेश्वरी रत्नेश्वरी ॥

मन्त्र – "ह्रीं"। ह्रीं भुवनेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि।

॥ ५. वाराही रत्नेश्वरी ॥

मन्त्र – १. ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वाराहमुखि वाराहमुखि अन्धे अंधिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जंभेजंभिनि नमः, मोहे मोहिनि नमः, सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक् चित्त चक्षुर्मुख गति जिह्वास्तभं कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

प्रलयारुण सङ्काश पद्मान्तर्गतवासिनीं ,
इन्द्रनील महातेजप्रकाशां विश्वमातरम् ।
कदम्बमुण्डमालाढ्यां नवरत्न विभूषितां ,
अनर्घ्यरत्न घटित मुकुटश्री विराजिताम् ॥
कोशेयार्धोरुकां चारु प्रवालमणि भूषणां ,

हलेन मुसलेनापि वरदेनाभयेन च ।
विराजित चतुर्बाहुं कपिलाक्षीं सुमध्यमां ,
नितम्बिनीमुत्पलाभां कठोरघन सत्कुचाम् ।
कोलाननां ध्यायामि वाराहीं कल्याण दायिनीम् ॥

श्री विद्यार्णव तंत्र में ऋष्यादि नहीं दिये हैं।

मन्त्र – २. ॐ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराहि वाराहमुखि ऐं ग्लौं ऐं अंधे अंधिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भेजंभिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तंभे स्तंभिनि नमः ऐं ग्लौं ऐं सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्व वाक्चित्त चक्षुर्मुख गति जिह्वा स्तम्भं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

विनियोग :– अस्य मंत्रस्य शिव ऋषिः अतिजगती छंदः वार्ताली देवता सर्वशत्रु स्तंभनार्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास :– १. वार्तालि २. वाराहि ३. वाराहमुखि, ४. अंधे अंधिनि ५. रुन्धे रुन्धिनि ६. जंभे जंभिनि नमः से हृदयादि न्यास करे।

**रक्ताम्भोरुह कर्णिकोपरिगते शवासनेसंस्थितां, मुण्डस्त्रक परिराजमान हृदयां नीलाश्म सद्रोचिषम्।
हस्ताब्जैर्मुसलं हलाभयवरान् संबिभ्रन्तीं सत्कुचाम्, वार्तालीमरुणाम्बरां त्रिनयनां वन्दे वराहाननाम् ॥**

॥ इति श्रीविद्यायां पञ्चपञ्चिका प्रयोगाः ॥

॥ अथ श्रीविद्यायां पञ्चदशीनित्या अर्चन प्रयोगा:॥

श्री विद्या की १५ नित्यायें प्रधान है, षोडशी कला स्वयं चित्राषोड़शी है। १५ नित्याओं का अर्चन नामावलि से श्रीयंत्र पूजन में आता है नित्याओं का आध्यात्मकेन्द्र हमारे नजदीक है अत: शीघ्र सिद्धि प्रदा है। यहां ''**श्रीविद्या**'' क्रम से कलाओं का नित्यार्चन ''**श्रीविद्याक्रम**'' से दिया गया है। उनके साध्य, प्रयोग षट्काम्यप्रयोग हेतु इनके **पुस्तक के उत्तर भाग ''प्रयोग कादिक्रम** '' विधि में दिये गये है। पूर्णाभिषेक दीक्षा हेतु नित्याओं की दीक्षा भी लेवे।

प्रतिप्रदा को भगवती का पूजन करें। चन्द्रोदय द्वितीया से होता है अत: नित्या कला पूजन द्वितीया से होगा। तथा क्रमश: पूजन होकर पूर्णिमा को ज्वालामालिनी का पूजन करें। चित्राकला (विचित्रा) अमावस्या को करें।

चक्रपूजा के समय त्रिकोण मध्य में १५ नित्याओं का पूजन कर १६ वीं कला भगवती का पूजन करें।

श्रीविद्यारत्नाकर में तान्त्रिक पञ्चाङ्ग के अनुसार शुक्ला प्रतिप्रदा को कामेश्वरी बाद में क्रमश: व पूर्णिमा को चित्रा पूजन। कृष्णा प्रतिप्रदा को चित्रा से पुन: विलोम क्रम में पूजा करते हुए अमावस्या को कामेश्वरि पूजन। पुन: शुक्ला प्रतिप्रदा को कामेश्वरि से क्रमश: पूर्णिमा को चित्रा पूजन। कृष्णा प्रतिप्रदा को चित्रा से ज्वालामालिनी, सर्वमङ्गला, विलोम क्रम में पूजा करते हुए अमावस्या को कामेश्वरि का पूजन करें।

॥ १. अथ कामेश्वरी नित्या प्रयोग:॥

मन्त्र - **१. ऐं सकल ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौ:।**

२. ऐं क्लीं सौ: ॐ नम: कामेश्वरीच्छा कामफलप्रदे सर्वतत्त्व वशङ्करि सर्वजगत् क्षोभकरे हूं हूं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं स: सौ: क्लीं ऐं।

विद्यार्णव तंत्र में लिखा है- **एषा कामेश्वरी नित्या कामदैकादशाक्षरी**। परन्तु बीज पुटित होने से यह १४ अक्षर मंत्र है। इस विद्या के प्रभाव से मेघनाद ने इन्द्र को बांध लिया था।

विनियोग - **अस्य मंत्रस्य संमोहन ऋषि, त्रिष्टुप् छंद: कामश्वरी देवता, कं बीजं, ईं शक्ति: लं कीलकं कामेश्वरी दीक्षाफल सिद्धये विनियोग:।**

न्यास - **शिरसि संमोहन ऋषये नम:। मुखे त्रिष्टुप् छन्दसे नम:। हृदये कामेश्वरी देवतायै नम:। गुह्ये कं बीजाय नम:। पादयो: ईं शक्तये नम:। नाभौ लं कीलकाय नम:। विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यास - **ऐं हृदयाय नम:। सकल ह्रीं शिरसे स्वाहा। नित्य शिखायै वषट्। क्लिन्ने कवचाय हुं। मदद्रवे नेत्रत्रयाय वौषट्। सौ: अस्त्राय फट्।**

वर्णन्यास - **दक्षनेत्रे ऐं नम:। वामे सकल ह्रीं नम:। दक्षश्रोत्रे नि नम:। वामे त्य नम:। दक्षनसि क्लि नम:।**

वामे त्रे नमः। जिह्वायां म नमः। हृदये द नमः। नाभौ द्र नमः। गुह्ये वे नमः। सौः इति सर्वाङ्गे।

॥ ध्यानम् ॥

बालार्क कोटि सङ्काशां माणिक्य मुकुटो ज्ज्वलाम् । **हारग्रैवेयकांचीमिरूर्मिका नूपुरादिभिः** ॥
मंडितां रक्तवसनां रक्ताभरण शोभितां । **षडभुजां त्रीक्षणामिन्दुकला कलित मौलिकाम्** ॥
पाशांकुशौ च पुण्ड्रेक्षुचापं पुष्पशिली मुखम् । **रत्नपात्रं सुधापूर्णं वरदं विभ्रतीं करैः** ॥

॥ यंत्र पूजनम् ॥

स्वर्णपट्ट पर कुंकुमादि से पंचदलकमल, अष्टदल, षोडशदल उसके बाहर षट्कोण के बाद चार द्वार युक्त भूपुर बनाये। जयादि पीठशक्तियों का अर्चन करे पुष्पांजलि लेकर देवि से पूजन की आज्ञा मांगे।
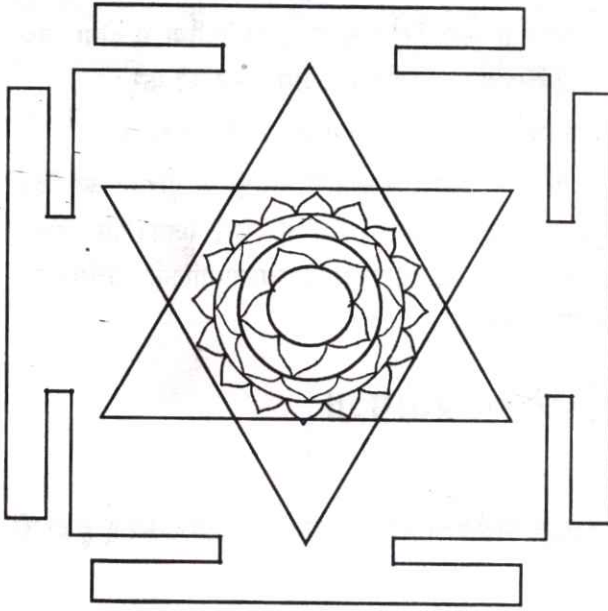
॥ श्री कामेश्वरी यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् - (पंचदलेकेसरेषु) अग्नि, ईशान, नैर्ऋति, वायव्य, अग्रभाग एवं दिक्षु दिशा में हृदयादि न्यास शक्तियों का पूजन करे। पंचदल एवं अष्टदल के मध्य में देवी के पृष्ठ भाग में । **प्रकाशानंदादि गुरु त्रय। ज्ञानानन्दनाथादि गुरुत्रय। स्वभावानन्दादि** गुरुत्रय का पूजन करे।

द्वितीयावरणम् - (पंचदले) देवी के अग्रभाग से प्रदक्षिणा पूर्वक **ह्रीं श्रीं** सभी युक्त सभी आवरणों के देवताओं का पूजन करे। **ह्रीं श्रीं द्रां मदनवाणाय नमः। द्रीं उन्मादन वाणाय नमः। क्लीं दीपनवाणाय नमः। ब्लूं मोहनवाणाय नमः। सः शोषणवाणाय नमः।**

तृतीयावरणम् - (अष्टदलेषु) **ह्रीं श्रीं अनङ्गकुसुमा श्री पादुकां पूजयामि। अनङ्गमेखला पा.। अनङ्ग मदना पा.। अनङ्ग मदनातुरा। । अनङ्ग मदवेगिनी पा.। अनङ्ग भुवनपाला पा.। अनङ्गशशिरेखा पा.। अनङ्गगगनरेखा पा.।**

चतुर्थावरणम् - (षोडशदले) **ह्रीं श्रीं अं श्रद्धा पादुकां** पूजयामि नमः। **आं प्रीति पा.। इं रति पा.। ईं धृति पा.। उं कान्ति पा.। ऊं मनोरमा पा.। ऋं मनोहरा पा.। ॠं मनोरथा पा.। लृं मदना पा.। लॄं उन्मादिनी पा.। एं मोहिनी पा.। ऐं शांति (शंखिनी) पा.। ओं शोषिणी पा.। औं वशंकरी पा.। अं शिञ्जिनी पा.। अः सुभगा पा.।**

पंचमावरणम् - (षोडशदलाग्रेषु) - **अं पूषा पा.। आं इद्धा पा.। इं सुमन पा.। ईं रति पा.। उं प्रीति पा.। ऊं धृति पा.। ऋं ऋद्धि पा.। ॠं सौम्या पा.। लृं मरी पा.। लॄं अंशुमालिनी पा.। एं शशिनी पा.। ऐं अङ्गिरा पा.। ओं छाया पा.। औं संपूर्णमंडला पा.। अं तुष्टि पा.। अः अमृता पा.।**

षष्ठमावरणम् - (षट्कोणे) **दक्षिणाग्रकोणे ऐं डाकिनी पा.**। वामाग्रकोणे ऐं राकिनी पा.। **पृष्ठकोणे ऐं**

लाकिनी पा.। पृष्ठवामे ऐं काकिनी पा.। पृष्ठदक्षिणे ऐं शाकिनी पा.। देव्यग्रे ऐं हाकिनी पा.।

सप्तमावरणम् – (षट्कोण एवं भूपुर के अभ्यंतर) **आग्नेये ऐं वटुक पा.। नैर्ऋति गं गणपति पा.। वायवे ऐं दुर्गा पा.। ईशाने ऐं क्षं क्षेत्रेश पा.।**

अष्टमावरणम् – (भूपुरे) पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादि दश दिक्पालों का एवं नवम् आवरण में उनके आयुधों का पूजन करे। धूपदीप नैवेद्यादि प्रदान कर कुरुकुल्ला को बलिप्रदान करे।

नित्या गायत्री मन्त्र – कामेश्वर्यै विद्महे नित्यक्लिन्नायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥

विनियोग – अस्य मन्त्रस्य सुभगाय ऋषि, गायत्री छन्दः, भगमालिनी देवता, हरब्ले बीजं, श्रीं शक्तिः, ह्रीं कीलकं, श्री त्रिपुरा सिद्धये जपे विनियोगः।

॥ अथ कादीक्रमानुसार कामेश्वरीनित्या प्रयोगः ॥

अथ कादिमते कामेश्वर्यादिनित्यानां प्रयोगविधिर्लिख्यते॥ ''ह्लींक्लींऐंब्लूंस्त्रीं'' इति पञ्चकामा भवन्ति। तन्त्रराजे- (प. ७ श्लो० ३९)

एषां यन्त्राणि सर्वाणि त्रैलोक्यक्षोभणानि च । तानि क्रमेण कथाम्याकर्ण समाहिता ॥१॥
तेषु पञ्चसु बीजेषु पुनरुक्तविवर्जितैः । योजयेदष्टभिस्तैस्तैः स्वरान् षोडश मायया ॥२॥
अष्टाविंशतिसंयुक्तं शतं तेन भवन्ति वै । तैर्यन्त्राणि विधेयानि पञ्चानां क्रमतः शिवे ॥३॥

अस्यार्थः – **प्रोक्तपञ्चसु बीजेषु द्वितीयबीजस्य जठरे प्रथमबीजं ॥१॥ तृतीयबीजजठरे द्वितीयं बीजं ॥२॥ चतुर्थबीजजठरे तृतीयं बीजं ॥३॥ पञ्चमबीजजठरे चतुर्थ बीजं ॥४॥ चतुर्थबीजजठरे पञ्चमं बीजं ॥५॥ तृतीयबीजजठरे चतुर्थ बीजं ॥६॥ द्वितीयबीजजठरे तृतीयं बीजं ॥७॥ प्रथमबीजजठरे द्वितीयं बीजं ॥८॥ एवमष्टौ बीजानि पुनरुक्तवर्जितानि भवन्ति। एतानि प्रत्येकं षोडशस्वरयुक्तानि कर्तव्यानि, तदा संख्यया १२८ बीजानि भवन्ति। एतैर्यन्त्राणि विधेयानीत्यर्थः॥**

यन्त्ररचनाप्रकारमाह –**वृत्तत्रयस्थं षट्कोणं कृत्वा मध्ये स्वमक्षरम्। लिखेत्साध्याख्ययोपेतं षट्कोणेषु च तत्पुनः ॥१॥ विभज्य बिन्दुमायाभ्यामध ऊर्ध्व लिखेत्क्रमात्। वृत्तान्तरालयोर्बाह्ये चतुःषष्ट्या द्विरालिखेत् ॥२॥ एवं यन्त्राणि पञ्च स्युः पञ्चानां क्रमतः शिवे। इति।**

अस्यार्थः:- **प्रथमतः षट्कोणं कृत्वा तद्बहिर्वृत्तत्रयं विधाय मध्ये साध्यनामसहितं प्रकृतिस्थपञ्चकामेषु प्रथमं बीजं विलिख्य षट्षु कोंणेषु तदेव बीजं विलिख्य प्रोक्ताष्टाविंशत्युत्तरशतं बीजानि चतुःषष्ट्या चतुः षष्ट्या द्विधा विभज्य वृत्तत्रयान्तरालद्वयेऽभ्यन्तरान्तराले बिन्दुयुक्तानि प्रथमचतुः षष्टिबीजानि पंक्त्यात्याकारेण विलिख्य, तद्बाह्यान्तराले द्वितीयचतुःषष्टिबीजानि विसर्गयुक्तानि लिखेत्, इदं प्रथमं यन्त्रम्। द्वितीयबीजं मध्ये साध्यसहितं विलिख्य षट्कोणेषु द्वितीयमेव बीजं विलिख्य बहिरन्तरालद्वये प्राग्वद्विलिखेदिति द्वितीययन्त्रम्॥ एवं तृतीयबीजेन तृतीयं यन्त्रम्॥ चतुर्थबीजेन चतुर्थ यन्त्रम्॥ पञ्चमबीजेन पञ्चमं यन्त्रम्॥ इति पञ्चयन्त्राणि भवन्तीत्यर्थः॥**

अथ पञ्चबीजैरेकमेव यन्त्रं लेखनीयमित्याह- **पञ्चभिस्त्वेकमस्त्यन्यद्यन्त्रं सुमहदद्भुतम्। द्वितीयजठरे त्वाद्यं सनामाभिलिखेत् तयोः ॥१॥ बहिस्तृतीयरूपेण षट्कोणेन प्रवेष्टयेत्। चतुर्थ विलिखेत् कोणेष्वेयु षट्स्वपि**

पार्वति ॥२॥ वेष्टयेत्पञ्चमेनैव सर्वमोहनम्। इति।

अस्यार्थ :- द्वितीयबीजस्य क्लींकारस्य जठरे प्रथमबीजं ह्रीमिति बीजं साध्यनामगर्भं विलिख्य, तद्बहिस्तृतीयबीजेन ऐंकारेण अधरोत्तरयोगेन षट्कोणं कुर्यात्। अत्र ऐंकारस्य त्रिकोणरूपत्वाद्बीजद्वयरूप त्रिकोणद्वयेन षट्कोणेनावेष्ट्य षट्कोणेषु चतुर्थबीजं ब्लूंकारं विलिख्य पञ्चमबीजेन स्त्रींकारेण षट्कोणाद्बहिर्वेष्टयेत्, यथा स्त्रींकारगर्भे सर्व भाति तथा कुर्यादित्यर्थः। एवं षट्चक्राणि जातानि॥

अथ समययन्त्रयोरुद्धारक्रममाह- तस्यापि परतो बाह्ये तैरावेष्ट्य पुरोदितैः। यन्त्रान्तरं तु जनयेद्बहिर्मातृकयापि च ॥१॥ इति। प्रोक्तषष्ठयन्त्रस्य बहिर्वृत्तत्रयं विधाय प्राग्वत् १२८ बीजैश्चतुः षष्ट्या द्विरालिखेत् सप्तमं यन्त्रं भवन्ति। एतस्यैव षष्ठयन्त्रस्य बहिर्वृत्तत्रयान्तरालद्वये प्राग्वद्बिन्दुयुक्तां विसर्गयुक्तां च लिखेत्, इदमष्टमं यन्त्रं भवतीति॥

यन्त्राण्यष्टौ भवन्त्येव पञ्चकामात्मकानि वै । तैरसाध्यं जगत्स्वेषु किञ्चित्तु न कदाचन ॥१॥
मनुजं मनुजेशं वा महिलां वा मदाबिलाम् । अष्टसूक्तेषु मध्यस्थं भावयेत्स्वेन तेजसा ॥२॥
एकीभूतं जपेदेतान्यक्षराण्यपि पञ्च वै । तेन ते वशगाः क्षिप्रं यावज्जीवं न संशयः ॥३॥
तेष्वष्टमस्य मध्यस्थमात्मसाध्यं जपारुणम् । तन्मन्त्रार्णप्रकाशैश्च तथारुणतरैर्वृतम् ॥४॥
भावयन्नात्मना ग्रस्तं जपेत्ताराक्षराण्यपि । तेन ते वशगाः क्षिप्रं दद्युः प्राणान् धनानि च ॥५॥
तस्य षष्ठस्य मध्यस्यबीजं मन्त्रेण वेष्टयेत् । प्राग्वन्नि (व?ज) सुषुम्नान्तर्भावयेद्योनिमुद्रया ॥६॥
एतदष्टकमध्यस्थं कुम्भं कृत्वा यथाविधि । तेनाभिषिञ्चेद्दौर्भाग्यरोगदारिद्र्यमुक्तये ॥७॥
कुचन्दनैर्वा सिन्दूरैर्गैरिकैर्दरदैस्तु वा । कृत्वा चक्राष्टकं भूमौ फलकायां शिलासु च ॥८॥
मध्ये विद्यावृतं कृत्वा तत्रावाह्याभिपूज्य ताम् । कामेश्वरीं तदग्रस्थो जपेल्लक्षं पयोव्रतः ॥९॥
तेनास्य पूर्वजन्मान्तर्दुष्कृतान्यपयान्ति वै । अस्मिञ्जन्मनि सल्लक्ष्मीमवाप्य सुखमेधते ॥१०॥
नरं नारीं नृपं वान्यं नगरं वाथ पत्तनम् । देशं जनपदं विश्वं तन्मध्ये प्रविलिख्य तत् ॥११॥
पूजयेदरुणैः पुष्पैर्गन्धैः काश्मीरसम्भवैः । नैवेद्यैः कदलीदुग्धशर्करापायसादिभिः ॥१२॥
मण्डलं वा तदर्धं वा सप्तवासरमेव वा । कन्दर्पसमसौभाग्यो जायते नियतं नरः ॥१३॥
सुवर्णादिषु संलिख्य धारणाद्धरणीतले । लक्ष्मीकान्तिधनारोग्यैरायुः पूर्णमवाप्नुयात् ॥१४॥
अनावृत्तैस्तु विद्यार्णैः षोडशस्वरयोजनात् । द्वानवत्या शतं वर्णा जायन्ते मन्त्रसम्भवाः ॥१५॥

अस्यार्थ :- कामेश्वर्या मन्त्रस्यैकादशाक्षरस्यानावृत्ताक्षराणि "असकलहरनतयमदव" इति द्वादशा. क्षराणि भवन्ति। ते षोडशस्वरयोगेनाङ्कतः १९२ वर्णा भवन्तीति॥

स्वराणां सर्वमन्त्रेषु योजनं केन हेतुना । क्रियते परमेशान तन्मे कथय साम्प्रतम् ॥१॥
स्वराः षोडश देवेशि व्यञ्जनानि तथा पुनः । पञ्चत्रिंशत् समाख्यातं तयोरन्योन्यसङ्गतैः ॥२॥
भारत्या देहभूतैस्तैर्व्यञ्जनैः स्वरयोजनम् । तत्प्राणयोजनं विद्धि रहस्यं परमेश्वरि ॥३॥

भारत्या वर्णरूपाया हसौ नेत्रे समीरिते । प्राणाः स्वराः समाख्याता बिन्दुसर्गौ तु चेतना ॥४॥
अन्यान्यवयवानि स्युरन्यानि परमेश्वरि । तेन तद्युक्तितो वर्णाः प्रसीदन्ति नचान्यथा ॥५॥
बिन्दुसर्गौ हसौ तुर्यस्वरश्चेति च पञ्चमम् । भारत्या मातृकादेहे विद्धि चैतन्यजृम्भणम् ॥६॥
तेन तैर्हीनरूपास्तु मन्त्रविद्यास्तथापरे । निष्प्राणदेहवत् कार्यकरणेष्वक्षमाः स्मृताः ॥७॥
तेन सर्वत्र तु मया स्वरयोग उदीर्यते । ये ये मन्त्राः प्रोक्तवर्णविहीनास्तैश्च योजयेत् ॥८॥
तेन ते बलवन्तः स्युः कार्येषु च फलान्विताः । तस्मात् सर्वत्र संयोगात् स्वैरः सर्वार्थसिद्धिदाः ॥९॥
एवं तैरेव जायन्ते यन्त्राणि सबलानि वै । द्वात्रिंशद्विनियोगांश्च वक्ष्ये तेषामनुक्रमात् ॥१०॥
वृत्तद्वयान्तः षट्कोणं कृत्वा मध्ये निजेप्सितम् । मायागर्भ समालिख्य वेष्टयेन्मातृकाक्षरैः ॥११॥

अस्यार्थ :- प्रथमतः षट्कोणं विलिख्य तद्बहिर्वृत्तद्वयं विधाय मध्ये साध्यनामगर्भ ह्रींकारं विलिख्य, षट्सु कोणेषु द्वानवत्युत्तरशतवर्णेषु प्रथमतः षडक्षराणि विलिख्य बहिर्वृत्तद्वयान्तराले मातृकाक्षरैर्वेष्टयेदिति प्रथमं यन्त्रं भवति॥ द्वितीययन्त्रस्य षट्सु कोणेषु प्रोक्तवर्णसमुदायस्य प्रथमतः षड्वर्णान् विहाय सप्तमाक्षरतः षड्वर्णान् विलिखेदिति द्वितीयं यन्त्रं भवति। एवं तृतीययन्त्रादिषु च क्रमेण पुनरुक्तवर्जिता षट्षडवर्णा लेखनीयाः। अन्यत्समानम्। एवं यन्त्राणि ३२ जायन्ते॥

॥ तेषां फलान्याह ॥

प्रथमे कनकावाप्तिर्द्वितीये भूषणोदयः । तृतीये कन्यकासिद्धिश्चतुर्थे भूप्रतिग्रहः ॥१॥
पञ्चमे वाहनावाप्तिः षष्ठे स्त्रीवश्यमीरितम् । सप्तमे भवनावाप्तिरष्टमे धेनुसङ्गमः ॥२॥
नवमे वशयेद्भूपं दशमे वारणं हयम् । एकादशेन विजयी नरः समरसीमनि ॥३॥
वादेषु व्यवहारेषु द्यूतेषु द्विविधेष्वपि । द्वादशे चेप्सितावाप्तिः परेणारिविनाशनम् ॥४॥
गजवाजिखरोष्ट्राणां नरगोमृगपक्षिणाम् । भुजङ्गमेषमहिषवाजिनां त्वाशु नाशनम् ॥५॥
तत्तत्त्वचिच तद्रक्तलिखितं तत्र तत्र च । स्थापितं मण्डलान्मासात्सप्तरात्रादथापि वा ॥६॥
चतुर्दशेन वृष्टिः स्यात्परेण स्तम्भनं रिपोः । क्रोधवैरिसमुद्योगगमनादेरपि ध्रुवम् ॥७॥
षोडशेन धृतेनाशौ भूताद्यैर्नैव बाध्यते । ततः परेण यन्त्रेण खातेन धरणीतले ॥८॥
रक्षा भवति सर्वत्र प्राणिनां जगति ध्रुवम् । अनन्तरानन्तराभ्यां खननात्फलकद्वये ॥९॥
शस्यानां बहुभिः क्लेशैर्नाशः स्याद्भूरुहामपि । देशानामपि वान्योन्यकलहात्पीडनं भवेत् ॥१०॥
अनन्तरेण यन्त्रेण विरोधो भूभुजां भवेत् । राज्य संधि तलेतस्य खननेनाल्प कालतः ॥११॥
एक विंशेन यन्त्रेण रोगार्ता वैरिणो ध्रुवम् । द्वाविंशेन गवां रोगस्त्रयोविंशेन दन्तिनाम् ॥१२॥
चतुर्विंशेन वाहानां पञ्चविंशेन भूभुजाम् । षड्विंशेन प्रधानानां रोगावाप्तिर्दृढं भवेत् ॥१३॥
सप्तविंशेन तेषां तु प्रोक्तानां क्लेशनाशनम् । अष्टाविंशेन यन्त्रेण कृत्या प्रतिनिवर्तते ॥१४॥
धारणाद्भूषु खननाद्वृक्षाग्रादिषु बन्धनात् । तडागकूपवाप्यादिष्वर्पणात्पाति ता ध्रुवम् ॥१५॥

ततः परेण यन्त्रेण वाग्मी मूकोऽपि जायते । अत ऊर्ध्वेन यन्त्रेण वैरिवाक्स्तम्भनं भवेत् ॥१६॥
एकत्रिंशेन यन्त्रेण वाहानां दन्तिनामपि । रक्षा भवति तद्भूषु खननाद्धारणादपि ॥१७॥
द्वात्रिंशेनाम्बुधौ पोता न क्लिष्यन्ति कदाचन । पारं प्रयान्ति चाक्लेशाद्विचित्रा यन्त्रशक्तयः ॥१८॥
षोडशानां तु नित्यानां प्रत्येकं तिथिषु क्रमात् । तत्तत्तिथौ तद्भजनं जपहोमादिना चरेत् ॥१९॥
घृतं च शर्करा दुग्धमपूपं कदलीफलम् । क्षौद्रं गूडं नालिकेरं फलं लाजा तिलं दधि ॥२०॥
पृथुकं चणकं मुद्गं पायसं च निवेदयेत् । प्रतिपत्तिथिमारभ्य क्रमात् पञ्चदशस्वपि ॥२१॥
कामेश्वर्यादिशक्तीनां सर्वासामपि चोदितम् । आद्याया ललितायास्तु सर्वाण्येतानि सर्वदा ॥२२॥
निवेदयेच्च जुहुयाद्वह्नौ दद्यान्नृणामपि । विद्याभक्तिमतां नित्यमभीष्टावाप्तयेऽनिशम् ॥२३॥
तत्तद्विद्याक्षरप्रोक्तमौषधं तत्प्रमाणतः । संपिष्य गुलिकीकृत्य ताभिः सर्व च साधयेत् ॥२४॥
अर्घ्यान्ततर्पणं नित्यं स्नानपानानुयोजनम् । पाटीरसंयुतं भाले धारणं सर्वसिद्धिकृत् ॥२५॥
राज्ञां विशेषतो रक्षां कुर्यादेतैस्तु नित्यशः । स्नाने पाने धारणे च गुलिकायोजनेन वै ॥२६॥
रोगापमृत्युकृत्यादिदोषा ग्रहसमुद्भवाः । न बाधन्ते ततो नित्यमर्चयेत् स्वगृहे क्वचित् ॥२७॥

॥ कामेश्वरी प्रयोगः ॥

सारांश – उत्तरार्ध में श्लोक २१ के अनुसार प्रतिपदा को कामेश्वरी नित्या व ललिता त्रिपुर सुन्दरीका पूजन करें। अन्य मत से प्रतिपदा को ललिता तथा द्वितीया से जब चन्द्रकला बढ़नी शुरु होती है तब से कामेश्वरी आदि नित्याओं का प्रत्येक तिथि के अनुसार पूजन करें। पूर्णिमा को ज्वालामालिनी का पूजन करें पश्चात् पुनः कृष्णा प्रतिपदा से कामेश्वरी तथा अमावास्या को चित्रा का पूजन करें।

अधिकांशतः प्रतिपदा को कामेश्वरी से क्रमशः पूजन कर पूर्णिमा को चित्रा का पूजन करते हैं। पश्चात् कृष्ण पक्ष में विलोम क्रम से पूजन करते हैं।

कामेश्वरी मूल मन्त्र – **ऐं सकल ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः।**

कादिमत से पंचकामा मन्त्र – **ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं।**

इस विद्या के आठ तरह के काम्य मंत्र प्रयोग बनते हैं।

१. ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं। **२. ह्रीं क्लीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं।**
३. ह्रीं क्लीं ऐं ऐं ब्लूं स्त्रीं। **४. ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं ब्लूं स्त्रीं।**
५. ह्रीं क्लीं ऐं स्त्रीं ब्लूं स्त्रीं। **६. ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं ऐं ब्लूं स्त्रीं।**
७. ह्रीं ऐं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं। **८. क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं।**

यदि विद्या को पंचाक्षरीं विद्या रूप में काम में लेना है तो मंत्र इस प्रकार से होंगे –

१. ह्रीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं। **२. ह्रीं क्लीं क्लीं ब्लूं स्त्रीं।**

३. ह्रीं क्लीं ऐं ऐं स्त्रीं। **४. ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं ब्लूं।**

५. ह्रीं क्लीं ऐं स्त्रीं स्त्रीं। **६. ह्रीं क्लीं ब्लूं ब्लूं स्त्रीं।**

७. ह्रीं ऐं ऐं ब्लूं स्त्रीं। **८. क्लीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं।**

इन अष्ट मन्त्रों को **अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं ऐं ऐं ओं औं अं अ:** इन १६ स्वरों से अलग-अलग संयोजन करें तो ८×१६ = १२८ मन्त्र बनेंगे।

॥ यन्त्र रचना ॥

सर्व प्रथम षट्कोण बनायें उसके बाहर तीन वृत्त बनायें। तीन वृत्त को बनाने से दो वीथिका (गली) बनेगी उन वीथिकाओं में एक में ८ स्वरों से युक्त ८ मन्त्र लिखे (या कल्पना करें) दूसरी विथिका में ८ स्वरों से युक्त पूर्व वाले ८ मन्त्र लिखें तो ८×८ = ६४ (चौसठ-चौसठ) मन्त्र दोनों वीथिकाओं में होंगे। षट्कोण के मध्य में **ह्रीं** बीज युक्त साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। (यदि सकाम प्रयोग नहीं करना है तो कामेश्वरी का ध्यान करें)। षट्कोण में भी **ह्रीं** लिखें। दूसरा बीज **क्लीं** लिख कर साध्य का नाम लिखे। सभी कोणों में दूसरा बीज **क्लीं** लिखें ॥२॥

इस तरह पाँचों बीजो को लिखने से ५ तरह के यंत्र बनेंगे।

पुन: **ह्रीं** साध्य का नाम फिर **क्लीं** मध्य में लिखे। उल्टे व सीधे दो त्रिकोण बनाने से षट्कोण बनता है, उन कोणों में **ऐं** बीज लिखें। कोणों के पास में **ब्लूं** बीज लिखें, षट्कोण के बाहर **स्त्रीं** बीज छ: जगह लिखें तो ये तीन प्रकार के अलग यन्त्र प्राप्त होंगे। इन यन्त्रों को अलग-अलग बीजकूटों से बनाने से छ: यन्त्र बनेंगे।

यदि पूर्व की तरह तीन वृत्त बनायें तथा दोनों यन्त्रों के बीच की विथिकाओं में ४-४ मन्त्र बीजाक्षर व स्वरो के योग से लिखें तो यह सातवां यन्त्र बनेगा।

यदि स्वरों के अनुस्वार के साथ विसर्ग लगाकर मन्त्र लिखें तो यह आठवाँ यन्त्र बनेगा।

॥ यन्त्र पूजन ॥

अष्ट यन्त्रों के मध्य कलश रखकर कामेश्वरी का पञ्चाक्षरी बीज मन्त्र से पूजन करें तथा उस कलश के द्रव्य से अभिषेक करने से सभी कष्ट दूर होवे।

गन्ध, पुष्प, केसर, नैवेद्य, कदलीफल, दूध, क्षीरान्न, शर्करा आदि अर्पण से सभी ऐश्वर्य की प्राप्ति होवे।

द्वादशाक्षर अनावृत्त मन्त्र - असकल हरनत यमदव।

इस मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को सोहल स्वरों के साथ जपने से १६×१२ = १९२ वर्णों का मन्त्र बनता है।

यदि इन १९२ अक्षरों के ६-६ अक्षरों के यन्त्र बनायें तो १९२/६=३२ यन्त्र बनेंगे।

अर्थात् यदि प्रत्येक षट्कोण में ६ अक्षर लिखें, दूसरे में ७-१२, तीसरे में १३ से १८ इस तरह ३२ यन्त्र बनेंगे। प्रत्येक यंत्र का पूजाफल उत्तरार्ध में श्लोक १ से १८ तक दिया गया है।

घृत, शर्करा, अपूप, दुग्ध, पायस, गुड़, नारिकेल, अर्पण करें। तिल व लाजा सहित होम करें तो अभिष्ट पूर्ण होवे।

॥ इति कामेश्वर्या: प्रयोगविधि: ॥

॥ २. अथ भगमालिनी नित्या प्रयोग:॥

मन्त्र – ऐं भगभुगे भगिनी भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनेभगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जूं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हृः ब्लें ह्रीं।

विनियोग – अस्य मन्त्रस्य श्री सुभगाय ऋषिः, गायत्री छन्दः, भगमालिनी देवता, हरब्ले बीजं, श्रीं शक्तिः, ह्रीं कीलकं, श्रीत्रिपुरा सिद्धये विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – ॐ सुभगाय ऋषये नमः शिरसि। मुखे गायत्रीछन्दसे नमः। हृदये श्रीभगमालिनी देवतायै नमः। गुह्ये हरब्लें बीजाय नमः। पादयो श्रीं शक्तये नमः। नाभौ ह्रीं कीलकाय नमः। ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास – ॐ हृदयाय नमः। ॐ भगसुभगे शिरसे स्वाहा। ॐ भगिनी शिखायै वषट्। ॐ भगोदरि कवचाय हुं। ॐ भगमाले नेत्रत्रयाय वषट्। ॐ भगावहे अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

अरुणामरुणाकल्पां सुन्दरीं सुस्मिताननाम् । त्रिनेत्रां बाहुभिः षड्भिरुपेतां कमलासनाम् ॥
कह्लार पाश पुण्ड्रेक्षुकोदण्डान् वामबाहुभिः । दधानां दक्षिणैः पद्ममंकुशं पुष्पसायकम् ॥

॥ यंत्रपूजनम् ॥

पट्टे पर कुंकुमादि से एक चतुरस्र बनाये उस पर चार अंगुल की वीथी(गली) रखते हुये दूसरा चतुरस्र बनाये। वीथी में पश्चिम में द्वार बनाये। चतुरस्र के मध्य में पंचदल बनाये। उसकी कर्णिका में दो वृत्त बनाये मध्यवृत्त में योनि बनाये उसके विभाग करके १३५ त्रिकोण करे (कल्पना करे) अगर बना सके तो विधि आगे दी गई विधि से बनाये। दोनों वृत्त के अंतरलाल में २० त्रिकोण बनाये (कल्पना करे) विधि यथा–

चतुरस्त्रद्वयेन चतुरंगुलान्तरालां समचतुरस्त्रां वीथीं कृत्वा तस्या पश्चिम भागे मध्ये द्वारं विधाय। तस्य चतुरस्त्रस्य मध्ये पंचदलं पद्मं विरञ्च। वृत्तद्वययुक्तायां तत्कर्णिकायां समत्रिरेखां कर्णिकामध्य वृत्त स्पष्ट कोणाग्रकां यथामानां योनिं कृत्वा तस्या एकां रेखां चतुर्विंशतिधा विभज्य तैरंशैस्त्रयोविंशति चिह्नानि कृत्वा तस्यास्तिसृषु रेखास्वपि तथा कृत्वा तेष्वेकांशमानमभितस्त्यक्त्वा तदन्तः प्राग्वत्समत्रिरेखां योनिं विधाय तस्यां योन्यामेकां रेखामेकविंशतिधा विभज्य तेषु विंशतिचिह्नानि प्रतिरेखमिति रेखात्रयेऽपि प्रत्येकं कृत्वा तेषु बाह्याभ्यन्तर चिह्नेषु चिह्ना चिह्न मिति क्रमेण पंचचत्वारिंशद् रेखास्तिर्यग्रूपाः प्रतिपार्श्वं विलिखेदिति एवं कृते बाह्यरेखाग्राण्याभ्यन्तर रेखाग्राणि च त्रिकोणानि पंचत्रिंशदधिक शतसंख्यानि संभवन्ति। तदन्तस्त्र्यस्त्ररेखात्रय स्पृष्टरेखं भ्रमेण वृत्तं निष्पाद्य तदन्तरेपि तद्व्यास पंचमांशमान भ्रमेण वृत्तं विधाय, तदन्तरेऽप्येकांशमाने वृत्तान्तरं कृत्वा पूर्ववृत्तयोर्विष्कम्भ षोडशांश सहितं विष्कंभमानं त्रिगुणीकृत्य तत्र समुदायमानं दशधा विभज्य तेष्वेकैकांशेन चिह्नानि परितस्तद् वृत्तद्वये प्रतिवृत्तं दश दश विधाय। तेषु क्रमेण बाह्याभन्तरं तस्माद्बाह्यमिति गोमूत्रिकाक्रमेण तिर्यग्रूपा विंशति रेखा विलिखेत्। एवं कृते बाह्याभ्यन्तर वृत्तस्पष्टाग्राणि च त्रिकोणान्यभितो विंशति संख्यकानि संभवन्ति।

॥ पूजन प्रयोग॥

भद्रपीठ की अरुणा विमलादि नव पीठ शक्तियों का अर्चन कर देवी से आवरण पूजा की आज्ञा मांगे।

भगमालिनी देवी का ध्यानपूर्वक आवाहन करे-

१. देवी के पृष्ठभाग में वृत्त के अंदर पूर्वपूजन (कामेश्वरि) प्रयोग वत् **प्रकाशानंदादि** गुरुपंक्तित्रयं का पूजन करे।

२. पंचदल में पूर्व, अग्निकोण, ईशान, नैऋति, वायव्य एवं देवी के अग्रभाग में मंत्र के **हृदयादि षडङ्ग देवताओं** की स्थापना, पूजन करे।

३. द्वार के वाम भाग में **ऐं रागशक्ति पा.**। दक्षिणभाग में **ऐं द्वेषशक्ति पा०**।

४. पंचदल कर्णिका के मध्य योनि में १३५ त्रिकोणों में **ऊँ पंचत्रिंशदधिक शत शक्तिः पा०**।

५. तदन्तर्वृत्तद्वयान्तरालस्थ विंशतिकोणेषु - देवी के अग्र भाग से वामावर्तेन **ऐं मदना पादुकां पूजयामि नमः**।
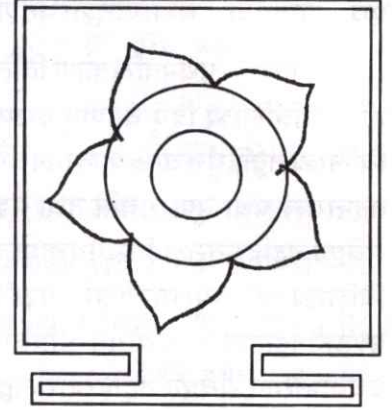
॥ श्री भगमालिनी यन्त्रम् ॥

मोहिनी पा.। लोला पा.। भञ्जिनी पा.। उद्यमा पा.। शुभा पा.। ह्लादिनी पा.। द्राविणी पा.। प्रीति पा.। रति पा.। रक्ता पा.। मनोरमा पा.। सर्वोन्मादा पा.। सर्वसुखा पा.। अभङ्गा पा.। अभितोद्यमा पा.। अनल्पा पा०। व्यक्ति विभवा पा.। विविध विग्रहा पा०। क्षोभविग्रहा पा.।

६. वृतवीथी के ६ भाग करके देवी के आगे से पूजन करे **ऐं इक्षुकोदण्डाय नमः। पाशाय पा.। कह्लाराय पा.। पद्माय पा.। अंकुशाय पा.। पुष्पसायकेभ्यो नमः**। पश्चात् धूप दीप नैवेद्यादि से अर्चन करे।

गायत्री मन्त्र - भगमालिन्यै विद्महे सर्ववशङ्कर्यै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥

॥ अथ कादीक्रमानुसार भगमालिनीनित्याप्रयोगविधिः॥

(श्रीतन्त्रराजे)

काम्यहोममथो वक्ष्ये नानाभीष्टाप्तिदायकम् । त्रिमध्वक्तैः पुण्डरीकैर्होमाद्विप्रान् वशं नयेत् ॥१॥
आरग्वधैस्तु राजानं करवीरैस्तु वैश्यकम् । उत्पलैर्वशयेच्छूद्रं वनिता जपया हुतैः ॥२॥
बिल्वैर्लक्ष्मीर्भवेद्होमे भूम्याढ्यः कमलैर्हुतात् । कैरवैर्वाहनावाप्तिर्दरपुष्पैर्महद्यशः ॥३॥
सौभाग्यं चम्पकैः सिद्ध्यै रक्तसौगन्धिकैर्हुनेत् । तगरैर्वस्त्रसंसिद्ध्यै पुन्नागैर्भूषणाप्तये ॥४॥
मधूकैः कन्यकासिद्ध्यै पलाशैः स्वर्णसिद्धये । किंशुकेरंशुकावाप्त्यै पाटलैः पशुसिद्धये ॥५॥
रक्तोत्पलैः सर्वसिद्ध्यै होमयेत्परमेश्वरि । अथ यन्त्राणि वक्ष्यामि वांछितार्थप्रदानि तु ॥६॥
चन्दनागुरुकर्पूरकस्तूरीकुंकुमैर्लिखेत् । सर्वाणि सर्वतो यन्त्राण्यभीष्टावाप्तिकामुकः ॥७॥
सुवर्णे रजते ताम्रे त्वंशुके भूर्जपत्रके । धारणं मूर्ध्नि बाहौ वा कण्ठे कट्यां प्रकोष्ठके ॥८॥
निधाय क्वापि पूजां वा कुर्याद्यन्त्राण्यशेषतः । षट्कोणं वृत्तयोर्मध्ये कृत्वा तन्मध्यतस्तथा ॥९॥

योनिं विलिख्य तन्मध्ये मायां साध्यसमन्विताम्। विलिख्य कोणत्रितये बहिः षट्केऽपि संलिखेत् ॥१०॥
एकैकं वृत्तयोर्मध्ये शेषार्णानि समालिखेत् । बहिर्मातृकयावेष्ट्य वृत्तान्तर्बिन्दुयुक्तया ॥११॥
एवं यन्त्राणि मन्त्रार्णैर्दशभिर्दशभिर्भवेत् । चरमेऽमृतषष्ट्यैव शेषं सम्पूरयेच्छिवे ॥१२॥

अस्यार्थः – **प्रथमतस्त्रिकोणं विलिख्य तद्बहिः षट्कोणं कृत्वा तद्बहिर्वृत्तचतुष्टयं विलिख्य मध्ये साध्यनामगर्भ ह्रींकारं विलिख्य त्रिषु कोणेषु प्रथमाक्षरमारभ्य मूलमन्त्रस्याक्षरत्रयं विलिख्य, ततः षट्सु कोणेषु षडक्षराणि विलिख्य तद्बहिर्वृत्तचतुष्टयान्तराल त्रयेऽभ्यन्तरान्तराले मूलमन्त्रस्य दशमबीजं विलिख्य, तत एकादशाक्षरमारभ्य तदन्तरालं यथा पूर्ण भवति तथा पञ्चविंशत्युत्तरशतमूलमन्त्रार्णैः संवेष्ट्य, तद्बहिरन्तराले बिन्दुयुक्तमातृकाक्षरैः संवेष्ट्य तद्बहिरन्तराले विसर्गयुक्तमातृकाक्षरैः संवेष्टयेत्। एवं दशभिर्दशभिर्मूलमन्त्रार्णैः कृत्वा त्रयोदश यन्त्राणि विलिख्यावशिष्टमूलमन्त्राक्षरैः पञ्चभिः सहामृतपञ्चकं संयोज्य, दशभिरक्षरैः प्राग्वद्यन्त्रं विलिख्यामृतपञ्चकं षण्ठहीनद्वादशस्वरसंयोगेन षष्टिबीजानि कृत्वा तानि बिन्दुयुक्तानि विसर्गयुक्तानि च विंशत्युत्तरशतवर्णैः प्रथमान्तराले संवेष्ट्य तद्बहिरन्तरालद्वये बिन्दुविसर्गमातृकाभ्यां वेष्टयेदिति चतुर्दश यन्त्राणि विलिखेत्॥**

॥ अमृतपञ्चकस्योद्धारमाह तत्रैव ॥

ज्या कं दावोऽम्बु हृत् स्वेन माययामृतपञ्चकम् । तत्पञ्चकं स्वरैर्भेदादशीतिर्माययया तथा ॥१॥
तथा अशीतिः तैः षण्ठहीनैः षष्टिः स्यान्मायया च तथा भवेत्। षष्ट्या शतं समुद्दिष्टं वर्णेष्वमृतविग्रहम् ॥१॥

तेषां सर्वत्र तन्त्रेस्मिन् विनियोगो विधीयते। ज्या जकारः कं झकारः, दावष्ठकारः, अम्बु वकारः, हृत्सकारः, जझठवस इति। स्वेन बिन्दुना पञ्च। मायया विसर्गेण च योगे पञ्चेत्यर्थः। षष्ठहीनस्वरयुक्तेन षष्टिः। बिन्दुविसर्गाभ्यां १२०। अमृतपञ्चकषोडशस्वरसंयोगेन ८० बिन्दुना विसर्गेण च १६० अक्षराणीत्यर्थः॥

तथा– चतुर्दशानां यन्त्राणां विनियोगं शृणु प्रिये । वश्यमाकर्षणं स्तम्भमारोग्यं विजयं श्रियम् ॥१॥
रक्षां गजाश्वगोमेषमहिषाणामनुक्रमात् । नरनारीनृपाणां च प्रोक्तयोगेन साधयेत् ॥२॥

तथा–अमृतार्णैः समूलार्णैर्लिखिता (? ललिता) रहितैस्तु तैः। नित्याचतुर्दशार्णैश्चाप्येकषष्ट्या शतेन च ॥१॥
षट्पञ्चाशत्समोपेतं चतुः शतमुदीरितिम् । तैर्यन्त्ररचनायोगं फलानि च शृणु प्रिये ॥२॥

अमृतार्णाः षष्ट्युत्तरशतवर्णाः १६० मूलार्णैः पञ्चत्रिंशच्छतवर्णैः १३५ ललितारहितचतुर्दशनित्यानां मन्त्रार्णा एकषष्ट्युत्तरशत वर्णाः १६१ सर्वे षट्पञ्चाशदुत्तरचतुः शतवर्णाः ४५६ भवन्ति।

तथा– त्रिकोणमष्ट पत्राब्जं बहिर्वृत्तद्वयं तथा । विधाय मध्ये मायास्थं कृत्वा नाम त्रिकोणजम् ॥१॥
अन्तरालत्रयस्थं च बहि पत्राष्टगामि च । चतुर्दशार्णमालालिख्य बृत्तमध्ये तु मातृकाम् ॥२॥
विलिख्यार्चाहुतजपसेकसिद्धानि योजयेत् । त्रयस्त्रिंशत्तमं यन्त्रं सशक्त्यमृतपञ्चकैः ॥३॥

अस्यार्थ :– **प्रथमतस्त्रिकोणं विलिख्य तदुपरि वृत्तं कृत्वा, तल्लग्रान्यष्टदलानि विरच्य तद्बहिर्वृत्तद्वयं कुर्यादिति यन्त्रं निर्माय मध्ये साध्यनामगर्भ ह्रींकारं विलिख्य त्रिषु कोणेषु तदन्तरालेषु षडबीजानि विलिख्याष्टदलेष्वष्टबीजानि विलिखेदिति प्रागुक्तवर्णसमुदायात् प्रथमतश्चतुर्दशाक्षराणि विलिख्य बहिर्वृत्तद्वयान्तराले मातृकाक्षरैर्वेष्टयित्वा त्रयस्त्रिंशत्तमयन्त्रस्यावशिष्टमूलवर्णाष्टके मायाबीजयुक्तामृतपञ्चकं संयोज्य चतुर्दशाक्षराणि पिधाय प्राग्वत्पूरयेत्॥**

॥ फलानि ३३ यन्त्राणां क्रमेणाह॥

ज्वरे घोरे शीतिकायां तथा चातुर्थिके गदे । स्फोटे मसूरिकायां च नेत्रार्त्यां कुक्षिसम्भवे ॥१॥
यक्षराक्षसगन्धर्वपिशाचोरगपीडने । बालग्रहार्तौ दौर्भाग्ये वन्ध्यात्वे वैरिपीडने ॥२॥
वादे चोन्मादके राजक्रोधे चौरभये तथा । डाकिन्यादिगणैः षड्भिराक्रान्त्यां ब्रह्मरक्षसैः ॥३॥
प्रमेहकामलाछर्दिदोषजेषु त्रिषु क्रमात् । योजयेदुक्तविधिना त्रयस्त्रिंशदितीश्वरि ॥४॥
कामेश्वर्यादिनित्यानां साधारणसमर्चनम् । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सर्वाङ्गाङ्गित्वयोगतः ॥५॥
तासां पञ्चदशानां तु मन्त्रवर्णाः समीरिताः । शतद्वयं षण्णवतिः (२९६) तैश्चक्रं तत्र पूजनम् ॥६॥
प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च रेखाविंशतिमालिखेत् । तेन कोष्ठानि जायन्ते चतुरस्त्राणि पार्वति ॥७॥
शतत्रयं त्वकषष्ट्या तेष्वीशादिप्रदक्षिणम् । प्रवेशगत्या विलिखेद्यावत्संख्यं यथान्तरम् ॥८॥
पञ्चषष्टिस्तेषु दिक्षु प्रागादिक्षु चतुष्टयम् । अवशिष्टं भवेत्तेषु दिक्स्थेष्वेकीकृतेषु च ॥९॥
मायां चतुष्टयान्तस्थमालिखेद्वाञ्छितं क्रमात् । एकोनपञ्चाशत्कोष्ठेष्वेकीभूतेषु तत्र वै ॥१०॥
पद्मं चतुर्दशदलं बहिर्वृत्तद्वयं तथा । लिखित्वा कर्णिकामध्ये योनिं मायोदरां लिखेत् ॥११॥
दलेष्वपि तथा शक्तिं चतुर्दशसु संलिखेत् । भगमालां मध्यशक्त्यामावाह्याभ्यर्चयेद्बहिः ॥१२॥
पश्चिमादि तु वाय्वन्तमन्या आवाह्य पूजयेत् । यथाक्रममिदं चक्रमासां साधारणं भवेत् ॥१३॥
मध्ये मध्ये तु या पूज्या शेषास्तत्तद्वहाश्रिताः । यथाक्रमेण चित्रान्ताः पूजेयेद्रक्तविग्रहाः ॥१४॥
चतुरस्त्रद्वयं बाह्ये कृत्वा द्वाराणि दिक्षु च । द्वाराणां पार्श्वयोः कोणेष्वर्चयेद् द्वादश क्रमात् ॥१५॥
ब्राह्मी माहेश्वरी द्वारे पश्चिमे सव्यदक्षिणे । कौमारी वैष्णवी सौम्ये वाराह्यैन्द्री च पूर्वके ॥१६॥
चामुण्डा समहालक्ष्मीर्याम्ये वाय्वादिकोणगाः । देशकालौ तथाकारशब्दौ प्रोक्तक्रमेण वै ॥१७॥

अथैतद्यन्त्ररचनाप्रकारः

तत्र प्राक्प्रत्यगायता विंशतिरेखा दक्षिणोत्तरायता विंशतिं कोष्ठानि कृत्वा तेषु कोष्ठेष्वीशानगतकोष्ठमारभ्य प्रवेशगत्या प्रादक्षिण्येन पञ्चदशनित्यामन्त्राक्षराणि प्रोक्तानि षण्णवत्युत्तरशतद्वयसंख्यकानि (२९६) विलिख्यावशिष्टपञ्चषष्टिकोष्ठेषु प्रागादिदिक्षु कोष्ठचतुष्टयक्रमेण षोडशकोष्ठानि मार्जयित्वा तेषु साध्यनामगर्भ ह्रींकारं प्रतिदिशं विलिख्य मध्येऽवशिष्टान्येकोन पञ्चाशत्कोष्ठान्येकीकृत्य सकर्णिकं चतुर्दशदलकमल कृत्वा, तद्बहिर्वृत्तद्वयं विधाय कर्णिकामध्ये त्रिकोणं विलिख्य तन्मध्ये ह्रीमिति बीजं विलिख्य दलेष्वपि मायाबीजं विलिख्य बहिश्चतुरस्त्रद्वयं चतुर्द्वारयुक्तं कुर्यादिति यन्त्रं विलिख्य, मध्ये भगमालामावाह्य चतुर्दशदलेषु पश्चिमादिवाय्वन्तं नित्यक्लिन्ना दिविचित्रान्ताश्चतुर्दश नित्या आवाह्य पूजयेत्। अत्र मध्ये या नित्या पूज्यते तत्परतो नित्यामारभ्य चतुर्दश नित्याः पूजयेत्। तद्बहिश्चतुर्द्वारपार्श्वेषु ब्राह्म्यादिशक्तीः सम्पूज्याग्नेयादिकोणेषु देशकालाकारशक्तीः सम्पूजयेत्॥

तथा-पूजयेत्प्रोक्तरूपैस्तु प्रोक्तरूपाश्च ता यजेत् । उपचारैश्चासवैश्च मत्स्यैः मांसैः सुसंस्कृतैः ॥१॥

अपूपैः पायसैर्दुग्धैः सुश्रीतैः सितसंयुतैः । कदलीपनसाद्यैश्च फलैर्मधुभिरेव च ॥२॥
नैवेद्यैः प्रीणयेद् देवीं नृत्यगीतादिभिस्तथा । एकरात्रं त्रिरात्रं च पञ्चरात्रं तु सप्त वा ॥३॥
नवरात्रं तथा पक्षं मासं पूर्णादिकं तु वा । वर्ष वा फाल्गुनान्तं वा स्यात् समस्तार्तिनाशनम् ॥४॥
ग्रहाणां प्रातिकूल्येषु दीर्घरोगेषु वैकृते । देवतानामथोत्पाते त्रिविधे त्वभिचारके ॥५॥
दारिद्र्ये विजयप्राप्त्यां दुर्भिक्षे शत्रुपीडने । कृच्छ्रेष्वन्येषु घोरेषु पूजैषा सर्वकामदा ॥६॥
पीठे वा सुसमे कृत्वा वेदिकामण्डपे तु वा । कृत्वैतत् प्रोक्तरूपं च प्रोक्तद्रव्यैस्तथार्चयेत् ॥७॥
नमेरुचम्पक अशोकपुंनागबकुलाम्बुजैः । मल्लिकामालती - जातीशतपत्रोत्पलादिभिः ॥८॥
सुगन्धिभिस्तथान्यैश्च पूजयेत् पूर्णमानसः । एतद्विद्या भक्त्युपास्तियुतानन्यांश्च पूजयेत् ॥९॥
अथान्यदपि देवेशि चक्रमद्भुतदर्शनम् । योन्यर्णवाख्यं वनितागर्वपर्वतवज्रकम् ॥१०॥
षड्विंशांगुलमानेन कृत्वा योनिं समे तले । तत्र द्व्यैंगुलमानेषु सूत्राण्येकादशार्पयेत् ॥११॥
तेनात्र योन्यो जायन्ते त्रिकोणानि शतात्परम् । चत्वारिंशच्च चत्वारि तेषु मन्त्राक्षराणि तु ॥१२॥
प्रादक्षिण्यप्रवेशेन विलिखेत्तु निरन्तरम् । मध्येऽवशिष्टनवके नववर्गसमन्विते ॥१३॥
नाथान् नव लिखेत् पश्चात् साध्याख्यां कर्मसंयुतात् । सर्वत्र विलिखेद्भूमौ भूय आवर्तनेन तु ॥१४॥
अर्धरात्रे तु तां साध्यां स्मरन्मदनवह्निना । दह्यमानां हृतस्वान्तां मस्तकस्थापिताञ्जलिम् ॥१५॥
विकीर्णकेशीमालोललोचन अरुणारुणाम् । वायुप्रेङ्खुत्पता कास्थपटोपमकलेवराम् ॥१६॥
विवेकविधुरां मत्तां मानलज्जाभयातिगाम् । चिन्तयन्नर्चयेच्चक्रं मध्ये देवीं दिगम्बराम् ॥१७॥
जपादाडिमबन्धूककिंशुकाद्यैः समर्चयेत् । अन्यैः सुगन्धिशेफालिकुसुमाद्यैः सुगन्धिभिः ॥१८॥
त्रिसप्तरात्रादायाति प्रोक्तरूपा मदाकुला । यावच्छरीरपातं सा छायेवानपगामिनी ॥१९॥

॥ भगमालिनी प्रयोग:॥

सारांश - प्रारंभ में श्लोक १ से ८ तक कामना फल दिया गया है।

भगमालिनी का मूल मन्त्र - ऐं भगभुगे भागिनि........मे वशमानय स्त्रीं ह्र ब्लें ह्रीं।

यह मन्त्र एक सौ पैंतीस अक्षर का है।

॥ प्रथम प्रकार यन्त्र रचना॥

यन्त्र रचना के लिये प्रथम त्रिकोण बनाये फिर षट्कोण बनाकर चार वृत्त बनाये। वृतों के मध्य में ३ वीथिकाऐं (गलीयाँ) बनेगी।

त्रिकोण मध्य में **ह्रीं** मन्त्र के साथ साध्य (अथवा देवता) का नाम लिखें। त्रिकोण के तीनों कोणों में **ऐं, भ, ग,** ये तीन अक्षर लिखे। षट्कोणों में **भु, गे, भ, गि, नी, भ** ये छः अक्षर लिखें। पश्चात् वृत्तों की प्रथम वीथिका में दशम अक्षर **गो** लिखे, फिर **दरि भगमाले........ब्लें ह्रीं** ये शेष १२५ वर्ण लिखकर यन्त्र पूरा करें।

दूसरी विथिका में **अं आं......कं खं.......लं क्षं** मातृका वर्ण लिखें। तीसरी वीथिका में **अः आः......कः खः......लः क्षः** इस तरह विसर्ग युत पूरी मातृका लिखें।

यदि वीथिका में पूरा मंत्र नही लिखें तथा प्रथम वीथिका मे केवल १० अक्षर लिखें तो १३ यन्त्र बनेंगे। तथा मन्त्र के ५ वर्ण शेष रहेंगे। इन ५ वर्णों के साथ **ज झ ठ व स** (अमृत पंचक) और लिखें तो १४ वे यन्त्र के लिये १० अक्षर प्राप्त हो जायेंगे।

पहले की तरह यन्त्र बनायें, वृत्त बनायें। अमृत पंचक **(ज झ ठ व स)** के प्रत्येक वर्ण के साथ १२ स्वर **(ऋं, ॠं, लृं, लॄं** से हीन) मातृका संयोग करें तो १२×५ = ६० अक्षर प्राप्त होते हैं। यदि विसर्ग युत स्वर **(अः आः....)** लिखते हैं तो भी ६० अक्षर होते है। बिन्दु, विसर्ग युत पूरा मंत्र **(ज झ ठ व स)** प्रत्येक वर्ण के साथ करने से ६०+६० = १२० अक्षर होते हैं। १६ स्वरो से मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के साथ विसर्ग युत होने से १६×५ = ८० तथा बिन्दु युक्त स्वरों के संयोग से १६×५ = ८० अक्षर का मन्त्र बनता है। स्वरों के बिन्दु युक्त एवं विसर्ग युत पंचाक्षर वर्णों के संयोग से ८०+८० = १६० वर्णाक्षर हुये।

१४ वें यन्त्र में वृत्तों की प्रथम विथिका में शेष ५ वर्ण **(य, स्त्रीं, ह्, ब्लूं ह्लीं)** एवं **ज, झ, ठ, व, स** ये १० अक्षर लिखें। दूसरी विथिका में १२० वर्णाक्षर लिखें तथा तीसरी वीथिका में १६० वर्णाक्षर लिखें।

इस तरह यह प्रथम प्रकार के यंत्रो की रचना हुई।

॥ द्वितीय प्रकार यन्त्र रचना॥

अन्य रचना के अनुसार त्रिकोण, वृत्त, अष्टदल के बाद दो वृत्त बनायें। त्रिकोण मध्य मे **ह्लीं** मन्त्र के साथ साध्य (देव या व्यक्ति, अथवा **भगमालिनी**) लिखें। त्रिकोण के अन्दर ३ व बाहर ३ अक्षर मन्त्र के प्रारम्भ के लिखें। पश्चात् अष्टदल में ८ वर्ण (सातवें से १४ वे अक्षर तक) लिखें। पश्चात् वीथिका में मातृका वर्ण लिखें। वृत्त के बाहर मन्त्र के १५ वें अक्षर से शेष अक्षर लिखकर **ज, झ, ठ, व, स** ये ५ वर्ण लिखकर वेटन करे।

भगमालिनी के मन्त्र के वर्णों की संख्या १३५ एवं भगमालिनी के अलावा शेष १४ नित्याओं के वर्णों की संख्या १६१ है। कुल २९६ वर्ण होते हैं। १६० पूर्व वर्णाक्षर मिलाने से ४५६ वर्ण होते हैं।

॥ तृतीय प्रकार यन्त्र रचना॥

पूर्व-पश्चिम तथा उत्तर-दक्षिण में २०-२० रेखायें खींचने से ३६१ कोष्ठक बनेंगे। बाहरी कोष्ठक से अन्दर की ओर ईशान दिशा से प्रारंभ कर सभी नित्याओं के २९६ मन्त्र वर्ण लिखें। शेष ६५ कोष्ठक बचते है। शेष में पूर्वादि दिशाओं के ४-४ कोष्ठक छोड़ने पर शेष ४९ कोष्ठक बचते हैं।

उनके मध्य में बाहर से अन्दर की ओर १४ दल कमल बनायें उसके नीचे दो वृत्त बनायें। उसके मध्य में त्रिकोण बनायें। त्रिकोण में **ह्लीं** के साथ **साध्य का नाम** लिखें।

यन्त्र मध्य में भगमालिनी का पूजन, १४ कमल दल में शेष १४ नित्याओं की पूजा करें (नित्यक्लिन्ना से विचित्रा, कामेश्वरी तक)। यन्त्र के बाहर चार द्वार युक्त भूपुर बनायें। उसमें ब्राह्मी, माहेश्वरी, पश्चिम द्वार के दोनों ओर, कौमारी एवं वैष्णवी उत्तर द्वार के दोनों ओर, वाराही, ऐन्द्री पूर्वद्वार के दोनों ओर, चामुण्डा, महाकाली दक्षिण द्वार के दोनों ओर पूजा करे।

भूपुर के वायुकोण में **वायव्यै नमः**, ईशान में **ईशान्यै नमः** अग्निकोण में **अग्नये नमः**, नैऋत्य में **नैऋत्यै नमः**, से पूजन करें। फलश्रुति शेष श्लोक १ से १९ तक है।

॥ इति भगमालिनी प्रयोगः॥

|| ३. अथ नित्यक्लिन्ना नित्या प्रयोग: ||

मंत्र – ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा।

ऋषिन्यास से विनियोग मंत्र बना लेवे।

ऋषिन्यास – शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः। मुखे विराज छंदसे नमः। हृदये श्री नित्याक्लिन्नानित्यायै देवतायै नमः। गुह्ये ह्रीं बीजाय नमः। पादयोः स्वाहा शक्तयै नमः। नाभौ न्रे कीलकाय नमः। सर्वाभीष्टसिद्धये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास – ह्रीं हृदयाय नमः। नित्य शिरसे स्वाहा। क्लिन्ने शिखायै वषट्। मद कवचाय हुं। द्रवे नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

वर्णन्यास – हृदये ह्रीं नमः। दक्षनेत्रे निं नमः। वामनेत्रे त्यं नमः। दक्षश्रोत्रे क्लिं नमः। वामे वामश्रोत्रे न्नें नमः। दक्षिणनासायां मं नमः। वामनासे दं नमः। त्वचि द्रं नमः। लिङ्गे वें नमः। गुदे स्वां नमः। पादयो हां नमः।

|| ध्यानम् ||

अरुणामरुणाकल्पामरुणां शुकधारिणीम् । अरुणस्त्रग्विलेपां तां चारु स्मेरमुखाम्बुजान् ॥
नेत्रत्रयोल्लसद्वक्त्रां भाले धर्माम्बुमौक्तिकैः । विराजमानां मुकुटलसदर्धेन्दु शेखराम् ॥
चतुर्भिर्बाहुभिः पाशमंकुशं पान पात्रकम् । अभयं बिभ्रतीं पद्मामध्यासीनां मदालसाम् ॥

|| यंत्रपूजनम् ||

|| श्री नित्यक्लिन्ना यन्त्रम् ||

स्वर्णादिपट्ट पर कुंकुमादि से दो शिवा वाला एक चतुरस्त्र बनाये उसके पूर्व पश्चिम में दो द्वार बनाये। मध्य में त्रिकोण बनाकर ऊपर अष्टदल बनाये। त्रिकोण का मुंह नीचे होवे।

१. मध्य में देवी के षडङ्गो की हृदयादि न्यास मंत्रों से पूजा करे। देवी के पृष्ठभाग में **प्रकाशनंदादि गुरुपंक्ति त्रय** का पूजन करे।

२. त्रिकोण में **ह्रीं श्रीं क्षोभिणी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं श्रीं मोहिनी पा.। ह्रीं श्रीं लोला पा.।**

३. चतुरस्त्र में देवी अग्रभाग के द्वार के दक्षिण में – **ॐ ह्रीं श्रीं मदाबिलापा पादुकां पूजयामि नमः।** उत्तरे – **ॐ ह्रीं श्रीं मङ्गला पा.।**
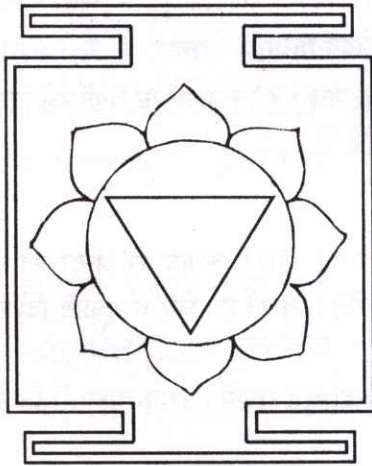
४. अष्टदले – **ॐ ह्रीं श्रीं मन्मथार्ता पादुका पू.तर्पयामि नमः। मनस्विनी पा.। मोहा पा.। आमोदा पा.। मानमयी पा.। माया पा.। मन्दा पा.। मनोवती पा.।** पश्चात् सर्वविधपूजन प्रयोग करे।

गायत्री मन्त्र – नित्यक्लिन्नायै विद्महे नित्यमदद्रवायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥

॥ अथ कादीक्रमानुसार नित्यक्लिन्ना प्रयोगविधिः॥

(श्रीतन्त्रराजे)

विद्यायाः साधनं सम्यक्समीहितफलप्रदम् । शृणु देवी प्रवक्ष्यामि प्रयोगार्हो यतो भवेत् ॥१॥
जितेन्द्रियो हविष्याशी त्रिसन्ध्यार्वारतो भवेत् । प्राग्वल्लक्षं तद्दशांशं कुर्याद्धोमं च तर्पणम् ॥२॥
मधूकपुष्पैर्मध्वक्तै र्बकुलोत्थैरथापि वा । चन्द्रचन्दनकस्तूरी वासितैस्तर्पयैज्जलैः ॥३॥
ततो विद्याप्रयोगार्हो नित्यार्चानिरतस्तथा । सहस्त्रजापी तद्भक्तः कुर्यादुक्तं नचान्यथा ॥४॥
पद्मं रक्तैस्त्रिमध्वक्तैर्हो माल्लक्ष्मीमवाप्नुयात् । तथैव कैरवै रक्तैरङ्गनास्तु वशं नयेत् ॥५॥
समानरूपवत्सायाः शुक्लायाः गोः पयःप्लुतैः । मल्लिकामालतीजाती - शतपत्रैर्हुतैर्भवेत् ॥६॥
कीर्तिविद्याधनारोग्य - सौभाग्य - विजयादिकम् । आरग्वधप्रसूनैस्तु क्षौद्राक्तैर्हवनाद्भवेत् ॥७॥
स्वर्णाप्तिः तम्भनं शत्रोः, नृपादीनां क्रुधोऽपि च । आज्याक्तैः करवीरोत्थैः प्रसूनैररुणर्हुतैः ॥८॥
रक्ताम्बराणि वनिताभूपामात्यवशं तथा । भूषावाहनवाणिज्य - सिद्धयश्चास्य वाञ्छिताः ॥९॥
लवणैः सर्षपैर्गौरैरितरैर्वाथ होमतः । तत्तैलाक्तैर्निशामध्ये त्वानयेद्वाञ्छितां वधूम् ॥१०॥
तैलाक्तैर्जुहुयात् कृष्णादरपुष्पैर्निशान्तरा । मासादरातिस्तीव्रार्तिर्ज्वरेण भवति ध्रुवम् ॥११॥
आरुष्करघृताभ्यक्तैस्तद्बीजैर्निशि होमतः । शत्रोर्देहे व्रणानि स्युर्दुःसाध्यानि चिकित्सकैः ॥१२॥
आरुष्करघृतं भल्लातकतैलम् । तद्बीजैर्भल्लातकबीजैः ॥
तैरेव दलिताङ्गस्तु रिपुर्याति यमालयम् । तथा तत्तैलसंसिक्तै र्बीजैरङ्कोलकैरपि ॥१३॥
मरिचैः सर्षपाज्याक्तैर्निशि हौमात्तुः मासतः । वाञ्छितां वनितां कामज्वरार्तामानयेद् ध्रुवम् ॥१४॥
मरिचैः सर्षपोपेतैः सप्तरात्रं हुतेर्निशि । धैर्यमानकुलैर्नित्यं दुष्प्रापामानयेद्वधूम् ॥१५॥
अन्नज्यैर्जुहुयान्नित्यं शतमष्टोत्तरं तु वा । तेनान्नपूर्णो भवने भोक्ता च भवति प्रिये ॥१६॥
शालीभिराज्ययुक्ताभि र्होमाच्छालीमवाप्नुयात् । मुद्गैर्मुद्गं घृतेराज्यमिष्टैरिष्टं हुतर्भवेत् ॥१७॥
साध्यर्क्षवृक्षसम्भूत पिष्टपादरजः कृताम् । राजीमरिचलोणोत्थां पुत्तलीं जुहुयान्निशि ॥१८॥
प्रपदाभ्यां च जङ्घाभ्यां जानुभ्यामूरुयुग्मतः । नाभेरधस्ताद्धृदयाद्विन्नेना - कण्ठतस्तथा ॥१९॥
शिरसा च सुतीक्ष्णेन छित्त्वा शस्त्रैण वै क्रमात् । एवं द्वादशधा होमान्नरनारीनराधिपाः ॥२०॥
वश्या भवन्ति सप्ताहाज्ज्वरार्ताश्चास्य वाञ्छया । प्रयान्ति निधनं चास्य वाञ्छयानन्ययोगतः ॥२१॥

अत्र साध्यनक्षत्रसम्भूतपिष्ट - साध्यपादरजो धूली राजीमरिचलवणैरेभिः पञ्चद्रव्यैरेकैकपुत्तलिका प्राक्प्रयोगोक्तप्रकारेण कृतप्राणप्रतिष्ठा। प्रपदाभ्यां १ जङ्घाभ्यां २ जानुभ्यां ३ ऊरुयुग्मतः ४ नाभेरधस्तात् ५ हृदयान्नाभिपर्यन्तं ६ कण्ठतो हृत्पर्यन्त ७ शिरः ८, एवमाहुत्यष्टकम् ॥ तथा-

पिष्टेन गुडयुक्तेन मरिचैर्जीरकैर्युतम् । कृत्वा पुत्तलिकां साध्यनामयुक्तामथो हृदि ॥२२॥

सनामहोमसम्पातघृते सम्पाच्य तां पुनः । स्पृशन् निजकराग्रेण सहस्त्रं प्रजपेन्मनुम ॥२३॥
अभ्यर्च्य तद्घृताभ्यक्तं भक्षयेत्तद्धिया जपन् । नरनारीनृपास्तस्य वश्याः स्युर्मरणावधि ॥२४॥

अस्यार्थ :- प्राग्वदगुड़युक्ततण्डुलपिष्टमरिचजीरकैः पुत्तलिकां कृत्वा तस्या हृदि साध्यनाम विलिख्य, क्वचिदग्निं संस्थाप्य साध्यनामविदर्भितमूलमन्त्रेण घृतेनैव सहस्त्रं हुत्वोद्देशत्यागं कृत्वा क्वचिद्भाण्डे कृत्वा तत्सम्पाताज्ये मूलमन्त्रं जपन् तां पुत्तलिकां पक्वान्नवत् सम्पाच्य, पुनर्निजकराग्रेण तां स्पृशन् मूलं साध्यविदर्भितं सहस्त्रं जपित्वा तस्यां देवतामावाह्याभ्यर्च्य ''अमुकं मे वशमानय, अमुकदेवतापादुकां पूजयामि'' इति प्रत्यावरणशक्तिं सम्पूज्य, धूपदीपादिकं सर्वं प्राग्वत्समाप्य प्राक्प्रोक्तसम्पाताज्यसहितां तां मूलं जपन् तद्धिया भक्षयेदुक्तफलं भवति॥ तथा-

तैरेव पिष्टैर्वृत्तं तु कृत्वा तन्मध्यतस्तथा । साध्यनाम स्फुटं कृत्वा प्राग्वत्सम्पाच्य भक्षणात् ॥२५॥
वश्यास्ते वत्सरं भूयुस्तन्नामार्णान्वितस्तथा । कृत्वा विपाच्य खादंस्तु वशयेत् तांस्तदर्धकम् ॥२६॥

अस्यमर्थ :- प्रागुक्तपिष्टैर्वर्तुलाकारां मुद्रां कृत्वा प्राग्वद्भक्षयेद्वत्सरमात्रं वश्या भवेयुः। अथ साध्यनामविदर्भितं मूलं जपन् प्रोक्तविधिं विनापि षण्मासमध्ये वश्या भवेयुः। तदुत्तरं पुनः कुर्यादित्यर्थः॥ तथा-

नारिकेलफलाम्भोभिस्तर्पणाद्वनिता वशाः । कर्पूरवासितैस्तोयैर्मनुष्याः स्युर्वशे स्थिताः ॥२७॥
तर्पणाल्लवणाम्भोधिजलैः सर्वेऽस्य किंकराः । तथा लवणयुक्तेन तोयेन वनिता वशाः ॥२८॥
शुद्धेन वारिणा मासं तदर्धं सप्तरात्रकम् । तर्पयेद्यस्य नाम्नैव स तस्य स्याद्वशेऽनिशम् ॥२९॥
केतकैर्वासितैरिन्दुयुक्तैः केलफलोदकैः । तर्पणाद्वनिता वश्या दद्युः प्राणान्निजं धनम् ॥३०॥
नमेरुवासितैस्तोयैस्तर्पणाद्भूमिपा वशम् । चम्पकैर्वासितजलैस्तर्पणं सर्वरञ्जनम् ॥३१॥
पाटलीशतपत्राभ्यां वासितैस्तस्तर्पणं जलैः । सर्वलोकचमत्कारकारी भवति नित्यशः ॥३२॥
कस्तूरीवासिताम्भोभिस्तर्पणं सर्वसिद्धिकृत् । इन्दुचन्दनसौरभ्यवासिताम्भः प्रतर्पणम् ॥३३॥
वाञ्छितार्थसुसंसिद्धिं मण्डलात् कुरुते ध्रुवम् । सक्तुमिश्रजलैराढ्यो धनधान्यादिभिश्चिरम् ॥३४॥
गुडमिश्रजलै रात्रौ तर्पणं विघ्ननाशनम् । चिञ्चाफलरसोपेतैर्जलैर्द्वेषाय तर्पयेत् ॥३५॥
उष्णोदकैः समरिचैस्तर्पयेद्वैरिमृत्यवे । केवलोष्णोदकैस्तस्य तीव्रज्वरसमुद्भवः ॥३६॥
निम्बपत्ररसोपेतैरम्बुभिस्तर्पणं द्विषाम् । जायतेऽन्योन्यवैरस्यं येन ते नाशमाप्नुयुः ॥३७॥
तथैव सर्षपतिलैस्तर्पणाद्वैरिणो भृशम् । अतीसारादिभिर्दोषैरौदरैः क्लेशमाप्नुयुः ॥३८॥
स्पष्टार्थः-अथ यन्त्राणि देवेशि शृणु वाञ्छाप्रदानि वै । यैः कृतैः सिद्धयो हस्ते भवन्ति भजनादपि ॥३९॥
षट्कोणवृत्तयोर्मध्ये कृत्वा वृत्तं सनामकम् । विद्याद्यवर्णं विलिखेद् द्वितीयादीनि षट् क्रमात् ॥४०॥
षट्सु कोणेषु विलिखेच्छिष्टमर्णचतुष्टयम् । वृत्तयोरन्तरा दिक्षु लिखेत् कोणान्तरालतः ॥४१॥
भूताक्षराणि क्रमशो दश द्वित्रिक्रमेण तु । एवमेकादशविधं मध्येऽन्येषां निवेशनात् ॥४२॥

****

भूताक्षराणि प्रत्येकयोगात् पञ्चशतान्वितम् । पञ्चकं परमेशानि शृणु तानि यथाक्रमम् ॥४३॥
एषु सर्वत्र तद्बाह्ये वृत्तं कृत्वा च मातृकाम् । विलिखेदभितः पश्चाद्विनियोगमथोच्यते ॥४४॥
वश्ये त्रयमथाकर्षे द्वयं शान्त्यां द्वयं तथा । मध्ये नामाक्षरन्यासभेदास्तद्भेदकल्पनम् ॥४५॥
एवं तत्फलभेदस्तु सप्तविंशतिधा भवेत् । शेषाणि शृणु देवेशि क्रमेण विनियोगतः ॥४६॥
स्तम्भनं मोहनं पश्चाद्विद्वेषोच्चाटनं तथा । मारणं व्याधिभिः क्लेशं कुलोत्सादकरं तथा ॥४७॥
गजाश्वोष्ट्रखराणां च रक्षा महिषमेषयोः । गवां नराणां नारीणां विजयः समरे द्विषाम् ॥४८॥
द्वन्द्वयुद्धे तथा वादे व्यवहारेषु सर्वतः । द्यूते च रक्षा नगरग्राममण्डलके तथा ॥४९॥

अस्यार्थ:- प्रथमतो वृत्तं विधाय तद्बहिः षट्कोणं विलिख्य तद्बहिर्वृत्तत्रयं विधाय, मध्ये नित्यक्लिन्ना विद्याक्षरेष्वेकादशसु प्रथमबीजं साध्यनामयुक्तं विलिख्य, षट्सु कोणेषु द्वितीयबीजादिषड्बीजानि विलिख्या वशिष्टार्णचतुष्टय षट्कोणाद्बहिर्वृत्तद्वयान्तराले चतुर्दिक्षु विलिख्य, तद्बहिरन्तराले तत्तत्कार्यानुगुण्यभूतार्णदशकं द्वित्रिक्रमेण चतुर्दिक्षु विलिख्य, तद्बहिः पुनर्वृत्तं कृत्वा तदन्तराले मातृकावर्णैर्वेष्टयेदिति प्रथमयन्त्रम्। द्वितीययन्त्रे मध्ये मूलमन्त्रस्य द्वितीयाक्षरं विलिख्य शेषं प्राग्वल्लिखेदिति द्वितीयं यन्त्रं भवति। एवं तृतीयादिबीजानां तृतीयादीनि यन्त्राणि भवन्ति। एवमेकादश यन्त्राणि जायन्ते। एवमेकादशयन्त्राणां सप्तविंशतिप्रयोगा भवन्ति।

यथा - त्रिविधवश्ये द्वितीयं यन्त्रम्। द्विविधशान्त्यां तृतीयं यन्त्रम्। अन्येषामष्टयन्त्राणां प्रतियन्त्रं स्तम्भनादि प्रयोगत्रयं प्रयोगत्रयं ज्ञेयं, मध्ये साध्याक्षरलेखनभेदेन प्रयोगभेदस्तत्तत्कार्यानुसारि भूतार्णदशकलेखनभेदश्च ज्ञातव्य इत्यर्थः॥

॥ अथ यन्त्रान्तरोद्धारमाह ॥

विद्यायां पुनरुक्तानि हित्वा वर्णानि तान्यपि । एकादश स्युस्तैः प्राग्वत्स्वरयोगान्महेश्वरि ॥५०॥
षट्सप्तत्या शतं प्रोक्तं वर्णानां मन्त्रगामिनाम् । प्रोक्तयन्त्रेषु विलिखेदेकादशविभागतः ॥५१॥
मातृकाविद्ययावेष्ट्य कुर्यात् तन्नामयोजनम् । षोडशानां च यन्त्राणां विनियोगमथोच्यते ॥५२॥

अस्यार्थ:- मूलविद्यायाः पुनरुक्तवर्जितानि अनावृत्तान्यक्षराणि एकादश भवन्ति "हरनतयकलमदवस" इति। एते षोडशस्वरयोगेन षट्सप्तत्युत्तरशतं (१७६) वर्णा भवन्ति। प्राग्वदेषु वर्णेषु एकादशैकादशवर्णानामेकमेकं यन्त्रं विलिखेदेवं षोडश यन्त्राणि जायन्ते॥

॥ तेषां फलान्याह ॥

प्रथमेन तु यन्त्रेण कन्यकाः स्ववशं नयेत् । तेनैव तासामार्तिं च शमयेत् सेकधारणैः ॥५३॥
स्वस्थावेशं च तेनैव कुर्यान्मन्त्रं जपन् धिया । तन्मयीं भावयेत्कन्यां धूपं सर्जरसैर्दहेत् ॥५४॥
आविष्टे तां समभ्यर्च्य प्रोक्तैस्तैरुपचारकैः । पृच्छेत् तान्वांछितानर्थानाचष्टे स्वात्मानस्तदा ॥५५॥
ततोऽभ्यर्च्यात्मना योज्य तां तदात्मा भवेत्स्वयम् । तासामावेशमन्यैश्च शमयेत्तस्य धारणात् ॥५६॥
द्वितीयेन तु यन्त्रेण कर्पटे गैरिकद्रवैः । लिखितेन जयेद्वादे प्रतिवादिनमन्तरा ॥५७॥
स्थापनात्तस्य नियतमतिप्रौढोऽपि तत्क्षणात् । स्तब्धजिह्वो निरुद्योगः शुष्कास्यो लोललोचनः ॥५८॥

विलोकयन् दश दिशस्त्यक्तलज्जः पलायते । पतेद्वा पादयोः क्षिप्रं जितोऽस्मीति त्वयावदन् ॥५९॥
तृतीयेन निशापिष्टतोयेन लिखितेन तु । कर्पटे खर्परे वापि स्थापितेनोष्णभूतले ॥६०॥
चुल्ल्यधो वा दिनैर्द्वित्रैः स्तम्भयेत् सुदृढं रिपोः । रोषं गतिं मतिं जिह्वां समरं सर्वमेव च ॥६१॥
आयान्तमग्रतो रात्रौ मार्गमध्ये खनेदिदम् । बलिं दद्यात्तु तद्योन्यां तन्नक्षत्रोक्तया पुनः ॥६२॥
तेन तत्पृतना भ्रष्टा रुग्णा गतसमुद्यमा । भीता न तत्मुखा जातु घटते यन्त्रवैभवात् ॥६३॥
चतुर्थेनारिनक्षत्रवृक्षोत्थफलकातले । लिखितेन पुरोक्तेन स्थापितेन रिपोः पुरे ॥६४॥
नाशमेति रिपुः कृच्छ्रैर्वैरिरोगादिसम्भवैः । तेषु तेषु प्रयोगेषु कुर्याद्रक्षामथात्मनः ॥६५॥
पञ्चमेनाथ षष्ठेन सप्तमेनाष्टमेन च । नवमेन च कुर्वीत रक्षां राष्ट्रपुरालये ॥६६॥
प्रागादिषु चतुर्दिक्षु वह्न्यादिष्वस्त्रदिक्ष्वपि । मध्ये च स्थापयेद्यन्त्रं ताम्रपट्टेषु कल्पितम् ॥६७॥
क्रमेण नवमं मध्ये स्थापयेदुक्तयोगतः । स्वराष्ट्रे नगरे राजगृहे प्रोक्तक्रमात्खनेत् ॥६८॥
तेन वैरिकृताः कृत्याप्रयोगाः क्रूरविग्रहाः । प्रवेष्टुमत्राशक्तास्ते नाशयन्ति प्रयोजकम् ॥६९॥
दशमं राजते पट्टे विलिख्य कवचं दधत् । रणं वीरः प्रविश्याशु नाशयेद् द्रावयेच्च तत् ॥७०॥
एमादशं निशातोयघृष्टगैरिकलेखनात् । कर्पटे स्थापितं शीघ्रं शमयेद्भूभृतां रणम् ॥७१॥
द्वादशेनेन्दुकाश्मीरलिखितेन धृतेन तु । भूर्जपत्रपुटे सम्यक्सर्वरक्षा भवेन्नृणाम् ॥७२॥
त्रयोदशेन यन्त्रेण तालपत्रकृतेन तु ।ताललिप्तेन कुड्यान्तःस्थापितेनार्चितेन च ॥७३॥
गृहरक्षा भवेद्व्याधिचोरग्रहभुजङ्गमात् । राजतो वैरितो बाधादन्यक्षुद्रादितस्तथा ॥७४॥
चतुर्दशेन यन्त्रेण भूर्जपत्रस्थितेन वै । धृतेन कामिनीनां तु सौभाग्यमतुलं भवेत् ॥७५॥
तथा पञ्चदशेनापि स्वर्णपट्टधृतेन तु । वन्ध्यापि लभते पुत्रं गुणाढ्यं दीर्घजीवितम् ॥७६॥
षोडशेनोक्तरूपेण साभिषेकं धृतेन वै । सपत्नीष्वधिका तेन भर्तुः सात्यन्तवल्लभा ॥७७॥
भूर्जस्थेन धृतेनैव सर्वेषामपि सर्वदा । रक्षा भवति मर्त्यानां राजचौरग्रहादितः ॥७८॥

॥ नित्यक्लिन्ना प्रयोगः॥

सारांश – प्रारभ में श्लोक १ से १७ अलग-अलग कामना हेतु द्रव्य होम विधान दिया गया है। शत्रु के नाम से आठवां चन्द्रमा हो, आपके अनुकूल ग्रह हो तथा उग्र नक्षत्र जेष्ठा, मूल, मघा, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, नक्षत्र हो उस दिन पुतली बनाकर शत्रु हेतु प्रयोग करें।

इस कार्य के लिये शत्रु के पैर की मिट्टी, राई, मिर्च, लवण, सरसों इत्यादि से शत्रु की पुतली बनायें। उसके पैर, जंघा, जानु, ऊरू, नाभि, हृदय एव कण्ठ में अंगों की कल्पना कर प्राण प्रतिष्ठा करें। अथवा गुड़, चावल, मिर्च, जीरा, लवण से पुतली बनाकर प्राण प्रतिष्ठा करे। उसके हृदय में साध्य का नाम लिखकर दस हजार जप करें तो वश में होवे।

पुतली के अंगों को काटकर गोली बनाकर भक्षण करें तो साध्य वश में होवे। श्लोक २७ से ३८ तक अलग अलग तर्पण प्रयोग फल दिये गये हैं।

मूल मन्त्र – ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा।

॥ यन्त्र रचना ॥

वृत्त बनायें उसके मध्य में **ह्रीं** तथा साध्य का नाम लिखें। पश्चात् षट्कोण बनायें। उसके एक-एक कोण में **नि, त्य, क्लि, न्ने, म, द** लिखें। षट्कोण पर दो वृत्त बनायें, दोनों वृत्तों के बीच की वीथिका में पूर्वादि दिशाओं में **द्र, वे, स्वा, हा** लिखें।

वृत्त के बाहर पुनः वृत्त बनायें। दोनो के बीच की जगह में पूर्वादिक्रम से **नित्य, क्लिन्ने म, द द्र, वे स्वाहा** इस प्रकार लिखकर पुनः वृत्त बनाकर **अं आं......हं लं क्षं** मातृका वर्णों से वेष्टन करें।

इसी तरह मन्त्र का दूसरा अक्षर **नि** मध्य में लिखकर शेष वर्णों को पूर्व की तरह लिखें तो दूसरा यन्त्र होगा। यदि तीसरा वर्ण **त्य** मध्य में लिखकर मन्त्र के शेष अक्षरों को लिखते हैं तो तीसरा यन्त्र बनेगा। इस तरह ११ वर्णों को प्रत्येक में एक-एक मध्य में लिखकर शेष वर्णों को षट्कोण व वृत्त में लिखने से ११ तरह के यन्त्र बनेंगे।

मूल विद्या का अनावृत्त मन्त्र **ह, र, न, त, य, क, ल, म, द, व, स** एकादश अक्षर का है। प्रत्येक वर्ण के साथ **अं आं..... अं अः** १६ स्वर युक्त मातृका लिखने से १६×११= १७६ वर्ण का मन्त्र बनता है।

यदि पूर्व में जो यन्त्र विधि दी है उसमें प्रत्येक स्वर मातृका के साथ **ह, र, न, त, य, क, ल, म, द, व, स** ये ११ वर्ण को लिखकर वेष्टन करें तो १६ मातृकाओं से १६ यन्त्र प्राप्त होगे जिनका प्रयोग फल श्लोक ५३ से ७८ तक प्राप्त है।

॥ इति नित्यक्लिन्नाप्रयोगः ॥

॥ ४. अथ भेरुण्डा नित्या प्रयोग ॥

मंत्र – १. ओं क्रों भ्रों क्रों झ्रों छ्रों ज्रों स्वाहा।
२. ओं क्रों भ्रों क्रों च्रों छ्रों ज्रों झ्रों स्वाहा।

ऋष्यादिन्यास के अनुसार विनियोग जाने।

ऋष्यादिन्यास – **शिरसि ॐ महाविष्णवे नमः। मुखे गायत्रीछंदसे नमः। हृदये श्रीभेरुण्डा नित्यादेवतायै नमः। गुह्ये भ्रां बीजाय नमः। पादयो स्वाहाशक्तये नमः। नाभौ क्रों कीलकाय नमः। सर्वाभीष्ट सिद्धये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यास – **क्रों हृदयाय नमः। भ्रों शिरसे स्वाहा। क्रों शिखायै वषट्। झ्रों कवचाय हुं। छ्रों नेत्रत्रयाय वौषट्। ज्रों अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

तप्तकांचन सङ्काशदेहां नेत्रत्रयान्वितम् । चारुस्मिताञ्चितमुखीं दिव्यालङ्कारभूषिताम् ॥
ताटंकहार केयूररत्नस्तवक मंडिताम् । रसानानूपुरोर्म्यादि भूषणैरतिसुंदरीम् ॥
पाशांकुशौ खेटखड्गौ सदावज्रधनु शरान् । करैर्दधानामासीनां पूजायामन्यदास्थिताम् ॥
शक्तीश्च तत्समाकार तेजोहेतिभिरन्विताः । पूजयेत्तद्वदभितः स्मितसौम्यमुखां सदा ॥

वर्णन्यास – **ब्रह्मरन्ध्रे ॐ नमः। आज्ञायां क्रों नमः। मुखे भ्रों नमः। कण्ठे क्रों नमः। हृदि झ्रों नमः। नाभौ छ्रों नमः। त्रों नमः मूलाधारे। स्वां नमः दक्षपादे। वामपादे हां** नमः।

॥ यंत्रपूजनम् ॥
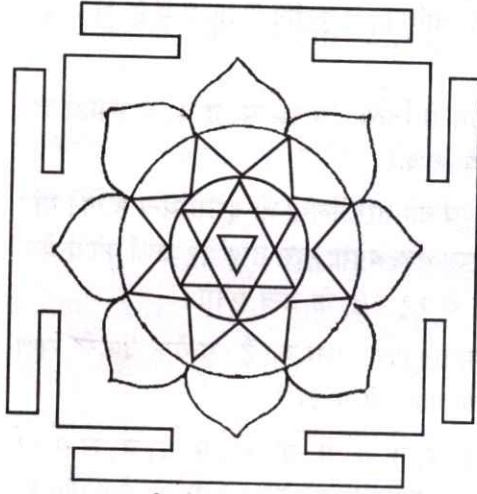
॥ श्री भेरुण्डा यन्त्रम् ॥

स्वर्णादिपट्ट पर कुंकुमादि से त्रिकोण, षट्कोण, अष्टकोण, वृत्त, अष्टदल बनाये उसके बाहर दो रेखा वाला चारद्वार युक्त भूपुर बनाये।

प्रथमावरणम् – मध्य में देवी के चारों ओर ६ दिशाओं में हृदयादि षडङ्गन्यास देवताओं का पूजन करे। तथा **प्रकाशनंदादि गुरुत्रयपंक्ति** का पूजन करे।

द्वितीयावरणम् – भूपुर के चारों द्वारों के दोनों पार्श्वभागों में पूजन करे–उत्तरद्वार के दोनों ओर **ह्रीं श्रीं ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि। माहेश्वरी पा.** (पा. का अर्थ पादुका पूजन से है)। पश्चिमद्वार के पार्श्वभागों में **कौमारी पा.। वैष्णवी पा.।** पूर्वद्वार के दोनों ओर **वाराही पा., इन्द्राणी पा.।** दक्षिणद्वार के दोनों ओर **ह्रीं श्रीं चामुण्डा पा., ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी पा.।**

तृतीयावरणम् – (भूपुरे) वायुकोणे **ह्रीं श्रीं कृतयुगशक्ति पा.।** ईशाने **त्रेतायुगशक्ति पा.।** आग्रेये **द्वापरयुग** शक्ति **पा.।** निर्ऋतिकोणे **कालियुगशक्ति पा.।**

चतुर्थावरणम् – (अष्टदले) **ह्रीं श्रीं विजया पा.। विमला** पा.। **शुभा पा.। विश्वा पा.। विभूति पा.। विनता पा.। विविधा पा.। विमना पा.।**

पंचमावरणम् – (अष्टकोणे) **ह्रीं श्रीं कमला पा.। कामिनी पा.। किराती पा.। कीर्ति पा.। कुर्दिनी पा.। कुलसुंदरी पा.। कल्याणी पा.। कालकोला पा.।**

षष्टमावरणम् – (षट्कोणेषु) वामाग्रकोणे – **डाकिनी पा.।** दक्षिणाग्रकोणे **राकिनी पा.।** पृष्ठकोणे **लाकिनी पा.।** पृष्ठवामाग्रकोणे **काकिनी पा.।** दक्षिणपृष्ठकोणे **शाकिनी पा.।** देव्यग्रकोणे **हाकिनी पा.।**

सप्तमावरणम् – (त्रिकोणे) **इच्छाशक्ति पा.। ज्ञानशक्ति** पा.। **क्रियाशक्ति पा.।**

अष्टमावरणम् – देवी के पृष्ठ से दक्षिण भाग की ओर **ह्रीं श्रीं** शरेभ्यो **नमः पा.। खड्गाय नमः पा.। अंकुशाय नमः पा.। पाशाय नमः पा.।** देवी के पृष्ठभाग से वामभाग ४ स्थानों की कल्पना करे उनमें **गदायै नमः पा.। चर्मणे नमः पा.। धनुषै नमः पा.। वज्राय नमः पा.।**

नवमावरणम् – (भूपुरे)पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों का पूजन करे।

दशमावरणम् – में उनके आयुधों का पूजन करे। पश्चात् सर्वोपचार पूजन करे। इस विद्या का प्रयोग शत्रु निग्रह में कार्य करता है शत्रु का उच्चाटन होता हैं।

गायत्री मन्त्र – **भेरुण्डायै विद्महे विषहरायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥**

॥ अथ कादीक्रमानुसार भेरुण्डा नित्या प्रयोग विधिः॥

(श्रीतन्त्रराजे)

स्नातो मौनी पयोभक्षः प्रजपेन्नवलक्षकम् । तद्दशांशं हुनेदग्नौ त्रिमध्वक्तैः कुशेशयैः ॥१॥
तावच्च तर्पयेत्तोयैरिन्दुनन्दनवासितैः । अर्चयेन्नित्यशो देवीं सहस्रं प्रजपेदपि ॥२॥
ततः स्वगुरुणोद्दिष्टप्रयोगान् विधिना चरेत् । अन्यथा निष्फलं भूयात्प्रत्युतैनं निहन्ति च ॥३॥
द्वितीयाद्यैस्त्रिभिर्बीजैः षष्ठेन च समीरितम् । निग्रहाख्यमथान्यैस्तु त्रिभिरन्त्यद्वयेन च ॥४॥
षट्कोणं वृत्तयुग्मं च कृत्वा तन्मध्यतो लिखेत् । द्वितीयार्णं साध्ययुतं कोणेष्वन्यत् त्रयं लिखेत् ॥५॥
अधरेषु समायानि तानि लेख्यानि सर्वदा । वृत्तयोरन्तरा साध्यसमेतैः पवनार्णकैः ॥६॥
सम्वेष्ट्य तानि सञ्जप्य रिपोरष्टमराशिगे । श्मशाने स्थापयेत्तत्र लग्ने विद्वेषणं भवेत् ॥७॥

अस्यार्थः – षट्कोणं विलिख्य तद्बहिर्वृत्तद्वयं विधाय भेरुण्डाया मूलनवार्णस्य द्वितीयाक्षरं साध्यनामगर्भं ''अमुकामुकयोर्विद्वेषणं कुरु कुरु'' इति संयोज्य मध्ये विलिख्य, तृतीयं चतुर्थं षष्ठं बीजत्रयं बिन्दुयुक्तं षट्कोणस्योपरितनकोणत्रये विलिख्य, तान्येव त्रीणि बीजानि षट्कोणस्याधस्तनकोणत्रये विसर्गयुक्तानि विलिख्य तद्बहिर्वृत्तयोरन्तराले वायुवर्णदशकेन साध्यनामगर्भेणावेष्टयेदुक्तफलदं भवति॥ तथा-

निम्बपत्ररसैः पिष्टश्मशानाङ्गारलेखनात् । पृषदाखुत्वचि च तत्सहस्रद्वयजापतः ॥८॥

पृषन्मार्जारः। आखुर्मूषकः।

द्वीपिवक्त्रत्वचि लिखेत्तद्यन्त्रं गोमुखत्वचि । समालिख्यं च संज्ञान्तं पूर्वस्मिन्नुत्तरे रिपोः ॥९॥
उत्तराधरमाधाय शिलाधः सन्ध्ययोर्जपेत् । जपित्वा प्रोक्तसंख्यं च जयेत्तं प्रतिवादिनम् ॥१०॥

रिपोरुत्तरदिशि पूर्वदिशि वा उत्तराधरं उपरिष्टादधस्ताच्छिलाद्वयमित्यर्थः। सन्ध्ययोः प्रातः सायम्। प्रौक्तसंख्यं सहस्रम्।

एतन्मुखावलोकेन प्रतिवादी हतोद्यमः । निरुत्तरः पलायेत जितोऽस्मीति वदेत्तु वा ॥११॥
हरितालेन पिष्टेन निशारसयुतेन तु । विलिखेद्वादविजये यन्त्रमुक्तक्रमेण वै ॥१२॥
रुरुचर्मणि तद्रक्तलिखितं तद्रिपोर्गृहे । प्रोक्तकाले खनेदुक्तक्रमपूजाजपान्वितम् ॥१३॥
उच्चाटयेद्रिपून् मासान्नियतं यन्त्रवैभवात् । नृचर्मणि च तद्रक्तलिखितं तत् श्मशानके ॥१४॥
पूजाजपक्रमोपेतं निखनेदुक्तकालतः । मासेन याति वैरी तु दाहज्वरयुतो यमम् ॥१५॥

तृतीयं मध्यतः कृत्वा त्वितरान् परितो लिखेत्।

तृतीयं प्रोक्तबीजचतुष्टयमध्ये तृतीयं बीजमित्यर्थः। साध्यर्क्षयोनेस्त्वचि तन्मधूच्छिष्टेन पीडितम् ॥१६॥
श्मशानभस्ममिलितं निक्षिप्तं नष्टकूपके । प्रोक्तकालसमोपेतं नाशयेत्सलिले रिपुम् ॥१७॥
तदेव वह्निमूलेन पिष्टेन मनुजासृजा । लिखितं गोत्वचि क्षिप्तं चुल्ल्यामुपरि वह्निना ॥१८॥
ज्वलितेनानिशं मासादग्निनाग्नौ पतेद्रिपुः । तृतीयेन तु मध्येन वेष्टितैरितरैरपि ॥१९॥

तृतीयेन तृतीयबीजेन।

उलूककाकपक्षाभ्यां प्रथमोक्तेन संलिखेत् । गर्दभत्वचि तत्खात्वा कुण्डमध्ये तदूर्ध्वतः ॥२०॥
साध्यवृक्षेन्धने वह्नौ बीजैरुन्मत्तसम्भवैः । कट्वुतैलप्लुतैर्होमान्मत्तोऽरिर्म्रियते ध्रुवम् ॥२१॥
साध्यऽर्क्षवृक्षकीलं तु प्रोक्तयन्त्रसमन्वितम् । खरस्नायुभिराबद्धं खातं वैरिपुरे निशि ॥२२॥
राशो तदष्टमे मासात्तत्पुरं पितृकाननम् । काकोलूकबकश्येनकङ्कतित्तिरिपादयोः ॥२३॥
विलिख्य यन्त्राण्युक्तानि प्रेतचीरे निबध्य तत् । खनेन्मङ्गलवारे तु प्रोक्तकाले चतुष्पथे ॥२४॥
त्रिसप्ताहाद् व्रजेद्वैरी स्यादुन्मत्तो दिशो दश । तान्येव तत्तच्चर्मस्थं तदालयभुवि स्थितम् ॥२५॥
शमयेद्गजमर्त्याश्वगोखरोष्ट्राजसैरिभान् । सप्ताहात् तद्द्वयान्मासान्नियतं यन्त्रवैभवात् ॥२६॥
तच्छान्तिं शृणु देवेशि यन्त्रध्यानाभिषेकतः । तन्मन्त्रवर्णैर्यन्त्रस्थैश्चित्रा मन्त्रार्थवैभवाः ॥२७॥
पद्ममष्टदलं कृत्वा मध्ये त्वाद्यं सनामकम् । लिखित्वाष्टसु पत्रेषु चतुष्कं तद्द्विरालिखेत् ॥२८॥
बहिर्वृत्तान्तरा कुर्यान्मातृकाक्षरवेष्टनम् । प्रागुक्तैरेव तैर्द्रव्यैः सम्पूज्य विनियोगतः ॥२९॥
तत्तत्क्लेशविनाशः स्यात्तथा मन्त्रानुभावतः ।

अत्र निग्रहयन्त्रोक्ताक्षरचतुष्टयं विहायोर्वरिताक्षरपञ्चकमध्ये प्रथमं साध्यनामगर्भं कर्णिकायामर्णचतुष्टयं द्विरावृत्त्याष्टदलेषु लिखेदित्यर्थः॥

विजयं समरे राज्ञां शृणु वैरिविनाशनम् ॥३०॥
मन्त्राक्षराणि प्रत्येकं योजयेत् षोडशस्वरैः । तेन मन्त्राक्षराणि स्युः संख्यया च शतं पुनः ॥३१॥
चत्वारिंशच्च चत्वारि तैर्यन्त्रर चनं शृणु ।

अत्र मूलमन्त्रस्यानावृत्ताक्षराणि करभझछजसवह इति नवाक्षराणि षोडशस्वरयुक्तानि चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशतं १४४ भवन्ति॥

तथा- तेन सर्वत्र समरे विजयो भवति ध्रुवम् ॥३२॥
प्राक्प्रत्यक्दक्षिणोदक् च कुर्याद्रेखास्त्रयोदश । तेन तावन्ति कोष्ठानि सम्भवन्ति समन्ततः ॥३३॥
कृत्वाष्टास्त्रं ततो बाह्ये वृत्तयुग्मं ततो लिखेत् । अक्षराणि शिवाद्यं तु निर्ऋत्यन्तमनुक्रमात् ॥३४॥
तत्तन्मन्त्रार्णकोष्ठेषु नवस्वाख्यां समालिखेत् । बहिरष्टषु कोणेषु द्वितीयार्णादि संलिखेत् ॥३५॥

यस्मिन् यस्मिन् कोष्ठेऽनावृत्ताक्षरं पतितं तस्मिंस्तस्मिन् कोष्ठे साध्यनाम लिखेदित्यर्थः। द्वितीयार्णेति मूलमन्त्रबीजानीत्यर्थः॥

अन्तरालेषु विलिखेदाद्यं वृत्तद्वयान्तरा । तान्येव मातृकाख्याभिर्विदर्भितमथो लिखेत् ॥३६॥

बहिरष्टकोणान्तरालेषु आद्यक्षरं प्रणवमेव लिखेत्। तदन्तर्बहिर्वृत्तद्वयान्तराले मूलमन्त्राक्षरविदर्भितमातृका क्षरैर्वेष्टयेदित्यर्थः॥

एतत्पटे समालिख्य ध्वजीकृत्य रणोद्यमे । दर्शयेत् तेन रिपवः पलायन्ते दिशो दश ॥३७॥
प्रणमेयुर्निजां लक्ष्मीं प्राभृतीकृत्य तत्क्षणात् । तदेव वैरिशिविरे निखनेदुदये शनेः ॥३८॥
सद्यस्त्वन्योन्यकलहान्नाशमेति सुनिश्चितम् । तदेव स्वपुरे मध्ये स्थापयेद्धिषणोदये ॥३९॥
पराभिचारकृत्यादिदुरितानि न तत्र वै । संस्पृशन्ति पुरान्तः स्थाद्यन्त्रशक्त्यनुभावतः ॥४०॥

****

तद्यन्त्रं ताम्रपट्टे तु विलिख्याभ्यर्च्य तत्पुनः । स्थापयेत् साध्यभूभर्तुरेकादशसमुद्यमे ॥४१॥
गजवाजिगृहे स्वस्य भाण्डागारे स्वमन्दिरे । अन्तःपुरे नगर्यास्तु दिक्षु मध्ये च तत्खनेत् ॥४२॥
यत्र संस्थापितं यन्त्रं तत्रार्चां नित्यशो नृपः । कारयेत् तेन तत्सर्वं शाश्वतं वृद्धये भवेत् ॥४३॥
बीजानि तानि प्रत्येकमष्टपत्रसरोरुहे । मध्ये दलेषु परितो लिखेदेकैकशः क्रमात् ॥४४॥
बहिर्मातृकयावेष्ट्य सञ्जप्याभ्यर्च्य नित्यशः । स्वजन्मर्क्षादिनवके कुर्याच्छान्तिमनुक्रमात् ॥४५॥
यन्नक्षत्रे भवेदस्य ग्रहतो राजतोऽपि वा । रोगतो वैरितो वापि तस्मिंस्तत्तेन शामयेत् ॥४६॥

अत्र यन्त्रान्तरमाह। बीजानीति। अष्टदलकमलं विलिख्य मध्ये प्रथमबीजं साध्यनामगर्भं विलिख्यासुष्ट दलेषु द्वितीयाद्यष्टबीजानि बहिर्वृत्तद्वयान्तराले मातृकाक्षरैर्वेष्टयेत्। एवं द्वितीयाक्षरं मध्ये चेद् द्वितीयं यन्त्रं भवति एवं नवयन्त्राणि भवन्तीत्यर्थः॥

तथा -

मन्त्रार्णौषधमध्यस्थं यन्त्रं कृत्वा तु तेन तु । रक्षां कुर्वीत सर्वेषां सर्वापत्तारणाय वै ॥४७॥
तत्तद्यन्त्रं तद्दिनेषु स्नानपानाशनादिना । ग्रहजं वैरिजं दुःखं शाम्यत्येव न संशयः ॥४८॥
क्रमेण नवयन्त्राणि नवग्रहमयानि च । तस्मात् तत्तद्ग्रहक्लेशं तत्तद्यन्त्रेण शाममेत् ॥४९॥
सेकाशनविभूत्यादिप्रयोगैरुदितैः क्रमात् । विविधानि विषाण्येभिर्यन्त्रैर्जलनिवेशनैः ॥५०॥
नाशयेत्पानसेकाभ्यां धारणेनार्चनेन च । एभिस्तु नवभिर्यन्त्रैर्यन्त्र साध्यं न कुत्रचित् ॥५१॥
देशे वा नगरे ग्रामे मण्डले खर्वटादिके । प्रथमं मध्यतः खात्वा प्रागादिषु ततोऽष्टसु ॥५२॥
द्वितीयादीनि तु खनेत्तत्र लक्ष्मीरतिस्थिरा । धर्मार्थौ चातिसम्वृद्धौ भवेतामुक्तयोगतः ॥५३॥
द्वितीयं मध्यतः खात्वा त्वितराण्यभितः खनेत् । धार्मिकास्तेन तत्रस्थाः प्रसीदन्ति च देवताः ॥५४॥
सप्तस्वन्येषु च तथा कान्त्यारोग्यशोबलैः । पुत्रज्ञानधनैश्चाढ्याः प्रभवन्ति च नित्यशः ॥५५॥
दष्टेषु घोरैः फणिभिर्नवभिर्नवरन्ध्रगैः । ध्यातैर्मृतोऽपि माहात्म्यान्मन्त्रस्योत्तिष्ठते ध्रुवम् ॥५६॥
अश्विन्यादिषु ऋक्षेषु नवानि नवसु क्रमात् । विलिख्य देवीं तत्रस्थां नवाकारां नवस्वपि ॥५७॥
पूजयेदुपचारैस्तां नित्यशो भक्तिसंयुतः । प्रागुक्तपरिवारादिरहितां पूजयन्नपि ॥५८॥
सिद्धिमेति नरो भक्त्या परया चेत्समन्वितः । स्त्रीबालवृद्धाशक्तानां गतिरेषा च सिद्धये ॥५९॥
भेरुण्डां कर्णयोर्जप्याद्विषार्तस्य तदैव सः । निर्विषो जायतेऽचिन्त्या मन्त्राणां शक्तयः शिवे ॥६०॥
त्रैलोक्यमोहिनी विद्या सर्वतो भवता स्तुता । न कदाचित् तु सा प्रोक्ता तां मे ब्रूहि महेश्वर ॥६१॥
सर्वेषामेव मन्त्राणां विद्यानां च यशस्विनि । व्याप्तरूपं प्रवक्ष्यामि शृणु त्वमिदमद्भुतम् ॥६२॥
येन नारीनरनृपदेवताः सर्वजन्तवः । भजन्त्येनं यथा मां त्वं तत्प्रयोगबलाद्ध्रुवम् ॥६३॥
अकारादिक्षकारान्तैर्मातृकार्णैः सबिन्दुभिः । प्रत्येकं पुटितान् कृत्वा मन्त्रं विद्यामथापि वा ॥६४॥
विद्यया मातृकावर्णान् पुटयेन्मन्त्रतोऽपि वा । प्रोक्ते तद्यन्त्रनवकेकुम्भं संस्थाप्य वै तथा ॥६५॥

जपतर्पणहोमार्चासिद्धया सेक ईरितः । कुचन्दनैर्गैरिकैर्वा दरदैश्चन्दनैस्तथा ॥६६॥
सिन्दूरैस्तण्डुलैर्मुद्‌गैस्तिलैः कृष्णैः सितैरपि । नवानां नवभिः कुर्यादेभिर्यन्त्रप्रकल्पनम् ॥६७॥
चैत्रादिविषुवद्द्वन्द्वे तथैवायनयोर्द्वयोः । दक्षोत्तराख्ययोर्जन्मत्रितये पर्वणि क्रमात् ॥६८॥
राजा वा राजमहिषी सेनापत्यधिपोऽथवा । अन्यो वा भक्तिशीलाढ्यः कारयेदभिषेचनम् ॥६९॥
दक्षिणामभिषेके च दद्याद्भूरि स्वशक्तितः । वित्तशाठ्यं न कुर्वीत यदि कुर्वीत लोभतः ॥७०॥
संदहेत्तं पावकवत् पुत्रलक्ष्मीकलत्रकैः । तस्मात्सर्वत्र तन्त्रेऽस्मिन् वित्तशाठ्यं न चिन्तयेत् ॥७१॥
अभिषेकफलं देवि शृणु वक्ष्ये यथाविधि । सोमसूर्याग्निरूपेण जलेनेप्सितमन्त्रतः ॥७२॥
जपपूजादिना सिद्धवैभवेनाभिषेकतः । दुर्लक्षणसमुत्थानि तथा दुष्कर्मजानि च ॥७३॥
तद्वद्दुर्नीतिजनितान्यन्यानि दुरितानि च । नाशयेत् तत्क्षणादेव सलिलैरिव पावकः ॥७४॥
अपुत्रो वित्तविद्यायुरारोग्यादिसमन्वितः । लभते च बहून् पुत्रान् सुखी च चिरमेघते ॥७५॥
केमद्रुमादियोगेषु जन्मना प्राक्तनाद्यतः । यो भृशं नित्यदारिद्र्यात् क्लिष्टः सोऽपि श्रियैधते ॥७६॥
प्राग्जन्मसञ्चितैः पापैरपथ्यादिनिषेवणैः । अनीत्या वैरिविहितैरभिचारादिभिस्तु वा ॥७७॥
ये रोगाः पीडयन्त्येनं ते विनश्यन्त्यशेषतः । कान्तिलक्ष्मीधनारोग्यविद्याविजयकीर्तिभिः ॥७८॥
सुचिरं जीवति ख्यातः पुत्रपौत्रादिभिर्युतः । नवाभिषेकं नवसु प्रोक्तेषु विधिना चरन् ॥७९॥
अपमृत्युं विजित्यास्मद्भक्तः शुद्धान्तमानसः । जीवन्मुक्तश्चिरं योगी भुवि जीवति मन्मथः ॥८०॥

॥ भेरुण्डा प्रयोग:॥

मूल मन्त्र – ओं क्रों भेः क्रों चों छ्रों ज्रों झ्रों स्वाहा। (इति दशाक्षर)
नवार्ण मन्त्र में **ओं** नहीं है।

इस विद्या का प्रयोग विद्वेषण एवं उच्चाटन में विशेष कार्य करता है।

॥ प्रथम प्रकार ॥

षट्कोण बनायें, इसके मध्य में **भेः (साध्य का नाम) अमुकामुकयो विद्वेषणं कुरु कुरु** लिखें।

षट्कोण के ऊपरी तीन कोणों में **क्रों, चों, ज्रों** अलग-अलग लिखें। नीचे के तीनों कोणों में **छ्रों, झ्रों, स्वाः** अलग-अलग लिखें। षट्कोण के ऊपर दो वृत्त बनायें, उसके मध्य की जगह में **स्वाहा.......साध्य का नाम** एवं दशाक्षर मन्त्र लिखें। अभिचार, विद्वेषण, उच्चाटन हेतु श्लोक ८ से २५ तक अवलोकन करें।

अभिचार की शान्ति के लिये – अष्ट दल बनायें। मध्य में **क्रों** मन्त्र के साथ साध्य का नाम लिखें। पूर्वादि चार पद्मों मे **भेः। क्रों। चों, छ्रो। ज्रों, झ्रों। स्वाहा** लिखें। पुनः शेष आग्नेय, नैऋत्यादि चारो पद्मदलों में यही वर्णाक्षर पुनः लिखें। बाहर दो वृत्त बनायें, उनके मध्य की जगह में **अं आ.......हं लं क्षं** मातृका वर्ण लिखें। पश्चात् शान्ति हेतु जप कर पंचगव्यादि व त्रिमधु से होम कर यन्त्र साधक को धारण करना चाहिये।

मूल मन्त्र के अनुवृत्त अक्षर **''क, र, भ, झ, छ, ज, स, व, ह''** ये नव वर्ण हैं। प्रत्येक अक्षर के साथ स्वर मातृका

****

(अं आ.......अः) लिखने पर १६×९ = १४४ वर्ण बनते हैं।

पूर्वोक्त यन्त्र को इन १४४ वर्णों से वेष्टन कर यन्त्र धारण करें तो युद्ध में विजय प्राप्त होवे।

॥ द्वितीय प्रकार यन्त्र रचना॥

तेरह-तेरह रेखायें पूर्व-पश्चिम व दक्षिण-उत्तर खींचने से १२×१२ = १४४ कोष्ठक बनेगे। उन कोष्ठको में **"क र भ झ छ ज स व ह"** प्रत्येक के बाद १६ मातृकावर्ण लिखें। पहले कोष्ठक में **"क"** (साध्य का नाम सहित) लिखें फिर १६ कोष्ठकों में स्वर मातृका, पुनः १८ वें कोष्ठक में "र" (साध्य का नाम सहित) पश्चात् १६ कोष्ठकों में पुनः स्वर मातृका लिखें। इस प्रकार मन्त्र के नौ वर्णों के साथ नौ बार स्वर मातृका तथा नौ बार साध्य का नाम आयेगा। मन्त्र ईशान से दक्षिणावर्त लिखें।

१४४ काष्ठकों के बाहर चारों ओर अष्टकोण बनाकर उनके बाहर दो वृत्त बनायें। आठों काणों में **"र, भ, झ, छ, ज, स व, ह"** लिखें वृत्तों के बीच की जगह में **"अं आं........हं लं क्षं"** मातृका वर्ण लिखें।

॥ तृतीय प्रकार यन्त्र रचना॥

अष्टदल बनायें अनुवृत्त मन्त्र का प्रथम अक्षर **"क"** मध्य में लिखें, शेष आठ अक्षर अष्टदल में लिखें। बाहर दो वृत्त बनायें, उनके मध्य की जगह में मातृका वर्ण लिखें। इस तरह मन्त्र के एक-एक वर्ण को मध्य में लिखें शेष वर्णों को अष्टदल में लिखें तो नौ तरह के यन्त्र बनेंगे।

प्रयोग विधि श्लोक ४७ से ८० तक जानें।

॥ इति भेरुण्डानित्याप्रयोगविधि॥

॥ ५. अथ वह्निवासिनी नित्या प्रयोगः॥

मंत्र - ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः।

ऋषिन्यास के अनुसार विनियोग जाने।

ऋषिन्यास - शिरसि वसिष्ठ ऋषये नमः। मुखे गायत्रीछंदसे नमः। हृदि वह्निवासिनी नित्यादेवतायै नमः। गुह्ये ॐ ह्रीं बीजाय नमः। पादयो नमः शक्तियोः। नाभौ वह्निवासिन्यै कीलकाय नमः। सर्वाभीष्टसिद्धये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास - ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

वर्णन्यास - दक्षनेत्रे **"ॐ" नमः**। वाम नेत्रे **ह्रीं नमः**। दक्षकर्णे **वं नमः**। वामकर्णे **ह्नि नमः**। दक्षनसि **वां नमः**। वामनसि **सिं नमः**। मुखे-**न्यै नमः**। लिङ्गे **नं नमः**। गुदे **मं नमः**। मूलमंत्र से व्यापक न्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

तप्तकांचनसंकाशां नवयौवन सुंदरीम् । चारुस्मेरमुखाम्भोजां विलसन्नयनत्रयाम् ॥
अष्टाभिर्बाहुभिर्युक्तां माणिक्याभरणोज्ज्वलाम् । पद्मराग किरीटांशु संभेदारुणिताम्बराम् ॥

पीतकौशेय वसनां रक्तमञ्जीरमेखलाम् । रत्नमौक्तिक संभिन्नस्तबका भरणोज्ज्वलाम् । रक्ताब्ज कम्बु पुण्ड्रेक्षुचाप पूर्णेन्दुमण्डलाम् । दधानां बाहुभिर्वामै कह्लारं हेमशृङ्गकम् ॥ पुष्पेषु मातुलिङ्गं च दधानां दक्षिणैः करैः । स्वसमानाभिरभितः शक्तिभिः परिवारिताम् ॥

॥ यंत्रपूजनम् ॥

॥ श्री वह्निवासिनी यन्त्रम् ॥

मध्य में त्रिकोण बनाये उसके बाहर अष्टकोण बनाते हुये नवयोनिचक्र बनाये। उनके ऊपर दो वृत्त बनाकर द्वादशपत्रपद्म बनाये। उसके ऊपर २ वृत्त बनाये पश्चात पूर्व पश्चिम द्वार युक्त भूपूर बनाये।

१. मध्य त्रिकोण में देवी का आवाहन करे।

२. वृत्त के अभ्यन्तर षडङ्गन्यास देवताओं का स्थापन पूर्व, ईशान, नैऋति, वायव्य, देव्यग्रे एवं दिक्षु दिशा में करे। **प्रकाशानंदादि गुरु** पंक्तित्रयं का पूजन करे।

३. अष्टकोणों में पूर्वादिक्रम से – **ह्रीं श्रीं ज्वालिनी पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। विस्फुलिङ्गिनी पा.। मङ्गला पा.। मनोहरा पा.। कनका पा.। कितवा पा.। विश्वा पा.। विविधा पा.।**
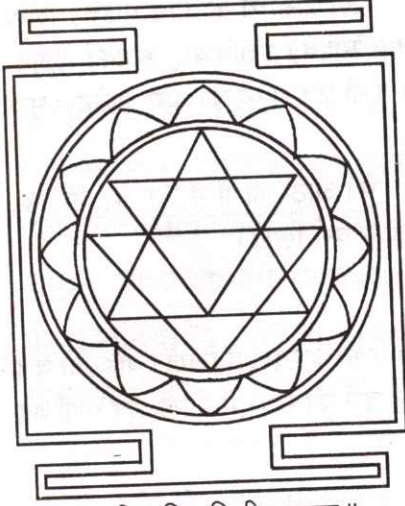
४. द्वादशदले – **ह्रीं श्रीं मेषा पादुका पूजयामि तर्पयामि नमः। वृषा पा.। मिथुना पा.। कर्कटा पा.। सिंहा पा.। कन्या पा.। तुला पा.। कीटा पा.। चापा. पा.। मकरा पा.। कुंभा पा.। मीना पा.।**

५. भूपुरे – पश्चिमद्वार के पार्श्वद्वय से वायव्य, उत्तर, ईशान **पर्यन्तमुद्यस्मरा पा.। सर्वभक्षा पा.। विश्वा पा.। विविधोद्भवा पा.। चित्ररूपा पा.। पूर्व द्वार के दोनों पार्श्व से अग्नि, दक्षिण, निर्ऋति पर्यन्तम् निः सपत्नापादुका. पू. त.। निरातङ्का पा.। पावनी पा.। अचिन्त्यवैभव पा.। रक्ता पा.।**

६. इसके बाद भूपुर में लोकपालों व उनके आयुधों का पूजन करें।

गायत्री मन्त्र – वह्निवासिन्यै विद्महे सिद्धि प्रदायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥

॥ अथ कादीक्रमानुसार वह्निवासिनीनित्याप्रयोगः॥

(श्रीतन्त्रराजे)

विद्यायाः साधनं तद्वत्तन्त्रेऽस्मिन् परमेश्वरि । अन्यतन्त्रानपेक्षित्वादुच्यतेऽत्रैव साधनम् ॥१॥
द्रव्यानुक्तौ होमविधौ घृतमन्नाज्यमेव च । संख्यानुक्तौ सहस्त्रं स्याच्छतं वा तन्त्रचोदितम् ॥२॥
विदध्यादुक्तरूपेण पूर्णत्वं त्वमुनाक्षतम् । काम्यहोमविधिं वक्ष्ये शृणु वाञ्छितदायकम् ॥३॥
शालितण्डुलमादाय प्रस्थं भाण्डे विनिक्षिपेत् । समानवर्णवत्साया रक्ताया गोः पयस्तथा ॥४॥
द्विगुणस्तत्र निक्षिप्य श्रपयेन् संस्कृतेऽनले । घृतेन सिक्तं सिक्थं तु कृत्वा तत्ससितं करे ॥५॥
निधाय विद्यामष्टोर्ध्व शतं जप्त्वा हुनेत्ततः । एवं होमो महालक्ष्मीमावहेत् प्रतिपत्कृतः ॥६॥

सिक्थं पिण्डं, ससितं सितया युतम्॥ तथा–

शुक्रवारेष्वपि तथा वर्षान्नृपसमो भवेत् । पञ्चम्यां तु विशेषेण प्राग्वद्धोमं समाचरेत् ॥७॥

तस्यां तिथौ त्रिमध्वक्तैर्मल्लिकाद्यैः सितैर्हुनेत् । अन्नाज्याभ्यां तु नियतं हुत्वान्नाढ्या भवेन्नरः ॥८॥

यद्यद्धि वाञ्छितं वस्तु तानि सर्वाणि सर्वदा । घृतहोमादवाप्नोति तथैव तिलतण्डुलैः ॥९॥

पञ्चमीषु विशेषेण पूजां कुर्याद् व्रती भवेत् । प्रतिपत्तिथिमारभ्य पञ्चदश्यन्तमम्बिके ॥१०॥

कामेश्वर्यादिचित्रान्ता देव्यस्त्वेकैकविग्रहाः । यतस्तेन स्वस्वतिथौ तास्ताः पूज्या हुतादिभिः ॥११॥

प्रीणयेद् व्रतसङ्कल्पसमेतो भक्तिसंयुतः । तेनायुः श्रीधनारोग्यविद्याकीर्तिसमन्वितः ॥१२॥

जीवेद्वर्षशतं भूमौ स्वकुल्याग्रयश्च तत्त्ववित् । यत्तिथौ यः समाख्याताः स ताः सममवाप्नुयात् ॥१३॥

विद्या विधिवदेवैताः प्रोक्ताः पञ्चदशापि च । सम्प्राप्य जपहोमार्चायोगतर्पणसेकतः ॥१४॥

विद्यया देवतात्मानं सम्प्राप्याखिलमाचरेत् । विद्याप्राप्तिविधिं देव ब्रूहि सम्यङ् ममाधुना ॥१५॥

आसां पञ्चदशानां च येनैताः साधकोन्मुखः । शृणु वक्ष्यामि ते देवि विद्याप्राप्तिविधिं शुभाम् ॥१६॥

येन विद्यादेवताभ्यामैक्यं योगेन सिध्यति । तद्भावमावयोरैक्यरूपमानन्दविग्रहम् ॥१७॥

यदवाप्तुं यजन्तेऽद्याप्यनेके मुनयोऽम्बिके । कुचन्दनैः कुंकुमैर्वा सिन्दूरैर्गैरिकैः शुभैः ॥१८॥

विदध्याद्विपुलं चक्रं व्यक्तरेखं सुशोभनम् । यस्या यच्चक्रमाख्यातं नित्यपूजाविधिक्रमे ॥१९॥

तत्र कुम्भं निधायान्तर्जले सम्पूज्य देवताः । प्रोक्तक्रमसमोपेतं पूर्वेद्युर्गीतनृत्यकैः ॥२०॥

कृत्वोत्सवमथान्येद्युः प्राग्वदभ्यर्च्य तां तथा । तत्तिथौ प्राङ्मुखं शिष्यामुक्तलक्षणसंयुतम् ॥२१॥

तथाविधो गुरः कुम्भजलैस्तमभिषेचयेत् । तज्जलं प्रागुदङ्मध्यदिक्षुगं सर्वसिद्धिदम् ॥२२॥

अन्यासु क्रमतोऽनिष्टान्यवाप्नोति सुनिश्चितम् । वह्निदाहं मृतिं रोगं दारिद्र्यं देशमोचनम् ॥२३॥

क्रमाद्वह्न्यादिवाय्वन्तं फलानि स्युरिमानि वै । ततोऽसौ परिधायाशु शुभ्र शुद्धे च वाससी ॥२४॥

समाचम्य निजैर्वृत्तैः समस्तैर्वा पुरोदितैः । अभ्यर्च्य पादयोर्नाथं पञ्चश्लोकैः स्तुवंस्त्रिशः ॥२५॥

प्रणम्योत्थाय पुरतो बद्धाञ्जलिकरो भवेत् । ततो गुरुस्तमाहूय चक्रमध्ये निवेश्य च ॥२६॥

मनसा भावयन्नैक्यमात्मानं देवतात्मना । प्रोक्तक्रमेण तां देवीं विद्यारूपां महाद्युतिम् ॥२७॥

समावाह्यास्य मूर्धादित्रिषु स्थानेष्वनुक्रमात् । संस्थाप्य प्रोक्तरूपां तां ध्यात्वाभ्यर्च्य वदेन्मनुम् ॥२८॥

जीवकर्णे त्रिशः पूर्णदेवतात्मा समाहितः । ततस्तत्रैव तां विद्यां शतं जप्यात् तदात्मवान् ॥२९॥

पुनस्तदाज्ञयोत्थाय पुष्पैरभ्यर्च्य तं स्तुवन् । प्रणम्य त्रिरुपासीत मूर्ध्नि बद्धाञ्जलिः स्तुवन् ॥३०॥

आहूय क्रममाचारान् प्रोक्त्वा सम्यग्भजेति तम् । आदिशेद्देशिकस्तस्माद्दिनादारभ्य सोऽपि तम् ॥३१॥

नित्यशो जपपूजाद्यैरुपासीत शिवं गुरुम् । एवं पञ्चदशानां च नित्यानां क्रम ईरितः ॥३२॥

विद्याप्राप्तिविधौ देवि सर्वं सम्यक् समीरितम् । तासां नैमित्तिकं काम्यं ललितोक्तविधानतः ॥३३॥

कुर्यात्प्रतिष्ठाद्यं चैवं यत एतास्तु तन्मयः । आसामन्योन्यमङ्गाङ्गिपूजासु परमेश्वरि ॥३४॥
एकाङ्गित्वे स्थितान्यास्तत्परिवारास्तथाविधाः । अन्यदा प्रोक्तरूपास्तास्तत्र तत्रार्चने मताः ॥३५॥
तासां काम्यफलावाप्तिध्यानं तत्पटलोदितम् । एवं सर्वं समाख्यातं साधारणविधानकम् ॥३६॥
विद्या मन्त्रा इति प्रोक्ता यत्तद्भेदं वद प्रभो । शृणु देवि विशेषं तु संदर्भत्वे समेऽपि च ॥३७॥
वर्णानां देवताभेदान् द्विधा स्युस्ते त्वशेषतः । त्वद्दैवत्याः स्मृता विद्या मद्दैवत्यास्तु मन्त्रकाः ॥३८॥
पुनरस्यास्तु यन्त्राणि तत्फलानि शृणु प्रिये । विद्याक्षरेष्वनावृत्तान्यक्षराण्यष्ट तैस्तथा ॥३९॥
स्वराणां सङ्गमादष्टाविंशत्या शतमीरितम् । विधाय वृत्तयोर्मध्ये त्वष्टकोणं ततो द्वयम् ॥४०॥

अत्र अनावृत्ताक्षराणि "**हरवनसमय**" इति आदावकारः, मिलित्वाष्टावक्षराणि षोडशस्वरयुक्तानि चेदष्टाविंशत्युत्तरशतं १२८ वर्णा भवन्तीत्यर्थः।

कृत्वा तेषु न्यसेद्वर्णानष्टस्वष्टौ तु मध्यतः । मायां नामाङ्कितां कृत्वा तां तारेण प्रवेष्टयेत् ॥४१॥
अन्तर्वृत्तान्तराले ताँल्लिखेद्वर्णान् दश क्रमात् । कर्मानुरूपान् पञ्चाशल्लिखेदुक्तक्रमेण वै ॥४२॥
बहिर्वृत्तान्तरा प्राग्वदादिक्षान्ताक्षराणि च । एवं षोडश यन्त्राणि जायन्ते तैर्यथाक्रमम् ॥४३॥

॥ अथैतद्यन्त्ररचनाप्रकारः॥

प्रथमतो मध्ये साध्यनामगर्भं ह्रींकारं विलिख्य तत्प्रणवेन बहिरावेष्ट्य तद्बहिर्वृत्तद्वयं कृत्वा तद्बहिरष्टकोणं चतुरस्त्रद्वयेन विरच्य, तद्बहिर्वृत्तद्वयं विधायाभ्यन्तरवृत्तद्वयान्तराले कर्मानुसारीणि भूताक्षराणि दश द्वित्रिद्वित्रिक्रमेण विलिख्याष्टकोणेषु अष्टाविंशत्युत्तरशत १२८ वर्णेषु प्रथमाष्टबीजानि विलिख्य तद्बहिर्वृत्तद्वयान्तराले मातृकाक्षरैः संवेष्टयेत्। द्वितीययन्त्रस्याष्टकोणेषु प्रागुक्तवर्णेषु प्रथमाष्टकं विहाय द्वितीयाष्टकं लिखेत्। अन्यत्समानम्। एवं षोडश यन्त्राणि भवन्तीयर्थः॥ तथा-

तैर्यन्त्रैः साधयेन्नित्यं मनीषितमशेषतः । प्रथमं खर्परे रक्तवह्निमूलेन संयुतम् ॥४४॥
सिन्दूरं तद्रसे पिष्ट्वा धत्तूररससंयुते । लिखित्वा खदिराङ्गारे तापयेन्निशि जापवान् ॥४५॥
नारी नरो नृपोऽन्यो वा समायाति च तद्बलात् । तदेव तेन ताम्रे वा कांस्ये वा प्राग्वदालिखेत् ॥४६॥
तत्तापनादपि भवेत् पूर्वोक्तं फलमीश्वरी । द्वितीयं खर्परे तेन विलिख्य निशि तापयेत् ॥४७॥
नारी वश्यं समायाति जन्माचारविलङ्घिनी । तृतीयं तेन तत्रैव लिखित्वा निशि तापयेत् ॥४८॥
श्मशानाग्नौ मुक्तकेशः क्षणाद्वैरी ज्वरातुरः । तदेव दम्पतीदग्धवह्न्यङ्गारे तु निर्जने ॥४९॥
रसे पिष्ट्वा लिखित्वाग्नौ संताप्य निखनेत् ततः । श्मशाने वैरिणा प्रोक्तकाले क्रुद्धाशयो जपन् ॥५०॥
मनुं तदैव सम्भ्रान्तः पिशाचार्तो रिपुर्भवेत् । चतुर्थं विलिखेत् कृष्णपटचीरेऽसिताम्बरे ॥५१॥
पूर्ववत् तत्र निखनेद्रात्रावुक्तक्रमेण तु । दाहज्वरेण सप्ताहाद्रिपुर्याति यमालयम् ॥५२॥
पञ्चमेऽप्यथवा षष्ठे द्वयोर्नाम लिखेद् द्वयोः । काकोलूकजपक्षोत्थलेखिन्या खर्परद्वये ॥५३॥
श्मशाने निखनेत् प्राग्वन्नदीतीरद्वये द्वयम् । नद्यां तु वारिपूर्णायां विद्वेषः स्यात् तयोर्मिथः ॥५४॥

सप्तमे नाम संलिख्य सीसपट्टे यथाविधि । शिरः कपाले निक्षिप्य श्मशाने निखनेन्निशि ॥५५॥
रिपोः पुरोक्तकाले च पिशाचैर्गृह्यते रिपुः । अष्टमं खर्परे कृत्वा रिपुद्वारे खनेन्निशि ॥५६॥
सप्ताहात् तद्गृहाद्वैरी प्रयात्युच्चाटितोऽन्यतः । नवमं हेम्नि कृत्वा तदूर्मिकायां रवेर्दिने ॥५७॥
सिद्धयोगे शुभे नग्रे धिषणोदय एव वा । कृत्यापमृत्युरोगादिदुः खेभ्यो मुच्यते नरः ॥५८॥
दशमं राजते पट्टे कृत्वा वेश्मनि कुत्रचित् । निधाय पूजयेद्वेश्मन्यश्मपातादिशान्तये ॥५९॥
तथा भूतग्रहार्तांश्च रक्षेदेतस्य धारणात् । एकादशं लिखेद्भूर्जे पाटीरेन्दुद्रवैस्तु तत् ॥६०॥
उक्तक्रमसमापेतं गुलिकीकृत्य तं पुनः । सितसिक्थमये लिङ्गे संस्थाप्याभ्यर्चयेत् पुनः ॥६१॥

अत्र सिक्थं मधूच्छिष्टम्।

स्थापयेत् क्षौद्रमध्ये तु पूजयेन्नित्यशश्च तत् । सन्ध्यासु सुसितैः पुष्पैः सौरभाढ्यैर्विधानतः ॥६२॥
मासात् तदर्धात् सप्ताहाद्वशे स्युः शत्रवो ध्रुवम् । भवेयुर्व्याधितास्तेनोद्धृतेनारोग्यमाप्नुयुः ॥६३॥
ज्वरार्तास्तु शिशेषेण सुखिताः स्युरयत्नतः । आम्लसौवीरमध्यस्थं विद्वेषयति वैरिणौ ॥६४॥
तत्रैव क्वथनाद्रोगं द्वयोरुत्सादयेदपि । शुण्ठीमरिचपिप्पल्यः सुसूक्ष्मं परिचूर्णिताः ॥६५॥
लकुचस्य रसोपेतास्तन्मध्ये तद्विनिक्षिपेत् । तापयेत् त्रिषु सन्ध्यासु यत्रारातिस्तु तन्मुखम् ॥६६॥
प्रोक्तकाले ज्वरैरार्तस्तापतृष्णासमन्वितः । द्वादशं कर्पटे रात्रिरसेनालिख्य तत्पुनः ॥६७॥
इष्टकायुगमध्यस्थं कृत्वा तच्छ्लेषयेद् दृढम् । स्थापयेच्चण्डिकागेहे शास्तुरायतनेऽपि वा ॥६८॥
स्वगेहभित्तिमध्ये वा शयनस्थानतोऽपि वा । स्तम्भयेद्वैरिणो रोषमुद्योगं बन्धचिन्तनम् ॥६९॥
व्यवहारं रणं चान्यदस्याभिमतमात्मनः । त्रयोदशेन भूर्जस्थेनाशु धारणतोऽङ्गना ॥७०॥
वन्ध्यापि लभते पुत्रं विचित्रा यन्त्रशक्तयः । चतुर्दशगतं नाम कृत्वा भूर्जे च तत्तथा ॥७१॥
सिक्थमध्यगतं कृत्वा तं निशीथेऽभितापयेत् । सप्ताहाद्वशमायान्ति स्त्रियो वा पुरुषा नृपाः ॥७२॥
गजा हया मृगास्त्वन्ये ये जीवा भूतलाश्रयाः । परेण नाम्ना युक्तेन फलकालिखितेन वै ॥७३॥
सुखप्रसूतिः स्यात् स्त्रीणां तत्पूजा प्रेक्षणादिना । षोडशे नाम संलिख्य धारयेत् प्राणिनां तथा ॥७४॥
रक्षा भवति सर्वत्र ग्रहरोगभयादिषु । तदेव स्वर्णपट्टस्थं विधाय विधिना युतम् ॥७५॥
ऊर्मिकाङ्गदभूषादौ मूर्ध्नि वा बिभृयात् ततः । आधिव्याधिविनिर्मुक्तो निःसपत्नो जितेन्द्रियः ॥७६॥
भोक्ता कर्त्ता च पुण्यानां जीवेद्वर्षशतं भुवि । इति वह्निवासिनीनित्याप्रयोगविधिः ॥

॥ वह्निवासिनी प्रयोग:॥

यहां प्रयोग में नित्या पूजन (कामेश्वरी आदि) प्रतिपदा से प्रारंभ करें तो इस विद्या का प्रयोग पञ्चमी तिथी को लिखा है। श्लोक ५३ में पंचमी अथवा षष्ठी दोनों लिखा है। यदि प्रतिपदा को ललिता पूजन तथा द्वितीया से कामेश्वरि इत्यादि पूजन करते हैं तो इस विद्या का पूजन षष्ठी को होगा।

***

इस विद्या के प्रयोग से रोग, दरिद्रता का नाश होता है, आयु वृद्धि होवे, विद्या प्राप्त होवे। शत्रुनाश व शत्रु को विविध पीड़ा भी इस मन्त्र से पहुंचाई जा सकती है।

मूल मन्त्र – ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः॥

इस मन्त्र के अनुत्तर वर्ण "**ह र व न स म य**"। इनके आदि में "**व**" कार लगाने से अष्टाक्षर मन्त्र "**व ह र व न स म य**" हो जाता है। प्रत्येक वर्ण के साथ षोड्श मातृका स्वर संयोग करने से १६×८ = १२८ वर्ण का मन्त्र बनता है। इसमें अनुतर वर्ण संख्या नहीं जोड़ी है।

॥ प्रथम प्रकार यन्त्र रचना॥

सर्व प्रथम "**ह्रीं**" लिखकर साध्य का नाम लिखें। उसके आगे पीछे "**ॐ**" लिखें यदि किसी साध्य का नाम नहीं लिखना है तो केवल भगवती का ध्यान करें।

उसके बाहर दो वृत्त बनायें, पश्चात् अष्टकोण व चतुरस्र बनायें। वृत्तों के बीच की वीथिका में पूर्वादि चारों दिशाओं में "**ॐ ह्रीं, वह्निवा, सिन्यै, नमः ॐ**" लिखें। अनुत्तर अष्टवर्ण के प्रत्येक वर्ण के साथ १६ स्वर मातृका (**अं आ.......अः**) लिखें। इस तरह ८ कोणों में १२८ वर्ण लिखें। इसमें अनुत्तर वर्ण संख्या नहीं जोडी है। अष्टकाणों तथा चतुरस्र के बाहर दो वृत्त बनायें उनके बीच की जगह में मातृका (अं आ.......**हं लं क्षं**) लिखें।

॥ द्वितीय प्रकार यन्त्र रचना॥

यदि प्रथम कोष्ठक में दूसरा वर्ण "**ह**" के साथ स्वर मातृका लिखें, शेष को अन्य काणों में लिखें तो दूसरा यन्त्र बनता है। इस तरह आठ वर्ण में एक एक को प्रथम कोण में लिखते हैं, शेष वर्णों को अन्य कोणों में लिखते हैं तो आठ यन्त्र बनते हैं।

॥ तृतीय प्रकार यन्त्र रचना॥

यदि एक स्वर मातृका के साथ आठों वर्ण "**व ह र व न स म य**" प्रत्येक कोणों में लिखते हैं तो १६ स्वरों से १६ तरह के यन्त्र बनते हैं। प्रयोग विधि श्लोक ४४ से ७६ तक जानें।

॥ इति वह्निवासिनी नित्याप्रयोगविधि॥

॥ ६. अथ महावज्रेश्वरी नित्या प्रयोगः॥

मंत्र – ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं।

ऋषिन्यास के अनुसार विनियोग जाने।

ऋषिन्यास – शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः। मुखे गायत्री छंद से नमः। हृदि वज्रेश्वरी नित्या देवतायै नमः। गुह्ये ह्रीं बीजाय नमः। पादयोः ह्रीं शक्तिये नमः। नाभौ ऐं कीलकाय नमः। सर्वाभीष्ट सिद्धये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास – ह्रीं क्लिन्ने हृदयाय नमः। ऐं शिरसे स्वाहा। क्रों शिखायै वषट्। नित्य कवचाय हुं। मद नेत्रत्रयाय वौषट्। द्रवे ह्रीं अस्त्राय फट्।

वर्णन्यास – **ह्रीं क्लीं ह्रीं नमः दक्षनेत्रे । ह्रीं न्रे ह्रीं नमः वामनेत्रे। ह्रीं ऐं ह्रीं नमः दक्षकर्णे। ह्रीं क्रों ह्रीं नमः वामकर्णे। ह्रीं निं ह्रीं नमः दक्षनसि। ह्रीं त्य ह्रीं नमः वामनसि। ह्रीं मं ह्रीं नमः मुखे। ह्रीं दं ह्रीं नमः वक्षसि। ह्रीं द्रं ह्रीं नाभौ। ह्रीं वें ह्रीं नमः लिङ्गे।**

मूलमंत्र से व्यापक न्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

रक्तां रक्ताम्बरां रक्तगंधमाला विभूषणाम् । चतुर्भुजां त्रिनयना माणिक्यमुकुटोज्ज्वलाम् ॥ पाशांकुशाविक्षुचापं दाडिमी सायकं तथा । दधानां बाहुभिर्नेत्रैर्दयामद सुशीतलैः ॥ पश्यन्तीं साधकं त्र्यस्त्रषटकोणाब्जमहीपुरे । चक्रमध्ये सुखासीनां स्मेरवक्त्र सरोरुहाम् ॥

॥ यंत्रपूजनम्॥

त्रिकोण, षट्कोण, द्वादशदलपद्म पश्चात् षोडशदल पद्म बनाये उसके बाहर चारद्वारयुक्त भूपूर बनाये।

पीठ पूजन – **ॐ मण्डूकादि पृथिवी पर्यन्त पीठ देवताभ्यो नमः। तत्रैव शोषसमुद्राय नमः। कनकपोताय नमः। रत्नसिंहासनाय नमः।** यंत्र मध्य देवी का आवाहन करे।

प्रथमावरणम् – त्रिकोण में इच्छा, ज्ञान, क्रिया शक्ति का पूजन करे।

द्वितीयावरणम् – (षट्कोणे) षडङ्गन्यास से देवताओं का पूजन करे। देवी के पृष्ठ पूर्वोक्त पूजा के समान प्रकाशानंदादि गुरु पंक्तित्रय (दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरु) का पूजन करे।

पुनः षट्कोण में **डाकिनि, शाकिनी, लाकिनी राकिनी, काकिनी, हाकिनी** इत्यादि का पूजन करे।

तृतीयावरणम् – (द्वादशदले) **ह्रीं हृल्लेखा पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ह्रीं क्लेदिनी पा.। ह्रीं क्लिन्ना पा.। ह्रीं क्षोभिणी पा.। ह्रीं मदना पा.। ह्रीं मदनातुरा पा.। ह्रीं निरञ्जना पा.। ह्रीं रागवती पा.। ह्रीं मदनवती पा.। ह्रीं मेखला पा.। ह्रीं द्राविणी पा.। ह्रीं वेगवती पा.।**

॥ श्री महावज्रेश्वरी यन्त्रम् ॥

चतुर्थावरणम् – (षोडशदले) **ह्रीं कमला पा.। कामिनी पा.। कल्या पा.। कला पा.। कलिता पा.। कौतुकी पा.। किराता पा.। काला पा.। कदना पा.। कौशिकी पा.। कम्बुवाहिनी पा.। कतरा पा.। कपटा पा.। कीर्ति पा.। कुमारी पा.। कुंकुमा पा.।**

पंचमावरणम् – (भूपुरे) पश्चिम, उत्तर, पूर्व, दक्षिण द्वार के दोनों पार्श्वों में **भञ्जिनी पा.। वेगिनी पा.। भोगा पा.। चपला पा.। पेशला पा.। सती पा.। रति पा.। श्रद्धा पा.।** वायव्य, ईशान, अग्नि एवं निर्ऋति कोणेषु **भोगलोला पा.। मदना पा.। उन्मत्ता पा.। मनस्विनी पा.।**

षष्टमावरणम् – (भूपुरे) इन्द्रादिलोकपालों एवं उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करे।

गायत्री मन्त्र – **महावज्रेश्वर्यै विद्महे वज्रनित्यायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥**
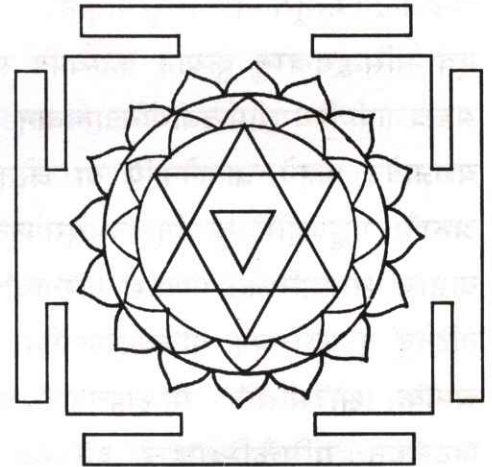
॥ अथ कादीक्रमानुसार महावज्रेश्वरीनित्याप्रयोगविधि:।॥

(श्रीतन्त्रराजे)

वसन्तकाले ग्रीष्मे वा पूर्णामारभ्य साधयेत् । हविष्याशी पयोभक्षः फलमूलाशनोऽथवा ॥१॥
स्नातः सुगन्धिसलिलैररुणांशुकवाञ्छुचिः । चन्द्रचन्दनकाश्मीरचर्चालोहितविग्रहः ॥२॥
अञ्जनाक्ताक्षियुगलस्ताम्बूलारुणवक्त्रवान् । मुखार्पितेन्दुशकलो हृष्टचेता जितेन्द्रियः ॥३॥
मौनी त्रिकालपूजासु कृतसंकल्पसाधनः । नक्ताशी हुतशिष्टेन जपेद्विद्यां समीरिताम् ॥४॥
नित्यशो भोजयेद्विप्रान् भक्तान् भजनकौतुकान् । अघादिहीनान् मधुरं पायसं भोज्यभक्तिमान् ॥५॥
प्रणम्याभ्यर्च्य विसृजेन्नित्यं सप्तदिनेषु तु । गुरुं जीवनमासाद्य प्रणम्यासकृदात्मवान् ॥६॥
धनधान्याम्बराद्यैस्तं संतोष्य तदनुज्ञया । कृतारम्भो नित्यशश्च पूजयेत्तं च भक्तितः ॥७॥
अन्ते च वित्तैः स्तोत्रैश्च तं संतोष्य कृती भवेत् । वित्तशाठ्यं च दम्भं च मोहं चासत्यमेव च ॥८॥
न कदाचित् प्रकुर्वीत विशेषाद्गुरुसन्निधौ । एवं लक्षत्रयं जप्त्वा तद्दशांशं हुनेद् घृतैः ॥९॥
आरग्वधप्रसूनैर्वा प्रसूनैर्बकुलोद्भवैः । मधूकजैश्चम्पकैर्वा त्रिमध्वक्तैश्च नित्यशः ॥१०॥
चन्द्रचन्दनकस्तूरीकाश्मीरसुरभीकृतैः । तर्पयेत् सलिलैस्तावद् दिनशो भक्तिमान् दृढः ॥११॥
एवं संसिद्धमन्त्रस्तु कुर्यात् काम्यानि साधकः । गुरुभक्तो नित्यकृत्यकृत संकल्पसंयुतः ॥१२॥
सहस्रजापी स्थिरधीर्मन्त्रवीर्यविदात्मवान् । यः सोऽपि काम्यान् कुर्वीत प्रयोगान् नान्यथा शिवे ॥१३॥
यद्यज्ञानेन मोहने चापलेनापि वा चरेत् । अनर्थक्लेशराजादिपीडाः प्राप्नोति निश्चितम् ॥१४॥
अरुणैः पङ्कजैर्होमं कुर्यात् त्रिमधुराप्लुतैः । मण्डलाल्लभते लक्ष्मीं महतीं श्लाघ्यविग्रहाम् ॥१५॥
कह्लारैः क्षौद्रसंसिक्तैः पौर्णाद्यं तद्दिनावधि । जुहुयान्नित्यशो भक्त्या सहस्रं विकचैः शुभैः ॥१६॥
तद्दिनेषु तु पूर्वोक्तान् भोजयेदुक्तरूपतः । तावच्च जप्याद्धोमान्ते यावत्संख्यं हुतं कृतम् ॥१७॥
चम्पकैः क्षौद्रसंसिक्तैः सहस्रहवनाद्ध्रुवम् । लभते स्वर्णनिष्काणां शतं मासेन पूर्ववत् ॥१८॥
पाटलैर्घृत संसिक्तैस्त्रिसहस्रं हुतैस्तथा । दर्शादिमासाल्लभते चित्राणि वसनानि च ॥१९॥
कर्पूरचन्दनादीनि सुगन्धीनि च मासतः । वस्तूनि लभते हृद्यैरन्यैर्भोगोपयोगिभिः ॥२०॥
शालीभिः क्षीरसिक्ताभिः सप्तमीषु शतं हनेत् । तेन शालिसमृद्धिः स्यान्मासैः षड्भिरसंशयम् ॥२१॥
तिलैर्हुतैस्तद्दिवसे वर्षादारोग्यमाप्नुयात् । स्वजन्मसु त्रिषु तथा दूर्वाभिर्जुहुयात् तथा ॥२२॥
निरातङ्को महाभोगः शतं वर्षाणि जीवति । गुडूचीतिलदूर्वाभिस्त्रिषु जन्मसु वा हुनेत् ॥२३॥
तेनायुः श्रीयशोभाग्यपुण्यनिध्यादिवान् भवेत् । घृतपायसदुग्धैस्तु हुतैस्तेषु त्रिषु क्रमात् ॥२४॥
आयुरारोग्यविभवैर्नृपमान्यो भवेत्तथा । सप्तम्यां कदलीहोमात्सौभाग्यं लभतेऽब्दतः ॥२५॥
दूर्वात्रिकैस्तु प्रादेशमात्रैस्त्रिस्वादुसंयुतैः । जुहुयाद्दिनशो घोरे सन्निपाते ज्वरे गदे ॥२६॥

महारोगेषु दूर्वाभिस्तिलैश्छिन्नोद्भवैस्तथा । त्रिभिर्वा नित्यशो होमं कुर्यात्त्रिस्वादुसंयुतैः ॥२७॥
षण्मासादब्दतो वापि रोगान्मुक्तः सुखी भवेत् । तद्दिनेषु जपेद्विद्यां नित्यशः सलिलं स्पृशन् ॥२८॥
सहस्रवारं तत्तोयैः स्नानपानं समाचरेत् । पाकाद्यमपि तैरेव कुर्याद्रोगविमुक्तये ॥२९॥
साध्यर्णवृक्षं संचूर्ण्य त्र्यूषणं सर्षपं तिलम् । पिष्टं च साध्यपादोत्थरजसा च समन्वितम् ॥३०॥
कृत्वा पुत्तलिकां तैस्तु हृदये नामसंयुताम् । प्राग्वच्छित्त्वायसैस्तीक्ष्णैर्निशि पुत्तलिकां हुनेत् ॥३१॥
एवं दिनैः सप्तभिर्वा त्रिभिर्वैकदिनेन वा । साध्यो वश्यो भवेच्छीघ्रमपि दूरस्थितो दृढः ॥३२॥
तथाविधां पुत्तलिकां कुण्डमध्ये खनेद्भुवि । उपर्यग्निं निधायात्र विद्यया दिनशो हुनेत् ॥३३॥
त्रिसहस्रं त्रियामायां सर्षपैस्तद्रसाप्लुतैः । शतयोजनदूराप्यानयेद्वनितां बलात् ॥३४॥

त्रियामायां निशीथे। तद्रसाप्लुतैः सर्षपतैलाक्तैः ॥

तां तु पुत्तलिकां मध्ये मधूच्छिष्टसमन्विताम् । कृतप्राणप्रतिष्ठां च श्मशाने निखनेन्निशि ॥३५॥
साध्ययोनिं च तत्रैव च्छित्वा दत्त्वा बलिं ततः । कृताभिषेकस्तां विद्यां प्रजपेच्च शतत्रयम् ॥३६॥
अरातेरष्टमे राशौ मासान्नानाविधैरगि । रोगैर्भूतादिसंक्लेशैर्नाशमेति सुनिश्चितम् ॥३७॥
यद्यन्तरा समुद्धृत्य सलिले तां खनेन्निशि । क्लेशैस्तैः स विनिर्मुक्तः सुखी जीवति भूतले ॥३८॥
साध्यवृक्षेण कृत्वा तां सर्षपाज्ये निवेशिताम् । तोयमध्ये निधायैतत् क्राथयेदुक्तवासरैः ॥३९॥
वैरी तीव्रज्वरेणार्तः कृती प्राग्वत्सुखी भवेत् । तामेव चण्डिकागेहे तथा बलियुतां खनेत् ॥४०॥
साध्यो नरश्च नारी चेच्छास्तुरायतने खनेत् । तद्विधानेन सहितं शत्रुरुन्मादवान् भवेत् ॥४१॥
महावज्रं च वज्रं च यन्त्राण्येतान्यनुक्रमात् । प्रयोगानपि वक्ष्यामि समाहितधिया शृणु ॥४२॥
प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च विंशत्सूत्राणि पातयेत् । तेन कोष्ठानि जायन्ते त्वेकषष्ट्या शतत्रयम् ॥४३॥
तेषु कोणचतुष्केऽपि मार्जयेत्पञ्चकेन च । चत्वारिंशत्तत्र शेषं वज्राकारं यथा भवेत् ॥४४॥
दिक्षु चत्वारि चत्वारि मार्जयित्वा त्रिकोणगम् । कुर्याच्छेषाणि कोष्ठानि पञ्चषष्ट्या शतं भवेत् ॥४५॥
तेषु पूर्वादि परितो लिखेद्विद्याक्षराणि तु । प्राग्वत्स्वरविभिन्नानि प्रागुक्तविधिना तथा ॥४६॥
चत्वारि चत्वारिंशच्च शतं तेषां तु मध्यतः । एकविंशति कोष्ठानि शिष्टानि पुनरम्बिके ॥४७॥
तेषु पर्यायनित्याणुवर्णषट्कसमन्वितम् । घटिकायुगवर्णौ च लिखेत्प्रागुक्तयोगतः ॥४८॥
शिष्टेषु विद्यावर्णांश्च लिखेद्द्वादश शेषयोः । साध्याख्यामालिखेदुक्तक्रमेण पुटयोर्द्वयोः ॥४९॥
चतुर्दिक्षु लिखेत्कोणेष्वभितो भौतिकार्णकान् । द्वित्रिक्रमेण प्राक्प्रत्यक्कोणयोस्तु त्रयं त्रयम् ॥५०॥
एतत्प्रोक्तेषु संलिख्य सम्पूज्य विधिना युतम् । स्पृशञ्जपेन्मनुं पश्चात् त्रिसहस्रं ततस्तु तत् ॥५१॥
विनियुञ्ज्यादथोक्तेषु कार्येषु क्रमतः शिवे । भूताक्षराणि च पुनर्लिखेत् कार्यानुरूपतः ॥५२॥
महावज्रमिति ख्यातं सर्वत्रैवापराजितम् । विजयस्तम्भविद्वेषवश्योच्चाटनकर्मसु ॥५३॥

रक्षां पुष्टिं च शान्तिं च तथैव रिपुनिग्रहे । देशराष्ट्रपुरग्रामनिवेशोदर्विशेषतः ॥५४॥
घोरेषूत्पातजातेषु भूमौ संलिख्य गैरिकैः । मध्ये देवीं समावाह्य पूजयेन्नित्यशः शिवाम् ॥५५॥
सन्ध्यासु तिसृषु प्रोक्तक्रमान्नीराजनं तथा । कुर्यात्त्रिरात्रं द्विगुणं त्रिगुणं काम्यरूपतः ॥५६॥
राज्ञां वैरिनिरोधेन पुरीमात्रावशेषिते । विभवे मण्डपे तस्य प्रोक्तवज्रं लिखेन्महत् ॥५७॥
दरदेनार्चयेत् तस्य मध्ये देवीं शुचिस्मिताम् । नृत्यगीतादिभिः सार्धं सन्ध्यासु च विशेषतः ॥५८॥
एवं प्राग्वद्दिनैरुक्तैर्विजयी नृपतिर्भवेत् । वैरिनाशेन वा तस्य भङ्गाद्व्यासनतोऽपि वा ॥५९॥
ततस्तन्मार्जयित्वा तु भाले कृत्वा पुरीं बलैः । परीयाद्देशिकं त्वग्रे गजे जीवेच्चिरं सुखी ॥६०॥
निःसपत्नो निरातङ्कः षडङ्गख्यातवैभवः । एवमेतस्य वज्रस्य वैभवं को नु वर्णयेत् ॥६१॥

॥ अथैतद्यन्त्ररचनाप्रकार:॥

तत्र प्राक्प्रत्यगायता दक्षिणोत्तरायताश्च विंशतिं विंशतिं रेखाः कृत्वा समान्तरा. लानि एकषष्ट्युत्तरत्रिशतकोष्ठानि विलिख्य, कोणचतुष्टये प्रतिकोणं पञ्चचत्वारिंशत्पञ्चचत्वारिंशदिति अशीत्युत्तरशतं कोष्ठानि गुरूक्तयुक्त्या मार्जयित्वा, तेषु स्थलेषु चत्वारि कोणानि विधाय सिद्धेषु पञ्चषष्ट्युत्तरशतकोष्ठेषु १६५ मूलविद्याक्षराण्यनावृत्तानि षोडशस्वरयुक्तानि चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशताक्षराणि १४४ पूर्वादिप्रादक्षिण्येन प्रवेशगत्या विलिख्यावशिष्टैकविंशतिकोष्ठेषु तद्दिननित्याया वर्णत्रयं पर्यायनित्याया वर्णत्रयं षट्कोणेषु विलिख्य, घटिकाक्षरसहितं युगाक्षरमेकस्मिन् कोष्ठे विलिख्यावशिष्टचतुर्दशकोष्ठेषु प्रतिकोष्ठमेकमेकमिति मूलमन्त्राक्षराणि विलिख्यावशिष्टकोष्ठद्वये साध्याख्यां कर्म च विलिख्य दिक्चतुष्टयस्थकोणचतुष्टये तत्तत्कर्मानुसारिभूतवर्णान् द्वित्रिद्वित्रिक्रमेण विलिखेदेतद्यन्त्रमुक्तफलदं भवति॥ तथा-

अथान्यवज्रनिर्माणविधानं च शृणु प्रिये । येन हस्तगतेन स्युः सिद्धयोऽपि स्वहस्तगाः ॥६२॥
प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च दशसूत्रनिपातनात् । तेनैकाशोतिकोष्ठानि जायन्ते तच्च पूर्ववत् ॥६३॥
मार्जयेद्दशकोणेषु शिष्टेषु विलिखेत्तथा । त्रिकोणानि चतुर्दिक्षु तेषु तान्येव पूर्ववत् ॥६४॥
विलिखेदवशिष्टेषु मन्त्रार्णांस्तद्द्विशस्तथा । एकस्मिन्मध्ये शक्तिजठरे साध्यमालिखेत् ॥६५॥
एतच्च पूर्वोक्तेषु विनियुञ्ज्यान्निजेच्छया । न भेदस्त्वनयोरस्ति प्रयोगेषु तु सर्वतः ॥६६॥
एतद्वज्रस्य मध्यस्थे नाम कृत्वा महीभुजः । दंशके हृदये शीर्षे संस्थाप्य समरे कृते ॥६७॥
निहत्य वाहिनीं शत्रोश्चतुरङ्गां महीभुजः । अक्षताशेषसर्वाङ्गो यशोलक्ष्मीधरान्वितः ॥६८॥
निर्वत्य सुचिरं जीवेद्भूमौ भोगी निजेच्छया । एतत्ताम्रतले कृत्वा स्थापयेदभिवृद्धये ॥६९॥

॥ अथैतद्रचनाप्रकारः॥

तत्र प्राक्प्रत्यगायता दक्षिणोत्तरायताश्च दश दश रेखाः कृत्वा समान्तरालानि एका शीतिकोष्ठानि विधाय, चतुर्दिक्षु दश दश कोष्ठानि मार्जयित्वा एकचत्वारिंशत्कोष्ठात्मकं वज्राकारं निष्पाद्य, दिक्षु चत्वारि चत्वारि कोष्ठानि मार्जयित्वा त्रिकोणानि विधाय, तेषु कर्मानुसारिप्राग्वद्भूतार्णान् विलिख्य मध्यकोष्ठे मायाबीजं साध्यनामगर्भं विलिख्यावशिष्टकोणेषु मूलमन्त्रस्य द्वादशाक्षराणि द्विशो विलिखेत्। एतद्यन्त्रमुक्तफलदं भवति॥

तथा-

विधाय वृत्तयोर्मध्ये षट्कोणं तस्य मध्यतः । बाह्ये च कृत्वा विद्याया बीजमाद्यमथान्तिकम् ॥७०॥

षट्सु कोणेषु तु पुनरग्रपश्चिमयोर्लिखेत् । एकैकं पार्श्वकोणेषु द्वे द्वे वृत्तान्तरा पुनः ॥७१॥

मातृकां विलिखेदादिक्षान्तां बिन्दुसमन्विताम् । मध्यबीजस्य मध्यस्थं लिखेत्तन्निजवांछितम् ॥७२॥

भर्तुर्दर्शनभीतानां कुमारीणामिदं भुजे । कण्ठे वा धारयेत्सद्यो वल्लभा तस्य जायते ॥७३॥

॥ अथैतद्यन्त्ररचनाप्रकारः॥

प्रथमतः षट्कोणं विधाय तद्बहिर्वृत्तद्वयं कृत्वा मध्ये साध्यनामगर्भं ह्रींकारं विलिख्य षट्सु कोणेषु कोणाग्रेषु कोणान्तरालेषु च मायाबीजान्येव विलिख्य वृत्तद्वयान्तराले मायाबीजद्वयसहिता मकारादिक्षकारान्तां मातृकां विलिखेत्। एतद्यन्त्रमुक्तफलदं भवति॥ तथा-

स्वरप्रसारितैर्मन्त्रवर्णैः पद्मानि कारयेत् । वृत्ताष्टपत्रयुक्तानि षोडशानि मनोहरम् ॥७४॥

कर्णिकासु च पत्रेषु लिखेदेकैकमक्षरम् । कर्णिकार्णस्य मध्यस्थं कुर्यान्नाम निजेप्सितम् ॥७५॥

घटिकाक्षरसंयुक्तं विनियुञ्ज्यात्तु नित्यशः । अहोरात्रं षोडशधा कृत्वा तां तेषु योजयेत् ॥७६॥

समस्तं वांछितं तत्र तन्मध्यं विलिखेत्तदा । धारयेदभिषिञ्चेच्च जपेदिष्टार्थसिद्धये ॥७७॥

॥ अथैतद्यन्त्ररचनाप्रकारः॥

प्रथमतो वृत्तं कृत्वा तदग्राग्न्यष्टदलानि विधाय प्राक्प्रोक्तषोडशस्वरसंयुक्तमूलविद्या नावृत्ताक्षरेषु चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशतवर्णेषु १४४ प्रथमाक्षरं साध्यनामगर्भं कर्णिकायां विलिख्य तत्रैव घटिकाक्षरं संयोज्याष्टदलेषु द्वितीयाद्यष्टौ वर्णान् विलिखेत्। एवं नवनववर्णानामेकमेकं यन्त्रं भवति। एवं षोडश यन्त्राणि भवन्तीत्यर्थः॥

तथा-

प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च पञ्चसूत्राणि पातयेत् । कोष्ठानि षोडशात्र स्युस्तेषु पद्मानि कारयेत् ॥७८॥

प्रगुक्तेषु विधायैवमर्चयेद्यामतः क्रमात् । देवीं तु स्थापयेद्भूमौ सर्वसम्पदवाप्तये ॥७९॥

स्पष्टोऽयमर्थः ॥

॥ महावज्रेश्वरी प्रयोगः॥

मूल मन्त्र – ॐ ह्रीं क्रों सः नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा।

यहां टीका में महावज्रेश्वरी के अनावृत्त अक्षर नहीं लिखे हैं, केवल यही लिखा है कि अनावृत्त अक्षर नौ हैं।

अनावृत्त नौ अक्षर भेरुण्डा के प्रयोग हैं यदि हम उन्हीं को मानें तो प्रयोग किया जा सकता है अन्यथा टीका के अनुसार अनावृत्त अक्षर नहीं देने से प्रयोग अधूरा है।

भेरुण्डा के अनावृत्त नौ अक्षर **''क, र, भ, झ, छ, ज, स, व, ह''** है।

प्रयोग प्रारम्भ में हवन, तर्पण हेतु फल श्लोक दस से उनतीस तक दिया गया है। पश्चात् पुतली प्रयोग श्लोक ३० से ४१ तक बताया गया है।

॥ प्रथम प्रकार यन्त्र रचना ॥

पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण में २०-२० रेखायें खींचने पर तीन सौ इकसठ कोष्ठक बनेंगे। चारों कोणों में ४५-४५ (कुल १८० कोष्ठक) गुरु के अनुसार मार्जन करें। बाकी कोणों में १६५ कोष्ठक चुनें। १६ स्वर मातृकाओं को एक-एक मन्त्र के साथ लिखने से १६×९ = १४४ कोष्ठक पूर्ण हुये। शेष २१ कोष्ठकों में सभी नित्याओं का पूजन करें। २१ कोष्ठकों में से ६ कोष्ठक ऊपर के तीन कोणों में ३-३ अक्षर अनावृत्त वर्ण बिन्दु युक्त तथा नीचे के तीन कोणों में अनावृत्त वर्ण के ३-३ अक्षर विसर्ग युक्त लिखें १४ कोष्ठक में वज्रेश्वरी मन्त्र के १४ वर्ण लिखें। एक कोष्ठक में २ बार नहीं लिखें।

अब ३६१ - (१८०+१६५) = १७ कोष्ठक बचते हैं। उनमें मूल मन्त्र के २+३+२+३+२+३ इस क्रम में अक्षर लिखें। दो कोष्ठक में साध्य का नाम लिखें।

॥ द्वितीय प्रकार यन्त्र रचना ॥

पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण में १०-१० रेखायें खींचने पर ९ × ९ = ८१ कोष्ठक बनेंगे। १०-१० कोष्ठक चारों दिशाओं में मार्जन छोड़ने से शेष ४१ कोष्ठक रहते हैं उन्हें वज्राकार बनायें। वज्राकार दल में कमल की पत्ति का नुकीला मुँह नीचे तथा चौड़ा मुँह ऊपर होता है। चारों दिशाओं में चार-चार त्रिकोण बनायें। मध्य के कोष्ठक में ''ह्रीं'' युक्त साध्य का नाम लिखें। पश्चात् बाकी कोणों में मन्त्र के १२ अक्षर लिखें एवं ५० अक्षर मातृकाओं के लिखें। ५० मातृका + १२ मन्त्राक्षर + १६ दिशा कोष्ठक + ३ त्रिकोण (मध्य कोष्ठक) = ८१ कोष्ठक का यन्त्र बनायें।

॥ तृतीय प्रकार यन्त्र रचना ॥

षट्कोण बनायें, उनके मध्य में ''ह्रीं'' के साथ साध्य का नाम लिखें। षट्कोण के प्रत्येक कोणों में व उसके बाहर ''ह्रीं'' बीज लिखें। षट्कोण के बाहर दो वृत्त बनायें उनके बीच की जगह में ''**ह्रीं ह्रीं मं यं रं लं वं षं शं सं हं लं क्षं**'' मातृका वर्ण लिखें।

॥ इति महावज्रेश्वरीनित्याप्रयोगविधिः ॥

॥ ७. अथ शिवादूती (शिवदूती) नित्या प्रयोगः ॥

मंत्र - १. ह्रीं शिवादूत्यै नमः।

२. ॠं ह्रीं शिवादूत्यै नमः।

विनियोग - ॐ अस्य मंत्रस्य रुद्र ऋषिः, गायत्री छंद, श्रीशिवादूतीनित्या देवता, ह्रीं बीजं, नमः शक्ति, शिवादूती कीलकं, ममाभीष्टये विनियोगः।

ऋषिन्यास - विधि पूर्व मंत्रों की तरह।

षडङ्गन्यास - ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से हृदयादि न्यास करे।

वर्णन्यास - ह्रीं शिं ह्रीं नमः श्रोत्रयोः। सर्वाङ्गे ह्रीं वां ह्रीं नमः। चक्षुषोः ह्रीं दूं ह्रीं नमः। जिह्वायां ह्रीं त्यैं ह्रीं। घ्राणयोः ह्रीं नं ह्रीं नमः। मनसि ह्रीं मं ह्रीं नमः। इसके बाद मूलमंत्र से व्यापक न्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

निदाघ(प)काल मध्याह्न दिवाकरसमप्रभाम् । नवरत्न किरीटां च त्रीक्षणामरुणाम्बराम् ॥
नानाभरणसभिन्न देहकांति विराजिताम् । शुचिस्मितामष्टभुजां स्तूयमानां महर्षिभिः ॥
पाशं खेटं गदा रत्न चषकं वामबाहुभिः । दक्षिणैरंकुशं खड्गं कुठारं कमलं तथा ॥
दधानां साधका ऽभीष्टदानोद्यम समन्विताम् । ध्यात्वैवं पूजयेद् देवीं दूतीं दुर्नीतिनाशिनीम् ॥

॥ यंत्रपूजनम् ॥

त्रिकोण बनाये उसके अंदर दो वृत्त बनाये फिर त्रिकोण के ऊपर षड्दलपद्मबनाये उसके बाहर षट्कोण, अष्टकोण बनाये उसके बाद अष्टदल बनाकर भूपुर भी बनाये जिसके पूर्व पश्चिम में दो द्वार बनाये।

॥ श्री शिवदूती यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् – त्रिकोण में अग्नि, ईशान, निर्ऋति एवं वायव्य तथा देव्यग्र और दिक्षु दिशा मंत्र के हृदयादि षडङ्ग देवताओं का पूजन करे। त्रिकोण के बाहर वृत्त में **दिव्यौघ, सिद्धौघ एवं मानवौघ** गुरवों का पूजन करे।

द्वितीयावरणम् – (भूपुरे) देवी के अग्रभाग से प्रदक्षिणा क्रम से दशों दिशाओं में **ॐ विह्वला पा.। आकर्षिणी पा.। लोला पा.। नित्या पा.। मदना पा.। मालिनी पा.। विनोदा पा.। कौतुका पा.। पुण्या पा.। पुराणा पा.।**

तृतीयावरणम् – (अष्टदले) **वागीशी पा.। वरदा पा.। विश्वा पा.। विनदा पा.। विघ्नकारिणी पा.। वीरा पा.। विघ्नहरा पा.। विद्या पा.।**

चतुर्थावरणम् – (अष्टकोणेषु) **सुमुखी पा.। सुन्दरी पा.। शारा पा.। सुमना पा.। सरस्वती पा.। समय पा.। सर्वगा पा.। सिद्धा पा.।**

पंचमावरणम् – (षट्कोणेषु) **देव्यग्रकोणमारभ्य हाकिनी पा.। शाकिनी पा.। काकिनी पा.। लाकिनी पा.। राकिनी पा.। डाकिनी पा.।**

षष्टमावरणम् – (षट्पत्रेषु) **शिवा पा.। वाणी पा.। दूरसिद्धा पा.। त्यैविग्रहवती पा.। नादा पा.। मनोन्मनी पा.।**

सप्तमावरणम् – (त्रिकोणेषु) **देव्यग्रादिप्रादक्षिण्येन इच्छाशक्ति पा.। ज्ञानशक्ति पा.। क्रियाशक्ति पा.।**

अष्टमावरणम् – (त्रिकोण के अंदर वृत्त में) देवि के दक्षिणभाग में **कमलाय नमः। कुठाराय नमः। खड्गाय नमः। अंकुशाय नमः। देवि के वामभाग में रत्नचषकाय नमः। गदायै नमः। खेटाय नमः। पाशाय नमः।**

भूपुर में लोकपाल पूजा का उल्लेख नहीं किया गया हैं- परन्तु निषेध भी नहीं लिखा हैं।

गायत्री मन्त्र – शिवदूत्यै विद्महे शिवंकयै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥
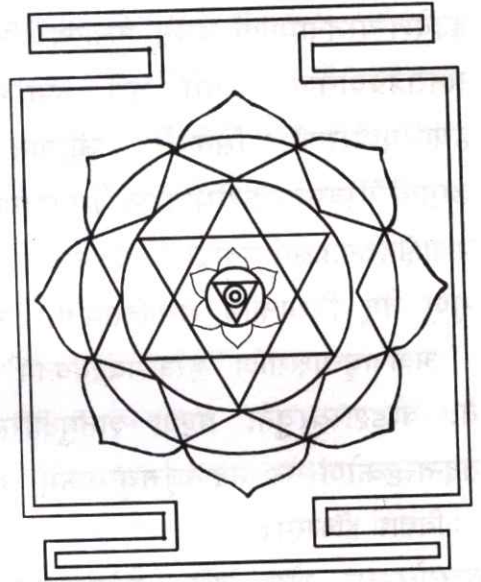
॥ अथ कादीक्रमानुसार शिवदूतीनित्या प्रयोग विधि:॥

(श्रीतन्त्रराजे)

साधनं प्रोक्तमार्गेण कुर्याल्लक्षमतन्द्रितः । काम्यहोमविधिं देवि शृणु सङ्कल्पसिद्धिदम् ॥१॥
येनासौ वाञ्छितं क्षिप्रमवाप्नोति सुनिश्चितम् । वशयेद्वनिता होमाद् गुग्गुलैर्मधुमिश्रितैः ॥२॥
नारिकेलफलोपेतैर्गुडैर्लक्ष्मीमवाप्नुमात् । तथाज्यसिक्तैः कह्लारैः क्षीराक्तैररुणोत्पलैः ॥३॥
त्रिमध्वक्तैश्चम्पकैश्च प्रसूनैर्बकुलोद्भवैः । मधूकजैः प्रसूनैश्च हुतैः कन्यामवाप्नुयात् ॥४॥
पुंनागजैर्हुतैर्वस्त्राण्याज्यैरिष्टमवाप्नुयात् । माहिष्यैर्महिषीराज्यैरजान् गव्यैश्च गास्तथा ॥५॥
अवाप्नोति हुतैराज्यैरन्नेनान्नं च साधकः । शालिपिष्टमयीं कृत्वा पुत्तलीं सितसंयुताम् ॥६॥
हृद्देशन्यस्तनामार्णां पचेत् तैलाज्ययोर्निशि । तामनश्नन् दिवा रात्रौ विद्याजप्तां तु भक्षयेत् ॥७॥
सप्तरात्रप्रयोगेण नरो नरी नृपोऽथवा । दासवद्वशमायाति वित्तप्राणादिमर्पयेत् ॥८॥
हयारिपुष्पैररुणैः सितैर्वा जुहुयात् तथा । त्रिसप्तरात्रान्महतीमवाप्नोति श्रियं नरः ॥९॥
छागमांसैस्त्रिमध्वक्तैर्होमात् स्वर्णमवाप्नुयात् । क्षीराक्तः शस्यसम्पूर्णां भुवमाप्नोति मण्डलात् ॥१०॥
पद्माक्षैर्हवनाल्लक्ष्मीमवाप्नोति त्रिभिर्दिनैः । अथ यन्त्राणि वक्ष्यामि नानाभीष्टप्रदानि ते ॥११॥
शृणु तेषु विधानानि समाहितमनाः शिवे । दूतीनित्याक्षरेषु स्युरनावृत्तानि वै दश ॥१२॥

अत्रानावृत्ताक्षराणि ''हरअशवदतयनम' इति।

तैः षोडशस्वरयुतैः षष्ट्या शतमुदीरितम् । चतुरस्त्रद्वयं कृत्वा तदन्तर्वृत्तयुग्मकम् ॥१३॥
तदन्तरष्टकोणं च तदन्तर्वृत्तयुग्मकम् । कृत्वा तत्र लिखेन्मध्ये विद्याद्यं नामसंयुतम् ॥१४॥

विद्याद्यं ह्रींकारम्।

वृत्तयोरन्तरा शेषं बहिः कोणेषु चाष्टसु । लिखेद् द्वेद्वेऽक्षरे तेषु बाह्यवृत्तद्वयान्तरा ॥१५॥
कर्मानुरूपान् भूतार्णान् दश भूपुरमध्यतः । मातृकां विलिखेद् दिक्षु द्वादश द्वादश क्रमात् ॥१६॥
अन्त्यं च त्रिषु कोणेषु शेषाणां च विलेखने । स्वैरैर्बिन्दुं समायोज्य योजयेद् व्यञ्जने परम् ॥१७॥
एवं यन्त्राणि जायन्ते दश सिद्ध्यास्पदानि वै ।

अत्र प्रथमतो वृत्तद्वयं कृत्वा तद्बहिरष्टकोणं तद्बहिर्वृत्तद्वयं तद्बहिश्चतुरस्त्रद्वयं कृत्वा मध्ये साध्यनामगर्भं मायाबीजं विलिख्य, तद्बहिर्वृत्तद्वयान्तराले प्रथमबीजरहितैर्मूल विद्याक्षरैर्वेष्टयित्वा तद्बहिरष्टकोणेषु षोडशस्वरसंयुक्ताना वृत्ताक्षरेषु षष्ट्युत्तरशतसंख्याकेषु १६० प्रथमतः षोडशाक्षराणि प्रतिकोणं द्विद्विक्रमेण विलिख्य, तद्बहिर्वृत्तद्वयान्तरे कर्मानुसारिभूताक्षरदशकं प्राग्वद्विलिख्य, तद्बहिश्चतुरस्त्रद्वयान्तराले दिक्षु द्वादश द्वादश क्रमेण अकारादिसकारान्त मातृकावर्णान् विलिख्याग्नेयादिकोणेषु त्रिषु हलक्षान् विलिख्येशानकोणे हंलंक्षं इति विलिखेत्। एवं दश यन्त्राणि भवन्तीत्यर्थः ॥ तथा- ....।

प्रथमं गैरिकैः कृ त्वा तत्रावाह्य शिवां यजेत् ॥१८॥

****

सप्तम्यां त्रिषु सन्ध्यासु सितापूपसमन्वितम् । कृत्वा निवेद्य पयसा प्रातर्मध्यन्दिने तथा ॥१९॥
दधिभक्तं तु सायं तु क्षीरं मोचाफलं तथा । एवं मण्डलमर्धं वा कुर्यात् पूजां समाहित: ॥२०॥
वाञ्छितं प्राप्नुयाद् देव्या: प्रसादेनाल्पयत्नत: । द्वितीयं दरदै: कृत्वा तत्रावाह्याथ तद्दिने ॥२१॥
सुपक्वछागमांसेन क्षौद्रमन्नं निवेदयेत् । तावद्व्रजेन्महीपालं वशे कर्तुमयत्नत: ॥२२॥
तथैव वनितां हृद्यां वशयेद्यावदायुषम् । तृतीयमपि सिन्दूरैर्विधायावाह्य तत्र ताम् ॥२३॥
तावद्दिनैस्तथावाह्य वशयेद्विविधान् रिपून् । चतुर्थं कुंकुमै: कृत्वा तत्र मध्येऽर्चयेत् तथा ॥२४॥
सप्ताहादापद: सर्वा: प्रयान्त्यस्या: प्रसादत: । पञ्चमं चन्दनै: कृत्वा तन्मध्ये पूजयेच्छिवाम् ॥२५॥
केवलं पायसं मोचां सितां घृतसमन्विताम् । निवेदयंस्त्रिसन्ध्यासु मासाद्रोगानशेषत: ॥२६॥
जित्वा सुखं चिरं जीवेच्छेषमायुर्निरामय: । अभिषिञ्चेच्च यन्त्रे वै कुम्भं संस्थाप्य तैर्जलै: ॥२७॥
कृत्वा तस्मै दक्षिणां च दद्याद्भूरि स्वशक्तित: । प्राणप्रदात्रे तस्मै तु दद्यात् सर्वस्वमेव वा ॥२८॥
येनासौ तोषमायाति तावद्वित्तं समर्पयेत् । षष्ठं कर्पूरसंयुक्तं पाटीरैरालिखेत् तत: ॥२९॥
मसृणे वा शिलापट्टे पीठे वा सौधभूतले । अन्नाज्यपायसापूपव्यञ्जनानि निवेदयेत् ॥३०॥
पूजयेच्च त्रिसन्ध्यासु जपन् विद्यां तदा वशी । त्रिसप्तरात्रमात्रेण ज्वराद्भीमाभिचारजात् ॥३१॥
मुच्यन्ते प्राणिनोऽचिन्त्या: शक्तयो मन्त्रयन्त्रयो: । सप्तमं ताम्रपट्टे तु कृत्वावाह्याभिपूज्य च ॥३२॥
स्थापयेन्मन्दिरे तस्मिंल्लक्ष्मीरास्तेऽतिसुस्थिरा । अष्टमं राजते कृत्वा विभृयात् सर्वसम्पदे ॥३३॥
नवमं हेमगं कृत्वा भूषादौ धारयेच्छिवे । दशमे सर्वकार्याणि साधयन्नर्चयेच्छिवाम् ॥३४॥
यद्यद्धि वाञ्छितं कार्यं तत्तन्मध्यगतं तथा । कृत्वा तां पूजयेत् तत्र तत्कार्यं हृदये स्मरन् ॥३५॥
तद्दिनैस्तदवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा । दशैव तानि यन्त्राणि भूर्जे कृत्वाभिपूज्य च ॥३६॥
सिक्थनिर्भितपात्रं तु क्षौद्रमध्ये निवेशयेत् । त्रिसन्ध्यमर्चयेद्रक्तगन्धपुष्पै: समाहित: ॥३७॥
साध्यस्याभिमुखो विद्यां जपेन्नित्यमनुस्मरन् । पाशेन कण्ठमाबध्य पातितं निजपादयो: ॥३८॥
न्यस्ताञ्जलिकरं शीर्षे दासोऽहमिति वादिनम् । त्रिसप्तरात्राद्वश्या: स्युर्नरनारीनृपादय: ॥३९॥
तदेव कोष्णं कृत्वा च सन्ध्यासु त्रिषु नित्यश: । कामार्ता वनिता: कामज्वरग्रस्ताशया: शनै: ॥४०॥
कुलं लज्जां विवेकं च परित्यज्यास्य किङ्करा: । भवेयुरिति यन्त्राणां प्रयोगास्ते समीरिता: ॥४१॥
प्राणप्रतिष्ठाविद्यां ते वक्ष्येऽहं शृणु पार्वति । वातो नभौ धरायुक्तं स्पर्शो व्याप्तेन संयुत: ॥४२॥
जवी दाहमरुद्युक्तो व्योमापि मरुता युतम् । अग्निर्हंसश्च पूर्वार्णौ पश्चादादित्रयं तथा ॥४३॥
ज्यावह्नियुक्तान्तोऽम्बु स्यात् षष्ठसप्तमकौ पुन: । हृच्छिख्यग्निरथो माया वातादित्रितयं पुन: ॥४४॥
हृद्दाहाम्बुचरै: स्वेन गोत्रादाहाग्निभि: परम् । व्याप्तं मरुत्समोपेतं व्योमाग्निगमनन्तरम् ॥४५॥
पुनराद्यत्रयं चाम्बु मरुद्द्यु नभसा युतम् । शून्यं मायान्वितं पश्चाच्चतुर्थं पञ्चमं तत: ॥४६॥

अग्निर्हसो मरुद्युक्तो व्याप्तं च मरुता युतम् । स्वं स्याद्रयधरायुक्तं हृदम्बु मरुदन्वितम् ॥४७॥
हंसश्च मरुता युक्तश्चत्वारिंशल्लिपिर्मनुः ।
''अमुष्य प्राणा इह प्राणा अमुष्य जीव इह स्थित अमुष्य सर्वेन्द्रियाणि अमुष्य वाड्मनःप्राणा इहायान्तु स्वाहा'' इति। .. ..।

यादिसप्ताक्षरैः कुर्यात् षडङ्गानि द्वियोगतः ॥४८॥
त्वादिषु च तान्येव न्यस्येच्छक्तिपुटस्थितम् । ध्यायेद् देवीं प्राणशक्तिमरुणामरुणाम्बराम् ॥४९॥
अरुणाकल्पमुकुटा मरुणाधरपल्लवाम् । अरुणायतनेत्राब्जयुगां चारुस्मिताननाम् ॥५०॥
प्रसूनपिण्डं पाशं च दधानां पाणियुग्मतः । स्वसमानाभिरभितो वेष्टितां दशशक्तिभिः ॥५१॥
अनन्तशक्तियुक्ताभिः पूजयेत् पद्ममध्यतः । प्राणापानसमानाश्च व्यानोदाना च शक्तयः ॥५२॥
नागा कूर्मा सकरा देवदत्ता धनञ्जया । चतुरस्त्रद्वयं कृत्वा तदन्तर्वृत्तयुग्मकम् ॥५३॥
तदन्तर्दशपत्राब्जं तदन्तस्तद्द्वयं तथा । कृत्वा मध्ये समावाह्य कृत्वार्घ्यं पूजयेत् ततः ॥५४॥
लक्षं जपेत् पयोभक्षस्तद्दशांशं हुनेत् तथा । तिलैः शुद्धैः सर्षपैश्च सितैर्मधुरसंयुतैः ॥५५॥
तर्पयेत् सौरभाद्येन जलेनेत्थं सुसाधयेत् । तन्त्रेऽस्मिन् यास्तु पुत्तल्यो यन्त्राण्युक्तानि सर्वतः ॥५६॥
अनया विद्यया तत्र साध्यप्राणान्नियोजयेत् । यन्त्रमस्याः शृणु प्राज्ञे सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥५७॥
येन पुत्तलिका जीवस्पन्दयुक्ता मनोर्बलात् । प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च सूत्राण्यष्टौ निपातयेत् ॥५८॥
कोष्ठान्येकोनपञ्चाशज्जायन्ते तेषु विन्यसेत् । प्रागुत्तरं समालिख्य परितोऽपि प्रवेशतः ॥५९॥
मध्येषु शिष्टनवसु लिखेदङ्गोदितात् क्रमात् । ततः शिष्टद्वये साध्यनामालिख्याथ साधकः ॥६०॥
सञ्जप्य विद्यां हस्तेन सजीवन स्पृशन् शतम् । तेन पुत्तलिकाः कुर्यात् सिद्धये नान्यथा भवेत् ॥६१॥
साध्यजीवाद्यानयनं शृणु वक्ष्यामि तेऽद्भुतम् । मन्त्रवीर्यस्मृति कुर्वन् तथा तद्देहगर्भतः ॥६२॥
ज्ञानकर्मेन्द्रियाण्यर्थान्मनो जीवं तनुं तथा । तस्मात् साध्यशरीरान्तात पुत्तल्या नामभिस्तथा ॥६३॥
रक्तरज्ज्वा शक्तिमय्या तानानीयार्पयेद्धिया । विद्यायास्त्र्यक्षरान्तेषु साध्यनाम नियोजयेत् ॥६४॥
एवं नियोजितां विद्यां सहस्त्रं प्रजपेत् स्पृशन् । जीवहस्तेन तच्चित्तो निशामध्येषु साधकः ॥६५॥
एवं संस्थापितप्राणा पुत्तली स्पन्दते तदा । साध्यस्य जन्मनक्षत्राण्याकर्णय वदामि ते ॥६६॥
तज्जन्मलग्नसञ्ज्ञातनवांशर्क्षप्रमाणकम् । अन्यानि च नवर्क्षाणि नवग्रहसमन्वयात् ॥६७॥
तेषु तेषु प्रयोगांस्तु वक्ष्याम्यपरहोमके । रिपोर्नखं च केशं च चरणोत्थं रजस्तथा ॥६८॥
अन्यानि चाङ्गरोमाणि पुत्तल्यां योजयेन्मृतौ । वश्यादिषु च सर्वत्र पुत्तल्यां प्रोक्तया तया ॥६९॥
एवं सर्वं समाख्यातं प्राणाकर्षणकर्मणि । अनया विद्यया कृत्वा प्राणाकर्षणमुक्तया ॥७०॥
ततो निर्दिष्टपुत्तल्यां तत्र तन्त्रोक्तमाचरेत् । सर्वत्र मारणे प्रोक्ते साध्यर्क्षग्रहसंस्थितिम् ॥७१॥

उक्तानां तत्र ऋक्षाणां तथैवाष्टकवर्गकम् । दशास्थितिं च संवीक्ष्य कुर्यान्मारणमात्मवान् ॥७२॥
अनवेक्ष्य कृतं कर्म स्वात्मानं हन्ति तत्क्षणात् । ब्राह्मणं धार्मिकं भूपं वनितामास्तिकं नरम् ॥७३॥
वदान्यं सदयं नित्यमभिचारे न योजयेत् । योजयेद्यदि वैरेण प्रत्यगेनं निहन्ति तत् ॥७४॥
अभिचारस्य विषयानाकर्णय वदामि ते । पापिष्ठान्नास्तिकान् घोरान् देवब्राह्मणनिन्दकान् ॥७५॥
प्रजानां घातकान् सर्वक्लेशकर्मसु संस्थितान् । क्षेत्रवृत्तिधनस्त्रीणामाहर्तारं कुलान्तकम् ॥७६॥
निन्दकं समयानां च पिशुनं राजघातकम् । विषाग्निक्षुरशस्त्राद्यैर्हिंसकं प्राणिनां सदा ॥७७॥
नियोजयेन्मारणेषु कर्मस्वेतैर्न पातकी । कृत्वा तु मारणं कर्म तदन्ते स्वधनार्धतः ॥७८॥
पादतो वा गुरुं विप्रानाराध्य स्वेन नित्यया । अभिषिच्य ततो विद्यां जपेल्लक्षं हविष्यभुक् ॥७९॥
जन्मत्रयेऽप्यब्दमात्रमभिषेकं समाचरेत् । सदूर्वाहोममब्दात्तु तत्पापैरेष मुच्यते ॥८०॥
एतत्ते कथितं सर्वं दूतीनित्याविधानकम् ।

॥ शिवदूती प्रयोगः॥

मूल मन्त्र – ह्रीं शिवदूत्यै नमः।

मन्त्र के अनावृत्त वर्ण – ह र अ श व द त य न म॥ (दश वर्ण)

श्लोक १ से १० तक अलग-अलग द्रव्य प्रयोग से कामना फल दिया गया है।

॥ यन्त्र रचना॥

दो वृत्त बनायें। मध्य में "**ह्रीं**" सहित साधक का नाम लिखें। दोनों वृत्तों के बीच की विथिका में प्रथमाक्षर को छोड़कर बाकी के नौ वर्ण लिखें। वृत्त द्वय के बाहर अष्टकोण बनायें। प्रत्येक कोण में प्रत्येक स्वर मातृका अक्षर दो आवृत्ति में अनावृत्त वर्ण लिखें तो आठ कोणों में १६ × १० = १६० अनावृत्त वर्ण हो जायेंगे। प्रथम कोण में यथा **अं हर अ श व दत य नम, आं ह र अ श व दत य नम**। इस प्रकार ८ कोणों में स्वर मातृका सहित दो आवृत्तियों में लिखें।

अन्य विशेष क्रम में "**हं अं आं......अं अः, हं आं......अं अः**" प्रत्येक कोण में लिखें। यह एक यन्त्र हुआ।

दूसरे यन्त्र के लिये दूसरा अनावृत्त वर्ण "**र**" स्वर मातृका के साथ लिखें तो इस तरह १० अक्षरों से १० यन्त्र प्राप्त होंगे।

अष्ट कोणों के बाहर दो वृत्त बनायें। उनके मध्य की विथिका में "**ह र......म**" दशाक्षर लिखें। वृत्त के बाहर दो चतुरस्र बनायें। उनकी पृर्वादि दिशाओं में "**अं आं......ऐं, ओं......क......ज, झ......नं, पं......सं**" लिखें।

सप्तमी को त्रिकाल पूजन करें। दही, भात, क्षीर आदि अर्पण करें। शिवा का पूजन करें। कुंभ स्थापित करें, उसके जल में शिवा का पूजन करें। शिष्य का अभिषेक करें, अभीष्ट पूर्ण होवे।

श्लोक १८ से ३७ तक १० तरह के यन्त्रों के पूजन का फल मिलता है।

पुतली बनाकर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें। दशकमल दल बनायें। मध्य में "**ह्रीं**" लिखें। देवी का आवाहन करें। ध्यान श्लोक ५०-५१ अनुसार करें।

दशदल में - प्राण, आपान, समान, व्यान, उदान, नाग, कूर्म, सकृकरा, देवदत्ता, धनञ्जया इन दश प्राणवायु का पूजन करें। दशदल पर दो वृत्त बनायें पश्चात् दो चतुरस्त्र बनायें। एक लक्ष जप करें, अग्र क्रम श्लोक ५५ से आगे वर्णित के अनुसार जानें।

॥ इति शिवदूतीनित्याप्रयोगविधिः ॥

॥ ८. अथ त्वरिता नित्या प्रयोगः ॥

मंत्र - ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्री हूं क्षे ह्री फट्। (अग्नि पुराण में अन्य विशेष विधान दिया है)

ऋषिन्यासः - शिरसि सोरये (सौरि ऋषि) **ऋषये नमः। मुखे विराट् छंदसे नमः। हृदि त्वरिता नित्यादेवतायै नमः। गुह्ये ॐ बीजाय नमः। पादयोः हुं शक्तये नमः। नाभौ क्षे कीलकाय नमः। ममाभीष्ट सिद्धये विनियोगः नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यासः - कुर्यादङ्गानि युग्मार्णैः षट्क्रमेण कराङ्गयोः। मंत्र १२ अक्षर का है अतः २-२ अक्षर से षडङ्गन्यास होता है, परन्तु विमर्श में मंत्र न्यास इस प्रकार से प्राप्त है। **ॐ खे च हृदयाय नमः। च छे शिरसे स्वाहा। छे क्षः शिखायै वषट्। क्षः स्त्री कवचाय हुं। स्त्री हूं नेत्रत्रयाय वौषट्। हूं क्षे अस्त्राय फट्।** (स्त्री पर अनुस्वार नहीं है)

वर्णन्यासः- शिरसि "ह्रीं" ॐ ह्रीं नमः। ललाटे ह्रीं हुं ह्रीं नमः। कंठे ह्रीं खे ह्रीं नमः। हृदि ह्रीं च ह्रीं नमः। नाभौ ह्रीं छे ह्रीं नमः। मूलाधारे ह्रीं क्षः ह्रीं नमः। ऊरुद्वये ह्रीं स्त्रीं ह्रीं नमः। जानुद्वये ह्रीं हूं ह्रीं नमः। जंघाद्वये ह्रीं क्षे ह्रीं नमः। पादयोः ह्रीं फट् ह्रीं नमः।

॥ ध्यानम् ॥

**श्यामवर्णां शुभाकरां नवयौवन शोभिनीम् । द्विद्विक्रमादष्टनागैः कल्पिताभरणोज्ज्वलाम् ॥
ताटङ्कमङ्गदं तद्वद्रशना नूपुरान्वितैः । विप्रक्षत्रिय विट् शूद्र जातिभिर्भीम विग्रहैः ।
पल्लवां शुक संवीतां शिखिपुच्छकृतिः शुभैः । वलयैर्भूषितभुजां माणिक्य मुकुटोज्ज्वलाम् ॥
बर्हिबर्हकृतापीडां तच्छत्रां तत्पताकिनीम् । गुञ्जागुणलसद्वक्षः कुच कुंकुममण्डनाम् ॥
त्रिनेत्रां चारुवदनां मन्दस्मित मुखाम्बुजाम् । पाशांकुश वराभीति लसद्भुज चतुष्टयाम् ॥
ध्यात्वैवं तोतुलां देवीं पूजयेच्छक्तिभिर्वृताम् ॥**

॥ यन्त्रपूजनम् ॥

दो रेखावाला भूपुर बनाये उसके चार द्वार बनाये। उसके अंदर दो वृत्त बनाये उनके अंदर अष्टदल बनाये। भुवनेश्वरी की जयादि पीठ शक्तियों का अर्चन करे। मध्य में ध्यानपूर्वक देवी का आवाहन करे।

प्रथमावरणम् - मध्य में देवी के **षडङ्गों की हृदयादि** न्यास मंत्रों से पूजा करे। वहीं **दिव्यौघ, मानवौघ, सिद्धौघ** गुरवों का पूजन करे।

द्वितीयावरणम् - अष्टदल के बाहर के वृत्त वीथी में देवी के अग्रभाग में **ॐ फट्कारी पादुकां पूज.**। वाह्यवीथी

॥ श्री त्वरिता यन्त्रम्॥

में देवी के आगे **किंकर पा.।**

तृतीयावरणम् – (द्वारपार्श्वयोः) **जया पा.। विजया पा.।**

चतुर्थावरणम् – (अष्टदले) **हुंकारी पा.। खेचरी पा.। चण्डा पा.। छेदिनी पा.। क्षेपिणी पा.। स्त्रीकारा पा.। हूङ्कारी पा.। क्षेमकरी पा.।**

पंचमावरणम् – (भूपुरे) इन्द्रादि लोकपालों एवं उनके आयुधों का पूजन करे। पश्चात् देवी का सर्वविधपूजन कर "**कुरुकुल्ला देवी**" को बलि प्रदान करे।

गायत्री मन्त्र – त्वरितायै विद्महे महानित्यायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥
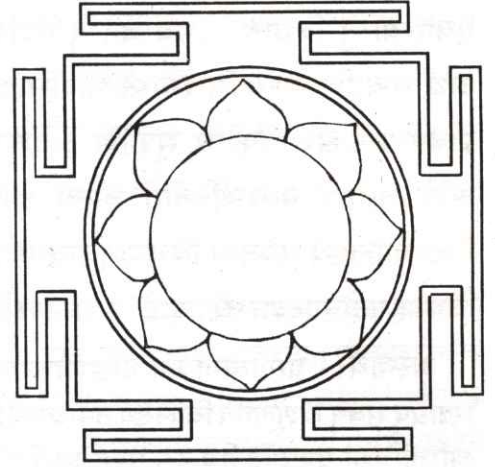
॥ अथ कादीक्रमानुसार त्वरिता नित्यायाः प्रयोग विधिः ॥

(श्रीतन्त्रराजे)

ततःसाधितविद्यस्तु प्रयोगानाचरेन्नरः । बैल्वैर्दशांशं जहुयात् पत्राद्यैः साधने जपे ॥१॥
एवं संसिद्धिमन्त्रस्तु मन्त्रितैश्चुलुकोदकै । फणिदष्टमृतानां तु मुखे संताडय जीवयेत् ॥२॥
तत्कर्णयोर्जपेद्विद्यां यष्ट्या वा जपसिद्धये । संताड्यशीर्षे सहसा मृतमुत्थापयेदिति ॥३॥
काम्यहोमविधि देवि शृणु वक्ष्ये यथाविधि । कृत्वा योनिं कुण्डमध्ये तत्राग्नौ विधिवद्धुनेत् ॥४॥
तिलसर्षपगोधूमशालिधान्ययवैर्हुनेत् । त्रिमध्वक्तैरेकशो वा समेतैर्वा समृद्धये ॥५॥
वकुलैश्चम्पकैरब्जैः कह्लारैररुणोत्पलैः । कैरवैर्मल्लिकाकुन्दमधूकैरिन्दिरासये ॥६॥
अशोकैः पाटलैर्बिल्वैर्जातीविचकिलैः सितैः । नवैर्नीलोत्पलैरश्वरिपुजैः कर्णिकारजैः ॥७॥
होमाल्लक्ष्मीं च सौभाग्यमायुर्वित्तं यशो निधिम् । यद्यद्धि वाञ्छितं सर्वमवाप्नोति सुनिश्चितम् ॥८॥
दुर्वागुडूचीमश्वत्थं वटमारग्वधं तथा । सितार्कप्लक्षकं हुत्वा रोगान्मुक्तो नरोऽचिरात् ॥९॥
इक्षुजम्बूनालिकेरमोचागुडसितैर्हुतैः । अचलां लभते लक्ष्मीं भोक्ता च भवति ध्रुवम् ॥१०॥
एतैरुदीतितैराज्यमधुक्षीर परिप्लुतैः । एकैकैर्वनिता वश्या यावज्जीवं धनादिभिः ॥११॥
तैस्तैराज्यप्लुतैर्भूपा वश्या स्युर्हवनात्प्रिये । क्षीराक्तैस्तैर्हुतैर्मर्त्या वशे तिष्ठन्त्यशेषतः ॥१२॥
सर्षपाज्यैर्हुनेन्मृत्युकाष्ठाग्नौ वैरिमृत्यवे । तदक्तैर्वैरियोन्युत्थ मांसैरपि च तत्कृते ॥१३॥
अक्षेन्धनाग्नौ योन्युत्थक्षतजोत्पादितं चरुम् । आरुष्कर घृतोपेतं फणिशीर्षस्रुचा हुनेत् ॥१४॥
कृष्णांशुकशिरोवेष्टः खड्गपाणिश्च रोषवान् । निशामध्ये हुनेत्सद्यो निहन्तुं वैरिणं हठात् ॥१५॥
मृत्युकाष्ठानले तस्य फलैः पत्रैश्च होमतः । सप्तरात्रादरातेस्तु गजाश्वा रोगमाप्नयुः ॥१६॥
चतुरंगुलजैर्होमाच्चतुरङ्गबलं रिपोः । सप्ताहाद्रोगदुःखार्त भवत्येव न संशयः ॥१७॥

एवमस्यास्तु विद्याया वैभवं को नु वर्णयेत् । तथापि तद्दिशा किञ्चिदुच्यते तच्छृणु प्रिये ॥१८॥
अथ यन्त्राणि वक्ष्यामि समस्ताभीष्टसिद्धये । तानि सर्वाणि देवेशि कुरु चित्ते क्रमेण वै ॥१९॥
प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च सूत्राणि द्वादशार्पयेत् । तदग्राण्यभितः कुर्यात्त्रिशिखान्यस्य मध्यगे ॥२०॥
कोष्ठे तारस्य मध्यस्थं नाम कृत्वा शिवादिषु । प्रादाक्षिण्यप्रवेशेन द्वादशावृत्ति मायया ॥२१॥
विद्यामालिख्य सञ्जप्य विभृयात् सर्वसिद्धये । श्रियै कीर्त्यै च वश्याय सौभाग्यायाखिलाप्तये ॥२२॥
विषग्रहगदोन्मादशान्त्यै युद्धे जयाप्तये । नरनारी नृपादीनां वश्याय विभृयाच्च तत् ॥२३॥

अस्यार्थः:- प्राग्प्रत्यगायता दक्षिणोत्तरायताश्च द्वादश रेखा विलिख्यैक विंशत्युत्तर शतकोष्ठानि कृत्वा, रेखाग्रेषु सर्वेषु त्रिशूलानि विलिख्य तन्मध्यकोष्ठे ससाध्य प्रणवं विलिख्येशान कोष्ठमारभ्य प्रादिक्षण्येन प्रवेशगत्या त्वरिताविद्यां प्रणवद्वितीय हृल्लेखाविधुरां द्वादशावृत्ति विलिखेत्। एतद्यन्त्रमुक्तफलदं भवति।

तथा-

प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च नव सूत्राणि पातयेत् । जायन्ते चतुः षष्टिकोष्ठानि परमेश्वरि ॥२४॥
तेषुशर्वनिर्ऋत्यादि लिखेल्लक्ष्मीमनुं क्रमात् । बहिस्तूर्णाक्षरैरन्ते वषड्युक्तैस्तु वेष्टयेत् ॥२५॥
अनुग्रहं महाचक्रं विद्यां शृणुं महेश्वरि । सर्वतोभद्र विन्यासानुष्टुभं सर्वसिद्धिदम् ॥२६॥
दाहवह्नियुतं चाद्यं वियद्धन्मरुताः ततः । नभश्च मरुतोपेतेतं व्याप्तं तेन समन्वितम् ॥२७॥
एतान्येव विलोमानि प्रथमं चरणं भवेत् । द्वितीयादि द्वितीयं स्याद्भुवा शून्यं द्वितीयकम् ॥२८॥
तृतीयं च चतुर्थं स्याज्जा तु साभ्रचरा ततः । प्रतिलोमं तथैतेषां द्वितीयं चरणं भवेत् ॥२९॥
तृतीय तुर्यौ परत इला वह्न्या ततस्त्विला । मरुद्युता प्राग्वदेतत्प्रतिलोमं तृतीयकम् ॥३०॥
चतुर्थं द्वादश विंश तदाद्यं ते विलोमगाः । एतच्चतुर्थं चरणं श्रीविद्यायां महेश्वरि ॥३१॥
सर्वतोभद्ररूपैषा विद्या सर्वार्थसाधिका । यत्र स्थितासौ चक्रस्था न तत्राशुभसंकथा ॥३२॥
श्रीसामायायामासाश्री सानोवाज्ञेज्ञेयानोसा । मायालीलालालीयामा याज्ञेलालीलीलाज्ञेया ॥

इति अथैतद्यन्त्र रचना प्रकार :- तत्र प्राग्प्रत्यगायता दक्षिणोत्तरायताश्च नव रेखाः कृत्वा चतुः षष्ठिकोष्ठयुतं चतुरस्त्रं श्रीचक्रं परिकल्प, तत्र सर्वोपरिगतपंक्तेः प्रथमकोष्ठमारभ्य स्ववामादि दक्षिणान्तक्रमेण पंक्तिचतुष्टयगतेषु द्वांत्रिशत्कोष्ठेषु प्रोक्तसर्वतोभद्राख्य लक्ष्मी मंत्रस्य द्वात्रिंशदक्षराणि विलिख्य, पुनरधोगतपंक्ति चतुष्टयेपि सर्वाधः पंक्तैः प्रथमकोष्ठं स्वदक्षिणस्थमारभ्य वामान्तमुपर्युपरि पंक्तिचतुष्टये तस्यैव मन्त्रस्य द्वात्रिंशदक्षराणि विलिख्य तद्बहिः प्रागादिषु चतसृषु दिक्षु ईशादीशान्तं चतुरावृत्ति तद्बाह्यरेखास्पृष्ठां त्वरिता विद्यामन्तर्गत वषट्कारमालिख्य तद्बहिर्वमित्यमृत बीजेन वेष्टयेत्। एतद्यन्त्रमुक्तफलदं भवति। तथा-

दशसूत्रनिपातेन कृत्वैकाशीतिकं पदम् । तन्मध्यकोष्ठे दावस्थं कृत्वा नामास्य वीथिषु ॥३३॥
लिखेद्वर्णचतुष्कं तु शृणु भद्रे यथाविधि । ज्याधरास्वैर्मायया हृत्तत्तोम्बु स्पर्शगा इला ॥३४॥
ततः श्रियो लिखेद्विद्या शिवरक्षोदिगाद्दिकाम् । प्राग्वत्तूर्णामृतार्णस्तैर्वेष्टयेत् फड्वियोजितैः ॥३५॥

ततोम्बु स्वयुतं तेन मालाकलितरूपिणा । वृत्तद्वयेन निष्पाद्य कुम्भं पद्माधरोत्तरम् ॥३६॥

कृत्वा स्वर्णादिषूक्तेषु सम्पूज्याभ्यर्च्य तत्पुनः । स्थापयेज्जपसंसिद्धं तेषु पूर्वोदितेषु वै ॥३७॥

तत्र लक्ष्मीरतिस्फीता नीरोगाश्च प्रजास्तथा । गजाश्वपशवस्त्वन्ये प्राणिनः सुखिनोऽनिशम् ॥३८॥

भूतप्रेतपिशाचादि पीडासु बिभृयादिदम् । अलक्ष्मीशान्तये वश्यसिद्धये सर्वसम्पद ॥३९॥

॥ अथैतद्यन्त्रप्रकार ॥

तत्र प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक्च समान्तरालानि दश दश सूत्राण्यास्फाल्येकाशीति पदानि विधाय , तत्र मध्यकोष्ठे सबिन्दुकठकारोदरे साध्यनामालिख्य तत्कोष्ठपार्श्वस्थ पूर्वापरायत पंक्तिद्वयेन दक्षिणोत्तरायत पंक्तिद्वयेन च सम्भूय चतुसृषु पंक्तिषु चतुश्चतुष्कोष्ठात्मिकासु स्वाग्रादि प्रादक्षिण्य क्रमेण ''जूं सः वषट्'' इति च चतुष्टयवर्जमालिख्य, सर्वबाह्येभितः ईशादीशान्तं तूर्णामृताक्षराणि चतुरावृत्त्या प्राग्वत्समालिख्य सर्वमध्यकोष्ठे मध्यकोष्ठमवष्टभ्य चतुष्कोणस्य तृर्णाक्षरमानेन भ्रमेण वृत्त निष्पाद्य तद्वाह्येंगुलमानेन तथा वृत्तान्तरं कृत्वा उपरिभागे च मध्यतश्चतुरंगुलान्तरालं वृत्तद्वयं मार्जयित्वा तदग्रचतुष्टयमानमवक्रं समान्तरालमुपरि चतुरंगुलकुम्भमुखाकारं यथा भवति तथा समुन्नमय्य कुम्भमुखे तिर्यग्रेखाद्वयं प्रसार्य, तत्कुम्भवीथीमध्य मन्योन्यस्पृष्टवकारमालया शृंखलारूपयान्तर्मुखया समापूर्य सर्वत्रोपरि विन्दुं समालिख्य, कुम्भाधस्तात्वं तत्कर्णिकास्थकुम्भं यथा भवति तथा समालिख्य प्रोक्तक्रमेण मनीषितेषु विनियोगात् प्रोक्तफलानि भवति। इत्यनुग्रहयंत्राणि। अथ निग्रह यंत्राणि तत्रैव-

निग्रहं शृणु देवेशि शत्रवो यस्य शङ्किताः । स्वल्पनैव तु कालेन भवन्त्येव परासवः ॥४०॥

प्राग्वदेकाशीतिपदं कृत्वा तन्मध्यकोष्ठके । दाहगर्भे नाम कृत्वा तथा दिग्वीथिषु क्रमात् ॥४१॥

लिखेद्वीजचतुष्कं तु वह्निमारुतविग्रहम् । यैः सद्यो वैरिणः रैवरं विमुञ्चन्ति कलेवरम् ॥४२॥

रसो दाहक्ष्मास्वयुतो ग्रासो दाहक्ष्मया स्वगः । प्रभा दाहक्ष्मास्वयुता हंसो दाहादि संयुतः ॥४३॥

ईशरक्षोदिगारम्भात् पंक्तिशो विलिखेत्ततः । काल्या यमस्य क्रमतो विद्यामन्त्रं च संक्रमम् ॥४४॥

सर्वतोभद्ररूपं तु काल्यनुष्टभमीश्वरि । शृणु वक्ष्यामि परतो यमानुष्टुभमीदृशम् ॥४५॥

प्राणो मरुत्समोपेत इला वह्नया समन्विता । नभो मरुद्युतं दाहश्चतुर्णां प्रतिलोमतः ॥४६॥

प्रथमं चरणं तस्य द्वितीयं शून्यमेव च । नभो भुवा ग्रास एत एतत्प्रतिलोमाद् द्वितीयकम् ॥४७॥

तृतीयमेकादशं ततो गोत्रा चरान्विता । रयस्तेषां विलोमं च तृतीयं चरणं मतम् ॥४८॥

चतुर्थं द्वादशं विंशं रयोऽम्ब्वाधो विलोमकम् । चतुर्थं चरणं प्रोक्तं विद्यैषा सर्वनाशिनी ॥४९॥

व्याप्तं कालीतृतीयं च मरुताम्बुसमन्विताम् । नाद एषां विलोमं च प्रथमं चरणं यमे ॥५०॥

एतद्द्वितीय तुर्यो च नभसा भूश्च नादकम् । एतेषां प्रतिलोमं च द्वितीयं चरणं मनोः ॥५१॥

अम्बुयुक्तो मरुच्चास्मिन्नेकादशमेव च । रसः क्ष्मया वह्निदाहौ प्रतिलोमं तृतीयकम् ॥५२॥

नादो नादो दाहवह्नी रयोऽम्ब्वा तदनन्तरम् । प्रतिलोमं तु तेषां स्याच्चतुर्थं चरणं शिवे ॥५३॥

एवं मनुद्वयं कोष्ठेष्वालिख्य बहिरप्यथ । वेष्टयेद् व्याप्तादाहाभ्यामुक्तक्रमसमन्वितम् ॥५४॥

मर्कटीदण्डिगरलैनालिप्तं स्थापितेरकम् । जपन् विनिक्षिपेदक्षविवरे चत्वरेऽथवा ॥५५॥
वल्मीके मातृभवने शास्तुरायतनेऽथवा । श्मशाने प्रोक्तसमये प्रोक्तक्रमसमन्वितम् ॥५६॥
कालीमाररमालीका लीनमोक्षक्षमोनली । मामोदेततदेमोमा रक्षतत्वत्वतक्षर ॥ इति काल्युष्टुभम्।

यमावाटटवामाय माटमोटटमोटमा । वामोभूरीरीभूमोवा टटरीत्वत्वरीटट इति यमानुष्टुभम्॥ भ्रूं क्ष्रूं छ्रूं ह्रूं इति निग्रहबीज चतुष्टयम्॥

॥ अथैतन्निग्रह यंत्ररचनाप्रकार॥

तत्र प्राग्वदेकाशीतिपदोपेतं चक्रं विरच्य यन्मध्यकोष्ठे सबिन्दुकरेफोदरे साध्यनामलिख्य प्राग्वत् तत्पार्श्वपंक्तिषु चतुष्कोष्ठेषु प्रागुक्तक्रमेण भ्रूं क्ष्रूं छ्रूं ह्रूं इत्यक्षर चतुष्टयमभ्यन्तरान्निर्गमन गत्याभिमः समालिख्य आभिचार्यः पुरुषश्चेदन्त काल्यनुष्टुभं बहिर्यममन्त्रं वनिता चेदन्तर्यममन्त्रं बहिः कालीविद्यां च समालिखेत्। लेखने तु- ईशानादिकं निर्ऋत्यादिकं कालीविद्याम् अन्यदा तथा यममन्त्रं विलिख्य अन्यतरं बहिरीशानादि निर्ऋत्यन्तं निर्ऋत्यादीशान्तं च निरन्तरं द्विरालिख्य तद्बहिर्निरन्तरं बिन्दुयुक्तं यकारं रेफं चेशादीशान्तं यथाक्रममन्तर्बहिर्विभागेन समालिख्य मनीषितेषु विनियुञ्ज्यात्। एषन्निक्षिपेदाभिचार्य पुरुषश्चेत् काल्यादिशक्तेरायतने स्त्री चेत् शास्तुरायतन एवाग्रभागेधस्तान्निखनेदिति सम्प्रादयः। प्रपञ्चसारे-

तन्त्रराजे-

यत्र देशादिके यन्त्रं तत्रालक्ष्मीर्गदैः समम् । मारी सुदुस्तरासाध्या सर्वैर्देवासुरैरपि ॥५७॥
प्राग्वच्च नवभिः सूत्रैरष्टाष्टकपदं शिवे । कृत्वा तेष्वीशरक्षोदिगारम्भातत् कालिकामनुम् ॥५८॥
विलिख्य यममन्त्रेण प्रोक्तबीजद्वयेन च । वेष्टयित्वा बहिश्चक्रं स्थपयेत्तदधोमुखम् ॥५९॥
एतच्च पूर्वचक्रोक्त फलकृत् परमेश्वरि । अनुक्तेष्वपि नामानि योजयेत् कोष्ठमध्यतः ॥६०॥
लवणोषणमेहाम्बुगृह धूमाग्निसंयतुम् । श्मशानाङ्गारनिम्बोत्थनिर्यासो विषमीरितम् ॥६१॥

ऊषणमूषर इति मनोरमाकारैर्व्याख्यातम्। मेहाम्बु प्रस्त्रवः। अग्निश्चित्रकम्॥ यन्त्र रचनाक्रमो यथा- तत्र प्राग्वत् नवभिर्नवभिः सूत्रैश्चतुः षष्ठिकोष्ठानि कृत्वा तेष्वीशानादीकं निर्ऋत्यादिकं चाभिचार्यः पुरुषश्चेदन्तः कालीविद्यां बहिर्यममन्त्रं च, स्त्री चेदन्तर्यममन्त्रं बहिः कालीविद्यां च प्राग्वत् समालिख्य प्राग्वत् सबिन्दुयकाररेफाभ्यां संवेष्ट्य प्रोक्तक्रमेण प्रोक्तस्थानेषु स्थापनात् प्रोक्तफलसिद्धिर्भवतीति॥ तथा-

विद्याद्यवर्णजठरे साध्यमालिख्य तद्बहिः । अष्टच्छदेषु फड्वर्ज्यमालिखेदष्टवर्णकम् ॥६२॥
कर्णिकास्थं ततोब्जं च वेष्टयेन्मायया ततः । बहिः कुम्भं विदध्याश्च प्रोक्ताक्षर विधानतः ॥६३॥
एवमन्यैश्च नवभिर्विद्यावर्णैयथाक्रमम् । विदध्यान्नव यन्त्राणि दशानां च फलं शृणु ॥६४॥

॥ यंत्ररचना क्रमो यथा॥

तत्राष्टदलकमलं सकर्णिकं विलिख्य तद्बहिर्वृत्तद्वयं विधाय कर्णिकायां विद्यावर्णं साध्यनामगर्भं विलिख्य, तद्बहिर्मायाबीजेन संवेष्ट्याष्टदलेषु फडवर्ज्यं द्वितीयाद्यष्टौ बीजानि विलिख्य तद्बहिर्मायया वेष्टयेत्। एवं द्वितीयबीजं कर्णिकायां विलिख्य द्वितीयं यन्त्रं भवति। एवं तृतीयबीजादिकं ज्ञेयम्। एवं दश यन्त्राणि भवन्ति। फलान्याह-

सर्वरक्षां जयं वश्यं नरनारीनृपादिनाम् । स्तम्भं लक्ष्मीयशो हेमवासांसि च समाप्नुयात् ॥६५॥

अनावृत्तान्यक्षराणि मन्त्रेष्वेकादशाथ तैः । स्वरभिन्नैर्भवेत् संख्या षट्सप्तत्या शतं स्मृतम् ॥६६॥

अहरखचछक्षसत फट् इति।

तैर्यन्त्रकरणं तेषां फलानि यथाक्रमम् । शृणु वक्ष्यामि देवेशि साधकाभीष्टसिद्धये ॥६७॥

वृत्तयोर्मध्यगं कृत्वा पद्मं षोडशपत्रकम् । तन्मध्ये कर्णिकामध्ये शक्तिं साध्यसमन्विताम् ॥६८॥

परेषु षोडशार्णानि वेष्टायेत्तच्च मायया । वृत्तयोरन्तरा बाह्ये कुम्भं प्रोक्तं समालिखेत् ॥६९॥

एवमेकादशोक्तानि यन्त्राणि प्रथितानि वै ।

अथ सकर्णिकं षोडशदलपद्मं विलिख्य बहिर्वृत्तद्वयं, कर्णिकायां साध्यनामगर्भं ह्रींकारं विलिख्य तन्मायया संवेष्ट्य षोडशदलेषु षोडशबीजानि विलिख्य, वृत्तद्वयान्तराले मायाबीजैः संवेष्ट्य प्राक्प्रोक्त प्रकारेण तद्बहिः कुम्भं विलिखेत्। एवमेकादश यन्त्राणि भवन्ति। तथा-

विनियोगानथैतेषां क्रमेण शृणु पार्वति ॥७०॥

प्रथमं गजरक्षाकृद् द्वितीयं हेमरक्षकम् । तृतीयं नृपरक्षायां चतुर्थं द्वन्द्वरक्षकम् ॥७१॥

पञ्चमं कुरुते राजवेश्मरक्षां तु सर्वतः । षष्ठं सचिवरक्षाकत् सप्तमं पुररक्षकम् ॥७२॥

अष्टमे गृहरक्षा स्यात् सर्वेषामपि सर्वदा । फणिचोरग्रहादिभ्यो भयेभ्यः शत्रुतस्तथा ॥७३॥

नवमं सर्वरोगार्तौ सर्वेषामपि सर्वदा । उत्तारकं स्याद् देवेशि प्राक्प्रोक्तविधिना युतम् ॥७४॥

दशमं भूर्जगं कृत्वा प्राग्वत् सिक्थोत्थलिङ्गकम् । स्थापयेच्छीतले तोये घटादौ सविधेथ तम् ॥७५॥

पूजयेत् तानि च यजेत् स्पर्शंजीवकरेण तम् । घोराभिचार कृत्यादिजातो दाहज्वरः क्षणात् ॥७६॥

विमुच्य तं प्रयोक्तारं नाशयेत् तत्क्षणात् प्रिये । एवमेतानि यंत्राणि नामतः सर्वकार्यकृत् ॥७७॥

सर्वासामपि नित्यानां प्रातरेव समृद्धये । पूजादौ च बलिं दद्यात् षोडशार्णेन पार्वति ॥७८॥

॥ त्वरिता नित्या प्रयोगः॥

सारांश - योनि कुण्ड बनाकर तिल, सरसों, गोधूम (यव) शालि धान्य (चावल) आदि व नाना पुष्पों से होम करें लक्ष्मी प्राप्ति हेतु प्रयोग श्लोक ८ तक दिया है। पश्चात् श्लोक १८ तक नाना प्रयोग फल दिये हैं। श्लोक उन्नीस से २३ तक कामना यन्त्र लिखा है।

१. पूर्व-पश्चिम व उत्तर-दक्षिण १२-१२ रेखायें खीचने से ११×११ = १२१ कोष्ठक बनेंगे। मध्य कोष्ठक में "ॐ" सहित साध्य का नाम लिखें। उसके चारों ओर १२ बार "ह्रीं" मन्त्र लिखें।

२. त्वरिता मूल मन्त्र - "ॐ ह्रीं हुं खे चं छे क्षः स्त्रीं हूं क्षे ह्रीं फट्"

अनुत्तवर्ण ३२ अक्षर का मन्त्र है। इसके ८-८ अक्षर के चार चरण हैं। प्रत्येक चरण ४-४ अक्षरों के लोम-विलोम से बना है।

श्रीसामाया यामासाश्री, सानोवाज्ञे ज्ञेवानोसा ।
मायालीला लालीयामा, याज्ञेलाली लीलाज्ञेया ॥

नौ-नौ रेखायें पूर्व-पश्चिम व उत्तर-दक्षिण खींचने से ८×८ = ६४ कोष्ठक बनेंगे।

ईशान कोष्ठक से (अपने वाम भाग से) अग्निकोण तक प्रथम चरण के ८ अक्षर लिखें। उसके बाद दूसरा, तीसरा, चौथा चरण ४ पङ्क्तियों में लिखें। शेष ३२ कोष्ठक में नीचे के नैऋत्य कोण से (अपने दाहिने भाग से वाम भाग की ओर) वायव्य की ओर एक चरण के ८ अक्षर लिखें। इसके ऊपर की पङ्क्ति के ८ कोष्ठक में दूसरा चरण लिखें। उसके ऊपर तीसरा चरण, पश्चात् नीचे से चौथी पङ्क्ति में दक्षिण भाग से वाम भाग की ओर चौथा चरण लिखें।

यन्त्र के बाहर चारों ओर ३२ अक्षर वाला मन्त्र लिखें। उसके बाहर त्वरिता मन्त्र वषट्कार सहित लिखें। उसके बाहर चारों ओर अमृत बीज "**वं**" लिखें अथवा "**जूं सः वषट्**" लिखें।

३. अनुग्रह यन्त्र - दशदश रेखा पूर्व-पश्चिम व उत्तर-दक्षिण में खींचकर ८१ कोष्ठक यन्त्र बनायें। मध्य में "**कं खं........टं ठं**" **ह्रीं** युक्त लिखें। प्रत्येक कोण में ४-४ कोष्ठक लेने से १६-१६ कोष्ठक बनेंगे तथा मध्य में चारों दिशाओं में ४-४ कोष्ठक की एक गली रह जायेगी। प्रत्येक कोष्ठक में "ॐ जूं सः **वषट्**" चौसठ खानों में लिखें। मध्य कोष्ठक में वृत्त बनायें उसके बाहर दो वृत्त और बनायें। मध्य कोष्ठक में ४ अंगुल का कुंभाकार बनायें उसके आगे दो आडी-तिरछी रेखायें खींचे। कुंभ स्थापित कर देवि का पूजन करें। फलश्रुति श्लोक 38-39।

४. शत्रु ताडन यंत्र- (निग्रह काली मंत्र)-

प्रत्येक चरण में ४-४ अक्षर लोम-विलोम।

कालीमार रमालीका लीनमोक्ष क्षमोनली ।
मामोदेत तदेमोमा, रक्षतत्व त्वतक्षर ॥

यम मंत्र -

यमावाट टवामाय, माटमोट टमोटमा ।
वामोभूरी रीभूमोवा, टटरीत्व त्वरीटट ॥

ये अनुत्तरवर्ण मंत्र है। पूर्व की तरह ८१ कोष्ठक बनाये। मध्य कोष्ठक में "**क्रं**" सहित साध्यनाम लिखे। १६-१६ कोष्ठक चारों कोणों में गिनने के बाद मध्य के पार्श्व में ४-४ कोष्ठक की वीथिका बनेगी। उसमें "**भ्रूं, क्षूं, छ्रूं ह्रूं**" लिखे।

ऊपर के कोणों में काली मंत्र के १६-१६ अक्षर लिखें नीचे के १६-१६ कोष्ठकों के कोणों में यम मंत्र के १६-१६ वर्ण लिखें।

इस यंत्र के बाहर काली मंत्र लिखे। उसके बाहर यम यंत्र लिखे। विशेष विधि श्लोक ४६ से ५६ तक यम यंत्र प्रधान करने हेतु मध्य कोष्ठक में "**ग्रं**" मंत्र के साथ साध्य नाम लिखें।

५. अग्नि चक्रम् - ६४ कोष्ठक का यंत्र बनाये। पूर्व की भांति ६४ खानों में ३२-३२ अक्षर के काली व यम मंत्र लिखें। पुनः यंत्र के बाहर काली मंत्र उसके चारों ओर यम मंत्र लिखे। विधि ५७ से ६१ तक।

६. अनुत्तरवर्ण मंत्राक्षर - अ ह र ख च छ क्ष स त फट् यंत्र में लिखने के क्रम में **फट्** को त्याज्य करने पर नववर्ण तथा "**फ, ट्**" को अलग-अलग लिखने पर ११ वर्ण बनते है।

प्रयोग विधि- अष्टदल कमल बनायें। उसके बाहर दो वृत्त बनायें। मध्य में "**ह्रीं**" सहित साध्य नाम लिखे। मंत्र

का प्रथम वर्ण भी मध्य में लिखे तथा दूसरे से नवम् वर्ण तक अक्षर अष्टदल की कर्णिका में लिखें। "**फट्**" को त्याग करे। उनके बाहर वृत्त की वीथिका में "**ह्रीं**" बीज चारों ओर ८ बार लिखे। इसे तरह मध्य में दूसरा वर्ण शेष तीसरे से बाकी वर्ण अष्टदल में लिखें।

इस तरह **फट्** सहित १० यंत्र अलग-अलग वर्णो के क्रम से बनेगें। यदि "**फ, ट्**" को अलग-अलग लिखने ११ यंत्र बनेगें। यदि प्रत्येक यंत्र के बाहर चारो ओर "**अं आं.......अं** अः" १६ स्वर लिखे तो ११ × १६= १७६

फल श्रुति श्लोक ६५-६६

७. १६ दल का कमल बनाये। मध्य में "**ह्रीं**" सहित साध्य का नाम लिखें। १६ कमल दल में १६ स्वर लिखें। कमल के बाहर दो वृत्त बनाये उनकी वीथिका में "**ह्रीं**" मंत्र १६ बार लिखें। मंत्र का प्रथम वर्ण मध्य में शेष वर्ण बाहर लिखें। इस तरह पूर्व की तरह १-१ वर्ण से ११ यंत्र बनेगें। प्रयोग विधि श्लोक ७० से ७८ तक।

॥ इति त्वरितानित्या प्रयोगविधिः ॥

॥ ९. अथ कुलसुंदरी नित्या प्रयोगः॥

मंत्र - **ऐं क्लीं सौः।**

विनियोग - **अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः पंक्ति छंदः** कुलसुंदरीनित्यादेवता **ऐं बीजं, सौः शक्तिः क्लीं कीलकं पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्धये विनियोगः।**

ऋषिन्यास - शिरसि दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः। **मुखे पंक्तिछन्दसे नमः। हृदये कुलसुंदरी नित्यादेवतायै नमः। गुह्ये ऐं बीजाय नमः।** पादयोः सौः शक्तये नमः। **नाभौ क्लीं कीलकाय नमः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यास - **आं हृदयाय नमः। ईं शिरसे स्वाहा। ऊं शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अः अस्त्राय फट्।**

षड्वक्त्र न्यास - शिरसि ऐं आं उर्ध्व वक्त्राय नमः। मुखे ऐं ई पूर्ववक्त्राय नमः। दक्षकर्णे ऐं ऊं दक्षिणवक्त्राय नमः। वामकर्णे ऐं ऐं उत्तरवक्त्राय नमः। चूडाधः ऐं औं पश्चिमवक्त्राय नमः। चिबुके ऐं अः अपरवक्त्राय नमः।

आवरण पूजा प्रारंभ करे तब **षड्वक्त्रन्यास क्लां, क्लीं, क्लूं, क्लें, क्लौं, क्लः** लगाकर पूर्वविधि से **वक्त्र न्यास** करे। जपान्त या आवरण पूजा बाद **सां, सीं, सूं, सें, सौं,** सः से युक्त कर उपरोक्त **षड्वक्त्र** न्यास करे।

वर्णन्यास - **आधारे ऐं नमः। ब्रह्मरंध्रे क्लीं। हृदये सौः।** दक्षनेत्रे ऐं। **वामनेत्रे क्लीं। ललाटनेत्रे सौः। दक्ष श्रोत्रे ऐं। वामश्रोत्रे क्लीं। चिबुके सौः। दक्षनसि ऐं। वामनसि** क्लीं। **तालुनि सौः। दक्षांसे ऐं। वामांशे क्लीं। नाभौ-सौः। दक्षदोर्मूले-ऐं। मध्ये क्लीं। अग्रे सौः। वामदोर्मूले-ऐं। मध्ये क्लीं। अग्रे सौः। दक्षोरुमूले ऐं। मध्ये क्लीं। अग्रे सौः। वामोरुमूले ऐं। मध्ये क्लीं। अग्रे सौः।** मूलमंत्र से व्यापक न्यास करे।

ध्यान - त्रिपुर सुन्दरी के समान है। लाल वस्त्र, लाल वर्ण, षण्मुखा एवं १२ हाथ वाली शक्तियों से घिरि हुई व सभी प्रतिवक्त्र त्रिनयना हैं।

लोहितां लोहिताकार शक्तिवृन्द निषेविताम्। लोहितां शुक भूषास्त्रगलेपना षणमुखाम्बुजाम् ॥१॥
प्रतिवक्त्रं त्रिनेत्रां तथा चारुस्मितान्विताम्। अनर्घ्यरत्नघटित माणिक्मुकुटोज्ज्वलाम् ॥२॥

ताटङ्क हार केयूररशना नूपुरोज्ज्वलाम् । रत्नस्तबक संभिन्न लसद् वक्षःस्थलां शुभाम् ॥३॥
कारुण्यानंद परमां अरुणाम्बुज विष्टराम् । भुजैर्द्वादशभिर्युक्तां सर्वेशीं सर्वाङ्ग्मयीम् ॥४॥
प्रवालाक्षस्त्रजं पद्मं कुण्डिकां रत्ननिर्मिताम् । रत्नपूर्णं तु चषकं लुङ्गीं व्याख्यान मुद्रिकाम् ॥५॥
दधानां दक्षिणैर्वामैः पुस्तकं चारुणोत्पलम् । हेमां च लेखनीं रत्नमालां कम्बु वरं भुजैः ॥६॥

॥ यंत्रपूजनम् ॥

अष्टदल बनाये उसके मध्य में कर्णिका में नवयोनिचक्र बनाये। अष्टदल के बाहर दो वृत्त बनाये। उसके बाद दो रेखा वाला भूपुर बनाये उसके पूर्व एवं पश्चिम में द्वार होवे।
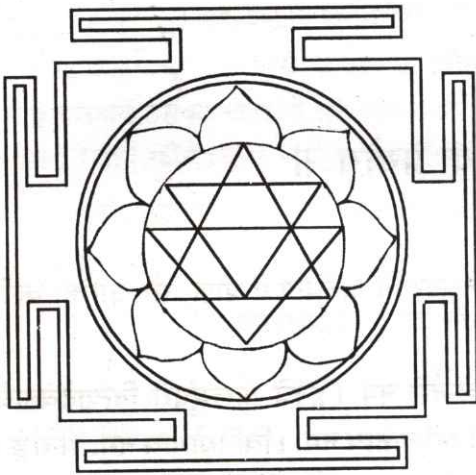
॥ श्री कुलसुन्दरी यन्त्रम् ॥

सर्वप्रथम १२ पीठ शक्तियों का पूजन करे- **वामायै नमः। ज्येष्ठायै नमः। रोद्र्यै नमः। अंबिकायै नमः। इच्छायै नमः। ज्ञानायै नमः। क्रियायै नमः। कुलिकायै नमः। चित्रायै नमः। विषघ्न्यै नमः। दूतर्य्यै नमः। आनंदायै नमः। हसौं सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः।** पश्चात् कुलसुन्दरी का ध्यानपूर्वक आवाहन करे।

प्रथमावरणम् - मध्य योनित्रिकोण के मूल में षड्वक्त्र की **क्लां क्लीं क्लूं क्लें क्लौं क्लः** युक्त से पूजा करे हृदया दि न्यास शक्तियों का पूजन करे। **दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ** गुरुपंक्ति का पूजन करे।

द्वितीयावरणम् - (त्रिकोणे) त्रिकोण के अग्रिम कोण में **भाषा पा.।** पृष्ठे दक्षिणकोणे **आनन्दा पा.।** वामकोणे **कौतुका पा.।**

तृतीयावरणम् - (अष्टयोनिषु) **ह्रीं श्रीं सरस्वती पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वाणी पा.। संस्कृता पा.। प्राकृता पा.। परा पा.। बहुरूपा पा.। चित्ररूपा पा.। रम्या पा.।**

चतुर्थावरणम् - (अष्टदले)- ब्राह्मी आदि अष्टमातृकाओं का पूजन करे।

पंचमावरणम् - (भूपुरे)- इन्द्रादि दश दिक्पालों व उनके आयुधों का पूजन करे।

गायत्री मन्त्र - वागीश्वर्यै (कुलसुन्दर्यै) विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि **तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥**

॥ अथ कादीक्रमानुसार कुलसुन्दरी नित्या प्रयोग विधि ॥

(श्रीतन्त्रराजे)

एवं नित्यार्चनं कुर्यान्नित्यहोमं घृतेन वै । प्रातः सलिलपानं **च कुर्याद्विद्यात्मसिद्धये ॥१॥**
चन्दनोशीरकर्पूर कस्तूरीरोचनान्वितैः । काश्मीरकालागुरुभि **मृगस्वेदमयैरपि ॥२॥**
आलिप्तगात्रो हृष्टान्तः करणो मौनमन्वितः । चित्रभूषाम्बरस्त्रग्वी जपेद्विद्यां निशामुखे ॥३॥
पूजयेच्च शिवामेतैर्गन्धैः सर्वार्थसिद्धये । सर्वाभिरपि नित्याभिः **प्रातर्मातृकया समम् ॥४॥**

त्रिजप्ताभिः पिबत्तोयं तथा वाक्सिद्धये शिवे । अन्यैरपि च मन्त्रेस्तैर्विद्याभिस्तत् प्रसिद्ध्यति ॥५॥
प्राग्वल्लक्षत्रयं जप्त्वा तद्दशांशं च तर्पयेत् । सुगन्धिसलिलैर्होमं तावत् त्रिमधुराप्लुतैः ॥६॥
पलाशपुष्पैर्विकचैरदुष्टैरविखण्डितैः । सिद्धविद्यः पुनः कुर्यात् काम्यकर्माणि साधकः ॥७॥
देव्या वर्णविभेदेन फलभेदाः समीरिताः । विद्यास्वरूप भेदांस्तु शृणु वक्ष्ये यथाविधि ॥८॥
त्रयीमयत्वं विद्यायास्तथा व्यञ्जनसङ्गमात् । वाच्यवाचकरूपस्य प्रपञ्चस्यामितात्मनः ॥९॥
कारणत्वं परात्मत्वमयेत्वं च वै क्रमात् । कथयामि शृणु प्राज्ञे विचित्रास्तव वैभवाः ॥१०॥
अकारादिः सामवेदा ऋग्वेदस्तु तदादिकः । यजुर्वेद इकारदिस्तेषां संयोगतः शुचि ॥११॥
तन्निष्पत्तिं शृणु प्राज्ञे प्रोक्तं पूर्वापरक्रमात् । त्रिलेखद्योजयेत् पूर्वं शब्दशास्त्रानुसारतः ॥१२॥
गुणसन्ध्या ऋग्यजुषा ततस्तेनापरं तथा । वृद्धिसन्ध्या समायुञ्ज्यादित्युत्पन्नं शुचेर्वपुः ॥१३॥
तेन त्रयीमयी विद्या कार्यकारणयोगतः । आद्यक्षर प्रसूतानि सर्वाण्यन्यानि येन वै ॥१४॥
मध्यमार्णगत प्राणा व्यञ्जनादेस्तु मातृका । प्राग्वत् कारण कार्यत्वयोगाद्वाचकरूपता ॥१५॥
तदर्णकरसायोगाद्भूतादित्वेन वाच्यता । इति वाचकवाच्यत्वरूपा विश्वात्मतोदिता ॥१६॥
परारूपं तृतीयेनत्रिंशिकोक्तं त्रिकात्ककम् । एवमेषा विश्वमयी विद्यारूपमिदं शृणु ॥ १७॥
शुचिराद्या वाक्स्वरूपा द्वितीया वह्निरीरिता । बिन्दुसर्गात्मनोरैक्यरूपा सा त्वावयोर्वपुः ॥१८॥
तेन बीजेन विश्वात्मरूपा सा सम्यगीरिता । वनं तृतीयमाख्यातं मायया स्वेन वा युतम् ॥१९॥
एषा त्रैपुरकन्दा स्यात् सङ्केतेन निगद्यते । ज्ञातृज्ञानज्ञेय दोषगुणतेजस्त्रयात्मिका ॥२०॥

ऐ ई औ इति संकेतविद्या। त्रैपुरकन्दं त्रिपुरामन्त्राणां मूलमित्यर्थः। वनं तृतीय औकारः। मायया विसर्गेण स्वेन बिन्दुना वेति विकल्पः तथा-

अयास्तु मध्यमे बीजे रसाप्राणनियोजनात् । वाच्यवाचकरूपात्मा प्रपञ्चस्य हि कारणम् ॥२१॥
तृतीये हृत्समायोगात् त्रिकविश्वात्मतोदिता । हंसहृद्योगतस्तेषु जङ्गमस्थावरात्मता ॥२२॥
ऐं क्लीं औः, ऐं क्लीं सौः, ह्सै ह्सक्लीं ह्सौः । एतासु विद्यासु कादिपञ्चत्रिंशदव्यञ्जनानाम्।
तथा-एकद्व्यादिसमायोगाद् व्यञ्जनानां तथा त्रिषु। ज्ञातुं न शक्यते संख्या विद्यानां परमेश्वरि ॥२३॥

त्रिषु त्रिबीजेषु।

एवं सानन्तविभवा तां निःशेषं वदेत् कथम् । तथापि भक्तसंत्राणहेतोः कांचन वच्मि ते ॥२४॥
आयुर्लक्ष्मीकीर्तिभोग सौन्दर्यारोग्यदायिकाः । ऐहिकामुष्मिकज्ञानमय्यः संकल्पसिद्धिदाः ॥२५॥
विद्यायाः कुलसुन्दर्या हंसयोगात् त्रिषु क्रमात् । विजयाख्या महाविद्या विश्वसंत्राण तत्परा ॥२६॥

अत्र **हैं ह्क्लीं ह्सौः** इति विजया।

हृत्समायोगातस्तेषु बीजाख्या विश्वचिन्मयी । द्वयोर्नियोजनात्तेषु जायते सावयोर्वपुः ॥२७॥

केवलसकारयोगाद्बीजाख्या । द्वयोर्हकारसकारयोर्योगाद्विश्वचिन्मयी ॥
हृदादिस्त्वन्मयी विद्या हंसादिर्मन्मयो मनुः । तेषु दाहसमायोगाद्विश्वाख्य विश्वविग्रहा ॥२८॥

अत्र मन्त्र इति विद्येति भेदद्वयम्। दाहो रेफः।

प्रत्येकं शक्तिपुटिता विद्या विश्वमोहिनी ।

मायाबीजपुटिता प्रत्येकम्।

स्वंचराम्बुरसोपेतमायाभ्यां पुटिता तु सा ॥२९॥

त्रिपुरामृतसंज्ञा सा सर्वाप्यायनविग्रहा। ह्रीं ब्लें ह्रीं इति।

.....। मायाद्या मोहिनी प्रोक्ता तन्मध्या क्षोभिणी मता ॥३०॥
तदन्ता क्लेदिनी ख्याता वातादिः स्यान्महोदया । त्रयोदशीति कथिता त्रिपुरानिधयः स्मृताः ॥३१॥
आसां क्रमविपर्यासजाता विद्याष्टसप्ततिः । तासां विधानं ते प्रोक्तमशेषं लक्षसागरे ॥३२॥
सम्पत्करीति काप्यस्ति विद्या याचिन्त्यवैभवा । तां वक्ष्ये शृणु देवेशि साधकाभीष्टसिद्धये ॥३३॥
प्राणो रसा मरुद्वह्निस्वयोगादाद्यमीरितम् । वातेन च चरस्वाभ्यां द्वितीयमपि पार्वति ॥३४॥
हंस हृद्वनमायाभिस्तृतीयं परमेश्वरि । एवं त्रिवर्णा सा विद्या विधानं चाथ कथ्यते ॥३५॥

ककआई, अऐं ह्सौः।

तृतीयबीजेनाङ्गानि दीर्घस्वरयुजा क्रमात् । कुर्यात्कराङ्गयोः प्राग्वदित्थं ध्यायेच्च तां पराम् ॥३६॥
दाडिमीकेसरप्रख्यदेह वासोविभूषणाम् । चतुर्भुजां त्रिनयनां प्रसन्नस्मेरवक्त्रकाम् ॥३७॥
रत्नाभिषेकसंभिन्नाष्ट पत्राब्जमध्यगे । त्रिकोणे स्वस्तिकासीनां करुणानन्दमन्दिराम् ॥३८॥
प्रवालाक्षस्त्रजं रत्नचषकं रत्नपूरितम् । पुस्तकं च वरं हस्तैर्दधानां सर्वमङ्गलाम् ॥३९॥
अकारादिसकारान्त षोडशत्रयकल्पिते । कुलासने हळक्षार्णमध्ये तद्विद्ययान्विते ॥४०॥
समावाह्यार्घ्य संकल्पपूर्वं तामर्चयेत् क्रमात् । मध्ये त्रिकोणकोणेषु रतिं प्रीतिं मनोभवाम् ॥४१॥
अग्रादिसव्यगास्तद्वदष्टपत्रेषु मातरः । चतुरस्त्रे लोकपालान् प्राग्वच्छक्तीः समर्चयेत् ॥४२॥
विधानमष्टसप्तत्या इति सम्यक्समीरितम् । बलिद्वयं च होमं च प्राग्वदन्यस्त्समुन्नयेत् ॥४३॥
चतुर्गुणचतुर्थांशस्व समाननियोजितः । ब्राह्मीरसवचादुग्धैः शृतं सपिस्त्रिभिर्दिनैः ॥४४॥
सयंत्रं मातृकाविद्याजप्तं त्वयुतमादरात् । दिनेशो विलिखेत्प्रातरब्दान्मूको भवेत्कविः ॥४५॥
शिवोम्बिका कुमारश्च विधिर्विष्णुस्तथा रमा । कुबेरो रविचन्द्रारज्ञगुरुसितसौरयः ॥४६॥
वारेशास्तेषु वारेषु तांस्तद्दिनजविद्यया । नामसप्ताक्षरीयुक्त्या पूजयेत्तर्पयेद्धुनेत् ॥४७॥
वर्णौषधिसमुत्थेन भस्मना मन्त्रितेन तु । मातृकान्याससहितं स्पृशेद्रक्षाकृतेन तु ॥४८॥
विशेषतो महीपानामार्तानां च विधिं चरेत् । तेन ते सुखिनो भूयुः सान्वया यावदायुषम् ॥४९॥

****

क्रूरेषु व्याधिषु प्राप्तेष्वभ्यर्च्यैवं तु मण्डले । नवकोष्ठे नव प्रोक्तान् राहुकेतु समन्वितान् ॥५०॥
मध्येन्द्रयमपाशीन्दुवह्निरक्षोनिले शिवे । कोष्ठे तांस्तैर्जपेत्सद्यो मुक्तरोगः सुखी भवेत् ॥५१॥
ग्रहार्तिषु रिपुक्लेशे दुर्भिक्षे त्रिविधे तथा । उत्पन्ने समरोद्योगे कुर्यादुक्तार्चनादिकम् ॥५२॥
सम्पूज्य तद्विदां सम्यग्दद्याद्गां स्वर्णमम्बरम् । तेन सर्वापदुन्मुक्तः सुखी जीवति भूतले ॥५३॥
ब्रूहि मे मातृकान्यासं तद्यन्त्रं परमेश्वर । कथयामि द्वयं तेऽद्य वक्ष्ये तत्पटलेऽखिलम् ॥५४॥
ह्रस्वदीर्घस्वरद्वन्द्वपुटितैः षण्ठवर्जितै । कुर्यादङ्गानि षड्वर्गैः पञ्च पञ्चदशाक्षरैः ॥५५॥
स्वरेषु मध्यतः प्रोक्ताश्चत्वारः षण्ठवर्जिताः । कराङ्गयोर्विधायेत्थमादिक्षान्ताक्षराणि वै ॥५६॥
भाले वक्त्रावृतौ नेत्रश्रोत्रनासाकपोलतः । ओष्ठदन्तशिरोजिह्वास्वकेशो विन्यसेत्स्वरान् ॥५७॥
करयोः पादयोर्मूलमध्यसन्धिष्वथाग्रतः । विन्यसेव चतुर्वर्ग पञ्चमं पार्श्वपृष्ठतः ॥५८॥
नाभौ हृदि च विन्यस्य व्यापकान् दशधातुषु । त्वगसृङ्मेदोऽस्थिमज्जा शुक्रान्तगामिषु ॥५९॥
प्राणशक्त्यात्मसु तथा न्यसेदेवं समाहितः । हृदयस्पर्शिनां तेषा स्मरन् धातुषु विन्यसेत् ॥६०॥
अथ वाहुद्वये स्कन्धयुगे च त्रिककक्षयोः । हृदयाधस्तथा पादजठरे वदने न्यसेत् ॥६१॥
वृत्तद्वयावृतं चाष्टपत्रमब्जं महीपुरम् । विधाय विलिखेन्मध्ये हंसहृद्धनशक्तिकम् ॥६२॥
कूटं स्वरान् केसरेषु वर्गान्पत्रेषु चालिखेत् । पञ्चपञ्चाक्षरोपेतान् दावाम्बु दिग्विदिक्षु च ॥६३॥
स्वरेष्वपुनरुक्तानि पञ्चान्यानि तु पञ्च वै । सव्यञ्जना व्यञ्जनत्वभेदतोभूद् द्विरन्वयः ॥६४॥
सवातागिन धरास्वेन शक्तिस्तत्पञ्चकं भवेत् । अन्यान्येकादश शिवे सन्धिमात्रादिसम्भवाः ॥६५॥
एतद्यन्त्रस्य मध्यस्थं नाम कृत्वा प्रयोजयेत् । प्रातर्मूर्ध्नि स्मरेदिन्दुबिम्बस्थं सर्वसम्पदे ॥६६॥
अभिषेकाद्धारणाच्च पूजनाल्लोहकल्पिते । स्थापनाद्गृहदेशादौ यन्त्रं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥६७॥
एतद्यन्त्रस्य मध्यस्था देवताः सकला अपि । सन्निधिं फलदानं च साधकानां वितन्वते ॥६८॥
विद्यां तां नरो मूर्खो जडो मूकोतिपातकी । नित्यशो जपपूजाद्यैः काले मत्समतां व्रजेत् ॥६९॥
जिह्वायामक्षराण्येतान्यसकृद्भावयन् धिया । प्रविष्टो विद्वद्गोष्ठोषु पूज्यते वाग्मिभिर्जनैः ॥७०॥
मूर्ध्नोन्दुबिम्बमध्यस्थं सुधावर्षविधायिनम् । विभावयन्नियति मनुं जपेदेकाग्रमानसः ॥७१॥
मण्डलात्कवितासिद्धि सर्वभाषामयी भवेत् । वादादिषु तु सर्वत्र देवतात्मा जयी भवेत् ॥७२॥
यन्त्राणि नित्याविद्यायाः समान्येकात्मयोगतः । तेनात्मनोक्तानि शिवे सर्वसिद्धिकराणि वै ॥७३॥
षोडशस्वपि विद्यासु यन्त्रादन्यत्समीरितम् । प्रयोगजातमन्योन्यं विदध्यादैक्ययोगतः ॥७४॥
वृत्तयुग्मं षडस्त्रं च कृत्वा मध्याद्यमध्यतः । नामालिख्य बहिः षट्सु तत्त्रयं स्वेन मायया ॥७५॥
विलिख्य मातृकां वृत्ते कृत्वा तद्धारणान्मुखे । जिह्वायां भावनात्सर्वगोष्ठीष्वग्रं विगाहते ॥७६॥

॥ कुलसुन्दरी प्रयोग:॥

सारांश- साधक दिव्य सुंगधित वस्त्राभूषण धारण कर, सुप्रसन्न होकर अर्चा करें।

श्लोक ८ से ३५ तक कामेश्वरी के मंत्र भेद दिये गये है।

१. **संकेत विद्या - ऐ ई औ।**

२. **ऐं क्लीं औ:, ऐं क्लीं सौ: ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौ:।**

इस विद्या के ३-३ अक्षर का एक-एक कूट है। प्रत्येक कूट के साथ ''**ऐं क्लीं औ: कं, ऐं क्लीं सौ: कं, ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौ: कं**'' इस तरह से ३५ व्यंजन **कं खं** ....हं लं क्षं के संयोग से ३५ मंत्र बनते है।

३. **विजया महाविद्या - ऐं क्लीं औ:, ऐं क्लीं सौ: हैं ह्क्लीं ह्सौ:।**

४. **विश्व चिन्मयी - ऐं क्लीं औ:, ऐं क्लीं सौ: ह्सैं ह्सौ:।**

प्रत्येक कूट को **ह्रीं** से पुटित करने पर **विश्वमोहिनी** मन्त्र होता है।

५. **उन्मयी विद्या - ह्रीं हंस: हंसौ: (तृतीय कूट)**

६. **अमृत विद्या - ह्रीं ब्लें ह्रीं (तृतीय कूट)**

७. इसी तरह पंचवाणेशी मंत्र **(द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं स:)**, तथा मोहिनी क्षोभिणी, क्लेदिनी के प्रत्येक वर्ण को **ह्रीं** से पुटित करने पर अलग कई कूट बनेगें। जैसे ''**ह्रीं द्रां ह्रीं**''। इनको विजया मंत्र में तीसरे कूट की जगह प्रयुक्त करने से कई तरह के सुन्दरी मंत्र बनेगें।

८. **सम्पत्करी विद्या - कलआई, अ ऐं ह्सौ:।**

श्लोक ३७-३९ भगवती का ध्यान दिया गया है

॥ यंत्र रचना ॥

त्रिकोण, अष्टदल, षोड्शदल बनाकर बाहर भूपुर बनायें। त्रिकोण मध्य में ''**हं लं क्षं**'' वर्ण लिखें। अष्टदल में **ब्राह्मी, वैष्णवी, कौमारी, नारसिंही, वैष्णवी, माहेश्वरी,** वाराही, **चामुण्डा** व **महालक्ष्मी** का पूजन करें।

षोड्शदल में ४८ मातृका वर्ण ''**अं आं.......... शं षं सं**'' तक लिखें प्रत्येक दल में ३-३ वर्ण लिखें।

बाहर चतुरस्त्र में इन्द्रादि लोकपालो का पूजन करें। इस यंत्र को धारण करने से मूक व्यक्ति भी कवि हो जाता हैं।

९. **सप्ताक्षरी विद्या - कलआई, अ ऐं ह्सौ:।**

सप्तवार की देवियां - रवि - शिवा। सोम - अम्बिका। मंगल - कौमारी। बुध - ब्रह्माणी। गुरु - वैष्णवी। शुक्र - लक्ष्मी। शनि - कूबेरी।

प्रत्येक वार के दिन उस दिन की देवी का पूजन तर्पण करें। रोग शांति हेतु ९ कोष्ठक यंत्र बनाये उनमें राहु, केतु सहित नवग्रह पूजन करें। मध्य में सूर्य पूजन करें. पश्चात् पूर्वादि क्रम से इन्द्र, अग्नि, यम, राक्षस, वरुण, वायु, सोम व शिव का पूजन करे।

हृदयादिन्यास:- अं आं, इं ईं, उं ऊं, एं ऐं, ओं औं, अं अ:, से न्यास करें।

भाले, वक्त्रे, नेत्रे, श्रोत्रे, न्यास मातृकान्यासवत् करें (श्लोक ५७-६१)। शेष अन्य प्रयोग श्लोक (६५-७६) के अनुसार करे।

॥ इति कुलसुन्दरीनित्या प्रयोग विधिः॥

॥ १०. अथ नित्यासुंदरी (भैरवी) नित्या प्रयोगः॥

मंत्र – हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः।

ऋषिन्यास – शिरसि दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः। मुखे पंक्ति छंदसे नमः। हृदि नित्यादेवतायै नमः। गुह्ये ऐं बीजाय नमः। पादयोः ॐ शक्तये नमः। नाभौ ईं कीलकाय नमः। ममाभीष्टसिद्धये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास – ह्सां हृदयाय नमः। ह्सीं शिरसे स्वाहा। ह्सूं शिखायै वषट्। ह्सैं कवचाय हुं। ह्सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्सः अस्त्राय फट्।

वर्णन्यास – **भ्रूमध्ये हं नमः। कंठे सं नमः। हृदि कं नमः। नाभौ लं नमः। गुह्ये रं नमः। मूलाधारे डं नमः।** मूल मंत्र से व्यापक न्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

उद्यद्भास्करबिम्बाभां माणिक्य मुकुटोज्ज्वलाम् । पद्मरागकृता कल्पामरुणांशुक धारिणीम् ॥
चारुस्मित लसद्वक्त्रषट् सरोजविराजिताम् । प्रतिवक्त्रं निनयनां भुजैर्द्वादशभिर्यताम् ॥
पाशाक्षगुण पुण्ड्रेक्षुचाप खेटत्रिशूलकान् । वरं वामैर्दधानां चाप्यंकुश पुस्तकं तथा ॥
पुष्पेषु मण्डलाग्रं च कपालमभयं तथा । दधानां दक्षिणैर्हस्तेर्ध्यायेद् देवीमनन्यधीः ॥

॥ यंत्रपूजनम्॥

षट्कोण बनाये उसके अंदर वृत्त बनाये। षट्कोण के बाहर षोडशदल, ३६ दल पद्म, ३२ दल पद्म पश्चात् अष्टादशदल पद्म उनके बाहर दो रेखा वाला चारद्वार युक्त भूपुर बनाये। अरुणादि नवपीठशक्तियों (या भुवनेश्वरी पीठशक्तियों) का अर्चन कर ध्यान पूर्वक देवता का आवाहन करे।

प्रथमावरणम् – (देवी समीपे षट्कोणे) **ह्सां हृदयाय नमः हृदय शक्ति पा.। ह्सीं शिरसे स्वाहा शिरशक्ति पा.। ह्सूं शिखायै वषट्। ह्सैं कवचाय हुं कवचः पा.। ह्सौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति पा.। ह्सः अस्त्राय फट् अस्त्र शक्ति पा.।** वृत्त में दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरु पंक्ति का पूजन करे।

द्वितीयावरणम् – (षट्कोणे) **निर्ऋति कोणे डाकिनी पा.। वायव्ये राकिनी पा.। पूर्वकोणे लाकिनी पा.। आग्नेये काकिनी पा.। ईशाने शाकिनी पा.। पश्चिम कोणे हाकिनी पा.।**

तृतीयावरणम् – (षोडशदले)-**अ शक्ति पा.। आं शक्ति पा.। ....अं शक्ति पा.। अः शक्ति पा.। इस तरह १६ स्वर शक्तियों का पूजन करे।**

चतुर्थावरणम् – (३६ या ३५ दलेषु) **कं खं ....लं क्षं** इत्यादि वर्ण शक्तियों का पूजन करे। यथा क शक्ति पा.।

पंचमावरणम् – (३२ दल पद्मे) **अ** से **त** पर्यन्त ३२ वर्ण शक्तियों का पूजन करे।

षष्टामावरणम् – (अष्टादशदलेषु) **थ** से **ह** पर्यन्त एवं **क्ष** वर्ण शक्तियों का पूजन करे। इस पूजन प्रयोग में वर्ण शक्तियों के पूजन का उत्तम मध्यम कनिष्ठ तीन तरह के पक्ष है।
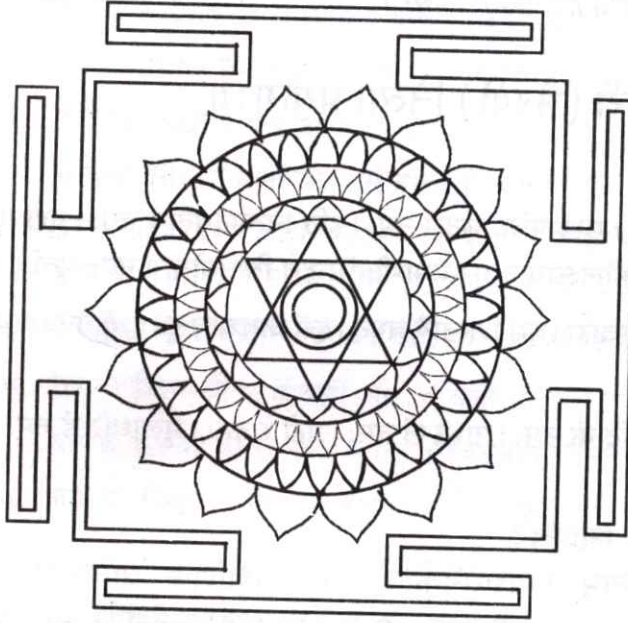
॥ श्री नित्या यन्त्रम् ॥

अन्य पक्ष –

(१) षट्कोण के बाहर षोडशदल में १६ स्वर शक्तियों का पूजन करे

(२) षोडशदल के ऊपर द्वादशदल पद्म बनाये उनमें अनाहत चक्र की **क** से **ठ** पर्यन्त **१२ शक्तियों का पूजन** करे।

(३) द्वादशदल के ऊपर दशदल बनाये उनमें **मणिपूर चक्र** की **ड** से **फ** पर्यन्त **१० शक्तियों का** पूजन करे।

(४) दशदल के बाहर षड्दल बनाये– उसमें **ब** से **ल** पर्यन्त **स्वाधिष्ठान चक्र की शक्तियों का पूजन** करे।

(५) षड्दल के बाहर चतुर्दल में **मूलधार चक्र** की **व.स.ष.ह** शक्तियों का पूजन करे।

(६) चतुर्दल के बाहर द्विदल बनाये उनमें **आज्ञा चक्र** की **लं क्षं वर्ण शक्तियों** का पूजन करे।

(७) उसके बाद भूपुर की पूजा पद्धति सभी पक्षों में समान हैं।

सप्तमावरणम् – (भूपुरे)-इन्द्रादि दशदिक्पालों का एवं उनके आयुधों का पूजन करे। आठ दिशाओं में उनकी अष्टशक्तियों की पूजा करे। पश्चात् वायव्य से निर्ऋति पर्यन्त चारों कोणों में – **अनंतशक्ति पा.। ब्रह्मशक्ति पा.। नियति शक्ति पा.। कालशक्ति पा.।**

अष्टमावरणम् – षट्कोण के ऊपर १२ स्थानों की कल्पना कर पूजन करे। **अभय शक्ति पा.। कपाल शक्ति पा.। खड्ग शक्ति पा.। इषु शक्ति पा.। पुस्तक शक्ति पा.। अंकुशशक्ति पा.। पाश शक्ति पा.। अक्षगुणशक्ति पा.। इक्षुशक्ति पा.। खेटकशक्ति पा.। त्रिशूल शक्ति पा.। वरशक्ति पा.।** पश्चात् धूप दीप नैवेद्यादि से पूजा अर्चन करे।

गायत्री मन्त्र – नित्याभैरव्यै विद्महे नित्यानित्यायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥

॥ अथ कादीक्रमानुसार नित्या नित्याप्रयोग विधिः॥

(श्रीतंत्रराजे)

विदध्यात्साधनं प्राग्वद्वर्णलक्षं पयोव्रतः । त्रिस्वादुसिक्तैररुणैरम्बुजैर्हवनं तथा ॥१॥
जपतर्पणं होमार्चासेकसिद्धमनुर्नरः । कुर्यादुक्तान् प्रयोगांश्च नचेत् तद्धातु देवताः ॥२॥
प्राणांस्तस्य ग्रसन्त्येव कुपितास्तत्क्षणं शिवे । अनया विद्यया लोके यन्न साध्यं न तत्क्वचित् ॥३॥

विद्याक्षराणि सप्त स्युस्तैः प्राग्वत्स्वरसंयुतैः । शतं द्वादश संयुक्तं तैर्यन्त्राणि वदामि ते ॥४॥
वृत्तद्वयान्तः षट्कोणं तदन्तर्वृत्तयुग्मकम् । विधाय मध्ये मायास्थमेकक्षरमाख्यया ॥५॥
बहिः षडालिखेत् षट्सु वृत्तयोर्भूतमातृकाम् । कृत्वान्तर्बहिरेवं स्युः क्रमाद्यन्त्राणि षोडश ॥६॥

इति अस्यार्थ :- अस्या अनावृत्ताक्षराणि सप्त हसकलरडअ इति। ते षोडशस्वरयुक्ता द्वादशोत्तर शतं वर्णा ११२ भवन्ति। प्रथमोत्तर वृत्तद्वयं कृत्वा तद्वहिः षट्कोणं तद्वहिर्वृत्तद्वयं विधाय मध्ये साध्यनामगर्भमाया बीजे एकमक्षरं विलिख्यं, तद्वहिर्वृत्तद्वयान्तराले कर्मानुसारीणि तत्तद्भूताक्षराणि प्राग्वद्विलिख्य, तद्वहिः षट्सुकोणेषु षडक्षराणि विलिख्य तद्वहिर्वृत्तद्वयान्तराले मातृकाक्षरैर्वेष्टयेत्। एवं षोडश यन्त्राणि भवन्ति। फलान्याह -

प्रथमेन घृतेन स्यादौदरव्याधिसंहति । द्वितीयेन शिरोरोगाः नश्यन्ति परमेश्वरि ॥७॥
तृतीयेनाक्षिरुक्शान्तिः श्रोत्रजानां परेण तु । पञ्चमेन भुजारोगाः प्रयान्त्यूर्ध्वेन पादजाः ॥८॥
सप्तमेनान्तराधिस्था धृतेन निधनाश्रयाः । धृतेनाष्टमयन्त्रेण ज्ञानेन्द्रियगता गदाः ॥९॥
परेण कर्मेन्द्रियगा दशमेनानिलोद्भवाः । एकादशेन पित्तोत्था द्वादशेन कफोद्भवा ॥१०
त्रयोदशेन दोषाणां सन्निपातसमुद्भवाः । प्रयान्ति विलयं सद्यो यन्त्राणां शक्तिवैभवात् ॥११॥
चतुर्दशेन यन्त्रेण भूतप्रेतपिशाचकाः । प्रयान्ति भीताः क्षणतः सर्वेऽन्येपि ग्रहाः शिवे ॥१२॥
तत्पेरण महोरोगाः धृतेनाष्टौ न बाधकाः । षोडशेन धृतेन स्यादायुरारोग्यमीश्वरि ॥१३॥
यन्त्राणि षोडशैतानि धारयेच्चाधिशान्तये । सर्वेषां प्राणिनां सम्यगनुक्तेषु गदेष्वपि ॥१४॥
सर्वत्र यन्त्रधरणं साभिषेकं सदक्षिणम् । सवन्दनं सविश्वासं फलत्येवान्यथान्यथा ॥१५॥
कुर्विहीना तु सा विद्या पञ्चकूटाभिधा शिवे । वाक्सिद्धिमन्यत्सकलं कुरुते त्वभिदान्ययोः ॥१६॥
तद्विद्या कूटभेदाः स्युर्विंशत्या शतसप्तकम् । तैर्वज्रयन्त्रनिर्माणं फलानि च शृणु प्रिये ॥१७॥
प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोद्क च सूत्राण्यष्टादश क्षिपेत् । तैस्तु कोष्ठानि जायन्ते नवाशीतिशतद्वयम् ॥१८॥
प्राग्वत्तत्कोणकोष्ठानि षट्त्रिंशन्मार्जयेत्क्रमात् । मध्ये वज्रं यथा भूयात्तथा कुर्यात्समन्ततः ॥१९॥
सपञ्चत्वारिंशच्च शतकोष्ठैस्तु वज्रकम् । त्र्यस्त्राणि चत्वार्यग्राणि चतुष्कोष्ठैस्तु पूर्ववत् ॥२०॥
विधाय मस्य मध्याधः कोष्ठमारभ्य संलिखेत् । प्रादक्षिण्य प्रवेशेन कूटांस्तस्याद्यखण्डजान् ॥२१॥
मध्येऽवशिष्टनवके वामदक्षत्रयद्वये । प्रतिलोमानुलोमात्म विद्याद्वयमथालिखेत् ॥२२॥
शिष्टेषु त्रिषु कोणेषु साधकाख्या तदूर्ध्वगे । कर्ममध्येऽधरे साध्यमालिखेदपि सर्वतः ॥२३॥
चतुस्त्रिकोणमध्यस्थं द्विरेखाभिर्नवीकृतम् । मध्यवद्विलिखेत् तेषु वज्रयन्त्रमितीरितम् ॥२४॥
एवमन्यै पञ्चभिश्च खण्डै पञ्च प्रकल्पयेत् । इति षड्वज्रयन्त्राणि प्रोक्तानि क्रमत शिवे ॥२५॥

॥ अथैतद्यन्त्ररचना प्रकार॥

तत्रप्राक्प्रत्यगायता दक्षिणोत्तरायताश्चाष्टादशाष्टादश रेखा विलिख्य, समान्तरालानि नवाशीत्युत्तरशतद्वय

(२८९) कोष्ठानि कृत्वा, चतुर्दिक्षु षट्त्रिंशत् षट्त्रिंशत्कोष्ठानि गुरूक्तयुक्तया मार्जयित्वा पञ्चत्वारिंशदुत्तरशत (१४५) कोष्ठात्मकं वज्राकारं निष्पाद्य, चतुर्दिक्षु कोष्ठचतुष्टयं कोष्ठ चतुष्टयं मार्जयित्वा त्रिकोणानि विधायावशिष्टेष्वेकोनत्रिंशदुत्तरशत (१२९) कोष्ठेषु मध्याधः कोष्ठमारभ्यद्यकूटखण्डान् विंशत्युत्तरशत (१२०) भेदान् विख्यि, मध्ये वशिष्टनवकोष्ठेषु वामपार्श्वस्त्रिषु कोष्ठेषु प्रतिलोमविद्यां त्रिधा विलिख्य दक्षपार्श्वस्थकोष्ठत्रयं तथैवानुलोमविद्यां विलिख्य, मध्यस्थ कोष्ठत्रये ऊर्ध्वकोष्ठे साधकनाम तदधः कोष्ठे कर्म तदधः कोष्ठे साध्यनाम् चतुर्दिक्षु चतुस्त्रिकोणेषु द्विद्विरेखायोगेन नव नव त्रिकोणानि विलिख्य तेषु तेषु मध्यनवकोष्ठवद्विलिखेत्। एवं षट्कूटखण्डजै षड्वज्रयन्त्राणि भवन्तीत्यर्थं॥ तथा-

लोहत्रयकृते पट्टे शिलायां वा चतुर्षु वा । पट्टे वा फलकायां वा षट्कं षट्सु प्रकल्पयेत् ॥२६॥

फलकापट्टयोः पूजां कुर्यान्नित्यश एव तु । इतराणि तु संस्थाप्य यजेत्तत्रैव तां शिवाम् ॥२७॥

तत्स्थापन प्रदेशे तु विदध्यान्मण्डपं शुभम् । नवहस्तायामततं पताकातोरणान्वितम् ॥२८॥

फलपुष्पवितानाद्यैरुपेतं परिकल्पयेत् । उत्सेधायामविस्तारहस्तां वेदीं च मध्यतः ॥२९॥

एकं चेत्षट्कमथ चेत्कुर्याद्विद्यादिकं तथा । ईशप्राग्वह्निरक्षोम्बुवाय्वादीनां यथाक्रमम् ॥३०॥

प्रथमं राक्षसे त्वन्यान्यन्येषूक्त क्रमेण वै । निवेश्य गन्धपुष्पाद्यैर्नृत्यगीतादिभिस्तथा ॥३१॥

समाराध्यैवमेवं तु त्रिदिनं प्रोक्तशक्तिभिः । हुत्वा जपित्वा जीवोच्चे भानूच्चे वा स्थिरोदये ॥३२॥

स्ववामगे भूम्युदये संस्थाप्य परमेश्वरि । देव्यात्मा तच्छिलाभिस्तु दृढमाबध्य तत्र वै ॥३३॥

देवीं षड्भिर्वृत्तां ताभिर्डाकिन्यादिभिरम्बिके । मूर्तिसप्तकमुत्पाद्य प्रतिष्ठाप्य समर्चयेत् ॥३४॥

नित्यशस्तत्परो विद्याभजनं वापि कारयेत् । यत्र तत्र गदालक्ष्मीरिपुग्रहपिशाचकाः ॥३५॥

दुर्भिक्षक्षुद्रकर्मोत्थपीडाः कृत्याः परेरिताः । न कदाचित्सम्भवन्ति विद्यायन्त्रानुभावतः ॥३६॥

मङ्गलान्येव जायन्ते सर्वेषां सर्वतः सदा । धार्मिकाश्चैव राजानः पूर्णसप्ताङ्गसंयुता ॥३७॥

फलकापट्टयोः क्लृप्तपूजातो निजमन्दिरे। वाञ्छितं समवाप्नोति मण्डलान्मासतोपि वा ॥३८॥

आसां देहस्थितिं वक्ष्ये शृणु सर्वार्थदायिनीम् । सुषुम्नामध्यसंस्थेषु षडाधाराम्बुजेषु ताः ॥३९॥

तिष्ठन्ति प्राणिनां देव्यः सिद्ध्यन्ति ज्ञानपूजिताः । बहिश्च मण्डले पूजां निग्रहानुग्रहात्मिकाम् ४०॥

विशुद्धाख्ये कण्ठदेशे षोडशस्वरपत्रके । धूम्रवर्णाम्बुजे देवीं डाकिनीं तत्समाकृतिम् ॥४१॥

शक्तिभिः स्वररूपाभिरावृतां तत्र पूजयेत् । तथा सर्वज्ञतासिद्धिर्भवत्येव न संशयः ॥४२॥

अनाहताख्ये हृद्देशे सिन्दूरारुणपङ्कजे । राकिणीं द्वादशदले कादिठान्ताक्षरात्मभिः ॥४३॥

शक्तिभिः पूजयेन्नित्यं कीर्त्यायुः श्रीधनाप्तये । मणिपूरकसंज्ञे च नाभिस्थे दशपत्रके ॥४४॥

इन्द्रनीलनिभे डादिदशवर्णात्मशक्तिके । लाकिनीं पूजयेद्देवीं विजय श्रीसमृद्धये ॥४५॥

ध्वजमूले समस्तापत्तारणायेष्ट सिद्धये । वादिषड्वर्णशक्तिभिरावृतां काकिनीं यजेत् ॥४६॥

स्वाधिष्ठानाह्वये पद्मे बालार्कत्विषि षड्दले । आधाराख्ये चतुष्पत्रे सुवर्णाभे सरोरुहे ॥४७॥

वादिसान्तार्ण शक्तीभिरावृतां शाकिनीं यजेत् । पायुध्वजान्तरा त्र्यस्त्रमध्ये तेजः समन्वितााम् ॥४८॥

आज्ञाख्येब्जे भ्रुवोर्मध्ये द्विदले शुद्धविग्रहे । सेवितां हक्षशक्तिभ्यां हाकिनीं पूजयेत्तथा ॥४९॥

त्रिकालज्ञानतः सर्वचित्ताकर्षणकारिणी । विश्वसृष्टिस्थिति ध्वंसशक्तिदामप्ययत्नतः ॥५०॥

उक्तक्रमविपर्यासो निग्रहोऽन्तर्बहिस्तथा । पूजनं सर्वदुःखार्तिशमनं सम्पदास्पदम् ॥५१॥

भूमौ विधाय षट्कोणसप्तकं प्रोक्तदिक्क्रमात् । मध्ये च तत्र तां नित्यानित्यां गंधादिभिर्यजेत् ॥५२॥

अभितस्तु षडस्त्रेषु तत्षट्कं तत्क्रमाद्यजेत् । बाह्येष्वपि च ताः प्राग्वत्प्रोक्तवर्णाः समर्चयेत् ॥५३॥

तासां षण्णामपि तथा षट्सु कोणेषु शक्तयः । षट्त्रिंशत् ताः समा देव्याः सर्वा रूपायुधादिभिः ॥५४॥

प्राग्वत्स्वरेण पञ्च स्युरपूर्वाः कादिमान्तिकाः । परेषु यवलक्षार्ण रहितैस्तैस्तथार्चयेत् ॥५५॥

तेषामपि च चक्राणां शक्तिनां च विलोमतः । पूजा निग्रहसंज्ञा स्यात्सा शत्रूणां विपत्तये ॥५६॥

षट्चक्रेषु च षट्कुम्भान्निधायारि महीरुहाम् । क्वाथतोयाभि सम्पूर्णान् कृष्णाम्बर समन्वितात् ॥५७॥

अर्धरात्रे यजेत्तास्तु तद्योनिबलिदानतः । क्षिप्रं त्वगादिभिस्ते स्युः पूर्णाः शत्रो कलेवराः ॥५८॥

निवेद्यं योनिरक्तेन सम्पन्नं चरुणा रिपोः । होमं च कुर्यात्तेनैव फणिशीर्षस्त्रुचा रुषा ॥५९॥

ध्यायेद्देवीश्च कुपिता दष्टौष्ठा बाहुभिर्निजै । प्रहरन्तीः पिशाचैभ्यां विकिरन्तीश्च तत्तनुम् ॥६०॥

जपागुलुच्छविकसत्कण्ठा भीमार्तनिःस्वना । ध्यात्वैवं निग्रहं कुर्याद्रिपूणां मारणाय वै ॥६१॥

चक्रं च निग्रहे प्रोक्तं वज्ररूपं भयङ्करम् । कांस्ये सीसेऽपि वा कृत्वा स्थापयेद्वैरिभूमिषु ॥६२॥

प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च दशसूत्रनिपातनात् । एकाशीतिपदानि स्युस्तेषु कोणचतुष्टये ॥६३॥

प्रत्येकं दशकोष्ठानि मार्जयेच्छिष्टवज्रकैः । चतुर्दिक्षु त्रिकोणानि चतुष्कोष्ठैः प्रकल्पयेत् ॥६४॥

तेषु मध्यस्थ कोष्ठे च साध्यं कर्म समालिखेत् । शिष्टेषु मध्याधः कोष्ठमारभ्य प्रतिलोमजान् ॥६५॥

विद्यसकूटांस्तु षट्त्रिंशदालिखेद प्रदक्षिणम् । साध्ययोन्यसृजा पिष्टंतद्वृक्षक्षोद लेपितम् ॥६६॥

स्थापयेत्प्रोक्तसमये रिपुक्षेत्रगृहादिके । श्मशाने चण्डिकागेहे कुलोत्सादरं भवेत् ॥६७॥

इति निग्रहमाख्यातं समस्तरिपुमर्दनम् । अनुग्रहं शृणु प्राज्ञे पूजाचक्रविधानतः ॥६८॥

देवीस्ताः प्रोक्तरूपास्तु ध्यात्वा चक्रेषु पूजयेत् । नैवेद्यमासां सम्प्रोक्तं यदासां प्रीतिदायकम् ॥६९॥

पायसान्नं गुडान्नं च मुद्गभिन्नान्नकं तथा । हरिद्रान्नं तिलान्नं च शुद्धान्नं षट्कमेव च ॥७०॥

चक्रेषु सप्तसु तथा तद्वर्णाश्चारुविग्रहाः । युवतीसप्तकं स्थाप्य प्राग्वदभ्यर्च्य ताः क्रमात् ॥७१॥

भूषणाम्बर गन्धासृग्भोजनाद्यैस्तु तोषयेत् । तुष्टासु तासु तुष्टाः स्युः शक्तयस्ताः समास्तदा ॥७२॥

प्रागुक्तवज्र साध्याख्यां तथालिख्यानुलोमजान् । कूटानुक्त समारम्भान् प्रादिक्षण्येन संलिखेत् ॥७३॥

प्रोक्तेषु प्रोक्तरूपेण स्थापयेत्प्रोक्तभूमिषु । प्रोक्तान्येव फलानि स्युर्योगाऽयं लघुविग्रहः ॥७४॥

आदिक्षान्ताक्षरैः प्राग्वद्रूपिणी शक्ति संयुतैः । बीजद्वयाद्यैः सप्ताक्षर्यन्तैः पञ्चदशाक्षरैः ॥७५॥

पञ्चाशच्छक्तयः पूज्याः पञ्चाशत्क्षेत्रपालकैः । सप्ताक्षर्या च संयुक्ता मन्त्राः पञ्चदशाक्षराः ॥७६॥
चतुः षष्टिपदे मध्य चतुष्के दिनविद्यया । दिनेषु घटिका योगात् पञ्चाशन् मिथुनान्यपि ॥७७॥
तेषां बीजद्वयं वर्णरूपक्षेत्रेश संयुताः । मनीषितं समालेख्य तेषु तन्मिथुनानि वै ॥७८॥
घटिका क्रमयोगेन हृन्मायामध्यगेर्चयेत् । एवं मण्डलमासार्धात् प्राप्नोत्येवाभिवाञ्छितम् ॥७९॥
नित्यशस्तां समावाह्य तस्मिंश्चक्रे समर्चनात् । समस्तवाछिंतप्राप्तिः सदा भवति सर्वतः ॥८०॥

॥ नित्या प्रयोगः॥

सारांश - अनावृत्त मंत्र वर्णाक्षर - **ह स क ल र ड अ** इस मंत्र से २ प्रकार के यंत्र बनेगें। प्रथम विधि में ७ यंत्र दूसरी विधि में १६ यंत्र बनाये।

॥ यंत्र रचना॥

१. दो वृत्त बनायें, उनके बाहर षट्कोण बनायें पश्चात् पुनः दो वृत्त बनायें। मध्य में अनावृत्त वर्ण मन्त्र का प्रथम अक्षर शेष वर्ण षट्कोण में लिखे। उनके बाहर वृत्त में **अं आं ....अं अः** १६ स्वर लिखे।

   अन्य यंत्र हेतु मध्य में दूसरा वर्ण शेष षट्कोण में इस तरण ७ अनावृत वर्णो से ७ यंत्र बनेगें। १६ स्वरों के योग से १६×७ = ११२ स्वर वर्ण होगें।

२. पूर्व विधि से यंत्र बनाये। मध्य में साध्य नाम प्रथम वर्ण के साथ लिखे। शेष वर्ण षट्कोण में लिखे। इस तरह १६ यंत्र बनाये। एक यंत्र में **अं आं.......अं अः** इत्यादि का एक- एक स्वर एक-एक यंत्र के वृत्तों में लिखे तो १६ स्वरों के द्वारा १६ यंत्र अलग-अलग होगें। फलश्रुति श्लोक ७ से १५।

३. १८-१८ रेखा पूर्व-पश्चिम व दक्षिण-उत्तर खींचने से १७×१७ =२८९ कोष्ठक बनेगें। चारो दिशाओं में ३६-३६ कोष्ठक छाडने से शेष १४५ रहेगें। उनमें फिर प्रत्येक दिशा में ४-४ कोष्ठकछोडने से १२९ कोष्ठक रहेगें। मध्य में ९ कोष्ठक त्रिकोणाकार चुनें। वामपार्श के ३ खण्डो में अनावृत्त मंत्र लिखे। दक्षिण पार्श्व में विलोम **''अ ड र ल क स ह''** मंत्र लिखे। ऊपर के ३ कोष्ठक में साधक का नाम लिखे। नीचे के ३ कोष्ठक में साध्य का नाम लिखे। इसी तरह चारों कोणों में ४-४ कोष्ठक में मंत्र लिखकर यंत्र बनायें।

इस देवी का यंत्र, पाषाण शिला, लकड़ी के पट्टे या त्रिलोह में बनायें (श्लोक २६-३८)। इसके बाद ४५-५० मूलाधारादि चक्रों में देवी के स्वरूप का वर्णन है पश्चात् प्रयोग विधि व फलश्रुति है।

॥ इति नित्यानित्या प्रयोग विधिः ॥

॥ ११. अथ नीलपताका नित्या प्रयोगः॥

राजस्थान में इस सिद्ध विद्या के उपासक चिड़ावा (जिला झुनझुनु) में पं. गणेशदत्त जी शास्त्री हुये थे जिनके आशीर्वाद से बिड़ला परिवार की अच्छी उन्नति हुई। वे षट्शास्त्रों के परम विद्वान थे। ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के भी ज्ञाता थे। एक बार उनका कोई अनुष्ठान सफल नहीं हुआ तो उन्होने बाद में वैराग्य ग्रहण कर लिया। आप नीलवस्त्र पहनते थे और मिट्टी की एक ही हांडी रखते थे।

मंत्र – १. ह्रीं नीलपताके स्वाहा।

२. ह्रीं फ्रें स्त्रूं ओं आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं।

विनियोग – अस्य मंत्रस्य संमोहन ऋषिः गायत्री छंदः, नीलपताका नित्या देवता, ह्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धये विनियोगः। पूर्ववत् विधि से ऋषि न्यास करे।

षडङ्गन्यास – ह्रीं फ्रें हृदयाय नमः। स्रूं ओं आं क्लीं शिरसे स्वाहा। ऐं ब्लूं नित्यमद शिखायै वषट्। द्र कवचाय हुं। वे नेत्रत्रयाय वौषट्। हुं अस्त्रायफट्।

वर्णन्यास – दक्षकर्णे ह्रीं नमः। वामकर्णे फ्रें नमः। दक्षनेत्रे स्त्रूं नमः। वामे ओं नमः। दक्षनसि आं नमः। वामनसि क्लीं नमः। मुखे ऐं नमः। कण्ठे ब्लूं नमः। हृदि निं नमः। नाभौ त्यं नमः। **मूलाधारे मं नमः। दक्षोरुमूले-दं नमः। दक्ष जानुनि द्रं नमः। गुल्फसंधौ वें नमः। वामोरुमूले हुं नमः। जानुनि फ्रें नमः। गुल्फसंधौ ह्रीं नमः।** मूलमंत्र से व्यापक न्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

इन्द्रनीलनिभां भास्वन्मणिमौलि विराजिताम्। पञ्चवक्त्रां त्रिनयनामरुणांशुक धारिणीम् ॥
दशहस्तां लसन्मुक्ताप्रायाभरण भूषिताम्। रत्नस्तवकसंभिन्नदेहां चारुस्मिताननाम् ॥
पाशं पताकां चर्मापि शार्ङ्गं चापं वरं करैः। दधानां वाम पार्श्वस्थैः सर्वाभरणभूषितैः ॥
अंकुशं च ततः शक्तिं खड्गं वाणं तथाभयम्। दधानां दक्षिणेर्हस्तैरासीनां पद्मविष्टरे ॥
स्वाकारवर्णवेषास्य पाण्यायुध विभूषणैः। शक्तिवृन्दैर्वृतां ध्यायेद् देवीं नित्यार्चन क्रमे ॥

॥ यंत्र पूजनम् ॥

दो रेखावाला चार द्वार युक्त भूपुर बनाये। उसके अंदर दो वृत्त बनाये उसके अंदर अष्टदल के भीतर षट्कोण बनाये। षट्कोण के मूल में त्रिकोण बनाये। सर्वप्रथम **भुवनेश्वरी की नवपीठ शक्तियों** का पूजन पूर्ववत् करे। नीलपताका का आवाहन करे।

प्रथमावरणम् – त्रिकोण के मध्य में षट् दिशाओं की कल्पना कर षडङ्गन्यास मंत्रों से, **हृदयशक्ति, शिरशक्ति, शिखाशक्ति, कवचशक्ति, नेत्रशक्ति एवं अस्त्र शक्ति** का पूजन करे। तदन्तर दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरुपंक्ति का पूजन करे। इसके बाद की आवरण पूजा में प्रत्येक नामावलि के पहले **ह्रीं श्रीं** प्रयुक्त करें।

॥ श्री नीलपताका यन्त्रम् ॥

द्वितीयावरणम् – त्रिकोण षट्कोण के अभ्यन्तर देवी के दक्षिण एवं वाम भाग में ५-५ अस्त्रों की पूजा करे। **अभयाय नमः। वाणाय नमः। खड्गाय नमः। शक्तये नमः। अंकुशाय नमः। पाशाय नमः। पताकायै नमः। चर्मणे नमः। शार्ङ्गचापाय नमः। वराय नमः।**

तृतीयावरणम् – (त्रिकोणे) अग्रकोण से क्रमशः **ह्रीं श्रीं**
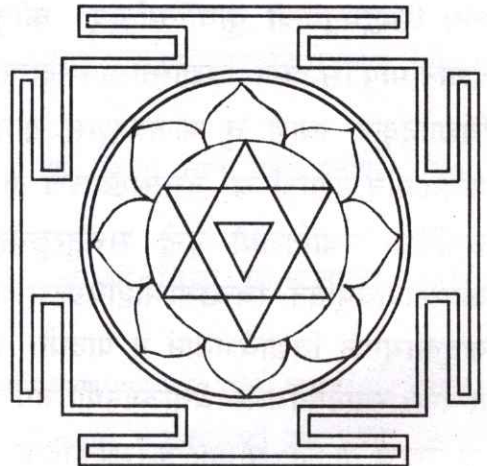
इच्छाशक्तये पा.। ज्ञानशक्ति पा.। क्रियाशक्ति पा.।

चतुर्थावरणम् – (षट्कोणे) देवी के अग्र से प्रदक्षिणा क्रम से **हाकिनी पा.। शाकिनी पा.। काकिनी पा.। लाकिनी पा.। राकिनी पा.। डाकिनी पा.।**

पंचमावरणम् – (अष्टदले) **ब्राह्मी, वैष्णवी, कौमारी, वाराही, नारसिंही, इन्द्राणी, चामुण्डा, महालक्ष्मी** का पूजन करे।

षष्टमावरणम् – (अष्टदलाग्रे) **ह्रीं श्रीं सुमुखी पा.। सुन्दरी पा.। सारा पा.। सुमना. पा.। सरस्वती पा.। समया पा.। सर्वगा पा.। सिद्धा पा.।**

सप्तमावरणम् – (भूपुरे) देवी के अग्र से दश दिशाओं में क्रमश पूजन करे **विह्वला पा.। आकर्षिणी पा.। लोला पा.। नित्या पा.। मदना पा.। मालिनी पा.। विनोदा पा.। कौतुका पा.। पुण्या पा.। पुराणा पा.।**

अष्टमावरणम् – (भूपुरे) अग्निकोण से ईशान पर्यन्त इन्द्रादि दिक्पालों व उनकी अष्टशक्तियों का अर्चन करे। पश्चात् चारो कोणों में आग्नेये **अनंत शक्ति पा.।** निर्ऋति **ब्रह्मशक्तये** पा.। वायवे **नियतिशक्ति पा.।** ईशाने **कालशक्ति पा.।** पश्चात् लोकपालों के वज्रादि आयुधों का पूजन करे। देवी का सर्वोपचार पूजन कर बलिप्रदान करे।

गायत्री मन्त्र – नीलपताकायै विद्महे महानित्यायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥

॥ अथ कादीक्रमानुसार नीलपताका नित्या प्रयोग विधि ॥

(श्रीतन्त्रराजे)

सर्वत्र नित्यहोमं तु कुर्यादन्नाज्यतोऽपि वा । तिलतण्डुलकैर्वापि प्रोक्तं द्रव्यानुदीरणे ॥१॥
विद्याक्षराणां सर्वेषां स्वरव्यञ्जन बिन्दुकान् । पृथक्कृत्वाथ गणितैस्त्रिपञ्चाशद्भवन्ति हि ॥२॥
तेन तल्लक्षसंख्यं तु जपेद्विद्यां प्रयत्नतः । तद्दशांश हुनेदग्नौ सर्वत्राक्षरलक्षके ॥३॥
प्राङ्मुखो नित्यपूजासु साधनेषु च साधकः । नित्यानामपि सर्वासां वासनायामुदीरितम् ॥४॥
ततः सिद्धमनुर्मन्त्री कुर्यात्सिद्धिषु कौतुकम् । तद्विधानं शृणु प्राज्ञे वक्ष्ये विद्याविभेदतः ॥५॥
दशानामपि सिद्धीनां विद्यास्तासां भिदागताम् । संख्यांचताश्चसम्प्रोक्ताः क्रमेणासां फलानि च ॥६॥
विद्यादिकूटे त्वाद्ये तु योजयेद्दशसु क्रमात् । ताभ्यामेव विलोमाभ्यां पुटयेदुपरीरितान् ॥७॥
मन्त्रवर्णान् दशानां च तत्तत्संख्याश्च ताः शृणु । परस्तात्तत्प्रभेदानां मन्त्रान् वक्ष्ये यथाविधि ॥८॥
चतुर्विधः स्याद्विजयो द्वन्द्वे सचतुरङ्गके । कूटयुद्धे दुर्गजे च तेषां मन्त्राश्चतुर्विधाः ॥९॥
कामरूपत्वमुदितं स्वेच्छयाभीष्टविग्रहम् । विधातुमात्मनः शक्तिं स एको मन्त्र ईरितः ॥१०॥
पादुकायुगलं विद्यावैभवाप्तं तु पादयोः । कृत्वा स्मरेद् वाञ्छितं तु देशं तत्र तदा स्थितिः ॥११॥
तन्मन्त्रः स्यादेकविधस्तथैवाञ्जनमीरितम् । येनाक्ताक्षो निधिं पश्येद् देवाद्यांश्चान्तरिक्षगान् ॥१२॥
खड्गश्च तादृशः प्रोक्तः करस्थेनाहिताः क्षणात् । पलायिता वा पदायोः प्रणमेयुर्वशंगताः ॥१३॥
वेतालाः स्युरसंख्याता सिद्ध्यन्ते चैक विद्यया । निधाय साधकं स्कन्धे चरेयुर्वाञ्छयास्य ते ॥१४॥

विकृताङ्गमुखाः केचित्केचित्तिर्यङ्मुखाङ्गका । कचिद्भीषणनादाङ्गा वेताला बहुविग्रहाः ॥१५॥
सर्वेपि वशगा वाक्यादस्य शत्रून् ग्रसन्ति च । किङ्कराः प्रोक्तकरणाद्भवेयुर्यावदायुषम् ॥१६॥
पिशाचास्तादृशाः प्रोक्ताः कार्श्यवैरूप्यविग्रहाः । क्रुद्धाः क्षुद्रशयाः प्रोक्तकारिणः स्युरसंख्यकाः ॥१७॥
तेषामेका भेवद्विद्या तथा ते किङ्करा सदा । तैरेव प्रहरेच्छत्रुमज्ञातमनिशं रणे ॥१८॥
षट्त्रिंशद्रूपसंयुक्ता यक्षिण्यो वांछितप्रदाः । सुरूपा द्विभुजाश्चित्रवसनाभरणान्विताः ॥१९॥
ससहाया यौवनाढ्याः स्त्रगालेपनसौरभैः । समेत्य सर्वाभीष्टानि दद्युस्ताः साधकाय वै ॥२०॥
तासां विद्यास्तु षटत्रिंशद्वक्ष्ये ताश्च शृणु प्रिये । याभिः सिद्धाभिरनिशं साधकाः सर्वसम्मतः ॥२१॥
चेटकाश्च चतुःषष्टिस्तेषां मन्त्राश्च तत्समाः । तेपि नानाविधाकाराः सिद्धास्ते दद्युरीप्सितम् ॥२२॥
मायासंख्याश्चित्ररूपाश्चित्राण्यस्येच्छयानिशम् । वसून्युपहरेयुस्ता विद्यैका तत्प्रसाधने ॥२३॥
विद्याया नवमार्णदिवर्णैः षड्भिरुदीरितैः । दशविद्याः प्रजायन्ते शृणु वक्ष्ये च ताः क्रमात् ॥२४॥
नित्येति विजयं देहीत्युक्त्वा सम्पुटयेत्ततः । विद्या सा विजय प्राप्त्यां चतुर्धैकादशाक्षराः ॥२५॥

अत्र नित्यविजयं देहि मदद्रवे इत्येकादशक्षरो मूलभूतश्चतुर्धा। तथा- (१) नित्यद्वन्द्वयुद्धे विजयं देहि मदद्रवे (२) नित्य चतुरङ्गयुद्धे विजयं देहि मदद्रवे (३) नित्यकूटयुद्धे विजयं देहि मदद्रवे (४) नित्यदुर्गयुद्धे विजयं देहि मदद्रवे। इति। तथा-

मदेति कामरूपं मे देहीति पुटयेत्तथा । त्रयोदशाक्षरी विद्या कामरूपप्रदेरिता ॥२६॥

मदकामरूपं मे देहि द्रवे नित्य। इति।

नित्यदे पादुकां देहीत्युक्त्वा कुर्याच्च सम्पुटम् । द्वादशार्णा भवेद्विद्या सिद्धा दद्याच्च पादुके ॥२७॥

नित्यदे पादुकां देहि मदद्रवे। इति

तथा नित्यमदेत्युक्त्वा देह्यञ्जनमितीरयेत् । पुटयेत्तद द्वयेनाथ द्वादशार्णा समीरिता ॥२८॥

द्रवे नित्यमद देह्यञ्जनं द्रवे। इति

द्रव्यनित्ये देहि खड्गमित्युक्त्वा पुटयेत्तथा । द्वादशार्णा भवेत्सिद्धा खड्गं दद्यात्सुशोभनम् ॥२९॥

द्रवनित्ये देहि खड्गं द्रवनित्ये। इति।

नित्यद्रवेति वेतालान् देहीति पुटयेत्तथा । त्रयोदशाक्षरी विद्या सिद्धा तान् तर्शयेस्तथा ॥३०॥

नित्यद्रवे वेतालान्देहि नित्यद्रवे। इति।

पिशाचान्मे प्रयच्छेति पूर्वं नित्यमदद्रवे । पुटयेत्पूर्ववद् द्वाभ्यां विद्या सप्तदशाक्षी ॥३१॥

नित्यमदद्रवे पिशाचान्मे प्रयच्छ नित्यद्रवे। इति।

षटत्रिंशदुक्ता यक्षिण्यः सर्वा वाञ्छितसिद्धिदाः । तासां नामानि विद्याश्च शृणु वक्ष्ये यथाविधि ॥३२॥
विचित्रा विभ्रमा हंसी भीषणी जनरञ्जिका । विशाला मदना तुष्टा कालकण्ठी महाभया ॥३३॥
माहेन्द्री शङ्खिनी चान्द्री मङ्गला वटवासिनी । मेखला सकला लक्ष्मार्मालिनी विश्वनायिका ॥३४॥

सुलोचना सुशोभा च कामदा सविलासिनी । कामेश्वरि नन्दिनी च स्वर्णरेखा मनोहरा ॥३५॥
प्रमोदा रागिणी सिद्धा पद्मिनी सरतिप्रिया । कल्याणदा कलादक्षा ततश्च सुरसुन्दरी ॥३६॥
इति षट्त्रिंशदाख्याता यक्षिण्योऽभीष्टदायिकाः । तासां विद्याः क्रमेण स्युस्तद्बीजद्वय सम्पुटैः ॥३७॥
नित्यद्रवमदेत्येतैः षड्वर्णैश्चोक्तनामभिः । विद्याः षट्त्रिंशदाख्यातास्ताः सिद्धाः दद्युरीप्सितम् ॥३८॥
तासां विद्यार्णसंख्यास्तु शृणु वक्ष्ये यथाक्रमम् । पञ्चमी पञ्चदशमी विंशतिश्च तथान्तिमा ॥३९॥
चतुस्त्रः पञ्चदशकास्तृतीया साष्टमी तथा । त्रयोदशी साष्टदशा द्वाविंशा द्वादशाक्षरा ॥४०॥
सैकत्रिंशश्च तद्वत्स्युश्चतुर्दश समन्विताः । नवमी दशमी चैकविंशा तद्वदनन्तरम् ॥४१॥
चतुर्विंशा पञ्चविंशा सप्तविंशा तदूर्ध्वगा । त्रयस्त्रिशादिकास्तिस्रस्त्रयोदशयुताः पराः ॥४२॥
चेटकानां चतुःषष्टिं तन्मन्त्रांश्च वदामि ते । शृणु सिद्धास्तु ते नित्यं साधयेयुः समीहितम् ॥४३॥
विभ्रमो वाहको वीरो विकर्षः कोरकः कविः । सिंहनादो महानादः सुग्रीवो मर्कटः शठः ॥४४॥
बिडालाक्षो बिडालास्यः कुमारः खेचरो भवः । मयूरो मङ्गलो भीमो द्वीपिवक्रः खराननः ॥४५॥
मातङ्गश्च निशाचारी विषग्राही वृकोदरः । सैरिभास्यो गजमुखः पशुवक्त्रो मृगाननः ॥४६॥
क्षोभको मणिभद्रश्च क्रीडकः सिंहवक्त्रकः । श्येनास्यः कङ्कवदनः काकास्यो हयवक्त्रकः ॥४७॥
महोदरः स्थूलशिरा विकृतास्यो वराननः । चपलः कुक्कुटास्यश्च मायावी मदनालसः ॥४८॥
मनोहरो दीर्घजङ्घ स्थूलदन्तो दशाननः । सुमुखः पिण्डितः क्रुद्धो वराहास्यः सटामुखः ॥४९॥
कपटः कौतुकी काल किङ्कर कितव खलः । भक्षको भयदः सिद्धः सर्वगश्चेति कीर्तिताः ॥५०॥
बीजद्वयपुटान्तस्थैर्मदनित्यद्रवे - युतै । नामभिस्तैर्द्वितीयान्तैर्देहीति पदसंयुतैः ॥५१॥
एवं मन्त्राश्चतुःषष्टिः क्रमादुक्ता महेश्वरि । तेषां संख्यामपि तथा शृणु वक्ष्ये यथाविधि ॥५२॥
चतुर्दशाक्षरास्तेषु नव मन्त्रा समीरिताः । तथा पञ्चादशार्णास्तु षड्विंशतिरितीरिताः ॥५३॥
षोडशार्णास्तु मनवः पञ्चविंशतिरिताः । तथा सप्तदशार्णाश्च चत्वारो व्याकुलाः क्रमात् ॥५४॥

(१) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदविचित्रे श्रीं ह्रीं १३ (२) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदविभ्रमे श्रीं ह्रीं १३ (३) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदहंसि श्रीं ह्रीं १२ (४) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदभीषणी श्रीं ह्रीं १३ (५) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदजनरञ्जिके श्रीं ह्रीं १५ (६) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदविशाले श्रीं ह्रीं १३ (७) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदमदने श्रीं ह्रीं १३ (८) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदतुष्टे श्रीं ह्रीं १२ (९) श्रीं ह्रीं नित्यद्रवे मदकालकण्ठि श्रीं ह्रीं १४ (१०) श्रीं ह्रीं नित्यद्रवे मदमहाभये श्रीं ह्रीं १४ (११) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदमाहेन्द्रि श्रीं ह्रीं १३ (१२) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदशङ्खिनि श्रीं ह्रीं १३ (१३) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदचान्द्रि श्रीं ह्रीं १२ (१४) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदमङ्गले श्रीं ह्रीं १३ (१५) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदवटवासिनी ह्रीं श्रीं १५ (१६) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदमेखले श्रीं ह्रीं १३ (१७) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदसकले श्रीं ह्रीं १३ (१८) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदलक्ष्मि श्रीं ह्रीं १२ (१९) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदमालिनि श्रीं ह्रीं १३ (२०) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदविश्वनायिके श्रीं ह्रीं १५ (२१) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदसुलोचने श्रीं ह्रीं १५

****

(२२) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मद(सु) शोभे श्रीं ह्रीं १३ (२३) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदकामदे श्रीं ह्रीं १३ (२४) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदसविलासिनी श्रीं ह्रीं १५ (२५) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदकामेश्वरि श्रीं ह्रीं १४ (२६) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदनन्दिनि श्रीं ह्रीं १३ (२७) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदस्वर्णरेखे श्रीं ह्रीं १४ (२८) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदमनोहरे श्रीं ह्रीं १४ (२९) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदप्रमोदे श्रीं ह्रीं १३ (३०) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदरागिणी श्रीं ह्रीं १३ (३१) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदसिद्धे श्रीं ह्रीं १२ (३२) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदपद्मिनि श्रीं ह्रीं १३ (३३) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मद(स) रतिप्रिये श्रीं ह्रीं १५ (३४) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदकल्याणदे श्रीं ह्रीं १५ (३५) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदकलादक्षे श्रीं ह्रीं १४ (३६) ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदसुरसुन्दरि श्रीं ह्रीं १५। इति षट्त्रिंशद्यक्षिणी मन्त्राः॥

अथ चतुष्षष्टिश्चेटका यथा - (१) ह्रीं श्रीं मदनित्यद्रवे विभ्रमं देहि श्रीं ह्रीं १५ (२) ह्रीं श्रीं मदनित्यद्रवे वाहकं देहि श्रीं ह्रीं १५ (३) ह्रीं श्रीं मदनित्यद्रवे वीरं देहि श्रीं ह्रीं १४ (४) ह्रीं श्रीं मदनित्यद्रवे विकर्षं देहि श्रीं ह्रीं १५ (५) ह्रीं श्रीं मदनित्यद्रवे कोरकं देहि श्रीं ह्रीं १५॥ एवं कविं सिंहनादं महानादं सुग्रीवं मर्कटं शठं बिडालाक्षं बिडालास्यं कुमारं खेचरं भवं मयूरं मङ्गलं भीमं द्वीपिवक्त्रं खराननं मातङ्गं निशाचारिणं विषाग्राहिणं वृकोदरं सैरिभारयं गजमुखं पशुवक्त्रं मृगाननं क्षोभकं मणिभद्रं क्रीडकं सिंहवक्त्रकं श्येनास्यं कङ्कवदनं काकास्यं हयवक्त्रकं महोदरं स्थूलशिरसं विकृतास्यं वराननं चपलं कुक्कुटास्यं मायाविनं मदनालसं मनोहरं दीर्घजङ्घं स्थूलदन्तं दशाननं सुमुखं पिण्डितं वराहास्यं सटामुखं कपटं कौतुकिनं कालं किङ्करं कितवं खलं भक्षकं भयदं सिद्धं सर्वगं (६४) इति चतुःषष्टिश्चेटकाः॥ तथा-

विद्याक्षरेष्वनावृत्तान्यक्षराणि चतुर्दश । सस्वरैस्तैर्भवेत्संख्या चतुर्विंशच्छतद्वयम् ॥५५॥

अत्र हरफसकअलवनतयमदव इति।

तैर्यन्त्राणि च सप्त स्युस्तेषु प्रोक्तक्रमाद्यजेत् । देवताः सप्तवारेषु भास्करादिषु भक्तितः ॥५६॥

वाराख्यां सप्तमी युक्तामिष्टं देहीति चालिखेत् । यन्त्रस्य मध्ये मायास्थं तत्र सिद्धीश्च पूजयेत् ॥५७॥

वृत्तयोर्नवयोर्निं च कृत्वा बाह्येष्टकोणकम् । बहिः कलाब्जभूसद्मयुगं कुर्याद्यथाविधि ॥५८॥

विलिख्य तेषु क्रमतो वर्णान् द्वात्रिंशदालिखेत् । दलेषु कोणेषु तथा वृत्तमध्ये द्वये पुनः ॥५९॥

मातृकामकथाद्यां वै विलिखेदान्तरक्रमात् । तस्य कोणान्तरालेषु हळक्षार्णान् समालिखेत् ॥६०॥

अग्रात्प्रदक्षिणं त्वेवं सप्त यन्त्राणि तैर्भवेत् । सिद्धीनां चेटकानां च यक्षिणीनां तथैकशः ॥६१॥

चेटकानां विशेषोऽयं मध्येऽष्टच्छदमम्बुजम् । तेषामुक्तक्रमेणैव साधनानि फलानि वै ॥६२॥

प्रयोगाञ्छृणु देवशि यैः सिद्धो मत्समो भुवि । पूज्यते सर्वलोकैश्च सर्वतः सर्वदापि वा ॥६३॥

सिन्धुतीरवने चैता यक्षिणीः साधयेत्त्रिशः । एकैकस्मिन् वर्णलक्षं जपेदुक्तविधानतः ॥६४॥

अरण्यवटमूले च पर्वताग्रे गुहासु च । उद्यानमध्ये कान्तारे मातृपादपमूलतः ॥६५॥

तद्दशांश तर्पणं च होमं कुर्यात्प्रसूनकैः । कदम्बबन्धूक जपाहयमारैश्च लौहितैः ॥६६॥

ततः प्रीताः समागत्य प्रत्यक्षा वांछितप्रदाः । सुवर्णानि च वासांसि भूषणानि फलानि च ॥६७॥

आस्वाद्यानि च लेह्यानि भोज्यानि विविधानि च । आलेपनानि माल्यानि दद्युराजीवितावधि ॥६८॥

आयाताः सर्वदा मह्यं प्रत्यक्षा देहि वांछितम् । इत्युक्त्वा नित्यशस्तास्तु पूजयेच्च जपेत्तथा ॥६९॥

अष्टोत्तर सहस्रं तु तां तां विद्यामनन्यधीः । एवं तां सर्वयक्षिण्यः फलं दद्युर्यथेप्सितम् ॥७०॥
चेटकानां तु सर्वेषां तेषु तेषु क्रमेण वै । एकस्मिन् पञ्च पञ्च स्यु सिद्धाः सिन्धुतटे नव ॥७१॥
तेषां च वर्णलक्षं तु जपमुक्तविधानतः । मौनं दिनेषु सततं कुर्यात्सिद्ध्यै न चालयेत् ॥७२॥
मध्यरात्रौ सदा होमं तर्पणं च समीरितम् । जपेद्दिवानिशं प्रोक्तं सर्वषामपि साधने ॥७३॥
चेटकास्ते समागत्य मध्यरात्रेऽतिभीषणाः । क्षोभयेयुरमुं क्षोभं न चेदेत्याथ तत्पुरः ॥७४॥
प्रत्यक्षाः किं त्वेष्टं तत्करोमीति वदेन्निशि । प्रत्येकं ते तथेत्युक्त्वा न मां मुञ्चत इत्यपि ॥७५॥
नित्यशस्तान् जपार्चाभिरुपासीताचरेत्ततः । स्मृते तमेत्य संदिष्टं साधयेयुः समीहितम् ॥७६॥
शत्रूणां समरे भङ्गं प्रहारमहिते जने । कुर्वन्ति प्रार्थितार्थानां प्रदानं ते दिवानिशम् ॥७७॥
आनेययुश्च वनिता वांछितास्तत्क्षणाद्ध्रुवम् । निश्चलीकुर्वते मत्तं दन्तिनं वा हयं नरम् ॥७८॥
नित्याषोडशके सिद्धे देवर्षिपितृराक्षसैः । पिशाचैरुरगैः सिद्धः किन्नरैरप्सरोगणैः ॥७९॥
मरुद्भिर्वसुभिः सप्तऋषिभिर्यक्षदानवैः । रुद्रैरेकादशविधैः साध्यैश्च नवभिर्ग्रहैः ॥८०॥
द्वादशार्कैर्लोकपालैस्तथान्यैरपि दैवतैः । राजभिर्वनिताभिश्च नैरैरन्यैर्मृगैस्तथा ॥८१॥
पूज्यते सर्वदा सिद्धः समीहित सुखास्पदः। हृष्टाशयो वदान्यश्च दयावान् सुमुखः क्षमी ॥८२॥
पूर्णाशयः सदानन्दो निरपेक्षः कलान्वितः । धनी भोक्तापरद्वेषी प्रेमभूरावयोर्भवेत् ॥८३॥

॥ नीलपताका प्रयोग:॥

नीलपताका के प्रयोग से युद्ध में सर्वत्र विजय मिलती है भूत, वेताल, पिशाच उसको दासवत् होकर अपने कंधे पर उठाकर घूमते है। यक्षिणी व चेटक भी दासवत् होकर उसकी आज्ञा का पालन करते है।

१. **एकादशाक्षरी मंत्र** – नित्य विजयं देहि मदद्रवे।
२. नित्यद्वन्द्व युद्धे विजयं देहि मदद्रवे।
३. नित्य चतुरङ्गयुद्धे विजयं देहि मदद्रवे।
४. नित्य कूटयुद्धे विजयं देहि मदद्रवे।
५. नित्य दुर्गयुद्धे विजयं देहि मदद्रवे।
६. द्रवनित्ये देहि खड्गं द्रवनित्ये।
   इन मंत्रों का जप कर विजय पताका व अस्त्र धारण करे तो विजय होवे।
७. **काममद प्राप्ति** – मदकामरूपं मे देहि द्रवे नित्य।
८. **पादुका मंत्र** – नित्य दे पादुकां देहि मदद्रवे।
९. **नित्यमद मंत्र**– द्रवे नित्यमद देह्यञ्जनं द्रवे।
१०. **बेताल वशीकरण मंत्र** – नित्यद्रवे वेतालान्देहि नित्यद्रवे।

११. पिशाच वशीकरण मंत्र – नित्यमदद्रवे पिशाचान् मे प्रयच्छ नित्यद्रवे।

इसके बाद टीका में ३६ यक्षिणी वशीकरण मंत्र दिये गये हैं। ६४ चेटक मंत्र प्रयोग भी टीका में बताये गये है।

मंत्र सिद्धि हेतु रविवार व सप्तमी तिथी विशेष फलप्रदा है। दोनों का योग मिले तो उत्तम फल मिले।

अनावृत्त मंत्र वर्ण – ह र फ स क अ ल व न त य म द व।

॥ यंत्र रचना॥

वृत्त बनाकर बाहर नवयोनि कोण (त्रिकोण) उसके बाहर वृत्त खींचकर अष्टकोण बनाये। उसके बाहर १६ कमलदल व भूपुर बनाये।

यंत्र मध्य में "**ह्रीं**" लिखकर जिस सिद्धि को आप करना चाहते है उसका नाम लिखे। षोडश दल में १६ स्वर मातृका लिखे। अष्टकोण में **कं खं..........दं धं** दो-दो वर्ण लिखें। नं .... **सं** तक वृत्त मध्य में लिखें। अन्य कोणों में "**हं लं क्षं**" लिखे।

यंत्र के चारों ओर "**ह र .... दव**" अनावृत्त वर्ण लिखें। देवी का पूजन आवाहन करें, पश्चात् जिस सिद्धि को जो आप कर रहे है उसका जप करे। शेष विधि श्लोक ६१ से ८३ तक।

॥ नीलपताका मंत्र॥

मंत्र :– ॐ नमः कामेश्वरि कामाङ्कुशे कामप्रदायिके भगवति नीलपताके **भगान्तिके महेश्वरि क्लूं नमोऽस्तु ते परमगुह्ये हूं हूं हूं मदने मदन देहे त्रैलोक्यमावेशय हूं फट्** स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

इन्द्रनील शिलाखण्ड समानतनुरोचिषम् ।
प्रफुल्ल पुण्डरीकाभवदनां स्मितशालिनीम् ॥
कबरीबन्धशोभाढ्यां पीवरोरोजसंयुताम् ।
रम्याभिः सर्वतो नीलपताकाभिरलंकृताम् ।
वराभयकरद्वन्द्वं धारयन्तीं शुचिस्मिताम् ॥

यह देवि युद्ध में विजय प्रदान करती है शत्रु सेना का संमोहन व स्तंभन करती है।

॥ इति नीलपताका नित्या प्रयोग विधिः॥

॥ १२. अथ विजया नित्या प्रयोगः॥

मंत्र – भ म र य उ औं। (त्रिपुरार्णवे)

विनियोग – ऋषिन्यास के अनुसार जाने।

ऋषिन्यास – शिरसि अहि ऋषये नमः। मुखे गायत्रीछंद से नमः। हृदि विजयानित्यादेवतायै नमः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास – भां हृदयाय नमः। मीं शिरसे स्वाहा। रूं शिखायै वषट्। यैं कवचाय हुं। उं नेत्रत्रयाय वौषट्। औं अस्त्राय फट्।

वर्णन्यास – श्रोत्रयोः भं नमः। सर्वाङ्गे मं नमः। नेत्रयोः रं नमः। जिह्वायां यं नमः। नासायां उं नमः। चित्ते नमः।

॥ ध्यानम् ॥

पञ्चवक्त्रां दशभुजां प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनाम् । भास्वन्मुकुट विन्यस्त चन्द्ररेखा विराजिताम् ॥
सर्वाभरणसंयुक्तां पीताम्बर समुज्ज्वलाम् । उद्यद्भास्वद्बिम्बतुल देहकांति शुचिस्मिताम् ॥
शङ्खं पाशं खेट चापौ कह्लारं वामबाहुभिः । चक्रं तथांकुशं खड्ग सायकं मातुलुङ्गकम् ॥
दधानां दक्षिणहस्तैः प्रयोगे भीमदर्शनाम् । उपासनेऽतिसौम्यां च सिंहोपरि कृतासनम् ॥
व्याघ्रारूढाभिरभितः शक्तिभिः परिवारिताम् ॥ (समरे पूजनेऽन्येषु प्रयोगेषु सुखासनाम्) ॥

॥ यंत्र पूजनम् ॥

त्रिकोण, अष्टदल, षोडशदल, अष्टकोण बनाकर उनके बाहर दो रेखा वाला भूपुर चारद्वारयुक्त बनावें। भुवनेश्वरी की जयादि नवपीठशक्तियों का पूजन कर प्रधान देवता का आवाहन करे।
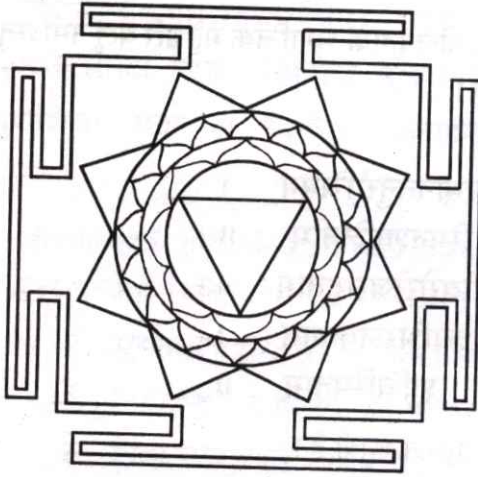
॥ श्री विजया यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् – त्रिकोण मध्य में षट्दिशाओं की कल्पना करे (यदि षट्कोण बनाये तो भी कोई अहित नहीं हैं)। उनमें **भां हृदयाय नमः हृदय शक्ति पा.। मीं शिरसे स्वाहा शिरशक्ति पा.। रूं शिखायै वषट् शिखाशक्ति पा.। यै कवचाय हुं कवच शक्ति पा.। उं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति पा.। औं अस्त्राय फट् अस्त्र शक्ति पा.।** वहीं पर मध्य में दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरुपंक्ति का अर्चन करे।

द्वितीयावरणम् – (भूपुरे) भूपुर की पूर्वादि अष्ट दिशाओं में इन्द्रादि दिक्पालों एवं उनकी अष्टशक्तियों का पूजन करे। पुनः **वायुकोणे – अनंत शक्ति पा.। ईशाने – ब्रह्मशक्ति पा.। आग्नेये – नियति शक्ति पा.। निर्ऋति कोणे – कालशक्ति पा.।**

तृतीयावरणम् – (अष्टकोणेषु) **ह्रीं श्रीं जया पा.। विजया पा.। दुर्गा पा.। भद्रा पा.। भद्रकरी पा.। क्षेमा पा.। क्षेमङ्करी पा.। नित्या पा.।**

चतुर्थावरणम् – (षोडशदलेषु) **ह्रीं श्रीं विदारिका पा.। विश्वमयी पा.। विश्वा पा.। विश्वभञ्जिका पा.। वीरा पा.। विक्षोभिणी पा.। विद्या पा.। विनोदा पा.। अञ्जित विग्रहा पा.। पीतकोशा पा.। विषग्रीवा पा.। विपुला पा.। विजयप्रदा पा.। विभवा पा.। विविधा पा.। विप्रा पा.।**

पंचमावरणम् – (अष्टदलेषु) **ह्रीं श्रीं मनोहरा पा.। मङ्गला पा.। मदोत्सिक्ता पा.। मनस्विनी पा.। मानिनी पा.। मधुरा पा.। माया पा.। मोहिनी पा.।**

षष्टमावरणम् – (अष्टदलकमल कर्णिकायां) **ह्रीं श्रीं मातुलुङ्गाय नमः। सायकेभ्यो नमः। खड्गाय नमः। अंकुशाय नमः। चक्राय नमः। शङ्खाय नमः। पाशाय नमः। खेटाय नमः। चापाय नमः। कह्लाराय नमः।**

पश्चात् सर्वोपचार से देवी का पूजन करे।

गायत्री मन्त्र – विजयादेव्यै विद्महे महानित्यायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥

॥ अथ कादीक्रमानुसार विजयानित्या प्रयोग विधिः॥

(श्रीतन्त्रराजे)

पूर्वोक्त क्रमतो विद्यां वर्णलक्षं जपेत्सुधीः। होमं रक्ताम्बुजैः कृत्वा सिद्धमन्त्रो दयान्वितः ॥१॥
प्रयोगनाचरेन्मन्त्री होमयन्त्रविधानतः। जपेन तर्पणेनापि पूजनेन यथा विधि ॥२॥
कमलै कैरवैः रक्तैः सितैः सौगन्धिकोत्पलैः। सुगंधिशेफालिकाया त्रिमध्ववक्तैर्यथाविधि ॥३॥
होमात्सप्तसु वारेषु कुर्यात्प्रोक्तैस्तु सप्तभिः। प्रोक्तवारेशयोश्चापि तन्मण्डलात् एव वै ॥४॥
विजयं समवाप्नोति समरे द्वन्द्वयुद्धके। मल्लयुद्धे शस्त्रयुद्धे वादे द्यूतद्वयेऽपि च ॥५॥
व्यवहारेषु सर्वत्र जयमाप्नोति निश्चितम्। चतुरङ्गुलजैः पुष्पैर्होमात् संस्तम्भयेद्रिपून् ॥६॥
तथैव कर्णिकारोत्थैः पुंनागोत्थैर्नमेरुजैः। चम्पकैः केतकै राजवृक्षजैर्माधवोद्भवैः ॥७॥
प्राग्वद्वारेषु जुहुयात्क्रमात्पुष्पैस्तु सप्तभिः। प्रोक्तेषु स्तंभनं शत्रोर्भङ्गो वा भवति ध्रुवम् ॥८॥
शत्रोर्नक्षत्रवृक्षाग्नौ तत्समिद्भिरस्तु होमतः। सर्षपाज्याप्लुताभिस्तैः प्रणमन्त्येव पादयोः ॥९॥
मृत्युकाष्ठानले मृत्युपत्रपुष्पफलैरपि। समिद्भिर्जुहुयात् सम्यग्वारेशार्चन पूर्वकम् ॥१०॥
अरातेश्चतुरङ्गं तु बलं रोगार्दितं भवेत्। तेनास्य विजयो भूयान्निधनेनापि वा पुनः ॥११॥
अर्कवारेर्कजैरिध्मैः समिद्धेग्नौ तदुद्भवैः। पत्रैः पुष्पैः फलैः काण्डैर्मूलैश्चापि हुनेत्क्रमात् ॥१२॥
सवर्णारुणवत्साया घृतासिक्तैस्तु मण्डलात्। अरातिदिङ्मुखो भूत्वा कुण्डे त्र्यक्षे विधानतः ॥१३॥
पलायते वा रोगार्तः प्रणमेद्वा भयान्वितः। वैरी बलसमग्रोपि शौर्यमानान्वितोपि च ॥१४
पलाशेध्मानले तस्य पुञ्चांगैस्तद्घृताप्लुतैः। होमेन सोमवारेषु भवेत्प्राग्वन्न संशय ॥१५॥
खादिरेध्मानले तस्य पञ्चांगैस्तद्घृताप्लुतैः। वारे भौमस्य हवनात्तदाप्नोति सुनिश्चितम् ॥१६॥
अपामार्गेध्मजे वह्नौ तत्समिद्भिर्हुनेत्तथा। बुधवारेषु शुभ्रायाः सवत्साया घृतान्वितम् ॥१७॥
पूर्वोक्तफल संसिद्धिर्भवत्येव च तद्दिनैः। तत्तद्वारेषु भजनात्पूर्वमेव हुतक्रिया ॥१८॥
सर्वत्र प्रोक्तमेवार्चा जपयन्त्रादि कर्मसु। तत्तन्नित्यार्चनं तत्तद्वारेशद्वयपूजनम् ॥१९॥
विधाय पश्चात्कर्माणि तानि कुर्यात्समाहितः। शीघ्रं तत्फलसंसिद्ध्यै भवत्येवान्यथान्यथा ॥२०॥
पिप्पलाग्नौ गुरोर्वारे तदुत्थैस्तद्घृतप्लुतैः। हुनेत्तथा तत्फलाप्तिस्तद्दिनैः स्यादसंशयम् ॥२१॥
उदुम्बराग्नौ भृगुजे वारे होमं तदुद्भवैः। तत्सिक्थैर्विदधीतेत्थं तद्दिनैस्तत्र सिध्यति ॥२२॥

शमीवह्नौ तदुस्थैस्तु जुहुयात्कृष्णगोघृतैः । तद्दिनात्तात्फलानि स्युरिति वारेषु सप्तसु ॥२३॥
विजयो विहितः सम्यग्हवनात्तिथिऋक्षयोः । विजयं शृणु देवेशि कथयामि क्रमेण तै ॥२४॥
प्रतिपत्तिथिमारभ्य पञ्चम्यन्तक्रमेण वै । शालीचणक मुद्गैश्च यवमाषंश्च होमतः ॥२५॥
महिषाज्यप्लुतैस्ताभिस्तिथिभिः समवाप्नुयात् । षष्ठ्यादि च दशम्यन्तमजा भव घृतैस्तदा ॥२६॥
प्रागुक्तैर्निस्तुषैर्होमात्प्रागुक्तं फलमाप्नुयात् । तदूर्ध्वं पञ्चदशयन्ते समस्तैश्च तिलद्वये ॥२७॥
सिताक्तैः पायसैः सिक्तैराविकैस्तु घृतैस्तथा । हवनात्फलमाप्नोति यदादौ फलमीरितम् ॥२८॥
एवं नक्षत्र वृक्षोत्थवह्नौ तैस्तैर्मधुप्लुतै । हवनादपि तत्प्राप्तिर्भवत्येव न संशयः ॥२९॥
विद्यायां प्राग्वदर्णानि पञ्च युञ्ज्यात्स्वरैस्तथा । अशीत्यर्णवती विद्या तैर्यन्याणि शृणु प्रिये ॥३०॥
प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च दश सूत्राणि पातयेत् । एकाशीतिपदानि स्युस्तेषु तानि लिखेत्क्रमात् ॥३१॥
मध्यकोष्ठेभिधां कृत्वा प्रागुक्तविधिना युतम् । शूलीकृत्य च रेखाग्राण्यवाह्याभिपूज्य ताम् ॥३२॥
उपासीत पुरो विद्यां जपं नित्यं समर्चयेत् । विद्याक्रमं तत्र यन्त्रे यजेत्तत्फलमाप्नुयात् ॥३३॥

अथ यन्त्रलेखनक्रमः सुगमः । तथा-

प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च चतुः निपातनात् । सूत्र नवानि सम्भवन्त्यत्र कोष्ठानि परमेश्वरि ॥३४॥
तेषु प्रत्येकमब्जानि साष्टपत्राणि संलिखेत् । तेषु मध्यस्थ पद्मस्य कर्णिकायां समालिखेत् ॥३५॥
नामगर्भां तु तां विद्यां तद्बहिश्चाष्टपत्रके । तेष्वादितोऽष्टौ संलिख्य बिन्दुना तद्बहिस्तथा ॥३६॥
कर्णिकायां तु नामैकं बहिरष्टौ तथाष्टसु । एवमष्टसु संलिख्य वेष्टयेन्मातृकाक्षरैः ॥३७॥
विलोमैरनुलोमैश्च मायाबिन्दुसमन्वितैः । चतुरस्त्रत्रये बाह्ये ळक्षावग्रे समालिखेत् ॥३८॥
एवं कृत्वा हस्तयुग्ममाने कुम्भं विधाय तम्। विद्याक्षरौषधिक्वाथजलैरापूर्य पूर्ववत् ॥३९॥
अभ्यर्च्य विद्यामयुतं जपित्वा तैर्विधानतः । अभिषिञ्चेत्ततः क्लेशैर्विमुक्तो जायते सुखी ॥४०॥
विजयं सर्वतो भूयात्प्रोक्तेष्वपि च सप्तसु । नवग्रहार्तौ रिपुभिः सर्वतः क्लेशसम्भवे ॥४१॥
समरस्योद्यमे कीर्तिसमृद्ध्योरप्यवाप्तये । पुत्राप्त्यै वाञ्छितप्राप्त्यै त्रिषु जन्मसु कारयेत् ॥४२॥
एतद्यन्त्रं गैरिकेण पीठे संलिख्य तत्र ताम् । देवीमावाह्य सम्पूज्य जपेद्विद्यां तथायुतम् ॥४३॥
एवं त्रिःसप्तभिः सप्तरात्राद्विश्वं वशं नयेत् । राजानं वनितां मर्त्यानन्यांश्च प्राणिनोऽखिलान् ॥४४॥
हरिद्राढ्यपदे कृत्वा कलशे वा शरावयो । निधाय भित्तिमध्ये वा शयनस्थानके निजे ॥४५॥
अभ्यर्च्य विद्यया जापं कुर्यात्सन्ध्यासु नित्यशः । सहस्त्रं प्रोक्तकलनात्स्तम्भयेदखिलं दृढम् ॥४६॥
शत्रोरुद्योगरोषाभ्यामनिष्टकरणं तथा । व्यहारे रणोद्योगे वादे वाचं रुषं मतिम् ॥४७॥
एतत्प्रागुक्तसुरभिद्रव्यैरालिख्य तत्र ताम् । सन्ध्यासु पूजयेन्नित्यं सहस्त्रं प्रजेपत्तथा ॥४८॥
प्रोक्तकाल प्रयोगेण श्रियं प्राप्नोति पुष्कलाम् ।.....

****

इति अथैतद्यन्त्र रचनाप्रकार - **तत्र प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक् च चतुश्चतुः सूत्रनिपातनात्समान्तरालिनि नव कोष्ठानि कृत्वा, तेषु नवसु कोष्ठेषु अष्टदलपद्मानि संकर्णिकानि नव कृत्वा, मध्याष्टदलकर्णिकायां साध्यनामयुक्तां विजयाविद्यां विलिख्य, बहिरष्टसु दलेषु प्रागुक्ताशीत्यक्षरेषु प्रथमतोष्टाक्षराणि विलिख्य, पूर्वदिग्गताष्टदले कर्णिकायां नवामक्षरं साध्यनामगर्भं विलिख्याष्टदलेष्वष्टाक्षराणि विलिख्य, तथैवाग्नेयदिक्स्थाष्टदलेषु विलिख्य, बहिश्चतुरस्त्रत्रयं कृत्वाभ्यन्तराले विसर्गयुक्तां विलोममातृकां विलिख्य तद्बहिळक्षाभ्यां वेष्टयेत्। एतद्यन्त्रमुक्त फलदं भवति॥ तथा-**

.....। अथान्यद्वज्ररूपं तु यंत्रं वक्ष्येति वैभवम् ॥४९॥

प्राग्वद् द्विसप्तरूपाणां पातेनोत्पादयेत्तथा । कोष्ठानि नवषष्ट्या च युतं शतमतिस्फुटम् ॥५०॥
तच्चतुष्कोणकोष्ठानि मार्जयेत्सैकविंशतिम् । मध्ये वज्रं भवेत्पञ्चाशीतिकोष्ठैर्यथाविधि ॥५१॥
तच्चतुर्दिक्षु विलिखेत्त्रिकोणान्येक कोणतः । सर्वमध्यस्थकोष्ठे चतुर्दिक्षु न्यसेत्तथा ॥५२॥
विद्यां नामोदरां कृत्वा प्राग्वद्वर्णास्तु संलिखेत् । एतदग्रचतुष्कस्य स्पर्शान् त्रिचतुरस्त्रकम् ॥५३॥
विधाय तत्र विलिखेत्मातृकां प्राग्विधानतः । एतेन वज्रयन्त्रेण विजया विजयप्रदा ॥५४॥
एतत्प्रोक्तेषु संलिख्य स्थापयेत्प्रोक्तरूपतः । विजयं समवाप्नोति प्रोक्तेष्वपि च सप्तसु ॥५५॥
विलिख्याश्वत्थ फलकातले यंत्रं कुचन्दनैः । जपाराधनसंसिद्धं स्थापयेच्छून्यवेश्मसु ॥५६॥
देशे वा तत्र दिनशो वर्धते श्रीरचञ्चला । पिशाचा राक्षसाः कृत्या वेताला स्युर्न तत्र वै ॥५७॥
पलाशफलकायां तु विलिख्यैतद्यथाविधि । स्थापयेद्यत्र कुत्रापि तत्क्षेत्रं ब्राह्मणास्पदम् ॥५८॥
पूर्वोक्त स्थापनाद् राजधानी भवति सुस्थिरा । वटे विलिख्य खननात्पत्तनं भवति ध्रुवम् ॥५९॥
उदुम्बरे विधायेत्थं स्थापनादचिरेण वै । अहितानाश्रयं स्थानं भवत्येव न संशयं ॥६०॥
वज्रस्य दिक्त्रिकोणान्तरालात्कुर्यात्त्रिशूलकम् । दाहव्याप्ते स्वसंयुक्ते लिखेत्तच्छृङ्गमध्ययोः ॥६१॥
तत्र संस्थाप्य गदितं विद्याजप्तविभूतिना । भालस्थेनाभिजप्तेन तमाविश्य गदो भवेत् ॥६२॥
स्वावेशकारणं कर्मस्वापयानक्रमं तथा । ग्रहभूतपिशाचाद्या अस्यविश्यापयान्ति वै ॥६३॥
तदैव दासवत्तस्य वशे भवति तद्बलात् । यन्त्रमेतद्विलिख्याश्मन्यभर्च्य स्थापयेत्क्वचित् ॥६४॥
राज्ञो गेहे तस्य राज्ञः क्षमा मुञ्चति नान्वयम् । स्थाने गजानां वाहानां नव कृत्वा नवस्वपि ॥६५॥
स्थानेषु स्थापितान्येतान्यर्चयेद्दिनशस्तथा । दिक्षु मध्ये च तत्रैव रोगाः कृत्या पेरेरिताः ॥६६॥
वीक्षितुं भुवनं नैव शक्ताः स्युस्तत्प्रभावतः । चन्द्रचन्दनकाश्मीरैरालिख्यभिनवे पटे ॥६७॥
अभ्यर्च्य विद्याजप्तं तं पटमास्तीर्य शाययेत् । दाहज्वरार्तमचिरान्मुच्यते तज्ज्वरेण सः ॥६८॥
अन्येष्वपि गदेष्वेव कारयेत्तद्विमुक्तये । समरेषु महोपानां यन्त्रमेतदुदीरितम् ॥६९॥
निः साने पटहेऽन्युषु वाद्येषु च समालिखेत् । दरदनाथ तन्मध्य तामावाह्य समर्चयेत् ॥७०॥
विजयां विजयावाप्त्यै युगपत्ताडयन् व्रजेत् । प्रत्यर्थिसेना तच्छब्दाकर्णनेन पलायते ॥७१॥

दिशो दश भयोद्विग्ना नाभियामि कदाचन । सजीवद्यूतकालेषु यन्त्रमेतद्विनिर्मितम् ॥७२॥
गुलिकीकृत्य तत्कण्ठे बद्ध्वा पश्चात् तु योजयेत् । एतद्दर्शनमात्रेण पलायन्ते दिशो दश ॥७३॥
निर्जीवेषु च तद्यन्त्रं जयमाप्नोति सर्वतः । नासाध्यं विद्यते तेन वज्रयन्त्रेण पार्वति ॥७४॥
ध्यायेद्वक्त्रे रिपोर्यन्त्रं विद्यां वा लोहिताकृतिम् । तदैव दासवत् तस्यो वशो भवति तद्बलात् ॥७५॥
इति ते विजयानित्यावैभवास्तु समीरिताः । एतद्वज्र (स्य? स्तु) सुगमत्वान्न विस्तारितः ॥

॥ विजयानित्या प्रयोगः॥

सारांश – यह विद्या विघ्न व शत्रु नाशकर विजय प्रदान करती है। श्लोक १ से १९ तक प्रयोग फल लिखा गया है। दो तरह की यंत्र रचना दी गई है। मंत्र ७९ अक्षर का बताया गया है परन्तु मंत्र नहीं दिया गया है।

(१) १०-१० रेखायें पूर्व-पश्चिम व उत्तर-दक्षिण खींचकर ८१ कोष्ठक यंत्र बनायें। प्रत्येक रेखा को यंत्र से आगे बढ़ाकर त्रिशूल की आकृति बना देवे। मध्य में विजया का आवाहन, पूजन करे।

(२) नवकोष्ठक यंत्र बनायें। प्रत्येक कोष्ठक में अष्टदल बनाये। मध्य कोष्ठक में "**ह्रीं**" युक्त विजया देवी का नाम लिखें। "**ह्रीं विजयायै नमः**" लिखें। पूर्व कोष्ठक में ८ स्वर मातृका, अग्निकोष्ठक में आठ स्वर मातृका, अन्य कोष्ठकों में क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग, य वर्ग, लिखें।

यंत्र के बाहर तीन चतुरस्र बनायें। एक अन्तराल में विसर्ग युक्त **वः लः रः यः** विलोम मातृका लिखे। उसके बाहर **हः लः क्षः** को लोम-विलोम लिखे। प्रयोग फल श्लोक ४१-४८ तक।

अन्य प्रयोग श्लोक ५० में दिये है। प्रयोग विधि स्पष्ट नहीं है।

॥ इति विजयानित्या प्रयोग विधिः ॥

॥ १३. अथ सर्वमङ्गला (चतुर्दशीतिथी कला) नित्या प्रयोगः॥

मंत्र – १. "**स्वौं**"।

२. **ॐ स्वौं सर्वमङ्गलायै नमः**। (मन्त्रमहोदधौ)

ऋषिन्यास के अनुसार विनियोग जाने।

ऋषिन्यासः – **शिरसि चन्द्राय ऋषये नमः। मुखे गायत्री छंद से नमः। हृदि सर्वमङ्गला नित्या देवतायै नमः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यासः – स्वां हृदयाय नमः। स्वीं शिरसे स्वाहा। स्वूं शिखायै वषट्। स्वैं कवचाय हुं। स्वौं नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वः अस्त्राय फट्।

वर्णन्यासः – श्रोत्रयोः स्वां नमः। सर्वाङ्गे स्वीं नमः। नेत्रयोः **स्वूं नमः। जिह्वायां स्वैं नमः। नासायां स्वौं नमः। मनसि स्वः नमः।** पश्चात् व्यापक न्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

सुवर्णवर्णां रुचिरां मुक्तामाणिक्य भूषणाम् । माणिक्यमुकुटां नेत्रद्वय प्रेङ्खद् दयापराम् ॥
द्विभुजां स्वासनां पद्मे त्वष्टषोडशतदद्वयैः । पत्रैरुपेते सचतुर्द्वारभूसद्मयुग्मके ॥
मातुलुङ्गफलं दक्षे दधानां करपङ्कजे । वामेन निजभक्तानां प्रयच्छन्तीं धनादिकम् ॥

॥ यंत्र पूजनम् ॥

षट्कोण, अष्टदल, षोडशदल, द्वात्रिंशद्दल बनाये उनके ऊपर चार द्वार युक्त २ रेखावाला भूपुर बनाये। भुवनेश्वरी की नवपीठ शक्तियों का अर्चन करे। आवरण देवताओं की नामावली के पहले **''ह्रीं श्रीं''** तथा अंत में **पादुकां पूजयामि तर्पयामि** कहें। यंत्र मध्य में ध्यानपूर्वक देवी का आवाहन करे।

॥ श्री सर्वमङ्गला यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् – (षट्कोणे) आग्नेये- **स्वां हृदयाय नमः हृदयशक्ति पादुका पूजयामि तर्पयामि नमः।** इतिसर्वत्र॥ **स्वीं शिरसे स्वाहा। स्वूं शिखायै वषट्। स्वैं कवचाय हुं। स्वौं नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वः अस्त्राय फट्॥**

देवी पृष्ठ में दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरु पंक्ति का पूजन करे। देवी के दक्षिण एवं वाम भाग में- **बीजपूराय नमः। खड्गाय नमः।**

द्वितीयावरणम् – (अष्टदले) **ह्रीं श्रीं भद्रा पा.। भवानी पा.। भव्या पा.। विशालाक्षी पा.। शुचिस्मिता पा.। कुंकुमा पा.। कमला पा.। कल्पा पा.।**

तृतीयावरणम् – (षोडशदलेषु) **ह्रीं श्रीं कला पा.। पूरणी पा.। नित्या पा.। अमृता पा.। जीविता पा.। दया पा.। अशोका पा.। अमला पा.। पूर्णा पा.। पुण्या पा.।** भाग्या पा.। उद्यता पा.। **विवेका पा.। विभवा पा.। विश्वा पा.। विनिता पा.।**

चतुर्थावरणम् – (द्वात्रिंशद्दलेषु) **ह्रीं श्रीं कामिनी** पादुका पू.। **खेचरी पा.। आर्या पा.। पुराणा पा.। परमेश्वरी पा.। गौरी पा.। शिवा पा.। अमेया पा.। विमला पा.।** विजया पा.। **परा पा.। पवित्रा पा.। पद्मिनी पा.। विद्या पा.। विश्वेश्वरी पा.। शिववल्लभा पा.। अशेषरूपा पा.।** आनंदा पा.। **अम्बुजाक्षी पा.। अनिन्दिता पा.। वरदा पा.। वाक्प्रदा पा.। वाणी पा.। विविधा पा.। वेदविग्रहा पा.।** वन्द्या पा.। **वागीश्वरी पा.। सत्या पा.। संयता पा.। सरस्वती पा.। निर्मला पा.। नादरूपा पा.।**

पंचमावरणम् – (भूपुरे) देवि के अग्रभाग से दक्षिणावर्त चारों द्वारों में **ब्राह्मी आदि अष्टशक्तियों** में दो दो का प्रतिद्वार पूजन करे।

षष्ठमावरणम् – (भूपुरे) पूर्वादि क्रम से ईशान तक **दिक्पालों** एवं उनकी **इन्द्राणी** आदि **अष्टशक्तियों** का पूजन करे।

सप्तमावरणम् – (भूपुरे) वायव्यकोणे- **अनन्त शक्ति पा.।** ईशाने **ब्रह्मशक्ति पा.।** आग्नेये **नियतिशक्ति पा.। निर्ऋति कालशक्ति पा.।** सर्वमंगला का सर्वविध पूजन करे।
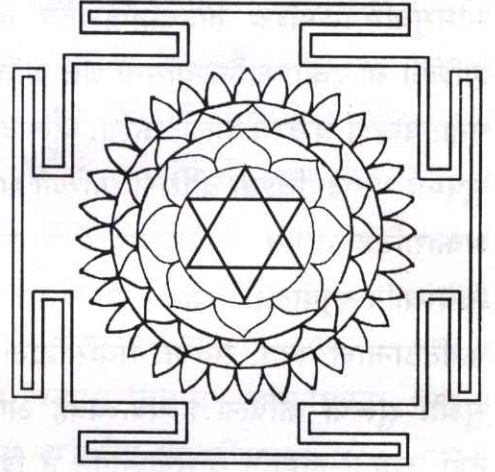
गायत्री मन्त्र - सर्वमङ्गलायै विद्महे चन्द्रात्मिकायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥

॥ अथ कादीक्रमानुसार सर्वमङ्गलाप्रयोग विधिः ॥

(श्रीतन्त्रराजे)

जपं तु नित्यशः कुर्यादग्रे तस्याः सहस्रकम् । प्राग्वत् तां साधयेद्विधां द्वात्रिंशल्लक्षमानतः ॥१॥
होमं दशांशतः कुर्यादन्नाज्याभ्यां घृतेन वा । एवं संसिद्धविद्यस्तु कुर्यात् प्रोक्तानशेषतः ॥२॥
प्रयोगानन्यथा तस्य नैष्कल्यमयशो मृतिम् । विदध्यात् तेन तां प्रोक्तक्रमेणाराध्य भक्तितः ॥३॥
संसाध्य पश्चात् कुर्वीत मङ्गलान्मङ्गलोदितान् । प्रयोगार्था वर्णशक्तीर्वक्ष्ये देवि शृणु प्रिये ॥४॥
सोमसूर्याग्निरूपाश्च ताश्चाष्टत्रिंशदेव ताः । अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टी रतिर्धृतिः ॥५॥
शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरङ्गदा । पूर्णा पूर्णामृता कामदायिन्यः स्वरजाः कलाः ॥६॥
एताः षोडश चन्द्रस्य कलाः कलाः कल्पद्रुमोपमाः । तपिनी तापिनी धूमा मरीचिर्ज्वालिनी रुचिः ॥७॥
सुषुम्ना भोगदा विश्वा बोधिनी धारिणी क्षमा । एतास्तु शक्तयः प्रोक्ताः क्रमाद् द्वादश भानुजाः ॥८॥
भकारादिडकारान्त वर्णोच्चारो विलोमतः । धातार्यमा च मित्रश्च वरुणो सौभगस्तथा ॥९॥
विवस्वानिन्द्रपूषार्काः पर्जन्यः समनन्तरः । त्वष्टा विष्णुरिति प्रोक्ता द्वादशार्काः क्रमेण वै ॥१०॥
कादिठान्तार्ण तनवः सर्वगाः सर्वसिद्धिदा । धूम्रार्चिरूष्मा ज्वलिनि ज्वालिनी विस्फुलिङ्गनी ॥११॥
सुश्रीः सुरूपा कपिला हव्यकव्यवहे अपि । यादिक्षान्ताक्षरमयाः शक्तयो दश कीर्तिताः ॥१२॥
तेषां दशानां नामानि वासनोक्तानि ते शिवे । कादिक्षान्ताक्षराणां तु द्वात्रिंशन्मिथुनानि वै ॥१३॥
प्रोक्तक्रमेण सम्पूज्य विनियुञ्ज्यात् तु सर्वतः । स्वराणां तु स्वतन्त्रत्वात् स्वतन्त्राः शक्तयस्तथा ॥१४॥
तासां नाथास्तत्सदृशनामरूपाः समीरिताः । मिथुनान्येवमुक्तानि त्रिंशदष्टक्रमेण वै ॥१५॥
तानि सम्पूज्य तत्तेजस्त्रयात्मनि जले शिवे । प्रोक्तानि देवतारूपाण्या वाह्याभ्यर्च्य तैर्जलैः ॥१६॥
अभिषेकात्तु तत्तेजस्त्रयं देव्यात्मता भवेत् ।

अत्र स्वरान्विना द्वाविंशतिमिथुनानि सूर्यस्याग्नेश्च कलाद्वाविंशतित्वात्स्वैर्मिलित्वा अष्टात्रिंशन्मिथुनानीत्यर्थः। तथा-

वाताद्यैर्ग्रासमायान्तैः षट्सप्ततियुतैः शतैः ॥१७॥
पञ्चभिर्योजयेन्नित्यां विद्यां तां सर्वमङ्गलाम् । ततस्तस्या वनस्थाने स्वरान् षोडश योजयेत् ॥१८॥
ततः सहस्रैर्नवभिर्द्विशतेन च षोडश । रूपाणि नित्याविद्याया जायन्ते परमेश्वरि ॥१९॥
तैर्यन्त्राणि प्रयोगांश्च फलानि च वदामि ते ।

अस्यार्थ :- वाताद्यैरकाराद्यैर्ग्रासमायान्तैर्ग्रासो क्षकारः माया विसर्गस्तत्सहितक्षकारान्तैः षट्सप्तत्युत्तर पञ्चशत ५७६ वर्णैः पूर्णमण्डलरूपैरित्यर्थ॥ ततः सर्वमङ्गलविद्याया वनस्थाने औकारस्थाने षोडशस्वरान् योजयेत्। तद्बीजमेव षोडशस्वरयुक्तं कुर्यादित्यर्थः। एवं षोडशस्वरयुक्त सर्वमङ्गलाबीजेन प्रागुक्त पूर्ण मण्डलवर्णान्

योजयेत् । यथा स्वंअं स्वंआं स्वंइं स्वंईं इत्यादि स्वंक्षः इत्यन्तं ५७६ । एवं स्वां अं स्वां आं स्वां इं स्वां ईं इत्यादि स्वां क्षः इत्यन्तं ५७६ । स्विं अं स्विं आं स्विं इं स्विं ईं इत्यादि स्विंक्षः इत्यान्तं५७६ । एवं नवसहस्राणि षोडशोत्तर द्विशतवर्णा ९२१६ जायन्ते इत्यर्थः तथा ।

वृत्तद्वयं विधायस्य बहिः षट्कोणमालिखेत् ॥२०॥

तद्बहिश्चाष्टपत्राब्जं तद्बहिस्तत्त्रयं तथा । कृत्वा तेषु न्यसेद्विद्याकूटान्युक्तक्रमेण वै ॥२१॥

तेष्वाद्यं मध्यतः साध्यसमेतं विलिखेद्बहिः । षट्सु कोणेषु चत्वारि प्रत्येकं विलिखेत्ततः ॥२२॥

अष्टच्छदेषु प्रत्येकं पञ्च पञ्च समालिखेत् । बहिर्वृत्तान्तरयुगे मातृकां माययान्विताम् ॥२३॥

विलोमामनुलोमां च स्वेन सम्यक्समालिखेत् । अन्तः षडन्तरालेषु पर्यायदिनसम्भवे ॥२४॥

नित्ये लिखेदग्रतस्तु प्रादक्षिण्येन सर्वतः । एवं यन्त्राणि जायन्ते तैः कूटैरुक्तभेदतः ॥२५॥

शतं च चत्वारिंशच्च चत्वारि च ततः क्रमात् । एवमन्यानि कूटानि प्रोक्तानि विलिखेत्क्रमात् ॥२६॥

मध्ये नामसमेतानि तदन्यान्यभितो लिखेत् । त्रयोदशमितैर्लक्षः सप्तविंशति संख्यकैः ॥२७॥

सहस्रश्च शतेनापि चतुर्भिस्तानि संख्यया । यन्त्राणि तेन जायन्ते तैश्चासौ सर्वमङ्गला ॥२८॥

एवमासां तु नित्यानां यन्त्राणि स्युः पृथक्पृथक् । तस्मादाभिरसाध्यानि न कदाचिच्च कुत्रचित् ॥२९॥

विद्यन्ते तेषु यत्किचिद्वक्ष्ये कोऽशेषतो वदेत् । नाथात्मकानि येन स्युस्तेन तानि नवक्रमैः ॥३०॥

भित्त्वा षोडशधा देवि विदध्याद्विनियोकम् । विशालमध्य विन्यासं विधाय नवकोष्ठकम् ॥३१॥

प्रागादिमध्यपर्यन्तं प्रादिक्षण्य क्रमाल्लिखेत् । नवानि नवसु प्राज्ञे तेषु ऋृक्षाणि चालिखेत् ॥३२॥

सप्तम्या साध्य संयुक्तं नाथान् देवीश्च तत्क्रमात् । यद्धदि वांछितं कर्म तत्तत् तेषु विलिख्य वै ॥३३॥

पीठे वा भूतले वापि पूजयेत्प्रोक्तवासरे । ततः प्राप्ते वांछितार्थे स्वात्मन्युद्वास्य देवताः ॥३४॥

चक्रं प्रक्षाल्य तत्तोयं केदारादिषु निक्षिपेत् । एवमन्यानि यन्त्राणि प्रोक्तानि क्रमतः शिवे ॥३५॥

विनियुञ्जयादभीष्टेषु कार्येषु क्रमतः शिवे । परसंख्यासमेतानि तेषु तेष्वप्ययं विधिः ॥३६॥

सर्वतः सौम्यकर्माणि सिध्यन्त्येवानया ध्रुवम् । वश्येषु ज्ञानसम्प्राप्तौ सर्वप्रत्यूह शान्तये ॥३७॥

लक्ष्मीप्राप्तौ तथारोग्यसिद्धौ रोगार्तिशान्तिषु । विजयाय समस्तापत्तारणायभिवृद्धये ॥३८॥

पुत्राप्त्यै सर्वरक्षायै पूजयेत् तेषु तत्क्रमात् । गजाश्वगोखरोष्ट्रज महिषीणां विवृद्धये ॥३९॥

तेषां रोगादिपीडासु तच्छान्त्यै च यथाक्रमात् । निर्माय नवयन्त्राणि तत्र तत्रार्चयेच्छिवाम् ॥४०॥

तेषु तेषूक्तकार्येषु तत्तत्सम्प्राप्तिहेतवे । नव प्राकारयुक्तानि षोडश प्रथमादिषु ॥४१॥

तिथिषु प्रोक्तरूपाणि तत्र तां सर्वमङ्गलाम् । पूजयेद्वाञ्छितावाप्त्यै प्रथमे सर्वदा यजेत् ॥४२॥

एवमेषा महासिद्धिकरी पूजाजपादिना । लघुमन्त्रक्रियामासां पूजां सर्वार्थसिद्धिदाम् ॥४३॥

पूर्णामनतिविस्तारां मङ्गलां ब्रूहि मे शिव। देवर्षिसिद्ध गंधर्वयक्षदेवाङ्गनाश्रयाम् ॥४४॥

****

पूजां वक्ष्यामि देवेशि गुह्यां शृणु मनोहराम् । विद्यया कुलसुन्दर्या कराङ्गन्यासपूर्वकम् ॥४५॥
अर्घ्यं तया विधायाथ पीठे चक्रं विधाय तत् । चन्दनागुरुकर्पूररोचनादरदादिषु ॥४६॥
एकेन तत्र ताः सम्यगुक्तरूपमथार्चयेत् । रत्नादिषूक्तेष्वालिख्य प्रतिष्ठाप्यात्र पूजयेत् ॥४७॥
वृत्तस्यायामविस्तारद्वये त्वेकतुरीयतः । वृत्ते विधाय चिह्नानि तेषु सूत्राणि पातयेत् ॥४८॥
त्रयमन्तरतो मुक्त्वा तेन द्वादशकोणकम् । तेषां मर्मसु मध्ये च विदध्याद्वृत्तयुग्मकम् ॥४९॥
मध्यवृत्तस्य मध्ये तु योनिं कुर्यात्समास्त्रकम् । प्राग्वत्तिस्रोऽर्चयन्नित्यास्तत्कोणेषु प्रदक्षिणम् ॥५०॥
अन्या अन्येषु कोणेषु पूजयेद् द्वादश क्रमात् । अग्रात्प्रदिक्षणं पश्चाद्बलिं दध्याद्यथाविधि ॥५१॥
सप्ताक्षर्या केवलाया केवलां ललितां जपेत् । नित्यानां ललिताद्यानां षौडशानां च नामभिः ॥५२॥
नित्यासप्ताक्षरीभिः स्युर्विद्याः पूजासु सर्वदा । ताभिः षोडशविद्याभिर्नित्यास्ताः षोडशार्चयेत् ॥५३॥
तद्विद्याक्षर संख्यास्तु शृणु वक्ष्ये यथाक्रमम् । प्रथमायाश्च सप्तम्या विद्या स्यात्षोडशाक्षरी ॥५४॥
द्वितीयायाश्चतुर्थ्यास्तु चतुर्दशभिरक्षरैः । तृतीयायाश्च षष्ठ्याश्च दशम्या दशपञ्चकम् ॥५५॥
द्वादश्याः सचतुर्दश्याः पञ्चदश्याः क्रमेण वै । पञ्चम्याश्च नवम्याश्च त्रयोदश्यास्त्रयोदश ॥५६॥
एकादश्यास्तु साष्टम्याः षोडश्या द्वादशोदिताः । अस्मिन्नेवार्चयेच्चक्रे चतुर्विंशतिभिस्तथा ॥५७॥
सविंशतिशता विद्या जपेत्ताश्च सिद्धये । अन्या विंशत्ससप्तशतं तैर्यन्त्रेष्वेव पूजनम् ॥५८॥
आसां पूजाजपाद्येषु यन्त्रेषु च समीरितम् । एतल्लघुप्रकारं तु यन्त्रं सर्वार्थदायकम् ॥५९॥
तेन तत्रोक्तमखिलं साध्येद्वज्ररूपिणा ।.....

अत्र वृत्तद्वयं विधाय इत्यादिश्लोकषट्कस्यायमर्थः- प्रथमतो वृत्तद्वयं विधाय तद्बहिः षट्कोणं कृत्वा तद्बहिरष्टदलपद्मं विरच्य तद्बहिर्वृत्तद्वयं कृत्वा मध्ये साध्यगर्भमाद्यकूटं विलिख्य षट्कोणे प्रतिकोणं चत्वारि चत्वारि कूटानि विलिख्याष्टपत्रेषु प्रतिपत्रं पञ्च पञ्च कूटानि विलिख्य बहिर्वृत्तान्तरालद्वयस्याभ्यन्तराले विसर्गसहितां प्रतिलोममातृकां विलिख्य बाह्यान्तराले विन्दुयुक्तामनुलोममातृकां विलिख्यान्तः षट्कोणान्तरालेषु पर्यायनित्या तद्दिननित्ययोः षडक्षराणि स्वाग्रात् प्रादक्षिण्येन विलिखेदिति। एवं मध्यकूटं तथैव स्थापयित्वा द्वितीययन्त्रेग्रिम कूटानि विलिखेदेवं तृतीये तदग्रिमकूटानि विलिखेत् । एवमेकस्यैकस्य कूटस्य चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशतं (१४४) यन्त्राणि जायन्ते। एवं क्रमेण सर्वाणि यन्त्राणि त्रयोदशलक्षाणि सप्तविंशतिसहस्त्राणि चतुरुत्तरशतसंख्यानि (१३२७१०४) भवन्ति। एवमन्यासां नित्यानां यन्त्राणि भवन्तीत्यर्थः। यन्त्राणां विनियोगानाह- नाथात्मकानि इति।

अस्यायमर्थः- षिशालायामं नवकाष्ठात्कं चक्रं विलिख्यैकैकस्मिन् कोष्ठे सूत्रत्रयानिपातनात् षोडश कोष्ठानि विलिख्यैकैकस्मिन् कोष्ठे एकमेकं यन्त्रं विलिखेत् । एवं चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशतं (१४४) यन्त्राणि भवन्ति। नवकोष्ठेषु त्रिरावृत्या सप्तविंशतिनक्षत्राणि विलिख्य नवसु नवनाथान् । विलिख्य सप्तम्यन्तं साध्यनाम ''वांछितं कर्म देहि'' इति विलिख्य प्रोक्तक्रमेण पूजादिकं कुर्यात् प्रोक्तफलानि भवन्तीत्यर्थः। एवमन्येषां यन्त्राणामपि प्रोक्त एव क्रमो ज्ञेयः। लघुमन्त्रक्रिया मित्यादिश्लोकैर्लघुपूजोक्ता। तत्र चतुर्दशारं विलिख्य मध्ये त्र्यस्त्रं विधाय

****

तन्मध्ये ललितात्र्यस्त्रे तिस्रः चतुर्दशस्वरेषु चतुर्दशानि याः पूज्या इत्यर्थः । तत्तद्विद्याया उच्चारणशक्तौ नाममन्त्रैः पूजा कार्येत्याह प्रथमायाश्च इत्यादिश्लोकैः । ते मन्त्रास्तु तत्तसंख्या ज्ञात्वाह्याः । अस्मिन्नेवार्चयेचक्रे इत्यादिश्लोकेन चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशतकूटानि प्रागुक्तान्यप्यस्मिन्नेव चक्रे जपेदित्यर्थः । अन्यानि नित्याप्रकारणे प्रोक्तानि विंशत्युत्तरसप्तशत (७२०) कूटानि तत्रोक्तयन्त्रेष्व पूजयेदित्यर्थः । तथा-

..... तद्वज्रं द्विविधं प्रोक्तं कोष्ठकोणात्मभेदतः ॥६०॥

कोणात्मवज्रनिर्माणप्रयोगाः परतः शिव । तयोस्तु कोष्ठरूपं तु वज्रं वक्ष्ये यथाविधि ॥६१॥

यत्साधकेप्सितावाप्त्यै सुराङ्घ्रिपसमो भवेत् । प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक्च चतुर्विंशतिसूत्रतः ॥६२॥

नवविंशतिभिः पञ्चशतं कोष्ठानि तेषु वै । कोणेषु मार्जयेत्षडभिः षष्टिकोष्ठानि पूर्ववत् ॥६३॥

शिष्टेषु वज्रकोष्ठानि पञ्चषष्ट्या शतद्वयम् । तेषु प्राग्वत्त्रिकोणानि चतुर्दिक्षु चतुष्टयैः ॥६४॥

कोष्ठैर्विधायाधो मध्ये बाह्यारम्भात्प्रदिक्षणम् । प्रवेशगत्या विलिखेच्चित्रादिललितान्तकम् ॥६५॥

मध्येऽवशिष्टेष्वन्यार्ण चतुर्विंशतिमालिखेत् । ललितार्णचतुर्भेदजनितां नामशक्तियुक् ॥६६॥

ललितां साध्यगर्भां तु विलिखेन्मध्यकोणतः । एवं यन्त्रं समालिख्य शिलालोहत्रयादिषु ॥६७॥

संस्थाप्य कुत्रचित्स्थाने पूजयेद्वाञ्छिताप्तये । यस्मिन् देशे वज्रयन्त्रं स्थापितं योजनाविधि ॥६८॥

मङ्गलान्येव जायन्ते नामङ्गलकथा क्वचित् । पूजाचक्रे च तासां तु नामानि प्रतिकोणम् ॥६९॥

विलिख्य मध्ये ललितां साध्यगर्भां समालिखेत् । बहिर्वृत्ते मातृकां च तच्चक्रं स्थापयेद् भूवि ॥७०॥

तेनापि पूर्ववत्प्रोक्तं देशे न स्यादभव्यकम् । तस्मिन् सर्वत्र संलिख्य तां विद्या सर्वमङ्गलाम् ॥७१॥

मध्ये साध्याक्षरोपेतां स्थापयेत्तत्फलाप्तये । प्रागुक्ते वज्रयन्त्रे वा द्वादशारेऽपि वा शिवे ॥७२॥

संस्थाप्य कुम्भं तद्वर्णभूरुहक्वाथपूरितम् । विद्यया विधिवज्जप्तैरभिषिञ्चेज्जलैः शुभे ॥७३॥

जन्मर्क्षेषु विशेषेण समस्ताभयशान्तये । पूर्णसंपत्समृद्ध्यै च ग्रहरोगादिशान्तये ॥७४॥

तथान्यमपि देवेशि प्रयोगं सर्वपावनम् । दारिद्र्यवनदावाग्नि पापाब्धिवडवानलम् ॥७५॥

संकोचध्वान्तमार्त्तण्डं सन्तोषाब्धिविधूदयम् । प्रागुक्ताक्षरसंभिन्नां विद्यां नित्यां समाहितः ॥७५॥

मौनी जपेत्सप्रसूनैश्च पूजयेत्सौरभान्वितै । तपयेत्सलिलैः सिन्धुगामिनी सम्भवैः शिवे ॥७६॥

सौरभाढ्यैस्तिलैः शुभ्रैस्तण्डुलैर्विधिवद् हुनेत् । संस्थाप्य कुम्भ प्रोक्ताम्बुपूर्ण सम्पूज्य भक्तितः ॥७७॥

प्रोक्ताम्बु अक्षरौषधिक्वाथम् ।

समस्तं तत्क्रमादेकवारं तैरभिषकेतः । घोराभिचारकृत्यादि दुःखेभ्यो मुच्यते क्षणात् ॥७९॥

भूतप्रेतपिशाचापस्मार राक्षस यक्षकाः । कुमार गुह्यका वीरा डाकिन्यश्चातिदारुणाः ॥८०॥

विमुच्य तत्क्षणाद्व्रोक्ताः प्रयान्त्येवान्यतः क्षणात् । समुद्रगासरित्तोये ताः समावर्तयेस्थितः ॥८१॥

कण्ठमात्रे मण्डलात्तु प्राग्जन्माधैर्विमुच्यते । तथैव घृतहोमेन तर्पणाचाब्धिवारिभिः ॥८२॥

एवं सकलकल्याणा सम्प्रोक्ता सर्वमङ्गला । नामानुरूपं भजतां कृपया फलदानतः ॥८३॥

क्षिप्रप्रसादतो नित्यं हर्षोत्पादनतोपि च ।

|| सर्वमंगला प्रयोग:||

सर्वमंगला पूजन में चन्द्र, सूर्य, अग्नि की मूर्ति व उनकी कलाओं का पूजन अवश्य करें।

चन्द्रकला – अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टी, पुष्टी, रति, धृति शशिनी, चन्द्रिका, कांति, ज्योत्सना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्णा, पूर्णामृता, १६ कलायें हैं। प्रत्येक स्वर मातृका इनकी शक्ति है।

सूर्यकला – तपिनी, तापिनी, धूम्रा, मरीचि, ज्वालिनी, रुचि, सुषुम्ना, भोगदा, विश्वा, बोधिनी, धारिणी, क्षमा ये १२ कलाये हैं।

द्वाद्वश सूर्य– धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, सौभग, विवस्वान, इन्द्र, पूंषा, अर्क, पर्जन्य, त्वष्टा, विष्णु १२ नाम सूर्य के है।

मातृका शक्तियां – भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ये १२ सूर्य कलाओं की मातृका शक्तियां है। **कं खं गं ङं चं जं झं ञं टं ठं** ये १२ अर्क की मातृका शक्तियाँ है।

अग्निकला – घूम्रार्चि, उष्मा, ज्वलिनि, ज्वालिनी, विस्फुलिङ्गिनी, सुश्री, सुरूपा, कपिला, हव्यवाहा, कव्यवाहा।

मातृका शक्तियाँ – यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ।

सर्वमंगला बीज मंत्र – स्वों। ॐ स्वों

मंत्र – स्वों सर्वमगलायै नमः।

|| मंत्र प्रयोग ||

स्वों अं आं ....अं अ: ॐ। स्वां अं आं .... अं अ: कं । स्वां अं आं ....अं अ: खं। इस तरह क्ष तक जप करें। ३६×१६= ५७६ वर्णों का उच्चारण मंत्र के अलावा होगा।

ॐ की जगह "**ह्रीं**" तथा मातृकाओं में अनुस्वार की जगह विसर्ग **कः खः** प्रयुक्त करके भी जप कर सकते हैं।

यदि बीज मंत्र को १६ स्वर युक्त करके "**ह्रीं**" सहित **क** से क्ष =१६ वर्ण से जप करे तो ५७६ वर्णों का उच्चारण भेद होगा। जैसा कि टीका में बताया गया है। यथा – **स्वं अं स्वं** आं .... **स्वं क्षं। स्वां अं स्वां आं .... स्वां क्षं। स्विं अं स्विं आं.......... स्विं क्षं।** इस तरह नाना जप विधि है।

|| यंत्र रचना ||

दो वृत्त बनायें, उनके बाहर षट्कोण बनाये, पश्चात् अष्टदल पुनः दो वृत्त बनायें। मध्य में साध्य नाम लिखे। प्रयोग में कूटाक्षरों का वर्णन नहीं होने से प्रयोग पूर्ण नहीं दिया जा सका है। पुन: यदि प्रधान कूट "**स्वां**" को ही माने तो प्रत्येक षट्कोण में ४-४ बार लिखे। अष्टदल में ५-५ वर्ण लिखे। अष्टदल बाहर वृत्तों के अंतराल में विसर्ग सहित मातृका लिखे। यथा – **अः आः इः .... क्षः।** षट्कोण में उस दिन तिथी की नित्या के षडङ्गो का पूजन करें।

मंत्र विद्या के १३२७१०४ भेद बताये है। श्लोक ६१-६८ अन्य यंत्र विधान दिया है। पश्चात् प्रयोग फल व विधि का वर्णन है।

|| इति सर्वमङ्गलानित्या प्रयोग विधिः ||

॥ १४. अथ ज्वालामालिनी (पंचदशीतिथी कला) नित्या प्रयोगः॥

मंत्र - ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी देव देवि सर्वभूतसंहार कारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र र ज्वालामालिनी हुं फट् स्वाहा। (त्रिपुरार्णवे)

विनियोग - अस्य मंत्रस्य कश्यप ऋषिः, गायत्री छंदः ज्वालामालिनी नित्यादेवता, रं बीजं, फट् शक्तिः हुं कीलकं ममाभीष्टये विनियोगः।

पूर्वमंत्रों की विधि अनुसार ऋषि न्यास करे।

षडङ्गन्यास - ॐ हृदयाय नमः। नमः शिरसे स्वाहा। भगवति शिखायै वषट्। ज्वालामालिनि कवचाय हुं। देवदेवि नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वभूत संहारकारिके अस्त्राय फट्। मूलमंत्र से व्यापक न्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

ज्वलज्ज्वलनसङ्काशां माणिक्यमुकुटोज्ज्वलाम् । षड्वक्त्रां द्वादशभुजां सर्वाभरणभूषिताम् ॥
पाशांकुशौ खेटखड्गौ चापवाणौ गदाधरो । शूलवह्नी वराभीती दधानां करपङ्कजैः ॥
स्वसमानाभिरभितः शक्तिभिः परिवारिता । चारुस्मित लसद्वक्त्रसरोजां त्रीक्षणान्विताम् ॥

॥ यंत्र पूजनम् ॥

त्रिकोण, षट्कोण, अष्टकोण पश्चात् अष्टदल बनाये उनके बाहर चारद्वार युक्त भूपुर बनाये। भुवनेश्वरी की नवपीठ शक्तियों का पूजन तक ध्यान पूर्वक देवी का आवाहन करे। आवरण देवताओं की नामावली के पहले **''ह्रीं श्रीं''** तथा बाद में **पादुकां पूजयामि तर्पयामि** सर्वत्र कहें।

॥ श्री ज्वालामालिनी यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् - (त्रिकोण षट्कोण कर्णिकायां)- पूर्वविधि से षडङ्गन्यास मंत्रों से हृदयादि अंग देवताओं का पूजन करे। त्रिकोण समीप में **दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरु** पंक्ति का पूजन करे।

द्वितीयावरणम् - (त्रिकोण षट्कोणयोरन्तराले) **ह्रीं श्रीं अभीत्यै नमः। वह्नये नमः। शङ्खाय नमः। वाणेभ्यो नमः। खड्गाय नमः। अंकुशाय नमः। पाशाय नमः। खेटाय नमः। चापाय नमः। गदायै नमः। शूलाय नमः। वराय नमः।**

तृतीयावरणम् - (त्रिकोणे) **ह्रीं श्रीं इच्छाशक्ति पा.। ज्ञानशक्ति पा.। क्रियाशक्ति पा.।**

चतुर्थावरणम् - (षट्कोणेषु) वामाग्रकोणे **ह्रीं श्रीं डाकिनी पा.।** दक्षिणाग्रकोणे **राकिनी पा.।** पृष्ठकोणे **लाकिनी पा.।** पृष्ठवामकोणे **काकिनी पा.।** पृष्ठदक्षे **शाकिनी पा.।** अग्रकोणे **हाकिनी पा.।**

पंचमावरणम् - (अष्टकोणेषु) **ह्रीं श्रीं घस्मरा पा.। विश्वकवला पा.। लोलाक्षी पा.। लोजाजिह्विका पा.। सर्वभक्षा पा.। सहस्त्राक्षी पा.। निः सङ्गा पा.। संहृतिप्रिया पा.।**
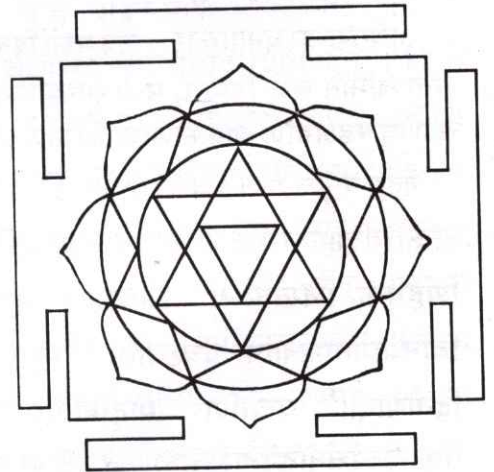
सप्तमावरणम् – (अष्टदलेषु) ह्रीं श्रीं अचिन्त्या पा.। अप्रमेया पा.। पूर्णरूपा पा.। दुरासदा पा.। सर्वा पा.। संसिद्धिरूपा पा.। पावना पा.। एकरूपिणी पा.।

अष्टमावरणम् – (भूपुरे) देवी के अग्रद्वार से क्रमश चारों द्वारों में दो दो करके **ब्राह्मी आदि अष्टमातृकाओं** का पूजन करे।

नवमावरणम् – (भूपुरे) वायव्यकोण से निर्ऋति पर्यन्त अनंतशक्ति पा.। ब्रह्मशक्ति पा.। नियति शक्ति पा.। कालशक्ति पा.। पूर्वादि अष्टदिशाओं में इन्द्रादि दिक्पालों एवं इन्द्राणी आदि **अष्टशक्तियों** का पूजन करे। पश्चात् देवी का सर्वोपचार पूजन कर बलि प्रदान करे। ॥

गायत्री मन्त्र – **ज्वालामालिन्यै विद्महे महाज्वालायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥**

॥ अथ कादीक्रमानुसार ज्वालामालिनी नित्या प्रयोग विधिः॥

(श्रीतन्त्रराजे)

अष्टलक्षं हविष्याशी जपेद्विद्यां जितेन्द्रियः । तद्दशांशं तर्पणं च होमं कुर्याच्च गोघृतैः ॥१॥
एवं संसिद्धमन्त्रस्तु कुर्याद्यन्त्राण्यनुक्रमात् । पूजाचक्रे बहिर्भूतचतुरस्रे त्वखण्डिते ॥२॥
विधाय तत्र विलिखेदक्षराणि यथाविधि । सर्वमध्ये तारगर्भ शक्तिमाख्यासमन्विताम् ॥३॥
त्रयं च त्रिषु कोणेषु षट्सु षट्कमथाष्टसु । अष्टकं बहिरप्येवं बाह्ये दिक्षु नव क्रमात् ॥४॥
एवं मूलाक्षरैः कृत्वा यन्त्रं तेनैव साधयेत् । समस्तं वाञ्छितं पूजाधारणस्थापनैः शिवे ॥५॥

अथैतद्यन्त्ररचनाप्रकारः– **तत्र मध्ये त्रिकोणं तद्बहिः षट्कोणं तद्बहिरष्टास्त्रं तद्बहिरष्टदलकमलं तद्बहिर्द्वाररहितं चतुरस्रमिति चक्रं निर्माय, मध्ये साध्याख्यागर्भं मायाबीजं प्रणवोदरं विलिख्य त्रिषु कोणेषु त्रीण्यक्षराणि षट्सु कोणेषु षडक्षराणि चाष्टकोणेष्वष्टाक्षराणि अष्टदलेष्वष्टाक्षराणि चतुरस्रे प्रागादिक्ष्वष्टावक्षराणि मूलमन्त्रस्य लिखेत्।**

एतद्यन्त्रमुक्त फलं भवति। यथा–

अकारादिक्षकारादिन्त वर्णेषु स्वरयोगिषु । चतुष्टयं प्रोक्त यन्त्रं वर्णैस्तत्स्थानतो लिखेत् ॥६॥
शिष्टमेकं लिखेत्मध्ये साध्याक्षर समन्वितम् । एवं यन्त्राणि जायन्ते दश तेषामनुक्रमात् ॥७॥
विनियोगात्फलानि प्रवक्ष्यामि शृणु प्रिये । यैरिष्टमखिलं प्राप्नोत्ययत्नात्साधको ध्रुवम् ॥८॥
द्वितीयादीनि यन्त्राणि मातृकार्णयुतानि वै । क्रमान्नवग्रहाणां स्युस्तत्तद् द्वारेषु तद्दिशि ॥९॥
तेषु देव्यर्चनात्प्रीतास्त्वनिष्टं ते न कुर्वतिते । राहुकेतु स्थितौ यत्र तद्राश्यधिपवारके ॥१०॥
षडस्राष्टान्तरालेषु ग्रहनाम द्वितीयया । विभक्त्या भाजने सम्यक् प्रीणयामीति संलिखेत् ॥११॥
आद्ये तु यन्त्रे संलिख्य प्रोक्तक्रममर्थार्चयेत् । सर्वेष्वपि च वारेषु सर्वेषां प्रीतिसिद्धये ॥१२॥
अनिष्टशान्त्यै नियतमर्चयेत्तान् ग्रहान् प्रिये । एवं मन्त्रेषु दशसु पूजिता नित्यया सह ॥१३॥
प्रीताः क्रूरा अपि क्रूरास्था अपि सर्वदा । सौम्याः सौम्यगतानां तु फलान्येव वितन्वते ॥१४॥
दशस्वपि च यन्त्रेषु दरदैर्गैरिकैस्तु वा । लिखितेष्वर्चितेष्वेवं कुमारं कन्यकां तु वा ॥१५॥

सुशुभावयवां मुग्धां स्नाता धौताम्बरां शुभाम् । तथाविधं कुमारं वा संस्थाप्याभ्यर्च्य विद्यया ॥१६॥
स्पृष्टशीर्षो जपेद्विद्यां शतवारं तथार्चयेत् । प्रसूनैररुणैः शुभ्रैः सौरभाढ्यैरथापि वा ॥१७॥
दद्याद् गुग्गुलधूपं च यावत्कार्यावसानकम् । ततो देव्या समाविष्टे तस्मिन् सम्पूज्य भक्तितः ॥१८॥
ततस्तामुपचारैस्तैः प्रागुक्तैर्विद्यया वशी । प्रजपेत् तां ततः पृच्छेदभीष्टं कथयेच्च सा ॥१९॥
भूतं भवद्भविष्यं च यदन्यन्मनसि स्थितम् । जन्मान्तराण्यतीतानि सर्वं सम्पूजिता वदेत् ॥२०॥
ततस्तां प्राग्वदभ्यर्च्य स्वात्मन्युद्वास्य तां जपेत् । सहस्रवारं स्थिरधीः पूर्णात्मा विचरेत्सुखी ॥२१॥
तथा षट्कोणकोणेषु मध्ये चालिख्य दाहकम् । तत्र संस्थाप्य गदिनमभ्यर्च्योदीरित क्रमात् ॥२२॥
आवेश्य रोगिणं रोगं पृच्छेत् तत्कारणं शमम् । प्रोक्त्वा तत्सकलं तस्य निर्दशादपयाति च ॥२३॥
प्रथमं स्त्रीकपालस्य मध्यस्थं तापयेन्निशि । जपन् विद्यां स्मरन् साध्यां सद्य आकृष्यतेऽथ ॥२४॥
भीतिलज्जाभिमानादि रहिता वेपिताङ्गका । निरस्तेतरसद्भावा मन्मथार्ताभियाति सा ॥२५॥
तद्यन्त्रं पुंस्कपालस्थं स्थापयेत्प्रजपेत्तथा । राजानो राजपुत्रा वा तथान्ये वापि केचन ॥२६॥
विवेकविधुरा मूढास्त्यक्त जातिकुलक्रमाः । वशगाः दासवद्भूमौ तिष्ठन्त्यामरणाद् ध्रुवम् ॥२७॥
सर्वासामपि नित्यानामुपदेशेषु तं गुरुः । तत्र चक्रस्य मध्यस्थं चेष्टविद्याजपान्वितम् ॥२८॥
वह्निज्वालापरीताङ्गं भावयन्निन्द्रियाण्यपि । मनः षष्ठानि वाकर्षन्मनसा प्राग्वदात्मनि ॥२९॥
एवं कृते क्षणादेवं विसंज्ञो निपतेद्भुवि । ततस्तमुत्थाप्य मुखे प्रक्षिप्ताम्बु वदेत्ततः ॥३०॥
एष वेधस्त्रिधा प्रोक्तः सद्यः प्रत्ययकारकः । शाक्तशाम्भव वेधाभ्यां द्वयोरात्मैक्ययामलात् ॥३१॥
शिष्यस्य मूलाधारादिस्थानेषु ब्रह्मरन्ध्रके । स्मर दाहार्णकान् सप्तेत्युक्त्वा प्राग्वदुदीक्षणात् ॥३२॥
विदध्याच्छाक्तवेधं तु देशिकः सिद्धविद्यया । शाम्भवं तु शृणु प्राज्ञे वेधमद्भुतविग्रहम् ॥३३॥
तूष्णीं संस्थापितं शिष्यं तत्तचक्रे तदात्मना । स्वयं प्रविश्य तद्देहमेकोभूत्वा पुनः स्वके ॥३४॥
समागत्यात्मरूपेण तदात्मानं विभाव्य वै । कृतन्यासजपार्चस्तु तत्तनुं वह्निना दहेत् ॥३५॥
स्यादेष शाम्भवो वेधः प्रोक्तः प्रागेव यामलः । इति वेधत्रयं प्रोक्तं भावनासिद्धि सूचकम् ॥३६॥
यामले तु विशेषोऽयं विद्धः पश्चाद्गुरोः श्रुतम् । ज्ञानमन्यच्च सकलं संक्रमेत् तेन तत्समः ॥३७॥
रक्तचन्दन पंकेन लिखित्वा प्रथमं शिवे । लोहैर्विरचिते पट्टे फलकायां शिलातले ॥३८॥
भूमौ व सुसमे शुद्धे लोष्टाङ्गार विवर्जिते । देवीमावाह्य तत्रैव पूजयेच्छक्तिभिर्वृताम् ॥३९॥
दिनं दिनत्रयं सप्तवासरं पक्षमेव वा । मासं मण्डलमित्येवं क्रमादिष्टमवाप्नुयात् ॥४०॥
वश्यमाकर्षणं स्तम्भं निग्रहं लाभमीप्सितम् । अन्यच्च सकलं त्विष्टमवाप्नोत्यर्चनादद्भुतम् ॥४१॥
तदा प्रोक्तगदान्सर्वान् जयेदन्यांस्तथाखिलान् । साधयेत्प्रथमेनैव यन्त्रेणायत्नतः शिवे ॥४२॥
द्वितीयं दरदैः कृत्वा प्रोक्तेषूच्चगते रवौ । पूजयेत्प्रोक्तकालेन फलान्युक्तान्यवाप्नुयात् ॥४३॥

विलिख्य राजते पट्टे जपित्वा दिनशः स्पृशन् । सहस्रवारं तां नित्यां विद्यां तद्वासिताम्बुभिः ॥४४॥
स्नानं पानं पाकजातं कुर्यादुक्तदिनं ततः । प्रमेहैस्त्रिविधैर्घोरैर्मूत्र कृच्छ्रैः सुदारुणैः ॥४५॥
अश्मरीमूत्रघातादिरोगैर्मुक्तः सुखी भवेत् । जीवेच्च सुचिरं भूमौ निरोगः स्वस्थमानसः ॥४६॥
तृतीयं गैरिकैः कृत्वा वैरिनक्षत्रवृक्षजे । तले भूमौ ततः खात्वाः तत्राग्निं ज्वालेयत्सदा ॥४७॥
प्रोक्तैस्तैर्वासरैर्वैरी दाहज्वर गदादिभिः । तच्च नोद्धृत्य सलिले प्रक्षिपेच्चेद्विनश्यति ॥४८॥
चतुर्थं रोचनापंकैरालिख्योक्त प्रपूजनात् । प्राप्नोति विजयं प्रोक्तष्वखिलेषु सुनिश्चितम् ॥४९॥
वादे च द्विविधे द्यूते ग्रहेष्वन्येषु सर्वतः । सर्वदा जयिनः सर्वे भवन्त्येतस्य वैभवात् ॥५०॥
पञ्चमं कुंकुमैः कृत्वा तत्र तत्पूजनाद्दिनैः । वशे भवन्ति मनुजा दन्तिनो वाजिनः स्त्रियः ॥५१॥
षष्ठं हरिद्रयालिख्य कर्पटे नामसंयुतम् । मन्दोच्चे स्थापयेत् क्वापि सुबद्धं त्विष्ठकापुटे ॥५२॥
शत्रोर्जिह्वां गतिं दोषं दिव्यं राज्ञां समुद्यमम् । वादेच्छां सकलं चान्यदनिष्टं स्तम्भयेद्ध्रुवम् ॥५३॥
सप्तमं चन्दनैरिन्दुमिलितैरालिखेत्तथा । तत्रार्चयेत् नित्यशस्तां सन्ध्यासु भुवने निजे ॥५४॥
तद्दिनैरिन्दिरा तस्य सर्वलोकातिशायिनी । भवत्येव महेशानि विचित्रा यन्त्रशक्तयः ॥५५॥
अष्टमं त्वगुरुक्षौदैरालिखेत्फलकापुटे । पीठे वा तत्र तां देवीं गुरावुच्चगते दिने ॥५६॥
तदुच्चकाले सुरभिप्रसुनैस्त्वेवमर्चयेत् । वासांसि च विचित्राणि भूषणान्यप्यवाप्नुयात् ॥५७॥
मृगस्वेदैस्तु नवममालिख्याभ्यर्च्य तत्र ताम् । तदालिप्तो व्रजेद्यत्र कुत्रापि जनसंसदि ॥५८॥
सर्वे तं गुरुवद् बुद्ध्वा वशे स्युर्वनिता यदि । तदिष्टसाधिका यावज्जीवमस्यानुभावतः ॥५९॥
विलिखेद्दशमं प्रोक्तद्रव्यैः सर्वेस्तथैकशः । सद्यस्तैरीरितं सर्वं कार्यमेतत्सुसाधयेत् ॥६०॥
प्रोक्तेषु दशसु प्रोक्तद्रव्यैरालिख्य तेषु च । संस्थाप्य कुम्भं विधिना जापत्वोग्रग्रहे तदा ॥६१॥
अभिसिञ्चेत् तद्ग्रहस्य दोषस्थानगतं फलम् । न भवेच्छुभमेव स्यादेवं यन्त्रेष्वशेषतः ॥६२॥
तथा तदुच्चे तत्पूजां होममन्नाज्यपायसैः । निवेद्य प्रणम्यार्घ्ययुतं दद्याच्छिवात्मवान् ॥६३॥
तत्तद्ग्रहार्तिषु क्षिप्रं ते ग्रहास्तत्प्रभावतः । एकादशस्थफलदा नित्यशो यजनादपि ॥६४॥
सुवर्णे रजते वा तद्यन्त्रेष्वन्यतमं शिवे । विलिख्याभ्यर्च्य तद्विद्याविदे दद्यात्सुपूजितम् ॥६५॥
षोडशद्वादश नवषट्त्रिनिष्कप्रकल्पितम् । नित्यार्चकस्य नित्यानामेकां पूजयितुं वा ॥६६॥
दद्याद् गन्धादिनार्च्यैतं प्रणम्य ग्रहविग्रहम् । पश्चिमामुखासीनं तस्मै प्रोक्तविधानतः ॥६७॥
विद्याजप्ताम्बुपानेन वर्धते कुक्षिगोऽनलः । भुक्ते च जठरस्पर्श जपादपि सुनिश्चितम् ॥६८॥
मेषादिराशगे भानौ मासेषु द्वादशस्वपि । प्रोक्तेषु दशयन्त्रेषु प्रत्येकं त्रित्रिवासरम् ॥६९॥
पूजयेदेवमब्देन धनधान्यगृहादिभिः । समृद्धो जीवति चिरमरोगः (चिरं + अरोग) सुमना भव ॥७०॥
यद्राशौ यो ग्रहस्तिष्ठत्येको द्वौ बहवोथवा । तद्दिनेषु तदुच्चेषु कालेषु च तदर्चनात् ॥७१॥

तत्तद्ग्रहाः सुसम्प्रीताः पालयन्त्यनिशं च तम् । तथा तर्पणहोमाभ्यां जपदानादिनापि वा ॥७२॥
नवस्वपि च यन्त्रेषु नवग्रहमयत्रतः । तत्तत्क्षोभं विलिख्यान्तः पूजयेद्वैरिमर्दने ॥७३॥
रिपूनामयुतान्युक्तान्यालिख्य रविचन्द्रयोः । उपरागे समे भूमौ दिनशो जयमाप्नुयुः ॥७४॥
विद्याक्षरौषधीनां तु प्रत्येकं कर्षमर्पितम् । भाण्डे नवे पञ्चगव्ये खारिमाने पञ्चेच्च तत् ॥७५॥
विद्यया संस्कृते वह्नौ ततस्तदुदरोस्थिते । घृतेन विद्यया हुत्वा तद्भस्मादाय तत्र वै ॥७६॥
यन्त्राणि दश निष्पाद्य तत्र देवीं यजेत्तथा । ततस्तद्भस्म संगृह्य निदध्याद्दिनशोऽर्चयेत् ॥७७॥
तद्भस्म सर्वरक्षाकृत्सर्वारिभिरपि साधयेत् । गदचोरग्रहारिष्टक्लेशा न स्युश्च तद्गृहे ॥७९॥
वह्न्यक्षरेषु दशसु व्यञ्जनैः सप्तभिः पृथक् । स्वरत्रयं क्रमाद्युञ्ज्यात् तेन तान्येकविंशति ॥८०॥
त्रिकोणद्वयमालिख्य बाह्याभ्यन्तरयोगतः । तदन्तर्वृत्तमध्यस्थं षडस्त्रं च विधाय तु ॥८१॥
नामाद्यं विलिखेन्मध्ये षटकोणेषु च षट् क्रमात् । विलिखेदग्रमारभ्य प्रादक्षिण्येन पार्वति ॥८२॥
त्रिकोणान्तरतो लिख्य चतुर्दश तथा क्रमात् । शिष्टे साध्याक्षरं त्वग्रे लिखेत् पञ्चदशस्वपि ॥८३॥
क्रमेण मध्ये त्वन्येषां निवेशादेकविंशति । भवन्ति यन्त्राणि तथा तैः कुक्ष्यग्निः प्रवर्धते ॥८४॥
त्रिकोणकारके पट्टे ताम्रे तानि विलिख्य वै । स्पृशन् विद्यां जपेल्लक्षं तद्वर्णकृतसम्पुटाम् ॥८५॥
तत्तोयभाण्डे दिनशो निक्षिपेज्जपपूजितम् । तत्तोयैः पाकपानाभिषेकतो भवति ध्रुवम् ॥८६॥
प्रदीप्तिर्जप्ठराग्नेस्तु प्रागजन्माघक्षयेण वै । जायते परमेशानि नित्यानां वैभवादिति ॥८७॥

अथैतद्यन्त्ररचना प्रकारः- **प्रथमतः षटकोणं विरच्य तद्बहिर्वृत्तं तद्बहिरन्तर्बहिर्विभागेन त्रिकोणद्वयं विधाय वह्नेर्दशाक्षरेषु सप्तव्यञ्जनानि स्वरत्रययोगेनैकविंशतिर्भवन्ति। तेष्वाद्यं साध्यनामगर्भं मध्ये विलिख्य द्वितीयादि षडक्षराणि षट्सु कोणेषु विलिख्यावशिष्ट चतुर्दशाक्षराणि त्रिकोणद्वयान्तरालेग्रात् प्रादिक्षण्यक्रमेणावेष्ट्य शिष्टे वह्न्यक्षरे साध्यनामगर्भं कृत्वाग्रेषु विलिखेत्। एवं मध्याक्षर भेदेनैकविंशतिर्भवन्ति, प्रोक्तफलेषुं योज्यानि प्रोक्तफलानि भवन्ति।**

॥ ज्वालामालिनी प्रयोग:॥

मूल मंत्र - (१) ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी देवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हुं हुं र र हुं फट् स्वाहा।

(२) ॐ नमो भगवती ज्वालामालिनी गृध्रगणपरिवृते हूं फट् स्वाहा। (२४ अक्षर)

अष्ट लक्ष जप के पश्चात् हवनादि कर्म करें।

रोग नाश व शत्रु नाश हेतु विद्या का प्रयोग किया जाता है।

॥ यंत्र रचना॥

त्रिकोण, षट्कोण, अष्टकोण के बाद अष्टदल बनायें उनके बाहर द्वार रहित चतुरस्त्र बनाये। मध्य में **ॐ ह्रीं** सहितसाध्य नाम लिखे। त्रिकोण व षट्कोण में तीन व छह अक्षरों का वर्णन है परन्तु मंत्राक्षर या बीजाक्षर किसी का

भी उल्लेख नहीं है।

अतः या तो "**ह्रीं**" बीज का प्रयोग करें। अथवा वह्नि बीज "रं" का प्रयोग करें।

त्रिकोण के तीनों कोणों में "**ह्रीं**" बीज लिखें। षट्कोण में "रं" छः बार लिखें। अथवा **रां, रीं, रूं, रैं, रौं, रः** लिखें।

यदि "**ऐं क्लीं सौः**" का प्रयोग करते हैं तो त्रिकोण में "**ऐं, क्लीं सौः**" लिखें तथा षट्कोण में "**ऐं क्लीं सौः, सौः क्लीं ऐं**" लिखें।

षट्कोण के बाहर अष्टकोण में २४ अक्षर मन्त्र के ८ वर्ण लिखें। अष्टकोण के बाहर अष्टकमल दल में पुनः ८ वर्ण आगे के लिखें। चतुरस्र के बाहर आठों दिशाओं में पूर्वादि क्रम से शेष ८ वर्ण मूल मन्त्र के लिखें।

अन्य प्रयोग में इस यन्त्र को "**अं आं......हं लं क्षं**" तक वर्णों से वेष्टित करें। यदि प्रत्येक यन्त्र में मातृका के एक एक स्वर मातृका "**अं, आं, इं, ...**" अलग अलग लिखें तो सोलह यन्त्र बनेंगे। यदि विसर्ग युक्त "**अः आः ....**" क्रम से अलग अलग संयोग करें तो अन्य सोलह यन्त्र बनेंगे। यदि मातृका का स्वर विलोमक्रम से लिखें तो पुनः सोलह यन्त्र होंगे। इस तरह ४८ यन्त्र बनेंगे।

श्लोक छः से इकत्तीस तक प्रयोग विधि है। ३१-३५ शिष्य हित के लिये प्रयोग हैं। इसके बाद में शिला, पट्टिका या त्रिलोहपट्टिका में लिखने के प्रयोग वर्णित हैं। श्लोक ६१-६२ अभिषेक शान्ति तथा ६३-८७ शान्ति कर्म है।

अन्य प्रयोग में भी मन्त्र नहीं दिया गया है। लिखा गया है कि दशाक्षर मन्त्र के बाद सप्तव्यञ्जन पश्चात् तीन स्वर लगाने से २१ अक्षर मन्त्र बन जाता है, जबकि इनका योग २० हुआ।

अतः मन्त्र दशाक्षर या एकदशाक्षर होगा। सप्तव्यञ्जन व तीन स्वर का उल्लेख नहीं है।

मन्त्र – १. **ॐ ज्वालामालिन्यै नमः**। (नवाक्षर)

२. **भगवति ज्वालामालिन्यै नमः**। (एकादशाक्षर)

३. **ह्रीं ज्वालामालिन्यै र र स्वाहा**। (दशाक्षर)

॥ इति ज्वालामालिनी नित्या प्रयोग विधिः ॥

॥ १५. अथ चित्रा (षोड़शीकला) नित्या प्रयोगः॥

षोडशनित्यासु या चित्रा षोडशी शिवे ।
प्रोक्ता तत्कल्पमधुना शृणु सर्वार्थ सिद्धिदम् ॥

इस कला को विचित्रा भी कहा जाता है। षोड़शी की नित्या कलाये चन्द्रकला के अनुसार एवं तिथिक्रम से है। वृद्धि क्षय को चन्द्रमा की कला ही माना है अलग से किसी नित्या का प्रयोग नहीं दिया गया है। अमावस्या की कला "**अमाकला**" को षोडशीकला भी कहा है।

मंत्र – च कौं। (त्रिपुरार्णवे)

विनियोग – अस्य मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्री छंदः, विचित्रा देवता सर्वाभीष्टये विनियोगः। पूर्वविधिवत् ऋषि न्यास करे।

षडङ्गन्यास – **चां हृदयाय नमः। चीं** शिरसे **स्वाहा। चूं** शिखायै **वषट्। चैं कवचाय हुं। चों नेत्रत्रयाय वौषट्। चः अस्त्राय फट्।**

वर्णन्यास – बहिर्मातृका न्यास स्थानों में ''**च कौं**'' आगे लगाकर मातृका वर्ण सहित न्यास करे। **यथा- च कौं अं नमः शिरसि....चकौं क्षं नमः।**

॥ ध्यानम् ॥

उद्यदादित्यबिम्बाभां स्वर्णरत्न विभूषणाम् । नवरत्नकिरीटां च चित्रपट्टांशुकोज्ज्वलाम् ॥
चतुर्भुजां त्रिनयनां शुचिस्मित लसन्मुखीम् । सर्वानन्दमयीं नित्यां समस्तेप्सितदायिनीम् ॥
चतुर्भिश्च भुजैः पाशमंकुशं वरदाभये । दधानां मङ्गलापद्मकर्णिका नवयोनिगाम् ॥

॥ यंत्र पूजनम् ॥

कुंकुम गंधादि से पट्ट पर त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल के बाद द्वात्रिंशद्दल बनाकर चार द्वार युक्त दो रेखा वाला भूपुर बनायें। **भुवनेश्वरी की नवपीठ शक्तियों** का अर्चन कर ध्यान पूर्वक देवी का आवाहन करे।

॥ श्री चित्रा यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् – (त्रिकोण मध्ये) देवी के चारों ओर षड्दिक्षु में षडङ्गन्यास मंत्रों से हृदयादि शक्तियों का पूजन करें। त्रिकोण अष्टकोण के अंतराल में **दिव्यौघ सिद्धौघ, मानवौघ गुरु पंक्ति** का पूजन करे।

द्वितीयावरणम् – (त्रिकोणाष्टकोणयोरन्तरालेष्वेव) देवी के दक्षिण भाग में – **ह्लीं श्रीं अभयाय नमः, अंकुशाय नमः।** वामभाग में **पाशाय नमः, वराय नमः।**

तृतीयावरणम् – (त्रिकोणे) **ह्लीं श्रीं इच्छाशक्ति पा.। ज्ञानशक्ति पा.। क्रिया शक्ति पा.।**

चतुर्थावरणम् – (अष्टयोनिषु) **ह्लीं श्रीं अं....अः ब्राह्मी पा.। ह्लीं श्रीं कं....ङं माहेश्वरी पा.। चं....ञं कौमारी पा.। टं...णं वैष्णवी पा.। तं...नं वाराही पा.। पं....मं इन्द्राणी पा.।** यं....वं चामुण्डा पा.। **शं....क्षं महालक्ष्मी पा.।**

पंचमावरणम् – (अष्टदलेषु) **ह्लीं श्रीं** भद्रा पा.। भवानी पा.। भव्या पा.। **विशालाक्षी पा.। शुचिस्मिता पा.। कुंकुमा पा.। कमला पा.। कल्पा पा.।**

षष्ठमावरणम् – (द्वात्रिंशद् दलेषु) **ह्लीं श्रीं कामिनी पा.। खेचरी पा.। आर्या पा.। पुराणा पा.। परमेश्वरी पा.। गौरी पा.। शिवा पा.। अभेया पा.। विमला पा.। विजया पा.। परा पा.। पवित्रा पा.। पद्मिनी पा.। विद्या पा.। विश्वेश्वरी पा.। शिववल्लभा पा.। अशेषरूपा पा.। आनंदा पा.। अम्बुजाक्षी पा.। अनिन्दिता पा.। वरदा पा.। वाक्प्रदा पा.। वाणी पा.। विविधा पा.।** वेदविग्रहा पा.। वन्द्या पा.। **वागीश्वरी पा.। सत्या पा.। संयता पा.। सरस्वती पा.। निर्मला पा.। नादरूपा पा.।**

सप्तमावरणम् – (भूपुरे) पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि अष्टदिक्पालों व इन्द्राणी आदि शक्तियों का अर्चन करे। **वायुकोणे**
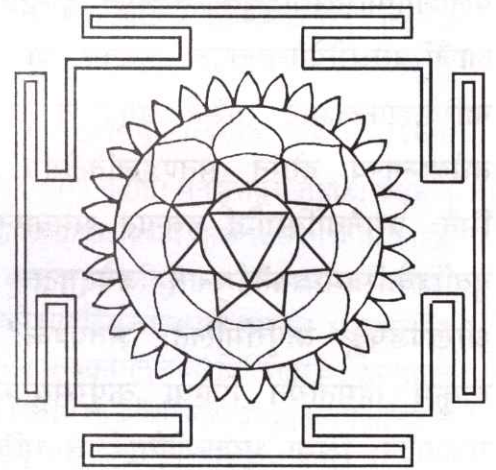
अनंतशक्ति पा. । ईशाने – **ब्रह्मशक्ति पा.** । **आग्नेये नियति शक्ति** पा. । **निर्ऋति कालशक्ति पा.** । पश्चात् सर्वविध देवी का अर्चन करे।

गायत्री मन्त्र – विचित्रायै विद्महे महानित्यायै धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्॥

॥ अथ कादिक्रमोक्त विचित्रा (चित्रा) नित्या प्रयोग विधिः॥

(श्रीतन्त्रराजे)

काम्यहोम विधि वक्ष्ये सर्वार्थदायकम् । येनातिमन्दभाग्योपि श्रीमान् भोक्ता सुखी भवेत् ॥१॥
मधुरत्रय संसिक्तैररुणैरम्बुजैः श्रियम् । प्राप्नोति मण्डलाद्धोमात् सितैस्तैश्च महद्यशः ॥२॥
क्षौद्राक्तैरुत्पलैः रक्तैर्हवनात् प्रोक्तकालतः । सुवर्ण समवाप्नोति निधिं वा वसुधां तु वा ॥३॥
क्षीराक्तैः कैरवैर्होमात् प्रोक्तकालमवाप्नुयात् । धान्यानि विविधान्याशु सुभगस्तु भवेन्नरः ॥४॥
आज्यक्तैरुरत्परलैर्होमाद्वांछितं समवाप्नुयात् । तदक्तैरपि कह्लारैर्हवनाद्राजवल्लभः ॥५॥
पलाशपुष्पैस्त्रिस्वादुयुक्तैस्तत्काल होमतः । चतुर्विधं तु पाण्डित्यं भवत्येव न संशयः ॥६॥
लाजैस्त्रिमधुरोपेतैस्तत्काल हवनेन वा । कन्यकां लभतेऽयत्नात् समस्तगुण संयुताम् ॥७॥
नारिकेलफलक्षोदं ससितं सगुडं तु वा । क्षौद्राक्तं जुहुयात् तद्वदयत्नाद् धनदोपमः ॥८॥
तथैवान्नाज्य होमेन सतण्डुलतिलैरपि । प्रसूनैररुणैस्तद्वत् तथा बन्धूकसम्भवैः ॥९॥
सितैः प्रसूनैर्वाक्सिद्धिं हवनात् समवाप्नुयात् । सितरक्तैस्तु मिलितैरायुरारोग्यमाप्नुयात् ॥१०॥
दुर्वात्रिकैस्त्रिमध्वक्तैर्हवनात् जयेद्गदान् । तथा गुडूच्या होमेन पायसेन तिलेन च ॥११॥
श्रीखण्डपङ्क कर्पूरमिलितैः शतपत्रकैः । हवनाच्छ्रियमाप्नोति या तदन्वयगामिनी ॥ १२॥
कुंकुमं हिमतोयेन पिष्ट्वा कर्पूरसंयुतम् । तत्पङ्कमर्दितैर्होमात् कह्लारैर्विकचैः शुभैः ॥१३॥
राजकल्पः श्रिया भूयाज्जीवेद्वर्षशतं भुवि । निः सपत्नो निरातङ्को निर्द्वन्दो निर्मलाशयः ॥१४॥
इक्षुकाण्डस्य शकलैर्हवनाद् वस्त्रमाप्नुयात् । तथैव करवीरोत्थैः प्रसूनैररुणैः सितैः ॥१५॥
क्षौद्राक्तैः पाटलीपुष्पैर्हवनाद् वशयेद्वधूः । तथैव चम्पकैर्होमाद्रूपाजीवां वशं नयेत् ॥१६॥
सरूपवत्सासितगोक्षीराक्तसितहोमतः । लभतेऽनुपमां लक्ष्मीमपि पापिष्टचेतनः ॥१७॥
सौवीराक्तैस्तु कार्पासबीजैस्तत्कालहोमतः । अर्धेन्दुकुण्डे नियतं विद्विष्टां रिपवोम्बिके ॥१८॥
अरिष्ट पत्रैस्तद्वीजैस्तत्तैलाक्तैस्तथा हुतैः । मृत्युर्बीजै र्निम्बतैलसिक्तैर्होमात्तु दन्तिनः ॥१९॥
रोगार्तास्तुरगास्तद्वत् तत्पञ्चाङ्गैर्हुतैर्ध्रुवम् । अक्षबीजैस्तु तैलाक्तर्होमः सर्वविनाशनः ॥२०॥
करञ्जबीजैस्तत्सिक्तैर्होमाद्वैरी पिशाचवान् । तथैवाक्षतरूद्भूत पञ्चाङ्ग हवनादपि ॥२१॥
निम्बतैलाप्लुतैरक्षद्रुमबीजैस्तु होमतः । तद्दिनैः स्यादपस्मारी वैरी भवति निश्चितम् ॥२२॥
अरातेर्जन्म नक्षत्र वृक्षेन्धनगतेऽनले । तद्योनिपिशितैस्तैश्च हवनं मृत्युकृद्रिपोः ॥२३॥

****

यक्षाक्षबीजै सर्षपतैलाक्तैर्हवनात्तथा । जायन्ते वैरिणः कुष्ठरोगा देहविलोपकाः ॥२४॥
मरिचैः सर्षपैर्होमात् तैलाक्तैर्मध्यरात्रके । दाहज्वरेण ग्रस्तः स्यादरातिस्तद्दिनै ध्रुवम् ॥२५॥
एवं निग्रहहोमेषु स्वरक्षायै तथान्वहम् । स्निग्धैः सम्प्राप्तमन्त्रैस्तु जपहोमादि कारयेत् ॥२६॥
मृत्युञ्जयेन वा तद्वत् प्रयोगस्ताभिरेव च । विद्याभिरन्यथासिद्ध मन्त्रमाशु विनाशयेत् ॥२७॥
प्रागुक्तानां तु कुर्वीत निग्रहं स्वस्य रोषतः । वित्ताशया वा न कदाप्याचरेद्भूतिकामुकः ॥२८॥
नित्यक्लिन्नाविधौ प्रोक्तैस्तर्पणैस्तानि साधयेत् । अनया विद्यया कर्माण्यशेषाणि महेश्वरि ॥२९॥
अथ यन्त्राणि वक्ष्यामि नानाभीष्टप्रदानि वै । यैः सर्वे सर्वदा सर्व समीहितमवाप्नुयुः ॥३०॥
स्वरयुक्तलिपिव्रातगर्भां विद्यां समालिखेत् । सर्वत्रोक्तेषु विधिवत् स्थानेषु परमेश्वरि ॥३१॥
त्रिकोणं वृत्तयुग्मं च षट्कोणं तद्द्वयं तथा । तद्बहिः षड्दलं पद्मं तत्त्रयं च समालिखेत् ॥३२॥
आद्यकूटं लिखेत्साध्यगर्भं मध्ये विधानतः । त्रिकोणेषु च षट्कोणे षट्पत्रेषु समालिखेत् ॥३३॥
कूटान्यन्यानि चोक्तानि तत्र पञ्चदशान्यपि । अन्तर्वृत्तान्तरद्वन्दे भूताणांश्च क्रियोचितान् ॥३४॥
ससाध्यकर्मवर्णेश्च बहिर्वृत्तान्तरद्वये । मातृकां विलिखेन्मायाबिन्दुयुक्तां क्रमोत्क्रमात् ॥३५॥
एवं षड्विंशतिविधं यन्त्रं कुर्याद्विचक्षणः । परस्तात्तु शतेनापि षष्ठ्या कूटैर्लिखेत् पविम् ॥३६॥

अथैतद्यन्त्र रचना प्रकारः- मध्ये त्रिकोणं तद्बहिर्वृत्तद्वयं तद्बहिः षट्कोणं तद्बहिः पुनर्वृत्तद्वयं तद्बहिः षड्दलं पद्मं तद्बहिर्वृत्तत्रयमिति यन्त्रं विलिख्य, तन्मध्ये षोडशस्वर युक्त मूल विद्यायाः प्रथमं कूटं साध्यगर्भं विलिख्य त्रिकोणेषु कूटत्रयं षट्कोणेषु षट्कूटानि षड्दलेषु षट्कूटानीति षोडश कूटानि विलिख्याभ्यान्तर वृत्तान्तराले साध्यनाम युक्तं तत्तत्कर्मानुसारितत्तद्भूताक्षराणि द्वित्रिक्रमेण षट्कोणाद्बहिर्वृत्तान्तराले तान्येव भूताक्षराणि तथैव कर्मयुक्तानि विलिख्य बहिर्वृत्तान्तरालद्वयेभ्यन्तरान्तराले विसर्गयुक्त मातृकामनुलोमां विलिख्य तद्बहिरन्तराले बिन्दुयुक्तां विलोम मातृकां विलिखेत्। एवं द्वितीययन्त्रे मध्ये साध्यगर्भं द्वितीय कूटं विलिख्य प्रागुक्तक्रमेणान्यानि पञ्चदशकूटानि विलिखेत्। एवं तृतीय कूटादीनि तृतीयादिषु यन्त्रेषु विलिखेदिति षोडशयन्त्राणि निष्पाद्य प्रागुक्तामृत बीजपञ्चकं षोडशस्वर संयुक्तं कृत्वा तान्यशीति बीजानि बिन्दुयुक्तानि विसर्गयुक्तानि च षष्ट्युत्तरशत बीजानि कुर्यात्। ततस्तेषु प्रथमं मूलविद्याया सहितं मध्ये विलिख्य पञ्चदशबीजानि त्रिकोणादिषु विलिखेत्। एवं षोडश षोडशीबीजैर्दशयन्त्राणि विलिखेत्। एवं प्रागुक्तैः षोडशयन्त्रैः सह षड्विंशतिर्यन्त्राणि भवन्तीत्यर्थः॥

अथ सप्तविंशतितमं वज्ररूपं यन्त्रमाह-

प्राक्प्रत्यक्दक्षिणोदक च सूत्राण्यष्टादश क्षिपेत् । तैस्तु कोष्ठानि जायन्ते नवाशीति शतद्वयम् ॥३७॥
तत्र कोणेषु कोष्ठानि द्वात्रिंशन्मार्जयेत्तदा । ततो वज्र भवेन्मध्ये त्वेकषष्ट्या शतात्मकम् ॥३८॥
अस्य दिक्षु त्रिकोणानि विदध्यादेककोष्ठतः । मध्ये कोष्ठे लिखेद्विद्यां साध्याख्याकर्म संयुताम् ॥३९॥
त्रिकोणेषु तु तत्कूटान्यालिखेत् साध्यवन्ति च । प्राग्वदारभ्य विलिखेत् प्रादिक्षण्य प्रवेशतः ॥४०॥

एतद्वज्रं महायन्त्रं समस्तापन्निवारणम् ॥

अथैतद्यन्त्ररचनाप्रकारः- प्राक्प्रत्यग्दक्षिणोदक चाष्टादशाष्टादशसूत्रपातनेन नवाशीत्युत्तर शतकोष्ठानि विरच्य,

चतुर्दिक्षु द्वात्रिंशद् द्वत्रिंशत् कोष्ठानि मार्जयित्वा एकषष्ट्युत्तरशत (१६१) कोष्ठात्कं वज्ररूपं विधाय चतुर्दिक्षु एकेकं कोणं मार्जयित्वा त्रिकोणानि विधाय, मध्ये साध्यनामगर्भा मूलविद्यां विलिख्य चतुर्दिक्षु चतुस्त्रिकोणेषु प्रोगुक्तामृत बीजानामादितश्चतुर्बीजानि साध्यनामयुक्तानि विलिख्य, पञ्चमबीजमारभ्य बाह्यतः प्रवेशागत्या प्रादिक्षण्येन सर्वाणि कोष्ठानि पूरयेदिति। यथा-

समस्ताभीष्टदं सर्वविजयश्रीप्रदं शुभम् । सप्तविंशतिरुक्तानि यन्त्राण्येवं महेश्वरि ॥४१॥

सप्तविंशति नक्षत्र मयान्येतानि येन वै । तेन तान्येव सप्तभ्या विभक्त्या साध्यमालिखेत् ॥४२॥

तानि तत्तद्दिनेष्वेवं विलिखेत् स्थापयेदपि । फलानि तेषां क्रमशो वदाम्युक्त क्रमेण वै ॥४३॥

विनियोगक्रमं चैव सुस्फुटं परमेश्वरि । प्रथमेनार्चितेन स्याद्रोगा नश्यन्त्यशेषतः ॥४४॥

स्ववेश्मनि विधायैतत्पीठे भूमितलेऽपि वा । प्रोक्तद्रव्याणि सम्पिष्य तत्पंकेनाव सुस्फुटम् ॥४५॥

त्रिरात्रं सप्तरात्रं वा सप्तविंशतिरात्रकम् । सम्पूज्य तत्र कुम्भं तु विद्यौषधिजलान्विताम् ॥४६॥

निधायाभ्यर्च्य गदिनमभिषिञ्चेत् ततः सुखीः । एवमन्यानि यन्त्राणि प्रोक्तेषु विनियोजयेत् ॥४७॥

तेषां त्रिलेखनद्रव्याण्याकर्णय वदामि ते । कुचन्दनं चन्दनं च सिन्दूरं सेन्दुरोचनम् ॥४८॥

काश्मीरमगुरुं कुष्ठमेलाकंक्कोल जातिभिः । स्वर्क्षवृक्षैर्द्वादशभिर्हिमाम्बु परिपेषितैः ॥४९॥

जलैर्नक्षत्रवृक्षोत्थै रसैर्वा सूक्ष्मपेषित्तैः । द्वितीय विजय प्राप्त्यै विदध्यात् प्रोक्तरूपतः ॥५०॥

वादे विवादे समरे द्यूतेषु च जयी भवेत् । तृतीयाद्येषु नवसु ग्रहान् नव समर्चयेत् ॥५१॥

देव्यात्मरूपान् तेनास्य तैर्बाधा न भवेद्ध्रुवम् । स्तम्भयेद् द्वादशेनाशु प्रोक्तक्रम विधानतः ॥५२॥

संग्रामगमनं वर्षामुद्योगं वाचमाग्रहम् । त्रयोदशद्यैर्वज्रान्तैर्यन्त्रैस्तिथिमयैरपि ॥५३॥

तत्तत्तिथिषु तैः प्राग्वद्वांछितान् प्राप्नुयाद् ध्रुवम् । तेषु तेषु यन्त्रेषु तत्तत्तिथिदिनाधिपान् ॥५४॥

वारेशानपि सम्पूज्य तत्तफलमावाप्नुयात् । कार्योद्योगेषु रोगेषु वांछितेष्वितरेष्वपि ॥५५॥

वारर्क्षतिथिसम्प्रोक्त यन्त्रे तां तैश्च दैवतैः । आवृत्तामर्जयेदग्निरक्षोवाय्वीशदिग्गतैः ॥५६॥

रोगशान्ति समुद्योग फलाभीष्टान्यवाप्नुयात् । वाराणामधिपाः प्रोक्तास्तिथि नक्षत्र देवताः ॥५७॥

शृक्षवृक्षांस्तथा योनीर्वदामि परमेश्वरि । वह्निदस्त्रवुमा विघ्नो भुजङ्गः षणमुखो रविः ॥५८॥

मातरश्च तथा दुर्गा दिशो धनदकेशवौ । यमो हरः शशी चेति तिथीशाः परिकीर्तिताः॥५९॥

नक्षत्रदेवताश्चापि शृणु वक्ष्ये यथाविधि । अश्विनौ च यमो वह्निर्धाता चन्द्र शिवोदितिः ॥६०॥

गुरुः सर्पाश्च पितरस्त्वर्यमा भग एव च । दिनकृच्च तथा त्वष्टा मरुदिन्द्राग्निभित्रकाः ॥६१॥

इन्द्रो निर्ऋतितोयाख्यौ विश्वेदेवा हरिस्तथा । वसवो वरुणः पश्चादज एकपदस्तथा ॥६२॥

अहिर्बुध्न्यस्तथा पूषा प्रोक्ता नक्षत्रदेवताः । कास्करश्चामलकोदुम्बुरो जम्बुकस्तथा ॥६३॥

खदिरः कृष्णवंशौ च पिप्पलो नागरोहिणौ । पलाशप्लक्षकाम्बष्ठबिल्वार्जुनविकङ्कताः ॥६४॥

बकुलः सरलः सर्जो वंजुलः पनसस्तथा । अर्कः शमी कदम्बश्च चूतो नितम्बस्तथान्तिमः ॥६५॥

मधूकेश्चेति सम्प्रोक्ता वृक्षा भानां क्रमादमी । अश्वगजमजं सर्पसर्पिणीश्चबिडालिका: ॥६६॥
अजामार्जार मूषाश्च मूषिका वृषमाहिषौ । व्याघ्रश्च महिषो व्याघ्री मृगी मृगशुनी कपिः ॥६७॥
गोखङ्गो वानरी सिंही तुरगी सिंहगोगजाः । यदा रोगादि दुःखार्तिर्भवेत् तत्पूर्वगैर्दिनैः ॥६८॥
मुहूतैः संख्ययाहोभिः शान्तिः स्याद्द्विगुणेन वा । आधारे पञ्च यन्त्राणि स्वाधिष्ठाने चतुष्टयम् ॥६९॥
प्रोक्तेषु भावयेत्तानि तावन्ति मणिपूरके । अनाहते ततः पञ्चयन्त्राणि परिभावयेत् ॥७०॥
विशुद्धाख्ये च चत्वारि पञ्चाज्ञायामिति क्रमात् । तत्तत्तिथिदिनेष्वेवं भावयेत् षोडशीं शिवाम् ॥७१॥
तत्तच्चक्रगताः सर्वा भावयेत् सर्वसम्पदे । आधारादिषु चक्राणि भावयेदुक्तयोगतः ॥७२॥
नतु सर्वत्र सर्वाणि भावयेन्न कदाचन । भावनायामशक्तानां तत्तद्यन्त्राद्बहिस्तथा ॥७३॥
प्रोक्तान्याधार पद्मानि कृत्वा तत्रार्चयेच्छिवाम् । एवं दिनेषु वारेषु नक्षत्रेषु त्रिषु क्रमात् ॥७४॥
सम्पूज्य देवीमिष्टानि प्राप्नुयात् प्रोक्तवासरैः । बलिं च दद्यात् तेष्वेव वासरेषु यथाविधि ॥७५॥
पञ्चाशन्मिथुनानां च प्रोक्तचक्रेऽर्धरात्रके । मध्याह्ने सन्ध्ययोश्चापि चक्रस्थानामपीश्वरि ॥७६॥
मिथुनोक्तक्रमे शक्तिमन्त्रवच्चक्रगामिनाम् । कूटानां मन्त्ररूपाणि प्रोक्ता स्फुटमीश्वरि ॥७७॥
तैस्तेषां तेषु कालेषु बलिं दद्यात् तथेरितैः । देव्यास्त्वनुग्रह प्रोक्तनिवेद्यैः सिक्थकं महत् ॥७८॥
विधाय तस्य मध्ये तु कृत्वा दीपं घृतप्लुतम् । विधाय तत्तन्मन्त्रैस्तु विदध्यात् तान्यनुक्रमात् ॥७९॥
प्रत्येकं देवतानां वा मिथुनानां तथापि वा । इत्थं कार्यस्य गुरुतालाघवापेक्षया दिनैः ॥८०॥
साधयेत्सप्तभिः पक्षान्मासान्मण्डलतोपि वा । दद्यादयूप पनसमोचागुड घृतान्वितम् ॥८१॥
कुल्माषाः पायसान्नं च व्यञ्जनं छागमांसयुक् । मिथुनानां बलिं दद्यात् प्रतिमासं गुहेऽर्चयेत् ॥८२॥
प्रत्यब्दं वा गृहे मन्त्री जीवेदाढ्यो महोदयः । एवं कालात्ममिथुनबलिदानेन पूजनात् ॥८३।
स्मरणात् कीर्तनात्सर्ववाञ्छितानामाप्नुयुर्नराः । मिथुनानां बलिद्रव्याण्याकर्णय महेश्वरि ॥८४॥
यैस्तुष्टिं प्रापितान्याशु प्रयच्छन्त्यभिवाञ्छितम् । दशानां पायसं दद्याद्दशानां तु गुडौदनम् ॥८५॥
पञ्चानां मुद्गभिन्नान्नं पञ्चानां दधिभक्तकम् । दद्यादपूपं पञ्चानां पञ्चानां क्षीरशर्करे ॥८६॥
पञ्चानां नारिकेलस्य फलक्षोदं गुडान्वितम् । पञ्चानां सितभक्ताभ्यां मोचाफलमुदीरितम् ॥८७॥
मिथुनार्चारतो नित्यं योऽसौ स्यान्मान्त्रिकाग्रणीः ।

॥ विचित्रा (चित्रा) नित्या प्रयोगः॥

सारांश – विचित्रा (चित्रा) का पूजन करने से धन धान्य ऐश्वर्य की समृद्धि होती है। अलग अलग कामना हेतु अलग अलग पूजन व हवन विधि है। श्लोक एक से उनतीस तक सर्वकामना प्राप्ति की विधि वर्णित है।

यन्त्र प्रयोग – पूजन में मन्त्र प्रयोग मूल विद्या व षोड्श कूट का उल्लेख है। अन्य मन्त्र का कहीं वर्णन नहीं दिया है।

अन्य मन्त्र – चक्रौं । (द्वयक्षर)

॥ प्रथम प्रकार यंत्र रचना ॥

त्रिकोण के बाहर २ वृत्त बनायें और उनके बाहर षट्कोण बनाकर पुनः दो वृत्त बनायें। पश्चात् षट्दल बनायें उस पर तीन वृत्त बनायें।

त्रिकोण मध्य में साध्य का नाम तथा त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र का प्रथम वर्ण ''**क**'' लिखें इसके साथ ही **अं आं.....अं अः** षोडश स्वर लिखें। त्रिकोण में ''**ए ई ल**'' लिखें।

षट्कोण में ''**ह्रीं ह स क ह ल**'' लिखें तथा षट्दल में ''**ह्रीं सकल ह्रीं श्रीं**'' लिखें।

त्रिकोण के बाहर वृत्त में प्रथम मन्त्राक्षर ''**क**'' लिखें साध्य नाम व कामना लिखें। षट्कोण के बाहर वृत्त में कोण के पास ''**ए ई, ल ह ह, स क हल ह्रीं, सक, ल ह्रीं श्रीं**'' कामना सहित लिखें। षट्दल के बाहर के वृत्त अंतराल में ''**अः आः....लः क्षः**'' विसर्ग युक्त मातृका लिखें।

दूसरे वृत्तांतराल में बिन्दु सहित ''**अं आं......लं क्षं**'' मातृका लिखें। इस तरह यह प्रथम यन्त्र हुआ।

इसी तरह दूसरे यन्त्र हेतु दूसरा अक्षर ''**ए**'' मध्य में लिखें शेष वर्णों को त्रिकोण व षट्कोणादि में लिखें। इस तरह एक-एक वर्णाक्षर को बीच में लिखने से सोलह यन्त्र बनेंगे।

॥ द्वितीय प्रकार यंत्र रचना ॥

अन्य यन्त्र रचना में १८-१८ रेखायें पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण में खींचने से १७ ×१७ = २८९ कोष्ठक बनेंगे। ३२-३२ कोष्ठक चारों दिशाओं में छोडने से १६१ शेष बचेंगे। उनके वज्र रूप बनायें। चारों दिशाओं में १-१ कोष्ठक छोडें एवं त्रिकोण बनायें। मध्य में ''**ह्रीं**'' युक्त साध्य का नाम लिखें। मूल मन्त्र भी लिखें। चारों दिशाओं के त्रिकोण में ''**ॐ ह्रौं जूं सः**'' लिखें अथवा मूल मन्त्र के चार अक्षर ''**क ए ई ल**'' लिखें। शेष वर्णों को कोष्ठक में पूर्वादि क्रम से लिखें।

इस तरह पूर्वविधि की तरह मूल मन्त्र मातृका वर्ण से सभी कोष्ठकों को भर देवें।

फल प्राप्ति व प्रयोग विधान श्लोक ४१-८७ तक दिया गया है।

॥ इति ललिता त्रिपुरसुन्दरी नित्याः प्रयोगाः ॥

****

॥ अथ कुरुकुल्ला साधना प्रयोग:॥

१. सप्ताक्षरी मन्त्र – ॐ कुरुकुल्ले स्वाहा।

२. त्रयोदशाक्षरी मन्त्र – कुरुकुल्लाया: ॐ कुरुकुल्ले ह्रीं स्वाहा।

३. पंचविंशाक्षरी मन्त्र – कुरुकुल्लाया: ॐ कुरुकुल्ले ह्री: मम सर्वजनं वशमानय ह्रीं स्वाहा।

सभी नित्याओं की बलि हेतु कुरुकुल्ला को बलि प्रदान की जाती है अत : कुरुकुल्ला का पूजन प्रयोग भी समझना चाहिये।

विनियोग – अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि:, पंक्तिश्छन्द: कुरुकुल्ला **देवता बलिप्रदान कर्मणे विनियोग:।**

षडङ्गन्यास – ऐं, क्लीं, सौ:, ऐं, क्लीं, सौ: से हृदयादि न्यास करे। पश्चात् कुरुकुल्ला मंत्र से व्यापक न्यास करे।

ऋतुस्नाता दिगंबरा देवी का ध्यान करें।

॥ ध्यानम् ॥

विकीर्णकुन्तलां नग्नां रक्तामानन्दविग्रहाम् । दधानां चिंतयेद्बाण चाप पाश सृणी: करै: ॥
तत्समानायुधाकारवर्णा देव्यस्तु बाह्यगा: । ऋतुस्नाता स्फुरद्योन्य: सदानन्दारुणेक्षणा: ॥

॥ यंत्रपूजनम् ॥

त्रिकोण, अष्टकोण, अष्टदल एवं चार द्वार युक्त भूपुर बनाये। ॐ **मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नम:।** से पीठ पूजन करे। पश्चिम से विलोम क्रम से इक्षु, इरा, घृत एवं दुग्ध से अभिषेक करे। एवं इन सागरों की पूजा कल्पना करे। **इक्षुसागरतीरे द्वीपस्य नैऋतकोणे ह्रीं श्रीं वाराही देवी पा.। ह्रीं श्रीं रत्नपोताय नम:।** इसके ऊपर रत्नसिंहासन की पूजा करे। त्रिपुर सुंदरी पूजा के समान मनोन्मनी आदिशक्तियों का पूजन करे। उसके मध्य में **''संविदासनाय नम:''** से आसन देवे पश्चात् देवी की पुरुष शक्ति पूजन करे। **देव्या भर्तृभूतं पुरुषं संपूज्य।** पश्चात् २५ अक्षरवाले मंत्र से देवी का त्रिखण्डामुद्रा से आवाहन करे। स्थापन से परमीकरण तक की मुद्रा दिखा कर प्राण प्रतिष्ठा करे। पाशादि चार मुद्रायें दिखावे। पुष्पांजलि लेकर आज्ञा मांगे।

श्रीकुरुकुल्ले परिवार पूजार्थ मनुज्ञां देहि ।
तदनुज्ञया साधक: स्वयं रत्नपोतमारुह्य ॥

रत्नपोतस्य पूर्व पश्चिम कोट्यो: ह्रीं भ्रामणी श्री पा.। ह्रीं द्राविणी पा.।

प्रथमावरणम् – (भूपुरे)– पश्चिम द्वार की दक्षिणशाखा से प्रदक्षिण पूर्वक नैऋत्य पर्यन्त **ह्रीं सूर्यरूपिणी शक्ति पा.। ह्रीं सोमरूपिणी शक्ति पा.। ह्रीं तिथी रूपिणी शक्ति पा.।** वार **रूपिणी शक्ति पा.। ह्रीं योग रूपिणी शक्ति पा.** (पूर्वद्वारे उत्तरशाखायां) **पूर्वद्वारे दक्षिणशाखायां ह्रीं ऋक्ष**रूपिणी **(नक्षत्र रूपिणी) शक्ति पा.। आग्नेये ह्रीं करणरूपिणी शक्ति पा.।** दक्षिणे– **ह्रीं पक्षरूपिणी शक्ति पा.।** नैऋते **ह्रीं मासरूपिणी शक्ति पा.।**

द्वितीयावरणम् – (अष्टदलेषु) देव्यग्रादि प्रादक्षिण्येन **व्योम रूपिणी शक्ति पा.। शब्द रू. पा.। वायु रू. पा.। स्पर्श रू. पा.। अग्नि रू. पा.। रूप रू. पा.। तोय रू. पा.। रस रू. पा.। पुन: वायवे क्ष्मा रू. पा.। ईशाने गंध रू. पा.। आग्नेये प्राण रू. पा.। निर्ऋति बुद्धि रू. पा.। मध्ये शक्ति** रू. पा.।
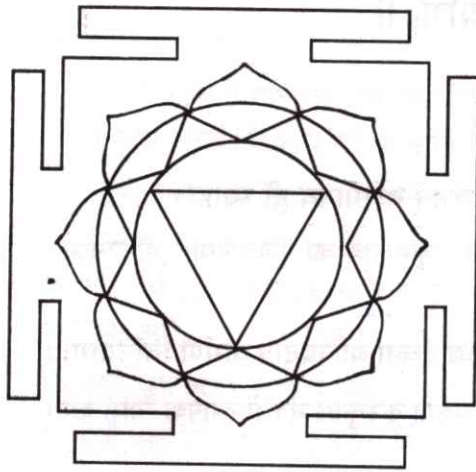
॥ श्री कुरुकुल्ला यन्त्रम् ॥

तृतीयावरणम् – (अष्टयोनिकोणेषु) श्री यंत्र पूजन की तरह वशिन्यादि अष्ट वाग्देवता का पूजन करे।

चतुर्थावरणम् – (त्रिकोण एवं अष्टयोनि के मध्य में) **वाणरूपिणी शक्ति पा.। चाप रू. पा.। पाश रू. पा.। अंकुश रू. पा.।**

पंचमावरणम् – (त्रिकोणे) देवी के अग्रकोण से **इच्छा रू. शक्ति पा.। ज्ञान रू. पा.। किया रू. पा.।**

पश्चात् संविद से देवि का अर्चन करे। सर्वोपचार पूजन कर – **श्री कुरुकुल्ले इदं बलिं गृहण गृहण सर्वकार्य साधय साधय ह्रीं स्वाहा** बलिप्रदान करे ॐ **तारेनुतारेतुरे स्वाहा।**

गायत्री मन्त्र – **कुरुकुल्लायै विद्महे सर्वशक्ति च धीमहि तन्नो नित्या प्रचोदयात्**॥

॥ इति कुरुकुल्ला प्रयोगविधिः ॥

॥ अथ नित्या कवचम् ॥

समस्तापद्विमुक्त्यर्थं सर्वसंपदवाप्तये । भूतप्रेतपिशाचादिपीडाशान्त्यै सुखाप्तये ॥१॥
समस्तरोगनाशाय समरे विजयाय च । चौरसिंहद्वीपिग जगवयादिभयानके ॥२॥
अरण्ये शैलगहने मार्गे दुर्भिक्षके तथा । सलिलाग्निमरुत्पीडास्वब्धौ पोतादिसंकटे ॥३॥
प्रजप्य नित्याकवचं सकृत्सर्व तरत्यसौ। सुखी जीवति निर्द्वन्द्वो निःसपत्नो जितेन्द्रियः ॥४॥
शृणु तत्कवचं देवि वक्ष्ये तव नवात्मकम् । येनाहमपि युद्धेषु देवासुरजयी सदा ॥५॥
सर्वतः सर्वदात्मानं ललिता पातु सर्वदा। कामेशी पुरतः पातु भगमाला त्वनन्तरम् ॥६॥
दिशं पातु तथा दक्षपार्श्वं मे पातु सर्वदा । नित्यक्लिन्ना तु भेरुण्डा दिशं पातु सदा मम ॥७॥
तथैवं पश्चिमं भागं रक्षेत्सा वह्निवासिनी । महावज्रेश्वरी रक्षेदनन्तरदिशं सदा ॥८॥
वामपार्श्वं सदा पातु दूती मे त्वरिता ततः । पालयेत्तु दिशं वात्यां रक्षेत्मां कुलसुन्दरी ॥९॥
नित्या मामूर्ध्वतः पातु साधो मे पातु सर्वदा । नित्या नीलपताकाख्या विजया सर्वतश्च माम् ॥१०॥
करोतु मे मङ्गलानि सर्वदा सर्वमङ्गला । देहेन्द्रियमनः प्राणान् ज्वालामालिनिविग्रहा ॥११॥
पालयेदनिशं चित्रा चित्तं मे पातु सर्वदा। कामात् क्रोधात् तथा लोभान्मोहान्मानान्मदादपि ॥१२॥
पापान्मत्सरतः शोकात् संशयात् सर्वतः सदा। स्तैमित्याश्च समुद्योगादशुभेषु तु कर्मसु ॥१३॥
असत्यात् क्रूरचिन्तातो हिंसातश्चोरतस्तथा। रक्षन्तु मां सर्वदा ताः कुर्वन्त्विच्छां शुभेषु च ॥१४॥

नित्याः षोडश मां पान्तु गजारूढाः स्वशक्तिभिः। तथा हयसमारूढाः पान्तु मां सर्वतः सदा ॥१५॥

सिंहारूढास्तथा पान्तु मां तरक्षुगता अपि । रथारूढाश्च मां पान्तु सर्वतः सर्वदा रणे ॥१६॥

ताक्ष्यारूढाश्च मां पान्तु तथा व्योमगतास्तु ताः । भूगताः सर्वदा पान्तु मां सर्वत्र च सर्वदा ॥१७॥

भूतप्रेतपिशाचापस्मारकृत्यादिकान् गदान् । द्रावयन्तु स्वशक्तीनां भीषणैरायुधैर्मम ॥१८॥

गजाश्वदीपिपञ्चास्यताक्ष्यारूढाखिलायुधाः । असंख्याः शक्तयो देव्यः पान्तु मां सर्वतः सदा ॥१९॥

सायं प्रातर्जपन्नित्याकवचं सर्वरत्नकम् । कदाचिन्नाशुभं पश्येन्न श्रृणोति च तत्समः ॥२०॥

॥ अथ त्रिपुर भैरवी स्तुतिः ॥

क्ष्माम्ब्वग्नीरणखार्केन्दुयष्ट्टप्राययुगस्वरैः । मातृभैरवगां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम् ॥१॥

कादिवर्गाष्टकाकारसमस्ताष्टकविग्रहाम् । अष्टशक्त्यावृतां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम् ॥२॥

स्वरषोडशकानां तु षट्त्रिंशद्धिः परापरैः । षट्त्रिंशत्तत्त्वगां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम् ॥३॥

षट्त्रिंशत्तत्त्वसंस्थाप्यशिवचन्द्रकलास्वपि । कादितत्त्वान्तरां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम् ॥४॥

आइमायाद्वयोपाधिविचित्रेन्दुकलावतीम् । सर्वात्मिकां परां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम् ॥५॥

षडध्वपिण्ड योनिस्थां मण्डलत्रय कुण्डलीम् । लिङ्गत्रयातिगां वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम् ॥६॥

स्वयम्भूहृदयां बाणभूकामान्तः स्थितेतराम् । प्राच्यां प्रत्यक्चितिं वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम् ॥७॥

अक्षरान्तर्गताशेषनामरूपां क्रियां पराम् । शक्तिं विश्वेश्वरीं वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम् ॥८॥

त्रिपुर सुंदरी की नित्या पूजन से साधना का पूर्ण फल मिलता हैं। प्रतिदिन (तिथि) की नित्या पूजन में नित्या कवच का पाठ भी विशेष महत्व रखता है।

॥ अथ वार, तिथि, नक्षत्र पूजा प्रयोगः॥

॥ वारेशानां पूजा प्रयोगः॥

पूर्णाभिषेक प्रयोग के दिन या अनुष्ठानिक काम्य प्रयोग के दिवस उस दिन के अधिपति एवं अन्यवारेशों का पूजन करना चाहिये। वेददिका पर षट्कोण मण्डल बनाये। मध्य में उस दिन के वाराधिपति एवं उस दिन के वारदेवता का पूजन करे। सप्तवाराधिपति के अन्य देवताओं का पूजन करे। वाराधिपति व उनके देवता इस प्रकार है।

रविवारस्य - सूर्य, शिवौ। चन्द्रवारस्य - सोमाम्बिके। मंगलवारस्य - भौम, कुमारौ। सोम्यवारस्य - ब्रह्म, बुधौ। गुरुवारस्य - बृहस्पति, विष्णू। भृगवारस्य - शुक्र, उमा। शनिवारस्य - कुबेर, सौरी।

जैसे कार्य दिवस रविवार है तो मध्य में ''**शिवसहिताय सूर्याय नमः।**'' षट्कोण में शेष देवताओं का पूजन करे। यथा- **सोमाम्बिके नमः। कुमार सहिताय भौमाय नमः** इस तरह क्रमश पूजन करे।

॥ तिथीशार्चन प्रयोगः॥

वेदिका पर चतुर्दशदल पद्म बनाये। मध्य में कार्य दिवस की तिथी एवं उसके देवता का अर्चन करे। अन्य देवों का पूजन चतुर्दशदल में करे। तिथि देवता इस प्रकार है-

प्रतिपद्यग्निः। द्वितीयायामश्विनौ। तृतीयायामुमा। चतुर्थ्यां विघ्नराजः। पञ्चम्यां सर्पः। षष्ठ्यां षणमुखः। सप्तभ्यां रविः। अष्टम्यां मातरः। नवम्यां दुर्गा। दशम्यां दिशः। एकादश्यां धनदः। द्वादश्यां केशवः। त्रयोदश्यां यमः। चतुर्दश्यां हरः। पञ्चदश्यां चन्द्रः। अमावस्यां पितरः। इति तिथीश पूजाक्रमः॥

॥ प्रत्येक तिथि का ध्यान एवं तिथिकवच स्तोत्र॥

'**तिथिपूजा**' का क्या महत्व है, यह '**गायत्री तन्त्र**' की निम्नोक्ति से स्पष्ट है-

तिथेर्ध्यानं बिना देवि ! तिथेर्मन्त्रं तथैव च। अज्ञात्वा परमेशानि ! दिनकृत्यं करोति यः। तस्य सर्वं भवेद् व्यर्थ दिनकृत्यं वरानने, या तिथिः सा महामाया आद्य मूर्तिर्जगन्मयी॥

'**तिथि**' के ध्यानादि से पूर्व '**पक्ष**' का ध्यानादि करना चाहिए। पक्षों के ध्यान और मंत्र इस प्रकार हैं।

॥ शुक्लपक्षस्वरूपिणी देवी का ध्यान और मंत्र॥

शङ्खकुन्दसमाभासां नवयौवनसंयुतां । चतुर्भुजां त्रिनयनांमत्त द्विरदगामिनीम् ॥
ललाटपट्टिकामध्ये सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां । भ्रमद्भ्रमर नीलाभामञ्जनाञ्चितलोचनाम् ॥
पीतांशुकपरीधानां कृष्णवस्त्रोत्तरीयिणीं । नानालंकारसुभगां नीलपद्मोपरिस्थिताम् ॥
घूर्णायमाननयनां नीलपद्मविधारिणीं । सदा षोडशवर्षीयां कदम्बकोरकस्तनीम् ॥

हीरकद्युतिसंकाश दशज्योतिरुज्ज्वलां । नानापुष्पमयैहरिनैर्नानागन्धमयीं परम् ॥

मन्त्र – ऐं ऐं क्रीं क्रीं शुक्लपक्षाय स्वाहा क्रीं क्रीं ऐं ऐं।

॥ कृष्ण पक्ष स्वरूपिणी देवी का ध्यान और मंत्र॥

महामरकतश्यामां चतुर्बाहुसमन्वितां । पीनोत्तुंगकुचां रम्यां चित्रवस्त्र विलासिनीम् ॥
नानाशृंगार वेशाढ्यां स्फुरच्चकितलोचनां । सिन्दूर तिलकोद्दीप्तामञ्जनाञ्चितलोचनाम् ॥
कन्दर्पधनुराकारभ्रू लतापरिशोभितां । रत्नहारेण सहितनागहारविराजिताम् ॥
पीतपद्मसमासीनां चित्रचूडाविराजितां । पीतविद्युत्समाकाशां तामुत्तरीयवसनच्छविम् ॥
पूर्णचन्द्रमुखीं देवीं कृष्णपक्षस्वरूपिणीम् ।

मन्त्र – ॐ ॐ कृष्ण पक्षाय स्वाहा ॐ ॐ।

कृष्ण एवं शुक्ल पक्षों में 'तिथि' को अपने 'पक्ष' के वर्ण अर्थात् काले या गौर स्वरूप का ध्यान करना चाहिये।

॥ शुक्लपक्ष की प्रत्येक तिथि का ध्यान और मन्त्र॥

१. द्विभुजांशुक्लरूपां च खेलत्खञ्जनगामिनीं ।
द्विलोचनां शशिकलां सिंदूरतिलकोज्ज्वलां ॥
तप्तहाटकनिर्माणनानालङ्कार भूषितां ।
दाडिमीबीजसदृश दशनद्युतिशोभनाम् ॥
ध्याये प्रतिपदं देवीं जपपूजाविशुद्धये ।

मन्त्र – ग्रीं प्रतिपद्भ्यः स्वाहा ॥१॥

२. द्विलोचनां शशिकलां शुद्धस्फटिकशोभनां ।
शुद्धाभरणशोभाढ्यां शुक्लवस्त्रपरिच्छदाम् ॥
नानाकटाक्षसंयुक्तभ्रूलता – परिशोभितां ।
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तां खञ्जनाञ्चितलोचनां ॥
द्विभुजां सुन्दराङ्गीं च किशोरीं नवयौवनां ।

मन्त्र – ऐं द्वितीयायै स्वाहा ॥२॥

३. शुक्लपद्मप्रतीकाशां शुक्लवस्त्रपरिच्छदां ।
शुक्लाभरणशोभाढ्यां पुण्डरीकोपरिस्थिताम् ॥
द्विलोचनां शशिकलां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलां ।
कटाक्षविशिखोपेतां द्विभुजां तृतीयां भजे ॥

मन्त्र – ॐ ऐं तृतीयायै स्वाहा ॥३॥

४. चतुर्थीं शुक्लचार्वङ्गीं लोललोचनां ।

कुन्दपुष्पसमाभासां द्विभुजां लोललोचनाम् ॥
शुक्लवस्त्रपरीधानां शुक्लाभरणभूषितां ।
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तां खञ्जनाञ्चितलोचनाम् ॥

मन्त्र – ऐं हुं चतुर्थ्यै स्वाहा ॥४॥

५. शुद्धस्फटिकसंकाशां श्वेतपद्मोपरिस्थितां ।
हास्ययुक्तां प्रसन्नास्यां कटाक्षविशिखोज्ज्वलां ॥
कन्दर्पधनुराकारभ्रूलता – परिशोभितां ।
द्विभुजां श्वेतवर्णां च श्वेताकारभूषिताम् ॥
लोचनद्वयसंयुक्तां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलां ।
मृणालसदृशाकारबाहुवल्ली – विराजिताम् ॥
खेलत्खञ्जनगामीं च चारुचूडाविराजिताम् ।

मन्त्र – ह्रीं ऐं ह्रीं पञ्चम्यै स्वाहा ॥५॥

६. कुन्दपुष्पसमाभासां द्विभुजां लोललोचनां ।
कटाक्षविशिखोद्दीप्तां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् ॥
दाडिमीबीजसदृश दशनद्युतिमुज्ज्वलां ।
शुक्लालंकारसुभगां शुक्लासननिवासिनीम् ॥
शुक्लवस्त्रपरिच्छिन्नां शुक्लहारविनोदिनीं ।
द्विभुजां चन्द्रवदनां ध्याये चात्मविभूतये ॥

मन्त्र – ॐ ह्रीं षष्ठ्यै स्वाहा ॥६॥

७. शरच्चन्द्रप्रतीकाशां द्विभुजां शशिशेखरां ।
लोचनद्वयसंयुक्तां खेलत्खंजनगामिनीम् ॥
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तामंजनाञ्चित – लोचनां ।
कटाक्षविशिखोपेतां भ्रूलतापरिशोभिताम् ॥
शुक्लासनसमासीनां शुक्लाभरणभूषितां ।
शुक्लवस्त्रपरीधानां ध्याये चात्मविभूतिये ॥

मन्त्र – ह्रीं ॐ सप्तम्यै स्वाहा ॐ ह्रीं ॥७॥

८. साकाचन्द्रप्रतीकाशां द्विभुजां चन्द्रशेखरां ।
पूर्णचन्द्रमुखश्रेणीं कुटिलालकशोभिताम् ॥
हास्ययुक्तां प्रसन्नास्यां श्वेतवस्त्रपरिच्छदां ।
श्वेताभरणशोभाढ्यां किशोरीं नवयौवनां ॥

मालाकटाक्षसंयुक्तां भ्रूलतापरिशोभितां ।
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तामंजनाञ्चित लोचनाम् ॥

मन्त्र – क्रीं हुं ऐं अष्टम्यै स्वाहा ऐं हुं क्रीं ॥८॥

९. श्वेतपद्मप्रतीकाशां द्विभुजां लोललोचनां ।
दाडिमीबीजांसदृश दन्तपंक्ति परिच्छदाम् ॥
शुक्लपट्टाम्बरधरां शुक्लवस्त्रोत्तरीयिणीं ।
ललाटे पट्टिकां शुद्धां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलां ॥
मुक्तावर्तुलहारेण कम्बुकण्ठसुशोभितां ।
नानामाल्यपरिच्छिन्नां चित्रराजविराजिताम् ॥

मन्त्र – ॐ हुं नवम्यै स्वाहा हुं ॐ ॥९॥

१०. मल्लिकापुष्पसंकाशां द्विभुजां लोललोचनां ।
श्वेतासनोपविष्टां च श्वेतांशुकपरिच्छदाम् ॥
श्वेताभरणसंयुक्तां श्वेतगन्धविलेपिनीं ।
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तामञ्जनाञ्चित – लोचनाम् ॥

मन्त्र – ऐं ॐ दशम्यै स्वाहा ॐ ऐं ॥१०॥

११. केतकीपुष्पसंकाशां भ्रूलतापरिशोभितां ।
नानाकटाक्षसंयुक्तां मत्तद्विरदगामिनीम् ॥
नानालंकारसुभगां पीतवस्त्रपरिच्छदां ।
पीतगन्धप्रलिप्ताङ्गीं सिन्दूरतिलकोज्ज्वलां ॥
दाडिमीवीजसदृश – दन्तपंक्तिमनुत्तमां ।
द्विभुजां सुन्दरीं देवीं नमाम्यात्मविभूतये ॥

मन्त्र – ॐ क्रीं ॐ एकादश्यै स्वाहा ॐ क्रीं ॐ ॥११॥

१२. पीतगन्ध समाभासां शुक्लवस्त्रपरिच्छदां ।
शुक्लचन्दनसिक्ताङ्गीं द्विभुजां लोललोचनाम् ॥
शुक्लाभरणशोभाढ्यां शुक्लासनसमाश्रयां ।
दाडिमीबीजसदृशदशनद्युति – शोभनाम् ॥
सिंदूरतिलकोद्दीप्तां ललाटपट्टिकां शुभां ।

मन्त्र – ह्रीं ॐ ह्रीं द्वादश्यै स्वाहा ह्रीं ॐ ह्रीं ॥१२॥

१३. रक्तचन्द्रप्रतीकाशां किशोरीं नवयौवनां ।

रक्तपीतपरीधानां कुटिलालकमण्डिताम् ॥
द्विभुजां सुन्दरीं शुद्धां पूर्णचन्द्रमुखप्रभाम् ।
द्विलोचनां चन्द्ररेखां विष्णुपूज्यां वृहत्कटीम् ॥
सिन्दूरतिलकोद्दीप्तामंजनाञ्चित - लोचनां ।
नानाकटाक्षसंयुक्तां नानाशृङ्गारशोभनाम् ॥

मन्त्र - ॐ ऐं त्रयोदश्यै स्वाहा ऐं ॐ ॥१३॥

१४. शुद्धस्फटिकसंकाशां हरिहस्तविनोदिनीं ।
नानालंकारसुभगां पीतमाल्यपरिच्छदाम् ॥
श्वेतपद्मसमासीनां द्विभुजां लोललोचनां ।
कटाक्षविशिखोद्दीप्तां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलां ॥
दाडिमीवीजसदृश दशनद्युतिमुज्ज्वलां ।
कदम्बकोरकाकार स्तनद्वयमनोहराम् ॥
हास्ययुक्तां प्रसन्नास्यां किशोरीं नवयौवनाम् ।

मन्त्र - क्रीं ॐ ह्रीं चतुर्दश्यै स्वाहा ह्रीं ॐ क्रीं ॥१४॥

१५. कोटिविद्युल्लताकारां चतुर्बाहुसमन्वितां ।
पीतांशुकपरीधानां रत्नसारविराजिताम् ॥
शंखकंकणकेयूरनाना शृङ्गारभूषितां ।
रत्नकुण्डलसंयुक्तस्फुरद गण्डमनोहराम् ॥
त्रिभंगललिताकारां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलां ।
कटाक्षलक्षसंयुक्तां भ्रूलतापरिशोभिताम् ॥

मन्त्र - ह्रीं ॐ क्रीं ॐ पूर्णिमायै स्वाहा ॐ क्रीं ॐ ह्रीं ॥१५॥

कृष्णपक्ष में तिथियों का ध्यान निम्र प्रकार करे-

नीलाञ्जनचयप्रख्याः किशोर्यो नवयौवनाः ।

यही ध्यान कृष्णपक्ष की प्रत्येक तिथि का करना चाहिये और 'मंत्र' पूर्वतिथियों के क्रमानुसार ही इस पक्ष की तिथियों के भी होते हैं। अतः उन्हीं मंत्रों का जप करना चाहिए। यह श्लोक कृष्ण पक्ष की तिथि हेतु शुक्ल पक्ष की तिथि ध्यान से पहले पढ़ें या "**नीलाञ्जन चयप्रख्या किशोर्यो नवयौवनां भजे**" यह पूर्वोक्त ध्यानों के अन्त में पढ़ें।

॥ अमावास्या का ध्यान और मंत्र ॥

दलिताञ्जनसंकाशां पीतांशुकपरिच्छदां ।
पीतगन्धप्रलिप्ताङ्गीं पीताभरणभूषिताम् ॥
पीतपद्मसमासीनां किशोरीं नवयौवनां ।

द्विलोचनां चन्द्ररेखां द्विभुजां कोरकस्तनीम् ॥
ललाटपट्टिकाशुद्धां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलां ।
खेलत्खंजनगामीं च त्रिभंगललिताकृतिम् ॥
दाडिमीबीज सदृशदशनज्योतिरुज्ज्वलाम् ।

मन्त्र – ॐ ह्लीं ह्लीं ॐ अमावास्यायै स्वाहा ॐ ह्लीं ह्लीं ॐ।

पक्षों और तिथियों के ध्यान एवं मन्त्रों के साथ ही 'तिथि' के 'कवचस्तोत्र' की भी अपनी उपयोगिता है। अतः उसे भी यहाँ उद्धृत किया जा रहा है-

॥ तिथि कवचम् ॥

विनियोगः – अस्यतिथीनां कवचस्य अश्वत्थामाबलिव्यास हनुमद्विभीषणकृप परशुरामा ऋषयो, गायत्री छन्दः, श्रीमृत्युंजयशिवो देवता, धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः।

पूर्वे पातु सदा नित्याक्रीङ्कारी प्रतिपत्तिथिः । क्लींकारी पातु मे नित्यं द्वितीया ब्रह्मपूजिता ॥
ऐङ्कारी पातु मे नित्यं तृतीया पश्चिमे परा । व्लुङ्कारी पातु मे नित्या चतुर्थी विष्णुपूजिता ॥
व्लुङ्कारी पातु मे नित्यमूर्ध्वदेहमहर्निशं । ह्रीङ्कारी पातु मे नित्यं पञ्चमी मुखमण्डलम् ॥
श्रीङ्कारी पातु मे नित्यं षष्ठीरूपा च पार्वती । स्त्रीङ्कारी सप्तमी पातु नित्यं मे नाभिमण्डलम् ॥
हुंकारी चाष्टमी नित्यं कण्ठं मे पातु सर्वदा । श्रींकारी नवमी नित्यं स्वाधिष्ठानं सदाऽवतु ॥
दशमी पातु मे नित्यं हस्तयुग्मं यथा तथा । एकादशी सदा पातु चाक्षियुग्ममहर्निशम् ॥
द्वादशी पातु मे नित्यं हस्तयुग्मं यथा तथा । त्रयोदशी महालक्ष्मीः क्षेत्रस्थाननिवासिनी ॥
त्रयोदशी पातु नित्यं हंस इत्यक्षरात्मिका । हंकारः पातु मे नित्यं पादयुग्ममहर्निशम् ॥
सःकारः पातु मे नित्यं पादाग्रात् केशमण्डलम् । चतुर्दशी महामाया सर्वत्र परिरक्षतु ॥
स्वाकारश्चतुर्दशी नित्या नित्यं मे धनसम्पदं । हाकारः पूर्णिमा नित्यं देहि मे आयुवर्धनम् ॥
श्रीं हुं ह्लीं स्वाहा सर्वरूपा देवी तिथिरूपा च मां परिरक्षतु सर्वदा ।
हुं ह्लीं अमावास्या सदा पातु दारान् पुत्रपरिच्छदम् ।
ह्लीं हुं ह्लीं स्वाहा कथितं कवचं देवि! त्रैलोक्येषु दुर्लभम् ॥

॥ मास, तिथी, वारानुसार देवी नैवेद्यम् ॥

किस तिथि में, किस वार में, कौनसा 'नैवेद्य' लगाना चाहिए, इसकी तालिकाएँ यहाँ दी जा रही है। श्रद्धालु जन इनके अनुसार यथासम्भव पूजन कर विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ये तालिकाएँ 'श्रीमद्देवीभागवत' के आधार पर हैं। 'भारत' के ऋषियों द्वारा यहाँ के वातावरण के अनुरूप निर्दिष्ट इन तालिकाओं का महत्त्व स्वतः स्पष्ट है। हम सभी को इन्हें अपनाकर सहज रूप में लाभ उठाना चाहिए॥

१. मासाऽनुसार देवीनैवेद्य		२. तिथिऽनुसार देवीनैवेद्य			३. वाराऽनुसार देवीनैवेद्य	
मास	वस्तुएँ एवं पदार्थ	तिथि	वस्तु	फल	वार	वस्तु
चैत्र	गोघृत के ५ व्यञ्जन	प्रतिपदा	गोघृत	नीरोगता	रवि	खीर
वैशाख	गुड़	द्वितीया	शक्कर	दीर्घायु	सोम	दूध
ज्येष्ठ	मधु	तृतीया	दूध	दु:खों से निवृत्ति	मङ्गल	केला
आषाढ़	मक्खन या महुआ रस	चतुर्थी	मालपूआ	विघ्नों का नाश	बुध	मक्खन
श्रावण	दही	पञ्चमी	केला	बुद्धि का विकास	गुरु	खाँड
भाद्रपद	शक्कर	षष्ठी	मधु	सुन्दर व्यक्तित्व	शुक्र	चीनी
आश्विन	खीर (पायस)	सप्तमी	गुड़	शोक से मुक्ति	शनि	गोघृत
कार्त्तिक	दूध	अष्टमी	नारिकेल	सन्ताप निवारण		
मार्गशीर्ष	फेनी	नवमी	धान का लावा	उभय सुख		
पौष	लस्सी	दशमी	काले तिल	मृत्यु से निर्भयता		
माघ	गोघृत	एकादशी	दही	देवी की प्रसन्नता		
फाल्गुन	नारिकेल	द्वादशी	चिउड़ा	देवी की प्रसन्नता		
		त्रयोदशी	चना	सन्तानप्राप्ति		
		चतुर्दशी	सत्तू	शङ्कर की भक्ति		
		पूर्णिमा	खीर	पितर उद्धार		
		अमावास्या	खीर	पितरों का उद्धार		

॥ नक्षत्र देवता पूजा प्रयोग:॥

सप्तविंशतिदल का पद्म बनाये। कार्य दिवस के नक्षत्र का मध्य में पूजन करे। अन्य का २७ पत्रपद्म में पूजन करे, तथा अभिजित सहित २८ नक्षत्रों का पूजन करें।

नक्षत्रेशास्तु अश्विन्यामश्विनौ भरण्यां यम। कृत्तिकायामग्नि। रोहिण्यां धाता। मृगशिरसि चन्द्र:। आर्द्रायां शिव:। पुनर्वसावदिति:। पुष्ये गुरु:। आश्लेषायां सर्प:। मघायां पितर:। पूर्वायामर्यमा। उत्तरायां भग:। हस्ते सूर्य:। चित्रायां त्वष्टा। स्वात्यां मारुत:। विशाखायामिन्द्राग्नी। अनुराधायां मित्र:। ज्येष्ठायामिन्द्र:। मूलायां निर्ऋति:। पूर्वाषाढायां तोयं। उत्तराषाढायां विश्वेदेवा:। अभिजिते प्रजापति:। श्रवणे हरि:। धनिष्ठायां वसव:। शतभिषणि वरुण:। पूर्वाभाद्रपदायामजैकपात्। उत्तराभाद्रपदायामहिर्बुध्न्य:। रेवत्यां षूषा। इति नक्षत्रेश सपर्याविधि:॥

प्रत्येक नक्षत्र के साथ उसके देवता का नाम दिया गया है, अत: उसी अनुसार पूजा करें यथा –

अश्विन्याधिपति: अश्विनौ नम:। भरण्याधिपति यमाय नम:।

॥ अथ मातृकापुटित नवग्रह पूजन प्रयोग:॥

तीन हस्त प्रमाण की चौकोर वेदी बनाये। उसके विभाग करके नवकोष्ठक बनाये। प्रत्येक कोष्ठक में ३-३ वृत्त बनाये। इसमें ग्रहों का दिशा क्रम वैदिक विधि से दिया गया है।

****

१. नवकोष्ठों के मध्य कोष्ठ में वृत्त मध्य में '**मों**' लिखें, उसके चारों ओर आठों दिशाओं में **अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं** लिखे। बाहर के वृत्त की वीथी में **मं मां मीं मुं मूं मृं मॄं में मैं** मों मौं **मं मः** वृत्ताकार लिखे। दूसरे एवं तीसरे वृत्त की मध्य वीथी में **अं आं....लं क्षं** मातृका वर्ण लिखे। पश्चात् सूर्य का ध्यान पूर्वक पूजन करे।

२. नवकोष्ठों में पूर्व के कोष्ठ में पहले वृत्त में '**ह्रीं**' लिखे। उसके आठों दिशाओं में **लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः** लिखे। पहले व दूसरे वृत्त के बीच की वीथी में पूर्व की तरह **हं हां हीं** ......**हं हः** वर्ण लिखे। दूसरे व तीसरे वृत्त के बीच की विथि में अं आं........हं लं क्षं मातृका वर्ण लिखें। ध्यान पूर्वक **सों सोमाय नमः** से पूजन करे।

३. अग्निकोण के कोष्ठ में पहले वृत्त में "**क**" लिखे उसके आठों दिशाओं में "**कं खं गं घं ङं मङ्गल**" ये आठ वर्ण लिखे है। पहले एवं दूसरे वृत्त के अंतर में **कं कां कीं**......कं **कः** स्वर युक्त लिये। दूसरे एवं तीसरे वृत्त की वीथी में **अं आं....क्षं** मातृका वर्ण लिखे। पश्चात् भौम का पूजन करे।

४. दक्षिण दिशा के कोष्ठ में मध्य में "**चं**" लिखें उसके आठों दिशाओं में **चं छं जं झं ञं बुधाय** ये आठ वर्ण लिखे। पहले व दूसरे वृत्त के मध्य में वृत्ताकार **चं चां**....चं चः स्वर युक्त लिखे। दूसरे व तीसरे वृत्त के अंतराल में **अं आं....लं क्षं** मातृका वर्ण लिखे। पश्चात् बुध का पूजन करे।

५. नैऋत्य कोण के कोष्ठ मध्य में "**टं**" लिखे उसकी आठों दिशाओं में "**टं ठं डं ढं नं सौरये**" अष्ट वर्ण लिखे। पहले एवं दूसरे वृत्त के अंतराल में **टं टां टीं....टं टः** स्वरयुक्त लिखे। दूसरे व तीसरे वृत्त के अंतराल **अं आं.....लं क्षं** मातृका वर्ण लिखे। पश्चात् शनि का पूजन करे।

६. पश्चिम दिशा के कोष्ठ मध्य में "**तं**" लिखें उसकी आठों दिशाओं में "**तं थं दं धं नं गुरवे**" लिखे। पहले व दूसरे वृत्त के अंतराल में **तं तां तीं.....तं** तः स्वर युक्त लिखे। दूसरे व तीसरे वृत्त के अंतराल **अं आं.....लं क्षं** मातृका वर्ण लिखे। पश्चात् गुरु का पूजन करे।

७. वायव्य कोण के कोष्ठ मध्य में "**पं**" लिखे। इसकी आठों दिशाओं में **पं फं बं भं मं शुक्राय** लिखे। पहले व दूसरे वृत्त के अंतराल में **पं पां पीं.....पं पः** स्वर युक्त लिखे। दूसरे व तीसरे वृत्त के अंतराल में ५१ मातृका वर्ण लिखे। पश्चात् शुक्र का पूजन करे।

८. उत्तरकोष्ठ के प्रथमवृत्त के मध्य में "**यं**" लिखे उसकी अष्टदिशाओं में "**यं रं लं वं शं राह्वे**" लिखे। पहले व दूसरे वृत्त के अंतराल में **यं यां यीं.....यं यः** स्वर युक्त लिखे। दूसरे व तीसरे वृत्त के अंतराल में ५१ मातृका वर्ण लिखे। पश्चात् राहु का पूजन करे।

९. ईशान कोष्ठ के मध्य में "**षं**" लिखे उसकी अष्ट दिशाओं में षं सं **हं लं क्षं केतवे** अष्टवर्ण लिखे। प्रथम व दूसरे वृत्त की वीथी में **षं षां षीं....षं षः** स्वर युक्त लिखे। दूसरे व तीसरे वृत्त की वीथी में ५१ मातृका वर्ण लिखे। पश्चात् केतु का पूजन करे।

॥ अथ त्रिपुरसुन्दरी संध्या विधानम ॥

गायत्री की तरह त्रिपुरसुन्दरी की त्रिकाल एवं अर्धरात्रि को तुरीय संध्या की जाती है। अलग अलग समय अलग अलग ध्यान पूर्वक करे। प्रत्येक दिन तिथी की नित्या का पूजन भी विशिष्ट साधक करते है। यह संध्या कर्म साधकों एवं विद्वानों द्वारा किया जाता है अतः इस कर्म की सरल हिन्दी टीका आगे दी गई है

सन्ध्या चतुर्विधा ज्ञेया बाला कौमार यौवना ।
प्रौढा च निष्कलाचेति सन्ध्या देवि प्रकीर्तिता ॥१॥
प्रातः काले महादेवी विद्या वागीश्वरी मता ।
कामेश्वरी च मध्याह्ने सायाह्ने पुरभैरवी ॥२॥

मध्यरात्रे महादेवी ज्ञेया त्रिपुरसुन्दरी ।

ततः स्वपुरतो धेनुमुद्रया जलममृतीकृत्य मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य तेन जलेन कुशैरकारादिक्षकारान्तैः सबिन्दुमातृकाक्षरैः प्रत्यक्षरं स्वशिरः प्रोक्ष्य मूलविद्यया त्रिःप्रोक्ष्य सूर्यमण्डले देवीं यथोक्तरूपां ध्यात्वा, दक्षहस्तेन जलमादाय लंवंरंयंहं इति मन्त्रैः सप्तवारमभिमन्त्र्य मूलेन च त्रिवारमभिमन्त्र्य, तज्जलबिन्दुभिरंगुष्ठानामिकाभ्यां मूलविद्यया स्वशिरः प्रोक्ष्यावशिष्टजलं वामहस्ते निधाय तेजोरूपं तज्जलमिडयाकृष्य स्वदेहान्तःस्थितं सकलकलुषं प्रक्षाल्य, तज्जलं कृष्णवर्ण पिङ्गलया निर्गतं मत्वा तज़्लं पुनर्दक्षिणहस्ते कृत्वा स्ववामभागे ज्वलवद्वज्रशिलां ध्यात्वा "ॐ श्रूँ पशुहुंफट्" इति पाशुपतास्त्रेण तस्यां शिलायामास्फाल्य, हस्तौ प्रक्षाल्य मूलविद्यया जलमादाय प्रवहन्नाड्या सहस्त्रदलकमल गतपरमामृतेनैकीभूतं विभाव्य, राजदन्तविवरान्नेत्रमार्गेण निर्गमय्य तज्जलं वामकरे निधाय, तेन जलेन "अमृतमालिनि स्वाहा" इति मन्त्रेण स्वशिरस्त्रिःप्रोक्ष्य "ह्रीं श्रीं" प्रथमकूटं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।"ह्रीं श्रीं" द्वितीयकूटं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।"ह्रीं श्रीं" तृतीयकूटं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। समस्तविद्यामुच्चार्य सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। एवमाचम्याञ्जलिना जलं गृहीत्वोत्थार "ह्रीं श्रीं" प्रथमकूटं वागीश्वर्यै विद्महे द्वितीयकूटं कामेश्वर्यै धीमहि तृतीयकूटं तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् इति त्रिरर्घ्य दत्त्वा "ह्रां ह्रीं सः सूर्य एष तेऽर्घः स्वाहा" इति सूर्यायार्घ्य त्रयं दत्त्वा मूलविद्यया देवीं त्रिःसन्तर्प्य

"ह्रां ह्रीं सः सूर्य तर्पयामि नमः" इति त्रिःसन्तर्प्य, मूलाधारे प्रथमकूटं तडित्कोटिसमप्रभं मूलादिब्रह्मरंध्रान्तं सञ्चिन्त्य तत्तेजः सुषुम्नावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रं मीत्वा वहन्नासाध्वनाकाशस्थवह्निमण्डले समावाह्य तत्तेजस उद्भूतां वागीश्वरीं ध्यायेत्:

पीतां पीताम्बरां पीतस्त्रग्विभूषानुलेपनाम् । तडित्कोटिसमाभासां बालामक्षस्त्रगुज्ज्वलाम् ॥१॥
पुस्तकाब्जकराम्भोजां वह्निपीठनिषेदुषीम् । वाग्भवां वाग्भवौद्भूतां त्रीक्षणां सस्मितां स्मरेत् ॥२॥

इत्याकाशस्थवह्नि मण्डलान्तर्ध्यात्वा "प्रथमकूटं त्रिपुरावागीश्वरीपादुकां पूजयामि" इति गन्धादिभिः सम्पूज्य वाग्भवगायत्रीमुच्चार्य त्रिपुरावागीश्वर्यै अर्घ्य कल्पयामि स्वाहा, इति त्रिरर्घ्याञ्जलिमुत्क्षिप्य पुनः "प्रथमकूटं त्रिपुरावागीश्वरीपादुकां तर्पयामी" ति त्रिःसन्तर्प्यं, श्रीगुरुं प्रणम्य पूर्ववत्करषडङ्गन्यासं विधाय मातृकान्यासस्थानेषु

प्रणवत्रितारमूलविद्यातद्दिननित्याविद्या हंसः "ह्रीं श्रीं" अं नमः इत्यादिमातृकां विन्यस्य पूर्वोक्तगायत्रीं यथाशक्ति जपित्वा वाग्भवगायत्रीं जपेत्। ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे वागीश्वर्यै धीमहि तन्न. शक्तिः प्रचोदयात्, इति जपित्वा मूलविद्यां प्रातरित्थं जपेत्। यथाः

प्रातर्मूलाधारगते कमले वह्निमण्डले ।
वाग्बीजरूपां नित्यां तां विद्युत्पटलभास्वराम् ॥१॥
पुष्पबाणेक्षुकोदण्डपाशाङ्कुश लसत्कराम् ।
स्वेच्छागृहीतवपुषं युगनित्याक्षरात्मिकाम् ॥२॥
घटिकावरणोपेतां परितः प्राञ्जलीनथ ।
ज्ञानमुद्रावरकरान् वाग्भवोपास्तिततत्परान् ॥३॥
नवनाथान् स्मरेन्मूलपङ्कजे योनिमण्डले ।

इत्थ सन्ध्याचतुष्टये ह्रींश्रींमूलं तद्दिननित्याविद्या हंसः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ह्रींश्रीं प्रकाशानन्दरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपा.। प्रागवत् हंसः इत्यन्तमुच्चार्य लृंलॄंएंऐंओंऔंअंअः ह्रींश्रीं विमर्शानन्दरूपि०। पुनर्हंस इत्यन्तमुच्चार्य कंखंगंघंङंह्रींश्रीं आनन्दानन्दरू०। पुनस्तथैवोच्चार्य चंछंजंझंञं ह्रींश्रीं ज्ञानानन्दरू०। पुनस्तथैवोच्चार्य टंठंडंढंणं ह्रींश्रीं सत्यानन्दरू०। पुनस्तथैव तंथंदंधंनं ह्रींश्रीं पूर्णानन्दरू०। पुनस्तथैव पंफंबंभंमं ह्रींश्रीं स्वभावानन्दरू०। पुनस्तथैवोच्चार्य यंरंलंवंशं ह्रींश्रीं प्रतिभानन्दरू०। पुनरपि तथैव षंसंहंक्षं ह्रींश्रीं सुभगानन्दरू०। इति। इति नवनाथात्मकत्वेन मूलविद्यां जपेत्।

ततस्तद्दिननित्याविद्यां यथाशक्ति जपेत्, इति कालनित्याजपः॥ ततो मूलादिब्रह्मरन्ध्रान्तं मूलविद्यामुद्यत्सूर्य सहस्त्रसमप्रभां ध्यायन् मूलविद्यामष्टोत्तरशतं जप्त्वा बहिराकाशस्थवह्निमण्डले पूर्वोक्तरूपां वाग्भवेश्वरीं ध्यायन् प्रातर्वाग्भवकूटमष्टोत्तरशतं जपेत्। ततः प्राणायामादिपूर्वकं कृतं जपं देव्यै निवेद्य प्रणम्य स्तुत्वा सूर्यमण्डलाद्वह्निमण्डलाच्च मूलदेवीं वाग्भवेश्वरीं च हृदये मूलाधारे च विसृज्य श्रीगुरुं प्रणमेत्॥ इति प्रातः सन्ध्याविधिः॥ अथ कर्मकालेषु गुरुध्यानमुक्तं रुद्रयामले "दीक्षाकाले यथारूपं स्वस्यानुग्रहकर्मणि। दृष्टं तत्तेन भावेन ध्यायन्नाह्निकमाचरेत्॥" इति गुरोरिति शेषः।

एतद्गुरुध्यानं प्रातःस्मरणातिरिक्तस्थलेषु ज्ञेयम्।

प्रातः सन्ध्येयमीशानि सर्वकर्मसु सर्वदा । कर्तव्या मंत्रिणा नित्यं मन्त्रसिद्धिसमृद्धये ॥१॥
प्रातःसन्ध्यां परित्यज्य देवतापूजनं चरेत् । अशुद्धः स दुराचारः सर्वकर्मबहिष्कृतः ॥२॥
प्रातः सन्ध्यां परित्यज्य देवपूजादिकं चरेत् । होमान् कृत्वा महेशानि नारकी जायते नरः ॥३॥
प्रातःसन्ध्यां परित्यज्य होमं वा तर्पणं शिवे । कुर्वन्नकारणं विप्रस्त्यजञ्श्वा च भवेद्ध्रुवम् ॥४॥
पिशाचो जायते देवी अपि वेदाङ्गपारगः । सन्ध्यानामपि सर्वासां प्रातः सन्ध्या गरीयसी ॥५॥

तस्मात्तां न त्यजेद्विप्रस्त्यजन्नरकमाप्नुयात्। इति त्रिपुरार्णववचनादियमवश्यं कर्तव्येति शिववचनम्। अथ घटिकापारायणत्वेन षष्टिजपं कुर्यात्। स च पञ्चभिर्दिवसैर्मातृकायाः षडावृत्तिरूपः॥

तथा तन्त्रराजे- (२५।१२)

आरभ्य भानोरुदयमेकशो घटिकाक्रमात्। एकैकं मातृकावर्णाः पञ्चाशद् परिवृत्तितः ॥१॥ इति।
जहां २ मूलं लिखा है वहां दो बीजाक्षर "ह्रीं श्रीं" का उच्चारण करें।

सूर्योदयकालेऽकारः उदेति। ततो द्वितीयघटिकादिपञ्चाशद् घटिकापर्यन्तासु घटिकासु आकारादिक्षकारान्ता वर्णा विसर्गस्वररहिताः स्वस्वघटिकोदयकाले समुद्यन्ति। तत एकपञ्चाशत्तमघटिकामारभ्य शिष्टदशघटिकासु अकारादिलृकारान्ता दश वर्णाः स्वघटिकोदयकाले समुद्यन्ति। इत्थं द्वितीयदिवसे सूर्योदयकाले एकार उदेति, ततः स्वघटिकोदयकाले ऐकाराद्या एकोनचत्वारिंशद्वर्णाश्चाकाराद्याः विंशतिवर्णाश्च समुद्यन्ति। तृतीयदिवसे सूर्योदये चकार उदेति, ततः स्वस्वघटिकोदयकाले छकारादिक्षकारान्ता (अकारादिणकारान्ताश्च) एकोनषष्टिवर्णाः समुद्यन्ति। चतुर्थदिवसे सूर्योदयकाले तकार उदेति, ततः (स्व) स्वघटिकोदयकाले थकारादिक्षकारान्ता अकारादिमकारान्ताश्च एकोनषष्टिवर्णाः समुद्यन्ति। पञ्चमदिवसे सूर्योदयकाले यकार उदेति, ततः स्वस्वघटिकोदयकाले यादिक्षकारान्ता (अकारादिक्षकारान्ता) श्चैकोनषष्टिवर्णा. समुद्यन्ति एवं पञ्चभिर्दिवसैर्मातृकायाः षडावृत्तिर्भवति॥ एवं क्रमेणैभिर्वर्णै घटिकापारायणाख्याः षष्टिजपः कार्यः॥ तत्प्रकारः प्रदर्श्यते– तत्राकारादिक्षान्ताः पञ्चाशद्वर्णा विसर्गरहिता दश दश भूत्वा पञ्च वर्गा अत एव तन्नामानो भवन्ति, तैः षष्टिजपः कार्य.।तत्प्रकारस्तु– २ मूलं तद्दिननित्याविद्या हंसः अं नमः।(एवं क्षान्तान् पञ्च वर्गान् जप्त्वा पुनरकारादि लृकारान्तं प्रथमं वर्गमावर्तयेत्। एवं षष्टिजपः। द्वितीयदिने) मूलं तद्दिननित्याविद्या हंसः एं०। एवं क्षान्तांश्चतुरो वर्गानावर्त्य पुनराद्यद्वितीयवर्गावावर्तयेत्। एवं षष्टिजपः।.तृतीयदिने २ मूलं तद्दिननित्याविद्या हंसः चं०। एवं क्षांतांस्त्रीन् वर्गान् (जप्त्वा पुनरकारादिणकारान्तान् त्रीन् वर्गा) नावर्तयेत्। एवं ६०। (चतुर्थदिने २ मूलं तद्दिननित्याविद्या हंसः टं०। एवं क्षान्तौ द्वौ वर्गौ जप्त्वा पुनः अकारादिमकारान्तान् चतुरो वर्गानावर्तयेत्। एवं ६०) पञ्चमदिने २ मूलं तद्दिननित्याविद्या हंसः यं०।

एवं क्षान्तं वर्ग जपित्वा पुनरकारादिक्षकारान्तान् पञ्चाशद्वर्णानावर्तयेत्। एवं षष्टिजपः। एवं षडावृत्तयः। ततः षष्ठे षष्ठे दिने पुनरकारादित आरभ्योक्तरीत्या घटिकापारायणजपमनवरत कुर्यात्॥ अत्राधुना वर्तमानसमये साधकैर्ज्योतिःशास्त्रोक्तप्रकारे गाहर्गणेन कलियुगस्य गतदिनानि ज्ञात्वा स्वक्रमारम्भदिनपर्यन्तं गणयित्वा पञ्चभिराहृत्योर्वरितदिनेनोदयाक्षरं ज्ञात्वा यस्मिन् दिने अकार उदयाक्षरं भवति तस्मिन् दिने आरभ्य घटिकापारायणं प्रोक्तक्रमेण कार्यमिति घटिकापारायणजपः प्रातरेव कार्यः॥

॥ अथ मध्याह्निक सन्ध्या ॥

तत्र प्राणायामादिसूर्यतर्पणपर्यन्तं प्रातः सन्ध्यावदेव विधाय बीजसन्ध्यां कुर्यात्। तद्यथा– तत्र मध्याह्नेऽनाहतचक्रे मूलविद्यायाः कामराजकूटं रक्तवर्णं ध्यायेत्। तत्तेजः सुषुम्नामार्गेण वहन्नासापुटाध्वना निःसार्य सूर्यमण्डले समावाह्य तदुद्भूतां कामेश्वरीं ध्यायेत्। यथा:

रक्तां सुरक्ताम्बरभूषणाढ्यां पाशांकुशाभीतिवरान् दधानाम्।
शुचिस्मितामुद्भटयौवनाढ्यां कामेश्वरीं संस्मरेत त्रिनेत्राम् ॥१॥

इति ध्यात्वा, २ कामराजकूटं श्रीत्रिपुराकामेश्वरीपा० इति त्रिः सम्पूज्य, पुनः कामराजकूटगायत्रीमुच्चार्य श्रीत्रिपुराकामेश्वर्यै अर्घ्य कल्पयामि स्वाहा इति त्रिरर्घ्याञ्जलिमुत्क्षिप्य पुनः कामराजकूटमुच्चार्य श्रीत्रिपुराकामेश्वरी पादुकां तर्पयामि इति त्रिः सन्तर्प्य, प्राणायामादिपुरासरं पूर्ववन्मातृकां विन्यस्य, प्राग्वत् तुरीयविद्यागायत्रीं जपित्वा कामकूटगायत्रीं जपेत्। सा यथा– **क्लीं त्रिपुरादेव्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्।** इति यथाशक्ति जपित्वा षट्त्रिंशत्तत्त्वात्मकत्वेन

****

मूलविद्यां जपेत् ॥

तद्यथा:

मध्याह्ने हृदयाम्भोजकर्णिके सूर्यमण्डले । कामराजात्मिकां देवीमर्ककोटिसमप्रभाम् ॥१॥
प्रसूनबाणपुण्ड्रेक्षुचापपाशाङ्कुशान्विताम् । परितश्चात्ममुख्याभिः षट्त्रिंशत्तत्त्वशक्तिभिः ॥२॥
रक्तमाल्याम्बरालेपभूषाभिः परिवारिताम् । युगनित्याक्षरमयीं घटिकावरणां स्मरेत् ॥३॥
पुष्पबाणेक्षुकोदण्डधराः शोणवपुर्धराः । हृत्पङ्कजे च ताः कामराजोपास्तिपरायणाः ॥४॥

इति देवीं ध्यात्वा, २ मूलविद्या तद्दिननित्याविद्या हंसः अं १६ शिवतत्त्वरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पाद०। २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः कं शक्तितत्त्वं०। २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः खं सदाशिवतत्त्वरू०। एवं गं ईश्वर तत्त्वरू०। घं शुद्ध विद्यातत्त्वरू०। ङं मायातत्त्वरू०। चं कलातत्त्वरू०। छं विद्यातत्त्वरू०। जं रागतत्त्वरू०। झंकालतत्त्वरू०। ञं नियतितत्त्वरू०। टंपुरुषतत्त्वरू०। ठंप्रकृतितत्त्वरू०। डंअहङ्कारतत्त्वरू०। ढंबुद्धितत्त्वरू०। णं मनस्तत्त्वरू०। तंश्रोत्रतत्त्वरू०। थं त्वक्तत्त्वरू०। दं चक्षुस्तत्त्वरू०। धं जिह्वातत्त्वरू०। नं घ्राणतत्त्वरू०। पं वाक्तत्त्वरू०। फं पाणितत्त्वरू०। बं पादतत्त्वरू०। भं पायुतत्त्वरू०। मं उपस्थतत्त्वरू०। यं शब्दतत्त्वरू०। रं स्पर्शतत्त्वरू०। लं रूपतत्त्व०। वं रसतत्त्व०। शं गन्धतत्त्व०। षं आकाशतत्त्व०। सं वायुतत्त्व०। हं तेजस्तत्त्व। ळं जलतत्त्व०। २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः क्षंपृथिवीतत्त्वरू०। इति षट्त्रिंशतत्त्वयोगेन मूलविद्यां जपित्वा, ततः कालनित्याविद्यामष्टोत्तरशतं जपित्वा, हृदयकमलमध्ये कामराजकूटं बालार्ककोटिप्रभं हृदयादिमूलाधारान्तं व्याप्तरश्मिकदम्बकं च ध्यानम्, कामराजकूटमष्टोत्तरशतवारं जपित्वा प्राणायामादिपूर्वकं जपं समर्प्य प्रणम्य मूलदेवीं कामेश्वरीं हृदये विसृजेत् ॥ इति मध्याह्नसन्ध्याविधिः ॥

॥ अथ सायंसन्ध्याविधिः ॥

तत्र प्राणायामादिसूर्यतर्पणान्तं प्राग्वद्विधाय बीजसन्ध्यां कुर्यात्। सायमाज्ञाचक्रे हक्षाख्ये चन्द्रमण्डले मूलविद्यायातृतीयकूटमुच्चार्य त्रिपुरामृतेश्वरीपा० इति गन्धादिभिस्त्रिः सम्पूज्य, वक्ष्यमाणतार्तीय कूटगायत्रीमुच्चार्य श्रीत्रिपुरामृतेश्वर्यै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा इति त्रिरर्घ्यं दत्त्वा। पुनस्तार्तीयकूटमुच्चार्य श्रीत्रिपुरामृतेश्वरीं तर्पयामि इति त्रिःसन्तर्प्य, प्राणायामादिपूर्विकां तुरीयविद्यागायत्रीं प्राग्वज्जप्त्वा शक्तिकूटगायत्रीं जपेत्॥ यथा-"२ सौः त्रिपुरादेव्यै विद्महे शक्तिकामेश्वर्यै धीमहि तन्नोऽमृता प्रचोदयात्।" इति शक्तिगायत्रीमष्टाविंशतिवारं जपित्वा सायाह्ने षोडशनित्यात्मकत्वेन मूलविद्यां जपेत् तद्यथा:

सायमाज्ञासरोजस्थचन्द्रे चन्द्रसमद्युतिम् । शक्तिबीजात्मिकां चापवाणपाशांकुशान्विताम् ॥१॥
युगनित्याक्षरां देवीं घटिकावरणां पराम् । चिन्तयित्वा भगवतीं नित्याभिः परिवारिताम् ॥२॥
पुस्तकं चाक्षसूत्रं च दधानाः स्मेरवक्त्रकाः । नित्याः षोडश चाज्ञायां सायंकाले तु संस्मरेत् ॥३॥

इति देवीं ध्यात्वा, (१) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः कामेश्वरीविद्यामुच्चार्य अं कामेश्वरीनित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपादुकां पूजयामि नमः ॥ (२) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः भगमालिनी विद्यामुच्चार्य आं भगमालिनीनित्या रूपिणीश्रीमहा०॥ (३) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः नित्यक्लिन्नाविद्यामुच्चार्य इं नित्यक्लिन्नानित्यारूपिणी श्री०॥ (४) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः भेरुण्डाविद्यामुच्चार्य ईं

भेरुण्डानित्यारूपिणी० ॥(५) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः वह्निवासिनीविद्यामुच्चार्य उं वह्निवासिनीनित्यारू० ॥ (६) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः वज्रेश्वरीविद्यामुच्चार्य ऊं वज्रेश्वरीनित्यारू० ॥ (७) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः शिवादूतीविद्यामुच्चार्य ॠं शिवादूतीनित्यारू० ॥(८) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः त्वरिताविद्यामुच्चार्य ॠं त्वरितानित्यारू० ॥(९) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः कुलसुन्दरीविद्यामुच्चार्य लृं कुलसुन्दरीनित्यारू० ॥(१०) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः नित्यानित्याविद्यामुच्चार्य लॄं नित्यानित्यारू० ॥(११) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः नीलपताकाविद्यामुच्चार्य एं नीलपताकानित्यारू० ॥(१२) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः विजयाविद्यामुच्चार्य ऐं विजयानित्यारू० ॥(१३) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः सर्वमङ्गलाविद्यामुच्चार्यं ओं सर्वमङ्गलानित्यारू० ॥(१४) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः ज्वालामालिनीविद्यामुच्चार्य औं ज्वालामालिनीनित्यारू० ॥ (१५) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः विचित्रानित्याविद्यामुच्चार्य अं विचित्रानित्यारू० ॥ (१६) २ मूलं दिननित्याविद्या हंसः पञ्चदशीविद्यामुच्चार्य अः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी नित्यारूपिणीश्री०, इति षोडशनित्यात्मकत्वेन जपित्वा प्राग्वत् कालनित्याविद्यां च जपित्वा, भ्रूमध्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं तृतीयकूटं शरच्चन्द्रकोटिनिभं ध्यायन्नष्टोत्तरशत तार्तीयकूटं जपेत्। ततः प्राणायामपूर्वकं जपं समर्प्य स्तुत्वा देवीं प्रणम्य सूर्यमण्डलस्थमूलदेवी ममृतेश्वरीं हृदि भ्रूमध्ये च विसृजेत् ॥ इति सायंसन्ध्याविधिः ॥

॥ ततोऽर्धरात्रे तुरीयसन्ध्यामुपासीत ॥

तुरीय गायत्री विशेष मन्त्रः - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं वाग्भवेशवरि विद्महे हसकहल ह्रीं कामेश्वरि च धीमहि सकल ह्रीं तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ॥

सायं यथार्कमण्डले देवीध्यानं विना प्राणायामाद्याचमनपर्यन्तं पूर्ववद्विधाय, सहस्रारकमले तुरीयकूटं मूलविद्यात्रयोदशाक्षररूपं (कएईल हसकहल सकल ह्रीं) पद्मरागसमप्रभं ध्यात्वा (ह्रीं) वहन्नासापुटेन तारकमण्डलाद्बहिः परमाकाशे समावाह्य तदुद्भूतां भगवतीं यथात्तरूपां ध्यायन् तुरीयकूटमुच्चार्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामिस्वाहेति त्रिरर्घ्यं दत्वा, पुनस्तुरीयकूटमुच्चार्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपादुकां सन्तर्पयामीति त्रिः सन्तर्प्य, प्राणायामादिपूर्वकं प्रागुक्तां तुरीयगायत्रीं यथाशक्ति जपित्वा कालनित्याविद्यामष्टोत्तर शतवार जपित्वा प्राणायामादिपूर्वकं जपं समर्प्य देवीं स्तुत्वा परमाकाशात् (ह्रीं त्रिपुरा देव्यै विद्महे शक्ति कामेश्वर्यै धीमहि तन्नो त्रिपुरे प्रचोदयात्) सहस्त्रदलकमलकर्णिकायामुद्वास्य कामकलारूपमात्मानं ध्यायेत् ॥ इति तुरीयसन्ध्याविधिः ॥ एतत्सन्ध्याचतुष्टयोपासनमेत

द्विद्योपासकानामावश्यकम्। तत्राप्यशक्तौ ध्यानरूपमेवार्धरात्रसन्ध्योपासनं कार्यमिति। अकृते द्वितीयदिने प्रायश्चित्तार्थमष्टोत्तरशतं मूलविद्यां जपित्वा पुनः कर्म कर्तुमधिकारी भवति, इति शिवशासनम् ॥ ''स्नानसन्ध्यार्चनालोपे जपेदष्टोत्तरं शत'' मिति तन्त्रराजवचनात्। जपेन्मूलविद्यामिति शेषः अत्र- सन्ध्यालोपो न कर्तव्यः शम्भोराज्ञैवमेव हि। दीक्षितः सन्ध्यया हीनो न दीक्षाफलमश्नुते ॥१ ॥

॥ सर्वसाधारण हेतु त्रिपुरसुंदरी संध्या प्रयोग: ॥

पूर्व में सुस्कृत में जो गायत्री मन्त्र प्रयोग दिया गया है, उसका सरलीकरण इस प्रकार से है-

॥ प्रात: सन्ध्या: ॥

मूलमन्त्र से आचमन करके मूलमन्त्र से ही तीन बार प्राणायाम करे। फिर सङ्कल्प करे-

ममोपात्तसमस्त दुरित क्षय द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं। देशकालौ संकीर्त्य) श्रीराजराजेश्वरी प्रीत्यर्थं (देवीमानरीत्या सङ्कल्प्य) श्रीविद्याप्रातः संध्यामुपासिष्ये।

**श्रीनाथादि गुरुत्रय गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्, सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।
वीरान् द्वयष्टचतुष्क षष्टि नवकं वीरावली पञ्चकं, श्रीमन्मालिनि मन्त्रराजसहितं वंदे गुरोर्मण्डलम् ॥**

श्रीगुरुपादुका मन्त्र से श्रीगुरुदेवता को प्रणाम कर, मूलमन्त्र से ऋष्यादि न्यास कर ध्यान करे। अपने आगे धेनुमुद्रा से जल को अमृतमय कर, मूलविद्या से आठ बार अभिमन्त्रित कर उस जल द्वारा बिन्दुसहित सोलह स्वरों – **अं नमः, आं नमः अंः नमः** से मार्जन करे। तत्पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर '**क**' से लेकर '**म**' तक मूलविद्यासमेत '**कं नमः खं नमः....मं नमः क-५ ह-६ स-४**' (क ५ = कएईल ह्रीं, ह ६ = हसकहल ह्रीं, स ४ = सकल ह्रीं) से अभिमन्त्रित कर आचमन करे। फिर '**य**' से '**क्ष**' पर्यन्त – '**यं नमः रं नमः**...क्षं नमः **क-५ ह-६ स-४**' से शिर का प्रोक्षण कर सूर्यमण्डल में ध्यान करे–

**सकुंकुमविलेपनामलिक चुम्बिकस्तूरिकाम्, समन्दहसितेक्षणां सशरचापपाशांकुशाम् ।
अशेषजन मोहिनीमरुण माल्यभूषाम्बराम्, जपाकुसुमभासुरां जप विधौ स्मरेदम्बिकाम् ॥
चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुंकुम रागशोणे, पुंड्रेक्षुपाशांकुश पुष्पबाणहस्ते नमस्ते जगदेकक्रमातः।**

ध्यान करने के बाद दाहिने हाथ में जल लेकर '**लं वं रं यं हं**' से तीन बार अभिमन्त्रित कर '**क-५ ह-६ स-४**' से भी तीन बार अभिमन्त्रित कर उस जल को बाँये हाथ के अंगुष्ठ व अनामिका से '**क-५ ह-६ स-४**' से अपने शिर का तीन बार प्रोक्षण करे। शेष जल को बांयें हाथ में रखकर उस तेजरूप जल को बांयें नासापुट से अन्दर खींचकर अपनी देह के अन्दर स्थित सकल कलुष के प्रक्षालन की भावना कर दाहने नासापुट से निकाल कर उस जल को फिर दाहिने हाथ में लेकर अपनी बांयीं तरफ जलती हुई वज्र शिला का ध्यान कर '४ (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं) **श्लूँ पशु हुँ फट्**' से उस शिला पर पटके। तब हाथ धोकर मूलविद्या से जल लेकर '**क-१५**' (त्रिपुरा मन्त्र) से सहस्रदलकमल से जो स्वर चल रहा हो, उससे उस जल को बायें हाथ में रखकर '**अमृत मालिनी स्वाहा**' मन्त्र से सब अंगुलियों से अपने शिर का तीन बार प्रोक्षण करे। ४ (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं) **क-५ आत्मतत्वं** शोधयामि **स्वाहा**, ४ **ह-६ विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा, ४ स-४ शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा**, ४ **स-४ शिवतत्वं** शोधयामि **स्वाहा**, ४ **ह-६ विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा, ४ क-५ आत्मतत्वं शोधयामि स्वाहा**, ४ **क-१५** (त्रिपुरा मन्त्र) **सर्वतत्वं शोधयामि स्वाहा**। तीन या नौ बार आचमन करे। अर्घ्य को अंजलि में लेकर खड़े होकर '**क-५ वाग्भवेश्वरि विद्महे, ह-६ कामेश्वरि च धीमहि, स-४ तन्नः शक्ति प्रचोदयात्, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकायै एषोऽर्घ्यः स्वाहा**' से तीन बार अर्घ्य देकर '**ह्रां ह्रीं ह्रूं हंसः श्रीसूर्य एष ते अर्घ्यः स्वाहा**' से सूर्य की तरफ मुख करके तीन बार अर्घ्याञ्जलि देकर '**क-१५ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः**' से सूर्य का तीन बार तर्पण कर '**ह्रां ह्रीं ह्रूं हंस श्रीसूर्यतर्पयामि नमः**' से सूर्य का तीन बार तर्पण कर मूलाधार में मूलविद्या के प्रथमकूट का कोटि विद्युत् के समान चिन्तन कर उस तेज का सुषुम्णा से ब्रह्मरन्ध्र में ले जाकर बहते हुये नासापुट से आकाश में वह्निमण्डल का आवाहन कर उस तेज से उत्पन्नवाग्भवेश्वरी का ध्यान करे–

**पीतां पीताम्बरां पीतस्रग् विभूषानुलेपनाम् । तडित्कोटिसमाभासां बालामक्षस्त्रगुज्ज्वलाम् ॥
पुस्ताभयकराम्भोजां वह्निपीठे निषेदुषीम् । वाग्मिनीं वाग्भवोद्भूतां त्रीक्षणां सुस्मितां स्मरेत् ॥**

तत्पश्चात् '**क-५ त्रिपुरा वागीश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः**' से गन्धपुष्पअक्षत से तीन बार पूजन करे। '**ऐं**

त्रिपुरादेवि विद्महे वाग्भवेश्वरि धीमहि तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्, श्रीत्रिपुरावागीश्वरी श्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा' से वाग्भव गायत्री का उच्चारण कर तीन बार अर्घ्यांजलि को ऊपर की ओर फेंक कर पुनः प्रथम कूट (क-५) का उच्चारण कर '**त्रिपुरा वागीश्वरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः**' से तीन बार तर्पण कर श्रीगुरुपादुका मन्त्र का ध्यान कर तीन बार प्राणायाम कर मातृका न्यास करे। फिर ऋष्यादिकर षडङ्गन्यास कर '**४ क-५ वाग्भवेश्वरि विद्महे, ह-६ कामेश्वरि च धीमहि, स-४ तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्**' ऐसी तुरीय गायत्री का, फिर '**ऐं त्रिपुरादेवि विद्महे, वाग्भवेश्वरि धीमहि, तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्**' ऐसी वाग्भव कूट गायत्री का और फिर मूलविद्या का, फिर वाग्भवकूट का यथाशक्ति जप करे।

॥ नाथपारायण ॥

प्रातः सन्ध्या के पश्चात् '**नाथ पारायण**' का सङ्कल्प कर ध्यान कर पारायण करे। मूलाधारस्थित चतुर्दलकमल में विद्युत्पटल के समान भासुर वर्णवाली, पुष्पवाणइक्षुकोदण्डपाश और अंकुश धारण करनेवाली, युगाक्षर और नित्याक्षरमयी भगवती के चारों ओर अपने करों में ज्ञानमुद्रा और वरमुद्रा को धारण किए हुए वाग्भव वीज '**ऐं**' की उपासना में तत्पर मूल पङ्कजस्थित योनिमण्डल में नवनाथों का ध्यान करे। यथा-

प्रातर्मूलाधारगते कमले वह्निमण्डले ,
वाग्वीजरूपां नित्यां तां विद्युत्पटलभासुराम् ।
पुष्पबाणेक्षुकोदण्ड पाशांकुशलसत्कराम् ,
स्वेच्छागृहीतवपुषं युगनित्याक्षरात्मिकाम् ।
घटिकावरणोपेतां परितः प्राञ्जलीनथ ,
ज्ञानमुद्रावर करान् वाग्भवोपास्ति तत्परान् ।
नवनाथान् स्मरेन्मूलपङ्कजे योनिमण्डले ॥

इस प्रकार ध्यान कर देवीमान वर्ष, मास और दिवस के उल्लेखपूर्वक नाथपारायण करे।

यथा- ॐ **ऐं ह्रीं श्रीं क-१५ (त्रिपुरा मन्त्र)** ङं अं अ ऊं विजया **हंसः** अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं **ह्रीं श्रीं** अं **प्रकाशानन्दनाथरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि** नमः। ४ (ॐ **ऐं ह्रीं श्रीं**) क-१५ ङंअं अ ऊं **विजया हंसः लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ह्रीं श्रीं लृं विमर्शानन्दनाथरूपिणी श्रीमहा०।४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः कं खं गं घं ङंह्रीं श्रीं कं आनन्दानन्दनाथ०**। ४ क-१५ ङंअं अ ऊं **विजया हंसः** चं छं जं झं ञं **ह्रीं श्रीं चं ज्ञानानन्दनाथ०। ४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः** टं ठं डं ढं णं **ह्रीं श्रीं** टं **सत्यानन्दनाथ०। ४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः** तं थं दं धं नं **ह्रीं श्रीं** तं **पूर्णानन्दनाथ०**। ४ क-१५ **ङंअं अ ऊं विजया हंसः** पं फं बं भं मं **ह्रीं श्रीं** पं **स्वभावानन्दनाथ०। ४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया** हंसः यं रं लं वं शं **ह्रीं श्रीं** शं यं **प्रतिभानन्दनाथ०। ४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः** षं सं हं लं क्षं **ह्रीं श्रीं** षं सुभगानन्दनाथ०।

इस प्रकार नवनाथात्मिका मूलविद्या का जप करे। इसके उपरान्त यथाशक्ति तद्‌दिननित्या विद्या का भी जप करे। इस प्रकार नाथपारायण समाप्त हो जाता है।

॥ घटिकापारायण ॥

सङ्कल्प में 'घटिका पारायण' का उल्लेख कर देना चाहिए। ॐ **ऐं ह्रीं श्रीं क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः**

****

यकारादिघटिकारूपिणी महात्रिपुरसुन्दरीं पूजयामि नमः। ४ क-१५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः रकारादिघटिकारूपिणी महात्रिपुरसुन्दरीं पूजयामि नमः। ४ क-१५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः लकारादिघटिकारूपिणी महात्रिपुरसुन्दरीं पूजयामि नमः।

इसी प्रकार क्षकारपर्यन्त तत्पश्चात् अकारादि से क्षकारादिपर्यन्त कर लेना चाहिए। घटिकापारायण **'अ ए च त य'** के क्रम से आरम्भ होता है। यहाँ **'य'** से जो वर्ष के प्रथम दिन की घटिका थी, उसी क्रम से लिख दिया गया है। इसी प्रकार उपर्युक्त क्रम से घटिकापारायण कर लेना चाहिए।

उपस्थान - **त्रिपुरा सर्वरूपाणि चराणि स्थावराणि च। सायं प्रातस्तु मध्याह्ने सर्वदा सा परा स्थिता॥ उत्तमे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतमूर्धनि। ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि! यथासुखम्॥ गुं गुरुभ्यो नमः। दुं दुर्गायै नमः। गं गणपतये नमः। क्षें क्षेत्रपालाय नमः। सं सरस्वत्यै नमः। पं परमात्मने नमः। श्रीशिवाचार्यवर्याद्यां शंकराचार्यमध्यमाम्, अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्। दिव्यश्रीपादुकां ध्यात्वा परितुष्याम्यहं सदा, श्रीगुरुं परमं वन्दे पश्चात् तं परमं गुरुम्। परमेष्ठि गुरुं वन्दे परात्परगुरुं भजे, आनन्दाख्यगुरुं वन्दे तच्छिष्यस्तत्कृपा वशः॥**

सम्प्रदायक्रम से श्रीनाथ आदि की पूजा कर परमेष्ठि गुरु, परापर गुरु, परम गुरु व गुरु के नाम के आगे **'आनन्दनाथ'** शब्द जोड़कर उच्चारण करे- **आनन्दस्वच्छन्दचिद्रूपानन्दगोत्रः** अमुकानन्द **नाथ अमुकशर्माऽहं भो अभिवादये।**

॥ इति प्रातः- सन्ध्याविधिः ॥

॥ मध्यान्हिक सन्ध्या ॥

प्राणायाम से सूर्यतर्पण तक प्रातःसन्ध्या के समान करे। अनाहत में मूलविद्या के द्वितीय कूट (हसकहल ह्रीं) को रक्तवर्ण जैसा ध्यान करे। उस तेज को सुषुम्णा मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में ले जा कर बहते हुये नासापुट के मार्ग से निकाल कर सूर्यमण्डल में आवाहन कर कामेश्वरी का ध्यान करे। यथा-

रक्तां सुरक्ताम्बरभूषणाढ्यां, पाशांकुशाभीतिवरान् दधानाम् ॥
शुचिस्मितामुत्कटयौवनाढ्यां, कामेश्वरीं संस्मरेत् त्रिनेत्राम् ॥

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह-६ (हसकहल ह्रीं) **श्रीत्रिपुरा कामेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः'** इस मन्त्र से तीन बार पूजन करे **'क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरि च धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्'** से कामराजकूट गायत्री का उच्चारण कर **'श्रीत्रिपुरा कामेश्वरी श्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा'** से तीन बार अर्घ्याञ्जलि देकर फिर कामराजकूट (कएईल ह्रीं) का उच्चारण कर **'श्रीत्रिपुरा कामेश्वरि श्रीपादुकां तर्पयामि** नमः' से तीन बार तर्पण कर श्रीगुरुपादुकाओं का ध्यान कर प्राणायाम तीन बार कर पहिले की भाँति मातृकान्यास कर फिर ऋष्यादि करषडङ्गन्यास करे। फिर **'४ क-५ वाग्भवेश्वरि विद्महे ह-६ कामेश्वरि च धीमहि स-४ तन्नः** शक्ति **प्रचोदयात्-'** से तुरीय गायत्री का, फिर **'क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरि च धीमहि तन्नः** क्लिन्ना **प्रचोदयात्'** से कामराजकूट गायत्री का, फिर मूलविद्या का, फिर कामराजकूट का यथाशक्ति जप करे।

॥ तत्त्वपारायण ॥

सङ्कल्प में तत्वपारायण का उल्लेख कर देना चाहिए। ध्यान-

मध्याह्ने हृदयाम्भोजकर्णिके सूर्यमण्डले, कामराजात्मिकां देवीमलक्तकुसुमारुणाम्

प्रसूनबाणपुण्ड्रेक्षुचाप पाशांकुशान्विताम्, परितः स्वात्ममुख्याभिः षट्त्रिंशत्तत्वशक्तिभिः । रक्तमाल्याम्बरालेपभूषाभिः परिवारिताम्, युगनित्याक्षरमयीं घटिकावरणां स्मरेत् ॥

इस प्रकार देवी का ध्यान कर तत्व पारायण करे- (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं = ४)

४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः अं शिवतत्व स्वरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। ४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः कं शक्तितत्वस्वरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी **श्रीपादुकां पूजयामि नमः। ४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः खं सदाशिवतत्वस्वरूपिणी** श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी **श्रीपादुकां पूजयामि नमः**। इसी प्रकार **४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः क्षं पृथ्वीतत्वस्वरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः** संपूर्ण मातृका तक कर लेना चाहिये। '**अं कं**' से लेकर '**क्षं लं**' पर्यन्त शिवशक्तिसदाशिव आदि से पृथ्वी तत्व पर्यन्त तत्व पारायण उपर्युक्त प्रक्रिया से किया जाता है। अब उपस्थान पूर्व के समान करे- **त्रिपुरा सर्वरूपाणि अभिवादये।**

॥ इति मध्याह्निक विधिः ॥

॥ सायं सन्ध्या ॥

प्राणायाम आदि से सूर्यतर्पणपर्यन्त प्रातः सन्ध्या की भाँति करे। फिर आज्ञा चक्र में '**ह क्ष**' के बीच में मूलविद्या के तृतीय कूट (सकल ह्रीं) को शुद्ध स्फटिक वर्ण जैसा ध्यान कर उस तेज को सुषुम्णा के मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में ले जाकर बहते हुये नासापुटाकाश में स्थित सोममण्डल का आवाहन कर उससे उत्पन्न अमृतेश्वरी वृद्धा का ध्यान करे। यथा-

शुक्लाम्बरालेपस्त्रग्विभूषाविभूषिताम्, जटाजूटत्रयां नेत्रत्रयोद्भासिमुखाम्बुजाम् । ईषत्स्फुटितदंष्ट्रां च भैरवीरूपमास्थिताम्, जरापलितसंकीर्णां लम्बमानपयोधराम् , पाशांकुशौ पुस्तकं च स्फटिकाक्षस्त्रजं करैः, दधानां शक्तिवीजोत्थां पूर्णेन्दोर्मण्डले स्थिताम् । ध्यायेदाद्यां परां शक्तिमद्भिर्निषेविताम्, भोगमोक्षप्रदां शान्तामनन्ताममृतेश्वरीम् ॥

अर्थात् पूर्णेन्दुमण्डल में शक्तिबीज से समुत्थित, शुक्लवस्त्रा, शुक्लालङ्कारयुक्ता, तीन नेत्र और तीन जटाजूटवाली, भैरवीरूप में स्थित, जरा से पलित, लटकते हुये पयोधरों वाली आद्या परमाशक्ति भोगमोक्षप्रदा शान्ता अमृतेश्वरी का ध्यान करना चाहिये। '**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स-४ श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः**' इस मन्त्र से तीन बार पूजन कर फिर '**सौः त्रिपुरादेवि विद्महे शक्तीश्वरि च धीमहि, तन्नोऽमृता प्रचोदयात्**'-इस तीसरी गायत्री मन्त्र का उच्चारण कर '**श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरी श्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा**' इस मंत्र से तीन बार अर्घ्यांजलि देकर फिर शक्तिकूट का उच्चारण कर '**श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः**' इस मन्त्र से तीन तर्पण कर श्रीगुरुपादुकाओं का ध्यान कर तीन बार प्राणायाम करे। फिर पहले की भाँति मातृकान्यास कर पुनः ऋष्यादि करषडङ्ग न्यास करे। तत्पश्चात् '**४ क-५ वाग्भवेश्वरि विद्महे ह-६ कामेश्वरि च धीमहि स-४ तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्**' इस तुरीय गायत्री का तथा '**सौः त्रिपुरादेवि विद्महे शक्तीश्वरि च धीमहि तन्नोऽमृता प्रचोदयात्**'- इस शक्ति कूट गायत्री का, फिर मूलविद्या का, फिर शक्तिकूट का जप करे। सन्ध्या के पश्चात् तिथिनित्या के पारायण का सङ्कल्प कर पारायण करे।

॥ नित्या पारायण ॥

सङ्कल्प में तिथिनित्यापारायण का योग कर ले।

१-४ (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं) क- १५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं

कामेश्वरीनित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। २-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं में ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें हीं आं भगमालिनी नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। ३-४ क १५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः इं ओं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्ना नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। ४-४ क-१५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः ईं ओं क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डा नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। ५-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः उं ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनी नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी० ॥ ६-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरी नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी०। ७-४ क-१५ ङं अं अ ऊं विजया हंसः ॠं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ॠं शिवदूती नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुर०। ८-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः ॠं ओं ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरिता नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुर०। ९-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः लृं ऐं क्लीं सौः लृं कुलसुन्दरी नित्यारूपिणी श्रीमहा०। १०-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः लृं हस्क्लडैं हस्लडीं हस्क्लडौः लृं नित्यारूपिणी श्रीमहा०। ११-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः एं ह्रीं फ्रें स्त्रूं कों आं क्लीं ऐं व्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं ऐं नीलपताका नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुर०। १२-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः ऐं भ्मूदूं ऐं विजया नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुर०। १३-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः ओं स्वौं ओं सर्वमंगला नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुर०। १४-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः औं ओं नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं र र र र र र र र हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनी नित्यारूपिणी श्रीमहा०। १५-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः अं च्क्रौं अं चित्रा नित्यारूपिणी श्रीमहा०। १६-४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः अः क-१५ अः ललिता महानित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः। अब उपस्थान प्रातः सन्ध्यावत् करे- **त्रिपुरा सर्वरूपाणि.....अभिवादये ॥**

॥ इति सायंसन्ध्या विधिः ॥

॥ तुरीय संध्या ॥

प्राणायाम आदि से तत्वआचमन पर्यन्त प्रातः सन्ध्यावत् करे। सहस्त्रार कमल में पद्मराग के समान प्रभावाले मूलविद्या के त्रयोदशाक्षररूप तुरीय कूट का ध्यान कर बहते हुये नासापुट तारकमण्डल में परमाकाश में आवाहन कर उससे उत्पन्न तेजरूप भगवती का ध्यान करे। '**हसकल हसकहल सकलह्रीं**' इस तुरीय कूट का उच्चारण कर '**श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः**' इस मन्त्र से तीन बार पूजन कर फिर '**क-५ वाग्भवेश्वरि विद्महे, ह-६ कामेश्वरि च धीमहि स-४ तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्**' इस तुरीय गायत्री का उच्चारण करे। फिर '**श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा**' इस मन्त्र से तीन बार अर्घ्य देकर फिर तुरीय कूट का उच्चारण कर '**श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां तर्पयामि**' इस मन्त्र से तीन बार तर्पण कर श्रीगुरुपादुका का उच्चारण कर फिर तुरीय गायत्री का, फिर मूलविद्या का, फिर तुरीयकूट का यथाशक्ति जप करे।

|| नामपारायण ||

सन्ध्या के पश्चात् नामपारायण का सङ्कल्प कर नामपारायण का ध्यान करना चाहिये। यथा-

रक्तां रक्ताम्बरां रक्तस्त्रग्विभूषानुलेपनाम् ।
पाशांकुशेक्षुकोदण्ड प्रसूनविशिखां स्मरेत् ॥

इस प्रकार हृदय में कालनित्या का ध्यान कर पुनः हृदय में कालचक्र के मध्य में श्रीचक्र की भावना कर कालनित्याओं से वेष्टित पाश, अंकुश, इक्षु, कोदण्ड को धारण करनेवाली रक्तवर्णा, रक्ताम्बरा, रक्तमाल्यविभूषणा महात्रिपुरसुन्दरी का ध्यान करे।

यथा - **आई पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वि त्रिक्रमादक्षरैः। काद्यैः** क्षान्तगतैः **स्वरादिभिरथ क्षान्तैश्च तैः सस्वरैः॥ नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्तगुह्यानि ते। तेभ्यो भैरवपत्नि! विंशतिसहस्त्रेभ्यः परेभ्यो नमः॥**

निम्नलिखित प्रत्येक मन्त्र के आदि में '**४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः अ**' और अन्त में '**हंसः**' जोड़ कर पारायण करे यथा- '**४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः** अ' काई हंसः। **खाई, गाई, घाई, ङाई, चाई, छाई, जाई, झाई, ञाई, टाई, ठाई, डाई, ढाई, णाई, ताई, थाई, दाई, धाई, नाई, पाई, फाई, बाई, भाई, माई, याई, राई, लाई, वाई, शाई, षाई, साई, हाई, ळाई, क्षाई**। अर्थात् '**४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः अ काई हंसः**' से '**अ क्षाई हंसः**' तक=३५। **४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः आ काई हंसः**' से '**आ क्षाई हंसः**' तक = ३५॥ '**४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः इ काई हंसः**' से '**इ क्षाई हंसः**' तक=३५॥ **४ क-१५ ङंअं अ ऊँ विजया हंसः ई काई हंसः**' से '**क्षाई हंसः**' तक=३५॥ इसी प्रकार क्रम से..... '**अः काई हंसः' अः क्षाई हंसः** तक= ३५ × १६ = ५६०। यह पहिले दिन का नामपारायण हुआ।

दूसरे दिन का पारायण - '**४ क-१५ ङंअं अ विजया** हंसः **अ क काई हंसः**' से (शेष मातृका) '**अ क क्षाई हंसः**' = ३५॥ '**४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः** आ क काई हंसः '**से** (शेष मातृका) '**आ क क्षाई हंसः**' =३५। इसी प्रकार क्रम से '**४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया** हंसः **अः क काई हंसः**' से '**अः क क्षाई हंसः**' तक = ३५ × १६ = ५६०

तीसरे दिन का पारायण- '**४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया** हंसः **अ ख काई हंसः**' से (शेष मातृका तक)'**अ ख क्षाई हंसः**' = ३५॥ '**४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः** आ ख **काई हंसः**' से '**आ ख क्षाई हंसः**'= ३५। इसी प्रकार क्रम से '**४ क-१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः अः ख काई हंसः**' से '**अः ख क्षाई हंसः**' तक = ३५ × १६ = ५६० इसी प्रकार क्रम से ३६ दिनों का पारायण समझ लेना चाहिये। ३६ दिन के ५६० × ३६ = २०,१६० नाम हुये। यदि पहिले दिन के नामपारायण में '**४ क-१५ ङंअं** अ ऊं **विजया हंसः अ आई हंसः**' से '**अ क्षाई**' तक = ३६ के क्रम से प्रारम्भ किया जाये, तो पहिले दिन ५७६ नाम हुये और इसी प्रकार ३६ दिन के २०,७३६ नाम हुये।

|| मन्त्र पारायण ||

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती, काली कला मालिनी। मातङ्गी विजया जया भगवती, देवी शिवा शाम्भवी ॥ शक्तिः शङ्कर वल्लभा त्रिनयना, वाग्वादिनी भैरवी। ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारी ह्यसि ॥

माया - '**ह्रीं**', कुण्डलिनी - '**ऐं**', क्रिया - '**क्लीं**' मधुमती-मातृका वर्ण। मातृका चार प्रकार से ली जाती है-

(१) **शुद्ध मातृका** – **'अ आ'** से **'ल, क्ष'** पर्यन्त।

(२) **बिन्दुयुक्त** – **'अं आं'** से **'लं क्षं'** पर्यन्त।

(३) **विसर्गयुक्त** – **'अः आः'** से **'लः क्षः'** पर्यन्त।

(४) **बिन्दुविसर्गयुक्त** – **'अंः आंः'** से **'लंः क्षंः'** पर्यन्त।

शक्ति = **सौः**, शङ्कर वल्लभा = **ह्स्त्रीं**, त्रिनयना = **वौषट्**, वाग्वादिनी = **वद वद वाग्वादिनी स्वाहा**, भैरवी = **ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौंः**, ह्रींकारी = **ह्रीं**, त्रिपुरा = **क-१५**, परापरमयी = **ह्सौः स्हौः**, माता = **ह्स्क्लर्ड्ँ ह्स्क्लर्ड्ीं ह्स्क्ल्र्डौः** कुमारी = **ऐं क्लीं सौः**। इस प्रकार से जप-क्रम आरम्भ करे।

॥ अथ त्रिपुरसुन्दरी तान्त्रिकसंध्या विधानम्॥

त्रिपाद गायत्री का संध्या प्रयोग सर्वजन हेतु सुलभ है। शाक्तों में ललिता त्रिपुर सुन्दरी मंत्र भी पंचदशीगायत्री के नाम से जाना जाता है। गायत्री वरिवस्या रहस्य में भी लिखा है।

राष्ट्रगुरु श्री १००८ स्वामी जी दतिया ने तांत्रिक उपासना हेतु तांत्रिक पंचाङ्ग का प्रकाशन किया। उसमें संवत्सर आदि के नाम तंत्र संकेत में दिये गये है। अतः संकल्प में उनके नाम को प्रयुक्त करे।

घटिकापारायण व नाम पारायण में इस पंचाङ्ग की आवश्यकता विशेष है। अतः जैसा साधन उपलब्ध हो उसी अनुसार संध्या प्रयोग करे।

॥ प्रातः सन्ध्या॥

सर्व प्रथम **श्रीनाथादि गुरुत्रयं** द्वारा गुरुमण्डल का ध्यान करें।

जलपात्र को धेनुमुद्रा से मूलमंत्र द्वारा अमृतमय करे। पश्चात् १६ स्वरों से अपना मार्जन करे- **अं नमः, आं नमः, ... अः नमः**। दाहिने हाथ में जल लेकर मूल मंत्र सहित क से म तक व्यंजनों से अभिमंत्रित कर आचमन करे **कं नमः, खं नमः,........ मं नमः कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं**।

पश्चात् **यं नमः रं नमः .... क्षं नमः कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं** से शिर पर प्रोक्षण करे।

सूर्यमण्डल में ध्यान करे-

सकुंकुम विलेपनामलिक चुम्बिकस्तूरिकां
समन्द हसितेक्षणां स शर चाप पाशांकुशाम्।
अशेषजनमोहिनीमरुणमाल्य भूषाम्बरां
जपाकुसुमभासुरां जप विधौ स्मरेदम्बिकाम्॥
चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुंकुमरागशोणम्।
पुण्ड्रेक्षु पाशांकुश पुष्पवाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः॥

दाहिने हाथ में जल लेकर **लं वं रं यं हं** से ३ बार अभिमन्त्रित करें। मूलमन्त्र से ३ बार अभिमन्त्रित करें। पश्चात् बांये हाथ की अनामिका व अंगुष्ठ से मूल मन्त्र से शिर पर ३ बार प्रोक्षण करें। पश्चात् बाँयें हाथ में जल लेकर वामनासा

से जल को खींचे शरीर में स्थित पाप कलुष को भस्मीभूत की भावना करके दाहिनी नासा से दांये हाथ से लेकर वज्रशिला का ध्यान कर भूमि पर गिरायें।

मन्त्र – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्लीं पशु हुं फट्॥

सहस्त्रदल में ध्यान करे मूलमंत्र जपते हुये बाँये हाथ में लिये हुये जल पर छोड़े एवं सभी अंगुलियों से शिर पर ३ बार प्रोक्षण करे।

मंत्र – अमृतमालिनी स्वाहा।

पश्चात् आचमन करे – **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकहल ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकल ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकहल ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलमंत्र सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।**

सूर्य मण्डल में देवी का ध्यान कर अर्घ देवें।

कएईल ह्रीं वाग्भवेश्वरि विद्महे हसकहल ह्रीं कामेश्वरि च धीमहि सकल ह्रीं तन्नः प्रचोदयात्। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकायै एषोऽर्घ्यः स्वाहा। तीन बार अर्घ देवे।

फिर ३ बार सूर्य को अर्घ देवे – **ह्रां ह्रीं ह्रूं हंसः श्रीसूर्य एष ते अर्घ्यः स्वाहा।**

इसके बाद ३-३ बार त्रिपुरसुन्दरी व सूर्य का तर्पण करे।

मूलमंत्र – श्रीमहासुन्दरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः। ह्रां ह्रीं ह्रूं हंसः श्रीसूर्यतर्पयामि नमः।

कएईल ह्रीं मंत्र जप करते हुये कुण्डलिनी को ब्रह्मरन्ध्र में ले जाये। दिव्य अग्निमण्डल में वागेश्वरि का ध्यान करे।

॥ ध्यानम् ॥

पीतां पीताम्बरां पीतस्त्रग विभूषानुलेपनाम् ।
तडितकोटिसमाभासां बालामक्षस्त्रगुज्ज्वलाम् ॥
पुस्ताभयकरांभोजा वह्निपीठे निषेदुषीम् ।
वाग्मिनीं वाग्भवोद् भूतांत्रीक्षणां सुस्मितां स्मरेत् ॥

गंधाक्षत् पुष्प से पादुका पूजन करे – **कएईल ह्रीं त्रिपुरा वागीश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।**

ऐं त्रिपुरादेवि विद्महे वाग्भवेश्वरि धीमहि तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्। श्रीत्रिपुरावागीश्वरी श्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा। इस मन्त्र से ३ बार ऊपर जल उछाल कर अर्घ्य देवे।

कएईल ह्रीं त्रिपुरा वागीश्वरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः से तर्पण करे। फिर गुरु पादुका ध्यान कर प्राणायाम करे। मातृकान्यास करें।

फिर तुरीय गायत्री – **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं वाग्भवेश्वरि** विद्महे **हसकहल ह्रीं कामेश्वरि च धीमहि सकल ह्रीं तन्न शक्तिः प्रचोदयात्।**

तथा वाग्भवगायत्री – **ऐं त्रिपुरा देवि विद्महे वाग्भवेश्वरि धीमहि तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्।**

इस प्रकार जप करे। मूल विद्या तथा **कएईल ह्रीं** का यथा शक्ति जप करे।

॥ नाथ पारायण ॥

यदि तंत्रोक्त पंचांग होतो वर्ष, मास, दिवस के तंत्रोक्त नाम से अथवा प्रचलित पंचांग के अनुसार संकल्प करे। प्रातः संध्या में मूलाधार में चतुर्दल में महाशक्ति व उसमें स्थित योनिमण्डल में नवनाथों का ध्यान करे।

॥ ध्यानम् ॥

प्रातर्मूलाधारगते कमले वह्निमण्डले,
वाग्वीजरूपां नित्यां तां विद्युतपटलभासुराम् ।
पुष्पवाणेशु कोदण्ड पाशांकुशलसत् कराम्,
स्वेच्छागृहीत वपुषं युग नित्याक्षरात्मिकाम् ॥
घटिकावरणोपेतां परितः प्राञ्जलीनाथ,
ज्ञानमुद्रा वरकरान् वाग्भवोपास्ति तत्पराम् ।
नवनाथान् स्मेन्मूलपङ्कजे योनिमण्डले ॥

आगे पूजा विधान में संकेत ४ का अर्थ है **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं** तथा १५ का अर्थ त्रिपुरसुन्दरी का पंचदशी मंत्र से समझे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क१५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः अं आं ....ॠं ॠं ह्रीं श्रीं अं प्रकाशानन्दनाथरूपिणि श्रीमहासुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क १५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ह्रीं श्रीं लृं विमर्शानन्दनाथरूपिणि...........।

४ क १५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः कं ....ङंह्रीं श्रीं कं आनन्दानाथरूपिणि...........।

४ क १५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः चं ....ञं ह्रीं श्रीं चं ज्ञानानन्दनाथरूपिणि ....।

४ क १५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः टं ....णं ह्रीं श्रीं टं सत्यानन्दनाथरूपिणि...........।

४ क १५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः तं ....नं ह्रीं श्रीं तं पूर्णानन्दनाथरूपिणि...........।

४ क १५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः पं ....मं ह्रीं श्रीं पं स्वभावानन्दनाथरूपिणि...........।

४ क १५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः यं .... शं ह्रीं श्रीं यं शं प्रतिभानन्दनाथरूपिणी ....।

४ क १५ ङंअं अ ऊं विजया हंसः षं .... क्षं ह्रीं श्रीं षं सुभगानन्दनाथरूपिणि...........।

॥ घटिका पारायण ॥

तांत्रिक पञ्चाङ्ग में वर्ष प्रारंभ की घटिका **अ, ए, च, त, य** के क्रम से प्रारम्भ होती है। माना कि वर्षारम्भ के **प्रथम दिन य घटिका** थी तो पारायण इस प्रकार होगा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क १५ ङंअं अ ऊं विजया हंस यकारादि घटिका रूपिणी महात्रिपुरसुन्दरी पूजयामि नमः।

इसी तरह सब जगह **ॐ ऐं ह्रीं**........ **हंस, रकारादि** ...., लकारादि........ से क्षकारादि तक करे। पुनः **अकार** से **क्षकार** तक पूजन करे।

उपस्थान

त्रिपुरा सर्वरूपाणि चराणि स्थावराणि च । सायं प्रातस्तु मध्याह्ने सर्वदा सा परा स्थिता ॥

उत्तमे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतमूर्धनि । ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छदेवि यथासुखम् ॥

गुं गुरुभ्यो नमः। दुं दुर्गायै नमः। गं गणपतये नमः। क्षं क्षेत्रपालाय नमः। सं सरस्वत्यै नमः। पं परमात्मने नमः॥

श्रीशिवाचार्यं वर्याद्यां शंकराचार्य मध्यमाम् । अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरु परम्पराम् ॥
दिव्यपादुकां ध्यात्वा परितुष्याम्यहं सदा । श्रीगुरुं परमं वन्दे पश्चात् तं परमं गुरुम् ॥
परेमिष्ठि गुरुं वन्दे परात्पर गुरुं भजे । आनन्दाख्य गुरुं वन्दे तच्छिष्यस्तत् कृपा वशः ॥

अपनी परम्परा के चारों गुरु – **परमेष्ठिगुरु, परापरगुरु, परमगुरु, एवं स्वगुरु नाम** के साथ **अमुकानन्दनाथ** जोड़कर प्रणाम कर अभिवादन करे।

आनन्द स्वच्छन्द चिद्रूपानन्द-गोत्र अमुकानन्दनाथ (स्वदीक्षानाम) अमुकशर्माऽहं भो अभिवादये।

॥ इति प्रातः सन्ध्या विधि ॥

॥ मध्याह्निक सन्ध्या ॥

अनाहत चक्र में **हसकहल ह्रीं** का रक्तवर्ण का ध्यान करे। उस तेज को ब्रह्मरंध्र में ले जावे तथा उस तेज का श्वांस छोड़ते हुये सूर्यमण्डल में स्थापित कर कामेश्वरी का ध्यान करे।

॥ ध्यानम् ॥

रक्तां सुरक्ताम्बर भूषणाढ्यां पांशाकुशाभीति वरान् दधानाम् ।
शुचिस्मितामुत्कट यौवनाढ्यां कामेश्वरीं संस्मरेत् त्रिनेत्राम् ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकहल ह्रीं श्रीत्रिपुरा कामेश्वरीं श्रीपादुकां पूजयामि नमः। से पादुका पूजन करे तथा ३ बार अर्घ्य देवे। **क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरि च धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्। श्री त्रिपुरा कामेश्वरी श्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा।**

हसकहल ह्रीं श्रीत्रिपुरा कामेश्वरि श्रीपादुकां तर्पयामि।

३ बार तर्पण करे। गुरु पादुका स्मरण कर प्राणायाम करे। मातृकान्यास करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं वाग्भवेश्वरि विद्महे हसकहल ह्रीं कामेश्वरि च धीमहि सकल तन्न शक्ति प्रचोदयात्। इस तुरीय गायत्री के बाद – **क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरि च धीमहि तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्। इस मंत्र का जप करे। फिर हसकहल ह्रीं** एवं मूल मंत्र के यथा शक्ति जप करे।

॥ तत्त्व पारायण ॥

तांत्रिक पंचाङ्ग हो तो तद्दिन का तत्त्व का भी संकल्प संध्या में करे। देवी का ध्यान कर तत्त्व पूजन करे।

मध्याह्ने हृदयाम्भोजकर्णिके सूर्यमण्डले । कामराजात्मिकां देवीमलक्त कुसुमारुणाम् ॥
प्रसूनवाण पुण्ड्रेक्षु चाप पाशांकुशान्विताम् । परितः स्वात्ममुख्याभि षट्त्रिंशत् तत्व शक्तिभिः ॥
रक्तमाल्याम्बरालेप भूषाभिः परिवारिताम् । युगनित्याक्षरमयीं घटिकावरणां स्मरेत् ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं....ङंअं अः ऊं विजया हंसः अं शिवतत्त्वरूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इसी तरह हर तत्व के साथ **ॐ ऐं ....हंसः .... कं शक्तितत्त्वरूपिणी, खं सदाशिवतत्त्वरूपिणी**, एवं **क्षं पृथ्वी तत्त्वरूपिणी, तथा अं कं ....लं क्षं शिवशक्ति तत्त्वरूपिणी** का पादुका पूजन करे।

प्रातः सन्ध्या के समान उपस्थान करे।

श्रीत्रिपुरा सर्वरूपाणि अभिवादये।

॥ इति मध्यानिक सन्ध्या विधि ॥

॥ सायं सन्ध्या ॥

आज्ञा चक्र में **ह क्ष** के बीच शक्तिकूट **सकल ह्रीं** का शुद्धस्फटिक वर्ण का ध्यान करे। उस तेज को ब्रह्मरन्ध्र में ले जाकर पुनः नासापुट मार्ग से सोम मण्डल में स्थापित कर **अमृतेश्वरि** का वृद्धा रूप में ध्यान करे।

॥ ध्यानम् ॥

शुक्लाम्बरालेपस्त्रग विभूषा विभूषिताम् । जटाजूटश्रयां नेत्रत्रयोद्भासि मुखाम्बुजाम् ॥
ईषत् स्फुटित दंष्ट्रां च भैरवीरूपमास्थिताम् । जरापलित संकीर्णां लंबमान पयोधराम् ॥
पाशांकुशौ पुस्तकं च स्फटिकाक्षस्त्रजं करैः । जरापलित संकीर्णां लम्बमान पयोधराम् ॥
ध्यायेदाद्यां पराशक्तिं अद्भिर्निषेविताम् । भोगमोक्षप्रदां शान्तामनन्ताममृतेश्वरीम् ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकल ह्रीं श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः से पूजन करे। सौः त्रिपुरादेवि विद्महे शक्तीश्वरि च धीमहि तन्नोऽमृता प्रचोदयात्।

गायत्री मंत्र बोलकर ३ बार अर्घ्य प्रदान करे। **श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरी श्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा।**

सकल ह्रीं श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः से तर्पण कर गुरुपादुकाओं का ध्यान कर प्राणायाम कर मातृकान्यास करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं वाग्भवेश्वरि विद्महे हसकहल ह्रीं **कामेश्वरि च धीमहि सकल ह्रीं तन्न शक्तिः प्रचोदयात्।**

इस तुरीय गायत्री के बाद – **सौःत्रिपुरादेवि विद्महे शक्तीश्वरि च धीमहि तन्नोऽमृता प्रचोदयात्।** इस शक्तिकूट का एवं मूलविद्या का जप करे।

॥ नित्यापारायण ॥

१५ तिथि की १५ नित्यायै है। अतः तिथि नित्यापारायण का संकल्प करे। शुक्ला प्रतिपदा से गणना व कृष्णा प्रतिपदा से विलोम गणना करें।

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङंअं अ ऊं विजया हंसः अं ऐं सकल ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरी नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

२ ॐ ऐं ....हंसः आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे

क्लेदय द्रावय अमोघे क्षुभ क्षोभय सर्वतत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं में ब्लूं हें ब्लूं क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनी नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ ॐ ऐं .... हंसः ईं ओं ह्रीं नित्याक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्ना नित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुर.......नमः।

४ ॐ ऐं .... हंसः ईं ओं क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डा नित्यारूपिणी....... नमः।

५ ॐ ऐं .... हंसः ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनी नित्यारूपिणी....... नमः।

६ ॐ ऐं .... हंसः ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरी नित्या .... नमः।

७ ॐ ऐं .... हंसः ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूती नित्या....... नमः।

८ ॐ ऐं .... हंसः ॠं ओं ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरिता नित्या....... नमः।

९ ॐ ऐं .... हंसः लृं ऐं क्लीं सौः लृं कुलसुन्दरी नित्या....... नमः।

१० ॐ ऐं .... हंसः लॄं हस्क्लड्रैं ह्स्ल्री ड्रीं ह्स्क्लरडौ लॄं नित्या....... नमः।

११ ॐ ऐं .... हंसः ऐं ह्रीं फ्रें स्त्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं ऐं नीलपताका नित्या....... नमः।

१२ ॐ ऐं .... हंसः ऐं भ्मूदूं ऐं विजया नित्या....... नमः।

१३ ॐ ऐं .... हंसः ओं स्वौं ओं सर्वमङ्गला नित्या....... नमः।

१४ ॐ ऐं .... हंसः औं ओं नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहार कारिके जातवेदसे ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा ॐ ज्वालामालिनी नित्या....... नमः।

१५ ॐ ऐं .... हंसः अं च्क्रौं अं चित्रा नित्या....... नमः।

१६ ॐ ऐं .... हंसः अः क १५ अः ललितामहानित्यारूपिणी....... नमः।

(सोलहवीं कला अमावस को होती है। विचित्रा कला नाम भी अमाकला का है)

प्रातः संध्या की तरह उपस्थान कर अभिवादन करे – **श्रीत्रिपुरा सर्वरूपाणि श्रीत्रिपुरसुन्दरी पादुकां अभिवादये।**

॥ तुरीय संध्या ॥

सहस्त्रार में पद्मराग वर्ण के तुरीय कूट (१३ अक्षर का मंत्र) '' **हसकल हसकहल सकल ह्रीं** '' का उच्चारण करें तथा ''**श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामिनमः** '' से ३ बार पूजन करे।

कएईल ह्रीं वाग्भवेश्वरि विद्महे हसकहल ह्रीं कामेश्वरि च धीमहिं सकल ह्रीं तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

इस तुरीय गायत्री का जप कर बाद में अर्घ्य प्रदान करे व तर्पण करे।

श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा। हसकल हसकहल सकल ह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकांतर्पयामि।

फिर तुरीय गायत्री व मूल मंत्र का जप करे।

॥ मंत्र पारायण ॥

मंत्र पारायण का मन्त्रोद्धार दिया गया है उसके आधार पर बीजों से युक्त कर मंत्र जप करे।

माया कुण्डलिनी क्रियां मधुमती काली कला मालिनी ।

मातङ्गीं विजया जया भगवती देवी शिवा शांभवी ।
शक्तिः शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारी ह्यसी ॥
माया ह्रीं, कुण्डलिनीं ऐं, क्रिया क्लीं, मधुमती मातृकावर्ण।

मातृकावर्ण चार प्रकार से है। **शुद्धमातृका** - अ आ.....ल क्ष तक। **विन्दुयुक्त** - अं आं....लंक्षं पर्यन्त। **विसर्गयुत** - अः आः.....लः क्षः तक। **विन्दु विसर्गयुत** - अंः आंः.....लंः क्षंः पर्यन्त।

शक्ति=सौः, शंकरवल्लभा=ह्स्त्रीं, त्रिनयना=वौषट्। वाग्वादिनी=वद वद वाग्वादिनी स्वाहा, भैरवी=ह्स्त्रैं ह्स्क्लीं ह्स्त्रौः। ह्रींकारी=ह्रीं, त्रिपुरा=कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं परापरमयी ह्सौंः स्हौंः। माता हस्क्लूडैं हस्क्लडीं हस्क्लडौं। कुमारीः ऐं क्लीं सौः।

इस तरह अन्य विधाओं से पुटित कर मूलमंत्र जप करे।

॥ नाम पारायण ॥

विधि श्री विद्यार्णवतंत्र में विस्तृत है। साधकों को उसको करने व समझने में भी कठिनाई रहेगी। **हृदय में कालनित्या** का ध्यान करे।

रक्तां रक्ताम्बरां रक्तस्रग विभूषानुलेपनाम् ।
पाशांकुशेक्षु कोदण्ड प्रसून विशिखां स्मरेत् ॥

कालचक्र में श्रीचक्रयुत त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करे।

आईपल्लवितै परस्परयुतैर्द्वि त्रिक्रमादक्षरैः। काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिरथ तैः स स्वरैः। नामानि त्रिपुरे भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते। तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्त्रेभ्यः परेभ्यो नमः॥

प्रत्येक मंत्र के **आदि में " ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पंचदशी त्रिपुरा मंत्र हंसः विजया "** जोड़कर परायण करे यथा- **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल विजया हंसः अ काई हंसः**। प्रथम दिन स्वर युक्त के साथ **काई हंसः से खाई गाई....क्षाई हंस** तक युक्त मंत्र करे इसमें ३५ बार मंत्र उच्चारण होगा। **ॐ ऐं विजय हंसः.....अ काई हंस........क्ष तक अ क्षाई हंस** जपे इस तरह **खाई, गाई, घाई, ङाई, चाई, छाई, जाई, झाई, ञाई, टाई, ठाई, डाई, ढाई, णाई, ताई, थाई, दाई, धाई, नाई, पाई, फाई, बाई, भाई, माई, याई, राई, लाई, वाई, शाई, षाई, साई हाई लाई क्षाई** तक करे। इस तरह से **आकाई हंस** से.....**आ क्षाई हंस** तक इ " " इ " " ई " " ई " " इस तरह १६ स्वर **तः अं अः** करने ३५×१६= ५६० बार मंत्र जप संख्या **पहले दिन का नाम पारायण** हुआ।

दूसरे दिन का नाम पारायण - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं....ङंअं अ विजया हंसः अ क काई हंसः इस तरह प्रत्येक वर्ण से **खाई हंस गाई हंस,.....क्षाई हंसः** तक ३५ बार जपे। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं ङंअं अ विजया हंस आ क काईहंस से आगे खाई हंसः, गाई हंसः ....क्षाई हंसः** तक प्रत्येक के साथ पढने से ३५ बार जप हुआ। **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल.....विजया हंसः इ क काई हंस........** खाई हंस, **गाई हंस** के साथ **क्षाई हंसः** तक जपने से ३५ बार जप हुआ। इसी तरह **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं.......विजया हंस ईक काई हंसः ई ख खाई हंसः ई ग गाई हंसः** इस तरह सभी व्यञ्जन तक....**ई क्ष क्षाई हंसः** कुल ३५ बार पढे। सभी स्वरों के साथ १६ बार पढ़ने से ३५ गुणा १६ =५६०

****

जप हुये।

तीसरे दिन का पारायण – **ॐ ऐं ह्रीं कएईल....विजया हंस** साथ उपरोक्त विधि से '' **ख खाई हंसः** '' से '' **क काई हंसः** '' तक ३५ बार करे १६ स्वरों के साथ करने से ५६० बार परायण हुआ।

चौथे दिन – **ग गाई हंसः** से प्रारंभ होकर ख खाई हंसः तक।

पांचवे दिन – **घ घाई हंस** से प्रारंभ होकर **घ गाई हंसः** तक। इस तरह ३५ वर्णोके साथ करने से ३५ दिन तक परायण होता है।

अंतिम दिन - '' **क्ष क्षाई हंस** '' से प्रारम्भ होकर '' **क काई हंसः** '' तक करे। तरह १ दिन स्वरों से तथा ३६ दिन वर्णाक्षरों के अनुसार प्रत्येक कुल ३५ दिनों में यह परायण पूरा होगा।

॥ अथ पञ्चानना महाषोडशी मन्त्रा:॥

मन्त्र – १. ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं श्रीं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं।

२. श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं
(श्रीकल्पद्रुमे)

उक्त मन्त्रों में **क ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं** प्रत्येक को एक-एक कूट माना है इसे त्रिकूट मन्त्र कहा गया है। तथा **ॐ** सहित सब बीजों को एक-एक कूट मानने से यह सोलह कूट का महामन्त्र बनता है।

॥ ध्यानम् ॥

महात्रिपुरसुन्दरी शत्रुनाश हेतु **विजयादेवि** के रूप में पञ्चानना व दशभुजा रूप धारणा कर सिंहारूढ होकर भक्तों के हित हेतु सदैव तत्पर रहती है।

पञ्चानना षोडशी हरा, लाल, धूम्र, नीला, व पीले रंग के मुख वाली है।

पञ्चवक्त्रां दशभुजां प्रतिवक्त्र त्रिलोचनाम् । भावस्वन्मुकुट विन्यस्त चन्द्ररेखा विराजिताम् ॥१॥
सर्वाभरण संयुक्तां पीताम्बर समुज्ज्वलाम् । उद्यद्भास्वद्बिम्बतुल्य देहकान्तिं शुचिस्मिताम् ॥२॥
शङ्खं पाशं खेटचापौ कह्लारं वामबाहुभिः । चक्रं तथाङ्कुशं खड्गं सायकं मातुलुङ्गकम् ॥३॥
दधानं दक्षिणं हस्तैः प्रयोगे भीमदर्शनम् । उपासनेऽति सौम्यां च सिंहोपरि कृतासनाम् ॥४॥
व्याघ्रारूढाभिरभितः शक्तिभिः परिवारिताम् । समरे पूजनेऽन्येषु प्रयोगेषु सुखासनाम् ॥५॥

॥ अथ गोपाल सुन्दरी मंत्र प्रयोग:॥

वैष्णव संप्रदाय में गोपाल सुन्दरी की उपासना शाक्त मत में त्रिपुरसुंदरी की साधना के समान हैं।

मंत्रोद्धार – गोपालसुन्दरीं वक्ष्ये भोगमोक्षप्रदायिनीं। माया (ह्रीं) रमा (श्रीं) चितजन्मा (क्लीं) कृष्णायेति पदं ततः॥ आद्यं वाक्कूटमुच्चार्य गोविन्दाय पदं वदेत्। द्वितीयं तु ततः कूटं गोपीजन पदं ततः॥ वल्लभायपदान्तं तु तृतीयं कूटमुच्चरेत्। स्वाहान्ता वह्नियुग्मार्णा स्मृता गोपालसुंदरी॥

मन्त्र – (१) ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।

मंत्र महोदधि की टीका में यही मंत्र दिया है परन्तु मंत्रोद्धार के अनुसार त्रिपुरसुंदरी के मंत्र के त्रिकूटों का प्रयोग नहीं किया है। अतः दूसरा मंत्र यथार्थ इस प्रकार है –

(२) ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय कएईल ह्रीं गोविन्दाय हसकहल ह्रीं गोपीजनवल्लभाय सकल ह्रीं स्वाहा।

विनियोग :- अस्य श्रीगोपालसुन्दरी मंत्रस्य विधात्रानन्दभैरवो ऋषि देवी गायत्री छन्दः श्रीगोपालसुंदरी देवता क्लीं बीजं स्वाहा शक्तिः ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास :- ह्रीं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः। कृष्णाय कएईल ह्रीं शिरसे स्वाहा। गोविन्दाय हसकहल ह्रीं शिखायै वषट्। गोपीजन कवचाय हुं। वल्लभाय सकल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

सृष्टिन्यास – सभी मंत्र वर्णो के साथ नमः युक्त कर न्यास करे। ह्रीं नमः मूर्ध्नि। श्रीं ललाटे। क्लीं भ्रुवोः। कृं नेत्रयोः। ष्णां कर्णयो। यं नासिकयौ। गों मुखे। विं चिबुके। न्दां कंठे। यं बाहुमूले। गों हृदि। पीं उदरे। जं नाभौ। नं लिङ्गे। वं गुदे। ल्लं कट्यां। भां जान्वो। यं जंघयोः। स्वां गुल्फयोः। हां पादयोः।

स्थिति न्यास – ह्रीं हृदि। श्रीं उदरे। क्लीं नाभौ। कृं लिङ्गे। ष्णां मूलाधारे। यं कट्यां। गों जान्वो। विं जंघयोः। न्दां गुल्फयोः। यं पादयोः। गों मूर्ध्नि। पीं ललाटे। जं भ्रुवो। नं नेत्रयोः। वं कर्णयोः। ल्लं नसोः। भां मुखे। यं चिबुके। स्वां कण्ठे। हां बाहुमूले।

संहारन्यास – ह्रीं नमः पादयोः। श्रीं गुल्फयोः। क्लीं जंघयोः। कृं जान्वोः। ष्णां कट्यां। यं गुदे। गों लिङ्गे। विं नाभौ। न्दां उदरे। यं हृदि। गों बाहुमूले। पी कण्ठे। जं चिबुके। नं मुखे। वं नसौ। ल्लं कर्णयोः। भां नेत्रयोः। यं भ्रुवोः। स्वां ललाटे। हां मूर्ध्नि।

वाग्देवता न्यास – १. अं.....अः रब्लूं वशनिवाग्देवतायै नमः शिरसि। २. कं......ङं कलह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ललाटे। ३. चं.....ञं न्ब्लीं मोहिनी वाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये। ४. टं.....णं य्लूं विमला वाग्देवतायै नमः कंठे। ५. तं.....नं ज्म्रीं अरुणा वाग्देवतायै नमः हृदि। ६. पं.....मं ह्स्ल्व्यूं जायिनी वाग्देवतायै नमः नाभौ। ७. यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवतायै नमः मूलाधारे। ८. शं.....लं क्षं क्ष्म्रीं कोलिनी वाग्देवतायै नमः उर्ध्वादिपादान्तम्। मंत्रमहोदधि में कएईल ह्रीं इत्यादि कूटों से न्यास की जगह त्रिकूट न्यास इस प्रकार कहे हैं।

षडङ्गन्यास :- कृष्णाय हृदयाय नमः। गोविन्दाय शिरसे स्वाहा। गोपीजनवल्लभाय शिखायै वषट्। कृष्णाय कवचाय हुं। गोविन्दाय नेत्रत्रयाय वषौट्। गोपीजनवल्लभाय अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

क्षीराम्भोधिस्थ कल्पद्रुम वनविलसद्रत्नयुङ् मंडपान्तः ।
प्रोद्यच्छ्रीपीठसंस्थं करधृत जलजारीक्षुचापांकुशेषुम् ॥
पाशं वीणां सुवेणुं दधतमवनिमाशोभितं रक्तकांतिम् ।
ध्यायेद गोपालमीशं विधिमुखविबुधैरीड्यमानं समन्तात् ॥

॥ यंत्रपूजनम् ॥

यन्त्र रचना – षट्कोण, अष्टदल बनाकर चारद्वार युक्त भूपूर बनाये।
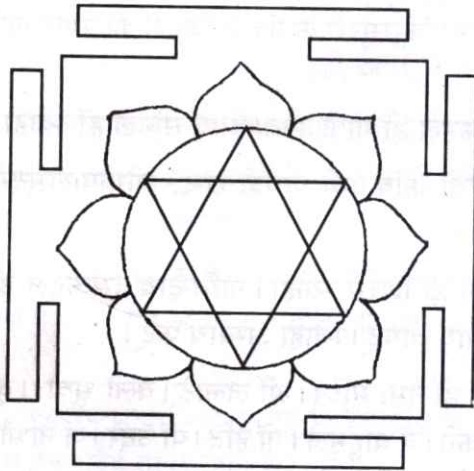
॥ श्री गोपालसुन्दरी यन्त्रम् ॥

विमलादि पीठशक्तियों का पूजन कर प्रधान देवता का आवाहन कर पूजा करे पश्चात् यंत्रार्चन करे। देव के पास में ही उनके शस्त्रों का पूजन करे –

ॐ कीरीटाय नमः, कुण्डलाभ्यां नमः, शङ्खाय नमः, चक्राय नमः, गदायै नमः, पद्माय नमः, वनमालायै नमः, श्रीवत्साय नमः, कौस्तुभाय नमः।

प्रथमावरणम् – (षट्कोणे) **ह्रीं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः** – अग्निकोणे। **कृष्णाय शिरसे स्वाहा** (ईशाने)। **गोविन्दाय शिखायै वषट्** – नैऋते। **गोपीजन कवचाय हुं**। (वायव्ये)। **वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट्** देव्यग्रे। **स्वाहा अस्त्राय फट्** दिक्षु।

द्वितीयावरणम् – (अष्टदले) पूर्वे – **ॐ वासुदेवाय नमः**। दक्षिणे – **ॐ सङ्कर्षणाय नमः**। पश्चिमे – **ॐ प्रद्युम्नाय नमः**। उत्तरे – **अनिरुद्धाय नमः**। आग्नेयादि कोणे – **ॐ शान्त्यै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ रत्यै नमः।**

तृतीयावरणम् – (अष्टदलमध्ये) पूर्वादिक्रमेण पूर्व – **ॐ रुक्मिण्यै नमः। ॐ सत्यभामायै नमः। ॐ कालिंद्यै नमः। ॐ नाग्नजित्यै (जाम्बवत्यै) नमः। मित्रविन्दाय नमः।** ॐ **चारुहासिन्यै (सुनन्दायै) नमः। ॐ रोहिण्यै (सुलक्षणायै) नमः। ॐ जाम्बवत्यै (नाग्नजित्यै) नमः।**

चतुर्थावरणम् – अष्टदलाग्रे- **ॐ षोडशसहस्त्र महिषीभ्यो नमः।**

पंचमावरणम् – अष्टदल के वहिर्भाग में (पूर्वादिक्रमेण) **ॐ इन्द्रनिधियै नमः। ॐ नीलनिधियै नमः। ॐ मुकुन्दनिधियै नमः। ॐ मकरनिधियै नमः। ॐ आनंदनिधियै नमः। ॐ कच्छपनिधियै नमः। ॐ पद्मनिधियै नमः। ॐ शङ्खनिधियै नमः। मध्ये ॐ खर्वनिधियै नमः।**

षष्ठमावरणम् – भूपुर में **इन्द्रादि दशदिक्पालों** का एवं उनके **वज्रादि आयुधों का पूजन करे।**

पश्चात् देव की सर्वविध पूजा करे। आरती कर पुष्पांजलि देवे।

॥ इति गोपाल सुन्दरी मंत्र प्रयोगः ॥

॥ संमोहन हेतु अन्यकामना मंत्रा:॥

(१) ॐ ग्ल्यौं ॐ (२) ह्रीं ग्ल्यौं ह्रीं (३) ऐं ग्ल्यौ ऐं (४) क्लीं ग्ल्यौं क्लीं (५) ब्लूं ग्ल्यौं ब्लूं (६) स्त्रीं ग्ल्यौं स्त्रीं (७) द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ग्ल्यौं सः ब्लूं क्लीं द्रां द्रीं॥

अरुणं षड्भुजं वंशवादिनं पाशमंकुशम् ।
पुण्ड्रेक्षुचापपुष्पेषून् दधानं शक्तिभिः स्मरेत् ॥

मंत्र के बीजों से षडङ्गन्यास करे। अष्टदल के सात पत्रों में एक मंत्र से पूजा करे। रविवार से क्रमश एक एक मंत्र से पूजा करे। प्रतिदिन अलग नैवेद्य देवे।

सकलेष्टप्रदा नित्यं दुग्धक्षोद्र घृतान्नकैः ।
पायसैर्नारिकेलैश्च ससितैः कदलीफलैः ॥

मूल मंत्र से सुवर्णपुष्पी का लेपन कंठ पर करे तो देव दर्शन होवे।

॥ अथ मालिनी विद्या प्रयोग:॥

मालिनी विद्या वर्णमाला की अधिष्ठात्री विद्या है। इस विद्या का स्मरण व न्यास करने से वर्णमातृका जागृत होकर मंत्र सिद्धि शीघ्र प्रदान करती है। शाक्त, शाम्भव और यामल मंत्रों का तीन प्रकार का न्यास अलग-अलग होता है। शाम्भव षोडशन्यास में सोलह ग्रंथियों में शब्दराशि समाहित रहती है। इसमें तीन विद्यायें होती है। अत: इनका न्यास भी त्रितत्त्वात्मक कहा गया है। यद्यपि इनका प्रकरण अन्य ग्रंथों में होगा फिर भी सामान्य जानकारी हेतु-

वनमालारूप चतुर्थी पूजा में १२ श्लोक होते है, पाँचवी और छठी पूजायें पञ्चरत्नात्मक और नवात्मक कही गई है। अघोर्यष्टक नामक शिव उपाधियों (कलविकरण, बलविकरण, बलप्रमथनाय, सर्वभूतदमनाय........) के न्यास हृदय, ग्रीवा, पार्श्व, कक्ष, वक्ष:स्थल एवं पृष्ठ पर करने चाहिये।

शक्ति न्यास भी त्रिविधात्मक है। चतुर्थन्यास द्वादश अंगों में, पाँचवान्यास षडङ्गन्यास होता है।

मंत्र :- क्लीं ह्रीं क्लीं क्रूं फट् ।

यह मंत्र षडङ्गन्यास व अन्य न्यासों में सर्वाराधक है।

मालिनी मंत्र :- मालिन्या नादिफान्तं। अर्थात् "**नं पं फं** " मालिनी मंत्र है। यह शिखा मंत्र है। शिर मंत्र में वर्णमाला "**श**" वर्ण से समाप्त होती है। अर्थात् "**बं भं मं यं रं लं वं शं**" शिर मंत्र है। मालिनी मंत्रों के वर्ण, उनके देवताओं के न्यास हेतु स्तोत्र में वर्णन इस प्रकार है।

ट शांतिश्च शिरो भूयाच्चामुण्डा च त्रिनेत्रगा । ढ प्रियदृष्टिर्द्विनेत्रे च नासागा गुह्यशक्तिनी ॥१॥
न नारायणी द्विकर्णे च दक्षकर्णे त मोहिनी । ज प्रज्ञा वामकर्णस्था वक्त्रे च वज्रिणी स्मृता ॥२॥
क कराली दक्षदंष्ट्रा वामांसा ख कपालिनी । ग शिवा उर्ध्वदंष्ट्रा स्याद् घ घोरा वामदंष्ट्रिका ॥३॥
उ शिखा दन्तविन्यासा ई माया जिह्वया स्मृता । अ स्यान्नागेश्वरी वाचि व कण्ठे शिखिवाहिनी ॥४॥
भ भीषणी दक्षस्कन्धे वायुवेगा म वामके । ड नामा दक्षबाहौ तु ढ वामे च विनायिका ॥५॥
प पूर्णिमा द्विहस्ते तु ओंकाराद्यङ्गुलीयके । अं दर्शनी वामाङ्गुल्य अः स्यात्सञ्जीवनी करे ॥६॥

टं कपालिनी कपालं शूलदण्डे त दीपनी । त्रिशूले च जयन्ती स्याद् वृद्धिर्य साधनी स्मृता ॥७॥
जीवे श परमाख्याद्ध प्राणे च अंबिका स्मृता । दक्षस्तने छ शरीरा न वामे पूतना स्तने ॥८॥
अ स्तनक्षीर आ मोटो लम्बोदर्युदरे च थ । नाभौ संहारिका क्ष स्यान्महाकाली नितम्ब म ॥९॥
गुह्ये स कुसुममाला ष शुक्रे शुक्रदेविका । उरुद्वये त तारा स्याद्दज्ञाना दक्षजानुनि ॥१०॥
वामे स्यादौ क्रिया शक्तिरो गायत्री च जङ्घगा । ओ सावित्री वामजङ्घा दक्षे दो दोहिनी पदे ॥११॥
फ फेत्कारी वामपादे नवात्मा मालिनी मनुः । अ श्रीकण्ठः शिखायां स्यादा वक्त्रे स्यादनन्तकः ॥१२॥
इ सूक्ष्मो दक्षनेत्रे स्यादी त्रिमूर्तिस्तु वामके । उ दक्षकर्णेऽमरीश ऊ कर्णेऽर्धाशकोऽपरे ॥१३॥
ऋ भावभूतिर्नासाग्रे वामनासा तिथीश ॠ । लृ स्थाणुर्दक्षगण्डे स्याद्वामगण्डे हरश्च लॄ ॥१४॥
कटीशो दन्तपङ्क्तावे भूतीशश्चोर्ध्वदन्त ऐ । सद्योजात ओ अधर उर्ध्वोष्ठेऽनुग्रहीश औ ॥१५॥
अं क्रूरो घाटकायां स्यादः महासेनजिह्वया । क क्रोधीशो दक्षस्कन्धे खश्चण्डीशश्च बाहुषु ॥१६॥
पञ्चान्तकः कर्पूरो ग च शिखी दक्षकङ्कणे । ङ एकपादश्चाङ्गुल्यो वामस्कन्धे च कूर्मकः ॥१७॥
छ एकनेत्रो बाहौ स्याच्चतुर्वक्त्रो ज कर्पूरे । झ राजसः कङ्कणगो ञ सर्वकामदोऽङ्गुली ॥१८॥
ट सोमेशो नितम्बे स्याद्दक्षोरुर्ट (रौ ठ) लाङ्गली । उ दारुको दक्षजानौ जङ्घा ढोऽर्धजलेश्वर ॥१९॥
ण उमाकान्तकोङ्गुल्यस्त आषाढी नितम्बके । थ दण्डी वाम ऊरौ स्याद्दभिदो वामजानु ॥२०॥
घ मीनोवामजङ्घायां न मेषश्चरणाङ्गुली । प लोहितो दक्षकुक्षौ फ शिखी वामकुक्षिगः ॥२१॥
व गलण्डः पृष्ठवंशे भो (भ) नाभौ च द्विरण्डकः । म महाकालो हृदये य वाणीशस्त्वविस्मृत ॥२२॥
र रक्ते स्याद्भुजङ्गेशो ल पिनीकी च मांसके । व खड्गीश स्वात्मनि स्याद्वकश्चास्थिनिशः स्मृतः ॥२३॥
श्वेतश्चैव मज्जायां स भृगुः शुक्रधातुके । प्राणे हो नकुलीशः स्यात्क्ष संवर्तश्च कोषगः ॥२४॥
रुद्रशक्तीः प्रपूज्यः ह्रीं बीजेनाखिलमाप्नुयात् ॥२५॥

॥ इति अग्निपुराणोक्त मालिनी मंत्र न्यासः ॥

॥ अथ शताक्षरी त्रिपुरा महाविद्या मन्त्रः॥

श्रीत्रिपुरा तापिन्युपनिषद् में श्रीपरामहाविद्या का शताक्षरी मन्त्र कहा है। त्रिकूट लक्ष्य से इसमें भी तीन मन्त्र हैं। प्रथम चार पद का मन्त्र परब्रह्मविकासिनी। दूसरा शक्ति प्रधान जातवेद मन्त्र तथा तीसरा शैव प्रधान त्र्यम्बक मन्त्र है। इनकी तुलना कामराज पूजिता के तीनों कूटों से की गई है।

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् परोरजसे सावदोम् ॥ क ए ईल ह्रीं॥
जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्नि ॥ हसकहल ह्रीं॥
त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ सकल ह्रीं॥

तन्त्र ग्रन्थों में गायत्री की साम्यता त्रिपुरसुन्दरी के पञ्चदशी मन्त्र से की है। जातवेद मन्त्र की तुलना भी त्रिपुरा मन्त्र से की है। अलग अलग ग्रन्थों के अनुसार गायत्री मन्त्र प्रथम कूट **क ए ई ल ह्रीं** है, जातवेद मन्त्र द्वितीय कूट **हसकहल ह्रीं** तथा त्र्यम्बक मन्त्र तृतीय कूट **सकल ह्रीं** है।

कूटत्रय को तुरीय विद्या भी कहा है।

कूटत्रय विशिष्ट मन्त्रतो वेति कूटत्रयापेक्षया ।
तदवसानविभातं तुरीयचैतन्यं वरं तस्य निर्विकल्पत्वात् ॥
कूटत्रये तुरीयस्वरूपं दत्वा तुरीय शिवादतिरिक्तं ।
कूटत्रयं नास्तीति ध्यात्वा बिन्दुपूर्णज्योति स्थानं ॥
कृत्वा पूर्णाहंभावेश्वर भावमापाद्य प्रधान विद्याद्यं ।
द्वितीय च तृतीय च कूटत्रय प्रोक्त ॥

कुछ साधक कहते हैं कि शङ्कराचार्यजी ने त्रिपुरा शताक्षरी के एक एक वर्ण पर एक एक श्लोक बनाया है अतः उनके आद्य वर्ण समस्त मिलकर शताक्षर श्रीविद्या मन्त्र बनता है। यथा -

ह्रीं श्रीं ॐ शितअत्वहधक्कसुमसुचत्वनक्षिश ''ऐं'' कसतमुक्ति भत्वजत्रविजसुकिस्व ''क्लीं'' चशिस्मशमत विसततततगधुवअ ''सौः'' ल (वि) भ्रुअविकशिग वि(लि) पनित

दृअस्फुस ''कएईलह्रीं'' अप्रस्मिअरविक भुगमृनस अवतह ''हसकहलह्रीं'' यस्थिनि कुगुकप श्रुनमृहिपनदप ''सकलह्रीं'' गअसकपुकगिसकस ''श्रीं ह्रीं''

एषा शताक्षरी विद्या॥

परन्तु इस मन्त्र में सङ्ख्या सौ से अधिक है फिर भी शताक्षरी मन्त्र कहलायेगा।

इस मन्त्र का उल्लेख सहस्राक्षरी मन्त्र में भी है।

विनियोग – ॐ अस्य श्रीपराविद्या शताक्षरी मन्त्रस्य श्रीहरिहरौविरञ्चिर्ऋषयः अनुष्टुप्छन्दः, श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरी देवता, ह्रीं श्रीं बीजं, ऐं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं चतुवर्गफल सिद्धये सर्वकामना अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास – ह्रीं, श्रीं, ॐ, ऐं, क्लीं, सौः। इनमें से एक एक बीज मन्त्रों से करन्यास व हृदयादि न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

ततो पद्मनिभां देवीं बालार्ककिरणारुणाम् । जपाकुसुमसङ्काशां दाडिमीकुसुमोपमाम् ॥
पिनाकधनुराकार भ्रूलतां परमेश्वरीम् । आनन्दमुदितोल्लोल लीलान्दोलित लोचनाम् ॥
स्फुरन् मयूख संघात् विलसद्धेम कुण्डलाम् । दाडिमीबीज वज्राभदन्तपङ्क्ति विराजिताम् ॥
रत्नबीज जगद्धासि जिह्वामलसभाषिणीम् । रक्तोत्पदलदलाकार सुकुमार कराम्बुजाम् ॥
अनर्घ्यरत्नघटित काञ्चीयुक्त नितम्बिनीम् । माणिक्य मुकुटाकार जानुद्वय विराजिताम् ॥
लौहित्यजित् सिन्दूरजपादाडिमरागिणीम् । रक्तवस्त्रपरीधानां पाशाङ्कुश लसत्कराम् ॥
वराभये त्रिनयनां ताम्बूलपूरिताननाम् । सर्वलक्ष्मीमयीं नित्यां परमानन्द नन्दिताम् ॥

॥ इति शताक्षरी त्रिपुरा महाविद्या मन्त्रः ॥

॥ अथ श्रीविद्या सहस्राक्षरी मन्त्र ॥

ह्रीं श्रीं ॐ अं आं इं ईं उं ऊं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ऋं ॠं लृं लॄं पं फं बं भं मं पञ्चाशद्वर्ण रूपायै ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो पराविद्यायै ग्लौं गं विश्वधात्र्यै कं लं शित अत्वहधक्र सुमसुचत्व नक्षिश सकलह्रीं वं शं षं सं आधाररूपिण्यै कसतमुक्ति भत्वजत्र विजसुकिस्व सकलह्रीं बं भं मं यं रं लं स्वाधिष्ठान स्वरूपिण्यै च शिस्म शमत विसतत तगधुव अ हसकहल ह्रीं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं मणिपूर रूपिण्यै। विभ्रूअविकशिगलिपनित दृ अस्फुस हसकहल ह्रीं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं अनाहतरूपायै हृद्वासिन्यै अप्रस्मि अरविक भुगमृनस अवतह कएईलह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः विशुद्धरूपिण्यै विशुद्धस्वर दायिन्यै यस्थिनि कुगुकपश्रुन मृहिपनदप कएईलह्रीं हं क्षं आज्ञारूपिण्यै विश्वाज्ञादायिन्यै गअसकपुकगि सकस ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सहस्राररूपिण्यै अतिदलपद्मवासिन्यै नमः।

नमो परां श्रीमहाविद्यां ध्यायेत्पूर्वां कामाख्यां तुरीयारूपां तुरीयतीतां सर्वोत्कटां सर्वमंत्रासनगतां पीठोपपीठ देवता परिवृतां सकलकला व्यापिनीं देवतां सामोदां सपरागां सहृदयां सामृतां सकलां सेन्द्रियां सदोदितां परां विद्यां स्पष्टीकृत्वा हृदये निधाय विज्ञायानिलयं गमयित्वा त्रिकूटां त्रिपुरां परमां मायां श्रेष्ठाम्बरां वैष्णवीं सन्निधाय हृदयकमलकर्णिकायां परां भगवतीं श्रीमहाविद्यां महामायां सदोदितां महात्रिपुरसुन्दरीम्।

मदनोन्मादनकारिणीं विश्वतारिणीं धनुर्बाणधारिणीं वाग्विजृम्भिणीं विश्वमण्डलमध्यवर्तिनीं चन्द्रकलां ससदशीं महानित्योपस्थितां पाशाङ्कुशामनोज्ञ पाणिपल्लवां समुद्यदर्कनिभां त्रिनेत्रां विचिन्त्य देवीं महालक्ष्मीं त्रिपुरां श्रीविद्यां

सर्वलक्षण संपन्नां हृदये चैतन्य रूपिणीं निरञ्जनां त्रिकूटाख्यां स्मितमुखीं सुन्दरीं महामायाम्।

सर्वसुभगां महाकुण्डलिनीं त्रिपीठमध्यवर्तिनीं अकथादि श्रीपीठपरां भैरवीं चित्कलां महात्रिपुरां देवीं ध्यायेन्महाध्यानयोगेन। ह्रीं नमो वैश्वानररूपिण्यै जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः स न पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः। नमो नमो आं आदित्यायै तेजोरूपिण्यै उदत्यं जातवेदसं। श्रीं ह्रीं नमो परमेश्वर्यै प्राज्ञस्वरूपिण्यै तुरीयात्मा परदेवतायै प्रज्ञानघनानन्द मय्यै परापराविद्यायै नमो तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोद्‌यात्। आकाश दिक् स्वरूपिण्यै नमः।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

नमो अनाद्यनन्तायै पराविद्यायै विद्महे राजराजेश्वर्यै धीमहि तन्नो त्रिपुरा प्रचोदयात्।

विश्व व्यापिन्यै नमो क्रीं ह्रीं ॐ ऐं म्लीं सौः ह्रीं श्रीं आं ॐ क्रों महाकालरूपिण्यै ह्सौः प्रें फ्रें क्लूं स्लूं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः पञ्चवाणरूपायै शाकिनी डाकिनी हाकिनी काकिनी लाकिनी राकिनी इत्यादि उग्रादुग्रायै सौम्यतरातिरूपिण्यै नमो दुर्गातिदुर्ग सौम्यातिसौम्य रूपिण्यै महामङ्गलायै नमो कुलकुमारि विद्महे मन्त्रकोटिसु धीमहि तन्नो कौलिः प्रचोदयात्। महाशान्तिस्वरूपायै नमो। ध्यायेत्पञ्च महाप्रेतासनायै महात्रिपुरसुन्दरी देव्यै नमः।

इस मन्त्र में करीब १०३६ वर्ण हैं।

॥ इति परामहाविद्या सहस्त्राक्षरी मन्त्रः॥

॥ अथ ललिता सहस्त्राक्षरी मन्त्रः॥

अथ सहस्त्राक्षर्यो लिख्यन्ते। तास्तु ''यामल महार्णवोक्तभेदेन नानाविधाः सन्तिः''। तत्रादौवुपस्थान सहस्त्राक्षरी। ऐं नमो भगवति त्रिपुरसुन्दरी दुर्गतितारिणी क्षमरीं प्रीं कर कर विसर विसर नृत्य नृत्य वद वद वाग्वादिनि स्वाहा। ह्रीं नमः क्लीं नमः श्रीं प्लीं क्लीं नमः सुरासुरवन्दिते सकलजनक्षोभिणी श्रीं श्रीं श्रींकारिणी द्रां द्रां द्राविणी मों मों मोहिनी स्तं स्तं स्तम्भिनि आं आं आकर्षिणी परमसुभगे नमः कमलवासिनी रस रस वरवर्तिनि ह्रां ह्रां ह्रांकरि ह्रीं ह्रीं ह्रींकारि ह्रां ह्रां ह्रांकारिके कां कां काकिनि रां रां राकिणी डां डां डाकिनी हां हां हाकिनी ऐं शाङ्करि गन गन किश किश भ्रम भ्रम वद वद सत्य सत्य उत उत मालिनि महामाये तत्त्वविग्रहे अरूपे अमले विमलेऽजिते अपराजिते मर्द मर्द हर हर संहर संहर ॐ ह्रीं ऐं कुरु कुरु लेप लेप किटि ॐ जूं सः सौः क्लीं ऐं श्रीं नद नद नादबीजे त्रां त्रीं त्रूं त्रैं त्रौं त्रः म्रां म्रीं म्रूं म्रैं म्रौं म्रः य्रां य्रीं य्रूं य्रैं य्रौं यः रीं रीं रूं रैं रौं रः ल्रां ल्रीं ल्रूं ल्रैं ल्रौं ल्रः व्रां व्रीं व्रूं व्रैं व्रौं व्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः ष्रां ष्रीं ष्रैं ष्रौं ष्रः स्रां स्रीं स्रूं स्रैं स्रौं स्रः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः गौरि रुद्रदयिते वज्रिणी वज्रनायिके कपालमालाधरे प्रेतासननिवासिनी सर्वतत्त्वावतारे अवतर अवतर गर्ज गर्ज शोषय शोषय सर्वमन्त्रान् ग्रस ग्रस सर्वदुष्टान् मर्द मर्द सर्वयन्त्रान् भञ्ज भञ्ज सर्वदुःखं तपतप तापय तापय तारे तारिणी परविद्यां छिन्धि छिन्धि परकायं प्रविश-२ वज्रिणी गों गों गाचरि खें खें खेचरि भूं भूं भूचरि हंसवाहे हस हस तिष्ठ तिष्ठ बन्धय बन्धय धारय धारय ऊ (तू) र्णामणि मोचय मोचय विमोचय विमोचय विमोचानि पश्य पश्य हुंरावे मेरुमन्दरसंकाशे महाविद्येश्वरि वाचं नियच्छ आच्छादानि सरस्वति महाश्वेते किणिविद्ये अर्ककोटिसहस्त्रमालिनि पुरपुर द्रूम द्रूम अनन्तक्षोभकारिणी रणे वज्रादिकर्तरि विद्याविनोदिनि त्वर त्वर त्वरिते

वह वह क्रन्दय क्रन्दय संक्रामय संक्रामय मदिरानन्दघूर्णिते कामेश्वरि गां गीं गूं गैं गौं गः कन्दर्पमदविह्वले स्फुरद्योनिचक्रे भगवति भगमालिनि ईश्वरचक्रकपाल डमरुकधारिणी महाभैरवि वसुधारे वसुमति धरिणीधरे वशय वशय कर्मधारिणी कामेशि जिह्वया वद वद मनसा रम रम क्रन्द वस वस विन्दुप्रिये ह्रूं ५ रद शारदशशांकनिकाशे शारदे विद्यादानविशारदे क्लीं गणनायिके आनन्दमयविग्रहे गृहीतपूर्णकपाले ज्वलज्विहे ह्लादिनि नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा सौं सौं क्षूं सरस्वत्यै नमः मदिरे मधुमति मदाभोगसुभगे भगमाले मुरु मुरु चुरु चुरु धुन धुन स्फुर स्फुर स्फोटय स्फोटय घण्टारवेण निरन्तर परबलभेदिनि फ्रें कुब्जिकायै ह्रां ह्रीं न ञ ण ङमे अघोरमुखि किणि किणि विच्चे ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें ह्रीं हुं फट् सर्वज्ञे जम्भ जम्भ जन्मजरामरण द्रारिद्र्यघातिनि सर्वसिद्धिनिधाने महाभयहारिणी ॐ हंसः हुं फट् विद्येश्वरि ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रैं ज्रौं ज्रः ल्रीं प्रीं सौः स्त्रौं क्षौं क्षुद्रविद्राविणि विद्रुतविद्रुमप्रभे क्षभ्रीं हस्त्रौं: चण्डि चण्डेश्वरि ब्रह्माण्डमालाधारिणी बन्धूकशोणाधरे त्रैलोक्यसत्ये नमः प्रसीद प्रसीद ऐं श्रीं फ्रें सौः ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि स्वाहा॥

इति त्रिपुरसुन्दर्युपस्थान सहस्राक्षरी। त्रैपुरीविद्यापठितसिद्धा शुभदा साधकानाम्

॥ अथ प्रस्तार ललिता सहस्राक्षरी ॥

मनुश्चन्द्रः कुबेरश्च लोपामुद्राथ मन्मथः ।
अगस्त्यो नन्दिसूर्यौ च इन्द्रः स्कन्दः शिवस्तथा ॥
क्रोधभट्टारको देव्या द्वादशैतो उपासकाः ।
सर्वप्रस्तार सहिता सहस्रार्णाधुनोच्यते ॥
श्रीविद्याजपसंपत्त्यै सर्वकामफलाप्तये ।............॥

ससुरावन्दितचरणाविन्दे जपाकुसुमनिभे योगिनीगणसेविते मधुमदमुदितमानस संध्यावर्णदुकूलवसने सततमुदितमहामदे माणिक्यकिरणारुणे मन्त्रपवित्र विग्रहे बिन्दुनादरूपिणि सच्चिन्मात्रस्वरूपे हसौं हसकलरीं हसौः स्होः क्कौ हसौः हसकएईल ह्रीं हसकएईलह्रीं सहकएईलह्रीं नमो देवि आगच्छ संनिधिं कुरु-२ सर्वतो मां रक्ष-२ वर्धय-२ नन्दय-२ स्थापय-२ प्रापय-२ सर्वकार्याणि मम साधय पोषय हस्त्रां हस्त्रीं हस्त्रूं हस्त्रैं हस्त्रौं हस्त्रः सकलहएईलऐंह्रीं हसकएईलह्रीं नमो भगवति भगरूपे पापापहारिणि राजानं मे वशमानय विपदो दलय स्त्रीराकर्षयाकर्षय क्लेदय-२ मनांसि क्षोभय-२ मादय-२ उल्लासयोल्लासय सौभाग्यं मे संपादय-२ सौन्दर्यं मे जनय फट् हसहैं हसहरीं हसहरौं हसहैं हसहरीं हसहरौं ॐ ऐं क्लीं सौः कएईलह्रीं हसकलह्रीं नमः कल्याणकारिणि लाक्षाभरणप्रभारञ्जितशरीरे रक्ताम्बुजनिषण्णे पाशांकुशेक्षुचापकुसुमबाणधारिणि चतुर्भुजे चन्द्रशेखरे चतुरङ्गे चतुर्वर्गफलप्रदे दिव्यमालालंकृतदिव्यदेहे मम सकलसमीहितानि साधय-साधय स्फारय-२ स्थिरय-२हसकलरैं हसकलरीं हसकलरौं हसकलरैं हसकलरीं हसकलरौं ॐ ऐं क्लीं सौः सहकलह्रीं सहकलरीं सहकलह्रीं नमो वरदे रेते सुरेते सत्ये नित्ये निरञ्जने जगत्क्षोभ (करेक्षोभ) कारिणि कमले कमनीयाङ्गे कलावति सुखानि मे परिपूरय राज्यं प्रयच्छ-२ कीर्तिं वितारय-२ परसैन्यं स्तंभय-२ भेदय-२ मर्दय-२ छेदय-२ उत्सादयोत्पादय हसकलहैं हसकलह्रीं हसकलह्रौं सकलहैं सकलह्रीं सकलह्रौं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सहसकलह्रीं सकलह्रीं नमः परमेश्वरि परमात्मस्वरूपे करुणामृतवर्षिणि द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः मनोज्ञे मुशलायासे मणिकङ्कणपरिचित्रित कुण्डलिनि कोमलाङ्गे अंकुशेनाकर्षयाकर्षय पाशेन बन्धय-२ चापेन मोहय मोहय बाणेन भिन्धि-२ च्छिन्धि-

२ डां डीं डूं डैं डौं डः सहकलरडैं सहकलरडीं सहकलरडौं सहकलरीं सहकलरीं सहकलह्रीं नमस्त्रिपुरे वादय-२ त्रिपुरेश्वरि विघ्नेश्वरि वीरवन्दिते विद्याधरवीज्यमानचामरे विद्यादानविशारदे मदोदयाघूर्णनेत्रे विनेत्रे श्रीत्रिपुरसुन्दरि डां डीं डूं डैं डौं डः हसकलडैं हसकलडीं हसकलडौं: हसकलडैं हसकलडीं हसकलडौं: सकलह्रीं सकलह्रीं नमः त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्रि देवि प्रपद्ये संप्रपद्ये सदा प्रपद्ये शरणं प्रपद्ये शरण्ये शरणागतवत्सले मदने मदनदेहे सर्वजनहृदयहारिणि सर्वतत्त्वहृदयङ्ग मे सर्वभूतवशंकरि मम सर्वभूतानि वशमानयानय कामान् पूरय-२ कीर्तिं पादय-२ दुरितं खण्डय-२ क्लेशं नाशय-२ शत्रून् त्रोटय-२ बन्धं छेदय-२ मोक्षं कुरु कुरु ऐं ह्रीं श्रीं हसकलरडरहैं हसकलरडरहीं हसकलरडरहौं सहकलरडरहैं सहकलरडरहीं सहकलरडरहौः हसकलह्रीं हसकलह्रीं हसकलह्रीं ॐ नमस्त्रिपुरमालिनि चिन्तितार्थविद्याविधायिनि वित्तदे ब्रह्मविष्णुशंकर सदाशिवपूजिते सुपुज्ये मम मनोरथान् पूरय-२ समुद्रादुत्तारय-२ अरिष्टं भञ्जय-२ राजनीतिं स्थापय-२ दुष्कर्माणि कृन्त-२ कृत्यां कर्तय-२ ऐं ह्रीं श्रीं हसकलरडरहरैं, हसकलरडरहरीं, हसकलरडरहरौः, हसकलरडरसहरीं ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसौः त्रिपुरसिद्धे त्रिपुरानन्दयोगेश्वरि कुलाकुलमहारूपे अरुणावृतमहारूपे हसक्षमलवरयीं सकलनृपवशंकरि सर्वसंपत्तिकारिणि सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वदुःखविदारिणि सर्वज्ञे हसकलरडसहरडैं, हसकलरडसहरडीं, हसकलरडसहरडौः, हसकलरडसरडौः, हसकलरडसरडीं, हसकलरडसरडैं, कएईलह्रीं हसकलह्रीं सर्वानन्दमये बिन्दुचक्रस्थे परब्रह्मस्वरूपिणि परमात्माशक्तिसर्वचक्रेश्वरि सर्वमन्त्रेश्वरि सर्वयोगीश्वरि सर्वजगदुत्पत्तिमातृके सर्वविद्यामयि महाभैरवि कवलीकृतसर्वतत्त्वात्मिके बिन्दुसर्वात्मिके महाश्रीत्रिपुरसुन्दरि नमः ऐं ईं औंः ॐ ऐं ह्रीं ऐं ऐं ह्रीं श्रीं औं नमः शिवाय नमः शिवायै॥

॥ इति प्रस्तारसहस्त्राक्षरी मन्त्रः॥

॥ अथ आवरण सहस्त्राक्षरी मन्त्रः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः ॐ नमो भगवति अक्षोभ्ये रूक्षकर्णे राक्षसिपक्षत्रणे क्षपे पिङ्गलाक्षि अरुणे क्षये लीले लोले ललिते लूते लुलिते लम्बिके लङ्केश्वरि लासे विमले हुताशनि विशालाक्षि हूंकारे वडवामुखि महारवे महाक्रोडक्रोधिनि खरास्ये सर्वज्ञे तरले तारे दृष्टिहृष्टे खगकन्धरे सारसि रससंग्रहिणि तालजंघे करङ्किणि मेघनादे प्रचण्डोग्रे कालकर्णि चेलप्रदे चम्पे चम्पावति प्रचम्पे प्रलयान्तकि पितृवक्त्रे पिशाचाक्षि पिशुनि लोलुपे वानति वानरि वामविकृतास्ये वायुवेगे बृहत्कुक्षिविकृते विश्वरूपिणि यमजिह्वे जये दुर्जये पुमन्तकि बिडालरेवति पूतने विजये अनन्ते क्रन्दिनि चण्डि रेकर्णि (सर्वसंक्षाभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववंशकरि) सर्वोन्मादिनि सर्वमहांकुशे खेचरि (खचक्रधारिणि) सर्वबीजरूपे महायोनिरूपे त्रिखण्डे, अनङ्गब्राह्मि, अनङ्गमाहेश्वरि, अनङ्गकौमारि, अनङ्गवैष्णवि, अनङ्गवाराहि, अनङ्गइन्द्राणि, अनङ्गचामुण्डे, अनङ्गमहालक्ष्मि, प्रकटयोगिनीशि चार्वाकदर्शनाङ्गि त्रैलोक्यमोहन चक्रस्वामिनि, कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षिणि अहङ्काराकर्षिणि शब्दाकर्षिणि स्पर्शाकर्षिणि रूपाकर्षिणि रसाकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणिनामाकर्षिणि बीजाकर्षिणि आत्माकर्षिणि अमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि गुप्तयोगिनीशि बौद्धदर्शनाङ्गि सर्वाशापूरकचक्रस्वामिनि अनङ्गकुसुमे अनङ्गमेखले अनङ्गमदने अनङ्गमदनातुरे अनङ्गरेखे अनङ्गवेगिनि अनङ्गांकुशे अनङ्गमालिनि अतिगुप्तयोगिनीशि रौद्रदर्शनाङ्गि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि पूर्वाम्नायेशि सृष्टिप्रदे, सर्वसंक्षाभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तंभनि सर्वजृम्भिनि सर्ववंशकरि

सर्वरञ्जनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधनि सर्वसम्पत्यप्रपूरिणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सम्प्रदाय योगिनीशि सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिनि सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे सर्वप्रियंकरि सर्वमंगलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्ननिवारणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि कुलकौलयोगनीशि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि, सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदायिनि सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपे सर्वेप्सितफलप्रदे निगर्भयोगिनीशि सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि दक्षिणाम्नायेशि स्थितिप्रदे, ब्लूँ वशिनि कलह्रीं कामेशि न्ब्लूं मोदिनी य्लूं विमले ज्म्रीं अरुणे हसलवयूं जयिनि झमरयूं सर्वेश्वरि क्ष्म्रीं कौलिनि रहस्ययोगिनीशि शाक्तदर्शनाङ्गि सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि, द्रां क्लिन्ने मोहनकामबाण द्रीं शोषणकामबाण क्लीं नित्य-संदीपनकामबाण ब्लूं मंद-संतापनकामबाण सः द्रवे उन्मादनकामबाण द्रां द्रीं क्लीं ब्लूंसः जम्भिनि जम्भय-२ मोहिनी मोहय-२ आं आकर्षिणि आकर्षय-२ स्तम्भिनि स्तम्भय-२ ऐं कामेशि क्लीं वज्रेशि सौः भगमाले अतिरहस्ययोगिनीशि सर्वसिद्धिमयचक्रस्वामिनि, कामराजविद्या महात्रिपुरसुन्दरीमातः परापररहस्ययोगिनीशि सौगतदर्शनाङ्गि सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि पश्चिमाम्नायेशि अं आं सौः त्रिपुरे ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वरि ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरी हैं हक्लीं हसौः त्रिपुरवासिनि हसैं हसक्लींहसौः त्रिपुराश्रि ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनि ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धे हस्त्रैं हसकलरीं हस्त्रौः त्रिपुराम्बे हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः महात्रिपुरभैरवि अं कामेशि आं भगमाले इं नित्यक्लिन्ने ईं भीरुण्डे उं वह्निवासिनि ऊं महावज्रेश्वरि ऋं शिवदूति ॠं त्वरिते लृं कुलसुन्दरि लॄं नित्ये एं नीलपताके ऐं विजये ओं सर्वमङ्गले औं ज्वालामालिनि अं विचित्रे अः कामेश्वरि विद्यामालिनि अकुले कुलाकुलमहाकुले सर्वोत्तरपञ्चार्थज्ञानप्रदे सर्वदर्शनाङ्गमयि सर्वदर्शनोत्तीर्णस्वरूपिणि सर्वाध्वशोधनि कालकालेशवर्णे नवाक्षरि बालविद्या षोडशाधिका च नवकूटद्वयं सहखफ्रें आनन्देश्वरि घोरकालिनि अम्बाश्रीपादूकां पूजयामि हंसः श्रीं ह्रीं ऐं॥

॥ इत्यावृत्ति सहस्त्रार्णाविद्या त्रैलोक्य पूजिता॥

॥ अथ वाञ्छाकल्पलता प्रयोगः ॥

(प्राचीन वैदिक)

भाग-२ देवखण्ड में इस संबंध में एक पौराणिक प्रयोग दिया जा चुका है।

प्रस्तुत प्रयोग अथर्ववेद के सौभाग्यकाण्ड से उद्धृत है। इसे कई विद्वानों ने प्रकाशित किया है। पं. श्री शिवदत्त मिश्र, श्री स्वामी जी करपात्र जी (पुस्तक श्रीविद्या रत्नाकर) एवं श्रीगुप्तावतार बाबा मोतीलाल जी मेहता के प्रयोग को आधार मानकर इस प्रयोग को दिया जा रहा है। यह प्रयोग विद्या एवं लक्ष्मीप्राप्ति हेतु काफी सफल प्रयोग माना जाता है। इस स्तोत्र का प्रयोग रात्रि के चौथे प्रहर से सूर्योदय पूर्व करने का अधिकतर प्रमाण है परन्तु प्रयोग पारिजात में रात्रि प्रथम प्रहर से तीसरे प्रहर तक के करने का भी लिखा है। भावार्थ इसका यह हो सकता है रात्रि के प्रथम से तृतीय प्रहर में इष्ट का अर्चन या तुरीय संध्या जप कर प्रातः काल सूर्योदय पहले इसका प्रयोग करे। इसकी महिमा हेतु कहा है कि यह प्रयोग बिना होम तर्पणादि के भी सिद्धि देता है।

वाञ्छाकल्पलतायास्तु न होमो न च तर्पणम् ।
स्मरणादेव सिद्धिः स्यात् यदिच्छति हि तद्भवेत् ॥

वहीं कुमार संहिता में (होम विषय में)

जपेत् षोडशसाहस्त्रं षट्साहस्त्रमथापि वा ।
पायसेन हुनेद् देवि नारिकेलफलैस्तिलै ॥

पूजा समय व फल प्राप्ति हेतु प्रयोगपारिजात में कहा है-

आवर्तन त्रयाल्लक्ष्मी पञ्चावृत्या वशं जगत् । दशावृत्त्या शिवादीनां देवानां शक्तिभाग् भवेत् ॥१॥
लक्ष्यावृत्त्या सर्वभौमः दरिद्रोऽपि न संशयः । नार्थवादोऽथर्वणस्य वशिष्ठ वचनं यथा ॥२॥
एतज्जपस्य कालस्तु रात्रौ याम त्रयावधि । रात्रेश्चतुर्थ प्रहरात् तथा सूर्योदयावधि ॥३॥

शंका यह उठती है कि नित्य दशावृत्ति करने पर सोलह हजार या एक लाख कैसे करे। इस तरह के प्रयोग हेतु रात्रि के तीन प्रहर जप करने के बाद विश्राम पश्चात् चौथे प्रहर में पुनः जप करे। भावार्थ शाम को प्रदोष बेला से रात्रि २ बजे तक जप करे पश्चात् ४-५ बजे से सूर्योदय पूर्व तक जप करे। लक्षावृत्ति हेतु इस प्रयोग के मूल मंत्र के जप करे। कर्म का लोप होने पर एक माला मूल मंत्र की अवश्य करे।

मंत्र यथा- **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं ऐं क्लीं सौः ॥१॥**

गुग्गुल - शब्द का भावार्थ, **गणपतये या ग्लौं गणेशाय** है ऐसा मंत्रोद्धार देखने से लगता है। प्रस्तुत प्रयोग में गणेश, ललिता त्रिपुरसुंदरी, अमृतरुद्र तथा संवादाग्नि ऋषि से अनिष्ट निवारण हेतु तथा श्री वृद्धि हेतु प्रार्थना है। श्री गुप्तावतार बाबा ने अविघ्नमस्तु शुभानि में अस्तु इत्यादि १२ उद्‌बोधक समाविष्ट किये है जो अन्य प्रयोगों में नहीं है। प्रयोग के पहले मंत्र संकेतों के समझना आवश्यक है।

यथा - **ॐ ४ ॐ ऐ श्रीं ह्रीं** (चारवर्ण ॐ सहित) **ऐं ३ - ऐं क्लीं सौः** (तीनवर्ण ऐं सहित) **सौः ४ - सौः क्लीं ऐं ॐ** (सौः सहित ४ वर्ण) **क ५ - क ए ई ल ह्रीं** (क सहित ५ वर्ण) **ह ६ - ह स क ह ल ह्रीं** (ह सहित ६ वर्ण) **ॐ ५ - ॐ ऐं क्ली सौः ह्रीं** (ॐ सहित ५ वर्ण) **ऐं ११ - ऐं श्रीं ह्रीं लं** **स ४ - स क ल ह्रीं** (स सहित ४ वर्ण) **क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं। ॐ ३० - ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गल ह्रीं क ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं ऐं क्लीं सौः।**

पं. श्री शिवदत्त मिश्र शास्त्री द्वारा प्रकाशित प्रयोग में कुछ पाठांतर भेद है। यथा ''**गुग्गुल ह्रीं**'' की जगह गुग्गरीं, गुगरीं, गुगलरीं का उल्लेख है। अमृतरुद्र के मंत्र में भी भिन्नता है

यथा - **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं जूं सः वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे वशतु अनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।** यहां ''**नश्यतु**'' की वशतु है तथा ''**वशमानय**'' दो बार है तथा प्रारंभ के बीजाक्षरों में भी भेद है।

॥ अथ वांछाकल्पलता स्तोत्रम् ॥

विनियोगः - **ॐ अस्य श्रीवाञ्छाकल्पलता मन्त्रस्य श्रीआनन्दभैरवागस्त्याङ्गिरस कश्यपवशिष्ठविश्वामित्र सम्वादऋषयः, देवोगायत्रीनृचृद्गायत्री त्रिपदागायत्र्यनुष्टुप् नानाविधानि छन्दांसि, श्रीमहागणपतिललिता सम्वादाग्न्यमृतरुद्रो देवता, श्रीं वीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीपराविद्याप्रसादसिद्ध्यर्थ वाञ्छितार्थप्राप्तये च जपे विनियोगः।**

न्यासः-	**करन्यास**	**षडङ्गन्यास**
ॐ ऐक्लींसौः ह्रीं सर्वज्ञतायै ह्रांगां ब्रह्मात्मने	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
ॐ-५ नित्यतृप्तायै ह्रींगीं विश्वात्मने	**तर्जनीभ्यां स्वाहा**	**शिरसे स्वाहा**
ॐ-५ अनादिबोधितायै ह्रूंगू रुद्रात्मने	**मध्यमाभ्यां वषट्**	**शिखायै वषट**
ॐ-५ स्वतन्त्रतायै ह्रैंगैं परमेश्वरात्मने	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुं**
ॐ-५ नित्यमलुप्तायै ह्रौंगौं सदाशिवात्मने	**कनिष्ठाभ्यां वौषट्**	**नेत्रत्रयाय वौषट्**
ॐ-५ अनन्तायै हःगः सर्वात्मने	**करतलकरपृष्ठाभ्यांफट्**	**अस्त्राय फट्**

॥ ध्यानम् ॥

ह्मद्रौ हेमपीठस्थितममरगणैरीड्यमानां च राजन्,
पुष्पेक्षुश्चापपाशांकुश करकमलां रम्यकेशातिरक्ताम्।
दिक्षूद्यद्भिश्चतुर्भिर्मणिमयकलशः यन्त्रशक्त्यान्वितस्वैर्वृक्षैः
क्लृप्ताभिषेकां भजति भगवतीं भूतिदामन्त्ययामे ॥१॥
बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुचा चक्राब्जपाशोत्पला,
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्न कलशैर्प्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया स्वपद्मकरया श्लिष्टो ज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नो विशिष्टार्थदः ॥२॥
ध्वलनलिनराजच्चन्द्रमध्ये निषण्णम्, स्वकरकलितपाशं साभयं साङ्कुशं च।
अमृतवपुषमिन्दुक्षीरवर्णं त्रिनेत्रम्, प्रणमितसुरवृन्दं दिक्षु सम्वादयन्तम् ॥३॥

****

स्फुटितनलिनसंस्थं मौलिबद्धेन्दुरेखा गलदमृतरसार्द्रं चन्द्रवह्न्यर्कनेत्रम् ।
स्वकरकलितमुद्रा वेदपाशाक्षमालं, स्फटिकरजतमुक्ता गौरमीशं नमामि ॥४॥

॥ पञ्चोपचार मानस पूजनम् ॥

१. **श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दरी महागणपति सम्वादाग्न्यमृत रुद्रेभ्यः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। अंगुष्ठ कनिष्ठाभ्यां।**
२. **श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दरी महागणपति सम्वादाग्न्यमृत रुद्रेभ्यः हं आकाशात्मकं पुष्पं सम० तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां।**
३. **श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दरी महागणपति सम्वादाग्न्यमृत रुद्रेभ्यः यं वाय्वात्मकं धूपं अंगुष्ठतर्जनीभ्यां।**
४. **श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दरी महागणपति सम्वादाग्न्यमृत रुद्रेभ्यः रं वह्न्यात्मकं दीपं अंगुष्ठमध्यमाभ्यां।**
५. **श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दरी महागणपति सम्वादाग्न्यमृत रुद्रेभ्यः वं अमृतात्मकं नैवेधं अंगुष्ठानामिकाभ्यां।**

मन्त्रजपविधानम् – इस प्रकार मानसपूजन कर श्रीगुरु, इष्टदेवता और आत्मा के ऐक्य भाव की भावना कर रात्रि के अन्तिम प्रहर में सूर्योदय में पूर्व क्रमशः निम्न तीन मन्त्रों में से प्रत्येक मन्त्र का दस बार जप करे।

१. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ई। २-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परो रजसे सावदोम् ३-ॐ ह्रीं हसकल हसकहल सकलह्रीं।** अब प्रथम पर्याय के मन्त्रों का जप करे। यथा-

॥ प्रथम पर्यायः॥

मन्त्रोयथाः-

१. **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभिसूर्य सर्व तदिन्द्र ते वशे। गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ अविघ्नमस्तु।**
२. **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं ऐं क्लीं सौः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ शुभनि मे अस्तु।**
३. **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ प्रतिकूलं मे नश्यतु।**
४. **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः, स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ अनुकूल मे अस्तु।**
५. **ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषां, समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ सर्वरक्षा मे अस्तु।**

****

६. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्लीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ सर्वसम्पत्समृद्धिरस्तु।

७. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। समानो मन्त्र समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषां, समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्लीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ अविघ्नमस्तु।

८. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। जातवेदसे सुनवाम सोम मराती यतो निदहाति वेदः सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्लीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ सर्वसिद्धिरस्तु।

९. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्लीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ परापरासिद्ध विद्याऽस्तु।

१०. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्लीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ श्रीविघ्ननायको प्रसन्नोऽस्तु।

११. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। यदद्य कच्च वृत्र हन्नुदगा अभिसूर्य सर्वतदिन्द्र ते वशे गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्लीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ अष्टसिद्धयोस्तु।

१२. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। गणानां त्वां गणपतिं ठं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पता नः श्रृण्वन्नूतिभिः सीदसादनं गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्लीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ सिद्धा सरस्वती मेऽस्तु।

१३. ॐ भूर्भुवः स्वः भूः भद्रं नोऽपि वातय मनः ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

ॐ दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियां ।
निर्वैरिता च जायेत सम्वादाग्रे ! प्रसीद मे ॥

॥ इति प्रथम प्रर्यायः ॥

****

॥ द्वितीय पर्याय :॥

१. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। यदद्य कच्च वृत्र हन्नुदगा अभिसूर्य सर्वतदिन्द्र ते वशे गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ ।

२. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ ।

३. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ ।

४. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः, स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ ।

५. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषां, समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ ।

६. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। समानी व आकूति समाना हृदयानि वः, समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ ।

श्रीविद्या रत्नाकर में समानी.......की जगह दूसरी ऋचा दी है। यथा - **संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनासि जानताम्। देवाभागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।**

७. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषां, समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ ।

८. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः, स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ ।

९. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ ।

१०. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे

वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

११. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। यदद्य कच्च वृत्र हन्नुदगा अभिसूर्य सर्वतदिन्द्र ते वशे गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

१२. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। अजैष्माद्यासनाय च भूमानागसो वयं, जाग्रत्स्वप्नः सङ्कल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो ना ऐं द्वेष्टि तमृच्छतु गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

श्रीविद्या रत्नाकर में ऋचा मध्य में अन्य ऋचा है। यथा - **अग्नमन्युं प्रतिनुदन् परेषामदब्धो गोपाः परिपाहि नस्त्वम्। प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते मैषां चित्तं प्रबुधां विनेशत्।**

१३. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। ह्रीं भूर्भुवः स्वः शन्नो अस्तु सभीते द्विपदे शं चतुष्पदे, ॐ ह्रीं वं ठं अमृरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

अन्य ऋचा है - **ॐ भुवः मरुतामोजसे स्वाहा।**

ॐ दमयन्ती नलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथगधियाम् ।
निर्वैरिता च जायेत सम्वादाग्रे! प्रसीद मे ॥

॥ इति द्वितीय पर्यायः ॥

॥ तृतीय पर्याय ॥

श्रीविद्या रत्नाकर में ३० अक्षर मन्त्र प्रारम्भ में दिया है जबकि अन्यत्र ग्रन्थों में **"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः"** दिया गया है।

१. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। यदद्य कच्च वृत्र हन्नुदगा अभिसूर्य सर्वतदिन्द्र ते वशे गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

२. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

३. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

४. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। जातवेदसे सुनवाम

सोममराती यतो निदहाति वेदः, स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॐ-४ ऐं ३ गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

५. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषां, समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

६- ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषां, समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

७. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषां, समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

८- ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः, स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

९. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

१०. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

११. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। यदद्य कच्च वृत्र हन्नुदगा अभिसूर्य सर्वतदिन्द्र ते वशे गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

१२. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। यो मामग्रे भागिनं सन्तं यथाभागं चिकीर्षति, अभागमग्रे तं कुरु मामग्रे भागिनं कुरु स्वाहा। गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

१३. ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ स्वः इन्द्रो विश्वस्य राजति ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

ॐ दमयन्तीतनलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथगधियाम्।
निर्वैरिता च जायेत सम्वादाग्रे! प्रसीद मे॥

॥ इति तृतीय पर्यायः ॥

****

॥ चतुर्थ पर्याय:॥

१. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौ:। लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ यदद्य कच्च वृत्र हन्नुदगा अभिसूर्य सर्वतदिन्द्र ते वशे गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौ: क्लीं ऐं ॐ।

२. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौ:। लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौ: क्लीं ऐं ॐ।

३. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौ:। लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौ: क्लीं ऐं ॐ।

४. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौ:। लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेद:, स न: पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्नि: गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौ: क्लीं ऐं ॐ।

५. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौ: लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सह चित्तमेषां, समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौ: क्लीं ऐं ॐ।

६. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौ: लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ सङ्गच्छध्वं सम्वदध्वं सङ्केतानां विजानता देवा भागं यथा पूर्वे संजानना उपासते गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौ: क्लीं ऐं ॐ।

श्रीविद्या रत्नाकर में मन्त्र मध्य में अन्य ऋचा है यथा - ''समानी व आकूति समाना हृदयानि व:, समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।''

७. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौ:। लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सह चित्तमेषां, समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौ: क्लीं ऐं ॐ।

८. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौ: लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेद:, स न: पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्नि: गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौ: क्लीं ऐं ॐ।

९. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौ:। लं क्लीं ग्लौं गं

गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

१०. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

११. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ यदद्य कच्च वृत्र हन्नुदगा अभिसूर्य सर्वतदिन्द्र ते वशे गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

१२. ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐंक्लींसौः। लं क्लीं ग्लौं गं गुग्गुल ह्रीं क-५ ह-६ स-४ ऐं-३ अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् परेषामदब्धो गोपाः परिपाहि नस्त्वं प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते मैषां चित्तं प्रबुधां विनेशत् गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वरवरद आंह्रीक्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ॐ।

श्रीविद्या रत्नाकर में ऋचा मध्य में अन्य ऋचा है। यथा - अजैष्माद्यासनाम चा भूमा नागसो वयम् जाग्रत् स्वप्नः सङ्कल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु।

१३. ॐ भूर्भुवः स्वः भुवः मरुजामोजसे स्वाहा। ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

श्रीविद्या रत्नाकर में ऋचा मध्य में अन्य ऋचा है। यथा - ॐ भूभुर्व स्वः शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।

ॐ दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत सम्वादाग्रे! प्रसीद मे॥

॥ इति चतुर्थ पर्यायः॥

जपसमर्पण-

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु देवेशि! त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा॥

कुमार संहिता के अनुसार नारिकल, फल, तिल व पायस स होम करें तथा तर्पण प्रयोग भी करें तो पूर्णतया श्रेठ फल प्राप्त होवे।

गणपति को तर्पण प्रिय है, यहाँ क्षिप्रगणपति मन्त्र हर प्रयोग में है। अतः होम करने में अशक्त हो तो तर्पण करने से भी गणपति की प्रसन्नता प्राप्त होगी।

॥ इति वाञ्छाकल्पलता प्रयोगः॥

महामहेश्वर्यै०, महामहाराज्ञ्यै०, महामहाशक्त्यै०, महामहागुप्तायै०, महामहाज्ञप्तायै०, महामहानन्दायै०, महामहास्पन्दायै०, महामहाशयायै०, महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञ्यै०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

मन्त्र जपकर समर्पण करें।

गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवति मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि ॥

॥ ३. शक्ति स्वाहान्त माला ॥

शुक्ला तृतीया पूजन "ई" कृष्णा त्रयोदशी पूजन

सङ्कल्प – दैनिक सङ्कल्प व हृदयादि न्यास पूर्वोक्त विधि से करें।

विनियोग – अस्य श्रीशक्ति स्वाहान्त माला मन्त्रस्य पादेन्द्रियाधिष्ठायि धात्रादित्य ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। मोक्षद ईकार भट्टारक पीठ स्थित ईश्वरकामेश्वराङ्क निलया श्रीईश्वरी कामेश्वरी ललिता महात्रिपुर सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। अञ्जनसिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – पादेन्द्रियाधिष्ठायि धात्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। मोक्षद ईकार भट्टारक पीठ स्थित ईश्वरकामेश्वराङ्क निलया श्रीईश्वरी कामेश्वरी ललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयौः। अञ्जनसिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – कराङ्ग व हृदयादि न्यास पूर्व विधि के अनुसार करें। पश्चात् ध्यान पूर्वक प्रार्थना करें।

॥ ध्यानम् ॥

सिद्धाञ्जनं समासाद्य तेनाञ्जनितलोचनः ।
निधिं पश्यति सर्वत्र भक्तस्तेन समृद्धिमान् ॥

मानस पूजा – पूर्व वर्णित मानस पूजा में अमुक देवता की "**ईश्वर कामेश्वराङ्क निलया श्री ईश्वरी ललिता महात्रिपुर सुन्दरी**" नाम से पूजन करें।

॥ माला पारायण ॥

प्रत्येक नामावलि के बाद "**स्वाहा**" जोड़कर जप करें। बाह्य पूजा में हवन कुण्ड में होम करें। मानसिक पूजन में चित् कुण्ड में हवन करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

पश्चात् अङ्ग होम है, अतः मानसिक पूजन में स्वाहा युक्त जप करें।

हृदय देव्यै स्वाहा। शिरो देव्यै स्वाहा। शिखा देव्यै स्वाहा। कवच देव्यै स्वाहा। नेत्र देव्यै स्वाहा। अस्त्र देव्यै स्वाहा।

परन्तु बाह्य पूजन में हवन कुण्ड में अङ्ग होम निषिद्ध है। अतः "**हृदय देव्यै**" इत्यादि नाम मनसा उच्चारण करें एवं मूल मन्त्र से आहुति देवें।

****

नमः ऐं अं इं उं ऋं लृं इति लघु तया तदनुदैर्घ्येण पंचैव योनिस्थिता वाग्भवे: प्रणव: ॐ बिन्दुरू बिन्दुरू कं खं गं घं ङंचं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ऐति सिद्धं।

रुद्रात्मिककाममृतकरकिरणगण वर्षिणी मात्रि कामुद्रिंरंतिवभन्ति रसंती ससंती हसंती सदा तत्र कमलभव भवन भूमौ भवतिर्भयभेदिनि भवानि नदभंजिनी सुभूर्भुव: स्वर्भुवनभूति भष्ये सुहव्ये सुकव्ये सुक्ततितायेन सभाव्यतस्य जर्जरित जरसो विरजसो विपुत्री कृतार्द्धस्य सत्तर्क पद वाक्यमय सुशास्त्र शास्त्रार्थं सिद्धांतं सौरादि जैनपुराणेतिहास स्मृति गारुडं भूततन्त्र शिरोदय ज्योतिषायुर्विधानाख्य पाताल शास्त्रार्थ शस्त्रास मन्त्र शिक्षादिकं विविध विद्याकुलं ललित पद गुफं परिपूर्णरस लसितकांति सोदारभणिति प्रगलार्थ प्रबन्ध सालंकृताऽशेषभाषा महाकाव्य लीलोदय सिद्धिमुपयाति सद्योम्बिके वाग्भवेनैक केनैव वाग्देवी वागीश्वरो जायते किंच कामाक्षरेणसक्तदुचारितेन तव साधको बाधको भवतु भूवि सर्वशृंगारिणां तन्नयनपथ-पथिमतित नेत्र निलोत्पलत् झटिति सिद्ध गंधर्वगण किंनरी प्रवर विद्याधरी वा सुरीमरी वा महीनाथ नागांगना वा तदा ज्वलन मदन शरिभिकर संक्षोभिता विगलितेव दलितेव छलितेव कवलितेव विलिखितेव मुखितेव मुद्रितेव वपुषि संपद्यते शक्ति वाजेषु संध्यायिना योगिना भोगिनां रोगिणां वैनतेयाप्यतेनाहिनां तत्क्षणाद्मृते मेधाप्यते दु:सह विषाणां शशांक चूड़ाप्यते येन बीजत्रयं सर्वदा तस्य नाम्नै वपश्रुपाशमल पंजर त्रुटति तदाज्ञथा सिद्धयति गुणाष्टकं भक्तिभांजा महाभैरवि! ऐं ॐ हूं कवलित सकलतत्वात्मके सुखरूपे परिणतायां त्वयि त्वदा क परिशिष्यते शिष्यते यदि तर्हित्वछक्तिहीनस्य तस्य कार्य क्रिया कारिता तदिति तास्मिन विधौ तदा तस्य किं नाम किं शर्म किं कर्म किं नर्म किं वर्म किं मर्म किं कामाति: कागति: कारति: काधृति: कास्थिति पर्यष्यति यदि सर्व श्रुन्यांत भूयौ निजेस्था समुन्मेष समयं समासाय वालाग्र कोग्रं शरूपापि गर्भिकृत: शेष संसार वीजानु वघ्नासि कं तं तदा स्वाम्बिकागीयसे तदनुपरिजनित कुटिलाग्र तेजोंकुराजन निवामेति संस्तूषसे बद्ध सस्पष्टरेखा शिखा वा ज्येष्ठेति संभाव्यसे सैव शृंगाठका कारिता मागता रौद्रि रौद्रिति विख्याय्यसे ताश्चवामादिका: तत्कलांस्त्रीन् गुणान संदधत्य: क्रियाज्ञानमय वांछास्वरूपा मात्रामरस जन्म मधु मथनपुर वैरिणं बीजभावं भजंत्य: सृंजत्य स्त्रिभुवनं त्रिपुरभैरवी तेन् संकीर्त्यसे तत्र शृंगारपीठे लसत् कुण्डलोल्का कलायाकुला प्रोल्लसती शिवार्कं समास्कद्यचांद्रं महामण्डल द्रावयन्ति पिवंति सुधां कुलवधुव्रतं परित्यज्य परपुरुषमकुलीन् मलवंव्य सर्वस्वमाक्रभ्य विश्वं परिभ्रम्य तेनैवक्यार्गेण निजकुल निवासं समागत्य सन्तुष्य सीतितदाक: पतिक: प्रिय: क: प्रभु: कोस्तितते नैव जानी महे हे महेस्यानिरमसे च कामेश्वरि कामकाज गर्जालये अनंगकुसुमादिभि: सेविता: पर्यटसिजालपीठे तदनु चक्रेश्वरी परिजेता नटसि भगमालिनी पूर्णागिरिगह्वरे नग्नकुसुमावृता विलससि मदनशर मधुविकासित कदंबविपिने त्रिपुरसुन्दरी मो घ्राणे नमस्ते नमस्ते नमस्तेअरहंते।

इति त्रिपुरसुन्दरी चरण किं करोऽरीरचन् महाप्रणति दीपकं त्रिपुरदण्डकं दीपक: इमं भजति भक्तिमान् पट्ठत्तिय: सुधीसाधक: सर्वाष्टगुण संपदा भवति भाजन सर्वदा।

॥ इति त्रिपुरसुन्दरी दण्डक ॥

॥ अथ श्रीविद्या खड्गमाला प्रयोग:॥

श्रीविद्या खड्गमाला प्रयोग से श्रीयन्त्रार्चन का प्रयोग फल होता है। श्रीविद्या **श्रीविद्या खड्गमाला** में नामावलि यन्त्रार्चन के संहार क्रम से है, इसलिये यह अर्चन खड्ग के समान कार्य करता है। परन्तु मेरा अनुभव यह है कि खड्गमाला प्रयोग करने या खड्गमाला स्तव पढ़ने के बाद ललिता त्रिंशति स्तव या १०८ नामावलि स्तोत्र पाठ अवश्य करना चाहिये अन्यथा प्रारम्भ में आर्थिक दबाव बनता है बाद में सब कुछ ठीक हो जाता है।

खड्गमाला प्रयोग के प्रतिदिन का क्या-क्या फल है वह उस दिन की ध्यान व प्रार्थना में दिया गया है। साधक सभी सिद्धियों को प्राप्त करता है। भोग एवं मोक्ष उसके करतलगत हैं।

खड्गमाला प्रयोग ललिता पञ्चदशाक्षरी मन्त्र शक्ति पर आधारित है। शुक्लपक्ष व कृष्णपक्ष का पूजन १५ तिथियों की १५ नित्या शक्तियों पर आधारित है। शुक्लपक्ष प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर जो क्रम चलता है वह कृष्णपक्ष में विलोम हो जाता है। शुक्ला पूर्णिमा को जो पूजन क्रम था वही कृष्णा एकम् को होगा तथा जो क्रम पूजन शुक्ला एकम् को था वही कृष्णा अमावस्या को होगा।

१५ दिन के पक्ष में खड्गमाला प्रयोग त्रिशक्ति प्रधान है। यथा -

१. प्रथम ५ दिन शक्ति प्रधान

२. मध्य के ५ दिन शिव प्रधान

३. अन्तिम ५ दिन मिथुनान्त अर्थात् शिवशक्ति प्रधान है।

१५ दिन की प्रत्येक तिथि को ललिता व शिव के अलग-अलग नाम हैं उनकी उसी क्रम से पूजा होगी।

पाँच दिन की अर्चा में एक शक्ति प्रधान देवता के ५ चरण अलग अलग है।

१. संबोधन (सम्बुद्ध्यन्त), २. नमस्कार (नमोऽन्त), ३. स्वाहान्त, ४. तर्पण (तर्पणान्त), ५. जय जय जयान्त

पूजा तर्पण यन्त्रार्चन में एक विवाद व्याकरणाचार्यों का है कि **"नम:" के बाद स्वाहा** या **तर्पण** (तर्पयामि) नहीं आना चाहिये। वैसे गुह्यकाली, कामकलाकाली के अयुताक्षर मन्त्र में नम: के बाद स्वाहा कई मन्त्रों में आया है।

अत: यदि किसी के पास कोई प्राचीन पाण्डू लिपि सम्बुद्ध्यन्त, स्वाहान्त, तर्पणान्त, नमोऽन्त, जयान्त क्रम से हो तो वह उसी क्रम से करें। तथा मुझे भी सूचित करें।

यहां पर नमोऽन्त, स्वाहान्त क्रम से ही पूजन प्रयोग दिया जा रहा है।

महाकाल संहिता में अयुताक्षर मन्त्र दिया गया हैं जिसमें कई स्थानों पर नम: के पश्चात् स्वाहा लिखा है। हमारे मत से नमोन्त के समय गंधाक्षत, पुष्पार्चन होगा तभी तो आगे स्वाहाकार हवनान्त कर्म होगा।

जिस प्रकार नवरात्र में तिथि क्षय के दिन २ पाठ, तथा तिथि वृद्धि के दिन, वृद्धि पाठ करते हैं, उसी प्रकार दूसरी तिथि को उस तिथि देवता का पूजन दुबारा करें।

पूजन सङ्कल्प में साधक यदि पूर्णाभिषिक्त दीक्षा प्राप्त कर चुका है तो अपना नाम **अमुकानन्द** तथा **शांभव** गौत्र का उच्चारण करें। जो साधक पूर्णाभिषिक्त नहीं हैं वे अपना प्रचलित नाम व गौत्र का उच्चारण करें।

वर्ष, मास, तिथि, दिन, घटिका आदि के लिये तान्त्रिक पञ्चांग सारणी प्रयोग दिया गया है उसका प्रयोग करें। यदि उसमें कठिनाई हो तो प्रचलित पञ्चांग से संकल्प करें।

खड्गमाला प्रयोग में श्रीयन्त्र व मूर्ति के सामने पूजन करें।

सम्बुद्ध्यन्त आवाहन क्रिया है। अत: नाम बोलकर अक्षत, पुष्प छोड़कर आवाहन मुद्रा से प्रदर्शन करें। **आवाहयामि स्थापयामि** उच्चारण करें।

मानसिक पूजन में उन देवताओं का हृदय में आवाहन कर हाथ जोडते जायें।

नमोऽन्त माला पूजन विधान में मानसिक पूजन में सभी देवताओं को **नमस्कार करते जाये। बाह्य पूजन में प्रत्येक देवताओं को नमस्कार पूर्वक पात्र में गंधाक्षत पुष्पाञ्जलि देते जायें।**

स्वाहान्त मालाक्रम के अन्तर्गत बाह्यपूजन में प्रतिनाम के बाद **स्वाहा** कहकर हवनकुण्ड में आहुतियाँ देवें। मानसिक पूजन में चित्कुण्ड में हवन कर कुण्डलिनि शक्ति को अर्पण करें।

तर्पणान्त मालाक्रम के अन्तर्गत प्रत्येक देवता के नाम के बाद **तर्पयामि** कहे। बाह्य पूजन में तर्पण किसी पात्र में पुष्प, गंध, सुगंधित जल से करें। मानसिक पूजन में कुण्डलिनी का तर्पण अपनी जिह्वाग्र कर पर करें।

जयान्त माला क्रम के अन्तर्गत प्रत्येक देवता के नाम के बाद प्रफुल्लित मन से **जय-जय** कहें। बाह्य पूजन क्रम में प्रतिनाम पुष्पाञ्जलि छोडें। मानसिक पूजन में देवभाव में समर्पित होकर जय-जय कहें। भावना करें कि देवता की कृपा से दिव्य देह को प्राप्त हो गया हुँ, तथा भगवती के दरबार में पहुँच कर उसकी जय-जयकार कर रहा हूँ।

पूजन क्रम के बाद जप समर्पण कर देवता को अपने हृदय में आसन देवे।

गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवति मे देवि त्वत्प्रसादान् महेश्वरि ॥

जो व्यक्ति पूजा, अर्चा, जपादि में अधिक समय नहीं दे सकते उनके लिये यह खड्गमाला बहुत ही सार्थक व सम्पूर्ण फल प्रदाता है।

प्रत्येक तिथी अनुसार ललिता के विग्रह व उनके शिव के नाम।

१.	कामेश्वरी ललिता	-	शिव कामेश्वर।
२.	एकला ललिता	-	एकवीर कामेश्वर।
३.	ईश्वरी ललिता	-	ईश्वर कामेश्वर।
४.	ललिता ललिता	-	ललित कामेश्वर।
५.	हल्लेखा ललिता	-	हृदय कामेश्वर।
६.	हलिनी ललिता	-	हृदय कामेश्वर।
७.	सरस्वती ललिता	-	सर्वज्ञ कामेश्वर।
८.	कमला ललिता	-	कालमर्दन कामेश्वर।
९.	हरिवल्लभा ललिता	-	हरनाथ कामेश्वर।

१०. लक्ष्मी ललिता – ललज्जिह्व कामेश्वर।
११. हिरण्या ललिता – हृदयेश्वर कामेश्वर।
१२. सकलजननी ललिता – सकलेश्वर कामेश्वर।
१३. कामकोटि ललिता – करुणाकर कामेश्वर।
१४. लीलावती ललिता – लावण्यनायक कामेश्वर।
१५. हरेश्वरी ललिता – हिरण्यबाहु कामेश्वर।

इसी तरह भगवती के १५ विग्रह तथा कामेश्वर शिव के १५ विग्रह का पूजन एक पक्ष में हो जाता है।

ये सभी विग्रह क्लेश, अरिष्ट, ग्रहबाधा, उपद्रव, को दूर कर साधक को अभय प्रदान कर धन व एश्वर्य से परिपूर्ण करते हैं।

॥ प्रत्येक तिथि आधार पर नित्याओं के नाम॥

तांत्रिक संकल्प में उस दिन की नित्या का नाम भी उच्चारण कर उस दिन की नित्या का भी पूजन करते हैं।

॥ शुक्ल पक्ष की नित्यायें॥

प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यन्त – **कामेश्वरि, भगमालिनी, नित्यक्लिन्ना, भेरुण्डा, वह्निवासिनी, महावज्रेश्वरि, शिवदूती, त्वरिता, कुलसुन्दरि, नित्या, नीलपताका, विजया, सर्वमङ्गला, ज्वलामालिनि, चित्रा (विचित्रा)।**

॥ कृष्णपक्ष की नित्यायें॥

प्रतिपदा से अमावस्या पर्यन्त – **चित्रा, ज्वालामालिनी, सर्वमंगला, विजया, नीलपताका, नित्या, कुलसुन्दरि, त्वरिता, शिवदूती, महावज्रेश्वरि, वह्निवासिनी, भेरुण्डा, नित्यक्लिन्ना, भगमालिनी, कामेश्वरि।**

जो साधक चित्रा का अमावस्या को पूजन करते है। वे प्रतिपदा को कामेश्वरि ललिता तथा द्वितीया को भी कामेश्वरि नित्या का पूजन कर आगे क्रमवत पूजन करते है।

कई साधक पूर्णिमा को चित्रा तथा अमावस्या को विचित्रा के नाम से नित्या का पूजन करते है।

॥ संकल्प विधि॥

दैनिक पञ्चांग पर प्रचलित विधिः– **ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे भरतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत देशे पुण्य प्रदेशे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमेवैवस्वत मवन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बुद्वीपे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे कन्याकुमारिकानाम क्षेत्रे श्रीमहानद्यो गंगायमुनोः पश्चिम तटे नर्मदायां उत्तर तटे अमुकारण्य क्षेत्रे, अमुक राज्ये, अमुक मण्डलान्तर्गत, अमुक नगरे, अमुकक्षेत्रे, स्वभवने मन्दिर श्रीशालिवाहन शके अमुक नाम संवत्सरे अमुकायने अमुक ॠतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकनामाः नित्यादेवी अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे, अमुककरणे, अमुक गोत्रोत्पन्नऽमुक शर्माऽहं** (पूर्णाभिषिक्त साधक का शांभव गौत्र तथा दीक्षानाम अमुकानन्दनाथ उच्चारण) **मम इह जन्मनि जन्म जन्मान्तरे वा सकल दुरितोप शमनार्थे, मम सकुटुम्बस्य, सपरिवारस्य, समस्त रोग दोष भय क्लेश जरापीड़ा, विघ्न कुयोग निवृत्ति पूर्वकं आयु आरोग्य ऐश्वर्यादि अभिवृद्ध्यर्थं श्रीकामेश्वाङ्कनिलया भगवति ललिता महात्रिपुरी प्रीत्यर्थं श्रीखड्गमाला महामन्त्रस्य पारायण महं करिष्ये।**

॥ तांत्रिक संकल्प ॥

तान्त्रिक पञ्चाग सारिणी पुस्तक में दी गई है उसके अनुसार वर्ष, अयन, मास, पक्ष, वार, दिन नित्यादि का निर्णय कर संकल्प में उच्चारण करें। तान्त्रिक पञ्चाग दतिया या मथुरा से प्राप्त करें।

संकल्प – आदि गुरोः परशिवस्याज्ञया प्रवर्त्तमान देविमानेन षट्त्रिंशत् तत्वात्मक सकल प्रपञ्च सृष्टि स्थिति संहार तिरोधानानुग्रह कारिण्या श्रीपरशक्त्या उर्ध्वभ्रूविभ्रमे अं पूर्णे, पं सत्ये, हं शवले, हस्खफ्रें खर्वे, क्लीं रामे, स्हख्फ्रें महापरिवृत्तौ थं अष्टादश परिवृत्तौ, शून्यं महायुगे, खं युगे (कलियुगे, अमुकसंवत्सर अयन, मासादिका उल्लेख साधक करें यदि उसे तान्त्रिक वर्ष, अयन, मासादि का नाम ज्ञात नहीं होवे) अमुक वर्षे, अमुक मासे, अमुक लघुमासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथि, अमुक तिथिनित्या, अमुक नाथे, अमुक घटिकायां, अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे, अमुक करणे, अमुक विद्यायां, अमुक महाविद्यायां, (श्रीविद्यायां, ललिता त्रिपुरसुन्दरी महाविद्यायाम्) **अमुक वासरे शाम्भव गोत्रोत्पन्न, अमुकानन्दनाथोऽहं** (स्वयं का दीक्षा नाम) **श्रीपरमेश्वरी परमेश्वर परदेवता प्रीत्यर्थं श्रीविद्या खड्गमाला महामन्त्रस्य पारायण महं करिष्ये।**

यह सङ्कल्प प्रतिदिन करें।

॥ मानसिक पूजन ॥

पूजन काल में बाह्य अर्चा साधक द्वारा की जाती है। अपने हृदय स्थल में विराजमान इष्ट देवता का मानसिक पूजन करें। प्रत्येक अलग अलग तिथि को भगवती तथा कामेश्वर शिव के अलग अलग विग्रह हैं, उनका वर्णन पूर्व में दिया जा चुका है। वर्तमान तिथि को उस दिन के देवता एवं नित्या का मानसिक पूजन करें।

१. गंधार्चन – लं पृथिव्यात्मकं गंधं (अमुक देवता) पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
अधोमुख कनिष्ठा व अंगुष्ठ संयोगे।

२. पुष्पार्चन – हं आकाशत्मकं पुष्पं (अमुक देवता) पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
अधोमुख अंगुष्ठ व तर्जनी संयोगे।

३. धूपार्चन – यं वाय्वात्मकं धूपं (अमुक देवता) पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
उर्ध्वमुख तर्जनी व अंगुष्ठ संयोगे।

४. दीप दर्शनम् – रं वह्न्यात्मकं दीपं (अमुक देवता) पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
उर्ध्वमुख मध्यमा व अंगुष्ठ संयोगे।

५. नैवेद्यार्पण् – वं अमृतात्मकं नैवेद्यं (अमुक देवता) पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
उर्ध्वमुख अनामिका व अंगुष्ठ संयोगे।

६. ताम्बूलार्पण – शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं (अमुक देवता) पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।
उर्ध्वमुख सर्वाङ्गुलि संयोगे।

॥ अथ न्यास प्रयोगः॥

कराङ्गन्यास व षड्ङ्गन्यास निम्न विधि से सदैव करना चाहिये।

कराङ्गन्यास – ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं

कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्ः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास – ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हूं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्ः अस्त्राय फट्।

॥ अथ श्रीविद्या खड्गमाला पारायण:॥

॥ १. शक्ति सम्बुद्ध्यन्त माला॥

शुक्ला प्रतिपदा पूजन "क" कृष्णा अमावस्या पूजन

सङ्कल्प – पूर्वोक्त सङ्कल्प विधि प्रचलित या तान्त्रिक विधि से करें।

उस दिन की नित्या, ललिता त्रिपुर सुन्दरी तथा शिव के विग्रह का पूजन करें।

विनियोग – अस्य श्रीशक्ति सम्बुद्ध्यन्त माला मन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि वरुणादित्य ऋषिः। गायत्री छन्दः। सात्विक ककार भट्टारक पीठ स्थित शिवकामेश्वराङ्क निलया श्री ललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। खड्गसिद्धौ विनियोगः।
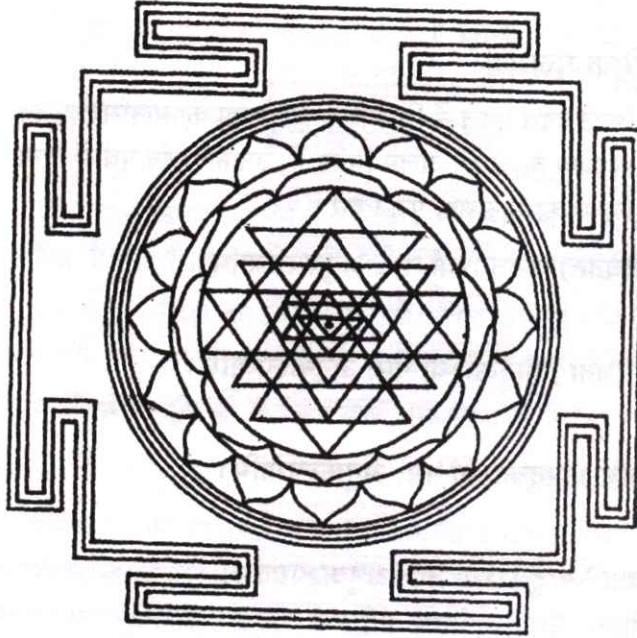
ऋष्यादिन्यास – उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि वरुणादित्य ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। सात्विक ककार भट्टारक पीठ स्थित शिवकामेश्वराङ्क निलयायै श्री ललिता महात्रिपुर सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तिये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयौः। खड्गसिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – पश्चात् पूर्व वर्णित विधि से कराङ्गन्यास व षड्ङ्गन्यास करें, ध्यान व प्रार्थना करें –

॥ प्रार्थना ॥

तादृश खड्ग माप्नोति येन हस्तस्थितेन वै ।
अष्टादश महाद्वीप साम्राज्य भोक्ता भविष्यति ॥

॥ मानस पूजा ॥

मानस पूजा विधि में अमुक देवता के स्थान पर "**श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी**" प्रयोग कर सर्व विधि पूजन करें। उस दिन की नित्या का पूजन करें।

पश्चात् माला पारायण प्रारंभ करें। प्रत्येक देवता के नाम संबोधन से हाथ जोड़कर ध्यान करें। अथवा प्रत्येक

आवरण देवता के नाम बोलकर **ध्यायामि आवाहयामि** कहें अथवा एक साथ कहें -

''**सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि**'' यथा -

॥ माला पारायण ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर सुन्दरि ध्यायामि आवहयामि।

हृदय देवि, शिरोदेवि, शिखा देवि, कवच देवि, नेत्र देव्यस्त्र देवि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डे वह्निवासिनी महावज्रेश्वरि शिवादूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

परमेश्वर परमेश्वरि मित्रीशमयि षष्ठीश मय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रामय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचारमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकलानाथमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकरदेवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि। श्रीरामानन्दमयि सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

अणिमासिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

ब्राह्मी माहेश्वरि कौमारि वैष्णवी वाराही माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहांकुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिनि प्रकट योगिनि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षण्यहङ्काराकर्षिणि शब्दाकर्षिणि स्पर्शाकर्षिणि रूपाकर्षिणि रसाकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजाकर्षण्यात्माकर्षण्य अमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनि गुप्त योगिनि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

अनङ्गकुसुमे अनङ्गमेखले अनङ्गमदने अनङ्गमदनातुरे अनङ्गरेखे अनङ्गवेगिन्य अनङ्गांकुशे अनङ्गमालिनि सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनि गुप्ततर योगिनि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसम्पत्तिपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयंकरि सर्वसौभाग्यदायकचक्र स्वामिनि सम्प्रदाय योगिनि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पदप्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायनि सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिनि कुलोत्तीर्ण योगिनि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वेश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिनि निगर्भ योगिनि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

वशिनि कामेश्वरि मोदिनि विमले अरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्वरोगहर चक्र स्वामिनि रहस्य योगिनि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

वाणिनि चापिनि पाशिन्यंकुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरी सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्यति रहस्य योगिनि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

श्रीश्रीमहाभट्टारिके सर्वानन्दमयचक्र स्वामिनि परापर रहस्य योगिनि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्री त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दरि। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

महामहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहास्पन्दे महामहाशये महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञि नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं। सर्वेदेवता ध्यायामि आवाहयामि।

मन्त्र जपकर समर्पण करें।

गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवति मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि ॥

॥ २. शक्ति नमोऽन्त माला ॥

शुक्ला द्वितिया पूजन "ए" कृष्णा चतुर्दशी पूजन

सङ्कल्प – दैनिक सङ्कल्प पूर्वोक्त विधि से करें।

विनियोग – अस्य श्रीशक्ति नमोऽन्त माला मन्त्रस्य पाय्विन्द्रियाधिष्ठायि मित्रादित्य ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। भोगद एकार भट्टारक पीठ स्थित एकवीरकामेश्वराङ्क निलया श्री एकला ललिता महात्रिपुर सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। पादुकासिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – पाय्विन्द्रियाधिष्ठायि मित्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे। भोगद एकार भट्टारक पीठ स्थित एकवीरकामेश्वराङ्क निलयायै श्री एकला ललिता महात्रिपुर सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्त्ये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयौः। पादुकासिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – कराङ्ग व हृदयादि न्यास पूर्व विधि के अनुसार करें। पश्चात् ध्यान पूर्वक प्रार्थना करें।

॥ ध्यानम् ॥

तादृशं पादुका युगममाप्नोति तव भक्तिमान् ।
यदाक्रमण मात्रेण क्षणात् त्रिभुवन क्रमः ॥

मानस पूजा – पूर्व वर्णित मानसिक पूजन में अमुक देवता के स्थान पर "**एकवीरकामेश्वराङ्क निलया श्री एकला ललिता महात्रिपुर सुन्दरी**" कह कर संपूर्ण मानस पूजा करें।

॥ माला पारायण ॥

प्रत्येक देवता का नाम चतुर्थी संबोधन से है अतः प्रत्येक नाम के बाद "**नमः पादुकां पूजयामि**" जोड़कर नमस्कार करें। बाह्य पूजन में गंध, पुष्पाक्षत् छोड़कर नमस्कार करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।

हृदय देव्यै नमः पादुकां पूजयामि, शिरोदेव्यै०, शिखा देव्यै०, कवच देव्यै०, नेत्र देव्यै०, अस्त्र देव्यै०। कामेश्वर्यै०, भगमालिन्यै०, नित्यक्लिन्नायै०, भेरुण्डायै०, वह्निवासिन्यै०, महावज्रेश्वर्यै०, शिवादूत्यै०,

****

त्वरितायै०, कुलसुन्दर्यै०, नित्यायै०, नीलपताकायै०, विजयायै०, सर्वमङ्गलायै०, ज्वालामालिन्यै०, चित्रायै०, महानित्यायै०,।

परमेश्वर परमेश्वर्यै०, मित्रीशमय्यै०, षष्ठीशमय्यै०, उड्डीशमय्यै०, चर्यानाथमय्यै०, लोपामुद्रामय्यै०, अगस्त्यमय्यै०, कालतापनमय्यै०, धर्माचारमय्यै०, मुक्तकेशीश्वरमय्यै०, दीपकलानाथमय्यै०, विष्णुदेवमय्यै०, प्रभाकरदेवमय्यै०, तेजोदेवमय्यै०, मनोजदेवमय्यै०, कल्याणदेवमय्यै०, रत्नदेवमय्यै०, वासुदेवमय्यै०, श्रीरामानन्दमय्यै०।

अणिमासिद्ध्यै०, लघिमासिद्ध्यै०, महिमासिद्ध्यै०, ईशत्वसिद्ध्यै०, वशित्वसिद्ध्यै०, प्राकाम्यसिद्ध्यै०, भुक्तिसिद्ध्यै०, इच्छासिद्ध्यै०, प्राप्तिसिद्ध्यै०, सर्वकामसिद्ध्यै०,।

ब्राह्मयै०, माहेश्वर्यै०, कौमार्यै०, वैष्णव्यै०, वाराह्यै०, माहेन्द्र्यै०, चामुण्डायै०, महालक्ष्म्यै०।

सर्वसंक्षोभिण्यै०, सर्वविद्राविण्यै०, सर्वाकर्षिण्यै०, सर्ववशङ्कर्यै०, सर्वोन्मादिन्यै०, सर्वमहांकुशायै०, सर्वखेचर्यै०, सर्वबीजायै०, सर्वयोन्यै०, सर्वत्रिखण्डायै०, त्रैलोक्य मोहन चक्र स्वामिन्यै०, प्रकट योगिन्यै०।

कामाकर्षण्यै०, बुद्ध्याकर्षण्यै०, अहङ्काराकर्षण्यै०, शब्दाकर्षण्यै०, स्पर्शाकर्षण्यै०, रूपाकर्षण्यै०, रसाकर्षण्यै०, गन्धाकर्षण्यै०, चित्ताकर्षण्यै०, धैर्याकर्षण्यै०, स्मृत्याकर्षण्यै०, नामाकर्षण्यै०, बीजाकर्षण्यै०, आत्माकर्षण्यै०, अमृताकर्षण्यै०, शरीराकर्षण्यै०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिन्यै०, गुप्त योगिन्यै०।

अनङ्गकुसुमायै०, अनङ्गमेखलायै०, अनङ्गमदनायै०, अनङ्गमदनातुरायै०, अनङ्गरेखायै०, अनङ्गवेगिन्यै०, अनङ्गांकुशायै०, अनङ्गमालिन्यै०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्यै०, गुप्ततर योगिन्यै०।

सर्वसंक्षोभिण्यै०, सर्वविद्राविण्यै०, सर्वाकर्षिण्यै०, सर्वाह्लादिन्यै०, सर्वसम्मोहिन्यै०, सर्वस्तम्भिन्यै०, सर्वजृम्भिण्यै०, सर्ववशङ्कर्यै०, सर्वरञ्जिन्यै०, सर्वोन्मादिन्यै०, सर्वार्थसाधिन्यै०, सर्वसम्पत्तिपूरण्यै०, सर्वमन्त्रमय्यै०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्यै०, सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिन्यै०, सम्प्रदाय योगिन्यै०,।

सर्वसिद्धप्रदायै०, सर्वसम्पत्प्रदायै०, सर्वप्रियङ्कर्यै०, सर्वमङ्गलकारिण्यै०, सर्वकामप्रदायै०, सर्वदुःखविमोचिन्यै०, सर्वमृत्युप्रशमन्यै०, सर्वविघ्ननिवारिण्यै०, सर्वाङ्गसुन्दर्यै०, सर्वसौभाग्य दायिन्यै०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिन्यै०, कुलोत्तीर्ण योगिन्यै०,।

सर्वज्ञायै०, सर्वशक्त्यै०, सर्वेश्वर्यप्रदायै०, सर्वज्ञानमय्यै०, सर्वव्याधिविनाशिन्यै०, सर्वाधारस्वरूपायै०, सर्वपापहरायै०, सर्वानन्दमय्यै०, सर्वरक्षास्वरूपिण्यै०, सर्वेप्सितप्रदायै०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्यै०, निगर्भ योगिन्यै०,।

वशिन्यै०, कामेश्वर्यै०, मोदिन्यै०, विमलायै०, अरुणायै०, जयिन्यै०, सर्वेश्वर्यै०, कौलिन्यै०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिन्यै०, रहस्य योगिन्यै०,।

वाणिन्यै०, चापिन्यै०, पाशिन्यै०, अंकुशिन्यै०। महाकामेश्वर्यै०, महावज्रेश्वर्यै०, महाभगमालिन्यै०, महाश्रीसुन्दर्यै०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्यै०, अतिरहस्य योगिन्यै०,।

श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिन्यै०, परापर रहस्य योगिन्यै०,।

त्रिपुरायै०, त्रिपुरेश्यै०, त्रिपुरसुन्दर्यै०, त्रिपुरवासिन्यै०, त्रिपुराश्रीयै०, त्रिपुरमालिन्यै०, त्रिपुरासिद्धायै०, त्रिपुराम्बायै०, महात्रिपुरसुन्दर्यै०।

महामहेश्वर्यै०, महामहाराज्ञ्यै०, महामहाशक्त्यै०, महामहागुप्तायै०, महामहाज्ञप्तायै०, महामहानन्दायै०, महामहास्पन्दायै०, महामहाशयायै०, महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञ्यै०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

मन्त्र जपकर समर्पण करें।

गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवति मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि ॥

॥ ३. शक्ति स्वाहान्त माला ॥

शुक्ला तृतीया पूजन "ई" कृष्णा त्रयोदशी पूजन

सङ्कल्प - दैनिक सङ्कल्प व हृदयादि न्यास पूर्वोक्त विधि से करें।

विनियोग - अस्य श्रीशक्ति स्वाहान्त माला मन्त्रस्य पादेन्द्रियाधिष्ठायि धात्रादित्य ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। मोक्षद ईकार भट्टारक पीठ स्थित ईश्वरकामेश्वराङ्क निलया श्रीईश्वरी कामेश्वरी ललिता महात्रिपुर सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। अञ्जनसिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास - पादेन्द्रियाधिष्ठायि धात्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। मोक्षद ईकार भट्टारक पीठ स्थित ईश्वरकामेश्वराङ्क निलया श्रीईश्वरी कामेश्वरी ललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। अञ्जनसिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास - कराङ्ग व हृदयादि न्यास पूर्व विधि के अनुसार करें। पश्चात् ध्यान पूर्वक प्रार्थना करें।

॥ ध्यानम् ॥

सिद्धाञ्जनं समासाद्य तेनाञ्जनितलोचनः ।
निधिं पश्यति सर्वत्र भक्तस्तेन समृद्धिमान् ॥

मानस पूजा - पूर्व वर्णित मानस पूजा में अमुक देवता की **"ईश्वर कामेश्वराङ्क निलया श्री ईश्वरी ललिता महात्रिपुर सुन्दरी"** नाम से पूजन करें।

॥ माला पारायण ॥

प्रत्येक नामावलि के बाद **"स्वाहा"** जोड़कर जप करें। बाह्य पूजा में हवन कुण्ड में होम करें। मानसिक पूजन में चित् कुण्ड में हवन करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

पश्चात् अङ्ग होम है, अतः मानसिक पूजन में स्वाहा युक्त जप करें।

हृदय देव्यै स्वाहा। शिरो देव्यै स्वाहा। शिखा देव्यै स्वाहा। कवच देव्यै स्वाहा। नेत्र देव्यै स्वाहा। अस्त्र देव्यै स्वाहा।

परन्तु बाह्य पूजन में हवन कुण्ड में अङ्ग होम निषिद्ध है। अतः **"हृदय देव्यै"** इत्यादि नाम मनसा उच्चारण करें एवं मूल मन्त्र से आहुति देवें।

यथा – (मनसा) **हृदय देव्यै। मूल मन्त्रेण स्वाहा। शिरो देव्यै** (मनसा)। **क ए ई ल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा।**

कहीं कहीं यह लिखा है कि अङ्ग होम में द्रव्य सहित आहुति नहीं देवें, केवल घृतादि को आहुति देवें। यह **मयूख ग्रन्थों** का मत है।

सभी नामावली के साथ स्वाहा पूर्वक हवन करें।

हृदय देव्यै स्वाहा, शिरोदेव्यै०, शिखा देव्यै०, कवच देव्यै०, नेत्र देव्यै०, अस्त्र देव्यै०।

कामेश्वर्यै०, भगमालिन्यै०, नित्यक्लिन्नायै०, भेरुण्डायै०, वह्निवासिन्यै०, महावज्रेश्वर्यै०, शिवादूत्यै०, त्वरितायै०, कुलसुन्दर्यै०, नित्यायै०, नीलपताकायै०, विजयायै०, सर्वमङ्गलायै०, ज्वालामालिन्यै०, चित्रायै०, महानित्यायै०,।

परमेश्वर परमेश्वर्यै०, मित्रीशमय्यै०, षष्ठीशमय्यै०, उड्डीशमय्यै०, चर्यानाथमय्यै०, लोपामुद्रामय्यै०, अगस्त्यमय्यै०, कालतापनमय्यै०, धर्माचारमय्यै०, मुक्तकेशीश्वरमय्यै०, दीपकलानाथमय्यै०, विष्णुदेवमय्यै०, प्रभाकरदेवमय्यै०, तेजोदेवमय्यै०, मनोजदेवमय्यै०, कल्याणदेवमय्यै०, रत्नदेवमय्यै०, वासुदेवमय्यै०, श्रीरामानन्दमय्यै०।

अणिमासिद्ध्यै०, लघिमासिद्ध्यै०, महिमासिद्ध्यै०, ईशत्वसिद्ध्यै०, वशित्वसिद्ध्यै०, प्राकाम्यसिद्ध्यै०, भुक्तिसिद्ध्यै०, इच्छासिद्ध्यै०, प्राप्तिसिद्ध्यै०, सर्वकामसिद्ध्यै०,।

ब्राह्म्यै०, माहेश्वर्यै०, कौमार्यै०, वैष्णव्यै०, वाराह्यै०, माहेन्द्र्यै०, चामुण्डायै०, महालक्ष्म्यै०।

सर्वसंक्षोभिण्यै०, सर्वविद्राविण्यै०, सर्वाकर्षिण्यै०, सर्ववशङ्कर्यै०, सर्वोन्मादिन्यै०, सर्वमहांकुशायै०, सर्वखेचर्यै०, सर्वबीजायै०, सर्वयोन्यै०, सर्वत्रिखण्डायै०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिन्यै०, प्रकट योगिन्यै०।

कामाकर्षण्यै०, बुद्ध्याकर्षण्यै०, अहङ्काराकर्षण्यै०, शब्दाकर्षण्यै०, स्पर्शाकर्षण्यै०, रूपाकर्षण्यै०, रसाकर्षण्यै०, गन्धाकर्षण्यै०, चित्ताकर्षण्यै०, धैर्याकर्षण्यै०, स्मृत्याकर्षण्यै०, नामाकर्षण्यै०, बीजाकर्षण्यै०, आत्माकर्षण्यै०, अमृताकर्षण्यै०, शरीराकर्षण्यै०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिन्यै०, गुप्त योगिन्यै०।

अनङ्गकुसुमायै०, अनङ्गमेखलायै०, अनङ्गमदनायै०, अनङ्गमदनातुरायै०, अनङ्गरेखायै०, अनङ्गवेगिन्यै०, अनङ्गांकुशायै०, अनङ्गमालिन्यै०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्यै०, गुप्ततर योगिन्यै०।

सर्वसंक्षोभिण्यै०, सर्वविद्राविण्यै०, सर्वाकर्षिण्यै०, सर्वाह्लादिन्यै०, सर्वसम्मोहिन्यै०, सर्वस्तम्भिन्यै०, सर्वजृम्भिण्यै०, सर्ववशङ्कर्यै०, सर्वरञ्जिन्यै०, सर्वोन्मादिन्यै०, सर्वार्थसाधिन्यै०, सर्वसम्पत्तिपूरण्यै०, सर्वमन्त्रमय्यै०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्यै०, सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिन्यै०, सम्प्रदाय योगिन्यै०,।

सर्वसिद्धप्रदायै०, सर्वसम्पदत्प्रदायै०, सर्वप्रियङ्कर्यै०, सर्वमङ्गलकारिण्यै०, सर्वकामप्रदायै०, सर्वदुःखविमोचिन्यै०, सर्वमृत्युप्रशमन्यै०, सर्वविघ्ननिवारिण्यै०, सर्वाङ्गसुन्दर्यै०, सर्वसौभाग्य दायिन्यै०, सर्वार्थ साधक चक्र स्वामिन्यै०, कुलोत्तीर्ण योगिन्यै०,।

सर्वज्ञायै०, सर्वशक्त्यै०, सर्वेश्वर्यप्रदायै०, सर्वज्ञानमय्यै०, सर्वव्याधिविनाशिन्यै०, सर्वाधारस्वरूपायै०, सर्वपापहरायै०, सर्वानन्दमय्यै०, सर्वरक्षास्वरूपिण्यै०, सर्वेप्सितप्रदायै०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्यै०, निगर्भ योगिन्यै०,।

वशिन्यै०, कामेश्वर्यै०, मोदिन्यै०, विमलायै०, अरुणायै०, जयिन्यै०, सर्वेश्वर्यै०, कौलिन्यै०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिन्यै०, रहस्य योगिन्यै०,।

वाणिन्यै०, चापिन्यै०, पाशिन्यै०, अंकुशिन्यै०, महाकामेश्वर्यै०, महावज्रेश्वर्यै०, महाभगमलिन्यै०, महाश्रीसुन्दर्यै०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्यै०, अतिरहस्य योगिन्यै०,।

श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिन्यै०, परापर रहस्य योगिन्यै०,।

त्रिपुरायै०, त्रिपुरेश्यै०, त्रिपुरसुन्दर्यै०, त्रिपुरवासिन्यै०, त्रिपुराश्रियै०, त्रिपुरमालिन्यै०, त्रिपुरासिद्धायै०, त्रिपुराम्बायै०, महात्रिपुरसुन्दर्यै०।

महामहेश्वर्यै०, महामहाराज्ञ्यै०, महामहाशक्त्यै०, महामहागुप्तायै०, महामहाज्ञप्त्यै०, महामहानन्दायै०, महामहास्पन्दायै महामहाशयायै०, महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञ्यै०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

मन्त्र जपकर समर्पण करें।

गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवति मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि ॥

॥ ४. शक्ति तर्पणान्त माला ॥

शुक्ला चतुर्थी पूजन "ल" कृष्णा द्वादशी पूजन

सङ्कल्प – दैनिक सङ्कल्प व कराङ्गन्यास, हृदयादि न्यास पूर्वोक्त विधि से करें।

विनियोग – अस्य श्रीशक्ति तर्पणान्त माला मन्त्रस्य पाणिन्द्रियाधिष्ठायि अर्यमादित्य ऋषिः। बृहति छन्दः। सात्विक लकार भट्टारक पीठ स्थित ललितकामेश्वराङ्क निलया श्रीललित ललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। बिलसिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – पाणिन्द्रियाधिष्ठायि अर्यमादित्य ऋषये नमः शिरसि। बृहती छन्दसे नमः मुखे। सात्विक लकार भट्टारक पीठ स्थित ललितकामेश्वराङ्क निलया श्रीललित ललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्त्ये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयौः। बिलसिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – कराङ्ग व हृदयादि न्यास पूर्व विधि के अनुसार करें। पश्चात् ध्यान कर मानसिक पूजा करें।

॥ ध्यानम् ॥

बिल द्वारमपावृत्य पातालतल योगिनः।
वीक्ष्य तेभ्यो लब्ध सिद्धस्तव भक्तः सुखी भवेत् ॥

मानस पूजा – मानस पूजा में अमुक देवता की जगह "**ललित कामेश्वराङ्क निलया श्री ललित ललिता महात्रिपुरसुन्दरी**" नाम से पूजन करें।

॥ माला पारायण ॥

प्रत्येक देवता का बाह्यतर्पण, सुगंधित द्रव्य युक्त जल व पुष्पों से करें। मानसिक पूजन में अपनी जिह्वाग्र पर कुण्डलिनि का तर्पण करें। प्रत्येक नाम के बाद में "**तर्पयामि**" जोड़कर जप व तर्पण करें।

****

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि।

हृदय देवीं तर्पयामि। (इसी तरह सर्वत्र यजन करें)

हृदयदेवीं तर्पयामि, शिरोदेवीं०, शिखा देवीं०, कवच देवीं०, नेत्र देवीं०, अस्त्र देवीं०,।

कामेश्वरीं०, भगमालिनीं०, नित्यक्लिन्नां०, भेरुण्डां०, वह्नि वासिनीं०, महावज्रेश्वरीं०, शिवादूतीं०, त्वरितां०, कुलसुन्दरीं०, नित्यां०, नीलपताकां०, विजयां०, सर्वमङ्गलां०, ज्वालामालिनीं०, चित्रां०, महानित्यां०,।

परमेश्वर परमेश्वरीं०, मित्रीशमयीं०, षष्ठीशमयीं०, उड्डीशमयीं०, चर्यानाथमयीं०, लोपामुद्रामयीं०, अगस्त्यमयीं०, कालतापनमयीं०, धर्माचारमयीं०, मुक्तकेशीश्वरमयीं०, दीपकलानाथमयीं०, विष्णुदेवमयीं०, प्रभाकरदेवमयीं०, तेजोदेवमयीं०, मनोजदेवमयीं०, कल्याणदेवमयीं०, रत्नदेवमयीं०, वासुदेवमयीं०, श्रीरामानन्दमययीं०।

अणिमासिद्धिं०, लघिमासिद्धिं०, महिमासिद्धिं०, ईशित्वसिद्धिं०, वशित्वसिद्धिं०, प्राकाम्यसिद्धिं०, भुक्तिसिद्धिं०, इच्छासिद्धिं०, प्राप्तिसिद्धिं०, सर्वकामसिद्धिं०,।

ब्राह्मीं०, माहेश्वरीं०, कौमारीं०, वैष्णवीं०, वाराहीं०, माहेन्द्रीं०, चामुण्डां०, महालक्ष्मीं०,।

सर्वसंक्षोभिणीं०, सर्वविद्राविणीं०, सर्वाकर्षिणीं०, सर्ववशङ्करीं०, सर्वोन्मादिनीं०, सर्वमहांकुशां०, सर्वखेचरीं०, सर्वबीजां०, सर्वयोनिं०, सर्वत्रिखण्डां०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिनीं०, प्रकट योगिनीं०,।

कामाकर्षणीं०, बुद्ध्याकर्षणीं०, अहङ्काराकर्षणीं०, शब्दाकर्षणीं०, स्पर्शाकर्षणीं०, रूपाकर्षणीं०, रसाकर्षणीं०, गन्धाकर्षणीं०, चित्ताकर्षणीं०, धैर्याकर्षणीं०, स्मृत्याकर्षणीं०, नामाकर्षणीं०, बीजाकर्षणीं०, आत्माकर्षणीं०, अमृताकर्षणीं०, शरीराकर्षणीं०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनीं०, गुप्त योगिनीं०,।

अनङ्गकुसुमां०, अनङ्गमेखलां०, अनङ्गमदनां०, अनङ्गमदनातुरां०, अनङ्गरेखां०, अनङ्गवेगिनीं०, अनङ्गांकुशां०, अनङ्गमालिनीं०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनीं गुप्ततर योगिनीं।

सर्वसंक्षोभिणीं०, सर्वविद्राविणीं०, सर्वाकर्षिणीं०, सर्वाह्लादिनीं०, सर्वसम्मोहिनीं०, सर्वस्तम्भिनीं०, सर्वजृम्भिणीं०, सर्ववशङ्करीं०, सर्वरञ्जिनीं०, सर्वोन्मादिनीं०, सर्वार्थसाधिनीं०, सर्वसम्पत्तिपूरणीं०, सर्वमन्त्रमयीं०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरीं०, सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिनीं०, सम्प्रदाय योगिनीं०,।

सर्वसिद्धप्रदां०, सर्वसम्पत्प्रदां०, सर्वप्रियङ्करीं०, सर्वमङ्गलकारिणीं०, सर्वकामप्रदां०, सर्वदुःखविमोचिनीं०, सर्वमृत्युप्रशमनीं०, सर्वविघ्ननिवारिणीं०, सर्वाङ्गसुन्दरीं०, सर्वसौभाग्य दायिनीं०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिनीं०, कुलोत्तीर्ण योगिनीं०,।

सर्वज्ञां०, सर्वशक्तिं०, सर्वैश्वर्यप्रदां०, सर्वज्ञानमयीं०, सर्वव्याधिविनाशिनीं०, सर्वाधारस्वरूपां०, सर्वपापहरां०, सर्वानन्दमयीं०, सर्वरक्षास्वरूपिणीं०, सर्वेप्सितप्रदां, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिनीं०, निगर्भ योगिनीं०,।

वशिनीं०, कामेश्वरीं०, मोदिनीं०, विमलां०, अरुणां०, जयिनीं०, सर्वेश्वरीं०, कौलिनीं०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिनीं०, रहस्य योगिनीं०,।

वाणिनीं०, चापिनीं०, पाशिनीं०, अंकुशिनीं०, महाकामेश्वरीं०, महावज्रेश्वरीं०, महाभगमालिनीं०, महाश्रीसुन्दरीं०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिनीं०, अतिरहस्ययोगिनीं०,।

श्रीश्रीमहाभट्टारिकां०, सर्वानन्दमय चक्रस्वामिनीं०, परापर रहस्ययोगिनीं०,।

त्रिपुरां०, त्रिपुरेशीं०, त्रिपुरसुन्दरीं०, त्रिपुरवासिनीं०, त्रिपुराश्रियं०, त्रिपुरमालिनीं०, त्रिपुरासिद्धां०, त्रिपुराम्बां०, महात्रिपुरसुन्दरीं०।

महामहेश्वरीं०, महामहाराज्ञीं०, महामहाशक्तिं०, महामहागुप्तां०, महामहाज्ञप्तिं०, महामहानन्दां०, महामहास्पन्दां०, महामहाशयां०, महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञीं०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

मन्त्र जपकर समर्पण करें।

गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवति मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि ॥

॥ ५. शक्ति जयान्त माला ॥

शुक्ला पञ्चमी पूजन "ह्रीं" कृष्णा एकादशी पूजन

सङ्कल्प – दैनिक सङ्कल्प व कराङ्गन्यास, हृदयादि न्यास पूर्वोक्त विधि से करें।

विनियोग – अस्य श्रीशक्ति जयान्त माला मन्त्रस्य वागिन्द्रियाधिष्ठायि अंशुमदादित्य ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। सात्विक ह्रींकार भट्टारकपीठ स्थित हृदयकामेश्वराङ्क निलया श्रीहृल्लेखा ललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। वाक्सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – वागिन्द्रियाधिष्ठायि अंशुमदादित्य ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। सात्विक ह्रींकार भट्टारकपीठ स्थित हृदयकामेश्वराङ्क निलया श्रीहृल्लेखा ललिता महात्रिपुर सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्त्ये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। वाक्सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – कराङ्ग व हृदयादि न्यास पूर्व विधि के अनुसार करें। पश्चात् ध्यान कर मानसिक पूजा करें।

॥ ध्यानम् ॥

वाक् सिद्धिर्द्विविधा प्रोक्ता शापानुग्रह कारिणी ।
महाकवित्वरूपा च भक्तस्तेन द्वयास्पदः ॥

मानस पूजा – बाह्य पूजा के साथ साथ मानसिक पूजा भी करें। पूर्वोक्त विधि में अमुक देवता की जगह "श्रीहृदयकामेश्वराङ्क निलया श्री हृल्लेखा ललिता महात्रिपुर सुन्दरी" नाम से पूजन करें।

॥ माला पारायण ॥

प्रत्येक नाम के बाद पुष्पाभिवादन कर, हाथ जोड़कर जय जय कहकर अभिवादन करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर सुन्दरि ध्यायामि जय जय। इति सर्वत्र।

हृदय देवि जय जय, शिरोदेवि०, शिखा देवि०, कवच देवि०, नेत्र देवि०, अस्त्र देवि०।

कामेश्वरि०, भगमालिनि०, नित्यक्लिन्ने०, भेरुण्डे०, वह्निवासिनी०, महावज्रेश्वरि०, शिवादूति०, त्वरिते०, कुलसुन्दरि०, नित्ये०, नीलपताके०, विजये०, सर्वमङ्गले०, ज्वालामालिनि०, चित्रे०, महानित्ये०।

परमेश्वर परमेश्वरि०, मित्रीशमयि०, षष्ठीशमयि०, उड्डीशमयि०, चर्यानाथमयि०, लोपामुद्रामयी०, अगस्त्यमयि०,

***

कालतापनमयि०, धर्माचारमयि०, मुक्तकेशीश्वरमयि०, दीपकलानाथमयि०, विष्णुदेवमयि०, प्रभाकरदेवमयि०, तेजोदेवमयि ०, मनोजदेवमयि०, कल्याणदेवमयि०, रत्नदेवमयी०, वासुदेवमयि०, श्रीरामानन्दमयि०।

अणिमासिद्धे०, लघिमासिद्धे०, महिमासिद्धे०, ईशित्वसिद्धे०, वशित्वसिद्धे०, प्राकाम्यसिद्धे०, भुक्तिसिद्धे०, इच्छासिद्धे०, प्राप्तिसिद्धे०, सर्वकामसिद्धे०।

ब्राह्मी० माहेश्वरि०, कौमारि०, वैष्णवी०, वाराही०, माहेन्द्रि०, चामुण्डे०, महालक्ष्मि०।

सर्वसंक्षोभिणि०, सर्वविद्राविणि०, सर्वाकर्षिणि०, सर्ववशङ्करि०, सर्वोन्मादिनि०, सर्वमहांकुशे०, सर्वखेचरि०, सर्वबीजे०, सर्वयोने०, सर्वत्रिखण्डे०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिनि०, प्रकट योगिनि०।

कामाकर्षणि०, बुद्ध्याकर्षणी०, अहङ्काराकर्षणि०, शब्दाकर्षणि०, स्पर्शाकर्षणि०, रूपाकर्षणि०, रसाकर्षणि०, गन्धाकर्षणि०, चित्ताकर्षणि०, धैर्याकर्षणि०, स्मृत्याकर्षणि०, नामाकर्षणि०, बीजाकर्षणी०, आत्माकर्षणी०, अमृताकर्षणि०, शरीराकर्षणि०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनि०, गुप्त योगिनि०।

अनङ्गकुसुमे०, अनङ्गमेखले०, अनङ्गमदने०, अनङ्गमदनातुरे०, अनङ्गरेखे०, अनङ्गवेगिन्ये०, अनङ्गांकुशे०, अनङ्गमालिनि०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनि०, गुप्ततर योगिनि०।

सर्वसंक्षोभिणि०, सर्वविद्राविणि०, सर्वाकर्षिणि०, सर्वाह्लादिनि०, सर्वसम्मोहिनि०, सर्वस्तम्भिनि०, सर्वजृम्भिणि०, सर्ववशङ्करि०, सर्वरञ्जिनि०, सर्वोन्मादिनि०, सर्वार्थसाधिनि०, सर्वसम्पत्तिपूरणि०, सर्वमन्त्रमयि०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरि०, सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिनि०, सम्प्रदाय योगिनि०।

सर्वसिद्धप्रदे०, सर्वसम्पत्प्रदे०, सर्वप्रियङ्करि०, सर्वमङ्गलकारिणि०, सर्वकामप्रदे०, सर्वदुःखविमोचिनि०, सर्वमृत्युप्रशमनि०, सर्वविघ्ननिवारिणि०, सर्वाङ्गसुन्दरी०, सर्वसौभाग्य दायिनि०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिनि०, कुलोत्तीर्ण योगिनि०।

सर्वज्ञे०, सर्वशक्ते०, सर्वैश्वर्यप्रदे०, सर्वज्ञानमयि०, सर्वव्याधिविनाशिनि०, सर्वाधारस्वरूपे०, सर्वपापहरे०, सर्वानन्दमयि०, सर्वरक्षास्वरूपिणि०, सर्वेप्सितप्रदे०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिनि०, निगर्भ योगिनि०।

वशिनि०, कामेश्वरि०, मोदिनि०, विमले०, अरुणे०, जयिनि०, सर्वेश्वरि०, कौलिनि०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिनि०, रहस्य योगिनि०।

वाणिनि०, चापिनि०, पाशिनि०, अंकुशिनि०, महाकामेश्वरि०, महावज्रेश्वरि०, महाभगमलिनि०, महाश्रीसुन्दरी०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिनि०, अति रहस्य योगिनि०।

श्रीश्रीमहाभट्टारिके०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिनि०, परापर रहस्य योगिनि०।

त्रिपुरे०, त्रिपुरेशि०, त्रिपुरसुन्दरि०, त्रिपुरवासिनि०, त्रिपुराश्री०, त्रिपुर मालिनि०, त्रिपुरासिद्धे०, त्रिपुराम्बे०, महात्रिपुरसुन्दरि०।

महामहेश्वरि०, महामहाराज्ञि०, महामहाशक्ते०, महामहागुप्ते०, महामहाज्ञप्ते०, महामहानन्दे०, महामहास्पन्दे०, महामहाशये०, महामहाश्रीचक्र नगरसाम्राज्ञी०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

इस प्रकार जप करते हुये प्रत्येक नाम मन्त्र के साथ ''जय जय'' करते हुये पुष्पाञ्जलि अर्पण करें।

पश्चात् निम्न मन्त्र से जप समर्पण करें।

गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवति मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि ॥

॥ ६. शिव सम्बुद्ध्यन्त माला॥

शुक्ला षष्ठी पूजन "ह" कृष्णा दशमी पूजन

अब अग्रिम ५ दिन का पूजन क्रम शिव प्रधान है, अतः नामावलि में पूजन प्रयोग पुरुष संबोधन के अनुसार है। पूजन प्रयोग में हाथ जोड़कर नामावलि के साथ हाथ जोड़कर आवाहन व संबोधन का ध्यान करते जायें।

मानसिक पूजन में देवता का आवाहन अपने हृदय स्थल में करें। बाह्य पूजन में अक्षत् पुष्पादि से आवाहन किसी पात्र में करते हुये पूजन करें।

सङ्कल्प - दैनिक विधि के अनुसार सङ्कल्प कर कराङ्ग न्यास, हृदयादि न्यास करें।

विनियोग - अस्य शिव सम्बुद्ध्यन्त मालामन्त्रस्य घ्राणेन्द्रियाधिष्ठायि भगादित्य ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। भोगद हकार भट्टारकपीठ स्थित हलिनी ललिता मण्डिताङ्क श्रीहलिककामेश्वराङ्क महाभट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। देहशुद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास - घ्राणेन्द्रियाधिष्ठायि भगादित्य ऋषये नमः शिरसि। **त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। भोगद हकार भट्टारकपीठ स्थित हलिनी ललिता मण्डिताङ्क श्रीहलिककामेश्वराङ्क महाभट्टारकाय देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्त्ये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः** पादयौः। **देहशुद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

अङ्गन्यास - कराङ्ग व हृदयादि न्यास पूर्व विधि के अनुसार करें। पश्चात् ध्यान कर मानसिक पूजा करें।

॥ ध्यानम् ॥

तथा सिद्ध्यति ते भक्तो यच्छरीरस्य पार्वति ।
तप्तकाञ्चन गौरस्य कदापि क्वापि न क्षयः ॥

मानस पूजा - मानसिक पूजा विधि में अमुक देवता की जगह "**श्रीहलिनी महात्रिपुर सुन्दरी मण्डिताङ्क श्रीहलिककामेश्वर**" नाम से पूजन करें।

बाह्य पूजा में पुष्पादि से आसन प्रदान कर संबोधन करें।

॥ माला पारायण ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर।

हृदयदेव०, शिरोदेव०, शिखादेव०, कवचदेव०, नेत्रदेव०, अस्त्रदेव०। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

कामेश्वर०, भगमालिन०, नित्यक्लिन्न०, भेरुण्ड०, वह्निवासिन्०, महावज्रेश्वर०, शिवादूत०, त्वरित०, कुलसुन्दर०, नित्य०, नीलपताक०, विजय०, सर्वमङ्गल०, ज्वालामालिन्०, चित्र०, महानित्य०,। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

परमेश्वर परमेश्वर०, मित्रीशमय०, षष्ठीशमय०, उड्डीशमय०, चर्यानाथमय०, लोपामुद्रामय०, अगस्त्यमय०, कालतापनमय०, धर्माचारमय०, मुक्तेकेशीश्वरमय०, दीपकलानाथमय०, विष्णुदेवमय०, प्रभाकरदेवमय०, तेजोदेवमय०, मनोजदेवमय०, कल्याणदेवमय०, रत्नदेवमय०, वासुदेवमय०, श्रीरामानन्दमय०। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

अणिमासिद्ध०, लघिमासिद्ध०, महिमासिद्ध०, ईशित्वसिद्ध०, वशित्वसिद्ध०, प्राकाम्यसिद्ध०, भुक्तिसिद्ध०, इच्छासिद्ध०, प्राप्तिसिद्ध०, सर्वकामसिद्ध०, । सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

ब्राह्म०, माहेश्वर०, कौमार०, वैष्णव०, वाराह०, माहेन्द्र०, चामुण्ड०, महालक्ष्म० । सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वसंक्षोभिन्०, सर्वविद्राविन्०, सर्वाकर्षिन्०, सर्ववशङ्कर०, सर्वोन्मादिन्०, सर्वमहांकुश०, सर्वखेचर०, सर्वबीज०, सर्वयोने०, सर्वत्रिखण्ड०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिन्०, **प्रकट योगिन्**। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

कामाकर्षण०, बुद्ध्याकर्षण०, अहङ्काराकर्षण०, शब्दाकर्षण०, स्पर्शाकर्षण०, रूपाकर्षण०, रसाकर्षण०, गन्धाकर्षण०, चित्ताकर्षण०, धैर्याकर्षण०, स्मृत्याकर्षण०, नामाकर्षण०, **बीजाकर्षण०, आत्माकर्षण०, अमृताकर्षण०, शरीराकर्षण०, सर्वाशापरि पूरक चक्र स्वामिन्०, गुप्त योगिन्०**। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

अनङ्गकुसुम०, अनङ्गमेखल०, अनङ्गपदन०, अनङ्गमदनातुर०, अनङ्गरेख०, अनङ्गवेगिन्०, अनङ्गांकुश०, अनङ्गमालिन्०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्०, गुप्ततर योगिन्०। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वसंक्षोभिन्०, सर्वविद्राविन्०, सर्वाकर्षिन्०, सर्वाह्लादिन्०, सर्वसम्मोहिन्०, सर्वस्तम्भिन्०, सर्वजृम्भिन्०, सर्ववशङ्कर०, सर्वरञ्जिन्०, सर्वोन्मादिन्०, सर्वार्थसाधिन्०, सर्वसम्पत्तिपूरण०, सर्वमन्त्रमय०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकर०, सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिन्०, सम्प्रदाय योगिन्०। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वसिद्धप्रद०, सर्वसम्पत्प्रद०, सर्वप्रियङ्कर०, सर्वमङ्गलकारिन्०, सर्वकामप्रद०, सर्वदुःखविमोचिन्०, सर्वमृत्युप्रशमन्०, सर्वविघ्ननिवारिन्०, सर्वाङ्गसुन्दर०, सर्वसौभाग्यदायिन्०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिन्०, कुलोत्तीर्ण योगिन्०। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वज्ञ०, सर्वशक्त०, सर्वेश्वर्यप्रद०, सर्वज्ञानमय०, सर्वव्याधिविनाशिन्०, सर्वाधारस्वरूप०, सर्वपापहर०, सर्वानन्दमय०, सर्वरक्षास्वरूपिन्०, सर्वेप्सितप्रद०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्०, निगर्भ योगिन्०। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

वशिन्०, कामेश्वर०, मोदिन्०, विमल०, अरुण०, जयिन्०, सर्वेश्वर०, कौलिन्०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिन् रहस्य योगिन्। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

वाणिन्०, चापिन्०, पाशिन्०, अंकुशिन्०, महाकामेश्वर०, महावज्रेश्वर०, **महाभगमालिन्०, महाश्रीसुन्दर०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्०, अति रहस्य योगिन्०**। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

श्रीश्रीमहाभट्टारिक०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिन्०, परापररहस्य योगिन्०,। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

त्रिपुर०, त्रिपुरेश०, त्रिपुरसुन्दर०, त्रिपुरवासिन्०, त्रिपुराश्रीयः०, **त्रिपुरमालिन्०, त्रिपुरासिद्ध०, त्रिपुराम्ब०, महात्रिपुरसुन्दर०**। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

महामहेश्वर०, महामहाराज्ञ०, महामहाशक्त०, महामहागुप्त०, महामहाप्रज्ञप्त०, **महामहानन्द०, महामहास्पन्द०, महामहाशय०, महामहाश्रीचक्र नगरसाम्राज्ञः०, नमस्ते त्रिः** स्वाहा **श्रीं ह्रीं ऐं**। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

इस प्रकार जप कर देवता का पञ्चोपचार से पूजन करें।

मन्त्र जपकर समर्पण करें।

गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवति मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि ॥

॥ ७. शिव नमोऽन्त माला ॥

शुक्ला सप्तमी पूजन "स" कृष्णा नवमी पूजन

सङ्कल्प – दैनिक सङ्कल्प पूर्वोक्त विधि से करें।

विनियोग – अस्य शिव नमोऽन्त माला मन्त्रस्य जिह्वेन्द्रियाधिष्ठायि इन्द्रादित्य ऋषिः। जगती छन्दः। भोगद सकार भट्टारकपीठ स्थित सरस्वतीललिता मण्डिताङ्क सर्वज्ञकामेश्वर महाभट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। लोहसिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – जिह्वेन्द्रियाधिष्ठायि इन्द्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नमः मुखे। भोगद सकार भट्टारकपीठ स्थित सरस्वतीललिता मण्डिताङ्क सर्वज्ञकामेश्वर महाभट्टारक देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयौः। लोहसिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – कराङ्ग व हृदयादि न्यास पूर्व विधि के अनुसार करें। पश्चात् ध्यान कर मानसिक पूजा करें।

॥ ध्यानम् ॥

त्वद्भक्त स्पर्शेन लोहोप्यष्टविधः शिवे ।
काञ्चनी भावमाप्नोति यथा स्याच्छिव तुल्यता ॥

मानस पूजा – मानसिक पूजा विधि में अमुक देवता की जगह "**श्रीसरस्वतीललिता महात्रिपुरसुन्दरी मण्डिताङ्क श्रीईश्वरकामेश्वर**" उच्चारण कर नमस्कार करते हुये पूजन करें।

॥ माला पारायण ॥

प्रत्येक नाम के साथ **पादुकां पूजयामि** कहें एवं गंधाक्षत पुष्प प्रदान करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि। इति सर्वत्र

हृदयदेवाय०, शिरोदेवाय०, शिखादेवाय०, कवचदेवाय०, नेत्रदेवाय०, अस्त्रदेवाय०।

कामेश्वराय०, भगमालिने०, नित्यक्लिन्नाय०, भेरुण्डाय०, वह्निवासिने०, महावज्रेश्वराय०, शिवादूताय०, त्वरिताय०, कुलसुन्दराय०, नित्याय०, नीलपताकाय०, विजयाय०, सर्वमङ्गलाय०, ज्वालामालिने०, चित्राय०, महानित्याय०,।

परमेश्वर परमेश्वराय०, मित्रीशमयाय०, षष्ठीशमयाय०, उड्डीशमयाय०, चर्यानाथमयाय०, लोपामुद्रामयाय०, अगस्त्यमयाय०, कालतापनमयाय०, धर्माचारमयाय०, मुक्तकेशीश्वरमयाय०, दीपकलानाथमयाय०, विष्णुदेवमयाय०, प्रभाकरदेवमयाय०, तेजोदेवमयाय०, मनोजदेवमयाय०, कल्याणदेवमयाय०, रत्नदेवमयाय०, वासुदेवमयाय०, श्रीरामानन्दमयाय०।

अणिमासिद्धये०, लघिमासिद्धये०, महिमासिद्धये०, ईशित्वसिद्धये०, वशित्वसिद्धये०, प्राकाम्यसिद्धये०, भुक्तिसिद्धये०, इच्छासिद्धये०, प्राप्तिसिद्धये०, सर्वकामसिद्धये०,।

****

ब्राह्माय०, माहेश्वराय०, कौमाराय०, वैष्णवाय०, वाराहाय०, माहेन्द्राय०, चामुण्डाय०, महालक्ष्म्यै०।

सर्वसंक्षोभिणे०, सर्वविद्राविणे०, सर्वाकर्षिणे०, सर्ववशङ्कराय०, सर्वोन्मादिने०, सर्वमहांकुशाय०, सर्वखेचराय०, सर्वबीजाय०, सर्वयोनये०, सर्वत्रिखण्डाय०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिने०, प्रकट योगिने०।

कामाकर्षणाय०, बुद्ध्याकर्षणाय०, अहङ्काराकर्षणाय०, शब्दाकर्षणाय०, स्पर्शाकर्षणाय०, रूपाकर्षणाय०, रसाकर्षणाय०, गन्धाकर्षणाय०, चित्ताकर्षणाय०, धैर्याकर्षणाय०, स्मृत्याकर्षणाय०, नामाकर्षणाय०, बीजाकर्षणाय०, आत्माकर्षणाय०, अमृताकर्षणाय०, शरीराकर्षणाय०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिने०, गुप्तयोगिने०।

अनङ्गकुसुमाय०, अनङ्गमेखलाय०, अनङ्गमदनाय०, अनङ्गमदनातुराय०, अनङ्गरेखाय०, अनङ्गवेगिने०, अनङ्गांकुशाय०, अनङ्गमालिने०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिने०, गुप्ततर योगिने०।

सर्वसंक्षोभिणे०, सर्वविद्राविणे०, सर्वाकर्षिणे०, सर्वाह्लादिने०, सर्वसम्मोहिने०, सर्वस्तम्भिने०, सर्वजृम्भिणे०, सर्ववशङ्कराय०, सर्वरञ्जिने०, सर्वोन्मादिने०, सर्वार्थसाधिने०, सर्वसम्पत्तिपूरणाय०, सर्वमन्त्रमयाय०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकराय०, सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिने०, सम्प्रदाय योगिने०।

सर्वसिद्धप्रदाय०, सर्वसम्पत्प्रदाय०, सर्वप्रियङ्कराय०, सर्वमङ्गलकारिणे०, सर्वकामप्रदाय०, सर्वदुःखविमोचिने०, सर्वमृत्युप्रशमनाय०, सर्वविघ्ननिवारिणे०, सर्वाङ्गसुन्दराय०, सर्वसौभाग्य दायिने०, सर्वार्थ साधक चक्र स्वामिने०, कुलोत्तीर्ण योगिने०।

सर्वज्ञाय०, सर्वशक्तये०, सर्वैश्वर्यप्रदाय०, सर्वज्ञानमयाय०, सर्वव्याधिविनाशिने०, सर्वाधारस्वरूपाय०, सर्वपापहराय०, सर्वानन्दमयाय०, सर्वरक्षास्वरूपिणे०, सर्वेप्सितप्रदाय०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिने०, निगर्भ योगिने०।

वशिने०, कामेश्वराय०, मोदिने०, विमलाय०, अरुणाय०, जयिने०, सर्वेश्वराय०, कौलिने०, सर्वरोगहर चक्रस्वामिनि रहस्य योगिने।

वाणिने०, चापिने०, पाशिने०, अंकुशिने०, महाकामेश्वराय०, महावज्रेश्वराय०, महाभगमालिने०, महाश्रीसुन्दराय०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिने०, अतिरहस्य योगिने०।

श्रीश्रीमहाभट्टारकाय०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिने०, परापररहस्य योगिने०,।

त्रिपुराय०, त्रिपुरेशाय०, त्रिपुरसुन्दराय०, त्रिपुरवासिने०, त्रिपुराश्रीये०, त्रिपुरमालिने०, त्रिपुरासिद्धाय०, त्रिपुराम्बाय०, महात्रिपुरसुन्दराय०।

महामहेश्वराय०, महामहाराज्ञाय०, महामहाशक्तये०, महामहागुप्ताय०, महामहाप्रज्ञप्तये०, महामहानन्दाय०, महामहास्पन्दाय०, महामहाशयाय०, महामहाश्रीचक्र नगरसाम्राज्ञाय०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

इस प्रकार जप करते हुये प्रत्येक नाम मन्त्र के साथ नमस्कार करते हुये पुष्पाञ्जलि अर्पण करें देवता को **''गुह्यातिगुह्य गोप्त्री.......''** मन्त्र से जप समर्पण करें।

नैवेद्यादि प्रदान करें।

|| ८. शिव स्वाहान्त माला ||

शुक्ला अष्टमी पूजन ''क'' कृष्णा अष्टमी पूजन

सङ्कल्प – दैनिक सङ्कल्प पूर्वोक्त विधि से करें।

विनियोग – अस्य श्रीशिव स्वाहान्त माला मन्त्रस्य चक्षुरिन्द्रियाधिष्ठायि विवस्वदादित्य ऋषिः। अतिजगती छन्दः। तामस ककार भट्टारकपीठ स्थित कमलाललिता मण्डिताङ्क श्रीकालमर्दन कामेश्वर महाभट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। अणिमाद्यष्ट सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – चक्षुरिन्द्रियाधिष्ठायि विवस्वदादित्य ऋषये नमः शिरसि। अतिजगती छन्दसे नमः मुखे। तामस ककार भट्टारकपीठ स्थित कमलाललिता मण्डिताङ्क श्रीकालमर्दनकामेश्वर महाभट्टारक देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्त्ये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। अणिमाद्यष्टैश्वर्य सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – कराङ्गन्यास, हृदयादि न्यास **''ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः''** इत्यादि से पूर्ववत् करें।

|| ध्यानम् ||

येष्टाणुत्व महत्वाद्याः स्वेच्छामात्र प्रकल्पिताः ।
तव भक्त शरीराणां ते स्युर्नैसर्गिका गुणः ॥

मानस पूजा – मानसिक पूजा अमुक देवता की जगह **''श्रीकमलामहात्रिपुर सुन्दरी मण्डिताङ्क श्रीकालमर्दन कामेश्वर''** उच्चारण करें।

|| माला पारायण ||

प्रत्येक नाम मन्त्र के साथ **स्वाहा** बोलकर जप करना चाहिये। मानसिक पूजन में अपने चित्तकुण्ड में हवन करें तथा बाह्य पूजन में हवन कुण्ड में द्रव्यादि से होम करें। नैवेद्यादि अर्पण करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा।

मानसिक होमे – हृदयदेवाय स्वाहा। शिरोदेवाय स्वाहा। शिखादेवाय स्वाहा। **कवचदेवाय स्वाहा। नेत्रदेवाय स्वाहा। अस्त्रदेवाय स्वाहा।**

बाह्य होमे – तन्त्र ग्रन्थों में अङ्ग होम निषिद्ध लिखा है। मयूख ग्रन्थों में भी अङ्ग होम निषिद्ध लिखा है परन्तु घृताहुति के लिये लिखा गया है। यदि पाँच या नवकुण्डीय यज्ञ है तो केवल प्रधान कुण्ड में द्रव्य होम होगा, शेष कुण्डों के होता बैठे रहेंगे या केवल घृताहुति देगें।

अतः यहां व्यवस्था इस प्रकार करें कि अङ्ग देवता का नाम मनसा उच्चारण करें तथा मूल मन्त्र से घृत आहुति देवें। यथा –

(मनसा) हृदय देवाय। कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥
(मनसा) शिरोदेवाय। कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥
(मनसा) शिखादेवाय। कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥

(मनसा) कवचदेवाय। कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥
(मनसा) नेत्रदेवाय। कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥
(मनसा) अस्त्रदेवाय। कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥

कामेश्वराय०, भगमालिने०, नित्यक्लिन्नाय०, भेरुण्डाय०, वह्निवासिने०, महावज्रेश्वराय०, शिवादूताय०, त्वरिताय०, कुलसुन्दराय०, नित्याय०, नीलपताकाय०, विजयाय०, सर्वमङ्गलाय०, ज्वालामालिने०, चित्राय०, महानित्याय०,।

परमेश्वर परमेश्वराय०, मित्रीशमयाय०, षष्ठीशमयाय०, उड्डीशमयाय०, चर्यानाथमयाय०, लोपामुद्रामयाय०, अगस्त्यमयाय०, कालतापनमयाय०, धर्माचारमयाय०, मुक्तकेशीश्वरमयाय०, दीपकलानाथमयाय०, विष्णुदेवमयाय०, प्रभाकरदेवमयाय०, तेजोदेवमयाय०, मनोजदेवमयाय०, कल्याणदेवमयाय०, रत्नदेवमयाय०, वासुदेवमयाय०, श्रीरामानन्दमयाय०।

अणिमासिद्धये०, लघिमासिद्धये०, महिमासिद्धये०, ईशित्वसिद्धये०, वशित्वसिद्धये०, प्राकाम्यसिद्धये०, भुक्तिसिद्धये०, इच्छासिद्धये०, प्राप्तिसिद्धये०, सर्वकामसिद्धये०,।

ब्राह्म्याय०, माहेश्वराय०, कौमाराय०, वैष्णवाय०, वाराहाय०, माहेन्द्राय०, चामुण्डाय०, महालक्ष्म्ये०।

सर्वसंक्षोभिणे०, सर्वविद्राविणे०, सर्वाकर्षिणे०, सर्ववशङ्कराय०, सर्वोन्मादिने०, सर्वमहांकुशाय०, सर्वखेचराय०, सर्वबीजाय०, सर्वयोनये०, सर्वत्रिखण्डाय०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिने०, प्रकट योगिने०।

कामाकर्षणाय०, बुद्ध्याकर्षणाय०, अहङ्काराकर्षणाय०, शब्दाकर्षणाय०, स्पर्शाकर्षणाय०, रूपाकर्षणाय०, रसाकर्षणाय०, गन्धाकर्षणाय०, चित्ताकर्षणाय०, धैर्याकर्षणाय०, स्मृत्याकर्षणाय०, नामाकर्षणाय०, बीजाकर्षणाय०, आत्माकर्षणाय०, अमृताकर्षणाय०, शरीराकर्षणाय०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिने०, गुप्तयोगिने०।

अनङ्गकुसुमाय०, अनङ्गमेखलाय०, अनङ्गमदनाय०, अनङ्गमदनातुराय०, अनङ्गरेखाय०, अनङ्गवेगिने०, अनङ्गांकुशाय०, अनङ्गमालिने०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिने०, गुप्ततर योगिने०।

सर्वसंक्षोभिणे०, सर्वविद्राविणे०, सर्वाकर्षिणे०, सर्वाह्लादिने०, सर्वसम्मोहिने०, सर्वस्तम्भिने०, सर्वजृम्भिणे०, सर्ववशङ्कराय०, सर्वरञ्जिने०, सर्वोन्मादिने०, सर्वार्थसाधिने०, सर्वसम्पत्तिपूरणाय०, सर्वमन्त्रमयाय०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकराय०, सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिने०, सम्प्रदाय योगिने०।

सर्वसिद्धप्रदाय०, सर्वसम्पत्प्रदाय०, सर्वप्रियङ्कराय०, सर्वमङ्गलकारिणे०, सर्वकामप्रदाय०, सर्वदुःखविमोचिने०, सर्वमृत्युप्रशमनाय०, सर्वविघ्ननिवारिणे०, सर्वाङ्गसुन्दराय०, सर्वसौभाग्यदायिने०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिने०, कुलोत्तीर्ण योगिने०।

सर्वज्ञाय०, सर्वशक्तये०, सर्वैश्वर्यप्रदाय०, सर्वज्ञानमयाय०, सर्वव्याधिविनाशिने०, सर्वाधारस्वरूपाय०, सर्वपापहराय०, सर्वानन्दमयाय०, सर्वरक्षास्वरूपिणे०, सर्वेप्सितप्रदाय०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिने०, निगर्भ योगिने०।

वशिने०, कामेश्वराय०, मोदिने०, विमलाय०, अरुणाय०, जयिने०, सर्वेश्वराय०, कौलिने०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिनि रहस्ययोगिने।

वाणिने०, चापिने०, पाशिने०, अंकुशिने०, महाकामेश्वराय०, महावज्रेश्वराय०, महाभगमालिने०, महाश्रीसुन्दराय०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिने०, अतिरहस्ययोगिने०।

श्रीश्रीमहाभट्टारकाय०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिने०, परापर रहस्ययोगिने०,।

त्रिपुराय०, त्रिपुरेशाय०, त्रिपुरसुन्दराय०, त्रिपुरवासिने०, त्रिपुराश्रीये०, त्रिपुरमालिने०, त्रिपुरासिद्धाय०, त्रिपुराम्बाय०, महात्रिपुरासुन्दराय०।

महामहेश्वराय०, महामहाराज्ञाय०, महामहाशक्तये०, महामहागुप्ताय०, महामहाप्रज्ञप्तये०, महामहानन्दाय०, महामहास्पन्दाय०, महामहाशयाय०, महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञाय०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

मन्त्र जप कर देवता को "**गुह्यातिगुह्य गोप्त्री.......**" मन्त्र से जप समर्पण करें।

॥ ९. शिव तर्पणान्त माला ॥

शुक्ला नवमी पूजन "ह" कृष्णा सप्तमी पूजन

सङ्कल्प – पूर्वोक्त विधि के अनुसार प्रचलित या तान्त्रिक सङ्कल्प करें।

विनियोग – अस्य श्री शिव तर्पणान्त मालामन्त्रस्य त्वगिन्द्रयाधिष्ठायि पूषादित्य ऋषिः। शक्करी छन्दः। मोक्षद हकार भट्टारकपीठ स्थित हरिवल्लभाललिता मण्डिताङ्क श्रीहरनाथकामेश्वर महाभट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्ववश्य सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – त्वगिन्द्रयाधिष्ठायि पूषादित्य ऋषये नमः शिरसि। **शक्करी छन्दसे नमः मुखे। मोक्षद हकार भट्टारक पीठ स्थित हरिवल्लभा ललिता मण्डिताङ्क श्रीहरनाथ** कामेश्वर **महाभट्टारक देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्त्ये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयौः। सर्ववश्यसिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

अङ्गन्यास – कराङ्गन्यास, हृदयादि न्यास "ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः" इत्यादि से पूर्वोक्त विधि से करें।

॥ ध्यानम् ॥

शरीरमर्थं प्राणांश्च निवेद्य निजभृत्यवत् ।
तव भक्तान् निषेवन्ते वशीभूता नृपादयः ॥

मानस पूजा – मानसिक पूजा विधि में अमुक देवता की जगह "**श्रीहरिवल्लभा महात्रिपुर सुन्दरी मण्डिताङ्क श्रीहरनाथ कामेश्वर**" उच्चारण कर कर शेष पूजा करें।

बाह्य पूजा – पञ्चोपचार से बाह्य पूजन देवता का करके माला पारायण करें।

॥ माला पारायण ॥

प्रत्येक नाम मन्त्र के बाद में "**तर्पयामि**" **अथवा** "**तर्पयामि** नमः" जोड़कर जप करना चाहिये। मेरे अनुमान से "**तर्पयामि नमः**" अधिक उपयुक्त है।

बाह्य पूजन में शुद्ध जल में गंध, पुष्प, त्रिमधु व सुगन्धित द्रव्य ड़ाल कर देवता या यन्त्र के सम्मुख किसी पात्र में तर्पण करते जायें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर सुन्दरं तर्पयामि। (इति सर्वत्र)

हृदयदेवं०, शिरोदेवं०, शिखादेवं०, कवच देवं०, नेत्रदेवं०, अस्त्रदेवं०।

कामेश्वरं०, भगमालिनं०, नित्यक्लिन्नं०, भेरुण्डं०, वह्निवासिनं०, महावज्रेश्वरं०, शिवादूतं०, त्वरितं०, कुलसुन्दरं०, नित्यं०, नीलपताकं०, विजयं०, सर्वमङ्गलं०, ज्वालामालिनं०, चित्रं०, महानित्यं०,।

परमेश्वर परमेश्वरं०, मित्रीशमयं०, षष्ठीशमयं०, उड्डीशमयं०, चर्यानाथमयं०, लोपामुद्रामयं०, अगस्त्यमयं०, कालतापनमयं०, धर्माचारमयं०, मुक्तकेशीश्वरमयं०, दीपकलानाथमयं०, विष्णुदेवमयं०, प्रभाकरदेवमयं०, तेजोदेवमयं०, मनोजदेवमयं०, कल्याणदेवमयं०, रत्नदेवमयं०, वासुदेवमयं०, श्रीरामानन्दमयं०।

अणिमासिद्धिं०, लघिमासिद्धिं०, महिमासिद्धिं०, ईशित्वसिद्धिं०, वशित्वसिद्धिं०, प्राकाम्यसिद्धिं०, भुक्तिसिद्धिं०, इच्छासिद्धिं०, प्राप्तिसिद्धिं०, सर्वकामसिद्धिं०,।

ब्राह्मं०, माहेश्वरं०, कौमारं०, वैष्णवं०, वाराहं०, माहेन्द्रं०, चामुण्डं०, महालक्ष्मं०।

सर्वसंक्षोभिणं०, सर्वविद्राविणिं०, सर्वाकर्षिणिं०, सर्ववशङ्करं०, सर्वोन्मादिनं०, सर्वमहांकुशं०, सर्वखेचरं०, सर्वबीजं०, सर्वयोने०, सर्वत्रिखण्डं०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिनं०, प्रकट योगिनं।

कामाकर्षणं०, बुद्ध्याकर्षणं०, अहङ्काराकर्षणं०, शब्दाकर्षणं०, स्पर्शाकर्षणं०, रूपाकर्षणं०, रसाकर्षणं०, गन्धाकर्षणं०, चित्ताकर्षणं०, धैर्याकर्षणं०, स्मृत्याकर्षणं०, नामाकर्षणं०, बीजाकर्षणं०, आत्माकर्षणं०, अमृताकर्षणं०, शरीराकर्षणं०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनं०, गुप्तयोगिनं०।

अनङ्गकुसुमं०, अनङ्गमेखलं०, अनङ्गमदनं०, अनङ्गमदनातुरं०, अनङ्गरेखं०, अनङ्गवेगिनं०, अनङ्गांकुशं०, अनङ्गमालिनं०, सर्वसंक्षोभणचक्र स्वामिनं०, गुप्ततर योगिनं०।

सर्वसंक्षोभिणं०, सर्वविद्राविणं०, सर्वाकर्षिणं०, सर्वाह्लादिनं०, सर्वसम्मोहिन्०, सर्वस्तम्भिनं०, सर्वजृम्भिनं०, सर्ववशङ्करं०, सर्वरञ्जिनं०, सर्वोन्मादिनं०, सर्वार्थसाधिनं०, सर्वसम्पत्तिपूरणं०, सर्वमन्त्रमयं०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरं०, सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिनं०, सम्प्रदाय योगिनं०।

सर्वसिद्धप्रदं०, सर्वसम्पत्प्रदं०, सर्वप्रियङ्करं०, सर्वमङ्गलकारिणं०, सर्वकामप्रदं०, सर्वदुःखविमोचिनं०, सर्वमृत्युप्रशमनं०, सर्वविघ्ननिवारिणं०, सर्वाङ्गसुन्दरं०, सर्वसौभाग्य दायिनं०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिनं०, कुलोत्तीर्ण योगिनं०।

सर्वज्ञं०, सर्वशक्तिं०, सर्वैश्वर्यप्रदं०, सर्वज्ञानमयं०, सर्वव्याधिविनाशिनं०, सर्वाधारस्वरूपं०, सर्वपापहरं०, सर्वानन्दमयं०, सर्वरक्षास्वरूपिनं०, सर्वेप्सितप्रदं०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिनं०, निगर्भ योगिनं०।

वशिनं०, कामेश्वरं०, मोदिनं०, विमलं०, अरुणं०, जयिनं०, सर्वेश्वरं०, कौलिनं०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिनं०, रहस्य योगिनं।

वाणिनं०, चापिनं०, पाशिनं०, अंकुशिनं०, महाकामेश्वरं०, महावज्रेश्वरं०, महाभगमालिनं०, महाश्रीसुन्दरं०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिनं०, अतिरहस्य योगिनं०।

श्रीश्रीमहाभट्टारिकं०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिनं०, परापर रहस्य योगिनं०,।

त्रिपुरं०, त्रिपुरेशं०, त्रिपुरसुन्दरं०, त्रिपुरवासिनं०, त्रिपुराश्रीयं०, त्रिपुरमालिनं०, त्रिपुरासिद्धं०, त्रिपुराम्बं०, महात्रिपुरसुन्दरं०।

महामहेश्वरं०, महामहाराज्ञं०, महामहाशक्तिं०, महामहागुप्तं०, महामहाज्ञप्तिं०, महामहानन्दं०, महामहास्पन्दं०, महामहाशयं०, महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञं०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

इस प्रकार जप करते हुये प्रत्येक नाम मन्त्र के साथ पुष्पाञ्जलि अर्पण करें देवता को "**गुह्यातिगुह्य गोप्त्री.......**" मन्त्र से जप समर्पण करें।

॥ १०. शिव जयान्त माला ॥

शुक्ला दशमी पूजन "ल" कृष्णा षष्ठी पूजन

सङ्कल्प – दैनिक सङ्कल्प विधि प्रचलित या तान्त्रिक दोनों ही पूर्व में दी जा चुकी है। उनके अनुसार सङ्कल्प करें।

विनियोग – अस्य श्री शिव जयान्त माला मन्त्रस्य श्रोत्रेन्द्रियाधिष्ठायि सवित्रादित्य ऋषिः। अतिशक्करी छन्दः। तामस लकार भट्टारकपीठ स्थित लक्ष्मिललिता मण्डिताङ्क ललज्जिह्वा कामेश्वर महाभट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्वाकर्षण सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – श्रोत्रेन्द्रियाधिष्ठायि सवित्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। अतिशक्करी छन्दसे नमः मुखे। तामस लकार भट्टारकपीठ स्थित लक्ष्मिललिता मण्डिताङ्क ललज्जिह्वा कामेश्वर महाभट्टारक देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्त्ये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयौः। सर्वाकर्षण सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – कराङ्गन्यास, अङ्गन्यास "ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः" इत्यादि से पूर्वोक्त विधि से करें।

॥ ध्यानम् ॥

लोहप्राकार संगुप्ता निगडैर्यन्त्रिता अपि ।
त्वद्भक्तैः कृष्यमाणाश्च समायान्त्येव योषितः ॥

मानस पूजा – बाह्य पूजन में तथा मानसिक पूजा में अमुक देवता की जगह "**श्रीलक्ष्मीमहात्रिपुरसुन्दरी मण्डिताङ्क श्रीललज्जिह्व कामेश्वर**" का उच्चारण कर पूजन करें।

॥ माला पारायण ॥

प्रत्येक नाम के साथ जय जय उच्चारण करते हुये जप करें।

बाह्य पूजन में पुष्पाञ्जलि अर्पण करते हुये नाम जप करें। पश्चात् पञ्चोपचार पूजन करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर सुन्दरं जय जय। (इति सर्वत्र)

हृदयदेव०, शिरोदेव०, शिखादेव०, कवचदेव०, नेत्रदेव०, अस्त्रदेव०।

कामेश्वर०, भगमालिन०, नित्यक्लिन्न०, भेरुण्ड०, वह्निवासिन्०, महावज्रेश्वर०, शिवादूत०, त्वरित०, कुलसुन्दर०, नित्य०, नीलपताक०, विजय०, सर्वमङ्गल०, ज्वालामालिन्०, चित्र०, महानित्य०,।

परमेश्वर परमेश्वर०, मित्रीशमय०, षष्ठीशमय०, उड्डीशमय०, चर्यानाथमय०, लोपामुद्रामय०, अगस्त्यमय०, कालतापनमय०, धर्माचारमय०, मुक्तकेशीश्वरमय०, दीपकलानाथमय०, विष्णुदेवमय०, प्रभाकरदेवमय०, तेजोदेवमय०, मनोजदेवमय०, कल्याणदेवमय०, रत्नदेवमय०, वासुदेवमय, ०श्रीरामानन्दमय०।

अणिमासिद्धे०, लघिमासिद्धे०, महिमासिद्धे०, ईशित्वसिद्धे०, वशिशत्वसिद्धे०, प्राकाम्यासिद्धे०, भुक्तिसिद्धे०, इच्छासिद्धे०, प्राप्तिसिद्धे०, सर्वकामसिद्धे०,।

ब्राह्म०, माहेश्वर०, कौमार०, वैष्णव०, वाराह०, माहेन्द्र०, चामुण्ड०, महालक्ष्म०।

सर्वसंक्षोभिन्०, सर्वविद्राविन्०, सर्वाकर्षिन्०, सर्ववशङ्कर०, सर्वोन्मादिन्०, सर्वमहांकुश०, सर्वखेचर०, सर्वबीज०, सर्वयोने०, सर्वत्रिखण्ड०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिन्०, प्रकट योगिन्।

कामाकर्षण०, बुद्ध्याकर्षण०, अहङ्काराकर्षण०, शब्दाकर्षण०, स्पर्शाकर्षण०, रूपाकर्षण०, रसाकर्षण०, गन्धाकर्षण०, चित्ताकर्षण०, धैर्याकर्षण०, स्मृत्याकर्षण०, नामाकर्षण०, बीजाकर्षण०, आत्माकर्षण०, अमृताकर्षण०, शरीराकर्षण०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिन्०, गुप्त योगिन्०।

अनङ्गकुसुम०, अनङ्गमेखल०, अनङ्गमदन०, अनङ्गमदनातुर०, अनङ्गरेख०, अनङ्गवेगिन्०, अनङ्गांकुश०, अनङ्गमालिन्०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्०, गुप्ततर योगिन्०।

सर्वसंक्षोभिन्०, सर्वविद्राविन्०, सर्वाकर्षिन्०, सर्वाह्लादिन्०, सर्वसम्मोहिन्०, सर्वस्तम्भिन्०, सर्वजृम्भिन्०, सर्ववशङ्कर०, सर्वरञ्जिन्०, सर्वोन्मादिन्०, सर्वार्थसाधिन्०, सर्वसम्पत्तिपूरण०, सर्वमन्त्रमय०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकर०, सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिन्०, सम्प्रदाय योगिन्०।

सर्वसिद्धप्रद०, सर्वसम्पत्प्रद०, सर्वप्रियङ्कर०, सर्वमङ्गलकारिन्०, सर्वकामप्रद०, सर्वदुःखविमोचिन्०, सर्वमृत्युप्रशमन्०, सर्वविघ्ननिवारिन्०, सर्वाङ्गसुन्दर०, सर्वसौभाग्यदायिन्०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिन्०, कुलोत्तीर्ण योगिन्०।

सर्वज्ञ०, सर्वशक्ते०, सर्वैश्वर्यप्रद०, सर्वज्ञानमय०, सर्वव्याधिविनाशिन्०, सर्वाधारस्वरूप०, सर्वपापहर०, सर्वानन्दमय०, सर्वरक्षास्वरूपिन्०, सर्वेप्सितप्रद०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्०, निगर्भ योगिन्०।

वशिन्०, कामेश्वर०, मोदिन्०, विमल०, अरुण०, जयिन्०, सर्वेश्वर०, कौलिन्०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिन् रहस्य योगिन्।

वाणिन्०, चापिन्०, पाशिन्०, अंकुशिन्०, महाकामेश्वर०, महावज्रेश्वर०, महाभगमालिन्०, महाश्रीसुन्दर०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्०, अति रहस्य योगिन्०।

श्रीश्रीमहाभट्टारिक०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिन्०, परापररहस्य योगिन्०,।

त्रिपुर०, त्रिपुरेश०, त्रिपुरसुन्दर०, त्रिपुरवासिन्०, त्रिपुराश्रीः०, त्रिपुर मालिन्०, त्रिपुरासिद्ध०, त्रिपुराम्ब०, महात्रिपुरसुन्दर०।

महामहेश्वर०, महामहाराज्ञ०, महामहाशक्ते०, महामहागुप्त०, महामहाप्रज्ञप्त०, महामहानन्द०, महामहास्पन्द०, महामहाशय०, महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञ०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

इस प्रकार जयान्त माला पढ़कर देवता को ''गुह्यातिगुह्य गोप्त्री.......'' मन्त्र से जप समर्पण करें।

|| ११. मिथुन (शिवशक्त्यात्मक) सम्बुद्ध्यन्त माला ||

शुक्ला एकादशी पूजन ''ह्रीं'' कृष्णा एकादशी पूजन

अब अग्रिम ५ दिन का पूजन क्र **शिव शक्ति मिथुन** स्वरूप प्रधान होगा।

सङ्कल्प – दैनिक सङ्कल्प विधि प्रचलित या तान्त्रिक दोनों ही पूर्व में दी जा चुकी है। उनके अनुसार करें।

विनियोग – **अस्य श्रीशक्तिशिव मिथुन सम्बुद्ध्यन्त मालामन्त्रस्य अहंकारतत्त्वाधिष्ठायि त्वष्ट्रादित्य ऋषिः। अष्टिच् छन्दः। तामस ह्रींकार भट्टारकपीठ स्थित हिरण्याललिता हृदयेश्वरकामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्वसम्मोहन सिद्धौ विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास – **अहंकारतत्त्वाधिष्ठायि त्वष्ट्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। अष्टिच् छन्दसे नमः मुखे। तामस ह्रींकार भट्टारकपीठ स्थित हिरण्याललिता हृदयेश्वरकामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयौः। सर्वसम्मोहन सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

अङ्गन्यास – कराङ्गन्यास, अङ्गन्यास **''ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः''** इत्यादि से पूर्वोक्त विधि से करें।

|| ध्यानम् ||

अम्बिके तव भक्तानामवलोकन मात्रतः ।
कृत्याकृत्य विमूढाः स्युर्नरा नार्यो नृपादयः ॥

मानस पूजा – मानसिक पूजन व बाह्य पूजन में अमुक देवता की जगह **''श्रीहिरण्यामहात्रिपुरसुन्दरी श्रीहृदयेश्वरकामेश्वर मिथुन''** का उच्चारण करें।

बाह्य पूजन में देवता का पञ्चोपचार से पूजन करें।

|| माला पारायण ||

मालामन्त्र का जप करते समय हाथ जोड़कर प्रत्येक देवता का अभिवादन करते हुये आवाहन करें। बाह्य पूजन में पुष्पाक्षत छोड़ते हुये संबोधन प्रदान करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरी त्रिपुरसुन्दर। (इति सर्वत्र)

हृदयदेवि हृदयदेव, शिरोदेवि शिरोदेव, शिखादेवि शिखादेव, कवचदेवि कवचदेव, नेत्रदेवि नेत्रदेव, अस्त्रदेवि अस्त्रदेव। सर्वे देवता ध्यायांमि आवाहयामि।

कामेश्वरि कामेश्वर, भगमालिनि भगमालिन्, नित्यक्लिन्ने नित्यक्लिन्न, भेरुण्डे भेरुण्ड, वह्निवासिनी वह्निवासिन्, महावज्रेश्वरि महावज्रेश्वर, शिवादूति शिवादूत, त्वरिते त्वरित, कुलसुन्दरि कुलसुन्दर, नित्ये नित्य, नीलपताके नीलपताक, विजये विजय, सर्वमङ्गले सर्वमङ्गल, ज्वालामालिनि ज्वालामालिन्, चित्रे चित्र, महानित्ये महानित्य। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

परमेश्वर परमेश्वरि, परमेश्वर परमेश्वर, मित्रीशमयि मित्रीशमय, षष्ठीशमयि षष्ठीशमय, उड्डीशमयि उड्डीशमय, चर्यानाथमयि चर्यानाथमय, लोपामुद्रामयि लोपामुद्रामय, अगस्त्यमयि अगस्त्यमय, कालतापनमयि कालतापनमय,

****

धर्माचारमयि धर्माचारमय, मुक्तकेशीश्वरमयि मुक्तकेशीश्वरमय, दीपकलानाथमयि दीपकलानाथमय, विष्णुदेवमयि विष्णुदेवमय, प्रभाकरदेवमयि प्रभाकरदेवमय, तेजोदेवमयि तेजोदेवमय, मनोजदेवमयि मनोजदेवमय, कल्याणदेवमयि कल्याणदेवमय, रत्नदेवमयि, रत्नदेवमय, वासुदेवमयि वासुदेवमय। श्रीरामानन्दमयि श्रीरामानन्दमय। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

अणिमासिद्धे अणिमासिद्ध, लघिमासिद्धे लघिमासिद्ध, महिमासिद्धे महिमासिद्ध, ईशित्वसिद्धे ईशित्वसिद्ध, वशित्वसिद्धे वशित्वसिद्ध, प्राकाम्यसिद्धे प्राकाम्यसिद्ध, भुक्तिसिद्धे भुक्तिसिद्ध, इच्छासिद्धे इच्छासिद्ध, प्राप्तिसिद्धे प्राप्तिसिद्ध, सर्वकामसिद्धे सर्वकामसिद्ध। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

ब्राह्मी ब्राह्म, माहेश्वरि माहेश्वर, कौमारि कौमार, वैष्णवी वैष्णव, वाराही वाराह, माहेन्द्रि माहेन्द्र, चामुण्डे चामुण्ड, महालक्ष्मि महालक्ष्म। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वसंक्षोभिणि सर्वसंक्षोभिन्, सर्वविद्राविणि सर्वविद्राविन्, सर्वाकर्षिणि सर्वाकर्षिन्, सर्ववशङ्करि सर्ववशङ्कर, सर्वोन्मादिनि सर्वोन्मादिन् सर्वमहांकुशे सर्वमहांकुश, सर्वखेचरि सर्वखेचर, सर्वबीजे सर्वबीज, सर्वयोने सर्वयोन्य सर्वत्रिखण्डे सर्वत्रिखण्ड, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिनि त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिन्, प्रकट योगिनि प्रकट योगिन्। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

कामाकर्षणि कामाकर्षन्, बुद्ध्याकर्षणि बुद्ध्याकर्षण, अहङ्काराकर्षणि अहङ्काराकर्षण, शब्दाकर्षणि शब्दाकर्षण, स्पर्शाकर्षणि स्पर्शाकर्षण, रूपाकर्षणि रूपाकर्षण, रसाकर्षणि रसाकर्षण, गन्धाकर्षणि गन्धाकर्षण, चित्ताकर्षणि चित्ताकर्षण, धैर्याकर्षणि धैर्याकर्षण, स्मृत्याकर्षणि स्मृत्याकर्षण, नामाकर्षणि नामाकर्षण, बीजाकर्षणि बीजाकर्षण, आत्माकर्षणि आत्माकर्षण, अमृताकर्षणि अमृताकर्षण, शरीराकर्षणि शरीराकर्षण, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनि सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिन, गुप्त योगिनि गुप्त योगिन्। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

अनङ्गकुसुमे अनङ्गकुसुम, अनङ्गमेखले अनङ्गमेखल, अनङ्गमदने अनङ्गमदन, अनङ्गमदनातुरे अनङ्गमदनातुर, अनङ्गरेखे अनङ्गरेख, अनङ्गवेगिन्य अनङ्गवेगिन्, अनङ्गांकुशे अनङ्गांकुश, अनङ्गमालिनि अनङ्गमालिन्, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनि सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्, गुप्ततर योगिनि गुप्ततर योगिन्। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वसंक्षोभिणि सर्वसंक्षोभिन्, सर्वविद्राविणि सर्वविद्राविन्, सर्वाकर्षिणि सर्वाकर्षिन्, सर्वाह्लादिनि सर्वाह्लादिन्, सर्वसम्मोहिनि सर्वसम्मोहिन्, सर्वस्तम्भिनि सर्वस्तम्भिन्, सर्वजृम्भिणि सर्वजृम्भिन्, सर्ववशङ्करि सर्ववशङ्कर, सर्वरञ्जिनि सर्वरञ्जिन्, सर्वोन्मादिनि सर्वोन्मादिन्, सर्वार्थसाधिनि सर्वार्थसाधिन्, सर्वसम्पत्तिपूरणि सर्वसम्पत्तिपूरण, सर्वमन्त्रमयि सर्वमन्त्रमय, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरि सर्वद्वन्द्वक्षयंकर, सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिनि सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिन्, सम्प्रदाययोगिनि सम्प्रदाययोगिन्। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वसिद्धप्रदे सर्वसिद्धप्रद, सर्वसम्पत्प्रदे सर्वसम्पत्प्रद, सर्वप्रियङ्करि सर्वप्रियङ्कर, सर्वमङ्गलकारिणि सर्वमङ्गलकारिन्, सर्वकामप्रदे सर्वकामप्रद, सर्वदुःखविमोचिनि सर्वदुःखविमोचिन् सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वमृत्युप्रशमन्, सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वविघ्ननिवारिण, सर्वाङ्गसुन्दरी सर्वाङ्गसुन्दर, सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वसौभाग्य दायिन्, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिनि सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिन्, कुलोत्तीर्ण योगिनि कुलोत्तीर्ण योगिन्। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

सर्वज्ञे सर्वज्ञ, सर्वशक्ते सर्वशक्त, सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वैश्वर्यप्रद सर्वज्ञानमयि सर्वज्ञानमय, सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वव्याधिविनाशिन् सर्वाधारस्वरूपे सर्वाधारस्वरूप, सर्वपापहरे सर्वपापहर, सर्वानन्दमयि सर्वानन्दमय, सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वरक्षास्वरूपिन्, सर्वेप्सितप्रदे सर्वेप्सितप्रद, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिनि सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्, निगर्भ योगिनि निगर्भ योगिन्। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

वशिनि वशिन्, कामेश्वरि कामेश्वर, मोदिनि मोदिन्, विमले विमल, अरुणे अरुण, जयिनि जयिन्, सर्वेश्वरि सर्वेश्वर, कौलिनि कौलिन्, सर्वरोगहर चक्र स्वामिनि सर्वरोगहर चक्र स्वामिन, रहस्य योगिनि रहस्य योगिन्। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

वाणिनि वाणिन्, चापिनि, चापिन, पाशिनि, पाशिन्, अंकुशिनि अंकुशिन्, महाकामेश्वरि महाकामेश्वर, महावज्रेश्वरि महावज्रेश्वर, महाभगमालिनि महाभगमालिन्, महाश्रीसुन्दरी महाश्रीसुन्दर, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिनि सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्, अति रहस्य योगिनि अति रहस्य योगिन्। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

श्रीश्रीमहाभट्टारिके श्रीश्रीमहाभट्टारक, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिनि सर्वानन्दमयचक्र स्वामिन्, परापर रहस्य योगिनि परापर रहस्य योगिन्। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

त्रिपुरे त्रिपुर, त्रिपुरेशि त्रिपुरेश, त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरसुन्दर, त्रिपुरवासिनि त्रिपुरवासिन्, त्रिपुराश्रीः त्रिपुराश्रयः, त्रिपुरमालिनि त्रिपुरमालिन्, त्रिपुरासिद्धे त्रिपुरासिद्ध, त्रिपुराम्बा त्रिपुराम्ब, महात्रिपुरसुन्दरि महात्रिपुरसुन्दर। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

महामहेश्वरि महामहेश्वर, महामहाराज्ञि महामहाराज्ञ, महामहाशक्ते महामहाशक्त्य, महामहागुप्ते महामहागुप्त महामहाज्ञप्ते महामहाज्ञप्त, महामहानन्दे महामहानन्द, महामहास्पन्दे महामहास्पन्द, महामहाशये महामहाशय, महामहाश्रीचक्र नगरसाम्राज्ञि महामहाश्रीचक्र नगरसाम्राज्ञ नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं। सर्वे देवता ध्यायामि आवाहयामि।

इस प्रकार जपकर देवता को ''**गुह्यातिगुह्य गोप्त्री.......**'' मन्त्र से जप समर्पण करें।

॥ १२. शिव शक्ति मिथुन नमोऽन्त माला ॥

शुक्ला द्वादशी पूजन ''स'' कृष्णा चतुर्थी पूजन

सङ्कल्प – दैनिक सङ्कल्प विधि प्रचलित या तान्त्रिक दोनों ही पूर्व में दी जा चुकी है। उनके अनुसार करें।

विनियोग – अस्य श्री शक्तिशिव मिथुन नमोऽन्त माला मन्त्रस्य बुद्धितत्त्वाधिष्ठायि विष्णवादित्य ऋषिः। अत्यष्टिच् छन्दः। मोक्षद सकार भट्टारकपीठ स्थित सकलजननीललिता सकलेश्वरकामेश्वर महाभट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्वस्तम्भन सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – बुद्धितत्त्वाधिष्ठायि विष्णवादित्य ऋषये नमः शिरसि। अत्यष्टिच् छन्दसे नमः मुखे। मोक्षद सकार भट्टारकपीठ स्थित सकलजननीललिता सकलेश्वरकामेश्वर महाभट्टारक देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्त्ये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। सर्वस्तम्भन सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – कराङ्गन्यास, अङ्गन्यास ''**ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः**'' इत्यादि से पूर्वोक्त विधि से करें।

****

॥ ध्यानम् ॥

देवि त्वद्भक्तमालोक्य शरीरेन्द्रिय चेतसाम् ।
स्तम्भनाद्वैरिणः स्त्रब्धाः स्वस्वकार्यं पराङ्मुखा ॥

मानस पूजा - मानसिक पूजन में अमुक देवता की जगह ''**श्रीसकलजननी महात्रिपुरसुन्दरी श्रीसकलेश्वर कामेश्वर मिथुन**'' का उच्चारण कर शेष पूजन करें।

॥ माला पारायण ॥

प्रत्येक माला मन्त्र के साथ ''**नमः पादुकां पूजयामि**'' उच्चारण कर मन्त्र जप करें।

बाह्य पूजा में गंधाक्षत पुष्प एक साथ मिलाकर रखलें, उनको प्रतिनाम अर्पण करते जायें। मानसिक पूजन में हाथ जोडते हुये नमस्कार मन्त्र पढ़ें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि, त्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि। (इति सर्वत्र)

हृदयदेव्यै० हृदयदेवाय०, शिरोदेव्यै० शिरोदेवाय०, शिखादेव्यै० शिखादेवाय०, कवचदेव्यै० कवचदेवाय०, नेत्रदेव्यै० नेत्रदेवाय०, अस्त्रदेव्यै० अस्त्रदेवाय०।

कामेश्वर्यै० कामेश्वराय०, भगमालिन्यै० भगमालिन्य०, नित्यक्लिन्नायै० नित्यक्लिन्नाय०, **भेरुण्डायै० भेरुण्डाय०, वह्निवासिन्यै० वह्निवासिनाय०, महावज्रेश्वर्यै० महावज्रेश्वराय०, शिवादूत्यै० शिवादूताय०, त्वरितायै० त्वरिताय०, कुलसुन्दर्यै० कुलसुन्दराय०, नित्यायै० नित्याय०, नीलपताकायै० नीलपताकाय०, विजयायै० विजयाय०, सर्वमङ्गलायै० सर्वमङ्गलाय०, ज्वालामालिन्यै० ज्वालामालिनाय०, चित्रायै० चित्राय०, महानित्यायै० महानित्याय०।**

परमेश्वर० परमेश्वर्यै०, परमेश्वर० परमेश्वराय०, मित्रीशमय्यै० मित्रीशमयाय०, षष्ठीशमय्यै० षष्ठीशमयाय०, उड्डीशमय्यै० उड्डीशमयाय०, चर्यानाथमय्यै० चर्यानाथमयाय०, लोपामुद्रामय्यै०, लोपामुद्रामयाय०, अगस्त्यमय्यै० अगस्त्यमयाय०, कालतापनमय्यै० कालतापनमयाय०, धर्माचारमय्यै० धर्माचारमयाय०, मुक्तकेशीश्वरमय्यै० मुक्तकेशीश्वरमयाय०, दीपकलानाथमय्यै० दीपकलानाथमयाय०, विष्णुदेवमय्यै० विष्णुदेवमयाय०, प्रभाकरदेवमय्यै० प्रभाकरदेवमयाय०, तेजोदेवमय्यै० तेजोदेवमयाय०, मनोजदेवमय्यै० मनोजदेवमयाय०, कल्याणदेवमय्यै० कल्याणदेवमयाय० वासुदेवमय्यै० रत्नदवमय्य०, रत्नदवमयाय०, वासुदेवमयाय०, श्रीरामानन्दमय्यै श्रीरामानन्दमयाय०।

अणिमासिद्ध्यै० अणिमासिद्धाय०, लघिमासिद्ध्यै० लघिमासिद्धाय०, महिमासिद्ध्यै० महिमासिद्धाय०, ईशित्वसिद्ध्यै० ईशित्वसिद्धाय०, वशित्वसिद्ध्यै० वशित्वसिद्धाय०, प्राकाम्यसिद्ध्यै० प्राकाम्यसिद्धाय०, भुक्तिसिद्ध्यै० भुक्तिसिद्धाय०, इच्छासिद्ध्यै० इच्छासिद्धाय०, प्राप्तिसिद्ध्यै० प्राप्तिसिद्धाय०, सर्वकामसिद्ध्यै० सर्वकामसिद्धाय०।

ब्राह्म्यै० ब्राह्माय०, माहेश्वर्यै० माहेश्वराय०, कौमार्यै० कौमाराय०, वैष्णव्यै० वैष्णवाय०, वाराह्यै० वाराहाय०, माहेन्द्र्यै० माहेन्द्राय०, चामुण्डायै० चामुण्डाय०, महालक्ष्म्यै० महालक्ष्माय०।

सर्वसंक्षोभिण्यै० सर्वसंक्षोभिण०, सर्वविद्राविण्यै० सर्वविद्राविण०, सर्वाकर्षिण्यै० सर्वाकर्षिण०, सर्ववशङ्कर्यै० सर्ववशङ्कराय०, सर्वोन्मादिन्यै० सर्वोन्मादिन०, सर्वमहांकुशायै० सर्वमहांकुशाय०, **सर्वखेचर्यै०**

****

सर्वखेचराय०, सर्वबीजायै० सर्वबीजाय०, सर्वयोन्यै० सर्वयोन्याय०, सर्वत्रिखण्डायै० सर्वत्रिखण्डाय०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिन्यै० त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिन०, प्रकट योगिन्यै० प्रकट योगिन्०।

कामाकर्षण्यै० कामाकर्षणाय०, बुद्ध्याकर्षण्यै० बुद्ध्याकर्षणाय०, अहङ्काराकर्षण्यै० अहङ्काराकर्षणाय०, शब्दाकर्षण्यै० शब्दाकर्षणाय०, स्पर्शाकर्षण्यै० स्पर्शाकर्षणाय०, रूपाकर्षण्यै० रूपाकर्षणाय०, रसाकर्षण्यै० रसाकर्षणाय०, गन्धाकर्षण्यै० गन्धाकर्षणाय०, चित्ताकर्षण्यै० चित्ताकर्षणाय०, धैर्याकर्षण्यै० धैर्याकर्षणाय०, स्मृत्याकर्षण्यै० स्मृत्याकर्षणाय०, नामाकर्षण्यै० नामाकर्षणाय०, बीजाकर्षण्यै० बीजाकर्षणाय०, आत्माकर्षण्यै० आत्माकर्षणाय०, अमृताकर्षण्यै० अमृताकर्षणाय०, शरीराकर्षण्यै० शरीराकर्षणाय०, सर्वाशापरि पूरक चक्र स्वामिन्यै० सर्वाशापरि पूरक चक्र स्वामिन्०, गुप्त योगिन्यै० गुप्त योगिन्०।

अनङ्गकुसुमायै० अनङ्गकुसुमाय०, अनङ्गमेखलायै० अनङ्गमेखलाय०, अनङ्गमदनायै० अनङ्गमदनाय०, अनङ्गमदनातुरायै० अनङ्गमदनातुराय०, अनङ्गरेखायै० अनङ्गरेखाय०, अनङ्गवेगिन्यै० अनङ्गवेगिन्य०, अनङ्गांकुशायै० अनङ्गांकुशाय०, अनङ्गमालिन्यै० अनङ्गमालिन०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्यै० सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्०, गुप्ततर योगिन्यै० गुप्ततर योगिन्०।

सर्वसंक्षोभिण्यै० सर्वसंक्षोभिण०, सर्वविद्राविण्यै० सर्वविद्राविण०, सर्वाकर्षिण्यै सर्वाकर्षिण०, सर्वाह्लादिन्यै० सर्वाह्लादिनाय०, सर्वसम्मोहिन्यै० सर्वसम्मोहिन०, सर्वस्तम्भिन्यै० सर्वस्तम्भिन०, सर्वजृम्भिण्यै० सर्वजृम्भिण०, सर्ववशङ्कर्यै० सर्ववशङ्कराय०, सर्वरञ्जिन्यै० सर्वरञ्जिन०, सर्वोन्मादिन्यै० सर्वोन्मादिन०, सर्वार्थसाधिन्यै० सर्वार्थसाधिन०, सर्वसम्पत्तिपूरण्यै० सर्वसम्पत्तिपूरणाय०, सर्वमन्त्रमय्यै० सर्वमन्त्रमयाय०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्यै० सर्वद्वन्द्वक्षयंकराय०, सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिन्यै० सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिन्०, सम्प्रदाय योगिन्यै० सम्प्रदाय योगिन्०।

सर्वसिद्धप्रदायै० सर्वसिद्धप्रदाय०, सर्वसम्पत्प्रदायै० सर्वसम्पत्प्रदाय० सर्वप्रियङ्कर्यै० सर्वप्रियङ्कराय०, सर्वमङ्गलकारिण्यै० सर्वमङ्गलकारिणे०, सर्वकामप्रदायै० सर्वकामप्रदाय०, सर्वदुःखविमोचिन्यै० सर्वदुःखविमोचिनाय०, सर्वमृत्युप्रशमन्यै० सर्वमृत्युप्रशमनाय०, सर्वविघ्ननिवारिण्यै० सर्वविघ्ननिवारिणे०, सर्वाङ्गसुन्दर्यै० सर्वाङ्गसुन्दराय०, सर्वसौभाग्यदायिन्यै० सर्वसौभाग्यदायिन०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिन्यै० सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिन्०, कुलोत्तीर्ण योगिन्यै० कुलोत्तीर्ण योगिन्०।

सर्वज्ञायै० सर्वज्ञाय०, सर्वशक्त्यै० सर्वशक्तय०, सर्वेश्वर्यप्रदायै० सर्वेश्वर्यप्रदाय०, सर्वज्ञानमय्यै० सर्वज्ञानमयाय०, सर्वव्याधिविनाशिन्यै० सर्वव्याधिविनाशिन०, सर्वाधारस्वरूपायै० सर्वाधारस्वरूपाय०, सर्वपापहरायै० सर्वपापहराय०, सर्वानन्दमय्यै० सर्वानन्दमयाय०, सर्वरक्षास्वरूपिण्यै० सर्वरक्षास्वरूपिण०, सर्वेप्सितप्रदायै० सर्वेप्सितप्रदाय०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्यै० सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्०, निगर्भ योगिन्यै० निगर्भ योगिन्०।

वशिन्यै० वशिन०, कामेश्वर्यै० कामेश्वराय०, मोदिन्यै० मोदिन०, विमलायै० विमलाय०, अरुणायै० अरुणाय०, जयिन्यै० जयिन०, सर्वेश्वर्यै० सर्वेश्वराय०, कौलिन्यै० कौलिन०, सर्वरोगहरचक्र स्वामिन्यै० सर्वरोगहरचक्र स्वामिन्०, रहस्य योगिन्यै० रहस्य योगिन्०।

वाणिन्यै० वाणिन०, चापिन्यै० चापिन०, पाशिन्यै० पाशिन०, अंकुशिन्यै० अंकुशिन०, महाकामेश्वर्यै० महाकामेश्वराय०, महावज्रेश्वर्यै० महावज्रेश्वराय०, महाभगमालिन्यै० महाभगमालिन०, महाश्रीसुन्दर्यै०

महाश्रीसुन्दराय०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्यै० सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्०, अति रहस्य योगिन्यै० अति रहस्य योगिन्०।

श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै० श्रीश्रीमहाभट्टारिकाय०, सर्वानन्दमय चक्रस्वामिन्यै० सर्वानन्दमय चक्रस्वामिन०, परापर रहस्य योगिन्यै० परापर रहस्य योगिन्०।

त्रिपुरायै० त्रिपुराय०, त्रिपुरेश्यै० त्रिपुरेशाय०, त्रिपुरसुन्दर्यै० त्रिपुरसुन्दराय०, त्रिपुरवासिन्यै० त्रिपुरवासिने०, त्रिपुराश्रीयै० त्रिपुराश्रीयाय०, त्रिपुरमालिन्यै० त्रिपुरमालिन०, त्रिपुरसिद्धायै० त्रिपुरसिद्धाय०, त्रिपुराम्बायै० त्रिपुराम्बाय०, महात्रिपुरसुन्दर्यै० महात्रिपुरसुन्दराय०।

महामहेश्वर्यै० महामहेश्वराय०, महामहाराज्ञ्यै महामहाराज्ञाय०, महामहाशक्त्यै० महामहाशक्ताय०, महामहागुप्तायै० महामहागुप्ताय०, महामहाज्ञप्तयै० महामहाज्ञप्तयाय०, महामहानन्दायै० महामहानन्दाय०, महामहास्पन्दायै० महामहास्पन्दाय०, महामहाशयायै० महामहाशयाय०, महामहाश्रीचक्र नगरसाम्राज्यै० महामहाश्रीचक्र नगरसाम्राज्ञाय०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

इस प्रकार जपकर देवता को "**गुह्यातिगुह्य गोप्त्री.......**" मन्त्र से जप समर्पण करें।

॥ १३. शिव शक्ति मिथुन स्वाहान्त माला॥

शुक्ला त्रयोदशी पूजन "क" कृष्णा तृतीया पूजन

सङ्कल्प – पूर्वोक्त विधि के अनुसार प्रचलित या तान्त्रिक पञ्चाङ्ग के अनुसार दैनिक सङ्कल्प करें।

विनियोग – **श्री अस्य शक्तिशिव मिथुन स्वाहान्त माला मन्त्रस्य चित्ततत्त्वाधिष्ठायि ब्रह्मात्मन् प्रातरादित्य ऋषिः। धृतिच् छन्दः। राजस ककार भट्टारकपीठ स्थित कामकोटिललिता करुणाकरकामेश्वरमहाभट्टारक मिथुन देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। धर्मार्थ काम मोक्ष सिद्धौ विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास – **चित्ततत्त्वाधिष्ठायि ब्रह्मात्मन् प्रातरादित्य ऋषये नमः शिरसि। धृतिच् छन्दसे नमः मुखे। राजस ककार भट्टारक पीठ स्थित कामकोटिललिता करुणाकरकामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्त्ये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयौः। धर्मार्थ काम मोक्ष सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

अङ्गन्यास – कराङ्गन्यास, हृदयादि न्यास व षड्ङ्गन्यास "**ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः**" इत्यादि से पूर्वोक्त विधि से करें।

॥ ध्यानम् ॥

धर्मश्चार्थश्च कामश्च मोक्षश्चेति ।
तव भक्तः स्वभक्तेभ्यः प्रयच्छत्यप्रयासतः ॥

मानस पूजा – बाह्य पूजन मे पञ्चोपचार पूजन करें। बाह्य व मानसिक पूजन में अमुक देवता की जगह "**श्रीकामकोटि महात्रिपुरसुन्दरी श्रीकरुणाकरकामेश्वर मिथुन**" का उच्चारण कर पूजन करें।

॥ माला पारायण॥

प्रत्येक माला मन्त्र के साथ "**स्वाहा**" उच्चारण कर करें। मानसिक पूजा में अपने चित् कुण्ड में हवन करें। बाह्य

पूजा में हवन कुण्ड में हवन करें। शिव व शक्ति दोनों के नामों के साथ स्वाहा का उच्चारण करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा। त्रिपुर सुन्दराय स्वाहा।

इसके पश्चात् षड्ङ्ग होम है। बाह्य होम में षड्ङ्ग होम मना है केवल घृताहुति होती है। अतः बाह्य होम में नाम मन्त्र मनसा पढ़ें तथा मूल मन्त्र से घृताहुति देवें। यदि ५ या ९ कुण्डीय होम होता है तो प्रधान कुण्ड में आहुति होगी व शेष कुण्डों के होता बैठे रहेंगे या घृताहुति देगें।

यथा - **हृदय देव्यै स्वाहा** (मनसा) मूलमन्त्र से आहुति देवें **हृदय देवाय स्वाहा** (मनसा)।

पुनः मूल मन्त्रेण - **कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥ इदं कामेश्वर कामेश्वरीं न मम।**

शिरोदेव्यै स्वाहा। शिरोदेवाय स्वाहा (मनसा)।

पुनः मूल मन्त्रेण - **कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥ इदं कामेश्वर कामेश्वरीं न मम।**

शिखादेव्यै स्वाहा। शिखादेवाय स्वाहा (मनसा)।

पुनः मूल मन्त्रेण - **कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥ इदं कामेश्वर कामेश्वरीं न मम।**

कवचदेव्यै स्वाहा। कवचदेवाय स्वाहा (मनसा)।

पुनः मूल मन्त्रेण - **कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥ इदं कामेश्वर कामेश्वरीं न मम।**

नेत्रदेव्यै स्वाहा। नेत्रदेवाय स्वाहा (मनसा)।

पुनः मूल मन्त्रेण - **कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥ इदं कामेश्वर कामेश्वरीं न मम।**

अस्त्रदेव्यै स्वाहा। अस्त्रदेवाय स्वाहा (मनसा)।

पुनः मूल मन्त्रेण - **कएईलह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं स्वाहा॥ इदं कामेश्वर कामेश्वरीं न मम।**

यदि मानसिक होम करें तो मूल मन्त्र तथा **इदं न मम** पढने की आवश्यकता नहीं है।

शेष नामावलि में प्रत्येक के नाम मन्त्र के साथ स्वाहा युक्त होम करें।

कामेश्ववर्यै० कामेश्वराय०, भगमालिन्यै० भगमालिन०, नित्यक्लिन्नायै० नित्यक्लिन्नाय०, भेरुण्डायै० भेरुण्डाय०, वह्निवासिन्यै० वह्निवासिनाय०, महावज्रेश्वर्यै० महावज्रेश्वराय०, शिवादूत्यै० शिवादूताय०, त्वरितायै० त्वरिताय०, कुलसुन्दर्यै० कुलसुन्दराय०, नित्यायै० नित्याय०, नीलपताकायै० नीलपताकाय०, विजयायै० विजयाय०, सर्वमङ्गलायै० सर्वमङ्गलाय०, ज्वालामालिन्यै० ज्वालामालिनाय०, चित्रायै० चित्राय०, महानित्यायै० महानित्याय०।

परमेश्वर० परमेश्वर्यै० परमेश्वरी० परमेश्वराय०, मित्रीशमय्यै० मित्रीशमयाय०, षष्ठीशमय्यै० षष्ठीशमयाय०, उड्डीशमय्यै० उड्डीशमयाय०, चर्यानाथमय्यै० चर्यानाथमयाय०, लोपामुद्रामय्यै०, लोपामुद्रामयाय०, अगस्त्यमय्यै० अगस्त्यमयाय०, कालतापनमय्यै० कालतापनमयाय०, धर्माचारमय्यै० धर्माचारमयाय०, मुक्तकेशीश्वरमय्यै० मुक्तकेशीश्वरमयाय०, दीपकलानाथमय्यै० दीपकलानाथमयाय०, विष्णुदेवमय्यै० विष्णुदेवमयाय०, प्रभाकरदेवमय्यै० प्रभाकरदेवमयाय०, तेजोदेवमय्यै० तेजोदेवमयाय०, मनोजदेवमय्यै० मनोजदेवमयाय०, कल्याणदेवमय्यै० कल्याणदेवमयाय०, रत्नदेवमय्यै० रत्नदेवमयाय०, वासुदेवमय्यै० वासुदेवमयाय०, श्रीरामानन्दमय्यै० श्रीरामानन्दमयाय०।

अणिमासिद्ध्यै० अणिमासिद्धाय०, लघिमासिद्ध्यै० लघिमासिद्ध्य०, महिमासिद्ध्यै० महिमासिद्ध्य०, ईशित्वसिद्ध्यै० ईशित्वसिद्ध्य०, वशित्वसिद्ध्यै० वशित्वसिद्ध्य०, प्राकाम्यसिद्ध्यै० प्राकाम्यसिद्ध्य०, भुक्तिसिद्ध्यै० भुक्तिसिद्ध्य०, इच्छासिद्ध्यै० इच्छासिद्ध्य०, प्राप्तिसिद्ध्यै० प्राप्तिसिद्ध्य०, सर्वकामसिद्ध्यै० सर्वकामसिद्ध्य०।

ब्राह्म्यै० ब्राह्माय०, माहेश्वर्यै० माहेश्वराय०, कौमार्यै० कौमाराय०, वैष्णव्यै० वैष्णवाय०, वाराह्यै० वाराहाय०, माहेन्द्र्यै० माहेन्द्राय०, चामुण्डायै० चामुण्डाय०, महालक्ष्म्यै० महालक्ष्म्याय०।

सर्वसंक्षोभिण्यै० सर्वसंक्षोभिण०, सर्वविद्राविण्यै सर्वविद्राविण०, सर्वाकर्षिण्यै सर्वाकर्षिण०, सर्ववशङ्कर्यै० सर्ववशङ्कराय०, सर्वोन्मादिन्यै० सर्वोन्मादिन०, सर्वमहांकुशायै० सर्वमहांकुशाय०, सर्वखेचर्यै० सर्वखेचराय०, सर्वबीजायै० सर्वबीजाय०, सर्वयोन्यै सर्वयोन्य०, सर्वत्रिखण्डायै सर्वत्रिखण्डाय, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिन्यै० त्रैलोक्य मोहन चक्र स्वामिन्०, प्रकट योगिन्यै प्रकट योगिन्०।

कामाकर्षण्यै० कामाकर्षणाय०, बुद्ध्याकर्षण्यै० बुद्ध्याकर्षणाय०, अहङ्काराकर्षण्यै० अहङ्काराकर्षणाय०, शब्दाकर्षण्यै० शब्दाकर्षणाय०, स्पर्शाकर्षण्यै० स्पर्शाकर्षणाय०, रूपाकर्षण्यै० रूपाकर्षणाय०, रसाकर्षण्यै० रसाकर्षणाय०, गन्धाकर्षण्यै० गन्धाकर्षणाय०, चित्ताकर्षण्यै० चित्ताकर्षणाय०, धैर्याकर्षण्यै० धैर्याकर्षणाय०, स्मृत्याकर्षण्यै० स्मृत्याकर्षणाय०, नामाकर्षण्यै० नामाकर्षणाय०, बीजाकर्षण्यै० बीजाकर्षणाय०, आत्माकर्षण्यै० आत्माकर्षणाय०, अमृताकर्षण्यै० अमृताकर्षणाय०, शरीराकर्षण्यै० शरीराकर्षणाय०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिन्यै० सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिन्०, गुप्त योगिन्यै० गुप्त योगिन्०।

अनङ्गकुसुमायै० अनङ्गकुसुमाय०, अनङ्गमेखलायै० अनङ्गमेखलाय०, अनङ्गमदनायै० अनङ्गमदनाय०, अनङ्गमदनातुरायै० अनङ्गमदनातुराय०, अनङ्गरेखायै० अनङ्गरेखाय०, अनङ्गवेगिन्यै० अनङ्गवेगिन्य०, अनङ्गांकुशायै० अनङ्गांकुशाय०, अनङ्गमालिन्यै अनङ्गमालिन्०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्यै० सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्०, गुप्ततर योगिन्यै गुप्ततर योगिन्०।

सर्वसंक्षोभिण्यै० सर्वसंक्षोभिण०, सर्वविद्राविण्यै० सर्वविद्राविण०, सर्वाकर्षिण्यै० सर्वाकर्षिण०, सर्वाह्लादिन्यै० सर्वाह्लादिन०, सर्वसम्मोहिन्यै० सर्वसम्मोहिन०, सर्वस्तम्भिन्यै० सर्वस्तम्भिन०, सर्वजृम्भिण्यै० सर्वजृम्भिण०, सर्ववशङ्कर्यै० सर्ववशङ्कराय०, सर्वरञ्जिन्यै० सर्वरञ्जिन०, सर्वोन्मादिन्यै० सर्वोन्मादिन०, सर्वार्थसाधिन्यै० सर्वार्थसाधिन०, सर्वसम्पत्तिपूरण्यै० सर्वसम्पत्तिपूरणाय०, सर्वमन्त्रमय्यै० सर्वमन्त्रमयाय०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्यै० सर्वद्वन्द्वक्षयंकराय०, सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिन्यै० सर्वसौभाग्यदायक चक्र स्वामिन्०, सम्प्रदाय योगिन्यै० सम्प्रदाय योगिन्०।

सर्वसिद्धिप्रदायै० सर्वसिद्धिप्रदाय०, सर्वसम्पत्प्रदायै० सर्वसम्पत्प्रदाय० सर्वप्रियङ्कर्यै० सर्वप्रियङ्कराय०, सर्वमङ्गलकारिण्यै० सर्वमङ्गलकारिण०, सर्वकामप्रदायै सर्वकामप्रदाय०, सर्वदुःखविमोचिन्यै० सर्वदुःखविमोचिनाय०, सर्वमृत्युप्रशमन्यै० सर्वमृत्युप्रशमनाय०, सर्वविघ्ननिवारिण्यै० सर्वविघ्ननिवारिण०, सर्वाङ्गसुन्दर्यै० सर्वाङ्गसुन्दराय०, सर्वसौभाग्यदायिन्यै० सर्वसौभाग्यदायिन्०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिन्यै० सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिन्०, कुलोत्तीर्ण योगिन्यै० कुलोत्तीर्ण योगिन्०।

सर्वज्ञायै० सर्वज्ञाय०, सर्वशक्त्यै० सर्वशक्तये०, सर्वैश्वर्यप्रदायै० सर्वैश्वर्यप्रदाय०, सर्वज्ञानमय्यै० सर्वज्ञानमयाय०, सर्वव्याधिविनाशिन्यै० सर्वव्याधिविनाशिन्०, सर्वाधारस्वरूपायै० सर्वाधारस्वरूपाय०,

सर्वपापहरायै० सर्वपापहराय०, सर्वानन्दमय्यै० सर्वानन्दमयाय०, सर्वरक्षास्वरूपिण्यै० सर्वरक्षास्वरूपिण०, सर्वेप्सितप्रदायै० सर्वेप्सितप्रदाय०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्यै० सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्०, निगर्भ योगिन्यै० निगर्भ योगिन्०।

वशिन्यै० वशिन०, कामेश्वर्यै० कामेश्वराय०, मोदिन्यै० मोदिन०, विमलायै० विमलाय०, अरुणायै० अरुणाय०, जयिन्यै० जयिन्,० सर्वेश्वर्यै० सर्वेश्वराय०, कौलिन्यै० कौलिन्०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिन्यै० सर्वरोगहर चक्र स्वामिन्०, रहस्य योगिन्यै० रहस्य योगिन्०।

वाणिन्यै० वाणिन०, चापिन्यै० चापिन०, पाशिन्यै० पाशिन०, अंकुशिन्यै० अंकुशिन०, महाकामेश्वर्यै० महाकामेश्वराय०, महावज्रेश्वर्यै० महावज्रेश्वराय०, महाभगमालिन्यै० महाभगमालिन्,० महाश्रीसुन्दर्यै० महाश्रीसुन्दराय०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्यै० सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्०, अति रहस्य योगिन्यै० अति रहस्य योगिन्०।

श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै० श्रीश्रीमहाभट्टारिकाय०, सर्वानन्दमय चक्रस्वामिन्यै० सर्वानन्दमय चक्रस्वामिन्०, परापर रहस्य योगिन्यै० परापर रहस्य योगिन्०।

त्रिपुरायै० त्रिपुराय०, त्रिपुरेश्यै० त्रिपुरेशाय०, त्रिपुरसुन्दर्यै० त्रिपुरसुन्दराय०, त्रिपुरवासिन्यै० त्रिपुरवासिन्०, त्रिपुराश्रीयै० त्रिपुराश्रीयाय०, त्रिपुर मालिन्यै० त्रिपुर मालिन्०, त्रिपुरासिद्धायै० त्रिपुरासिद्धाय०, त्रिपुराम्बायै० त्रिपुराम्बाय०, महात्रिपुरसुन्दर्यै० महात्रिपुरसुन्दराय०।

महामहेश्वर्यै० महामहेश्वराय०, महामहाराज्यै महामहाराज्ञाय०, महामहाशक्त्यै० महामहाशक्ताय०, महामहागुप्तयै० महामहागुप्ताय०, महामहाज्ञप्तयै० महामहाज्ञप्ताय०, महामहानन्दायै० महामहानन्दाय०, महामहास्पन्दायै० महामहास्पन्दाय०, महामहाशयायै० महामहाशयाय०, महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्यै० महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञाय०, नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

पश्चात् ''गुह्यातिगुह्य गोप्त्री.......'' मन्त्र से जप समर्पण करें।

॥ १४. शिवशक्ति मिथुन तर्पणान्त माला॥

शुक्ला चतुर्दशी पूजन ''ल'' कृष्णा द्वितीया पूजन

सङ्कल्प – प्रचलित या तान्त्रिक पञ्चाङ्ग से लौकिक, तान्त्रिक विधि के अनुसार सङ्कल्प करें।

विनियोग – अस्य श्री शक्तिशिव मिथुन तर्पणान्त माला मन्त्रस्य प्रधानतत्त्वाधिष्ठायि विष्ण्वात्मन् मध्याह्नादित्य ऋषिः। अतिधृतिच् छन्दः। राजस लकार भट्टारकपीठ स्थित लीलावतीललिता लावण्यनायक कामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्व नित्यानन्द सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – प्रधानतत्त्वाधिष्ठायि विष्ण्वात्मन् मध्याह्नादित्य ऋषये नमः शिरसि। अतिधृतिच् छन्दसे नमः मुखे। राजस लकार भट्टारकपीठ स्थित लीलावतीललिता लावण्यनायक कामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्त्ये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। सर्व नित्यानन्द सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – कराङ्गन्यास, अङ्गन्यास ''ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः'' इत्यादि से पूर्वोक्त विधि से करें।

॥ ध्यानम् ॥

अलौकिकं लौकिकं चेत्यानन्द द्वितयं सदा ।
सुलभं परमेशानि त्वत्पादौ भजतां नृणाम् ॥

मानस पूजा – ''**श्रीलीलावती महात्रिपुर सुन्दरी श्री लावण्यनायक कामेश्वर मिथुन**'' नाम से बाह्य पूजन करें तथा मानसिक पूजन पूजन में अमुक देवता की जगह इसी नाम का उच्चारण करें।

॥ माला पारायण॥

मानसिक पूजा के अन्तर्गत प्रत्येक नाम के साथ **तर्पयामि** जोड़कर उच्चारण करें बाह्य पूजा में भी तर्पयामि कहते हुये एक पात्र में शुद्ध सुगंधित जल द्वारा तर्पण करें। पुष्प, मधुत्रय भी तर्पण प्रयोग में जल में डाल सकते हैं। मानस पूजा में जिह्वाग्र पर कुण्डलिनि का तर्पण करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि त्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि (इति सर्वत्र)

हृदयदेवीं०, हृदयदेवं०, शिरोदेवीं० शिरोदेवं०, शिखादेवीं०, शिखादेवं०, कवचदेवीं०, कवचदेवं०, नेत्रदेवीं०, नेत्रदेवं०, अस्त्रदेवीं०, अस्त्रदेवं०।

कामेश्वरीं०, कामेश्वरं०, भगमालिनीं०, भगमालिनं०, नित्यक्लिन्नां०, **नित्यक्लिन्नं०, भेरुण्डां०, भेरुण्डं०, वह्निवासिनीं०, वह्निवासिनं०,** महावज्रेश्वरीं०, महावज्रेश्वरं०, शिवादूतीं०, शिवादूतं०, **त्वरितां०, त्वरितं०, कुलसुन्दरीं०, कुलसुन्दरं०, नित्यां०,** नित्यं०, नीलपताकां०, नीलपताकं०, **विजयां०, विजयं, सर्वमङ्गलां०, सर्वमङ्गलं०, ज्वालामालिनीं०, ज्वालामालिनं०,** चित्रां०, चित्रं०, महानित्यां०, **महानित्यं०।**

परमेश्वर परमेश्वरीं, परमेश्वर परमेश्वरं, मित्रीशमयीं०, मित्रीशमयं०, षष्ठीशमयीं०, षष्ठीशमयं०, उड्डीशमयीं०, उड्डीशमयं०, चर्यानाथमयीं०, चर्यानाथमयं०, लोपामुद्रामयीं०, लोपामुद्रामयं०, अगस्त्यमयीं०, अगस्त्यमयं०, कालतापनमयीं०, कालतापनमयं०, धर्माचारमयीं०, धर्माचारमयं०, मुक्तकेशीश्वरमयीं०, मुक्तकेशीश्वरमयं०, दीपकलानाथमयीं०, दीपकलानाथमयं०, विष्णुदेवमयीं०, विष्णुदेवमयं०, प्रभाकरदेवमयीं०, प्रभाकरदेवमयं०, तेजोदेवमयीं०, तेजोदेवमयं०, मनोजदेवमयीं०, मनोजदेवमयं०, कल्याणदेवमयीं०, कल्याणदेवमयं०, रत्नदेवमयीं०, रत्नदेवमयं०, वासुदेवमयीं०, वासुदेवमयं०, श्रीरामानन्दमयीं०, श्रीरामानन्दमयं०।

अणिमासिद्धिं०, अणिमासिद्धं०, लघिमासिद्धिं०, लघिमासिद्धं०, महिमासिद्धिं०, महिमासिद्धं०, ईशित्वसिद्धिं०, ईशित्वसिद्धं, वशित्वसिद्धिं०, वशित्वसिद्धं०, प्राकाम्यसिद्धिं०, **प्राकाम्यसिद्धं०, भुक्तिसिद्धिं०, भुक्तिसिद्धं०, इच्छासिद्धिं०, इच्छासिद्धं, प्राप्तिसिद्धिं०, प्राप्तिसिद्धं०, सर्वकामसिद्धिं०, सर्वकामसिद्धं०।**

ब्राह्मीं०, ब्राह्मं०, माहेश्वरीं०, **माहेश्वरं०, कौमारीं०,** कौमारं०, **वैष्णवीं०, वैष्णवं०, वाराहीं०, वाराहं०, माहेन्द्रीं०, माहेन्द्रं०, चामुण्डां०, चामुण्डं०,** महालक्ष्मीं०, महालक्ष्मं०।

सर्वसंक्षोभिणीं०, सर्वसंक्षोभिणं०, सर्वविद्राविणीं०, सर्वविद्राविणं०, **सर्वाकर्षिणीं०, सर्वाकर्षिणं०, सर्ववशङ्करीं०,** सर्ववशङ्करं०, **सर्वोन्मादिनीं०,** सर्वोन्मादिनं सर्वमहांकुशां०, **सर्वमहांकुशं०, सर्वखेचरीं०, सर्वखेचरं०, सर्वबीजां०, सर्वबीजं०, सर्वयोनिं०, सर्वयोन्यं० सर्वत्रिखण्डां०, सर्वत्रिखण्डं०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिनीं०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिनं०, प्रकट योगिनीं०, प्रकट योगिनं।**

कामाकर्षणीं०, कामाकर्षणं०, बुद्ध्याकर्षणीं०, बुद्ध्याकर्षणं०, **अहङ्काराकर्षणीं०, अहङ्काराकर्षणं०,**

शब्दाकर्षणीं०, शब्दाकर्षणं०, स्पर्शाकर्षणीं०, स्पर्शाकर्षणं०, रूपाकर्षणीं०, रूपाकर्षणं०, रसाकर्षणीं०, रसाकर्षणं०, गन्धाकर्षणीं०, गन्धाकर्षणं०, चित्ताकर्षणीं०, चित्ताकर्षणं०, धैर्याकर्षणीं०, धैर्याकर्षणं०, स्मृत्याकर्षणीं०, स्मृत्याकर्षणं०, नामाकर्षणीं०, नामाकर्षणं०, बीजाकर्षणीं०, बीजाकर्षणं०, आत्माकर्षणीं०, आत्माकर्षणं०, अमृताकर्षणीं०, अमृताकर्षणं०, शरीराकर्षणीं०, शरीराकर्षणं०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनीं०, सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनं०, गुप्त योगिनीं०, गुप्त योगिनं०।

अनङ्गकुसुमां०, अनङ्गकुसुमं०, अनङ्गमेखलां०, अनङ्गमेखलं०, अनङ्गमदनां०, अनङ्गमदनं०, अनङ्गमदनातुरां०, अनङ्गमदनातुरं०, अनङ्गरेखां०, अनङ्गरेखं०, अनङ्गवेगिनीं०, अनङ्गवेगिनं०, अनङ्गांकुशां०, अनङ्गांकुशं०, अनङ्गमालिनीं०, अनङ्गमालिनं०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनीं०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनं०, गुप्ततर योगिनीं०, गुप्ततर योगिनं।

सर्वसंक्षोभिणीं०, सर्वसंक्षोभिणं०, सर्वविद्राविणीं०, सर्वविद्राविणं०, सर्वाकर्षिणीं०, सर्वाकर्षिणं०, सर्वाह्लादिनीं०, सर्वाह्लादिनं०, सर्वसम्मोहिनीं०, सर्वसम्मोहिनं०, सर्वस्तम्भिनीं०, सर्वस्तम्भिनं०, सर्वजृम्भिणीं०, सर्वजृम्भिणं०, सर्ववशङ्करीं०, सर्ववशङ्करं०, सर्वरञ्जिनीं०, सर्वरञ्जिनं०, सर्वोन्मादिनीं०, सर्वोन्मादिनं०, सर्वार्थसाधिनीं०, सर्वार्थसाधिनं०, सर्वसम्पत्तिपूरणीं०, सर्वसम्पत्तिपूरणं०, सर्वमन्त्रमयीं०, सर्वमन्त्रमयं०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरीं०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरं०, सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिनीं०, सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिनं०, सम्प्रदाय योगिनीं०, सम्प्रदाय योगिनं०।

सर्वसिद्धप्रदां०, सर्वसिद्धप्रदं०, सर्वसम्पत्प्रदां०, सर्वसम्पत्प्रदं०, सर्वप्रियङ्करीं० सर्वप्रियङ्करं०, सर्वमङ्गलकारिणीं०, सर्वमङ्गलकारिणं०, सर्वकामप्रदां०, सर्वकामप्रदं०, सर्वदुःखविमोचिनीं०, सर्वदुःखविमोचिनं०, सर्वमृत्युप्रशमनीं०, सर्वमृत्युप्रशमनं०, सर्वविघ्ननिवारिणीं०, सर्वविघ्ननिवारिणं०, सर्वाङ्गसुन्दरीं०, सर्वाङ्गसुन्दरं०, सर्वसौभाग्य दायिनीं०, सर्वसौभाग्य दायिनं०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिनीं०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिनं०, कुलोत्तीर्ण योगिनीं० कुलोत्तीर्ण योगिनं०।

सर्वज्ञां०, सर्वज्ञं०, सर्वशक्तिं०, सर्वशक्तिं०, सर्वेश्वर्यप्रदां०, सर्वेश्वर्यप्रदं०, सर्वज्ञानमयीं०, सर्वज्ञानमयं०, सर्वव्याधिविनाशिनीं०, सर्वव्याधिविनाशिनं०, सर्वाधारस्वरूपां०, सर्वाधारस्वरूपं०, सर्वपापहरां०, सर्वपापहरं०, सर्वानन्दमयीं०, सर्वानन्दमयं०, सर्वरक्षास्वरूपिणीं०, सर्वरक्षास्वरूपिणं०, सर्वेप्सितप्रदां०, सर्वेप्सितप्रदं०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिनीं०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिनं०, निगर्भ योगिनीं०, निगर्भ योगिनं।

वशिनीं०, वशिनं०, कामेश्वरीं०, कामेश्वरं०, मोदिनीं०, मोदिनं०, विमलां०, विमलं०, अरुणां०, अरुणं०, जयिनीं०, जयिनं०, सर्वेश्वरीं०, सर्वेश्वरं०, कौलिनीं०, कौलिनं०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिनीं०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिनं०, रहस्य योगिनीं०, रहस्य योगिनं०।

वाणिनीं०, वाणिनं०, चापिनीं०, चापिनं०, पाशिनीं०, पाशिनं०, अंकुशिनीं०, अंकुशिनं०, महाकामेश्वरीं०, महाकामेश्वरं०, महावज्रेश्वरीं०, महावज्रेश्वरं०, महाभगमलिनीं०, महाभगमलिनं०, महात्रिपुरसुन्दरीं०, महात्रिपुरसुन्दरं०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिनीं०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिनं०, अति रहस्य योगिनीं०, अति रहस्य योगिनं।

श्रीश्रीभट्टारिकां०, श्रीश्रीभट्टारिकं०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिनीं०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिनं०, परापर रहस्य योगिनीं०, परापर रहस्य योगिनं०।

त्रिपुरां०, त्रिपुरं०, त्रिपुरेशीं०, त्रिपुरेशं०, त्रिपुरसुन्दरीं०, त्रिपुरसुन्दरं०, त्रिपुरवासिनीं०, त्रिपुरवासिनं०, त्रिपुराश्रियै०, त्रिपुराश्रिये०, त्रिपुरमालिनीं०, त्रिपुरमालिनं०, त्रिपुरासिद्धां० त्रिपुरासिद्धं०, त्रिपुराम्बां०, त्रिपुराम्बं०, महात्रिपुरसुन्दरीं०, महात्रिपुरसुन्दरं० ।

महामहेश्वरीं०, महामहेश्वरं०, महामहाराज्ञीं०, महामहाराज्ञं०, महामहाशक्तिं०, महामहाशक्तं०, महामहागुप्तां०, महामहागुप्तं० महामहाज्ञप्तिं०, महामहाज्ञप्तं०, महामहानन्दां०, महामहानन्दं०, महामहास्पन्दां० महामहास्पन्दं०, महामहाशयां०, महामहाशयं०, महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञीं०, महामहाश्रीचक्र नगर साम्राजं० नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

इस प्रकार जपकर देवता को "**गुह्यातिगुह्य गोप्त्री.......**" मन्त्र से जप समर्पण करें।

|| १५. शिवशक्ति मिथुन जयान्त माला ||

शुक्लपक्षे पूर्णिमायां पूजन "ह्रीं" कृष्णपक्षे प्रतिपदायां पूजन

सङ्कल्प – प्रचलित या तान्त्रिक पञ्चाङ्ग से लौकिक, तान्त्रिक विधि के अनुसार सङ्कल्प करें।

विनियोग – अस्य शक्तिशिव मिथुन जयान्तमालामन्त्रस्य पुरुषतत्त्वाधिष्ठायि शिवात्मन् सायमादित्य ऋषिः। कृति च्छन्दः। राजस ह्रींकार भट्टारक पीठ स्थित हरेश्वरीललिता, हिरण्यबाहुकामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। भोग मोक्ष सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – पुरुषतत्त्वाधिष्ठायि शिवात्मन् सायमादित्य ऋषये नमः शिरसि। कृति च्छन्दसे नमः मुखे। राजस ह्रींकार भट्टारक पीठ स्थित हरेश्वरीललिता हिरण्यबाहुकामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। भोग मोक्ष सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

अङ्गन्यास – कराङ्गन्यास, षड्ङ्गन्यास "ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः" इत्यादि से पूर्वोक्त विधि से करें।

|| ध्यानम् ||

या भोगदायिनी देवि जीवनमुक्तिप्रदा न सा ।
मोक्षदा तु न भोगाय ललिता तुऽभयदप्रदा ॥

मानस पूजा – मानस व बाह्य पूजा में अमुक देवता के स्थान पर "**श्रीहरेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी श्रीहिरण्यबाहुकामेश्वर मिथुन**" का उच्चारण करें।

बाह्य पञ्चोपचार पूजन भी इसी नाम से करें।

|| माला पारायण ||

माला पारायण के अन्तर्गत प्रत्येक नामावलि के अन्त में "जय जय" जोड़कर नाम उच्चारण करें। मानसिक पूजन में जय उद्घोष के साथ स्मरण करें। बाह्य पूजन में प्रति नाम मन्त्र पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि जय जय त्रिपुरसुन्दर जय जय। (इति सर्वत्र)

हृदय देवि०, हृदय देव०, शिरोदेवि०, शिरोदेव०, शिखा देवि०, शिखा देव०, कवच देवि०, कवच देव०,

नेत्र देवि०, नेत्र देव०, अस्त्र देवि०, अस्त्र देव०।

कामेश्वरि०, कामेश्वर०, भगमालिनि०, भगमालिन्०, नित्यक्लिन्ने०, नित्यक्लिन्न०, भेरुण्डे०, भेरुण्ड०, वह्निवासिनी०, वह्निवासिन्०, महावज्रेश्वरि०, महावज्रेश्वर०, शिवादूति०, शिवादूत०, त्वरिते०, त्वरित०, कुलसुन्दरि०, कुलसुन्दर०, नित्ये०, नित्य०, नीलपताके०, नीलपताक०, विजये०, विजय०, सर्वमङ्गले०, सर्वमङ्गल०, ज्वालामालिनि०, ज्वालामालिन्०, चित्रे०, चित्र०, महानित्ये०, महानित्य०।

परमेश्वर परमेश्वरि०, परमेश्वरि परमेश्वर०, मित्रीशमयि०, मित्रीशमय०, षष्ठीशमयि०, षष्ठीशमय०, उड्डीशमयि०, उड्डीशमय०, चर्यानाथमयि० चर्यानाथमय०, लोपामुद्रामयि० लोपामुद्रामय०, अगस्त्यमयि० अगस्त्यमय०, कालतापनमयि० कालतापनमय०, धर्माचारमयि० धर्माचारमय०, मुक्तकेशीश्वरमयि० मुक्तकेशीश्वरमय०, दीपकलानाथमयि० दीपकलानाथमय०, विष्णुदेवमयि० विष्णुदेवमय०, प्रभाकरदेवमयि० प्रभाकरदेवमय०, तेजोदेवमयि० तेजोदेवमय०, मनोजदेवमयि० मनोजदेवमय०, कल्याणदेवमयि० कल्याणदेवमय०, रत्नदेवमयीं०, रत्नदेवमयं०, वासुदेवमयि० वासुदेवमय०, श्रीरामानन्दमयि० श्रीरामानन्दमय०।

अणिमासिद्धे० अणिमासिद्ध०, लघिमासिद्धे० लघिमासिद्ध०, महिमासिद्धे० महिमासिद्ध०, ईशित्वसिद्धे० ईशित्वसिद्ध०, वशित्वसिद्धे० वशित्वसिद्ध०, प्राकाम्यसिद्धे० प्राकाम्यसिद्ध०, भुक्तिसिद्धे० भुक्तिसिद्ध०, इच्छासिद्धे० इच्छासिद्ध०, प्राप्तिसिद्धे० प्राप्तिसिद्ध०, सर्वकामसिद्धे० सर्वकामसिद्ध०।

ब्राह्मी० ब्राह्म०, माहेश्वरि० माहेश्वर०, कौमारि० कौमार०, वैष्णवी० वैष्णव०, वाराही० वाराह०, माहेन्द्रि० माहेन्द्र०, चामुण्डे० चामुण्ड० महालक्ष्मि० महालक्ष्म०।

सर्वसंक्षोभिणि० सर्वसंक्षोभिन्०, सर्वविद्राविणि० सर्वविद्राविन्०, सर्वाकर्षिणि० सर्वाकर्षिन्०, सर्ववशङ्करि० सर्ववशङ्कर०, सर्वोन्मादिनि० सर्वोन्मादिन्० सर्वमहांकुशे० सर्वमहांकुश०, सर्वखेचरि० सर्वखेचर०, सर्वबीजे० सर्वबीज०, सर्वयोने० सर्वयोन्य० सर्वत्रिखण्डे० सर्वत्रिखण्ड०, त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिनि० त्रैलोक्यमोहन चक्र स्वामिन्०, प्रकट योगिनि० प्रकट योगिन्०।

कामाकर्षणि० कामाकर्षण०, बुद्ध्याकर्षणि० बुद्ध्याकर्षण०, अहङ्काराकर्षणि० अहङ्काराकर्षण०, शब्दाकर्षणि० शब्दाकर्षण०, स्पर्शाकर्षणि० स्पर्शाकर्षण०, रूपाकर्षणि० रूपाकर्षण०, रसाकर्षणि० रसाकर्षण०, गन्धाकर्षणि० गन्धाकर्षण०, चित्ताकर्षणि० चित्ताकर्षण०, धैर्याकर्षणि० धैर्याकर्षण०, स्मृत्याकर्षणि० स्मृत्याकर्षण०, नामाकर्षणि० नामाकर्षण०, बीजाकर्षणि० बीजाकर्षण०, आत्माकर्षणि० आत्माकर्षण०, अमृताकर्षणि० अमृताकर्षण०, शरीराकर्षणि० शरीराकर्षण०, सर्वाशापरि पूरक चक्र स्वामिनि० सर्वाशापरि पूरक चक्र स्वामिन्०, गुप्त योगिनि० गुप्त योगिन्०।

अनङ्गकुसुमे० अनङ्गकुसुम०, अनङ्गमेखले० अनङ्गमेखल०, अनङ्गमदने० अनङ्गमदन०, अनङ्गमदनातुरे० अनङ्गमदनातुर०, अनङ्गरेखे० अनङ्गरेख०, अनङ्गवेगिन्ये० अनङ्गवेगिन्०, अनङ्गांकुशे० अनङ्गांकुश०, अनङ्गमालिनि० अनङ्गमालिन्०, सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनि० सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्०, गुप्ततर योगिनि० गुप्ततर योगिन्०।

सर्वसंक्षोभिणि० सर्वसंक्षोभिण०, सर्वविद्राविणि० सर्वविद्राविण०, सर्वाकर्षिणि० सर्वाकर्षिण०, सर्वाह्लादिनि० सर्वाह्लादिन्०, सर्वसम्मोहिनि० सर्वसम्मोहिन्०, सर्वस्तम्भिनि० सर्वस्तम्भिन्०, सर्वजृम्भिणि० सर्वजृम्भिण०, सर्ववशङ्करि० सर्ववशङ्कर,० सर्वरञ्जिनि० सर्वरञ्जिन्०, सर्वोन्मादिनि० सर्वोन्मादिन्०, सर्वार्थसाधिनि०

सर्वार्थसाधिन्०, सर्वसम्पत्तिपूरणि० सर्वसम्पत्तिपूरण०, सर्वमन्त्रमयि० सर्वमन्त्रमय०, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरि० सर्वद्वन्द्वक्षयंकर०, सर्वसौभाग्य० दायक चक्र स्वामिनि० सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिन्०, सम्प्रदाय योगिनि० सम्प्रदाय योगिन्०।

सर्वसिद्धप्रदे० सर्वसिद्धप्रद०, सर्वसम्पत्प्रदे० सर्वसम्पत्प्रद०, सर्वप्रियङ्करि० सर्वप्रियङ्कर०, सर्वमङ्गलकारिणि० सर्वमङ्गलकारिण०, सर्वकामप्रदे० सर्वकामप्रद०, सर्वदुःखविमोचिनि० सर्वदुःखविमोचिन्०, सर्वमृत्युप्रशमनि० सर्वमृत्युप्रशमन्०, सर्वविघ्ननिवारिणि० सर्वविघ्ननिवारिण०, सर्वाङ्गसुन्दरी० सर्वाङ्गसुन्दर०, सर्वसौभाग्य दायिनि० सर्वसौभाग्य दायिन्०, सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिनि० सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिन्०, कुलोत्तीर्ण योगिनि० कुलोत्तीर्ण योगिन्०।

सर्वज्ञे० सर्वज्ञ०, सर्वशक्ते० सर्वशक्त०, सर्वेश्वर्यप्रदे० सर्वेश्वर्यप्रद०, सर्वज्ञानमयि० सर्वज्ञानमय०, सर्वव्याधिविनाशिनि० सर्वव्याधिविनाशिन्०, सर्वाधारस्वरूपे० सर्वाधारस्वरूप०, सर्वपापहरे० सर्वपापहर०, सर्वानन्दमयि० सर्वानन्दमय०, सर्वरक्षास्वरूपिणि० सर्वरक्षास्वरूपिण०, सर्वेप्सितप्रदे० सर्वेप्सितप्रद०, सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिनि० सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्०, निगर्भ योगिनि० निगर्भ योगिन्०।

वशिनि० वशिन्०, कामेश्वरि० कामेश्वर०, मोदिनि० मोदिन्०, विमले० विमल०, अरुणे० अरुण०, जयिनि० जयिन्०, सर्वेश्वरि० सर्वेश्वर०, कौलिनि० कौलिन्०, सर्वरोगहर चक्र स्वामिनि० सर्वरोगहर चक्र स्वामिन०, रहस्य योगिनि० रहस्य योगिन्०।

वाणिनि० वाणिन्०, चापिनि०, चापिन्०, पाशिनि०, पाशिन्०, अंकुशिनि० अंकुशिन्०, महाकामेश्वरि० महाकामेश्वर०, महावज्रेश्वरि० महावज्रेश्वर०, महाभगमालिनि० महाभगमालिन्०, महाश्रीसुन्दरी० महाश्रीसुन्दर०, सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिनि० सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिन्०, अतिरहस्य योगिनि० अतिरहस्य योगिन्०।

श्रीश्रीभट्टारिके० श्रीश्रीभट्टारिक०, सर्वानन्दमयचक्र स्वामिनि० सर्वानन्दमयचक्र स्वामिन्०, परापररहस्य योगिनि० परापररहस्य योगिन्०।

त्रिपुरे० त्रिपुर०, त्रिपुरेशि० त्रिपुरेश०, त्रिपुरसुन्दरि० त्रिपुरसुन्दर०, त्रिपुरवासिनि० त्रिपुरवासिन०, त्रिपुराश्रिः० त्रिपुरश्रिः०, त्रिपुरमालिनि० त्रिपुरमालिन्०, त्रिपुरासिद्धे० त्रिपुरसिद्ध०, त्रिपुराम्बा० त्रिपुराम्ब०, महात्रिपुरसुन्दरि० महात्रिपुरसुन्दर०।

महामहेश्वरि० महामहेश्वर०, महामहाराज्ञि० महामहाराज्ञ०, महामहाशक्ते० महामहाशक्त०, महामहागुप्ते० महामहागुप्त० महामहाज्ञप्ते० महामहाज्ञप्त०, महामहानन्दे० महामहानन्द०, महामहास्पन्दे० महामहास्पन्द०, महामहाशये० महामहाशय०, महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि० महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ० नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।

मन्त्र जप कर देवता को निम्न मन्त्र से जप समर्पण करें।

गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवति मे देवि त्वत् प्रसादान् महेश्वरि॥

॥ इति श्रीविद्या खड्गमाला प्रयोगः॥

॥ अथ वाराही तन्त्रम् ॥

॥ अथ वाराही मन्त्र प्रयोग:॥

मन्त्र – १. ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वाराहमुखि वाराहमुखि अन्धे अंधिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जंभेजंभिनि नमः, मोहे मोहिनि नमः, सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक् चित्त चक्षुर्मुख गति जिह्वास्तभं कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

प्रलयारुण सङ्काश पद्मान्तर्गतवासिनीं, इन्द्रनील महातेजप्रकाशां विश्वमातरम् ।
कदम्बमुण्डमालाढ्यां नवरत्न विभूषितां, अनर्घ्यरत्न घटित मुकुट श्री विराजिताम् ॥
कोशेयार्धोरुकां चारु प्रवालमणि भूषणां, हलेन मुसलेनापि वरदेनाभयेन च ।
विराजित चतुर्बाहुं कपिलाक्षीं सुमध्यमां, नितम्बिनीमुत्पलाभां कठोरघन सत्कुचाम् ।
कोलाननां ध्यायामि वाराहीं कल्याण दायिनीम् ॥

श्री विद्यार्णव तंत्र में ऋष्यादि नहीं दिये हैं।

मन्त्र – २. ॐ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वाराहि वाराहमुखि ऐं ग्लौं ऐं अंधे अंधिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भेजंभिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तंभे स्तंभिनि नमः ऐं ग्लौं ऐं सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्व वाक्चित्त चक्षुर्मुख गति जिह्वा स्तम्भं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं कुरु कुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

विनियोग :- अस्य मंत्रस्य शिव ऋषिः अतिजगती छंदः वार्ताली देवता सर्वशत्रु स्तंभनार्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास :- १. वार्तालि २. वाराहि ३. वाराहमुखि, ४. अंधे अंधिनि ५. रुन्धे रुन्धिनि ६. जंभे जंभिनि नमः से हृदयादि न्यास करे।

रक्ताम्भोरुह कर्णिकोपरिगते शवासनेसंस्थितां, मुण्डस्त्रक परिराजमान हृदयां नीलाश्म सद्रोचिषम्।
हस्ताब्जैर्मुसलं हलाभयवरान् संबिभ्रन्तीं सत्कुचाम्, वार्तालीमरुणाम्बरां त्रिनयनां वन्दे वराहाननाम्॥

॥ पूर्वकारणागामे ध्यानम् ॥

कृष्णा पीताम्बरा शार्ङ्गी सर्वसम्पत्करां नृणाम् । पवित्रतालं कृतोपरस्था पादनूपुर संयुता ॥
सर्वेऽभय हलं चैव मूसलं वरमन्यके । वराहवक्त्रीं वाराही यमभूषण भूषणी ॥

॥ विश्वसारतन्त्रे ध्यानम् ॥

मूषलं करवालं च खेटकं हलं ।
करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालघनच्छवि ॥

अग्निपुराण के अनसार वाराही कुल की ८ कन्यायें है। उनका अष्टदल मे पूजन करें। पूजन प्रयोग स्वप्न वाराही

प्रयोग में है।

मंत्र - ३. **ॐ नमों भगवत्यै वाराहरूपिण्यै चतुर्दशभुवनाधिपायै वराह्यै भूपतित्वं मे देहि दापय स्वाहा।** (महा. संहिता)

॥ ध्यानम् ॥

घननीलघनाकारां खर्वस्थूलकलेवराम् । हस्तमात्र विनिष्क्रान्त प्रचलप्तोत्ररन्ध्रवत् ॥१॥
वामभागेऽक्षिवदनं धारयन्ती द्विलोचनाम् । अष्टमीचन्द्रखण्डाभ दंष्ट्रायुग विराजिताम् ॥२॥
कोपादालोलरसनां विस्तारिविवृताननाम् । कल्पान्त विसंकाणां पूरयन्तीं जगत् त्विषा ॥३॥
भीमदंष्ट्राट्टहासां च रक्ताक्षीं रक्तवाससम् । कृपाणाकार रोमाली परिपूर्ण कलेवराम् ॥४॥
भूदाररूपधात्रीं च सञ्चरन्तीं विहायसि । सटाधूननवित्रस्त प्रपलायित खेचराम् ॥५॥
सर्वालङ्कारसंयुक्तां घुर्घुरारावकारिणीम् । अब्जचापाङ्कुशान् पाशं वामगे विभ्रतीं करे ॥६॥
चक्रं वाणं गदां शंखं दधतीं दक्षिणे करे । दूमर्वादलश्यामलया धरण्या सेवितां सदा ॥७॥

वाराही उपासना भूमि, आवास प्राप्ति की समस्या निराकरण एवं विवाद शांत होकर इच्छित धन लाभ प्राप्त होता है।

॥ वाराही यंत्रार्चनम् ॥

ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादि परतत्वांत पीठदेवता संस्थाप्य "**ॐ मं मण्डूकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः।**"

पीठशक्तियों का पूजन करें- **पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः, ॐ विजयायै नमः, ॐ जितायै नमः, ॐ अपराजितायै नमः, ॐ नित्यायै नमः, ॐ विलासिन्यै नमः, ॐ दोग्ध्रै नमः, ॐ अघोरायै नमः, मध्ये ॐ मंगलायै नमः।**

प्रथमावरणम् - (त्रिकोणे) मध्य में ध्यानपूर्वक वार्ताली का पूजन करें।

पुष्पांजलि लेकर पूजन तर्पण की आज्ञा मांगे-

संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ।
अनुज्ञां देहि वार्तालि परिवारार्चनाय मे ॥

देवी के षडाङ्ग की पूजा करे। **ॐ वार्तालि हृदयाय नमः। हृदय श्री पादुकां पूजयामि।ॐ वाराहि शिरसे स्वाहा शिरः श्रीपा० पू० इति सर्वत्र। ॐ वराहमुखि शिखायै वषट्। ॐ अंधे अंधिनि कवचाय हुं। ॐ रुंधे रुंधिनि नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ जंभे जंभिनि अस्त्राय फट्।** त्रिकोण के एक एक कोणों में पूजन करे।

पुष्पांजलि प्रदान करे- **अभीष्टसिद्धिं देहि मे शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥**

द्वितीयावरणम् - (पंचास्त्रऽग्न्यादि क्रमेण) **ॐ अंधिन्यै नमः। ॐ रुंधिन्यै नमः। ॐ जंभिन्यै नमः। ॐ मोहिन्यै नमः। ॐ स्तंभिन्यै नमः।**

तृतीयावरणम् - (षट्कोणोपरि) आग्नेये -**ॐ डाकिन्यै नमः।** ईशाने - **ॐ राकिन्यै नमः।** नैर्ऋतिकोणे -**ॐ**
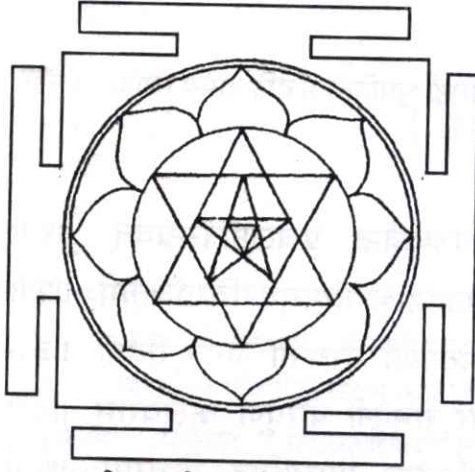
॥ श्री वाराही (वार्ताली) यन्त्रम् ॥

लाकिन्यै नमः। वायवे- **ॐ काकिन्यै नमः**। अग्रे-**ॐ शाकिन्यै नमः**। दिक्षु- ॐ हाकिन्यै नमः। षट्कोणे दक्षिणे पार्श्वे - **ॐ स्तंभिन्यै दक्षहस्तेन वरधरायै वामकरेण मुशलधरायै नमः**। षट्कोणे वामपार्श्वे - **ॐ क्रोधिन्यै दक्षहस्तेन कपालधारिण्यै नमः**। षट्कोणग्रे - देवीसुतं चण्डं पूजयेत्। तद्यथा- **शूलं नागं च डमरुं कपालं दधतं करैः। इन्द्रनीलनिभं नग्नं जटाभारविराजितम्॥ ॐ देवीसुताय चण्डाय नमः॥**

चतुर्थावरणम् - (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण -**ॐ वार्ताल्यै नमः। ॐ वार्ताल्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ अंधिन्यै नमः। ॐ रुंधिन्यै नमः। ॐ वाराहमुख्यै नमः। ॐ वाराहमुख्यै नमः।**

पुनः ब्राह्म्यादि अष्ट मातृकेभ्यो नमः। अष्टमहिषेभ्यो नमः दलाग्रे।

पंचमावरणम् - (शतपत्र कल्पयेत्) **वीरभद्रादयादि एकादश रुद्रा देवता, धात्रादि द्वादश अर्क, अष्टवसुदेवता, दस्त्र एवं नासत्य इन दो अश्वनीकुमारों का कुल ३३ देवताओं का ९९ पत्रों में एक एक का तीन तीन बार पूजन करे। अंतिम पत्र में '' ॐ जंभिनीस्तंभिनीभ्यां नमः '' पूजन करे। शतकोण के अग्रभाग में- ॐ सिंहाय नमः। ॐ महिषाय नमः।**

षष्ठमावरणम् - (सहस्त्रपत्र कल्पयेत्) **क्रौं वाराह्यै नमः**। इस मंत्र से हजार बार सहस्त्रपत्र में पूजन करें।

सप्तमावरणम् - (भूपुरे) पूर्वे-**ॐ वं बटुकाय नमः**। दक्षिणे- **ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः**। पश्चिमे- **ॐ यां योगिनीभ्यो नमः**। उत्तरे- **ॐ गं गणपतये नमः**।

अष्टमावरणम् - (भूपुरे) इन्द्रादि दशदिक्पालों व उनके आयुधों का पूजन करे। इसके बाद वटुकादि को बलि प्रदान करे।

बटुकबलि- ॐ एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। अंगुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर मुद्रा प्रदर्शन करे।

क्षेत्रपाल बलि- ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षै क्षौं क्षः हुं स्थाने क्षेत्रपालेश सर्वकामं पूरय स्वाहा। अंगुष्ठ अनामिका मिलाकर बलिमुद्रा दिखावें।

योगिनी बलि- उर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा पाताले वाऽनले व सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलि विधिना पांतु वीरेन्द्रवंद्याः। यां योगिनीभ्यः स्वाहा। अनामिका मध्यमा एवं अंगुष्ठ के संयोग से बलिमुद्रा दिखावे।

गणेश बलि- ॐ गां गीं गं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। मध्यमा को कुछ वक्री करके बलिमुद्रा दिखावे।

सर्वोपचार से देवी पूजन कर जप करे। १७००० जप का पुरश्चरण करे। तिल, बंधूकपुष्प, गुलदुपहरिया, घृत, मधु

शर्करा से दशांश होम करे। अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिये हल्दी चंदन, लाह, अगर, गुग्गल और विविध मांसों से होम करना चाहिये। स्तंभन कार्य में हल्दी की माला से जप करे, शांतिक एवं पौष्टिक कर्मों में स्फटिक, कमलगट्टा अथवा रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करे अभाव में लालचंदन की माला का प्रयोग करे। कामनापूर्ति के लिये स्वर्णादि पात्रों से बन्धूकपुष्प (गुलदुपहरिया के पुष्प) तिलों से युक्त सुरा द्वारा वाराही का तर्पण करे। स्तंभन की इच्छा से साधक तमालपुष्पों की ४०० आहुतियां दे। लावा के चूर्ण में तिल, गर्दभ एवं भेड़ का रक्त मिलाकर एक सुन्दरपिण्ड बनाये फिर उसी पिण्ड का विधिवत् पूजन एवं तर्पण भी करे फिर उसी पिण्ड को मानसिक संकल्प द्वारा अपने शत्रु का सारा घर समर्पित करे। तदनन्तर उस पिण्ड को कुण्ड में रखकर २१ रात्रि पर्यन्त रक्तमिश्रित लाजाओं से १०,००० आहुतियां देनी चाहिये। ऐसा करने से योगनियां उस शत्रु के समूह को खा जाती है।

॥ अथ वार्ताली प्रयोग:॥

वाराही वार्ताली (अश्वारूढ़ा) मन्त्र - ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा।

ये सभी कालनित्यायें है।

मूर्ति कल्पनम् - ऐं ग्लौं लूं षां ईं वाराहमूर्तये ठः ठः ठः ठः हुं फट् ग्लौं ऐं। इतिमूर्तिकरिण्या विद्ययाचक्रे देव्या मूर्ति संकल्प्य।

॥ ध्यानम् ॥

पाथोरुहपीठगतां पाथोधरमेचकां कुटिलदंष्ट्राम् । कपिलाक्षित्रितयां घनकुचकुम्भां प्रणतवांछित वदान्याम् ॥
दक्षोर्ध्वतोऽरिखड्गौ मुसलमभीतिं तदन्यतस्तद्वत् । शङ्खं खेटहलवरान् करैर्दधानां स्मरामि वार्तालीम् ॥

यन्त्र रचना - त्रिकोण, पंचकोण, षट्कोण, अष्टदल, ३८ दल एवं भुपूर बनायें।
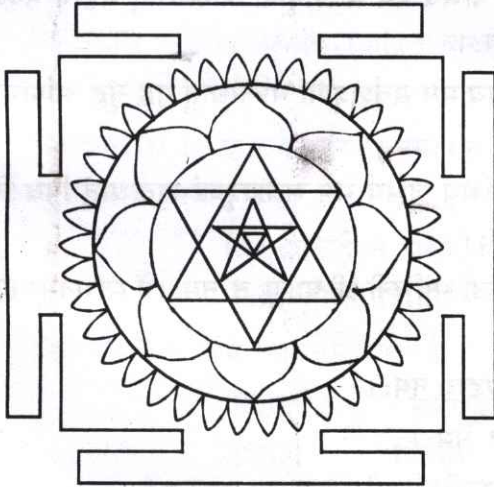
॥ श्री वार्ताली यन्त्रम् ॥

मध्य में देवी का पूजन करें।

दिव्यौघादि गुरुओं का पूजन करें।

त्रिकोण की तीनों रेखाओं में दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरुओं का पूजन करें।

दिव्यौघ गुरु - ऐं ग्लौं सभी नाम मन्त्रों के साथ कहें तथा नाम के साथ **नाथ** लगावें एवं एक-एक पादुका पूजन करें।

ऐं ग्लौं परप्रकाशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। परमेशानन्द, परशिवानन्द, (परसिद्धानन्द) कामेश्वर्यम्बानन्द, मोक्षानन्द, कामानन्द, अमृतानन्दनाथ का पूजन करें।

सिद्धौघ गुरु - ऐं ग्लौं ईशानान्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। तत्पुरुषानन्द, अघोरानन्द, वामदेवानन्द सद्योजातानन्द का पादुका पूजन करें।

मानवौघ गुरु - ऐं ग्लौं पञ्चोत्तरानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। परमानन्द, सर्वज्ञानन्द,

सिद्धानन्द, गोविन्दानन्द, शङ्करानन्दनाथ का पादुका पूजन करें।

॥ आवरण पूजनम् ॥

प्रथमावरणम् – (त्रिकोणे) **ऐं ग्लौं जम्भिनी श्री पा. पू. त. नमः। ऐं ग्लौं मोहिनी श्री पा. पू. त. नमः। ऐं ग्लौं स्तंभिनी श्री पा. पू. त. नमः।**

द्वितीयावरणम् – (पञ्चकोणे) **ऐं ग्लौं अंधिनी श्री पा. पू. त. नमः। ऐं ग्लौं रुंधिनी श्री पा. पू. त. नमः। ऐं ग्लौं जंभिनी श्री पा. पू. त. नमः। ऐं ग्लौं मोहिनी श्री पा. पू. त. नमः। ऐं ग्लौं स्तंभिनी श्री पा. पू. त. नमः।**

तृतीयावरणम् – (षट्कोण मूले) **ऐं ग्लौं आ क्षा ई ब्राह्मी श्री पा. पू. त. नमः। ई ला ई माहेश्वरीश्री पा. पू. त. नमः। ऊ हा ई कौमारी श्री पा. पू. त. नमः। ऋ सा ई वैष्णवी श्री पा. पू. त. नमः। ऐ शा ई इन्द्राणी श्री पा. पू. त. नमः। औ वा ई चामुण्डा श्री पा. पू. त. नमः।**

चतुर्थावरणम् – (षट्कोणाग्रे) **ऐं ग्लौं य म व र यू यां यीं यूं यै यौं यः याकिनी जंभय जंभय ममशत्रूणां त्वग्धातु गृह्ण गृह्ण अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा। याकिनी श्री पा. पू. त. नमः।**

ऐं ग्लौं र म र यूं रां रीं रूं रैं रौं रः राकिनी जंभय जंभय मम सर्वशत्रूणां रक्तधातुं पिब पिब अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा। राकिनी श्री पा. पू. त. नमः।

ऐं ग्लौं ल म र यूं लां लीं लूं लैं लौ लः लाकिनी जंभय जंभय मम सर्वशत्रूणां मांसधातुं भक्षय भक्षय अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा। लाकिनी श्री पा. पू. त. नमः।

ऐं ग्लौं ड म र यूं डां डीं डूं डैं डौं डः डाकिनी जंभय जंभय मम सर्वशत्रूणां मेदोधातुं ग्रस ग्रस अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा। डाकिनी श्री पा. पू. त. नमः।

ऐं ग्लौं क म र यूं कां कीं कूं कैं कौं कः काकिनी जंभय जंभय मम सर्वशत्रूणां अस्थिधातुं भञ्जय भञ्जय अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा। काकिनी श्री पा. पू. त. नमः।

ऐं ग्लौं स म र यूं सां सीं सूं सैं सौं सः साकिनी जंभय जंभय मम सर्वशत्रूणां मज्जाधातुं गृह्ण गृह्ण अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा। साकिनी श्री पा. पू. त. नमः।

(मध्ये) **ऐं ग्लौं ह म र यूं हां हीं हूं हैं हौं हः हाकिनी जंभय जंभय मम सर्वशत्रूणां शुक्रधातुं पिव पिव अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा। हाकिनी।श्री पा. पू. त. नमः।**

षट्कोणस्य पार्श्वे – **ऐं ग्लौं क्रोधिनी श्री पा. पू. त. नमः। ऐं ग्लौं स्तंभिनी श्री पा. पू. त. नमः। ऐं स्तंभनमुसलाय नमः। ऐं ग्लौं आकर्षण हलायुधाय नमः।**

षट्कोणस्य बहिः देव्याः पुरत – **ऐं ग्लौं क्षौं क्रौं चण्डोच्चण्डाय नमः।**

पंचमारणम् – (अष्टदले) **ऐं ग्लौं वार्ताली श्री पा. पू. त. नमः।**

वाराही, वराहमुखी, अंधिनी, रुंधिनी, जंभिनी, मोहिनी, स्तंभिनी की पादुका का पूजन करें।

तद्वहि पुरतो देव्याः – **ऐं ग्लौं महामहिषाय देवि वाहनाय नमः।**

षष्ठमावरणम् – (३८ दले) **ऐं ग्लौं जंभिन्यै श्री पा. पू. त. नमः।**

इन्द्राय, अप्सोभ्य, सिद्धेभ्य, द्वादशादितेभ्य, अग्नये, साध्येभ्यः, विश्वेभ्यो देवेभ्य, विश्वकर्मणे, यमाय, मातृभ्यः,

रुद्रपरिचारकेभ्य, रुद्रेभ्य, मोहिन्यै, निर्ऋतये, राक्षसेभ्य, मित्रेभ्य, गंधर्वेभ्य, भूतगणेभ्य, वरुणाय, वसुभ्य, विद्याधरेभ्य, किन्नरेभ्य, वायवे, स्तंभिन्यै, चित्ररथाय, तुम्बुरवे, नारदाय, यक्षेभ्य, सोमाय, कुबेराय, देवेभ्य, विष्णवे, ईशानाय, ब्रह्मणे, अश्विभ्यां, धन्वन्तरये, विनायकेभ्यो श्री पा. पू. त. नमः।

तद्वहि – **ऐं ग्लौं रौं क्षौं क्षेत्रपालाय नमः। सिंहवराय देविवाहनाय नमः।**

तद्वहि – **ऐं ग्लौं महाकृष्णाय मृगराजाय देवि वाहनाय नमः।**

सप्तमावरणम् – (भुपूर) सहस्रारे अष्टधा विभक्ते, प्रतिपंचविंशत्पुत्तरशत दलं प्राग्वत् क्रमेण –

ऐं ग्लौं ऐरावताय पा. पू. त. नमः। पुण्डरीकाय, वामनाय, कुमुदाय, अंजनाय, पुष्पदंताय, सार्वभौमाय, सुप्रतीकाय पा. पू. त. नमः।

पुनः बाह्यप्राकारस्याष्टासु प्रागाद्यासुदिक्ष अधः उर्ध्व च क्रमेण प्राग्वत् –

ऐं ग्लौं क्षौं हेतुक भैरवक्षेत्रपालाय नमः।हेतुक भैरव पा. पू. त. नमः। त्रिपुरान्तक भैरव, अग्निभैरव, यमजिह्वभैरव, एकपादभैरव, कालभैरव, कराल भैरव, भीमभैरव, हाटकेशभैरव, अचलभैरव पा. पू. त. नमः।

अष्टमावरणम् – भुपूर में **इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा, अनन्त आदि लोकपालों का** व उनके **आयुधों** का पूजन करें।

पूजन, जप, हवन, बलिकर्म आदि करें।

एक लाख जप करें, मधूक पुष्प होम करें। देवी स्वप्न में मन चिंतित वार्ता कहे।

॥ अथ शत्रुघातिनी निग्रहवाराही मन्त्रः॥

अष्टाक्षरी मन्त्र – ऐं ग्लौं ठं ठं ठं हूं स्वाहा।

विनियोग :– ॐ अस्य श्रीशत्रुघातिनः वाराही मंत्रस्य कपिल ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, वाराहीवार्त्ताली देवताऽत्मनो अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास :– ऐं ग्लौं हृदयाय नमः। ठं शिरसे स्वाहा। ठं शिखायै वषट्। ठं कवचाय हुं। हूं नेत्रत्रयाय **वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

विद्युद्रोचिर्हस्त पद्मैर्दधाना पाशं शक्तिं मुदगरं चाङ्कुशं च ।
नेत्रोद्भूतैर्वीतिहोत्रैस्त्रिनेत्रा वाराही नः शत्रुवर्ग क्षिणोतु ॥१॥

विद्यार्णवतंत्र में अन्य ध्यान इस प्रकार है–

विद्युद्दाम समानाङ्गीं पाशं शक्तिं च मुद्गरम् ।
अंकुशं बिभ्रतीं दोर्भिर्नेत्र त्रयविराजिताम् ।
नानालङ्कार भूषाङ्गीं वाराहीं संस्मरेत्तदा ॥

यंत्र पूजा हेतु षट्कोण उसके बाहर वृत पश्चात् भूपुर बनाये। यंत्र मध्य में पूर्व यंत्र पूजा की तरह नौ पीठ शक्तियों का पूजन कर मध्य में देवी का ध्यान करे। षट्कोण में हृदयादि न्यास शक्तियों की पूजा करे। भूपुर में इन्द्रादि लोकपालों का एवं उनके आयुधों का पूजन करे।
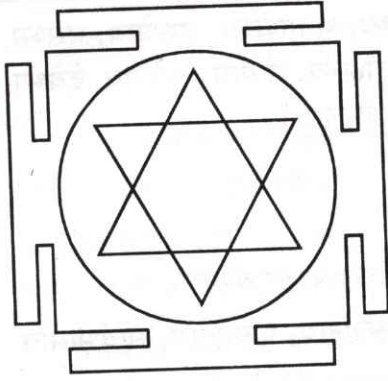
॥ श्री निग्रहवाराही यन्त्रम् ॥

८ लक्ष जप कर मंत्र सिद्ध करे। इसके बाद शत्रुनाश हेतु जप करे। अंकुश से शत्रु को पकड़कर उसे पाश से बांधकर गदा से शत्रु के शिरपर प्रहार करती हुई वार्त्ताली का ध्यान करे। १० हजार जप करे।

इस प्रकार जप करने के पश्चात् वन में सूखे कण्डों से १० हजार बार होम करे। उस भस्म कुओं आदि में डाल देवे। इस प्रकार के पानी को पीने वाले शत्रु निश्चित रूप से मर जाते है अथवा आपस में लड़ झगड़ कर स्थान छोड़कर चले जाते हैं।

॥ अथ धूम्रवाराही प्रयोग:॥

चतुर्विंशाक्षर मंत्र– ॐ धूं धूं मृत्युधूमे धूं धूं कालधूमे धूं धूं धूम्रवाराहि हूं फट् स्वाहा। (कालमृत्यु तंत्रे)

विनियोग:– ॐ अस्य श्री धूम्रवाराहि मंत्रस्य कालमृत्यु ऋषिः वृहती छंदः धूम्रवाराही देवता धूं बीजं हूं शक्तिः ॐ कीलकं शत्रुमारणे विनियोगः।

शापोद्धार में मंत्र पंचविंशति वर्ण का लिखा है परन्तु मन्त्र २४ अक्षर ही बनता है। न्यास विधि के अनुसार धूं धूं धूं धूम्रवाराहि होने से २५ अक्षर मंत्र बनता है।

यथा– **सप्तभिश्च पुनः षड्भिर्द्वाभ्यां वेदैर्द्विका (द्वाभ्यांत्रिका) ब्धिभिः। न्यासं चैवानुलोमेन विलोमेन पुनर्न्यसेत्॥**

षडङ्गन्यास – ॐ धूं धूं मृत्युधूमे हृदयाय नमः। धूं धूं कालधूमे शिरसे स्वाहा। धूं धूं धूम्रवाराहि शिखायै वषट्। धूं धूं धूम्र वाराहि कवचाय हुं। धूं धूं कालधूमे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ धूं धूं मृत्युधूमे अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

वाराही धूम्रवर्णा च भक्षयन्ती रिपून् सदा।
पशुरूपान् मुनिसुरैर्वन्दितां धूम्ररूपिणीम्॥

॥ यन्त्र पूजनम्॥

यन्त्र रचना – बिन्दु त्रिकोण षट्कोण अष्टदल के बाद तीन वीथिका बनाये उनके बाहर अष्टवज्र के बाद भूपुर (दो रेखा वाला) बनाये। सुविधा के लिये वार्ताली स्तंभन यंत्र देखे।

बिन्दु त्रिकोणं षट्कोणमष्टपत्रं कुलेश्वरि। वृत्तं च भूपुरद्वन्द्वमष्टवज्र समन्वितम्॥

बिन्दु मध्य में **धूं** बीज लिखे उसके बाहर ''**ग्लौं**'' चारों ओर लिखे पुनः **धूं** कार से वेष्टन करे। त्रिकोण में वाराही **वाराही ३** बार लिखे। षट्कोण में ''**धूं धूम्रवाराही**'' के षडक्षर लिखे। कोणों में **धूं** कार लिखे।

अष्टदल में वाराही का अष्टाक्षर मंत्र ''**ऐं ग्लौं ठं ठं ठं हूं स्वाहा**'' के एक एक वर्ण लिखे। अष्टदल के केसर भाग (नीचे) **अं आं, इं ईं, उं ऊं, अं अः**, दो दो करके १६ स्वर लिखे। पहले वृत्त में **धूम्रवाराहि का मंत्र** लिखे, दूसरे वृत्त में **अस्त्रवाराही** का मंत्र (आगे ध्यानपूर्वक दिया गया है)लिखे। तीसरे वृत्त में **प्राणप्रतिष्ठा मंत्र (आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं प्राणाः इह प्राणाः)**
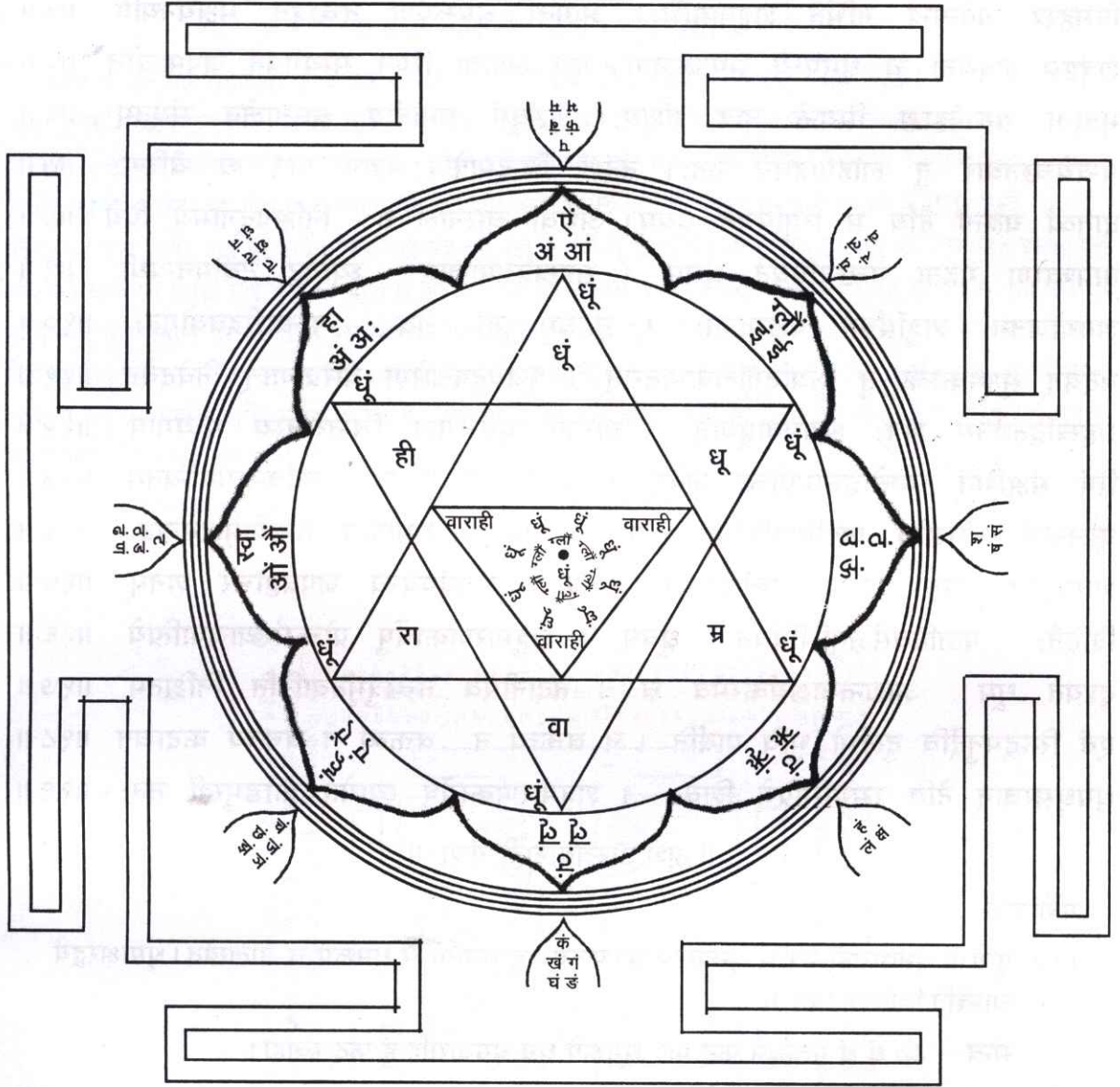
॥ श्री धूम्रवाराही यन्त्रम् ॥

यथा – **तृतीयवृते विलिखेत् प्राणस्थापनग मनुम्।** उनके बाहर अष्टवज्र (विलोम अष्टदलपत्र) के प्रत्येक दल में **क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग, य वर्ग, श ष स ह, लं क्षं** लिखे। इस यंत्र की प्रयोग विधि वर्त्तांली स्तंभन यंत्र के समान हैं।

हुनेज्जपदशांशं तु त्रिमध्वक्तगुडौदनैः। अथवा जुहुयाद् देवि मधूककुसुमेन च ॥१॥
तर्पणं तद्दशांशेन व्राह्मणान् भोजयेत्प्रिये। एवं चानुष्ठितो मन्त्रो मन्त्रिणः सिद्धिमाप्नुयात् ॥२॥
पुनः प्रयोगमतुलं कृत्वा शत्रून् निवारयेत्। पूर्वोक्तविधिना ध्यात्वा वाराहीं धूम्ररूपिणीम् ॥३॥

त्रिसहस्त्रं जपेन्मन्त्रं गर्भितं शत्रुनामभिः। आगत्य धूम्ररूपेण तच्छत्रून् भक्षयन्त्यपि ॥४॥
शत्रूंश्च शत्रुसेनां च धूममध्ये समाकुलाम। एवं ध्यात्वा रिपून् सम्यगयुतं जपमाचरेत् ॥५॥
मृत्युना ग्रस्तदेहाश्च म्रियन्ते नात्र संशयः। गृहधूमं समानीय चारनालेन संयुतम् ॥६॥
मन्त्रयेच्छतवारं तु लोहपात्रमये ततः। तदंशं बिन्दुमात्रेण खाने पाने च वैरिणः ॥७॥
दातव्यं यत्नतो देवि स रिपुर्म्रियते ध्रुवम्। अथवा चारनालं तु निक्षिपेद्गोमये प्रिये ॥८॥
तापज्वरेण महता तच्छत्रुम्रियते ध्रुवम् । सहस्त्रत्रयमाजप्य ध्यायेद् देवीमनन्यधीः ॥९॥
शतयोजनगः शत्रुर्म्रियते पक्षमात्रतः । गृहधूमं गरं चैव गान्धारीद्रवयोगतः ॥१०॥
मर्दयेत् सूक्ष्मकल्कं तु कुर्याद्गुलिकमादरात् । पूजयेदुपचारेण वैरिप्राणान् निवेदयेत् ॥११॥
सहस्त्रद्वितयेनैव शत्रुः क्षयमवाप्नुयात् । वाराहीं धूम्ररूपेण चिन्तयेत्तस्य मध्यगाम् ॥१२॥
रिपुं संक्षुभितं ध्यायेन्नित्यमष्टोत्तरं जपेत् । मण्डलाद्वैरिवर्गं च भार्याबन्धुसमन्वितम् ॥१३॥
कुलक्षयं नयेच्छीघ्रं पशुमित्रादिभिः सह । यक्षधूपं समानीय मन्त्रयेन्मूलमन्त्रतः ॥१४॥
शतमष्टोत्तरं चैव जपित्वा पूर्वमेव च । शनैः शनैर्धूपयेच्च जपन्नष्टोत्तरं शतम् ॥१५॥
त्रिदिनैः पञ्चदिवसैश्चतुर्भिर्म्रियते ध्रुवम् । शत्रुमारणकार्येषु प्रोक्तसंख्याजपात्प्रिये ॥१६॥
दृश्यते धूम आद्यन्तमाश्चर्यकरमेव च । तदानीमेव तच्छत्रुर्मृतवानिति निश्चितम् ॥१७॥
एवं सिद्धमनुर्देवि दुर्लभो भुवि पार्वति । न वक्तव्यं न वक्तव्यं न वक्तव्यं कदाचन ॥१८॥
धूम्रधूसरवान् देवि रसमांसप्रिये शिवे । शत्रुमारणकार्येषु ध्यायेत् क्रोडमुखीं ततः ॥१९॥

॥ अथ अस्त्रवाराही मंत्राः॥

मंत्रोद्धार-

(१) पूर्वोक्त धूम्रवाराही मंत्रे धूं धूमपास्य च। फट्द्वयं तु समायोज्य धूमरूपे च संलिखेत्। धूम्राक्षरद्वयं चास्त्रेति विनियोजयेत् ॥

मन्त्र – ॐ धूं धूं मृत्युधूमे फट् फट् धूमरूपे धूम्र धूम्रवाराहि हुं फट् स्वाहा।

(२) श्री विद्यार्णव तंत्र में उपरोक्त मंत्रोद्धार के बाद उपरोक्त मंत्र के बजाय दूसरा मंत्र दिया है वह भी २४ अक्षर का है।

मन्त्र – ॐ फट् फट् मृत्युरूपे फट् फट् कालरूपे फट् फट् अस्त्रवाराहि हुं फट् स्वाहा। ऋष्यादि सर्वपूर्ववत्।

॥ ध्यान ॥

नमस्ते अस्त्रवाराहि वैरिप्राणापहारिणि । गोकण्ठमिव शार्दूलो गजकंठं यथा हरिः ।
शत्रुरूपपशून् हत्वा आशु मांसं च भक्षय । वाराहि त्वां सदा वन्दे वन्द्ये चास्त्रस्वरूपिणि ॥

॥ अथ वार्ताली स्तंभन यंत्र प्रयोग:॥

चित्र के अनुसार महादेवी का शकट संज्ञक यंत्र की रचना करे। मध्य में साध्य का नाम लिखे। चारों ओर ''**ग्लौं**'' एवं ''**उ**'' से वेष्टन करे। उसके बाहर अष्टवज्र (विलोम पत्रदल) सहित भूपुर बनाये। अष्टवज्र में साध्यनाम एवं उच्चाटन, स्तंभन आदि कर्म का नाम लिखकर वार्ताली मंत्र भूपुर के चारों तरफ लिखे। इस यंत्र को कुलालद्वारा निर्मित नवीन खर्पर कसोरा पर लिखकर कालेपुषों से पूजन करे। खर्पर पात्र पर लिखना असंभव हो कागज, वस्त्र, भोजपत्र लिखकर उसे खर्पर पात्र पर रखें। फिर उस यंत्र को शत्रु के घर में डाल देवे तो निश्चय ही शत्रु का उच्चाटन होवे। इस यंत्र को बाजे पर लिखे एवं युद्ध के बीच में जाकर बाजे को बजाये तो उस शब्द की ध्वनि सुनते ही शत्रुओं का पराभव होने लगेगा। पाषाण पर हल्दी से इस यंत्र को लिखकर पूजा करे पुन: इसे अधोमुख कर पीले फूलों के बीच में डाल देवे तो शत्रु की वाणी का स्तंभन होवे। अग्नि में यदि उस शिला को डाल देवे तो शत्रु को ज्वर चढे। यदि जल में डाल देवे तो शत्रु के कलंक लगे। साध्य व्यक्ति के जन्म नक्षत्र की वृक्ष की लकड़ी के भीतर इस यंत्र को रखने से वह शत्रुओं के लिये दु:ख दायी बन जाता है।

तन्त्र शास्त्र में अलग-अलग नक्षत्र के लिये अलग-अलग वृक्ष लिखा है।
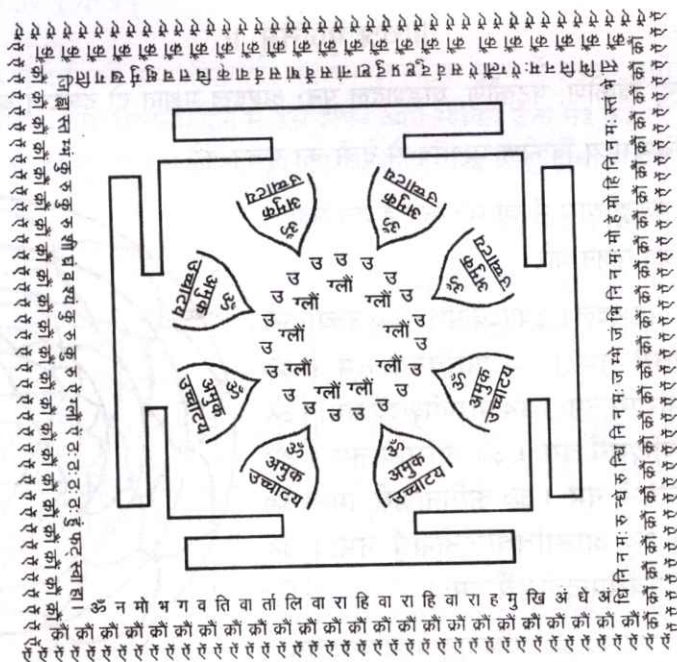
॥ वार्तालीस्तम्भन यन्त्रम् ॥

॥ अथ स्वप्नेश्वरि वाराही मंत्र प्रयोगः॥

१. षोडशाक्षर मंत्र – ॐ ह्रीं नमः वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा।

विनियोग :- ॐ अस्य श्री स्वप्न वाराही मंत्रस्य ईश्वर ऋषिः जगती छन्दः, स्वप्न वाराही देवता ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः ठः ठः कीलकं स्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थ जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास- ॐ ह्रीं हृदयाय नमः। ॐ नमो वाराहि शिरसे स्वाहा। ॐ घोरे शिखायै वषट्। ॐ स्वप्नं कवचाय हुं। ॐ ठः ठः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

वर्णन्यास – ॐ नमः दक्षपादे। ह्रीं नमः वामपादे। नं नमः लिङ्गे। मों नमः दक्षकटौ, वां नमः वामकटौ। रां नमः कंठे। हिं नमः दक्षगण्डे। घों नमः वामगण्डे। रें नमः दक्षनेत्रे। स्वं नमः वामनेत्रे। प्नं नमः दक्षकर्णे। ठः नमः वामकर्णे। ठः नमः दक्षनासायाम्। स्वां नमः वाम नासायाम्। हां नमः मूर्ध्नि।

॥ ध्यानम् ॥

मेघश्यामरुचिं मनोहरकुचां नेत्रत्रयोद्भासितां, कोलास्यां शशिशेखरामचलया दंष्ट्रातले शोभिनीम् ।
बिभ्राणां स्वकराम्बुजैरसिलतां चर्मापि पाशं सृणिं, वाराहीमनुचिन्तयेद्धय वरारूढां शुभालंकृतिम् ॥

इस मंत्र का साधक १ लक्ष जप करे। नीलपद्म मिश्रित तिलों से दशांश होम करे तो वाराही स्वप्न में प्रश्नों का उत्तर देती है तथा शास्त्र विषय में मार्गप्रदर्शन करती है।

॥ यंत्र पूजनम् ॥

यन्त्र रचना – बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, षोडशदल पुनः अष्टदल पश्चात् दो दशदल बनाये। भूपुर नहीं बनाये।

प्रथमावरणम् – बिन्दुमध्य त्रिकोण मूलमंत्र से देवी का पूजन करे।

द्वितीयावरणम् – षडङ्गन्यास में जो मंत्र कहे है उन मंत्रों से हृदयादि न्यास देवताओं का पूजन करे।

तृतीयावरणम् – (षोडशदले) पूर्वादिक्रमेण- ॐ उच्चाटन्यै नमः। ॐ उच्चाटनीश्वर्यै नमः। ॐ शोषिण्यै नमः। ॐ शोषणीश्वर्यै नमः। ॐ मारण्यै नमः। ॐ मारणीश्वर्यै नमः। ॐ भीषण्यै नमः। ॐभीषणीश्वर्यै नमः। ॐ त्रासिन्यै नमः। ॐ त्रासनीश्वर्यै नमः। ॐ कंपिन्यै नमः। ॐ कंपिनीश्वर्यै नमः। ॐ आज्ञाविवर्त्तिन्यै नमः। ॐ आज्ञाविवर्त्तिनीश्वर्यै नमः। ॐ वस्तुजातेश्वर्यै नमः। ॐ सर्वसंपादनीश्वर्यै नमः।

॥ स्वप्नवाराही यन्त्रम् ॥

चतुर्थावरणम् – (अष्टदले) ॐ असिताङ्गब्राह्मीभ्यां नमः। ॐ रुरुमाहेश्वरीभ्यां नमः। ॐ चण्डकौमारीभ्यां नमः। ॐ क्रोध वैष्णवीभ्यां नमः। ॐ उन्मत्तवाराहीभ्यां नमः। ॐ कपालीइन्द्राणीभ्यां नमः। ॐ भीषण चामुण्डाभ्यां नमः। ॐ संहार महालक्ष्मीभ्यां नमः।
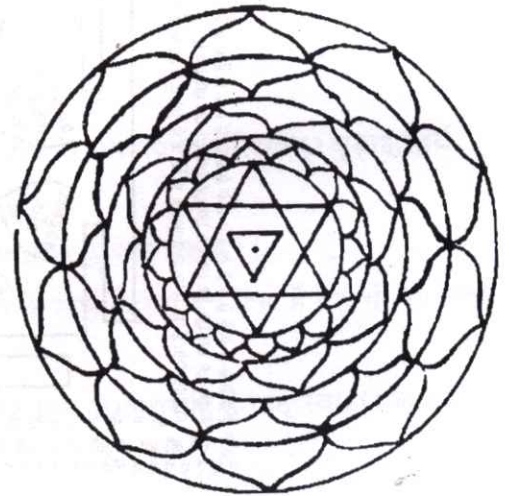
पंचमावरणम् – (दशदले)– पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों का पूजन करे।

षष्ठमावरणम् – (द्वितीय दशदले)दिक्पालों के पास उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करे।

साधक मनोरथ एवं कामना सिद्धि हेतु नारियल के जल अथवा तीर्थोदक से देवी का तर्पण करे, स्त्रियों का सम्मान करे।

॥ प्रयोग ॥
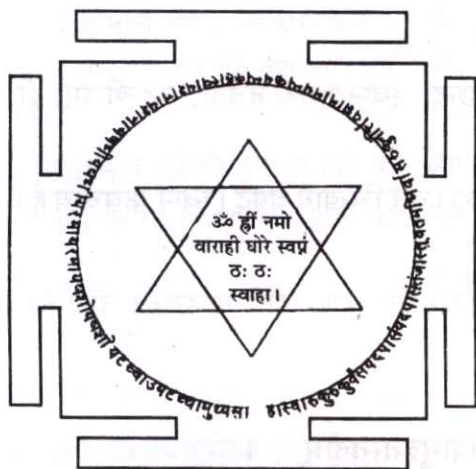
॥ स्वप्नवाराही वशीकरण यन्त्रम् ॥

साधक कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी को व्रत कर चौराहे, नदी के दोनों किनारों से और कुंभकार के घर से मिट्टी लावे। उसमें धतूरे का रस मिलाकर उस मिट्टी से साध्य (जिसको वश में करना होवे) की पुतली बनाये और उसमें प्राणप्रतिष्ठा करे। फिर कफन पर नर, काक और मेष के खून एवं चिता के अङ्गार से त्रिकोण, षट्कोण, भूपुरयुक्त यंत्र बनावें। उसके बीच में स्वप्नवाराही का मंत्र लिखकर उस भूपुर युक्त यंत्र को ७७ अक्षरों वाले मंत्र से वेष्टित करे।

यथा – **साध्य (नाम देवदत्त)उच्चाटय उच्चाटय शोषय शोषय मारय मारय भीषय भीषय नाशय नाशय स्वाहा कंपय कंपय ममाज्ञावर्त्तिनं कुरु सर्वाभिमतवस्तु जातं संपादय संपादय सर्वं कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मंत्र से वेष्टित यंत्र में देवी की प्राणप्रतिष्ठा कर यंत्र को पुत्तली के हृदय में रखकर पूर्वोक्त विधि से आवरण पूजा करें। तदनन्तर रात्रि के समय किसी एकान्तस्थान में उसे अपने आगे रखकर उक्त मंत्र की ११ माला करें। जप के पश्चात् एकाग्रचित्त से पुनः पुत्तली का पूजन करे तो नर एवं नारियां राजा, प्रजा सिंह हाथी मृगादि सभी वशीभूत होवे।
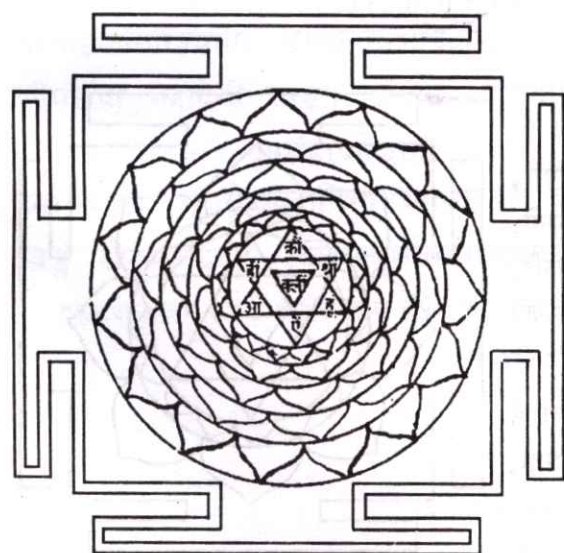
॥ स्वप्नवाराही धारण यंत्रम् ॥

॥ स्वप्नवाराही धारण यन्त्रम् ॥

यन्त्र रचना – त्रिकोण, षट्कोण, षोडशदल अष्टदल फिर दो दशदल पूर्ववत् बनाये। उनके ऊपर पञ्चदशदल बनाकर दो रेखा वाला भूपुर बनाये। त्रिकोण के प्रत्येक कोण में ''**क्लीं ऐं**'' लिखे। षट्कोणों में क्रमशः **ऐं, आं, ह्रीं, क्रौं, श्रीं** एवं ''**हूं**'' लिखे। पूर्व यंत्रार्चन की विधि से अष्टदल पूजन करे।

प्रथम दशदल में– लं इन्द्राय नमः। रं अग्नये नमः। मं यमाय नमः। क्षं नैर्ऋतये नमः। वं वरुणाय नमः। यं वायवे नमः। सं सोमाय नमः। हं ईशानाय नमः। आं ब्रह्मणे नमः। ह्रीं अनंताय नमः।

द्वितीय दशदलों में – उनके आयुधों का पूजन करे।

पञ्चदशदल में – मूलमंत्र के वर्णों को गायत्री वर्णों

के साथ दोनों भूपुर के कोणों में ''यं'' और ''रं'' लिखना चाहिये।

यह यन्त्र होमावशिष्ट संस्रव घृत से भोजपत्रादि पर लिखकर मूलमंत्र का जप कर भुजा आदि में धारण करने से मनुष्यों को कीर्त्ति, धन एवं सुख प्राप्त होता है। निश्चय ही वाराही साधक की मनोकामना पूर्ण करती है।

॥ अथ स्वप्नवाराही मन्त्र प्रयोग:॥

मेरुतन्त्रे मन्त्र – **ॐ ह्रीं नमो वाराही घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा।**

विनियोग – **ॐ अस्य श्री वाराही मन्त्रस्य ईश्वरो मुनिः, जगति छन्दः, स्वप्नवाराही देवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ठः द्वयम् कीलकं, ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।**

षड्ङ्गन्यास – **ॐ ह्रीं हृदयास नमः। ॐ नमो वाराहि शिरसे स्वाहा। घोरे शिखायै वषट्। स्वप्नं कवचाय हुं। ठः ठः नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

वर्णन्यास – मन्त्र के एक एक वर्ण से दोनों पैर, दोनों उरु, दोनों कटिभाग, कण्ठ, दोनों गण्डस्थल, दोनों नेत्र, नासिका के दोनों पुटों में न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेद् घनश्यामां त्रिनेत्रामुन्नतस्तनीम् ।
कोलास्यां चन्द्रभालाञ्च दंष्ट्रोद्धृत वसुन्धराम् ॥
खड्गांकुशौ दक्षिणयोवामयोश्चर्म्मपाशकौ ।
अश्वारूढां च कोलास्यां नानालंकार भूषिताम् ॥

॥ यन्त्र पूजनम् ॥

यन्त्र रचना – त्रिकोण, षट्कोण, षोडशदल पश्चात् अष्टदल एवं भूपुर बनायें।

त्रिकोण में – **वामा, ज्येष्ठा, रौद्री** का पूजन करें।

षट्कोण में – षडङ्ग न्यास के छः मन्त्रों से पूजन करें।

षोडशदल में – **उच्चाटनी, उच्चाटनीश्वरी, शोषिणी, शोषणीश्वरी, मारणी, मारणीशी, भीषणी, भीषणीशी, त्रासिनी, त्रासनीशी, कंपिनी, कंपनीश्वरी, आशाविवर्तिनी, आशाविवर्तिनीश्वरी, वास्तुजातेश्वरी** एवं **सर्वसम्यादिनीश्वरी** का पूजन करें।।

अष्टदल में – **ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं** का पूजन दल में केसरों में करें। यथा – **ब्राह्मी, वैष्णवी, कौमारी, माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, चामुण्डा, महाकाली।**

दल के मध्य भाग में **असिताङ्ग** आदि अष्ट भैरवों का पूजन करें।
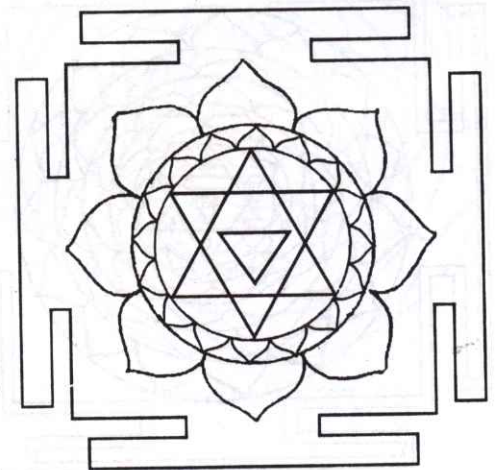
॥ श्री स्वप्नवाराही यन्त्रम् ॥

यथा – **असिताङ्ग भैरव, रुरुभैरव, चण्डभैरव, क्रोधभैरव, कपालिभैरव, उन्मत्तभैरव, भीषणभैरव, संहारभैरव।**

कर्णिका में अष्टकन्या का पूजन करें – अग्निपुराणे – **तालुजिह्वा, रक्ताक्षी, विद्युज्जिह्वा, करङ्किणी, मेघनादा, प्रचण्डोग्रा, कालकर्णी** एवं **कलिप्रिया।**

भूपुर में – **इन्द्रादि लोकपालों** व उनके **आयुधों** का पूजन करें। यथा –

ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ नैर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ पूर्व ईशान मध्ये – ब्रह्मणे नमः। ॐ नैर्ऋत पश्चिम मध्ये – अनंताय नमः।

मधुत्रय व करवीर पुष्प से होम करें, स्वप्न में उत्तर देवें। नीले पुष्प से होम करें विघ्न एवं शत्रुनाश होवे।

धतूरे के रस में शत्रु की पुतली का लेपन कर गाड़ देवें उच्चाटन होवे।

॥ अथ अश्वारूढा स्वप्न वाराही मन्त्राः॥

२. अष्टादशाक्षर मंत्र – **ॐ ह्रीं नमो वाराहि अघोरेश्वरि स्वप्नं ठ ठ स्वाहा।**

विनियोग – **अस्य मंत्रस्य ईश्वरऋषि** गायत्री छंदः **श्रीस्वप्नवाराही देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्तिं ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोग।**

३. पंचदशाक्षरी मंत्र– नमो वाराहि अघोरेश्वरि स्वप्नं ठ ठ स्वाहा।

षडङ्गन्यास– **ॐ ह्रीं हृदयाय नमः। नमो शिरसे स्वाहा। वाराही शिखायै वषट्। अघोरेश्वरि कवचाय हुं। स्वप्नं ठ ठ नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

वर्णन्यास– पंचदशाक्षरी मंत्र के एक एक वर्ण से पादद्वाय, जानुद्वय, कटिद्वय, कंठगण्डद्वय अक्षिद्वय, श्रुतिद्वय, नासिकाद्वय एवं मस्तक पर न्यास करे।

नीलाञ्जनगिरिश्यामां हेमरत्नविभूषिताम् । अश्वारूढां च वाराहीं पाशांकुशधरां शुभाम्॥
भीमरूपा महादेवीं खड्गं खेटक धारिणीम् । चतुर्भुजां तीक्ष्णदंष्ट्रां दंष्ट्राग्रस्थ वसुन्धराम्॥
दुष्टसंहरणोद्युक्तां साधकस्य वरप्रदाम्.....।
ध्यायेदञ्जन भूधरोज्ज्वलनिभामश्वाधिरूढां करै बिभ्राणां मणिहेमभूषिततनुं पाशांकुशौ भैरवीम् ।
खड्गं खेटकमग्रदंष्ट्र विलसत्पृथ्वीमरिध्वंसिनीं देवीं तुङ्गपयोधरामनुदिनं श्री स्वप्नवाराहिकाम् ॥

दशहजार जप करके दशांश होम करे। नारिकेल जल या तीर्थोदक से तर्पण करे।

॥ इति स्वप्न वाराही प्रयोग॥

॥ अथ मातङ्गि तन्त्रम् ॥

॥ अथ सुमुखी (मातंगी) मंत्र प्रयोगः॥

मंत्रा – १. **उच्छिष्ट चाण्डालिनि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः।**

२. **ऐं क्लीं उच्छिष्टचण्डालिनि समुखीदेवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा।** (दे. रह)

उत्कीलन – **ऐं ह्रीं समुख्यै नमः।**

विनियोग :- **अस्य सुमुखी मंत्रस्य भैरव ऋषिः गायत्री छंदः श्रीसुमुखीदेवता आत्मनोऽभीष्ट सिद्धये। सुमुखीमंत्र जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास – **ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनि हृदयाय नमः। ॐ सुमुखि शिरसे स्वाहा। ॐ देवि शिखायै वषट्। ॐ महापिशाचिनि कवचाय हुम्। ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ठः ठः ठः अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

गुंजानिर्मितहार भूषितकुचां सद्यौवनोल्लासिनीं, हस्ताभ्यां नृकपालखड्गलतिके रम्ये मुद्रा बिभ्रतीम् । रक्तालंकृति वस्त्रलेपन लसद्देहप्रभां ध्यायतां, नृणां श्रीसुमुखीं शवासनगतां स्युः सर्वदा सम्पदः ॥

॥ यंत्रार्चन॥

यन्त्र रचना – पंचकोण की कर्णिका, फिर अष्टदल उसके ऊपर षोडशदल पश्चात् चारद्वार युक्त भूपुर बनाये। पहले भद्रमण्डल पर यंत्र की नवपीठ शक्तियों का पूजन करे-

ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्ध्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः। ॐ मङ्गलायै नमः।

॥ श्री सुमुखी यन्त्रम् ॥

गुरुमण्डल पूजन – (दिव्यौघ) **परमप्रकाशानन्द नाथ, परमेशानन्द, परशिवानन्द, कमिश्वर्याम्बा, मोक्षानन्द, कामानन्द, अमृतानन्द।**

(सिद्धौघ) **ईशानानन्दनाथ, तत्पुरुषानन्द, अघोरानन्द, सद्योतानन्दनाथ।**

(मानवौघ) **परमानन्द, सर्वज्ञानन्द, सर्वानन्द, सिद्धानन्द, गोविन्दानन्द, शङ्करानन्द।**

प्रथमावरणम् – (पंचकोणे) पीठशक्तियों की पूजन बाद ध्यान पूर्वक देवी का आवाहन करे। कर्णिका (मूल)

****
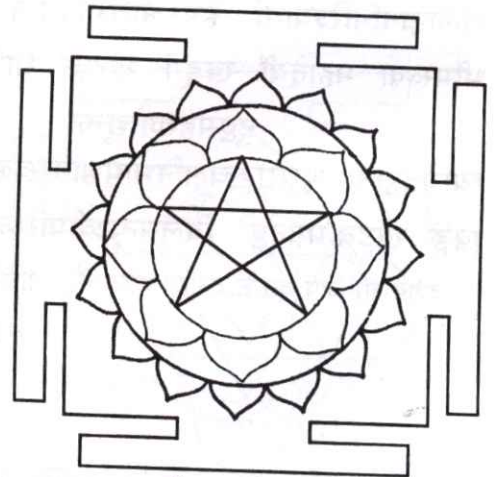
के पांच कोणों में - **ॐ चन्द्रायै नमः। ॐ चन्द्राननायै नमः। ॐ चारुमुख्यै नमः। ॐ चामीकरप्रभायै नमः। ॐ चतुरायै नमः।**

देवी के दक्ष व वाम भाग में **रति** तथा **प्रीति** का तथा सम्मुख में **मनोभवा** का पूजन करें। पञ्चकोण में **द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः** द्रावण शीषण बन्धन मोहन एवं उन्मादय बाणों की पूजा करें।

सभी आवरण पूजा के पश्चात् पुष्पांजलि देकर कहे।

अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्तया समर्पये तुभ्यं अमुकावरणार्चनम् ॥

द्वितीयावरणम् - कर्णिका में देवी के षडङ्गों का पूजन करे। **ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनि हृदयाय नमः आग्नेये। ॐ सुमुखि शिरसे स्वाहा ईशाने। ॐ देवि शिखायै वषट् नैर्ऋत्ये। ॐ महापिशाचिनि कवचाय हुं वायव्ये। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् देव्यग्रे। ॐ ठः ठः ठः अस्त्राय फट् चतुर्दिक्षु।**

तृतीयावरणम् - (अष्टदले) **ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ नारायण्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ अपराजितायै नमः (माहेन्द्री)। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः (चण्डिकायै)।**

चतुर्थावरणम् - (षोडश दले) - **ॐ कलायै नमः। ॐ कलानिधये नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कमलायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ कृपाय नमः। ॐ कुलायै नमः। ॐ कुलीनायै नमः। ॐ कल्याण्यै नमः। ॐ कुमार्यै नमः। ॐ कलभाषिण्यै नमः। ॐ करालायै नमः। ॐ किशोर्य्यै नमः। ॐ कोमलायै नमः। ॐ कुलभूषणायै नमः। ॐ कल्पदायै नमः।**

पंचमावरणम् - (भूपुरे) **पूर्वे इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनंताय नमः।**

षष्ठमावरणम् - (भूपुरे) **पूर्वे ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

सर्वोपचार गंधादि द्वारा देवी का पूजन कर मंत्र का पुरश्चरण करे।

श्यामा सर्पयां विशेष - अष्टदल में लक्ष्मी, सरस्वती, रति, प्रीति, कीर्ति, शान्ति, पुष्टि, तुष्टि का पूजन व दलाग्र में असितांग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाल, भीषण व संहार भैरव का पूजन करें।

षोडश दल में - वामा, ज्येष्ठा, रौद्री, शान्ति, श्रद्धा, सरस्वती, क्रियाशक्ति, लक्ष्मी, सृष्टि मोहिनी, प्रमथिनी, आश्वासिनी, विचि, विद्युन्मालिनि, सुरानन्दा, नागबुद्धि का पूजन करें। चतुर्दल में मातंगी, सिद्धलक्ष्मी, महामातंगी, महासिद्धलक्ष्मी का पूजन करें। चतुरस्त्र के चार कोनों में गणेश, दुर्गा, वटुक क्षेत्रपाल का पूजन करें।

॥ प्रयोग विधानम् ॥

वाममार्ग की उपासना से देवी शीघ्र प्रसन्न होती है। इनके मंत्र का जप भोजन के बाद उच्छिष्ट मुँह से ही करना चाहिये जिससे अभीष्ट की सिद्धि होवे। इस विद्या के जप मात्र से सभी मनोरथ सिद्ध होते है। जप के अनंतर उसी उच्छिष्ट भात की बलि देनी चाहिये। जो व्यक्ति भात में दही मिलाकर १ लाख आहुति देता है राजा, राजमंत्री तत्काल उसके वश में हो जाते है। मार्जार के मांस से होम करने से सभी विद्याओं में पारंगत हो जाता है। छाग मांस के होम

से धनवृद्धि पायस होम से विद्या प्राप्त होती है। रजस्वला स्त्री के वस्त्र के टुकड़ों को मधु एवं पायस में मिलाकर होम करने से जनसमुह को वश में कर लेता है। मधु घी तथा पान के होम से श्रीवृद्धि होती है। तत्काल मारे गये मार्जार के मांस में मधु, घी तथा अन्त्यज के केश मिलाकर होम करने से स्त्री आकर्षित होती है। मधुमिश्रित खरगोश के मांस के होम से विद्या के साथ उक्त फल की प्राप्ति होती है।

धत्तूरे की लकड़ी से प्रज्ज्वलित चिता की अग्नि में कोकिल एवं काक के पंखों का होम करने से साधक अपने शत्रु को तत्काल वश में कर लेता है। काक एवं उलूक के पंखों को मिश्रित कर होम करने से शत्रुओं में विद्वेषण होता है। उलूक पंखों के होम से गर्भिणी का गर्भ गिर जाता है। घी मिश्रित बिल्वपत्रों द्वारा एक मास तक प्रतिदिन एक हजार होम करने से वन्ध्यास्त्री को भी पुत्र की प्राप्ति होती है। मधुमिश्रित बन्धूक के नवीन पुष्पों के होम से भाग्यहीन स्त्री भी सौभाग्यवती हो जाती है। निर्जनस्थान, उजाड़घर, वन, श्मशान एवं चौराहे पर बलि समर्पित कर जूठे मुंह १००८ बार इस मंत्र का जप करने से सुमुखी शीघ्र प्रसन्न होकर साधक पर कृपा कर अभीष्ट की पूर्ति करती है। ॥

॥ अथ श्यामा मातंगी प्रयोगः॥

अमृतसमुद्र में मणिद्वीप की कल्पना करें। वहां कल्पवृक्ष के नीचे मणियुक्त यागमंदिर में रत्नसिंहासन पर विराजमान मातङ्गी की कल्पना करें। वहां दोनों पार्श्वो में पूजा करें -

ऐं क्लीं सौः सां सरस्वत्यै नमः। ऐं क्लीं सौः लां लक्ष्म्यै नमः। पुनः शं शंखनिधये नमः। पं पद्मनिधये नमः।

वहां दिक्पालों का सपरिवार पूजन करें। (याग मन्दिर समीपे)

ऐं क्लीं सौः लां इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय सपरिवाराय नमो पूर्वे। ऐं क्लीं सौः रां अग्नये शक्ति हस्ताय तेजोधिपतये अजवाहनाय सपरिवाराय नमः आग्नेये। ऐं क्लीं सौः टां यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय सपरिवाराय नमः दक्षिणे। ऐं क्लीं सौः क्षां निऋतये खड्ग हस्ताय रक्षोधिपतये परवाहनाय सपरिवाराय नमः नैऋतिये। ऐं क्लीं सौः वां वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनायै सपरिवाराय नमः पश्चिमे। ऐं क्लीं सौः वायवे ध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये रुरुवाहनाय सपरिवाराय नमः वायवे। ऐं क्लीं सौः सां सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय सपरिवाराय नमः उत्तरे। ऐं क्लीं सौः हां ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याधिपतये वृषभवाहनाय सपरिवाराय नमः ऐशान्ये। ऐं क्लीं सौः ॐ ब्रह्मणे पद्महस्ताय लोकाधिपतये हंसवाहनाय सपरिवाराय नमः इन्द्रेशानयोर्मध्ये। ऐं क्लीं सौः श्री विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय सपरिवाराय नमः निर्ऋति वरुणयोः मध्ये।

श्यामा मातङ्गी मन्त्र - **ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुख रंजिनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि अमुकं (त्रैलोक्यं) मे वशमानय स्वाहा।**

विनियोगः - **अस्य श्रीमातङ्गी मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमातङ्गीश्वरि देवता, ऐं बीजं, सौः शक्ति, क्लीं कीलकं, सर्वजनवशीकरणार्थे विनियोगः।**

मन्त्रकोष में यही मन्त्र राजमातङ्गी के नाम से है। प्रारंभ में "**ऐं ह्रीं श्रीं**" बीज है, **सर्वमुख रंजिनी** के बाद केवल "**क्लीं**" बीज है।

विनियोग - **ऋषि मतंग, अमित छन्द, ऐं बीज, ह्रीं शक्ति, श्रीं कीलक** बताया है।

षडङ्गन्यास – **ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं (७ बीज) सर्वजनमनोहारि हृदयाय नमः। ७ सर्वमुख रंजिनि शिरसे स्वाहा। ७ सर्वराजवशङ्करि शिखायै वषट्। ७ सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि कवचाय हुम्। ७ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट्। ७ सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि अमुकं (त्रैलोक्यं) मे वशमानय स्वाहा अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

मातङ्गी भूषिताङ्गी मधुमदमुदितां नीपमालाढ्यवेणीं ।
सद्वीणां शोणवेलां मृगमद तिलकामिन्दुरेखां वर्तस्त्राम् ॥
कर्णोद्यच्छङ्खपात्रां स्मितमधुरदृशां साधकस्येष्ठदात्रीम् ।
ध्याद्देवीं शुकाभां शुकमखिल कलारूपमस्याश्च पार्श्वे ॥

रत्यादिन्यासः – **ऐं क्लीं सौः रत्यै नमः मूलाधारे। ऐं क्लीं सौः प्रीत्यै नमः हृदये। ऐं क्लीं सौः मनोभवाय नमः मुखे।**

मन्त्रन्यास – **ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ऐं क्लीं सौः (३) ॐ नमो ललाटे। ३ भगवति नमः भ्रूमध्ये। ३ मातङ्गीश्वरि नमः दक्षनेत्रे। ३ सर्वजनमनोहरि नमः वामनेत्रे। ३ सर्वमुख रंजिनि नमः मुखे। ३ क्लीं नमः दक्षश्रोत्रे। ३ ह्रीं नमः वाम श्रोत्रे। ३ श्रीं नमः कण्ठे। ३ सर्वराजवशङ्करि नमः दक्षांसे। ३ सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि नमः वामांसे। ३ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नमः हृदये। ३ सर्वसत्त्ववशङ्करि नमः दक्षस्तने। ३ सर्वलोकवशङ्करि नमः वामस्तने। ३ अमुकं (त्रैलोक्यं) मे वशमानय नमः नाभौ।**

विलोम मन्त्रखण्ड न्यास – **ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं नमः मूलाधारे। ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं नमः मूलाधारे। ३ स्वाहा नमः स्वाधिष्ठाने। अमुकं (त्रैलोक्यं) मे वशमानय नमः नाभौ। ३ सर्वलोकवशङ्करि नमः वामस्तने। ३ सर्वसत्त्ववशङ्करि नमः दक्षस्तने। ३ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नमः हृदये। ३ सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि नमः वामांसे। ३ सर्वराजवशङ्करि नमः दक्षांसे। ३ श्रीं नमः कण्ठे। ३ ह्रीं नमः वाम श्रोत्रे। ३ क्लीं नमः दक्षश्रोत्रे। ३ सर्वमुख रंजिनि नमः मुखे। ३ सर्वजनमनोहारि नमः वामनेत्रे। ३ मातङ्गीश्वरि नमः दक्षनेत्रे। ३ भगवति नमः भ्रूमध्ये। ऐं क्लीं सौः (३) ॐ नमो ललाटे। ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः नमः ब्रह्मरन्ध्रे।**

॥ यन्त्रोद्धार ॥

यन्त्र रचना – बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, पंचकोण, अष्टदल, षोडशदल, अष्टदल, चतुर्दल एवं भुपूर बनायें।

प्राणप्रतिष्ठा – **ऐं क्लीं सौः श्यामा यन्त्रस्य प्राणाः इह प्राणा। ऐं क्लीं सौः श्यामा यन्त्रस्य जीवः इहस्थित। ऐं क्लीं सौः श्यामा मातंगी यन्त्रस्य वाङ्, मन चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, प्राण पदादीनी सर्वेन्द्रियाणि सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।**

ऐं क्लीं सौः आधारशक्ति कमलासनाय नमः।

पश्चात् देवि का मूल मन्त्र से आवाहन कर पूजा करें।

॥ यन्त्रार्चनम् ॥

मूलबिन्दु में **देवी का आवाहन** करें।

प्रथमावरणम् – (त्रिकोणे) **ऐं क्लीं सौः** रति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। **ऐं क्लीं सौः** प्रीति पा.पू.त.
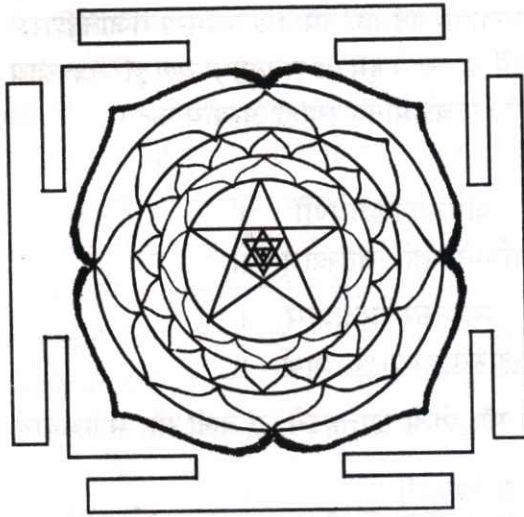
॥ श्री श्यामामातङ्गि यन्त्रम् ॥

नमः। ऐं क्लीं सौः मनोभवायै पा. पू. त. नमः।

गुरुमण्डल पूजनम् (त्रिकोणे रेखायां)

दिव्यौघ गुरु – **ऐं क्लीं सौः (३) घरप्रकाशानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ३ परमेशानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ परशिवानन्द पा. पू. त. नमः। ३ कामेश्वर्यम्बानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ मोक्षानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ कामानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ अमृतानन्दनाथ पा. पू. त. नमः।**

सिद्धौघ गुरु – **ऐं क्लीं सौः (३) ईशानानन्दनाथ पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। तत्पुरुषानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ अघोरानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ वामदेवानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ सद्योजातानन्दनाथ पा. पू. त. नमः।**

मानवौघ गुरु – **ऐं क्लीं सौः पञ्चोत्तरानन्दनाथ पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। परमानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ सर्वज्ञानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ सर्वानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ सिद्धानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ गोविन्दानन्दनाथ पा. पू. त. नमः। ३ शङ्करानन्दनाथ पा. पू. त. नमः।**

निम्र मन्त्र से पुष्पाञ्जलि देवें।

अभिष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पूजिताः तर्पिता सन्तु।

इस प्रकार प्रत्येक आवरण के पश्चात् पुष्पाञ्जलि देवें तथा **"पूजिताः तर्पिता सन्तु"** कहकर जल छोड़ें।

द्वितीयावरणम् – (षट्कोणे) **ऐं क्लीं सौः (३) हृदयाय नमः हृदयशक्तिं पा. पू. त.। ३ शिरसे स्वाहा शिरशक्तिं पा. पू. त.। ३ शिखायै वषट् शिखाशक्तिं पा. पू. त.। ३ कवचाय हुं कवचशक्तिं पा. पू. त.। ३ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्तिं पा. पू. त.। ३ अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिं पा. पू. त.।**

तृतीयावरणम् – (पञ्चकोणे) **ऐं क्लीं सौः (३) द्रां द्रावणबाणाय पा. पू. त.। ३ द्रीं शोषण बाणाय पा. पू. त.। ३ क्लीं बंधन बाणाय पा. पू. त.। ३ ब्लूं मोहन बाणाय पा. पू. त.। ३ सः उन्मादन बाणाय पा. पू. त.।**

पुनः – **ऐं क्लीं सौः कामराजाय पा. पू. त.। ३ क्लीं मन्मथाय पा. पू. त.। ३ ऐं कंदर्पाय पा. पू. त.। ३ ब्लूं मकरकेतव पा. पू. त.। ३ स्त्रीं मनोभव पा. पू. त.।**

चतुर्थावरणम् – (अष्टदले) **ऐं क्लीं सौः (३) आं ब्राह्मी पा. पू. त.। ३ ईं माहेश्वरी पा. पू. त.। ३ ऊं कौमारी पा. पू. त.। ३ ॠं वैष्णवी पा. पू. त.। ३ लॄं वाराही पा. पू. त.। ३ ऐं माहेन्द्री पा. पू. त.। ३ औं चामुण्डा पा. पू. त.। ३ अः महालक्ष्मी पा. पू. त.।**

अष्टदलाग्रे – **ऐं क्लीं सौः लक्ष्मी श्री पा. पू. त.। ३ सरस्वती पा. पू. त.। ३ रति पा. पू. त.। ३ प्रीति पा. पू. त.। ३ कीर्ति पा. पू. त.। ३ शांति पा. पू. त.। ३ पुष्टि पा. पू. त.। ३ तुष्टि पा. पू. त.।**

पञ्चमावरणम् – (षोडशदले) **ऐं क्लीं सौः (३) वामा पा. पू. त.। ३ ज्येष्ठा पा. पू. त.। ३ रौद्री पा. पू. त.। ३ शान्ति पा. पू. त.। ३ श्रद्धा पा. पू. त.। ३ सरस्वती पा. पू. त.। ३ क्रियाशक्ति पा. पू. त.। ३ लक्ष्मी पा. पू. त.। ३ सृष्टि पा. पू. त.। ३ मोहिनी पा. पू. त.। ३ प्रमथिनी पा. पू. त.। ३ आश्वासिनी पा. पू. त.। ३ वीचि पा. पू. त.। ३ विद्युन्मालिनी पा. पू. त.। ३ सुरानन्दा पा. पू. त.। ३ नागबुद्धिका पा. पू. त.।**

षठावरणम् – (द्वितीय अष्टदले) **ऐं क्लीं सौः (३) अं असितांगभैरव पा. पू. त.। ३ इं रुरुभैरव पा. पू. त.। ३ उं चण्डभैरव पा. पू. त.। ३ ॠं क्रोधभैरव पा. पू. त.। ३ लृं उन्मत्तभैरव पा. पू. त.। ३ एं कपालिभैरव पा. पू. त.। ३ ओं भीषणभैरव पा. पू. त.। ३ अं संहारभैरव पा. पू. त.।**

सप्तमावरणम् – (चतुर्दले) **ऐं क्लीं सौः (३) मातङ्गीश्वरी पा. पू. त.। ३ सिद्धलक्ष्मी पा. पू. त.। ३ महामातङ्गी पा. पू. त.। ३ महासिद्धलक्ष्मी पा. पू. त.।**

अष्टमावरणम् – भुपूर में **इन्द्रादि लोकपालों** का **सायुध** पूजन करें।

नवमावरणम् – भुपूर के अन्दर चारों कोनों में **ऐं क्लीं सौः गणपति पा. पू. त.। ३ दुं दुर्गा पा. पू. त.। ३ वं वटुक पा. पू. त.। ३ क्षं क्षेत्रपाल पा. पू. त.।**

श्यामा सर्पयां विशेष – अष्टदल दलाग्र में असितांग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाल, भीषण व संहार भैरव का पूजन करें।

गुरु पादुका पूजनम् – यन्त्र मध्य में दिव्यौघादि गुरुओं के साथ करें। अपने शिर में सहस्त्रार में भी गुरु पादुका का पूजन कर सकते हैं।

अथ स्वशिरसि – ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकाम्बा सहिता स्वगुरु अमुकानंदनाथ पा. पू. त. नमः। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः श्री शिवादि पा. पू. त. नमः।

पश्चात् षोडशोपचार पूजन कर मूल मन्त्र का जप करें।

॥ राजमातंगी मंत्र ॥

मंत्र :– ॐ ह्रीं राजमातङ्गिनि मम सर्वार्थसिद्धिं देहि देहि फट् स्वाहा। (देवी रहस्ये)

उत्कीलन – ह्रीं सौः राजमातंग्यै नमः।

॥ शारिका मन्त्राः॥

श्री शरिका के दो भेद है। अपर्णामूलदेवी है।

१. ॐ हूं च्छ्रीं आं शां देव्यै अपर्णायै नमः। **उत्कीलन – क्रां शरिका ह्रीं।**

यह देवी अन्नपूर्णा व लक्ष्मी रूपा है।

२. ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शरिकायै नमः

॥ शारिका ध्यानम् ॥

श्रीशङ्ख चक्र मुसलाम्बुजयुगम हस्तां नागेन्द्र हारवलयाङ्कित कण्ठमालाम् ।
सिन्दूर कुङ्कुम सहस्त्रमरीचिदीप्तिं, श्रीशारिकां त्रिनयनां हृदये स्मरामि ॥

॥ अथ प्रत्यङ्गिरा मन्त्राः॥

मूलतः अंगिरा महाविद्या ही शत्रु की क्रिया को वापस लौटाने के कारण प्रत्यंगिरा कही गयी है। परप्रयोग नाश करने तथा शत्रुबाधा नष्ट करने वाली इस विद्या के प्रयोग पहले भी वर्णित किये जा चुके है। जैन धर्म में प्राकृत भाषा में भी इस विद्या के प्रयोग है। इस विद्या द्वारा घर में देवी का आवाहन कर अमुक अमुक दिशा में घट (कलश) का भ्रमण हो ऐसा उत्तर प्रश्न के शुभाशुभ हेतु जानने के प्रयोग भी जैन ग्रंथों में है जिनको घट चालन प्रयोग कहा है। पुरश्चर्यार्णव में १६ अक्षर का मंत्र दिया है जिसके लिये मेरुतंत्र का उल्लेख है परन्तु प्रचलित मेरुतंत्र में यह मंत्र नहीं है।

मंत्र - ॐ अं कं चं टं तं पं ह्रां भौं ह्रीं हुंस (हुं सः) हुं फट् स्वाहा।

विनियोग - अस्य मंत्रस्य विधाता ऋषि उष्णिक छंदः षट् देवता (महावायु महापृथ्वि, महाकाश, महासमुद्र, महापर्वत, महाअग्नि, हुं बीजं ह्रीं शक्तिं परप्रयोग क्षयार्थे विनियोगः।) (पुरश्च)

षडङ्गन्यास - ह्रां, ह्री, ह्रू, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से न्यास करे।

॥ध्यानम्॥

नानारत्नार्चिराक्रान्तं वृक्षाम्भः स्त्रवणैर्युतम् । व्याघ्रादिपशुभिर्व्याप्तं सानुयुक्तं गिरिंस्मरेत् ॥१॥
मत्स्यकूर्मादिबीजाढ्यं नवरत्न समान्वितम् । घनच्छायां सकल्लोलमकूपारं विचिन्तयेत् ॥२॥
ज्वालावलीसमाक्रान्तं जगस्त्रितयमद्भुतम् । पीतवर्णं महावह्निं संस्मरेच्छत्रुशान्तये ॥३॥
त्वरा समुत्थरावौघमलिनं रुद्धभूविदम् । पवनं संस्मरेद्विश्व जीवनं प्राणरूपतः ॥४॥
नदी पर्वत वृक्षादिकालिताग्रास संकुला । आधारभूता जगतो ध्येया पृथ्वीह मंत्रिणा ॥५॥
सूर्यादिग्रह नक्षत्र कालचक्र समन्विताम् । निर्मलं गगनं ध्यायेत् प्राणिनामाश्रयं पदम् ॥६॥

इस प्रकार षट् देवताओं का ध्यान कर मूल मंत्र का जप करे। व्रीहि, चावल, धृत, सरसों, यव व तिलों से होम करे।

॥ प्रत्यङ्गिरा माला मंत्रः॥

ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससेशते विश्वसहस्त्रहिंसिनि सहस्त्रवदने महाबलेऽपराजिते प्रत्यङ्गिरे परसैन्य परकर्म विध्वंसिनि परमंत्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्वदेवान् वंध बंध सर्वविद्यां छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोमय परयंत्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वल ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यंगिरे ह्रीं नमः।

विनियोग - अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि अनुष्टप् छंदः देवीप्रत्यंगिरा देवता ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिं, कृत्यानाशने जपे विनियोगः।

॥ ध्यानम् ॥

सिंहारूढातिकृष्णाङ्गी ज्वालावक्त्रा भयङ्कराम् ।
शूलखड्गकरां वस्त्रे दधतीं नूतने भजे ॥

(१) अन्य मंत्र - ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदे (नारसिंहवदने) महाभैरवि ज्वल-ज्वल विद्युज्वल ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यंगिरे क्ष्म्रीं क्ष्म्यैं नमो नारायणाय घ्रिणुः सूर्यादित्यों

सहस्त्रार हुं फट्।

(२) ॐ ह्रीं यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव। तां ब्रह्मणाऽपानिर्नुद्म प्रत्यक् कर्त्तारमिच्छतु ह्रीं ॐ ॥

॥ ध्यानम् ॥

खड्गचर्मधरां कृष्णां मुक्तकेशीं विवाससम् ।
दंष्ट्राकरालवदनां भीषाभां सर्वभूषणाम् ।
ग्रसन्तीं वैरिणं ध्यायेत् प्रेरितां शिवतेजसा ॥

॥ प्रत्यङ्गिरा मन्त्र भेदाः॥

(क) ब्राह्मी प्रत्यङ्गिरा – ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ नमः कृष्णवसने सिंहवदने महाभैरवि ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे क्ष्म्रों। ॐ नमो नारायणाय घृणिसर्य आदित्योम्। सहस्त्रार हुं फट्। अव ब्रह्मद्विषो जहि।

(ख) नारायणी प्रत्यङ्गिरा – ॐ ह्रीं खें फ्रें भक्षज्वालाजिह्वे करालवदने कालरात्रि प्रत्यङ्गिरे क्षों क्ष्म्रों ह्रीं नमस्तुभ्यं हन हन मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्षय भक्षय हुं फट् स्वाहा।

(ग) रौद्री प्रत्यङ्गिरा – श्रीं ह्रीं ॐ नमः कृष्णवसने विश्वसहस्त्रहिंसनि सहस्त्रवदने कालरात्रि प्रत्यङ्गिरे परसैन्य परकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनी सर्वभूतदमनि सर्वदेवान् बंध बंध सर्वविद्यां छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परतन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीं नमः।

(घ) उग्रकृत्या प्रत्यङ्गिरा – ह्रीं यां कल्पयन्ति नोऽरय क्रूरां कृत्यां वधूमिव। तां ब्रह्मणाप निर्णुद्म प्रत्यक् कर्तारमिच्छतु ॥

(ङ) अथर्वण भद्रकाली प्रत्यङ्गिरा – ऐं ह्रीं श्रीं ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालदंष्ट्रे प्रत्यंगिरे क्षीं ह्रीं हुं फट्।

॥ प्रत्यङ्गिरा यंत्रार्चनम् ॥
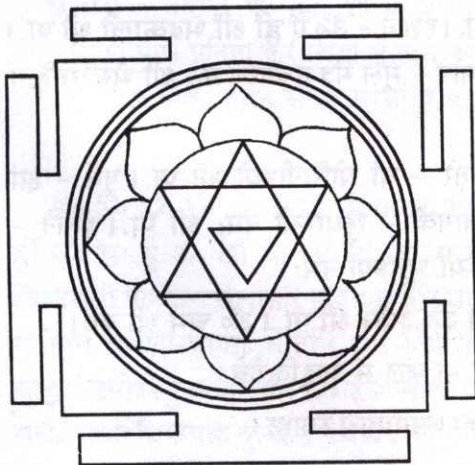
॥ प्रत्यङ्गिरा यन्त्रम् ॥

यन्त्र रचना – बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल बनाकर उनके ऊपर ३ वृत्त बनायें, पश्चात् चार द्वार युक्त भूपुर बनाये।

प्रथमावरणम् – (भूपुरे) पूर्वादिक्रमेण– ॐ इन्द्रसशक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः– इति सर्वत्र। ॐ अग्नि सशक्ति पा.। ॐ यमसशक्तिं पा.। ॐ निर्ऋति सशक्तिं पा.। ॐ वरुण सशक्तिं पा.। ॐ वायु सशक्तिं पा.। ॐ कुबेर सशक्तिं पा.। ॐ ईशान सशक्ति पा.। ॐ ब्रह्म सशक्तिं पा.। ॐ विष्णु सशक्तिं पा.।

द्वितीयावरणम् – (भूपुरे लोकपालसमीपे) वज्र श्री पा.।

****

शक्ति श्री पा.। दण्ड श्री पा.। खड्ग श्री पा.। पाश श्री पा.। अंकुश श्री पा.। गदा श्री पा.। त्रिशूल श्री पा.। पद्म श्री पा.। चक्र श्री पा.।

तृतीयावरणम् - (त्रिवृत्ते) **ॐ कोलानंद श्री पा.। ॐ परमगुरवे श्री पा.। ॐ परमेष्ठी गुरवे श्री पा.। ॐ दिव्यौघ गुरुभ्यो श्री पा.। ॐ सिद्धौघ श्री पा.। पुनः स्वगुरु अमुकानंद नाथ सशक्तिं श्री पा.।**

चतुर्थावरणम् - (अष्टदलाग्रे) पूर्वादिक्रमेण - **अं असितांग भैरवाय पा.। इं रुरुभैरवाय पा.। उं चण्डभैरवाय पा.। ऋं क्रोध भैरव पा.। लृं उन्मत्त भैरव श्री पा.। एं कपालि भैरव पा.। ओं भीषण भैरव श्री पा.। अं संहारभैरव श्री पा.।**

पंचमावरणम् - (अष्टदलमध्ये) पूर्वादिक्रमेण - **आं ब्राह्मी श्री पा.। ईं माहेश्वरी श्री पा.। ऊं कौमारी श्री पा.। ॠं वैष्णवी श्री पा.। लृं वाराही श्री पा.। ऐं माहेन्द्री श्री पा.। औं चामुण्डा श्री पा.। अः नारसिंह श्री पा.।**

षष्ठमावरणम् - (अष्टदले केसरे) पश्चिम से नैर्ऋति पर्यन्त - **ॐ कामरूपपीठ श्री पा.। ॐ मलयगिरिपीठ पा.। ॐ कोलगिरिपीठ श्री पा.। ॐ कालांतपीठ श्री पा.। ॐ चौहारपीठ श्री पा.। ॐ जालंधरपीठ श्री पा.। ॐ उड्डीयानपीठ पा.। ॐ देवकूट पीठ श्री पा.।**

सप्तमावरणम् - (वृत्त मंडले) पश्चिम से निर्ऋति तक - **हेरुक भैरव पा.। बेताल भैरव पा.। त्रिपुरांतक भैरव पा.। अग्निजिह्व भैरव पा.। कालांत भैरव श्री पा.। कपालिभैरव श्री पा.। एकपाद भैरव श्री पा.। भीमरूप भैरव श्री पा.। उर्ध्वं मलयभैरव श्री पा.। अधः हाटकेश्वर भैरव श्री पा.।**

अष्टमावरणम् - (अष्टदल मध्ये) पूर्वादि क्रमेण- **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्तंभिनी पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षोभिणी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्राविणी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भ्रामणी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रौद्री श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मोहिनी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जिभृणी श्री पा.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संहारिणी श्री पा.।**

नवमावरणम् - (षट्कोणे) आग्रेये - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हृदय श्री पा.।** ईशाने - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिरः श्री पा.।** निर्ऋते - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिखा श्री पा.।** वायव्ये - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कवच श्री पा.।** आमध्ये - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नेत्र श्री पा.।** दिक्षु - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्र श्री पा.।**

दशमावरणम् - (त्रिकोणे) आग्रेये- **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं काली श्री पा.।** ईशाने - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भद्रकाली श्री पा.।** अधः कोणे - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नित्याकाली श्री पा.।** ततौ मध्ये बिन्दु समीपे - मूल मंत्र उच्चारण करे **श्री भैरवसहितां श्रीमच्छ्री प्रत्यंगिरा श्री पा.।**

एकादशावरणम् - (भूपुरे) पश्चिमे - **बं बटुक श्री पा.।** उत्तरे - **यां योगिनीभ्यो श्री पा.।** पूर्वे - **क्षां क्षेत्रपालाय नमः श्री पा.।** दक्षिणे - **गं गणपतये नमः श्री पा.।** वायव्ये - **सुधाभ्यो नमः श्री पा.।** ईशाने - **द्वादशादित्ये श्री पा.। आग्नेये एकादश रुद्रेभ्यो नमः।** नैर्ऋते - **सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः।**

पश्चात् देवी के अस्त्रों की देवी के समीप पूजन करे। **देवी दक्षहस्ते ॐ असि श्री पा.। ॐ चर्म श्री पा.।**

इसके बाद देवी की पूजा अर्चाकर बलिप्रयोग करे होम करे। अग्नि या जल में आहुति देवे।

प्राणाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा।

ईशानादि चारों कोणों त्रिकोण वृत्त चतुरस्र बनाकर बलिमण्डल बनाकर बलि प्रदान करे।

ईशाने - **बं बटुकाय नमः। एह्येहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व विघ्नान्नाशय २ सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥१॥**

आग्नेयां - **योगिनीभ्यो नमः। उर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिविगगनतले भूतले निष्कले वा पाताले वातले वा पवनसलिलयो र्यत्रकुत्र स्थिता वा क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदाधूप दीपादिकेन प्रीता देव्यः सदानः सुभबलि विधिना पांतु वीरेन्द्र वंद्याः। यां** योगिनीभ्यो नमः स्वाहा सर्वयोगिनी ह्रीं फट् स्वाहा ॥२॥

नैर्ऋते - **क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल अतिबलि सहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥३॥**

वायव्ये - **गां गीं गूं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥४॥**

यथा शक्ति जप कर देवी समर्पण करें।

॥ अथ विपरीतप्रत्यङ्गिरा मंत्र प्रयोगः॥

शत्रु द्वारा की गई अभिचार क्रिया को दुगने वेग से लौटानी लौटाने वाली विद्या विपरीत प्रत्यंगिरा कहीं गई है।

मंत्रः- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भञ्जय भञ्जय फें हुं फट् स्वाहा।

विनियोग - **अस्य श्री विपरीत प्रत्यंगिरा मंत्रस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री विपरीत प्रत्यंगिरा देवता ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।**

न्यास :- ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ प्रत्यंगिरे अनामिकाभ्यां नमः। ॐ मां रक्ष रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मम शत्रून् भञ्जय भञ्जय फें हुं फट् करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। इसी तरह हृदयादि न्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

टंकं कपालं डमरुं त्रिशूलं, संबिभ्रती चन्द्रकलावतंसा ।
पिङ्गोर्ध्वकेशाऽसित भीमदंष्ट्रा भूयाद्विभूत्यै मम भद्रकाली ॥

प्रयोग - अष्टमी या महानिशा में अर्धरात्रि को प्रयोग करे। श्मशान की मिट्टी लाकर उसकी पुत्तली बनाकर शत्रुनाम की प्राण प्रतिष्ठा कर चित्ता में होम करे तो शत्रु का मारण होवे। यदि गर्म शलाका से पुत्तली का भेदन करे तो शत्रु को पीडा होवे। हवन समय सरसों व कालीमिर्च का प्रयोग करें।

॥ माला मंत्र ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ कुं कुं कुं मां सां खां पां लां क्षां ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ ॐ ह्रीं बां धां मां सां रक्षां कुरु। ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ सः हुं ॐ क्षौं वां लां धां मां सा रक्षां कुरु। ॐ ॐ हु प्लुं रक्षा कुरु। ॐ नमो विपरीतप्रत्यङ्गिरायै विद्याराज्ञी त्रैलोक्य वंशकरि तुष्टिपुष्टिकरि सर्वपीडापहारिणि सर्वापन्नाशिनि सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिनि मोदिनि सर्वशास्त्राणां भेदिनि क्षोभिणि तथा। परमंत्र तंत्र यंत्र विषचूर्ण सर्वप्रयोगादीन् अन्येषां निवर्तयित्वा यत्कृतं तन्मेऽस्तु कपालिनि सर्वहिंसा मा कारयति अनुमोदयति मनसा वाचा कर्मणा ये देवासुर राक्षसास्तिर्यग्योनि सर्वहिंसका विरूपकं कुर्वन्ति मम मंत्र तंत्र यन्त्र विषचूर्ण सर्वप्रयोगादीनात्म हस्तेन यः करोति करिष्यति कारयिष्यति तान् सर्वानन्येषां निवर्तयित्वा पातः कारय मस्तके स्वाहा। ॥

॥ अथ बगलामुखी तन्त्रम् ॥

॥ अथ बगलामुखी मन्त्राः॥

बगलामुखी के विभिन्न प्रयोग अनु० भाग ३ पूर्वार्द्ध में दिये गये है पुनः कुछ अन्य प्रयोग इस प्रकार है- (देवी रहस्ये)

(१) मंत्र :- ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय-स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय ह्लीं ॐ स्वाहा।

उत्कीलनं :- ॐ ह्लीं क्लीं स्वाहा।

संजीवन :- ॐ ह्लीं स्वाहा।

शापविमोचन :- ॐ ह्लीं बगले रुद्रशाप विमोचय ह्लीं ॐ स्वाहा।

(२) अन्य मंत्र :- ॐ ह्लीं भगवति बगलामुखि देवि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

नानारत्ननिबद्धरम्यमुकुटां पीताम्बरां भाग्यदां, घर्मांश्वग्नि शशाङ्करश्मि नयनां सिंहासनस्थां शिवाम् । सच्चण्डांशु निभां महार्घमणिरुद्भासिताङ्गीं सदा, देवीं श्रीबगलामुखीं हृदि भजे भक्तेष्टदा मुक्तिदाम् ॥

(३) अन्य मन्त्र - ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय ह्लींॐ स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

नानारत्ननिबद्धरम्य मुकुटां पीताम्बरां भाग्यदां धर्मांश्वग्निशशाङ्करश्मि नयनां सिंहासनस्थां शिवाम्। सच्चण्डांशुनिभां महार्घमणिभिरुद् भासिताङ्गीं सदा, देवीं श्रीबगलामुखीं हृदि भजे भक्तेष्टदां मुक्तिदाम्॥

उत्कीलन - ॐ ह्लीं क्लीं स्वाहा। (देवी रहस्ये)

॥ बगलमुखी मन्त्र भेदाः॥

(१) देवी रहस्ये मन्त्र - ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय ह्लीं ॐ स्वाहा।

(२) ३४ अक्षर मन्त्र - (मेरु तन्त्रे) **ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।**

विनियोग – यहां **नारायण ऋषि, त्रिष्टुप्छन्द, बगलामुखि देवता, ह्लीं बीजं तथा स्वाहा शक्ति हेतु विनियोग है।**

यहां मन्त्र में **वाचं मुखं** के बाद **पदं** जोड़ने से ३६ अक्षर का मन्त्र हो जाता है।

(३) सांख्यायन तन्त्रे मन्त्र – **ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।**

सांख्यायन तन्त्र में सप्तम पटल में इसके **ऋषि नारद, अनुष्टुप्छन्द, बगला देवता, लं बीजं, ह्रीं शक्ति, रं कीलकं** बताया है।

ऋषिभेद – जबकि उपरोक्त मन्त्र के प्रचलित ग्रन्थों में **नारद ऋषि, त्रिष्टुप्छन्द, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्ति व प्रणव कीलक** कहा है।

(४) ३७ अक्षर मन्त्र – सांख्यायन तन्त्र में ५ वें पटल में अन्य मन्त्र है –

ॐ ह्लीं ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाकं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

कामना भेद से कहीं "**वाचं मुखं पदं गतिं स्तम्भय**" है कहीं **स्तम्भय स्तम्भय** दो बार या कहीं **कीलय कीलय** दो बार है। कहीं **बुद्धि विनाशय विनाशय** अथवा **बुद्धिं नाशय नाशय** प्रयुक्त किया जाता है। ऐसा तन्त्र ग्रन्थों में प्राप्त है।

(५) ब्रह्मास्त्र माला – **ॐ आं ह्लीं क्रों ग्लौं हुं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं बगलामुखि आवेशयावेश आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्ररूपिणि एह्येहि ह्लीं क्रों मम हृदये आवहावह संनिधिं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों मम हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा।**

(६) आम्नाय भेद – मन्त्र के आदि में "**ह्लीं**" की जगह "**ह्रीं**" लगाने से उत्तर आम्नाय मन्त्र बनता है।

(७) सुन्दरी भेद – प्रथम बीज के साथ बाला बीज "**ऐं क्लीं सौः**" लगाने से बगलासुन्दरी मन्त्र उत्तरआम्नाय का हो जाता है। इसे उर्ध्वआम्नाय मन्त्र भी कहा है।

(८) बालाभिन्नपाद बगला मन्त्र – **ॐ ह्लीं ऐं क्लीं सौः बगलामुखी ऐं क्लीं सौः सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय ऐं क्लीं सौः जिह्वां कीलय ऐं क्लीं सौः बुद्धिं विनाशय ऐं क्लीं सौः ह्लीं ॐ स्वाहा।**

१. उभयाम्नाय मन्त्र – **श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवांछितं कार्यं साधय साधय ह्रीं श्रीं स्वाहा।**

२. पश्चिमाम्नाय मन्त्र – **ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा।**

३. पूर्वाम्नाय – **ॐ ह्रीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै स्वाहा।**

एकाक्षरी मन्त्र भी पूर्वाम्नाय व दक्षिणाम्नाय में गिना जाता है। ३६ अक्षर का मन्त्र दक्षिणआम्नाय फल देने वाला है।

४. उत्तर पूर्व आम्नाय मन्त्र – **श्रीं ह्रीं ऐं भगवति बगले मे श्रियं देहि देहि स्वाहा।**

कामना भेद से संहार क्रम हेतु कालरात्रि व बगला समिष्टि मन्त्र है तथा वशीकरण हेतु सुमुखी बगला मातंगी मन्त्र

शास्त्रों इसी तरह अन्य विद्याओं के संयोग से भी मन्त्र ग्रन्थों में उपलब्ध है।

१. **कालरात्रीबगला मन्त्र** - **ॐ नमो भगवति भक्षकरणे चतुर्भुजे पीताम्बरे उर्ध्वकेशे विकृतानने कालरात्रि मानुषाणां वसारुधिर भोजने अमुकस्य मृत्युपदे लं फट् हन हन दह दह मांसं रुधिरं पिव पिव पच पच हुं फट् स्वाहा।**

२. **सुमुखीबगला मन्त्र** - **ॐ नमो भगवत्यै पीताम्बरायै ह्लीं ह्लीं सुमुखी बगले विश्वं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा।** (महाकाल संहितायां कामकलाखण्डे)

॥ अथ वश्यकरी बगलासुमुखी मन्त्रः॥

मंत्र :- ॐ नमो भगवत्यै पीताम्बरायै ह्लीं ह्लीं सुमुखि बगले विश्वं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा। (महाकालसंहिता कामकला खण्डे अष्टम पटले)

॥ ध्यानम् ॥

गौरी पीताम्बरधरा पीतस्त्रगनुलेपना । रत्नसिंहासनगता रत्नालङ्कारभूषिता ॥
त्रिनेत्रा चन्द्रशकल विराजित-ललाटिका । सौन्दर्यसारविजित जगल्लावण्यपुञ्जिका ॥
चतुर्भुजाङ्कुशवरे दक्षिणे विभ्रती करे । तथैव धारयन्ती च वामे दीपाभये करे ॥
(ध्यातव्या भक्तिभावेन वश्यकर्म चिकीर्षता)

॥ अथ बगलाकालरात्रि मन्त्रः॥

मंत्र :- ॐ नमो भगवति भक्षकरणे चतुर्भुजे पीताम्बरे उर्ध्वकेशे विकृतानने कालरात्रि मानुषाणां वसारुधिर भोजने अमुकस्य मृत्युपदे लं फट् हन हन दह दह मांसं रुधिरं पिव पिव पच पच हुं फट् स्वाहा।
(यह मारण प्रयोग है इसका वर्णन देवीखण्ड पूर्वार्द्ध में दिया गया है।)

॥ अथ बगलाचामुण्डा मन्त्रः ॥

मंत्र :- ॐ बगलाचामुण्डायै विच्चे घ घ घ स्वाहा॥ (महाकाल संहिता)

॥ बगलाप्रत्यंगिरा मन्त्रः ॥

मंत्र :- ॐ ह्लीं ज्वलज्जिह्वे बगलाप्रत्यंगिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भञ्जय-भञ्जय फे हुं फट् स्वाहा।

॥ अथ बगला वशीकरण मंत्रः ॥

मंत्र :- ॐ नमो भगवत्यै पीताम्बरायै ह्लीं ह्लीं सुमुखि बगले विश्वं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा। (महा. संहि)

॥ ध्यानम् ॥

गौरी पीताम्बरधरा पीतस्त्रगनुलपना । रत्नसिंहासनगता रत्नालङ्कारभूषिताम् ॥
त्रिनेत्रा चन्द्रशकल विराजित ललाटिका । सौन्दर्यसार विजित जगल्लावण्य पुञ्जिका ॥
चतुर्भुजाङ्कुशवरे दक्षिणे विभ्रती करे । तथैव धारयन्ती च वामे दीपाभये करे ॥

बगलामुखि का यह स्वरूप मातंगी का समष्टि रूप है जो संसार के वशीकरण हेतु सुलभ मंत्र है।

॥ अथ बगलामुखी पञ्चास्त्र प्रयोगः॥

(साङ्ख्यायन तन्त्रे)

पीताम्बरा के पांच विशेष उग्र मंत्र हैं जो शत्रुसमूह को नष्ट करने में समर्थ हैं।

(१) वडवामुखी। (२) उल्कामुखी। (३) जातवेदमुखी। (४) ज्वालामुखी। (५) वृहद्भानुमुखी

॥ १. वडवामुखी मंत्रः॥

मन्त्र - ॐ ह्लीं हूं ग्लौं बगलामुखि ह्लां ह्लीं ह्लूं सर्वदुष्टानां ह्लैं ह्लौं ह्लः वाचं मुखं पदं स्तंभय ह्लः ह्लौं ह्लैं जिह्वां कीलय ह्लूं ह्लीं ह्लां बुद्धिं विनाशय ग्लौं हूं ह्लीं हुं फट्।

इस मंत्र के वशिष्ठ ऋषि, पंक्ति छंद शेष न्यासादि ३६ अक्षर मंत्र के समान हैं।

॥ ध्यानम् ॥

पीताम्बरधरां देवीं द्विसहस्त्रभुजान्विताम् ।
अर्द्ध जिह्वां गदां चार्द्धं धारयन्तीं शिवां भजे ॥

अर्थात् सहस्त्र हाथों में जिह्वा व सहस्त्र हाथों में गदा धारण किये हुये है। सांख्यायन तंत्र में **साध्य जिह्वां गदा चाप धारयन्ती** लिखा है। १२ लाख जप करें। हरताल की आहुति देवे।

॥ २. उल्कामुखी मंत्रः॥

मन्त्र - ॐ ह्लीं ग्लौं बगलामुखि ॐ ह्लीं ग्लौं सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ग्लौं वाचं मुखं पदं ॐ ह्लीं ग्लौं स्तंभय स्तंभय ॐ ह्लीं ग्लौं जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ग्लौं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ ग्लौं ह्लीं ॐ स्वाहा।

विनियोग :- अस्य मंत्रस्य यज्ञवराह ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्ति ॐ कीलकं सर्वशत्रु क्षयार्थे जपे विनियोग।

॥ ध्यानम् ॥

विलयानलसंकाशं वीरावेशन संस्थिता ।
वीराट्टहास महादेवी स्तम्भनास्त्रं भजाम्यहम् ॥

१४ लाख जप। हरताल की १ लाख आहुतियां देवे। सांख्यायन तंत्र में वीरावेशन संभृताम्। **वीराश्रयां महादेवी स्तंभनार्थं भजाम्यहम्॥** लिखा है।

॥ ३. जातवेदमुखीः॥

विशेष विघ्नों व परकृत्या प्रयोग को नष्ट करने हेतु यह प्रयोग अच्छा है।

मन्त्र - ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बुद्धिं विनाशय विनाशय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ स्वाहा।

पाठान्तर भेद से कहीं **''पदं''** नहीं हैं तथा **विनाशय** की जगह **नाशय हैं।**

****

विनियोग :- अस्य मंत्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः, पंक्तिछंद शेष पूर्ववत् ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः हूं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः। (सांख्या. तंत्र में ह्लीं शक्ति, ह्रौं कीलक **कहा है।)**

॥ ध्यानम् ॥

जातवेदमुखीं देवीं देवतां प्राणरूपिणीं ।
भजेऽहं स्तंभनार्थं च चिन्मयी विश्वरूपिणीम् ॥

पुरश्चरण ३० लाख जप ।

॥ ४. ज्वालामुखीः॥

मन्त्र – ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर ज्वालामुखि ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर जिह्वां कीलय कीलय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर बुद्धिं विनाशय विनाशय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर स्वाहा।

पाठान्तर भेद में **विनाशय** की जगह **नाशय** हैं तथा कई आचार्यों का मत हैं कि **ज्वालामुखी** की जगह **बगलामुखि** होना चाहिये।

विनियोगः- अस्य मंत्रस्य अत्रि ऋषिः, गायत्री छंदः, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं सर्वशत्रु स्तंभनार्थे, क्षयार्थे जपे विनियोगः।

॥ ध्यानम् ॥

ज्वलत्पुञ्ज समायुक्तां कालानलसमप्रभाम् ।
चिन्मयीं स्तंभनाद्देवीं भजेऽहं विधिपूर्वकम् ॥

१२ लाख जप, हरताल से २ लाख आहुति, गोदुग्ध से तर्पण ४ लाख, ब्राह्मण भोजन दो हजार करे।

॥ ५. वृहद्भानुमुखीः॥

मन्त्र – ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ (इन १४ वर्णों की बार बार पुनरावृत्ति हैं) **बगलामुखि १४ सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय १४ जिह्वां कीलय १४ बुद्धिं विनाशय १४ ॐ स्वाहा।**

पाठान्तर भेद "**ह्लां ह्लीं**" की जगह "**ह्लां ह्लीं**" तथा "**विनाशय**" की जगह "**नाशय**" हैं।

यह विद्या शत्रु का तेजहरण करती हैं। स्तंभन करती है। परविद्या स्तंभन कर स्वविद्या को प्रकाशित करती हैं।

विनियोगः- अस्य मंत्रस्य अत्रि ऋषिः, गायत्री छंदः, ह्लीं बीजं, ह्लीं शक्तिः, ॐ कीलकं परसैन्य परविद्या स्तंभनार्थे स्वविद्या प्रकाशनार्थे जपे विनियोगः।

॥ ध्यानम् ॥

कालानलनिभां देवीं ज्वलत्पुञ्ज शिरोरुहां । कोटिबाहु समायुक्तां वैरिजिह्वां समन्वितान् ।
स्तंभनास्त्रमयीं देवीं दृढपीनपयोधराम् । मदिरामोद संयुक्तां वृहद्भानुमुखीं भजे ॥

१२ लाख जप, दशांश तालक हवन, गुडोदक तर्पण दशांश ब्राह्मण भोजन करें।

॥ यन्त्रार्चनम्॥

पञ्चास्त्रों में से किसी का भी प्रयोग करें इस **पंचास्त्रसमिष्टि** यन्त्र का पूजन करें।

यन्त्र रचना – पूजन हेतु बिन्दु, त्रिकोण, पञ्चकोण, अष्टदल, भुपूर बनायें। जिस मन्त्र का प्रयोग करना हो उसी मन्त्र से मूल बिन्दु त्रिकोण में आवांहन व ध्यान करें।
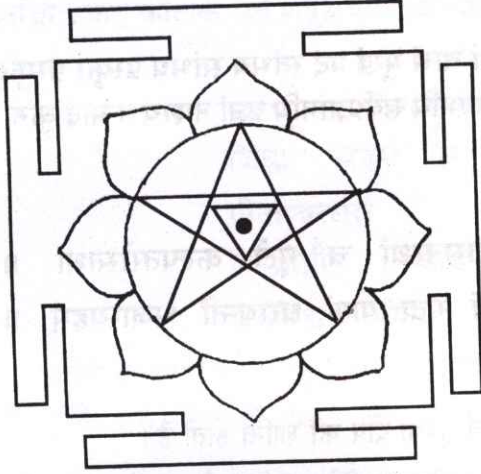
॥ बगला पञ्चास्त्र यन्त्रम् ॥

त्रिकोणे – मध्य में मूलमन्त्र से देवी का आवाहन करें।

तीनों कोणों में – ऐं वाण्यै नमः, ह्रीं गौर्यै नमः, श्रीं रमायै नमः।

षडङ्ग पूजा – यहीं पर देवी के षड्ङगों का पजन करें।

ह्लां हृदय शक्तये नमः। ह्लीं शिर शक्तये नमः। ह्लूं शिखा शक्तये नमः। ह्लैं कवच शक्तये नमः। ह्लौं नेत्र शक्तये नमः। ह्लः अस्त्र शक्तये नमः।

पंचकोणे – पाँचों अस्त्रों का उनके मूल मन्त्र से आवाहन करें।

ॐ मूलमन्त्रेण वडवामुख्यास्त्राय नमः। ॐ मूलमन्त्रेण उल्कामुख्यास्त्राय नमः। ॐ मूलमन्त्रेण ज्वालामुख्यास्त्राय नमः। ॐ मूलमन्त्रेण जातवेदमुख्यास्त्राय नमः। ॐ मूलमन्त्रेण वृहद्भानुमुख्यास्त्राय नमः।

अष्टदल – (केसरेषु) **ॐ ब्राह्म्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ ऐन्द्रयै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**

अष्टदलमध्ये – (अष्टगणपति) **ॐ सुमुखाय नमः। ॐ एकदन्ताय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ गजकर्णकाय नमः। ॐ लंबोदराय नमः। ॐ विकटाय नमः। ॐ विघ्नराजाय नमः। ॐ गणाधिपाय नमः।**

अष्टदले कर्णिकायाम् – **ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः। ॐ रुरुभैरवाय नमः। ॐ चण्डभैरवाय नमः। ॐ क्रोधभैरवाय नमः। ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः। ॐ कपालिभैरवाय नमः। ॐ भीषणभैरवाय नमः। ॐ संहारभैरवाय नमः।**

भुपूरे – **ॐ इन्द्राय नमः। ॐ आग्नेये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ नैऋत्याय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः।**

तद्बाह्यवे – **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

मूल मन्त्र का लक्ष जप करें तथा त्रिमधु से होम करें। गुड़ के पदार्थ, मधुद्रव्य एवं पौष्टिक द्रव्यों से हवन करें अथवा नैवेद्य अर्पण करें। छाग, मत्स्य एवं कुक्कुट बलि प्रदान करें।

वृहद्भानुमुखी के ऋषि सांख्यायन तन्त्र में विश्वामित्र कहें हैं। तथा ध्यान में ''**मदिरामद संयुक्ता**'' लिखा है।

****

गुड़ के जल से अथवा गुड़ तैयार करते समय जो गन्ने का रस पकाया जाता है, उससे तर्पण करें। तालक या हरताल से पूजन करे।

बिना आपत्ति के प्रयोग नहीं करें अन्यथा देवी शाप दे देती है।

॥ अथ बगला शताक्षरी विद्या ॥

॥ शताक्षर मंत्र ॥

ह्रीं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ग्लौं ह्रीं बगलामुखि स्फुर स्फुर सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय प्रस्फुर प्रस्फुर विकटाङ्गि घोररूपि जिह्वां कीलय महाभ्रमकरि बुद्धिं नाशय विराण्मयि सर्वप्रज्ञामयि प्रज्ञां नाशय उन्मादं कुरु कुरु मनोपहारिणि ह्रीं ग्लौं श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ह्रीं स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

पीताम्बरधरां सौम्यां पीतभूषण भूषिताम् । स्वर्णसिंहासनस्थां च मूले कल्पतरोस्तथा ॥
वैरिजिह्वां छेदनार्थं छूरिकां बिभ्रतीं शिवाम् । पानपात्रं गदा पाशं धरायन्तीं भजाम्यहम् ॥

॥ प्रयोगः ॥

१. त्रिमधु (घी, शक्कर, शहद) एवं पायस के होम से सर्व रोग एवं कृत्या दोष की शान्ति होती है।

२. शाल्य, सत्तू, स्यमन्तपुष्प होम से कीर्ति होवे तथा संमोहन एवं वशीकरण होवे। अर्क व निम्ब की समिधा के होम से विद्वेषण होवे।

३. दही, मिश्री, गुडुची एवं शर्करा के होम से नाना रोग का नाश होवे।

४. जायफल का चूर्ण जल में डालें उससे तर्पण करें तो सर्व रोग शान्त होवे।

॥ अथ बगलागायत्री मन्त्रः ॥

मन्त्र – ॐ ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तंभनबाणाय धीमहि तन्नः बगला प्रचोदयात्। (सांख्यायन तन्त्रे)

॥ प्रयोग विधि ॥

ॐ सहित जप करने से मोक्ष। **कामार्थी – ॐ ग्लौं। उच्चाटन हेतु – ग्लौं। सम्मोहन हेतु – क्लीं। स्तम्भनार्थे – ह्लीं। विद्वेषण हेतु – धूं धूं। मारण हेतु – हूं ग्लौं ह्रीं। विद्या हेतु – ऐं। सुयोग्य कन्यास हेतु – ऐं क्लीं सौः। लक्ष्मी प्राप्ति हेतु – श्रीं। विषनाश हेतु – क्ष्रीं। प्रेतबाधानाश हेतु – हं। व्याधिनाश हेतु – ॐ जूं सः।** ये मन्त्र के आदि में लगाकर जप करें।

भूमि लाभ हेतु ''ग्लौं'' बीज (स्तंभन वाणाय के बाद) मध्य में लगाकर जप करना चाहिये।

''रं'' आदि में लगाने से शत्रु को ताप व मृत्यु प्राप्त होवे।

''**ह्रीं**'' आदि में लगाने से राज्य वशीकरण होवे।

॥ मारण मन्त्र ॥

मन्त्र – ह्लीं हूं ग्लौं ह्लीं बगलामखि सर्व दुष्टानां वाङ्मन स्तम्भनं कुरु कुरु ग्रास ग्रास खाहि खाहि शोणित

ठ्रिं ठ्रिं (ड्रीं) ह्लीं ह्रीं हूं ह्लीं हूं फट्। (सांख्यायन तन्त्रे)

मन्त्रोद्धार में "**बिम्ब युग्म**" लिखा है जिसका अर्थ "ठ्रिं" या "ड्रिं" दोनों ही है। साधक जैसा उपयुक्त समझें वैसा करें।

विनियोग - अस्य मन्त्रस्य दुर्वसा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, जगद्व्यापकरूपिणी बगला देवता, ह्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, फट् कीलकं सर्व शत्रुक्षयार्थे विनियोगः।

॥ ध्यानम् ॥

चतुर्भुजां त्रिनयनां पीन्नोनत पयोधराम् ।
जिह्वा खड्गं च पात्रं च गदान्तां विभ्रतींभजे ॥
पीताम्बरधरां देवीं पीतपुष्पैरलङ्कृताम् ।
बिम्बोष्ठीं चारुवदनां मदाघूर्णित लोचनाम् ॥
सर्वविद्याकर्षिणी च सर्वज्ञानापहारिणीम् ॥

पार्वती के पास दक्षिणाभिमुख होवे तथा नग्न होकर जप करें। साथ में विघ्नराज के जप करें। प्रयोग से शत्रु को क्षय रोग होवे, अङ्ग भङ्ग होवे, अथवा अंधा होवे।

॥ प्रयोग स्थान फलम् ॥

मन्त्र जप का अलग अलग स्थान आधार पर अलग अलग फल है। देवालय में शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। नदी तीर के पास जप करने से शान्ति प्राप्त होती है। क्रूर सिद्धियाँ निर्जन वन में शीघ्र प्राप्त होती है। श्मशान महावैराग्य स्थान है, चण्डिका शीघ्र जागृत होती है।

पीपल के पेड़ के नीचे जप करने से व्याधिनाश होवे। विभीतक पेड़ के नीचे जप करने से शत्रु स्तम्भन होवे। कपीत्थ पेड़ के नीचे जप करने से भी रोग व शत्रु का स्तम्भन होता है। हरिद्रा गणपति जप कपित्थ पेड़ के नीचे अवश्य करें। पिचुमन्द पेड़ के नीचे जप करने से शत्रु गुप्त रोगी होवे। अलग अलग पेड़ का अलग अलग फल है। यथा -

वृक्ष	जप फल	वृक्ष	जप फल
विषैला पेड़, धत्तूर -	शत्रु स्तंभन।	नीम्ब वृक्षमूले -	विद्वेषण कर्म सिद्धि।
पलाश मूले -	गर्भस्राव	वटवृक्ष मूले -	ज्ञान प्राप्ति।
जम्बीर वृक्षे -	शत्रुभ्रमित होवे।	दूर्वा आसने -	आयुवृद्धि, शान्ति।
अर्कवृक्षे -	शत्रुनाश।	कुश वृक्ष समीपे -	विघ्ननाश।
बिल्व वृक्षे -	सर्वसिद्धि।	आम्रवृक्ष मूले -	धनलाभ, भूमिलाभ।
हरिद्रा समीपे -	सर्वसिद्धि, शत्रुस्तम्भन।	पुष्पवृक्ष समीपे -	यश प्राप्ति।
दाडिमी मूले -	फलप्राप्ति, भूमि लाभ।	बबूल वृक्ष मूले -	शत्रुच्चाटन।
		कदलीफल मूले -	शत्रु वातरोगी, पैरों में पीड़ा हो,

नदी, समुद्र, तालाब में नाभि पर्यन्त जल में खड़े होकर ग्रहण काल में जप करें तो सर्वसिद्धि होवे।

॥ पुष्पार्पण फलम् ॥

हमेशा सुगन्धित पुष्प चढ़ावें। सुन्दर किन्तु गन्धहीन पुष्प के अर्पण से फल प्राप्त नहीं होता है।

पीत पुष्प बगलामुखी को सदा प्रिय है। लाल पुष्प, दाडिम व करवीर पुष्पों से विघ्न व शत्रुनाश होवे। अलग अलग पुष्पार्चन का फल इस प्रकार है -

वृक्ष		जप फल	वृक्ष		जप फल
अशोक	-	सुयोग्य कन्या प्राप्ति।	काले, नीले पुष्प	-	शत्रुनाश।
तुलसी मंजरी	-	ज्वर, व्याधिनाश।	अर्क पुष्प	-	शत्रुनाश।
मल्लिका	-	ज्वर, पीड़ानाश।	धत्तूर पुष्प	-	शत्रुनाश।
नंदावर्त	-	वातरोग नाश।	चंपा, चमेली, श्वेत पुष्प	-	शान्ति, बुद्धि, विवेक प्राप्ति।
पलाश	-	वाग्मी होवे, विवाद विजय।			

॥ यन्त्रलेपन फलम् ॥

यन्त्र ताम्र या रजतपत्र या भोजपत्र पर बनाकर उसे काँच में जड़ा लेवें। पूजन पश्चात् उसके लेपन हेतु अलग अलग द्रव्यों को काम में लेनें से अलग अलग फल प्राप्त होवे।

लेप	-	फल	लेप	-	फल
चन्दन	-	राज्य लाभ।	निम्बपत्र रस	-	विद्वेषण।
फलों का रस	-	वशीकरण।	अर्कफल की पिष्ठी	-	विद्वेषण।
सुगन्धित द्रव्य, इत्र	-	वशीकरण।	धत्तूर	-	उन्माद।
हरिद्रा, तालक	-	स्तंभन।।	धत्तूर, निम्ब, तालक	-	उच्चाटन।
अर्क का दूध	-	स्तंभन।	कस्तुरी	-	दुष्टग्रहशान्ति, कृत्यानाश।
सरसों का चूर्ण	-	शत्रुनाश।			

श्मशान में प्रेत के निमित्त दिये अन्न का शेषांश, प्रेतभूमि की भस्म, मिट्टी, चिता का कोयला, इनको बकरी के दूध में मिलाकर, लेपन करने से शत्रु का नाश होवे।

॥ हवन कुण्ड फलम् ॥

अलग अलग प्रकार के हवन कुण्ड में होम करने का अलग अलग फल मिलता है।

कुण्ड		फल
चतुष्कोण कुण्ड	-	शान्ति, लक्ष्मी, पुष्टि, विघ्ननाश।
त्रिकोण कुण्ड	-	वाणिज्य कीर्ति, वशीकरण, स्तम्भन।
षट्कोण कुण्ड	-	विद्वेषण, उच्चाटनादि कर्म।
अष्टकोण कुण्ड	-	वाञ्छित फल प्राप्ति।

॥ हवनीय द्रव्य फलम् ॥

अलग अलग कामना हेतु अलग अलग हवनीय द्रव्य काम में लिये जाते हैं। प्रत्येक द्रव्य का फल अलग अलग है।

तिल, चावल (ब्रिही) - पुष्टि।
पंचमेवा - धन, पुष्टि।
सरसों - शत्रुनाश
हल्दी - स्तंभन।
त्रिमधु (घृत, शर्करा, शहद) - धनवृद्धि।
केतकी पुष्प - गणिका वशीकरण।
कालीमिर्च - रोगनाश।
लवण - वशीकरण।

(कालीमिर्च २० नग, सरसों १ तोला, लवण, हल्दी चुटकी भर प्रति आहुति लेवें)

कमलपुष्प - नेत्ररोग नाश, धनलाभ।
पंचगव्य - कृत्या व रोगनाश।
कालेपुष्प - वशीकरण, संमोहन।
ताड़पत्र - स्तम्भन
जायफल - रोगनाश, विजय।
दुर्वा+त्रिमधु - आयुवृद्धि, रोगनाश।
करवीर पुष्प - स्तंभन।

निम्ब+अर्कपत्र+निम्बतैल - विद्वेषण।

धत्तूर+उल्लूकपक्ष+काकपक्ष - शत्रुउच्चाटन

तिल, तैल, शाल्मली पुष्प का नग्न होकर चिता में होम करें तो शत्रु का मारण होता है।

राई व नमक के होम से वशीकरण होता है।

शाल्य+सत्तू+स्यमन्तपुष्प - कीर्ति, वश्य, स्तंभन।

दही, मिश्री, गुडुची, शर्करा - नाना रोग नाश।

मल्लिका पुष्प - सद्बुद्धि।
जायफल+लवण - रिपुन्माद।
कुक्कुटमांस - धनलाभ।
पंचगव्य - तापशान्ति।
खर्जूर - आर्कषण।
इक्षुखण्ड - धनप्राप्ति।
देवपुष्प, शर्करा - उच्चाटन।
त्रिमधु एवं छागमांस - भूमि लाभ।
गोमूत्र - रिपुभ्रम।
एरण्ड तैल - गजाकर्षण।
करंज तैल+काक, गृध्र के अङ्ग - आकर्षण।

अरनाल होम से शत्रु पित्त रोगी हो, निम्ब तैल व पत्र होम से शत्रु को वात उन्माद होवे। अर्कपत्र होम से शत्रु क्षय रोगी होवे। केला, अनार फलादि होम से द्रव्य प्राप्ति होवे।

॥ तर्पण द्रव्य फलानि ॥

विशेष द्रव्य को शुद्ध जल में ड़ालें उससे देवता का तर्पण करें तो कामना पूर्ति होती है। कामना द्रव्य फल भिन्न-भिन्न है। यथा -

गुडोदक (गुड़ का पानी या गुड़ बनाते समय पकाया गया गन्ने का रस) के तर्पण से शुभ फल प्राप्त होवे, कृत्यानाश

****
होवे। मोहिनी द्रव्य, सुगंधित द्रव्यों से तर्पण करने पर शत्रु का पूर्ण संमोहन होवे वह अपनी भूख प्यास भी खो देवे।

कुए के जल में निम्ब पत्र का रस ड़ालें तो शत्रु का विद्वेषण होवे।

अर्कफलदुग्ध रस - उच्चाटन कर्पूर मिश्रित जल - शान्ति, पित्तादि रोगनाश।

प्रेत निमित्त का अन्न, प्रेतभूमि की मिट्टी तथा श्मशान भस्म, हमीर के पत्ते जल में ड़ालकर रविवार को तर्पण करें तो शत्रुनाश होवे।

चन्दन, गंधोदक	-	ज्वरताप, विघ्नहरण।	कस्तूरी	-	राज्य लाभ।
पुष्टिकारक द्रव्य	-	द्रव्यलाभ।	मधुयुक्त जल	-	श्रीमान्, लक्ष्मीवान।
इक्षुरस	-	धनलाभ।	गोक्षीर	-	निधि प्राप्ति।
आरनाल	-	जलजनित व्याधिनाश।	हरिद्रा	-	स्त्री आकर्षण।
श्यमन्तपुष्प+जल	-	पुत्रवान्।	दधी, छाछ	-	ज्वरनाश।
काले पुष्प+जल	-	वशीकरण।			

कदलीफल, गोक्षीर, शर्करा ८-८ तोला लेवें, उसमें शुद्धजल मिलाकर तर्पण करें तो सभी विद्वानों को परास्त करने वाला होवे।

गधे के बच्चे का रक्त, घोड़े के बच्चे का रक्त को शुद्ध जल में ड़ालकर तर्पण करें तो शत्रु को उन्माद होवे। कोए का रक्त, श्वान का रक्त एवं शुद्ध जल के तर्पण से शत्रु का मारण होवे। मार्जार रक्त, जलोदक (शुद्धजल) के तर्पण से शत्रु को क्षय रोग होवे। उरग पक्षी का रक्त व जलोदक तर्पण से रिपुनाश होवे।

स्त्री का रज एवं शुद्धजल तर्पण (वामाचारे) शत्रुनाश होवे।

॥ अथ पुत्तल प्रयोगः॥

शत्रु को पीड़ा देने के लिये अन्न, धान्य, गुड़, वस्त्र, उड़द का चूर्ण, सप्तधान्य, श्मशान की मिट्टी, चौराहे की मिट्टी, शत्रु के पैर व घर की मिट्टी, गधे के लोटने स्थान की मिट्टी, सूअर के विश्राम स्थल की मिट्टी लेकर पुतली बनाकर उसमें शत्रु के नामसे प्राण प्रतिष्ठा करके उस पर अभिचार कर्म करके शत्रु को पीड़ा पहुंचायी जाती है। इस कर्म हेतु बलि अवश्य प्रदान करें।

वश्य कर्म में गणिका (वैश्या) के घर की मिट्टी अवश्य मिलायी जाती है।

१. सप्तधान्य या उड़द के आटे से श्मशान मिट्टी सहित शत्रु नाम की पुतली बनायें। हृदय में शत्रु का नाम लिखें, ललाट में मारय मारय, बाहु में दह दह, उरु में भस्मी कुरु कुरु लिखें। बगला मन्त्र जपें, लोह, चाकू या गर्म शलाका से उसका ताड़न करें। ७ वें दिन उसको जलाकर प्रयोग पूर्ण करें। भस्म को दूर बाहर कहीं डाल देवें। शत्रु का नाश होवे। उस भस्म को जहां ड़ालें वहां उन्माद होवे।

२. सप्तधान्य, वस्त्रादि से शत्रु के नाम की पुतली बनायें, हृदय में शत्रु का नाम लिखें। आंख, नाक, कान, हृदय, मुख, हाथ, पैर जोड़ों में लोहे की कीलें या नुकीले, विषैले कांटें चुभायें। जिन अंगों में जहां कांटे चुभाये हैं शत्रु को उन अंगों में पीड़ा होगी। शिर में चिताभस्त, हड्डी डालने से उसकी बुद्धि कमजोर होवे, कांटे चुभाने से पीड़ा

होवे। पुतली में श्वेत, काली व लाल चिरमी ड़ालें। पुतली को सतरंगी रेशमी वस्त्र में लपेटें। ३६ अथवर शताक्षरी बगलामुखी मन्त्र का जप कर शत्रु का बंधन करें। चौराहे या श्मशान में बलि देकर उसे कीचड़ अथवा गन्दे स्थान पर अधोमुख गाड़ देवें। शनैः शनैः पुतली के गलने पर शत्रु का शरीर बलहीन होता जायेगा। चौराहे पर पुतली को गाड़ने पर लोगों की पदचाप बढने के साथ ही शत्रु की बुद्धि शिथिल होने लगेगी, शत्रु का उच्चाटन होगा।

३. तालपत्र पर यन्त्र लिखें, बगला बीज सहित शत्रु का नाम लिखें। उस पत्र में पुतली को लपेट कर बगला शताक्षरी मन्त्र का जप करें।

प्रेतस्थान के बरतन पर चिता के कोयले से शत्रु का नाम रविवार को लिखें। पुतली को उस पात्र में अधोमुख रखें। रात्री में चिता काष्ठ या चिताग्नि से उस बरतन को तपायें। नग्न होकर कर्म करें, बगला मन्त्र का जप करें। पश्चात् उस बरतन को गाड़ देवें तो शत्रु को पीड़ा होवे।

४. प्रेतस्थान की मिट्टी, प्रेत निमित्त का अन्न, श्मशान भस्म, मोहिनी पत्र, मद्य या गुड़ोदक (गुड़ का जल) से पिष्टि बनाकर पुतली बनायें। हृदय में बगला लिखकर शत्रुनाम लिखें। ललाट में ''हूं'' सर्वाङ्ग में ''रं'' लिखें। प्रेताग्नि से तपायें या भस्म करें। शेष क्रिया पूर्ववत् है।

५. पूर्व विधि से पुतली बनायें, उस पर आक के दूध का लेपन करें। पुतली को अधोमुख प्रेतस्थान के पात्र में रखकर तपायें। पश्चात् उस पात्र को गाड़ देवें। शेष क्रिया पूर्ववत् है।

६. आक के दूध में हल्दी मिलाकर, आक के पत्ते पर बगला बीज मन्त्र ''ह्लीं'' सहित शत्रुनाम लिखें। चारों ओर बगला मन्त्र लिखें। पुतली को अर्क के दूध का लेपन करें। आक पत्ते पर पुतली का वेटन करें। दीपशिखा पर पुतली को तपायें फिर अर्क दूध का लेपन करें। यह क्रिया ७ दिन करें शत्रु का मारण होगा। बगला शताक्षर मन्त्र जपें।

७. शत्रु के नाम की पुतली बनाकर उसके आंख, नाक, कान, मुंह, गण्ड स्थल, पेट में लोहे की कीलें चुभायें। कपाल में भी कीलें चुभोयें। कुक्षि से ५-५ पीठ में ७-७ तथा पैरों में १२-१२ कांटें विषैले वृक्ष के चुभोयें। प्रेत स्थान के वस्त्र में लपेटकर श्मशान में गाड़ देवें। ३६ अथवा १०० अक्षरी बगला मन्त्र का जप करें। बलि प्रदान करें तो शत्रु को पीड़ा होवे।

८. शत्रु हेतु पुत्तल प्रयोग उपरोक्त विधि से करें। शत्रु के प्रत्येक अंगों का छेदन कर काट काट कर टुकड़े करें, उन्हें कुत्ते को खिलायें या श्मशान चिता में ड़ाल देवें। शत्रु का नाश होवे।

॥ अन्य प्रयोग ॥

१. शुक्रवार को हल्दी के पत्ते या हल्दी की गांठें बगीचे से लायें। ७ दिन तक छाया में उन्हें सुखायें। बिना नीचे गिरा गोमय व गौमूत्र लेवें। सभी को एक पात्र में एकत्र कर उसमें नदी का जल ड़ालें। पात्र में बगला यन्त्र या मण्डल की कल्पना करें। बगला मन्त्र का जप करें। पात्र में हल्दी ड़ालें। रविवार को इसे चूल्हे पर रखें, उसमें दुगना जल मिला लेवें।

पीपल की काष्ठ चूल्हे में ड़ालकर आँग जलायें। मन्त्र का जप करें। पश्चात् पात्र को उतार कर ठण्डा करें, हल्दी व गोमय को अलग करें। हरिद्रा को अलग कर शुद्ध जल से धोयें। छायां में सुखाकर उसके छोटे छोटे टुकड़े कर मणिये बनायें। रजोवती स्त्री के द्वारा काते गये सूत में पिरोकर रविवार को माला बनायें। माला का पूजन करें, घी

शर्करा, क्षीर का भोग लगायें।

अं आं........कं खं........हं लं क्षं इन ५२ मातृका वर्णों का १०८ बार जप करें। बगलामुखी के एकाक्षरी **''ह्लीं''** मन्त्र को १००० बार जप कर माला को शुद्ध करें। हरिद्रा (पीले) वस्त्र से माला को ढक देवें। पीले पुष्प, पीले चन्दन से पूजा करें। रात्री में जप करें, पश्चात् सभी कार्यो हेतु माला का प्रयोग करें।

२. शुक्रवार को हल्दी चूर्ण, पुष्प, कमल, कस्तूरी, श्रीखण्ड, अगरु, कुंकुम, गोरोचन, जल व गुड़ से ४ अंगुल की पुतली बनायें। उसको वस्त्र, टींकी, इत्यादि से शृंगार कर देवी की प्रतिष्ठा कर पूजन करें। एकाक्षरी मन्त्र या अन्य मन्त्र का जप करें। जप अपनी कामनानुसार १ लक्ष, ३६००० अथवा ९ दिन तक करें।

॥ ध्यानम् ॥

अम्बां पीताम्बराढ्यां अरुणकुसुम गंधानुलेपां त्रिनेत्राम् ।
गंभीरां कम्बुकण्ठीं कठिनकुचयुगां चारुबिम्बाधरोष्ठीम् ॥
शत्रो जिह्वां च खड्गं शरधनुसहितां व्यक्तगर्वाधिरूढाम् ।
देवीं तां स्तंभरूपां हृदि परिवसतमम्बिकां तां भजामि ॥१॥

सदा च सुन्दरीं देवी द्विभुजां बगलाम्बिकाम् ।
हस्ते वज्रधरां देवीं पात्रं च विभ्रतीम् ।
पीतवर्णां सदाघूर्णांमर्द्धचन्द्रां च पुत्तलीम् ॥

प्रयोग पश्चात् कन्या ब्राह्मण भोजन कराकर पुत्तली का विसर्जन करें।

३. शत्रु को ऊँट पर चढ़े हुये व मार्ग में भटकते हुये का ध्यान करें तो उसका उच्चाटन हो।

४. शत्रु को महिष (भैंसे) या गधे पर मुण्डन करके बैठे हुये का ध्यान कर मन्त्र जप करें तो शत्रु अनेक विघ्नों को प्राप्त होवे।

५. शत्रु निर्वस्त्र एवं अधोमुख होकर सूर्य मण्डल में समा रहा है, ऐसी कल्पना करने से शत्रु के सभी कार्य उल्टे होने लगते हैं, तथा शत्रु का मारण होता है।

६. मिट्टी या किसी अन्य पदार्थ से बैल की मूर्ति बनायें। उसमें शत्रु के नाम से प्रतिष्ठा करें। शत्रु नाम सहित बगला यन्त्र उसके गले में बांधे। बैल के गले में रस्सी बांधकर उसे जमीन में गड़ी हुई कील से बांधे। पश्चात् मन्त्र जप करते रहें तथा दूसरे हाथ से बैल को उस कील के चारों ओर उल्टा घुमाते रहें। इस क्रिया से शत्रु का उच्चाटन होगा। भ्रमित होकर, वृथा घूमता रहेगा, वहीं रुका रहेगा, स्तंभित होगा।

आपके प्रति शत्रुभाव परिवर्तित होकर मित्रवत् होंगे। वाद विवाद में बुद्धि उल्टी होकर बुद्धि हीन हो जायेगा। उसके सभी प्रयास उल्टे होंगे और आपकी विजय होगी।

७. रविवार को प्रेत (मुर्दे) का वस्त्र लायें, मंगलवार को नग्न होकर वस्त्र पर १००० जप करें। वस्त्र को जला देवें। वस्त्र की भस्म, श्मशान की भस्म को मिलाकर शत्रु को खिलायें या उसके घर में ड़ालें, शत्रु का स्तम्भन होगा।

८. गधे के लेटने के स्थान की मिट्टी को अभिमन्त्रित कर शत्रु के स्थान पर ड़ालें, शत्रु को आलस्य प्राप्त होगा, रोजगार कम होगा।

९. दन्तकाष्ठ को लाकर उसे अभिमन्त्रित करें, उससे वैरी मंजन करें तो उसका स्तंभन हो।

१०. ताल पत्र पर वैरी का नाम लिखें, बगला यन्त्र लिखें। दीपशिखा पर लपेट कर १५ दिन तक तपायें। शत्रु का मारण होवे।

११. रविवार को चिता काष्ठ लाकर उसकी लेखनी बनायें। उससे प्रेत वस्त्र पर काली स्याही से शत्रु का नाम लिखें। उसके चारों ओर ''**ह्लीं**'' लिखें। उसके बाहर बगला मन्त्र लिखकर चारों ओर ''रं'' लिखें। प्रेत रस्सी (श्मशान की रस्सी) से उसकी पोटली बांधकर, उसे कपाल में रखकर मंगलवार को गाड़ देवें। शत्रु मंद बुद्धि व रोगग्रस्त होगा।

॥ परप्रयोग शमन ॥

१. बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल बनायें। मध्य में ''**ह्लीं**'' सहित साध्य नाम लिखें। षट्कोण में ''**ह्लीं बगलामुखि**'' या पूरा ३६ अक्षर का मन्त्र लिखें। अष्टदल में बगला गायत्री के ३-३ वर्ण लिखें। त्रिकोण में ''**ह्लीं ह्लीं ह्लीं**'' लिखें। अष्टदल के बाहर **अं आं........हं लं क्षं** मातृका वर्ण लिखें। भुपूर में इन्द्रादि लोकपालों का पूजन करें।

पंचगव्य, नंदावर्त्त पुष्प से होम करें, कृत्यानाश होवे। अशोक पुष्प होम से सुयोग्य कन्या प्राप्त होवे। तुलसी मंजरी से पूजा करें विघ्न नाश होवे।

२. यदि स्वयं साधक के द्वारा ही शत्रु के लिये पुत्तल प्रयोग किया गया है तो उस पुतली को रविवार को निकालें। पूजा कर बलि प्रदान करें। पुतली के कांटे निकालकर दूध से धोयें। कंटकों को निकाल कर दूध से धोयें तथा कुए में डाल देवें। कलश लेकर उसमें जल ड़ालें। उत्तराभिमुख होकर जप करें। पश्चात् पुतली का मार्जन कर विसर्जन करें। रोगी का दिन में तीन बार पक्षीराज के मन्त्र के जल से मार्जन करें। जब तक ठीक नहीं हो मार्जन करते रहें।

३. बगला गायत्री का जप कर रोगी का मार्जन करें। श्रीसूक्त तथा बगला गायत्री से होम करें।

४. बगला शताक्षरी मन्त्र जप कर, बगला गायत्री से होम कर मार्जन करें।

५. परप्रयोग शमन, शत्रु का स्तंभन व शत्रु को बुद्धिहीन करने में यह मन्त्र प्रबल है।

॥ मन्त्रोद्धार ॥

उद्धेस्तारमादौ च स्तब्धमायां ततः परम् ।
श्रीर्माया शक्तिवाराहं वाग्भवं मन्मथं तथा ॥
तार्क्ष्यबीजं च बगलामुखीति पदमुद्धरेत् ।
परप्रयोगमुच्चार्य ग्रासय ग्रासय युग्मकम् ॥

पूर्ववन्नवबीजं च परप्रज्ञापदं वदेत् ।
पूर्ववन्नवबीजं च स्तंभनास्त्र पदं वदेत् ॥
रूपिणीपदमुच्चार्य बुद्धिं नाशय युग्मकम् ।
पंचेन्द्रिय पदं चोक्त्वा ज्ञानं भक्ष द्वयं वदेत् ॥

पूर्वन्नवबीजं च बगलामुखि चोच्चरेत् ।
हुं फट् स्वाहा समायुक्तं बगलामंत्रमुत्तमम् ॥
शतोत्तरमन्त्र बीजमष्टंविंशतिरेव च ॥

मन्त्र – ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं बगलामुखि परप्रयोगं ग्रासय ग्रासय ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं परप्रज्ञा ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं स्तम्भनास्त्र रूपिणी बुद्धिं नाशय नाशय पंचेन्द्रियज्ञानं भक्ष भक्ष ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

परन्तु मन्त्रोद्धार में ९ बीजों की जगह ८ बीज ही बनते हैं, अतः हमने वराह बीज का प्रयोग कर ९ बीज बनायें हैं। फिर भी मन्त्र ९० वर्णों का ही बनता है, परन्तु मन्त्रोद्धार १२८ वर्णों का बताया है। अतः नवबीज पञ्चास्त्र मन्त्रों की तरह अधिक बार प्रयुक्त होंगे। शक्ति वराह (क्लीं हूं) भी होता है।

अन्य मन्त्र – ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं बगलामुखि ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं परप्रयोगं ग्रासय ग्रासय ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं परप्रज्ञा ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं स्तम्भनास्त्ररूपिणी ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं पंचेन्द्रियज्ञानं भक्ष ज्ञानं भक्ष ॐ ह्लूीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं ऐं क्लीं क्षौं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

विनियोग – अस्य मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, मनोर्गायत्री छन्दः, परविद्या भक्षिणी बगला देवता परकृत्यानिवारणार्थे विनियोगः।

न्यास – आं हृदयाय नमः, क्रों शिरसे स्वाहा, ह्रीं शिखायै वषट्, ऐं कवचाय हुं, श्रीं अस्त्राय फट्।

(यहां नेत्र न्यास नहीं दिया गया है)

॥ ध्यानम् ॥

सर्वमन्त्रमयी देवीं सर्वाकर्षणकारिणीम् ।
सर्वविद्याभक्षिणीं च भजेहं विधि पूर्वकम् ॥

लघुषोढादिन्यास कर वीराचार से विधिवत् पूजन कर होम करें। रोगी का मार्जन करें।, श्री सूक्त से होम करें।

॥ अथ बगला तंत्रोक्त कुञ्जिका स्तोत्र प्रयोगः॥

विनियोग :- काली तन्त्रोक्त समान पूर्ववत् है तथा **श्रीत्रिगुणात्मिका श्रीपीताम्बरा बगलामुखि स्वरूपिण्यै श्री महादुर्गा प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।**

मंत्र :- ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ नमश्चामुण्डे श्रीबगलानने अघोरऽमोघे वरदे विच्चे (त्रिखण्डी विद्या) **ॐ ग्लौं हूं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।**

षडङ्गन्यास :- ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

लक्ष्मी प्रदान समये नवविद्रूमाभाम् विद्याप्रदान समये शरदिन्दुशुभ्राम् ।
विद्वेषि वर्ग विजयेऽपि तमालनीलाम् देवीं त्रिलोक जननीं शरणं प्रपद्ये ॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं फट् ऐं ह्रीं क्लीं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रीं क्लीं क्लीं स्त्रावय स्त्रावय वशिष्ठ नारद संवाद गौतम विश्वामित्र दक्षप्रजापति ब्रह्माण ऋषयः सर्वैश्वर्यकारिणि श्रीदुर्गादेवता गायत्र्या शापानुग्रह कुरु कुरु हुं फट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अमोघकवच स्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव। ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद स्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ शापाद् विमुक्ताभव।

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

॥ शिव उवाच ॥

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिका स्तोत्रमुत्तमम् ।
येन मंत्र प्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥१॥

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२॥

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥३॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥४॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥५॥

नमस्ते शुम्भहन्त्रै च निशुम्भासुरघातिनि ।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे ॥६॥

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥७॥

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ।
विच्चे चाऽभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥८॥

॥ बगला मंत्रः॥

ॐ ह्लीं बगलामुखि नित्यम् ऐहि ऐहि रविमण्डलमध्यात् अवतर अवतर सान्निध्यं कुरु कुरु स्वाहा। ऐं ह्रीं श्रीं ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः बगले चतुर्भुजे मद्‌गरशर संयुतेदक्षिणे जिह्वावज्र संयुतेवामे श्रीमहाविद्ये पीतवस्त्रे पंचमहाप्रेताधिरूढे सिद्धविद्याधरवंदिते ब्रह्मविष्णुरुद्रपूजिते आनंदस्वरूपे विश्वसृष्टिस्वरूपे महाभैरवरूपधारिणि स्वर्गमृत्यु पातालस्तंभिनि वाममार्गाश्रिते श्रीबगले ब्रह्मविष्णुरुद्ररूप निर्मिते षोडशकलापरिपूरिते दानवरूप-

सहस्त्रादित्य शोभिते त्रिवर्णे एहि एहि मम हृदयं प्रवेशय प्रवेशय शत्रुमुखं स्तंभय स्तंभय अन्यभूतपिशाचान् खादय खादय अरिसैन्यं विदारय विदारय परविद्यां परचक्रं छेदय छेदय वीरचक्रं धनुषा संभारय संभारय त्रिशूलेन छिन्धि छिन्धि पाशेन बंधय बंधय भूपतिं वश्यं कुरु कुरु संमोहय संमोहय विना जाप्येन सिद्धय सिद्धय विना मंत्रेण सिद्धिं कुरु कुरु सकलदुष्टान् घातय-घातय मम त्रैलोक्यं वश्यं कुरु कुरु सकलकुलराक्षसान् दह दह पच पच मथ मथ हन हन मर्दय मर्दय मारय मारय भक्षय भक्षय मां रक्ष रक्ष विस्फोटकादीन् नाशय नाशय ॐ ह्रीं विषमज्वरं नाशय नाशय विषं निर्विषं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

धां धीं धूं धूर्जटे पत्निं वां वीं वूं वागधीश्वरी ।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥९॥

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी ।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥१०॥

अं कं चं टं तं पं यं शं बिन्दुराभिर्भव ।
आविर्भव विमर्दय हं सं लं क्षं मयि जाग्रय जाग्रय ॥
त्रोटय त्रोटय जम्भय -२, दीपय - २ मोचय हूं फट् जां वौषट् ॥११॥
ऐं ह्रीं क्लीं रञ्जय - २ सञ्जय -२, गुञ्जय -२ दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥१२॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ।
म्लां म्लीं म्लूं दीव्यती पूर्णा कुञ्जिकायै नमो नमः ॥
सां सीं सप्तशतीं सिद्धिं कुरुष्व जपमात्रतः ॥१३॥

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥१४॥

यस्तु कुञ्जिकाया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥१५॥

इस विद्या के मूल मंत्र के १०००० जप करे तथा स्तोत्र के ११०० पाठ करके त्रिमधु युक्त हवन करें तो सर्वकार्य सिद्धि होवे।

॥ काली तंत्रोक्त कुञ्जिका स्तोत्र प्रयोग:॥

दुर्गासप्तशती के अन्तर्गत कुञ्जिका स्तोत्र, नवार्ण मंत्र के साथ दिया गया है। जिस तरह दुर्गा सप्तशती के ऋष्यादि नवार्ण मंत्र के अनुरूप है उसी तरह कुञ्जिका स्तोत्र के ऋष्यादि भी नवार्ण के अनुरूप समझने चाहिये।

दक्षिण काली हृदय स्तोत्र को कुञ्जिका स्तोत्र में गर्भस्थ कर प्रस्तुत प्रयोग द्वारा दक्षिण कालिका की सिद्धि हेतु प्रयोग दिया गया है।

विनियोग :- अस्य श्री सिद्धकुञ्जिका स्तोत्र मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि। श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता। ह्रीं शक्ति सहिताय नन्दा शाकंभरी भीमा शक्तय, रक्तदंतिका दुर्गा भ्रामर्यो सहिताय ऐं बीजानि, क्लीं कीलकं, अग्निवायुर्सूर्यास्तत्त्वानि, ऋग्यजुः सामानि स्वरूपाणि,

श्री त्रिगुणात्मिका दक्षिण कालिका स्वरूपिण्यै श्री महादुर्गा प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

मंत्र :- ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ नमश्चामुण्डे दक्षिणकालिके अघोरेऽमोघे वरदे विच्चे।(त्रिखण्डी विद्या) ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

षडङ्गन्यास :- क्रीं हृदयाय नमः। हुं शिरसे स्वाहा। स्त्रीं शिखायै वषट्। ह्रीं कवचाय हुं। फट् नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

लक्ष्मी प्रदान समये नवविद्रूमाभाम् विद्याप्रदान समये शरदिन्दुशुभ्राम् ।
विद्वेषि वर्ग विजयेऽपि तमालनीलाम् देवीं त्रिलोक जननीं शरणं प्रपद्ये ॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं फट् ऐं ह्रीं क्लीं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रीं क्लीं क्लीं स्त्रावय स्त्रावय वशिष्ठ नारद संवाद गौतम विश्वामित्र दक्षप्रजापति ब्रह्माण ऋषयः सर्वैश्वर्यकारिणि श्रीदुर्गादेवता गायत्र्या शापानुग्रह कुरु कुरु हुं फट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अमोघकवच स्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव। ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद स्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ शापाद् विमुक्ताभव।

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

॥ शिव उवाच ॥

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिका स्तोत्रमुत्तमम् ।
येन मंत्र प्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥१॥

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२॥

कुंझिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥३॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥४॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥५॥

नमस्ते शुम्भहन्त्रै च निशुम्भासुरघातिनि ।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे ॥६॥

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥७॥

चामुण्डा चण्डघाती च यैक्कारी वरदायिनी ।
विच्चे चाऽभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥८॥

ऐं ह्रीं श्रीं हंसः सोहं अं आं ब्रह्मग्रंथिं भेदय भेदय इं ईं विष्णुग्रंथिं भेदय-२ उ ऊं रुद्रग्रंथिं भेदय भेदय (इसके बाद दक्षिणकालिका व महाकाल मंत्र को स्वरादि से गर्भस्थ किया गया है) अं क्रीं आं क्रीं इं क्रीं ईं हूं उ हूं ऊं ह्रीं ऋं ह्रीं ॠं दं लृं क्षिं ॡं णें एं कां ऐं लिं ओं कें औं क्रीं अं क्रीं अः क्रीं अं हूं आं हूं इं ह्रीं ईं ह्रीं उं स्वां ऊं हां यं हूं रं हूं लं मं वं हां सं कां षं लं सं प्रं हं सीं लं दं क्षं प्रं यं सीं रं दं लं ह्रीं वं ह्रीं शं स्वां षं हां शं हं लं क्षं महाकालभैरवी महाकालरूपिणि क्रीं अनिरुद्धसरस्वति हूं हूं ब्रह्मग्रहबंधिनि विष्णुग्रहबंधिनि रुद्रग्रहबंधिनि गोचरग्रह बंधिनि आधिव्याधिग्रहबंधिनि सर्वदुष्टग्रह बंधिनि सर्वदानवग्रह बंधिनि सर्वदेवताग्रहबंधिनि सर्वगोत्रदेवताग्रह बंधिनि सर्वग्रहोपग्रह बंधिनि क्रीं कालि क्रीं कपालिनि क्रीं कुल्ले हूं कुरुकुल्ले हूं विरोधिनी ह्रीं विप्रचित्ते ह्रीं उग्रे क्रीं उग्रप्रभे क्रीं दीप्ते क्रीं नीले हूं घने हूं बलाके ह्रीं मात्रे ह्रीं मुद्रे ॐ मिते असिते असितकुसुमोपमे अष्टमातृके ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। अष्टभैरवरूपे ह्रीं नवनाथात्मिके ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ क्रीं हूं ह्रीं मम पुत्रान् रक्ष रक्ष ममोपरि दुष्टबुद्धिं दुष्ट प्रयोगान् कुर्वन्ति कारयन्ति करिष्यन्ति तान् हन हन मम मम सिद्धिं कुरु कुरु मम दुष्टं विदारय विदारय मम दारिद्र्यं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु-२ आत्मतत्त्वं देहि देहि हं सः सोहम् क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा नवकोटिस्वरूपे आद्ये आदिविद्ये अनिरुद्धसरस्वति स्वात्मचैतन्यं देहि देहि मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ मम मनोरथं कुरु कुरु स्वाहा।

धां धीं धूं धूर्जटे पत्निं वां वीं वूं वागधीश्वरी ।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥९॥

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी ।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥१०॥

अं कं चं टं तं पं यं शं बिन्दुराभिर्भव ।
आविर्भव विमर्दय हं सं लं क्षं मयि जाग्रय जाग्रय ॥
त्रोटय त्रोटय जम्भय -२, दीपय - २ मोचय हूं फट् जां वौषट् ॥११॥
ऐं ह्रीं क्लीं रञ्जय - २ सञ्जय -२, गुञ्जय -२ दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥१२॥

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ।
म्लां म्लीं म्लूं दीव्यती पूर्णा कुञ्जिकायै नमो नमः ॥
सां सीं सप्तशतीं सिद्धिं कुरुष्व जपमात्रतः ॥१३॥

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहितवे ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥१४॥

यस्तु कुञ्जिकाया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥१५॥

इस विद्या के मूल मंत्र के १०००० जप करे तथा स्तोत्र के ११०० पाठ करके त्रिमधु युक्त हवन करें तो सर्वकार्य सिद्धि होवे।

॥ अथ कुब्जिका प्रयोग:॥

कुब्जिका कन्यारूप में अवस्थित है तथा विचरण करने वाली है। अतः इसकी उपासना से चित्त भ्रांति दूर होकर मन की स्थिरता प्राप्त होती है। इसकी उपासना करने से शत्रुओं का नाश होता है।

मंत्राः - **(१) ॐ श्रीं प्रीं कुब्जिके देवि ह्रीं ठः स्वाहा।** (देवीरहस्ये)

(२) हलक्षकमह्लसवरयऊं क्षम्लकस्हरयव्रूं रक्षम्लह्लकसछव्य्रऊं हसखफ्रें ह्लहलवरयकऊं लक्षमह्लजरक्रव्य्रऊं ब्लहतह्लसचें सहक्ल ह्रीं ख्फ्रें। (महाकाल संहिता कामकलाखण्डे)

यंत्रोद्धार (देवीरहस्ये):-

बिन्दुस्त्रिकोणं रसकोणयुक्तं वृत्तं ततो नागदलं रवृत्तम् ।
धारागृहं सर्वरहस्यगर्भं श्रीकुब्जिका यंत्रमिदं मयोक्तम् ॥

मंत्र - ॐ ऐं ह्रौं श्रीं खं हें हसक्षमलचवयं भगवति अम्बिके ह्रां ह्रीं क्षीं क्षौं क्ष्रूं क्रीं कुब्जिके ह्रां ॐ ङ ञ न ण मेऽघोरमुखि व्रां छ्रां छ्रीं किलि किलि क्षौं विच्चे ख्यों श्रीं क्रों ॐ ह्रों ऐं वज्रकुब्जिनि स्त्रीं त्रैलोक्याकर्षिणि ह्रीं कामाङ्गद्राविणि ह्रीं स्त्रीं महाक्षोभकारिणि ऐं ह्रीं क्षौं ऐं ह्रीं श्रीं फें क्षौं नमो भगवति क्ष्रौं कुब्जिके हें ह्रों क्रैं ङ ञ ण न मेऽघोरमुखि छ्रां छां विच्चे ॐ किलि किलि। (अग्निपुराणे)

॥ ध्यानम् ॥

नीलोत्पलदलश्यामा षड्वक्त्रा षट्प्रकारिका । चिच्छक्तिरष्टादशाख्या बाहुद्वादश संयुता ॥
सिंहासनसुखासीना प्रेतपद्मोपरि स्थिता । कुलकोटि सहस्त्राढ्या कर्कोटो मेखलास्थितः ॥
तक्षकेणोपरिष्टाच्चगले हारश्च वासुकिः । कुलिक कर्णयोर्यस्याः कूर्म कुण्डलमण्डलः ॥
भ्रुवो पद्मो महापद्मो वामे नागः कपालकः । अक्षसूत्रं च खट्वाङ्गं शङ्खं पुस्तं च दक्षिणे ॥
त्रिशूलं दर्पणं खड्गं रत्नमालाऽकुशं धनुः । श्वेतमूर्ध मुखं देव्या उर्ध्वश्वेतं तथाऽपरम् ॥
पूर्वास्यं पाण्डुरं क्रोधि दक्षिणं कृष्णवर्णकम् । हिमकुन्देन्दुभं सौम्यं ब्रह्मा पादतले स्थितः ॥
विष्णुस्तु जघने रुद्रो हृदि कण्ठे तथेश्वरः । सदाशिवो ललाटे स्याच्छिवस्तस्योर्ध्वतः स्थितः ॥

॥ अथ कुब्जिका मन्त्रा:॥

कुब्जिका मंत्र - अग्निपुराण के अनुसार पूजा क्रमोक्त दिया गया है। पुरश्चर्यार्णव में कुब्जिका का ३२ अक्षर का विलोम मंत्र दिया गया है। मन्त्र इस प्रकार से है

(१) **च्चेवि णिकि णिकि छीं छां खिमुरघोअ मे न ण ञ ङह्रौं ह्रां ह्रीं यैकाब्जिकुश्री त्यैवगभमोन।**

सोममंत्र -नमो भगवत्यै श्रीकुब्जिकायै ह्रीं ह्रां ह्रौ ङ ञ ण न मे अधोरमुखि छां छीं किणि किणि विच्चे।

(२) दूसरा विलोम मंत्र- (पुरुश्चर्याणवे)- **यस्त्राअ यैर्वाणाकक्रो च्चेवि णिकि णिकि ययात्रत्रने केरिताहंमजलकु छीं छीं यचावकयैपारू हुबखीमुरघोअ मे न ण ञ ङयैखाशि खेशिरर्वव**

****

ह्रीं ह्रां ह्रौं सेरशि यपादीलकु यैकाब्जिकुश्री ययादह्न यैलामत्कहत्यैवगभ मोन।

॥ ध्यानम् ॥

वृषभे संस्थितं देवं खवर्णरूपशोभितम् ।
एकवक्त्रं त्रिनेत्रं च भुजाष्टदशधारिणीम् ॥
परशु डमरुं वाणं खड्गमङ्कुश वज्रकम् ।
शङ्खं च वेणुवाद्यं च वरदं दक्षिणे करे ॥
वामे खट्वाङ्गशूलं च धनुः फलकपाशकम् ।
घण्टां कपालं वेणुं च अभयं भयनाशनम् ।
पट्टेन बंधितं जानुवामोरुस्था च कुब्जिका ॥

(३) **हलक्षकमहसवरयऊं क्षम्लकस्हरयव्रूं रक्षम्लहकसछव्यूऊं हसखफ्रें हहलवरयकऊं लक्षमहजरक्रव्यूऊं ब्लहतहसचैं हसक्लह्रीं खफ्रें।**

(४) **हलक्षकमहसवरयऊं क्षम्लकस्हरयव्रूं रक्षम्लं हकसछव्यूऊं हसखफ्रें हहदूलवरयकऊं लक्षमहजरक्रव्यूऊं ब्लहतहसचैं सहक्ल ह्रीं खफ्रें।** (महा. संहि.)

कुब्जिका मंत्र नवकूट का (नवपाद) है प्रत्येक कूट की महिमा इस प्रकार कही है।

आदौ वैहायसं कूटं वायवीयं द्वितीयकम् ।
आग्नेयकूट तार्तीय फेत्कारी तुर्यमुच्यते ॥
पंचमं वारुणं कूटं शांकरं षष्ठमुच्यते ।
सप्तमं हंसकूटं स्यात् पराकूटमथाष्टमम् ।
नवमं डाकिनी कूटं गुप्तं सर्वागमेष्वपि ॥

उत्कीलन - स्वाहा। (देविरहस्ये)

॥ कुब्जिका पीठ पूजनम् ॥

साधक पहले न्यास करें- **ह्रीं नमः गुह्ये।**

करन्यास - ह्रां फट्, ह्रीं फट्, ह्रूं फट्, ह्रैं फट्, ह्रौं फट्, हः फट् से करन्यास करे।

षडङ्गन्यास :- काली काली हृदये। दुष्टचाण्डालिका शिरसे स्वाहा। ह्रीं स्फें ह स ख क छ ड ओंकारो भैरवः शिखायै वषट्। भेलखी देव्यै कवचाय हुं। रक्तचण्डिका च दूत्यै भ्रुवौ। गुह्यकुञ्चिका अस्त्राय फट्।

यन्त्र रचना - त्रिकोण, षट्कोण, पञ्चकोण, ३२ दल, अष्टदल एवं भुपूर बनायें।

मध्य में देवी का आवाहन, त्रिकोण की ३ रेखाओं में तीनों **शुद्धियों** का पूजन, षट्कोण में **षड्ङ्गशक्तियों** का पूजन करें।

पंचकोणे :- मण्डल के अग्निकोण, ईशानकोण, नैऋत्यकोण में - **हूं शिरसे नमः। वायुकोण- शिरसे नमः।** मण्डल मध्यमे- **कवचाय हुं। एवं अस्त्राय फट्।** से पूजन करे।
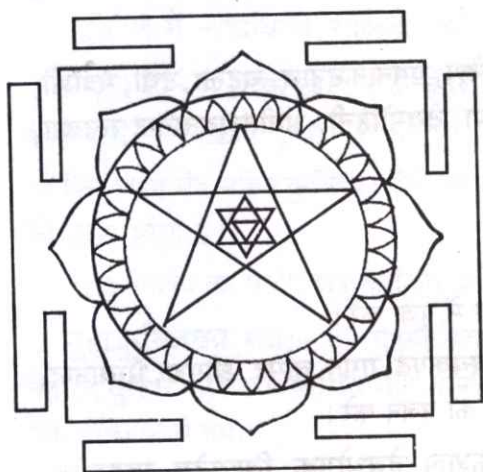
॥ श्री कुब्जिका यन्त्रम्.॥

द्विंत्रिशद दले :- बत्तीस दलों के कमल पर "**ह स क्ष म ल न व वषट् स च**" मंत्र से पूजन करे।

अष्टदले :- पूर्वादि दिशाओं में। **ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, माहेन्द्री, चामुण्डा, एवं चण्डिका** का पूजन करे।

दिक्षु :- ईशानकोण, पूर्वदिशा, अग्निकोण, दक्षिणदिशा में - "**कुसुममाला देवी**" तथा "**जालंधर पूर्णगिरि, कामरूप**" आदि पीठ पर्वतों का पूजन करे।

वायुकोण, ईशान कोण, अग्निकोण, नैऋत्य तथा मध्य में- "**वज्रकुब्जिकायै नमः**" एवं "**अनादिविमल, सर्वज्ञविमल, प्रसिद्ध विमल, संयोगविमल, समय विमल**" का पूजन करे

वायव्य, ईशान, नैऋत्य, अग्निकोण एवं मण्डल के उत्तरभाग में:- "**कुब्जा, खिङ्खिनी, षष्ठी, सोपन्ना, सुस्थिरा**" एवं "**रत्नसुन्दर्यै नमः**" से पूजन करे। ईशाने- **अष्टनाथाय नमः**। अग्निकोण, वायव्य एवं पश्चिम में- "**मित्र, औडीश व षष्ठी**" के साथ "**वर्षा**" का पूजन करें।

पश्चिम दिशा में - **गगनरत्न व कवचरत्न** की पूजा करे।

वायव्य, ईशान, अग्निकोणे - **ब्रूं नमः। ॐ पंच जनाय नमः**। दक्षिण एवं अग्निकोण में - **पंचरत्नाय नमः। जेष्ठायै नमः। रौद्र्यै नमः। अंतिकायै नमः।**

ॐ पंचमहावृद्धाय नमः (ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ईश्वर, सदाशिव)।

दक्षिण दिशा में चौकोर मण्डल में गणेश जी का पूजन करे। वामभाग में **वटुक** तथा दक्षिण भाग में- **गौं गुरवे नमः। ॐ षोडशनाथाय नमः।**

पश्चात् इन्द्रादि दिक्पालों का पूजन करे।

॥ पादुका पूजनम्॥

देवी रहस्य में जो यंत्र बताया है उसके अनुसार पूजा क्रम व देवी रहस्य व अग्निपुराण दोनों में ही नहीं दिया गया है। अग्निपुराण के अनुसार त्रिकोण, षट्कोण, पंचकोण, बत्तीसदल, अष्टदल, व भुपूर में पादुका पूजन करे। जैसा कि पूर्व में पूजन दिया गया है।

त्रिकोणे - "**वामा, ज्येष्ठा, रौद्री**" का पूजन करे।

इन्ही के नाम से तीन तरह की संध्या कही गई है।

कुब्जिका गायत्री:- ॐ कुलवागिशि विद्महे महकालीति धीमहि तन्न कौली प्रचोदयात्।

पूजन प्रकरण में पंच प्रणव - "**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खें**" या "**ऐं ह्रौं श्रीं खें हें**" इनका प्रयोग करे अथवा नवप्रणव- "**ह्रों स्फें ह स ख क छ ड ऊं**" इनका प्रयोग देवता के नाम के साथ तथा देवता के नाम को चतुर्थी सहित **अमुकाय नमः पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** कहे।

मण्डलमध्ये:- मण्डल मध्य में **नाथ** व **सिद्धों** का पूजन करे।

ॐ कौलीश नाथाय नमः। सुकला, कुब्जिका, श्रीकण्ठनाथ, कौलेश, गगनानन्दनाथ, चटुला, देवी, मैत्रीशी, कराली, तूर्णनाथ, अतलदेवी, श्रीचन्द्रा, अत्यन्ता, भगा, आत्मपुंगण, देवमोहिनी, अतीतभुवनानन्द रत्नढ्या, ब्रह्मज्ञाना, कमला एवं श्रीपरमा विद्या का पूजन करे।

इसके बाद शुद्धि पूजन करे जो तीन तरह की है-

॥ १. विद्याशुद्धि ॥

साधक षडङ्गन्यास करे फिर देवताओं का हृदय में ध्यान कर मण्डल में पूजा करे।

गगनानन्दनाथायै नमः। आत्मा, पद्मानन्द, मणिकला, कमल, माणिक्यकण्ठ, गगन, कुमुद, श्रीपद्म, भैरवानन्द, देव, कमल, शिव, भव, कृष्ण, नामक देवताओं का पूजन कर सिद्धों का पूजन करे।

चन्द्रपूर, गुल्म, शुभ, काम, अतिमुक्तक, कण्ठ, वीर, प्रयोग, कुशल, देवभोगक, विश्वदेव, खड्गदेव, रुद्र, धाता, असि, मुद्रास्फोट, वंशपूर, भोज एवं समायन्य नामक सिद्धों का पूजन करे।

॥ २. देवीशुद्धि ॥

अनंतशिवपादुका, महानशिवपादुका, महाव्याप्ति, शून्य एवं पंचतत्त्व का आत्ममण्डल में पूजन करे। पश्चात् **''श्रीकण्ठनाथ, शंकर एवं अनन्त की पादुका पूजन करे''** ।

मण्डल मध्य में - **सदाशिव, पिङ्गल, भृग्वानन्द, नाथक, लाङ्गूलानन्द** एवं **संवर्त** की पूजा करे।

नैऋत्य कोण में - **श्रीमहाकाल, पिनाकी, महेन्द्र, खड्ग, भुजङ्ग, वाण, अघासि, शब्दक, वशा, आज्ञारूप,** एवं नन्दरूप की पूजा कर बलि प्रदान करे-

ह्रीं खं खं हूं सौं बटुकाय अरु अरु अर्घं पुष्पं, धूपं, दीपं गंधं बलिं पूजां गृह्ण गृह्ण नमस्तुभ्यं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षें क्षेत्रपालायवतरावतर महाकपिल जटाभार भास्कर त्रिनेत्र ज्वालामुख एह्येहि गंधपुष्प बलि पूजां गृह्ण गृह्ण खः खः ॐ कः ॐ लः ॐ महाडामराधिपतये स्वाहा।

॥ ३. गुरुसिद्धि ॥

''ह्रीं ह्रूं ह्रां श्रीं वैं'' इस मंत्र का जप कर अपने दाहिनी ओर **निशानाथ**, बाँयी ओर **तमोऽरिनाथ (सूर्य)** एवं सामने **कालानल** की पूजा करे। पश्चात् **उड्डियान, जालंधर, पूर्ण, कामरूप पीठ** का पूजन करे। फिर **गगनानन्ददेव, स्वर्गानन्द, परमानन्ददेव, सत्यानन्द, नागानन्द** एवं **रत्नपञ्चक** की पूजा करें।

उत्तरदिशा में - **ॐ षड् सुरनाथाय नमः। ईशान में- श्रीमत्सकोटीश तथा विद्याकोटीश्वर** का पूजन कर सिद्धों को नमस्कार करे। पुनः- **चक्रीशनाथ, कुरङ्गेश, वृत्रेश, चन्द्रनाथ सिद्धों** का पूजन करे।

दक्षिण दिशा में - **अनादिविमल, सर्वज्ञविमल, योगीशविमल, सिद्धविमल, समयविमल** का पञ्चकोण में पूजन करे।

नैऋत्य दिशा में - **कन्दर्पनाथ, पूर्णशक्ति, सर्वशक्ति,** तथा **कुब्जिका** का पूजन करे। फिर पंचप्रणव मंत्र से **इन्द्र, निष्कलुष विष्णु** एवं **शिव** का पूजन करे।

अष्टदल में - **ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चामुण्डा, महालक्ष्मी** का पूजन करे।

****

इनके साथ इनके पुरुष देव **ब्रह्मा, माहेश्वर, कौमार, विष्णु, वराह, इन्द्र, दुर्गदेव, नारायण** का पूजन करे।

षट्कोण में – **डाकिनी, राकिनी, लाकिनी, काकिनी, शाकिनी, याकिनी** का पूजन करे।

बत्तीस दल में – **कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं त्रं ज्ञं** से पंचप्रणव पूर्वक पूजा करे।

फिर ध्यान मंत्र सहित कुब्जिका देवी का आवाहन करे। कुब्जिका देवी की गायत्री के अनुसार यह कौल उपासना की मुख्य ध्येया है।

गुह्यकुब्जिका का प्रयोग शत्रु के किये अभिचार को तुरन्त नष्ट करता है।

गुह्यकुब्जिका मंत्रः– ॐ गुह्यकुब्जिके हुं फट् मम सर्वोपद्रवान्यन्त्र मन्त्र तंत्र चूर्णप्रयोगादिकं येन कृतं कारितं कुरुते करिष्यति कारयिष्यति तान्सर्वान् हन दंष्ट्राकरालिनि हैं ह्रीं हूं गुह्यकुब्जिकायै स्वाहा ह्रौं ॐ खे वों गुह्यकुब्जिकायै नमः।

|| गायत्री तंत्रम् ||

अजपागायत्री – यह साधना कुण्डली जागरण हेतु हैं। शिव से प्रार्थना करे कि प्रभो मेरी कुण्डलिनी को जाग्रत करे। पश्चात् कुण्डलिनी को उठाकर सुषम्रा मार्ग द्वारा लाकर भ्रूमध्य में स्थापित कर परमशिव से जोड़े। प्रत्येक श्वास लेने पर ''**सोऽहं**'' तथा निःश्वास छोड़ते समय ''**हंसः**'' मंत्र का ध्यान करते रहे। अभ्यास द्वारा धीरे धीरे ब्रह्मरन्ध्र सहस्रार में अजपा जप करे।

मंत्र – (१) ''**सोऽहं हंसः**''

(२) **सोऽहं हंसः स्वाहा।**

जप पूर्व ''भूतशूद्धि' प्रयोग अवश्य कर शरीर शुद्धि कर लेवे।

|| सावित्री साधना प्रयोग :||

मंत्र – ॐ भगवति सावित्रि कं खं गं घं ङं लं तं थं दं धं नं रं क्लीं स्वाहा।

इस मंत्र के २४ लाख जप ३ वर्ष में पूर्ण करे तो वाक् सिद्धि प्राप्त होवे।

''**गायत्री सावित्री समष्टि मंत्र साधना**'' मंत्र – **ॐ ह्रौं ह्रीं ऐं ईं सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् वेदगर्भे भगवति स्वाहा।**

यह मंत्र, दैन्य, दुरित का क्षय कर सौभाग्य वृद्धि करता हैं। विद्या एवं विवेक प्रदान करता हैं। त्रिपुरसुंदरी का ध्यान करते हुये उसके त्रिनेत्रों का अलग अलग वर्ण का ध्यान करे। एक नेत्र सोनभद्रनदी के जल की तरह लाल, दूसरा नेत्र गंगाजल के समान धवल, तीसरा यमुना जल के समान श्यामवर्ण का हैं। नित्य १००८ बार जप करे। श्री हरिहरानन्द करपात्री जी ने भी नरवर (बुलन्दशहर) में यह साधना की थी।

विलोमगायत्री मंत्र साधना – मंत्र – ॐ भू र्भुवः स्वः त्यादचोप्र नः (नो) यो योधि हिमधी स्यवदेर्गोभ ण्यंरेर्वतुविस त्त् स्वः भुवः भू ॐ।

विलोम मंत्र अग्नि के समान कार्य करता हैं। मारण प्रयोगों में भी कार्य करता हैं। इष्ट मंत्र सिद्ध नहीं हो रहा हो तो लोम गायत्री मंत्र पश्चात् पुनः विलोम गायत्री मंत्र जपने से गायत्री शीघ्र सिद्धि प्रदा होती हैं (किसी भी मंत्र के आगे लोमगायत्री तथा मंत्र के बाद विलोम गायत्री मंत्र लगाकर। इस तरह ३ मंत्रों का एक ही मंत्र बनेगा) जप करने से वह मंत्र शीघ्र कार्य करता हैं।

वाग्वादिनी सावित्री मंत्र प्रयोगः- मंत्र- ॐ ऐं त्रिपुरे देवि विग्रहे ऐं कामेश्वरि धीमहि ऐं तन्नो देवि प्रचोदयात्। यह त्रिपुरसुंदरी गायत्री मंत्र हैं जिसको ''ऐं'' बीज से भिन्नपाद मंत्र बनाने से यह सरस्वती प्रधान मंत्र हो गया हैं। यह मंत्र विद्या बुद्धि देता हैं तथा संमोहन में भी कार्य करता हैं।

परमहंसगायत्रीमन्त्र – : **ॐ परमहंसाय विद्महे महातत्त्वाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।**

षडङ्गन्यास :- **ॐ परमहंसाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महातत्त्वाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो हंसः नेत्रत्रयाय वौषट ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्**

****

॥६ ॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

हंस मन्त्र – ॐ सोहं सोहं परोरजसे सावदोम्।

ब्रह्मगायत्री मन्त्र – ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास – ॐ वेदात्मने च हृदयाय नमः। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा। ॐ हिरण्य गर्भाय शिखायै वषट्। ॐ धीमहि कवचाय हुम्। ॐ तन्नो ब्रह्मा नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट्।

इसी प्रकार करन्यास करें।

सरस्वतीगायत्रीमन्त्रः – ॐ ऐं वाग्देव्यै विद्महे कामराजाय धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास– ॐ ऐं वाग्देव्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ कामराजाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

विष्णुगायत्रीमन्त्रः – ॐ श्री विष्णवे च विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यासः – ॐ श्री विष्णुवे च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो विष्णुर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥ इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

द्वितीय विष्णुगायत्री : – ॐ त्रैलोक्यमोहनाय विद्महे आत्मारामाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

तृतीय विष्णुगायत्री : – ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

लक्ष्मीगायत्रीमन्त्र :– ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास :– ॐ महादेव्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ विष्णुपत्न्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो लक्ष्मीर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

लक्ष्मीमंत्रः – ॐ क्लीं श्रौं श्रीं लक्ष्मीदेव्यै नमः।

द्वितीय लक्ष्मीगायत्री : – ॐ महादेवी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्। वा ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे महाश्रियै च धीमहि। तन्नः श्रीः प्रचोदयात्।

नारायणगायत्रीमन्त्र :– ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो नारायणः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यासः – ॐ नारायणाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो नारायणो नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र :- ॐ ह्रीं श्रीं श्रीमन्नाराणाय नमः।

श्रीरामगायत्रीमन्त्र :- ॐ दशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात्।

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीरामगायत्रीमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीजानकीवल्लभो देवता। श्रीरामेति बीजम् दशरथायेति शक्तिः। गायत्र्यावाहने जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥२॥ श्रीजानकीवल्लभ देवतायै नमः हृदये ॥३॥ श्रीरामेति बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ दशरथायेति शक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास :- ॐ दशरथाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सीतावल्लभाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो रामः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

श्रीराममूलमन्त्र :- ॐ ह्रां ह्रीं रॉं रामाय नमः।

श्रीरामतारकमन्त्र :- ॐ जानकीकान्ततारक रॉं रामाय नमः।

जानकीगायत्रीमन्त्र :- ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि। तन्नः सीताप्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास :- ॐ जनकजायै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ रामप्रियायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नः सीता नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

सीतामूलमन्त्र :- ॐ सीं सीतायै नमः।

लक्ष्मणगायत्रीमन्त्र :- ॐ दशरथाय विद्महे अलबेलाय धीमहि। तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास :- ॐ दाशरथाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ अलबेलाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो लक्ष्मणः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र :- ॐ ह्राँ ह्रीं राँ राँ लँ लक्ष्मणाय नमः।

हनुमद्गायत्रीमन्त्र :- ॐ अंजनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि। तन्नो हनुमान् प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास :- ॐ अंजनीजाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो हनुमान् नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र :- ॐ ह्राँ ह्रीं हूँ हैं ह्रौं हः।

गरुडगायत्रीमन्त्र :- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपर्णाय (तन्त्रान्तरे तु सुवर्णपक्षायेति पाठः) धीमहि। तन्नो गरुडः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास :- ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सुवर्णपर्णाण शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गरुडो नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

॥ गायत्री ब्रह्मास्त्रादि प्रयोग :॥

गायत्री की उपासना करने से साधक शापमुक्त होकर साधना में अग्रसर होता है।

सर्वे शाक्ता द्विजाः प्रोक्ता न शैवा न च वैष्णवाः ।
आदिशक्तिमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम् ॥ (देवी भागवत)

उपनिषदों में गायत्री को सावित्री व सविता का स्वरूप बताते हुए कहा है-

कस्सविता का सावित्री अग्निरेव सविता पृथिवी सावित्री ।
कस्सविता का सावित्री वरुण एव सविताऽऽपस्सावित्री ।
कस्सविता का सावित्री एव वायुरेव सविताऽऽकाशस्सावित्री ।
कस्सविता का सावित्री यज्ञ एव सविता छन्दासि सावित्री ॥

इस तरह से कई सूक्त है।

त्रिपुर सुन्दरी के पंचदशाक्षरी मंत्र को भी पंचदशी गायत्री कहा है तथा बगलामुखी मन्त्र को विपरीत गायत्री कहा है।

गायत्री के जप प्रयोग पुरश्चरण विधि व स्तोत्रादि देवीखण्ड पूर्वार्द्ध में दिये गये है। विशेष प्रयोग शत्रु को परास्त करने व विजय प्राप्ति हेतु धनुर्वेद में सविता के कुछ प्रयोग दिये गये है।

॥ १. ब्रह्मास्त्र मंत्र ॥

(धनुर्वेदे)

विलोम गायत्री मंत्र को ब्रह्मास्त्र मंत्र कहा है। यदि ब्रह्मास्त्र मंत्र के प्रभाव को शमन कर शत्रु को राहत देनी है तो लोम गायत्री मंत्र का प्रयोग करने से ब्रह्मास्त्र विद्या का उपसंहार हो जाता है।

वेदमात्रा सर्वशस्त्रं गृह्यते दीप्यतेऽथवा । तत्प्रयोगं शृणु प्राज्ञ ब्रह्मास्त्रं प्रथमं शृणु ॥
दादिदन्तां च सावित्रीं विपरीतां जपेत्सुधीः । जप्त्वा पूर्वां निस्त्रवं चाभिमंत्रस्य विधिवच्छरम् ॥
क्षिपेत् शत्रुषु सहसा नश्यन्ति सर्वजातयः । बाला वृद्धाश्च गर्भस्था ये च योद्धुं समागताः ॥
सर्वे ते नाशमायान्ति मम चैव प्रसादतः । यथा क्रमं दादिदन्तं जपेत्संहारसिद्धये ॥

मंत्र :- ॐ दयादचोप्र नो (नः) यो योधि हिमधी स्यवदेर्गोभर्ण्यरेर्वतुविस तद् स्वोवर्भुभूरोम् ।

॥ ध्यानम् ॥

सर्वास्त्रोद्दीप्तहस्तं सुररिपुक्रोधमुद्राङ्कितास्यं, भूषारत्नोज्ज्वलाङ्गं द्विजवर हृदयावासमादित्यरूपम् । मन्देहानामदैत्य-ग्रसनपटुतरं घोरजिह्वा करालं, ध्यायेत्ब्रह्मास्त्रमाद्य लयसमय महावीति होत्र स्वरूपम् ॥

उपसंहार- शांति कर्म हेतु लोम गायत्री का प्रयोग करे ।

यथा - **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।**

॥ ब्रह्मास्त्र मंत्र प्रयोग ॥

गायत्री ब्रह्मास्त्र हेतु प्रचलित प्रयोगों में **''द्यादचोप्र....त्त स्व भुवः भूः ॐ ''** प्रयुक्त किया जाता है। इसी आधार पर पूर्व में प्रयोग दिया गया है।

धनुर्वेद में लिखा है- **दादिदान्ताञ्च सावित्रीं विपरीतां जपेत् सुधीः।** अर्थात् **'' द ''** आदि से **''द ''** अंत तक विपरीत गायत्री का जप करना चाहिये। सतयुगादि में मनुष्यों की आयु बहुत होती थी अतः जप संख्या दस खरब लिखी है। **''द ''** आदि व **''द ''** अंत के अनुसार टीकाकार ने निम्न मंत्र दिया है।

ॐ देवस्यधीमहि धियो यो नो (नः) प्रचोदयात् तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो दे।

परन्तु यहाँ विपरीत गायत्री मंत्र कहा है तथा ''द '' की जगह ''त '' आदि व ''त '' अंत हो तो मंत्र-

त्यादचोप्र नो (नः) यो योधि हिमधी स्यवदे र्गोभ ण्यरेव तुःविस (तुर्विस) त्त।

परन्तु **''देवस्य धीमहि.....भर्गोदे ''** मंत्र माना जाय तो यह विपरीत सविता मंत्र नहीं बनता है। अतः इस मंत्र का विलोम मंत्र इस प्रकार है जो ब्रह्मास्त्र मंत्र होना चाहिये।

देर्गोभ ण्यरेव तुःविस (तुर्विस या ण्यरेर्वतुविस) तत् त्यादचोप्र नः यो योधि हिमधीस्यवदे।

इस ब्रह्मास्त्र के उपसंहार के लिये भी **''दादिदान्तं ''** लिखा है अतः यदि प्रयोग **''त्यादचोप्र......त्त''** किया गया हो तो पुनः अनुलोम (शमन) गायत्री मंत्र **'' तत् सवितुः वरेण्यं ''** (सवितुर्वरेण्यं) ..... **प्रचोदयात्।**

यदि **''देर्गोभ.......हिमधी स्यवदे''** जप कर संहार हेतु प्रयोग किया गया हो तो पुनः अनुलोम मन्त्र **''देवस्य धीमहि.......भर्गोदे''** का जप कर ब्रह्मास्त्र को शान्त करें।

इस मंत्र का ध्यान पूर्व में दिया गया है।

॥ २. ब्रह्मदण्ड मंत्र ॥

ब्रह्मदण्डं प्रवक्ष्यामि प्रणवं पूर्वमुच्चरेत् । ततः प्रचोदयाजज्ञेयं ततो नो यो धियः क्रमात् ॥
ततो धीमहि देवस्य ततो भर्गो वरेणियम् । सवितुस्तच्च योक्तव्यममुक शत्रुं तथैव च ॥
ततो हन हन हुं फट् जप्त्वा पूर्व द्विलक्षकम् । अभिमन्त्र्य शरं तद्वत् प्रक्षिपेच्छत्रुषु स्फुटम् ॥
नश्यन्ति शत्रवः शत्रवः सर्वे यमतुल्या अपि ध्रुवम् । एतदेव विपर्यस्तं जपेत्संहार सिद्धये ॥

मंत्रः- ॐ प्रचोदयान्नो यो धियो धीमहि देवस्य भर्गो वरेण्यं सवितुस्तत् अमुकशत्रुं हन हन हुं फट्।

मंत्र का २ लक्ष बार जप कर सिद्ध करें, शत्रुनाश हेतु प्रयोग करे । अमुक शत्रु की जगह अमुक नाम्नः शत्रून् पढ़ें। पुनः शान्ति कर्म हेतु लोम गायत्री करने से शत्रु को लाभ होवे।

॥ ध्यानम् ॥

सर्वास्त्राणं स्वशक्त्या कृतमरुणरणत्कार घौरैकपिण्डं ,
ब्रह्माण्डान्तर्विधाना भवनकरमदो ऋग्विशषोग्रमूर्तिः ।
जाज्वल्योग्रं त्रिनेत्रं रविरूपजपति स्वादितं शास्त्रजालं ,
भालाक्षाम्भोजनाभि-र्भुजभवनलयं चिन्तये ब्रह्मदण्डम् ॥

॥ ब्रह्मदण्डास्त्र मंत्र प्रयोग॥

ॐ प्रचोदयात् नो यो धियः धीमहि देवस्य भर्गो वरेण्यं सवितुः तत् अमुक शत्रुं हन हन हुं फट्।

(टीका में धीयो की जगह धियः लिखा है)

उपरोक्त मंत्र को अक्षरसः विलोम न बताकर शब्दसः विलोम सविता मंत्र उल्लिखित किया गया है। २ लाख जप करे।

ब्रह्मदण्ड के उपसंहार (शमन) हेतु इस मंत्र का विलोम क्रम कहा गया है। **तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ब्रह्मदण्डास्त्रं हन हन निस्सारय निस्सारय हुं फट्।**

अक्षरसः विलोम गायत्री के साथ ब्रह्मदण्ड प्रयोगः-

त्यादचोप्र (द्यादचोप्र)............ त्त अमुक शत्रुं हन हन हुं फट् ।

इसका पुनः ब्रह्मदण्ड का उपसंहार हेतु - **मूल गायत्री अनुलोम मंत्र..........ब्रह्मदण्डास्त्रं हन हन हुं फट्।**

॥ ३. ब्रह्मशीर्ष मंत्र॥

मन्त्र - ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् भर्गो देवस्य धीमहि तत्सवितुर्वरेण्यं शत्रून्मे हन हन हुं फट्।

यहाँ शत्रु का नाम यदि जप संकल्प में पढ़ लिया जाये, तो यहाँ "**शत्रून् मे**" शत्रुनाम बार-बार उच्चारण करने की आवश्यकता नहीं है। यदि नाम का ही उल्लेख करना हो तो "**मम अमुक नाम्नः शत्रून् हन हन हुं फट्**" का उच्चारण करे।

॥ ध्यानम् ॥

तेजः पुञ्जमयं प्रसन्नममलं चाध्यात्मकं योगहृद्, ध्यायेद् भूषण-भूषणं निरुपमं श्रेष्ठं त्रिमूर्त्यात्मकम् ।
नित्यं भास्करवैरिवाहन घनाष्टक् पूर्ण पूर्णार्थदं , ह्यस्त्रं ब्रह्मशिरोभिधानममलं ध्यायेद् द्विजः कर्मगः ॥

मंत्र की तीन लाख जप करे। शत्रु को शांति देने हेतु लोम गायत्री का प्रयोग करे।

॥ ब्रह्मशिरास्त्र मंत्र प्रयोग॥

ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् भर्गो देवस्य धीमहि तत्सवितुर्वरेण्यं शत्रून् मे हन हन हुं फट्।

परन्तु यहाँ "**शत्रून् मे हन हन** " उच्चारण समय भावार्थ समझने में गलती हो जाये तो स्वयं के लिये अशुभ हो सकता है। अतः "**मम शत्रून् हन हन हुं फट्**" पढ़ना चाहिये।

ब्रह्मशिर के उपसंहार हेतु मंत्र-

मंत्रः- ॐ वरेण्यं सवितुः तत् धीमहि देवस्य भर्गो प्रचोदयात् नो यो धियो ब्रह्मशिरास्त्रं हन हन हुं फट्।

॥ ४. पाशुपतास्त्र मंत्र प्रयोग ॥

दादिदान्तां च सावित्रीं प्रोच्य प्रणवमेव च ।
श्लीं पशुं (पशु) हुं फट् अमुक शत्रून् हन हन हुं फट् ॥

दादिदान्तां मंत्र:- ॐ देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो दे ॐ श्लीं पशुं (पशु) हुं फट् अमुकं शत्रुं हन हन हुं फट्।

बहुधा ''**दादिदान्तां**'' का तात्पर्य ''**द्योदचोप्र............ तत्**'' अर्थात् विलोम गायत्री मंत्र से मानते है। अत: मंत्र **ॐ त्यादचोप्र (द्यादचोप्र).......... त्त ॐ श्लीं पशुं हुं फट् अमुकं शत्रुं हन हन हुं फट्।**

उपसंहार:- पाशुपतास्त्र के उपसंहार हेतु अनुलोम गायत्री मंत्र के साथ प्रयोग करे।

अनुलोम गायत्री मन्त्र :- ॐ श्लीं पशुं हुं फट् पाशुपतास्त्रं हन हन हुं फट्।

यदि ''**ॐ देवस्य धीमहि .... भर्गोदे**'' के अनुसार मंत्र प्रयोग किया हो तो इस मंत्र को विलोम जप कर ''**ॐ श्लीं पशुं हुं फट् पाशुपतास्त्रं हन हन फट्**'' का मंत्र प्रयोग करे।

॥ गायत्री पाशुपतास्त्र मंत्र ॥

मन्त्र - ॐ द्यादचोप्र नो यो योधि हिमधी स्यवदेर्गोभ ण्यंरेर्वतुविस तद् स्वोवर्भुभूरोम् । श्लीं पशु हुं फट् अमुक शत्रून् हन हन हुं फट् ॥

मंत्र सिद्धि हेतु २ लाख जप करे। यह मंत्र भगवान शिव के पाशुपतास्त्र की शक्ति को बढ़ाकर प्रलयकारी प्रभाव दिखाता है।

॥ ५. महाविपरीत प्रत्यङ्गिरा ॥

इस मंत्र के प्रयोग से शत्रु द्वारा किया कृत्या प्रयोग व षड्यंत्र नष्ट होता है।

मंत्र:- ॐ भूर्भुवः स्व तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ह्रीं यां कल्पयन्ती नोऽरय क्रूरां कृत्यां वधूमिव ।
तां ब्रह्मणाप निर्णुद्म प्रत्यक् कर्तारमिच्छतु ॥

द्यादचोप्र नो यो योधि हिमधी स्यवदेर्गोभ ण्यंरेर्वतुविस तद् स्वोवर्भुभूरोम् ।

॥ ६. स्तंभनादि प्रयोग: ॥

पाशुपतास्त्र की तरह पहले विलोम गायत्री पढे फिर जो प्रयोग करना हो वहाँ ''**श्लीं पशुं (पशु) हुं फट्**'' नहीं पढे। अमुकं स्तम्भय-स्तम्भय, अमुकं मारय-मारय, अमुकं विद्वेषय-विद्वेषय पढे।

॥ ७. भद्रकाली गायत्री मंत्र ॥

मन्त्र - भद्रकाल्यै च विद्महे सर्वसिद्धिं च धीमहि सा नो देवि प्रचोदयात् ।

प्रत्यंगिरा मंत्र की तरह इस मंत्र के पहले **लोम** फिर **विलोम** गायत्री मंत्र लगाने से मंत्र विशेष शत्रु संहारक हो जाता है।

॥ ध्यानम् ॥

तां भद्रकालीं तपसा ज्वलन्तीं, महेश्वरीं शुद्धमहत्प्रतिष्ठाम् ।
शुद्धात्मकल्याणगुण स्वभावां, वन्दे सदा चेतसा भद्रकालीम् ॥
भद्रासनस्थां परमां पवित्रां, भद्रार्चिता शङ्खचक्रादियुक्ताम् ।
रुद्राक्षमालां गगने मटन्तीं, वन्दे सदा चेतसा भद्रकालीम् ॥

॥ ८. वायव्यास्त्र मंत्र प्रयोग॥

मंत्रः- ॐ वायव्यया या वायव्ययान्योर्वायया वा अमुकं शत्रुं मे हन हन हुं फट्।

(मम अमुक शत्रून् हन हन हुं फट्) भी प्रयोग किया जा सकता है।

इस मंत्र के प्रयोग से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है तथा शत्रु पक्ष छिन्न-भिन्न हो जाता है।

उपसंहार :- वायव्यास्त्र के प्रयोग को शांत करने के लिये इस मंत्र को उल्टा जप कर प्रयोग करे यथा-

ॐ वा ययार्वान्योयाव्ययवा या याव्ययवा वायव्यास्त्रं हन हन हुं फट्। (वायव्यास्त्रं प्रशमय प्रशमय हुं फट्)

॥ ९. आग्नेयास्त्रं मंत्र प्रयोग॥

मंत्रः- ॐ अग्निस्त्यता हृद्भू शिवं वनाश्वाविणि (शिवविणि) हगादशरूपनः सदवा हादति तोयति राममसो हित्वावान सुसेद वेदयाऽमुकं शत्रुं मे हन हन हुं फट्।

इस मंत्र को २ लाख जप कर शत्रु पर वाण संधान करे या शत्रु की पुतली को गर्म लोहे की शलाका से वेधित करे।

उपसंहार :- मंत्र को विलोम क्रम से जपे तथा तिल त्रिमधु से होम करे।

ॐ यादवे दसेसु नवा त्वाहि सोममरा तियसो तिदहा वादस नपरूशदगाह। णिविश्वानाव वंशि भूद्हृ तास्त्याग्नि ॐ आग्नेयास्त्रं हन हन हुं फट्।

शत्रु को पुनः ठीक करना होतो ''**आग्नेयास्त्रं हन हन अमुकं पालय पालय हुं फट्**'' का जप करे।

॥ १०. सिंहास्त्र मंत्र प्रयोग॥

मंत्रः- ॐ वज्रनख वज्रदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट्।

यदि विशेष उग्र प्रयोग करना हो तो पहले अनुलोम गायत्री मंत्र फिर सिंह मंत्र पश्चात् विलोम गायत्री मंत्र से पुटित करे।

इस मंत्र से पढ़कर वाण चलाने या उड़द के दाने को अभिमंत्रित कर फेंकने से शत्रुसंघ विदीर्ण हो जाता है तथा शत्रु को भय व्याप्त हो जाता है। मार्ग में हिंसक जानवरो से रक्षा होती है। शत्रु की हस्तीसेना विदीर्ण हो जाती है।

उपसंहार - अनुलोम गायत्री के साथ इस मंत्र को विलोम (उल्टा) जपे।

विलोम मंत्र :- ''फट् हुं यहासिंहाम यधायुष्ट्रादं ज्रव खनज्रव ॐ''।

॥ इति ब्रह्मास्त्रादि प्रयोगाः ॥

॥ अथ श्रीदुर्गा तन्त्रम् ॥

॥ अथ महिषमर्दिनी प्रयोगः॥

महिषासुर वध का तीन कल्प में अलग अलग वृत्तान्त है। सर्व प्रथम उग्रचण्डा स्वरूप (१८ भुजाओं वाली) में महिषासुर का वध किया। दूसरे कल्प में १६ भुजा भद्रकाली रूप में महिषासुर का वध किया। तीसरे कल्प में १० भुजा कात्यायनी स्वरूप में महिषासुर का वध किया।

कालिका पुराण के अनुसार यही शक्ति पूर्व कल्प में **शैलपुत्री** कही गई है।

उग्रचण्डा कल्प के तंत्रानुसार **अष्टदल** की अष्टनायिका शक्तियां इस प्रकार है। (कालिका पुराणे) -

कौशिकी, शिवदूती, उमा, हेमवती, ईश्वरी, शाकंभरी, दुर्गा, महोदरी है। भद्रकाली कल्प के अनुसार अष्टदल की अष्टनायिका इस प्रकार है -(कालिका पुराणे)

जयन्ती, मङ्गला, काली, कपालिनी, दुर्गा, शिवा, क्षमा, धात्री, है।

अग्नि पुराण के अनुसार **उग्रचण्डा** की अन्य अष्टनायिकायें इस प्रकार है - इनका पूजन अष्टदल में करें।

रुद्रचण्डा, प्रचण्डा, चण्डोग्रा, चण्डनायिका, चण्डा, चण्डवती, चण्डरूपा, अतिचण्डिका, उग्रचण्डा सहित ये नौ दुर्गायें हैं।

यंत्रार्चन प्रयोग में अष्टदल में उक्त देवियों का भी पूजन करें

अष्टाक्षर मंत्रः- महिषमर्दिनि स्वाहा।

नवाक्षर मंत्राः - ॐ महिषमर्दिनि स्वाहा ॥१॥ ह्रीं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥२॥ स्त्रीं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥३॥ हुं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥४॥ हुं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥५॥ क्लीं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥६॥ ऐं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥७॥

दशाक्षर मंत्रः - ॐ महिषमर्दिनि स्वाहा ह्रीं (हिन्दी तंत्र सारे) **॥१॥ ॐ ह्रीं महिषमर्दिनि स्वाहा ॥२॥ क्लीं ॐ महिषमर्दिनि स्वाहा ॥३॥ क्लीं महिषमर्दिनि स्वाहा** (हिन्दी तंत्र सारे) **॥४॥ इनके ऋषि अष्टाक्षर के समान हैं।**

मेरुतंत्र में मंत्रोद्धारः- **महिषमर्दिनीत्युक्त्वा स्वाहान्तोऽष्टक्षरो मनुः। ऋषि मार्कण्डेय, छन्द गायत्री, देवतासुरासुरनुता देवी महिषमर्दिनी कहा हैं।** मंत्र महार्णव व शारदातिलक के अनुसार अष्टाक्षरी मंत्र विधान इस प्रकार हैं।

॥ महिषमर्द्दिनी मंत्र प्रयोगः॥

मंत्रो यथा शारदातिलके - **महिषमर्द्दिनि स्वाहा** ॥ इत्यष्टाक्षरमंत्रः।

विनियोग :- ॐ अस्य श्री महिषमर्द्दिनीमंत्रस्य नारद ऋषिः। गायत्री छंदः। महिषमर्द्दिनी देवता। सर्वेष्टसिद्धये

जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ नारदऋषये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्रीच्छंदसे नमोः मुखे ॥२॥ महिषमर्द्दिनीदेवतायै नमो हृदि ॥३॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥४॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास :- महिषहिंसिके हुं फट् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ महिषश (त्रो) त्त्रीशाङ्गि हुंफट् तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ महिषं भीषय भीषय हुंफट् मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ महिषं हन हन देवि हुंफट् अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ महिषसूदिनि हुंफट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ इति करन्यास्॥

हृदयादिन्यास :- महिषहिंसिके हुं फट् हृदयाय नमः ॥१॥ महिषश (त्रो) त्त्रीशाङ्गि हुं फट् शिरसे स्वाहा ॥२॥ महिषं भीषय भीषय हुंफट् शिखायै वषट् ॥३॥ महिषं हन हन देवि हुं फट् कवचाय हुम् ॥४॥ महिषसूदिनि हुं फट् अस्त्राय फट् ॥५॥ इति पचांगन्यासः।

इति न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ अथ ध्यानम् ॥

गारुडोपलसन्निभां मणिमौलिकुंडलमंडितां नौमि भालविलोचनां महिषोत्तमांगनिषेदुषीम् ।
चक्रशंखकृपाणखेटकबाण कार्मुकशूलकांस्तर्ज्जनीमपि बिभ्रतीं निजबाहुभिः शशिशेखराम् ॥१॥

एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले '**मं मंडूकादिपरतत्वांतपीठदेवताभ्यो नमः**' इति पीठदेवताः संपूज्य पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा पूर्वादिक्रमेण - **ॐ जयायै नमः** ॥१॥ **ॐ विजयायै नमः** ॥२॥ **ॐ अजितायै नमः** ॥३॥ **ॐ अपराजितायै नमः** ॥४॥ **ॐ नित्यायै नमः** ॥५॥ **ॐ विलासिन्यै नमः** ॥६॥ **ॐ दोग्ध्यै नमः** ॥७॥ **अघोरायै नमः** ॥८॥ मध्ये **ॐ मंगलायै नमः** ॥९॥

इति पीठशक्तीः संपूज्य स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपर्वकं '**ह्रीं आधारशक्तये नमः**' इति पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य तत्र प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वामूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ।

प्रथमावरणम् :- तत्र क्रमःषट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे **महिषहिंसिके हुं फट् हृदयाय नमः** ॥१॥ निर्ऋतिकोणे **महिषश (त्रो) त्त्रीशाङ्गि हुं फट् शिरसे स्वाहा** ॥२॥ वायुकोणे **महिषं भीषय भीषय हुं फट् शिखायै वषट्** ॥३॥ ईशानकोणे **महिषं हन हन देवि हुंफट् कवचाय हुं** ॥४॥ देवीपश्चिमे **महिषसूदिनि हुंफट् अस्त्राय फट्** ॥५॥ इति पंचांगानि पूजयेत्।

॥ श्री महिषमर्दिनी यन्त्रम् ॥

द्वितीयावरणम् :- ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमेण- **ॐ आं दुर्गायै नमः। दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** ॥१॥ इति सर्वत्र। **ॐ ईं वरवर्णिन्यै नमः। वरर्णिनीश्रीपा०** ॥२॥ **ॐ ऊं आर्य्यायै नमः। आर्य्याश्रीपा०** ॥३॥ **ॐ ॠं कनकप्रभायै नमः। कनकप्रभाश्रीपा०** ॥४॥ **ॐ लृं कृत्तिकायै नमः। कृत्तिकाश्रीपादु०** ॥५॥ **ॐ ऐं अभयप्रदायै नमः। अभयप्रदाश्रीपा०** ॥६॥ **ॐ औं कन्यायै**
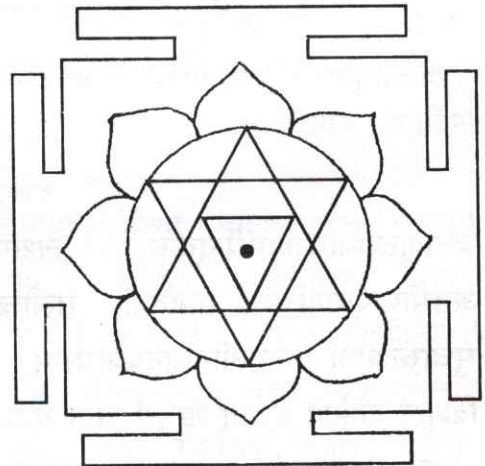
नमः। कन्याश्रीपा० ॥७॥ ॐ अः सरूपायै नमः। सुरूपाश्रीपा० ॥८॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत्।

तृतीयावरणम् :- पत्राग्रेषु पूर्वादिक्रमेण। **यं चक्राय नमः ॥१॥ रं शंखाय नमः ॥२॥ लं खड्गाय नमः ॥३॥ वं खेटकाय नमः ॥४॥ शं बाणाय नमः ॥५॥ षं धनुषे नमः ॥६॥ सं शूलाय नमः ॥७॥ हं कपालाय नमः ॥८॥** इत्यस्त्राणि पूजयेत्।

ततो भूपुरे इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत्। इत्यारवणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षजपः। तत्सहस्त्रं होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्। तथाचअष्टलक्षं जपेन्मंत्रं तत्सहस्त्रं तिलैः शुभैः। वशयेत्तिलहोमेन नरान्नरपतीनपि ॥१॥ सिद्धार्थैर्जुहुयान्मंत्री रोगान्मुच्येत तत्क्षणात्। पद्मैर्हुत्वा जयेच्छत्रून्दूर्वाभिः शांतिमाप्नुयात् ॥२॥ पलाशकुसुमैर्वृष्टिर्धान्यैर्धान्यश्रियं व्रजेत्। काकपक्षैः कृतो होमो द्वेषं वितनुते नृणाम् ॥३॥ मरीचहोमान्मरणं रिपुराप्नोति सर्वथा। क्षुद्रादिचोरभूताद्यान्ध्यात्वा देवी विनाशयेत् ॥४॥

॥ इति महिषमर्द्दिनीमंत्रप्रयोग ॥

॥ महिषमर्दिनी मंत्रः॥

लक्ष्मी प्राप्ति के पश्चात् इर्षा के कारण अनायास शत्रु पैदा हो जाते है। अतः उनके दमन के हेतु महिषमर्दिनि का प्रयोग करे।

मंत्र :-ॐ ह्रीं महामहिषमर्दनि ठं ठः । महिषहिंसके नमः। महिषशत्रुं भ्रामय, ॐ फ ठ ठं महिषं हेषय हेषय ॐ हूं महिषं ह्रेषय ह्रेषय हूं महिषं हन हन देवि हूं महिषनिषूदनि फट्। (अग्नि पुराणे)

शत्रु को महिष का रूप मानकर उसके वध की कल्पना करें।

॥ अथ महिषासुरमर्दिनी स्वरूप भेदाः॥

महिषासुरमर्दिनी दशभुजा दुर्गा कात्यायनी है जिसका पूजन प्रयोग नवदुर्गा के प्रयोगों में क्रमशः अलग से दिया गया है।

षोडशभुजा दुर्गा महिषासुरमर्दिनी भद्रकाली स्वरूपा है तथा अष्टादश भुजा दुर्गा का पूजन उग्रचण्डा क्रम से करें।

॥ दशभुजा दुर्गा ध्यानम् ॥

दशभुजा दुर्गा कात्यायनी स्वरूपा है।

जटाजूटसमायुक्तामर्धेन्दुकृत लक्षणाम् । नेत्रत्रयसमायुक्तां पद्मेन्दुसदृशाननाम् ॥ अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् । नवयौवन संपन्नां सर्वाभरणभूषिताम् ॥ सुचारुदशनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम् । त्रिभङ्गस्थान संस्थानां महिषासुरमर्दिनीम् ॥ त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं चक्रं क्रमादधः । तीक्ष्णं बाणं तथा शक्तिं वामतोऽपि निबोधत ॥ खेटकं पूर्णचापं च पाशमङ्कशमूर्ध्वतः । घण्टां वा परशुं चापि वामतः सन्निवेशयेत् ॥ अधस्तान्महिषं तद्वद्वि शिरस्कं प्रदर्शयेत् । शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् ॥

॥ दशभुजा दुर्गा ध्यानम् ॥

(मत्स्य पुराणे)

महिषासुरमर्दिनी दशभुजा दुर्गा कात्यायनी है जिसका पूजन प्रयोग नवदुर्गा के प्रयोगों में क्रमशः अलग से दिया गया है।

जटाजूट समायुक्तामर्धेन्दुकृत लक्षणाम् । नेत्रत्रयसमायुक्तां पद्मेन्दुसदृशाननाम् ॥
अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् । नवयौवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम् ॥
सुचारुदशनां तद्वत्पीनोन्नत पयोधराम् । त्रिभङ्गस्थान संस्थानां महिषासुरमर्दिनीम् ॥
त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं चक्रं क्रमादधः । तीक्ष्णं बाणं तथा शक्तिं वामातोऽपि निबोधतः ॥
खेटकं पूर्णचापं च पाशमङ्कुशमूर्ध्वतः । घण्टां वा परशु चापि वामतः सन्निवेशयेत् ॥
अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत् । शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् ॥
सपाशं वामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया । वमद्रुधिरवक्त्रं च देव्या सिंहं प्रदर्शयेत् ॥
देव्यास्तु दक्षिणं पादं समं सिंहोपरिस्थितम् । किञ्चिदूर्ध्वं तथा वाममङ्गुष्ठं महिषोपरि ॥

(कालिका पुराण में - लोचनत्रय संयुक्तां पूर्णेन्दुसदृशाननाम् लिखा है)

भविष्योत्तर पुराण में ध्यान इस प्रकार है।

पीताम्बर परीधानां नीलकौशेय संयुताम् । ग्रैवेयहारकेयूर नूपुरा भरणान्विताम् ॥
नानारत्न विचित्रेण मुकुटेन विराजिताम् । अनेक कुसुमाकीर्णकपर्देन विराजिताम् ॥
नितम्बबिम्ब सन्नद्ण किङ्किणी क्वण नादिनीम् । शूलचक्रदण्ड शक्ति वज्र चापासि धारिणीम् ॥
घण्टाक्षमालाकरक पानपात्र लसत्कराम् । तदग्रे छिन्नशिरसं महिषं रुधिराप्लुतम् ॥
निःसृतार्धतनुं कण्ठनालाच्चर्मासि धारिणीम् । देवीकरधृत ग्रीवं शूलेनोरसि ताडितम् ॥
दैत्यं करालदंष्ट्रास्यं विद्युत्कपिशमूर्धजम् । नागपाशेन विक्षिप्तं हर्यक्षेणाभिविद्रुतम् ॥
वमद्रुधिर वक्त्रेण धुन्वतोऽर्ध शटारुषा । उर्धलाङ्गूल दण्डेन देव्यधिष्ठान शोभिना ॥

॥ षोडशभुजा दुर्गा ध्यानम् ॥

क्षीरोदस्योत्तरे तीरे विभ्रती विपुलां तनुम् । अतसीपुष्पवर्णाभा ज्वलत्काञ्चन कुण्डला ॥
जटाजूटमखण्डेन्दु मुकुटत्रय भूषिता । नागहारेण सहिता स्वर्णहार भूषिता ॥
शूलं खड्ग च शंखं च चक्रं बाणं तथैव च । शक्तिं वज्रं च दण्डं च नित्यं दक्षिणबाहुभिः ॥
विभ्रती सततं देवी विकाशिनयनोज्ज्वलाः । खेटकं चर्मचापं च पाशं चाङ्कुशमेव च ॥
घण्टां परशुं मुशलं विभ्रती वामपाणिभिः । सिंहस्था नयनै रक्तवर्णै स्त्रिभिरभिज्ज्वला ॥
शूलेन महिषं भित्वा तिष्ठन्ती परमेश्वरी । वामपादेन चाक्रम्य तत्र देवी जगन्मयी ॥

॥ षोडशभुजा (भद्रकाली) ॥

महिषासुर मर्दिनी, षोडशभुजा भद्रकाली ने महिषासुर का वध किया था। अग्नि पुराण के अनुसार जो अस्त्रादि १८ भुजा के दिये वे ही हैं, केवल डमरु व तर्जनी मुद्रा का अभाव है। शेष ध्यान वही है जो पूर्व में लिखा है।

कालिका पुराण व पुरश्चर्यार्णव के अनुसार ध्यान इस प्रकार है।

क्षीरोदस्योत्तरे तीरे विभ्रती विपुलां तनुम् । अतसीपुष्पवर्णाभा ज्वलत्काञ्चन कुण्डला ॥
जटाजूटमखण्डेन्दु मुकुटत्रयभूषिता । नागहारेण सहिता स्वर्णहार विभूषिता ॥
शूलं खड्गं शङ्खं च चक्रं बाणं तथैव च । शक्तिं वज्रं च दण्डं च नित्यं दक्षिणबाहुभिः ॥
विभ्रती सततं देवी विकाशिनयनोज्ज्वला । खेटकं चर्म चापं च पाशं चाङ्कुशमेव ॥
घण्टां परशुं मुशलं विभ्रती वामपाणिभिः । सिंहस्था नयनै रक्तवर्णैस्त्रिभिरभिज्ज्वला ॥
शूलेन महिषं भित्वा तिष्ठन्ती परमेश्वरी । वामपादेन चाक्रम्य तत्र देवी जगन्मयी ॥

॥ अष्टादशभुजा दुर्गा ध्यानम् ॥

अष्टादशभुजा दुर्गा उग्रचण्ड स्वरूपा है। कल्पभेद महिषासुरमर्दिनि का महालक्ष्मी स्वरूपा भेद भी यही है।

॥ ध्यानम् ॥

अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुःकुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥

॥ अन्यच्च ॥

ततो ध्यायेन्महालक्ष्मीं महिषासुरमर्दिनीम् । समस्तदेवता तेजोजातां पद्मासन स्थिताम् ॥
अष्टादशभुजामक्षमालां पद्मं च शायकान् । खड्गं वज्रं गदां चक्रं दक्षहस्ते कमण्डलुम् ॥
खड्गं च दधतीं वामे शक्तिं च परशुं धनुः । चर्मदण्डौ सुरापात्रं घण्टां पाशं त्रिशूलकम् ॥

॥ अष्टादशभुजा ध्यानम् ॥

धम्मिल्लसंयतकचा विधोश्चाधोमुखीं कलाम् । केशान्ते तिलकस्योर्ध्वे दधती सुमनोहरा ॥
मणिकुण्डल संधृष्टगण्डा मुकुटमण्डिता । सज्ज्योतिः कर्णपूराभ्यां कर्णावापूर्य सङ्गता ॥
ससुवर्णमणिमाणिक्य नागहार विराजिता । सदासुंधिभिः पद्मैरम्लानैरति सुन्दरी ॥
मालां विभर्त्ति ग्रीवायां रत्नकेयूरधारिणी । मृणालायत वृत्तैस्तु बाहुभिः कोमलै शुभैः ॥
राजन्ती कञ्जुकोपेता पीनोन्नत पयोधरा । क्षीणमध्या पीतवस्त्रा त्रिवलोमध्यभूषिता ॥
अष्टादशभुजैका तु दक्षे मुण्डं च खेटकम् । आदर्शं तर्जनीं चाप ध्वजं डमरुकं चर्मं च ॥
पाशं वामे विभ्रती च शक्ति मुद्गर शूलकम् । वज्र खड्गाङ्कुश शरांश्चक्रं देवी शलाकया ॥
सिंहोस्योपरि तिष्ठन्ती व्याघ्रचर्मणि कौशिकी । विभ्रती रूपममतुलं ससुरासुर मोहनम् ॥

(अस्त्रों का क्रम पुरश्चर्यार्णव में अधूरा है अतः अस्त्रक्रम अग्निपुराण में से दिया है।)

****

वैकृति रहस्य में अस्त्रों का क्रम इस प्रकार से है। -

अक्षमाला च कमलं वाणोऽसि कुलिशं गदा । चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥

शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः । अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनम् ॥

इसी तरह मध्यम चरित में १८ भुजा का ध्यान अलग है।

॥ विंशतिबाहु दुर्गा ॥

(अग्नि पुराणे)

चण्डी विंशतिबाहुः स्याद विभ्रती दक्षिणैः करैः । शूलासि शक्ति चक्राणि पाशखेटायुधाभयम् ॥

डमरुं शक्तिकां वामैर्नागपाशं च खेटकम् । कुठाराङ्कुश पाशांश्च घण्टायुध गदास्तथा ॥

आदर्शं मुद्गरान्हस्तैश्चण्डी सा महिषार्दिनी । तदधो महिषश्छिन्नमूर्धा पातितमस्तकः ॥

॥ अष्टभुजा ध्यानम् ॥

अष्टभुजा देवी सर्वमङ्गला भी तथा शुंभ निशुंभ मर्दिनी महासरस्वती भी यही है।-

वरदं चाभयं खड्गमक्षसूत्रं च दक्षिणे ।
दर्पणं शूलचापं च चतुर्थे खेटकं भवेत् ॥
ध्याये चाष्टभुजा देवी मङ्गला सर्वमङ्गला ॥१।
दधत् चाष्टभुजा वाणमुसले शूलचक्रभृत् ।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ।
ध्येया संपूजिता भक्ता सर्वतत्वं महेश्वरी ॥२॥

॥ चतुर्भुजा ध्यानम् ॥

सिंहपद्मासना सौम्या जटामुकुटमण्डिता ।
शूलाक्षसूत्र वरदा कमण्डलु करा शुभा ॥
कालाभ्रामां कटाक्षैररिकुल भयदं मौलिबद्धेन्दुरेखां ,
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं ,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

॥ अथ महिषमर्दिनी कवचम् ॥

अथ वक्ष्ये महादेवी कवचं सर्वकामदम् । यस्य प्रसादमासाद्य भवेत्साक्षात्सदाशिवः ॥१॥

ॐकारं पूर्वमुच्चार्य मन्त्री मन्त्रस्य सिद्धये । प्रपठेत्कवचं नित्यं मन्त्रवर्णस्य सिद्धये ॥२॥

विनियोगः- ॐ महिषर्द्दिन्याः कवचस्य भगवान्महाकाल ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, आद्या शक्तिः, महिषमर्द्दिनी देवता चतुर्वर्गफल प्राप्तये जपे विनियोगः।

क्लीं पातु मस्तके देवी कामिनी कामदायिनी । मकारे पातु मां देवी चक्षुर्युग्मं महेश्वरी ॥३॥

****

हिकारे पातु वदने हिंगुलासुर नायिका । षकारे पातु मां श्वेता जिह्वायां त्वपराजिता ॥४॥
मकारे पातु मां देवी मर्दिनी सुरनायिका । र्दिकारे पातु मां देवी सावित्री कालनाशिनी ॥५॥
निकारे पातु मां नित्या हृदये वासपार्श्वयोः । नाभौ लिङ्गे गुदे कण्ठे कर्णयोः पार्श्वयोस्तथा ॥६॥
शिखायां कवचे पादे मुखजङ्घायुगे तथा । सर्वाङ्गे पातु मां स्वाहा सर्वशक्तिसमन्विता ॥७॥
कामाद्या पातु मां स्वाहा सर्वाङ्गे पातु मर्द्दिनी । दशाक्षरी महाविद्या सर्वाङ्गे पातु मर्दिनी ॥८॥
मर्दिनी पातु सततं मर्दिनी रक्षयेत्सदा । राजस्थाने तथा दुर्गे सिंहव्याघ्रभयादिषु ॥९॥
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे नौकायां वह्निमध्यतः । दुर्गा पातु सदा देवी आर्या पातु सदाशिवा ॥१०॥
प्रभा पातु महेशानी गगने पातु सर्वदा । कृत्तिका पातु सततमभया सर्वदाऽवतु ॥११॥
प्रभा पातु महामाया माया पातु सदा मम । नन्दिनी पातु सततं सुप्रभा सर्वदाऽवतु ॥१२॥
विजया पातु सर्वत्र देव्यङ्गे नवशक्तयः । शक्तयः पातु सततं मुद्राः पातु सदा मम ॥१३॥
जया पातु सदा सूक्ष्मा विशुद्धा पातु सर्वदा । डाकिन्यः पातु सततं सिद्धाः पातु सदा मम ॥१४॥
सर्वत्र सर्वदा पातु देवी महिषमर्द्दिनी । इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वकामदम् ॥१५॥
यत्र तत्र न वक्तव्यं गोपितव्यं प्रयत्नतः । गोपितं सर्वतन्त्रेषु विश्वसारे प्रकाशितम् ॥१६॥
सर्वत्र सुलभा विद्या कवचं दुर्लभं महत् । शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरि ॥१७॥
न्यूनाङ्गे ह्यतिरिक्ताङ्गे क्रूरे मिथ्यातिभाषिणि । न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं कवचं सुरदुर्लभम् ॥१८॥
यत्र तत्र न वक्तव्यं शंकरेण च भाषितम् । दत्त्वा तेभ्यो महेशानि नश्यन्ति सिद्धयः क्रमात् ॥१९॥
मन्त्राः पराङ्मुखा यान्ति शापं दत्त्वा सुदारुणम् । अशुभं च भवेत्तस्य तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥२०॥
गोरोचना कुकुमेन भूर्जपत्रे महेश्वरि । लिखित्वा शुभयोगेन ब्राह्मैन्द्रे वैधृतौ तथा ॥२१॥
आयुष्मत्सिद्धियोगे च बालवे कौलवेपि वा । वाणिजे श्रवणायां च रेवत्यां वा पुनर्वसौ ॥२२॥
उत्तरात्रययोगेषु तथा पूर्वात्रयेषु च । अश्विन्यां वाऽथ रोहिण्यां तृतीया - नवमीतिथौ ॥२३॥
अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां षष्ठ्यां वा पंचमीतिथौ । अमायां वा पूर्णिमायां निशायां प्रान्तरे तथा ॥२४॥
एकलिङ्गे श्मशाने च शून्यागारे शिवालये । गुरुणावैष्णवैर्वापि स्वयम्भू कुसुमैस्तथा ॥२५॥
शुक्लैर्वा रक्तकुसुमैश्चन्दनै रक्तसंयुतैः । शवाङ्गारचितावस्त्रे लिखित्वा धारयेत्पुनः ॥२६॥
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याच्छंकरेणैव भाषितम् । कुमारीं पूजयित्वा च देवीसूक्तं निवेद्य च ॥२७॥
पठित्वा पूजयेद्विप्रान्धनवान्वेद पारगान् । आखेटकमुपाख्यानं कुमार्यैव दिनत्रयम् ॥२८॥
तदा धरेन्महारक्षां कवचं सर्वकामदम् । नाधयो व्याधयस्तस्य दुःखशोकैर्भयं क्वचित् ॥२९॥
वादी मूको भवेद्दृष्ट्वा राजा च सेवकायते । मासमेकं पठेद्यस्तु प्रत्यहं नियतः शुचिः ॥३०॥
दिवा भवेद्धविष्याशी रात्रौ शक्ति परायणः । षट्सहस्त्र प्रमाणेन प्रत्यहं प्रजपेत्सदा ॥३१॥
षण्मासैर्वा त्रिभिर्मासैर्विद्वरो भवति ध्रुवम् । अपुत्रो लभते पुत्रं निर्धनो धनमाप्नुयात् ॥३२॥

अरोगी वलवान्श्चैव राजा च दासतामियात् ।
रजस्वलाभगे नित्यं जपेद्विद्यां समाहितः ।
एवं यः कुरुते धीमान्स एव श्रीसदाशिवः ॥३३॥

॥ इति श्रीविश्वसारतन्त्रे महिषमर्द्दिन्यां कवचं समाप्तम् ॥

॥ आश्विन नवरात्रे पूजा क्रम विशेषः ॥

महिषासुर मर्दिनी महामाया का प्राकट्य आश्विन में हुआ तथा राम-रावण युद्ध में भी कालिका श्री राम पर प्रसन्न हुई थी। अतः आश्विन पक्ष के नवरात्र प्रधान है।

देवि के तीन स्वरूप प्रधान है। **(१) दशभुजा (२) षोडशभुजा (३) अष्टादशभुजा।**

वैसे प्रधान पूजा शुक्ल पक्ष की ही कही गयी है। फिर भी विशेष पूजा क्रम में कुछ भिन्नता है। उपासक चतुर्भुजा व अष्टभुजा देवी की भी पूजा करते है।

॥ दशभुजा ॥

दशभिर्बाहुभिर्युक्ता सैव कात्यायनी स्मृता ।

आश्विन कृष्ण १४ को जगन्मयी प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हुई। शुक्ल पक्ष में सप्तमी को वह देवों के तेजों की मूर्ति परम शोभन रूप में हुई। अष्टमी को समलंकृत हुई। नवमी को उपहारों से पूजित होकर महिषासुर का वध किया तथा दशमी को अन्तर्धान हो गई। परन्तु मार्कण्डेय पुराणानुसार युद्ध कई दिन चला था।

कन्या राशि में सूर्य आने पर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को घटस्थापन कर पूजा आरंभ करे। षष्ठी तिथि को बिल्व वृक्ष की शाखाओं में बोधन करें देवी के फल फूल चढावें। सप्तमी तिथी को शाखा का आहरण करके पूजन करना चाहिये। अष्टमी को विशेष रूप से पूजा समाचरण करना चाहिये। स्वयं जागरण करें महानिशा में बलिदान करें। देवी का पूजन कर दशमी तिथि में विसर्जन करना चाहिये। उस तिथि में रात्रि में विसर्जन (संध्या समय दशमी तिथि होवे) करके समाचरण करें। अथवा मूल नक्षत्र में आवाहन एवं श्रवण में विसर्जन करें।

॥ षोडशभुजा ॥

सैवेयं षोडशभुजा भद्रकाली गीयते ।

अतः भद्रकाली तन्त्र से पूजा करें॥ षोडशभुजा देवी की पूजा करें तो विशेषतः दुर्गा तन्त्र से पूजा करें। कन्या की संक्रान्ति में कृष्णा एकादशी को उपवास करें, द्वादशी को एक बार भोजन करें। चतुर्दशी में महामाया का बोधन अर्चन विविध नैवेद्यों से करें। गीत वाद्य यंत्रों से निर्घोष करें।

दूसरे दिन में अयाचित उपवास करें तथा नवमी तक व्रत पूर्वक पूजा करें। ज्येष्ठा नक्षत्र में भली भाँति से अर्चन कर मूल नक्षत्र में प्रतिपूजन करें। पुनः उत्तराषाढा नक्षत्र में पूजन कर श्रवण नक्षत्र में विसर्जन करें।

॥ अष्टादशभुजा दुर्गा ॥

अष्टादशभुजा दुर्गा उग्रचण्डेति या स्मृता ।

अत: उग्रचण्डा तंत्र के अनुसार पूजा करें।

इस देवि का पूजन भी दुर्गा तन्त्र के अनुसार करें। कन्या के सूर्य में कृष्ण पक्ष में आर्द्रा नक्षत्र में दिन में पूजन करें। कृष्णा नवमी तिथि को गीत वाद्यों द्वारा देवी का बोधन करें। शुक्लपक्ष में चतुर्थी तिथि में देवी के केशों का विमोचन करें। पंचमी को प्रात: शुद्ध जल से स्नपन करायें। सप्तमी में नौ तरह के पौधों की पत्रिकाओं की पूजा करें (रंभा पत्रिका, कच्चि, हरिद्रा, जयंती, बिल्व, दाडिम, आशोक, मान, धान्य पत्रिका)।

अष्टमी में भी उपोषण करें। रात्रि में पूजा करें। रात्रि में या नवमी को बलिदान करें। दशमी को क्रीड़ा कौतुक मंगलों द्वारा संप्रेषण करें। (जप होमादि भी नवमी में करें) दशमी को नीराजन करके देवी का विसर्जन करें।

राम रावण युद्ध समय ब्रह्माजी ने देवी का बोधन कृष्णा १४ को किया था। नवमी को रावण का वध हुआ एवं देवों द्वारा शार्वरोत्सवों में दशमी तिथि में देवी संप्रेषित की गई थी।

तृतीया तिथि, स्वाति नक्षत्र तक राक्षसों का बल बहुत बढ गया था। चतुर्थी से देवों का बल बढा था इसलिये प्रधान पूजा तन्त्रोंक्त विधि से चतुर्थी से की गई है।

॥ अष्टनायिका पूजनम् ॥

महिषासुर मर्दिनी (१०, १६, १८, २० भुजा दुर्गा) पूजा प्रयोग में दुर्गा तंत्र के साथ उग्रचण्डा तन्त्र से भी पूजा करनी चाहिये। अग्निपुराण के अनुसार **रुद्रचण्डा, प्रचण्डा, चण्डोग्रा, चण्डनायिका, चण्डा, चण्डवती, चण्डरूपा, अतिचण्डिका और उग्रचण्डा नव नायिकायें (नव सखी) हैं।** अष्टदल में उग्रचण्डा का मध्य में तथा रुद्रचण्डादि अष्टनायिकाओं का पूजन करें।

कालिका पुराण के अनुसार महिषासुर मर्दिनी उग्रचण्डादि अष्टशक्तियों से परिवेष्टित है अष्टदल में उनका पूजन करें।

उग्रचण्डा, प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका ।
चण्डा चण्डवती चैव चामुण्डा चण्डिका तथा ॥
आभिः शक्तिभिरष्टाभिः सततं परिवेष्टिताम् ॥

वैकृति रहस्यानुसार पूजाक्रम -

समष्टि उपासना क्रम में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती की अभिन्नरूप में संयुक्त पूजा की जाती है।

अपने मूल तत्त्व में ये सभी देवियां चतुर्भुजा है। पश्चात् ये कल्पभेद से दशानना दशभुजा, अष्टादशभुजा व अष्टभुजा स्वरूप धारण किया है।

चतुर्भुजा महालक्ष्मी क्रम की उपासना में मध्य में चतुर्भुजा महालक्ष्मी स्थापित करके उसके दक्षिण ओर चतुर्भुजा महाकाली तथा वाम भाग में चतुर्भुजा महासरस्वती का पूजन करें।

महाकाली के पृष्ठभाग में रुद्र-गौरी, महालक्ष्मी के पृष्ठभाग में ब्रह्मा-सरस्वती तथा महासरस्वती के पृष्ठभाग में विष्णु-लक्ष्मी का पूजन करें। तदनन्तर चतुर्भुजा महालक्ष्मी के सामने की ओर मुंह करती (कुछ तिरछी) अठारह भुजा वाली महालक्ष्मी की स्थापना करें, महाकाली के सामने दशाशना दशभुजा देवी तथा चतुर्भुजा महासरस्वती के सामने अष्टभुजा देवी को स्थापित करें।

रुद्र-गौरी	ब्रह्मा-सरस्वती	विष्णु-लक्ष्मी
चतुर्भुजा महाकाली	चतुर्भुजा महालक्ष्मी	चतुर्भुजा महासरस्वती
दशानना दशभुजा	अष्टादशभुजा	अष्टभुजा

यदि केवल **अठारह भुजा देवी** की पूजा करनी हो तो देवी के दक्षिण भाग में काल एवं वामभाग में मृत्यु की पूजा करें।

यथा - ॐ कालाय नमः, ॐ मृतवे नमः।

सम्मुख में सिंह व महिष की पूजा करें।

यदि **दशभुजा दशवक्त्रा देवी** का पूजन करना हो तो उसके साथ भी **कालमृत्यु** की पूजा करें।

यदि केवल **अष्टभुजा देवी** का पूजन करना हो तो **कालमृत्यु** के साथ देवी के दक्षिण भाग में **रुद्र** व वाम भाग में **विनायक** का पूजन करें। देवी के साथ **ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री, शिवदूती** और **चामुण्डा** इन नौ शक्तियों का भी पूजन करें।

॥ कल्पभेद प्राकारान्तरे नवदुर्गा स्वरूपम् ॥

उत्तर भारत में शैलपुत्र्यादि नवदुर्गा क्रम प्रचलित है।

(क) मन्त्रमहार्णवे - प्रयोग भेद से मन्त्रमहार्णव में नवदुर्गा के अलग नाम भेद कहें हैं।

जयां च विजयां भद्रां भद्रकाली मनंतरम् ।
सुमुखीं दुर्मुखीं प्रज्ञां पश्चात् व्याघ्रमुखीं तथा ॥
अथ सिंहमुखीं दुर्गां नवदुर्गा विदुर्बुधाः ।
प्रत्येकं तैस्त्रिभिर्बीजै र्जयादि नवनामाभिः ॥
एवं ज्ञात्वा सप्तशतीं यो जपेत् सुसमाहितः ।
तस्य देवी सुप्रसन्ना सर्वाभीष्टप्रदा भवेत् ॥

(ख) उग्रचण्डा कल्पे अग्नि पुराणे - रुद्रचण्डा, प्रचण्डा, चण्डोग्रा, चण्डनायिका, चण्डा, चण्डावति, चण्डरूपा, अतिचण्डिका, उग्रचण्डा।

(ग) दक्षिणभारते - वनदुर्गा, शूलिनी, जातवेद, शान्तिदुर्गा, शबरी, ज्वाला, लवणदुर्गा, आसुरीदुर्गा, दीपदुर्गा।

(घ) अन्यच्च - नीलकण्ठी, क्षेमंकरी, हरसिद्धा, रुद्रांशदुर्गा, वनदुर्गा, अग्निदुर्गा, जयदुर्गा, विन्ध्यवासिनी, रूपमारी।

(ङ) अन्यच्च - जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, शिवा, क्षमा, धात्री।

(च) शैव सम्प्रदायानुसार - शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी, सिद्धिदात्री॥

॥ दक्षिणभारते नवदुर्गा स्वरूपाणी॥

(क) वनदुर्गा - ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं दुं उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे

भगवति शमय शमय स्वाहा।

(ख) शूलिनी दुर्गा – श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्रीं दुं ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रह हुं फट्।

(ग) जातवेद दुर्गा – ॐ ह्रीं दुं जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेवसिन्धुं दुरितात्यग्निः दुं ह्रीं ॐ।

(घ) शान्तिदुर्गा – ॐ ह्रीं दुं दुर्गा देवीं शरणमहं प्रपद्ये दुं ह्रीं ॐ।

(ङ) शबरिदुर्गा – ॐ ह्रां ह्रीं सौः ऐं श्रीं क्षं दुं शबरिदुर्गायै क्रों अमलवरयूं आदिशक्ति स्वरूपिणि अक्षरमये रक्षः कुल नाशिनि मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् विदारय विदारय रोगान् भस्मीकुरु भस्मीकुरु कृत्रिमान् दह दह प्राणान् वह वह आभिचारिकान् नाशय नाशय सर्वं मां रक्ष रक्ष शबरिदुर्गायै हुं फट् सवाहा।

(च) ज्वलादुर्गा – ह्रां ह्रीं सौः ग्लौं ऐं श्रीज्वलदुर्गे एह्येहि स्फुर प्रस्फुर आदिविष्णुसोदरि अस्त्रज्वलदुर्गे आवेशयावेशय। ज्वलदुर्गाय विद्महे जाज्वल्यमानाय धीमहि। तन्नो बडवानलः प्रचोदयात्।

(छ) लवणदुर्गा – ॐ खं चिटि चिटि चण्डालि महाचण्डालि सर्वजनं (अमुकं) मे वशमानय स्वाहा।

(ज) दीपदुर्गा – ॐ क्रों ह्रीं आं दुं दुर्गे एह्येहि आवेशयावेशय ह्रीं दुं दुर्गे आं ह्रीं क्रों ॐ हुं फट् स्वाहा।

(झ) आसुरीदुर्गा – ॐ श्रीं ह्रीं कटुके कटुकपत्रे असुभगे (सुभगे) आसुरी रक्तवरानने (रक्तवाससे) अथर्वणस्य दुहिते अघोरे अघोरकर्मकारिके (अमुकस्य) प्रतिस्थतस्य साध्यस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गुदं दह दह प्रसुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच नामरूपं दहदह तावद्दह तावत्पच पच यावन्मे वशमागच्छति तावन्मे वशमानय स्वाहा।

॥ वनदुर्गा मंत्राः॥

(१) मन्त्र – ॐ ऐं श्रीं ह्रीं छ्रीं हूं क्रों स्वाहा।

॥ ध्यानम्॥

कालाभ्रसमदेहाभां सिंहस्कन्धोपरि स्थिताम् । मौलिबद्धेन्दुशकलां कटाक्षैः शत्रुभीतिदाम् ॥१॥
त्रिनेत्रां पीवरोरोजां स्मेरवक्त्रां चतुर्भुजाम् । शङ्खं चक्रं गदां खड्गमुद्वहन्ती हरप्रियाम् ॥२॥

इस विद्या के प्रयोग विन्ध्यवासिनी के नाम से प्रचलित है। इसके स्मरण मात्र से चोर डाकू व हिंसक पयशुओं का भय नहीं रहता है।

(२) वनदुर्गा साधना मन्त्र – ॐ हूं क्रौ महाभय परिपंथिनि वनविहारिणी दुर्गे देवी धन धान्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

इस मंत्र को ५ दिन तक एकांत में बैठकर सिद्ध करे। धनधान्य की समृद्धि कारक है। वन दुर्ग में रक्षा करता है तथा साधक भूत भविष्य का ज्ञाता भी हो जाता है ॥

(३) मंत्र – उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदिशक्यमशक्यं वा तन्मे भगवती शमय स्वाहा।

विनियोग :- अस्य श्री वनदुर्गा मंत्रस्य आरण्यक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सर्वदुर्गति मोचिनी श्री वनदुर्गा देवता, दुं बीजं, स्वाहा शक्तिं, सर्वदुर्गति मोचनार्थे जपे विनियोगः ।

॥ ध्यानम् ॥

सौवर्णाम्बुजमध्यगां त्रिनयनां सौदामिनीसन्निभां, शंखचक्रवराभयानि दधतीमिन्दोः कलां बिभ्रतीम् ।
गैवेयाङ्गदहार कुण्डलधरामाखण्डलाद्यैः स्तुतां, ध्यायेत्विन्ध्यनिवासिनीं शशिमुखीं पार्श्वस्थपञ्चाननाम् ।

॥ अथ वनदुर्गा प्रयोग:॥

वनदुर्गा की उपासना से व्याघ्र, सिंह, सर्प, वृश्चक हाथी वराह इत्यादि हिंसक पशुओं का भय नहीं रहता हैं। वे ही विंध्यवासिनी हैं, भक्तों को अभय प्रदान कर मंगलप्रदान करती हैं। इसका एक सिद्धस्थान चित्रकूट में हैं। धन धान्य वृद्धि हेतु निम्न मंत्र का जप करे।

१. ॐ हूं क्रौं महाभयपरिपन्थिनि वनविहारिणि दुर्गे देवि धन धान्यं रक्ष रक्ष स्वाहा॥

२. शारदातिलक, मंत्ररत्न, मञ्जूषा, प्रपञ्चसार तंत्र, श्रीविद्यार्णवतंत्र में अन्य मंत्र दिया गया हैं।

मन्त्रः- उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा।

विनियोगः- अस्य श्री वन दुर्गा मंत्रस्य आरण्यक ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, सर्वदुर्गतिमोचनी श्री वनदुर्गा देवता, दुं बीजं, स्वाहा शक्तिं, सर्वदुर्गति मोचनार्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यासः- उत्तिष्ठ पुरुषि हृदयाय नमः। किं स्वपिषि शिरसे स्वाहा। भयं मे समुपस्थितं शिखायै वषट्। यदि शक्यमशक्यं वा कवचाय हुं। तन्मे भगवति नेत्रत्रयाय वौषट्। शमय स्वाहा अस्त्राय फट्।

वर्णन्यास :- प्रत्येक वर्ण के आगे नमः लगाकर न्यास करे। ॐ उं नमः दक्षपादांगुलिमूले। त्तिं दक्ष गुल्फे। ष्ठं दक्षजानुनि। पुं दक्षऊरुमूले। रुं वामपादांगुलिमूले। षिं वामगुल्फे। किं वामजानुनि। स्वं उरुमूले। पिं गुदे। षिं लिङ्गे। भं मूलाधारे। यं उदरे। में दक्ष पार्श्वे। सं वामपार्श्वे। मुं हृदि। पं दक्षस्तने। स्थिं वामस्तने। तं कण्ठे। यं दक्षकरांगुलिमूले। दिं दक्षमणिबन्धे। शं कर्पूरे। क्यं बाहुमूले। मं वामकरांगुलिमूले। शं मणिबन्धे। क्यं कपूरे। वां बाहुमूले। तं मुखे। न्मे दक्षनासापुटे। भं वामनासापुटे। गं दक्षगण्डे। वं वामगण्डे। तिं दक्षनेत्रे। शं वामनेत्रे। मं दक्षकर्णे। यं वामकर्णे। स्वां भ्रूमध्ये। हां नमः शिरसि।

श्री विद्यार्णव तंत्र में ध्यान इस तरह हैं:-

विद्युद्धामप्रभाभां कनकसरसिजे संस्थितां सत्त्रिनेत्रां, हस्ताम्भोजैर्वहन्तीमरिदर वरदाभीति संज्ञाः क्रमेण ।
स्वर्णोद्यत्कान्तिवस्त्रां शशिकलित लसद्रत्नचूडां प्रसन्नां, पार्श्वोद्यत्सन्मृगेन्द्रां हृदि वनवसति दावदुर्गां स्मरेहम् ॥

इनके अलावा ४ प्रकार के अन्य ध्यान हैं प्रथम ध्यान साधना कर्म हेतु, दूसरा रक्षा हेतु, तीसरा आपदनिवारण एवं चौथा ध्यान तामस प्रयोग हेतु हैं। ध्यान मंत्र दुर्गाकल्पतरु से कुछ भिन्न हैं।

हेमप्रख्यामिन्दु खण्डात्तमौलिं शङ्खारीष्टाभीति हस्तां त्रिनेत्राम् ।
हेमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥१॥

अरिशङ्ख कृपाण खेटबाणान् सधनुः शूलक तर्जनीर्दधाना ।

****

भवतां महिषोत्तमाङ्ग संस्था नवदूर्वा सदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ॥२॥

चक्रदर खड्ग खेटक शरकार्मुक शूल संज्ञक कपालैः
ऋष्टिमूसलकुन्त नन्दक वलय गदा भिन्दिपाल शक्त्याख्यै।
उद्यद्विकृति भुजाढ्या महिषके सजल जलद सङ्काशा
सिंहस्था वाऽग्नि निभा पद्मस्था वाथ मरकत श्यामा ॥३॥

व्याघ्र त्वक्परिधाना सर्वाभरणान्विता त्रिनेत्रा च
अहिकलित नीलकुन्तल विलसत् किरीट शशिकला।
सर्पमयवलय नूपुरकाञ्ची केयूरहार संभिन्ना
सुरदितिजाभय भयदा ध्येया कात्यायनी प्रयोग विधौ॥

॥ आवरण पूजा प्रयोगः॥

॥ श्री वनदुर्गा यन्त्रम् ॥

(१) मूल बिन्दु में देवी का ध्यान पूजन करे।

(२) षट्कोण में हृदयादि षडङ्गन्यास पूजा करे।

(३) अष्टदल की कर्णिका (नीचे का भाग) में प्रत्येक नाम के आगे "ॐ" **तथा पश्चात्** 'नमः' लगाकर आवाहन पूजा करें।
यथा - **ॐ आर्यायै नमः। दुर्गायै। भद्रायै। भद्रकाल्यै। अंबिकायै। क्षेम्यायै। वेदगर्भायै, क्षेमङ्कर्यै।**

(४) अष्टदलपत्रों के मध्यभाग में **ॐ चक्रायनमः। शङ्खाय। खड्गाय। खेटकाय। वाणाय। चापाय। शूलाय। ॐ कपालाय नमः।**

(५) अष्टदलों के पत्राग्र भाग में **ब्राह्मी, वैष्णवी, कौमारी, नारसिंही, वाराही, महालक्ष्मी, चामुण्डा, माहेश्वरी** का पूजन करे।

(६) भूपूर (चतुरस्त्र) में इन्द्रादि लोकपालों व उनके आयुधों का पूजन करें।
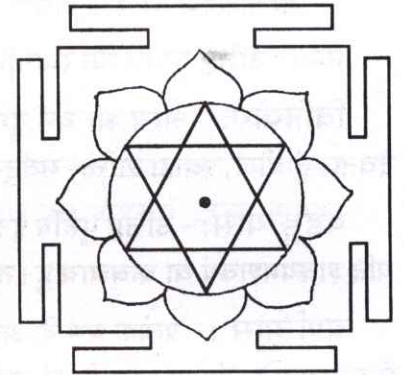
॥ अथ प्रयोग विधानम्॥

॥ ध्यानम् ॥

श्रिये च दुर्गां महिषोत्तमाङ्गस्थितां च दूर्वादलरुग् (भां) वहन्तीम्।
सचक्रशङ्खासिस खेटबाणचापान् भुजैस्तर्जनिकां वहन्तीम् (त्रिशूलम्) ॥१॥
शङ्ख चक्र कृपाण खेटक बाणधनूंषि शूलवत्। पुंस्कपालसऋष्टिकान् मुसलकुन्तनन्दकान् ॥२॥
सत्कैर्वलय सद्गदा भिण्डिपालकशक्तिकान्। बिभ्रतीं जलदद्युति महिषोत्तमाङ्गनिषेदुषीम् ॥३॥
पावकोल्लसितद्युति हृदि भीमसिंह (समा) गताम्। श्यामलां कमलस्थितां नयनत्रयोल्लसितां शुभाम् ॥३॥
व्याघ्रचर्म सदंशु कामहिबद्ध कुन्तल शोभिताम्। चन्द्रशोभितशेखरां सुरदानवाभयभीतिदाम् ॥४॥

॥ प्रयोगः ॥

प्रजपेत् प्रत्यहं मन्त्री स्वरक्षायै शतं ह्यथ। सहस्त्रं वा तदन्ते च प्रयोगान् कर्तुमर्हति ॥५॥ यद्यदुद्दिश्य च मनुं सहस्त्रं वायुतं जपेत्। अचिराल्लभते तत्तदसाध्यमपि साधकः ॥६॥ प्रातः स्नायी न्यासपूर्वं स्मरन् देवीमनन्यधीः। नित्यं सहस्त्रं प्रजपेन्मन्त्रं साधकसत्तमः ॥७॥ ज्वरसर्पग्रहोत्थांश्च दोषान् प्रशमयेत्सुधीः। हुनेदारण्यकतिलै राजिकाभिश्च वा हुनेत् ॥८॥ अपामार्गसमिद्भिश्च नाशयेत् सकलामयान्। अपस्मारादिकान् मन्त्री नात्र कार्या विचारणा ॥९॥ न्यग्रोधोत्थसमिद्भिर्वा सशुङ्गाभिहुनेत्सुधीः। अयुतं सर्वसम्पत्त्यै सर्वापन्मुक्तयेऽपि च ॥१०॥ ग्रहादिशान्त्यै च तया ह्यभिचारादिशान्तये। अर्कवृक्षसमुद्भूतैर्जुहुयाच्च समिद्वरैः ॥११॥ आरभ्य रविवारं च तद्द्वयं प्रत्यहं सुधीः। दशाहतो वाञ्छितार्थसिद्धिर्भवति नान्यथा ॥१२॥

त्र्यहं वा सप्तरात्रं वा चेध्मैः सारसमुद्भवैः। एकैकं शकलं मन्त्री हुनेद्वाञ्छितसिद्धये ॥१३॥ त्रिंशच्छरान् शिताग्रांश्च निधाय जुहुयादबुधः। कटुतैलैः सहस्त्रं वा ह्ययुतं तदनन्तरम ॥१४॥ सम्पाततैलेन शरान् समभ्युक्ष्य यथाविधि। पूर्ववत् प्रजपेन्मन्त्रं ताञ्शरान् अथ भूपतिः ॥१५॥ शुद्धाचारश्च धीरश्च धन्वी संयतमानसः। गृहीत्वा परसेनाया मध्ये गच्छेदभीः क्षिपेत् ॥१६॥ सा धावति दिशः सर्वाः सम्भ्रान्ता विह्वला तदा। स आगत्य पुनर्भूयो गुरुं धान्यैर्धनैरपि ॥१७॥ वस्त्रालङ्करणैश्चैव तोषयेज्जयदायिनम्। अष्टाधिकशतेनाथ सञ्जप्तं शवभस्म च ॥१८॥ निक्षिपेद्यस्य शिरसि स विद्विष्टो भवेज्जनैः। देशाद् देशान्तरं चैव काकवद् भ्रमते सदा ॥१९॥ कारस्करद्रुमोत्थैश्च पत्रैर्वायुनिपातितैः। सहस्त्रं जुहुयात् पादरजोभिः सह वैरिणः ॥२०॥ उच्चाटोऽस्य भवेत् सद्यो, विषवृक्षसमुद्भवैः। पुष्पैर्हुनेन् सहस्त्रं च सेनां संस्तम्भयेत्बुधः ॥२१॥ तावद्भिस्तस्य पत्रैश्च मन्त्री सेनां निवर्त्तयेत्। विषवृक्षसमुद्भूतां शत्रोः प्रतिकृतिं शुभाम् ॥२२॥

कृत्वा प्रतिष्ठितप्राणां खण्डं खण्डं कृतैर्निशि। कृष्णपक्षचतुर्दश्यां काकोलूकवसाप्लुतैः ॥२३॥ तद्गात्रैर्विपिने होमः कर्त्तव्योऽष्टसहस्त्रकम्। चतुर्दशीत्रयादेवं नाशमेति रिपुर्ध्रुवम् ॥२४॥ उलूकवायसपक्षैः सवसारक्तसंयुतैः। होमाद्रिपुर्नाशमेति ह्युन्मत्तसमिधं तथा ॥२५॥ होमान्मत्तो रिपुर्नूनं भवत्येव सहस्त्रतः। वैरिणः प्रतिमां कृत्वा सम्यक् संस्थापितानिलाम् ॥२६॥ विषत्रिकटुकालिप्तां सम्यगुष्णे जले क्षिपेत्। प्रजपेच्च मनुं सद्यो ज्वराक्रान्तो भवेद्रिपुः ॥२७॥ दुग्धाभिषेकतः शान्तिर्भवत्यस्य न संशयः। प्रतिमां विषवृक्षोत्थां निःक्षिपेदुष्णवारिणि ॥२८॥ उन्मादश्च रिपोः सद्यः पूर्ववच्छान्तिरीरिता। सूर्यबिम्बेऽन्तरारक्तां शूलतर्जनिकाकराम् ॥२९॥ ध्यात्वायुतं प्रजप्याथ मारयेद्रिपुसञ्चयम्। असिखेटकरार्कस्था क्रुद्धा सा वनवासिनी ॥३०॥ संस्मृता मन्त्रजापे तु शमयेच्छत्रुसञ्चयम्। शरधनुष्करां सिंहस्थितां पावकसन्निभाम् ॥३१॥ संस्मृत्य मन्त्रं प्रजपन् क्षिप्रमुच्चाटयेदरीन्। कारस्करद्रुसमिधामयुतं जुहुयात्सुधीः ॥३२॥

रोगिणः करिणः सर्वे जायन्ते ह्यचिरात्सदा। विषवृक्षोत्थितैः पत्रैरमी नाशं प्रयान्ति च ॥३३॥ तद्वृक्षसुमनोभिः स्यादुच्चाटः करिणां ध्रुवम्। राजवृक्षसमिद्भिर्वा रोगा नश्यन्ति दन्तिनाम् ॥३४॥ विषवृक्षप्रसूनैश्च त्रिमध्वक्तैस्तु मानवः (वारणः) वशीभवेत्तथा शीघ्रं पत्रैरानित्यशोभितैः (कोद्रवैः) ॥३५॥ त्रिस्वाधुयुक्तैः करिणो ह्यतिमत्ता भवन्ति च। अभ्यङ्गः पञ्चगव्येन लोके रक्षाकरः परः ॥३६॥ करिणां मनुजस्तोऽयं प्रोक्तो मन्त्रविदुत्तमैः। सर्पिस्तिलानित्यकैस्तु राजिकापञ्चगव्यकैः ॥३७॥ दुग्धतण्डुलकैश्चैव प्रत्येकं च सहस्त्रतः। जुहुयादिभसङ्गानां वृद्धिर्भवति नान्यथा ॥३८॥

महान्तं विष (द्विज) वृक्षं च छित्वा निर्भिद्य पञ्चधा। दिक्क्रमेणैव पञ्चैवमायुधानि प्रकल्पयेत् ॥३९॥ सम्यक् शिल्पविदा शङ्खो नन्दकश्चक्रशार्ङ्गकौ। कौमोदकीति क्रमेण प्रोक्तमायुधपञ्चकम् ॥४०॥ निक्षिप्य पञ्चगव्येतु

जपेन्मन्त्रसहस्त्रकम्। तावच्चाज्येन जुहुयात् सम्पातं तत्र पातयेत् ॥४१॥ भूयश्च पूर्वसंख्याकं जपं कुर्याद्विचक्षणः। विदध्यादायुधान् पञ्च पञ्चगव्यप्रपूरितान् ॥४२॥ मध्यायुधे स्वा(मध्यावटेष्वा) युधानि निक्षिपेत् (तत्र तत्र च) - बलिं हरेत्समीकृत्य तन्मंत्रैर्मन्त्रिणा तथा ॥४३॥ कार्या रक्षा राष्ट्रपुरग्रामाणामेवमेव च। यत्रैवं विहिता रक्षा लक्ष्मीः) तत्र च वर्धते ॥४४॥ धनधान्यसमृद्धिः स्याद्रिपुचौरभयं नच। पद्मैर्नृपं वशीकुर्यात् तत्पत्नीरुत्पलैरपि ॥४५॥ ब्राह्मणान् कुमुदैर्हुत्वा कह्लारैर्विश एव च। शूद्रांल्लवण होमेन ग्रामं जातिप्रसूनकैः ॥४६॥

चक्रशङ्खगदाम्भोजहस्तं सञ्चिन्तयेच्छुभम्। रविबिम्बे मुकुन्दं च मनुं व्यत्यस्तलिङ्गकम् ॥४७॥ प्रजपेच्चाथ पुरुषभगवत्पदयोरथ। सर्वसिद्धिकरः प्रोक्तः प्रकारोऽयं सुमन्त्रिभिः ॥४८॥ साध्यनामाक्षरैः सम्यग्विदर्भितमनुं लिखेत्। यन्त्रे (पत्रे) ततः कुलालस्य करलग्नं प्रगृह्य मृत ॥४९॥ तया कृता या प्रतिमा तस्याश्च हृदि संन्यसेत्। संस्थाप्य स्वाभिमुख्ये तां सप्ताहं प्रजपेन्मनुम् ॥५०॥ सन्ध्यात्रये शतं चाष्टाधिकं वश्यो भवेत्तु सः। व्रीहीन् हुनेदष्टशतं प्रत्यहं वत्सराद्भवेत् ॥५१॥ व्रीहिमान् गोपयोभिश्च पशुमान् भवति ध्रुवम्। घृतहोमान्मन्त्रिणः स्यात् काञ्चनाप्तिर्महीयसी ॥५२॥ दध्ना सर्वसमृद्धिः स्यादन्नैरन्नसमृद्धियुक्। मधुहोमेन रत्नानां निधिर्भवति नान्यथा ॥५३॥ दूर्वाहोमेन दीर्घायुर्मन्त्री भवति निश्चितम्। श्वेतगुञ्जाः समानीय कुडवप्रमिताः शुभाः ॥५४॥ एतन्मन्त्रसुजप्ताश्च विकिरेच्छत्रुसैन्यके। स्वयं मन्त्री सुगुप्तः सन् तेनासौ वैरिणश्चम् ॥५५॥ ज्वरादिकैर्महारोगैः पीडिता स्यान्मृताचिरात्। सेनाधिपतिमुख्यानां परस्परविरोधतः ॥५६॥ एतदुपद्रवैर्नानाविधनाशं प्रयाति च .....॥

तारे शक्तिं ससाध्यां लिखतु रविदले मध्यतः पत्रमूले मर्दिन्या वर्णयुग्मं दलमनु विलिखेद्वह्निशो मूलवर्णान्। अन्त्ये प्र (चा) न्त्येकबीजं बहिरथ लिपिभिर्भूपुरद्वन्द्वसंस्थं दुर्गाया यन्त्रमेतद्युवतितनयदं सर्व रक्षाकरं स्यात् ॥५७॥ सर्वसंपत्करं नृणां सर्वसौभाग्यपुष्टिदम्। राज्यलक्ष्मीविहीनानां भूपतीनां च राज्यदम् ॥५८॥ आमयग्रस्तनृणां च रोगशान्तिकरं परम्। जपहोमाज्यसम्पातसाधितं मन्त्रमुत्तमम् ॥५९॥

रक्षा प्रयोग हेतु यदि यंत्र प्रयोग करना हो तो मध्य में ''ॐ'' ह्रीं पश्चात् साध्यनाम लिखे। बाहर १२ कमल का दल बनायें। १२ कमलों के नीचे के भाग (केसरों) में महिषमर्दिनि के अष्टाक्षर मंत्र के २-२ वर्ण एक दल में लिखे तो मंत्र की ३ आवृत्ति होगी। इसके बाहर २ वृत्त बनायें। दोनों वृत्तों के बीच की वीथिका में **अं आं .... शं षं सं हं लं क्षं** मातृका वर्ण लिखे। दो चतुरस्त्र से अष्टकोण चित्र....... बनाये।

अष्टदलकमलों मे दुर्गा का ध्यान करे व मंत्र जप करे। **ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः। इसका बीज मंत्र दुः** अथवा **दुं** हैं। एकाक्षरी मंत्र के कश्यपऋषि, गायत्री छन्दः दुर्गा देवता हैं।

दूर्वाश्यामां त्रिनेत्रां शूलवाणचक्र शङ्खखड्ग खेट धनुः कपालानि। दक्षिणाधः करक्रमेण धारयन्तीं ध्यायेत्।

॥ तारिणी दुर्गा मंत्र ॥

मंत्र :- ॐ श्रीं ऐं श्रीं श्रीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं दुर्गां दुर्गतारिणीं पद्मानिलनीं मातः प्रपद्ये स्वाहा।

यह मंत्र भय संकट एवं दुर्गति नाशक है। दौर्भाग्य का नाश कर सौभाग्य की वृद्धि करता है ॥

॥ जयदुर्गा मंत्र ॥

मंत्र :- ॐ क्रों क्लीं श्रीं ह्रीं आं स्त्रीं हूं जय दुर्गे रक्ष रक्ष स्वाहा। (महा. संहि.)

॥ ध्यानम् ॥

अतिकालघनाकारा चन्द्रार्द्धकृतशेखरा । कटाक्षैः शत्रुसंघातान् निर्दहन्ती परात्परा ॥
त्रिनेत्रा भृकुटीभङ्गा वित्रासित जगत्त्रया । सिंहधोरण धौरीणा चलच्चिकुरपल्लवा ॥
अष्टवाहा जगद्धात्री विकरालतरानना । शंखं तथाङ्कुशं चापं जीवतो वैरिणः शिरः ॥
सकचं वामपार्श्वस्थकरेण दधती शिवा । करवालं तथा चक्रं विशिखं च गदामापि ॥
दक्षिणेन करेणैव धारयन्ती भयप्रदा । जयदुर्गा सदा ध्येया घोरे समरमूर्द्धनि ॥

युद्ध में विजयप्राप्ति हेतु तथा रक्षा कर्म के लिये इस मंत्र की आराधना करे।

॥ शबरेश्वरी मंत्र ॥

मन्त्र – ॐ ह्रीं आं शबरेश्वर्यै नमः।

॥ ध्यानम् ॥

श्यामा पर्णावृत तनुर्गुञ्जाहार विराजिता । स्मेरा षोडशवर्षीयावतंसितलतादला ॥
वैष्णवं भाजनं वामे कटेरुपरि विभ्रतीम् । फलानि चिन्वतो दक्षकरेण विपिनावनौ ॥
वराटककृत्ताकल्या गायन्ती खर्वविग्रहा । भक्तिभावतया देवी ध्यातव्या शबरेश्वरी ॥

भगवती की उपासना से अकाल व अनावृष्टि योग दूर होकर सुकाल होवे। फूलादि की वृद्धि होवे।

॥ अथ नवचण्डी विधानम् ॥

गुरु, गणेश स्मरण पूर्वकं संकल्पं कुर्यात्। गणेशादि पूजन कर गृह का दिग्रक्षण करें। दशों दिशाओं में देवियों का आवाह्न कर बलि प्रदान करें। दशों दिशाओं में देवियों के आवाह्न हेतु उन्हें आसन प्रदान करें। गंधादि से पूजन करें।

पूर्वे – **ॐ गजारूढे कादंबरि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावह। तदग्रे घृतशर्करा सहितं पायसं नानाव्यंजनादि सहित निधाय, ॐ कादंबरि एषते बलिर्नमः।** इति बलिमुत्सृज्य, क्षमस्वेति प्रणमेत्।

आग्नेयां – **ॐ अजवाहने उल्के देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्युल्कामावाह्य संपूज्य बलिं दद्यात्।**

दक्षिणे – **ॐ महिषारूढे करालि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावह संपूज्य बलिं च दद्यात्।**

नैर्ऋत्ये – **ॐ प्रेतवाहने रक्ताक्षि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावह संपूज्य बलिं च दद्यात्।**

पश्चिमे – **ॐ श्वेतकौलीरवाहने श्वेताम्बरे देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावह संपूज्य बलिं च दद्यात्।**

वायव्ये – **ॐ मृगवाहने हरितां देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावह संपूज्य बलिं च दद्यात्।**

उत्तरे – **ॐ सिंहासने यक्षिणि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावह संपूज्य बलिं च दद्यात्।**

ईशाने – **ॐ वृषवाहने कंकालि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावह संपूज्य बलिं च दद्यात्।**

पूर्वेशानयोर्मध्ये – **ॐ हंसवाहने सुरश्रेष्ठ देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावह संपूज्य बलिं च दद्यात्।**

निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये - **ॐ अहिवाहने सर्पराज्ञी देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावह संपूज्य बलिं च दद्यात्।**

पश्चात् शास्त्र विधि से नवग्रहों की पूजा करें। सर्वतोभद्र मण्डल पर या देवी यंत्र पर देवी की मूर्ति की पूजा करें। देवीघट स्थापना करें। साथ में अन्य स्वरूपों की पूजा करें -

जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तुते ॥

नैवेद्यादि अर्पण कर प्रार्थना करें।

सर्व मंगल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते ॥
शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे ।
सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणी नमोस्तुते ॥
ॐ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ।
द्रव्यमारोग्यविजयौ देहि देवि नमः सदा ॥
रूपं देहि यशो देहि देवि भगं (ऐश्वर्य) भगवति देहि मे ।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहि मे ॥

यदि वृद्धि क्रम से पाठ करना हो तो प्रतिदिन १-१ पाठ की वृद्धि करते हुये २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, तथा नवमी को नव पाठ कर दशांश होम करें। कन्या, ब्राह्मण भोजन करायें। हवन समय उवाच स्थल पर पत्र (शमीपत्र या बिल्वपत्र या नागरबेल के पत्ते तांबूल पत्र) एवं पुष्प तथा फल का होम करें।

॥ मासि मासि पूजा फलम् ॥

पूर्णिमा, अष्टमी, नवमी को त्रिकाल पूजा से वाजपेय यज्ञ का फल मिले। संक्रान्ति व अयन परिवर्तन पर पाठ करने से दुर्भिक्ष नाश होवे। आश्विन व चैत्र नवरात्रा विशेष फलदायी है। दुर्गार्चन करने वाले के पाप मेरु पर्वत के समान हो तो भी पाप नष्ट हो जाते हैं।

मासे चाश्वयुजे वीर सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
कार्तिके पौर्णमास्यां यः सौपवसोऽर्चयेदुमाम् ॥
सोऽग्निष्टोमफलं विंदेत्सूर्यलोकं च गच्छति ।
आषाढे पौर्णमास्यां तु योऽर्चयेदंबिकां नरः ।
सोपवासो महाभागः स याति परमां गतिम् ॥

पौर्णमास्यां तु यो माघे पूजयेद्विधिवच्छिवाम् । सो ऽश्वमेघमवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥
अयने दक्षिणे यस्तु पूजयेदंबिकां नृप । सकृद्गंधोदकैश्चैव गंधर्वसदने वसेत् ॥
पंचगव्येन तूक्षित्वा पंच चूडाचलं व्रजेत् । आपः क्षीरं कुशाग्राणि तंडुला हविरक्षिताः ॥
सह सिद्धार्थका दुर्वा कुंकुमं रोचना मधु । अर्घोऽयं कुरु शार्दूल द्वादशांग उदाहृतः ॥

अनेन पूजयेद्यस्तु स यानि परमं पदम् । दारवेणार्घ पात्रेण दत्त्वाऽर्घ्यं विधिवन्नृप ॥
देव्यै तदा महाराज अग्निष्टोमफलं वज्रेत् । अब्देमेकशतं दिव्यं शक्रलोके महीयते ॥
गंधानुलेपनं कृत्वा ज्योतिष्टोमफलं वज्रेत् । चंदनेनावलिप्यार्यामग्निष्टोम फलं व्रजेत् ॥
विलिप्य कृष्णागरुणा वाजपेय फलं भजेत् । कुंकुमेन विलिप्यार्यां गोसहस्रफलं भजेत् ॥
चंदनागकर्पूरैः सूक्ष्मपत्रैः सकुंकुमैः । दुर्गामालिप्य विधिवत्कल्प कोटिं वसेद्दिवि ॥
अग्निहोत्रपरे विप्रे वेदवेदांगपारगे । सुवर्णानां सुवर्णानां शते दत्ते च यत्फलम् ॥
तत्फलं लभते राजन् पूजयित्वा तु चण्डिकाम् । मालया बिल्व पत्राणां नवम्यां च पुरेण च ॥
मालाद्वयेन संपूज्य दुर्गां देवीं नराधिप । बिल्ववृक्षस्य पुष्पैस्च राजसूक फलं लभेत् ॥

करवीर पुष्प व द्रोण पुष्प के पूजन से वाजपेय व राजसूर्य यज्ञ का फल मिलता है।

शमी पुष्प की माला से हजार गायों का फल मिले। नीलकमल के अर्पण से करोड़ वर्षों तक रुद्रलोक में वास करे।

पुष्पादि के अभाव में औषधि अर्पण करें।

पत्राणामप्य लाभे तु औषधीस्तु निवेदयेत् । ओषधीनाम लाभे तु भक्त्या भगवती जिता ॥
प्रत्येक मुक्तपुष्पेषु कुशेष्वपि फलं नृप । आंगिरसेषु तेष्वेव द्विगुणं कांचनस्य तु ॥
मल्लिकायुत्पलं पत्रं शमीपुन्नाग चंपकम् । कर्णिकारमशोकं च द्रोणपुष्पं विशेषतः ॥
चंदनं च जपा पुष्पं नागकेसरमेव च । यः प्रयच्छति पुण्यात्मा पुष्पाण्येतानि भावतः ॥
चण्डिकायै नरश्रेष्ठः स च प्रोक्त फलं भजेत् । सप्राप्य कालाद्राजत्वं चण्डिकानुचरो भवेत् ॥

॥ शतचण्ड्यां रात्रौ होम निषेध॥

''**सिंह सिद्धान्त सिंधु**'' तथा **महाकाल संहिता** के अनुसार दुर्गा होम रात्रि में नहीं करें। परन्तु देश काल परिस्थिति के अनुसार हवनाङ्ग पूर्ण क्रम दिन में संभव नहीं हो तो विधि इस प्रकार से करें।

१. सूर्य की साक्षी में अग्नि स्थापन करें एवं पूर्णाहुति तो सूर्य की साक्षी में दूसरे दिन में ही करें।

२. सायं शुभ मुहुर्त्त में अग्नि स्थापन करें, ग्रह शान्ति पूर्वक आवाहित देवताओं की, दुर्गा व उसके अंग देवताओं की आहुति देकर शेष कर्म व दुर्गा होम दूसरे दिन करके सूर्य साक्षी में पूर्णाहुति करें।

३. रात्रि में शुभ मुहुर्त्त में हवन प्रारंभ कर प्रथम व मध्यम चरित तक होम कर, उत्तर चरित शेष कर्म दूसरे दिन करें सूर्य साक्षी में पूर्णाहुति करें।

''नाप्यदो द्वितयं कार्यं क्षपायां वासशदृते। तस्यां कृते तु विफलं जायते वेदशासनात्''

अर्थात् लुप्त होने वाली रात्रि में दुर्गा होम न करें। परन्तु शारद नवरात्र में पुनः होम की इच्छा को शुभ माना है अतः शेष पाठ दूसरे दिन हो सकता है।

देवी सप्तशती पाठं गृहणाति विधिना कृतम् ।
विधिना वाऽप्यविधिना पुर्नहोंम प्रतिच्छति ॥

तस्माद् यत्नेन कर्तव्यो होमः शारद पूजने ।
होमः सप्तशतिपाठो बलिर्वादित्र वादनम् ॥
चतुष्टयमिदं शस्तं मासीषे कालीकार्चने ॥

(कई बार हमने विशेष परिस्थितिवश दुर्गा प्रधान होम रात्रि में प्रारंभ किया तथा शेषकर्म दूसरे दिन करके सूर्य साक्षी में पूर्णाहुति होम बलि आदि कर्म कर होम का समापन किया तथा परिणाम शुभ रहे)

॥ पवित्रा रोपण ॥

पवित्रा (यज्ञोपवीत, शुभ वस्त्र) का आरोपण देवी की प्रीति बढ़ाने वाला है। आषाढ़ शुक्ला अष्टमी व श्रावण शुक्ला अष्टमी में पवित्रा धारण करायें।

शुभ तिथि व पर्व पर पवित्रा धारण करायें अलग अलग देवता की अलग अलग शुभ तिथि हैं। पवित्री सोना, चांदी, तांबा, रेशम व सूत की होती है। प्रतिप्रदा को कुबेर, द्वितीया को श्रीदेवी, तृतीया को भवभाविनी, चतुर्थी को गणेश, पञ्चमी को सोमराज एवं सरस्वती,, षष्ठी को सुरेश, सप्तमी को सूर्य की, अष्टमी को दुर्गा की, मातृगणों की नवमी, दशमी को वासुकी की, एकादशी को भद्रकाली की, द्वादशी को विष्णु की, त्रयोदशी को कामदेव की, चतुर्दशी को भद्रकाली व शिव, पूर्णीमा को ब्रह्मा व दिग्पालों की शुभ तिथि है। इनको पवित्रा इन तिथियों में चढावें।

कन्या या प्रतिव्रता प्रमदा या साधु स्वभाव वाली विधवा स्त्री सूत से रंग बिरंगी पवित्रा का निर्माण करें। दुःशीला से निर्माण नहीं करायें। अगर, कर्पूर, हल्दी, लाक्षारस, चंदनादि के लेप से तैयार करें।

सूत्र चूहों का कतरा हुआ, नीला, मलिन, भस्म या धूम युक्त सुई से उपयोग किया हुआ नहीं होवे।

२७ तंतुओं की पवित्री कनिष्ठ होती है, मर्त्यलोक में सुख सौभाग्य बढाती है। ५४ तंतुओं की पवित्री मध्यम होती है स्वर्ग व मोक्ष प्रदाता है। १०८ तंतुओं की पवित्री महादेवी के अर्पित करने पर शिव सा पुण्य प्राप्त होता है। १००८ तंतुओं की पवित्री रत्नमाला कही गई है। पवित्रा अर्पण समय पूजा होम करें तथा देवता का अधिवास करायें।

॥ नव भैरव ॥

(पुरश्चर्यार्णवे) **असिताङ्गो रुरु चण्डः क्रोध उन्मत्त एव च ।**

आनन्दश्च कपाली च भीषणस्तदनन्तरम् ।
संहारी सर्वशेषे स्यात् कार्त्तिता नव भैरवाः ॥

असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोधभैरव, उन्मत्तभैरव, आनन्दभैरव, कपाली, भीषण एवं संहार भैरव नाम से नौ भैरव है।

॥ कराल भैरव मंत्रोद्धार – (देवी रहस्ये) ॥

तारं काली शिवो नाम तुरीरूपं च ठद्वयम् ।
मंत्रो भैरव विख्यातः कालौ भोगपवर्गदः ॥

मन्त्र : – ॐ क्रीं हौं करालाय स्वाहा।

॥ विकराल भैरव मंत्रोद्धार ॥

तारं वाग्भव मायाया विकरालाय न्यसेत् ।

अन्ते ठद्वयमुच्चार्य मंत्रराजो ऽप्यमीरितः ॥

मंत्र – ॐ ऐं ह्रीं विकरालाय स्वाहा।

॥ क्रोधनेश भैरव मंत्रोद्धार ॥

तारं काली शिवो देवि क्रोधनेशाय चाश्मरी ।
मंत्राऽयं सर्वसिद्धीशो वैरिवर्ग निवर्दण ॥

मंत्र – ॐ क्रीं ह्रौं क्रौधनेशाय नमः।

॥ क्रूरभैरव मंत्रोद्धार ॥

तारं काली युगं माया क्रूरभैरव प्रोद्धरेत् ।
प्रसीद द्वयमापोऽन्ते मंत्रोऽयं सर्वसिद्धिदः ॥

मंत्र – ॐ क्रीं क्रीं ह्रीं क्रूरभैरव प्रसीद प्रसीद स्वाहा।

॥ संहारभैरव मंत्रोद्धार ॥

तारं वाणी शरत्कामः संहारापाञ्चले वनम् ।
मन्त्रोऽय देवदेवस्य वर्णितस्ते दशाक्षरः ॥

मंत्र – ॐ ऐं ह्रीं क्लीं संहाराय स्वाहा।

॥ रुरु भैरव मंत्रोद्धार ॥

तारं चाब्धिः परा बीजं रुरवे चाश्मरीमनुः ।

मन्त्र – ॐ रूं ह्रीं रुरवे नमः।

॥ कालाग्नि भैरव मन्त्रोद्धार ॥

प्रणवं कमला माया कालाग्नये पदं ततः ।
विश्वमन्ते मनोदैवि मन्त्रराजो ऽयमीरितः ॥

मन्त्र – ॐ श्रीं ह्रीं कालाग्नये स्वाहा।

॥ कपाली भैरव ॥

तारं शिवः कामराजः कपालीशाय संवदेत् ।
अन्ते ठद्वयमुद्धृत मन्त्रोऽयं स्याद् दशाक्षरः ॥

मन्त्र – ॐ ह्रां क्लीं कपालीशाय स्वाहा।

॥ अथ नवदुर्गा प्रयोगाणि ॥

॥ नवदुर्गा प्रार्थना व ध्यान ॥

वंदे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम् । वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम् ॥१॥
दधाना करपद्माभ्यामक्षमाला कमण्डलू । देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा ॥२॥
पिण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपास्त्रकैर्युता । प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता ॥३॥
सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च । दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे ॥४॥
सिंहासनगता नित्यं पद्माञ्चितकरद्वया । शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी ॥५॥
चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवर वाहना । कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघातिनी ॥६॥
एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता । लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्त शरीरिणी ॥६॥
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टक- भूषणा । वर्धन्मूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी ॥७॥
श्वेते वृषे समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः । महागौरी शुभं दद्यान्महादेव प्रमोददा ॥८॥
सिद्धगंधर्व यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि । सेव्यमाना सदाभूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी ॥९॥

॥ १. शैलपुत्री ॥

कालिका पुराण के अनुसार महिषासुर वध के पूर्व कल्प में शैलपुत्री ही आदि शक्ति है।

पूज्यते वैष्णवी देवी तंत्रोक्ता अष्टयोगिनीः ।
ताः प्रोक्ताः शैलपुत्र्याश्च पूर्व कल्पे च भैरवः ॥

शैलपुत्री ने जब हिमालयराज के यहां जन्म लिया तो हिमालयराज उनको पहचान नहीं सका जगम्दबा ने दिव्यचक्षु से पहले उग्ररूप पश्चात् शान्तरूप के दर्शन कराये। दोनों ध्यान इस प्रकार है -

कोटि सूर्य प्रतीकाशं तेजोबिम्बं निराकुलम् । ज्वालामाला सहस्राढ्यं कालानल शतोपमम् ॥
दंष्ट्राकरालं दुर्धर्षं जटामण्डल मण्डितम् । त्रिशूलवर हस्तं च घोररूपं भयानकम् ॥
प्रशान्तं सौम्यवदनमनन्ताश्चर्य संयुतम् । चन्द्रावयवलक्ष्माणं चन्द्रकोटि समप्रभम् ॥
किरीटिनं गदाहस्तं नूपुरैरुपशोभितम् । दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगंधानुलेपनम् ॥
शङ्ख चक्रधरं काम्यं त्रिनेत्रं कृत्तिवाससम् । अण्डस्थं चाण्डवाह्यस्थं बाह्यमाभ्यन्तरं परम् ॥
सर्वशक्तिमयं शुभ्रं सर्वाकारं सनातनम् । ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्र योगीन्द्रैर्वन्द्यमान पदाम्बुजम् ॥
सर्वतः पाणि पादान्तं सर्वतोऽक्षि शिरोमुखम् । सर्वमावृत्य तिष्ठन्तं ददर्श परमेश्वरम् ॥१॥

नीलोत्पलदलप्रख्यं नीलोत्पल सुगंधिकम् । द्विनेत्र द्विभुजं सौम्यं नीलालक विभूषितम् ॥
रक्तपादाम्बुजतलं सुरक्तकरपल्लवम् । श्रीमद् विशाल संवृत्त ललाट तिलकोज्ज्वलम् ॥
भूषितं चारुसर्वाङ्गं भूषणैरति कोमलम् । दधानमुरसा मालां विशालां हेमनिर्मिताम् ॥
ईषत्स्मितं सुबिम्बोष्ठं नूपुरारावसंयुतम् । प्रसन्नवदनं दिव्यमनन्त महिमास्पदम् ॥२॥

मंत्र – (१) ॐ शां शीं शूं शैलपुत्र्यै स्वाहा।

(२) ॐ शां शीं शूं शैलपुत्र्यै मे शुभं कुरु कुरु कुरु स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

ॐकाराक्षर बीज च यकारः शक्तिरुच्यते ।
स बीज कथित मंत्र कल्प च शृणु भैरव ॥

मंत्र – ॐ ह्रीं शं शैलपुत्र्यै नमः ॥३॥

चण्डिका गायत्री – महामायायै विद्महे त्वां चण्डिकाख्यां धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥४॥

॥ यन्त्रार्चनम् ॥

॥ श्री शैलपुत्री यन्त्रम् ॥

यन्त्र रचना – बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं भूपुर की रचना करें।

ॐ मं मण्डूकादिपीठ देवताभ्यो नमः। ॐ मूल प्रकृत्यै नमः। ॐ महामाया योगपीठाय नमः।

उपरोक्त ध्यान मंत्रों से देवी का आवाहन मूल बिन्दु में करें।

प्रथमावरणम् – (त्रिकोणे) **ॐ वामाय नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ रोद्रै नमः।**

द्वितीयावरणम् – (षट्कोणे) **ॐ हृदय शक्तये नमः। ॐ शिरशक्त्यै नमः। ॐ शिखा शक्तये नमः। ॐ कवच शक्तये नमः। ॐ नेत्र शक्तये नमः। ॐ अस्त्र शक्तये नमः।**

तृतीयावरणम् – (अष्टदले) कालिका पुराणे – **ताः प्रोक्ताः शैलपुत्र्याश्च पूर्वकल्पे च भैरव।**

जयन्तीं मङ्गलां कालीं भद्रकालीं कपालिनीम् ।
दुर्गां शिवां क्षमां धात्रीं दलेष्वष्ट सु पूजयेत् ॥

यह नव शक्तियों के नाम है। शिवा का मध्य में पूजन करने पर शेष क्रम इस प्रकार है।

ॐ जयन्त्यै नमः। ॐ मङ्गलायै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ भद्रकाल्यै नमः। ॐ कपालिन्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ क्षमायै नमः। ॐ धात्र्यै नमः।

उग्रचण्डा क्रम में (कालिका पुराणे) कौशिकी, शिवदूत, उमा, हेमवती, शाकंभरी, दुर्गा, महोदरी,
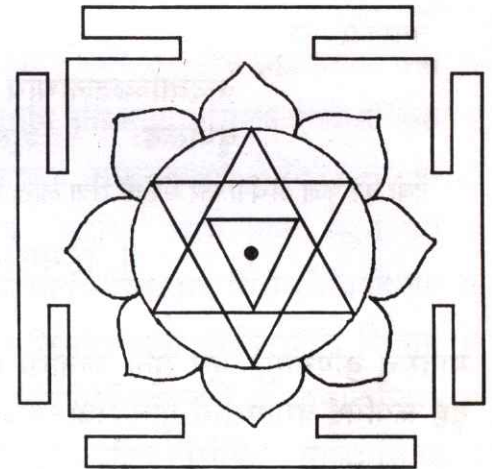
ईश्वरी।

पुनः अष्टदल में – **असिताङ्ग भैरव, रुरुभैरव, चण्डभैरव, क्रोधभैरव, कपालभैरव, उन्मत्तभैरव, भीषणभैरव, संहारभैरव** का पूजन करें।

चतुर्थावरणम् – (भूपुरे चतुर्द्वारे) कालिका पुराणे –

नन्दिभृङ्गि महाकाल गणेश द्वारपालकाः ।
उत्तरादिक्रमात् पूज्या आसनानि च मध्यतः ॥

उत्तरे – **नन्दिने नमः।** पूर्वे – **भृङ्गवे नमः।** दक्षिणे – **महाकालाय नमः।** पश्चिमे – **गणेशाय नमः।**

पञ्चमावरणम् – (भूपुरे दशदिक्षुः पूर्वादिक्रमेण) **ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ नैर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ पूर्व ईशान मध्ये – ब्रह्मणे नमः। ॐ नैर्ऋत पश्चिम मध्ये – अनंताय नमः।**

षष्ठावरणम् – (भूपुरे इन्द्रादिलोकपाल समीपे) **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

नमस्कार मन्त्र –

वन्देवाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृत शेखराम् ।
वृषारूढः शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्वनीम् ॥

देवी की पूजा अर्चना कर मंत्र के सवा लाख जप करें। बिल्वपत्र व करवीर पुष्पों से होम करे तो वाञ्छित फल प्राप्त होवे।

॥ हिमालयराज कृत शैलपुत्री स्तुति॥

॥ हिमालय उवाच ॥

मातस्त्वं कृपयागृहे मम सुता जातासि नित्यापि यद्भाग्यं मे बहुजन्मजन्मजनितं मन्ये महत्पुण्यदम् । दृष्टं रूपमिदं परात्परतरां मूर्तिं भवान्या अपि माहेशीं प्रति दर्शयाशु कृपया विश्वेशि तुभ्यं नमः ॥१॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

ददामि चक्षुस्ते दिव्यं पश्य मे रूपमैश्वरम् । छिन्धि हृत्संशयं विद्धि सर्वदेवमयीं पितः ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

इत्युक्त्वा तं गिरिश्रेष्ठं दत्त्वा विज्ञानमुत्तमम् । स्वरूपं दर्शयामास दिव्यं माहेश्वरं तदा ॥
शशिकोटिप्रभं चारुचन्द्रार्धकृतशेखरम् । त्रिशूलवर हस्तं च जटामण्डितमस्तकम् ॥
भयानकं घोररूपं कालानलसहस्त्रभम् । पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं च नागयज्ञोपवीतिनम् ॥
द्वीपिचर्माम्बरधरं नागेन्द्रकृतभूषणम् । एवं विलोक्य तद्रूपं विस्मितो हिमवान् पुनः ॥
प्रोवाच वचनं माता रूपमन्यत्प्रदर्शय । ततः संहृत्य तद्रूपं दर्शयामास तत्क्षणात् ॥
रूपमन्यन्मुनिश्रेष्ठ विश्वरूपा सनातनी । शरच्चन्द्रनिभं चारुमुकुटोज्ज्वलमस्तकम् ॥

शङ्खचक्रगदापद्महस्तं नेत्रत्रयोज्ज्वलम् । दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ॥
योगीन्द्रवृन्दसंवन्द्यं सुचारुचरणाम्बुजम् । सर्वतः पाणिपादं च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ॥
दृष्ट्वा तदेतत्परमं रूपं स हिमवान् पुनः । प्रणम्य तनयां प्राह विस्मयोत्फुल्ललोचनः ॥

॥ हिमालय उवाच ॥

मातस्तवेदं परमं रूपमैश्वरमुत्तमम् । विस्मितोऽस्मि समालोक्य रूपमन्यत्प्रदर्शय ॥
त्वं यस्य सो ह्यशोच्यो हि धन्यश्च परमेश्वरि । अनुगृह्णीष्व मातर्मां कृपया त्वां नमो नमः ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

इत्युक्ता सा तदा पित्रा शैलराजेन पार्वती । तद्रूपमपि संहृत्य दिव्यं रूपं समादधे ॥
नीलोत्पलदलश्यामं वनमालाविभूषितम् । शङ्खचक्रगदापद्ममभिव्यक्तं चतुर्भुजम् ॥
एवं विलोक्य तद्रूपं शैलानामधिपस्ततः । कृताञ्जलिपुटः स्थित्वा हर्षेण महता युतः ॥
स्तोत्रेणानेन तां देवीं तुष्टाव परमेश्वरीम् । सर्वदेवमयीमाद्यां ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकाम् ॥

॥ हिमालय उवाच ॥

मातः सर्वमयि प्रसीद परमे विश्वेशि विश्वाश्रये, त्वं सर्वं नहि किंचिदस्ति भुवने तत्त्वं त्वदन्यच्छिवे ।
त्वं विष्णुर्गिरिशस्त्वमेव नितरां धातासि शक्तिः परा, किं वर्ण्यं चरितं त्वचिन्त्यचरिते ब्रह्माद्यगम्यं मया ॥
त्वं स्वाहाखिलदेवतृप्तिजननी विश्वेशि त्वं वै स्वधा, पितृणामपि तृप्तिकारणमसि त्वं देवदेवात्मिका ।
हव्यं कव्यमपि त्वमेव नियमो यज्ञस्तपो दक्षिणा, त्वं स्वर्गादिफलं समस्तफलदे देवेशि तुभ्यं नमः ॥
रूपं सूक्ष्मतमं परात्परतरं यद्योगिनो विद्यया, शुद्धं ब्रह्ममयं वदन्ति परमं मातः सुदृप्तं तव ।
वाचा दुर्विषयं मनोऽतिगमपि त्रैलोक्यबीजं शिवे, भक्त्याहं प्रणमामि देवि वरदे विश्वेश्वरि त्राहिमाम् ॥
उद्यत्सूर्यसहस्रभां मम गृहे जातां स्वयं लीलया, देवीमष्टभुजां विशालनयनां बालेन्दुमौलिं शिवाम् ।
उद्यत्कोटिशशाङ्ककान्तिनयनां बालां त्रिनेत्रां परां भक्त्या त्वां प्रणमामि विश्वजननीं देवि प्रसीदाम्बिके ॥
रूपं ते रजताद्रिकान्तिविमलं नागेन्द्रभूषोज्ज्वलं, घोरं पञ्चमुखाम्बुजत्रिनयनैर्भीमैः समुद्भासितम् ।
चन्द्रार्धाङ्कितमस्तकं धृतजटाजूटं शरण्ये शिवे, भक्त्याहं प्रणमामि विश्वजननि त्वां त्वं प्रसीदाम्बिके ॥
रूपं ते शारदचन्द्रकोटिसदृशं दिव्याम्बरं शोभनं, दिव्यैराभरणैर्विराजितमलं कान्त्या जगन्मोहनम् ।
दिव्यैर्बाहुचतुष्टयैर्युतमहं वन्दे शिवे भक्तितः, पादाब्जं जननि प्रसीद निखिलब्रह्मादिदेवस्तुते ॥
रूपं ते नवनीरदद्युतिरुचिफुल्लाब्जनेत्रोज्ज्वलं, कान्त्या विश्वविमोहनं स्मितमुखं रत्नाङ्गदैर्भूषितम् ।
विभ्राजद्वनमालयाविलसितोरस्कं जगत्तारिणि, भक्त्याहं प्रणतोऽस्मि देवि कृपया दुर्गे प्रसीदाम्बिके ॥
मातः कः परिवर्णितुं तव गुणं रूपं च विश्वात्मकं शक्तो देवि जगत्त्रये बहुगुणैर्देवोऽथवा मानुषः ।
तत् किं स्वल्पमतिर्ब्रवीमि करुणां कृत्वा स्वकीयैर्गुणैर्नो मां मोहय मायया परमया विश्वेशि तुभ्यं नमः ॥

अद्य मे सफलं जन्म तपश्च सफलं मम । यत्त्वं त्रिजगतां माता मत्पुत्रीत्वमुपागता ॥
धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं मातस्त्वं निजलीलया । नित्यापि मद्गृहे जाता पुत्रीभावेन वै यतः ॥

॥ इति ॥

॥ अथ शैलपुत्री सहस्रनाम ॥

इसे पुराणों काली सहस्रनाम अथवा ललिता सहस्रनाम भी कहा गया है।

भगवान शंकर ने जब कामदेव को भस्म कर दिया तो पार्वतीजी ने कहा कि मुझे पत्नि रूप में प्राप्त करने के लिये ही आपने तपस्या की थी फिर कामदेव को आपने क्यों भस्म कर दिया। शिवजी ने कहा कि मेरी प्राणप्रिया तो सती हैं यदि आप सती ही हैं तो मुझे उसी रूप का दर्शन करायें। तब शैलपुत्री ने अपने आद्य रूप का दर्शन कराया और शिवजी ने शैलपुत्री की सहस्रनाम से स्तुति की।

॥ शिव उवाच ॥

यदि मे प्राणतुल्यासि सती त्वं चारुलोचना । तदा यथा महामेघप्रभा सा भीमरूपिणी ॥
बभूव दक्षयज्ञस्य विनाशाय दिगम्बरी । काली तथा स्वरूपेण चात्मानं दर्शयस्व माम् ॥

॥ श्री महादेव उवाच ॥

इत्युक्ता सा हिमसुता शम्भुना मुनिसत्तम । बभूव पूर्ववत्काली स्निग्धाञ्जनचयप्रभा ॥
दिगम्बरी क्षरद्रक्ता भीमायतविलोचना । पीनोन्नतकुचद्वन्द्वचारुशोभितवक्षसा ॥
गलदापादसंलम्बिकेशपुञ्ज भयानका । ललज्जिह्वाज्वलद्दन्तनखैरुपशोभिता ॥
उद्यच्छशाङ्कनिचयैर्मेघपंक्तिरिवाम्बरे । आजानुलम्बि मुण्डालिमालयाति विशालया ॥
राजमाना महामेघपंक्तिश्चञ्चलया यथा । भुजैश्चतुर्भिर्भूयोच्चैः शोभमाना महाप्रभा ॥
विचित्ररत्न विभ्राजन्मुकुटोज्ज्वलमस्तका । तां विलोक्य महादेवः प्राह गद्गदया गिरा ॥

॥ शिव उवाच ॥

अनाद्या परमा विद्या प्रधाना प्रकृतिः परा । प्रधानपुरुषाराध्या प्रधानपुरुषेश्वरी ॥
प्राणात्मिका प्राणशक्तिः सर्वप्राणहितैषिणी । उमा चोत्तमकेशिन्युत्तमा चोन्मत्तभैरवी ॥
उर्वशी चोन्नता चोग्रा महोग्रा चोन्नतस्तनी । उग्रचण्डोग्रनयनामहोग्रदैत्यनाशिनी ॥
उग्रप्रभावती चोग्रवेगानुग्रप्रमर्दिनी । उग्रतारोग्रनयना चोर्ध्वस्थाननिवासिनी ॥
उन्मत्तनयनात्युग्रदन्तोत्तुङ्गस्थलालया । उल्लासिन्युल्लसचित्ता चोत्फुल्लनयनोज्ज्वला ॥
उत्फुल्लकमलारूढा कमला कामिनी कला । काली करालवदना कामिनी मुखकामिनी ॥
कोमलाङ्गी कृशाङ्गी च कैटभासुरमर्दिनी । कालिन्दी कमलस्था च कान्ता काननवासिनी ॥
कुलीना निष्कला कृष्णा कालरात्रिस्वरूपिणी । कुमारी कामरूपा च कामिनी कृष्णपिङ्गला ॥
कपिला शान्तिदा शुद्धा शंकरार्धशरीरिणी । कौमारी कार्तिकी दुर्गा कौशिकी कुण्डलोज्ज्वला ॥

कुलेश्वरी कुलश्रेष्ठा कुन्तलोज्ज्वलमस्तका । भवानी भाविनी वाणी शिवा च शिवमोहिनी ॥
शिवप्रिया शिवाराध्या शिवप्राणैकवल्लभा । शिवपत्नी शिवस्तुत्या शिवानन्दप्रदायिनी ॥
नित्यानन्दमयी नित्या सच्चिदानन्दविग्रहा । त्रैलोक्यजननी शम्भुहृदयस्था सनातनी ॥
सदया निर्दया माया शिवा त्रैलोक्यमोहिनी । ब्रह्मादित्रिदशाराध्या सर्वाभीष्टप्रदायिनी ॥
ब्रह्माणी ब्रह्मगायत्री सावित्री ब्रह्मसंस्तुता । ब्रह्मोपास्या ब्रह्मशक्तिर्ब्रह्मसृष्टिविधायिनी ॥
कमण्डलुकरा सृष्टिकर्त्री ब्रह्मस्वरूपिणी । चतुर्भुजात्मिका यज्ञसूत्ररूपा दृढव्रता ॥
हंसारूढ़ा चतुर्वक्त्रा चतुर्वेदाभिसंस्तुता । वैष्णवी पालनकरी महालक्ष्मीर्हरिप्रिया ॥
शङ्खचक्रधरा विष्णुशक्तिर्विष्णुस्वरूपिणी । विष्णुप्रिया विष्णुमाया विष्णुप्राणैकवल्लभा ॥
योगनिद्राक्षरा विष्णुमोहिनी विष्णुसंस्तुता । विष्णुसम्मोहनकरी त्रैलोक्यपरिपालिनी ॥
शङ्खिनी चक्रिणी पद्मा पद्मिनी मुशलायुधा । पद्मालया पद्महस्ता पद्ममालाविभूषिता ॥
गरुडस्था चारुरूपा सम्पद्रूपा सरस्वती । विष्णुपार्श्वस्थिता विष्णुपरमाह्लाददायिनी ॥
सम्पत्तिः सम्पदाधारा सर्वसम्पत्प्रदायिनी । श्रीविद्या सुखदा सौख्यदायिनी दुःखनाशिनी ॥
दुःखहन्त्री सुखकरी सुखासीना सुखप्रदा । सुखप्रसन्नवदना नारायणमनोरमा ॥
नारायणी जगद्धात्री नारायणविमोहिनी । नारायणशरीरस्था वनमालाविभूषिता ॥
दैत्यघ्नी पीतवसना सर्वदैत्यप्रमर्दिनी । वाराही नारसिंही च रामचन्द्रस्वरूपिणी ॥
रक्षोघ्नी काननावासा चाहल्याशापमोचिनी । सेतुबन्धकरी सर्वरक्षःकुलविनाशिनी ॥
सीता पतिव्रता साध्वी रामप्राणैकवल्लभा । अशोककाननावासा लङ्केश्वरविनाशिनी ॥
नीतिः सुनीतिः सुकृतिः कीर्तिर्मेधा वसुन्धरा । दिव्यमाल्यधरा दिव्या दिव्यगन्धानुलेपना ॥
दिव्यवस्त्रपरीधाना दिव्यस्थाननिवासिनी । माहेश्वरी प्रेतसंस्था प्रेतभूमिनिवासिनी ।
निर्जनस्था श्मशानस्था भैरवी भीमलोचना । सुघोरनयना घोरा घोररूपा घनप्रभा ॥
घनस्तनी वरा श्यामा प्रेतभूमिकृतालया । खट्वांगधारिणी द्वीपिचर्माम्बरसुशोभना ॥
महाकाली चण्डवक्त्रा चण्डमुण्डविनाशिनी । उद्यानकाननावासा पुष्पोद्यानवनप्रिया ॥
बलिप्रिया मांसभक्ष्या रुधिरासवभक्षिणी । भीमरावा साट्टहासा रणनृत्यपरायणा ॥
असुरासृक्प्रिया तुष्टा दैत्यदानवमर्दिनी । दैत्यविद्राविणी दैत्यमथनी दैत्यसूदनी ॥
दैत्यघ्नी दैत्यहन्त्री च महिषासुरमर्दिनी । रक्तबीजनिहन्त्री च शुम्भासुरविनाशिनी ।
निशुम्भहन्त्री धूम्राक्षमर्दिनी दुर्गहारिणी । दुर्गासुरनिहन्त्री च शिवदूती महाबला ॥
महाबलवती चित्रवस्त्रा रक्ताम्बरामला । विमला ललिता चारुहासा चारुत्रिलोचना ॥
अजेया जयदा ज्येष्ठा जयशीलापराजिता । विजया जाह्नवी दुष्टजृम्भिणी जयदायिनी ॥

जगद्रक्षाकरी सर्वजगच्चैतन्यकारिणी । जया जयन्ती जननी जनभक्षणतत्परा ॥
जलरूपा जलस्था च जप्यजापकवत्सला । जाज्वल्यमाना यज्ञाशा जन्मनाशविवर्जिता ॥
जरातीता जगन्माता जगद्रूपा जगन्मयी । जङ्गमा ज्वालिनी जृम्भास्तम्भिनी दुष्टतापिनी ॥
त्रिपुरघ्नी त्रिनयना महात्रिपुरतापिनी । तृष्णाजातिः पिपासा च बुभुक्षा त्रिपुरप्रभा ॥
त्वरिता त्रिपुटा त्र्यक्षा तन्वी तापविवर्जिता । त्रिलोकेशी तीव्रवेगा तीव्रा तीव्रबलालया ॥
निःशङ्का निर्मलाभा च निरातङ्काऽमलप्रभा । विनीता विनयाभिज्ञा विशेषज्ञा विलक्षणा ॥
वरदा वल्लभा विद्युत्प्रभा विनयशालिनी । बिम्बोष्ठी विधुवक्त्रा च विवस्त्रा विनयप्रभा ॥
विश्वेशपत्नी विश्वात्मा विश्वरूपा बलोत्कटा । विश्वेशी विश्ववनिता विश्वमाता विचक्षणा ॥
विदुषी विश्वविदिता विश्वमोहनकारिणी । विश्वमूर्तिर्विश्वधरा विश्वेशपरिपालिनी ॥
विश्वकर्त्री विश्वहर्त्री विश्वपालनतत्परा । विश्वेशहृदयावासा विश्वेश्वरमनोरमा ॥
विश्वहा विश्वनिलया विश्वमाया विभूतिदा । विश्वा विश्वोपकारा च विश्वप्राणात्मिकापि च ॥
विश्वप्रिया विश्वमयी विश्वदुष्टविनाशिनी । दाक्षायणी दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥
विश्वम्भरी वसुमती वसुधा विश्वपावनी । सर्वातिशायिनी सर्वदुःखदारिद्र्यहारिणी ॥
महाविभूतिरव्यक्ता शाश्वती सर्वसिद्धिदा । अचिन्त्याऽचिन्त्यरूपा च केवला परमात्मिका ॥
सर्वज्ञा सर्वविषया सर्वोपरिपरायणा । सर्वस्यार्तिहरा सर्वमङ्गला मङ्गलप्रदा ॥
मङ्गलार्हा महादेवी सर्वमङ्गलदायिका । सर्वान्तरस्था सर्वार्थरूपिणी च निरञ्जना ॥
चिच्छक्तिश्चिन्मयी सर्वविद्या सर्वविधायिनी । शान्तिः शान्तिकरी सौम्या सर्वसर्वप्रदायिनी ॥
शान्तिः क्षमा क्षेमकरी क्षेत्रज्ञा क्षेत्रवासिनी । क्षणात्मिका क्षीणतनुः क्षीणाङ्गी क्षीणमध्यमा ॥
क्षिप्रगा क्षेमदा क्षिप्ता क्षणदा क्षणवासिनी । वृत्तिर्निवृत्तिर्भूतानां प्रवृत्तिर्वृत्तलोचना ॥
व्योममूर्तिर्व्योमसंस्था व्योमालयकृताश्रया । चन्द्रानना चन्द्रकान्तिश्चन्द्रार्धाङ्कितमस्तका ॥
चन्द्रप्रभा चन्द्रकला शरच्चन्द्रनिभानना । चन्द्रात्मिका चन्द्रमुखी चन्द्रशेखरवल्लभा ॥
चन्द्रशेखर वक्षःस्था चन्द्रलोकनिवासिनी । चन्द्रशेखरशैलस्था चञ्चला चञ्चलेक्षणा ॥
छिन्नमस्ता छागमांसप्रिया छागबलिप्रिया । ज्योत्स्ना ज्योतिर्मयी सर्वज्यायसी जीवनात्मिका ॥
सर्वकार्यनियन्त्री च सर्वभूतहितैषिणी । गुणातीता गुणमयी त्रिगुणा गुणशालिनी ॥
गुणैकनिलया गौरी गुह्यगोपकुलोद्भवा । गरीयसी गुरुरता गुह्यस्थाननिवासिनी ॥
गुणज्ञा निर्गुणा सर्वगुणार्हा गुह्यकाम्बिका । गलज्जटा गलत्केशा गलद्रुधिरचर्चिता ॥
गजेन्द्रगमना गन्त्री गीतनृत्यपरायणा । गमनस्था गयाध्यक्षा गणेशजननी तथा ॥
गानप्रिया गानरता गृहस्था गृहिणी परा । गजसंस्था गजारूढा ग्रसन्ती गरुडासना ॥

****

योगस्था योगिनीगम्या योगचिन्तापरायणा । योगिध्येया योगिवन्द्या योगलभ्या युगात्मिका ॥
योगिज्ञेया योगयुक्ता महायोगेश्वरेश्वरी । योगानुरक्ता युगदा युगान्तजलदप्रभा ॥
युगानुकारिणी यज्ञरूपा सूर्यसमप्रभा । युगान्तानिलवेगा च सर्वयज्ञफलप्रदा ॥
संसारयोनिः संसारव्यापिनी सकलास्पदा । संसारतरुनिःसेव्या संसारार्णवतारिणी ॥
सर्वार्थसाधिका सर्वा संसारव्यापिनी तथा । संसारबन्धकर्त्री च संसारपरिवर्जिता ॥
दुर्निरीक्ष्या सुदुष्प्राप्या भूतिर्भूतिमतीत्यपि । अत्यन्त विभवारूपा महाविभवरूपिणी ॥
शब्दब्रह्मस्वरूपा च शब्दयोनिः परात्परा । भूतिदा भूतिमाता च भूतिस्तन्द्री विभूतिदा ॥
भूतान्तरस्था कूटस्था भूतनाथप्रियाङ्गना । भूतमाता भूतनाथा भूतालयनिवासिनी ॥
भूतनृत्यप्रिया भूतसङ्गिनी भूतलाश्रया । जन्ममृत्युजरातीता महापुरुषसङ्गता ॥
भुजगा तामसी व्यक्ता तमोगुणवती तथा । त्रितत्त्वतत्त्वरूपा च तत्त्वज्ञातत्त्वकप्रिया ॥
त्र्यम्बका त्र्यम्बकरता शुक्ला त्र्यम्बकरूपिणी । त्रिकालज्ञा जन्महीना रक्ताङ्गी ज्ञानरूपिणी ॥
अकार्या कार्यजननी ब्रह्माख्या ब्रह्मसंस्थिता । वैराग्ययुक्ता विज्ञानगम्या धर्मस्वरूपिणी ॥
सर्वधर्मविधानज्ञा धर्मिष्ठा धर्मतत्परा । धर्मिष्ठपालनकरी धर्मशास्त्रपरायणा ॥
धर्माधर्मविहीना च धर्मजन्यफलप्रदा । धर्मिणी धर्मनिरता धर्मिणामिष्टदायिनी ॥
धन्या धीर्धारणा धीरा धन्वनी धनदायिनी । धनुष्मती धरासंस्था धरणिस्थितिकारिणी ॥
सर्वयोनिर्विश्वयोनिरपांयोनिरयोनिजा । रुद्राणी रुद्रवनिता रुद्रैकादशरूपिणी ॥
रुद्राक्षमालिनी रौद्री भुक्तिमुक्तिफलप्रदा । ब्रह्मोपेन्द्रप्रवन्द्या च नित्यं मुदितमानसा ॥
इन्द्राणी वासवी चैन्द्री विचित्रैरावतस्थिता । सहस्रनेत्रा दिव्याङ्गा दिव्यकेशविलासिनी ॥
दिव्याङ्गना दिव्यनेत्रा दिव्यचन्दनचर्चिता । दिव्यालङ्करणा दिव्यश्वेत चामरवीजिता ॥
दिव्यहारा दिव्यपदा दिव्यनूपुरशोभिता । केयूरशोभिता हृष्टा हृष्टचित्तप्रहर्षिणी ॥
सम्प्रहृष्टमना हर्षप्रसन्नवदना तथा । देवेन्द्रवन्द्यपादाब्जा देवेन्द्रपरिपूजिता ॥
रजसा रक्तनयना रक्तपुष्पप्रिया सदा । रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तोत्पलविलोचना ॥
रक्ताभा रक्तवस्त्रा च रक्तचन्दनचर्चिता । रक्तेक्षणा रक्तभक्ष्या रक्तमत्तोरगाश्रया ॥
रक्तदन्ता रक्तजिह्वा रक्तभक्षणतत्परा । रक्तप्रिया रक्ततुष्टा रक्तपानसुतत्परा ॥
बन्धूककुसुमाभा च रक्तमाल्यानुलेपना । स्फुरद्रक्ताञ्चिततनुः स्फुरत्सूर्यशतप्रभा ॥
स्फुरन्नेत्रा पिङ्गजटा पिङ्गला पिङ्गलेक्षणा । बगला पीतवस्त्रा च पीतपुष्पप्रिया सदा ॥
पीताम्बरा पिबद्रक्ता पीतपुष्पोपशोभिता । शत्रुघ्नी शत्रुसम्मोहजननी शत्रुतापिनी ॥
शत्रुप्रमर्दिनी शत्रुवाक्यस्तंभनकारिणी । उच्चाटनकरी सर्वदुष्टोत्सारणकारिणी ॥

शत्रुविद्राविणी शत्रुसम्मोहनकरी तथा । विपक्षमर्दनकरी शत्रुपक्षक्षयङ्करी ॥
सर्वदुष्टघातिनी च सर्वदुष्टविनाशिनी । द्विभुजा शूलहस्ता च त्रिशूलवरधारिणी ॥
दुष्टसंतापजननी दुष्टक्षोभ प्रवर्धिनी । दुष्टानां क्षोभसम्बद्धा भक्तक्षोभनिवारिणी ॥
दुष्टसंतापिनी दुष्टसन्तापपरिमर्दिनी । सन्तापरहिता भक्तसन्तापपरिनाशिनी ॥
अद्वैता द्वैतरहिता निष्कला ब्रह्मरूपिणी । त्रिदशेशी त्रिलोकेशी सर्वेशी जगदीश्वरी ॥
ब्रह्मेशसेवितपदा सर्ववन्द्यपदाम्बुजा । अचिन्त्यरूपचरिता चाचिन्त्यबलविक्रमा ॥
सर्वाचिन्त्यप्रभावा च स्वप्रभावप्रदर्शिनी । अचिन्त्यमहिमाचिन्त्यरूपसौन्दर्यशालिनी ॥
अचिन्त्यवेशशोभा च लोकाचिन्त्यगुणान्विता । अचिन्त्यशक्तिर्दुश्चिन्त्यप्रभावा चिन्त्यरूपिणी ॥
योगचिन्त्या महाचिन्तानाशिनी चेतनात्मिका । गिरिजा दक्षजा विश्वजनयित्री जगत्प्रसूः ॥
संनम्या प्रणता सर्वप्रणतार्तिहरा तथा । प्रणतैश्वर्यदा सर्वप्रणताशुभनाशिनी ॥
प्रणतापन्नाशकरी प्रणताशुभमोचनी । सिद्धेश्वरी सिद्धसेव्या सिद्धचारणसेविता ॥
सिद्धिप्रदा सिद्धिकरी सर्वसिद्धगणेश्वरी । अष्टसिद्धिप्रदा सिद्धगणसेव्यपदाम्बुजा ॥
कात्यायनी स्वधा स्वाहा वषड्वौषट्स्वरूपिणी । पितृणां तृप्तिजननी कव्यरूपा सुरेश्वरी ॥
हव्यभोक्त्री हव्यतुष्टा पितृरूपाऽसितप्रिया । कृष्णपक्षप्रपूज्या च प्रेतपक्षसमर्पिता ॥
अष्टहस्ता दशभुजा चाष्टादशभुजान्विता । चतुर्दशभुजाऽसंख्यभुजवल्लीविराजिता ॥
सिंहपृष्ठसमारूढा सहस्रभुजराजिता । भुवनेशी चान्नपूर्णा महात्रिपुरसुन्दरी ॥
त्रिपुरा सुन्दरी सौम्यमुखी सुन्दरलोचना । सुन्दरास्या शुभदंष्ट्रा सुभ्रूः पर्वतनन्दिनी ॥
नीलोत्पलदलश्यामा स्मेरोत्फुल्लमुखाम्बुजा । सत्यसंधा पद्मवक्त्रा भ्रूकुटीकुटिलानना ॥
विद्याधरी वरारोहा महासंध्यास्वरूपिणी । अरुन्धती हिरण्याक्षी सुधूम्राक्षी शुभेक्षणा ॥
श्रुतिः स्मृतिः कृतिर्योगमाया पुण्या पुरातनी । वाग्देवता वेदविद्या ब्रह्मविद्यास्वरूपिणी ॥
वेदशक्तिर्वेदमाता वेदाद्या परमागतिः । आन्वीक्षिकी तर्कविद्या योगशास्त्रप्रकाशिनी ॥
धूमावती वियन्मूर्तिर्विद्युन्मालाविलासिनी । महाव्रता सदानन्दनन्दिनी नगनन्दिनी ॥
सुनन्दा यमुना चण्डी रुद्रचण्डी प्रभावती । पारिजातवनावासा पारिजातवनप्रिया ॥
सुपुष्पगन्धसन्तुष्टा दिव्यपुष्पोपशोभिता । पुष्पकाननसद्वासा पुष्पमालाविलासिनी ॥
पुष्पमाल्यधरा पुष्पगुच्छालंकृतदेहिका । प्रतप्तकांचनाभासा शुद्धकाञ्चनमण्डिता ॥
सुवर्णकुण्डलवती स्वर्णपुष्पप्रिया सदा । नर्मदा सिन्धुनिलया समुद्रतनया तथा ॥
षोडशी षोडशभुजा महाभुजगमण्डिता । पातालवासिनी नागी नागेन्द्रकृतभूषणा ॥
नागिनी नागकन्या च नागमाता नगालया । दुर्गापत्तारिणी दुर्गदुष्टग्रहनिवारिणी ॥

****

अभयापन्निहन्त्री च सर्वापत्परिनाशिनी । ब्रह्मण्या श्रुतिशास्त्रज्ञा जगतां कारणात्मिका ॥
निष्कारणा जन्महीना मृत्युञ्जयमनोरमा । मृत्युञ्जयहृदावासा मूलाधारनिवासिनी ॥
षट्चक्रसंस्था महती महोत्सवविलासिनी । रोहिणी सुन्दरमुखी सर्वविद्याविशारदा ॥
सदसद्वस्तुरूपा च निष्कामा कामपीडिता । कामातुरा काममत्ता काममानससत्तनुः ॥
कामरूपा च कालिन्दी कचालम्बितविग्रहा । अतसीकुसुमाभासा सिंहपृष्ठनिषेदुषी ॥
युवती यौवनोद्रिक्ता यौवनोद्रिक्तमानसा । अदितिर्देवजननी त्रिदशार्तिविनाशिनी ॥
दक्षिणाऽपूर्ववसना पूर्वकालविवर्जिता । अशोका शोकरहिता सर्वशोकनिवारिणी ॥
अशोककुसुमाभासा शोकदुःखक्षयङ्करी । सर्वयोषित्स्वरूपा च सर्वप्राणिमनोरमा ॥
महाश्चर्या मदाश्चर्या महामोहस्वरूपिणी । महामोक्षकरी मोहकारिणी मोहदायिनी ॥
अशोच्या पूर्णकामा च पूर्णा पूर्णमनोरथा । पूर्णाभिलषिता पूर्णनिशानाथसमानना ॥
द्वादशार्कस्वरूपा च सहस्त्रार्कसमप्रभा । तेजस्विनी सिद्धमात्रा चन्द्रानयनरक्षणा ॥
अपरापारमाहात्म्या नित्यविज्ञानशालिनी । विवस्वती हव्यवाहा जातवेदःस्वरूपिणी ॥
स्वैरिणी स्वेच्छविहरा निर्बीजा बीजरूपिणी । अनन्तवर्णाऽनन्ताख्याऽनन्तसंस्था महोदरी ॥
दुष्टभूतापहन्त्री च सद्वृत्तपरिपालिका । कपालिनी पानमत्ता मत्तवारणगामिनी ॥
विन्ध्यस्था विन्ध्यनिलया विन्ध्यपर्वतवासिनी । बन्धुप्रिया जगद्बन्धुः पवित्रा सपवित्रिणी ॥
परामृताऽमृतकला चापमृत्युविनाशिनी । महारजतसंकाशा रजताद्रिनिवासिनी ॥
काशीविलासिनी काशीक्षेत्ररक्षणतत्परा । योनिरूपा योनिपीठस्थिता योनिस्वरूपिणी ॥
कामालसितचार्वङ्गी कटाक्षक्षेपमोहिनी । कटाक्षक्षेपनिरता कल्पवृक्षस्वरूपिणी ॥
पाशाङ्कुशधरा शक्तिर्धारिणी खेटकायुधा । बाणायुधाऽमोघशस्त्रा दिव्यशस्त्रास्त्रवर्षिणी ॥
महास्त्रजालविक्षेप विपक्षक्षयकारिणी । घण्टिनी पाशिनी पाशहस्ता पाशाङ्कुशायुधा ॥
चित्रसिंहासनगता महासिंहासनस्थिता । मन्त्रात्मिका मन्त्रबीजा मन्त्राधिष्ठातृदेवता ॥
सुरूपाऽनेकरूपा च विरूपा बहुरूपिणी । विरूपाक्षप्रियतमा विरूपाक्षमनोरमा ॥
विरूपाक्षा कोटराक्षी कूटस्था कूटरूपिणी । करालास्या विशालास्या धर्मशास्त्रार्थपारगा ॥
अध्यात्मविद्या शास्त्रार्थकुशला शैलनन्दिनी । नगाधिराजपुत्री च नगपुत्री नगोद्भवा ॥
गिरीन्द्रबाला गिरिशप्राणतुल्या मनोरमा । प्रसन्ना चारुवदना प्रसन्नास्या प्रसन्नदा ॥
शिवप्राणा पतिप्राणा पतिसम्मोहकारिणी । मृगाक्षी चञ्चलापाङ्गी सुदृष्टिर्हंसगामिनी ॥
नित्यं कुतूहलपरा नित्यानन्दाभिनन्दिता । सत्यविज्ञानरूपा च तत्त्वज्ञानैककारिणी ॥
त्रैलोक्यसाक्षिणी लोकधर्माधर्मप्रदर्शिनी । धर्माधर्मविधात्री च शम्भुप्राणात्मिका परा ॥

मेनकागर्भसम्भूता मैनाकभगिनी तथा । श्रीकण्ठाकण्ठहारा च श्रीकण्ठहृदयस्थिता ॥
श्रीकण्ठकण्ठजप्या च नीलकण्ठमनोरमा । कालकूटात्मिका कालकूटभक्षणकारिणी ॥
महाकालप्रिया कालकलनैकविधायिनी । अक्षोभ्यपत्नी संक्षोभनाशिनी ते नमो नमः ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

एवं नामसहस्रेण संस्तुता पर्वतात्मजा । वाक्यमेतन्महेशानमुवाच मुनिसत्तम ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

अहं त्वदर्थे शैलेन्द्रतनयात्वमुपागता । त्वं मे प्राणसमो भर्ता त्वदनन्याहमङ्गना ॥
त्वं मदर्थे तपस्तीव्रं सुचिरं कृतवानसि । अहं च तपसाराध्या त्वां लप्स्यामि पुनः पतिम् ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

त्वमाराध्यतमा सर्वजननी प्रकृतिः परा । तवाराध्यो जगत्यत्र विद्यते नैव कोऽपि हि ॥
अहं त्वया निजगुणैरनुग्राह्यो महेश्वरि । प्रार्थनीयस्त्वयि शिवे एष एव वरो मम ॥
यत्र यत्र तवेदं हि कालीरूपं मनोहरम् । आविर्भवति तत्रैव शिवरूपस्य मे हृदि ॥
संस्थातव्यं त्वया लोके ख्याता च शववाहना । भविष्यसि महाकाली प्रसीद जगदम्बिके ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

इत्युक्ता शम्भुना काली कालमेघसमप्रभा । तथेत्युक्त्वा समभवत्पुरगौरी यथा पुरा ॥
य इदं पठते देव्या नाम्नां भक्त्या सहस्रकम् । स्तोत्रं श्रीशम्भुना प्रोक्तं स देव्याः समतामियात् ॥
अभ्यर्च्य गन्धपुष्पैश्च धूपदीपैर्महेश्वरीम् । यः पठेत्स्तोत्रमेतच्च स लभेत्परमं पदम् ॥
अनन्यमनसा देवीं स्तोत्रेणानेन यो नरः । संस्तौति प्रत्यहं तस्य सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥
राजानो वशगास्तस्य नश्यन्ति रिपवस्तथा । सिंहव्याघ्रमुखाः सर्वे हिंसका दस्यवस्तथा ॥
दूरादेव पलायन्ते तस्य दर्शनमात्रतः । अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते मङ्गलं महत् ॥
अन्ते दुर्गास्मृतिं लब्ध्वा स्वयं देवी कलामियात् ॥

॥ इति श्रीमहाभागवते देवीपुराणे श्रीमहादेवनारद संवादे शिववक्त्रविनिर्गतं ललिता (शैलपुत्री) सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

॥ २. ब्रह्मचारिणी ॥

हेमवती पार्वती ने शिव को ही अपना पति मानने हेतु कठोर तपस्या की एवं प्रतिज्ञा की यदि मैं शिव को प्रसन्न करने में असफल रही तो ब्रह्मचारिणी रहूंगी। पिता ने उसे उस समय समझाया कि उ-मा अर्थात् उसे मत कर इसी से उनका नाम उमा हो गया।

उमेति चपले पुत्रि त्वयोक्ता तनया ततः ।
उमेति नाम तेनास्या भुवनेषु भविष्यति ॥

कालिका पुराण में ब्रह्मचारिणी होने के लिये लिखा है –

विनापि शंभुं रुद्राणीं भक्तस्तु परिचिन्तयेत् ।

उमा मन्त्र हेतु पार्वती का बीज मन्त्र कहा है।

पादिः समाप्ति साहितः फडन्ती नान्त एव च ।
एकाक्षरस्त्र्यक्षरश्च उमा मंत्र इति स्मृत ॥

१. एकाक्षर मन्त्र – पां ॥

२. त्र्यक्षर मन्त्र – पार्वती ॥

३. षडक्षर मन्त्र – उं उमायै नमः ॥ ४. ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं ब्रह्मचारिण्यै नमः ॥॥

॥ द्विभुजा ध्यानम् – (कालिका पुराणे) ॥

द्विभुजां स्वर्ण गौरांगी पद्मचामर धारिणीम् ।
व्याघ्रचर्म स्थिते पद्मे पद्मासन गता सदा ॥

पद्म का रंग नील तथा चामर का श्वेत वर्ण कहा गया है।

॥ चतुर्भुजा ध्यानम् ॥

दधाना करपद्माभ्यामक्षमाला कमण्डलू ।
देवी प्रसीदस्तु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा ॥

॥ यन्त्रार्चनम् ॥

यन्त्र रचना – बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं भूपुर बनायें।

ॐ मं मण्डूकादि पीठ देवतायै नमः से पीठ पूजा कर देवी का ध्यान मन्त्रसे आवाहन करें।

प्रथमावरणम् – (त्रिकोणे) **ॐ सत्त्वाय नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ तमसे नमः।**

द्वितीयावरणम् – (षट्कोणे) **ॐ हृदय शक्तये नमः। ॐ शिर शक्तये नमः। ॐ शिखा शक्तये नमः। ॐ कवच शक्तये नमः। ॐ नेत्र शक्तये नमः। ॐ अस्त्र शक्तये नमः।**

तृतीयावरणम् – (अष्टदले) कालिका पुराणे **ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ मातङ्ग्यै नमः। ॐ ललितायै नमः। ॐ नारायण्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ स्वाहायै नमः।**
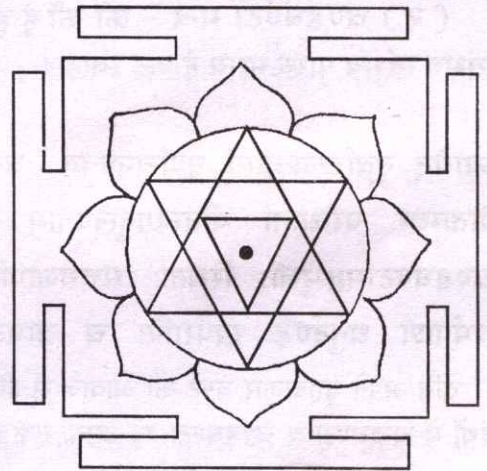
॥ श्री ब्रह्मचारिणी यन्त्रम् ॥

पुनः **असिताङ्ग भैरव, रुरुभैरव, चण्डभैरव, क्रोधभैरव, कपालभैरव, उन्मत्तभैरव, भीषणभैरव, संहारभैरव** का पूजन करें।

चतुर्थावरणम् - (भूपुरे चतुर्द्वारे) पूर्वे - **गं गणेशाय नमः**। दक्षिणे - **वं वटुकाय नमः**। पश्चिमे - **यां योगिन्यै नमः**। उत्तरे - **क्षां क्षेत्रपालाय नमः**।

पञ्चमावरण हेतु भूपुर में **इन्द्रादि दिक्पालों** का एवं **षष्ठमावरण** में उनके अस्त्रों का पूजन करें।

देवि की पूजा अर्चना कर मन्त्र का अनुष्ठान करें।

किंशुक पुष्पों को अर्पण करें आसन व पूजा द्रव्यों की कुशा से शुद्धि करें।

॥ ३. चन्द्रघण्टा ॥

देवी चन्द्रघण्टा को कहीं कहीं पुराणों व तन्त्रग्रन्थो में चन्डघण्टा नाम से भी संबोधन किया गया है। महाकाल संहिता के कामकला खण्ड में चण्डघण्टा व चण्डेश्वर्या नाम से दो ध्यान मन्त्र भी दिये गये हैं। देवी अपने दाहिने हाथ में पद्म, धनुष, बाण, अभयमुद्रा, धारण किये हुये हैं तो बाँयें हाथ में त्रिशूल, गदा, खड्ग व घण्टा धारण किये हुये हैं। यह देवी एक वक्त्रा है। तथा चण्डघण्टा स्वरूप में तीन मुख वाली है। यह देवि दश भुजा भी कही गई है, वर, अभय, मुद्रा, घण्टा, व अन्य दिव्यास्त्र धारण किये हुये है। मस्तक में घण्टा के आकार का चन्द्रमा धारण किये हुये है। यह अपने घण्टे की ध्वनि से दैत्य समूह को स्तंभित कर देती है। तथा वीररस की मूर्ति है तथा सदैव युद्ध के लिये उद्यत् रहती है। सिंह वाहन पर आरूढ़ है।

(१) चन्द्रघण्टा मन्त्र - ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं चन्द्रघण्टायै स्वाहा॥

॥ ध्यानम् ॥

पिण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपास्त्रकैर्युता ।
प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता ॥

(२) चण्डघण्टा मन्त्र - क्रीं क्रीं हूं हूं हूं हूं क्रों क्रों क्रों श्रीं ह्रीं ह्रीं छ्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं चण्डघण्टे शत्रून् स्तंभय स्तंभय मारय मारय हुं फट् स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेद् दूर्वादलश्यामां पूर्णचन्द्रानन त्रयाम् । एकैक वक्त्र नयन त्रितयोज्ज्वल विग्रहाम् ॥
पीताम्बर परीधानां पीतस्त्रगनुलेपनाम् । सर्वाभरणनद्धाङ्गीं रत्नाकल्प परिष्कृताम् ॥
चण्डघण्टामष्टभुजां स्थितां मत्तगजोपरि । खड्गं त्रिशूलं विशिखं कर्तृकां दक्षिण करे ॥
चर्मपाश धनुर्दण्ड खर्पराणि च वामतः । धारयन्तीं क्रूरदृष्टि चण्डघण्टां विचिन्तयेत् ॥

देवि अपने वृहदाकार घण्टे की आवाज से ही शत्रु सेना का स्तंभन कर देती है उन्हे विवेकहीन कर देती है। कई ग्रंथों में चन्द्रघण्टा व चण्डघण्टा की उपमा एक ही दी गई है।

(३) चण्डेश्वर्या मन्त्र - (महाकाल संहितायाम् कामकला खण्डे) - **ॐ ह्रीं श्रीं हूं क्रों क्रीं स्त्रीं क्लीं स्हजलक्षम्लवन उं क्षमवह्र हसव्म्र उं क्लहह्रझकह्रनसक्ल ईं सस्लक्षकम हूं व्रूं क्ष्लहमव्य्र उं चण्डेश्वरी ख्रों छ्रीं फ्रें क्रौं हूं हूं फट् स्वाहा ॥३॥**

॥ यंत्रार्चनम्॥

यन्त्र रचना – बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं भूपुर बनाकर यंत्र पर **"ॐ मं मण्डूकादि पीठ देवताभ्यो नमः"** से पीठ पूजा कर मध्य बिन्दु में देवी का आवाहन करें।

॥ श्री चन्द्रघण्टा यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् – (त्रिकोणे) **ॐ वामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ रौद्र्यै नमः।**

द्वितीयावरणम् – (षट्कोणे) **ॐ हृदय शक्तये नमः। ॐ शिरशक्तये नमः। ॐ शिखाशक्तये नमः। ॐ कवचशक्तये नमः। ॐ नेत्रशक्तये नमः। ॐ अस्त्रशक्तये नमः।**

तृतीयावरणम् – (अष्टदले) **शैलपुत्र्यादि नवदुर्गाओं का चन्द्रघण्टा को छोड़कर अन्य देवियों का अर्चन करें।**

दक्षिण भारत में नवदुर्गा क्रम इस प्रकार है – वनदुर्गा, शूलिनी दुर्गा, जातवेद दुर्गा, शान्तिदुर्गा, शबरीदुर्गा, ज्वालादेवी, लवणदुर्गा, आसुरीदुर्गा।

अष्टदले पूर्वादिक्रमेण – **ॐ शैलपुत्र्यै नमः। ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। ॐ कुष्माण्डायै नमः। ॐ स्कन्दमात्र्यै नमः। ॐ कात्यायन्यै नमः। ॐ कालरात्र्यै नमः।** ॐ महागौर्यै **नमः। ॐ सिद्धिदात्र्यै नमः।**

पुनः अष्टदलकर्णिकायां – **ॐ असितांग भैरवाय नमः। ॐ रुरु भैरवाय नमः। ॐ चण्ड भैरवाय नमः। ॐ क्रोध भैरवाय नमः। ॐ कपाली भैरवाय नमः। ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। ॐ भीषण भैरवाय नमः। ॐ संहार भैरवाय नमः।**

चतुर्थावरणम् – (भूपुरे चतुर्द्वारेषु) – पूर्वे – **गं गणेशाय नमः।** दक्षिणे – **वं वटुकाय नमः।** पश्चिमे – **यां योगिन्यै नमः।** उत्तरे – **क्षां क्षेत्रपालाय नमः।**

पञ्चमावरणम् में **इन्द्रादि दिक्पालों** का एवं **षष्ठमावरणम्** हेतु इन्द्रादि के **अस्त्रों वज्रादि** का पूजन भूपुर में करें।

नियम पूर्वक मंत्र का पुरश्चरण करे। शत्रुस्तंभन हेतु होम द्रव्य में हरिद्रा व हरताल का भी प्रयोग करें।

॥ ४. कूष्माण्डा ॥

यह देवि ब्रह्माण्ड को कूष्माण्ड की तरह आकृति में धारण करती है। ईषत् हँसने से अण्ड को अर्थात् ब्रह्माण्ड को पैदा करती है। इन्हें कुम्हड़े की बलिप्रिय है अतः इन्हें कूष्माण्डा नाम से संबोधित किया जाता है।

अष्टभुजा स्वरूप में सातभुजाओं में अस्त्र धारण करती हैं तथा दाहिनी भुजा में जप माला है। सिंह वाहिनी दुर्गा है।

यह देवी विन्ध्यवासिनी का ही स्वरूप है। तत्संबंधी नवदुर्गा इस प्रकार है।

नीलकण्ठी, क्षेमङ्करी, हरसिद्धा, रुद्रांशदुर्गा, वनदुर्गा, अग्निदुर्गा, जयदुर्गा, विन्ध्यवासिनी, रूपमारी दुर्गा॥
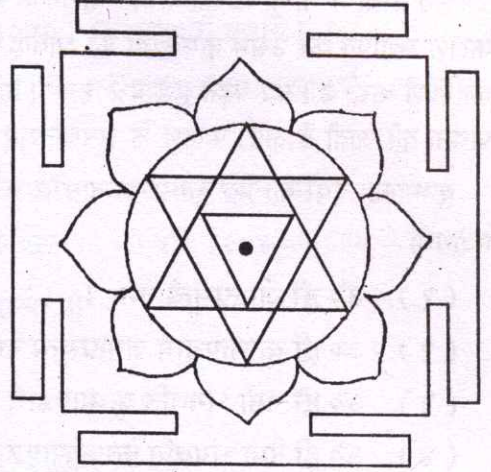
अतः विन्ध्यवासिनी के अलावा अन्य अष्टदेवियाँ अष्टनायिका हुई जिनका पूजन अष्टदल में करें।

तन्त्र ग्रन्थों में कूष्माण्डा के प्रश्न के शुभाशुभ ज्ञान हेतु स्वप्न सिद्धि हेतु किया जाता है।

जैन ग्रन्थों में भी कूष्माण्डा के घट चालन के मंत्र व प्रयोग मिलते हैं। घटचालन हेतु शुद्ध भूमि पर अक्षतादि रखकर कलश स्थापित कर उसमें कूष्माण्डा का आवाह्न पूजन किया जाता है। पश्चात् मंत्र पढ़ते हुये दो व्यक्ति हाथ से कलश का स्पर्श करते है। मंत्र पढ़ते हुये प्रश्न कामना की शुभाशुभ सिद्धि हेतु कलश का वाम या दक्षिण की ओर घूमने की प्रार्थना की जाती है अतः कलश के भ्रमणानुसार अपना शुभाशुभ जाने।

कुष्माण्डा देवी का प्रेत कुष्माण्डा नाम से प्रयोग शत्रु को पीड़ा देने हेतु किया जाता है। यह प्रेतासना देवी है।

मंत्रोयथा -

(१) **ॐ ह्रीं जगत्प्रसूत्यै नमः ।**

(२) **ॐ ह्रीं कूष्माण्डायै जगत्प्रसूत्यै नमः।**

(३) **ॐ ह्रीं नमो भगवति कूष्माण्डायै मम शुभाशुभं स्वप्ने सर्व प्रदर्शय प्रदर्शय।**

(४) **ॐ ह्रीं नमो भगवति प्रेतकूष्माण्डायै पर प्रयोग भक्षिणी मम शत्रून् भञ्जय-भञ्जय मर्दय-मर्दय मां रक्ष रक्ष सर्वकार्य साधय-साधय ह्रीं स्वाहा।**

(५) **ॐ अग्रे कुष्माण्डिनी कनकप्रभे सिंहमस्तक समारूढे अवतर अवतर अमोघ वागेश्वरी सत्यवादिनी सत्यं कथय कथय ह्रीं ॐ स्वाहा ।**

(६) **ॐ नमो भगवति अप कूष्माण्डि महाविद्ये कनकप्रभे सिंहरथ गामिनी त्रैलोक्या शूलिनी ऐह्ये ऐह्ये मम चिंतितं कार्यं कुरू कुरू भगवती स्वाहा ।(पाठान्तर) भगवत्यं अप।**

॥ ध्यान व प्रार्थना ॥

सुरासंपूर्ण कलशं रुधिराप्लुतमेव च ।
दधाना हस्त पद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे ॥

॥ यंत्रार्चनम्॥
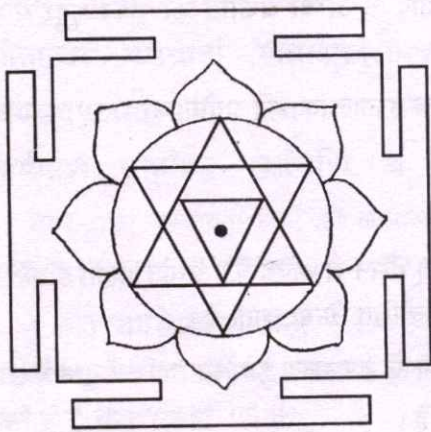
यन्त्र रचना - बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं भूपुर सहित यंत्र बनाये।

॥ श्री कूष्माण्डा यन्त्रम् ॥

ॐ मं मण्डूकादि पीठ देवताभ्यो नमः से योग पीठ का पूजन कर मध्य में देवि का ध्यान पूर्वक आवहन करे ।

प्रथमावरणम् - (त्रिकोणे) **ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसेनमः। ॐ तं तमसे नमः।**

द्वितीयावरणम् - (षट्कोणे) **ॐ हृदय शक्तये नमः। ॐ शिरशक्त्ये नमः। ॐ शिखाशक्तये नमः। ॐ कवच शक्तये नमः। ॐ नेत्रशक्तये नमः। ॐ अस्त्र शक्तये नमः।**

तृतीयावरणम् - (अष्टदलकेसरेषु) **ॐ असितांग भैरवाय नमः।**

ॐ रुरु भैरवाय नमः। ॐ चण्ड भैरवाय नमः।ॐ क्रोध भैरवाय नमः। ॐ कपालि भैरवाय नमः। ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। ॐ भीषण भैरवाय नमः। ॐ संहार भैरवाय नमः।

चतुर्थावरणम् – (अष्टदलाग्रे) ॐ नीलकण्ठ्यै नमः। ॐ क्षेमङ्कर्यै नमः। ॐ हरसिद्ध्यै नमः। ॐ रुद्रांशदुर्गायै नमः। ॐ वनदुर्गायै नमः। ॐ अग्निदुर्गायै नमः। ॐ जयदुर्गायै नमः। ॐ रूपमारी दुर्गायै नमः।

पंचमावरणम् –(भूपुरे चतुर्द्वारे) पूर्वे – **गं गणेशाय नमः**। दक्षिणे – **वं वटुकाय नमः**। पश्चिमे – **यां योगिन्यै नमः**। उत्तरेक्षां – **क्षेत्रपालाय नमः**।

षष्ठमावरणम् – (भूपुरे) – इन्द्रादि लोकपालों व उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करे।

देवि की पूजा अर्चना कर नियमित क्रम से पुरश्चरण करे। देवि के कुष्माण्ड की बलि प्रिय है अतः इसे निवेदित करे।

॥ आम्रकूष्माण्डा मन्त्राः॥

प्राकृत ग्रन्थे

१. ॐ हूं ह्रौं भों हैं ह्रौं मों हैं ह्रौं स्वाहा।

२. ॐ हूं ह्रौं हैं उं हैं ह्रौं स्वाहा उं ह्रीं क्ष्मं ठः नमः। स्फ्रां आम्रकुष्माडिनी नमः

३. ॐ नमो भगवति आम्रकुष्माण्डी अंबा अम्बालिके (अंबोल) अंबिके स्वाहा।

४. ॐ नमो भगवति आम्रकुष्माण्डी ॐ जयंतगिरिशिखर निवासिनी सर्वाङ्गसुन्दरी वामरूपधारिणी पूर्व द्वारं बंधामि अग्निद्वारं बंधामि दक्षिणद्वारं बंधामि नैरृत्यद्वारं बंधामि पश्चिमद्वारं बंधामि वायव्यद्वारं बंधामि उत्तरद्वारं बंधामि ईशानद्वारं बंधामि उर्ध्वद्वारं बंधामि अधोद्वारं बंधामि शिरःद्वारं बंधामि कुक्षिद्वारं बंधामि सर्वप्रदेशे बंधामि आत्मरक्षे भूतरक्षे पिशाचरक्षे चोररक्षे सर्वरक्षे कामरक्षे स्वाहा वज्रप्राकार अग्निप्राकारः प्राकारं भूमि बंध आकाशबंध दिगंबंध चोरबंध आत्मरक्षा सर्वरक्षानाम विद्या।

५. ॐ नमो भगवति आम्रकुष्माण्डी सर्वमुख रञ्जिनी सर्वमुख स्तम्भनी हुं फट् स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

हरितमणि स्वर्णवेदी पर श्यामदेह वाली देवि विराजमान है। इस देवि के भट्टारक (शिव) अरिष्टनेमि है। उनके पास में देवि की स्थापना करें।

अष्टमहाप्राति हार्य्य समन्विता द्वादशगण परिवृताम् ।
अरिष्टनेमि भट्टारकस्य प्रतिमा मालिख्य तस्य पादमूले ॥
आम्रकुष्माण्डि अष्टभुजां शंख चक्र धनुः परशु तोमरः ।
खड्ग पासको द्रव्याष्टकैः देवीं चतुर्भुजां शङ्ख चक्र वरदः ॥
पाशन्य स्वरूपेण सिंहासनस्थिता शान्ति द्विभुजा स्थिता ।
पार्श्वे देवकन्या वामहस्त स्थित विमुकादिश्रमताम् ॥

आम्रकुष्माण्डी की मूर्ति बनाकर आभूषणो से संजाये दोनो तरफ एक एक पुत्र खड़ा करें। शुक्लपक्ष में पूजन प्रारंभ करें। त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अरहंत देव का पूजन करें, १००८ जप नित्य करें। पूर्णिमा को मन्त्र द्वारा ९००० चमेली के पुष्प चढ़ावें।

॥ प्रेतकूष्माण्डा मन्त्र ॥

यह देवि प्रेत पर सवार है। भैरवी के समान है। शत्रुसंहार भी करती है तथा भरण पोषण भी करती है।

मन्त्र :- स्हौः हसौः हसखफ्रें सहखफ्रें हक्षम्लव्र्यूं प्रेतकूष्माण्डायै स्वाहा।

॥ ५. स्कन्द माता ॥

भगवान शंकर ने पार्वती को एक बार "काली" कह दिया जिससे वे रुष्ट होकर तप करने चली गई। ब्रह्मा के वरदान से गौराङ्ग होकर पुनः शिव के साथ रहने लगी एवं स्कन्द कुमार को जन्म दिया।

ये स्कन्द माता अग्निमण्डल की देवता है, स्कन्द इनकी गोद में बैठे हैं, इनकी तीन आँखें तथा चार भुजायें हैं। ये शुभ्रवर्णा है तथा पद्म के आसन पर विराजमान है। इनका वाहन सिंह ही है।

मंत्र - ॐ ह्रीं सः स्कंदमात्र्यै नमः।

॥ ध्यान एवं प्रार्थना ॥

सिंहासनगता नित्यं पद्माञ्चित करद्वया ।
शुभदास्तु सदा देवीं स्कन्दमाता यशस्विनी ॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

कल्पभेद से अलग अलग नवदुर्गायें हुई है। यथा -

जया, विजया, भद्रा, भद्रकाली, सुमुखी, दुर्मुखी, प्रज्ञा, व्याघ्रमुखी एवं सिंहमुखी। ये अष्टदेवियाँ इसके अष्टदल की नायिका मानी जाती है।

यन्त्र रचना - त्रिकोण, षटकोण, अष्टदल एवं भूपुर बनाकर यंत्रार्चन करें।

ॐ मं मण्डूकादि पीठ देवतायै नमः। से योग पीठ देवता का पूजन करें। फिर पीठ शक्तियों का पूजन करें।

यथा पूर्वादिक्रमेण - **ॐ बलायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ रौद्र्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कलविकरण्यै नमः। ॐ बलप्रमथिन्यै नमः। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः। ॐ मनोन्मन्यै नमः।**
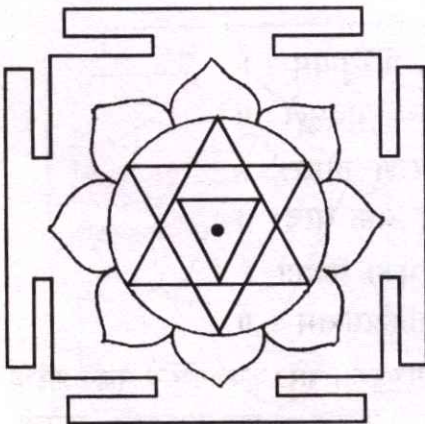
॥ श्री स्कन्दमाता यन्त्रम् ॥

बिन्दुमध्य में देवि का आवाहन करें।

प्रथमावरणम् - (त्रिकोणे) **ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसेनमः। ॐ तं तमसे नमः।**

द्वितीयावरणम् - (षट्कोणे) **ॐ हृदय शक्तये नमः। ॐ शिरशक्तये नमः। ॐ शिखाशक्तये नमः। ॐ कवच शक्तये नमः। ॐ नेत्रशक्तये नमः। ॐ अस्त्र शक्तये नमः।**

पुनः षट्कोणे षड् कृत्तिका मातृकायै नमः।

तृतीयावरणम् - (अष्टदलेकेसरेषु) **ॐ असितांग भैरवाय नमः।**

ॐ रुरु भैरवाय नमः। ॐ चण्ड भैरवाय नमः। ॐ कपाल भैरवाय नमः। ॐ क्रोध भैरवाय नमः। ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। ॐ भीषण भैरवाय नमः। ॐ संहार भैरवाय नमः।

चतुर्थावरणम् - (अष्टदलाग्रे) **ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ भद्रायै नमः। ॐ भद्रकाल्यै नमः। ॐ सुमुख्यै नमः। ॐ दुमुख्यै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ व्याघ्रमुख्यै नमः।**

पंचमावरणम् - (भूपुरे चतुद्वारे) उत्तरे - **ॐ नंदिने नमः।** पूर्वे - **ॐ भृङ्गवे नमः।** दक्षिणे - **ॐ महाकालाय नमः।** पश्चिमे - **ॐ गणेशाय नमः।**

षष्ठमावरणम् - (भूपुरे) - इन्द्रादि लोकपालों व सप्तमावरण में उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करे।

पुत्र प्राप्ति हेतु स्कन्दमाता का पूजन करें। षष्ठी तिथि इनकी प्रिय तिथी है। मंत्र जप कर दशांश हवन बिल्व फल से करें।

॥ ६. कात्यायनी ॥

कात्यायनी दशभुजा देवी ही महिषासुर मर्दिनी है। प्रथम कल्प में उग्रचण्डा रूप में, द्वितीय कल्प में १६ भुजा भद्रकाली रूप में तथा तृतीय कल्प में कात्यायनी ने दश भुजा रूप धारण करके महिषासुर का वध किया।

कात्यायनी मुनि के द्वारा स्तुति करने पर बिल्व वृक्ष के पास देवी प्रकट हुई थी। आश्विन कृष्णा १४ को भगवती प्रकट हुई थी। शुक्ला सप्तमी को देवी की तेजोमयी मूर्ति ने शोभनरूप धारण किया। अष्टमी को समलंकृत की गई तथा नवमी को उपहारों से पूजित हुई एवं उसने महिषासुर का वध किया तथा दशमी को देवी विदा हुई (इति कालिका पुराणे)।

॥ नमस्कार ध्यान ॥

चन्द्रहासोज्ज्वल करा शार्दूलवरवाहना ।
कात्यायनी शुभं दद्याद् देवि दानव घातिनी ॥

कात्यायनी गायत्री - **ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारी धीमहि तन्नो दुर्गः प्रचोदयात्।**

॥ कात्यायनी ध्यानम् ॥

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना ।
कात्यायनी शुभं दद्याद् देवी दानवघातिनी ॥
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

॥ कात्यायनी ऋषि कृत स्तुति ॥

(महाकाल संहितायाम्)

जगदंब जयानन्ते सर्वैकसाक्षिणि । संकटोद्धारिणि शिवे भक्तानामभयङ्करे ॥
समस्त जगताधारभूते ब्रह्मस्वरूपिणि । विधीश हरि शक्रादि देवा विदित वैभवे ॥
सृष्टि स्थिति प्रलयकृत् त्रिगुणात्मक विग्रहे । परापरेशि प्रणतमनुज-प्राणदायिनि ॥

मदुपास्यतया ख्यातनाम्नि त्रिभुवनेश्वरि । कात्यायनि जगद्वन्द्ये महाकालि नमोस्तुते ॥
मत्प्राणरक्षणकृते भीनाशय दिवौकसाम् । स्वरूपं दर्शयामुष्मै विल्ववृक्षाद् विनिःसृता ॥

॥ दशभुजा कात्यायनी ध्यानम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

जटाजूटसमायुक्तामर्धेन्दुकृत लक्षणाम् । नेत्रत्रयसमायुक्तां पद्मेन्दुसदृशाननाम् ॥
अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् । नवयौवन संपन्नां सर्वाभरणभूषिताम् ॥
सुचारुदशनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम् । त्रिभङ्गस्थान संस्थानां महिषासुरमर्दिनीम् ॥
त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं चक्रं क्रमादधः । तीक्ष्णं बाणं तथा शक्तिं वामतोऽपि निबोधत ॥
खेटकं पूर्णचापं च पाशमङ्कुशमूर्ध्वतः । घण्टां वा परशुं चापि वामतः सन्निवेशयेत् ॥
अधस्तान्महिषं तद्वद्वि शिरस्कं प्रदर्शयेत् । शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् ॥

॥ षोडशभुजा दुर्गा ध्यानम् ॥

महिषासुर मर्दिनी षोडशभुजा दुर्गा भद्रकाली ही है।

क्षीरोदस्योत्तरे तीरे विभ्रती विपुलां तनुम् । अतसीपुष्पवर्णाभा ज्वलत्काञ्चनकुण्डलाम् ॥
जटाजूटमखण्डेन्दुमुकुटत्रय भूषिता । नागहारेण सहिता स्वर्णहार विभूषिता ॥
शूलं खड्गं च शङ्खं च चक्रं बाणं तथैव च । शक्तिं वज्रं च दण्डं च नित्यं दक्षिणबाहुभिः ॥
विभ्रती सततं देवी विकाशिनयनोज्ज्वला । खेटकं चर्म चापं च पाशंचाङ्कुशमेव च ॥
घण्टां परशुं मुशलं विभ्रतो वामपाणिभिः । सिंहस्था नयनै रक्तवर्णैस्त्रिभिरभिज्वला ॥
शूलेन महिषं भित्त्वा तिष्ठती परमेश्वरी । वामपादेन चाक्रम्य तत्र देवी जगन्मयी ॥

॥ अष्टादशभुजा दुर्गा ध्यानम् ॥

अष्टादशभुजा दुर्गा उग्रचण्ड स्वरूपा है। कल्पभेद महिषासुरमर्दिनि का महालक्ष्मी स्वरूपा भेद भी यही है।

॥ ध्यानम् ॥

अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुःकुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥

॥ अन्यच्च ॥

ततो ध्यायेन्महालक्ष्मीं महिषासुरमर्दिनीम् । समस्तदेवता तेजोजातां पद्मासन स्थिताम् ॥
अष्टादशभुजामक्षमालां पद्मं च शायकान् । खड्गं वज्रं गदां चक्रं दक्षहस्ते कमण्डलुम् ॥
खड्गं च दधतीं वामे शक्तिं च परशुं धनुः । चर्मदण्डौ सुरापात्रं घण्टां पाशं त्रिशूलकम् ॥

****

॥ अष्टादशभुजा ध्यानम् ॥

धम्मिल्लसंयतकचा विधोश्चाधोमुखीं कलाम् । केशान्ते तिलकस्योर्ध्वे दधती सुमनोहरा ॥
मणिकुण्डल संधृष्टगण्डा मुकुटमण्डिता । सज्ज्योतिः कर्णपूराभ्यां कर्णावापूर्य सङ्गता ॥
ससुवर्णमणिमाणिक्य नागहार विराजिता । सदासुंधिभिः पद्मैरम्लानैररति सुन्दरी ॥
मालां विभर्त्ति ग्रीवायां रत्नकेयूरधारिणी । मृणालायत वृत्तैस्तु बाहुभिः कोमलै शुभैः ॥
राजन्ती कञ्जुकोपेता पीनोन्नत पयोधरा । क्षीणमध्या पीतवस्त्रा त्रिवलोमध्यभूषिता ॥
अष्टादशभुजैका तु दक्षे मुण्डं च खेटकम् । आदर्शं तर्जनीं चाप ध्वजं डमरुकं चर्मं च ॥
पाशं वामे विभ्रती च शक्ति मुद्गर शूलकम् । वज्र खड्गाङ्कुश शरांश्चक्रं देवी शलाकया ॥
सिंहोस्योपरि तिष्ठन्ती व्याघ्रचर्मणि कौशिकी । विभ्रती रूपममतुलं ससुरासुर मोहनम् ॥

(अस्त्रों का क्रम पुरश्चर्यार्णव में अधूरा है अतः अस्त्रक्रम अग्निपुराण में से दिया है।)

वैकृति रहस्य में अस्त्रों का क्रम इस प्रकार से है। -

अक्षमाला च कमलं वाणोऽसि कुलिशं गदा । चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः । अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनम् ॥

इसी तरह मध्यम चरित में १८ भुजा का ध्यान अलग है।

॥ अथ कात्यायनी मंत्र प्रयोग॥

अष्टाक्षर मंत्रः- ॐ ह्रीं कात्यायन्यै स्वाहा ॥१॥ ह्रीं श्रीं कात्यायन्यै स्वाहा ॥२॥

दशाक्षर मंत्रः- ऐं ह्रीं श्रीं चौं चण्डिकायै नमः।

विवाह हेतु मंत्रः- ॐ कात्यायनि महामाये महोयोगिन्यधीश्वरि। नन्दगोपसुते देवि पतिं मे कुरु ते नमः।।

मंत्रो यथा -'ॐ ह्रीं कात्यायनि स्वाहा' इत्यष्टाक्षरो मंत्रः।

विनियोग :- अस्य कात्यायनीमंत्रस्य कपिलो मुनिः। गायत्रीच्छंदः। चंडिका कात्यायनी देवता। ह्रीं श्रीं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। मम सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ कपिलमुनये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे ॥२॥ चण्डिकाकात्यायनी देवतायै नमः हृदि ॥३॥ ह्रीं श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥६॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास :- ॐ ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः। एवमेव हृदयादि षडंगन्यासं कुर्यात्। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ ध्यानम् ॥

**ॐ सव्यपादसरोजेनालंकृतोरु मृगाधिपाम् । वामपादाग्रदलित महिषासुरनिर्भराम् ॥१॥
सुप्रसन्नां सुवदनां चारुनेत्रत्रयान्विताम् । हार नूपुर केयूर जटामुकुटमंडिताम् ॥२॥
विचित्रपट्टवसनामर्द्धचन्द्रविभूषिताम् । खड्ग खेटकवज्राणि शूलं च विशिखं तथा ॥३॥
धारयंतीं धनुः पाशं शंखघंटे सरोरुहम् । बाहुभिर्ललितैर्देवि कोटिचन्द्रसमप्रभाम् ॥४॥
समाहृतैर्दिविषदैर्वैः- राकाशसंस्थितैः । स्तूयमानां मोदमानैर्लोकपालादिभिः सदा ॥५॥**

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य '**ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांत पीठदेवताभ्यो नमः**' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तिः पूजयेत्।

तद्यथा-पूर्वादिक्रमेण- **ॐ प्रभायै नमः ॥१॥ ॐ मायायै नमः। ॐ जयायै नमः ॥३॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः ॥४॥ ॐ विशुद्धायै नमः ॥५॥ ॐ नंदिन्यै नमः ॥६॥ ॐ सुप्रभायै नमः ॥७॥ ॐ विजयायै नमः ॥८॥** मध्ये। **ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ॥९॥**

इति नव पीठशक्तीः संपूज्य ततस्ताम्रादिपात्रे रक्तचन्दनेन यंत्रं विलिख्य '**ॐ आधारशक्तिकात्यायन्यै नमः**' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्यावाहनादि पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

॥ यंत्रार्चनम् ॥

तत्र क्रमः- षट्कोणकेसरेषु- अग्निकोणे - **ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः ॥१॥** निर्ऋति - **ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ॥२॥** वायु०- **ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ॥३॥** ईशानकोणे- **ह्रीं श्रीं कवचाय हुं ॥४॥** देवीपूजकयोर्मध्ये - **ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥** देवी पश्चिमे - **ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ॥६॥** इति षडंगानि पूजयेत्।

अष्टदले - अष्टशक्तिं पूजयेत्-

**उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका ।
चण्डा चण्डवती चैव चण्डरूपा च चण्डिका ॥
अभिः शक्तिभिरष्टाभिः सततं परिवेष्टिताम् ।**

कालिका पुराण में चामुण्डा सहित आदि नवदुर्गा माना है।

अतः पूर्वादि क्रमेण - **ॐ उग्रचण्डायै नमः ।ॐ प्रचण्डायै नमः। ॐ चण्डोग्रायै नमः। ॐ चण्डनायिकायै नमः। ॐ चण्डायै नमः। ॐ चण्डवत्यै नमः। ॐ चण्डरूपायै नमः। ॐ चण्डिकायै नमः।**

परन्तु कालिका पुराण में लिखा है कि यदि उग्रचण्डा तंत्र से देवी की पूजा की जाती है तो अष्टदल की नायिकाओं पूजन इस तरह करे -

ॐ कौशिके नमः। ॐ शिवदूत्यै नमः। ॐ उमायै नमः ।ॐ हेमवत्यै नमः। ॐ ईश्वर्यै नमः। ॐ शाकम्भर्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ महोदर्यै नमः।

ततो भूपुराभ्यंतरे पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राच्यादिचतुर्दिक्षु वामावर्तेन च **ॐ डाकिन्यै नमः ॥१॥ ॐ योगिन्यै नमः ॥२॥ ॐ खेचर्यै नमः ॥३॥ ॐ शाकिन्यै नमः ॥४॥** इति पूजयेत्।

भूपुराद्वाहिः इन्द्रादिदशदिग्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जन ब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च लक्षमेकं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्ततः। मंत्रोऽयं चिंतितो देवि सभायां पुरतो यदि ॥१॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशो दृश्यते वादिभिस्तथा। पलायंते महादेवि साध्वसेन क्षणात्ततः ॥२॥ कार्तिकस्य सिते पक्षे नवम्यामारभेज्जपम्। सहस्त्रं प्रत्यहं कृत्वा संप्राप्य नवमीं सिताम् ॥३॥ विजयं खड्गमादाय पूजयित्वा यथाविधि। अर्द्धरात्रे बलिं दत्वा प्रातर्यात्रां समाचरेत् ॥४॥ रणभूमिं समासाद्य सहस्त्रं प्रजपेन्मनुम्। तं दृट्वा पुरुषं देवि हृत्क्षोभो जायते रिपोः ॥५॥
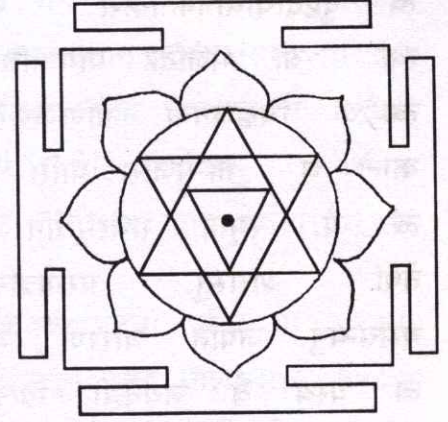
॥ श्री कात्यायनी यन्त्रम् ॥

सदूतं यममायांतं मन्यमाना नराधिपाः। पलायंते महादेवि नात्र कार्या विचारणा ॥६॥ शुक्लांबरधरो मौनी ब्रह्मचारिव्रते स्थितः। शुक्लवर्णां महादेवीं ध्यात्वा शुक्लविभूषणाम् ॥७॥ सहस्त्रं मासमेकं तु जपोन्नित्यं यथाविधि। मालतीबकुलैः कुंदैर्मंत्री मधुरसंप्लुतैः ॥८॥ सहस्त्रत्रितयं हुत्वा वागीशो जायतेऽचिरात्। हेलया कवितां देवि विशदां कुरुते द्रुतम् ॥९॥ जपं या कुरुते नित्यं शतशो वत्सरावधि। वंध्यापि लभते पुत्रं कार्त्तिकेयमिवापरम् ॥१०॥ दुर्भगा च भवेत्पत्युः सुभगाऽतिमनोरमा। रूपं विचिंत्य पूर्वोक्तं लक्षं जप्त्वायुतं ततः। नीलोत्पलैः सरोजैर्वा हुत्वा वैश्रवणायते ॥११॥

॥ अन्यच्च ध्यानम् ॥

व्याघ्रचर्मपरीधानां मुंडमालाविभूषिताम्। रक्तवर्तुलभीमाक्षीं जिह्वया लीलयासुरान् ॥१२॥ चर्वयंतीं महाकालीं कालरात्रिमिवापराम्। क्षोभयतीं जगत्सर्वं ससुरासुरपर्वतम् ॥१३॥

एवं ध्यात्वा जपेद्देवि श्मशाने वा चतुष्पथे। सप्ताहं विशसं कृत्वा व्रतस्थः स्थिरमानसः ॥१४॥ जपेद्यो नियतं देवि स रिपून्नाशयेद्ध्रुवम्। अनेनैव विधानेन बलिं दद्याच्चतुष्पथे ॥१४॥ दग्धं मत्स्यं च सक्त्वन्नं पिंडं कृत्वा समाहितः। आममांसं हरिद्राक्तं यं विचिंत्य प्रदापयेत् ॥१५॥ सप्ताहाल्लभते शत्रुर्यमसद्म न संशयः। हरिर्वा शंकरो वापि न शक्तो रक्षितुं क्वचित् ॥१६॥

बलिमंत्रो यथा- ''ह्लीं ह्लीं चौं चौं कालिके खादय खादय वशीकुरु वशीकुरु शत्रुं मारय मारय स्वाहा''।

इति मंत्रः। अंगारकदिने चैव निंदितासु तिथिष्वपि। पूजितं खड्गमादाय निशीथे बलिमाहरेत् ॥१७॥ प्रहारशोणितं चास्य दद्याद्देव्यै यथाविधि। अच्छेद्याभेदकायः स्याद्रिपूणां नात्र संशयः ॥१८॥

॥ इति कात्यायनीमहाकल्पः ॥

॥ पाण्डवाः कृत कात्यायनी स्तुति ॥

॥ पाण्डवा ऊचुः ॥

कात्यायनि त्रिदशवन्दितपादपद्मे, विश्वोद्भवस्थितिलयैकनिदानरूपे ।

देवि प्रचण्डदलिनि त्रिपुरारिपत्नि, दुर्गे प्रसीद जगतां परमार्तिहन्त्रि ॥
त्वं दुष्टदैत्यविनिपातकरी सदैव, दुष्टप्रमोहनकरी किल दुःखहन्त्री ।
त्वां यो भजेदिह जगन्मयि तं कदापि, नो बाधते भवसु दुःखमचिन्त्यरूपे ॥
त्वामेव विश्वजननीं प्रणिपत्य विश्वं, ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरहोत्ति शम्भुः ।
काले च तान्सृजसि पासि विहंसि मात स्त्वल्लीलयैव नहि तेऽस्ति जनैर्विनाशः ॥
त्वं यैः स्मृता समरमूर्धनि दुःखहन्त्रि तेषां तनून्नहि विशन्ति विपक्षबाणाः ।
तेषां शरास्तु परगात्रनिमग्नपुङ्खाः प्राणान्ग्रसन्ति दनुजेन्द्रनिपातकर्त्रि ॥
यस्त्वन्मनुं जपति घोररणे सुदुर्गे, पश्यन्ति कालसदृशं किल तं विपक्षाः ।
त्वं यस्य वै जयकरी खलु तस्य वक्त्राद् ब्रह्माक्षरात्मकमनुस्तव निःसरेच्च ॥।
त्वामाश्रयन्ति परमेश्वरि ये भयेषु तेषां भयं नहि भवेदिह वा परत्र ।
तेभ्यो भयादिह सुदूरत एव दुष्टास्त्रस्ताः पलायनपराश्च दिशो द्रवन्ति ॥
पूर्वे सुरासुररणे सुरनायकस्त्वां, सम्प्रार्थयन्नसुरवृन्दमुपाजघान ।
रामोऽपि राक्षसकुलं निजघान तद्वत्त्वत्सेवनादृत इहास्ति जयो न चैव ॥
तत्त्वां भजामि जयदां जगदेकवन्द्यां विश्वाश्रयां हरिविरिञ्चिसुसेव्यपादाम् ।
त्वं नो विधेहि विजयं त्वदनुग्रहेण शत्रून्निपात्य समरे विजयं लभामः ॥

॥ श्रीराम कृत कात्यायनी स्तुति ॥

॥ श्रीराम उवाच ॥

नमस्ते त्रिजगद्वन्द्ये संग्रामे जयदायिनि । प्रसीद विजयं देहि कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥१॥
सर्वशक्तिमये दुष्टरिपुनिग्रहकारिणि । दुष्टजृम्भिणि संग्रामे जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥२॥
त्वमेका परमा शक्तिः सर्वभूतेष्ववस्थिता । दुष्टं संहर संग्रामे जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥३॥
रणप्रिये रक्तभक्षे मांसभक्षणकारिणि । प्रपन्नार्तिहरे युद्धे जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥ ४॥
खट्वाङ्गासिकरे मुण्डमालाद्योतितविग्रहे । ये त्वां स्मरन्ति दुर्गेषु तेषां दुःखहरा भव ॥५॥
त्वत्पादपङ्कजाद्दैन्यं नमस्ते शरणप्रिये । विनाशय रणे शत्रून् जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥६॥
अचिन्त्यविक्रमेऽचिन्त्यरूपसौन्दर्यशालिनि । अचिन्त्यचरितेऽचिन्त्ये जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥७॥
ये त्वां स्मरन्ति दुर्गेषु देवीं दुर्गविनाशिनीम् । नावसीदन्ति दुर्गेषु जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥८॥
महिषासृक्प्रिये संख्ये महिषासुरमर्दिनि । शरण्ये गिरिकन्ये मे जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥९॥
प्रसन्नवदने चण्डिचण्डासुरविमर्दिनि । संग्रामे विजयं देहि शत्रुञ्जहि नमोऽस्तु ते ॥१०॥

रक्ताक्षि रक्तदशने रक्तचर्चितगात्रके । रक्तबीजनिहन्त्री त्वं जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥११

निशुम्भशुम्भसंहन्त्रि विश्वकर्त्रि सुरेश्वरि । जहिशत्रून् रणे नित्यं जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥१२॥

भवान्येतज्जगत्सर्वं त्वं पालयसि सर्वदा । रक्ष विश्वमिदं मातर्हत्वैतान् दुष्टराक्षसान् ॥१३॥

त्वं हि सर्वगता शक्तिर्दुष्टमर्दनकारिणि । प्रसीद जगतां मातर्जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥१४॥

दुर्वृत्तवृन्ददमनि सद्वृत्तपरिपालिनि । निपातय रणे शत्रुञ्जयं देहि नमोऽस्तु ते ॥१५॥

कात्यायनि जगन्मातः प्रपन्नार्तिहरे शिवे । संग्रामे विजयं देहि भयेभ्यः पाहि सर्वदा ॥१६॥

॥ श्रीमहादेव उवाच॥

एवं संस्तुवतस्तस्य श्रीरामस्य महात्मनः । बभूवाकाशतो वाक्यं सहसा मुनिसत्तम ॥१७॥

मा भैस्त्वं रघुशार्दूल महाबलपराक्रमान् । विजेष्यस्यचिरेणैव लङ्कां हत्वा निशाचरान् ॥१८॥

अहं सम्पूजिता बिल्वे ब्रह्मणा लोककर्तृणा । दास्यामि त्वां मनोऽभीष्टं वरं शत्रुनिबर्हण ॥१९॥

इति श्रुत्वा रघुश्रेष्ठो वाक्यमाकाशसम्भवम् । असंशयं मुनिश्रेष्ठ मेने विजयमात्मनः ॥२०॥

एवं चिन्तयतः काले समरे भीमविक्रमः । आयातः कुम्भकर्णो वै राक्षसैः परिवेष्टितः ॥२१॥

तस्य नादेन घोरेण सशैलवनकाननम् । चकम्पे धरणिः क्षुब्धो बभूव सरितां पतिः ॥२२॥

रथाश्वकुञ्जराणां च सुघोरैरपि बृंहितैः । चकम्पे वसुधा वीरबलात्कारेण वायुना ॥२३

चुक्षुभुर्वानराः सर्वे भीता दिक्षु विदिक्षु च । दृष्ट्वा तमतिदुर्धर्षमुद्यतास्त्रं महाबलम् ॥२४॥

अथ रामस्तमायान्तं समालोक्य भयप्रदम्। देवीं प्रणम्य कोदण्डं वामेनादाय पाणिना ॥२५॥

सोऽपि पादावघातेन करघातेन वानरान् । विमर्द्य भक्षयंश्चान्यानाससाद रघुत्तमम् ॥२६॥

स सम्प्रेक्ष्य रघुश्रेष्ठं श्यामं दूर्वादलप्रभम् । उद्यतास्त्रं महाबाहुं रक्षसामन्तकारिणम् ॥२७॥

सानुजं समरेऽक्षोभं नीलोत्पलदलेक्षणम् । ननाद बलवान् घोरो युगान्तजलदो यथा ॥२८॥

राघवोऽपि महानादं ब्रह्माण्डक्षोभकारकम् । चक्रे मुदा मुनिश्रेष्ठ ततो युद्धमवर्तत ॥२९॥

ब्रह्मास्त्रजालैः संक्षिप्तैः परस्परजिगीषया । तयोरासीन्महायुद्धं सुरासुरदुरासदम् ॥३०॥

सैन्यैश्च राक्षसश्रेष्ठैर्वानराणां महात्मनाम् । आसीत्सुतुमुलं युद्धं संग्रामे जयमिच्छताम् ॥३१॥

॥ इति श्रीमहाभागवते देवीपुराणे श्रीमहादेवनारद संवादे श्रीरामकुम्भकर्णयोर्युद्धवर्णनम्॥

॥ ७. कालरात्रि ॥

॥ कालरात्रि प्रयोग विधानम्॥

कालरात्रि का प्रयोग अचूक हैं। यह संहार व सम्मोहन दोनों की अधिष्ठात्री हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन्हीं के प्रभाव से योगनिद्रा में रहते हुये आराधना व तपस्या में लीन रहते हैं। मेरा यह अनुभव हैं कि जब शत्रु बाधा, प्रेतादिकबाधा

प्रबल हो बगला, प्रत्यंगिरा, शरभराजादि के प्रयोग शिथिल हो रहे हो तो इस विद्या का प्रयोग साथ में करना चाहिये जैसे विष्णु के द्वारा ५००० वर्षो तक युद्ध करने पर भी मधुकैटम को नहीं मार सके तो **इन्ही कालरात्रि** ने उनका संमोहन किया तब ही वे राक्षस मारे गये। यह विद्या तीव्र संमोहन से शत्रु को शिथिल व निष्प्राण भी कर सकती हैं। कालरात्रि के २-३ तरह के ध्यान है। एक ध्यान जो सर्व विदित हैं वे खरारूढ है, भीषण आकृति हैं ऊपर के दांये हाथ में खड्ग हैं व बाँये हाथ में मशाल है जिससे वे भक्तों का मार्ग प्रदर्शन कर अंधकार को दूर करती हैं शत्रुबाधा व विघ्नों को जलाकर नष्ट कर देती हैं। नीचे के हाथों में वर अभय मुद्रा है। कहीं एक तरफ खट्वांग व दण्ड धारण किये हुये है दूसरी तरफ के हाथों में वर अभय मुद्रा है।

मंत्र :- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कालरात्रि सर्वं वश्यं कुरु कुरु वीर्यं देहि देहि गणेश्वर्यै नमः। (देवी रह.)

उत्कीलन - ऐं ह्रीं क्लीं कालरात्र्यै नमः।

ब्रह्मास्त्र शमन मंत्र - ग्लौं हूं ऐं ह्रीं श्रीं एहि एहि कालरात्रि आवेशय आवेशय प्रस्फुर प्रफुर सर्वजन संमोहय संमोहय हुं फट् स्वाहा।

॥ ध्यानम् ॥

एक वेणी जपाकर्णपूरा नग्न खरास्थिता, लंबोष्ठी कार्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्त शरीरिणी।
वामपादोल्लसल्लोह लताकण्टकभूषणा, वर्धन् मूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी ॥

कालरात्रि महाकाली व महाषोडशी की समयाविद्या है अर्थात् इनके साथ समयाधार पर कालरात्रि की भी पूजा की जानी चाहिये। "मंत्र कोष" में दोनों विद्याओं के अलग अलग ध्यान हैं मूल मंत्र में सामान्य भेद हैं।

कालीक्रमे मंत्रः- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कान्हेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखस्तंभनि सर्वराजवशङ्करि, सर्वदुष्टनिर्दलनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि : बन्दीश्रृखलाँस्त्रोटय -त्रोटय सर्वशत्रून् भञ्जय- २ द्वेष्टन् निर्दलय- २ सर्वं स्तंभय २ मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय- २ सर्वंवशं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्वं कालरात्रि! कामिनि! गणेश्वरि नमः। (मंत्र महार्णव में मनोहरे लिखा हैं, तथा सर्वमुखस्तंभिनि, लिखा हैं, मंत्रमहोदधि में देहि देहि सर्वकालरात्रि लिखा हैं।) मंत्रमहोदधि में द्वेष्टन की जगह "**द्वेषिणः उच्चाटय- २ सर्ववशं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्वकालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः**" लिखा हैं। इस मंत्र का प्रयोग आगे दिया गया है।

षोड़शीक्रमोक्त मंत्रः- ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कालेश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुखस्तंभिनि सर्वराजवशङ्करि सर्वदुष्टनिर्दलनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणि बन्दिश्रृङ्खलास्त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रूञ्झम्भय जम्भय द्वेषं निर्दलय२ सर्वं स्तंभय२ उच्चाटय २ सर्ववश्यं कुरु कुरु सर्वकालरात्रि कामिनि गणेश्वरि हुं फट् स्वाहा।

विनियोगः- अस्य श्री कालरात्रि महाविद्यामंत्रस्य भैरव ऋषि, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकालरात्रि देवता, ह्रीं बीजं स्वाहा शक्तिं, हुं कीलकं, आत्मनोऽभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः से षडङ्गन्यास करे।

आरक्त भानुसदृशीं यौवनोन्मत्त विग्रहां चतुर्भुजां त्रिनयनां भीषणां चन्द्रशेखराम्।
प्रेतासनसमासीनं भजतां सर्वकामदां दक्षिणे चाऽभयं पाशं वामे भुवनमेव च ॥

रक्तदण्डधरां कालरात्रिं विचिन्तयेत्॥

शापोद्धार - ॐ ऐं ह्रां कालरात्रि शिवस्य शाप विमोचय

उत्कीलन – ॐ ॐ ॐ मा मा मा।

संजीवन – हूं गणेश्वरी कालरात्रि श्रीं।

॥ अथ कालरात्रि मंत्र प्रयोगः॥

कालरात्रि प्रयोग पूर्व पुस्तक नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य में दुर्गातन्त्र में दिया जा चुका है। पुनः कुछ विशेष इस प्रकार श्रीविद्यार्णव तन्त्र में है।

मन्त्राः –

(१.) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुख स्तंभिनि सर्वराजवशंकरि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि बन्दीश्रृंखलास्त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रून् भंजय भंजय द्विषिणो दलय दलय सर्वं स्तंभय स्तंभय सर्वं स्तंभय स्तंभय मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटयोच्चाटय सर्वं वशं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्वं कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः।

विनियोग – अस्य मन्त्रस्य दक्ष ऋषिः, जगतीछन्दः, अलर्कनिवासिनी कालरात्रि देवता, क्रीं बीजं **मायाराज्ञाशक्तिः, ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

(२.) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः जगत्त्रयविमोहिनि भुवनव्यापिनि दण्डधारिणि दुर्गा दुर्गतिहन्त्री नानासिद्धि विधायिनि सर्वं वशं कुरु कुरु स्वाहा।

षडङ्गन्यास – ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से षडङ्गन्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

आरक्तभानु सदृशीं कामिनीं मदनातुराम् । चतुर्भुजां त्रिनयनां कवरीमुक्त केशिकाम् ॥
मोहनं दक्षिणे हस्ते वरदं च तथोपरि । भुवनं वामहस्ते च अधोर्दण्डं सुशोभितम् ॥
चूडाकलापिकाशोभां मातृका परिवेष्टिताम् । कृष्णाम्बरधरां देवीं कृष्णकञ्चुकभूषिताम् ॥
कर्णताटङ्क संयुक्तां नानारक्त सुमौक्तिकाम् । विचित्र चाम्पेयपुष्पैः वणिनद्धां सुकुन्तलाम् ॥
सुनासामौक्तिकां चारु ताम्बूलापूरिताननाम् । ग्रैवेयहारपदक स्तनाभरण भूषिताम् ॥
ऋषिभिः सिद्धगंधर्वः स्तूयमानां मदालसाम् । कन्याकागण संसेव्या मायाराज्ञीं गणेश्वरीम् ॥

यन्त्रोद्धार – बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण उसके बाद दो वृत्त, अष्टदल पुनः दो वृत्त पश्चात् षोडशदलयुक्त भूपुर बनाये।

॥ काम्य प्रयोग ॥

वश्य कर्म हेतु सिन्दूर से यंत्र लिखे, स्तंभन हेतु रसाल से मारणादि कर्म हेतु कोकिल पंख से व लोह पत्र पर, हरताल, हरिद्रा निर्गुण्डी से खर, अश्व, महिष चर्म पर यंत्र लिखें।

मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा-

ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहरे सर्वमुखस्तंभिनि सर्वराजवशंकरि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि

बंदिश्रृंखलास्त्रोटय २ सर्वशत्रून् भंजय २ द्वेष्टृन् निर्दलय २ सर्वं स्तंभय २ मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय २ सर्वं वशं कुरु २ स्वाहा देहि २ सर्वं कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः। इति त्रयस्त्रिंशदुत्तरशताक्षरो मंत्रः।

॥ अस्य विधानम् ॥

विनियोग :- अस्य कालरात्रिमंत्रस्य दक्ष ऋषिः। जगतीच्छंदः। अलर्कनिवानिसिनी कालरात्रिर्देवता। क्रीं बीजम्। मायाराज्ञीति शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ दक्षऋषये नमः शिरसि ॥१॥ जगतीच्छंदसे नमो मुखे ॥२॥ अलर्कनिवासिनीकालरात्रि देवतायै नमो हृदि ॥३॥ क्रीं बीजाय नमो लिंगे ॥४॥ मायाराज्ञीतिशक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे। ॥६॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करांगन्यास :- ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ऐं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ इति पंचांगुलीषु करांगन्यासः।
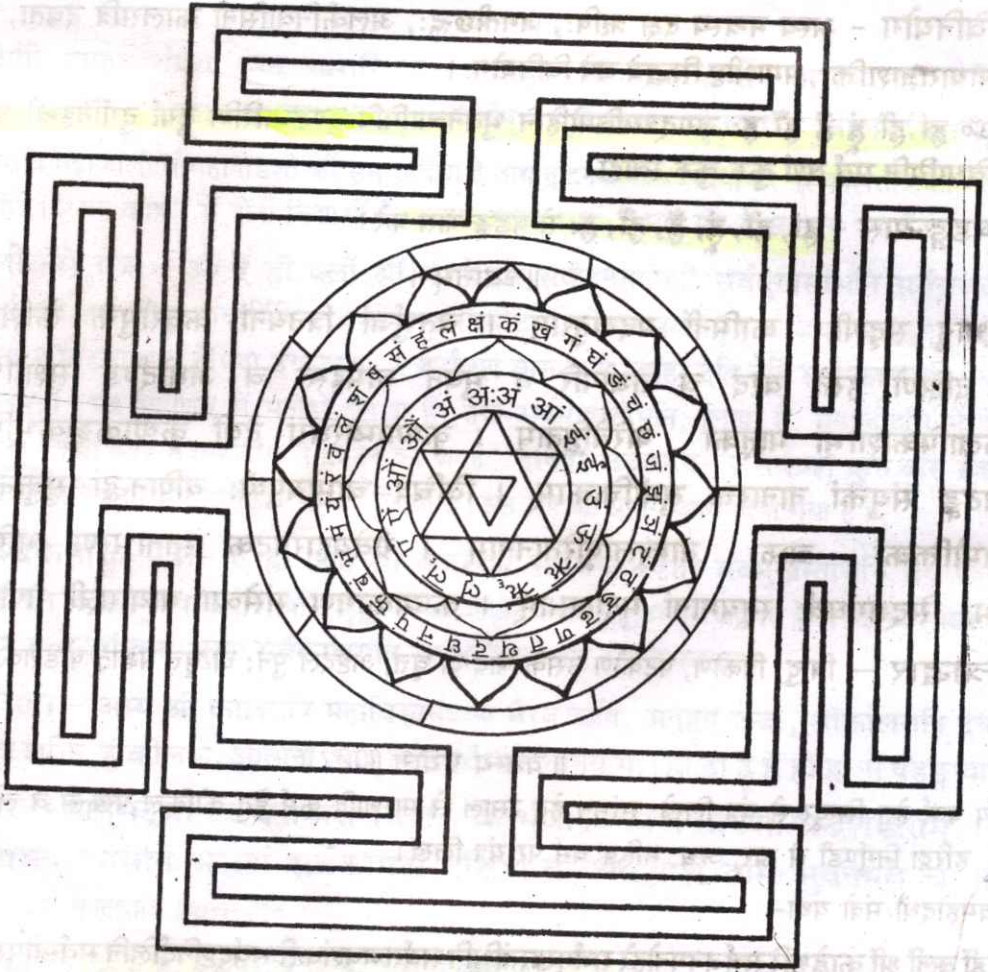
॥ कालरात्रि यन्त्रम् ॥

हृदयादिषडंगन्यास :- ॐ ऐंह्रींक्लींश्रीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहरे सर्वमुखस्तंभिनि हृदयाय नमः ॥१॥ सर्वराजवशंकरि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्रीपरुषाकर्षिणि शिरसे स्वाहा ॥२॥ बंदिशृंखलास्त्रोटय २ सर्वशत्रून् भंजय २ शिखायै वषट् ॥३॥ द्वेष्टृन् निर्दलय २ सर्वं स्तंभय २ कवचाय हुं ॥४॥ मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय २ सर्वं वशं कुरु २ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ देहि २ सर्वं कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ उद्यन्मार्तंड कांतिं विगलितकबरीं कृष्णवस्त्रावृतांगीं
दंडं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं संधधानां त्रिनेत्राम् ।
नाना कल्पैर्विभासं स्मितमुखकमलां सेवितां देवसंघै
र्मायाराज्ञीं मनोभूशरविकलतनूमाश्रये कालरात्रिम् ॥१॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठ देवताः संस्थाप्य '**ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः**' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। पूर्वादिक्रमेण -

ॐ जयायै नमः ॥१॥ ॐ विजयायै नमः ॥२॥ ॐ अजितायै नमः ॥३॥ ॐ अपराजितायै नमः ॥४॥ ॐ नित्यायै नमः ॥५॥ ॐ विलासिन्यै नमः ॥६॥ ॐ दोग्ध्र्यै नमः ॥७॥ ॐ अघोरायै नमः ॥८॥ मध्ये **ॐ मंगलायै नमः ॥९॥ इति पूजयेत्।**

ततो भूर्जपत्रे बिंदुत्रिकोणषट्कोणवृत्ताष्टदलवृत्तषोडशदलवृत्तं च कार्य परत्वेन लेखन्यादिद्वारा लिखित्वा तस्योपरि त्रिरेखात्मकभूपुरं विनिर्माय '**ॐ कालरात्रियोगपीठात्मने नमः**' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा (बिन्दू में मूर्ति की कल्पना कर गंधपुष्पाक्षत से आवरण पूजा करे)।

तद्यथा पुष्पांजलिमादाय -

ॐ संविमन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ।
देह्यनुज्ञां कालरात्रि परिवारार्चनाय मे ॥१॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत। तद्यथा तत्र त्रिकोणे पूज्यपूजकयोरंतराले झझ्रप्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च।

प्रथमावरणम् :- (त्रिकोणे) **ॐ संमोहिन्यै नमः। संमोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ इति सर्वत्र। ॐ मोहिन्यै नमः। मोहिनीश्रीपा० २। ॐ विमोहिन्यै नमः। विमोहिनीश्रीपा० ॥३॥** इति पूजयेत्।

ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य-

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्त्वा **पूजितास्तर्पिताः संतु** इति वदेत् अर्घपात्र से जल छोड़ें॥

द्वितीयावरणम् :- (ततः षट्कोणकेसरेषु)- आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च - ॐ हृदयाय नमः, हृदयश्रीपा०। ॐ शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा०। ॐ शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा०। ॐ कवचाय हुम्।

कवचश्रीपा० । ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् । नैत्रत्रयश्रीपा० । ॐ अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० । इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ।

तृतीयावरणम् :- (ततो वृत्ते दक्षिणावर्तेन च)- ॐ अं आं नमः ॥१॥ ॐ इँ ईं नमः ॥२॥ ॐ उँ ऊँ नमः । ॐ ऋँ ॠँ नमः ॥४॥ ॐ लृँ ॡँ नमः ॥५॥ ॐ एँ ऐं नमः ॥६॥ ॐ ओं औं नमः ॥७॥ ॐ अं अः नमः ॥८॥ इति षोडशस्वरान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ।

॥ श्री कालरात्रि यन्त्रम् ॥

चतुर्थावरणम् :- (ततोऽष्टदलेषु दक्षिणावर्तेन)- ॐ ब्राह्मयै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० ॥१॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० ॥२॥ ॐ कौमार्य्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ॥५॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ।।६॥ ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्री० ॥७॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ॥८॥ इत्यष्टौ मातृः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ।
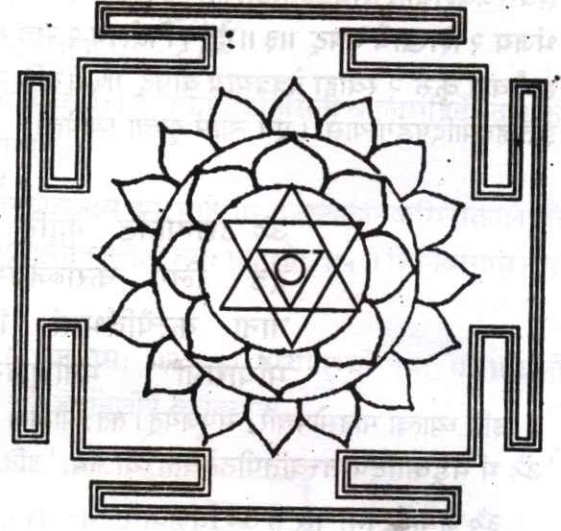
पंचमावरणम् :- (पुनर्वृत्ते)- ॐ कं नमः १ । ॐ खं नमः २ । ॐ गं नमः ३ । ॐ घं नमः ४ । ॐ ङं नमः ५ । ॐ चं नमः ६ । ॐ छं नमः ७ । ॐ जं नमः ८ । ॐ झं नमः ९ । ॐ ञं नमः १० । ॐ टं नमः ११ । ॐ ठं नमः १२ । ॐ डं नमः १३ । ॐ ढं नमः १४ । ॐ णं नमः १५ । ॐ तं नमः १६ । ॐ थं नमः १७ । ॐ दं नमः १८ । ॐ धं नमः १९ । ॐ नं नमः २० । ॐ पं नमः २१ । ॐ फं नमः २२ । ॐ बं नमः २३ । ॐ भं नमः २४ । ॐ मं नमः २५ । ॐ यं नमः २६ । ॐ रं नमः २७ । ॐ लं नमः २८ । ॐ वं नमः २९ । ॐ शं नमः ३० । ॐ षं नमः ३१ । ॐ सं नमः ३२ । ॐ हं नमः ३३ । ॐ ळं नमः ३४ । ॐ क्षं नमः ३५ । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ।

षष्ठावरणम् :- (ततः षोडशदलेषु दक्षिणावर्तेन च)- ॐ उर्वश्यै नमः । उर्वशी श्रीपा० ॥१॥ ॐ मेनकायै नमः । मेनकाश्रीपा० २ । ॐ रंभायै नमः । रंभाश्रीपा० ३ । ॐ घृताच्यै नमः घृताची श्रीपादुका० ४ । ॐ मंजुघोषायै नमः । मंजुघोषाश्रीपा ५ । ॐ सहजन्यायै नमः । सहजन्याश्रीपा० ६ । ॐ सुकेश्यै नमः । सुकेशीश्रीपा० ७ । ॐ तिलोत्तमायै नमः । तिलोत्तमाश्रीपा० ८ । ॐ गांधर्व्यै नमः । गांधर्वीश्रीपा०९ । ॐ सिद्धकन्यायै नमः । सिद्धकन्याश्रीपा० १० । ॐ किन्नर्य्यै नमः । किन्नरीश्रीपा० ११ । ॐ नागकन्यकायै नमः । नागकन्यकाश्रीपा० १२ । ॐ विद्याधर्य्यै नमः । विद्याधरीश्रीपा० १३ ॐ किंपुरुषायै नमः । किंपुरुषाश्रीपा० १४ । यक्षिण्यै नमः । यक्षिणीश्रीपा० १५ । ॐ पिशाच्यै नमः । पिशाचीश्रीपा० १६ । इति षोडशदेवताः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥

सप्तमावरणम् :- (पुनर्वृत्ते)- ॐ परमात्मने नमः । परमात्मश्रीपा० १ । ऐं सरस्वत्यै नमः । सरस्वतीश्रीपा० २ । ह्रीं गौर्य्यै नमः । गौरीश्रीपा० ३ । क्लीं कामायै नमः । कामाश्रीपा० ४ । श्रीं रमायै नमः । रमाश्रीपा० ५ । द्रां द्रविण्यै नमः । द्रविणीश्रीपा० ६ । द्रीं क्षोभिण्यै नमः । क्षोभिणीश्रीपा० ७ । क्लीं वशकिरिण्यै नमः । वशीकरिणीश्रीपा ८ । ब्लूं कर्षिण्यै नमः । कर्षिणीश्रीपा० ९ । सः संमोहिन्यै नमः । संमोहिनीश्रीपा० १० । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं

दद्यात्।

अष्टमावरणम् :- (ततो भूपुराभ्यंतरे प्राच्यादिक्रमेण)- **ॐ अणिमायै नमः। अणिमाश्रीपा० १।** ॐ लघिमायै **नमः। लघिमाश्रीपा० २। ॐ महिमायै नमः। महिमाश्रीपा० ३।** ॐ ईशितायै नमः। ईशिताश्रीपा० ४। ॐ **वशितायै नमः। वशिताश्रीपा० ५। ॐ कामपूरण्यै नमः। कामपूरणीश्रीपा० ६। ॐ गरिमायै नमः।** गरिमाश्रीपा० **७। ॐ प्राप्त्यै नमः। प्राप्तिश्रीपा० ८। इत्यष्टसिद्धीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।** (प्रत्येक देवता का चार चार दिशाओं पूजन करें)

नवमावरणम् :- (ततो भूगृहस्य प्रथमरेखायां चतुर्दिक्षु)- **ॐ इच्छाशक्त्यै नमः।** इच्छाशक्तिश्रीपा० १। ॐ **क्रियाशक्त्यै नमः। क्रियाशक्तिश्रीपा० २।** ॐ ज्ञानशक्त्यै नमः। ज्ञानशक्तिश्रीपा० ३। इति पूजयेत्। ततो **मध्यरेखायाम् ॐ रुद्राय नमः। रुद्रश्रीपा० १। ॐ विष्णवे नमः। विष्णुश्रीपा० २। ॐ ब्रह्मणे नमः।** ब्रह्मश्रीपा० **३। इति पूजयेत्। ततोऽन्तरेखायां ॐ सत्त्वाय नमः। सत्त्वश्रीपा० १।** ॐ रजसे नमः। रजःश्रीपा० २। ॐ तमसे **नमः। तमःश्रीपा० ३। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

दशमावरणम् :- (ततः भूपुरबाह्ये प्राच्यादिचतुर्दिक्षु)- **ॐ गणेशाय नमः।** गणेशश्रीपा० १। ॐ क्षेत्रपालाय **नमः। क्षेत्रपालश्रीपा० २। ॐ बटुकाय नमः। बटुकश्रीपा० ३।** ॐ योगिनीभ्यो नमः। योगिनीश्रीपा० ४। इति **द्वारपालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

एकादशमावरणम् :- (ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण)- **ॐ लं इन्द्राय नमः। इन्द्रश्रीपा० १।** ॐ रं अग्नेय **नमः। अग्निश्रीपा० २। ॐ मं यमाय नमः। यमश्रीपा० ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिश्रीपा० ४। ॐ वं वरुणाय नमः। वरुणश्रीपा० ५। ॐ शं वायवे नमः। वायुश्रीपा० ६। ॐ कुं कुबेराय नमः। कुबेरश्रीपा. ७। ॐ हं ईशानाय नमः। ईशानश्रीपा० ८। पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मश्रीपा० ९। वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः अनन्तश्रीपा. १०। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्॥**

द्वादशावरणम् :- (तत इन्द्रादिसमीपे)- **ॐ वं वज्राय नमः ॥१॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥२॥** ॐ दं दंडाय **नमः ॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥४॥ ॐ पां पाशाय नमः ॥५॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥६॥ ॐ गं गदायै नमः ॥७॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ चं चक्राय नमः। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

त्रयोदशावरणम् :- इति बाह्यार्चनं कृत्वा पुनः देवीपार्श्वे प्राच्यादिचतुर्दिक्षु (प्राच्याम्)- **ॐ मायायै नमः। मायाश्रीपा० १। ॐ कालरात्र्यै नमः। कालरात्रिश्रीपा० २। ॐ वटवासिन्यै नमः। वटवासिनीश्रीपा०** ३। (दक्षिणे) **ॐ गणेश्वर्यै नमः। गणेश्वरीश्रीपा १। ॐ काह्लाख्यायै नमः। काह्लाख्याश्रीपा० २।** ॐ व्यापिकायै नमः। **व्यापिकाश्रीपा० ३।** (पश्चिमे) **ॐ अलर्कवासिन्यै नमः। अलर्कवासिनीश्रीपा० १।** ॐ मायाराज्ञ्यै नमः। **मायाराज्ञीश्रीपा० २। ॐ ॐ मदनप्रियायै नमः। मदनप्रियाश्रीपा ३।** (उत्तरे) ॐ रत्यै नमः। रतिश्रीपा० १। ॐ **लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीश्रीपा०२। ॐ काह्लेश्वर्यै नमः। काह्लेश्वरीश्रीपा० ३। इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।**

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य मूलेन मद्यादिबलिं दत्त्वा जपं कुर्यात्।

अस्य पुरश्चरणमयुतजपः। तद्दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री षट् प्रयोगान् साधयेत्। तथा च अयुतं प्रजपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः। **पयोरुहैर्वा विप्रेन्द्रान् संतर्प्य श्रेय आप्नुयात् ॥१॥ एवं संपूजिता स्वेष्टं कालरात्रिः प्रयच्छति। सिद्धे मंत्री प्रकुर्वीत**

प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥२॥

॥ अन्य काम्य प्रयोगाः ॥

॥ वशीकरण ॥

शनिवार के दिन सायं सरोवर पर जाकर सरोवर एवं जलौ का (जौंक) का पूजन करे।
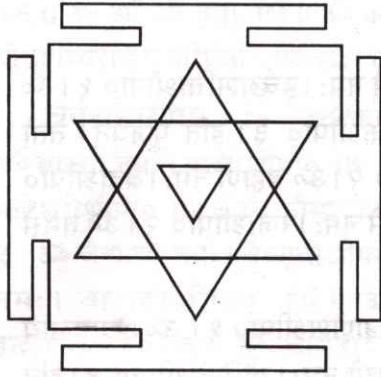
मंत्र -ॐ नमो जलौकायै जलौकायै सर्वजनं वशं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा। रात्रि में देवी स्मरण करते हुये सो जावे। पुन प्रातः काल सरोवर से जलौ का (जौंक) लाकर छाया में सुखाकर उसका चूर्ण बनावे। काले कपास की रुई में चूर्ण मिलाकर बत्तीबनावें, कुम्हार से मिट्टी लाकर दीप बनाये, चलते हुये कोल्हू का शुद्ध तेल लावे, वैश्या के घर से अग्नि लाकर कुचिला की लकड़ी जलाकर उससे दीप प्रज्ज्वलित करे। हल्दी से त्रिकोण षट्कोण एवं भूपुरयुक्त यंत्र बनाकर उस पर दीप रखें। उस दीपक पर कालरात्रि का आवाहन कर आवरण पूजा करे। उस दीपक पर नवीन खप्पर रखकर कज्जल बनाये। उस कज्जल को लेकर पश्चिमाभिमुख बैठकर तीन सौ बार वक्ष्यमाण मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करें।

॥ कालरात्रिदीप स्थापन यन्त्रम् ॥

॥ अञ्जनभिमंत्रण मंत्र ॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्लौं ब्लूं हसौः नमः काह्लेश्वरि सर्वान्मोहय मोहय कृष्णे कृष्णवर्णे कृष्णाम्बरसमन्विते सर्वानाऽकर्षय आकर्षय शीघ्रं वशं कुरु कुरु ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं।

पश्चात् दीप, देवता, व अपनी आत्मा का सामंजस करे। मंगलवार को पुनः देवी व अंजनका पूजन कर अंजन को मक्खन में मिश्रित करे। पश्चात् मूल मंत्र से १०८ आहुति महुआ के पुष्पों से देवे। कुमारी वटुक व सुवासिनियों को भोजन कराये। उपरोक्त सिद्धाञ्जन का तिलक लगाने से राजा प्रजा सभी का संमोहन होवे। दूध में मिलाकर पिलाने से पीने वाला व्यक्ति वशीभूत होवे। दूध में रंगभेद की आशंका रहने से पान में भी खिलाया जा सकता है।

॥ स्तंभन प्रयोग ॥

हल्दी, गोरोचन, कूट एवं तगर को गोमूत्र में पीसकर उसमें हल्दी में रंगे वस्त्र पर अष्टदल बनायें। मध्य में शत्रु का नाम "**अमुकं स्तंभय**" लिखे। अष्टदलों में प्रत्येक में **ॐ, ॐ, ग्लौं, ग्लौं, च-ट, च-ट, (चट-चट)** एक एक अक्षर लिखे। फिर उस मंत्र को पीलेवस्त्र से वेष्टन करे। कुचिला की लकड़ी की सात कीलों से यंत्र को विद्ध कर देवे एवं आक के पत्ते में लपेट कर उस यंत्र को बांबी में रखकर बांबी को भेड़ के मूत्र से भर देवें। फिर बांबी के ऊपर पत्थर रखकर उस पर बैठकर साधक नैऋत्य कोण की ओर मुख कर हल्दी की माला पर एक हजार जप करे।

॥ श्री कालरात्रिस्तम्भन यन्त्रम् ॥
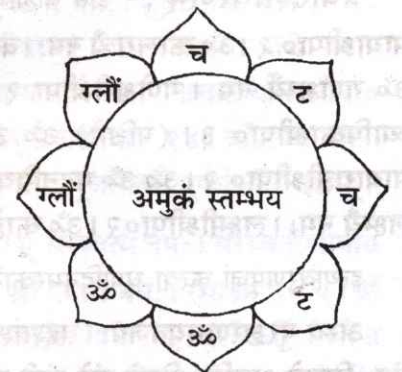
मंत्र - **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं कामाक्षि मायारूपिणि सर्वमनोहारिणि सर्वमनोहारिणि स्तंभय स्तंभय रोधय रोधय मोहय मोहय क्लीं क्लीं क्लूं**

कामाक्षे काह्लेश्वरि हुं हुं हुम्।

॥ मोहन प्रयोग ॥

रविवार के दिन हल्दीलाकर उसे स्त्री के दूध में पीसकर उससे भोजपत्र पर यंत्र बनावे। एक वृत्त बनाकर उसके बीच में "**क्लीं**" लिखें। उस वृत्त के बाहर चारों ओर वृत्ताकार १० बार कामबीज "**क्लीं**" लिखे। पुनः उसके बाहर वृत्ताकार १२ बार कामबीज "**क्लीं**" लिखे। पुनः उसके बाहर वृत्ताकार १६ बार कामबीज "**क्लीं**" लिखे। इन सबके ऊपर एक बड़ा षट्कोण बनाये (ये अक्षर बीच में रह जायेंगे) उसके प्रत्येक कोणों में "**क्लीं**" लिखे। फिर संपूर्ण यंत्र के चारों ओर "**ऐं**" वृत्ताकार लिखें। अथवा किसी वस्त्र व भूमंडल पर बड़ा सा "**ऐं**" लिखे। उसके मध्य में इस यंत्र को लिख देवे। उस यंत्र पर बैठकर साधक ५ दिन तक एक एक हजार मंत्र जप करे।
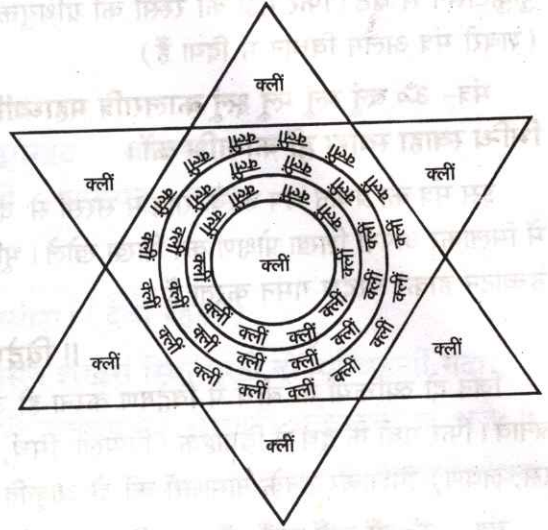
मंत्र – "**ॐ कामाय क्लीं क्लीं कामिन्यै क्लीं**"। पश्चात् दशांश होम करे। उस भस्म का तिलक लगाने से संसार का सम्मोहन होता हैं।

॥ कालरात्रि मोहन यन्त्रम् ॥

॥ आकर्षण प्रयोगः ॥

कृष्णा अष्टमी वा चतुर्दशी को मंगलवार रविवार हो उस दिन नाभिपर्यन्त जल में खड़े होकर मूलमंत्र का ११ सौ जप करे। घर आकर शरीर पर तिलों का तेल या सुगंधित तेल मले। भद्रपीठ पर काम्य स्त्री वा पुरुष की अंजन से आकृति बनाये। उसकी लाजवतीवृक्ष के पत्तों से पूजा कर, लाजवती की जड़ के रस से प्रोक्षण करे। उसके आगे बैठकर मंत्र जप करे-

मंत्र – **ॐ नमः कालिकायै सर्वाकर्षण्यै अमुकीं वा अमुकं साध्य** (स्त्री या पुरुष के नाम में द्वितीयान्त) **आकर्षय आकर्षय शीघ्रमानय शीघ्रमानय आं ह्रीं क्रों भद्रकाल्यै नमः।**

इस मंत्र का एक सौ साठ बार जप कर साधक ५० लाल कनेर के पुष्पों से पूर्वलिखित आकृति का पूजन करे। फिर साध्य के नाम के आगे ॐ सहित वर्णमाला के एक एक अक्षर युक्त कर साध्य नाम के पश्चात् आकर्षय आकर्षय नमः बोलते हुये एक पुष्प अर्पण करे।

यथा- **ॐ (अमुकीं अमुकं वा) आकर्षय आकर्षय नमः। इस तरह नाम आगे आं ई......... हं लं क्षं** तक एक एक आगे लगाते हुये पुष्पार्चन करे। फिर उस आकृति का धूप दीप नैवेद्यादि से पूजन करे। ४४ अक्षर वाले उपरोक्त मंत्र से घृत मिश्रित चने (भुनेहुये) से १०० आहुतियां देवे। पश्चात् काले कपास के कुमारी द्वारा काते गये सूत के २८ धागे अपनी शरीर की लंबाई तुल्य लेवे उनमें आकर्षण मंत्र पढ़ते हुये एक एक गांठ लगाते हुये १०८ गांठों का गण्डा बनाये। उसको धारण करने से वांछित स्त्री पुरुष ३ या ९ दिन में वश में हो जाते हैं। कोई व्यक्ति बाहर चला गया होवे तो उसके लिये भी यह प्रयोग करके देखना चाहिये।

****

वशङ्करि ॥५॥ सु सु... स्वाहा॥६॥

गीर्वाण सङ्घार्चित पादपङ्कजारुण प्रभा बालशशांकशेखरा ।
रक्ताम्बरालेपन पुष्प युड्मुदे सृणिं सपाशं दधती शिवाऽस्तु नः ॥

११. गौरी गायत्री- ॐ सुभगायै विद्महे काममालिन्यै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात् ।

षडङ्गन्यास - गौरी मंत्रों के षडङ्गन्यास तीन तरह से है।

(१) ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः।

(२) यां, यीं, यूं, यैं, यौं, यः। (अग्निपुराणे)

(३) अः, इः, उः, ऋः, ॠः , लृः लॄः।(सिंहसिद्धान्त सिन्धु)

यहां सात अक्षर है अतः शुरु के षड्क्षरों से अङ्गन्यास करके सातवें से व्यापक न्यास करे।

देवी द्विनेत्रा व त्रिनेत्रा है। सिंह या बैल पर सवार है। चतुर्भुजा, अष्टभुजा, दशभुजा,अठारहभुजा स्वरूप में पूजा की जाती है। अस्त्रादि क्रम इस प्रकार है- (अग्नि पुराणे)

स्रगक्षसूत्रकलिका गलकोत्पलपिण्डिका । शरं धनुर्वा सव्येन पाणिनाऽन्यतम् महत् ॥
वामेन पुस्तताम्बूल दण्डाभयकमण्डलुम् । गणेशं दर्पणेष्वासान्दद्यादेकैकशः क्रमात् ॥

पाठान्तर में दर्पण, अञ्जनशलाका है, कहीं वराऽभय मुद्रा कही है।

अग्निपुराणानुसार दर्पण में गणेश की कल्पना करे ।

गौरी मंत्र उत्कीलन - (देवी रहस्ये) **ग्लौं ॐ स्वाहा।**

गौरी मंत्र संजीवन - (देवी रहस्ये) **नमः ग्लौं।**

गौरी मन्त्र - ॐ श्रीं ह्रीं ग्लौं गं गौरि गीं स्वाहा॥ (देवी रहस्ये)

अन्यत्र - गं देवि गौरि भी लिखा है।

उत्कीलन - ॐ ह्रीं ग्लौं स्वाहा।

शापविमोचन - ॐ ह्रीं शिवं गौरि भृगोः शापं मोचय मोचय स्वाहा।

संजीवन - ॐ गं ॐ॥

॥ हरगौरी मंत्र ॥

मंत्र :- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हरिहर विरञ्च्याद्याराधिते शिवशक्ति स्वरूपे स्वाहा।

यह मंत्र आयु एवं शक्तिवर्द्धक है ॥

॥ गौरी ध्यानम् ॥

गौराङ्गीं धृतपङ्कजां त्रिनयनां श्वेताम्बरां सिंहगां, चन्द्रोद्भासितशेखरां स्मितमुखीं दोर्भ्यां वहन्तीं गदाम् ।
विष्णिवन्द्राम्बुजयोनि शंभुत्रिदशैः संपूजिताङ्घ्रिद्वयां, गौरीं मानसपङ्कजे भगवतीं भक्तेष्टदां तां भजे ॥

॥ यंत्रार्चनम्॥

यन्त्र रचना – त्रिदलकमल, षट्कोण, अष्टदल युक्त भूपुर बनाये।

ॐ मं मण्डूकादि योग पीठ देवतायै नमः से पीठ पूजन करे।

मध्य में देवी का आवाहन व शिव का आवाहन करे।

॥ श्री गौरी यन्त्रम् ॥

प्रथमावरणम् – (त्रिदल कमले) **ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः।**

द्वितीयावरणम् – (षट्कोणे) **ह्रां हृदय शक्तये नमः। ह्रीं शिरः शक्तये नमः। ह्रूं शिखा शक्तये नमः। ह्रैं कवचशक्तये नमः। ह्रौं नेत्र शक्तये नमः। ह्रः अस्त्र शक्तये नमः।**

तृतीयावरणम् – (अष्टदले केसरेषु) **ॐ असितांग भैरवाय नमः। ॐ रुरु भैरवाय नमः। ॐ क्रोध भैरवाय नमः। ॐ कपालि भैरवाय नमः। ॐ चण्डभैरवाय नमः। ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। ॐ भीषणभैरवाय नमः। ॐ संहार भैरवाय नमः।**
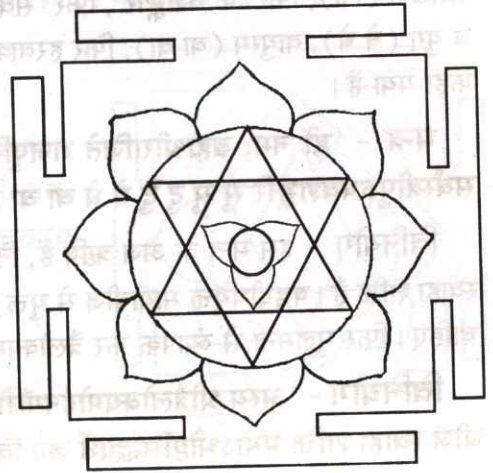
चतुर्थावरणम् – (अष्टदले कर्णिकायां) अग्नि पुराणोक्त पूर्वे **वामायै नमः।** दक्षिणे – **ज्येष्ठायै नमः।** पश्चिमे – **क्रियायै नमः।**

उत्तरे – **ज्ञानायै नमः। अग्निकोणे– ललितायै नमः। नैर्ऋतिकोणे – सुभागायै नमः। वायवे – गौर्यै नमः। ईशाने क्षोभिण्यै नमः।**

सिंह सिद्धान्त सिन्धु अनुसार – पूर्वे – **सुभगायै नमः।** दक्षिणे – **ललितायै नमः।** पश्चिमे – **कामिन्यै नमः।** उत्तरे – **काममालिन्यै नमः।** अग्निकोणे – **पाशाय नमः।** नैऋते – **अङ्कुशाय नमः।** वायव्ये – **दर्पणाय नमः।** ईशाने – **अञ्जनशलाकायै नमः।**

पंचमावरणम् – (भूपुरे चतुद्वरि) उत्तरे – **नंदिने नमः।** पूर्वे – **भृङ्गवे नमः।** दक्षिणे – **महाकालाय नमः।** पश्चिमे –**गणेशाय नमः।**

षष्ठमावरण में भूपुर की दश दिशाओं में **इन्द्रादि लोकपालों** का तथा **सप्तमावरण** हेतु दिक्पालों के समीप उनके वज्रादि अस्त्रों का पूजन करे।

पश्चात् देवी की पूजा कर प्रार्थना करे –

श्वेते वृषे वृषे समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः ।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेव प्रमोददा ॥

मंत्र का पुरश्चरण करके होम करे। संतान हीन को संतान प्राप्ति, राजा को राज्य प्राप्ति , अर्थार्थि को धन लाभ प्राप्त होवे।

आठ लाख जप से वाक्सिद्धि होवे तथा सबको वश में करने की शक्ति प्राप्त होवे।

हवनाङ्ग कर्म बाद तीन या आठ कुमारियों को भोजन करावे।

॥ त्रैलोक्यमोहन गौरी प्रयोगः॥

त्रैलोक्यमोहन गौरी मन्त्र – माया (ह्रीं), उसके अन्त में 'नमः' पद, फिर 'ब्रह्म श्री राजिते राजपूजिते जय', फिर 'विजये गौरि गान्धारि', फिर 'त्रिभु', इसके बाद तोय (व), मेष (न), फिर 'वशङ्करि', फिर 'सर्व' पद, फिर ससद्यल (लो), फिर 'क वशङ्करि', फिर 'सर्वस्त्रीं पुरुष' के बाद 'वशङ्करि', फिर 'सु द्वय' (सु सु), दु द्वय (दु दु), घे युग् (घे घे), वायुग्म (वा वा), फिर हरवल्लभा (ह्रीं), तथा अन्त में 'स्वाहा' लगाने से ६१ अक्षरों का यह मन्त्रराज कहा गया है।

मन्त्र – **'ह्रीं नमः ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते जयविजये गौरि गान्धारि त्रिभुवनवशङ्करि, सर्वलोकवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सु सु दु दु घे घे वा वा ह्रीं स्वाहा'।**

विनियोग – इस मन्त्र के अज ऋषि हैं, निचृद गायत्री छन्द है, त्रैलोक्यमोहिनी गौरी देवता है, माया बीज है एवं स्वाहा शक्ति है। षड्दीर्घयुक्त मायाबीज से युक्त इस मन्त्र के १४, १०, ८, ८, १० एवं ११ अक्षरों से षडङ्गन्यास करना चाहिए। फिर मूलमन्त्र से व्यापक कर त्रैलोक्यमोहिनी का ध्यान करना चाहिए।

विनियोग – **'अस्य श्रीत्रैलोक्यमोहनगौरीमन्त्रस्य अजऋषिर्निचृद्गायत्री छन्दः त्रैलोक्यमोहिनीगौरीदेवता ह्रीं बीजं स्वाहा शक्ति ममाऽभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।'**

षडङ्गन्यास – **ह्रां ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते हृदयाय नमः, ह्रीं जयविजये गौरिगान्धारि शिरसे स्वाहा, ह्रूँ त्रिभुवनवशङ्करि शिखायै वषट्, ह्रैं सर्वलोक वशङ्करि कवचाय हुं, ह्रौं सर्वस्त्रीपुरुष नेत्रत्रयाय वशङ्करि वौषट्, ह्रः सुसु दुदु घेघे वावा ह्रीं स्वाहा, अस्त्राय फट्, ह्रीं नमोः ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते जयविजये गौरिगान्धारि त्रिभुवनवशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुष वशङ्करि सुसु दुदु घेघे वावा ह्रीं स्वाहा, सर्वाङ्गे।**

॥ ध्यानम् ॥

गीर्वाणसङ्घार्चितपादपङ्कज अरुणप्रभाबालशशाङ्कशेखरा ।
रक्ताम्बरालेपनपुष्पञ्ङ् मुदे सृणिं सपाशं दधती शिवास्तु नः ॥

॥ आवरण पूजा ॥

केशरों पर षडङ्गपूजा कर अष्टदलों में ब्राह्मी आदि मातृकाओं की, भूपुर में लोकपालों की तथा बाहर उनके आयुधों की पूजा करनी चाहिए। पीठ देवताओं एवं पीठशक्तियों का पूजन कर पीठ पर मूलमन्त्र से देवी की मूर्त्ति की कल्पना कर आवाहनादि उपचारों से पुष्पाञ्जलि समर्पित कर उनकी आज्ञा से इस प्रकार आवरण पूजा करे। सर्वप्रथम केशरों में षड्ङ्ग मन्त्रों से षडङ्गपूजा करनी चाहिए।

यथा – **ह्रीं ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते हृदयाय नमः, ह्रीं जयविजये गौरि गान्धारि शिरसे स्वाहा, ह्रूँ त्रिभुवनवशङ्करि शिखायै वौषट्, ह्रैं सर्वलोकवशङ्करि कवचाय हुम्, ह्रौं सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्रः सुसु दुदु घेघे वावा ह्रीं स्वाहा अस्त्राय फट्।**

फिर अष्टदल में पूर्वादि दिशाओं के क्रम से ब्राह्मी आदि का पूजन करनी चाहिए।

१. ॐ ब्राह्मयै नमः, पूर्वदले २. ॐ माहेश्वर्यै नमः, आग्नेये ३. ॐ कौमार्यै नमः, दक्षिणे ४. ॐ वैष्णव्यै नमः, नैर्ऋत्ये ५. ॐ वाराह्यै नमः, पश्चिमे ६. ॐ इन्द्राण्यै नमः, वायव्ये ७. ॐ चामुण्डायै नमः, उत्तरे ८. ॐ

महालक्ष्म्यै नमः, ऐशान्ये।

तत्पश्चात् भूपुर के भीतर अपनी-अपनी दिशाओं में इन्द्रादि दश दिक्पालों की पूजा करनी चाहिए।

इन्द्राय नमः पूर्वे, अग्नये नमः आग्नेये, यमाय नमः दक्षिणे, नैर्ऋत्याय नमः नैर्ऋत्ये, वरुणाय नमः पश्चिमे, वायवे नमः वायव्ये, सोमाय नमः उत्तरे, ईशानाय नमः ईशाने, पूर्वईशान मध्ये ब्रह्मणे, अनंताय नमः पश्चिम नैर्ऋत्ययोर्मध्ये।

पुनः भूपुर के बाहर वज्रादि आयुधों की पूजा करनी चाहिए।

वज्राय नमः पूर्वे, शक्तये नमः आग्नेये, दण्डाय नमः दक्षिणे, खडगाय नमः नैर्ऋत्ये, पाशाय नमः पश्चिमे, अंकुशाय नमः वायव्ये, गदायै नमः उत्तरे, त्रिशूलाय नमः ऐशान्ये, पद्माय नमः पूर्वेशानयोर्मध्ये, चक्राय नमः पश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्ये।

॥ श्री त्रैलोक्यमोहनगौरी यन्त्रम् ॥

॥ काम्य प्रयोग ॥

इस प्रकार आराधना करने से देवी सुख एवं संपत्ति प्रदान करती हैं तिल मिश्रित तण्डुल (चावल), सुन्दर फल, त्रिमधु (घी, मधु, दूध) से मिश्रित लवण और मनोहर लालवर्ण के कमलों से जो व्यक्ति तीन दिन तक हवन करता है, उस व्यक्ति के ब्राह्मणादि सभी वर्ण एक महीने के भीतर वश में हो जाते हैं।

सूर्यमण्डल में विराजमान देवी के उक्त स्वरूप का ध्यान करते हुये जो व्यक्ति जप करता है अथवा १०८ आहुतियाँ प्रदान करता है वह व्यक्ति सारे जगत् को अपने वश में कर लेता है।

गौरी का अन्य मन्त्र – हंस (स्), अनल (र), ऐकारस्थ शशांकयुत् (ऐं) उससे युक्त नभ (ह) इस प्रकार हस्त्रैं फिर वायु (य्), अग्नि (र) एवं कर्णेन्दु (ऊ) सहित तोय (व्), अर्थात् 'व्यरूँ,' फिर 'राजमुखि', 'राजाधिमुखिवश्य' के बाद 'मुखि', फिर माया (ह्रीं) रमा (श्रीं), आत्मभूत (क्लीं), फिर ''देवि देवि महादेवि देवाधिदेवि सर्वजनस्य मुखं'' के बाद 'मम वशं' फिर दो बार 'कुरु कुरु' और इसके अन्त में वह्निप्रिया (स्वाहा) लगाने से अड़तालिस अक्षरों का मन्त्र निष्पन्न होता है ॥ ४२-४३ ॥

मन्त्र – 'ह्स्त्रैं व्य्रूँ राजमुखि राजाधिमुखि वश्यमुखि ह्रीं श्रीं क्लीं देवि देवि महादेवि देवाधिदेवि सर्वजनस्य मुखं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा'।

विनियोग– 'अस्य **श्रीगौरीमन्त्रस्य अजऋषिर्निचृद्गायत्रीछन्दः गौरीदेवता, ह्रीं बीजं स्वाहा शक्तिः ममाखिलकामनासिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः'।**

षडङ्गन्यास – ह्रां ह्स्त्रैं व्य्रूँ राजमुखिराजाधिमुखि हृदयाय नमः, ह्रीं वश्यमुखि ह्रीं श्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा, ह्रूं देवि देवि शिखायै वषट्, ह्रैं महादेवि कवचाय हुम, ह्रौं देवाधिदेवि नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्रः सर्वजनस्य मुखं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा अस्त्राय फट्।

॥ पूजाविधि ॥

देवी के स्वरूप का ध्यान करे। अर्घ्य स्थापन, पीठशक्तिपूजन, देवी पूजन तथा आवरण देवताओं के पूजन का प्रकार
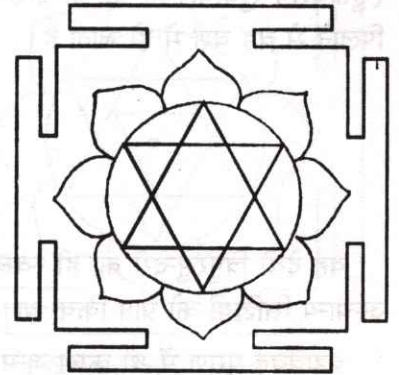
पूर्वोक्त है।

॥ वशीकरण मन्त्राः ॥

वशीकरण मन्त्र के पूजन जप होम एवं तर्पण में मूल मन्त्र के 'सर्वजनस्य' पद के स्थान पर जिसे अपने वश में करना हो उस साध्य के षष्ठयन्त रूप को लगाना चाहिए। सात दिन तक सहस्र-सहस्र की संख्या में संपातपूर्वक (हुतावशेषं स्रुवावस्थित घी का प्रोक्षणी में स्थापन) घी से होमकर उस संपात (संस्रव) घृत को साध्य व्यक्ति को पिलाने से वह वश में हो जाता है।

॥ इति त्रैलोक्यमोहन गौरी प्रयोगः ॥

॥ ९. सिद्धिदात्री ॥

यह देवी त्रिपुरसुन्दरी का ही स्वरूप है। यह कमलासना भी है एवं सिंहारूढा भी है। इसी की कृपा से शिव ने अन्यान्य सिद्धियों को प्राप्त किया था। यह देवि अणिमादि अष्टसिद्धियों से परिवेष्टित एवं सेवित है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में श्री कृष्ण जन्म खण्ड में १८ सिद्धियों का वर्णन है।

अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशत्व, वशित्व, सर्वकामावसायिता, सर्वज्ञत्व, दूरश्रवण, परकायाप्रवेश, वाक्सिद्धि, कल्पवृक्षत्व, सृष्टि, संहरता, अमरत्व, सर्वन्यायकत्व, भावना सिद्धि।

मंत्र – **(१) ॐ ह्रीं सः सिद्धिदात्र्यै नमः।**
(२) ॐ ह्रीं सः सर्वार्थसिद्धिरात्री स्वाहा।

षडङ्गन्यास– ह्रां हृदयाय नमः, ह्रीं शिरसे स्वाहा, ह्रूं शिखायै वषट्, ह्रैं कवचाय हुं, ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्रः अस्त्राय फट्।

कहीं कहीं "य" को शक्ति बीज माना है। अतः **यां, यीं, यूं, यैं, यौं, यः** से षडङ्गन्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

हृत्पुण्डरीक मध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाऽभय हस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ॥१॥
कालाभ्रामां कटाक्षैररिकुल भयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामै ॥२॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

यन्त्र रचना – त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल चारद्वार युक्त भूपुर बनाये।

"ॐ मं मण्डूकादि योग पीठ देवताभ्यो नमः" से योग पीठ का पूजन करे। शिव सहित देवी का आवाहन करे।

प्रथमावरणम् – (त्रिकोणे) ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः।

द्वितीयावरणम् – (षट्कोणे) ह्रां हृदय शक्तये नमः। ह्रीं शिर शक्तये नमः। ह्रूं शिखा शक्तये नमः। ह्रैं कवचशक्तये नमः। ह्रौं नेत्र शक्तये नमः। ह्रः अस्त्र शक्तये नमः।

तृतीयावरणम् – (अष्टदले केसरेषु) ॐ असितांग भैरवाय नमः। ॐ रुरु भैरवाय नमः। ॐ क्रोध भैरवाय नमः। ॐ चण्डभैरवाय नमः। ॐ कपालि भैरवाय नमः। ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। ॐ भीषणभैरवाय नमः। ॐ संहार भैरवाय नमः।

चतुर्थावरणम् – (अष्टदले कार्णिकायां) ॐ अणिमायै नमः। ॐ लघिमायै नमः। ॐ प्राप्ति सिद्ध्यै नमः। ॐ प्राकाम्य सिद्ध्यै नमः। ॐ महिमा सिद्ध्यै नमः। ॐ ईशत्व सिद्ध्यै नमः। ॐ वशित्व सिद्ध्यै नमः। ॐ सर्वकामवसिता सिद्ध्यै नमः।

मध्ये – **सर्वज्ञ सिद्ध्यै नमः।**

॥ श्री सिद्धिदात्री यन्त्रम् ॥

पंचमावरणम् – (चतुद्वरि भूपुरेषु) पूर्वे – **ऋद्धि बुद्धि सहिताय गं गणेशाय नमः।** दक्षिणे – **वटुक सहिताय विघ्नेश गणपतये नमः।** पश्चिमे – **योगिनी सहिताय उच्छिष्ट गणपतये नमः।** उत्तरे – **क्षेत्रपाल सहिताय वरद गणपतये नमः।**

षष्ठमावरण – हेतु भूपुर में **इन्द्रादि लोकपालों** का पूजन करें।

सप्तमावरण – में इन्द्रादि के समीप उनके **वज्रायुधों** का पूजन करे।

॥ प्रार्थना ॥

सिद्ध गंधर्व यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि ।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धि दायिनी ॥

सवालाख का मंत्र पुरश्चरण कर केसर, कस्तूरी हवनीय द्रव्यों व क्षीरान्न से होम करें। मंत्र सिद्ध कर गोरोचन से तिलक करें तो सबको वश में करें।
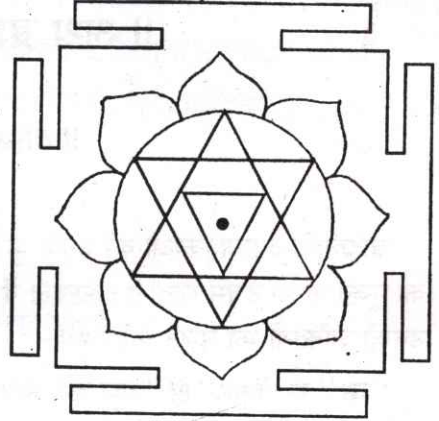
॥ इति नवदुर्गा वर्णनम् ॥

|| अथ ब्राह्मयादि अष्टमातृका वर्णनम् ||

|| ब्राह्मयादि कुलोत्पन्न अष्टाष्ट शक्त्या: ||

(अग्निपुराणे)

ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं की उनके कुल में जन्मी प्रत्येक की ८-८ शक्तियां है। तंत्र की सिद्धि हेतु इन मातृकाओं का पूजन करना उत्तम रहता है। अष्टदल में **कं खं गं घं ङं- कवर्ग, चवर्ग**......इत्यादि आठ वर्गो को लिखे उनके साथ उनकी शक्तियों का पूजन करे। यथा-

"**क**" से लेकर "**क्ष**" तक की अनुलोम मातृका "**सकुला**" कही जाती है। "**क्ष**" से लेकर "**क**" तक विलोम मातृका "**अकुला**" कही जाती है।

वर्णमाला के शिखा हेतु "**ॐ क्षौं शिखा भैरवाय नमः**"। इसके बीजाक्षर "**स्खीं, स्खीं स्खें**" **है। ह्रां ह्रीं ह्रैं शशिनी, भानुनी, पावनी, शिवगंधारी, पूजयामि नमः। शं पिण्डाक्षी, चपला, गजजिह्विकायै नमः। मं मृषा, भयसार, मध्यमायै नमः। फं अजरायै नमः। यं कुमार्यै नमः। नं कालरात्र्यै नमः। दं सकटायै नमः। घं कालिकायै नमः। फं शिवायै नमः। णं भवघोरायै नमः। टं विभत्सायै नमः। तं विद्युतायै नमः। ठं विश्वंभरायै, शंखिन्यै नमः। उं विशंभरायै नमः। आं शंसिनी, दं ज्वालामालिनी, कराली, दुर्जया, रङ्गी, वामा, ज्येष्ठा, रौद्र्यै नमः। ख काली, क कुलालम्बी अनुलोमायै नमः। द पिण्डिनी, आ वेदिनी, इं रूपी, वैं शान्तिमूर्ति एवं कलाकुलायै नमः। ॠं खड्गिनी, उं वलिता, लृं कुलायै नमः। लृं सुभगा वेदनादिनी एवं करात्यै नमः। अं मध्यमा तथा अः अपेतरयायै नमः।**
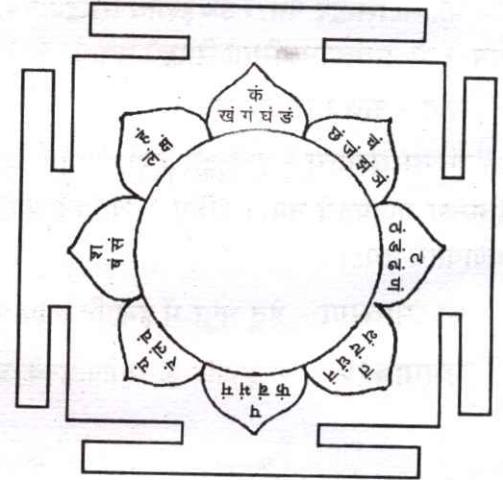
इसके बाद प्रत्येक अष्टदल के प्रत्येक दल में ब्राह्मयादि का पूजन करे। ब्राम्यादि से उत्पन्न उनकी अष्टशक्तियों का पूजन करे।

(१) **ब्राह्मी** :- ब्राह्मी कुल की शक्तियां - **अक्षोद्या, ऋक्षकर्णी, राक्षसी, क्षपणा, क्षया, पिङ्गाक्षी, अक्षया एवं क्षेमा।**

(२) **माहेश्वरी** :- **इला, लीलावती, नीला, लङ्का, लङ्केश्वरी, लालसा, विमला, माला** माहेश्वरी कुल की है।

(३) **कौमारी** :- **हुताशना, विशालाक्षी, हूंकारी, बडवामुखी, हाहारवा, क्रूरा, क्रोधा, खरानना, बाला** ये शक्तियां कौमारी के शरीर से उत्पन्न हुई। यह सम्पूर्ण सिद्धियाँ देती है।

(४) **वैष्णवी** :- **सर्वज्ञा, तरला, तारा, ऋग्वेदा, हयानना, सारा सारासारस्वयंग्राहा एवं शाश्वती।**

****

(५) वाराही :- **तालुजिह्वा, रक्ताक्षी, विद्युज्जिह्वा, करङ्क्गिणी, मेघनादा, प्रचण्डोग्रा, कालकर्णी एवं कलिप्रिया**। इनके पूजन से विजय प्राप्त होवे।

(६) ऐन्द्री : - **चम्पा, चम्पावती, प्रचम्पा, ज्वलितानना, पिशाची, पिंचुवक्त्रा**, लोलुपा एवं विश्वयोन्या।

(७) चामुण्डा :- **पावनी, याचनी, वामनी, दमनी, बिन्दुवेला, वृहत्कुक्षी, विद्युता** एवं विश्वरूपिणी।

(८) महालक्ष्मी :- **यमजिह्वा, जयन्ती, दुर्जया, यमान्तिका, विडाली, रेवती, जया एवं विजया**।

इन सबकी पूजा से विजय व सिद्धियाँ मिलती है।

॥ ब्राह्मयादि मातृका यन्त्रम् ॥

पुरश्चर्याणवे

ब्राह्मी यंत्र - षट्कोण के बाद षोडशदल कमल बनाये पश्चात् भुपूर बनाये।

कौमारी यंत्र - पंचकोण के बाद अष्टदल एवं भुपूर बनाये।

वैष्णवी यंत्र - पुरश्चर्याणव के अनुसार अष्टदल के बाहर भुपूर बनाये।

वाराही यंत्र - त्रिकोण, षोडशदल , अष्टदल, दो दशदल, भुपूर बनाये।

चामुण्डा यंत्र - षट्कोण एवं अष्टदल, भुपूर बनाये।

महालक्ष्मी यंत्र - षट्कोण एवं अष्टदल, भुपूर बनाये।

॥ ब्राह्मी आदि कन्यान्यास:॥

सभी कन्या न्यास श्यामा पूजा व दुर्गा पूजा में काम आते है।

ॐ आं क्षां ब्राह्मीकन्यकायै नमः मूर्ध्नि। ॐ ईं लां माहेश्वरीकन्यकायै नमः वामांसे। ॐ हां कौमारीकन्यकायै नमः वामपार्श्वे। ॐ ऋं सां वैष्णवीकन्यकायै नमः नाभौ। ॐ लृं षां वाराही क. नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ऐं शां इन्द्राणी क. नमः दक्षांसे। ॐ वां चामुण्डा क. नमः ककुदि। ॐ अः लां महालक्ष्मी क. नमः हृदि।

॥ अष्टसिद्धि कन्या न्यास:॥

ॐ ऐं अणिमासिद्धि कन्यकायै नम शिरसि। ॐ ऐं महिमासिद्धि क. नमः ललाटे। ॐ ऐं लघिमासिद्धिक. नमः भ्रुवोः। ॐ ऐं गरिमासिद्धि क. नमः कण्ठे। ॐ ऐं ईशितासिद्धिक. नमः हृदये। ॐ ऐं वशितासिद्धि क. नमः नाभौ। ॐ ऐं प्राकाम्यसिद्धि क. नमः मूलाधारे। ॐ ऐं प्राप्तिसिद्धि क. लिङ्गोपरि गुह्ये।

॥ अप्सरा न्यास:॥

क्लीं उर्वशी कन्यकायै नमः मूर्ध्नि। क्लीं मेनका क. नमः ललाटे। क्लीं रंभाकन्यकायै नमः दक्षिण नेत्रे। क्लीं घृताची क. नमः वामनेत्रे। क्लीं सुकेशी क. नमः दक्षिण कर्णे। क्लीं मंजुघोष क. नमः वामकर्णे। क्लीं महासरस्वती क. नमः ककुदि।

॥ यक्ष कन्या न्यास:॥

ॐ क्लीं यक्षकन्यकायै नमः दक्षांसे। ॐ क्लीं गंधर्व क. नमः वामांसे। ॐ क्लीं सिद्ध क. नमः हृदि। ॐ

क्लीं नर क. नमः दक्षिण स्तने। ॐ क्लीं नाग क. नमः वामस्तने। ॐ क्लीं किंपुरुष क. नमः गुह्ये। ॐ क्लीं विद्याधर क. नमः जठरे। ॐ क्लीं पिशाच क. नमः मूलाधारे।

॥ ब्राह्मी आदि अष्टमातृका ॥

ब्राह्मी आदि अष्टमातृकाओं का पूजन दशमहाविद्या देवताओं तथा दुर्गा आदि अन्य देवीयों के आवरण पूजन में अवश्य आता है। मेरुतंत्र के अनुसार ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा एवं महालक्ष्मी ये अष्टमातृका है। दुर्गा सप्तशती में महालक्ष्मी का उल्लेख नहीं है नारसिंही तथा शिवदूती का उल्लेख करते हुये ९ मातृकाओं का प्रादुर्भाव लिखा है।

डामर तंत्र के अनुसार अष्टमातृकायें -

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।
वारही नारसिंहयैन्द्री चामुण्डा मातरं स्मृताः ॥

तन्त्रान्तर में नाम भेद भी है-

ब्रह्माणी वैष्णवी रौद्री शिवदूतिका ।
ऐन्द्री च नारसिंही च वाराही चाष्टमातरः ॥

शान्तनवी टीका के अनुसार सात ही मातायें है।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।
वाराही चैव माहेन्द्री चामुण्डा सप्तमातरः ॥

ये सब देवशक्तियां वास्तव में समष्टिशक्तिभूता भगवती चण्डिका की विभिन्न व्यष्टि शक्तियां ही है। इनकी पूजा चण्डिका के समान ही है। इनके ध्यान इस प्रकार है-

॥ १. ब्राह्मी ॥

मन्त्र - (एकाक्षर) **ब्रां।**

मेरुतंत्र के अनुसार **ऋषि वाचस्पति, छंद गायत्री, देवता ब्रह्माणी, शक्ति "बः", कीलक "चरः", भोग मोक्ष प्राप्ति हेतु विनियोग** कहा है-

ब्रह्माणी ब्रह्मसदृशी चतुर्वक्त्रा चतुर्भुजा । हंसारूढा कर्तव्या साक्षसूत्र कमण्डलु ॥१॥
ध्याये ब्राह्मीं पद्मसंस्थां हंसारूढां चतुर्मुखाम् । अक्षमाला वराभीति कमण्डलु करारुणाम् ॥२॥

करन्यास - ब्रां, ब्रीं, ब्रूं, ब्रैं, ब्रौं, ब्रः इत्यादि से करे। पलाश पुष्पों से होम करे।

॥ पूर्णकारणागमे द्वादश पटले ब्रह्माणीध्यानम् ॥

चतुर्भुजा ।वशालाक्षी तप्तकाञ्चन सन्निभा, वरदाभयहस्ता च कमण्डल्वक्षमालिका ।
हंस ध्वजा हंसारूढ़ा जटामुकुट धारिणी, रक्तपद्म समासीना ब्रह्माणी ब्रह्मस्वरूपिणी ॥

पुनः अग्निपुराण में ध्यान इस प्रकार है -

गौरी चतुर्मुखी ब्राह्मी अक्षमालास्त्रुगन्विता ।
कुण्डाक्षपात्रिणी वामे हंसगा सावित्री शुभा ॥

॥ ब्रह्माणी मंत्र॥

मंत्र :- ॐ आं ह्रौं ग्लूं क्रों (क्रौं) ब्रीं फट्। (महा. संहिता)

॥ ध्यानम् ॥

हंसासनसमारूढा रक्तवर्णा चतुर्मुखा । पिचिण्डिला निम्ननाभिः शुक्ल यज्ञोपवीतिनी ॥१॥
स्थूलगण्डा धरौष्ठ भ्रूकपोल वदनात्मिका । बद्धपद्मासना स्थूला घनपिङ्गशिखाजटा ॥२॥
सप्तर्षिभिर्नारदद्यैः स्तूयमाना परेश्वरी । बाहुभ्यां दक्षवामाभ्यामक्षसूत्रं कमण्डलुम् ॥३॥
धारयन्ती मुखैर्वेदान् पठन्ती खर्वविग्रहा । चिन्तनीयेदृशी देवी ब्रह्माणी सर्वकामदा ॥४॥

॥ ब्राह्मी यन्त्रार्चन॥

यन्त्र रचना - बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं भुपूर की रचना करें। पुरश्चर्यार्णव में षट्कोण, षोडशदल एवं भुपूर बताया है।

त्रिकोण मध्य में - **ब्राह्मी** का आवाहन करें। तीनों कोणों में - **सं सत्त्वाय नमः, रं रजसे नमः, तं तमसे नमः।**

षट्कोणे - ब्रां, ब्रीं, ब्रूं, ब्रैं, ब्रौं, ब्रः इत्यादि से षडङ्ग शक्तियों क पूजन करें।

अष्टदले - अग्निपुराण में ब्रह्माणी की अष्टकदल शक्तियाँ कही है उन्ही का पूजन करें। यथा -

ॐ अक्षोद्यायै नमः। ऋक्षकर्णै, राक्षसै, क्षपणायै, क्षयायै, पिङ्गक्ष्यै, अक्षयायै, क्षेयायै नमः।
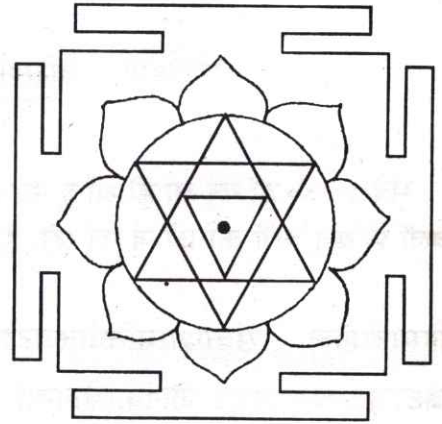
भुपूरे - इन्द्रादि दश दिक्पालों व उनके आयुधों का पूजन करें।

॥ श्री ब्राह्मी यन्त्रम् ॥

॥ २. माहेश्वरी ॥

मन्त्र - १. ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वर्यै परमेश्वरि स्वाहा।
२. ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वर्यै स्वाहा।

विनियोग - अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, विराट छंदः, माहेश्वरी देवता ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास - ॐ ह्रीं नमो हृदयाय नमः। भगवति माहेश्वर्यै शिरसे स्वाहा। परमेश्वरि स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ ह्रीं नमो कवचाय हुं। भगवति माहेश्वर्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। परमेश्वरि स्वाहा अस्त्राय फट्।

॥ ध्यान् ॥

वृषारूढां भालचन्द्रां त्रिनेत्रां शशिसन्निभाम् ।
दधतीं शूल डमरु महाहिवलयां भजे ॥

दुर्गासप्तशती में लिखा है-

महोश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवर धारिणी ।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखा विभूषणा ॥

नागोजी भट्ट ने टीका में कहा है कि वे एक हाथ में तक्षक तथा दूसरे हाथ में अनंत नामक दो महासर्पों को वलय रूप में धारण करती है।

ॐ वृषारूढां शुभां शुक्लां त्रिनेत्रां वरदा शिवाम् ।
माहेश्वरीं नमाम्यद्य सृष्टि संहार कारणीम् ॥

से नमस्कार करे। घृताक्त बिल्व पत्रों से होम करे।

॥ पूर्णकारणागमे माहेश्वरी ध्यानम् ॥

त्रिनेत्रा शुक्लवर्णा च शूलपाणिर्वृषध्वजा ,
वरदाभय हस्ता च साक्षमाला करान्विता ।
जटामुकुटिनी शम्भोर्भूषणी सा माहेश्वरी ॥

॥ अग्निपुराणे ध्यानम् ॥

शरचापौ दक्षिणेऽस्या वामचक्रं धनुर्वृषौ ॥

॥ माहेश्वरी मंत्र॥

मंत्र :- ॐ ह्रौं ग्लूं आं ह्रीं श्रीं हूं माहेश्वरि लक्षमह्जरक्रव्य्रऊं स्हजहलक्षमलवनऊं क्ष्लह्मव्य्रऊं क्रम्लैं ब्लौं क्लौं फ्रें क्लूं क्लीं क्रीं फ्रों जूं ग्लूं स्हौः हूं हूं फट् फट् स्वाहा। (महा. सं.)

॥ ध्यानम् ॥

हिमानीशैल संकाशामतिपीतजटाभराम् । घनाघनाभ नागेन्द्र परिबद्ध जटाचयाम् ॥१॥
जटाजूटोच्छलदङ्गा जलकल्लोलमालिताम् । पञ्चवक्त्रां गलच्छायाजित कज्जलरोचिषम् ॥२॥
हिमांशुशकलोद्दीप्त पञ्चमालां हसन्मुखीम् । प्रतिभाल प्रविद्योति त्रित्रिलोचनं संगताम् ॥३॥
भालतृतीय नेत्रोद्यद्वह्नि ज्वालासमाकुलाम् । कपोलमण्डलोद्योति शुद्धस्फटिक कुण्डलाम् ॥४॥
शुभ्रवासुकि नागेन्द्र लसद्यज्ञोपवीतिनीम् । शातकुम्भाभ नागेन्द्र रुचिराङ्गदशोभिताम् ॥५॥
अतिशोण भुजगेन्द्र विलसद्रत्न कङ्कणाम् । वसानां चर्म वैयाघ्रं रत्नाकल्पाल्लसत्तनुम् ॥६॥
माहेश्वरीं समारूढा मतिश्वेत वृषोपरि। दशवाहां वीरभद्र नन्दिभृङ्गि पुरःसराम् ॥७॥
विष्णुरूपं शवं घोरं त्रिशूलं पर्शुमेव च । अक्षमालां वरं दक्षे करे संविभ्रतीं पराम् ॥८॥
पिनाकं नागपाशं च मृगं डमरुमेव च । अभयं दधतीं वामे प्रमथादिगणैर्वृताम् ॥९॥

॥ माहेश्वरी यन्त्रार्चनम्॥

माहेश्वरी वृषारूढा पञ्चानना का ध्यान इस प्रकार है, यहां यह महारौद्री हो जाती है।

पञ्चवक्त्रां महारौद्रीं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनाम् ।
शक्तिशूलधनुर्बाण खेट्खड्ग वराभयान् ।
वामदक्षभुजै र्देवीं बिभ्राणां भोगिभूषणाम् ॥

यन्त्र रचना – त्रिकोण, षट्कोण अष्टदल एवं भूपुर बनायें।

त्रिकोणे – मध्य में **देवी का आवाहन** करें तथा तीनों कोणों में – **वामा, ज्येष्ठा, रौद्री** का पूजन करें।

षट्कोणे – षडङ्गन्यास मन्त्रों से **हृदयादि शक्तियों** का षट्कोण में पूजन करें।

ॐ हृदयशक्त्ये नमः। ॐ शिरशक्तये नमः। ॐ शिखा शक्तये नमः। ॐ कवच शक्तये नमः। ॐ नेत्रशक्तये नमः। ॐ अस्त्रशक्तये नमः। ॐ

॥ श्री माहेश्वरी यन्त्रम् ॥

अष्टदले – अग्निपुराण के अनुसार अष्टदल की ८ **शक्तियाँ माहेश्वरी कुल** में उत्पन्न हुई है। अत: उन्हीं का यहां पूजन क्रम दिया गया है –

इला, लीलावती, लीला, लङ्का, लङ्केश्वरी, लालसा, विमला, एवं माला।

भुपूरे – इन्द्रादि लोकपालों व उनके आयुधों का पूजन करें।
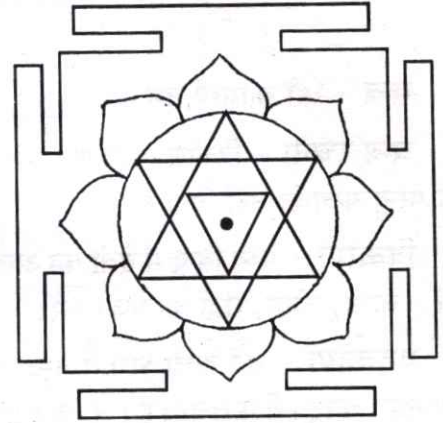
॥ ३. कौमारी ॥

मन्त्र – कौं कौमार्यै नमः।

विनियोग:– अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि:, गायत्री छंद:, कौमारिका देवता, कौं बीजम्, कौमार्यै शक्तिः सर्वाभीष्ट सिद्धये विनियोग:।

पुरश्चर्यार्णव में **कौं** की जगह **क्रौं** बताया है।

॥ ध्यान् ॥

शक्त्यक्ष स्त्रग् वराभीतिकरां बन्धूकसन्निभां ।
मयूरध्वजिनीं रक्तवस्त्रामौदुम्बरस्थिताम् ।
हरित कुंचुकि कां रम्यां नानालङ्कार भूषिताम् ॥

मधुत्रय एवं पंचखाद्यों से दशांश होम करे।

॥ अशुंमदभेदागम कौमारी ध्यानम् ॥

चतुर्भुजा त्रिनेत्रा रक्तवस्त्र समन्विता । सर्वाभरण संयुक्ता वाचिकाबद्धमाकुटी ॥
शक्ति कुक्कुट हस्ता च वरदाभय पाणिनी । मयूरध्वजवाही उदुम्बर द्रुमाश्रिता ॥

॥ विष्णुधर्मोत्तरे ध्यानम् ॥

कौमारी रक्तवर्णा स्यात् षड्वक्त्रा सार्कलोचना ।

रविबाहुर्मयुरस्था वरदा शक्ति धारिणी ॥
पताकां बिभ्रती दण्डं पात्रं वाणं च दक्षिणे ।
वामे चापमथो घण्टां कमलं कुक्कुटं त्वधः ।
परशुं विभ्रती तीक्ष्णं तदधस्त्वभयान्विता ॥

॥ कौमारी यन्त्रार्चनम् ॥

मन्त्र – **क्रौं कौमार्यै नमः।**

यन्त्र रचना – त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं भुपूर बनायें। पुरश्चर्यार्णव् में पञ्चकोण, अष्टदल एवं भुपूर बताया है परन्तु यन्त्रार्चन नहीं दिया है।

त्रिकोणे – मध्य बिन्दु में **देवी का आवाहन** करें तथा तीनों कोणों में – **वामा, ज्येष्ठा, रौद्री** का पूजन करें।

षट्कोणे – **क्रों हृदय शक्तये नमः, कौं शिरशक्तये नमः। मां शिखायै वषट्। यैं कवचाय हुं। नं नेत्रत्रयाय वौषट्। मंः अस्त्रशक्तये नमः।**

॥ श्री कौमारी यन्त्रम् ॥

अष्टदले – अग्निपुराण के अनुसार कौमारी के शरीर से अष्टशक्तियाँ उत्पन्न हुई, उन्हीं का पूजन यहां दिया जा रहा है।

ॐ हुताशनायै नमः, ॐ विशालाक्ष्यै नमः, ॐ हुंकार्यै नमः, ॐ बडवामुख्यै नमः, ॐ हाहारवायै नमः, ॐ क्रूरायै नमः, ॐ क्रोधायै नमः, ॐ खराननायै नमः, ॐ बालायै नमः।

भुपूरे – **इन्द्रादि दश लोकपालों व उनके आयुधों** का पूजन करें।
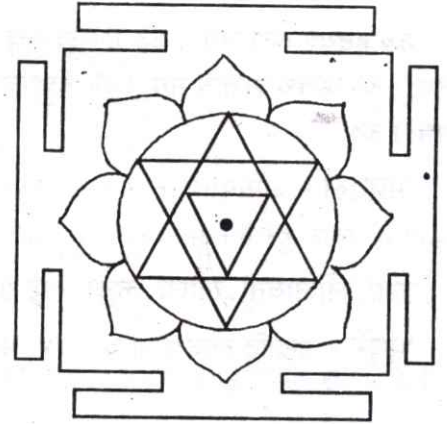
॥ ४. वैष्णवी ॥

वैष्णवी मंत्र :– **ॐ नमो नारायण्यै जगत्स्थितिकारिण्यै क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं आं जूं स्वाहा।** (महा. संहिता)

॥ ध्यानम् ॥

इन्द्रनीलमणिश्यामां फुल्लराजीवलोचनाम् । कोटिशारदपूर्णेन्दु समान मुखरोचिषम् ॥१॥
अत्यच्छदर्पणीभूत कपोलद्वयराजिताम् । शोणविम्बाधरां रत्नस्फुरन्मकरकुण्डलाम् ॥२॥
कम्बुग्रीवां महोदारां तुङ्गवक्षोजनम्रिताम् । श्रीवत्सकौस्तुभोद्भासि वक्षः स्थल विराजिताम् ॥३॥
शंख चक्र गदा पद्मधारिभि दीर्घपीवरैः । चतुर्भिः पल्लवाकारैर्बाहुभिः परिराजिताम् ॥४॥
आपादपद्मलविन्यालङ्कृतां वनमालया । किरीटरत्न केयूर मञ्जीरादिभिरुज्ज्वलाम् ॥५॥
पीताम्बरधरां देवीं भक्तानमभयप्रदाम् । गरुडासनमारूढां मन्दमन्दस्मिताधराम् ॥६॥

****

पक्षाभ्यां दीर्घपीनाभ्यां पृथुचञ्चवावृताननाम् । हेमाभं गरुडं ध्यायेद्यमारूढा हि वैष्णवी ॥७॥

॥ वैष्णवी मन्त्राः॥

पंचानना महामाया वैष्णवी चण्डिका स्वरूपा है उसका प्रयोग उत्तर भाग में दिया गया है।

मेरुतन्त्रे षडक्षर मन्त्राः - १. ॐ नमो वैष्णव्यै। २. ॐ नमः वैष्णव्यै।

कालिका पुराणे मन्त्र - ॐ वैष्णव्यै नमः।

मेरुतंत्रे अष्टाक्षर मन्त्र - अं कं चं टं तं पं यं शं। (महामाया वैष्णवी)

नवाक्षर - ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं।

मेरुतन्त्र के अनुसार षड्क्षर व अष्टाक्षर का ध्यान, ऋषि एक ही है।

इस मन्त्र के **ऋषि नारद, छन्द अनुष्टुप् तथा देवता महामाया वैष्णवी** कहा है।

अष्टाक्षर मन्त्र को देखने से प्रतीत होता है कि प्रत्येक वर्ग के आदि के एक एक वर्ण का संग्रह है जो भूतलीपि की जागृति करता है।

॥ ध्यानम् ॥

शोणपद्म प्रतीकाशां मुक्त मूर्द्धजलम्बिनीम् । लसत्काञ्चन संभूत कुण्डलोज्ज्वल शालिनीम् ॥
स्वर्णरत्न समुन्नद्ध किरीटसूत्र धारिणीम् । कृष्ण शुक्लारुणैर्नेत्रैस्त्रिभिश्चापि विभूषिताम् ॥
बन्धूकदन्त रसना शिरीष सम नासिकाम् । कम्बूग्रीवां विशालाक्षीं सूर्यकोटि समप्रभाम् ॥
चतुर्भुजां विवसनां पीनोन्नत पयोधराम् । दक्षिणाभ्यां कराभ्यां तु खड्गं च जपमालिकाम् ॥
विभ्रतीं वाम हस्ताभ्यां त्वभयं च वरं तथा । अनल्प नाग नासोरुं गुप्तगुल्फां सुपल्लिकाम् ॥
गात्रेण रत्न स्तंभं च सम्यगालम्ब्य संस्थिताम् । किमिच्छसीति वचनं व्याहरन्तीं मुहुर्मुहुः ॥
पञ्चाननं पुरः संस्थं निरीक्षन्तीं स्ववाहनम् । ईदृशीं चण्डिकां ध्यात्वा नमः फडतिमस्तके ॥
स्वबीजे सुमनो दद्यात् साऽहमेव विचिन्तयेत् । पञ्चाननं मण्डलस्थं मध्ये वश्यं प्रपूजयेत् ॥

अथ न्यास - षडाक्षर मन्त्र के एक एक वर्ण से षड्ङ्गन्यास करें। अष्टाक्षर मन्त्र के पहले **ॐ** लगावें तथा ३-३ वर्ण से दो आवृति में न्यास करें।

॥ अपराजिता वैष्णवी मन्त्रः॥

मन्त्र - आं श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं आं।

विनियोग - अस्य मन्त्रस्य अज ऋषिः, गायत्री छन्दः, अपराजिता शक्तिः, वैष्णवी देवता, सर्वाकर्षणार्थे च यशोविजय लाभार्थे विनियोगः।

षड्ङ्गन्यास - ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से क्रमशः न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

आनन्दरूपिणीं देवीं पाशाङ्कुश धनुशरान् । विभ्रतीं दार्भिररुणकुचाढ्यां हृदिभावयेत् ॥१॥
बाहुभिर्गरुडारूढा शङ्खचक्र गदासिनी । शार्ङ्ग वाणधराजाता वैष्णवीरूप शालिनी ॥२॥

गुप्तवती टीका, नागोजीभट्ट व विष्णुधर्मोत्तर के अनुसार वैष्णवी षड्भुजा है।

वैष्णवी ताक्ष्र्यस्था श्यामा षड्भुजा वनमलिनी ।
वरदा गदिनी दक्षे विभ्रतीं चाम्बुजस्त्रजम् ।
शङ्खचक्राभयान् वामे या चेयं विलसद्भुजा ॥

तन्त्र प्रकाशिका टीकाकार गोपाल चक्रवर्ति के अनुसार दक्ष यज्ञादि अवसरों पर कहीं कहीं अष्टभुज विष्णु के आविर्भाव का उल्लेख है। श्रीमद्भागवत पुराण के चौथे स्कन्ध के अनुसार -

शङ्खाब्ज चक्र शर चाप गदाऽसि चर्म व्यग्रै हिरण्यमय भुजैरिव कर्णिकारः ।

जो लोग चतुर्भुजा मानते हैं वहां (दशोद्धार टीका) **शङ्ख, चक्र, गदा, धनुष** ये चार हाथों में हैं। तथा खड्ग उनके बगल में है। परन्तु बाण कौनसे हाथ में होगा यह स्पष्ट नहीं है, अतः यह ध्यान भी षड्भुजा का होना चाहिये।

॥ वैष्णवी महामाया अपराजिता मन्त्रः॥

मेरुतन्त्रे -

ॐ आकर्षिणि आवेशिनि ज्वालामालिनि रमणी रामणी, धरणी धारिणी तपनी तापिनी मदोन्मादिनि शोषिणि संमोहिनि नीलपताके महानीलेमहाप्रिये महाग्नेयि महाचण्डे महारौद्रि महेति वज्रिणि आदित्याद्ये जाह्नवि यमघण्टे किलि किलि चिन्तामणि सुरभि सुरोत्पन्ने सरस्वति सर्वकामदुघे मम मनीषितम् कार्यं मम सिद्धय स्वाहा।

॥ अघोर वैष्णवी मन्त्रः॥

मेरुतन्त्रे -

ॐ नमस्ते चास्तु ह्यभये त्वनघे पूजिते अमिते अपराजित्ते सिद्ध कथिते साधक स्मृते महाविद्ये अनेकांसे उमे ध्रुवे अरुन्धती सावित्रि गायत्रि जातवेदसि मानस्तोके रमणी रामणि धरणी धारणी सौदामिनि अदिति दितिं विनते गौरी गांधारी मातंगी कृष्णयशोदे सत्यवादिनि ब्रह्मवादिनि काली कपालिनि करालि नेत्रसद्यो मातः स्थलगतं अंतरिक्षगतं जलगतं वामपादान्ते रक्ष रक्ष सर्वभूत सर्वोपद्रवेषु स्वाहा।

विनियोग - उपरोक्त दोनों मन्त्रों के **ऋषि नारद, गाथा छन्द है तथा देवता मन्त्रोक्त** हैं।

न्यास - षडदीर्घा - **ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः** से क्रमशः न्यास करें।

॥ असिद्ध साधिनि वैष्णवी मन्त्रः॥

मेरुतन्त्रे -

१. ॐ बले अबले महाबले असिद्धसाधिनि स्वधा स्वाहा स्वाहा स्वाहा स्वाहा स्वाहा।

२. ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ भूर्भुवः स्वः यत एवागतं पापं तत्रैवप्रतिगच्छतु ॐ बले अबले महाबले.......स्वाहा।

३. ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ भूर्भुवः स्वः यत एवागतं पापं तत्रैवप्रतिगच्छतु ॐ बले अबले महाबले.......स्वाहा स्वः भुवः भूः ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ।

॥ वैष्णवी यन्त्रार्चनम् ॥

यन्त्र रचना – यन्त्र रचना हेतु त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं भुपूर बनायें। पुरश्चर्यार्णव के अनुसार अष्टदल के बाहर भुपूर बनाये।

त्रिकोणे – मध्य बन्दिु में **देवि का आवाहन** करें। तीनों कोणों में – **सं सत्त्वाय नमः, रं रजसे नमः, तं तमसे नमः,** से पूजन करें।

षट्कोणे – वैष्णवी षडाक्षर मन्त्र के एक एक अक्षर से हृदयादि शक्तियों का पूजन करें।

ॐ हृदय शक्तये नमः, वैं शिरशक्तये नमः। ष्णं शिखा शक्तये नमः। व्यैं कवच शक्तये नमः। नं नेत्रशक्तये नमः। मंः अस्त्रशक्तये नमः।

॥ श्री वैष्णवी यन्त्रम् ॥

अष्टदले – (मेरुतन्त्रे) पूर्वादि चारों दिशाओं में – **ॐ शैलपुत्र्यै नमः, ॐ चन्द्रघण्टायै नमः, ॐ स्कन्दमातायै नमः, ॐ कालरात्र्यै नमः।**

आग्नेयादि चारों कोणों के दल में – **ॐ चण्डिकायै नमः, ॐ कूष्मांण्डायै नमः, ॐ कात्यायन्यै नमः, ॐ महागौर्यै नमः।**

अग्निपुराण में – **सर्वज्ञा, तरला, तारा, ऋग्वेदा, हयानना, सारा, सारासारस्वयंग्रहा, शाश्वती** ये वैष्णवीं कुल में उत्पन्न अष्टकदल की शक्तियाँ है। अतः इनका पूजन करें।

भुपूरे – **इन्द्रादि लोकपालों व उनके आयुधों** का पूजन करें।

॥ वासुदेव च अपराजिता स्तोत्रम् ॥

कर्मठगुरु में प्रारंभ में वैष्णवी ध्यान देकर विष्णुस्तोत्र दिया है पश्चात् अपराजिता स्तोत्रम् की फलश्रुति देकर कुछ स्तोत्र भगवती के दिये है। हमने इस स्तोत्र को क्रमबंद्ध लिखा है। स्त्री देवता के साथ पुरुष देवता के पाठ से पूर्णफल, सिद्धि होती है।

॥ अथस्तोत्रम् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्रशीर्षाय क्षीरार्णवशायिने शेषभोगपर्यङ्काय गरुडवाहनाय अमोघाय अजाय अजिताय अपराजिताय पीतवाससे। वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्नानिरुद्ध हयशीर्ष मत्स्यकूर्म वराह नृसिंह वामन राम राम वरप्रद। नमोस्तुते असुरदैत्य दानव यक्ष राक्षस भूतप्रेत पिशाच किन्नर कूष्माण्ड सिद्धयोगिनी डाकिनी स्कन्दपुरोगान् ग्रहान् नक्षत्र ग्रहांश्चान्यान् हन हन पच पच मथ मथ विध्वंसय विध्वंसय विद्रावय विद्रावय चूर्णय चूर्णय शंखेन चक्रेण वज्रेण शूलेन गदया मुशलेन हलेन भस्मीकुरु कुरु स्वाहा। ॐ सहस्त्रबाहो
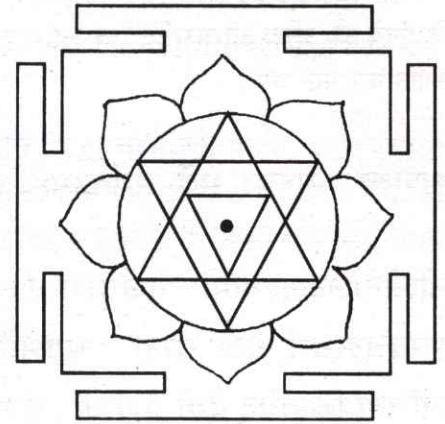
सहस्त्रप्रहरणायुध जय जय विजय विजय अजित अमित अपराजित अप्रतिहत सहस्त्रनेत्रः ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल विश्वरूप बहुरूप मधुसूदन महावराहाच्युत महापुरुष पद्मानाभ वैकुण्ठानिरुद्ध नारायण गोविन्द दामोदर हृषीकेश केशवः सर्वासुरोत्सादन सर्वमन्त्रप्रभञ्जनः सर्वदेवनमस्कृत सर्वबंधनविमोचन सर्वशत्रुवंशकर सर्वाहितप्रमर्दन सर्वग्रहनिवारण सर्वरोगप्रशमन सर्वपाप विनाशन जर्नार्दनः नमोस्तु ते स्वाहा।

विनियोग – **ॐ अस्य श्री अपराजिता स्तोत्र मंत्रस्य वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप्छंदः, क्लीं बीजं, हूं शक्तिः, सर्वारिष्ट निवारणार्थे जपे पाठे विनियोग।**

इसी के साथ उपरोक्त वासुदेव स्तोत्र दिया गया है अतः उक्त स्तोत्र के भी ऋषि वेदव्यास ही सकते है। अतः दोनों के लिये **ॐ अस्य श्रीवासुदेव एवं अपराजिता स्तोत्र मन्त्रस्य** इस तरह पढे। पश्चात् वासुदेव स्तोत्र पढकर अपराजिता ध्यान कर पाठ करे।

॥ माकण्डेय उवाच ॥

शृणुध्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थ सिद्धिदाम् । असिद्धसाधिनी देवीं वैष्णवीमपराजिताम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

नीलोत्पलदलश्यामां भुजङ्गाभरणोज्वलाम् । बालेन्दुमौलिसदृशीं नयनत्रितयान्विताम् ॥
शंखचक्रधरां देवीं वरदां भयशालिनीम् । पीनोतुङ्गस्तनीं साध्वीं बद्धपद्मासनां शिवाम् ॥
अजितां चिन्तयेद् देवीं वैष्णवीं अपराजिताम् । शुद्धस्फटिक संकाशां चन्द्रकोटि सुशीतलाम् ॥
अभयां वरहस्तां च श्वेतवस्त्रैरलंकृताम् । नानाभरण संयुक्तां जयन्तीमपराजिताम् ॥
(त्रिसन्ध्यं यः स्मरेद्देवीं ततः स्तोत्रं पंठत्सुधीः)

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ नमस्तेस्त्वनघेऽजितेऽपराजिते पठति सिद्धे जपति सिद्धे स्मरति सिद्धे महाविद्ये एकात्रशे उमे ध्रुवे अरुन्धति सावित्री गायत्री जातवेदसि मानस्तोके सरस्वति धरणि धारिणि सौदामिनी अदिति दिति गौरी गांधारी मातंगी कृष्णे यशोदे सत्यवादिनी ब्रह्मवादिनि कालि कपालि करालनेत्रे सद्योपयाचित करि जलगत स्थलगतं अंतरिक्षगतं वा मां रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा ॥१ ॥

यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि। म्रियन्ते बालका यस्याः काकवन्ध्या च या भवेत्॥ भूर्जपत्रेत्विमां विद्यां लिखित्वा धारयेद् यदि। एतैर्दोषैर्न लिप्येत सुभगा पुत्रिणी भवेत॥ शस्त्रं वार्यते ह्येषा समरे काण्डवारिणी। गुल्मशूलाक्षि रोगाणं क्षिपं नाशयते व्यथाम्॥

शिरोरोगज्वराणां च नाशिनी सर्वदेहिनाम् तद्यथाा एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिकार्धमासिक द्वैमासिक त्रैमासिक चातुर्मासिक पञ्चमासिक षाणमासिक वातिक पैत्तिक श्लैष्मिक सन्निपातिक सतत्जज्वर विषमज्वराणां नाशिनीं सर्वदेहिनां।

ॐ हर हर कालि सर सर गौरि धम धम विद्ये आले माले गन्धे पच पच विद्ये मथ मथ विद्ये नाशय पापं हर दुःस्वप्नं विनाशय मातः रजनि सन्ध्ये दुन्दुभि नादे मानसवेगे शंखिनी चक्रिणी वज्रिणी शूलिनी अपमृत्युविनाशिनी विश्वेश्वरी द्राविडि द्राविडि केशवदयिते पशुपतिसहिते दुन्दुभिनादे मानसवेगे दुन्दुभिदमनी शवरि किराती मातंगी

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ ॐ श्रीं श्रीं श्रुं श्रैं श्रौं श्रः ॐ क्ष्वौ तुरु तुरु स्वाहा। ॐ ये इमां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा तान् दम दम मर्दय मर्दय पातय पातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय ब्रह्माणि माहेश्वरि। वैष्णवी वैनायकी कौमारी नारसिंही ऐन्द्री चान्द्री आग्नेयी चामुण्डे वारुणि वायव्ये रक्ष रक्ष प्रचण्ड विद्ये।

ॐ इन्द्रोपेन्द्रभगिनी जये विजये शांति पुष्टि तुष्टिविवर्द्धिनी। कामांकुशे कामदुधे सर्वकामफलप्रदे सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ आकर्षिणी आवेशिनी तापिनी धरणि धारिणी मदोन्मादिनी शोषिणी संमोहिनी महानीले नीलपताके महागौरि महाप्रिये महाचन्द्रिका महासौरि महामयूरि आदित्यरश्मिनी जाह्नवी यमघण्टे किलि किलि चिन्तामणि सुरभिसुरोत्पन्ने सर्वकामदुधे यथाभिलषितं कार्यं तन्मे सिध्यतु स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। ॐ यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा। ॐ बले बले महाबले असिद्धिसाधिनी स्वाहा।

यः इमां अपराजितां परमवैष्णवीं पठति सिद्धां जपति सिद्धां स्मरति सिद्धां महाविद्यां पठति जपति स्मरति शृणोति धारयति कीर्तयति वा न तस्याग्निवायुर्वज्रोपलाशानिभयं नववर्षणि भयं न समुद्रभयं न ग्रहभयं न चौरभयं वा भवेत्। क्वचिद्रात्र्यन्धकार स्त्रीराजकुलविषोप विषगरल वशीकरण विद्वेषोच्चाटन वध बन्ध बंधनभयं वा न भवेत्। एतैर्मन्त्रैः सदाहतैः सिद्धैः संसिद्ध पूजितैः।

॥ इति वैष्णवी अपराजिता स्तोत्रम् ॥

॥ अथ अपराजिता वैष्णवी ॥

अपराजिता वैष्णवी की पूजा विशेषतः अश्विन शुक्ला दशमी को राजा द्वारा नगर के बाहर शमी वृक्ष के पास की जाती है। सभी वाहनों को व अस्त्रों को सुसज्जित कर उनकी पूजा अर्चा की जाती है। संकट उपस्थित होने पर भी अपराजिता का प्रयोग करना चाहिये।

ॐ आकर्षिणि आवेशिनि ज्वालामालिनि रमणि रमणि धरणी धरणि तपनी तापिनि मनोन्मादिनि शोषिणि संमोहिनि नीलपताके महानीले महाप्रिये महाग्रेयि महाचण्डे महारौद्रि महेति वज्रिणि आदित्य रश्मि जाह्नवी यमघण्टे किलि किलि चिन्तामणि सुरभि सुरोत्पन्ने सरस्वति सर्वकामदुधे मम मनीषितं कार्यं तन्मे सिध्यति स्वाहा। ॥ पुरश्चर्यार्णवे ॥

॥ वैष्णवी ध्यान ॥

शोणपद्मप्रतीकाशं मुक्तमूर्धजलम्बिनीम् । लसत्काञ्चन सम्भूत कुण्डलोज्वलशालिनीम् ॥
स्वर्णरत्नसमुन्नद्ध किरीट सूत्र धारिणीम् । कृष्ण शुक्लारुणै नेंत्रै स्त्रिभिश्चारु विभूषिताम् ॥
बन्धूकदन्तवसनां शिरीषप्रभ नासिकाम् । कम्बुग्रीवां विशालाक्षीं सूर्यकोटि समप्रभाम् ॥
चतुर्भुजा सुवसनां पीनोन्नत पयोधराम् । दक्षिणाभ्यां कराभ्यां तु खड्ग च जपमालिकाम् ॥
विभ्रतीं वामहस्ताभ्यामभयं च वरं तथा । अनल्पनागनासोरुं गुप्तगुल्फां सुपार्ष्णिकाम् ॥
गात्रेण रत्नस्तंभं च सन्यगालभ्व्य संस्थिताम् । किमिच्छसीति वचनं व्याहरन्तीं मुहुर्मुहुः ॥
पञ्चाननं पुरः संस्थं निरीक्षन्तीं स्ववाहनम् ॥

राजा शमी के समीप जाकर प्रणाम करे। अष्टदलकमल बनाकर कलश में देवी का आवाहन करे।

ॐ अपराजितायैनमः। कलश के दक्षिणभाग में - **ॐ क्रियाशक्त्यैनमः। ॐ जयायै नमः।** कलश के वाम भाग में- **ॐ उमायैनमः। ॐ विजयायै नमः।** तीनों की पूजा कर नमस्कार करे। **ॐ अपराजितायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः।**

पश्चात् गज अश्वादि की एवं अस्त्रों की पूजा कर नीराजन करे। ब्राह्मणों का आशीर्वाद ग्रहण करे। यदि उस समय खञ्जनपक्षि का दर्शन हो तो नमस्कार करे।

महापद्मो नीलगलश्चपलाङ्गो हरिद्दिजः। यः खञ्जरीटं प्रणमेदेभि-
र्नामभिरष्टभिः जायते मङ्गलं तस्य सतो गेहे यतः पथि ॥
नारायण शरीरोत्थ संवत्सरशुभप्रद।
शालग्राम शिलाकण्ठ खञ्जकीट नमोस्तु ते॥
वासुदेव स्वरुपेण सर्वकामफलप्रद।
पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जकीट नमोऽस्तुते॥

यदि खञ्जन व सारस शुभ स्थान, हरे वृक्ष, गज अश्व आदि पर होवे, मैथुनरत होतो शुभ होवे। विपरीत दिशा में मुंह होवे, सूखे वृक्ष, तृण काष्ठ, भस्म या अस्थि पर बैठा हो तो अशुभ है उसकी शांति कराये।

॥ ५. वाराही ॥

वाराही प्रयोग पूर्व में स्वतन्त्र रूप से दिये जा चुके हैं।

मन्त्र - ऐं लौं ठं ठं ठं हुं स्वाहा।

विनियोग - अस्य मंत्रस्य कपिल ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः वार्तालिवाराही देवता, सर्वाभीष्ट सिद्धये विनियोगः।

षडङ्गन्यास - ऐं लौं। ठं। ठं। ठं। हुं। स्वाहा। से क्रमशः हृदयादि न्यास करे।

॥ ध्यान् ॥

दधानामंकुशं पाशं मुद्‌गरं शक्तिमेव च । विद्युद्‌भासां त्रिनेत्रां च नाशयतीं तथा रिपून् ॥१॥
वराहरूपिणीं देवीं दंष्ट्रोद्‌धृत वसुन्धराम् । शुभदां पीतवसनां वाराहीं तां नमाम्यहम् ॥२॥

आठ लाख जप कर बिल्वपत्र, ध्यारि पुष्प, धात्री फल भृङ्गराज तथा कुशों से होम करे।

॥ ६. इन्द्राणी ॥

मन्त्र - इं इन्द्राण्यै नमः।

विनियोग - अस्य मंत्रस्य गुरु ऋषिः, गायत्री छंदः इन्द्रवल्लभा देवता, इं बीजं, इन्द्राण्यै शक्तिः नमः कीलकं ऐश्वर्यादि प्राप्तये विनियोगः।

षडङ्गन्यास - एक एक वर्ण से षडङ्गन्यास करे।

॥ ध्यान् ॥

वज्रपाशवराभीति हस्तां श्यामाम्बरां वराम् ।
चतुर्दन्तगजानल्पच्छायासंस्थां हिरण्यभाम् ॥

मत्स्यपुराणे – इन्द्राणीमिन्द्र सदृशीं वज्र शूलगदाधरां ।
गजासन गतां देवीं लोचनैर्बहुभिर्वृताम् ।
तप्तकांचनवर्णाभां दिव्याभरण भूषिताम् ॥

दोनों ध्यानों में वर्ण भेद है।

दुर्गापूजायाम् – इन्द्राणीं गजकुंभस्थां सहस्त्रनयनोज्ज्वलां ।
नमामि वरदां देवीं सर्वदेव नमस्कृताम् ॥

छ: लाख जप कर त्रिमधु, मालती पुष्पों से तथा राजवृक्ष की समिधा से होम करे।

अंशुमदभेदागमे – चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च रक्तवर्णां किरीटिनी ।
शक्ति वज्रधरां चैव वरदाभय पाणिना ।
सर्वाभरण संयुक्ता गजध्वज सवाहिनी ॥

विष्णुधर्मोत्तरे – इन्द्राणी चेति विख्याता कल्पद्रुम समाश्रिता ।
ऐन्द्री सहस्त्रदृक सौम्या हेमाभा गजसंस्थिता ।
वरदा सूत्रिणी वज्रं विभ्रत्यर्ध्वं तु दक्षिणे ।
वामे तु कलशं पात्रं त्वभयं तदधः करे ॥

प्रणाम मन्त्र – इन्द्राणी गज कुम्भस्थां सहस्त्र नयनोज्ज्वलाम् ।
नमामि वरदां देवीं सर्वदेव नमस्कृताम् ॥

मन्त्र – इं इन्द्राण्यै नम:।

॥ इन्द्राणी मंत्रा: ॥

१. ॐ ह्रीं श्रीं हूं इन्द्राणि ह्रीं ह्रीं हं हं क्षौं क्षौं फट् फट् स्वाहा। (महा. सं.)

॥ ध्यानम् ॥

कैलासाचलसंकाश तुङ्गैरावतसंस्थिता । नीलोत्पलदलश्यामा कवचावृत विग्रहा ॥१॥
रक्ताम्बर परीधाना पीवरा खर्वविग्रहा । अनर्घ्यरत्नघटित चलच्छ्रवण कुण्डला ॥२॥
सर्वाङ्ग व्याप्त शोणाब्ज सहस्त्र नयनोज्ज्वला । चतुर्भुजा महापीनोत्तुङ्ग वक्षोजमण्डिता ॥३॥
बाहुभ्यां दक्षवामाभ्यां स्थिताभ्यामुपरि क्रमात् । कुलिशं खेटकं चापि बिभ्रती समरोत्सुका ॥४॥
वामेनास्फालयन्ती च गण्डं करिषतेर्महत् । दक्षेण बाहुना कुंभं दधती ददती शृणिम् ॥५॥
चतुर्दन्तो मदोन्मत्तस्तुषाराचल सन्निभः । ऐरावतोऽपि ध्यातव्यो यमिन्द्राणी समाश्रिता ॥६॥

२. इं इन्द्राणी नमः। (पुरुश्चार्याणवे)

विनियोग – **ॐ अस्य श्री इन्द्राणी मन्त्रस्य गुरु ऋषिः, गायत्री छन्दः, इन्द्रवल्लभा देवता, इं बीजं, इन्द्राणी शक्तिः, नमः कीलकम्, पुरुषार्थ चतुष्टय प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।**

॥ ध्यानम् ॥

वज्रपाश वराभीति हस्ता श्यामाम्बरावृता ।
चतुर्दन्तगजाकल्पच्छाया संस्था हिरण्यप्रभा ॥

॥ यन्त्रार्चन ॥

यन्त्र रचना – यन्त्रार्चन मेरुतन्त्रोक्त है परन्तु हमने अष्टदल में अग्निपुराणोक्त ऐन्द्री कुल की ८ कन्याओं का पूजन भी दिया है।

त्रिकोणे – मध्य में देवी का आवाहन करें। तीनों कोणों – **सं सत्त्वाय नमः, रं रजसे नमः, तं तमसे नमः।** से पूजन करें।

षट्कोण में – इं हृदयाय नमः। इं शिरसे स्वाहा। न्द्रां शिखायै वषट्। ण्यैं कवचाय हुम्। नं नेत्रत्रयाय वौषट्। मं: अस्त्राय फट्।

अष्टदले – (पूर्वादिक्रमेण) बगलायै नमः, छिन्नमस्तायै नमः, तारायै नमः, दक्षिणकालिकायै नमः, धूमावत्यै नमः, भद्रकाल्यै नमः, महाकाल्यै नमः, प्रतिक्रियायै नमः।

अष्टदलकर्णिका में – अग्निपुराणोक्त इद्राणी कुल की **अष्ट कन्याओं** का पूजन करें। यथा नाम –

॥ श्री इन्द्राणी यन्त्रम् ॥

चम्पा, चम्पावती, प्रचम्पा, ज्वलितानना, पिशाची, पिचुवक्त्रा, लोलुपा, विश्वयोन्या।

पश्चात् अष्टभैरव – **असिताङ्ग भैरव, रुरुभैरव, चण्डभैरव, क्रोधभैरव, कपालभैरव, उन्मत्तभैरव, भीषणभैरव, संहारभैरव** का पूजन करें।

भूपुरे – इन्द्रादि लोकपालों व उनके आयुधों का पूजन करें।

॥ इन्द्राक्षी मन्त्र प्रयोगः॥

(देवी रहस्ये)

मन्त्र – (१) ॐ श्रीं ह्रीं ऐं सौः क्लीं इन्द्राक्षि वज्रहस्ते फट् स्वाहा।

(२) ॐ क्रीं क्रीं हूं हूं म्लौं ह्रीं श्रीं ऐं इन्द्राक्षी वज्रहस्ते ऐं श्रीं ह्रीं म्लौं हूं हूं क्रीं क्रीं ॐ फट्।

उत्कीलनम् – क्लीं सौः स्वाहा।

संजीवन – ॐ ग्लौं इन्द्राक्ष्यै स्वाहा।

शापोद्धार – ॐ ऐं क्लीं इन्द्राक्षी ब्रह्मशाप मोचय मोचय स्वाहा।
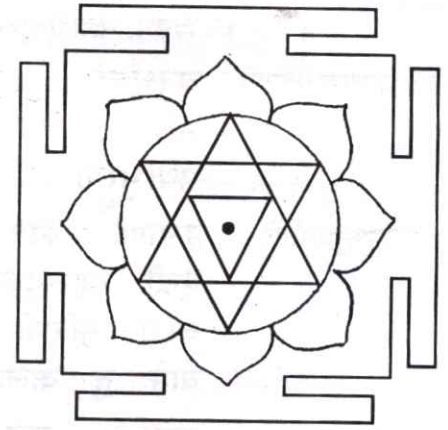
अष्टविंशाक्षर मंत्र - **ॐ क्रीं क्रीं हूं हूं म्लौं ह्रीं श्रीं ऐं इन्द्राक्षि वज्र हस्ते श्रीं ह्रीं म्लौं हूं हूं क्रीं क्रीं ॐ ऐं फट् स्वाहा**॥ (देवी रहस्ये- रुद्रयामले)

॥ ध्यानम् ॥

मालास्यङ्कुश पद्मयुग्मकधरां चक्षुः सहस्राङ्कितां, मत्तैरावण पृष्ठगां शशिमुखिं त्रैलोक्य रक्षापराम् ।
दोर्भिर्गातरतां स्फुटांम्बुजनिभां ब्रह्मादिदेवैः स्तुतामिन्द्राक्षिं जनमातरं हृदि भजे कारण्यरूपां पराम् ॥

॥ इन्द्राक्षी यंत्रार्चनम् ॥

यन्त्र रचना - बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण के ऊपर छः दल पुनः छः दल फिर अष्टदल के बाद भूपुर बनायें।

देवी रहस्य में उक्त यन्त्र के अनुसार अर्चन नहीं दिया गया है अत: निम्न विधानानुसार अर्चन करें।

त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल तथा भूपुर का निर्माण करें।

बिन्दु मध्य में - **देवी का ध्यान** करें।

त्रिकोण में - **सत, रज, तम** का पूजन करें।

षट्कोण में - **हृदयादि शक्तियों** का पूजन करें।

अष्टदल में - **ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं** का पूजन करें ।

भूपुर पें - **इन्द्रादि लोकपालों** व उनके **आयुधों** का पूजन करें।

॥ १. इन्द्राक्षी स्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

मालास्याङ्कुश पद्मयुग्मकधरां चक्षु सहस्राङ्कितां, मत्तैरावणपृष्ठगां शशिमुखीं त्रैलोक्य रक्षापराम् ।
दोर्भिर्गानरतां स्फुटांबुजनिभां ब्रह्मादिदैवै स्तुता, मिन्द्राक्षीं जनमातरं हृदि भजे कारण्यरूपां पराम् ॥१॥
इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवी पीतवस्त्रसमन्विताम् । वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणे च वरप्रदाम् ॥
इन्द्राक्षीं नाम सज्योतिर्नाना रत्नविभूषिताम् । प्रसन्नवदनांभोजामप्सरोगण सेविताम् ॥

॥ इन्द्र उवाच ॥

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता । गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नाऽति विश्रुता ॥१॥
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा । गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥२॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला । अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ॥३॥
मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी । महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥४॥
अच्युता भद्रदा नंदा रोगहन्त्री शिवप्रिया । शिवदूती कराली च प्रत्यक्ष परमेश्वरी ॥५॥
महिषासुरहंत्री च चामुण्डा सप्तमातरः । इन्द्राणी चेन्द्ररूपा च रुद्रशक्तिः परायणा ।
शिवा च शिवरूपा च शिवशक्ति परायणा । सदा संमोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ॥७॥

आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा । वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ॥८॥
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती । अनंता विजया पूर्णा मानस्तोकापराजिता ॥९॥
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा । शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्द्धशरीरिणी ॥१०॥
मृत्युंजया महामाया सर्वरोग प्रणाशिनी । ऐरावतगजारूढा भूषिता कंकणप्रभा ॥११॥
एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता । शतमावर्ततें यस्तु मुच्यते व्याधिबंधनात् ॥१२॥
आवर्तयेत्सहस्त्रं यो लभते वांछितं फलम् । इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः ॥१३॥

॥ २. इन्द्राक्षी स्तोत्रम् ॥

विनियोग – अस्य श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रस्य शचीपुरन्दर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीइन्द्राक्षी दुर्गा देवता, महालक्ष्मीः बीजं, भुवनेश्वरी शक्तिः, भवानी कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास :- हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र, अस्त्रादि अंगों में क्रमशः न्यास करे -

इन्द्राक्ष्यै नमः। महालक्ष्म्यै नमः। माहेश्वर्यै नमः। अम्बुजाक्ष्यै नमः। कात्यायन्यै नमः। कौमार्यै नमः।

॥ ध्यानम् ॥

नेत्राणां दशभिः शतैः परिवृतां अत्युग्र चर्माम्बराम् । हेमाभां महतीं विलंबित-शिखामामुक्त केशान्विताम् ॥
घण्टामण्डित पादपद्म युगलां नागेन्द्रकुम्भस्तनीम् । इन्द्राक्षीं परिचिन्तयामि मनसा कल्पोक्त सिद्धिप्रदाम् ॥
इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्र द्वयान्विताम् । वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम् ॥
इन्द्रादिभिः सुरैर्वन्द्यां वन्दे शङ्करवल्लभाम् । एवं ध्यात्वा महादेवीं पठामि सर्वसिद्धये ॥

॥ इन्द्र उवाच ॥

इन्द्राक्षी पूर्वतः पातु पात्वाग्नेयां तथेश्वरी । कौमारी दक्षिणे पातु नैऋत्यां पातु पार्वती ॥
वाराही पश्चिमे पातु वायव्यां नारसिंह्यपि । उदीच्यां कालरात्रिर्मां ऐशान्यां सर्वशक्तयः ॥
भैरव्यूर्ध्वं सदापातु पात्वधरे वैष्णवी तथा । एवं दशदिशो रक्षेत् सर्वा सर्वाङ्गं भुवनेश्वरी ॥
ॐ नमो भगवति इन्द्राक्षि महालक्ष्मी सर्वजन वशङ्करि सर्वदुष्टग्रह स्तंभिनि स्वाहा ॥

ॐ नमो भगवति पिङ्गलभैरवि त्रैलोक्यलक्ष्मि त्रैलोक्यमोहिनि इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवती भद्रकालि महादेवि कृष्णवर्णे तुङ्गस्तने शूर्पहस्ते कपाटवक्षः स्थले कपालमालाधरे परशुधरे चापधरे विकृतरूपधरे विकृतरूप- महाकृष्णसर्प- यज्ञोपवीतिनि भस्मोद्धूलित- सर्वगात्रि इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति प्राणेश्वरि प्रेतासनि सिंहवाहने महिषासुरमर्दिनि उष्णाज्वर, पित्त ज्वर, वातज्वर, श्लेष्मज्वर, कफज्वर, आलापज्वर, सन्निपातज्वर, माहेन्द्रज्वर, कृत्यादिज्वर, एकाह्निकज्वर, द्व्याह्निकज्वर, त्र्याह्निकज्वर, चातुरह्निकज्वर, पाञ्चाह्निकज्वर, पक्षज्वर, मासज्वर, षाणमासज्वर, संवत्सरज्वर, सर्वाङ्गज्वर, नाशय नाशय हर हर हन हन दह दह पच पच ताडय ताडय आकर्षय आकर्षय विद्वेषय विद्वेषय स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय

उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं ॐ नमो भगवति प्रेतासने लम्बोष्ठी कंबुकण्ठि कालकालि कामरूपिणि परमंत्र परयन्त्र परतंत्र प्रभेदिनि प्रतिभट-विध्वंसिनि परबलतुरगविमर्दिनि शत्रुकरच्छेदिनि शत्रुमांसभक्षिणि सकलदुष्टज्वर निवारिणि भूत प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस यक्ष यमदूत शाकिनी डाकिनी कामिनि स्तंभिनि मोहिनि वशङ्करि कुक्षिरोग शिरोरोग नेत्ररोग क्षयापस्मार कुष्ठादि महारोगनिवारिणि मम सर्वरोगं नाशय नाशय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं श्रीं हुं हुं इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् नाशय-नाशय जलरोगं शोषय-शोषय दुःख व्याधीन् स्फोटय-स्फोटय क्रूरान् अरीन् भंजय- भंजय मनोग्रंथिं प्राणग्रंथिं शिरोग्रंथिं घातय- घातय इन्द्राक्षि मां रक्ष-रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति माहेश्वरि महाचिन्तामणि सकलसिद्धेश्वरि सकलजन मनोहारिणि काल कालरात्रि अनले अजिते अभये महाघोर प्रतिहत विश्वरूपिणि मधुसूदनि महाविष्णुस्वरूपिणि नेत्रशूल कर्णशूल कटिशूल पक्षशूल पाण्डुरोगादीन् नाशय नाशय वैष्णवि ब्रह्मास्त्रेण विष्णु चक्रेण रुद्रशूलेन यमदण्डेन वरुण पाशेन वासव वज्रेण सर्वान् अरीन भंजय भंजय यक्षग्रह राक्षसग्रह स्कंदग्रह विनायकग्रह बालग्रह चोरग्रह कुष्माण्डग्रहादीन् निग्रह निग्रह राजयक्ष्म क्षयरोग तापज्वर निवारिणि मम सर्वज्वरं नाशय नाशय सर्वग्रहान् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

उक्त प्रयोग के करने से व्याधिनाश व शत्रुनाश होवे। अभिमंत्रित जल पिलाने से ज्वारादि रोग शांत होवे।

॥ अथ मीनाक्षी ध्यानम्॥

इलावृत के उत्तरी भाग में मीनाक्षी देवी रहती है।

नीलाम्बरा रौद्रमुखी नीलालकयुता च सा । नाकिनां देवसंघाणां फलदा वरदा च सा ॥
अतिमान्याऽतिपूज्या च मत्तमातंग गामिनी । मदनोन्मादिनी मानप्रिया मानप्रियांतरा ॥
मारवेगधरा मारपूजिता मारमादिनी । मयूरवरशोभाढ्या शिखिवाहन गर्भभूः ॥
एभिर्नामपदैर्वंद्या देवी सा मीनलोचना । जपतां स्मरतां मानदात्री चेश्वरसंगिनी ॥

॥ ७. चामुण्डा (काली, शिवदूती, अपराजिता) ॥

मन्त्र - ह्रीं चामुण्डायै नमः।

विनियोग - अस्य मंत्रस्य शिवऋषिः, गायत्री छंदः, चामुण्डा देवता सर्वाभीष्टसिद्धये विनियोगः।

षडङ्गन्यास - ह्रीं। चामुण्डायै। नमः। ह्रीं। चामुण्डायै। नमः। से हृदयादि न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

नीलोत्पलदलश्याम चतुर्बाहु समन्विता ,
खडवाङ्गं चन्द्रहासं च बिभ्रती दक्षिणे करे ।
वामे चर्म वै पाशं च उर्ध्वतो भावतः पुनः ,

दधतीं मुण्डमालां च व्याघ्रचर्माम्बरधरा ।
कृशाङ्गी दीर्घदंष्ट्रा च अतिदीर्घाऽति भीषणा ,
लोलजिह्वा निम्नरक्त नयनाकार भीषणा ।
कबन्धवाहना ऽसीना विस्तारि श्रवणानना ॥

सात लाख जप कर, मधु युक्त पायस से होम करे।

॥ चामुण्डा मन्त्रः॥

चामुण्डा ही प्राकारान्तर में चण्डिका कही गयी है।

नवार्ण मन्त्र - ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

॥ यन्त्र पूजनम् ॥

नवार्ण मन्त्र के अनुसार त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, चौबीसदल एवं भूपुर में पूजन करें। यही प्रचलित विधि है। इसका वर्णन दुर्गा पूजा में दिया गया है।

कालिका पुराण के अनुसार कल्पभेद से चामुण्डा दशभुजा महिषमर्दिनी है। इनकी उग्रचण्डादि शक्तियाँ है।

जटाजूटसमायुक्तामर्द्धेन्दुकृत शेखराम् ।
लोचनत्रय संयुक्तां पूर्णेन्दु सदृशाननाम् ॥
तप्तकाञ्चन वर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् ।
नवयौवनसम्पन्नां सर्वाभरण भूषिताम् ॥
सुचारुदशनां तीक्ष्णां पीनोन्नत पयोधराम् ।
त्रिभङ्गस्थान संस्थानां महिषासुरमर्दिनीम् ॥
त्रिशूल दक्षिणे देयं खड्ग चक्र क्रमादधः ।
तीक्ष्णवाणं तथा शक्तिबाहुसंघेषु संगताम् ॥
खेटकपूर्णचाप च पाश चांकुशमूर्धतः ।
घण्टां च परशुं चापि वामऽधः प्रतियोजयेत् ॥
अधस्तांमहिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत्।

॥ श्री चामुण्डा यन्त्रम् ॥

शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् । हृदि शूलेन निर्भिन्नं नियंदन्त्र विभूषिताम् ॥
देव्यास्तु दक्षिणं पाद समं सिंहोपरि स्थितम् । किंचिदूर्ध्वं तथा वाममगुष्ठ महिषोपरि ॥

उपरोक्त ध्यान के अनुसार आवाहन करें। अष्टदल में जिन शक्तियों का पूजन करें वे इस प्रकार है -

उग्रचण्डा, प्रचण्डा, चण्डोग्रा, चण्डनायिका, चण्डा, चण्डवती, चामुण्डा, चण्डिका।

अग्निपुराण के अनुसार **चामुण्डा कुल** की ८ शक्तियाँ उत्पन्न हुई अतः यदि उनका पूजन भी अष्टदल में करें तो उत्तम होगा।
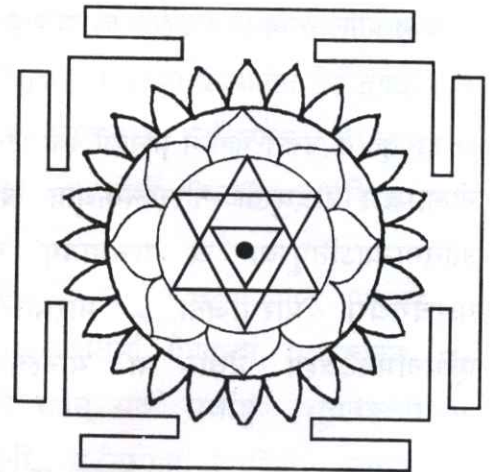
चामुण्डा कुल शक्तियाँ - पावनी, याचिनी, वामिनी, दमनी, विन्दुवेला, बृहत्कुक्षी, विद्युता, विश्वरूपिणी।

॥ चामुण्डा मंत्रः ॥

मंत्र :- ॐ क्रों क्रीं फ्रें फ्रों छ्रीं ख्रौं हूं हसखफ्रें ब्लौं जूं क्लूं ह्रीं क्रम्लैं (ह्सौं) क्षूं क्रौं चामुण्डे ज्वल ज्वल हिलि हिलि किलि किलि मम शत्रून् त्रासय त्रासय मारय मारय हन हन पत पत भक्षय भक्षय क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं फट् फट् स्वाहा। (महा. सहि.)

॥ ध्यानम् ॥

धरालग्नशिरोजानु प्रसुप्तकुणपोपरि । निषेदुषीं निः पललसर्वावयव भीषणाम् ॥१॥
त्वगस्थिमात्र घटितामत्युग्राकार दर्शनाम् । कपालाकारशिरसं विलुण्ठित शिरोरूहाम् ॥२॥
स्कन्धावसक्त युगल कुण्डलीकृत खर्पराम् । नारास्थिनिर्मितानेक भूषणां भीषणाकृतिम् ॥३॥
मुण्डमालापरिक्षिप्तां ललज्जिह्वाभयानकाम् । विकरालमहादंष्ट्रां रौद्रीं रुद्रपरिग्रहाम् ॥४॥
अतिशुष्कोदर श्रोणिनितम्बोरु पयोधराम् । गणेयोभयपार्श्वस्थ पञ्जरास्थि करालिनीम् ॥५॥
दीर्घतालद्रुमाकार करपादां हसन्मुखीम् । खर्ज्जूर कण्टकाकार रोमराजि विराजिताम् ॥६॥
लोहसूर्पाकृतिनखां समुत्कम्पि शिरोधराम् । कूपाकार त्रिनयनां विद्युच्चपलतारकम् ॥७॥
लम्बमानौष्ठाधरां तां वलीलग्न पयोधराम् । विदीर्णसुक्कयुगलां नारान्त्रकटिसूत्रिणीम् ॥८॥
दिगम्बरां चर्वयन्तीं शवं कटकटारवैः । अष्टादशभुजां भीमां चरन्तीं पित्तृकानने ॥९॥
वामकरे चर्मचाप खट्वाङ्ग डमरून् क्रमात्। अंकुशं च तथा पाशं भिन्दिपालं शवं तथा ॥१०॥
रक्तपूर्णं कपालं च धारयन्तीं महोदरीम् । दक्षिणे विभ्रतीं खड्गं विशिखं च त्रिशूलकम् ॥११॥
चक्रं शक्तिं गदां पर्शुमस्थिमालां च कर्त्तृकाम्। दिवाकालाभ्रसदृशां जवापुष्पारुणां निशि ॥१२॥
वलाकासमदन्तालीं भुजङ्गकुटिलभ्रुवम् ।
अतिक्रूराकृतिधरां दृष्टैव मरणप्रदाम् ।
घोराट्टहासां गगने प्लवन्तीं सर्वतोमुखीम् ॥१३॥

शत्रु संहार हेतु इस विद्या का प्रयोग श्रेष्ठ है।

॥ चामुण्डा मन्त्र ॥

धरालग्नशिरो जानु प्रसुप्त कुणपोपरि । निषेदुषीं निःपललसर्वावयव भीषणाम् ॥१॥
त्वगस्थिमात्र घटितामत्युग्राकारदर्शनाम् । कपालाकारशिरसं विलुण्ठित शिरोरुहाम् ॥२॥
स्कन्धावसक्त युगल कुण्डलीकृत खर्पराम् । नारास्थिनिर्मितनेकभूषणा भीषणाकृतिम् ॥३॥
मुण्डमालापरिक्षिप्तां ललज्जिह्वा भयानकाम् । विकराल महादंष्ट्रां रौद्रीं रुद्रपरिग्रहाम् ॥४॥

अतिशुष्कोदरश्रोणि नितम्बोरुपयोधराम् । गणेयोभयापार्श्वस्थ पञ्जरास्थि करालिनीम् ॥५॥
दीर्घतालद्रुमाकारकरपादां हसन्मुखीम् । खर्ज्जूरकण्टकाकार रोमराजि विराजिताम् ॥६॥
लौहसूर्पाकृतिनखां समुत्कंपि शिरोधराम् । कूपाकार त्रिनयनां विद्युच्चपलतारकाम् ॥७॥
लम्बमानौष्ठाधरां तां वलीलग्र पयोधराम् । विदीर्णसृक्कयुगलां नारान्त्रकटिसूत्रिणीम् ॥८॥
दिगम्बरां चर्वयन्तीं शवंकटकटारवैः । अष्टादशभुजां भीमां चरन्तीं पितृकानने ॥९॥
वामे करे चर्मपाप खट्वांग डमरून् क्रमात् । अंकुशं च तथा पाशं भिन्दिपालं शवं तथा ॥१०॥
रक्तपूर्णं कपालं च धारयन्ती महोदरीम् । दक्षिणे विभ्रतीं खड्गं विशिखं च त्रिशूलकम् ॥११॥
चक्रं शक्तिं गदां पर्शुमस्थिमालां च कर्त्तृकाम् । दिवाकालाभ्रसदृशां जवापुष्पारुणां निशि ॥१२॥

बलाकासमदन्ताली भुजङ्ग कुटिलभ्रुवम् ।
अतिक्रूराकृतिधरां दृष्ट्यैव मरणप्रदाम् ॥
घोराट्टहासां गगने प्लवन्तीं सर्वतो मुखीम् ॥१३॥

मन्त्र – ॐ क्रों क्रीं फ्रें फ्रों छ्रीं ख्रौं हूं हसखफ्रें ब्लौं जूं क्लूं क्रम्लैं (ह्स्त्रौं) क्षूं क्रौं चामुण्डे ज्वल ज्वल हिलि हिलि किलि किलि मम शत्रून् त्रासय त्रासय मारय मारय हन हन पत पत भक्षय भक्षय क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं फट् फट् स्वाहा।

॥ चण्डेश्वर्या मंत्र ॥

मंत्र :- ॐ श्रीं हूं क्रों क्रीं स्त्रीं क्लीं स्हजहलक्षम्लवनऊं क्षमक्लह्हसव्यऊं क्लह्झकह्नसक्लई सस्लक्षकमहू ब्रूं क्ष्लहूमव्यऊं चण्डेश्वरि ख्रों छ्रीं फ्रें क्रौं हूं हूं फट् फट् स्वाहा। (महा. संहि)

॥ ध्यानम् ॥

इन्द्रगोपनिभां देवीं प्रोढास्त्रीरूपधारिणीम् । पञ्चवक्त्रां महाभीमां दष्ट्राभिर्विकरालिनीम् ॥१॥
प्रविस्त्रस्तजटाभारां नरास्थिकृत भूषणाम्। केयूरांगद कोटीरहार नूपुर शालिनीम् ॥२॥
किं किणी कुण्डलापीड धारिणीं न्रस्थिनिर्मिताम्। रांकवत्वक् परीधानां शुष्कलंब स्तनद्वयाम् ॥३॥
शवद्वयोपरिगतां दक्षवामांघ्रियोगतः । सकेशनरमुण्डाभ्यां बद्धाभ्यां पादयोर्द्वयोः ॥४॥
त्रित्रिलोचन संयुक्तवदनां घोररूपिणीम् । चण्डेश्वरीं दशभुजामट्टहासं वितन्वतीम् ॥५॥
वक्त्रं मुखद्वयं वामे दक्षिणे वदनद्वयम् । संमुखे वदनं चैकं धारयन्तीं प्रकल्पितम् ॥६॥
हस्तमात्र विनिष्क्रान्त लेलिहान भयानकम् । जिह्वायुगं दक्षिणयोः करयोर्विभ्रतीं सदा ॥७॥
तथैव रसनायुग्मं दधतीं वामहस्तयोः । संमुखास्यगतां जिह्वां नभः स्थलप्रसारिताम् ॥८॥
दधतीं घोरनादाट्टहास त्रस्त जगत्त्रयाम् । सद्यः कृत्तस्त्रवद्रक्त धारं मुण्डं कचान्वितम् ॥९॥
कराभ्यां वामदक्षाभ्यां वहन्तीं सकलोपरि। ततो हस्तद्वये जिह्वां विस्फुरन्तीं च विभ्रतीम् ॥१०॥

मुण्डवृतासृजां धारां पतन्तीं रसनोपरि । पिबन्तीं शीत्कृतिं कृत्वा हूं हूंकारविनादिनीम् ॥११॥
तथा नृमण्डयुगलं पुनर्दक्षिण वामयोः । पुनर्जिह्वायुगं वद्वद्वामदक्षिण हस्तयोः ॥१२॥
धायन्तीं पूर्ववद्रक्तं सशब्दपरिघोषिताम् । पुरः स्थिताभ्यां द्योराभ्यां करालाभ्यामतीव हि ॥१३॥
योगिनी डाकीनीभ्यां च रक्तपूर्णं घटद्वयम् । सर्वदापातयन्तीभ्यां स्थिताभ्यां पुरतः सदा ॥१४॥

संमुख स्थितजिह्वायां मांसखण्डास्थिपूरितम् ।
पिबन्तीमीदृशाकारां दुर्निरीक्ष्यां सुरासुरैः ।
कपालं खर्प्परं शेषभुजाभ्यां विभ्रतीं पराम् ॥१५॥

जिस तरह चण्ड मुण्ड का संहार किया उसी तरह शत्रुओं का वध करती है। साधक को अभय प्रदान करती है।

॥ चामुण्डा काली मन्त्राः॥

कौशिकी के कोप से ललाट से काली की उत्पत्ति हुई। चण्ड मुण्ड का वध करने से वे ही चामुण्डा के नाम से प्रख्यात हुई है।

॥ मंत्रोद्धार ॥

समाप्ति सहितो दन्त्य प्रान्तस्मात् पुरः सरः ।
षष्ठस्वराग्निविन्द्विन्दु सहितः सादिरेव च ।
कालीमन्त्रमसि शोक्तं धर्मकामार्थदायकम् ॥
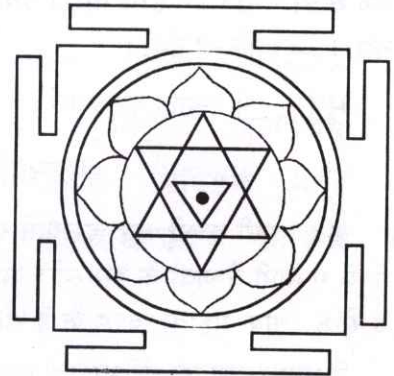
एकाक्षरी मन्त्र – (१) वं (२) व्रं

समाक्षरी मन्त्र – वं चामुण्डायै नमः।

षड्ंग न्यास – व्रां, व्रीं, व्रूं, व्रैं, व्रौं, व्रः से न्यास करें।

(ध्यान यंत्रार्चन में दिया गया है।)

॥ श्री चामुण्डाकाली यन्त्रम् ॥

॥ यंत्रार्चनम्॥

अष्टदल की शक्तियों के नाम कालिका पुराण के अनुसार है। शेष कर्म तंत्र मार्गोक्त है।

प्रथमावरणम् – बिन्दु में देवी का ध्यान करें।

नीलोत्पलदल श्यामा चतुर्बाहुसुमन्विता ।
खट्वांगं चन्द्रहास च विभ्रती दक्षिणे ॥
वामे चर्म च पाशं च उर्ध्वाधोभागतः पुनः ।
दधती मुण्डमालां च व्याघ्रचर्मधरा वराम् ॥
कृशांगी दीर्घदंष्ट्रा च अतिदीर्घाति भीषणा ।
लोलजिह्वा निम्नरक्तः नयना नादभैरवा ।
कबन्धवाहनासीना विस्तार श्रवणानना ॥

इसी देवी को तारा का स्वरूप भी कहा है।

एषा ताराह्वया देवी चामुण्डेति च गीयते: ;

द्वितीयावरणम् – (त्रिकोणे) **वामायै नमः। ज्येष्ठायै नमः। रौद्र्यै नमः।**

तृतीयावरणम् – **व्रां हृदयाय नमः। व्रीं शिरसे स्वाहा। व्रूं शिखायै वषट्। व्रैं कवचाय हुं। व्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। व्रः अस्त्राय फट्।**

चतुर्थावरणम् – (अष्टदले) **असिताङ्ग भैरव, रुरुभैरव, चण्डभैरव, क्रोधभैरव, कपालभैरव, उन्मत्तभैरव, भीषणभैरव, संहारभैरव** का पूजन करें।

पंचमावरणम् – (अष्टदलाग्रे) अष्टदल के अग्रभाग कर्णिका में शक्तियों का पूजन करे।

यथा – **ॐ त्रिपुरायै नमः। ॐ भीषण्यै नमः। ॐ चण्ड्यै नमः। ॐ कर्त्र्यै नमः। ॐ हर्त्र्यै नमः। ॐ विधायिन्यै नमः। ॐ कराल्यै नमः। ॐ शूलिन्यै नमः।**

॥ श्री चामुण्डा यन्त्रम् ॥

भूपुरे – में इन्द्रादि लोकपालों व उनके अस्त्रों का पूजन करें।
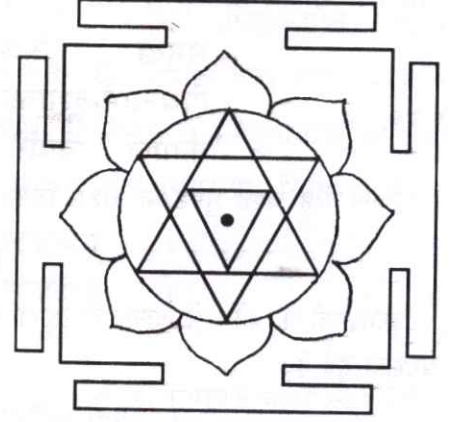
॥ स्वामिवश्यकरी शत्रुविध्वंसिनी स्तोत्रम् ॥

यदि स्वामी क्रोधी, दुष्ट, दुराचारी व लोभी होवे, दुस्विचार वाला हो उसको दण्ड देकर अपने अनुकूल करने के लिये भगवती वैष्णवी के इस स्तोत्र का जप करना चाहिये। सहस्रावृत्ति हेतु श्लोक १ से ३ की आवृत्तियां करे। श्लोक ४ से ६ श्लोक महात्म खण्ड के है जो अंतिम बार पढे।

विभीषण द्वारा की गई भगवती की यह स्तुति श्रीराम की भक्ति करने तथा उनकी अनुकम्पा प्राप्त करने के लिये की गई थी।

विनियोग – **ॐ अस्य श्री स्वामिवश्यकरी शत्रुविध्वंसिनी स्तोत्रमंत्रस्य पिप्पलायन ऋषि अनुष्टुप् छन्दः श्रीरामचन्द्रो देवता मम स्वामिप्रीत्यर्थ मत् सकाशात् शत्रोः पिशाचवत् पलायनार्थे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास – **ॐ रां अनुष्ठाभ्यां नमः ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्या नमः। ॐ रः अस्त्राय फट्।**

॥ ध्यानम् ॥

ॐ कालाम्भोधर कांतिकायमनसं वीरासनाध्यासितम्। मुद्रां ज्ञानमयी दधानमपरां हस्ताम्बुजे जानुनी॥
सीतां पार्श्वगतां शिरोरूहकरां विद्युन्निमं राघवम्। पश्यन्तीं मुकुटं गदादिविविधं कल्पोज्ज्वलांगीं भजे॥

॥ विभीषण उवाच ॥

ॐ स्वामिवश्यकरी देवी प्रीतिवृद्धिकरी मम। शत्रुविध्वंसिनी रौद्री त्रिशिरा सा विलोचनी ॥१॥
अग्निर्ज्वाला रौद्रमुखी घोरदंष्ट्रा त्रिशूलिनी। दिगंबरी मुक्तकेशी रणपाणिर्महोदरी ॥२॥

एकराड् वैष्णवी घोरे शत्रुमुद्दिश्य ते विषम् । प्रभुमुद्दिश्य पीयूषं प्रसादादस्तु ते सदा ॥३॥
मंत्रमेतज्जपेन्नित्यं विजयं शत्रुनाशनम् । स्वामिप्रीत्यभिवृद्धिर्हि जपात्तस्य न संशयः ॥४॥
सहस्त्रं त्रितयं कृत्वा कार्यसिद्धिर्भविष्यति । जपाद्दशांशतो होमः सर्षपैस्तन्दुलैः घृतैः ॥५॥
पञ्चखाद्ययुतैर्हुत्वा स्वामिवश्यकरी तथा । ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चादात्माभीष्ट फलप्रदः ॥६॥

॥ इति स्वामिवश्यकरी शत्रुविध्वंसिनी स्तोत्रम् ॥

॥ ८. महालक्ष्मी ॥

मन्त्र – ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

विनियोगः – अस्य मंत्रस्य शिव ऋषिः, गायत्री छंदः महालक्ष्मी देवता सर्वाभीष्ट सिद्धये विनियोगः।

षडङ्गन्यास – मं। हां। लं। क्ष्म्यैं। नं। मः। से हृदयादि न्यास करे।

॥ ध्यान् ॥

सुवर्णवर्ण दीप्ताङ्गी त्रिनेत्रा सिंहवाहिनी ईषत् प्रहसिता देवी नीलोत्पलदलेक्षणा ।
भुजषोडश संपन्ना सर्वालङ्कार भूषिता, खड्गं घण्टां शरं सूत्रमंकुशं शूलपद्मम् ॥
दधाना दक्षिणैर्हस्तैरनाथेभ्यो वरप्रदा, तथा वामैर्हस्तपद्मै खेटकं डिण्डिमं धनुः ।
कमण्डलुं नागपाशं कपालं पुस्तकाऽभयं, जाज्वल्पमाना तेजोभिरतीवाह्लाद कारिणी ॥

१ लाख जप कर मधु युक्त पायस से होम करे।

॥ महालक्ष्मी मन्त्रः ॥

मन्त्र – (देवीरहस्ये) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः महालक्ष्मी प्रसीद प्रसीद श्रीं ठः ठः ठः स्वाहा।

तन्त्रसारे – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत् प्रसूत्यै नमः।

विनियोग – ॐ अस्य श्री महालक्ष्मी मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, जगत्प्रसूता श्रीमहालक्ष्मी देवता, ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

षड्ङ्गन्यास – ॐ ऐं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। श्रीं शिखायै वषट्। क्लीं कवचाय हुं। ह्सौः नेत्रत्रयाय वौषट्। जगत्प्रसूत्यै नमः अस्त्राय फट्।

पुनः हृदयादिन्यास – ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः। ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। श्रीं शक्तये शिखायै वषट्। क्लीं बलाय कवचाय हुं। ह्सौः वीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट्। जगत्प्रसूत्यै नमः अस्त्राय फट्।

पुनः – मस्तके ॐ नमः। मुखे ह्रीं नमः। हृदये श्रीं नमः। गुह्ये क्लीं नमः। पदे ह्सौः नमः। नाभौ त्वक्मास रक्त मेदास्थि मज्जा शुक्रादि सप्तधातुषु जगत्प्रसूत्यै नमः।

॥ ध्यानम् ॥

बालार्कद्युतिमिन्दु खण्ड विलसत् कोटीर हारोज्ज्वलाम् । रत्नाकल्प विभूषितां कुच नतां शाले करैर्मञ्जरीम् । पद्मकौस्तुभ रत्नमप्यविरतं संविभ्रतीं सस्मिताम् । फुल्लाम्भोज विलोचन त्रययुतां ध्यायेत् पराम्बिकाम् ॥

॥ यन्त्र पूजनम् ॥

॥ श्री महालक्ष्मी यन्त्रम् ॥

यन्त्र रचना – त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल पश्चात् दो वृत्त एवं भुपूर बनायें।

त्रिकोण मध्य में देवि का आवाहन करें।

देवी के दक्षिण भाग में – **ॐ शङ्करनन्दनाय नमः**। वामभाग में – **ॐ पुष्पधनवे नमः**।

षट्कोण एवं मध्य में – **ऐं ज्ञानाय नमः, ह्रीं ऐश्वर्याय नमः, श्रीं शक्तये नमः, क्लीं बलाय नमः, ह्सौः वीर्याय नमः, ॐ जगत् प्रसूत्यै नमः**। मध्ये – **ॐ तेजसे नमः**।

अष्टदले – **ॐ उमायै नमः**। **श्रियै, सरस्वत्यै, दुर्गायै, धरण्यै, गायत्रै, देव्यै, उषायै नमः**।

उक्त अष्टशक्ति अतिशोभना व पद्महस्ता है।

देवि के दक्षिण में – **गंगायै नमः**। वामभाग में – **यमुनायै नमः**। पुनः दक्षिणे – **ॐ शङ्खनिधये नमः**। वामे – **ॐ पद्मनिधये नमः**। पश्चिमे – **ॐ वरुणाय नमः**।

इसके बाहर दो वृत्तों के बीच की वीथिका में – **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन राशियों का तथा सूर्यादि नवग्रहों** का पूजन करें।

भुपूरे – आठों दिशाओं में **चारदाँत वाले ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदन्त, सर्वभौम तथा सुप्रतीक इन आठों दिग्गजों** का पूजन करें।

पश्चात् **इन्द्रादि लोकपालों का उनके आयुधों** सहित पूजन करें।

पुनः अष्टदले – लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिये

लक्ष्मी कुल में उत्पन्न ८ शक्तियाँ – यमजिह्वा, जयन्ती, दुर्जया, यमान्तिका, विडाली, रेवती, जया, विजया (अग्निपुराणे) का पूजन करें।

॥ इन्द्रकृत महालक्ष्मी स्तोत्रम् ॥

॥ पुरंदर उवाच ॥

नमः कमलवासिन्यै नारायण्यै नमो नमः । कृष्णप्रियायै सततं महालक्ष्म्यै नमो नमः ॥
पद्मपत्रेक्षणायै च पद्मास्यायै नमो नमः । पद्मासनायै पद्मिन्यै वैष्णव्यै च नमोनमः ॥
सर्वसंपत्स्वरूपिण्यैसर्वाराध्यै नमो नमः । हरिभक्ति प्रदात्र्यै च हर्षदात्र्यै नमोनमः ॥
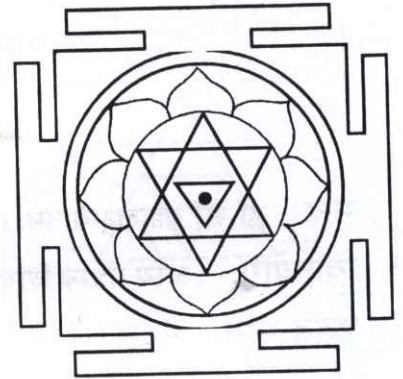
कृष्णवक्षः स्थितायै च कृष्णेशायै नमो नमः । चंद्रशोभास्वरूपायै रत्नपद्मे च शोभने ॥
संपत्त्यधिष्ठातृदेव्यै महादेव्यै नमो नमः । नमो वृद्धिस्वरूपायै वृद्धिदायै नमो नमः ॥
वैकुंठे या महालक्ष्मीर्या लक्ष्मीः क्षीरसागरे । स्वर्ग लक्ष्मीरिंद्रगेहे राजलक्ष्मीर्नृपालये ॥
गृहलक्ष्मीश्च गृहिणां गेहे च गृहदेवता । सुरभिः सागरे जाता दक्षिणा यज्ञकामिनी ॥
अदितिर्देवमाता त्वं कमला कमलालया । स्वाहा त्वं च हविर्दाने काव्यदाने स्वधा स्मृता ॥
त्वं हि विष्णुस्वरूपा च सर्वधारा वसुन्धरा । शुद्धसत्त्वस्वरूपा त्वं नारायणपरायणा ॥
क्रोधहिंसावर्जिता च वरदा शारदा शुभा । परमार्थप्रदा त्वं च हरिदास्यप्रदा परा ॥
यया विना जगत्सर्वं भस्मीभूतमसारकम् । जीवन्मृतं य विश्व च शश्वत्सर्वं यया विना ॥
सर्वेषां च परा माता सर्वबांधवरूपिणी । धर्मार्थकाममोक्षाणां त्वं च कारणरूपिणी ॥
यथा माता स्तनांधानां शिशूनां शैशवे सदा । यथा त्वं सर्वदा माता सर्वेषां सर्वरूपतः ॥
मातृहीनः स्तनांधस्तु स च जीवति दैवतैः । त्वया हीनो जनः कोऽपि न जीवत्येव निश्चितम् ॥
सुप्रसन्नस्वरूपा त्वं मां प्रसन्ना भवांबिके । वैरिग्रस्तं च विषयं देहि मह्यं सनातनि ॥
अहं यावत्त्वया हीनो बन्धुहीनश्च भिक्षुकः । सर्वसंपद्विहीनश्च तावदेव हरिप्रिये ॥
ज्ञानं देहि च धर्मं च सर्वसौभाग्यमीप्सितम् । प्रभावं च प्रतापं च सर्वाधिकारमेव च ॥
जयं पराक्रमं युद्धे परमैश्वर्य मेव च । इत्युक्त्वा च महेन्द्रश्च सर्वै सुरगणैः सहः ॥
प्रणनाम साश्रुनेत्रो मूर्ध्ना चैव पुनः पुनः । ब्रह्मा च शंकरश्चैव शेषो धर्मश्च केशवः ॥
सर्वे चक्रुः परीहारं सुरार्थे च पुनः पुनः । देवेभ्यश्च वरं दत्त्वापुष्पमालां मनोहराम् ॥
केशवाय ददौलक्ष्मीः संतुष्टा सुरसंसदि । ययुर्देवाश्च संतुष्टाः स्वं स्थानं च नारद ॥
देवी ययौ हरेः स्थानं ह्रतष्टा क्षीरोदशायिनी । ययतुश्चैव स्वगृहं ब्रह्मेशानौ च नारद ॥
दत्त्वा शुभाशिषं तौ च देवेभ्यः प्रीतिपूर्वकम् । इदं स्तोत्रं महापुण्यं त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः ॥
कुबेरतुल्यः स भवेद्राजराजेश्वरो महान् पञ्च लक्ष जपेनैव स्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ॥
सिद्धस्तोत्रं यदि पठेन्मासमेकं च संततम् । महासुखी च राजेन्द्रो भविष्यति न संशयः ॥

॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे द्विचत्वारिंशोऽध्याये महालक्ष्मी स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीसूक्तपुरश्चरण ॥

पुरश्चः – प्रत्येक श्लोक के ऋषि, छंद नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य की कमला उपासना में श्रीसूक्त के प्रयोग दिये गये है। पुरश्चरण हेतु शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से एकादशी तक बारह हजार जप करे पश्चात् घृत, मधु शर्करा युक्त शाकल्य से होम करे। कमल, विल्वफल व विल्व की समिधा व सर्षप से होम करे। **श्रीसमद्धिः सर्पिषा च प्रत्येकं त्रिशतं हुनेत्।** द्वादशी को ही ब्राह्मण भोजन कराये।

लक्ष्मी के प्रिय पुष्प – कुन्दमन्दार, कुमुद, मालती, पद्म, केतकी, जाती, कल्हार, चंपक, लालपुष्प प्रिय है। प्रयोग समय धन देती हुयी लक्ष्मी का ध्यान करे।

कान्त्या कांचन सन्निभां हिमगिरिपख्यैश्चतुर्भिर्गजै-
हस्तोत्क्षिप्त हिरण्यमयामृतघटैराषिच्यमानां श्रियम् ।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरोटोज्ज्वलां
क्षौमाबद्ध नितम्ब विम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥१॥
मणिक्यप्रतिमप्रभां हिमनिभैस्तुङ्गैश्चतुर्भिर्गजै
र्हस्ताग्राहित रत्नकुभं सलिलैराषिच्यमानां सदा ।
हस्ताब्जैर्वरदानमब्ज युगलाभीतीर्दधानां हरैः
कान्तां कांक्षित परिजात लतिकां वन्दे सरोजाननाम् ॥२॥
अतशीपुष्पसकाशां रत्नभूषण भूषिताम् ।
शङ्खचक्र प्रादा पद्म शार्ङ्गवाणधरां करैः ।
षड्भिः कराभ्यां देवेशीं वरदाभयशोभिताम् ॥३॥

॥ ९. नारसिंही ॥

मन्त्र – क्ष्रौं नारसिंहयै नमः।

क्ष्रां, क्ष्रीं ......से षडङ्गन्यास करे।

भीषणास्य क्रोधदीप्तो रक्तवर्णेन्दु शेखरः सोमसूर्याग्नि नेत्रश्च नानामणि विभूषितः ।
दक्षाद्यूर्ध्व क्रमेणैव चक्रशङ्खौ गुणांकुशौ, वज्रं गदां दारयन्तं द्वाभ्यां दैत्येश्वरोदरम् ॥१॥
नृसिंहरूपिणी देवीं दैत्य दानवदर्पहाम्। शुभां शुभप्रदां शुभ्रां नारसिंहीं नमाम्यहम् ॥२॥

॥ नारसिंही मंत्र ॥

मंत्र :- ॐ आं क्रों हूं जूं ह्रीं क्लीं स्त्रीं क्षूं क्ष्रौं फ्रों जूं फ्रें (रक्रां) जिह्वासटाघोररूपे दंष्ट्राकराले नारसिंहि ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं हूं फट् फट् स्वाहा। (महा. सं.)

॥ ध्यानम् ॥

हिमानीकुन्द कैलास रजताचलसन्निभा । वितस्तकेशरभरा विकीर्णवदनाकृतिः ॥१॥
सृक्कक्षरद्रक्तधारा लम्बमानाधरागलम् । द्विगुणीकृत शीतांशु कलातुल्यरदावलिः ॥२॥
अवभ्रटा क्षीणमध्यालातसंकाश दृग्द्वया । कृशदीर्घ समस्ताङ्गी सर्वालङ्कार मण्डिता ॥३॥
प्रोद्यन्मार्तण्ड विम्बाभकौस्तुभोद्भासिनी हृदि । मुखावट विनिर्गच्छ जिह्वा कोटिशत ह्रदा ॥४॥
केशराधूननस्त्रस्त खचरा खचरास्पदा । वज्राधिक नखस्पर्शा लोचनाभ्यां मुखादपि ॥५॥

****

वमन्ती कल्पकालाग्निं चर्वयन्ती दितेसुतान् । हसन्ती चाट्टहासेन नृत्यन्ती व्योममण्डले ॥६॥
गच्छन्ती वातवेगेन चरन्ती पितृकानने । दैत्यवक्षः पातनोत्थ रुधिरोक्षित विग्रहा ॥७॥
सुदीर्घ षोडशभुजा शीतिदम्भोलि धारिणी । चापकं वज्र चर्माणि मुशलं परशुं तथा ॥८॥
धारयन्ती करे वामे पट्टिशं च विदारणम् । वाण चक्र गदा खड्ग पाशाङ्कुशपवीनपि ॥९॥
विदारणं दक्षिणेन करेण दधती तथा । प्रतप्तहेमपिङ्गसटाभारावगुण्ठिता ॥१०॥
प्रकम्पिततनूयष्टिः परिप्लकनीनिका । प्रसुप्तभुजगाकार लूमखण्डविराजिता ॥११॥
नक्षत्रमालयितया रम्या नक्षत्रमालया ।
संवर्त्तकालकोट्यर्क दुर्निरीक्ष्य भयङ्करा ।
कोटिप्रलयकालाग्नि प्रत्यनीकतनु प्रभा ॥१२॥

॥ नारसिंही यन्त्रार्चनम्॥

मन्त्र – ॐ क्ष्रौं नमो भगवते नृसिंह्यै हूं फट्।

इस मन्त्र के वामदेव ऋषि, जगती छन्द है।

॥ ध्यानम् ॥

उद्यत् सहस्त्रार्कभासं भीषणाकृतिं, वज्रतुल्येक्षणं वह्निकान्तिं नानाभुजैवृत्तम् ।
नखैर्दारित दैत्यशं रक्तधारात्त कायकं, क्रूरकर्मादि विषये स्मरेद्देवि भयानकम् ॥

यन्त्र रचना – त्रिकोण, षटकोण एवं अष्टदल और भूपुर बनायें।

त्रिकोणे – तीनों कोणों में "**इच्छा, ज्ञान एवं क्रिया**" शक्ति का पूजन कर मध्य में देवी का आवाहन करें।

षट्कोणे – क्ष्रां, क्ष्रीं, क्ष्रूं, क्ष्रैं, क्ष्रौं, क्ष्रः से हृदयादि अङ्ग शक्तियों का पूजन करें।

अष्टदले – **ॐ भास्वत्यै नमः, ॐ भास्कर्यै नमः, ॐ चिन्तायै नमः, ॐ द्युतये नमः, ॐ उन्मीलिन्यै नमः, ॐ रमायै नमः, ॐ काल्यै नमः, ॐ रुचये नमः।** (ये अष्ट कन्यायें नारसिंही कुल में उत्पन्न हुई)

॥ श्री नारसिंही यन्त्रम् ॥

भुपूरे – **इन्द्रादि लोकपालों व उनके वज्रादि आयुधों** का पूजन करें।

साथ में नृसिंह का पूजन करें – **ॐ क्ष्रौं नमो भगवते नारसिंहाय ज्वालामालिने दीप्तदंष्ट्रयाग्नि नेत्राय सर्वरक्षोघ्नाय सर्वभूत विनाशाय सर्वज्वर विनाशाय दह दह पच पच रक्ष रक्ष हुं फट्।** (अग्नि पुराणे)

मन्त्रकोष में – **सर्वज्वर** की जगह **सर्वघोर** है तथा **हुं फट्** के स्थान पर **हूं फट् स्वाहा** है।

****
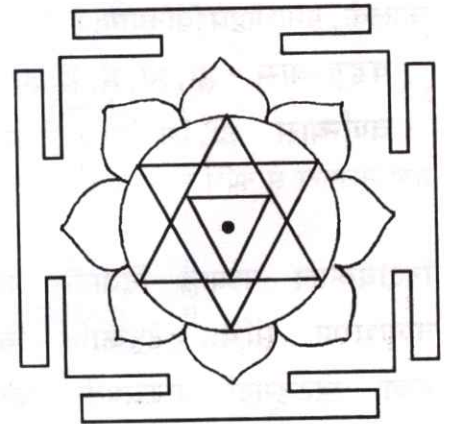
॥ १०. शिवदूती ॥

दुर्गा सप्तशती में कहा है "**ततो देवी शरीरात्....** तब चण्डिका के शरीर से अत्यंत भयङ्करि अतिक्रोध युक्ता शब्द करने वाली असंख्य शिवाओं से घिरी हुई" शक्ति अपराजिता बाहर निकल आई। अपराजिता या शिवदूती चण्डिका की दूसरी शक्ति है। पहली शक्ति है काली या चामुण्डा जो पहले आविर्भूत हुई थी। "**सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता....**" उन अपराजिता नामक चण्डिका ने धूम्रजटा वाले ईशान शिव से कहा....। **यतो नियुक्तो दौत्येन तथा देव्या शिवः स्वयम्। शिव दूतीति...**। क्यों कि उन देवी अपराजिता द्वारा स्वयं शिव ही दूत रूप में नियुक्त हुये थे इसलिये इस संसार में वे शिवदूती नाम से प्रसिद्ध हो गई।

मंत्र - ह्रीं शिवदूत्यै नमः।

षडङ्गन्यास - ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से षडङ्गन्यास करे। कालिका पुराण में ध्यान दिया है-

रूपमस्याः प्रवक्ष्यामि श्रृणु वत्सैक सम्मतः चतुर्भुजं महाकायं सिन्दूर सदृशद्युति ।
रक्तदंतं मुण्डमाला जटाजूटार्द्धचन्द्रधृक् । नागकुण्डलहाराभ्यां शोभितं नखरोज्वलाम् ॥
व्याघ्रचर्म परीधानं दक्षिणे शूलखड्गधृक् , वामे पाशं तथा चर्म विभ्रदूर्ध्वापर क्रमात् ।
स्थूलवक्त्रं च पीनोष्ठं तुङ्गमूर्तिं भयङ्करम् । निक्षिप्य दक्षिणं पादं संतिष्ठत् कुणपोपरि ॥
वामपादं श्रृगालस्य पृष्ठे फेरुशतैवृतम् । ईदृशीं शिवदूत्यास्तु मूर्तिं ध्यायेद विभूतये ॥

॥ शिवदूती मन्त्रः ॥

मन्त्र - ह्रीं शिवदूत्यै नमः।

विनियोग - अस्य मन्त्रस्य रुद्र ऋषिः, गायत्री छन्दः, शिवा देवता, ह्रीं बीजं, नमः शक्तिः, शिवदूत्यै कीलकं, ममाभीष्टये विनियोगः।

षड्ङ्गन्यास - ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से क्रमशः हृदयादि न्यास करें।

वर्णन्यास - ह्रीं, शिं दोनों कानों पर, **वं, दूं** दोनों नासापुटे, **त्यैं नं** दोनों कपालों पर, **मंः** से कण्ठ पर न्यास करें। तथा मूलमन्त्र से नाभि में न्यास करें। पुनः मूल मन्त्र से व्यापक न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

निदाघकाल मध्याह्न दिवाकर समप्रभाम् । नवरत्न किरीटां च त्रीक्षणामरुणाम्बराम् ॥
नानाभरण संभिन्न देहकांति विराजिताम् । शुचिस्मितामष्टभुजां स्तूयमानाम्महर्षिभिः ॥
पाशं खेटङ्गदां रत्नचषकं वामबाहुभिः । दक्षिणेरंकुशं खड्गकुठार कमलन्तथा ॥
दधानां साधकाभीष्ट दानोद्यम समन्विताम् । ध्यात्वैवम्पूजयेद् देवीं दूतीं दुरितनाशिनीम् ॥

॥ यन्त्रार्चन ॥

यन्त्र रचना - दो वृत्त बनाकर, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं भुपूर बनायें। (मेरु तन्त्रे)

त्रिकोणे - मध्य में **देवि का आवाहन** करें। तीनों कोणों में - **ॐ इच्छायै नमः, ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै**

नमः।

षड्दले - सिद्धा, वाणी, पूर्णसिद्धा, विग्रहवती, नादा एवं मनोन्मनी का पूजन करें।

अष्टदले - शिवदूती के समान आयुध व वर्ण वाली देवियों का पूजन करें। यथा -

सुमुखी, सुन्दरी, सारा, सुमना, सरस्वती, समया, सर्वगा, सिद्धायै नमः।

अष्टदल बाह्यवे - ॐ वागीशायै, वरदायै, विश्वायै, विनदायै, विघ्नकारिण्यै, वीरायै, विघ्नहरायै, विद्यायै नमः।

भुपूरे - दक्षिण भाग से आरंभ करें -

ॐ विह्वलायै, कर्षिण्यै, लोलायै, नित्यायै, मदनमालिन्यै, प्रमोदायै, कौतुकायै, पुण्यायै नमः।

॥ श्री शिवदूती यन्त्रम् ॥

पश्चात् **इन्द्रादि लोकपालों व उनके वज्रादि आयुधों** का पूजन करें।

लक्ष जप कर गुग्गलु, शर्करा, मधु, नाकरीकेल, फल, गुड़, के हवन से लक्ष्मी प्राप्ति होवे। कह्लार, लालपुष्प, त्रिमधु, चम्पा, वकुल पुष्प होम से वशीकरण होवे। शत्रुनाश हेतु पुतली बनाकर प्रयोग करें।
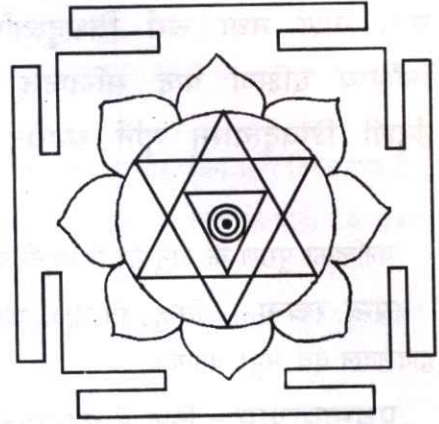
॥ शिवदूती मन्त्राः॥

कालिका पुराण के अनुसार शिवदूती की उत्पत्ति कौशिकी के हृदय से हुई । मार्कण्डेय पुराण के अनुसार शिव जी दूत के रूप में शुंभ निशुम्भ के पास गये अतः उनका शिवारूप ही शिवदूती रूप में प्रसिद्ध हुआ।

॥ मंत्रोद्धार ॥

अंतः समाप्तिसहितो बिन्द्विन्दुभ्यां दशावरः ।
स्वरेणोपान्तदन्त्येन संस्पृष्टोऽन्तेन पूर्वशः ॥
स एव बिन्दुयुगल पूर्वस्थोपान्तपावकः ।
षष्ठस्वरकलाशन्यै सहितः प्रथम स्थितः ॥
मंत्रोऽयं शिवदूत्यास्तु शिवदूती जयप्रदः ॥

मंत्रोद्धार में बिन्दु व इन्दु लिखा है। इन्दु के कई अर्थ है। यथा -

ऐ, स, म, द्रां अतः मंत्र भेद गुरुमुख से जाने।

यथा एकाक्षरी मंत्र - "स्त्रं" । उपयुक्त लगता है। (प अंत - म, द अंत - न, ओ अंत - अः, पावक = र अतः मन्त्र **म्रों:** भी बनता है।)

अन्य मंत्र - स्त्रां स्त्री स्त्रूं शिवदूत्यै नमः।

॥ ध्यानम् ॥

चतुर्भुजं महाकायं सिन्दुरसदृशद्युति । रक्तदन्तं मुण्डमालाः जटाजूटार्ध चन्द्रधृक् ॥
नागकुण्डलहाराभ्यां शोभितं नखराज्वलम् । व्याघ्रचर्म परीधान दक्षिणे शूलखण्डधृक् ॥
वामे पाशं तथा चर्म विभ्रदूर्ध्वापरक्रमात् । स्थूलवक्त्रं च पीनोष्ठं तुंगमूर्ति भयंकरम् ॥
निक्षिप्य दक्षिणं पादं सन्तिष्टत् कुणपोपरि । वामपादं शृगालस्य पृष्ठे फेरुशतैर्वतृम् ॥
ईदृशी शिवदूत्यास्तु मूर्ति ध्यायेत् विभूतये । ध्यानमात्रावथैतस्ता नरः कल्याणमाप्नुयात् ॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

कालिका पुराण के अनुसार शिवदूती की १२ शक्तियाँ है।

॥ श्री शिवदूती यन्त्रम् ॥

यन्त्र रचना – विन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल पश्चात् द्वादशदल एवं भूपुर बनाये।

प्रथमावरणम् – बिन्दु में ध्यानपूर्वक देवी का आवाहन करे

द्वितीयावरणम् – (त्रिकोणे) **वामायै नमः। जेष्ठायै नमः। रौद्र्यै नमः।**

तृतीयावरणम् – (षट्कोणे) **स्त्रां हृदयाय नमः। स्त्रीं शिरसे स्वाहा। स्त्रूं शिखायै वषट्। स्त्रैं कवचाय हुं। स्त्रौं नेत्रत्रयाय वौषट। स्त्रः अस्त्राय फट् ।**

चतुर्थावरणम् – (अष्टदले) **असिताङ्ग भैरव, रुरुभैरव, चण्डभैरव, क्रोधभैरव, कपालभैरव, उन्मत्तभैरव, भीषणभैरव, संहारभैरव** का पूजन करें।

पंचमावरणम् – (द्वादश दले) ॐ क्षेमकर्यै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ वेदमात्रै नमः। ॐ महोदर्यै नमः। ॐ कराल्यै नमः। ॐ कामदादेव्यै नमः। ॐ भगास्यायै नमः। ॐ भगमालिन्यै नमः। ॐ भगोदर्यै नमः। ॐ भगारोहायै नमः। ॐ भगजिह्वायै नमः। ॐ भगायै नमः।

षष्ठमावरण में **इन्द्रादिलोकपाल** व **सप्तमावरण** में उनके **वज्रादि आयुधों** का पूजन करे।

॥ ११. अपराजिता ॥

वैष्णवी, चण्डिका एवं शिवदूती ये अपराजिता शक्ति ही मानी गई है। शत्रु का मान मर्दन करने हेतु विजयादशमी को इसकी आराधना पूजा करनी चाहिये। राजा को अपराजिता वृक्ष बेल को अपने दाहिनी और धारण करनी चाहिये।

मंत्र – ॐ आकर्षिणी आवेशिनि ज्वालामालिनि रमणि रामणि धरणि, धारणि तपनि तापिनि मनोन्मादिनि शोषिणि पताके महानीले महाप्रिये महाग्रेयि महाचण्डे महारौद्रि महावज्रिणि आदित्यरश्मि जाह्नवि यमघण्टे किलि किलि चिंतामणि सुरभि सुरोत्पन्ने सरस्वति सर्वकामदुधे ममनीषितं कार्यं तन्मे सिध्यतु स्वाहा।
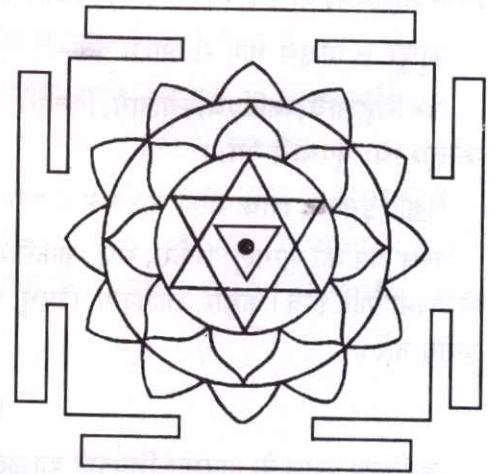
मेरु तंत्र के अनुसार ऋष्यादि अष्टाक्षर वैष्णवी मंत्र के समान । १२६०० जप कर दशांश होम करे। इस मंत्र से पताका पूजन भी करे।

॥ कौशिकी ॥

मार्कण्डेय पुराण के अनुसार पार्वती के कोष से **कौशिकी** तथा कालिकापुराणानुसार मातंगी के कोष से कौशिकी उत्पन्न हुई।

कालिका पुराणानुसार ध्यान मंत्र एवं अष्टदल की शक्तियों का जो वर्णन है उसी के अनुसार पूजन क्रम दिया गया है।

बीज मंत्र व मंत्रोद्धार जो दिया गया है उसकी टीका प्राप्त नहीं है तथा संकेत भाषा में एक शब्द के कई अर्थ बनते हैं। अत: हमने भी मंत्र की शक्ति की टीका नहीं की।**

मंत्र बीज – नेत्र बीज – इसका भावार्थ '**इ**' एवं '**औ**' दोनों ही बनते हैं अनुस्वार लगाने पर बीज '**इं**' या '**औं**' बनता है।

॥ मंत्रोद्धार ॥

मन्त्रमस्या: प्रवक्ष्यामि मूर्तिरूपं च भैरव । समाप्तिनान्त्यस्तु षड्वर्गादि सविन्दुभि: । षष्ठस्वरेण संस्पृष्टो बिन्दुना समलंकृत: । कौशिकी मन्त्रतन्त्रोऽयं सर्वकामार्थ दायक: ॥

अन्यमन्त्र –

(१) पां पीं पूं पें पौं प: कौशिक्यै नम:।

(२) क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्र: कौशिक्यै नम:।

(३) पं प: कौशिक्यै नम:।

॥ ध्यानम् ॥

धम्मिल्ल संयतकचां विधोश्चाधोममुखीं कलाम् । केशान्ते तिलकस्योर्ध्वे दधती सुमनोहरा ॥
मणिकुण्डल संघृष्ट गण्डा मुकुटमण्डिता । सज्ज्योति कर्णपूराभ्यां कर्णमापूर्य संगता ॥
सवर्णमणि माणिक्य नागहार विराजिता । सदा सुगंधिभि: पद्मैरम्लानैति सुन्दरी ॥
मालां विभूति ग्रीवायां रत्नकेयूर धारिणी । मृणालायत वृत्तेस्तु बाहुभि: कोमलै शुभै: ॥
राजन्ती कञ्चुकोपेत पीनोन्नत पयोधरा । क्षीणमध्य पीतवस्त्रा त्रिवली प्रख्य भूषिता ॥
शूलं वज्रं च वाणं च खड्गं शक्ति तथैव च । दक्षिण: पाणिभिर्देवी गृहीत्वा तु विराजिता ॥
गदां घण्टां च चापं च चर्म शंखं तथैव च । उर्ध्वदिक्रमतो देवी दधती वामपाणिभि: ॥
सिंहस्योपरि तिष्ठन्ती व्याघ्रचर्माणि कौशिकी । विभ्रर्ता रूपमतुलं ससुरासुर मोहनम् ॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

प्रथमावरणम् – विन्दु में देवी का ध्यान पूर्वक आवाहंन करें।

द्वितीयावरणम् – (त्रिकोणे) **ॐ वामायै नम:। ॐ ज्येष्ठायै नम:। ॐ रौद्र्यै नम:।**

तृतीयावरणम् – (षट्कोणे) **पां हृदयाय नमः। पीं शिरसे स्वाहा। पूं शिखायै वषट्। पैं कवचाय हुम्। पौं नेत्रत्रयाय वौषट्। पः अस्त्राय फट्।**

॥ श्री कौशिकी यन्त्रम् ॥

चतुर्थावरणम् – (अष्टदले) **असिताङ्ग भैरव, रुरुभैरव, चण्डभैरव, क्रोधभैरव, कपालभैरव, उन्मत्तभैरव, भीषणभैरव, संहारभैरव** का पूजन करें।

पंचमावरणम् – (अष्टदलाग्रे) दल के अग्रभाग में शक्तियों का पूजन करें। **ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः। ॐ ऐन्द्र्यै नमः। ॐ शिवदूत्यै नमः।**

षष्ठमावरण में **इन्द्रादि लोकपालों** व **सप्तमावरण** में उनके **वज्रादि आयुधों** का पूजन करें।

इस देवी का विधिवत् पूजन करने से युद्ध में विजय प्राप्त होती है। इस देवी को ही तन्त्र ग्रन्थों में प्रत्यंगिरा कहा हैं।
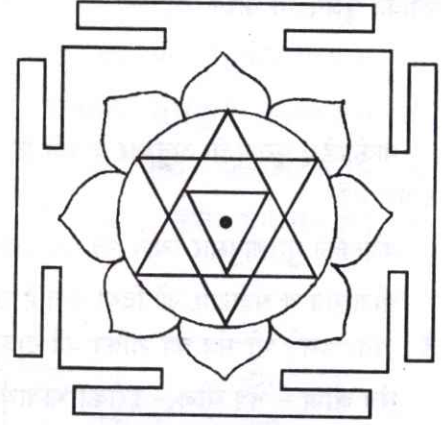
॥ भगवती नन्दा ॥

भगवती नन्दा का नन्दजा स्तोत्र अनु. प्रकाशः भाग ३ देवी खण्ड पूर्वार्द्ध में पृष्ठ संख्या ७७८ पर दिया गया है। इस देवि के विन्ध्यवासिनी नाम से प्रयोग दिये गये है।

मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीं विशालाक्षी नन्दजायै नमः।**

॥ ध्यानम् ॥

नवीनाऽर्ककोटिप्रभा भासयन्ती, चतुर्भिः करैः शङ्खचक्रे दधन्ती ।
वरं चाऽभयं वैभवं भावयन्ती, जगत्यत्र विन्ध्येश्वरी क्रीडयन्ती ॥१॥
कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा ।
देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा ।
कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृत चतुर्भुजा ॥२॥
ध्यायेद् देवी विशालाक्षीं तप्तकाञ्चन सुप्रभाम् ।
द्विभुजामम्बिकां चण्डीं खड्ग खर्परधारिणीम् ।
नानालङ्कार सुभगां रक्ताम्बरधरां शुभाम् ।
सदा षोडशवर्षीयां प्रसन्नास्यां त्रिलोचनाम् ॥३॥

पुत्र प्राप्ति हेतु इस विद्या का प्रयोग करे। मक्खन को अभिमंत्रित कर स्त्री को खिलावें।

॥ भगवती रक्तदन्तिका ॥

भगवती का स्वरूप भीषण है, शत्रु संहार करने में दक्ष है। अपने भक्त की पति के समान परिपालना करती है।

मंत्र - (१) ॐ रां रीं रूं रक्तदंतिकायै नमः ॥१॥

(२) ॐ क्रां क्रीं क्रूं रां रीं रूं वैप्रचित्तान् भक्षकारिण्यै रक्तदंतिकायै नमः ॥२॥

॥ ध्यानम् ॥

रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा ।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥
रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदंतिका ।
वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी ॥
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ।
खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गुलं च बिभर्ति सा ।
कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी ॥१॥

ताम्रविद्रुमबिम्बाभ रक्तोष्ठीममृतोपमाम् ।
दाडिमीबीजपंक्त्याभ दन्तपंक्तिविराजिताम् ॥२॥

॥ तामस ध्यान ॥

क्षुत्क्षामा कोटराक्षी मसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती ।
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलं ग्रासमेकं करोमि ॥
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल शिखासन्निभं पाशमुग्रं ।
दन्तैर्दाडिमीपुष्पैः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली ॥३॥

इस देवी के अनुष्ठान, पूजा-अर्चना सब रक्तवर्ण से होवे। लालचन्दन की माला से जप व रक्त पुष्पों से होम करें।

॥ रक्तदन्तिका साधना ॥

मंत्र :- ॐ श्रीं रं भगवति रक्तदंतिके अनुरक्ते स्वाहा। (देवी रहस्ये)

२१ माला ५१ दिन तक करें। मंत्र सिद्ध होने पर इस मंत्र से अभिमंत्रित कर पान खाकर शत्रु के सामने जाये तो शत्रु स्तंभित व संमोहित हो जाता है ॥

॥ भगवती भीमा ॥

भगवती का भैरव स्वरूप विशाल है। संहार में कालरात्रि के समान है।

मंत्र - ॐ ह्रीं भैं भीमायै नमः। (देवी रहस्ये)

मंत्रोद्धार - तारं परा भद्रिका च भीमायान्तेऽश्मरी मनुः ।

॥ ध्यानम् ॥

भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा ।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥
चन्द्रहासं च डमरु शिरः पात्रं च विभ्रती ।
एक वीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥

॥ भगवती भीडा ॥

भगवती भीमा का सौम्यरूप भीडा है। यह ज्ञान की वृद्धि करती है एवं सरस्वती स्वरूपा है।

मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं हस्त्रैं ऐं क्लीं सौः भीडाभगवति हंसरूपिणि स्वाहा। (देवी रहस्ये)

उत्कीलनम् :- ॐ हस्त्रैं नमः।

शाप विमोचनम् :- ॐ ह्रीं श्रीं भीडे ध्रुवशाप विमोचय-विमोचय स्वाहा।

॥ भीडा ध्यानम् ॥

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशीं फुल्ल-पद्मोपविष्टां ।
वीणानागेन्द्र शङ्खायुध परशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः ।
मुक्ताहारांशुनानामणियुतहृदयां शीधुपात्रं वहन्तीं ।
वन्दे भीडां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्ट प्रदात्रीम् ॥

यंत्रोद्धार :- विन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, अष्टकोण, फिर षोडशदल पश्चात् तीन रेखाओं वाला, चार द्वार युक्त भूपुर बनायें।

देवी रहस्य में यन्त्रार्चन नहीं दिया गया है।

॥ भीडा ध्यान ॥

देवीरहस्ये॥

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युति चयसदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां
वीणानागेन्द्र शङ्खायुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशुनानामणियुत हृदयां शीधुपात्रं वहन्तीं
वन्दे भीडां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्।

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं हस्त्रै हस्त्रां ऐं क्लीं सौः भीडा भगवति हंसरूपिणि स्वाहा।

उत्कीलन - ॐ भीडायै नमः।
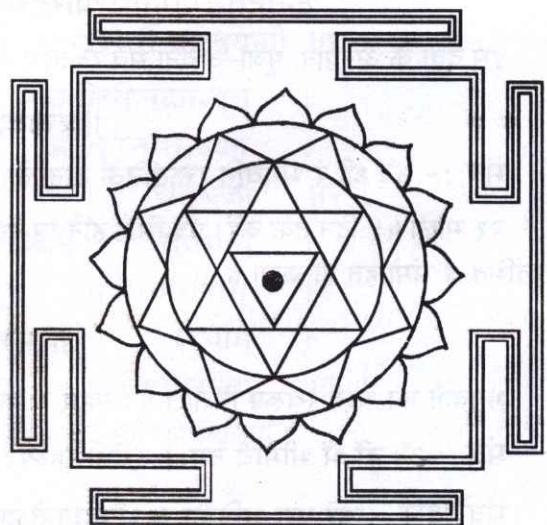
॥ श्री भीड़ा यन्त्रम् ॥

॥ भगवती शाकम्भरी ॥

भगवती शाकम्भरी की उपासना से अनावृष्टी, अकाल दोष दूर होकर अन्न धन की वृद्धि, दुःख दरिद्रता दूर होवे। यही देवी शताक्षी नाम से भी पुकारी जाती है।

मंत्र :- ॐ आं फ्रां शां शाकम्भर्यै नमः ।

नीलाञ्जन समप्रख्य नीलपद्मायतेक्षणाम् । सुकर्कश समोत्तुङ्ग वृत्तपीनघनस्तनम् ॥
वाणमृष्टिं व कमलं पुष्पपल्लवमूलकान् । शाकादीन्फल संयुक्ताननन्त रस संयुक्तान् ॥
क्षुत्तुङ् जरपहान् हस्तै विभ्रती व महाधनुः । सर्वसौन्दर्यसारं तद्रूपं लावण्य शोभिताम् ॥
कोटिसूर्य प्रतीक्षाकाशां करुणारस सागराम् । दर्शयित्वा जगद्धात्री साऽनन्त नयनोद्भवा ॥१॥
शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना । गंभीरानाभिस्त्रिवली विभूषिततनूदरी ॥
सुकर्कश समोत्तुङ्ग वृत्तपीनघनस्तनी । मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया ॥
पुष्पपल्लव मूलादि फलाढ्यं शाकसञ्चयम् । काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापमहम् ॥
कार्मुकं च स्फुरत्कांति विभ्रती परमेश्वरी । शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥२॥

इस अनुष्ठान में हरा आसन, हरे वस्त्र होवे। यदि अकाल निवारण एवं वृष्टि प्रयोग करना हो तो शरीर पर गीला वस्त्र धारण कर जप करें। ५१ मेघो की पूजा करे तथा वरुण मण्डल बनाकर पूजा करे। सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाश भाग २ में मण्डल पूजा दी गई है।

॥ शताक्षी महिमा ॥

(देवी भागवते)

शताक्षी ही शाकम्भरी है। प्रारम्भ में ध्यान व स्तुति है, पश्चात् देवा चरित है। उस समय दुर्ग नामक राक्षस से उनका संग्राम हुआ। पहले काली तारादि १६ शक्तियाँ फिर ३२ पश्चात् ६४ शक्तियाँ देवि के शरीर से उत्पन्न हुई। उन्होनें दैत्य की १०० अक्षोहिणी सेना को परास्त कर दिया। ग्यारहवें दैत्य ने उन सभी शक्तियों को जीत लिया तो देवी शाकम्भरी ने उसे मार दिया।

भावार्थ यह है कि जिस कल्प में जो शक्ति प्रकट होती है उस कल्प में वही अपना प्रभाव दिखाती है, शेष शक्तियाँ गौण रहती है। दुर्ग नामक राक्षस को मारने से ही माता ''दुर्गा'' कहलाई। देवा ऊचु में पुनः प्रार्थना है।

॥ पूर्व पीठिका ॥

अनर्थे त्वेवमुद्भूते ब्राह्मणाः शांतचेतसः । गत्वा हिमवतः पार्श्वे रिराधयिषव शिवाम् ॥
समाधिध्यानपूजाभिर्देवीं तुष्टुवुरन्वहम् । निराहारास्तदासक्तास्तामेव शरणं ययुः ॥
दयां कुरु महेशानि पामरेषु जनेषु हि । सर्वापराधयुक्तेषु नैतच्छ्लाघ्यं तवांबिके ॥
कोपं संहर देवेशि सर्वांतर्यामि रूपिणि । त्वया तथा प्रर्यतेऽयं करोति स तथा जनः ॥
नान्या गतिर्जनस्यास्य किं पश्य पुनः पुनः । यथेच्छसि यथा कर्तुं समर्थाऽसि महेश्वरि ॥
समुद्धर महेशानि संकटात्पर मोत्थितात् । जीवनेन विनास्माकं कथं स्यात्स्थितिरंबिके ॥

प्रसीद त्वं महेशानि प्रसीद जगदंबिके । अनंतकोटिब्रह्मांडनायिके ते नमो नमः ॥
नमः कूटस्वरूपायै चिद्रूपायै नमो नमः । नमो वेदांतवे द्यायै भुवनेश्यै नमो नमः ॥
नेति नेतीति वाक्यैयी बोध्यते सकलागमैः । तां सर्वकारणां देवीं सर्वभावेन सन्नताः ॥
इति संप्रार्थिता देवी भुवनेशी महेश्वरी । अनंताक्षिमयं रूपं दर्शयामास पार्वती ॥

॥ ध्यानम् ॥

नीलांजनसमप्रख्यं नीलपद्मायतेक्षणम् । सुकर्कश समोत्तुंगवृत्तपीनघनस्तनम् ॥
बाणमुष्टिं च कमलं पुष्पपल्लवमूलकान् । शाकादीन्फलसंयुक्ताननंतरससंयुतान् ॥
क्षुत्तृड् जरपहान्हस्तैबिभ्रती च महाधनुः । सर्वसौंदर्यसारं तद्रूपं लावण्यशोभितम् ॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशं करुणारससागरम् । दर्शयित्वा जगद्धात्री साऽनंतनयनोद्भवा ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

मोचयामास लोकेषु वारिधाराः सहस्त्रशः । नवरात्रं महावृष्टिरभून्नेत्रोद्भवैर्जलैः ॥
दुःखितान्वीक्ष्य सकलान्नेत्राश्रूणि विमुञ्चती । तर्पितास्तेन ते लोका ओषध्यः सकला अपि ॥
नदीनदप्रवाहा स्तैर्जलैः समभवन्नृप । निलीय संस्थिताः पूर्वं सुरास्ते निर्गता बहिः ॥
मिलित्वा ससुरा विप्रा देवीं समभितुष्टुवुः । नमो वेदांतवेद्ये ते नमो ब्रह्मस्वरूपिणि ॥
स्वमायया सर्वजगद्विधात्र्यै ते नमो नमः । भक्तकल्पद्रुमे देवि भक्तार्थं देहधारिणि ॥
नित्यतृप्ते निरुपमे भुवनेश्वरि ते नमः । अस्मच्छांत्यर्थमतुलं लोचनानां सहस्त्रकम् ॥
त्वया यतो धृतं देवि शताक्षी त्वं ततो भव । क्षुधया पीडिता मातः स्तोतुं शक्तिर्न चाऽस्ति नः ॥
कृपां कुरु महेशानि वेदानप्याह रांबिके ।

॥ व्यास उवाच ॥

इति तेषां वचः श्रुत्वा शाकान्स्वकरसंस्थितान् ॥
स्वादूनि फलमूलानि भक्षणार्थं ददौ शिवा । नानाविधानि चान्नानि पशुभोज्यानि यानि च ॥
काम्यानंतरसैर्युक्तान्यानवीनोद्भवं ददौ । शाकंभरीति नामाऽपि तद्दिनात्समभून्नृप ॥
ततः कोलाहले जाते दूतवाक्येन बोधितः । ससैन्यः सायुधो योद्धुं दुर्गमाख्योऽसुरो ययौ ॥
सहस्त्राक्षौहिणीयुक्तः शरान्मुंच स्त्वरान्वितः । रुरोध देवसैन्यं तद्यद्देव्यग्रे स्थितं पुरा ॥
तथा विप्रगणं चैव रोधयामास सर्वतः । ततः किलकिलाशब्दः समभूद्देवमंडले ॥
त्राहि त्राहीति वाक्यानि प्रोचुः सर्वे द्विजामराः । ततस्तेजोमयं चक्रं देवानां परितः शिवः ॥
चकार रक्षणार्थाय स्वयं तस्माद्बहिः स्थिता । ततः समभवद्युद्धं देव्या दैत्यस्य चोभयोः ॥
शरवर्षसमाच्छन्नसूर्यमंडलमद्भुतम् । परस्परशरोद्घर्षसमुद्भूताग्निसुप्रभम् ॥
कठोरज्याटणत्कारबधिरीकृतदिक्तटम् । ततो देवीशरीरात्तु निर्गतास्तीव्र शक्तयः ॥

****

कालिका तारिणी बाला त्रिपुरा भैरवी रमा । बगला चैव मातंगी तथा त्रिपुरसुंदरी ॥
कामाक्षी तुलजा देवी जंभिनी मोहिनी तथा । छिन्नमस्ता गुह्यकाली दशसाहस्त्रबाहुका ॥
द्वात्रिंशच्छक्तयश्चान्याश्चतुष्षष्टिमिताः परा । असंख्यातास्ततो देव्यः समुद्भूतास्तु सायुधाः ॥
मृदंगशंखवीणादिनादितं संगर स्थलम् । शक्तिभिर्दैत्यसैन्ये तु नाशितेऽक्षौहिणीशते ॥
अग्रेसरः समभवद्दुर्गमो वाहिनीपतिः । शक्तिभिः सह युद्धं च चकार प्रथमं रिपुः ॥
महद्युद्धं समभवद्यत्राभूद्रक्तवाहिनी । अक्षौहिण्यस्तु ताः सर्वा विनष्टा दशभिर्दिनैः ॥
तत एकादशे प्राप्ते दिने परमदारुणे । रक्तमाल्यांबरधरो रक्तगंधानुलेपनः ॥
कृत्वोत्सवं महांतं तु युद्धाय रथसंस्थितः । संरंभेणैव महता शक्तीः सर्वाविजित्य च ॥
महादेवीरथाग्रे तु स्वरथं संन्यवेशयत् । ततोऽभवन्महद्युद्धं देव्या दैत्यस्य चोभयोः ॥
प्रहरद्वयप र्यंतं हृदयत्रासकारकम् । ततः पंचदशात्युग्रबाणान्देवी मुमोच ह ॥
चतुर्भिश्चतुरो वाहान्बाणेनैकेन सारथिम् । द्वाभ्यां नेत्रै भुजौ द्वाभ्यां ध्वजमेकेन पत्रिणा ॥
पंचभिर्हृदयं तस्य विव्याध जगदंबिका । ततो वमन्स रुधिरं ममार पुर ईशितुः ॥
तस्य तेजस्तु निर्गत्य देवीरूपे विवेश ह । हते तस्मिन्महावीर्ये शांतमासीज्जगत्रयम् ॥
ततो ब्रह्मादयः सर्वे तुष्टुवुर्जगदंबिकाम् । पुरस्कृत्य हरीशानौ भक्त्या गद्गदया गिरा ॥

॥ देवा ऊचुः ॥

जगद्भ्रमविवर्तैककारणे परमेश्वरि । नमः शाकंभरि शिवे नमस्ते शतलोचने ॥
सर्वोपनिषदुद्घुष्टे दुर्गमासुरनाशिनि । नमो मायेश्वरि शिवे पंचकोशांतरस्थिते ॥
चेतसा निर्वि कल्पेन यां ध्यायंति मुनीश्वराः । प्रणवार्थस्वरूपां तां भजामो भुवनेश्वरीम् ॥
अनंतकोटिब्रह्मांडजननीं दिव्यविग्रहाम् । ब्रह्मविष्ण्वादिजननीं सर्व भावैर्नता वयम् ॥
कः कुर्यात्पामरान्दृष्ट्वा रोदनं सकलेश्वरः । सदयां परमेशानीं शताक्षीं मातरं विना ॥

॥ व्यास उवाच ॥

इति स्तुता सुरैर्देवी ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्वरैः । पूजिता विविधैर्द्रव्यैः संतुष्टाभूच्च तत्क्षणे ॥
प्रसन्ना सा तदा देवी वे दानाहृत्य सा ददौ । ब्राह्मणेभ्यो विशेषेण प्रोवाच पिकभाषिणी ॥
ममेयं तनुरुत्कृष्टा पालनीया विशेषतः । यया विनाऽनर्थ एष जातो दृष्टोधुनैव हि ॥
पूज्याऽहं सर्वदा सेव्या युष्माभिः सर्वदैव हि । नातः परतरं किंचित्कल्याणायोपदिश्यते ॥
पठनीयं ममैतद्धि माहात्म्यं सर्वदोत्तमम् । तेन तुष्टा भविष्यामि हरिष्यामि तथाऽऽपदः ॥
दुर्गमासुरहंत्रीत्वाद्दुर्गेति मम नाम यः। गृह्णाति च शताक्षीति मायां भित्त्वा व्रजत्यसौ ॥
किमुक्तेनात्र बहुना सारं वक्ष्यामि तत्त्वतः । संसेव्याऽहं सदा देवाः सर्वै रपि सुरासुरैः ॥

|| भगवती भ्रामरी ||

इसके प्रयोग से शत्रुपक्ष में फूट पड़ती है तथा शत्रु का उच्चाटन भी किया जा सकता है।

इस मंत्र का प्रयोग करे, मधुमक्खियों के छत्ते के पास जाकर संकल्प कर शत्रुसंघविदीर्ण हेतु उनका आवाहन, पूजन करे। पश्चात् शत्रु संहार हेतु उनका भद्रकाली रूप में ध्यान कर शत्रुसंघ विदीर्ण हेतु प्रार्थना करें तो मक्खियां उड़कर शत्रु पर टूट पड़ेगी। यह प्रयोग आज से १२५ वर्ष पहले हमारे पास के सरवाड़ गाँव के एक तांत्रिक ने प्रयोग किया तो किशनगढ़ स्टेट की बड़ी फौज भी भाग खड़ी हुई।

मंत्र :- ॐ ह्रीं भैं भ्रामयैं नमः।

|| ध्यानम् ||

तेजोमण्डलदुर्धर्षां भ्रामरी चित्रकांतिभृत् ।
चित्रानुलेपना देवी चित्राभरण भूषिता ॥

इस देवी के प्रयोग समय स्वयं शहद का भक्षण नहीं करे। देवी को शहद से स्नान कराये। घृत, मधु, शर्करा से नित्य मधुपर्क अर्पण करें।

हवन में त्रिमधु (घृत, मधु, शर्करा) से होम करें।

|| अथ भगवती त्वरिता प्रयोगः ||

शत्रु को दण्ड देने हेतु भगवती की ९ शक्तियाँ प्रमुख है। सर्वजनक्षोभिणी, आकर्षिणी, वशंकरी, स्तंभिनी, क्षोभिणी इत्यादि शक्तियाँ मारण, मोहन, संमोहन, द्रावण, क्षोभण, संतापन, उच्चाटन, विद्वेषण, आकर्षण इत्यादि शक्तियाँ शीघ्र कार्य करती है। अतः ये त्वरिता विद्या के नाम से जानी जाती है।

त्वरिताविद्या मंत्रः- ह्रीं सर्वजन क्षोभिणी जनानुकर्षिणी ततः। ॐ खे ख्यां सर्वजनवशंकरी तथा स्याज्जनमोहिनी ॥ ॐ ख्यौं सर्वजनस्तंभनी ऐं खं खां क्षोभणी तथा ।
ऐं त्रितत्त्वं बीजं श्रेष्ठं कुले पञ्चाक्षरी तथा ॥१॥
(मूलमंत्र):- फं श्रीं क्षीं श्रीं ह्रीं क्षें वच्छे क्षे क्षे ह्री फट् ह्रीं नमः ॥२॥
ॐ ह्रां क्षे वच्छे क्षे क्षो ह्रीं फट्।
देवी को **ॐ ह्रौं सिंहाय नमः** से आसन प्रदान करे।

|| भगवती त्वरिता मन्त्राः ||

अग्निपुराण में त्वरिता विद्या विषय में विस्तृत वर्णन है। यह विद्या तोतला, त्वरिता, एवं तूर्णा नाम से प्रसिद्ध है।

इसके विविध नाम **पार्वती, शबरी, ईशा, वरदा, श्यामला, अभयहस्तिका, मयूरवलया, पिच्छमौलि, किंसलयांशुका, सिंहासनस्था, मयूरबर्हच्छत्रसमान्विता, त्रिनेत्रा, वनमालाविभूषणा, विप्राहिकर्णाभरणा, क्षत्रकेयूरभूषणा, वैश्यनागकटीबन्धा, वृषाहिकृतनूपुरा** है।

यह विद्या आदि भूता है। यही देवी सृष्टि के आरंभ में जल में तीव्र गति पैदा करती है अतएव इस देवी को तोतला

भी कहा है। इसके प्रयोग से विष तथा शत्रुबाधा का निवारण होता है। यह देवी दोभुजा व १८ भुजावाली है।

सिंहमंत्रा – १. ॐ प्रों पुरु पुरु महासिंहाय नमः ॥

२. त्तु त्तु हेति वज्रदेति पुरु पुरु लुलु गर्ज गर्ज ह ह सिंहाय नमः।

मंत्रा :- १. ॐ ह्रीं हूं खे छे क्षः स्त्रीं हूं क्षें ह्रीं फट् त्वरितायै नमः॥

२. ॐ ह्रीं हूं खे च च्छे क्षः स्त्रीं हूं क्षें ह्रीं फट् त्वरितायै नमः॥

३. ॐ हूं खे च्छे क्षः स्त्रीं क्षें हुं फट् नमः॥

त्वरिता गायत्री :- ॐ त्वरिता विद्यां विद्महे तूर्णविद्यां च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास :- खे च हृदयाय नमः। च च्छे शिरसे नमः। छे क्षः शिखायै नमः। क्षः स्त्रीं कवचाय नमः। स्त्रीं हूं नेत्राय नमः। हूं क्षेमस्त्राय फट् नमः।

पुनः – ॐ ह्रीं हूं हः हृदयाय नमः। हां हः शिरसे स्वाहा। ह्रीं ज्वल ज्वल शिखायै वषट्। हनु हनु (हलु हलु) कवचाय हुं। ह्रीं श्रीं क्षूं नेत्रत्रयाय वौषट्। क्षौं हः खौं अस्त्राय फट्।

पुनः – ॐ हूं हृदयाय नमः। खे च्छे शिरसे स्वाहा। क्षः स्त्री शिखायै वषट्। क्षें हुं कवचाय हुं। फट् नेत्रत्रयाय वौषट्।

इन्द्रदूतिका (वज्रतुण्डिका) मंत्र :- तोतले वज्रतुण्डे ख ख हूं ।

ज्वालिनि विद्या मंत्र :- खेचरि ज्वालिनी ज्वाले ख ख ।

शबरी विद्या मंत्र :- वर्चे शरविभीषणी ख ख ।

कराली विद्या मंत्र :- छे छेदनि करालिनि ख ख ।

प्लवंगदूती विद्या मंत्र :- क्षः श्रव द्रव प्लवङ्गि ख ख ।

श्वसन वेगिका विद्या मंत्र :- स्त्रीबलं कलिधुनंनि शासी।

कपिल दूतिका मंत्र :- क्षे पक्षे कपिले हस हस ।

रौद्रि दूतिका मंत्र :- हूं तेजावति रौद्रि मातंगी ।

ब्रह्मदूतिका मंत्र – पुटे पुटे ख ख खड्गे फट् ।

॥ ध्यानम् ॥

अठारह भूजावाली देवी सिंहारूढ है। बाँयी जंघा सिंहपर है। दाहिनी जंघा को दुगने आकार में फैला रखा है। अनेकानेक अस्त्र धारण किये हुए है।

श्यामां वर्हिकलाप शेखर-युतामाबद्ध पर्णांशुकां, गुञ्जाहारलसत्पयोधरभरामष्टाहिपान् बिभ्रतीम् ।
ताटङ्काङ्गद मेखलां गुणरणन्मञ्जीरतां प्रापितां, कैरीतीं वरदाभयोद्यतकरां देवीं त्रिनेत्रां भजे ॥१॥
अष्टादशभुजां सिंहे वामजङ्घा प्रतिष्ठिता । दक्षिणा द्विगुणा तस्याः पादपीठे समीप्सिता ॥
नागभूषां वज्रदण्डे खड्गं चक्रं गदां क्रमात् । शूलं शरं तथा शक्तिं वरदं दक्षिणैः करैः ॥

धनुः शरं घण्टां तर्जनीं शङ्खमंकुशम् । अभयं च तथा वज्रं वामपार्श्वे धृतायुधम् ॥२॥

॥ प्रयोग विधि॥

(१) कमल पुष्प पर भी देवी का उपर्युक्त आवाहन, पूजा कर जप करे सिद्धि प्राप्त होवे।

(२) आधीरात को कवच, खड्ग, धनुष, बाण तथा केवल एक वस्त्र को धारण कर पूजा करे। रंगविरंगे, लाल-पीले, काले, नीले वस्त्रों से देवी का यजन करे। फिर दक्षिण दिशा में द्वार से दूर या श्मशान में दूती मंत्र से बलि देवे। मांस अथवा गुग्गल, तिल, यव, लावा, ब्रीहि, गेहूं, कमल, श्रीफल एवं घृत से होम करे। कुमारी पूजा करे।

(३) योनि कुण्ड में होम करे। अर्जुन पुष्पों के होम से सुवर्ण प्राप्ति, गोधूम धान्य से पुष्टि व धान्यवृद्धि,, यव, चावल, तिलादि से सर्वसिद्धि प्राप्त होवे। बहेड़ों की आहुति से शत्रु उन्मत्त होवे, शाल्मली से शत्रुनाश, जामुन के होम से संतोष की प्राप्ति होवे। रक्तकमल होम से महापुष्टि, कन्दपुष्प से अभ्युदय, मल्लिका पुष्प होम से नगर में क्षोभ, कुमुद पुष्पों के होम से वशीकरण, तथा जनप्रियता प्राप्त होवे।
अशोक पत्रों के होम से इष्टवस्तु की प्राप्ति, बेल (बिल्व) के होम से सर्वज्ञता प्राप्त होवे।

(४) नवकोष्ठक का यंत्र बनाये, बीच के कोष्ठक में वृत्त बनायें, मंत्र के अक्षरों को एक-एक कोष्ठक में लिखे। पश्चात् अनुष्ठान करने से सिद्धि प्राप्त होवे।

(५) कपाल पर शिव मन्त्र या अघोर मंत्र लिखे। श्मशान में मुर्दे का वस्त्र लाकर उस पर ८ या १६ दल का कमल बनाये उनमें शत्रु का नाम लिखे। उसे भूमि में गाढने से शत्रुनाश होवे।

(६) भोजपत्र पर यंत्र व शत्रुनाम लिखकर खैर की लकड़ी जलाकर तपाये फिर अपने पैरों तले दबाकर जप करे शत्रु दास होवे।

(७) द्वादश दल का यंत्र बनाये, आठों दिशाओं में वज्र, त्रिशूल बनाये। द्वादशदल में शत्रु का नाम लिखे। हल्दी से यंत्र, दीवार, शिलापट्ट या लकड़ी पर लिखने से शत्रु का स्तंभन होवे।

॥ यंत्रार्चनम् ॥

यन्त्र रचना - बिन्दु, षट्कोण, अष्टदलयुक्त भुपूर बनाये।

बिन्दु मध्ये - त्वरिता देवी का आवाहन करे यह देवी गुह्यकुब्जिका भी है।

षट्कोणे :- धीं क्षे हृदयाय नमः। वच्छे शिरसे स्वाहा। क्षें ह्वी शिखायै वौषट्। क्षें कवचाय हुं। हूं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रीं अस्त्राय फट्।

षट्कोण वहि :- ह्वौ हूं हः हृदयाय नमः। ह्वीं ह्वः शिरसे स्वाहा। फां ज्वल ज्वल शिखायै वषट्। इले ह्व हुं कवचाय हुं। क्रों क्षं क्षीं नेत्रत्रयाय वौषट्। क्षौं फट् हुं खे वच्छे क्षेः ह्रीं क्षें हुं अस्त्राय फट्।

॥ श्री त्वरिता यन्त्रम् ॥

अष्टदलमध्ये :- ह्रीं कार्यै नमः। खेचर्यै नमः। चण्डायै नमः।
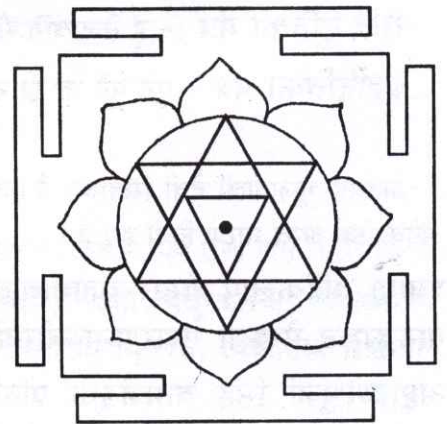
****

छेदन्यै नमः। क्षोभिण्यै नमः। क्रियायै नमः। क्षेमकर्यै नमः। ह्रीं कार्यै नमः। मध्ये- फट्कार्यै नमः।

अष्टदल कर्णिकायां :- ह्रीं नले वहुतुण्डे। च ख गे ह्रीं खेचरी। ज्वालिनि ज्वल ख खे च्छे शवविभीषणे। च च्छे चण्डे छेदनि करालि। ख खे छेखे खरहाङ्गी ह्रीं क्षे वक्षे कपिले। ह क्षे हूं तेजोवति रौद्रि। मातः ह्रीं फे वे फे फे वक्त्रे। वरी फे पुटि पुटि घोरे। मध्ये हूं फट् ब्रह्म वेतालि मध्ये।

पूर्ण मंत्र इस प्रकार है - ह्री नले बहुतुण्डे च खगे ह्रीं खेचरी ज्वालिनि ज्वल ख खे छ च्छे शवभीषणे च च्छे चण्डे छेदनि करालि ख खे छे खे खरहाङ्गी ह्रीं क्षे वक्षे कपिले ह क्षे हूं तेजोवति रौद्रि मातः ह्रीं फे बे फे फे वक्त्रे वरी फे पुटि पुटि घोरे हूं फट् ब्रह्मवेतालि मध्ये।

भूपुरे - (पूर्वादिक्रमेण) **खे सदाशिवाय नमः। व ईशः। छे मनोन्मनी। मक्षे तार्क्षः। ह्रीं माधव। क्षें ब्रह्मा। हुं आदित्य। दारुण फट्।**

॥ पूजा प्रयोग:॥

सिंह मंत्र से मण्डल मध्य पर सिंह का आवाहन करके देवी का आवाहन करे-

ॐ प्रणीतायै नमः। हूं वामायै नमः। ओंकारायै नमः। ॐ खे च हृदयाय नमः। खेचर्यै नमः। चण्डायै नमः। क्षस्त्री कवचाय नमः। छेदन्यै नमः। क्षेपण्यै नमः। स्त्रियै हूं कार्यै नमः। क्षेमकर्यै नमः। जयायै विजयायै किंकराय रक्ष। ॐ त्वरिताज्ञया स्थिरो भव वषट्।

उग्र प्रयोग में देवी यंत्र में भुपूर की आठों दिशाओं में वज्र व त्रिशूल बनाते है। मण्डल मध्य में देवी का आवाहन करे। इसके साथ धनुर्धरा देवी - **श्री फट्कार्यै नमः** से पूजन करे।

श्री जयायै नमः। श्री विजयायै नमः। से दोनों पार्श्व में द्वार देवियों का पूजन करें। सम्मुखे- **ॐ किंकराय नमः।**

भुपूरे (चारों द्वारो पर) :- **किंकयै नमः। बर्बर्यै नमः। मुण्डयै नमः। लगुड्यै नमः।** पूजन करे।

भुपूर में अष्टदिशाओं में अष्टनाग पूजा करे- **ॐ अनन्ताय नमः। कुलिकाय नमः। वासुकये नमः। शङ्खपालाय नमः। तक्षकाय नमः। महापद्माय नमः। कर्कोटकाय नमः। पद्माय नमः।**

भुपूर में दशों दिशाओं में प्रत्येक दिक्पाल के नाम से पहले **क्ष्रूं** लगाकर आवाहन करें, इसके साथ हुंकारी का भी आवाहन करे। जिस दिशा का जो दिक्पाल है उसी के अनुरूप उस दिशा में हुंकारी के आयुध है।

अष्टदले :- श्री गायत्र्यै नमः। हू कारायै नमः। खेचर्यै नमः। चण्डायै नमः। छेदन्यै नमः। क्षेपण्यै नमः। हूकार्यै नमः। क्षेमकर्यै नमः। अन्य विशेष पूजा का यंत्रार्चन क्रमानुसार करे।

॥ त्वरिता मन्त्र॥

इन्द्रनील शिलाखण्डतुलावय वरोचिषम् । पत्राच्छादित वक्षोजनितम्ब जघनस्फिचम् ॥
गुञ्जाहारसमुल्लासि पीवरोरोजयुग्मकाम् । अलंकारतया बद्धान् भुजानष्ट विभ्रतीम् ॥
ताटंकांगद मञ्जीरहार कुण्डलतामितान् । मयूरपिच्छ सम्बद्ध कपालकृत शेखराम् ॥
किरातवेषं दधतीं त्रिनेत्रां जगदंबिकाम् । वराभयोद्यतकरां कृपास्मेर मुखाम्बुजाम् ॥

मन्त्र - ॐ ह्रीं हूं आं क्रों स्त्रीं हूं क्षौं ह्रीं फट्।

॥ अथ अमृतेश्वरी मंत्र प्रयोगा:॥

मृत्युञ्जय प्रयोग बिना अमृतेश्वरी प्रयोग के सफल नहीं होता है। पुरुष देवता के जप के साथ दशांश जप स्त्री देवता का अवश्य होना चाहिये। श्री भुवनेश्वरी महास्तोत्र में श्रीपृथ्वीधराचार्य ने भगवती स्तुति की है वह इस प्रकार है।

श्रीमृत्युञ्जय नामश्रेय भगवच्चैतन्य चन्द्रात्मिके,
ह्रीङ्कारि प्रथमा तमांसि दलय त्वं हंस संजीविनि ।
जीवं प्राणविजृम्भमाण हृदयग्रंथिस्थितं मे कुरु,
त्वां सेवे निजबोधलाभरसा स्वाहाभुजामीश्वरीम् ॥

मंत्र – **ॐ श्रीं ह्रीं मृत्युञ्जये भगवति चैतन्यचन्द्रे हंससञ्जीविनि स्वाहा।**

॥ ध्यानम् ॥

जाग्रदबोध सुधामयूखनिचयै राप्लाव्य सर्वादिशो, यस्याः कापि कला कलङ्करहिता षट्चक्रमाक्रामति।
दैन्यध्वान्त विदारणैक चतुरा वाचं परां तन्वती, सा नित्या भुवनेश्वरी विहरतां हंसीव मन्मानसे।

यंत्ररचना – बिन्दु, षट्कोण, अष्टदलपद्म के बाद तीन रेखा वाला चार द्वार युक्त भूपूर बनाये। षट्कोण में अग्निकोण, ईशान, नैर्ऋत्य, वायव्य, सम्मुख एवं दिक्षु दिशाओं में क्रमश: अं आं, इं ईं, उं ऊं, एं ऐं, ओं औं, अं अः लिखे। अष्टदलों में क्रमशः कं खं गं घं ङं, चं छं जं झं ञं, टं ठं डं ढं णं, तं थं दं धं नं, पं फं बं भं मं, यं रं लं वं , शं षं सं हं, लं क्षं लिखे। भूपुर के चारों कोणों में "वं लं" लिखे।

॥ यंत्रोद्धार ॥

व्योमेन्दो रसनार्णकर्णिकमचां द्वन्द्वैः स्फुरत्केसरं, पत्रान्तर्गत पञ्चवर्ग यशलार्णादि त्रिवर्ग क्रमात् ॥
आशास्वत्रिषु लान्तलाङ्गलियुजा क्षोणीपुरेणावृतं, वर्णाब्जं शिरसि स्थितं विषगदप्रध्वंसि मृत्युञ्जयेत् ॥

मेरे अनुमान से लाङ्गलि बीज "ठं" लान्त से तात्पर्य ल के बाद का वर्ण "**व**" से है जो अमृतबीज भी है। यंत्र पूजा विशेष नहीं लिखी है केवल वर्णादि लिखकर पूजा कर धारण करने को कहा है। परन्तु तांत्रिक प्रयोगों की तरह मध्य बिन्दु में प्रधान देवता, षट्कोण में हृदयादि न्यास शक्ति, अष्टदलों में ब्राह्मी आदि अष्टमातृका तथा भूपुर में इन्द्रादि दशदिक्पालों व उनके आयुधों का पूजन करने में कोई आपत्ति नहीं है। शुभ ही रहे।

॥ रोगनाशक अमृतेश्वरी मंत्र॥

मंत्र – ॐ ऐं प्लूं ह्रौं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा।
इस मंत्र के ५ लाख जप कर मधुत्रय से होम करे। पश्चात् इस मंत्र से कुशा द्वारा जल अभिमंत्रित करते हुये जल में

अमृत का ध्यान कर रोगी को पिलाये। उक्त जल से रोगी स्नान करे तो भी आरोग्य लाभ होवे।

॥ रोगनाशक दीपनी मंत्र॥

असाध्य रोग के कारण कमजोरी व्याप्त हो गई हो रोगी का आत्मबल गिर गया हो तो दस हजार मंत्र जप कर दशांश होम करे पश्चात् १०८ बार मंत्र से जल को अभिमंत्रित कर रोगी के मार्जन कर अभिषिंचन करे तो रोग दूर होवे।

मंत्र - ऐं वदवद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु सौः ह्सौः।

त्रिपुरसुन्दरी की साधना पूजा इस मंत्र के साथ करे।

॥ सर्वशक्तिमय मृतसञ्जीवनी विद्या॥

मृतसंजीवनी विद्या का यह मंत्र अन्य मंत्रों से भिन्न व विलक्षण शक्ति वाला है।

मंत्र - ॐ ऐं श्रीं ह्रीं ह्सौः सर्वतत्त्व व्यापिनी जीव जीव प्राणप्राणेऽमृताऽमृते कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं हुं हुं मृत विद्रावणे प्राणतत्त्वाति तत्त्वे सर्वेश्वरि वेदगुह्ये हसकहल गर्भे सावित्रि ऐं वाचंभरि कालि क्लीं जीवय जीवय स्वाहा।

त्रिपुर सुंदरी मंत्र से भिन्नपाद यह मंत्र अमृतवर्षा कारक है इस मंत्र को भार्गव ऋषि शुक्राचार्य ने "कच" को दिया था और जिसके प्रभाव से मृतप्राणी भी जीवित हो जाता है। यह मंत्र जिस विद्वान से प्राप्त हुआ उनकी जानकारी में इस प्रयोग का प्रत्यक्ष प्रमाण वर्षों पूर्व विभुआश्रम के स्वामी जी ने करके दिखाया था। उन्होने गोपीगंज (वाराणसी) तथा कानपुर के सरसैया घाट पर सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में नरकंकाल को जीवत जाग्रत किया था। उन स्वामी जी की जन्मस्थली रायबरेली है एवं सिद्धाश्रम मध्यहिमालय में विचरण करते है। मंत्र जागृति हेतु प्रतिदिन एक एक वर्ण की १ लाख जप संख्या कही है जो कठिन है।

विनियोग - ॐ अस्य श्रीमृतसंजीवनी विद्या मंत्रस्य भृगुः ऋषिः, विराट् छन्दः, चिदानन्दलहरी देवता। ह्रीं सर्वव्यापिनी प्राणेश्वरी बीजं। क्लीं कीलकम्, हसकल ह्रीं शक्तिः मृतसंजीवने विनियोग। मंत्र के अनुसार अमृतेश्वरि के ध्यान के साथ सविता एवं त्रिपुरसुंदरी का ध्यान भी करे।

॥ अमृतवर्षिणी त्रिपुरा विद्या॥

मंत्र - (१) ॐ क्लीं अमृतवर्षिणि त्रिपुरे स्वाहा।

(२) ॐ क्लीं अमृतवर्षिणि ऐं त्रिपुरे सौः स्वाहा॥

त्रिपुर सुन्दरी की पूजा कर उपरोक्त मंत्र का जप करे।

॥ अकालमृत्युहारी विद्या॥

स्वर मातृका पुटित अमृतेश्वरि का यह मंत्र असाध्य रोग को दूर करने व कालकूट विष निवारण में समर्थ है।

मंत्र - ॐ यं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः अमृतम्भरि स्वाहा।

३१००० जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। कुशा को घुमाते हुये जल को अभिमंत्रित कर रोगी पर छिड़के व जल

रोगी को पिलाये तो असाध्य रोग दूर होवे।

॥ अमृतार्णव वासिनी तुरीया विद्या।

मंत्र - ॐ ऐं ह्रीं ह्सौं: त्रिपुरे अमृतार्णववासिनि शिवे शिवानन्यरूपिण्यै ते नमः।

इस मंत्र में त्रिपुरसुन्दरी व शिव की एकरूपता का बोधक है। इससे साधक को भुक्ति एवं मुक्ति दोनों फल प्राप्त होते हैं। साधक सुखी एवं संपन्न रहता है।

॥ मृत्युहारिणी मंत्राः ॥

(१) ॐ ह्रीं श्रीं जूं फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रें हौं स्हौः सौः स्हजहलक्षम्लवनऊं तत्त्वमसि स्हजहलक्षम्लवनऊं सौः स्हौः हौं फ्रें फ्रू फ्रीं फ्रां जूं श्रीं ह्रीं ॐ।

(२) चतुर्क्षर - ॐ ह्रीं श्रीं जूं। (महाकाल संहि.)

॥ ध्यानम् ॥

हिमानीकूटसदृशीमीश्वरीं देहरोचिषा । उत्तानकुणपाकार कालमृत्यूपरि स्थिताम् ॥१॥
चतुर्वेदाकार योगपट्ट जानुद्वयङ्किताम् । सितसूक्षाम्बरंधरां स्मेरानन समोरुहाम् ॥२॥
ज्ञानरश्मिच्छटाटोप विद्योति तनुमण्डलाम् । प्रोढाङ्गनारूपधरा मुत्तुङ्गस्तन मण्डलाम् ॥३॥
विभूषितां यावदेकयोषिद्दूषणसञ्चयैः । विद्याभिरष्टादशभिर्निबद्धञ्जलिभिः सदा ॥४॥
सेव्यमानां चतुर्दिक्षु हसन्तीं तां निरीक्ष्य च । चतुर्भुजां सुधाकुम्भपुस्तके वामहस्तयोः ॥५॥
दक्षयोरक्षमालां च मुद्रां व्याख्यानाशालिनीम् दधतीं सर्वदा ध्योद् देवीं तां मृत्युहारिणीम् ॥६॥

विशेष प्राण संकट व महारोग में मृत्युञ्जय मंत्र के साथ इस देवी का प्रयोग अवश्य करे।

॥ अथ वीर साधना प्रयोगः॥

वीर साधना में साधक पंचमकार का प्रयोग करते है। चौराहे, श्मशान में चिता साधना एवं शवसाधना करते है, श्मशान या शून्यागार में एकमुण्डी त्रिमुण्डी पंचमुण्डी, नवमुण्डी साधना करते है। इसके लिये साधक की अवस्था परिपक्क होनी चाहिये। रक्षा मंत्रों को पहले सिद्ध कर लेवे। गृहस्थ एवं असक्त साधक ''शय्या साधना'' करे।

शय्यासाधन – इस साधना का फल शवसाधना के समान माना है। इस साधना से कामाख्या की प्रसन्नता प्राप्त होती है। अतः कामाख्या कवच का पाठ पूजा काल में अवश्य करना चाहिये।

॥ क्षेत्रेश वीर साधना॥

वीरसाधना में प्रथम दशदिक्पाल का पूजन, दिशा बंधन करते है, वीर यंत्र की पूजा करे। शिवाबलि देवे। वीर मंत्र भैरव मंत्र, कलवा वीर के शाबर या तंत्रोक्त मंत्रों का जप करे।

दूधवाले वृक्ष की काष्ठ से ९ कीले बनायें। उनको रक्षा मंत्र से अभिमंत्रित करे। भैरव को बलि देवे।

मंत्र :- ॐ भां भैरव भैरव भयंकर मां रक्ष रक्ष हुं फट्॥

सभी दिशाओं में उनके लोकपालों की पूजा करे काष्ठ की कील के पास बलि प्रदान करे।

पूर्व में इन्द्र की पूजा करे – **ॐ लं इन्द्रसाङ्ग सपरिवाराय इहागच्छ इहतिष्ठ धूप दीप सहितं इदं बलिं गृह्ण गृह्ण दिशं रक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुकर्ता क्षेमकर्ता पुष्टिकर्ता भव।**

इस तरह **अग्नि, यम, निऋत, वरुण, वायव्य, कुबेर, ईशान** को बलि देकर एक कील मध्य में आसन के पास गाड़ देवे।

ॐ ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रुं ह्रः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः क्षां क्षीं क्ष्रूं क्षूः ख्रां ख्रीं ख्रं ख्रः धां धीं धूं धः म्रां म्रीं म्रूं म्रः म्रें म्रें म्रें म्रें म्रों म्रों ह्रौं ह्रों ह्रों क्लौं क्लों क्लों क्लों श्रों श्रों श्रों ज्रों ज्रों ज्रों ज्रों हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं फट् सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरवनाथ फट्।

॥ यंत्र पूजनम्॥

यन्त्र रचना – पृथ्वी पर अष्टदल-षोडशदल, फिर अष्टदल व भुपूर बनाये।

अष्टदल में – **असिताङ्गादि अष्ट भैरव** की पूजा करे।

षोडश दले – ॐ कुलिशाय नमः। जामित्राय नमः। रामठाय नमः। रिभाय नमः। प्रचण्डाय नमः। चण्डकेशाय नमः। चण्डात्मने नमः। चराचराय नमः। चरित्राय नमः। चमत्कराय नमः। चंचलाय नमः। चारुभूषणाय नमः। चामीकराय नमः। चारुवक्त्राय नमः। चकिताय नमः। चीत्काराय नमः।

पुनः अष्टदले – अष्टदल में **ब्राह्मी आदि अष्टमातृका** का पूजन करे।
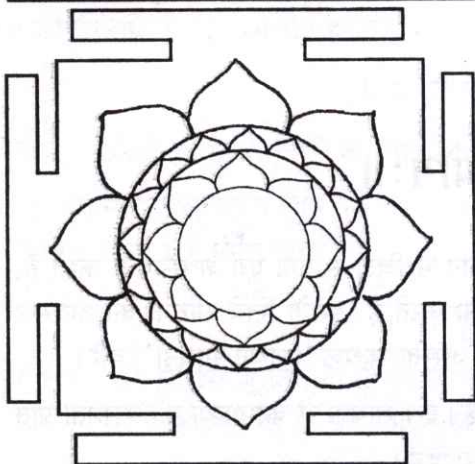
॥ श्री वीर यन्त्रम् ॥

भुपूर में - **इन्द्रादि लोकपालों** का व उनके **अस्त्रों** का पूजन करें। धूप दीप पुष्पादि अर्पण करे।

पूजामण्डल में आवाहन करे - **ॐ चण्ड आयाहि, ॐ प्रचण्ड आयाहि, उर्ध्वकेशं आयाहि, ॐ अमीषं आयाहि, ॐ व्योमकेशं आयाहि, ॐ व्योमवहं आयाहि, ॐ व्योमव्यापकं आयाहि।**

सब देवों का पूजन कर पायस बलि देवे। मूलमंत्र का जप करे। देवों से प्रार्थना करे कि पायस, नैवेद्य पाकर तृप्त होवे।

२१ दिन तक प्रयोग चिता के पास करें। भैरव मन्त्र का पुरश्चरण करें।

॥ वीर साधना रक्षा विधान ॥

वीर साधना में सहायक कुछ शाबर मंत्र इस तरह के है जिनको साधक काम में लेते है। ये रक्षा मंत्र इनके अलावा और भी बहुत से शाबर मंत्र भी है। **१. हनुमन्त वज्र का कोठा...., २. गोरख चलै दिशा औंधे पर्वतों का सिद्ध अमुक की रक्षा करे....., ३. भैरुं भूपाल काशी को कोतवाल घाट वाट को तू रक्षा पाल...., ४. काला कलुवा....., ५. भस्मन्ती योगिनी तू मेरीमाता मैं तेरोपूत...., ६. ॐ काली बम काली फट् काली रक्षा काली....., ७. कामरु कामाख्या हाड़ीरभी चण्डी रक्षा...., ८. उलटथिनृसिंह पलटथि काया रक्षा करतथि नरसिंह राया...., ९. राम कुण्डली ब्रह्म चाक तैंतीस कोटी देवता अमुकार वेदिया थाक....., १० यमचलै यमदूत चलै मरघट छोड़ी मशान चलै रक्षा पाल....।**

वीरसाधना में उपयोगी रक्षामन्त्रादि '**शक्तिसङ्गम तन्त्र**' में लिखा है-

दुर्गा विघ्नं च शरभमघोरं च सुदर्शनं, एता समयविद्यास्तु जपेत् प्रत्यूहशान्तये। 'आदिनाथसंहिता' में निर्देश है- **वीरार्गलाघोरमन्त्रश्चक्र पाशुपतास्त्रकैः, खड्गरावणमन्त्रैश्च जयदुर्गाख्य ईर्यते।** उक्त वचनों के अनुसार कुछ मन्त्रों को यहाँ उद्धृत किया जाता है-

॥ १. शरभः ॥

विनियोग - **अस्य शरभशालुव मन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषिः। जगती छन्दः। भगवान् शरभेश्वर देवता। खं बीजं। स्वाहा शक्तिः। अभीष्टप्रयोगसिद्ध्यर्थे जपे (मार्जने) विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास - **ॐ कालाग्निरुद्रऋषये नमः शिरसि। जगतीछन्दसे नमः मुखे। शरभेश्वरदेवतायै नमः हृदि। खंबीजाय नमः गुह्ये। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः। अभीष्टप्रयोग सिद्ध्यर्थे जपे (मार्जने) विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ खें खां खं फट्	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
प्राण गृह्णासि प्राण गृह्णासि	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
हुं फट्	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्

सर्वशत्रून् संहारणाय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
शरभाय शाल्वाय पक्षिराजाय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
हुं फट् स्वाहा	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ ध्यानम् ॥

वन्देऽहं घोरघोरप्रबलतर महागण्डभेरुण्डसिंहम्। व्याघ्राश्वक्रौड़े शाखामृगखगवनराट् भल्लुकाद्यष्टवक्त्रम्॥ द्वात्रिंशत्कोटि बाहुज्वलमुशल गदाशङ्खचक्रादिहेतुम्। विप्राणां भीमदंष्ट्रं शरभखलगजान् भक्षयन्तं नृसिंहम्॥

मन्त्र- ॐ खें खां खं फट् प्राण गृह्णासि प्राण गृह्णासि हुं फट् सर्वशत्रून् संहारणाय शरभाय शाल्वाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा (४२ अक्षर)।

॥ शरभमालामन्त्रा:॥

(१)

जिस शब्द के आगे २, ३, ४ लिखा है, उसे उतनी बार दोहरायें।

ॐ अं आं ह्रीं क्रौं एहि एहि शरभशालुवपक्षिराजाय प्रस्फुर प्रस्फुर पक्षिराजाय शत्रुशोणितं पिव २, ॐ ऐं ग्लौं ३, ॐ ह्रीं ३, ऐं ग्लौं ४, आवेशय २, अत्रागच्छ २, स्थिरो भव, सर्वरोगान्नाशय २, कृतिकान् वाहि २, चक्रान् वादय २, ॐ यस्मारि क्रौं (अमुकस्य) सर्वदेहादिरोगान् परकृत मन्त्र यन्त्र तन्त्राणां सुशीघ्रेण छेदय २, खं खड्गेन छेदय २, अं पाशेन बन्धय २, ह्रीं वं आरोग्यं कुरु २, ॐ खें शत्रूणां रक्तं पिव २, ॐ आं ह्रीं क्रौं खें खां खं फट् प्राणगृह्णासि प्राणगृह्णासि हुं फट् सर्वशत्रून् संहारणाय शरभशालु पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवते अष्टपदाय सहस्रबाहवे द्विशीर्षाय अग्निनेत्राय द्विपक्षाय रुद्ररूपाय रौद्रमृगविहङ्गवे नृसिंहवेशसंहारणाय उद्दण्डनृसिंह गर्वखण्डनाय ज्वालानृसिंहतापशमनाय लक्ष्मीनृसिंहमथनकराय गजनृसिंह सुदर्शद्यैनेकवैष्णवोछेदनाय अखिलदेवतापरिपालनाय क्षयापस्माररोगादि सकल रोगनिवारणाय ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं महाचित्ररथ्यादिगन्धर्वपर्वत प्रतिष्ठाय अन्तरिक्षग्रह आकाशग्रह वसुन्धराग्रह ताराग्रह क्षिप्रग्रह मन्त्रग्रह यक्षग्रह कामिनीग्रह मोहिनीग्रह उच्चाटनाय ब्रह्मराक्षस वेताल कूष्माण्डादि महाप्रबलग्रहोच्चाटनाय सकलदुष्टग्रह निवारणाय परयन्त्र परप्रयोग मूलछेदनाय सृष्टि परिपालनाय महापशुपतये शरभशालु पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

(२)

विनियोग: - ॐ अस्यश्रीशरभशालु महामालामन्त्रस्य ईशान ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। शरभशालुवीरभद्रो देवता। ह्रौं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ह्रूं कीलकम्। मम सकलोपद्रवनिवारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास - ॐ ईशान ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। शरभशालुवीरभद्रदेवतायै नमः हृदि। ह्रौं वीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ह्रूं कीलकाय नमः नाभौ। मम सकलोपद्रवनिवारणार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास :- 'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः' से षडङ्गन्यास कर ध्यान करे। यथा-

॥ ध्यान ॥

कृष्णवर्णं समाख्यातं नागाम्बरविभूषितम्। दंष्ट्रा करालवदनं दशदोर्दण्डमण्डितम्॥

तप्तहाटकसङ्काशं जटामुकुटशोभितम् । चिन्तयेऽद्भुतवेतालं ग्रहापस्मारशान्तये ॥

अब निर्वाण और रिपुजिह्वाग्र मुद्राऐं दिखाकर 'मालामन्त्र' का जप करे।

यथा - ऐं ॐ ह्रीं नमो भगवते शरभशालुपक्षिराजाय अघोरशरभाय आकाशगमनाय द्वात्रिंशत्कोटिहस्ताय अघोररुद्रायाट्टहासाय नृसिंहगर्वनिर्धूताय समस्तदेवतानिवहसेविताय सर्वगणनाथायभक्तजनरक्षाकरेशाय वज्र पक्षवज्रदेहाय कृष्णसर्पयज्ञोपवीताय ॐ ह्रौं ह्रीं हः समस्त बाधा समस्त ग्रहान् आकर्षय २, आवेशय २, शिरः कम्पय २, मर्दय २, भाषय २, रोधय २, त्रिकोटिपिशाचान् आकर्षय २, नवकोटिगन्धर्वान् कर्षय २, दशकोटिभद्रकालीनां कर्षय २, नवकोटिदुर्गानां कर्षय २, अष्टकोटिभैरवान् कर्षय २, सप्तकोटिमातृकान् कर्षय २, षट्कोटिभूतानां कर्षय २,पञ्चकोटि पक्षीणां कर्षय २, चतुष्कोटिब्रह्मराक्षसानां कर्षय २, त्रिकोटिगणनाथानां कर्षय २, द्विकोटिप्रतिबन्धानां कर्षय २, एककोटिदेवतानां कर्षय २, अर्धकोटिअपस्माराणां कर्षय २, आवेशय २, ॐ लं-४ स्तम्भय २, ॐ रं-४ संहारय २, ॐ नमो भगवते अघोर शरभाय शरभशालुपक्षिराजाय भस्माद् धूलितविग्रहाय सदा रुद्राक्षमालाधारणाय श्रीशरभप्रियाय आकाशगमनाय दक्षयज्ञकोलाहलाय कं लिं-५ लं-८, गर्जय २, नृसिंहगर्वध्वंसनाय कुं लिं-५ लं-८ गर्जय-२ उन्मादग्रहान् नाशय २, स्त्री-ग्रहान् बंध २, ॐ क्रौं ३, आकर्षय २, ॐ क्रीं ३ आवेशय २, ॐ द्रैं ३ मुञ्चय २, ॐ प्रौं चरयौं दाहय २, त्रौं चरयौं पच २, ॐ ठं-५ मठ-३ आकाशवीरभद्राय श्रीशरभशालुपक्षिराजाय खें खें खट् फट् खट् फट् खट् फट् उद्दण्डशरभाय महामेरुपीठासनाय जनरक्षाकरेशाय सदा रुद्राक्षमालाधारणाय पंचाक्षरमंत्रपरिपूरणाय आदिसर्वेश्वराय मां रक्ष २, मम शत्रून् भक्ष २, मम सर्वकार्याणि साधय २, मम सर्वग्रहान् बन्ध २, स्वकर्मपरिपालनाय स्वमन्त्र स्वतन्त्र सहस्त्रकोटिपालनाय जलस्थलग्रहान् बन्ध २, समस्त वायुग्रहान् बन्ध २, अग्निग्रहान् बन्ध २, समस्तभूतानां कर्षय २, समस्तप्रेतानां कर्षय २, समस्त पिशाचान् कर्षय २, स्तम्भय २, उच्चाटय २, कामिनीग्रहान् कर्षय २, किन्नरग्रहाणां कर्षय २, सिद्धिग्रहान् कर्षय २, साध्यग्रहान् कर्षय २,मम सर्वशत्रून्नासिकान् छेदय २, छिन्धि २, भिन्धि २, शूलेन विदारय २, मम शत्रूणां रक्तं पिव २, समस्तभूतलोकनायकां अखिलब्रह्माण्डाधिपाय सर्वजनरक्षकाय ॐ ५ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं हः फट् स्वाहा॥

॥ २. अघोर शिव ॥

विनियोग - अस्य अघोरस्य महामंत्रस्य अघोर ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। अघोररुद्रो देवता। प्रत्यूहशमनार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास कर षडङ्गन्यास करे। यथा-

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ प्रस्फुर प्रस्फुर	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा।
ॐ घोराघोरतर तनुरूप	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ चट चट प्रचट प्रचट	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ कह कह बम बम बन्ध बन्ध	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ घातय घातय हुं फट्	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ ध्यानम् ॥

सजलघनसमाभं भीमदंष्ट्रं त्रिनेत्रम्, भुजगधरमघोरं रक्तवस्त्रांगरागम् ।
परशुडमरुखड्गखेटकं बाणचापौ । त्रिशिखनरकपाले विभ्रतं भावयामि ॥

मन्त्रः – ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोराघोरतर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह बम बम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्।

अघोरसुदर्शनः ॐ ह्रीं स्फुर.....घातय हुं फट् ॐ सहस्त्रारे हुं फट्।

॥ ३. खड्गरावण॥

विनियोग:– ॐ अस्य श्रीखड्गरावणमन्त्रस्य श्रीखड्गरावण ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। श्रीखड्गरावणः देवता। सर्वभूतविमर्द्दने जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – श्रीखड्गरावणऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीखड्गरावणदेवतायै नमः हृदि। सर्वभूतविमर्दने जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

'खां खीं खूं खैं खौं खः' से षडङ्गन्यास कर ध्यान करे–

॥ ध्यानम् ॥

रक्ताम्बरं रक्तवर्णः चन्द्रमौलिं त्रिलोचनम् । पञ्चाननं करैर्घण्टां कपालांकुशमस्तकम् ॥
कृपाणं खेटखट्वाङ्गौ त्रिशूलं डमरुं करैः । दधानमभयं चापि ध्याये पञ्चाननं शिवम् ॥

मन्त्र :– ॐ ह्रीं क्लीं खं भूतेश ह्रीं ह्रां खड्गरावणाय नमः।

॥ खड्गरावणमालामन्त्र॥

ॐ नमो भगवते भूताधिपतये ॐ नमो रुद्राय खड्गरावण लं लं विहर विहर सर सर नृत्य नृत्य, व्यसनं भस्मार्चितशरीराय घण्टाकपालमालाधराय व्याघ्रचर्मपरिधानाय शशाङ्ककृतशेखराय कृष्णसर्पयज्ञोपवीतिने चल चल बल बल अतिर्वीतकपालिने हन हन भूतान् नाशय नाशय मण्डलाय फट् फट् रुद्रांकुशेन शमय शमय प्रवेशय प्रवेशय आवेशय आवेशय रक्षाक्षिधराधिपतये रुद्रो ज्ञापयति स्वाहा।

॥ ४. क्रोधभैरव ॥

(१) ॐ वज्रज्वाले हन हन सर्वभूतान् हूं फट्।

(२) विज्ञानकर्षणमनु ॐ वज्रमुखे शर शर फट्।

(३) ॐ संघट्टमृतान् जीवय स्वाहा।

(४) ॐ हूं वज्रफट् क्रूं क्रों क्रूं क्रूं हूं हूं फट्।

(५) ॐ हन हन सर्व मारय मारय वज्रज्वालेन हूं फट्।

(६) प्रधानमन्त्र (क्रोधराज) – ॐ हूं हूं हूं फट् फट् फट् वज्रक्रोध दीप्तमहाक्रोध ज्वल ज्वल मारय मारय हूं हूं हूं फट् फट्, फट्।

'**क्रोधभैरव**' मन्त्र का ध्यान और न्यास विधि-

चतुरस्त्रं चतुर्द्वारं चतुस्तोरणभूषितं । भागैः षोडशभिर्युक्त वज्रप्राकारशोभितम् ॥
तन्मध्ये तु महाभीमं वज्रक्रोधं चतुर्भुजं । ज्वालामालाकुलादीप्तं युगान्ताग्निसमप्रभम् ॥
भिन्नाञ्जनमहाकार्यं कपालकृतभूषणं । अट्टहासं महारौद्रं त्रिलोकेषु भयंकरम् ॥
दक्षिणोर्ध्वकरे वज्रं तर्जनी वामपाणिना । क्रोधमुद्रां च तदधः पाणिभ्यां धारिणं भजे ॥
शशाङ्कशेखरं त्र्यक्षं महागोक्षीरपाण्डुरं । महादेवदेवं चतुर्बाहुं शूलचामरधारिणम् ॥
चापशक्तिसमायुक्तं क्रोधदक्षे वृषासनं । शङ्खचक्रगदाचामराढ्यं वामे खगासनम् ॥
पृष्ठभागे तथा शक्रं सर्वालङ्कारभूषितं । पीतवस्त्रं त्रिनेत्रञ्च हस्तिस्थं चामरान्वितम् ॥
पुरतः कार्तिकेयं च मयूरस्थं विचिन्तयेत् । चामरं व्यग्रहस्ताग्रं हिमकुन्देन्दुसन्निभम् ॥
आग्नेयादीशपर्यन्तं द्वे द्वे शक्ती च कोणगे । सिंहध्वजान्विता मग्नौ महाभूतिन्यपि क्रमात् ॥
नैर्ऋते सुरपूर्वां च हारिणीं दैत्यनाशिनीम् । रत्नेश्वरीं भूषणीं च वायुकोणे न्यसेत् पुनः ॥
न्यसेदीशे जगत्पालिनीं च पद्मावतीं पुनः । श्वेतामाद्यां परां गौरीमेवमष्टौ क्रमोदिताः ॥

क्रोधमुद्राः मुष्टिमन्योन्यमास्थाय कनिष्ठे वेष्टयेदुभौ ।
प्रसार्य कुण्डलाकारं विधाय तर्जनीद्वयं ।
सिद्धाकर्षणमुद्रेयं सिद्धमाकर्षयेद् ध्रुवम् ॥

अर्थात् दोनों हाथों की मुष्टियों को परस्पर संयुक्त कर दोनों कनिष्ठाओं को वेष्ठित करे। साथ ही दोनों तर्जनियों को फैलाकर कुण्डलाकार करे।

(५) पाशुपतास्त्रः

विनियोग :- ॐ अस्य पाशुपतास्त्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। पाशुपातस्त्रः देवता। श्लीं बीजं। हुं शक्तिः। ग्रहप्रत्यूहशान्त्यर्थे जपे विनियोगः। ऋष्यादि न्यास कर षडङ्गन्यास करे। यथा-

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ ॐ	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ श्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ पं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ शुं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ हूं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ फट्	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥। ध्यानम् ॥

मध्याह्नार्कसमप्रभं शशिधरं भीमाट्टहासोज्ज्वलं। त्र्यक्षं पन्नगभूषणशशिशिखाश्मश्रू स्फुरमूर्धजम्। हस्ताब्जैस्त्रिशिखं समुद्गरमसिं शक्तिं दधानं विभुं। दंष्ट्राभीमचतुर्मुखं पशुपतिं दिव्यास्त्ररूपं स्मरेत्॥

मन्त्रः - ॐ श्लीं पशु हूं फट्।

॥ ६. जयदुर्गा :॥

मन्त्रः - ॐ ह्रीं दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा।

॥ ७. वीरार्दन :॥

मन्त्रः - हूं हूं ह्रीं ह्रीं कालिके घोरदंष्ट्रे प्रचण्डे चण्डनायिके दानवान् दारय दारय हन हन परवीरं शवशरीरे महाविघ्नं छेदय छेदय स्वाहा हूं फट्।

॥ ८. बलामहाबला :॥

विनियोग - ॐ अस्य श्रीबलामहाबलामन्त्रस्य विराट्पुरुषः ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीबलामहाबलागायत्री देवता। अं बीजं। उं शक्तिः। मं कीलमं। क्षुधापिपासानिवारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास - ॐ विराट्पुरुषऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। श्रीबलामहाबलागायत्रीदेवतायै नमः हृदि। अं बीजाय नमः गुह्ये। उंशक्तये नमः पादयोः। मंकीलकाय नमः। नाभौ। क्षुधापिपासानिवारणार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ क्लां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ क्लूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ क्लैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ॐ क्लौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ क्लः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ अमृतकरतलाऽऽर्द्रौ सर्वसञ्जीवनाढ्यः । अघहरणसुदक्षौ वेदसारैः मयूखैः ॥
प्रणवमयविकारौ भास्कराऽऽकारदेहौ । सततमनुभवेऽहं बलामहाबलान्तौ ॥

मन्त्र - ॐ ह्रीं बले महादेवि ह्रीं महाबले क्लीं चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिप्रदे तत्सवितुर्वरदात्मिके ह्रीं वरेण्यं भर्गो देवस्य वरदात्मिके अतिबले सर्वदयामूर्ते बले सर्वक्षुद्रभ्रमोपनाशिनि धीमहि कीलकं। भी धियो यो नो जाते प्रचुर्यः या प्रचोदयात्मिके प्रणवशिरस्कात्मिके हुं फट् स्वाहा।

॥ ९. महासिंह :॥

विनियोग - ॐ अस्य श्रीमहासिंहमन्त्रस्य भगवान् त्रैलोक्यमोहनमहाविष्णुः ऋषिः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् नानाछन्दांसि। श्रीमहापशुपतिः देवता। सौः वीजं। स्वाहा शक्तिः। हुं फट् पराम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – श्रीत्रैलोक्यमोहन भगवान्महाविष्णुऋषये नमः शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्नानाछन्दोभ्यो नमः मुखे। महापशुपतिदेवतायै नमः हृदि। सौः वीजाय नमः गुह्ये। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः। हुँ फट् कीलकाय नमः नाभौ। श्रीपराम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ श्लीं पशु हुं फट्	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ श्लीं पशु हुं फट्	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ श्लीं पशु हुं फट्	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ श्लीं पशु हुं फट्	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ श्लीं पशु हुं फट्	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्

मन्त्रः – ॐ सौः वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् नमः स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः अस्त्राय फट्।

इस प्रकार न्यासकल्पित '**महिष**' का मानसोपचारों से निम्न मन्त्र द्वारा पूजन करे- '**ॐ हूं भ्रूं महिषशृङ्गेभ्यो नमः।**'

तब नृसिंहमुद्रा दिखाकर उक्त कल्पित 'महिष' की बलि निम्न मन्त्र से महासिंह को प्रदान करे- '**ॐ श्लीं क्षं हूं पशु वज्रदेह घुरु घुरु हुं फट् हिंगुनु हिंगुनु ॐ श्लीं गर्ज गर्ज पशु हुं क्षां हुं फट् पञ्चाननाय इमं कल्पितब्रह्माण्डखण्डरूपमहिषबलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय पराम्बाप्रसादं देहि देहि हुं फट् स्वाहा।**'

इसके बाद हृदय पर हाथ रखकर तीन-तीन बार निम्न दो रक्षा मन्त्रों का जप करे- (१) **ॐ सौः वनस्पतिपुत्राय महासिंहाय हुं फट् आत्मानं रक्ष रक्ष।** (२) **ॐ हूं किङ्कराय रक्ष रक्ष त्वरिताज्ञया स्थिरो भव हुं फट्।** अब निम्न प्रकार 'महासिंह' का ध्यान करे-

॥ ध्यानम् ॥

ॐ ग्रीवायां मधुसूदनोऽस्य शिरसि श्रीनीलकण्ठः स्थितः, श्रीदेवी गिरिजा ललाटफलके वक्षः- स्थले शारदा।
षड्वक्त्रो मणिबन्धसन्धिषु तथा नागास्तु पार्श्वस्थिताः, कर्णौ यस्तु तु चाश्विनौ स भगवान् सिंहो ममास्त्विष्टदः।
यन्नेत्रे शशिभास्करौ वसुकुलं दन्तेषु यस्य स्थितं, जिह्वायां वरुणस्तु हुं कृतिरियं श्रीचर्चिका चण्डिका।
गण्डौ यक्षयमौ तथौष्ठयुगलं सन्ध्याद्वयं पृष्ठके, वज्री यस्य विराजते स भगवान् सिंहो ममास्त्विष्टदः।
ग्रीवासन्धिषु सप्तविंशतिमितान्यृक्षाणि साध्या हृदि, प्रौढा निर्घृणता तमोऽस्य तु महाक्रौर्यै समाः पूतनाः।
प्राणे यस्तु मातरः पितृकुलं यस्यास्त्यपानात्मकं, रूपे श्रीकमला कचेषु विमला स्यु रवे रश्मयः।
मेरुः स्याद् वृषणोऽब्धयस्तु जनने स्वेद स्थिता निमग्नाः, लांगूले सहदेवतैर्विलसिता वेदा बलं वीर्यकम्।
श्रीविष्णोः सकला सुराऽपि यथास्थानं स्थिता यस्य तु, श्रीसिंहोऽखिलदेवतामयवपुर्देवी प्रियः पातु माम्।
यो बालग्रहपूतनादि भयहृच्चपुत्रलक्ष्मीप्रदो यः, स्वप्नज्वररोगराज यभहृद्योऽमङ्गले मङ्गलः।
सर्वत्रोत्तमवर्णनेषु कविभिर्यस्योपमा दीयते, देव्या वाहनमेष रोगभयहृत् सिंहो ममास्त्विष्टदः।

इस प्रकार ध्यान कर मानसोपचारों से 'महासिंह' की पूजा कर श्रीमहादेवी को पाद्यादि अर्पित कर निम्न मन्त्र का १०८ बार जप करे-

ॐ सौः वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् नमः स्वाहा। उक्त मन्त्र में '**हुं फट्**' पुरुष मन्त्र है, '**स्वाहा**' प्रकृति मन्त्र और '**नमः**' उभयात्मक है। काम्य प्रयोग में केवल हविष्यान्न और पायस मधुसहित बलिरूप में देय है। '**पशुपति सिंह**' को महिषबलि देने के साथ ही उसी बलिमन्त्र में यथास्थान '**किंकराय**' और '**वनस्पतिपुत्राय**' जोड़कर क्रमशः दो और बलियाँ देय हैं।

॥ १०. योगिनीबलि ॥

श्रीचामुण्डा आवरण पूजन ('श्रीदुर्गाकल्पतरु') के अन्त में अष्टश्मशानों (कोणों) में ६४ योगिनियों का अष्टाष्टकभाव से आवाहन कर बलि देने की विधि है। इस विधि के पालन से साधक की कामनाओं की सहज ही पूर्ति होती है। इस विधि में आठ वर्णात्मक कोणों में बलि देते हैं।

ये आठ वर्ण हैं- १. शुक्ल, २. गौर, ३. रक्त, ४. विद्युत्, ५. आदित्य, ६. सुनील, ७. अञ्जन, ८. धूम्र।

इनके सम्बन्ध में बलिमन्त्र और योगिनियों के नाम निम्न प्रकार हैं-

१. शुक्लवर्णे - **शूलडमरुपाशासिधरे! सर्वालङ्कारभूषिते ससैन्य 'जये'! इहागच्छागच्छेमं पायसबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।** (इसी प्रकार **२. विजये, ३. जयन्ति, ४. अपराजिते, ५. दिव्ययोगिनि, ६. महायोगिनि, ७. सिद्धयोगिनि, ८. गणेश्वरि** को बलि दे। इति प्रथमाष्टक।)

२. गौरवर्णे - **अक्षमालांकुशपुस्तकवीणाधरे! 'प्रेतासने'! ऐह्येहि इमं पायसबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।** (इसी प्रकार **२. डाकिनि, ३. कालि, ४. कालरात्रि, ५. निशाचरि, ६. टङ्कारिणि, ७. रुद्रवेतालिनि, ८. हुङ्कारिणि** को बलि दे। इति द्वितीयाष्टक।)

३. रक्तवर्णे - **ज्वालाशक्त्यभयवरदे! 'ऊर्ध्वकेशि'! एह्येहि इमं०** (इसी प्रकार **२. विरूपाक्षि, ३. शुक्लाङ्गि, ४. नरभोजिनि, ५. फट्कारिणि, ६. वीरभद्रे, ७. धूमाङ्गि, ८. कलहप्रिये** को बलि दे। इति तृतीयाष्टक।)

४. विद्युत्सन्निभे - **ध्वजवाणधनुष्पाशहस्ते! 'राक्षसि'! एह्येहि इम०** (इसी प्रकार **२. रक्ताक्षि, ३. विश्वरूपे, ४. भयङ्करि, ५. वीरकौमारि, ६. चण्डिके, ७. वाराहि, ८. मुण्डधारिणि** को बलि दे। इति चतुर्थाष्टक।)

५. आदित्यवर्णे - **कमलाक्षमालाभयवरदकरे! 'भैरवि'! एह्येहि इमं०** (इसी प्रकार **२. ध्वांक्षिणि, ३. धूम्राङ्गि, ४. प्रेतवाराहि, ५. खड्गिनि, ६. दीर्घलम्बोष्ठि, ७. मालिनि, ८. मन्त्रयोगिनि** को बलि दे। इति पञ्चमाष्टक।)

६ सुनीले - **शङ्खचक्रगदाभयकरे! 'कालिनि'! एह्येहि इमं०** (इसी प्रकार **२. चक्रिणि, ३. कङ्कालि, ४. भुवनेश्वरि, ५. शटकि, ६. महामारि, ७. यमदूति, ८. करालिनि** को बलि दे। इति षष्टाष्टक।)

७. अञ्जननिभे - **खड्गखेटपट्टिशपरशुहस्ते! 'केशिनि'! एह्येहि इमं०** (इसी प्रकार **२. मर्दिनि, ३. रोमजङ्घे, ४. निवारिणि, ५. विशालिनि, ६. कार्मुकि, ७. लोलि, ८. अधोमुखि** को बलि दे। इति सप्तमाष्टक।)

८. धूम्रवर्णे - **कुन्तखेटभिन्दिपालमाला करे! 'मुण्डाग्रधारिणि!' एह्येहि इमं०** (इसी प्रकार **२. व्याघ्रि, ३. कांखिणि, ४. प्रेतरूपिणि, ५. धूर्जटि, ६. घोरि, ७. करालि, ८. विषलम्बिनि** को बलि दे। इति अष्टमाष्टक।)

इस प्रकार ८ × ८ = ६४ योगिनियों को 'चण्डी यन्त्र' के अष्टदलकमल में पाशवकल्पानुसार पायस की और श्मशानाष्टक में वीरकल्पानुसार शुद्ध्यादि की बलि दी जाती है। 'चक्रार्चन' में भी 'पञ्चबलि' के समय साधक अबीर या सिन्दूर से 'अष्टश्मशान' अंकित कर उसमें शुद्ध्यादि पञ्चतत्वों सहित बलि प्रस्तुत कर उक्त विधि सम्पन्न कर आनन्दित होते हैं। इसके बाद गणेश, वटुक, क्षेत्रपाल, सर्वभूतादि को बलि देते हैं।

॥ वीरसाधना की आवश्यक सामग्री ॥

॥ वीरसामग्रीः ॥

वीरसाधन में प्रयुक्त होने वाले पञ्चगव्य, पञ्चामृत, अष्टगन्ध, रहस्यमाला आदि को जानना और विधिवत् संग्रह करना आवश्यक है। इनका स्पष्टीकरण अनुभवी साधक ही कर सकते हैं। तंत्रशास्त्र के वचनों के आधार पर इनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है-

(१) पञ्चगव्यः

'वीरचूडामणि' उच्छिष्टं कुसुमं चैव वमनं शवकर्पटं, शुक्लं पुष्पं महादेवि! पञ्चगव्यमितीरितम् ।

'वीरतन्त्रे' आसवं संविदातोयं समुज्ज्वलसमुद्भवं, शुक्लपुष्पमिमं देवि! पञ्चगव्यमुदाहृतम् ।

'भावसर्वस्वे'-संविद् गङ्गेतरजलं रेतरक्तं वरस्त्रियाः, मद्यं च परमेशानि! पञ्चगव्यानि कौलिकं ।

(२) पंचामृतः

आसवं मधुकं मांसं योनितोयं च शोणितं, पञ्चामृतमिदं देवि! देवानामपि दुर्लभम् ।

(३) गन्धाष्टकः

वज्रकुण्डं गोलकं च गोपीचन्दन रोचना, सर्वमद्यं स्वयम्भू च कौला गन्धाष्टकं विदुः ।

वीर सामग्री के शोधनमन्त्र यथा-

कुण्ड शोधनमन्त्रः ऐं क्लीं स्वाहा। गोलपुष्पः ह्रीं ह्रीं ह्रीं। सर्वकालोद्भवः क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं। गोपीचन्दनः स्त्रीं स्त्रीं क्लीं क्लीं। पीठक्षालनः श्रीं स्त्रीं हूँ फट्। शुक्रः हूँ फट् स्वाहा नमः ('ह्रीं वौषट्' वा) अजरामरः हूं फट् स्वाहा।

(४) महाशङ्खमालाः

इसी को '**रहस्यमाला**' कहते हैं। मातृकाभेद तन्त्र में लिखा है कि इस माला में विशेषतया तारा का और सामान्यतः सभी विद्याओं का जप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। '**वीरतन्त्र**' में यह माला काली और तारा के मन्त्रजप के लिए

प्रशस्त बताई है। **'गन्धर्व तन्त्र'** के अनुसार केवल वीरसाधक ही इस माला पर जप कर सकते हैं। अन्य साधकों के लिए यह शुभ नहीं है। **'समयाचार तन्त्र'** में लिखा है कि वर्णमाला में शत बार जप का जो फल होता है, वह 'अस्थिमाला' में एक बार के ही जप से प्राप्त होता है। **'गुप्तसाधनतन्त्र'** के अनुसार अस्थिमध्य में अकार तक की सभी मातृकायें विद्यमान रहती हैं। अतः कण्ठ (गले) और हाथ में उसे सदा धारण करे। इस माला में जप करने से अणिमादि सभी सिद्धियाँ मिलती हैं। **'मातृकाभेदतन्त्र'** में लिखा है कि **'महाशङ्खमाला'** में जप करने वाले को आठों सिद्धियाँ हस्तगत होती हैं और वह साक्षात् शिवरूप होता है। उसके दर्शन मात्र से सभी तीर्थों का पुण्य मिल जाता है। **'त्रिशक्ति तन्त्र'** के अनुसार यह माला पचास मणियों की होती है। कान और नेत्र के बीच की अस्थि को **'महाशङ्ख'** कहते हैं। उसके अभाव में अन्य किसी अवयव की अस्थि ग्राह्य है। इसे सर्वथा गुप्त रखे।

'यामल' में इसे बनाने के सम्बन्ध में यह निर्देश दिया है- **'नरेभाश्वोष्ट्रमुण्डानां छिन्नानां रणसङ्कटे, माला वै कारयेद् वृत्ता महाविद्यासु साधकः।'** 'समयाचारतन्त्र' के अनुसार अदग्ध नृशिर की अस्थि से इस माला को प्रस्तुत करे। 'मेरुतन्त्र' में उक्ति है- **'नरास्थ्याः राक्षसा वश्या, वीरवश्या हयास्थिभिः।'** 'प्राणतोषिणी' में बताया है कि वज्राहत, सर्पदंष्ट्र से पतित, जल में डूबकर मृत, व्याघ्रादि पशु द्वारा निहत, संघर्ष या युद्ध में मृत, चाण्डालादि शूद्र जाति की अस्थि ग्राह्य है। **'स्वतन्त्र तन्त्र'** के अनुसार छिन्नशीर्ष को लाकर इस प्रकार छिपाकर रखे कि तुलसी, गोबर, गङ्गाजल, शालग्राम आदि से उसका स्पर्श न होने पाए।

'शक्तिसङ्गमतन्त्र' में लिखा है कि १. स्वेच्छामृत, २. द्विवर्षीय, ३. वृद्ध, ४. स्त्री, ५. द्विज, ६. अन्नाभाव से मृत, ७. कुष्ठी और ८. सप्तरात्रोर्ध्वमृत ये आठ शव वीर साधना में त्याज्य हैं। **'योगिनी तन्त्र'** के अनुसार अदुर्भिक्ष और अव्याधित शव की अस्थिमाला ही शुभ होती है। **'शक्तिसङ्गम'** तन्त्र में लिखा है कि कर्णनेत्रान्तरस्थ महाशङ्ख की माला उत्तम होती है। अन्य अंगों की अस्थिमाला मध्यम कोटि की होती है। राजदन्तः सामने के दो दाँत **'राजदन्त'** कहे गए हैं। इन्हीं से महाशङ्खमाला का **'मेरु'** बनाना चाहिए।

(५) दन्तमाला :

'कालीतन्त्र' के अनुसार दाँतों से बनी माला का मेरु 'राजदन्त' होना चाहिए। ऐसी 'दन्तमाला' सर्वसिद्धिप्रदा होती है। 'योगिनीतन्त्र' के अनुसार यह माला दन्तसंख्यक अर्थात् ३२ मणियों की होनी चाहिए।

(६) महाशङ्खमाला और दन्तमाला का शोधन :

मूलं ॐ ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं श्रां क्लीं क्लां मालारूपिणि सर्वलोकभक्षिणि हुं महाशङ्खमालां (नरदन्तमालां वा) शोधय शोधय फट् ठः ठः ठः स्वाहा। उक्त मन्त्र का १०८ बार जपकर विशिष्ट पञ्चगव्य से शोधन करे।

(७) कङ्कण शोधन :

ॐ मूलं ह्रीं स्त्रीं हूं श्रीं क्लीं केशिनि निराकेशिनि कङ्कणं शोधय शोधय हूं क्रों फट् ठः ठः स्वाहा। उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर मृगनाभि आदि अष्टगन्ध का लेप करे।

(८) यन्त्रशोधन :

मूलं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं देवि यन्त्रेश्वरि क्लीं श्रीं ॐ ह्रीं यन्त्रं शोधय शोधय ह्रः श्रः क्लः ठः ठः स्वाहा। उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे।

(९) महाशङ्खपात्र का पूजन

'हुं फट्' से नृकपाल को प्रक्षालित कर **'ह्रीं फट्'** से आधार पर रखे। फिर चार मन्त्रों से उसका पूजन करे-

१. ह्रां ह्रीं ह्रूं कालीकपालाय नमः। २. स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं तारिणी कपालाय नमः। ३. ह्रां ह्रीं ह्रूं नीलाकपालाय नमः। ४. ह्रीं स्त्रीं ह्रूं स्वर्ग कपालाय नमः।

ह्रीं सर्वाधाराय सर्वाय सर्वोद्भवाय सर्वशुद्धिमयाय सर्वासुर रुधिरारुणाय शुभ्राय सुराभाजनाय देवीकपालाय नमः।

(१०) महाशङ्खमाला संस्कार:

नित्यक्रिया कर साधक रहस्य माला को सात बार **'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं हूं फट् स्वाहा'** से अभिमन्त्रित कर उसे चषकपात्रादि में रखे। फिर आवाहनमुद्रा से देवी का उसमें आवाहन कर सपरिवार उसका यथाशक्ति उपचारों से या केवल गन्धपुष्प से पूजन कर 'रं' से धेनुमुद्रा द्वारा उसका अमृतीकरण, **'फट्'** से अवगुण्ठन, **'मत्स्य मुद्रा'** से आच्छादन कर उस माला को देवीरूपा ध्यान करते हुए उस पर निम्न सात मन्त्रों से सुधा विन्दु छोड़े--

१ ॐ ह्रीं स्वाहा, २ ॐ श्रीं स्वाहा, ३ ॐ हूं स्वाहा, ४ ॐ फट् स्वाहा, ५ ॐ ह्रीं श्रीं स्वाहा, ६ ॐ ह्रीं हूं स्वाहा, ७ ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

तब कस्तूरी, धूप, अगुरु आदि से उसे धूपित कर उक्त चषकादि पात्र से माला को उठाकर उसे निम्न मन्त्र से अभिमन्त्रित करे-

ॐ ह्रीं श्रीं महावज्रिणि महाघोररूपे कर्कश महास्थिमण्डले प्रविश सर्वसिद्धिं प्रयच्छ ॐ हूं श्रीं ह्रीं स्वाहा। ॐ महाकपालिनि महाघोररूपे स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं हूं फट् स्वाहा।

फिर दूर्वाक्षत से उसका पूजन कर मातृकामन्त्र से उसे सन्दीप्त कर 'हूं' कार से वेष्ठित करे। पश्चात् निम्न मन्त्र से उसे यथोक्त द्रव्यों की बलि देवें -

ॐ हूं ह्रीं हूं ॐ हूं श्रीं हूं ॐ हूं हूं ॐ हूं फट् हूं ॐ हूं स्वाहा। ॐ हूं महायोगिनि त्रिभुवनतारिणि महाशङ्खास्थिमालामध्येनिवासं कुरु सर्वसिद्धिं देहि सुरामांसोपहारान् गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय ह्रीं श्रीं हूं फट् स्वाहा।

अन्त में संहारमुद्रा से देवी का विसर्जन कर बाद में साधारण मालासंस्कार विधि द्वारा भी उसे संस्कृत करे।

माला संस्कार की अन्य विधि- -

'महाकालसंहिता', गुह्यकालीखण्ड में मालासंस्कार की विधि निम्न प्रकार बताई है-

मृत्युकालनवाक्षर्या क्षालनं पञ्चगव्यतः, अम्बाहृदयमन्त्रेण चन्दनाद्यभिघर्षणम् ।
धूपदानं दीपदानं षोडशार्णया, नैवेद्यदानं वाशिष्ठ्या ब्राह्मया प्राणप्रतिष्ठितः ।
रामाराधितया मेरुमणिस्पर्श उदाहृतः, शतं शताक्षरीजापः शतं षट्त्रिंशदक्षरी ।
विंशति योगविद्या च सहस्रार्ण दशस्मृतं, सहस्रं चापि गायत्रीरीतिरेष पृथक् स्थिता ॥

अर्थात् १ पञ्चगव्यस्नान, २ चन्दनादिलेपन, ३ धूपदीपनैवेद्य, ४ प्राणप्रतिष्ठा, ५ मेरु एवं उसके बाद अन्य मणियों का स्पर्श- यह क्रम है। उल्लेखनीय है कि 'महाशङ्ख' की माला हो, तो विशिष्ट 'पञ्चगव्य' का ही उपयोग होगा। शताक्षरी गायत्री से १०० बार तथा सहस्राक्षरी गायत्री से १० बार जप शोधन करें।

॥ अथ मुण्डासन विधि॥

मुण्ड साधना त्रि, पञ्च, नवमुण्डी साधना विषय में पूर्वार्द्ध भाग में विवरण दिया जा चुका है।

'मुण्डासनसाधना' के पूर्व वीरसाधनसामग्री से युक्त होकर **'शिवाबलि'** देनी चाहिये। तदनन्तर मङ्गलवार या शनिवार के दिन निर्दिष्ट लक्षणों से युक्त एक, पाँच या नौ मुण्ड लाकर 'पञ्चगव्य' से सिंचित कर, दुग्ध से स्नान कराये। फिर संविज्जल से स्नान कराकर सुरा से स्नान कराये। तब तैललेपन कर सिन्दूर, कज्जल से शोभित कर गन्धपुष्प से पूजन करे। फिर आधा हाथ खोदकर नीचे भूमि में गाड़े। प्रत्येक मुण्ड के सम्बन्ध में यही विधि विहित है। संख्या के अनुसार 'एकमुण्डी', 'पंचमुण्डी' या 'नवमुण्डी' आसन कहलाता है। यह विशिष्ट आसन एकान्त वन, श्मशानभूमि, पंचवटी या उत्तम लक्षणवाले स्थान में ही प्रस्तुत किया जाता है।

मुण्डासन पर त्रिकोण बनाकर **'ह्रीं'** से उसका पूजन करें। उसे महाकाल का आसन मान बलि प्रदान करें। फिर उस पर विराजमान होकर अपने को शिवस्वरूप मानकर महाविद्या के इष्ट मन्त्र का जाप करें। इससे महाविद्या की प्रसन्नता प्राप्त होगी। हीन उपासना में उस कुण्ड में जो मृत आत्मा थी उसकी पिशाच साधना को वशीभूत करके सांसारिक कर्म कराये जा सकते हैं।

मन्त्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं महाकाल बम बम फट् फट् प्रेत वेतालान् वशी कुरु कुरु स्वाहा।

॥ अथ चिता साधना प्रयोगः॥

चिता साधना प्रयोग अष्टमी, चतुर्दशी (उभय पक्षे) कृष्ण पक्षे विशेष। अथवा अमावस्या वा भौमवार दिन संयुक्त तो तब साधक प्रयोग करे। साधनद्रव्य प्रयोग हेतु श्री धर्माचार्य कृतलघुस्तव में कहा है-

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्यमध्वासवे।

(विप्र खीर, धी, मधु, आसव का प्रयोग करें)

ज्ञानार्णवे -

वर्णानुक्रमभेदेन वर्ण भेदा भवन्ति वै । अपि चः ''द्रवेण सात्विकेनेव ब्राह्मणः पूजयेच्छिवाम्'' ।
एवं दद्यात् क्षत्रियोऽपि पैष्टिकीं न कदाचन। नारिकेलोदकं कांस्ये ताम्रे दद्यात्तया मधु ॥
राजान्यवैश्ययोर्दानं न द्विजस्य कदाचन । एवं प्रदानमात्रेण हीनायुर्बाह्मणो भवेत् ॥

(ब्राह्मण नारिकेल का जल, मधु या कांस्य पात्र में अर्पण करें)

भैरवी तंत्रे -

यात्रावश्यं विनिर्दिष्टं मदिरादान पूजनम् । ब्राह्मणस्ताम्रपात्रे तु मधु मद्यं प्रकल्पयेत् ॥
ब्राह्मणो मदिरां दत्त्वा ब्राह्मण्यादेव हीयते । स्वगात्र रुधिरं दत्त्वा स्वात्महत्यामवाप्नुयात् ॥

(ब्राह्मण यदि मदिरा प्रदान करता है अर्थात् अपना रुधिर दे रहा है)

महाकाल संहितायाम् -

क्षीरेण ब्राह्मणैस्तर्प्या घृतेन नृपवंशजैः । माक्षिकैर्वैश्यवर्णैस्तु आसवैः शूद्रजातिभिः ॥

नीलतंत्रे -

सर्वसिद्धिकरी पैष्टी गौडी भोगप्रदायिनी । माध्वी मुक्तिकरी ज्ञेया सुख्या त्रिविधा प्रिये ॥
विद्या प्रदैक्षवी प्रोक्ता द्राक्षा राज्यप्रदायिनी । तालजा स्तंभने शस्ता खार्जूरी रिपुनाशिनी ॥
नारिकेलभवा श्रीदा पानसाख्या शुभप्रदा। माधूकाख्या ज्ञानकरी दारिद्र्यरिपुहारिणी ॥
मैरेयाख्या कुलेशानि सर्वपापप्रणाशिनी । क्षीरवृक्षसमुद्धुतं मद्यं वल्कलसंभवम् ॥
यस्यानंदं निर्विशेषं सामोदं च मनोहरम् । द्रव्यं तदुत्तमं देवि देवताप्रीतिकारकम् ॥

श्मशान भस्म से तिलक करे। निराहार या यताहार रहकर कर्म करे। सवस्त्र या निर्वस्त्र हो मुक्तकेशी होकर अर्धप्रहरबाद रात्रि वा अर्धरात्रि में चिता साधन करे। नेत्रों में अंजन लगाये, अंङ्गों में रक्तचंदनादि का लेपन करे। मूलमंत्र से सिन्दूर से उर्ध्वपु करे। हृदय में देवि एवं मूर्ध्नि में गुरु का ध्यान करे। पूजा बलि सामग्री पंचामृत, पंचगव्य (शाक्त साधना के पंचामृत, पंचगव्य पूर्व में वर्णित किये है जो कि प्रचलित से भिन्न है) अप्रक्षालित या प्रक्षालित प्राचीन चिता के पास जाये। प्रक्षालन पक्ष में अस्थिसंचय किया जाता है। पश्चिम दिशा में बैठकर पंचगव्य (**आसवं, संविदातोयं, समुज्ज्वल समुद्भव, शुक्लपुष्प। अन्यत्र भाव सर्वेस्वे संविद् गंगेत्तरजलं रेतरक्तं वरस्त्रियाः मद्यं च परमेशानि पंचगव्यानि कौलिकं**) से भूमि का प्रोक्षण करे।

अन्यत्र दिशाओं में खड्ग हाथ में लेकर उत्तर साधक रक्षा हेतु बैठे। सामान्यर्घ, पंचगव्य, पंचामृत (**आसवं, मधुकं, माँसं, योनितोयं च शोणितं। पंचामृतं देवि देवानामपिदुर्लभम्॥**) गन्धाष्टक (**वज्रकुण्डं गोलकं च गोपीचंदन, रोचना। सर्वमद्यं स्वयम्भू च कौला गंधाष्टकं विदुः**) इत्यादि का स्थापन करे पूजा प्रारंभ करे। गुरु गणेश वटुक, योगिनी, ब्राह्मी आदि अष्टमातृका को नमस्कार करे। बांये पैर को आगे कर चिता में मंत्र सहित तीन बार पुष्पांजलि देवे -

ॐ ये चात्र संस्थिता देवा राक्षसाश्च भयानकः । पिशाचा यक्षसिद्धाश्च गंधर्वाप्सरसां गणाः ॥
योगिन्यो मातरो भूताः सर्वाश्च खेचरस्त्रियः । सिद्धिदास्ता भयन्वद्य तथा च मम रक्षकाः ॥

सात बलिपात्र बनाये। चारों दिशाओं में चार तथा चिता के पश्चिम, मध्य, पूर्व भाग में त्रिकोण मंडल पर रखे। पूर्वदिशा के त्रिकोण पर श्मशान अधिपति की पाद्यादि से पूजन कर बलिप्रदान करे-

ॐ हूं (ह्सौः) श्मशानाधिपतये इमं साभिषान्नं (सामृतं) बलि गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय विघ्ननिवारणं कुरु कुरु सिद्धिं मे प्रयच्छ स्वाहा। इति बलिं समर्पयेत्। दुग्ध पंचगव्यादि से बलि देवे।

इसी तरह दक्षिण दिशा में भैरव की पूजा कर बलि देवे। **ॐ श्मशानाधिप भैरव भयानक इमं.....प्रयच्छ स्वाहा।**

पश्चिम दिशा में महाकाल के पूजा करे, बलि प्रदान करे- **ॐ श्मशानाधिप महाकाल इमं.....प्रयच्छ स्वाहा।**

उत्तर दिशा में कालभैरव की पूजा कर बलि प्रदान करे। **ॐ हूं श्मशानाधिप कालभैरव इमं.....प्रयच्छ स्वाहा।**

चिता में श्मशान कालिका की पूजा करे। **ॐ हूं श्मशानवासिनी महाभीमे कालरात्रि महाकालि कालिके घोरनिः स्वने गृहाणेमं बलिं मातर्देहि सिद्धिमनुत्तमाम्॥ ॐ ह्रीं कालिकायै स्वाहा॥**

भूतनाथ की पूर्जन कर बलि प्रदान करे- **ॐ हूँ श्मशानाधिप भूतनाथ इमं सामिषान्नं....प्रयच्छ स्वाहा।**

श्मशान मस्तक पर गणनाथ की पूजा करे-**हूं श्मशानाधिप सर्वगणनाथ इमं....प्रयच्छ स्वाहा।**

पश्चात् चिता के पश्चिम दक्षिण भाग में कुछ अस्थि का संचय करे। **ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः** से पंचगव्य से प्रोक्षण करे।

भोजपत्र या वटपत्र पर ब्रह्म, विष्णु, महेश, ईश्वर, सदाशिव के मंत्र रक्तचंदनादि से लिखे उनको अस्थियों पर रखे। उन पर कंबलादि का आसन रखें उस पर वीरासन से बैठे। पश्चात् रक्षा विधान हेतु वीरार्दन मंत्र से अभिमंत्रित कर १० दिशाओं में १० लोह शंकु रोपण करे।

मंत्र - हूं हूं ह्रीं ह्रीं कालिके घोरदंष्ट्रे प्रचण्डे चण्डनायिके दानवान् दारय दारय हन हन परवीरं महाविघ्नं छेदय छेदय स्वाहा हूं फट्।

अर्क के कपास वा कार्पास से कर्पूर मिश्रित वर्तिका बनाये। घृत, तैल से पूरित करे। अघोरास्त्र मंत्र से रक्षा कर दीप जलायें।

मंत्र - ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोराघोरतर तनुरूप चट २ प्रचट २ कह २ बम २ बंध २ घातय २ स्वाहा।

इसके बाद यंत्र की पूजा करे। भूतशुद्धि इत्यादि व षोढान्यास करे। विशेषार्घ स्थापन करे। चिता मध्य में महाचक्र (इष्ट यंत्र) की कल्पना कर सर्वविध पूजन करे। आवरण पूजा करे। यथा संख्यानुसार जप करे।

जयदुर्गा मंत्र से अर्घ देवे - **ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा।**

चारों ओर तिलों का विकरण करे - **तिलोऽसि सामदेवत्यो गोसवस्तृप्ति कारकः। पितृणां स्वर्गदाता त्वं मर्त्यानामभयक्षमः। भूतप्रेतपिशाचानां विघ्नेषु शांति कारकः।**

जयदुर्गा मंत्र से सरसों बिखेरें फिर सात कदम चले फिर चिता के पास आवे देवी का पूजन कर जप करे। छाग बलि इत्यादि कर्म विधान करे।

॥ अथ शवसाधना प्रयोग:॥

शव साधना में शव किसका व कैसा होना चाहिये इसका वर्णन महाशंख माला विषय में वर्णित किया जा चुका है। प्रयोग कर्म चिता साधन के समान ही है। साधक पूजा सामग्री कौलिक पंचगव्य, पंचामृत एव बलिद्रव्यों सहित श्मशान में जाएं। स्थान शोधन करे गुरु गणेशादि का स्मरण करे। वीरार्चन (वीरार्दन) मंत्र भूमि पर लिखे तीन पुष्पांजलि देवे।

मंत्र चितासाधन में - **ॐ ये चात्र...मम रक्षकाः।**

चिता साधन विधि के अनुसार श्मशान के अधिपतियों को ७ बलि प्रदान करे।

ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर.....अघोर मंत्र से शिखा बंधन करे सरसों बिखेरे। "**ॐ सहस्त्रार हुं फट्** " इस सुदर्शन मंत्र से आत्म रक्षा करे। भूतशुद्धि एवं अन्य न्यास करे। चितासाधन विधि के अनुसार जयदुर्गा मंत्र से तिल विकिरण करे। पश्चात् शव के समीप जाये। मूल मंत्र से शव को देखे, "**हूं फट्**" से प्रोक्षण करे।

तीन पुष्पांजलि शव को देवे - **ॐ हूं मृतकाय नमोऽस्तु फट्।** स्पर्श पूर्वक शव को प्रणाम करे-

ॐ हूं रे वीर परमानन्द शिवानन्द कुलेश्वर। आनंदभैरवाकार देवीपर्यङ्क शङ्कर। वीरोऽहं त्वां प्रपद्यामि उत्तिष्ठ चण्डिकार्चने।

सुगंधित जल एवं पंचगव्य से शव को स्नान कराये।

मंत्र - ॐ ह्रीं मृतकाय नमः।

गंधादि से लेपन कर शव को धूपदीपक दिखाये। शव को आगे से एवं पृष्ठभाग पर भी लेपन करे। बाहु से कटिप्रदेश का भाग **चतुरस्त्र** माने कटिप्रदेश को **जप स्थान** माने। शव के मुंह में एला लवङ्ग जायफल खदिर ताम्बूल रखे तथा शव को अधोमुख करे। शव को कुशादि से आसन देवे। बाहु से कटि भाग पर्यन्त को चतुरस्त्र मानकर अष्टदल बनाये बाहर चारद्वार युक्त भूपुर चंदनादि से बनाये। कम्बलादि का आसन बिछाये।

१२ अंगुल प्रमाण की यज्ञकाष्ठ (चिताकाष्ठ) की १० कीलें दशों दिशाओं में गाड़े उनके पास में इन्द्रादि दशदिक्पालों को बलि प्रदान करे।

ॐ हूं शवाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः, ॐ डां डाकिनीभ्यो नमः, ॐ ह्रीं चतुः षष्ठिकोटियोगिनीभ्यो नमः से कुछ दूरी पर बलि देवे। पूजा सामग्री से कुछ दूर उत्तर साधक हाथ में तलवार लेकर बैठे।

मूल मंत्र उच्चारण कर **''ह्रीं फट् शवासनाय नमः''** से शवासन की पूजा करे। शव के ऊपर घोड़े पर बैठते है उस तरह से पूर्वाभिमुख होकर बैठे। अपने पैरों के नीचे कुशा रखें। शव के केशों को खोलकर उनकी जूटिका बांधे। अपने बाएं भाग में अर्घ्यादि पात्र स्थापित करे। प्राणायामादि क्रियाकरे। वीरार्चन (वीरार्दन) मंत्र से लोहे की कीलें दशदिशाओं में गाड़े। पूर्वोक्त विधि से दक्षिण में स्थापित करे। बद्धजूटिका में अपने देवता के यंत्र की पूजा करे आवरण पूजा कर सविधि पूजा कर बटुकादि को बलि देवे। शव के सम्मुख खड़े होकर प्रार्थना करे-

वशे मे भव देवेश ममामुकसिद्धिं देहि महाभाग कृताक्षमपदाम्बर।

मूल मंत्र से वस्त्रादि द्वारा शव के दोनों पैर बांधे।

ॐ भीम भीम महाभाव भव्यलोचन भावुक। त्राहि मां देवे देवेश शवानामधिपाधिप॥

मंत्र से शव के पैरों तले त्रिकोण बनाये। उसके पुनः अश्वारूढ हो शवपर बैठै, शव के दोनों बाहु फैला देवे उनके नीचे कुशा रखे। पहले की तरह उनपर अपने पैर रखे। पुनः प्राणायादि कर मौन होकर ध्यान पूर्वक यथा संख्या मूल मंत्र का जप करे। रात्रिभर सूर्योदय पूर्व तक जप करे। कहीं कहीं शव के हृदय पर बैठकर जप करते समय शव के उठने की संभावना रहती है। या तो दोनों हाथों को रस्सी व कील के साथ बांध देवे अथवा उल्टेशव पर जप करे। शव के मुँह में देवता की पूजन कर अर्घादि देवे। कहीं कहीं अतिभय पैदा होता है। आदि मध्य या समाप्ति पर छागादि बलि देवे। सावधानी पूर्वक जप करे जपफल देवता के अर्पण कर देवता का विसर्जन करे। शवजूटिका का मोचन करे शव का प्रक्षालन करे। पैरों के बंधन खोले तथा पैरों पर मार्जन करे। पूजा द्रव्यों को जल में प्रवाहित करे। शव को जल में प्रवाहित करे या गाड़ देवे। स्नान करके घर आवे। दिन को पिष्ट की पुतली बनाये फिर उसका वध करे।

ॐ अग्रिये दिवसे रात्रौ येषां देवानां यजमानोऽहं ।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं नरकुञ्जरशूकरम् ॥

इति खड्गेन पिष्टपुत्तलीं घातयेत्।

दिन में नित्य पंचगव्य पीवे। १०,१५, २०,२५ वा २५ ब्राह्मणों को भोजन कराये। स्वयं स्नान करे उत्तम जगह पर निवास करे। अपने कुलाचार से ३ या ६ रात्रि तक गुप्त रुप से करे। १५ दिन तक पंचगव्य प्राशन करे, दिन में मौन रहे। स्त्री नृत्य गीतादि तथा बाहर जाने का वर्जन करे। सत्यभाषण करे, जितेन्द्रिय रहे, गौ ब्राह्मण की सेवा करे। सोलहवें दिन तीर्थ स्नान करे। ३५० बार देवता का तर्पण करे।

॥ इति शव साधना क्रम॥

॥ अथ गुह्यकाली तन्त्रम् ॥

(महाकाल संहितायाम्)

काली के अनेक रूप हैं। साधकों के हित के लिये ''देवी खण्ड पूर्वार्द्ध'' में काली विषय में लिखा जा चुका है। **सृष्टिकाली, स्थितिकाली, संहारकाली, अनाख्याकाली, भासाकाली, गुह्यकाली, कामकलाकाली** इत्यादि २४ भेद है। मूल तन्त्र ग्रन्थों में भाषा क्लृष्ट है तथा क्रम भी पूर्ण नहीं है। महाकाल संहिता में गुह्यकाली व कामकलाकाली की पूजा का विस्तृत वर्णन है। उक्त ग्रन्थ के अनुसार गुह्यकाली व कामकलाकाली की सरल पूजा व आवश्यक विधान का वर्णन साधकों के लिये प्रस्तुत किया जा रहा है। ग्रन्थ में कई गूढ़ रहस्य हैं, मन्त्रोद्धार व क्रमोद्धार समझना बहुत ही कठिन है जो साधक अधिक विस्तृत जानना चाहे वे उक्त ग्रन्थ का अवलोकन करें।

गुह्यकाली के ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, अग्नि, वरुण, भरत, इन्द्र, हिरण्यकश्यप, रावण, राम इत्यादि २४ उपासक मुख्य हुये हैं।

गुह्यकाली के १० शिर भी है एवं १०० शिर भी है। अलग - अलग देवताओं ने भिन्न भिन्न रूप में उपासना की है।

पंच प्रेतासन पर भैरव पीठ पर भगवती विराजमान है।

॥ पञ्चप्रेत ध्यानम् ॥

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।
एते पञ्च महाप्रेताः स्थिता सिंहासनादधः ॥
पीतः श्यामस्तथा रक्तो धूम्र श्वेतः क्रमादिमे ।
दण्डं शक्तिं च चक्रं च शूलं खट्वाङ्गमेव च ।
धारयन्तो मुखन्यस्ततर्जनीकास्त्रिलोचना ॥

॥ भैरवपीठ ध्यानम् ॥

पंचप्रेत के पश्चात् षष्टम् ध्यान भैरव का करें !

खर्वं स्थूलतरं घोरं कृष्णवर्णं चतुर्भुजम् । पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं च कीकसाभरणाङ्कितम् ॥
खट्वाङ्गं कर्त्रिकां दक्षे कपालं डमरुं ततः । धारयन्तं मुण्डमालायुतं दंष्ट्रोग्रभीषणम् ॥

उसके ऊपर षोडशदल की कल्पना करें। उसमें वाजपेय, षोडशी पुण्डरीकादि यज्ञों का पूजन करें।

ज्योतिष्टोमश्चाग्निष्टोमो वाजपेयश्च षोडशी । चयनं पुण्डरीकश्च राजसूयोऽश्वमेधकः ॥
बार्हस्पत्यं विश्वजिच्च गोमेधो नरमेधकः । सौत्रामण्यर्द्ध सावित्री सूर्यक्रान्तो बलम्भिदः ॥

उसके ऊपर शिवासन की कल्पना करें।

बिन्दुनादयुतं नीलं शशाङ्ककृतलाञ्छनम् ।

महार्घरत्नाभरणं त्रिनेत्रं भीमदर्शनम् ॥
वज्रदंष्ट्रानख स्पर्शं पद्मपृष्ठं शिवोत्तमम् ।
पिङ्गोग्रैकजटाभारं द्विभुजं नागहारिणम् ॥
वसानं चर्म वैयाघ्रं शूलखट्वाङ्गधारिणम् ॥

उनके ऊपर अष्टदल की कल्पना करें जिसमें पूर्वादि दिशाओं में धर्म ज्ञानादि तथा आग्रेयादि कोणों में यश विवेकादि का पूजन करें।

धर्मो ज्ञानं च वैराग्यमैश्वर्यं च चतुर्दिशि । यशो विवेकः कामश्च मोक्षश्चेति विदिग्दिशि ॥

गुह्यकाली १० मुखी, ८० मुखी एवं शतमुखी है, जिनमें दशमुखी का ही विशेष महत्व है अन्य स्वरूप तो कारण भेद से प्राप्त हुये हैं।

प्रकृतिः सा परिज्ञेया कालीनां जगदम्बिका । अन्या विकृतयः प्रोक्ता कार्यकारण भेदतः ॥

॥ दशमुख्या गुह्यकाली ध्यानम् ॥

एवमष्टदलाम्भोजोपविष्टां गुह्यकालिकाम् । ध्यायेन्नीलोत्पल श्यामामिन्द्रनील समद्युतिम् ॥१॥
घनाघनतनुद्योतां स्निग्धदूर्वादलद्युतिम् । ज्ञानरश्मि घटाटोप ज्योतिर्मण्डल मध्यगाम् ॥२॥
दशवक्त्रां गुह्यकालीं सप्तविंशतिलोचनम् । द्विद्विनेत्रयुतां वक्त्रे वाम-दक्षिण-सम्मुखे ॥३॥
सप्तस्वन्येषु वक्त्रेषु त्रित्रिलोचन संयुताम् । उर्ध्ववक्त्रं (दीपिकाख्यं) चण्डयोगेश्वरीति हि ॥४॥
तस्याधः केशरिमुखं श्वेतवर्णं विभीषणम् । तस्याधः फेरुवक्त्रं च कृष्णं त्रैलोक्यडामरम् ॥५॥
वानरास्यं ततो वामे रक्तवर्णं महोल्वणम् । ऋक्षवक्त्रं भवेद्दक्षे धूम्रवर्णं भयङ्करम् ॥६॥
नरास्यं तदधो ज्ञेयं किर्म्मीराभं मदोत्कटम् । गारुडास्यं ततो वामे पिङ्गवर्णं सुचञ्चुकम् ॥७॥
दक्षिणे मकरास्यं च हरिताभं प्रकीर्तितम् । गजास्य वामतः प्रोक्तं गौरवर्णं स्त्रवन्मदम् ॥८॥
हयास्यं दक्षिणे काल्याः श्यामवर्णं विचिन्तयेत् । महादंष्ट्राकरालानि दारुणस्वनवन्ति च ॥९॥
अट्टाट्टहासयुक्तानि स्त्रवद्रक्तानि सर्वदा । लेलिहान विनिष्क्रान्त ललज्जिह्वान्वितानि च ॥१०॥
अहर्निशं कम्पमानान्यास्यानि दधतीं शिवाम् । भीमनिर्ह्लादिनीं भीमां भ्रूभङ्गकुटिलाननाम् ॥११॥
पिङ्गलोर्ध्व जटाजूटां चन्द्रार्धकृतशेखराम् । नानारत्न विनिर्माण सुमुण्डस्वर्ण कुण्डलाम् ॥१२॥
स्त्रवद्रक्त नृमुण्ड स्त्रक् कृत नक्षत्रमालिकाम् । आकण्ठ गुल्फ लम्बिन्यालंकृतां मुण्डमालया ॥१३॥
श्वेतास्थि गुलिकाहार ग्रैवेयक महोज्ज्वलाम् । शर्वादीर्घाङ्गुली पङ्क्ति मण्डितोरः स्थलस्थिराम् ॥१४॥
कठोरपीवरोत्तुङ्ग वक्षोज युगलान्वितम् । महामारकतग्राववेदिश्रोणि परिष्कृताम् ॥१५॥
विशालजघना भोगामतिक्षीण कटिस्थलाम् । अन्त्रनद्धार्भक शिरोबलत् किंकिणि मण्डिताम् ॥१६॥
चतुः पञ्चाशता दोष्णा भूषितां जगदंबिकाम् । रत्न मालां कपालं च चर्मपाशं तथैव च ॥१७॥
शक्तिं खट्वाङ्गमुण्डे च भुशुण्डीं धनुरेव च । चक्रं घण्टां ततो बालप्रेत शैलगतः परम् ॥१८॥

****

नरकङ्कालनकुलौ सर्पमुन्दादवंशिकाम् । मुद्गरं वह्निकुण्डं च डमरुं परिघं तथा ॥१९॥
भिन्दिपालं च मुसलं पट्टिशं प्रास एव च । शतघ्नीं च शिवापोतं वामहस्तेषु बिभ्रतीम् ॥२०॥
अथ दशभुजे रत्नमालां कर्त्रीमसिं तथा । तर्जनीमंकुशं दण्डं रत्नकुम्भं त्रिशूलकम् ॥२१॥
पञ्च पशुपतान् बाणान् शोषकोन्मादमूर्च्छकान् । संहारकान् मृत्युकरानेवं नामप्रधारिणः ॥२२॥
कुन्तं च पारिजातं च छुरिकां तोमरं तथा । पुष्पमालां डिण्डिमं च गृध्रं चैव कमण्डलुम् ॥२३॥
मासखण्डं स्रुवं बीजपूरं सूचीं तथैव च । परशुं च गदां यष्टिं मुष्टिं कुणपलालनम् ॥२४॥
धारयन्तीं महारौद्रीं जगत्संहारकारिणीम् । जपापुष्पाभनागेन्द्रकृत नूपुरयुग्मकाम् ॥२५॥
पीतभोगीन्द्र विहित सर्वहस्तैक कङ्कणाम् । पाटलोरग निर्माण लसदङ्गदशोभितम् ॥२६॥
धूसराहिकृतस्फीत कटिसूत्रावलम्बिनाम् । सुपाण्डुरभुजङ्गेन्द्रकृत यज्ञोपवीतिनीम् ॥२७॥
पिशङ्गाशी विषाभोगकृतहार महोज्ज्वलाम् । कल्माषपवनाहारकृत ताटङ्कशोभितम् ॥२८॥
श्वेतदर्वी करानद्ध जटामुकुट मण्डिताम् । वैयाघ्रचर्मवसनां दीपिचर्मत्तरीयकाम् ॥२९॥
किङ्किणीजालशोभाढ्यां वीरघण्टानिनादिनाम् । नूपुराराववलितां घर्घरारावभीषणाम् ॥३०॥
कटकाङ्गद केयूरनरास्थिकृत शोभनाम् । रक्तपद्ममयीमाला पादपद्मावलम्बिताम् ॥३१॥
काञ्चीकह्लारक प्रेङ्खत् कटीमध्य विराजिताम् । ब्रह्मसूत्रोज्ज्वलत् कण्ठयोगपट्टोत्तरीयकाम् ॥३२॥
सौम्योग्रभूषणैर्युक्तां नागाष्टकविराजिताम् । रत्नकुण्डलकर्णश्रीं पञ्चकालानले स्थिताम् ॥३३॥
पद्मोपरि स्थितां देवीं नृत्यमानां सदोदिताम् । पद्मासनसुखासीनां सर्वदेवाधिदेवताम् ॥३४॥
मुक्तहुङ्कारजिह्वाग्रं चालयन्तीं विचिन्तयेत् । त्रिकोटिशक्ति चामुण्डा नवकोटिभिरन्विताम् ॥३५॥
महायोगिनि कोटीनामष्टादशभिरुर्जिताम् । चरन्तीं च हसन्तीं च डाकिनीषष्टिकोटिभिः ॥३६॥
भैरव्यशीतिकोटीभिः परिवारैश्च वेष्टिताम् । कोटिकालानल ज्वालान्यक्कारोद्यत् कलेवराम् ॥३७॥
महाप्रलय कोट्यर्क विद्युदर्बुद सन्निभाम् । दुर्निरीक्ष्यां महाभीमां सेन्द्रैरपि सुरासुरैः ॥३८॥
शत्रुपक्षक्षयकरीं दैत्यदानव सूदिनीम् । निर्विकारां निराभासां कूटस्थां चिद्विलासिनीम् ॥३९॥

॥ शतशीर्षाया गुह्यकाली ध्यानम् ॥

ध्यानमस्या विधेहि त्वं कथ्यमानमतः परम् । शतवक्त्रा गुह्यकाली दोर्दण्डायुतमण्डिता ॥१॥
सिंहेभबाजिशरभकपि फेरुगरुत्मताम् । ऋक्षोष्ट्रखरवक्त्राणां प्रस्तारोऽधः क्रमात् प्रिये ॥२॥
शतत्रयेण नेत्राणां शोभितानां सदैव हि । आगुल्फलम्बिविस्त्रस्तजटोपरि विराजिताम् ॥३॥
शिव विष्णु शिरोन्यक्त प्रत्यालीढ पदक्रमाम् । वाम पञ्चसहस्त्राणि बाहूनां विभ्रतीं शिवाम् ॥४॥
तावन्त्येव हि चापानां धारयन्तीं कराम्बुजैः । दक्षे च पञ्चसाहस्रे शरास्त्राणि च विभ्रतीम् ॥५॥
व्याघ्रचर्मपरीधानां चन्द्रार्धकृतशेखराम् । अष्टोत्तर सहस्त्राभिर्मुण्डमालाभिरन्विताम् ॥६॥

लेलिहान महाभीम ललज्जिह्वाकरालिनीम् । भ्रुकुट्यरालवदनां त्र्यक्षां सर्वानने अपि ॥७॥
शार्दूलत्वक् परीधानां विश्वविस्तारिताननाम् । गलन्नृमुण्डहाराढ्यां नादापूरित पुष्कराम् ॥८॥
ज्वलद्धुतवहाकार विस्त्रस्तकच सञ्चयाम् । नरास्थिकृत सर्वाङ्गभूषणां जगदम्बिकाम् ॥९॥
कोटि कोटि महाघोर भैरवी योगिनी युताम् । शतवक्त्रां गुह्यकालीं गलद्रुधिरचर्चिताम् ॥१०॥
सिंहासना सृगध्वजासनाद्यैः पूर्ववद्युताम् । एवं रूपां गुह्यकालीं ध्यायेन्निश्चलमानसः ॥११॥

|| अथ साधक भेदा :||

गुह्यकाली के साधकों के तीन भेद हैं।-

१. प्रथम भेद के उपासक निर्गुण, निर्विकार, गुणातीत, निष्प्रपंचा, कालातीता, चैतन्य रूप में ध्यान करते हैं॥

२. समस्त ब्रह्माण्ड को भगवती के शरीर में समिष्टि मान अंलग अलग लोकों को भगवति का अङ्ग रूप मानकर विराट् रूप में उपासना करते हैं।

३. कारुण्यरूपा भगवती के सगुण रूप की उपासना करते हैं।

|| उपासकानां शाखा भेद :||

अथर्ववेद में ६ शाखा कही है जिनका **गुह्योपनिषद** में वर्णन है। यथा -

नामानि श्रृणु शाखानां तत्राद्या वारतन्तवी । मौञ्ञायनी द्वितीया तु तृतीया तार्णवैन्दवी ॥
चतुर्थी शौनकी प्रोक्ता पञ्चमी पैप्पलादिका । षष्ठी सौमन्तवी ज्ञेया सारात्सारतरा इमा ॥

|| द्वितीयोपासक नाम निर्देश :||

द्वितीयोपासकादीनां श्रृण्वनुक्रममादरात् ।
इन्द्रश्चन्द्रश्च वायुश्च कुबेरो वरुणस्तथा ।
यमोग्निर्निर्ऋतिस्त्वष्टा धाता पूषा भगोर्यमा ॥१॥
अंशुर्दिवाकरो मित्रो नासत्यौ वसवस्तथा । रुद्राश्च विश्वेदेवाश्च साध्याश्च समरुद्गणाः ॥२॥
स्वायम्भुवाद्या मनवो मरीच्याद्या महर्षयः । सुरर्षयो नारदाद्याः शुक्राद्याश्चासुरर्षयः ॥३॥
ब्रह्मर्षयः सनन्दाद्याः वासुक्याद्या भुजङ्गमाः । राजर्षयो मरुत्ताद्या दक्षाद्याश्च प्रजर्षयः ॥४॥
उर्वश्याद्याश्चाप्सरो भौमाद्याः किन्नरास्तथा । हाहाद्याश्चापि गन्धर्वास्तथा विद्याधरर्षयः ॥५॥
असुरा विप्रचित्ताद्या नमुच्याद्याश्च दानवाः । हिरण्याक्षादयो दैत्या रावणाद्याश्च राक्षसाः ॥६॥
तस्या उपासकाः सर्वे ब्रह्मविष्णुशिवोद्भवाः ।

उपासक शाखा इस प्रकार है - वारतन्तवी, मौञ्ञायनी, तार्णनैन्दनी, शौनकी, पैप्पलादिका, सौमन्तवी।

द्वितीयोपासकोपासिताया ध्यानस्य वेदप्रतिपाद्यत्वम्-

ध्यानं चैषां विराड्रूपं वेदोक्तं तन्निशामय ॥७॥

अथर्ववेदमध्ये तु शाखा मुख्यतमा हि षट् ।
स्वयम्भुवाद्याः कथिताः पुत्रायाथर्वणे पुरा ॥८॥

॥ द्वितीयोपासकोपासितायाः ध्यानम् ॥

विराड्ध्यानं हि तज्ज्ञेयं महापातकनाशनम् ॥९॥

ब्रह्माण्डाद् बहिरूर्ध्वं हि महत्तत्त्वमहङ्कृति । रूपाणि पञ्च तन्मात्राः पुरुषः प्रकृतिर्नव ॥१०॥
महापाताल पादान्तलम्बां तस्याः जटां स्मरेत् । ब्रह्माण्डोर्ध्वकपालं हि शिरस्तस्याः विभावयेत् ॥११॥
देवीलोकं ललाटं च षड्त्रिंशल्लक्ष योजनम् । मेरुः सीमान्तदण्डोस्याः ग्रहरत्न समाकुलाः ॥१२॥
अजवीथी नागवीथी भ्रुवावस्याः प्रकीर्तिते । शिवलोकश्च वैकुण्ठलोकः कर्णावुभौ मतौ ॥१३॥
रोहितं तिलकं ध्यायेन्नासां मन्दाकिनीं तथा । चक्षुषी चन्द्रसूर्यो च पक्ष्माणि किरणास्तथा ॥१३॥
गण्डौ स्यातां तपोलोकसत्यलोकौ यथाक्रमम् । जनलोकमहर्लोकौ कपोलौ परिकीर्तितौ ॥१४॥
स्यातां हिमाद्रिकैलासौ तस्या देव्यास्तु कुण्डले । स्वर्लोकश्च भुवर्लोको देव्या ओष्ठाधरौ मतौ ॥१५॥
दिक्पतीनां ग्रहाणां च लोकाश्चाधो रदावली । गन्धर्वसिद्धसाध्यनां पितृकिन्नररक्षसाम् ॥१६॥
पिशाचयक्षाप्सरसां मरीचेः पायिनां तथा । विद्याधराणामाज्योष्मपानां सोमैकपायिनाम् ॥१७॥
सप्तर्षीणां ध्रुवस्यापि लोका ऊर्ध्वरदावली । मुखं च रोदसी ज्ञेयं द्यौर्लोकश्चिबुकं तथा ॥१८॥
ब्रह्मलोको गलः प्रोक्तो नभो वक्षःस्थलं तथा । हारो नक्षत्रमाला स्यात् वाहवो दिक्विदिक्चयाः ॥१९॥
तत्तल्लोकफलं चास्त्रं पृष्ठं द्यौः परिकीर्तिता । तथान्तरीक्षमुदरं गिरयोन्त्राणि सर्वशः ॥२०॥
जठरः सिन्धवः प्रोक्ता वायवः प्राणरूपिणः । वनस्पतय औषध्यो लोमानि परिचक्षते ॥२१॥
विद्युद्दृष्टिरहोरात्रं निमेषोन्मेषसंज्ञकम् । विश्वं तु हृदयं प्रोक्तं पृथिवी पाद उच्यते ॥२२॥
तलं तलातलं चैव पातालं सुतलं तथा । रसातलं नागलोकाः पादांगुल्यः प्रकीर्तिताः ॥२३॥
वेदाः वाचः स्यन्दमाना नद्यो नाड्योमिता मताः । कलाकाष्ठामुहूर्ताश्च ऋतवोऽयनमेव च ॥२४॥
पक्षा मासास्तथा चाब्दाश्चत्वारोपि युगाः प्रिये । कफोणिर्मणिबन्धश्च जङ्घोरु कटिवंक्षणाः ॥२५॥
प्रपदाश्च स्फिचश्चैव सर्वाङ्गानि प्रचक्षते । वैश्वानरः कालमृत्त्यू जिह्वात्रयमिदं स्मृतम् ॥२६॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं मन्त्रमस्याः प्रचक्षते । प्रलयो भोजनकालस्तृप्तिस्तेन च नाल्पिका ॥२७॥
ज्ञेयः पार्श्वपरीवर्तो महाकल्पान्तरोद्भवः । विराड्रूपस्य ते ध्यानमिति संक्षेपतोर्पितम् ॥२८॥

एतस्याः स्वरूपाज्ञानमेव पूजेतिनिर्देशः:-

तस्याः स्वरूपविज्ञान सपर्या परिकीर्तिता । तदेव हि श्रुतिप्रोक्तमवधारय पार्वति ॥२९॥

॥ महाकाल उवाच ॥

गुह्योपनिषदित्येषा गोप्याद् गोप्यतरा सदा ।

चतुर्भ्यश्चापि वेदेभ्यः एकीकृत्यात्र योजना ॥१॥
उपविष्टवन्तः सर्गादौ सर्वानेव दिवौकसः ।
एवं विधं हि यद् ध्यानमेवरूपं च कीर्तितम् ॥२॥
सा सपर्या परिज्ञेया विधान मधुना शृणु ।

॥ द्वितीयोपासकोपासितायाः विधानम् ॥

सोऽहमस्मीति प्रथमं साहमस्मि द्वितीयकम् ।
तदहमस्मि तृतीयं च महावाक्यत्रयं भवेत् ॥३॥

॥ स्वागमस्य वेद पुराणाभ्यामुपोद्वलनम् ॥

आद्यान्येतानि वाक्यानि गोप्याद् गोप्यतराणि हि ।
वेदेषु च पुराणेषु कथितानि स्वयंभुवा ॥४॥
देवीसन्तोषकारिणी पठ्यन्ते तत्त्वदर्शिभिः ।

॥ ऊर्ध्वनिर्दिष्ट महावाक्यत्रयस्य ऋष्यादि निर्देशः ॥

ब्रह्मविष्णुमहारुद्रास्त्रयाणामृषयो मताः ।
जगतीपंक्तिगायत्रीच्छंदासि परिचक्षते ॥५॥
तथानल्पफलाः प्रोक्ताः सुखैश्वर्यविधायकाः ।
देवताः गुह्यकाली च रजः सत्त्वतमोगुणाः ॥
सर्वेषां प्रणवो बीजं हंसः शक्तिः प्रकीर्तिता ॥६॥
मकारश्च अकारश्च उकारश्चेति कीलकम् ।
एभिर्वाक्यत्रयैः सर्वं कर्म प्रोक्तं विधानकम् ॥७॥
अनुक्षणं जपश्चैषां निश्चयः परिकीर्त्यते ।
द्वितीयोपासकानां हि परिपाटीयमीरिता ॥८॥

॥ द्वितीयोपासक विहितोपासनाया महिमा ॥

एवमाचरते यस्तु मनुष्यो भक्तिभावितः । विमुक्तः सर्वपापेभ्यः कैवल्योपतिष्ठते ॥९॥
सर्वाभिः सिद्धिभिस्तस्य किं कार्यं कमलानने ।
कुलं पवित्रं जननी कृतार्था विश्वम्भरा पुण्यवती च तेन ।
अपार संसार समुद्रमध्ये ईदृग्विधो निश्चयो यस्य जातः ॥१०॥
मेरुमन्दरतुल्यानि पावकानि महान्त्यपि । तं प्राप्य विलयं यान्ति तूलानीव हि पावके ॥११॥
जपन्यासार्चनैस्तस्य किं कार्यं वरवर्णिनि । यस्येदृशं विधानं हि जागरूकं सदा हृदि ॥१२॥
जपन्यासार्चनैस्तस्य किं कार्यं वरवर्णिनि । विधानस्यास्य महिमा मया वक्तुं न शक्यते ॥१३॥
त्रुटिमात्रमपीदं हि विधानं विदधत् प्रिये । सप्तावरान् सप्तपूर्वान् तारयेद् वंशसंभवान् ॥१४॥

साुयुज्यमोक्षमाप्नोति स्वयमप्यतिनिर्ममः । एतस्य हि विधानस्य क्रियमाणस्य पार्वति ॥१५॥
सिद्धयो विघ्नकारिण्यः फलप्राप्तिश्च तादृशी । ध्यानपूजा जपन्यासा केवलायासहेतवः ॥१६॥
महाफलमनायासादिमेकं विशिष्यते ॥१७॥
द्वितीयरूपं देव्यास्तु द्वितीयोपसकास्तथा ।
॥ इति ते कथितं सर्वं तृतीयमधुना शृणु ॥

॥ महाकाल उवाच ॥

अथ सृष्टेषु सर्वेषु देवेषु जगदम्बाया । दत्ताधिकारेषु तथा तत्तत्कार्यैकसिद्धये ॥१॥
बभूव प्राकृतः सर्गो मैथुन्यः कामसंभवः । तत्रादौ मनवो जाताश्चतुर्दश च वासवाः ॥२॥
मरीच्याद्याश्च मुनयस्तद्वंश्याश्चापरे तथा । इन्द्रादयस्तथा रुद्रा आदित्या वसवोऽनिलाः ॥३॥

उत्कर्षार्थं देवेषु पारस्परिक कलहः-

ते च स्वयस्याधिकारस्योत्कर्षार्थमतिरेकतः । अहमहमिकया बद्धस्पर्धास्तुल्येपि जन्मनि ॥४॥

देव्याः प्रसादार्थं देवानां कृच्छ्रं तपः

चक्रुस्तपो महाघोरं देव्याराधनहेतवे । निराहारास्तपोनिष्ठास्तच्चित्तास्तत्परायणा ॥५॥
केचिद् वर्षायुतं देवि केचिन्नयुतमेव च । अन्ये च प्रयुतं दत्तचित्ता भक्तिपरायणाः ॥६॥
ध्यानलीना यतात्मानस्तदर्पितमनः क्रिया । पूर्वोदितोपनिषदो गृणन्तो वाक्यसंयुताः ॥७॥
ततस्तुतोष देवानां गुह्यकाली वरानने । वर्षवातापक्लिष्टवपुषां शुद्धचेतसाम् ॥८

देवन्यो वरं दातुं देव्या आविर्भावः-

अथैषां वरदानार्थमाविरासीत् सुरेश्वरी । वरं वृणुध्वमित्युक्तास्तेहं पूर्विकयोद्धताः ॥९॥
व्यवदन्त मिथः सर्वे गणरूपा दिवौकसः । निवेदयामासुरपि देव्यै स्वस्वाशयं च ते ॥१०॥
तुल्ये तपसि सर्वेषां स पुरस्ताद ग्रहीष्यति । वरं त्वत्तो जगद्धात्रि पश्चात् कथमहं पुनः ॥११॥
वरं वा दित्ससि यदि तदा युगपदर्पय । तुल्ये तपसि तुल्यायां तव प्रीतौ सुरेश्वरि ॥१२॥
मत्तः पूर्वं वरमयं ग्रहीष्यति कथं शिवे । पश्चादहं कथमिति दुःखं मां वाधते महत् ॥१३॥
एवं सर्वेपि कलहायमानास्तु परस्परम् । गृहीतवन्तो न वरमीर्ष्याकुलितमानसाः ॥१४॥

॥ देवादीनां कल्हापाकृतये देव्या विविधमुखता वर्णनम् ॥

इत्थं परस्परं तेषामहङ्कारानुवर्तिनाम् । विवादं प्रेक्ष्य देवानां हसन्ती त्रिदशेश्वरी ॥१५॥
चक्रे तावन्ति वक्त्राणि युगपद् वरदत्तये । सदाशिवायैकवक्त्रा त्रिवक्त्रा त्रिगुणाय च ॥१६॥
प्रेतेभ्यः पञ्चवक्त्राऽभूद् वरदानार्थमम्बिका । सप्तर्षीणां सप्तवक्त्रा वसूनामष्टतुण्डिका ॥१७॥
ग्रहाणां नववक्त्रा च दिक्पालानां दशानना । एकादशास्या रुद्राणां सूर्याणां द्वादशानना ॥१८॥

त्रयोदशास्या विश्वेषां वेतालानां तथैव च । चतुर्दशमुखेन्द्राणां मनूनां तावदानना ॥१९॥
अग्निनां वरदानार्थं गुह्या पञ्चदशानना । सिद्धानां षोडशास्या च साध्ये सप्तदशानना ॥२०॥
अष्टादशास्या यक्षाणामूनविंशा च रक्षसाम् । विंशत्यास्या किन्नराणामेकविंशाप्सरःसु च ॥२१॥
गुह्यकानां पिशाचानां तावद्वक्त्रा महेश्वरी । द्वाविंशास्या भास्कराणां गन्धर्वाणां द्वयोत्तरा ॥२२॥
विद्याधराणां त्रिंशास्या षट्त्रिंशास्या प्रजेशितुः । तुषितानां षष्ट्यास्या मारुतानामशीतिका ॥२३॥
दैत्यानामसुराणां च दानवानां शताधिका । महाकल्पे तु संप्राप्ते अयुतास्या भविष्यति॥२४॥
द्विलक्षबाहुर्नियुतदीर्घदेहा भविष्यति । एवं भूत्वा जगद्धात्री वरं तेभ्यो ददौ पुरा ॥२५॥

॥ देव्याः विस्मापकत्वं स्वरूपम् ॥

निर्गुणा सगुणा जाता निराकारापि साकृतिः । अदेहाऽपि सदेहाभूदरूपा रूपधारिणी ॥२६॥
यथा यथा मुखाधिक्यं भुजाधिक्यं तथा तथा । अस्त्राधिक्यं भुजाधिक्यादस्त्राधिक्यात् करांतला ॥२७॥
तत्तन्निमित्तमित्युक्तं यत्पुरा तदुदीरितम् । तिर्यञ्चां मुखकर्तृवे कारणं तु पुरोदितम् ॥२८॥

देव्या वरमासाद्य देवानाएं स्वनियगोवस्थितिः-

वरं युगपदासाद्य देव्या देवा यथोचितम् । जग्मुः स्वस्वाधिकाराणां पालनार्थं त्रिविष्टतम् ॥२९॥

नृपादिभिः विविधमुखायाः यथारुचि स्वरूपविशेषाणामुपासनम्-

ततः प्रभृति भूपालाः सोमसूर्यान्वयोद्भवाः । नानागोत्रोद्भवाश्चापि ऋषयो मुनयस्तथा ॥३०॥
युगे युगे मनुष्याश्च साधकाश्च विशेषतः । उपासांचक्रिरे देवीं तावत्तावन्मुखां प्रिये ॥३१॥

॥ मुख भेदेन बाहुभेदनिरूपणम् ॥

अथ वक्त्रभिदा देवि बाहुभेदान् निशामय । येषां येषां च जन्तूनामाकरेण मुखं भवेत् ॥३२॥
दशानना तु या गुह्या चतुःपञ्चाशबाहुका । नरद्वीपिहरिग्राहशिवेभकपिवाजिनाम् ॥३३॥
तार्क्ष्यर्क्षाकारिवक्त्रा सा करास्त्रे पूर्वमीरिते । अथाधिक्ये तु वक्त्राणां भुजानां वरवर्णिनि ॥३४॥

कियद्भुजा का भगवतीत्यस्य नियम कथनम् -

आस्ये तु विषमेष्टानां दशमानां (दशानां च) समे तथा । कराणामतिरेकत्वमिति सिद्धान्त ईरितः ॥३५॥
अष्टास्त्रगणमेकत्र दशास्त्रमितरत्र च । क्रमेण वक्ष्यमाणेषु ज्ञेयं साधकसत्तमैः ॥३६॥

॥ देव्या मुख वर्णनम् ॥

अथादौ मुखमाखास्ये तत्र यत्ना भवेश्वरि । अस्त्रवद् वदनस्यापि विषमे च समे तथा ॥३७॥
वैरिकरेयञ्च विषमे समे चातुष्पदं भवेत् । विहाय नागशरभावनन्ताष्टपदौ हि तौ ॥३८॥
शिखिहंसश्येनशुककाकोलूकपदायुधान् । क्रौञ्चसारसकङ्काश्च विषमास्ये तु योजयेत् ॥३९॥
खलकोलवृषाजोष्ट्रमृगसैरिभपन्नगान् । विश्वकद्रूमयाङ्घ्री च समे वक्त्रे विनिर्दिशेत् ॥४०॥

करेष्वेवं दशास्याया वक्ष्यमाणान् प्रवेशयेत् । टङ्कं हुलां शुकं चैव शीर्षकं वामतो न्यसेत् ॥४१॥
दक्षे वज्रायोगुडे च करकं चार्धचन्द्रकम् । शारिघं क्रकचं शल्यं दर्पणं निषढ तथा ॥४२॥
ऋष्टिं च कौरजं शातकर्णी कन्दुकशङ्कुकौ । पुस्तकं रत्नसंपीठं हेतिं चापि फणीमुखम् ॥४३॥
व्याखानमुद्रां डमरुमस्थिभेदीं नराचकम् । शत्रुजिह्वापद्म सुधाभाण्डशंखाभयं तथा ॥४४॥
ताम्बूलं चामरं रत्नदेर्वी व्यजनं वरम् । मधुपर्कस्तथा वीणा जालं दीपकरण्डकम् ॥४५॥
ध्वजश्च स्त्रुवहस्तश्च कशा चाथ चपेटिका । अत ऊर्ध्वं च दिव्यास्त्रं समेषु विषमेषु च ॥४६॥
तावत्येव हि विज्ञेया संख्या तु वरवर्णिनि । नारायणास्त्रं ब्रह्मास्त्रं शाङ्करास्त्रमतः परम् ॥४७॥
वैष्णवास्त्रं तथा प्राजापत्यास्त्रं तदनन्तरम् । कौबेरास्त्रं तथाग्नेयं कम्पन्नास्त्रं तथैव च ॥४८॥
ऐन्द्रास्त्रं वारुणास्त्रं च ज्ञेयमष्टोत्तरे शते । वायव्यास्त्रं च याम्यास्त्रं कालास्त्रं भौतिकास्त्रकम्॥४९॥
पार्जन्यास्त्रं वैद्युतास्त्रं नागास्त्रं पार्वतास्त्रकम् । पाषाणास्त्रं च सौपर्णं त्वाष्ट्रं तामसतैमिरे ॥५०॥
मातङ्गजम्भकैषीकचाक्रमौदुम्बरं तथा । दानवास्त्रं च गंधर्वं पैशाचं जृम्भणं तथा ॥५१॥
प्रस्वापनं हैमनं च राक्षसं सौरमेव च । गुह्यास्त्रं चापि भारुण्डं शाबरं कालकूटकम् ॥५२॥
अस्त्रं ब्रह्मशिरश्चापि वामतः सन्निवेशयेत् । वेतालं शारभं राजसार्क्ष्यं स्कन्दं तथैव च ॥५३॥
प्रमथास्त्रं वैनायकं गणास्त्रौत्पातमेव च । ज्वरास्त्रं चापि कूष्माण्डं मूर्च्छनं भ्रामकं तथा ॥५४॥
गालनं माकरं स्वाप्नं मोहनं स्तम्भनं तथा । बलामतिबलां चापि निमीलनमचेतनम् ॥५५॥
उन्मादास्त्रं सर्वशेषे द्विषष्टिशतबाहुका । पादास्त्रं मुखतो देव्यास्तन्न संभवति प्रिये ॥५६॥
प्रतिषिद्धा स्वयं देव्या निर्वेदं गतया तया । हेतुं कञ्चित् समालम्ब्य जुगुप्साकरुणाश्रयम् ॥५७॥

॥ अथ गुह्यकाली मन्त्र भेदाः॥

महाकाल संहितायां गुह्यकालीखण्डस्य प्रथमभागे समागताः मूलमन्त्राः

१. भरतोपास्यगुह्यकाल्याः षोडशाक्षरः कीलितमन्त्रः - ओं फ्रें सिद्धिकरालि ह्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा॥

२. तस्या एवाकीलितः षोडशाक्षरमन्त्रः - ओं फ्रें सिद्धि करालि ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा।

३. रामोपास्यायाः सप्तदशाक्षरः कीलितमन्त्र : - ओं फ्रें सिद्धि हस्ख्फ्रें हस्फ्रें ख्फ्रें करालि ख्फ्रें हस्ख् फ्रें ख्फ्रें फ्रें ओं स्वाहा। अयमेव हारीतोपास्यामनुः ।

४. एतस्या एवाकीलितः सप्तदशाक्षरमन्त्रः - ओं फ्रें सिद्धि हसखफ्रें खफ्रें करालि ख्फ्रें हसखफ्रें खफ्रें फ्रें ओं स्वाहा।

अप्रयमेव च्यवनोपास्यामनुः ।

५. हिरण्यकशिपूपास्यायाः षोडशाक्षरमन्त्रः - ख्फ्रें हसखफ्रीं ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं ह्लीं रहक्षमलवरयईऊं श्रीं ओं ह्रीं हसखफ्रें ख्फ्रें

६. ब्रह्मोपास्यायाः एकाक्षरमन्त्रः - फ्रें

७. अनङ्गोपास्यायास्त्र्यक्षरमन्त्रः - ओं ह्रीं फ्रें

८. वरुणोपास्यायास्त्र्यक्षरमन्त्रः - छ्रीं फ्रें स्त्रीं

९. पावकोपास्यायाः पञ्चाक्षरमन्त्रः - ओं फ्रें हूं स्वाहा।

१०. आदित्युपास्यायाः पञ्चाक्षरमन्त्रः - ओं ह्रीं हूं छ्रीं फ्रें।

११. शच्युपास्यायाः पञ्चाक्षरमन्त्रः - ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें।

१२. दानवोपास्यायाः नवाक्षरमन्त्रोद्धारः - फ्रें ख्फ्रें सिद्धिकरालि स्वाहा।

१३. मृत्युकालोपास्यायाः नवाक्षरमन्त्रः - ख्फ्रें महाचण्डयोगेश्वरि।

१४. भरतोपास्यायाः षोडशाक्षर मन्त्र : - ह्रीं फ्रें सिद्धि करालि ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा।

१५. च्यवनोपास्यायाः षोडशाक्षर मन्त्र : - छ्रीं फ्रें सिद्धि करालि ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा।

१६. हारीतोपास्यायाः षोडशाक्षर मन्त्र : - हूं फ्रें सिद्धि करालि ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा।

१७. जाबालोपास्यायाः षोडशाक्षर मन्त्र : - स्त्रीं फ्रें सिद्धि करालि ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा।

१८. दक्षोपास्यायाः षोडशाक्षर मन्त्र : - फ्रें फ्रें सिद्धि करालि ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा।

१९. हिरण्यकशिपूपास्यायाः षोडशाक्षर मन्त्रः ऊर्ध्वनिर्दिष्टः पञ्चममन्त्र एवात्राप्युद्धृतः - (३।५१-५३)

२०. ब्रह्मोपास्यायाः सप्तदशाक्षर मन्त्र : - रह्रीं हसखफ्रें ख्फ्रें ओं ह्रीं श्रीं फ्रें सिद्धि करालि छ्रीं क्लीं फ्रें नमः।

२१. वसिष्ठोपास्यायाः सप्तदशाक्षर मन्त्र : - श्रीं ह्रीं रह्रीं हसखफ्रीं क्षरहम्लव्य्रईऊं ख्फ्रें जरक्री झमरयूं रक्ष्रीं स्त्रीं छ्रीं छ्रीं गुह्यकालि फट्।

२२. विष्णुतत्त्वनामकपञ्चाक्षर मन्त्र : - ओं ख्फ्रें हसखफ्रौं ख्फ्रें ओं।

२३. अम्बाहृदयनामकाष्टाक्षर मन्त्र : - ओं ह्रीं ख्फ्रें हसखफ्रीं ख्फ्रें क्लीं नमः।

२४. उत्तराम्नायगोपिताया: षोडशाक्षर मन्त्र :- ह्रीं श्रीं ओं ख्फ्रें हसखफ्रें रहक्षमलवरयूं रक्ष्रीं जरक्रीं स्त्रीं छ्रीं हूं ख्फ्रें ठ्रीं श्रीं नमः।

२५. त्रयोदशास्यायाः षोडशाक्षर मन्त्र : - ओं ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्रीं ख्फ्रें ठ्रीं ध्रीं फ्रों रह्रीं स्वाहा।

२६. रावणोपास्यायाः सप्तदशाक्षर मन्त्र :- ह्रीं क्लीं फ्रें हूं क्रों गुह्यकालि क्रीं छ्रीं हसखफ्रें फ्रों छ्रीं स्त्रीं स्वाहा।

२७. रावणोपास्यायाः षट्त्रिंशदक्षर मन्त्र : - ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें छ्रीं हूं स्त्रीं ख्फ्रें ह्रीं गुह्यकालि ह्रीं ख्फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ओं ह्रीं छ्रीं स्त्रीं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

२८. महाविद्याया अष्टपञ्चाशदक्षर मन्त्र :- ओं ओं खफें महाचण्डयोगेश्वरि ह्रीं स्त्रीं जय महामङ्गले सिद्धि करालिनि ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें कालि महानिर्वाण सिद्धिप्रदे महाभैरवि विच्चे घोरे जरक्री हूं फट् फट् फट् स्वाहा।

२९. भोगविद्यायाः द्विशताधिकसप्ताशीत्यक्षर मन्त्रः

ओं नमो महामाये हूं फ्रें त्रैलोक्यत्राणकारिणि छ्रीं छ्रीं सिद्धि सिद्धि ह्रीं ह्रीं धारय धारय पुत्रधनधान्यसुवर्णरत्न

हिरण्यदारकुटुम्बमहानिधिसिद्धीर्देहि देहि महागौरि स्मृतिमहामेधायशोऽस्त्रराज्यसौभाग्य सर्वदीपसमस्तकर्मकरि सिद्धिचामुण्डे पूरय पूरय ह्लीं सर्व मनोरथान् सर्वसंपदं वर्ष वर्ष वर्षापय वर्षापय पातय पातय निधिं दद दद अष्टैश्वर्यं दद दद गृहधनायुः सुखं दद दद निधान धान्य हिरण्यं दद दद सर्वत्र सर्ववृद्धिं कुरु कुरु धर धर ह्रीं ह्रीं स्त्रीं स्त्रीं फ्रें रत्नमयवर्षं दद दद सर्वयक्षानादेशाय आदेशय आज्ञापय आज्ञापय श्रियं राज्यं दद दद अविघ्नं कुरु कुरु नमो महायक्षराजाराधिताये ह्रीं ह्रीं ह्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं महाधनानि दद दद मम सर्वधनं प्रयच्छ प्रयच्छ सिद्धिगौरि हूं हूं नमः ठः ठः ठः स्वाहा।

३०. गुह्यकाल्याः शताक्षरमन्त्र :

खफ्रें खफ्रीं चण्डे चण्डचामुण्डे ह्रीं हूं स्त्रीं छ्रीं विच्चे घोरे महामदोन्मनि क्लीं ब्लूं गुह्येश्वरि ओं परानिर्वाणे ब्रह्मरूपिणि ओं फ्रें फ्रें सिद्धि करालि आप्यायिनि नवपञ्चचक्रनिलये घोराट्टराविणि कलासहस्त्रनिवासिनि खं खं खं ह्सौं फ्रें अवर्णेश्वरि प्रकृत्यपरशिवनिर्वाणदे खफ्रें स्वाहा।

३१. गुह्यकाल्याः सहस्त्राक्षरमन्त्र :

(नवनवार्णमन्त्रपदेनाप्यस्य व्यपदेशः)

ओं ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें खफ्रें ह्स्फ्रें ह्स्खफ्रें जय जय भगवति गुह्यकालि सिद्धिकरालि कालि कापालि ऐं क्रों ग्लूं ब्लूं क्ष्रौं ग्लौं ब्लौं ख्रौं स्हौः नररुधिरमांसपरिपूर्णकपाले नरद्वीपिसिंहफेरुकपिक्रमेलक भल्लूकगरुडगजमकर हयवदने आं श्रीं क्लीं ठ्रीं ध्रीं थ्रीं फ्रीं क्ष्रीं ब्रीं नररक्तार्णवद्वीपमध्य प्रज्वलद्धुतवहज्वाला जटाले महाश्मशानवासिनि फ्रों फ्रौं स्फ्रों स्फ्रौं क्लौं ग्लौं ब्लौं ज्रौं क्ष्लौं चामुण्डाशतकोटिपरिवृते गुह्यातिगुह्यपरमरहस्य कुलाकुलसमयचक्रप्राग्वर्तिनि र्ह्रीं र्श्रीं र्ज्रीं र्क्ष्रीं र्प्रीं र्ठ्रीं रक्रीं रछ्रीं रफ्रीं नवकोटिगुह्यानन्त तत्त्वधारिणि परमशिवसामरस्यचारिणि सृष्टिस्थितिप्रलयकारिणि खफ्रछ्रें खफ्छ्रैं खफ्छ्रों खफ्छ्रौं क्ष्र्स्त्रां क्ष्र्स्त्रीं क्ष्र्स्त्रूं क्ष्र्स्त्रैं क्ष्र्स्त्रौं वह्नि स्फुलिङ्गपिङ्गलितजटाभारभासुरे महादैत्यदानव पिशाच राक्षस भूत प्रेतकूष्माण्डभयविनाशिनि ह्स्खफ्रां ह्स्खफ्रीं ह्स्खफ्रूं ह्स्खफ्रें ह्स्खफ्रैं ह्स्खफ्रों ह्स्खफ्रौं ह्स्खफ्रं ह्स्खफ्रः कटकटायमानविकट दीर्घदंष्ट्रा चर्वितनृकपाले लेलिहानमहाभीम रसनाविकराले चन्द्रखण्डाङ्कितभाले र्क्षखरऊं रक्षक्रू स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं रक्षक्रीं ऊं रक्षखरईं कमह्लचहलक्षर्ज्रीं खलहव्न्ग्क्षर्छ्रीं ओं श्रें क्लीं क्ष्लफ्लओं सक्ष्लक्षें ह्क्ष्मलीं ह्लफ्रकह्रीं डम्लव्रीं रम्लव्रीं वम्लव्रीं लम्लव्रीं कम्लव्रीं सम्लव्रीं हम्लव्रीं यम्लव्रीं र्ल्ह्क्षफ्रूं स्ल्ह्क्षह्रूं क्ष्ल्ह्क्षझ्रूं ह्क्षम्लफ्रयूं ह्क्षम्लस्त्रयूं ह्क्षम्लहयूं ह्क्षम्लव्रयूं ह्क्षम्लझ्रयूं ह्क्षम्लक्रयूं ह्क्षम्लग्रयूं र्क्षफ्रभ्र ध्म्लऊं र्क्षस्त्रम्रध्म्लऊं र्क्षह्म्रध्म्लऊं र्क्षब्रम्रध्म्लऊं र्क्षझ्रम्रध्म्लऊं र्क्षक्रम्रध्म्लऊं र्क्षभ्रध्रग्रम्लऊं र्क्षम्रम्लऊं र्ल्क्षध्म्लऊं र्स्खग्रमूं कोटिमहादिव्यास्त्रसन्धानविधायिनि सकल सुरासुर सिद्धविद्याधर किन्नरो रगसेवित चरण कमलयुगले बद्धनारान्त्र योगपट्ट भूषिते विभूतिरूषिते असंख्यमहिमविभवे द्रीं य्लैं म्रीं ध्रीं हभ्रीं न्रीं मों ज्रीं क्रीं चतुःपञ्चाशदोर्मण्डल विराजिते हरिहरविरिञ्चिसभाजिते शोणितार्ण वमज्जनोन्मज्जनप्रिये जगज्जननि जगदाश्रये शिवविष्णु पदरूप सिंहासनाधिरूढ़े स्हक्ष्म्लव्य्रईं क्षस्हम्लव्य्रईं क्षह्म्लव्य्रईं स्हकह्लह्रीं सकलह्कह्रीं सकलह्रीं च्लक्रथ्लह्क्षह्रीं ठ्लव्रखफ्छ्रीं ज्ल्ह्क्षछ्पग्रह्स्खफ्रीं जय जय जीव जीव ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल अचिन्त्यप्रभावे अमितबलपराक्रमे अगणेयगुणगणे अजिते अमिते अपराजिते अलक्षिते अद्वैते श्लीं ह्लीं पलीं ज्लीं श्रीं क्लीं ग्लीं ब्लीं फ्लीं महामाये महाविद्ये महाविद्ये भगमालिनि भगप्रिये भगाङ्किते भगरूपिणि भगवति महाकामातुरे महाकालप्रिये प्रचण्ड कलेवरे विकटोत्कटदंष्ट्रारौद्ररूपिणि स्हक्ष्म्लव्य्रईं क्षह्म्लव्य्रई स्हक्ष्म्लव्य्रई

ऊं क्षस्हम्लव्रईं ऊं क्षरहम्लव्रई ऊं पलक्षहस्हव्र ऊं द्लड्क्षवलहस्खफ्रौं प्लहक्षक्ष्मझ्रहच्रू व्योमकेशि लोलजिह्वे सहस्त्रद्वयकरचरणे सहस्त्रत्रयनेत्रे महामांसरुधिरप्रिये महघूर्णितलोचने महामारि खर्परहस्ते महाशङ्खसमाकुले सदार्द्रनारचर्मावृतशरीरे लक्ष्रूं हलक्ष्रूं पलक्ष्रूं स्फ्लक्ष्रूं रफ्लां रफ्लीं रफ्लूं रफ्लैं रफ्लौं विश्वकर्त्रि विश्वव्यापिके विश्वजननि विश्वेश्वरि विश्वाधारे विश्वसंहारिणि कुलाकुलसमुद्धृत परमानन्द रससामरस्यप्रतिष्ठिते संहारिणि विहारिणि प्रहारिणि दैत्यमारिणि नरनारीविमोहिनि खड्गाञ्जनपादुकाधातु वादगुटिकार्याक्षिणीसिद्धिप्रदे स्हक्ष्महक्षग्लीं ग्लरक्षफ्रथर्क्लीं म्क्षक्रस्हखफ्छ्रूं क्षक्षक्लफ्रच्क्षक्षौं मल्हक्षग्लव्रीं सकहलम्क्षखब्रूं महल्क्षग्लक्लीं क्ष्लहक्षम्लक्लीं रलहक्ष्क्लस्हफ्रईं रक्तसमुद्रवासिनि प्रज्वलितपावक ज्वालजालजटालाष्टमुण्डत्रिशूलाङ्किते श्मशानकृतवासे षोडशद्वादशाष्टदल सरसीरुहबद्धपद्मासने रोगदारिद्र्यबन्धुवियोग नरकार्तिनाशिनि द्वादशकोटि ब्रह्माण्डवर्तिभूतशिरः किरीटनिघृष्टचरणयुगले ओं ऐं आं ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें खफ्रें हस्फ्रें हस्खफ्रें क्रीं क्रूं क्रैं फ्रों फ्रौं स्फ्रों स्फ्रों क्ष्रूं क्षौं ग्लूं ग्लौं ब्लूं ब्लौं ख्रौं क्रें क्रूं क्षम्लव्रसहस्ह क्षग्ल स्त्रीं महव्रएँ स्हक्ष्लमहज्रूं चरक्ष्ल हमहूं झसखग्रमऊं क्षस्हम्लव्रऊं क्षहम्लव्रऊं क्षहम्लव्रऊं क्षस्हम्लव्रऊं क्षस्हम्लव्रईं क्षहम्क्षव्रईं क्षहम्लव्रईं क्ष्महम्लव्रईं क्षस्हम्लव्रईऊं क्षहम्लव्रईऊं क्षरहम्लव्रईऊं क्षस्हम्लव्रई ऊं महामन्त्रमयशरीरे सर्वागमतत्त्वरूपे हं हं हं हां हुं हुं हुं हुं ब्लीं ब्लीं ब्लीं क्लं क्लं स्त्रीं स्त्रीं फट् फट् नमः स्वाहा।

३२ – विष्णुपास्यायुताक्षर मन्त्रः

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें खफ्रें हस्फ्रें हस्खफ्रें स्हौं क्रीं क्षौं क्षहम्लव्रऊं जय जय जय भगवति गुह्यकालि कात्यायनि सिद्धि करालि कापालि शव वाहिनि सकलसुरतमनोरञ्जनि दैत्यदानवदर्पभञ्जनि दशवदनधारिणि नृमुण्डमालाधारिणि सृष्टिस्थितिप्रलयकारिणि नररुधिरवसामांस मस्तिष्कान्त्र परिपूरितकपाले विकटरावे घोररूपे कटकटायमानदशनपङ्क्तिप्रकटदंष्ट्राभयङ्करि बद्धनारान्त्रयोगपट्ट भूषिते योगिनी भैरवी डाकिनी शाकिनी चामुण्डा शक्तिभूतवेताल प्रेत पिशाच विनायक स्कन्दजभ्भकदैत्य दानव यक्ष राक्षस गन्धर्वगुह्यक घोणक क्षेत्रपाल भैरव कूष्माण्ड बटुक सिद्धखेचरादि नवतिमहापद्मसमाज भासुरे त्रिशूल खड्गखेटक खट्वाङ्ग परिघ गदा चक्र भुशुण्डी तोमर प्रासपट्टिशभिन्दिपाल परशुशक्ति वज्रपाशांकुशशङ्ख नागशिवापोताक्षमाला मुण्डगृद्धशैलनकुलायित कुण्ड वराभयव्यापृतकर्कशभुजदण्डे ब्रह्मविष्णुमहादेवेन्द्रचन्द्रवायु वरुण कुबेर पावकेशान निर्ऋति सिद्धविद्याधर गन्धर्व किन्नरोरगविभावनीय चरण कमल युगले नियुतकरचरणे सर्वेश्वरि सर्वदुष्टक्षयङ्करि सर्वदेवमहेश्वरि पञ्चकोटि नियुत प्रहरणायुधे अचिन्त्यप्रभावे अमितबल पराक्रमे अगणेयगुणगणे असंख्यमहिमविभवे अजिते अमिते अपराजिते अलक्षिते अद्वैते अनन्ते अव्यक्ते अदृश्ये अग्राह्यो अतिन्द्रये अपारे उग्रचण्डे प्रचण्डोग्रतरे श्मशानचारिणि ब्रह्माणि नारायणि शाङ्कर्यैन्द्रि कौमारि वाराहि नारसिंहि चामुण्डे भैरवि आग्नेयि ऐशानि वारुणि कौबेरि वायव्ये शोणितार्णवमज्जनोन्मज्जनप्रिये जगज्जननि जगदाश्रये जगत्कारिणि ज्वल ज्वल प्रज्वलप्रज्वल जय जय जीव जीव क्षहम्लव्रऊं क्षौं क्रीं स्हौं हस्खफ्रें हस्फ्रें खफ्रें फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ओं शिवविष्णु रूपसिंहासनाधिरूढ़े ग्रहनक्षत्रोत्पातभूतोन्मादावेशभय विनाशिनि त्रैकालिकानि मम पातकोपपातकानि पातकमहापातकानि शमय शमय प्रशमय प्रशमय नाशय नाशय विनाशय विनाशय पच पच हन हन विद्रावय विद्रावय विध्वंसय विध्वंसय भस्मी कुरु भस्मीकुरु निखिलदुरित विमोचिनि देवि देवि महादेवि महाघोरे महावामे महाजटाजूटभारे ज्ञानबुद्धिमान लक्ष्मीकवित्वराज्यप्रदे क्रों हौं हूं स्फों ग्लूं क्लूं जूं ख्रौं ठ्रीं प्रीं थ्रीं ह् श्रीं ज्रौं सफलक्ष्रूं ध्रीं क्रैं ब्लूं ध्रीं द्रैं हूं छ्रीं ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि मम शत्रून् बलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय भक्ष भक्ष भक्षय भक्षय नाशय नाशय उच्चाटय उच्चाटय हन हन त्रुट त्रुट छिन्धि छिन्धि पच पच मथ मथ

विद्रावय विद्रावय मारय मारय दम दम निवारय निवारय स्तम्भय स्तम्भय मर्दय मर्दय शोषय शोषय पातय पातय खादय खादय हर हर धम धम उद्वासय उद्वासय मोहय मोहय क्षोभय क्षोभय छिन्धि छिन्धि त्रासय त्रासय मुट मुट उन्मूलयोन्मूलय जृम्भय जृम्भय स्फोटय स्फोटय विक्षोभय विक्षोभय तुरु तुरु हिलि हिलि किलि किलि चल चल चालय चालय चिन्तय चिन्तय स्मर स्मर उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ पश्य पश्य दक्षिणकालि भद्रकालि श्मशानकालि कालकालि गुह्यकालि कामकलाकालि धनकालि सिद्धिकालि चण्डकालि महालक्ष्मि मातङ्गि राजमातङ्गि भुवनेश्वरि वागीश्वरि उच्छिष्टचाण्डालि नित्यक्लिन्ने मदद्रवे भैरवि चाण्डालिनि अश्वारूढे भोगवति त्रिपुटे त्वरिते शूलिनि वनदुर्गे जयदुर्गे वज्रप्रस्तारिणि सिद्धिलक्ष्मि राजलक्ष्मि जयलक्ष्मि पद्मावति कालसङ्कर्षिणि कुब्जिके अन्नपूर्णे कुक्कुटि धनदे शबरेश्वरि किराते बाले त्रिपुरभैरवि त्रिपुरसुन्दरि नीलसरस्वति सरस्वति छिन्नमस्ते छिन्ननासे नीलपताके चण्डघण्टे चण्डेश्वरि चामुण्डे बगले हरसिद्धे फेत्कारिणि मृत्युहारिणि नाकुलि लवणेश्वरि नित्याषोडशी जये विजये अघोरे अरुन्धति सावित्रि गायत्रि विश्वरूपे बहुरूपे विकटरूपे अरूपे महामायारूपे महाविद्ये महाऽविद्ये भगमालिनि भगप्रिये भगाङ्किते भगरूपिणि भगवति महाकामातुरे महाकालप्रिये प्रचण्डकलेवरे विकटोत्कटदंष्ट्रा रौद्ररूपिणि व्योमकेशि लोलजिह्वे सहस्रद्वयकरचरणे सहस्रत्रयनेत्रे महामांसरुधिरप्रिये मदविघूर्णितलोचने महामारिखर्परहस्ते शोणिताशनि महाशङ्खसमाकुले सदार्द्रनारचर्मावृत शरीरे ओं ओं ओं ओं ओं फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें फ्रें ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें खफ्रें पुनरेतेषाम् ओङ्कारपर्यन्तानां बीजानाम् प्रतिलोम्ना पाठो विधेयोऽत्र।

ततश्चाग्रे - हसखफ्रें हसखफ्रें हसखफ्रें ह्क्षम्लब्रयूं ह्क्षम्लब्रयूं ह्क्षम्लब्रयूं ह्क्लक्षम्लश्रूं ह्क्लक्षम्लश्रूं रक्षरजक्ष्मक्ष्मरह्म्लव्य्रछ्रीं विश्वकर्त्रि विश्वव्यापिके विश्वजननि विश्वेश्वरि विश्वाधारे विश्वसंहारिणि कुलाकुलसमुद्भूत परमानन्द रससामरस्यप्रतिष्ठिते सर्वदुष्टान् चूर्णय चूर्णय चूर्णापय चूर्णापय हस हस कह कह कर कर मार मार भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि दह दह चालय चालय मुखे प्रवेशय प्रवेशय किरि किरि किलि किलि कुरु कुरु तुरु तुरु किचि किचि कट कट ग्रस ग्रस घातय घातय मोटय मोटय भञ्जय भञ्जय घूर्णापय घूर्णापय स्तोभय स्तोभय धर धर उद्गिर उद्गिर वम वम भिलि भिलि विचि विचि भ्रम भ्रम भ्रामय भ्रामय मूर्च्छापय मूर्च्छापय आं ईं ऊं ऐं औं अं फट् फट् फट् फट् फट् वषट् वषट् वषट् वषट् वषट् ठः ठः ठः ठः ठः फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः मम सर्वाभीष्टसिद्धिं दद दद देहि देहि दापय दापय निष्पादय निष्पादय पूरय पूरय दीपय दीपय चेतय चेतय आनन्दय आनन्दय धेहि धेहि निधेहि निधेहि विभावय विभावय योजय योजय संहारिणि विहारिणि प्रहारिणि दितिजमारिणि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं कामवेगाकुले स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रैं स्त्रौं सुरतातुरे श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं मदनोन्मादिनि क्लां क्लीं क्लूं क्लैं क्लौं नरनारी विमोहिनि खड्गाञ्जन पादुकाधातुवादगुटिका यक्षिण्याद्यष्ट महासिद्धी रचय रचय विरचय विरचय पूरय पूरय प्रपूरय प्रपूरय अनुकम्पां वितर वितर कृपाकटाक्षं मयि मुञ्च मुञ्च दिश दिश विदिश विदिश प्रेरय प्रेरय पोषय पोषय तुष्य तुष्य रक्तसमुद्रवासिनि प्रज्वलितपावकज्वाल जालजटालाष्टमुण्डाष्ट त्रिशूलाङ्किते श्मशानकृतवासे षोडशद्वादशाष्टदल सरसिरुहबद्धपद्मासने ब्रह्मविष्णुशिवादि त्रयस्त्रिंशत् कोटिविवुधाष्टचत्वारिंशत्

कोटि दैत्य दानवा विज्ञातागणितामितप्रभावे दारिद्र्यबन्धुवियोग त्रिविधोत्पातकालग्रहोप सर्ग राजचौर रिपु दावाग्नि शस्त्रास्त्र पातकेशरि शार्दूल शरभ महिष वराह फैरवरासभ मातङ्गवृकविपिन जन्तु भुजङ्गम सागरा वर्तदस्यु चतुर शीतिज्वरशोथ शूलाद्य साध्यरोग महामारिदु:स्वप्न ग्रहपीड़ा विषापरिषाभिचार विश्वास घातक दुष्ट वञ्चक सर्वस्वहारक मायाविन्यासापहारिवृषलनष्ट भूपाल कलहकारक णरदान् दोर्दण्डायुतेन उद्वासय उद्वासय महाङ्कशेन विघट्टय विघट्टय भयङ्कर शङ्ख रवेण उत्फालय उत्फालय क्रोधावेशेन धूनय धूनय विधूनय विधूनय वज्राधिक कठोरतर चपेट घातेन लोठय लोठय विलोठय विलोठय मुष्टिप्रहारेण तुद तुद करतालिकया नुद नुद खड्गेन भञ्ज भञ्ज त्रिशूलेन कृन्त कृन्त चक्रेण विश्लेषय विश्लेषय दण्डेन शमय शमय प्रशमय प्रशमय वज्रेण किचि किचि कुन्तेन फेरु फेरु गदया पोथय पोथय विपोथय विपोथय तोमरेण प्राणान् परिघातय परिघातय भिन्दिपालेन किचि किचि शक्त्या खण्डय खण्डय विखण्डय विखण्डय कटकटायमानरसनया चर्वय चर्वय मुसलेन पिष पिष नागपाशेन वेष्टय वेष्टय परशुना क्षिप क्षिप प्रक्षिप प्रक्षिप प्रासेन लम्भ लम्भ प्रलम्भय प्रलम्भय कुन्तेन मर्माणि पाटय पाटय विपाटय विपाटय पट्टिशेन तिलशो व्यधम व्यधम अयोगुडेन उड्डापय उड्डापय हुलया स्फोटय स्फोटय प्रस्फोटय प्रस्फोटय वध वध बन्ध बन्ध मोहय मोहय विमोहय विमोहय मूर्च्छय मूर्च्छय मूर्च्छापय मूर्च्छापयद्वादशकोटि ब्रह्माण्डोदर वर्तिभूतशिरः किरीटकोटिमणिमय शेखरनिघृष्ट चरण कमल युगले खेचर भूचर वारिचर पातालचर रोदसीचरानन्त शक्ति निवहानन्दिते त्रिलोकीवन्दिते सपुत्रकलत्रपरिवारं मां रक्ष रक्ष पाहि पाहि पालय पालय पावय पावय वर्धय वर्धय आनन्दय आनन्दय आह्लादय आह्लादय साधय साधय प्रसाधय प्रसाधय पूरय पूरय प्रपूरय प्रपूरय भूषय भूषय विभूषय विभूषय हर्षय हर्षय प्रहर्षय प्रहर्षय मोदय मोदय प्रमोदय प्रमोदय एकं कां द्वे चां त्रीणि टां चत्वारि तां पञ्चपां षट् खीं सप्त छीं अष्टौ ठीं नव थीं दश फीं एकादश गूं द्वादश जूं त्रयोदश डूं चतुर्दश दूं पञ्चदश बूं षोडश घैं सप्तदश झैं अष्टादश ढैं एकोनविंशति धैं विंशति भैं एकविंशति ड़ौं द्वाविंशति ञौं त्रयोविंशति णौं चतुर्विंशति नौं पञ्चविंशति मौं षड्विंशति यें सप्तविंशति रें अष्टाविंशति लें एकोनत्रिंशत् वें त्रिंशत् शं एकत्रिंशत् षं द्वात्रिंशत् सं त्रयस्त्रिंशत् हं चतुस्त्रिंशत् लः पञ्चत्रिंशत् क्षः इति बीजानि देयानि (६३० बीजानि भवन्ति)

मूर्तिभेदे विभिन्नपञ्चाशल्लिपिक्रमसङ्कलिते वर्णमय देवतास्वरूपिणि ओं प्लूं फ्रें ब्रै भ्यौं म्रूं × (पिच्छा) क्रीं ब्जीं द्रूं श्लौं ज्लूं फ्यूं स्हौः × (द्रोहः) ब्लूं स्कीं ह्भ्री क्षूं × (मीनम्) स्हें सौः डों (ठौं)ब्रूं ज्रैं श्रीं क्रों स्फ्रों फ्रों डों भ्लीं घ्रीं ख्रैं ल्यूं णूं क्ष्लौं फ्लीं हैं पुनरेतेषामष्टत्रिंशद् बीजानां प्रतिलोमेन पाठोऽत्र विधेयः पुनरिहायुग्मबीजानामुच्चारणं कार्यम्

हौं आं सौः क्षौं नमः जूं म्रैं ग्लनीं फ्रौं छ्रूं ग्लीं ज्रां ह्रक्षम्लव्र्यूं हसखफ्रें हसफ्रें खफ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्रीं ग्लूं क्रों ब्लूँ हौं ट्रीं प्रीं थीं ध्रीं क्लौं × (कन्धरौ) ग्लूं ब्लौं ऐं फ्रें ओं पुनरेतेषां प्रतिलोमेन पाठो विधेयः पश्चात् युग्मबीजं विहायायुग्मबीजानां पाठोऽपि विधेयः पुनः ब्रध्नबीजं क्षः इत्यारभ्य कां बीजं यावत् षट्सप्ततिबीजेषूर्ध्वनिर्दिष्टेषु युग्मबीजानां परिग्रहं कृत्वा पठनीयम् युग्मानां च त्यागो विधेय इति।

मेरुगह्वरवि निष्क्रान्त पञ्चसप्ततिबीजवर्णावली संकलिते व्यपकलितपञ्चाशल्लिपिबीज व्यपकलितसृष्टिसंहार मन्त्रक्रमरूपधारिणि सर्वमन्त्रात्मिके सर्वयन्त्रात्मिके सर्वतन्त्रात्मिके स्वेच्छाकारिणि स्वेच्छाचारिणि स्वेच्छारूपधारिणि ब्रह्मप्राजापत्य द्रौहिण हिरण्यगर्भ नारायण वैष्णव सौदर्शनत्रैविक्रमाग्नेय ज्वाल प्राकम्पनैन्द्रानलयाम्यनैर्ऋतवारुणवायव्य कौबेरैशान पारमेष्ठ्यानन्तकालभौत पार्जन्य वैद्युत वारिवाहेय पार्वतपाषाण नागसौपर्णकालक वैश्वदेवत्वाष्ट्रतामसतैमिर प्रस्वापन मातङ्गजम्भकैषीकदानवजृम्भणगान्धर्व पैशाचोदुम्बर राक्षस

सौर चान्द्रचाक्रहैमनशावरभारुण्ड ब्रह्मब्रह्मशिरः गुह्यककालकूट वेतालसारभार्क्षवेताल राजसवैनायकस्कान्द प्रामथ गाणोत्पातज्वर मौर्च्छनकूष्माण्ड भ्रामर माकराङ्गानना स्तम्भन सम्मोहन बलातिबलनैमिलनस्वापप्रचेतनोन्माद (शापापस्मारान्) सापास्मारान् मारणोच्चाटन भैरव चामुण्डा डाकिनी योगिनीनारसिंह वाराह शार्दूल माहिषफैरव पाशुपताद्यून त्रिंशत्कोटि महास्त्रसन्धानकारिणि फट् फट् फट् पूर्वमुद्धृतस्यैकवारं भोगविद्यामन्त्रस्य नववारं शताक्षरमन्त्रस्य नववारं हिरण्यकशिपूपास्य षोडशाक्षरमन्त्रस्य नववारं ब्रह्मवसिष्ठरामोपास्यानां सप्तदशाक्षर मन्त्राणां नववारं विष्णुतत्त्वस्य अम्बाहृदयस्य महाषोडश्याः पुनर्वारद्वयं जयमङ्गला मन्त्रस्य रावणोपास्य षड्त्रिंशदर्णमन्त्रस्य त्र्यक्षरमन्त्रस्य चोच्चारणं कृत्वा दक्षोपास्यषोडशाक्षरमन्त्रस्य भरतोपास्यषोडशाक्षर मन्त्रस्य च षडावृत्तिः कार्या पुनरग्रे ओं सकल मन्त्र स्वरूपिणि मनोवागगोचरे गुह्यकालि फ्रें फ्रें फ्रें छ्रीं छ्रीं छ्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं फट् फट् फट् नमः स्वाहा। इति

३३ – शिवोपास्यायुताक्षर मन्त्रः

ऐं ऐं ऐं जय जय गुह्यकालि सिद्धि करालि ओं ओं ओं कालि कपालि विकरालि ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें मुण्डमालिनि त्रिशूलिनि महाबलिनि श्रीं क्लीं क्रों क्रीं आं कात्यायनिं शववाहिनि सृष्टिस्थितिकारिणि क्रौं क्षूं हौं क्षौं ईं भगवति चामुण्डे नरकङ्कालधारिणि क्रां फ्रों क्रूं क्रैं फ्रौं स्फ्रों क्रं नवपञ्चचक्रवासिनि महाट्टहासिनि ब्रच्रों श्रं जूं क्ष्रुं क्रः स्हौं सः स्हौः क्लों श्मशानवासिनि महाघोरे फ्रें ग्लूं क्ष्रौं क्रैं जूं ब्लूं ब्लीं ग्लां ग्लीं क्लां ब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वर सदाशिवपञ्चप्रेताधिरूढे प्रीं ठ्रीं त्रीं क्षौंः क्रौं श्रौं ग्लौं क्लूं ब्लां जगज्जननि जगदाश्रये जगत्संहारिणि फ्रीं श्रीं थ्रीं ध्रीं ख्रैं क्लैं म्रीं ठौं त्रीं द्रीं व्रूं डाकिनीभूत वेतालप्रेत भैरवीमध्यचारिणि भ्रीं ग्लैं ब्लैं फ्लीं क्रीं ज्रां क्ष्रूः ज्रीं ड्रीं ज्रं ज्रीं दुर्गे दैत्यान् (दैत्यानां) मर्दिनि भद्रे क्षेमङ्करि द्रीं लीं जैं ज्रौं ढैं र्क्रीं क्रूं गं गां गूं गौं कुलाकुल समय चक्र प्रवर्तिनि महामारीनिवर्तिनि क्ष्लौं य्लैं घ्रीं म्रां म्रैं मूं ब्जै ब्जूं ब्जीं प्लूं स्हें द्रैं ह् भ्रीं सर्वागमतत्त्वस्वरूपिणि लेलिहानरसनाकरालिनि द्रूं ह्रौं ल्यूं ब्रैं क्लीं फ्रैं क्षां क्षीं फ्रां फ्रूं भ्रूं ह्लों स्कीं चतुर्वेदावेद्यानुभाव विमोहितास्त्रैगुणितत्रिदेवे स्हक्लह्रीं र्क्रां र्फ्रां र्च्रां र्ज्रां (यष्टी) र्क्रीं र्फ्रीं र्छ्रीं र्त्रीं र्क्षीं र्प्रीं रक्तार्णवद्वीपप्रज्वलत् पावक शिखान्तश्चारिणि महादुःखपापौधहारिणि (रथीं......) (शिखामहा) च्रां च्रीं च्रूं च्रैं च्रौं ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रैं ज्रौं स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रैं स्त्रौं बृहल्लम्बमानोदरि महाचण्ड योगेश्वरि अपमृत्युहरि विश्वेश्वरि ब्लौं सौः ब्रीं ट्रीं ह्लुंः स्हीं श्लां स्क्रीः फीं फूं फैं द्रौं लां श्लीं नवकोटि कुलाकुलचक्रेश्वरि सकलगुह्यानन्ततत्त्वधारिणि महामारीप्रवर्तिनि ह् लूः लूं लूं श्लूं रां रीं रूं रैं रौं ह् लैं श्लैं ह्लूं श्लौं हां चतुरशीतिकोटि ब्रह्माण्ड सृष्टिकारिणि प्रज्वलज्वललोचने वज्रनख दंष्ट्रा युक्ते दुर्निरीक्ष्याकारे क्लां क्लां ज्लां ज्लां ज्लां ज्लां ज्लां ज्लां हस्खफ्रूं हस्खफ्रूं पूं पूं पूं थ्रीं थ्रीं थ्रां थ्रां थ्रां थ्रां थ्रां परापरसामरस्यरस मोहिनि परमशिव निवासिनि विकरालवेशधारिणि ख्फ्रें हस्फ्रें हस्खफ्रें फ्यूं ज्र्क्रीं ब्लूं स्त्रैं स्त्रौं फ्लीं श्रैं श्रौं छ्रैं छ्रौं क्षर्ह्रीं क्षर्रह्रं भ्लीं भ्लूं ब्लैं नरमुण्डमालाङ्कृते चतुर्दशभुवनसेवितपादपद्मे सप्तविंशतिनयने गल्नीं स्हैः ल्यूं छ्रां श्रां स्त्रां क्रां प्रां ह्रां र्फ्लां र्फ्लीं ह् लक्ष्रूं म्लां म्लीं म्लूं भ्रां ण्रीं दिगम्बरि सकल मन्त्रतन्त्राधिदैवते गुह्यातिगुह्य परापर शक्तितत्त्वावतारे छ्रूं स्फ्लक्ष्रूं र्क्षछ्रीं र्फ्लूं र्फ्लैं र्फ्लौं हस्खफ्रां हस्खफ्रीं हस्खफ्रूं हस्खफ्रैं हस्खफ्रीं हस्खफ्रीं हस्खफ्रं हस्खफ्रः ख्फ्छ्रीं ख्फ्छ्रूं कहलश्रौं कहलश्रूं फ्लक्ष्रूं महाभोगी राजभूषितभुजदण्डे मनोवागगोचरे प्रपञ्चातीते निष्कले तुरीयाकारे छ्रें क्षैं हैं ह्रें र्क्षश्रीं औं खफछ्रें कहलश्रां ह्रीः (ह्रं) ह्रः प्लीं प्लैं स्त्रीं स्त्रीं ख्फ्छ्रैं स्त्रीं ख्फ्छ्रैं स्त्रीं श्रों झमरयूं हस्खफ्रिं हस्खफ्रुं महाखेचरीसिद्धि विधायिनि गगनग्रासिनि प्रबलजटाभारभासुरे वेदोपवेदमयसिंहासनाधिरूढे श्रौं श्रूं स्त्रें स्त्रों ख्फ्छ्रौं क्षरस्त्रौं कहलश्रें कहलश्रें लक्ष्रूं म्लैं म्लैं क्षरस्त्रीं चां पां पां भ्रें भ्रें छ्रं छ्रं क्षरस्त्रैं क्षरस्त्रां क्षरस्त्रीं कहलश्रं कहलश्रः घोराट्टहासमन्त्रासित

त्रिभुवने नवकोटिमालामन्त्र मय कलेवरे अतिविकरालातुरे ड्रूं श्रें ह्रूं श्रं र्द्रैं स्त्रं स्त्रं (क्ष्लप्रूं)क्षां क्षीं क्षूं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं शिक्षा रहें रहें रहें रहें रहें हैं हीं हीं कल्पान्तकालप्रकाशिततमोगुणे महारुद्रशरीर सङ्क्रामितनिजवैभवे समुन्मूलितप्रणतनानाभवे अभवे च्रीं रक्षां हैं च्रूं च्रैं च्रां क्षरस्त्रूं क्षरस्त्रूं सफहलक्षां (क्ष्लौं) रप्रीं च्रौं भ्लां रक्ष्रीं कहलश्रीं क्ष्लफ्लओं सफहलक्षीं सफहलक्षौं रहछ्ररक्षहीं रहरक्षहूं हलफ्रकहीं हसफ्रूं रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं वीरघण्टाकिङ्किणि डमरुनिनादितेऽपरिमितकायबल पराक्रमे चण्डाति चण्डकाण्डखण्डित दानव राक्षस दितिज समूहे विगतमोहे डां डीं डूं डैं डौं वूः रस्फ्रौं हसफ्रां हसफ्रीं खफ्रैं रम्लव्रीं हक्षम्लक्रयूं स्हजहलक्षम्लवनऊं ओंश्रेंक्लीं यम्लव्रीं ठः क्लं क्षः डों फ्रों सग्लक्षमहरहूं व्लक्षमकहव्य्रईं रजझ्रक्षीं रजझ्रक्षूं लक्षमह जरक्रव्य्रऊँ शुद्धविद्यासंप्रदाय सिद्धशुद्ध चैतन्यस्वरूपे प्रकृत्यपरशिव निर्वाणसाक्षिणि त्रिलोकीरक्षिणि ब्रह्मरन्ध्रविनिविष्टसदाशिवैक सतासिन्धुमज्जनोन्मज्जनप्रिये सृष्टिस्थिति संहारानाख्याभासादि बहुविधभेदप्रकाशिनि कां कीं कूं कैं कौं रक्रां रक्रीं रक्रूं रक्रैं रक्रौं हक्षम्लीं हक्षम्लव्रयूं क्लहझकहनसक्लईं डम्लव्रीं कम्लव्रीं रच्रां रच्रीं रच्रूं रच्रैं रच्रौं खफसहलक्षूं हस्लक्षकमहव्रूं हक्षम्लफ्रयूं क्षमब्लहकयहीं क्लक्षसहमव्य्रऊं रक्रैं रक्रौं भगमालिनि भगप्रिये भगातुरे भगाङ्किते भगरूपिणि भगलिङ्गद्राविणि कालचक्र नरसिंह सुरतरसलोलुपे व्योमकेशिपिङ्गकेशि नियुतवक्त्रकरचरणे त्रिलोकीशरणे रझ्रां रझ्रीं रझ्रूं रझ्रैं रझ्रौं हं लः अं चां छां जां झां ञां रहें रहों हलक्षकमहसव्य्रऊं रजहलक्षमऊं क्षम्ल ब्रसहस्हक्षक्लस्त्रीं हक्लहवडकखऐं यंरक्षहभ्रध्रम्लऊं वम्लव्री रक्षभ्रम्लऊं सम्लव्रीं लम्लव्रीं इं उं दीर्घदंष्ट्राचूर्णित मृतब्रह्मकपाले चन्द्रखण्डाङ्कितभाले देहप्रभाजितमेघजाले त्रयस्त्रिंशत्कोटि महादिव्यास्त्र सन्धानकारिणि महाशङ्खसमाकुले खर्परविस्त्रस्तहस्ते रक्तद्वीपप्रिये मदनोन्मादिनि महोन्मादवंशीवादिनि टां टीं टूं टैं टौं रख्रां रख्रीं रख्रूं रख्रैं रख्रौं रक्लां रक्लीं रक्लूं रक्लैं रक्लौं कसवहलक्षमऔं सहठलक्षहमक्रीं सकहलमक्षखव्रूं ब्रकम्लब्लक्लऊं लक्षमहजरक्रव्य्रईं हलसहकमक्षब्रऐं क्ष्लहमव्य्रऊं सलहक्षहूं हम्लब्रीं रलहक्षफ्रूं हक्षम्लझ्रयूं हक्षम्लग्रयूं हक्षम्लहयूं हक्षम्लस्त्रयूं खड्गखेटक खर्पर खट्वाङ्ग चक्र चाप शूल परिध मुद्गर भुशुण्डी परशु गदा शक्ति तोमर प्रासभिन्दिपालकर्त्रि कुणपहुलाकुन्त पट्टिशादियावदस्त्र शस्त्रधारिणि तां तीं तूं तैं तौं रग्रां रग्रीं रग्रूं रग्रैं (रग्रौं) रक्षफ्र रक्षफ्रभ्रध्रम्लऊं रक्षस्त्रभ्रध्रम्लऊं रक्षक्रभ्रध्रम्लऊं रक्षझ्रभ्रध्रम्लऊं रक्षब्रभ्रध्रम्लऊं हलक्षमहम्लूं लक्षहमकसहव्य्रऊं महव्य्रऐं फ्रम्रग्लऊं रक्षम्लहकसछव्य्रऊं रट्रां रट्रीं रट्रं रट्रूं रट्रौं क्षम क्लहहसव्य्रऊं क्षब्लीं स्हलकहक्षूं क्षग्लीं लहकक्ष्मस्हव्य्रऐं रक्षम्रध्रग्रम्लऊं शुष्कनरकपालमालाभरणे विद्युत्कोटिसमप्रभे ऊर्ध्वकेशि विद्युत्केशि शवमांसखण्डकवलिनि महानादाटाट्टहासिनि वमदग्निमुखि फेरुकोटिपरिवृते चर्चरीकरतालिकात्रासितोद्यत् त्रिभुवने नृत्यनिहित पादाधातपरिवर्तितभूवलयधारिणि भुग्नीकृतकमठशेषभोगे पां पीं पूं पैं पौं र्छ्रां र्छ्रीं र्छ्रूं र्छ्रैं र्छ्रौं रलक्षध्रम्लऊं स्हक्ष्लमहज्रूं सक्ष्लहमयब्रूं रसखग्रमूं कहफ्लमहव्य्रऊं हक्लक्षम्लश्रूं सहक्लरक्षमजहखफरयूं क्षक्लीं हहलव्य्रकऊं महक्ष्लव्य्रऊं क्षम्लीं म्लक्षकसहहूं रक्षरजक्ष्मक्ष्मरहम्लव्य्रछ्रीं क्षहलीं खफछ्रेव्रहक्ष्मत्र्रयीं रजक्षमब्लहूं क्षक्लूं हसफ्रैं हसफ्रौं रख्रें रखें रग्रें वसामेदो मांस शोणित भोजिनि कुरुकुल्ले कृष्णतुण्डि रक्तमुण्डि चण्डे शबरि पीवरे रक्षिके भक्षिके यमघण्टे चर्चिके दैत्यासुरयक्ष राक्षसदानवकूष्माण्ड प्रेत भूत डाकिनी विनायक स्कन्दघोणक क्षेत्रपाल पिशाच ब्रह्मराक्षस वेताल गुह्यक सर्पनागग्रह नक्षत्रोत्पात चौराग्निश्वापदयुद्ध वज्रोपलाशनिवर्ष विद्युन्मेघविषोपविषक पटकृत्याभिचार विद्वेषण वशीकरणोच्चाटनोन्मादापास्मार भूत प्रेत पिशाचावेशनदनदीसमुद्रावर्तकान्तारघोरान्धकार महामारी बालग्रह हिंसक सर्वस्वापहारिमाया विद्युत्दस्युवञ्चक दिवाचररात्रिञ्चर सन्ध्याचर शृङ्गिनखिदंष्ट्रि विद्युदुल्कारण्य दवप्रान्तरादिनानाविध महोपद्रवप्रभञ्जनि सर्वमन्त्रतन्त्रयन्त्र कुप्रयोग प्रमर्दिनि सर्वबन्धदुःखप्रमोचिनि

****

सर्वाहितनिकृन्तनि षडाम्नायसमयप्रकाशिनि परमशिवपर्यङ्कनिवासिनि प्रज्वलत्पावकज्वाला जालातिभीषणश्मशानविहारिणि अचिन्त्यामितागणेयप्रभाव बलपराक्रम गुणवशीकृत कोटि ब्रह्माण्डवर्तिभूतसङ्घे विराट्रूपिणि सर्वदेवमहेश्वरि सर्वजनमनोरञ्जनि सर्वपापप्रणाशिनि आध्यात्मिकाधिदैविकाधिभौतिकादि विविधहृदयाधिनिर्दलिनि नियुतप्रचण्डदोर्बलिनि कैवल्यनिर्माणनलिनि गौरि अरूपे विरूपे विश्वरूपे अं औं एं ऊं सिद्धिविद्ये महाविद्ये खां छां ठां थां फां अजिते अलक्षिते अमिते अद्वैते अपराजिते अप्रतिहते अगोचरे अव्यक्ते गां जां डां दां बां भद्रे सुभद्रे किराति मातङ्गि चाण्डालि घां झां ढां धां भां द्राविणि द्राविणि भ्रामरि भ्रमरि ङां ञां णां नां मां उल्कापुञ्जिनि वेतण्डभण्डिनि कं खं गं घं ङं अनङ्गमालिनि अनङ्गवेगाकुले अनङ्गप्रिये किं खिं गिं घिं ङिं इन्द्रोपेन्द्रजननि मृत्युञ्जयगृहिणि खीं गीं रीं घीं ङीं सावित्रि गायत्रि महित्रि सवित्रि कुं खुं गुं घुं ङुं सरस्वति मेधे लक्ष्मि विभूतिप्रदे खूं घूं कामप्रदे कामाङ्कुशे कामदुग्धे कामस्रवे कें खें गें घें ङें कुमारि युवति वृद्धे खैं गैं घैं ङैं कात्यायनि ईश्वरि महारात्रिसन्ध्ये महानिशि कों खों गों घों ङों अध्वर्युकरङ्किणि करङ्कधारिणि कलङ्किनि खौं गौं घौं ङौं मायूरि कुक्कुटि नारसिंहि शान्तिस्वस्तिपुष्टिवर्धनि यां लां वां शां षां सां गङ्गे यमुने सरस्वति गोदावरि नर्मदे कावेरि कौशिकि चिं टिं तिं पिं छिं ठिं थिं तें क्षें भें फें बें भैं मैं सन्तानप्रदे सन्तानमालाभारिणि जिं ढीं कैं बिं सां छैं झिं क्षिं भिं कौलाचारव्रतिनि कौलाचारकुट्टिनि कुलधर्मरक्षिके जें बें ढें झें तें रें णिं सिं ढिं विश्वम्भरेऽचले प्रचण्डदयिते पशुपतिमहिते शचि शबरि सन्ध्ये सों यिं मिं निं रिं छीं लिं विं शिं षिं सिं हिं जगत्कारणकारिणि ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रभगिनि ढीं जीं चुं ञें धूं णीं छुं टें झीं ठें नें महारौद्रि रुद्रावतारे रुद्राविणि द्रविणि द्राविणि ञीं ठिं थीं दीं यें णें जैं ठीं फीं थें झैं ञैं नीं दें सङ्कल्पिनि विकल्पिनि प्रपञ्चप्रकल्पिनि बीं शूं जुं षूं भों मीं लें भीं सूं षीं पें में थैं णैं ढैं अबीजे नानाबीजे जगद्बीजे बीजार्णवे सर्वबीजमयि चं छं जं झं ञं तों थों दों धों नों यीं रीं लीं वीं शीं अमूर्ते विमूर्ते नानामूर्ते मूर्त्यतीते सकलमूर्तिधरे डुं ढं धें शें दैं सूं टं नां खिं डं ढं णं फों पों बों भों यों रों लों वों शों षों सों फैं क्षौं महामाये मायातीते मायिनि मायामोहिनी झुं ठुं णुं तुं टुं तं तं तं तं तं षें षें षें धें नैं दुं थुं लं लं लं लं लं लं लं योगेश्वरि योगैकगम्ये योगातीते चण्डातिचण्ड महाचण्डयोगेश्वरि चण्डिके धुं धुं भुं भुं शूं शूं शूं शूं शूं पं पं पं पं पं झूं झूं फौं फौं बूं बूं रूं रूं चों चों चों चों चों कालेश्वरि कालवञ्चनि कालातीते कालातिकालमहाकालीश्वरि टों पुं ढूं थूं णूं दुं ठुं फूं ठों ठों ठों ठों छौं छौं छौं छौं ब्रह्माण्डेश्वरि ब्रह्माण्डकलेवरे कोटिब्रह्माण्ड सृष्टिकारिणि फुं बुं थौं थौं थौं थौं ठौं ढौं णौं युं रूं लुं वुं मुं यूं ञें पें नूं सर्वेश्वर्ये सर्वेश्वरैकगम्ये सर्वैश्वर्यदायिनि सर्वसर्वेश्वरि ठीं षौं सौं भौं शौं लौं रौं यौं वौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं र्श्रीं र्हीं रक्लीं रश्रीं रह्रीं रस्त्रौं रग्रों रघ्रों क्ष्लहक्षझ्रूं धूमकालि ओंह्क्षम्लछव्य्रऊं रघ्रीं रघ्रौं रच्रें रठ्रें रज्रूं रझ्रों रठ्रों रण्रां फट् नमः स्वाहा रघ्रां रच्रों रछ्रें रज्रें रझ्रूं रढ्रें छ्ररक्षह्रौं ग्लफक्षफ्रक्ष्रीं क्षफ्लीं जयकालि जय जय जीव जीव छ्ररक्षह्रां ड्रौं रञ्रें रघ्रूं रछ्रौं रड्रां छ्ररक्षह्रीं हफ्रीं हफ्रीं फट् फट् फट् स्वाहा कहलक्षछलक्रक्ष्मऐं रहक्षम्लव्य्र अखफछस्त्रह्रीं क्षम्लूं क्षरह्रूं रह्छ्ररक्षह्रां रघ्रें उग्रकालि रठ्रीं क्षख्रीं रणीं नमः स्वाहा रड्रूं रघ्रैं नें रध्रूं रथ्रूं रप्रें ख्रस्त्रें लक्षां रब्रीं ज्वालाकालि रद्रीं रज्रां रन्त्रूं फट् स्वाहा सक्लह्रीं सफ्रक्षक्लयावछ्रीं सक्लह्रीं धनकालि स्वाहा रज्रौं ख्रीं (सान्निध्यम्) रठ्रां रड्रैं छ्ररक्षह्रैं घोरनादकालिलक्ष्मीं रह्छ्ररक्षह्रैं रक्क्षैं क्षब्लूं नमः स्वाहा रठ्रौं रड्रैं रठ्रं रड्रीं रण्रों लीं किं रत्रां रह्रैं रजझ्रक्षैं रक्षफ्रछ्रैं रत्रूं चरक्ष्लहमह्रूं क्ष्लह्सक्रूंई कम्लव्य्रई कल्पान्तकालि सखह्क्ष्मक्रीं रढ्रां रढ्रूं श्रौं रकक्षौं हसखफ्रम्ल क्षव्य्रऊं (गह्वर कूटम्) रक्षफ्रछ्रां फट् स्वाहा रथ्रें रश्रैं रथ्रैं रफ्रों रब्रौं रभ्रूं वेतालकालि रह्रें रश्रों रघ्रां ह्लक्षकमब्रूं क्षालूं रह्रां रथ्रौं स्हौं फट् फट् फट् नमः नमः स्वाहा रक्ष्रैं रह्रौं रफ्रूं रक्ष्रीं श्रैं रस्त्रें रस्त्रों रप्रौं क्लक्षह्व्रमयऊं म्लव्य्रवऊं सक्लह्कह्रीं कङ्कालकालि रक्लां रक्लें रम्रें रप्रूं रत्रों रद्रीं रद्रों रद्रां रध्रें रव्रैं स्वाहा (क्षफ्रह्रैं) रत्रें रक्ष्रों

रकक्षूं रस्त्रीं रफ्रां रकक्षीं क्षहलूं रथीं रढ़ौं श्र: नग्नकालि तम्लव्य्रईं शम्लव्य्रईं स्हकहलह्रीं फट् स्वाहा रस्त्रां रक्षें रस्त्रैं ज्रौं रण्रूं खफ्रीं रढ़्रीं फ्रस्त्रूं रस्त्रां रक्लूं खफ्रां रधैं रद्रें रद्रूं रथों रत्रों रफ्रौं घोरघोरतरकालि ब्रह्माण्डपरिवर्तिनि ह्लक्षम्लब्रयूं रक्षक्रीं खमह्रीं क्षफ्लूं रजझ्रक्षौं हफ्रूं रक्लों रभ्रौं रभ्रौंखफ्रभ्रूं स्वाहा खफ्रूं खलह्वनगक्षरछ्रीं दुर्जयकालि रघ्रों रफ्रां रफ्रीं रप्रों रत्रैं रब्रैं क्षह्रीं खफ्रौं नमः रणौ हलक्षों लक्षें लक्षौं हलक्षूं मन्थानकालि सफहलक्षों स्वाहा रश्रें खफ्रों खफ्रौं शम्लह्वव्य्रखफ्रैं संहारकालि ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल भीषणाकारं गोपय गोपय मां रक्ष रक्ष हसफ्रों क्ष्लौः हलक्षां लक्षैं फट् स्वाहा लक्षों हलक्षीं हलक्षें खफसहक्ष्लब्रूं क्रौं सहकक्षक्षह्लमव्य्रऊं आज्ञाकालि हलक्षैं नमः रत्रीं हलक्रैं सहक्षलक्षंहसफ्रें हलक्षौं रौद्रकालि रत्रैं रध्रौं फहलक्षां रत्रां फट् फट् फट् नमः स्वाहा (मातृ बीजं) (पौं) हसखफ्रं फहलक्षूं रत्रें ह्लमक्षब्रलखफ्रऊं तिग्मकालि रप्राँ फहलक्षें (गणास्त्रं) रप्रैं रफ्रैं नमः फहलक्षैं रत्रों सखह्लक्ष्मक्लां कृतान्तकालि करनिष्पिष्टत्रिभुवने तुरु तुरु हस हस रथां फहलक्षौं खफलक्षह्ल महकब्रूं फहलक्षों फट् फट् फट् स्वाहा क्षरहम्लह्लकसछव्य्रऊं खहलक्षक्रक्ष्लहक्षऊं गहलक्षक्षकटलक्षरप्रीं महारात्रिकालि सर्वविद्याप्रकाशिनि रफ्रैं फहलक्षों रब्रां नमः रश्रूं (घाटीं) सफहलक्षें रथीं रत्रौं सङ्ग्रामकालि जयदे जयं देहि देहि टहलक्षद्रडलरफ्रीं सफहलक्षैं रब्रैं रश्रां नम्रो नमः स्वाहा (हन) द्रीं रब्रों टम्लव्य्रईं भीमकालि भयं मे नाशय नाशय हफ्रैं रभ्रां नमः स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर चट चट कह कह शवकालि सखह्लक्ष्मग्लीं टहलक्षद्रड्लरफ्रीं रभ्रीं स्वाहा रम्रां रम्रों हफ्रौं रक्षफ्रछ्रौं चण्डकालि यम्लव्य्रईं रम्रीं स्वाहा रम्रूं रम्रैं म्लव्य्रमईं रुधिरकालि फट् स्वाहा म्लव्य्रवऊं सखह्लक्ष्मह्रीं घोरकालि नमोऽस्तुते स्वाहा छ्रस्हक्षब्लश्रीं अभयङ्करकालिके कोटिकल्पान्तज्वालासमशरीरे म्लव्य्रहऊं नमः फट् स्वाहा ह्लफ्रें सखह्लक्ष्महूं ग्लक्षकमह्लव्य्रऊं सन्त्रासकालि भयं मे शमय स्वाहा क्षस्त्रौं प्रेतकालि स्हक्षम्लव्य्रऊं नमः स्वाहा सं सां श्रह्रां करालकालि फट् फट् फट् नमः ख्रीं क्षस्त्रां म्लव्रवईं विकरालकालि चण्डचण्डे त्रिभुवनमावेशय स्वाहा क्षब्लकस्त्रीं प्रलयकालि श्रह्रीं क्षस्त्रूं सखह्लक्ष्मस्त्रीं स्वाहा नमः फट् छ्रखफ्रीं क्षस्त्रैं श्रह्रूं क्षस्त्रीं थलहक्षकह्लमव्रयीं विभूतिकालि श्रियं मे देहि दापय स्वाहा खफ्रछ्रां खफ्रछ्रीं खफ्रक्लूं क्रह्रौं भोगकालि पक्षलव्रझ्रफ्रूं नमः स्वाहा श्रह्रैं श्रह्रैं खफ्रह्रैं खफ्रह्रैं सखह्लक्ष्मश्रीं खहलक्षमरब्लईं कालकालि मृत्युपाशं छिन्धि छिन्धि परविद्यामाकृष्य दर्शय स्वाहा दां दां दां क्रह्रां तफरक्षम्लह्रौं खमसहक्षवल्रीं सखह्लक्ष्मक्लीं वज्रकालि वज्रमयाक्षरकलेवरे खफ्रक्लैं स्वाहा खफ्रछ्रैं खफ्रछ्ररौं क्रह्रीं क्रह्रूं खफसहक्ष्लब्रूं क्रौंसहकक्षछ्रह्लमव्य्रऊं विकटकालि विकटदेहोदरे सखह्लक्ष्मक्रैं फट् फट् फट् फट् फट् स्वाहा खफ्रछ्रां खफ्रछ्ररूं फ्रतक्षम्लह क्षहथलहक्षह्रूं विद्याकालि विद्यां देहि दापय स्वाहा खफ्रक्लौं खफ्रह्रीं खक्षहलक्षब्रलीं सखह्लक्ष्मथीं बलहक्षबलऊं कामकलाकालि खफ्रह्रूं खफ्रक्लीं नमः स्वाहा क्रह्रैं क्रप्रीं (अथवा खफ्रछ्रौं) स्हक्षम्लव्य्रीं शक्तिकालि खफ्रक्लां नमः खफ्रक्लूं ह्लस्त्रौं सखह्लक्ष्मठ्रीं दक्षिणकालि क्षस्हम्लव्य्रीं स्वाहा खफ्रक्षूं खफ्रक्षैं सखह्लक्ष्मब्लौं च्लक्रथलहक्षह्रीं मायाकालि नमः क्षफ्लह्रीं भद्रकालि खलक्षक्षयवरखफछ्रें क्षह्लम्लव्य्रईं सखह्लक्ष्मजूं फट् नमः स्वाहा खफ्रह्रं खफ्रह्रीं क्रह्रौं कमहलचहलक्षरज्रीं महाकालि ह्लग्लां नमो नमः स्वाहा खफ्रक्षां खफ्रह्रौं खफ्रह्रूं श्मशानकालि चहलक्षट्लहसखफ्रूं ह्लग्लीं ह्लग्लैं फट् नमः क्षखफ्रैं क्षखफ्रें सखह्लक्ष्मस्फ्रों टक्षसनरम्लैं ह्लग्लौं ह्लग्लूं कुलकालि क्षज्रूं क्षब्लीं नमः फट् स्वाहा रक्षख्रीं नादकालि क्षज्रौं क्षब्लूं क्षज्रां स्वाहा क्रह्रौं क्रह्रैं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्लम्लव्य्रऊं सखह्लक्ष्मक्रों क्षह्लम्लव्य्रईं मुण्डकालि क्षब्लैं क्षक्लां नमः क्षब्लौं क्षफ्रब्लीं म्लकह्रक्षस्त्रीं सिद्धिकालि क्रह्रीं स्वाहा क्रह्रां क्रह्रूं नदक्षट्क्षव्य्रऊंछलहक्षलक्षफ्रग्लूं उदारकालि फट् फट् स्वाहा छ्रम्लीं क्षज्रैं सखह्लक्ष्मक्रों झसखग्रमूं क्रह्रैं स्वाहा फट् नमः रह्लक्षम्लूं क्षज्रीं क्रह्रौं ह्लस्त्रां झसखग्रमूं क्षस्हम्लव्य्रींक्षह्लम्लव्य्रईं उन्मत्तकालि क्रह्रां स्वाहा नमः क्षूक्लूं क्रह्रीं ह्लक्षम्लूं क्षह्लम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं सखह्लक्ष्महौं सन्तापकालि क्षूक्लीं

क्रह्रूं फट् नमः स्वाहा ह्क्षम्लां क्रह्रौं क्षह्म्लव्र्ऊं कपालकालि अमृतं मयि निधेहि स्वाहा ह्क्षम्लौं ह्स्त्रूं रक्षख्रूं आनन्दकालि नमः फट् ह्क्षम्लीं ह्क्षम्लैं रक्षक्रूं निर्वाणकालि क्षस्हम्लव्र्ऊं स्वाहा क्लरह्रैं ह्फ्रीं स्त्रीं ठ्लब्रखफछ्रीं ग्लकक्षहलैं भैं फैं विकालि फट् फट् फट् स्वाहा ह्छ्रां छ्रह्रां छक्षकहलक्षप्रौं सखह्क्षमफों महिषमर्दिनि बलहक्षबलूं फट् स्वाहा ह्स्त्रैं क्लखफ्रां स्त्रखफ्रौं रलहक्षम्लखफ्रछ्रीं गक्षटहलक्षचक्षफलक्ष्रूं राजमातङ्गि सकलं मे वशं कुरु स्वाहा छ्रह्रैं ह्क्लौं क्रह्रूं क्लखफ्रीं ह्स्त्रूं सफक्ष्लमहप्रक्लीं सलहक्षचलहक्षजलहक्षजक्षत्रैं उच्छिष्ट मातङ्गि सर्वज्ञतां मे जनय फट् स्वाहा क्ष्लसहभव्रयूं लमकक्षह्रईं फ्रलक्ष्मकह्रूं नमब्लह्क्षम्रग्लूं डलहक्षच्लद्रक्ष्मऐं लक्ष्मि निधिं मयि निवेशय स्वाहा त्लठ्लह् क्षथ्लृह्क्षदलहक्षक्षरहम्लव्र्ईऊं सलहक्षक्रमब्लयछ्रीं ह्छ्रीं ह्स्त्रौं महालक्ष्मि प्रसीद प्रसीद स्वाहा क्लखफ्रैं नमयव्लक्षरश्रूं ब्लहतह्सचैं सखह्क्ष्मसौः हक्षम्लव्रसहरक्लीं परमक्षलहक्षऐं छ्रींत्लठ्लह्क्षथलहक्ष दलहक्षक्षरहम्लव्र्ईऊं विश्वलक्ष्मि त्वर त्वर राज्यं मे देहि किं विलम्बसे स्वाहा ह्रीं ह्क्षम्लैं शम्लक्लयक्षह्रूं अन्नपूर्णे अन्नैर्मे गृहं पूरय स्वाहा रलहक्षम्लखफ्रछ्रूं क्लह्रीं डपतसगमक्षब्लूं दलडक्षवलहसखफ्रौं वाग्वादिनि ठफक्षथ्लमकस्त्रूं नमः क्षस्त्रों ह्मलक्षग्रस्त्रीं (सूर्यक्रान्तकूटम्) मक्षह्सहरव्र्ऊं वनदुर्गे नमः फट् क्षख्रीं ह्छ्रूं चफक्लह्मक्ष्रूं सहठलक्षह्मक्रीं कहलक्षश्रक्षम्लव्रईं कात्यायनि सखह्क्ष्मघ्रीं सहम्लक्षह्भ्लीं फलंयक्षकयब्लूं स्वाहा छ्रह्रौं सह्क्षकहह्रूं फसधमश्रयव्लूं ग्लक्ष्मह्चहलक्षक्षरस्त्रां यरक्षम्लब्लीं चफक्षलकमयह्रीं तुम्बुरेश्वरि फट् नमः स्वाहा ह्क्लीं ह्क्षफ्लीं कसवहलक्षमऔं रलहक्षकहलह्स्त्रें स्वाहा ह्क्लां मव्लक्षफ्रध्रीं म्लगक्षएफ्रीं पद्मावति थफखक्षलव्र्ईं क्ललसहमश्रीं नमः (कंककूटम्) जयदुर्गे सरहखफ्रम्लब्रीं नमः स्वाहा दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा ह्छ्रौं फ्रक्षह्स्हव्र्ऊं सरम्लक्षहसखफ्रीं जयलक्ष्मि संग्रामे जयं मे देहि दापय व्रतह्क्षह्रीं (मेधासू०) व्लयनहक्षकहश्रूं फट् नमः स्वाहा श्रखफ्रूं (सावित्री) तमहलहक्षक्लफ्रग्लूं धनलक्ष्मि धनं वर्ष वर्ष वर्षापय वर्षापय नमः छ्रह्रीं क्ष्मक्लरक्षलहक्षव्र्ऊं तक्षक्लव्रख्रछ्रूं छक्षकहलक्षप्रौं पूर्णेश्वरि कह्ब्लजूं मनोरथं पूरय स्वाहा ह्क्लैं मक्षक्रस्हखफछ्रूं म्लक्षह्सहरव्र्ऊं बगले धग्लक्षकमह्व्र्ऊं गपटतयजवलूं ग्लकमलहक्षक्रीं नमः फट् क्लक्ष्रौं सेखह्क्ष्मठौं ग्लरक्षफ्रथरक्लीं रक्तचामुण्डेश्वरि कब्रम्लक्षस्हवलूं मव्लक्षफ्रध्रीं क्लश्रमक्षह्म्लऊं क्लसमयग्लह्फ्रूं स्वाहा क्लह्रां श्रखफ्रां क्लह्रूं क्षफ्रगकह्नमह्रूं सरस्वति क्षलहक्षक्लस्त्रूंग्लमक्षसक्लह्रों क्ष्मसकह्रीं झ्रकस्त्रक्षथीं ह्लसहसेकह्रीं स्वाहा फट् नमः क्लह्रौं फ्लमधहक्षक्षव्र्ऊं कब्लयसमक्षख्रछ्रूं क्ष्लमरझ्ररथीं महामन्त्रेश्वरि व्रहठ्म्लह्रूं म्लकह्क्षस्त्रौं स्वाहा क्लक्ष्रीं नमः शूलिनि प्लहक्षक्ष्मझ्रहच्रूं फ्रपक्षग्लप्रीं रक्षलहव्र्ईं स्वाहा ह्थैं भ्रमलक्षव्यकरह्रीं छ्रलक्षकम्लह्रीं भुवनेश्वरि सम ह्क्षरक्ष्मस्त्रूं नदक्षट क्षव्र्ईऊं स्वाहा क्लह्रैं क्षक्षकह्स्हझ्रयूं जपतरक्ष्मलयकनईं यन्त्रप्रमथिनि क्षम्लकस्हरयब्रूं क्लह्क्षलहक्षमव्र्ईं ह्क्लक्षम्लश्रूं त्रैलोक्यविजये विजयं कुरु कुरु जय जय फट् स्वाहा सहकरक्षमह्क्लूं सखक्लक्ष्मधयब्लीं रलहक्षक्लसहफ्रआं ज्लह्क्षगमछ्रखफ्रीं गुह्यामहाभैरवि रसकमहलक्षछ्रीं हलमकक्षह्फ्रछ्रीं चम्लहक्ष सकलह्रूं ह्फ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा ह्सग्लक्षव्र्ऊं रफ्रों व्र्कलक्षह्म्लूं राज्यसिद्धिलक्ष्मि वरनयक्ष्मग्लह्रीं व्रतरयहक्षम्लूं राज्यश्रियं मयि निधेहि स्वाहा (लेपवीजम्) रफ्रीं क्षब्लकस्त्रीं ठक्लक्ष्मलव्रह्रूं सनह्लक्ष्मब्लूं क्लक्षहमह्हसखफ्रूं राजराजेश्वरि भलनएदक्षीं जसदनस्हक्षग्लूं हम्लकक्षव्र्लछ्रौं लसरक्षकमव्र्द्रींल्श्रौं (ततः कूटौ गजाक्रान्तौ कन्दर्प बलशातनौ ३।८१५) फट् फट् नमो नमः स्वाहा क्लखफ्रूं स्हक्ष्मह्क्ष्ग्लूं ईक्षक्षए एक्लह्रीं अश्वारूढे नजरमकह्क्ष्लश्रीं गमतक्षखफ्रह्व्र्ईऊं बसरझ्रमक्षव्रक्लीं नमः स्वाहा क्लह्रौं क्लह्रूं क्लटव्र्क्षम्लीं रहह्व्र्क्लीं वज्रप्रस्तारिणि मकक्षह्ग्लब्लईं रलहक्षक्लस्हफ्रऊं जममक्षकह्ब्लजूं स्वाहा नमः लह्क्षकमव्र्ह्रीं ह्फ्रूं नित्यक्लिन्ने प्रसन्ना भव स्हक्ष्मह्क्षग्लीं नमः स्वाहा हरसकक्षम्लस्त्रीं टसनमहक्षमखरऊं रलहक्षक्लस्हफ्रऊं अघोरे घोरघोरतररूपे पाहि पाहि त्रिलोकीं

क्षग्लफ्रस्हरफ्रीं स्वाहा ह्रफ्रैंछ्म्लक्षफ्लह्हम्रीं कमक्षव्य्रकछ्रूं जय भैरवि जयप्रदे जय जय विजय विजय ह्मक्षकमह्रीं कह्वक्षक्रीं फट् स्वाहा नमः व्य्रधरमक्षच्लीं ह्रफ्रौं जय महाचण्ड योगेश्वरि ब्लक्षफहमछ्व्रीं खतक्लक्ष्मव्य्रहूं रक्षगम्लरह्रीं बसरझ्रमक्षब्रक्लीं (बहुसुवर्णकूटम्) स्वाहा नमः फट् डखछ्रूक्षहममफ्रीं क्षक्षक्ष्लफ्रचक्षक्षौं चण्डयोगेश्वरि क्षकभ्रह्लह्मव्य्रईं थमक्ष्लकब्रह्स्त्रूं छडतजलूं (शुद्धवर्त्यंकूटम्) स्वाहा रलहक्षक्लस्हफ्रएं क्लफ्रीं त्वरिते नमः छतक्षठ्नह्ल्लीं क्लफ्रूं सक्ष्मह्लखफ्रह्रीं त्रिपुटे सर्वं साधय स्वाहा ह्रखफ्रीं रलहक्षक्लस्हफ्रऐं स्हक्लक्ष्मह्रग्लूं महाचण्ड योगेश्वरि ब्लमक्षमफख्रछ्रीं पपक्षम्लस्हखफ्रां फट् नमः हफ्रां रलहक्षह्लक्रीं क्लखफ्रां चण्डकापालेश्वरि छ्रमकश्रहयहूं स्हव्रह्रखफ्रयीं मक्षव्लह्रकमव्य्रईं ह्रक्षफ्रकम्लईं गमहलयक्ष्लम्रीं फट् फट् फट् नमः नमः स्वाहा सहलक्रीं नमः स्वर्णकूटेश्वरि नकब्लम्क्षफ्रह्रीं ठक्ष्मलख्रछ्रीं हक्षमकह्रछ्रीं ब्लकक्षग्रमवरहस्त्रूं क्षलहक्षक्ष्मह्रक्ष्मएँ स्वाहा (रथक्रान्तकूटं) (अनुवृत्तिकूटम्) वार्तालि (धूतपापानदी) ब्लक्षफ्ल व्य्रछ्रीं फ्रक्षब्लूं फट् क्ललफ्ररसमक्षक्लछ्रूं स्हफ्रसक्लह्रओं खफ्रहूं चण्डवार्तालि ब्रक्षम्लसहछ्रीं स्वाहा ह्रथ्रूं जयवार्तालि मव्लयटतक्षईं रमरयछ्रखफ्रीं सर्वज्ञतां देहि दापय स्वाहा छ्रक्षग्लमस्त्रव्य्रऊं खफ्रहैं रलहक्षक्लस्हफ्रओं ज्वल ज्वल चैतन्य भैरवि लकछ्ररजरक्रीं स्वाहा कंहलंहंक्षूं नमः कालभैरवि कालेश्वरगृहिणि कालं मे नाशय स्वाहा स्त्रखफ्रां रलहक्षहलब्रीं व्रलह्रफ्रव्य्रऊं उग्रचण्डे रसमयक्षह्रस्त्रीं यरब्लमक्षह्रऊं कप्रम्लक्षयक्लीं फट् नमः स्वाहा श्रम्लूं क्लक्ष्मफहसौः श्मशानोग्र चण्डे महाघोराकारधारिणि डमतक्षह्रब्रीं फट् स्वाहा स्त्रखफ्रीं यसम्लक्षसक ह्रव्य्रईं रुद्रचण्डे गसधमरयब्लूं गसनहक्षव्रईं नमः स्वाहा रहलक्षवलस्हफ्रअं प्रचण्डे क्षलहक्षभलम्लूं टरयलह्रब्लछ्रीं हंसम्लक्षप्रक्लीं कहलजमक्षरव्य्रऊं नमः फट् स्वाहा श्रखफ्रीं खक्षमब्लईं फट् नमः करह्ररखफछ्म्रीं पटक्षम्लस्हखफ्रूं नमः फट् कालचण्डे (धुनी) (मालिनी) फट् नमः श्रखफ्रैं रलहक्षक्लस्हफ्रअः कस्हक्ष क्षमश्रूं चण्डवति प्रसन्ना भव छ्रस्हक्षव्लश्रीं स्वाहा क्षलहक्षम्लब्रीं ह्रक्लक्षम्लश्रूं अतिचण्डे क्लम्लक्षस्हश्रीं घोररूपमुपशमय स्वाहा श्रखफ्रौं झ्रकस्त्रक्षथ्रीं चण्डिके कृपां कुरु कुरु नमः स्वाहा सह्रक्षक्लमव्य्रस्त्रीं ज्वालाकात्यायनि सलहक्षक्लब्रीं रक्षरजक्ष्मक्ष्मरह्रम्लव्य्रछ्रीं (वारुणवर्णम्) रमयपक्षब्रूं फट् नमः ह्रहूंछ्रस्हक्षव्लश्रीं रलहक्षडम्लब्रखफ्रीं उन्मत्तमहिषमर्दिनि टरक्षप्लमहूं जनथक्षकम्लव्रीं फट् स्वाहा ह्रभ्लीं नमः ह्रों मधुमति भोगसिद्धिं प्रयच्छ स्वाहा यस्हप्लमक्षहूं क्षलहक्षक्ष्मह्रक्लओं त्रिपुरावागीश्वरि ब्रक्षम्लसहछ्रूं स्वाहा स्त्रहूं चण्डवारुणि सर्वमावेशय वरकजझ्रमक्ष्लऊं स्त्रह्रफ्रम्रीं नमः स्वाहा छ्रहूं (दीक्षा) ग्लौं कसवह्लक्ष्मओं (सौम्य) नमहक्षव्य्रहूं फट् स्वाहा ह्रभ्लां जलयकक्षग्लफ्रूं क्षलहक्षक्ष्मह्रक्ष्मऊं धनदाघोरे धनं प्रयच्छ लक्षलहक्षमकह्रीं फट् नमः क्लहक्षमव्य्रफ्रीं कालरात्रि कालं मे नाशय नमः स्वाहा ह्रभ्लूं खफछ्म्लग्रक्लीं रलहक्षहलक्लीं किरातेश्वरि जगद्वशमानय स्वाहा मयभनसलक्षूं क्लह्रक्ष्म्लक्लीं दिगम्बरि नमः फट् ह्रभ्लैं क्षलहक्षक्ष्मह्रक्लऐं कालसङ्कर्षिणि सनटमतक्षब्लभ्रीं कालं वञ्चय छपतयक्ष्लम्रीं स्वाहा श्रब्लां टनतमक्षव्लयछ्रूं जयकङ्केश्वरि म्रलक्षकहखफ्रछ्रीं रलहक्षक्लस्हफ्रआं जररलहक्षम्लव्य्रऊं ट्लत्लक्षफ्रखफछ्रीं स्हएंक्लरक्ष्रीं नमः फट् स्वाहा श्रब्लौं झ्लहक्षम्लां सिद्धिलक्ष्मि समलक्षग्लस्त्रीं सहमक्षलखभ्रक्लीं ट्लत्लक्षफ्रखफछ्रीं ऐक्षकसखफ्रव्य्रऊं नमः जरक्षलहक्षम्लव्य्रऊं क्षक्षमह्रकहलश्रीं भ्रमराम्बिके जय जय ज्वल ज्वल संपत्तिं दद दद स्वाहा (विष्कम्भ) नमः महामोहिनि मोहय मोहय जगद्वशं कुरु नमः थहरखफ्रह्रमब्लूं मसफ्लभरक्षव्य्रहूं कं हं लं हं क्षूं शबरेश्वरि कुकृत्यं नाशय शरीरं गोपय गोपय स्वाहा श्रब्लीं कहफ्लमह्रव्य्रऊं महार्णवेश्वरि रत्नं दद दद फट् स्वाहा छ्म्लक्षफ्लहहम्रीं धमसरब्लयक्षूं हम्लक्षव्रसह्रीं चण्डेश्वरि तफरक्षम्लह्रौं फट् फट् फट् स्वाहा श्रब्लैं सलहक्षक्लक्लीं ह्लकझ्रक्षश्रीं बाभ्रवि नमः स्वाहा चमट्क्षव्य्रछ्रीं चमरगक्षफ्रस्त्रीं वज्रकुब्जिके डञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा महलक्षग्लक्लीं

****

नरक्ष्लहक्षकम्लव्य्रह्रीं समयदेवि ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा रसमयक्षक्लह्रीं क्षलहक्षक्षमह्रक्ष्लईं मोक्षदेवि डमणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा (उत्तरानाड़ी) खलभक्ष्मलव्य्रईं भोगेश्वरि डमणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा। दरजभ्रम्लकक्ष्रीं झ्रक्षग्लम व्य्रईं जयेशानि ङ्ञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा। रलहक्षक्लस्हफ्रईं ररटकरक्षम्रीं सिद्धीश्वरि ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा कंह्लंह्रंख्रौं ह्लकझ्रक्षश्री आवेशदेवि ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा नक्ष्मज्लहक्षखफ्रव्य्रऊं रजम्क्षकम्लीं शिवचिन्तामणि ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा फ्रखभ्रआंक्लमझ्रयूं चफसलहक्षमव्य्रऊं परादेवि ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा मक्षक्लक्षव्य्रछ्रूं करयनप्लक्षफ्रीं हंसमहेश्वरि ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा प्रहरक्षमहह्लक्लीं छत्क्षठ्नह्लब्लीं रत्नेशानि ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा धलसहक्रक्क्षब्रलम्रीं ब्लयक्ष्मझ्रग्लथूं कुलदेविके ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा रगहलक्षम्लयछ्रूं ग्लमक्क्षह्लछ्रब्रीं ज्ञानशिवे ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा ह्रम्क्षब्रलखफ्रऊं सलहक्षब्रठक्षईं नीलमहेश्वरि ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा समरगक्षहसखफ्रीं टनतम्क्षब्लयछ्रूं कलादेवि ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा रलफ्लहक्षखफछ्रौं जररलहक्षम्लव्य्रईं रसमयक्षक्लह्रीं निर्वाणदेवि ङञणनम अघोरामुखि किणि किणि विच्चे नमः स्वाहा श्रब्लौं चरफयम्लक्ष्मह्लूं कुक्कुटि राजनं मोहय मोहय वशीकुरु वशीकुरु नमः स्वाहा एक्लयक्षम्रट्रीं ससहलक्ष ह्लकमर धनदे धनं मे देहि दापय स्वाहा मंह्लंक्ष्लझ्रब्लूं खरगवक्ष्मलयव्य्रईं कोरङ्गि जरक्षलहक्षम्लव्य्रईं फट् स्वाहा फ्रदमहयनह्लूं डामरि मंह्लंफ्लझ्रब्लूं नमः फट् स्वाहा समहक्षव्य्रऊं रक्तदंति भयं मोचय स्वाहा नमः फट् चर्चिके शत्रुभयमुन्मूलय नमः स्वाहा क्लक्ष्मग्लव्य्रह्लूं सङ्कटादेवि सङ्कटं नाशय नाशय फट् स्वाहा समतर्क्षखफछ्रक्लों सलहक्षब्रठ्क्षआं द्रैंजमरब्लह्लयूं चण्डघण्टे पापं मे शमय सिद्धिमुपनय फट् स्वाहा दमनडत्क्षसहव्य्रईं छ्रम्लक्षव्रकह्रीं मथह्लक्षप्रह्लूं चामुण्डे नरमुण्डकङ्कालमालाधारिणि भीषणानने मक्क्षह्लग्लब्लईं फट् फट् नमः स्वाहा सक्लएईह्रीं रक्षमखछ्रस्त्रफ्रीं क्ष्लक्ष्लहक्षक्लौं महाकरालिनि नीलपताके फट् फट् स्वाहा स्हम्लक्षह्लभ्लीं मक्लक्षकसखफ्रूं नहरक्षस्त्रम्लह्रीं हरसिद्धे दुःखं हर हर सिद्धिं दद दद फट् स्वाहा नमः समगक्षलयब्लूं हम्लक्ष्मप्लब्रूं अनङ्गमाले देवि स्हम्लक्षह्लभ्लौं फट् स्वाहा क्लपट्क्षमव्य्रईं (नाडीं रण्डा) फेत्कारि स्हफ्रकफ्लह्लस्त्रीं नमः स्वाहा म्लरलहक्षहलक्लीं महलक्षलखफ्रव्य्रह्रीं भोगवति भोगं प्रयच्छ (विश्वदूतानाडी) स्वाहा ख्रहक्षमह्लव्रह्रीं लवणेश्वरि फट् स्वाहा रसमयरक्षक्षग्लीं यम्लरक्षसह्लक्लूं मृत्युहारिणि मृत्युं हर हर स्वाहा मनटत्क्षफ्लव्य्रऊं नमः नमः नाकुलि सर्वमुच्चाटय स्वाहा जरझ्रह्लमक्षक्लव्य्रऊं वज्रवाराहि संपदं देहि देहि फट् नमः स्वाहा फट् फट् फट् नमः स्वाहा भूतभैरवि भैरवं चालय चालय चट चट प्रचट प्रचट कह कह प्रलय मुखानलं वम वम द्विषन्तं हन हन संपदा गृहं पूरय पूरय स्वाहा (स्वाहा स्वाहा नमो नमो) नमः फट् फट् फट् चखफ्लक्षकस्हखफ्र नमः चण्डखेचरि ग्रहताराविमर्दिनि विकटोर्ध्वचरणे फट् स्वाहा नमः रम्क्षब्लस्हरह्रीं भगवत्यधर्मस्तकि मनणञङछिप्पिनि विच्चे शङ्खिनि द्राविणि हिलि हिलि किलि किलि नमः फट् स्वाहा लगमक्षखफ्रसह्लूं क्रम्लैं पतक्षयह्लक्लखफ्रीं कामाख्ये कामान् पूरय फट् स्वाहा क्षम्लौं खफ्रमसलहक्षग्लऊं धूमावति धूमवर्णे धूमाङ्गरागे धूमलोचने वाचं स्तम्भय स्तम्भय नमो नमः फट् फट् स्वाहा नमः। ओं फग्लसहमक्षब्लूं हाटकेश्वरि हाटकं प्रयच्छ स्वाहा छ्रक्रूं ग्लट्रां ग्लब्लैं व्य्रक्लक्ष्मछ्रीं रक्षफ्रसमहह्लव्य्रऊं हृदयशिवदूति दुष्टप्राण (भ्रामरि भ्रामरि) द्रविणि द्राविणि मांसशोणितभोजिनि रक्तकृष्णमुखि मा मां पश्यन्तु शत्रवः श्री पादुकां पूजयामि हृदयाय नमः त्रक्षत्रीं क्रथूं

(भेदं) ग्रमहल्क्षखफ्रग्लैं क्लसहमह्लक्षश्रीं शिवदूति स्वाहा भगवति दुष्टचाण्डालि रुधिरमांसभक्षिणि कपालखट्वाङ्गधारिणि यो मां द्वेष्टि तं ग्रस ग्रस मारय मारय भक्षय भक्षय हन हन पच पच छेदय छेदय दह दह श्री पादुकां पूजयामि शिरसे स्वाहा ह्भ्रां क्रप्रूं क्षफ्रह्रैं मफ्रलहलहखफ्रूं फग्लसहमक्षव्लूं शिखा शिवदूति जटाभारमहापिङ्गले विकटरसना कराले सर्वसिद्धिं देहि देहि दापय दापय रत्नवृष्टिं वर्ष वर्ष श्री पादुकां पूजयामि शिखायै वषट् ब्रत्रें ब्रत्रें ब्रफ्रथों महक्ष्लव्य्रऊं मरयक्षक्षसहफ्रीं कवच शिवदूति महाश्मशानवासिनि घोराट्टहासिनि विकटतुङ्गकोकामुखि महापातालतुलितोदरि भूतवेतालसहचारिणि श्री पादुकां पूजयामि कवचाय हूं णम्लैं णम्लौं ह्स्त्रों रसमस्त्रह्लव्य्रऊं फलंयक्षकयब्लूं नेत्रशिवदूति लेलिहानरसना भयानके विस्त्रस्तचिकुरभारभासुरे चामुण्डाभैरवीडाकिनीगणपरिवृते आगच्छ आगच्छ सान्निध्यं कल्पय कल्पय त्रैलोक्य डामरे महापिशाचिनि श्री पादुकां पूजयामि नेत्रत्रयाय वौषट् (वर्हं)। खल्फ्रों झ्रहत्रक्ष्मसह्रीं (प्रस्हम्लक्षक्लीं) खफ्रध्रव्य्रओं छ्ध्रीं अस्त्र शिवदूति परापरगुह्यातिगुह्य समय रक्षिके फट् फट् फट् मम सर्वोपद्रवान् मन्त्रतन्त्रानुसम्भवान् परेण कृतान् कारितान् ये वा करिष्यन्ति तान् सर्वान् हन हन मथ मथ मर्दय मर्दय दंष्ट्राकरालि चण्डिनिकटे श्री पादुकां पूजयामि अस्त्राय फट्। छ्क्रौं ऐं ग्लठूं जरव्य्रसहक्षभ्रीं त्रम्लक्षह्लछ्रीं व्यापकशिवदूति हूंहूंकारघोरनादवित्रासितजगत्प्रिये क्ष्स्फ्रौं क्रफ्रां क्ष्ख्रैं (क्षक्लैं) प्रसारितायुतभुजे महावेगप्रधाविते पदविन्यासत्रासितसकलपाताले गलद्रुधिरमुण्डमालाधारिणि महाघोररूपिणि ज्वालामालिनि पिङ्गजटाजूटे अचिन्त्यमहिमबलप्रभावे दैत्यदानवनिकृन्तनि श्री पादुकां पूजयामि नमः फट् स्वाहा (नैयत्यकूटं) क्रफ्रें त्रक्रीं (अर्गला) गुह्यातिगुह्यं त्रं त्रक्रां (कुडुक्क) वश्यबगले द्रमटक्षसहक्लीं जगत्त्रयं वशीकुरु स्वाहा त्रक्रों व्रप्लैं त्रिकण्टकि (धारिणी नाड़ी) मोहय मोहय जय जय ज्वल ज्वल नमः फट् स्वाहा व्रप्लों ग्लब्लूं हयग्रीवेश्वरि मयि विद्यां निधेहि स्वाहा त्रब्रां त्रबों रत्रौं सखक्लक्ष्मध्रयब्लीं भीमादेवि महाभीमे विकरालतराकारधारिणि भयं मे मोचय मोचय शत्रुं जहि जहि फट् स्वाहा सहलक्रूं सहलक्रों (सुकल्या) शक्तिसौपर्णिके शक्तिं प्रदर्शय नमः स्वाहा छ्क्रां त्रब्रैं रत्रों क्रथां ग्लब्लां च्लक्ष्मस्हव्य्रख्रीं छ्क्रैं क्रथौं क्षज्लूं वैं फ्रखभ्रां खस्त्रौं खरसफ्रम्लक्षछ्यूं क्षस्त्रैं स्वाहा फ्रक्लां क्रख्रीं ग्लब्लौं कम्लक्षसहब्लूं संग्रामजयलक्ष्मि जयं देहि देहि तुभ्यं नमः स्वाहा (व्यासं) नमो विजयप्रदायै किं विलम्बसे जयं मे समुपस्थितं साधयित्वैनमुपनय स्वाहा फ्लक्रौं क्षक्लूं ब्लफस्त्रें खल्फ्रैं स्हक्षक्षकमफ्रब्रूं क्षेमङ्करि क्षेमं कुरु कुरु मधुमतीसिदि्धं दर्शय दर्शय फट् फट् फट् स्वाहा हलक्रों क्रप्रें ह्भ्रीं मूकाम्बिके भक्ष्लरमहसखफ्रूं मूकं वादय वादय परविद्यां द्विधाकृत्य त्रुट त्रुट छिन्धि छिन्धि फट् फट् स्वाहा नमः म्लैं छ्रहभ्रूं (करकाकरके) उग्रतारे फट् फट् स्वाहा (अवारं) क्षख्रौं (क्षक्लौं) (पारं) नीलसरस्वति स्वाहा सहलक्रौं त्रब्रूं क्षज्लां स्हल्क्रें रफ्रसकम्लक्षत्रीं एकजटे क्षज्लैं क्रफ्रौं क्रफ्रैं क्षज्लें ह्फ्रीं स्वाहा क्षफ्रह्रों फ्रखभ्रां (वृद्धि) फ्रक्लूं ध्रीं (वैरोचन) क्ष्मलरसहव्य्रहूं नमः स्वाहा (श्रुति) (बीजानां श्रुतिमेव च उड्डियानं ततो बीजम्) क्षफ्रह्रां पिङ्गले जगदावेशिनि जगन्मोहय मोहय पिङ्गलजटाजूटे प्रसीद स्वाहा स्हल्क्रीं त्रक्रूं चफलक्रूं व्रप्लीं ब्रह्माणि (सेतुकूटम्) निगमं प्रकाशय प्रकाशय त्रिलोकीं सृज सृज विसृज विसृज फट् फट् स्वाहा क्रफ्रों क्रफ्रूं ग्लठ्रैं ब्लकक्षहमस्त्रछ्रूं माहेश्वरि चन्द्रखण्डाङ्कितभाले भुजङ्गभोगभूषित कलेवरे जय जय जीव जीव प्रसीद प्रसीद स्वाहा ग्लख्रें छ्रहभ्रीं ग्लखैं फ्रथें (छिप्पि) क्लक्ष्मस्हखव्रीं महाशक्ति धारिणि भगवति कौमारि मयूरध्वजे ताम्रचूडपिच्छावतंसिते जय जय विजय विजय स्वाहा त्रक्षज्रूँ सहलक्रां व्य्रक्षस्हम्लस्त्रीं वैष्णवि सुपर्णवाहिनि कैवल्यं प्रयच्छ स्वाहा त्रब्रीं त्रब्रें सहलक्रैं स्हछ्रक्ष्लमरव्य्रईं वाराहि दंष्ट्रासमुद्धृतधरणिमण्डले चक्रविनिष्कृतदितिजदानवपीवरोरुबाहुदण्ड क्षोभितसागरे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल संदर्शितविश्वरूपावतारे

फट् फट् स्वाहा क्षज्लों (जौं) (वचनम्) धम्रब्लक्षफ्रखछ्रीं नारसिंहि खरनखरविपाटित महादैत्य विग्रहे सटाविनिर्धूत सप्तलोके (नीराजन प्रादेश) फट् फट् फट् स्वाहा ब्रफ्रथ्रूं छ्रहभ्रैं ड्लहक्षभ्लां तफलक्षकमश्रव्रीं विष्णुमाये मायां नाशय नाशय ज्ञानं प्रकटय स्वाहा (आरंजि वशिकं) व्रप्लें इन्द्राणि मधस्त्रकक्षलक्रीं राज्यं मे देहि स्वाहा ब्रफ्रथ्रें क्ष्लप्रूं क्ष्लप्लें क्रख्रों (स्वाति) मसक्षग्लयह्रीं परमहंसेश्वरि योगवति धर्मप्रवर्तिनि वैराग्येण मुक्तिं साधय स्वाहा छ्रह्भ्रां व्रफ्रथ्रां क्ष्लक्ष्रूं मोक्षलक्ष्मि फ्रखरक्षक्लह्रीं कह्लक्लक्षखफ्रीं डलहक्षज्लमफ्रव्रीं अज्ञानं शमय ज्ञानं प्रकटय कैवल्यं मयि निधेहि स्वाहा ब्लछ्रौं ब्लछ्रों व्रच्रौं हलक्रों (श्रोतपदं कूटम्) शातकर्णि भ्रामकि क्षामकि कान्तरवासिनि क्ष्लप्रैं ग्लख्रौं फट् फट् फट् नमः स्वाहा जं जं विघ्नं नमः स्वाहा जातवेदसि जातवेदोमुखि ज्वालामालिनि रम्लव्रीं वम वम धम धम स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर फट् स्वाहा प्रखभ्रैं क्रख्रां क्षफ्रह्रौं महानीले शत्रुसैन्यं स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय स्वाहा नमः फट् ख्फ्रभ्रौं (श्रौत्रक्रम) अपराजिते राज्यसिद्धिं जयलक्ष्मीं देहि दापय स्वाहा क्रख्रूं क्रख्रूं क्रख्रूं (श्रौत जटाकूटम्) गुह्येश्वरि गुह्यविद्यासमय प्रकाशिनि प्रपञ्चातीतस्वरूपे मां रक्ष रक्ष महाविघ्नेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा श्रह्रौं ख्फ्रभ्रीं क्रख्रौं (श्रौतवाल्लेय कूटकम्) नमो नमः फट् स्वाहा अभये भवभयं मोचय निवृतिं देहि फट् फट् नमः स्वाहा फ्रथ्रैं फ्रथ्रौं बु खरसफ्रम्लक्षछ्रयूं (श्रौतधन) रलहक्षसमहफ्रछ्रीं एकवीरे महाबलपराक्रमे भगवति जगदावेशिनि त्रिलोकीं वशीकुरु स्वाहा ख्फ्रभ्रें क्रप्राँ (पशु) (श्रौतध्वजकूटम्) महाविद्ये सर्वं मोहय मोहय उच्चाटय उच्चाटय किरि किरि किलि किलि छिन्धि छिन्धि कह कह फट् फट् स्वाहा ह्भ्रों ग्लख्रीं (चंचला) (पोष) (निस्तल) (श्रौतस्त्रज) धशड्लझ्ह्रीं भगवति तामसि तमः स्वरूपे ममाज्ञानं नाशय नाशय उन्मूलय उन्मूलय हन हन त्रुट त्रुट ध्वंसय ध्वंसय मूर्च्छय मूर्च्छय टफ्रकमक्षजस्त्रीं नमः स्वाहा रक्षें ब्रच्रीं क्रप्रीं कुलकुट्टिनि (मालाकूटम्) कुलचक्रप्रवर्तिनि गुह्यविद्याप्रकाशिनि ण्रम्लीं ण्रम्लूं ह्स्त्रूं फट् स्वाहा नमः समब्लकक्षव्य्रऊं तम्लव्य्रईं कुलेश्वरि गुह्यातिगुह्य समय कुलचक्रप्रवर्तिनि ह्खफ्रूं रच्रां व्य्रक्रीं विश्वपालिके विश्वं पालय पालय त्वामहं नमामि स्वाहा (ऋतम्) (अंश) ग्लख्रौं झथक्षमफ्रश्रौं विश्वरूपे चतुर्दशभुवनमात्मनि संदर्शय स्वाहा क्ष्लप्रों फ्रस्त्रीं क्रप्रैं ट्लव्य्रसमक्षहछ्रीं रक्तमुखि नीललोहितेश्वरि कल्पान्तनर्तकि नृत्य नृत्य गाय गाय हस हस चर्चरी तालिके मां रक्ष रक्ष संवर्तकारिणि स्वाहा ह्स्त्रौं ह्स्त्रीं (कणं) (रयिम्) ज्लकहलक्षव्रमथ्रीं जयन्ति द्विषन्तं जहि जयन्तं पाहि राज्यं भगं श्रियं देहि स्वाहा ब्रमक्लयसक्षक्लीं नमो नमः एकानंशे सृष्टिस्थितिप्रलयकारिणि सदाशिवार्धतनुधारिणि सर्वकृत्याप्रमर्दिनि नमः स्वाहा (सन्ध्यासूक्त) (वर्ष्म) ईंसकहमरक्षक्रीं ब्रह्मवादिनि ब्रह्मज्ञानं प्रकाशय अज्ञानं शमय स्वाहा ह्स्त्रें ज्रक्रां चफलक्रैं (मोहकूटम्) (मयु) (जन्या) कामाङ्कुशे प्रपञ्चातीतसंविदा लम्बिनि भवभयं हर हर नमः स्वाहा फ्रखस्हहमब्रयूं गरमश्रब्लक्षश्रीं झक्ररहक्ष्मव्य्रऊं आवेशिनि फ्रस्त्रौं र्‌ख्रध्रें ख्ल्फ्रां ह्लक्रैं सर्वमाविष्टं साधय साधय फट् फट् फट् स्वाहा नमः। ह्भ्रूं ह्भ्रें ह्ल्क्रौं र्‌फ्लौं क्लमयक्ष्लहक्षब्रीं मायूरि चित्राङ्गि सर्वसिद्धिं प्रयच्छ विघ्नं नियच्छ सर्वं स्थूलाकारं दर्शय स्वाहा (वेश) फ्रथ्रीं (अन्ध) झक्ररहक्ष्मव्य्रऊं त्रिकालवेदिनि सर्वज्ञतांसाधय साधय त्रिभुवनवृत्तान्तमावेदय कर्णपिशाचिनि कर्णमुपेत्य सकलं चराचरं कथय स्वाहा ख्लफ्रें (वीथी) ब्लछ्रां क्षम्लजरस्त्रीं महामारि महामरककारिणि कङ्कालिनि कङ्कालधारिणि खट्वाङ्गभ्रामिणि खट्वाङ्गं भ्रामय भ्रामय अपमृत्युं हर हर ब्रह्मविष्णुशिववाहिनि फट् फट् फट् नमो नमः स्वाहा फ्रथ्रों ग्लख्रूं इन्द्राक्षि (णि) स्वाराज्यं दद दद दापय दापय हरिहरमहिते त्रिलोकललिते तारिणि तारय शत्रून् मारय मारय प्रचण्डविद्ये फट् फट् स्वाहा नमः (वस्तु) क्षब्रां डलखलहक्षख्रम (मनः कूटम्) (दिष्टं) घोणकि भूतपिशाच प्रेत यक्ष राक्षस कूष्माण्ड योगिनी डाकिनी भयं नाशय नाशय श्मशानम् आनय आनय गह्वरं प्रविश हट्ट हट्ट नमः फट् स्वाहा ब्रफ्रथ्रैं ब्रफ्रथ्रौं क्ष्लप्रीं मङ्गलचण्डि

मङ्गलैर्गृहं पूरय पूरय मङ्गलावतारे फट् स्वाहा ब्लछ्रीं क्ष्ख्रूं (क्षक्लूं) फ्रस्त्रां मधस्त्रक्क्षलक्रीं चण्डोग्रकापालिनि खड्गाञ्जनपादुकासिद्धिं मे देहिदेहि अव्याहतगतिं प्रयच्छ प्रयच्छ चिताङ्गारभस्मधारिणि धर धर चट्ट चट्ट नमः फट् ब्लछ्रूं क्षब्रों सफ्रक्षक्लमखछ्रीं सम्पत्प्रदे भैरवि संपदं दद दद हिरण्यवृष्टिं वर्ष वर्ष वर्षापय वर्षापय धनधान्यरत्नानि देहि देहि दापय दापय ग्ग्म्लौं फट् फट् स्वाहा नमः ब्लछ्रैं क्षब्रौं ज्रक्रें नमो नमः फेरुचामुण्डे मालाकंकाल शुष्कान्त्रधारिणि शार्दूलचर्मवासिनि नरमुण्डकुण्डले शुष्कोदरि शुष्कानने हा हा अनन्त खट्वाङ्गधारिणि उड्डु उड्डु कह कह ब्लछ्रें फट् फट् फट् नमः स्वाहा ज्रक्रौं रख्रध्रां ह्रस्त्रां श्मशानचामुण्डे (पिण्डकूटम्) मातङ्गभोगताटङ्किनि शैलकटिसूत्रिणि प्रज्वलद् घोर चितानल निवासिनि वमन्मुखानले भस्मीकृत दानवे हूं हूंकारनादत्रासितत्रिभुवने फट् फट् फट् नमः स्वाहा क्रहूं नमः कङ्कालिनि कङ्कालकरङ्क किङ्किणीनादभूषितविग्रहे महार्णवशायिनि महोरगविभूषिते (प्रपञ्च) ब्रह्माण्डचर्वणाजातकटकटा महानादपूरिताम्बरे भीमाकारधारिणि महाप्रहारिणि श्मशानचारिणि तुरु तुरु मर्द मर्द ज्वल ज्वल फट् फट् फट् नमो नमः स्वाहा (सामा) (वादं) (मौलिकं) महामायूरि महाचाण्डालिनि सर्वकृत्या प्रमर्दिनि ये मां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं तान् सर्वान् दम दम मर्दय मर्दय विपातय विपातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय हन हन पाटय पाटय प्रणतान् पालय पालय पाहि पाहि नमः स्वाहा फट् फट् फट् स्त्रीं (कूटबीजं)। नमो रुद्रपिशाचिनि प्रेतभूषणे प्रेतालङ्कारमण्डिते जम्भ जम्भ हस हस ब्रह्माणि माहेश्वरि वाराहि वैनायकि चामुण्डे महाविद्ये जगद्ग्रासिनि जगत्संहारिणि पीवरि शबरि नायिकानायिके हं चक्ष हं भक्ष फट् फट् फट् स्वाहा ख्लफ्रूं रख्रध्रौं ख्लफ्रौं फट् फट् फट् नमो नमः कालशबरि कालं वञ्चय वञ्चय तुरु तुरु मुरु मुरु महाकालगृहिणि चन्द्रिके चन्द्रखण्डावतंसिते अट्टाट्टहासिनि मर्मरिणि चर्पटिनि तुन्दिलोदरि डामरि क्षामरि कुलसुन्दरि हंहंहं खिलि खिलि भिनि भिनि स्वाहा ग्ग्म्लां भद्रिके लाङ्गूलिनि महामार्जारिणि चट चट प्रचट प्रचट कह कह धम धम मुखानलं वम वम महाकान्तारगहनवासिनि पापं नाशय दुःस्वप्नं हर लोहिनि फट् लोहिनि फट् लोहिनि फट् नमः स्वाहा ब्रप्लूं प्रेतमातङ्गि प्रेतासनयोगपट्टिनि कुणपभोजिनि प्रेतवेताल मध्यचारिणि भूतं भव्यं भविष्यत् सर्वमावेदय फट् फट् स्वाहा नमः ब्रप्लौं (वास) कुरुकुल्ले कापालिनि कापालवेशधारिणि कङ्कालिनि कङ्कालमालाधारिणि बन्ध बन्ध छिन्धि छिन्धि चिकि चिकि त्रिजटे सर्वमुच्चार्यं स्फुरतु फट् फट् नमः नमः स्वाहा फ्रम्रग्लों घनाघनाकारधारिणि श्यामाम्बरे तरुच्छदानुपिहितजघने गुञ्जाहारिणि मयूरपिच्छे चित्रचूड़े दिगम्बरि तुभ्यं नमः ख्रस्त्रें कालिङ्गि महोत्पातप्रवर्तिके भुजगरूपधारिणि नमः स्वाहा फ्रम्रग्लूं फ्रख्भ्रीं फ्रख्भ्रूं फ्रख्भ्रैं सफक्षयक्लमस्त्रश्रीं स्हव्य्रख्रक्ष्मक्रूं सफक्षयक्लमस्त्रश्रीं हस्ख्फ्रक्षीं हसखफ्रूं क्षरस्त्रखफ्रूं ख्फ्रीं मृत्युञ्जये फट् स्वाहा जनहमरक्षयह्रीं सकलमन्त्रमय शरीर कल्पित षडाम्नाय देवता प्रतिपन्ननिखिल तत्त्वसञ्चारितसमस्तभूत सङ्घे जय जय प्रज्वल प्रज्वल (अनय) कापालव्रतधारिणि (युक्त) समयक्रमचारिणि फ्रभ्रग्लीं कौलसिद्धान्तकारिणि ज्लृह्क्षट्लझ्रव्रीं संसारबन्धं मोचय मोचय छेदय छेदय अविद्याक्लेशविपाक प्रपञ्चाशय मिथ्याध्यासाहङ्कार वासनापाशच्छेदिनि लयक्षकहस्त्रव्रह्रीं परमार्थस्वरूपिणि निस्त्रैगुण्ये फ्रम्रग्लें ख्रस्त्रैं ख्रफ्रह्मक्षश्रीं शुद्धविद्यावलम्बिनि मायाविमोचिनि अपरशिवपर्यङ्क निलयिनि विकारातीते फ्रम्रग्लैं क्षस्त्रों पृख्रसम्क्षस्त्रक्रीं ग्लांम्लह्थयीं श्रुत्यगोचरे अवितथे सत्यविज्ञानानन्द ब्रह्माकारिणि पुराणे ब्रह्मपुच्छ प्रतिष्ठिते निर्विकारे चरमे निरिन्धने फ्रम्रग्लौं क्षस्त्रें अस्थूले अनणो अह्रस्वे अदीर्घे अलोहिते अस्नेहे उच्छ्राये अतमोवाय्वनाकाशे असङ्गे अरसे अगन्धे अचक्षुःश्रोत्रे अपाणिपादे अवाक् अमनस्के अतैजसि अनिन्द्रिये अप्राणे अमुखे अमात्रे अलिङ्गे अनन्तरे अबाह्ये अनदृष्टे अनुपादने प्रकृते अनुद्भवे अमृत्यो अलघो अमहीयसि अशरीरे अबन्धे अपुण्यपापे क्लीं (निरञ्जन कूट) क्ष्लक्ष्मीं योगविद्ये तत्त्वविद्ये मोक्षविद्ये

ज्योतीरूपे प्रशासितसूर्याचन्द्रे प्रपूरितद्यावापृथिवी रोदसीपाताले देविहिरणमये विरजे निष्कले कर्त्रि ईशे साक्षिणि आत्मक्रीडे आत्मरते सत्ये अनन्ते महिते बृंहिते अजे शाश्वते हसखफ्रूं सुषुप्त्यवस्थिते तुरीयाभिधे जातवेदसि मानस्तोके शुक्लब्रह्मामृतमयि परमामृतानन्ददायिनि चिन्मात्रावयवे पृथिवीरूपे आपरूपे तेजोरूपे वायुरूपे आकाशरूपे लिङ्गशरीररूपे जरायुजाण्डजस्वेदजोद्भिज्जरूपे संसाररूपे सगुणनिर्गुणात्मिके चण्डि चण्डप्रतीके जनिते मरणभयदारिणि भक्तजनतारिणि विश्वजनमोहिनि सकलमनोरथदोहिनि ईसमक्लक्षह्रूं प्रेतवाहिनि वषट् क्ष्लक्ष्‍ौं वौषट् (शफ श्रौषट्) त्रिभुवने सृष्टिप्रलयसंहारमहानाट्य प्रिये निखिलगुह्यसूत्रधारिरिणि कालिकासम्प्रदायपालिनि भुजगराजभोगमालिनि नवपञ्चचक्रनिलयिनि क्षस्त्रां छज्रमकव्य्रऊं सर्वभावावबोधिनि रस्त्रां सकलनिष्कलाश्रयिणि क्षस्त्रीं सृष्टिस्थितिसंहारानाख्याभासापदप्रिये चण्डयोगेश्वरि भेदसहस्त्रयथार्थप्रवर्तयित्रि फ्रख्भ्रें षडाम्नायसारभूते फ्रख्भ्रों फ्रख्भ्रौं षडाम्नायातीते रक्षलह्मसहकवूं कस्हलह्रख्रक्षीं रब्लकमम्क्षग्लीं फ्ररक्षस्त्रमक्रूं त्रिकालाबाधिते ट्लसकम्लक्षट्व्रीं थ्लव्य्रप्रछ्रखीं सफ्रकहरक्षमश्रीं थलहक्षकह्मब्रयीं प्रमेयातीते तत्वमसि रत्रौंओं छ्रवलव्य्रम्क्षयूं दलव्य्रक्षक्रभ्रीं निर्वासने मफ्रठ्क्षब्रीं ग्लहक्षम्लजक्रूं ट्लहक्षस्त्रमव्रयीं निर्विकल्पे त्लम्क्षफलहक्षव्रीं स्हफ्रमव्रयक्षीं कहख्रव्य्ररक्ष्रीं सत्तामात्रे सक्लह्रह्स्ख्फ्रक्षीं एसकहलक्षांव्य्रम्रूं सन्तताभासाशब्दानन्दमये म्लछ्लह्क्षखफ्रक्रीं प्लड्लहक्षमव्रयीं चिदाकारिणि हस (एकारव्य) सक्लह्रीं सामरस्यलयिनि साहमेवास्मि रहफ्रसमक्षक्रीं अंकारोकारभकाररूपे प्रवृत्तिनिवृत्तिरूप द्विपथचारिणि तत्त्वमसि ब्रह्माहमस्मि फट् फट् फट् नमो नमः ओं (सामुज्य) स्वाहा।

३४. नवकूटाक्षरः शाम्भवमन्त्रः

ओं ह्रीं फ्रें छ्रीं रहक्षम्लवरयरीं क्षस्हम्लवरयूं क्षह्मम्लव्य्रऊं खफ्रीं ओं।

मूर्खारण्यस्वामिचरणास्तु - ओं ह्रीं फ्रें छ्रीं रहक्षम्लवरयरीं सहक्षलवरयूं हसकहलह्रीं रक्षमतरखप्रीं ओं। इति।

३५. पञ्चदशकूटाक्षरः महाशाम्भवमन्त्रः

ओं ऐं हौं क्षौं स्त्रीं ख्फ्रें क्रां क्लक्षहमह्रहसखफ्रूं सहक्षमलवरयूं क्षस्हम्लवरयीं हसगक्षमलवरयूं (सर्वोच्चम्) (आद्योच्चम्) ख्फ्रें क्षौं हौं ऐं ओं। इयं पञ्चदशी ख्याता महाशाम्भवनामिका इत्यस्य कथं सङ्गतिरिति सुधीभिः साधकैश्च विभावनीयम्। यथा पाठमिह सप्तदशाक्षरत्वं मन्त्रस्य दृश्यते। मूर्खारण्यस्वामि चरणास्तु - ओं ऐं ह्रौं क्षौं ख्फ्रें रहक्षमलवरयूं हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयूं हसक्षमलवरयीं हसगक्षमलवरऊं ख्फ्रें क्षौं ह्रौं ऐं ओं - इति निर्दिशन्ति।

३६. नवाक्षरस्तुरीयामन्त्रः

(परन्तु यहां मन्त्र दशकूट का है)

फख्रह्लां रक्ष्रमछ्रूं फ्रखक्षठं फलखक्ष्‍ौं सतरलमक्षफबरयलीं जनहमलक्षयह्रीं हसलक्षकमह्रवरूं फ्रखक्ष्रीं हसखफ्रां फ्रमश्रूं। यद्यपि महाविद्यातुरीयेयं मुक्तिदात्री नवाक्षरी ४।१७६॥ इत्युक्तमिह तु दशाक्षरमन्त्रः स्वामिमूर्खारण्यचरणैर्निर्दिष्टः कथमस्य सङ्गतिः तथापि सुधीनां साधकानां च विचाराय प्रस्तुतोऽत्र मन्त्रोद्धारः।

३७. सप्तदशाक्षरः महातुरीयामन्त्रः

खफ्रक्षीं फ्रखक्षूं (फ्रखभ्रूं) रक्षह्रूं (छ्ररक्षह्रूं) हसफ्रौं रजझ्रक्षूं छ्रीं रफलवरयमक्ष्रूं सकलह्रीं ख्फ्रां क्ष्रूं

रहफ्रीं मसक्षझ्रीं बलहसक्रमछ्रयीं हसवरयलक्षमझ्रूं सफक्षयकलमसवश्रीं तवलहसद्रां हसखफ्रैं हसखफ्रौं रक्षह्रीं रक्षसतर खफ्रूं हंसः सोऽहम्।

३८. ऊनविंशाक्षरः निर्वाणमन्त्रः

ओं फ्रखक्ष्रौं ह्रीं रक्ष्रमछ्रूं फ्रें फ्रखक्ष्रैं छ्रीं सतरलयक्षकवरयीं रहक्षमलवरयीं जनहसलक्षह्रीं सहक्षमलवरयूं हसलक्षकमकरब्रूं हसकहलह्रीं फ्रखक्ष्रैं छ्रीं सतरलयक्षकरवयीं रहक्षमलवरयीं जनहसलक्षह्रीं सहसमलवरयूं हसलक्षकमकरब्रूं हसकहलह्रीं फ्रखक्ष्रीं रक्षसतरखफ्रीं हसखफ्रां फशसग्लूं हसक्षमलवरयरहक्षमलवरयूं।

यद्यपि इत्यूनविंशत्यर्णोऽयं निर्वाणाख्यो महामनुः इत्युक्तम्, स्वामि श्रीमूर्खारण्यचरणैस्तु षट्विंशत्यक्षरात्मको मन्त्रो निर्दिष्टः कथमस्य सङ्गतिरिति साधकैरालोचनीयम्।

स्वामीमूर्खारण्यजी ने इसे २६ कूट का बताया है।

३९. त्रयस्त्रिंशद्वर्णात्मकः महानिर्वाणमन्त्रः

ओं खफ्रक्ष्रीं ऐं फ्रखक्ष्रूं हौं रक्षह्रूं क्ष्रौं हसफ्रौं खफ्रें रजझ्रक्ष्रूं रहक्षमलवरयूं छ्रक्लवरयमक्षयूं हसक्षमलवरयूं सकलह्रीं हसक्लफ्रीं क्षीं सहक्षमलवरयीं रहफ्रीं मसक्षझ्रीं सहक्षमलवरयीं कलजमक्षरसक्षछ्रयीं हसगक्षमलब्लूं हसवरयखलक्षमझ्रूं खफ्रकलक्षमसभ्रीं सफक्षयकलमसतरश्रीं क्ष्रौं तद्ब्रह्माऽस्मि हौं हसखफ्रें ऐं हसखफ्रौं ऊं रक्षह्रीं रक्षसतरखफ्रूं हंसोऽस्मि सोऽहं रहक्षमलवरयसहक्षमलवरयूं । इति स्वामिमूर्खारण्यचरणैः निर्दिष्टो मन्त्रः।

तांत्रिक गायत्र्युद्धारः

॥ अथ विविध गायत्री मन्त्राः॥

१. एकाक्षरमन्त्रस्य गायत्री – ह्रीं भगवत्यै विद्महे महामायायै धीमहि तन्नः रौद्री प्रचोदयात्।

२. कामोपास्यमन्त्रस्य गायत्री – क्लीं अनङ्गाकुलायै विद्महे भगमालिन्यै धीमहि तन्नश्चण्डा प्रचोदयात्।

३. वरुणोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – लम्बोदर्यै विद्महे वेगमालायै धीमहि तन्नः सृष्टिः प्रचोदयात्।

४. अनलोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – हूं चण्डघण्टायै विद्महे ज्वालामालिन्यै धीमहि तन्नः प्रभा प्रचोदयात्।

५. सूर्योपास्य मन्त्रस्य गायत्री – छ्रीं महाघोरायै विद्महे भद्रकाल्यै धीमहि तन्नः विरूपा प्रचोदयात्।

६. शच्युपास्यमन्त्रस्य गायत्री – कात्यायन्यै विद्महे चण्डिकायै धीमहि तन्नः भीमा प्रचोदयात्।

७. दानवोपास्यमन्त्रस्य गायत्री – ख्फ्रें कटकटायै विद्महे करालायै धीमहि तन्नः चामुण्डा प्रचोदयात्।

८. मृत्युकालोपास्यमन्त्रस्य गायत्री – ओं कालरात्र्यै विद्महे कालसंकर्षिण्यै धीमहि तन्नः काली प्रचोदयात्।

९. भारतोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – फ्रें कपालिन्यै विद्महे सिद्धिकराल्यै धीमहि तन्नः गुह्या प्रचोदयात्।

१०. च्यवनोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – स्त्रीं करालिन्यै विद्महे मुण्डमालिन्यै धीमहि तन्नः देवी प्रचोदयात्।

११. हारीतोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – ह्स्ख्फ्रें उग्रचण्डायै विद्महे विकटदंष्ट्रायै धीमहि तन्नश्चण्डी प्रचोदयात्।

१२. जाबालोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – उग्रायुधायै विद्महे दिगम्बरायै धीमहि तन्नः श्यामा प्रचोदयात्।

१३. दक्षोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – त्रिशूलिन्यै विद्महे महोदर्यै धीमहि तन्नः भीषणा प्रचोदयात्।

१४. रामोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – अट्टाट्टहासिन्यै विद्महे घोरदंष्ट्रायै धीमहि तन्नः अघोरा प्रचोदयात्।

१५. हरिण्यकशिपूपास्य मन्त्रस्य गायत्री – उल्कामुख्यै विद्महे कल्पान्तकाल्यै धीमहि तन्नः तामसी प्रचोदयात्।

१६. ब्रह्मोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – वज्राङ्गायै विद्महे कुरुकुल्लायै धीमहि तन्नः संहारिणीप्रचोदयात्।

१७. वसिष्ठोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – ज्र्क्रीं महाकौलिन्यै विद्महे भीमदंष्ट्रायै धीमहि तन्नः कोका प्रचोदयात्।

१८. विष्णुतत्त्व मन्त्रस्य गायत्री – कुरुकुल्लायै विद्महे केकराक्ष्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

१९. अम्बाहृदय मन्त्रस्य गायत्री – अनाख्यायै विद्महे चैतन्यमय्यै धीमहि तन्नः भासा प्रचोदयात्।

२०. रुद्रोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – क्ष्रह्रीं जालन्धरायै विद्महे भीषणायै धीमहि तन्नः महामारी प्रचोदयात्।

२१. विश्वेदेवोपास्य मन्त्रस्य गायत्री – अभयायै विद्महे सिद्धिदायै धीमहि तन्नः गौरी प्रचोदयात्।

२२. रावणोपास्य सप्तदशाक्षर मन्त्रस्य गायत्री – ह्स्ख्फ्रौं उन्मत्तायै विद्महे पिङ्गजटायै धीमहि तन्नः फेरुः

प्रचोदयात्।

२३. रावणोपास्यषट्त्रिंशदक्षर मन्त्रस्य गायत्री – फेत्कारिण्यै विद्महे महायोगिन्यै धीमहि तन्नः कुक्कुटी प्रचोदयात्।

२४. अष्टपञ्चाशदक्षर मन्त्रस्य गायत्री – ह्स्ख्फ्रीं जयमङ्गलायै विद्महे चण्डयोगेश्वर्यै धीमहि तन्नः सिद्धिदा प्रचोदयात्।

२५. भोगविद्या मन्त्रस्य गायत्री – महालक्ष्म्यै विद्महे भोगप्रदायै धीमहि तन्नः पद्मा प्रचोदयात्।

२६. शताक्षर मन्त्रस्य गायत्री – आप्यायन्यै विद्महे मनोन्मन्यै धीमहि तन्नः गुह्येश्वरी प्रचोदयात्।

२७. सहस्राक्षर मन्त्रस्य गायत्री – सौः चण्डिपत्रिकायै विद्महे लोलजिह्वायै धीमहि तन्नः धूम्रा प्रचोदयात्।

२८. विष्णुपास्यायुताक्षर मन्त्रस्य गायत्री – महाखेचर्यै विद्महे व्योमकेश्यै धीमहि तन्नः पालिनी प्रचोदयात्।

२९. शिवोपास्यायुताक्षर मन्त्रस्य गायत्री – अपमृत्युविनाशिन्यै विद्महे कामाङ्कुशायै धीमहि तन्नः नीला प्रचोदयात्।

३०. शाम्भव मन्त्रस्य गायत्री – आनन्दायै विद्महे कलातीतायै धीमहि तन्नः चेतना प्रचोदयात्।

३१. महाशाम्भव मन्त्रस्य गायत्री – ज्योतिर्मय्यै विद्महे निर्गुणायै धीमहि तन्नः शुद्धा प्रचोदयात्।

३२. तुरीया मन्त्रस्य गायत्री – भावाभासायै विद्महे निष्प्रपञ्चायै धीमहि तन्नः बोधरूपा प्रचोदयात्।

३३. महातुरीया मन्त्रस्य गायत्री – अनिन्द्रियायै विद्महे ज्ञानरूपायै धीमहि तन्नः निष्कैवल्या प्रचोदयात्।

३४. निर्वाण मन्त्रस्य गायत्री – विरजायै विद्महे चित्कलायै धीमहि तन्नः सत्त्वा प्रचोदयात्।

३५. महानिर्वाण मन्त्रस्य गायत्री – अद्वयायै विद्महे महानिर्वाणायै धीमहि तन्नः अमृता (अद्वया) प्रचोदयात्।

॥ अथ दैनिककर्म सन्ध्या मन्त्राः॥

१. दन्तधावन मन्त्रः –

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च। ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च तन्नो धेहि वनस्पते ॥ क्लीं फट्।

२. मुखप्रक्षालनार्थ जलादानमन्त्रः –

ओं जूं सः।

३. आचमन मन्त्रः –

ऐं अमृताय हूं फट्।

४. शिरोमार्जनार्थं गृहीतजलाभिमन्त्रण मन्त्रः –

ग्लूं वरुणाय वषट्।

५. शिरोमार्जन मन्त्रः –

ओं चित्कलायै नमः ह्रीं अमृतायै नमः फ्रें गुह्यकाल्यै नमः।

६. गुरुध्यानम्

अनन्तरं वक्ष्यमाणस्य गुरुमनोः निर्देशः - ओं परम गुरवे नमः।

७. गुरोर्नमस्कारमन्त्रः –

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया । च क्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

८. देव्या आज्ञाग्रहणमन्त्रः –

देवि श्रीगुह्यकालि त्वं देह्यनुज्ञां महेश्वरि । प्रयतिष्ये निदेशात्ते योगक्षेमार्थसिद्धये ॥

९. मन्त्रस्नान प्रयोगः –

(क) ओं अस्य गुह्यकाली पूजाङ्गस्नानस्य कात्यायनऋषिः प्रतिष्ठाच्छन्दः वारुणी गुह्यकाली देवता मन्त्रस्नाने विनियोगः।

(ख) गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

(ग) गुह्यकालीं देवीं तर्पयामि नमोऽस्तु।

१०. तान्त्रिकतिलकधारण मन्त्रस्य (ऋष्यादिनिर्देशः)

विनियोगः– तिलकधारणमन्त्रस्य कालाग्निरुद्र संवर्तनिचिकेतस ऋषयः, पंक्तिश्छन्दः, पञ्चमहाभूतानि देवता, फली बीजं, हूं शक्तिः, क्रों कीलकं महापातकसंभूत पापनाशे विनियोगः।

११. चन्दन भूमि पर ड़ालें –

ॐ ईं ज्ञानाय नमः। ॐ ईं इच्छायै नमः। ॐ ईं क्रियायै नमः। ॐ ईं शक्त्यै नमः। ॐ ईं कामाय नमः।

१२. तिलक धारण –

ह्रीं क्लीं हूं सर्वजनमाहिनि सर्ववश्यङ्करि मां रक्ष रक्ष फट् स्वाहा।

१३. भस्मधारण –

फ्रें गुह्यकाल्यै नमः।

साधक नित्यकर्म सन्ध्या करें। सूर्य के अघमर्षण एवं अर्घ्यादि अर्पण करें।

१४. अघमर्षण –

क्ष्रौं चण्डघण्टायै फट्।

१५. अर्घदान –

ऐं खफ्रें ह्स्फ्रें ह्स्ख्फ्रें श्रीगुह्यकालि एष ते अर्घः स्वाहा।

१६. पुनः उपस्थापनमनेन मन्त्रेण –

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं फ्रें खफ्रें हस्फ्रें हस्खफ्रें हस्खफ्रैं क्षह्म्लव्य्रऊं गुह्यकालीं भगवतीमुपतिष्ठे। क्रौं क्ष्रौं फ्रौं स्फ्रौं क्रों स्हौः ग्लौं क्ष्रह्रीं ज्रक्रीं क्ष्रहूं स्हलौं क्षस्हम्लव्य्रऊं फट् नमः स्वाहा।

१७. देव्या द्वादशाञ्जलिदान मन्त्राः –

ओं चण्डायै नमः, ओं कराल्यै नमः, ओं भ्रामर्यै नमः ओं ललितायै नमः, ओं ज्वालिन्यै नमः, ओं अघोरायै ननः, ओं शूलिन्यै नमः, ओं जयमङ्गलायै नमः, ओं कुरुकुल्लायै नमः, ओं फेत्कारिण्यै नमः, ओं कालसङ्कर्षिण्यै नमः, ओं गुह्यकाल्यै नमः।

१८. पुनः अङ्गन्यास करे।

तद्यथा - **ओं ऐं हृदयाय नमः, ओं ह्रीं शिरसे स्वाहा, ओं श्रीं शिखायै वषट्, ओं हूं कवचाय हूं, ओं स्त्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ओं फ्रें अस्त्राय फट्।**

१९. **क्षणं देव्याः ध्यानं विधाय दशधा तत्तन्मन्त्राधिष्ठात्र्याः गायत्रिमन्त्रजपः कार्यः। एतस्य पञ्चाशद्वारं शतवारं वा जपं कर्तुमर्हति कश्चित्। जपं समर्प्य स्तुत्वा नत्वा विसर्जयेत्।**

२०. **पुष्पाक्षतचन्दनानि आदाय सूर्यायार्घं दद्यात्। अर्घदानमन्त्रस्तु - ह्रां ह्रीं सः सूर्यभट्टारकाय एष ते अर्घः स्वाहा।**

२१. **पुनः मूलमन्त्रस्य ऋष्यादिकं षडङ्गकं च विधायाष्टोत्तरशतवारं मूलमन्त्रस्य जपं कुर्यात्।**

२२. **जले यन्त्रं विलिख्य देवी ध्यात्वा आवाह्य जलमयैरुपचारैः सम्पूज्य मार्तण्डमण्डले तां विचिन्तयन् मूलमन्त्रमुच्चारयेत् पुनः गुह्यकालीमहं तर्पयामि नमः।** इति मन्त्रेण पञ्चविंशतिवारं तर्पणं कुर्यात् पुनः मूलमन्त्रमुच्चार्य सूर्यं पश्यन् पुष्पादिसप्रन्वितं सलिलाञ्जलि मादाय - **ऐं ऐं ऐं ह्रीं फ्रें हूं स्त्रीं खफ्रें स्हौः हस्खफ्रीं हस्खफ्रूं क्ष्रस्त्रै उद्यदादित्यवर्तिन्यै शिवचैतन्यमय्यै प्रकाशशक्ति सहित मार्तण्ड भैरवाधिष्ठात्र्यै श्रीगुह्यकाली देव्यै नमः स्वाहा इति।** मन्त्रेण तं प्रक्षिप्य विसर्जनं कुर्यात् इति सन्ध्याविधिः।

२३. द्वारपूजा करके पूजा गृह में प्रवेश करें। वस्तुओं का शोधन कर पूजोपचार करें।

गुह्यकाल्याः पूजासम्भार वस्तूनामुपचाराणां विनियोगः

२४. विनियोग –

ओं अस्य श्री गुह्यकाली संभारवस्तुनः जमदग्निऋषिः, प्रतिष्ठाच्छन्दः, उत्तानाङ्गिरा देवता, रं बीजं, हूं

शक्तिः, ह्रीं कीलकं, पूजासंभार सामग्री शोधने विनियोगः।

२५. भूमिशुद्धि मन्त्रः –
ह्रीं श्रीं छ्रीं फ्रें ऐं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

२६. भूम्यभिन्त्रण मन्त्रः –
ओं क्लीं श्रीं वाराहि पवित्रा भव भूमे हूं फट् स्वाहा।

२७. स्वा आसनशुद्धि मन्त्रः –
ओं ऐं ह्रीं फ्रें श्रीं स्त्रीं कामपीठाय कामसंभवाय कामार्हते हूं फट् नमः।

२८. पूजायाः सर्वोपकरणानां शुद्धि मन्त्रः –
आं ऐं ओं क्लीं ह्रीं श्रीं हूं फ्रें ग्लूं क्ष्रौं पवित्रोदकाय फट् फट् नमः।

२९. कायवाक् चित्तशोधन मन्त्रः –
ओं ऐं आं ईं ह्रीं ग्लूं श्रीं हूं सौः क्ष्रौं स्हौः फ्रें ख्फ्रें कायं वाचं चित्तं मे शोधयाशे षवृजिनान्यपनय स्वाहा।

३०. सकल साधारणासन शुद्धि मन्त्रः –
ओं हौं फ्रें ख्फ्रें फ्रों ब्लौं अशेषमासनं पावय फट् स्वाहा। पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयानां शुद्धिः जलशुद्धि प्रयुक्ता।

३१. जलशुद्धि मन्त्रः –
ओं वरुणदेवताय जलाय हूं फट्।

३२. अर्घदान मन्त्रः –
एषोऽर्धः ओं गुह्यकाल्यै स्वाहा।

३३. आचमनीयदान मन्त्रः –
इदमाचमनीयं ओं गुह्यकाल्यै स्वधा।

३४. मधुपर्कशोधनमन्त्रः
ऐं आं ह्रीं फ्रें फ्रीं फ्रूं क्ष्रौं स्हौः सौः ह्रूं क्रें ह्स्ख्फ्रें पावय पावय हूं फट् स्वाहा।

३५. मधुपर्क दान मन्त्रः –
एष मधुपर्कः ओं गुह्यकाल्यै स्वधा।

३६. वस्त्रशुद्धि मन्त्रः –
ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं फ्रें ख्फ्रें क्लूं ब्लूं ब्लौं र्क्ष्रीं क्ष्र्ह्रीं ज्र्क्रीं मोहिनि वशिनि वस्त्रं पवित्रय फट् नमः स्वाहा।

३७. भूषण शुद्धि मन्त्रः –
आं क्रों क्ष्रौं क्रौं ग्लूं ब्लूं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल फट् स्वाहा।

३८. चन्दन शुद्धि मन्त्रः –
ह्रीं गन्धर्वदैवताय चन्दनानुलेपनाय हूं फट्।

३९. पुष्प शुद्धि मन्त्रः –
ओं ह्रीं श्रीं हौं फ्रें लक्ष्मीदैवताय पुष्पाय पुष्पस्त्रजे पत्राय पत्रस्त्रजे जलजाय स्थलजाय सगन्धाय निर्गन्धाय

नानारूपाय हूं फट्।

४०. धूपशुद्धि मन्त्रः –

ऐं क्लीं श्रीं ब्लैं ब्लौं वनस्पतिदैवताय दारुनिर्यासाय अप्सरोदैवताय सत्त्वाङ्गसंभवाय हूं फट्।

४१. दीपशुद्धि मन्त्रः –

ओं ऐं क्षौं रं वह्निदैवताय दीपाय घृताक्ताय (तैलाक्ताय वा) हूं फट्।

४२. अञ्जन शुद्धि मन्त्रः –

ऐं ओं ह्रीं ब्रीं क्लीं श्रीं स्त्रीं फ्रें क्ष्रौं कह कह धक धक हूं फट् नमः स्वाहा।

४३. नैवेद्य शुद्धि मन्त्रः –

ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फ्रें हूं ग्लूं क्रों नैवेद्यानि शोधय शोधय हूं फट् नमः स्वाहा।

४४. पुनराचमनीय शुद्धिस्तु मन्त्रः –

उक्ताचमनीय शुद्धिमत्रेणैव कार्या । नैवेद्यानन्तरं देयमित्येतस्य विनिश्चयः ॥

४५. सिन्दूरशोधन मन्त्रः –

ऐं क्लीं श्रीं स्त्रीं फ्रें ओं शचीदैवताय सिन्दूराय हूं फट् स्वाहा।

४६. अलक्तक शुद्धि मन्त्रः –

अं अलक्तकाय फट्।

४७. ताम्बूल शुद्धि मन्त्रः –

ओं ऐं ह्रीं श्रीं स्त्रीं क्लीं ग्लूं हौं विद्याधरदैवताय रागहेतुकाय ताम्बूलाय हूं फट्।

४८. पादुका शुद्धि मन्त्रः –

ओं ग्लौं पादुकाभ्यां सोमदैवताभ्यां हूं फट् स्वाहा।

४९. छत्र शुद्धि मन्त्रः –

ओं ऐं आं ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं हूं फ्रों फ्रौं फ्रें ब्लूं ख्फ्रें स्हौं छत्राय इन्द्रदेवताय वरुणाधिदैवताय शोधय शोधय पावय पावय हूं फट् स्वाहा।

५०. चामर शुद्धि मन्त्रः –

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें ख्फ्रें क्रों क्ष्ख्रूं ख्फ्रक्ष्रूं सुरभिदैवताय चामराय हूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

५१. व्यजन शुद्धि मन्त्रः –

ओं श्रीं क्लीं ईं क्रीं क्षूं ख्फ्रक्ष्रैं ह्रौं ह्रां वायुदैवताय व्यजनाय हूं फट् स्वाहा।

५२. माला शुद्धि मन्त्रः –

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं फ्रें क्लूँ फ्रें स्हौंः सौः क्ष्रौं स्रजं पावय पावय हूं फट् स्वाहा।

५३. मद्यस्य तदनुकल्पस्य च शुद्धि मन्त्रः –

ओं ऐं आं ह्रीं क्लीं श्रीं हूं क्रों फ्रें फ्रैं छ्रीं स्हौं सौः (अमा) ब्लूं क्ष्रौं ख्फ्रें ह्स्फ्रें (व्यय) ह्स्ख्फ्रें क्ष्र्ह्रीं ज्र्क्रीं क्ष्र्हूं क्षह्म्ल्व्य्रऊं डाकिनी दैवताय सुराबलये निर्ऋतिदैवताय मांसबलयेशुद्धिं देहि देहि दोषं नुद नुद ओं औं हूं हूं फट् फट् स्वाहा।

५४. नैवेद्याङ्गसकल वस्तूनां शुद्धये मन्त्रः –

ओं ऐं ऐं ऐं ह्रीं क्लीं हूं स्त्रीं श्रीं फ्रें क्रों क्रौं क्रीं ग्लूं ग्लौं (रुचि) भ्रीं क्षौं र्‌क्ष्रीं क्‌ह्‌लश्रीं ख्फ्रें ज्‌र्‌क्रीं क्ष्‌र्‌ह्रीं (फ्रम्रग्लऊं ब्लहतह्लस चर्मके)

अथवा - ब्रक्षम्लसह्छूं स्हक्ष्लमह्ज्रूं (इति निर्णेयम्) रम्लव्रीं कम्लव्रीं हूं फट् फट् फट् स्वाहा।

५५. कामपीठासन विधि – तत्र ऋष्यादिनिर्देशः –

ओं अस्य कामपीठोपवेशनस्य नारायण ऋषिः, प्रतिष्ठा च्छन्दः, कूर्मरूपी विष्णुः, देवता पूजार्थं कामपीठोपवेशने विनियोगः।

५६. तत्र विघ्नापसारण विधिः –

ओं क्षूं दारय दारय विघ्नं हूं फट्। इति मन्त्रेण सिद्धार्थाक्षतान् विकिरेत्। इस मन्त्र से सरसों बिखेरें।

पार्ष्णिधातत्रयेण भौमान् विघ्नान् तालत्रयेण अन्तरिक्षगान् विघ्नान् दिव्येक्षणेक्षणैः दिव्यान् विघ्नानपसारयेत्।

३ बार भूमि का ताड़न करें, तथा ३ ताली बजायें।

५७. आसन शुद्धिमन्त्रस्तत्र –

ओं ऐं लं मां धारय धारय आसनं पावय पावयपवित्रे वैष्णवि हूं फट् स्वाहा। इति पठित्वा।

पुनः – **ओं आधारशक्ति कमलासनाय नमः, ओं ऐं कामपीठाय नमः, अं फट्। इति मन्त्रं पठन् तत्रोदङ्मुख उपविशेत्।**

पुनः– **वामभागे गुरुभ्यो नमः, दक्षभागे गणेशाय नमः, सम्मुखे गुह्यकाल्यै नमः इति पठित्वा पुष्पं गृह्णीयात् तच्च कराभ्यां मर्दयित्वा उपनासं समाघ्राय वामभागे वक्ष्यमाणं मन्त्रं पठन् तत्पुष्पं दूरेऽनवलोकयन् प्रक्षिपेत् मन्त्रस्तु ''ओं ह्रीं हूं फट् फट् फट् स्वाहा।''**

५८. भूतशुद्धिरत्र –

हृदय कमलतः ज्वलद्दीपशिखाकृतिमात्मानं सुषुम्णा नाडीमार्गेण ठौं इत्युच्चरन् शिरःस्थिते सहस्त्रदलमध्यस्थे परमात्मनि संयोजयेत्। पुनः लिङ्गशरीरप्रकृतीनि पञ्चभूतानि तत्र तत्र विलीनानि तत्तद्रूपैर्विचिन्त्य देहभूमिं लिङ्गपीठभुवि वारिणि देहजलं हृत्तेजसि तत्तेजः मुखसंस्थे समीरणे तं वायुं भालगगने च विचिन्तयेत्। पुनः जीवात्मानं परमात्मनि संयोजयेत्। बुद्ध्यहङ्कारप्रभृतीन् सर्वान् तत्र लीनान् विभाव्यवामनासापुटेन समीरणं पूरयित्वा 'यं' इति धूम्र वर्णं विभावयेत् पुनः 'यं' बीजं पञ्चाशद्वारमुच्चरेत् तदुत्पन्नेन वायुना शुष्कं देहं विचिन्तयेत् पुनः दक्षनासापुटेन तं वायुं रेचयेत्।

सुषुम्णानाडीमार्गेण सर्वशः वायुमुत्तोल्य 'रं' बीजं रक्तवर्णं विभाव्य पञ्चाशद्वारमुच्चरेत् देहं तेन दग्धं विचिन्त्येत् पुनः पापात्मकं शरीरं भस्मरूपं विभाव्य वामनासापुटेन वायु रेचयेत्।

पुनः वामनासापुटेन वायुमुत्तोल्य सहस्त्रदलमध्यगं चन्द्ररूपमर्थात् शुभ्रं निष्कलुषं परमात्मानं विचिन्त्य 'वं' इति बीजं पञ्चाशद्वारमुच्चरेत् तच्चन्द्रतश्च सुधायाः वृष्टिर्भवतीति परिकल्प्य तया देहमाप्लावयेत्। ततः 'लं' बीजमुच्चरन् शरीरशुद्धिं कुर्यात्।

पुनः पुरा लीनीकृतानि पञ्चभूतानि यथास्थानं स्थापयित्वा ब्रह्मबीजं 'ठौं' इत्युच्चरन् अहङ्कारादितत्त्वैः सह परमात्मनः जीवात्मानं समाकृष्य हृदम्बुजे स्थापयेत्। पुनः देवीरूपमात्मानं चिन्तयेत् इयं भूतशुद्धिः महापापवृन्दं नाशयति।

****

५९. भूतापसारण मन्त्रः –

ऐं ह्रीं क्षूं स्हौः हूं द्रीं सौः क्षौं खफ्रें ह्स्खफ्रें पिशाचभूत वेताल रक्षसान् उत्सारय उत्सारय यावत् पूजां करोम्यहम् हूं फट् स्वाहा।

इत्थं भूतशुद्धिं विधाय तत्तन्मन्त्रषडङ्गन्यासं कुर्यात् ।

पश्चात् प्राणायाम करे, अन्तर्मातृका एवं बहिर्मातृका न्यास करें।

॥ सामान्यतोमातृकान्यासानां द्वादश भेदाः॥

(१) केवला प्रणवरहिता मातृका

(२) शुद्धा प्रणवयुक्ता

(३) कालातीता आदावन्ते च प्रणवयुक्ता

(४) बिन्दुरहिता नित्या

(५) बिन्दुरहिता प्रणवेनादौ युक्ता ज्ञानदा

(६) बिन्दुरहिता आदावन्ते च प्रणवयुक्ता मोक्षदा

(७) विपरीक्रमेण क्षकारपुरस्सरा यथोर्ध्वमुक्ता भवति यदि तदा अन्या षडधो निर्दिष्टा जायन्ते मातृकास्तासु प्रथमा स्थूला

(८) सूक्ष्मा

(९) स्वप्रकाशा

(१०) अविग्रहा

(११) निर्गुणा

(१२) अमृता चैतासामूर्ध्वदर्शितेष्वङ्गेषु न्यासो भवति। मातृकापदं वर्णावलीं सङ्केतयत्यकारादि क्षकारान्ताम्।

॥ गुह्यकाल्याः षट् विशेषमातृकाः॥

(१) आदौ ह्रीं मन्त्रं योजयित्वा सिद्धिदा सा जायते

(२) अन्ते ह्रीं मन्त्रं योजयित्वा कौलिकी भवति।

(३) आदौ छ्रीं मन्त्रं योजयित्वा करालिनी भवति।

(४) अन्ते छ्रीं मन्त्रं योजयित्वा विरजा भवति।

(५) आदौ फ्रें मन्त्रं योजयित्वा भोगदा जायते

(६) अन्ते फ्रें मन्त्रं योजयित्वा विजया जायते न्यासस्तु पूर्ववत्। मातृकाऽत्रापि वर्णावली।

॥ अथ विराट्न्यासः॥

विराट्न्यासस्य ऋष्यादिनिर्देशः

विराट्न्यासस्य कालाग्नीरुद्रऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, निर्वाणमातृका देवता, ओं बीजं, फ्रें शक्तिः, नमः कीलकं, मुक्तये विनियोगः। इति संस्मृत्य हस्ताभ्यामेतदृष्यादिमा चरेत्।

ओं फ्रें अं ज्वालामालिनरसिंहधूमकालीविग्रहाभ्यां नमः इति ललाटे। एवं सर्वत्र आदौ ओं फ्रें इति बीजद्वयं मध्ये अं आं आदि यथाक्रमं निर्दिष्टं मातृकाबीजं पुनः निम्ननिर्दिष्ट पञ्चाशन्नरसिंहपञ्चाशत्कालीनामाभ्यां सह नमः इति योजयित्वा तेषु तेषु अङ्गेषु न्यसेत् इति दिङ्ग निर्देशः।

प्रत्येक नाम मन्त्र के पहले **ओं फ्रें** लगावें तथा प्रत्येक नामावलि के पहले एक-एक मातृका वर्ण लगाते हुये (**अं आं........हं लं क्षं**) बहिर्मातृका की तरह न्यास करें।

॥ १. पञ्चाशन्नरसिंह न्यास॥

सभी नाम मन्त्रों के पश्चात् नरसिंह शब्द जोड़कर न्यास करें।

१	ज्वालामाली	१४	विश्वमर्दन	२७	विश्वरूप	४०	कृतान्त
२	कराल	१५	उग्र	२८	विद्युद्दशन	४१	तप्तहाटक
३	भीम	१६	भद्र	२९	विदार	४२	भ्रामक
४	अपराजित	१७	मृत्यु	३०	विक्रम	४३	महारौद्र
५	क्षोभण	१८	सहस्रभुज	३१	प्रचण्ड	४४	विश्वान्तक
६	सृष्टि	१९	विद्युज्जिह्व	३२	सर्वतोमुख	४५	भयङ्कर
७	स्थिति	२०	घोरद्रंष्ट्र	३३	वज्र	४६	प्रतप्त
८	कल्पान्त	२१	महाकालाग्नि	३४	दिव्य	४७	विजय
९	अनन्त	२२	मेघनाद	३५	भोग	४८	सर्वतेजोमय
१०	विरूप	२३	मेघनाद	३६	मोक्ष	४९	ज्वालाजटाल
११	वज्रायुध	२४	विकट	३७	लक्ष्मी	५०	खरनखर
१२	पराक्रम	२५	पिङ्गसट	३८	विद्रावण	५१	निर्वाण
१३	प्रध्वंसन	२६	प्रदीप्त	३९	कालचक्र		

॥ २. पञ्चाशत्काली न्यास॥

सभी नाम मन्त्रों के पश्चात् काली शब्द जोड़कर न्यास करें।

१	धूमकाली	१४	दुर्जय	२७	घोर	४०	माया
२	जय	१५	मन्थान	२८	भयङ्कर	४१	भद्र
३	उग्र	१६	संहार	२९	सन्त्रास	४२	श्मशान
४	ज्वाला	१७	आज्ञा	३०	कराल	४३	कुल
५	घोर	१८	रौद्र	३१	विकराल	४४	नाद
६	नाद	१९	तिग्म	३२	विभूति	४५	मुण्ड
७	धन	२०	कृतान्त	३३	भोग	४६	सिद्धि
८	कल्पान्त	२१	महारात्रि	३४	काल	४७	उदार
९	वेताल	२२	संग्राम	३५	वज्र	४८	उन्मत्त
१०	कङ्काल	२३	भीम	३६	विकट	४९	सन्ताप
११	नग्न	२४	शव	३७	विद्या	५०	कपाल
१२	घोर	२५	चण्ड	३८	कामकला	५१	निर्वाण
१३	घोरतर	२६	रुधिर	३९	दक्षिण		

॥ अथ साधारणपीठ न्यासः॥

विनियोगः – अस्य पीठन्यासस्य माण्डूकायन ऋषिः, प्रतिष्ठाछन्दः, कूर्मो देवता, क्लीं बीजं घ्रीं शक्तिः पीठन्यासे विनियोगः।

पीठन्यासस्य षडङ्गन्यासः – ओं ऐं ह्रीं हृदयाय नमः। ओं ऐं श्रीं शिरसे स्वाहा। ओं ऐं क्लीं शिखायै वषट्। ओं ऐं हौं कवचाय हूं। ओं ऐं क्रों नेत्रत्रयाय वौषट्। ओं ऐं क्रौं अस्त्राय फट्।

हृदयादि न्यासः – ओं आधारशक्त्यै नमः। ओं मूलप्रकृत्यै नमः। ओं कूर्माय नमः। ओं अनन्ताय नमः। ओं पृथिव्यै नमः। ओं क्षीरसमुद्राय नमः। ओं श्वेतदीपाय नमः। ओं कल्पवृक्षाय नमः। ओं रत्नवेदिकायै नमः। ओं रत्नसिंहासनाय नमः।

ओं धर्माय नमः इति दक्षिणांसे, ओं ज्ञानाय नमः इति वामांसे, ओं वैराग्याय नमः इति वामारौ, ओं ऐश्वर्याय नमः इति दक्षसक्थिनि, ओं अधर्माय नमः इति वदने, ओं अज्ञानाय नमः इति वामपार्श्वे, ओं अवैराग्याय नमः इति नाभौ, ओं अनैश्वर्याय नमः इति दक्षिणपार्श्वे न्यासं कृत्वा पुनः।

हृदये – ओं अं अनन्ताय नमः। ओं उं पद्माय नमः। ओं मं शेषाय नमः। ओं सूर्यमण्डलायानन्तसीम्ने नमः। ओं सोममण्डलाय धर्माय नमः। ओं वह्निमण्डलाय ज्ञानाय नमः। ओं सं वैराग्याय नमः। ओं रं ऐश्वर्याय नमः। ओं तं अधर्माय नमः। ओं लां अज्ञानाय नमः। ओं लौं अवैराग्याय नमः। ओं लीं अनैश्वर्याय नमः। ओं आं आत्मने नमः। औं अं अन्तरात्मने नमः। ओं पं परमात्मने नमः। ओं ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। इति हृदये न्यासः कर्तव्यः।

हृदयकमलस्याष्टकेशरेषु न्यासः – आं प्रभायै नमः इति पूर्वस्यां दिशि। ईं मायायै नमः इति पूर्वदक्षिणयोः

कोणे। ऊं जयायै नमः इति दक्षिणस्यां दिशि। एं सूक्ष्मायै नमः इति दक्षिणपश्चिमकोणे। ऐं विशुद्धायै नमः इति पश्चिमायां दिशि। ओं नन्दिन्यै नमः इति पश्चिमोत्तरकोणे। औं सुप्रभायै नमः इति उत्तरस्यां दिशि। अं विजयायै नमः इति उत्तरपूर्वकोणे। अः क्ष्रौं सर्वसिद्धिप्रदायै वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय फट् फट् इति कर्णिकासु न्यासो विधेयः।

हौं सदाशिवमहाप्रेतासनाय नमः। फ्रें श्रीं गुह्यकाल्यासनाय नमः। इति हृदये।

॥ अथ गुह्यकाल्याः योगरत्नाख्यो विशेषपीठन्यासः॥

विनियोग - अस्य योगरत्नाख्यपीठन्यासस्य विरूपाक्षऋषिरतिजगती छन्दः, सदाशिवो देवता, फ्रें बीजं, खफ्रें शक्तिः, हसखफ्रें कीलकं पीठन्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासो विधेयः।

षडङ्गन्यासः - रह्रां रह्रीं रह्रूं रह्रैं रह्रौं हृदयाय नमः। रफ्रां रफ्रीं रफ्रूं रफ्रैं रफ्रौं शिरसे स्वाहा। रछ्रां रछ्रीं रछ्रूं रछ्रैं रछ्रौं शिखायै वषट्। रस्त्रां रस्त्रीं रस्त्रूं रस्त्रैं रस्त्रौं कवचाय हूं। रप्रां रप्रीं रप्रूं रप्रैं रप्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। रक्ष्रां रक्ष्रीं रक्ष्रूं रक्ष्रैं रक्ष्रौं अस्त्राय फट्।

हृदयन्यासः - ओं फ्रें महामण्डूकाय नमः। ओं फ्रें कूर्माय नमः। ओं फ्रें अनन्ताय नमः। ओं फ्रें पृथिव्यै नमः। ओं फ्रें रक्तसमुद्राय नमः। ओं फ्रें मांसद्वीपाय नमः। ओं फ्रें रक्तमांसद्वीपाय नमः। ओं फ्रें रक्तबालुकायै नमः। ओं फ्रें चामुण्डामण्डलाय नमः। ओं फ्रें भैरवीप्राकाराय नमः। ओं फ्रें महाश्मशानाय नमः। ओं फ्रें वह्निज्वालायै नमः। ओं फ्रें नारान्त्रतोरणाय नमः। ओं फ्रें मुण्डमालायै नमः। ओं फ्रें कल्पवृक्षाय नमः। ओं फ्रें रत्नवेदिकायै नमः। ओं फ्रें रत्नसिंहासनाय नमः।

ओं फ्रें कृतयुगाय नमः दक्षिणांसे, ओं फ्रें त्रेतायुगाय नमः वामांसे, ओं फ्रें द्वापरयुगाय नमः वामोरौ, ओं फ्रें कलियुगाय नमः दक्षोरौ, ओं फ्रें ऋग्वेदाय नमः वदने, ओं फ्रें यजुर्वेदाय नमः वामपार्श्वे, ओं फ्रें सामवेदाय नमः नाभौ, ओं फ्रें अथर्ववेदाय नमः दक्षपार्श्वे, ओं फ्रें आयुर्वेदाय नमः दक्षभुजे, ओं फ्रें धनुर्वेदाय नमः वामभुजे, ओं फ्रें गान्धर्ववेदाय नमः इति दक्षपादे, ओं फ्रें अथर्ववेदाय नमः इति वामपादे न्यासः कार्यः॥

पुनः- ओं फ्रें इन्द्राय नमः दक्षांसे, ओं फ्रें यमाय नमः वामांसे, ओं फ्रें वरुणाय नमः वामोरौ, ओं फ्रें कुबेराय नमः दक्षोरौ, ओं फ्रें अग्नये नमः वदने, ओं फ्रें निर्ऋतये नमः वामपार्श्वे, ओं फ्रें वायवे नमः नाभौ, ओं फ्रें ईशानाय नमः दक्षपार्श्वे न्यासो विधेयः।

पुनः ओं फ्रें रक्षफ्रछ्रां ब्रह्मणे फ्रें नमः दक्षनेत्रे। ओं फ्रें रक्षफ्रछ्रीं विष्णवे फ्रें नमः वामनेत्रे। ओं फ्रें रक्षफ्रछ्रूं रुद्राय फ्रें नमः दक्षकर्णे। ओं फ्रें रक्षफ्रछ्रैं ईश्वराय फ्रें नमः वामकर्णे। ओं फ्रें रक्षफ्रछ्रौं सदाशिवाय फ्रें नमः ललाटे न्यासः।

पुनः ओं हूं असिताङ्गभैरवाय नमः। ओं हूं रुरुभैरवाय नमः। ओं हूं क्रोधभैरवाय नमः। ओं हूं उग्रभैरवाय नमः। ओं हूं उन्मत्तभैरवाय नमः। ओं हूं चण्डभैरवाय नमः। ओं हूं कपालिभैरवाय नमः। ओं हूं संहारभैरवाय नमः। इति हृदयकमलाष्टदलन्यासो विधेयः।

पुनः हृदयकमलस्थषोडशदलन्यासः

ओं गक्षटहलक्षचक्षफलक्षूं ज्योतिष्टोमाय क्रतवे स्वाहा। ओं तलठलहक्षथलहक्ष दललक्ष क्षरहम्लब्रईऊं अग्निष्टोमाय क्रतवे स्वाहा। ओं दलडक्षवलूहसखों वाजपेयाय क्रतवे स्वाहा। ओं मक्षक्रस्हखफ्रछूं षौडश्यै क्रतवे स्वाहा। ओं डलहक्षम्लां चयनाय क्रतवे स्वाहा। ओं फलक्षहूस्हव्भ्र ॐ पुण्डरीकाय क्रतवे स्वाहा। ओं पलहक्षक्षमझ्रहच्रूं राजसूर्याय क्रतवे स्वाहा। ओं ह्सलहसकह्रीं अश्वमेधाय क्रतवे स्वाहा। ओं .....(वार्हस्पत्यम्) वार्हस्पत्याय क्रतवे स्वाहा। ओं क्षक्षक्ष्लफ्रचक्षक्षौं विश्वजिते क्रतवे स्वाहा। ओं रलहक्षल्कसहफ्रआं गोमेधाय क्रतवे स्वाहा। ओं रलहक्षक्लस्हफ्रईं नरमेधाय क्रतवे स्वाहा। ओं ग्लरक्षफ्रथरक्लीं सौत्रामणये क्रतवे स्वाहा। ओं रलहक्षकहलह्स्त्रें छ्रीं अर्धसावित्र्यै क्रतवे स्वाहा। ओं ......(सूर्यक्रान्त कूटम्) सूर्यक्रान्ताय क्रतवे स्वाहा। ओं स्हफ्रसल्कह्रओं वलम्भिदाय क्रतवे स्वाहा।

ओं हौं शिवाय नमः स्वाहा। ओं हौं परशिवाय नमः स्वाहा। ओं हौं परमशिवाय नमः स्वाहा। ओं हौं परापरशिवाय नमः स्वाहा। ओं हौं परमेष्ठिशिवाय नमः स्वाहा। ओं हौं परमपरापरशिवाय नमः स्वाहा। ओं हौं परापर परमेष्ठिशिवाय नमः स्वाहा। ओं हों सदाशिवाय नमः स्वाहा। इति शिवन्यासो विधेयः॥

ऐं क्रैं धर्माय नमः पूर्वस्यां दिशि, ऐं क्लीं ज्ञानाय नमः पूर्वदक्षिणकोणे, ऐं दूं वैराग्याय नमः दक्षिणस्यांदिशि, ऐं (ऐश्वर्य) ऐश्वर्याय नमः दक्षिणपश्चिमकोणे, ऐं लूां यशसे नमः पश्चिमायां दिशि ऐं कें विवेकाय नमः पश्चिमोत्तरकोणे, ऐं क्लीं कामाय नमः उत्तरस्यां दिशि, ऐं म्लैं मोक्षाय नमः पूर्वोत्तरकोणे न्यासः कर्त्तव्यः।

सर्वस्मादन्ते द्वात्रिंशच्छदपद्मं प्रकल्प्य द्वात्रिंशत्केशरेषु प्रादक्षिण्येनैवं न्यासो विधेयः -

प्रत्येक नामावलि से पहले **ह्रीं फ्रें हूं** जोड़ें। नामावलि में चतुर्थी लगायें यथा - **करात्यै, विकरात्यै, महाकात्यै।** तथा नाम के बाद **नमः** कहें।

ह्रीं फ्रें हूं इत्यादौ नमः इत्यन्ते च योजयित्वा मध्येऽधो निर्दिष्ट देवीनां चतुर्थ्येक वचोरूपं देयम् - कराली, विकराली, महाकाली, अपराजिता, चामुण्डा, भ्रामरी, भीमा, कुरुकुल्ला, कपालिनी, घोरनादा, चण्डघण्टा, भैरवी, मुण्डमालिनीं, उल्कामुखी, फेरुवक्त्रा, चर्चिका, सिंहवाहिनी, वज्रकापालिनी, चण्डयोगेश्वरी, मातङ्गी, कुब्जिका, सिद्धि लक्ष्मी, चण्डेश्वरी, ब्रह्माणी, कालिका, दुर्गा, महामाया, महोदरी, कौमारी, वाराही, जयन्ती, गुह्यकालिका।

पुनरेतस्य हृत्पद्मस्य कर्णिकायां ओं कृतान्तकालभीषणाय महाभैरवाय हूं फट् इति न्यासः कार्यः।

शिरःस्थितपद्मस्य कर्णिकायां तु - हौं शुद्धस्फटिकविशदप्रभाय परमसदाशिवाय हूं फट् नमः स्वाहा इति न्यासः कार्यः।

॥इति॥

****

॥ अथ सकलजप्य मन्त्राणां षडङ्गन्यासः ॥

१. एकाक्षर मन्त्रस्य षडङ्ग न्यासः

ओं क्रां	अंगुष्ठायै नमः	हृदयाय नमः।
ओं क्रीं	तर्जन्यै स्वाहा	शिरसे स्वाहा।
ओं क्रूं	मध्यमायै वषट्	शिखायै वषट्।
ओं क्रैं	अनामिकायै हूं	कवचाय हूं।
ओं क्रौं	कनिष्ठायै वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ओं क्रः	कराग्रकरपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्।

एवं सर्वत्र करन्यासाङ्गन्यासयोरवसरेऊहेन कार्यं सम्पादनीयम्। अधस्तात् षण्णामङ्गानां न्यासस्य क्रमः प्रस्तूयते करन्यासस्तूह्यः।

२. कामोपास्यमनोः षडङ्गन्यासः

फ्रां (अंगुष्ठाभ्यां नमः) हृदयाय नमः। फ्रीं (तर्जन्यै स्वाहा) शिरसे स्वाहा। फ्रूं (मध्यमायै वषट्) शिखायै वषट्। फ्रैं (अनामिकायै हूं) कवचाय हूं। फ्रौं (कनिष्ठायै वौषट्) नेत्रत्रयाय वौषट्। ओं ह्रीं फ्रें (कराग्रकरपृष्ठाभ्यां फट्) अस्त्राय फट्।

३. वरुणोपास्यमनोः षडङ्गन्यासः

छ्रां (अंगुष्ठाभ्यां नमः) हृदयाय नमः। छ्रीं (तर्जन्यै स्वाहा) शिरसे स्वाहा। छ्रूं (मध्यमायै वषट्) शिखायै वषट्। छ्रैं (अनामिकायै हूं) कवचाय हूं। छ्रौं (कनिष्ठायै वौषट्) नेत्रत्रयाय वौषट्। छ्रः (कराग्रकरपृष्ठाभ्यां फट्) अस्त्राय फट्।

४. अनलोपास्यमनोः षडङ्गन्यासः

ओं सिद्धिकराल्यै हृदयाय नमः। फ्रें सिद्धिविकराल्यै शिरसे स्वाहा। हूं चण्डयोगेश्वर्यै शिखायै वषट्। स्वाहा कालसङ्कर्षिण्यै कवचाय हूं। ओं फ्रें हूं वज्रकापालिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ओं फ्रें हूं गुह्यकाल्यै अस्त्राय फट्।

५. अर्कोपास्यमनोः षडङ्गन्यासः

ओं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। हूं शिखायै वषट्। छ्रीं कवचाय हूं। फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्। ओं ह्रीं हूं छ्रीं फ्रें अस्त्राय फट्।

६. शच्युपास्यमनोः षडङ्गन्यासः

ह्रीं उग्रकाल्यै हृदयाय नमः। छ्रीं कालकाल्यै शिरसे स्वाहा। हूं कृतान्तकाल्यै शिखायै वषट्। स्त्रीं संहारकाल्यै कवचाय हूं। फ्रें कालान्तककाल्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें कल्पान्तकाल्यै अस्त्राय फट्।

७. दानवोपास्यमनोः षडङ्गन्यासः

घों ख्रौं ह्क्षम्लक्रयूं रफ्लैं स्हौं ललजिह्वायै हृदयाय नमः। थ्रीं ढ्रीं रलहक्षफ्रूं ट्रीं त्रीं विकटदंष्ट्रायै शिरसे स्वाहा। प्रीं द्रीं रक्षभ्रम्लऊ फ्रीं भ्रीं वज्रदन्तायै शिखायै वषट्। फ्लीं फ्यूं क्षक्लीं रफ्लीं रफ्रीं कोटराक्ष्यै कवचाय हूं। रथ्रीं क्षरस्त्रीं ह्क्षम्लग्रयूं रध्रीं रक्रीं फेरुतुण्डायै नेत्रत्रयाय वौषट्। हसखफ्रीं हसखफ्रूं रक्षक्रभ्रध्रम्लऊं हसखफ्रैं हसखफ्रौं मेघनादायै अस्त्राय फट्।

८. मृत्युकालोपासित मनोः षडङ्गन्यासः

ख्फ्रां ह्रां छ्रां फ्रां हृदयाय नमः। ख्फ्रीं ह्रीं छ्रीं फ्रीं शिरसे स्वाहा। ख्फ्रूं ह्रूं छ्रूं फ्रूं शिखायै वषट्। ख्फ्रैं ह्रैं छ्रैं फ्रैं कवचाय हूं। ख्फ्रौं ह्रौं छ्रौं फ्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ख्फ्रः ह्रः छ्रः फ्रः अस्त्राय फट्।

९. भरतोपास्य मनोः षडङ्गन्यासः

ओं फ्रें हृदयाय नमः। सिद्धिकरालि शिरसे स्वाहा। ह्रीं हूं छ्रीं शिखायै वषट्। स्त्रीं फ्रें कवचाय हूं। नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

१०. च्यवनोपास्य मनोः षडङ्गन्यासः

ओं छ्रीं फ्रें हृदयाय नमः। ओं सिद्धिकरालि शिरसे स्वाहा। ओं ह्रीं छ्रीं हूं शिखायै वषट्। ओं स्त्रीं फ्रें कवचाय हूं। ओं नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ओं स्वाहा अस्त्राय फट्।

११. हारीतोपास्यमनोः षडङ्गन्यासः

ओं हूं फ्रें ओं हृदयाय नमः। ओं सिद्धिकरालि ओं शिरसे स्वाहा। ओं ह्रीं छ्रीं हूं ओं शिखायै वषट्। ओं स्त्रीं फ्रें ओं कवचाय हूं। ओं नमः ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। ओं स्वाहा ओं अस्त्राय फट्।

१२. जाबालोपास्य मनोः षडङ्गन्यासः

फ्रें स्त्रीं फ्रें फ्रें हृदयाय नमः। फ्रें सिद्धिकरालि फ्रें शिरसे स्वाहा। फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं फ्रें शिखायै वषट्। फ्रें स्त्रीं फ्रें फ्रें कवचाय हूं। फ्रें नमः फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्। फ्रें स्वाहा फ्रें अस्त्राय फट्।

१३. दक्षोपास्य मनोः षडङ्गन्यासः

ओं फ्रें फ्रें फ्रें ओं फ्रें हृदयाय नमः। ओं फ्रें सिद्धिकरालि ओं फ्रें शिरसे स्वाहा। ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं ओं फ्रें शिखायै वषट्। ओं फ्रें स्त्रीं फ्रें ओं फ्रें कवचाय हूं। ओं फ्रें नमः ओं फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्। ओं फ्रें स्वाहा ओं फ्रें अस्त्राय फट्।

१४. रामोपास्यमनोः षडङ्गन्यासः

ओं ह्रीं ख्फ्रां ह्स्ख्फ्रां हस्फ्रां स्फ्हल्क्षां हृदयाय नमः। ओं ह्रीं ख्फ्रीं हस्फ्रीं हसख्फ्रीं स्फ्हल्क्षीं शिरसे स्वाहा। ओं ह्रीं ख्फ्रूं ह्स्ख्फ्रूं ह्स्ख्फ्रूं स्फ्हल्क्षूं शिखायै वषट्। ओं ह्रीं ख्फ्रैं हस्फ्रैं हस्ख्फ्रैं स्फ्हल्क्षैं कवचाय हूं। ओं ह्रीं ख्फ्रौं हस्फ्रौं ह्स्ख्फ्रौं स्फ्हल्क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ओं ह्रीं ख्फ्रः हस्फ्रः ह्स्ख्फ्रः ग्लब्लौं अस्त्राय फट्।

१५. हरिण्यकशिपूपास्यमनोः षडङ्गन्यासः

ओं फ्रें ह्रीं ह्स्ख्फ्रें ख्फ्रें स्हक्षम्लव्य्रऊ कमहलचहलक्षरज्रीं हलफ्रकह्रीं श्मशानवासिन्यै हृदयाय नमः। ओं हूं छ्रीं हस्फ्रेंक्ष्रह्रीं झसखग्रमऊं खलहव्रगक्ष्रछ्रीं ह्क्षम्लहयूं खट्वाङ्गधारिण्यै शिरसे स्वाहा। ओं क्लीं स्त्रीं क्षरहूं जरक्रीं क्षसहम्लव्य्रऊं क्षहम्लव्य्रऊं ह्क्षम्लफ्रयूं उल्कामुख्यै शिखायै वषट्। ओं ऐं श्रीं क्ष्रीं स्हौं सहक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रईं रक्षफ्रम्रध्रम्लऊं मुण्डमालिन्यै कवचाय हूं। ओं क्रीं ख्फ्रौं ह्स्ख्फ्रौं टहलक्षद्रडलरफ्रीं क्ष्लव्य्रम्रछ्रखीं स्हक्षम्लव्य्रईऊं रक्षस्त्रभ्रध्रम्लऊं चण्डकापालिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। म्लैं रक्षीं रह्रीं ख्फ्रक्ष्रूं ख्फ्रहूं क्षस्हम्लव्य्रईऊं क्षहम्लव्य्रईऊं रक्षब्रम्रघ्रम्लऊं चण्डयोगेश्वर्यै अस्त्राय फट्।

१६. ब्रह्मोपास्य मनोः षडङ्गन्यासः

रह्रीं हसखफ्रें हृदयाय नमः। ख्फ्रें ओं शिरसे स्वाहा। ह्रीं श्रीं फ्रें शिखायै वषट्। सिद्धिकरालि कवचाय हूं।

****

छ्रीं क्लीं फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्। नमः अस्त्राय फट्।

१७. वसिष्ठोपास्य मनोः षडङ्गन्यासः

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं हृदयाय नमः। रह्रां रह्रीं रह्रूं रह्रैं रह्रौं शिरसे स्वाहा। क्षां क्षीं क्ष्रूं क्षें क्षौं शिखायै वषट्। रक्षां रक्षीं रक्ष्रूं रक्षैं रक्षौं कवचाय हूं। रघ्रां रघ्रीं रघ्रूं रघ्रैं रघ्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। रफ्रां रफ्रीं रफ्रूं रफ्रैं रफ्रौं अस्त्राय फट्।

१८. विष्णुतत्त्वमनोः षडङ्गन्यासः

ओं तुलठ्लह क्षथ्लह क्षदलहक्षक्षरहम्लव्य्रईऊं छ्म्लक्षफ्लहहम्रीं रमयपक्षब्रूं शम्लक्लयक्षहूं छतक्षठ्नहल्लीं रहक्षम्लब्य्रखफछ्रस्त्रहीं ओं हृदयाय नमः। ओं दलड्क्षवलहसखफ्रौं सफक्ष्लमहप्रक्लीं रसमयक्षहस्त्रीं कप्रम्लक्षयक्लीं ट्लतलक्षफ्रखफछ्रीं रक्षफ्रसमहहव्य्रऊं ओं शिरसे स्वाहा। ओं क्ष्क्षक्ष्लफ्रच्क्षक्षौं हम्लक्षब्रसह्रीं पट्क्षम्लस्हखफ्रूं व्रतरयहक्षम्लूं यस्हप्लमक्षहूं शम्लहव्य्रखफ्रैं ओं शिखायै वषट्। ओं डलहक्षभ्लां त्रलहफ्रव्य्रऊं तरफरक्षम्लह्रौं म्रलक्षकहखफ्रछ्रीं फ्रदमहयनहूं हसखफ्रम्लक्षव्य्रऊं ओं कवचाय हूं। ओं पलहक्षक्ष्मझ्रहचूं सहब्रहखफ्रयीं हक्षमकहछ्रीं क्षब्लकस्त्रीं ल्कसमयग्लहफ्रूं फग्लसहमक्षव्लूं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। ओं हस्लहसकह्रीं रक्षलहव्य्रईं समलक्षग्लस्त्रीं रक्षरजक्ष्मक्ष्मरहम्लव्य्रछ्रीं धमसरब्लयक्ष्रूं लगमक्षखफ्रसहूं ओं अस्त्राय फट्।

१९. अम्बाहृदय मनोः षडङ्गन्यासः

ओं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। खफ्रें शिखायै वषट्। हसखफ्रीं कवचाय हूं। खफ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्। क्लीं अस्त्राय फट्।

२०. रुद्रोपासितषोडश्या मन्त्रस्य षडङ्गन्यासः

ह्रीं श्रीं ओं हृदयाय नमः। खफ्रें हस्खफ्रें शिरसे स्वाहा। क्षहम्लव्य्रऊं शिखायै वषट्। रक्षीं जरक्रीं स्त्रीं छ्रीं हूं कवचाय हूं। खफ्रें ठ्रीं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। नमः अस्त्राय फट्।

२१. विश्वेदेवोपास्याया मनोः षडङ्गन्यासः

ह्रीं श्रीं ओं हृदयाय नमः। क्लीं छ्रीं शिरसे स्वाहा। स्त्रीँ हूं शिखायै वषट्। फ्रें क्रीं खफ्रें कवचाय हूं। ठ्रीं ध्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। फ्रों रह्रीं स्वाहा अस्त्राय फट्।

२२. रावणोपासितायाः सप्तदशाक्षर मनोः षडङ्गन्यासः

क्षरह्रीं क्षरह्रीं स्हक्ष्महक्षग्लूं रहछ्ररक्षह्रीं रहछ्ररक्षह्रीं मुण्डमालिन्यै हृदयाय नमः। खफ्रह्रीं खफ्रहूं खफ्रह्रीं खफ्रहूं कामाङ्कुशायै शिरसे स्वाहा। खफ्रक्षीं खफ्रक्ष्रूं रलहक्षक्लस्हफ्रा हसखफ्रीं हसखफ्रूं कापालिन्यै शिखायै वषट्। खफ्रक्लीं खफ्रक्लूं रलहक्षक्लस्हफ्रओं क्षक्लीं क्षक्लूं डमरुडामर्य्यै कवचाय हूं। क्षरस्त्रीं क्षरस्त्रूं सहलक्षव्रठ्क्षीं सफहलक्षीं सफहलक्षूं संमोहिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। रजझ्रक्षीं रजझ्रक्ष्रूं जलहक्षछपय्रहसखफ्रीं खफ्रीं खफ्रीं गुह्यकाल्यै अस्त्राय फट्।

२३. रावणोपासितायाः षट्त्रिंशदर्णमनोः षडङ्गन्यासः

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हृदयाय नमः। छ्रीं हूं स्त्रीं खफ्रें ह्रीं शिरसे स्वाहा। गुह्यकालि शिखायै वषट्। ह्रीं खफ्रें स्त्रौं हूं छ्रीं फ्रें क्लीं कवचाय हूं। श्रीं ह्रीं ऐं ओं ह्रीं छ्रीं स्त्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। फट् फट् फट् नमः स्वाहा अस्त्राय फट्।

२४. भोगविद्यामनोः षडङ्गन्यासः

रावणोपास्य सप्तदशाक्षर मन्त्रेण सह हृदयाय नमः। इति नियोज्यम्॥ विश्वेदेवाराध्यषोडशार्णमन्त्रेण सह शिरसे स्वाहा। इति नियोज्यम्॥ वसिष्ठाराध्य सप्तदशाक्षर मन्त्रेण सह शिखायै वषट्। इति नियोज्यम्॥ रामोपास्य सप्तदशाक्षर मन्त्रेण सह कवचाय हूं। इति नियोज्यम्॥ ब्रह्माराध्य सप्तदशाक्षर मन्त्रेण सह नेत्रत्रयाय वौषट्। महारुद्राराध्य महाषोडश्या मन्त्रेण सह अस्त्राय फट्। इति च योजनीयम्॥

२५. शताक्षरमनोः षडङ्गन्यासः

खफ्रें खफ्रीं फ्रों चामुण्डे हृदयाय नमः। ह्रीं हूं स्त्रीं छ्रीं विच्चे घोरे शिरसे स्वाहा। क्लीं ब्लूं गुह्येश्वरि शिखायै वषट्। ओं फ्रें सिद्धिकरालि कवचाय हूं। स्हौं स्फ्रें अवर्णेश्वरि नेत्रत्रयाय वौषट्। फ्रें स्वाहा प्रकृत्यपरशिव निर्वाणदे अस्त्राय फट्।

२६. सहस्राक्षरमनोः षडङ्गन्यासः

ओं खफ्रां खफ्रीं खफ्रूं खफ्रें खफैं खफ्रों खफ्रौं ऐं चण्डकापालिनि हृदयाय नमः। ह्रीं हस्खफ्रां हस्खफ्रीं हस्खफ्रूं हस्खफ्रें हस्खफ्रैं हस्खफ्रों हस्खौं फ्रें फ्रौं वज्रकापालिनि शिरसे स्वाहा। क्लीं क्षरस्त्रां क्षरस्त्रीं क्षरस्त्रूं क्षरस्त्रें क्षरस्त्रैं क्षरस्त्रों क्षरस्त्रौं हूं सिद्धिकपालिनि शिखायै वषट्। हौं खफछ्रां खफछ्रीं खफछ्रूं खफछ्रें खफछ्रैं खफछ्रों खफछ्रौं क्ष्रौं ब्रह्मकापालिनि कवचाय हूं। छ्रीं कहलश्रां कहलश्रीं कहलश्रूं कहलश्रें कहलश्रैं कहलश्रों कहलश्रौं स्हौं विष्णुकापालिनि नेत्रत्रयाय वौषट्। क्रों क्ष्लक्ष्रां क्ष्लक्ष्रीं क्ष्लक्ष्रूं क्ष्लक्ष्रें क्ष्लक्ष्रैं क्ष्लक्ष्रों क्ष्लक्ष्रौं स्त्रीं रुद्रकापालिनि अस्त्राय फट्।

२७. विष्णुपास्यायुताक्षरमनोः षडङ्गन्यासः

ओं ऐं आं ईं श्रीं ह्रीं क्लीं क्रीं फ्रें हूं हृदयाय नमः। हौं ग्लूं छ्रीं स्हौः क्षौं क्रौं प्रीं सौः श्रीं स्त्रीं शिरसे स्वाहा। क्ष्रीं पूं रह्रीं रहूं रक्लीं रप्रीं रघ्रीं रज्रीं रश्रीं खफ्रें शिखायै वषट्। क्षरह्रीं क्षरहूं जरक्रीं क्षरस्त्रीं हसफ्रें क्षरस्त्रूं खफछ्रूं खफछ्रीं हलक्षीं हलक्षूं कवचाय हूं। हसखफ्रीं हसखफ्रूं हसखफ्रें हसखफ्रैं हसखफ्रों हसखफ्रौं हसखफ्रः रहछ्ररक्षह्रीं रहछ्ररक्षहूं रजझ्रक्षौं नेत्रत्रयाय वौषट्। रकझ्रक्षीं रकझ्रक्ष्रूं फ्रखभ्रीं फ्रखभ्रूं फ्रखभ्रैं फ्रखभ्रों फ्रउम्रौं हसखफ्रक्षीं हसखफ्रक्ष्रूं खफ्रीं क्षरस्त्रखफ्रूं अस्त्राय फट्।

२८. शिवोपास्यायुताक्षर मनोः षडङ्गन्यासः

स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षहम्लव्य्रऊं स्हक्षम्लव्य्रईं क्षस्हम्लव्य्रईं क्षहम्लव्य्रऊं स्हक्षम्लव्य्रईऊं क्षस्हम्लव्य्रईऊं क्षर्हम्लव्य्रईऊं क्षहम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं हृदयाय नमः।

क्ष्मक्लरक्ष्ल्हक्षव्य्रऊं सहब्रह्लखफ्रपीं त्र्लहफ्रव्य्रऊं छ्म्लक्षफ्लहहम्रीं थहर्खफ्रहमब्लूं सहल्क्षक्रमब्लयछ्रीं हम्लक्षब्रसह्रीं सफक्ष्लमहप्रक्लीं ब्रहट्म्लहूं र्क्षलहव्य्रईं शिरसे स्वाहा।

रमयप्क्षब्रूं रसमयक्षहस्त्रीं हम्लक्क्षव्य्रलछ्रौं क्लश्रम्क्षहम्ल ह्क्षफ्रकम्लईं (मेत्रागनम्) समलक्षग्लस्त्रीं मब्लयटत्क्षईं ह्क्षमकहछ्रीं दरजभ्रम्ब्लकक्षीं शिखायै वषट्।

र्क्षरजक्ष्मक्ष्मरहम्लव्य्रछ्रीं करहर्खफछ्म्रीं झ्रकस्त्रक्षश्रीं (धूमः) स्त्रहफ्रम्रीं बसरझ्रमक्षव्रक्लीं ग्लकम्ल्हक्षक्रीं ब्लम्क्षमफख्रछ्रीं चफ्क्षलकमयह्रीं म्रलक्षकहखफ्रछ्रीं कवचाय हूं।

यस्हप्लमक्षहूं गमहलयक्ष्लम्रीं गसधमरयब्लूं टर्क्षप्लमहूं नमयब्लक्षरश्रूं एक्लयक्षम्रट्रीं फ्रप्क्षग्लम्रीं (धूतपापा) फसधमश्रयल्लूं ट्लत्लट्लक्षफ्रख फ्रछ्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्।

शम्लह्व्य्रख्फ्रैं र्हक्षम्लव्य्रअख्फ्छ्रस्त्रह्रीं र्क्षफ्रसमहह्व्य्रऊं च्लक्ष्मस्ह्व्य्रख्रीं फग्लसहमक्षब्लूं लगम्क्षखफ्रसह्रूं भक्ष्लरमह्स्ख्फ्रूं ह्स्ख्फ्रम्लक्षव्य्रऊं (गह्वर) क्ष्मलरसहव्य्रह्रूं रफ्रसकम्ल क्षुत्रीं अस्त्राय फट्।

२९. शाम्भवमनोः षडङ्गन्यासः

ओं ह्रौं क्षौं फीं फां फें स्हजहलक्षम्लवनऊं सग्लक्षमहरह्रूं क्वलह्झकह्नसक्लईं व्यापिन्यै हृदयाय नमः। ऐं श्रीं ह्रीं ख्फ्रीं फ्रों फ्रौं क्ष्मब्लहकयह्रीं रजहलक्षमूं हक्लह्कडकखैं चेतनायै शिरसे स्वाहा। आं ब्लीं ब्लूं ब्लैं ब्लौं स्हीं कसवहलक्षमओं ब्रकम्लब्लक्लऊं लक्षमह्जरक्रव्य्रऊं आनन्दिन्यै शिखायै वषट्। ईं स्हौं स्हौः भ्रीं क्षीं क्ष्रूं क्लक्षसहमव्य्रऊं ब्लक्षमकह्व्य्रईं सहठलक्षह्मक्रीं विमलायै कवचाय हूं। क्रौं ग्लीं क्ष्रूंक्रीं रथीं रफ्रीं ह्लसहकमक्षब्रऐं स्हक्लह्क्ष्रूं भहव्य्रऐं महासूक्ष्मायै नेत्रत्रयाय वौषट्। ईं फ्रें फ्रें ख्फ्रें हसफ्रें हसखफ्रें स्हक्लह्रीं क्षम्लब्रसहस्हक्षक्लस्त्रीं ब्रक्षम्लसह्छ्रूं महामायायै अस्त्राय फट्।

३०. महाशाम्भवमनोः षडङ्गन्यासः

ओं ऐं कां कीं कूं कैं कौं ओं ऐं अमृते हृदयाय नमः। ओं ऐं चां चीं चूं चैं चौं ओं ऐं ज्ञानदे शिरसे स्वाहा। औं ऐं टां टीं टूं टैं टौं ओं ऐं अव्यक्ते शिखायै वषट्। ओं ऐं तां तीं तूं तैं तौं ओं ऐं चित्कले कवचाय हूं। ओं ऐं पां पीं पूं पैं पौं ओं ऐं बिन्दुनादिनि नेत्रत्रयाय वौषट्। ओं ऐं हां हीं हूं हैं हौं ओं ऐं अद्वैते अस्त्राय फट्।

३१. तुरीयामनोः षडङ्गन्यासः

ओं छ्रीं हूं ह्रीं फ्रें अलक्षितायै फ्रें ह्रीं हूं छ्रीं ओं हृदयाय नमः। ऐं क्रों ग्लूं हौं क्लीं एकांनशायै क्लीं हौं ग्लूं क्रौं ऐं शिरसे स्वाहा। आं क्ष्रौं रह्रीं रह्रूं ख्फ्रें मानस्यै खफ्रें रह्रूं रह्रीं क्ष्रौं आं शिखायै वषट्। ईं हसफ्रें जरक्रीं क्षरह्रीं क्षरह्रूं असंभवायै क्षरह्रूं क्षरह्रीं जरक्रीं हसफ्रें ईं कवचाय हूं। रकक्ष्रीं रकक्ष्रूं श्रखफ्रौं रकक्ष्रूं रकक्ष्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। फ्रम्रग्लऊं फ्रखभ्रीं फ्रँखभ्रें क्षरस्त्रखफ्रूं खफ्रीं कैवल्यायै ख्फ्रीं क्षरस्त्रखफ्रूं फ्रखभ्रीं फ्रम्रग्लऊं अस्त्राय फट्।

३२. महातुरीयामन्त्रस्य षडङ्गन्यासः

ञों ऐं क्लीं श्रीं क्रौं खफ्रक्ष्रीं क्रों क्षौं स्फ्रों स्फ्रौं क्रीं फ्रख्भ्रूं स्हौं स्हौः सौः ख्रें ख्रौं रक्षह्रूं ब्लीं ग्लीं क्रीं च्रीं फ्रीं निर्गुणे हृदयाय नमः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें हसफ्रौं ग्लूं क्लूं ब्लूं क्रूं जूं रजझक्ष्रूं क्ष्लौं ट्रीं फ्रूं थ्रीं थ्रूं अजरामरे शिरसे स्वाहा। क्ष्रीं च्रैं रह्रीं रह्रूं क्ष्रौं छ्रक्लव्य्रमक्षयूं रछ्रीं रज्रीं रक्रीं रश्रीं रक्लीं सक्लह्हसखफ्रक्ष्रीं रथ्रीं क्ष्रूं रफ्रें रफ्रीं रध्रीं रहफ्रसमक्षक्लीं हसखफ्रीं हसखफ्रूं हसखफ्रें हसखफ्रैं हसखफ्रौं अनाख्ये शिखायै वषट्। ख्फ्छ्रीं ख्फ्छ्रूं क्षरस्त्रीं क्षरस्त्रूं कहलश्रौं जनहमरक्षयह्रीं खफ्रें फहलक्षूं रठ्रीं हसखफ्रुं हसखफ्रिं स्हव्य्रख्रक्ष्मक्रूं रस्त्रीं रस्त्रूं ख्फ्रीं खफ्रूं सफहलक्षीं भासे कवचाय हूं।

क्षफ्लह्रीं खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रछ्रीं खफ्रछ्रूं सफक्षयक्लमस्त्रश्रीं खफ्रक्लीं खफ्रक्लूं खफ्रक्लैं खफ्रक्लौं खफ्रछ्रौं ब्रह्माहमस्मि खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रह्रैं खफ्रह्रों खफ्रह्रौं हसखफ्रैं श्रखफ्रौं रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं रक्षफ्रछ्रैं रक्षफ्रछ्रौं रहछ्ररक्षह्रौं मोक्षदे नेत्रत्रयाय वौषट्।

फ्रम्रग्लईं फ्रम्रग्लऊं फ्रम्रग्लऐं फ्रम्रग्लऔं रकक्ष्रौं हसखफ्रौं क्ष्लक्ष्रीं क्ष्लक्ष्रूं क्ष्लक्ष्रैं क्ष्लक्ष्रौं रकक्ष्रैं रहछ्ररक्षह्रीं क्षस्त्रीं क्षस्त्रूं क्लीं क्ष्रां ....रक्तः क्रहैं क्षरस्त्रखफ्रूं छ्ररक्षहैं फ्रखभ्रआं छ्ररक्षह्रौं फ्रखभ्रीं फ्रखभ्रूं सायुज्यम्

फ्रखभ्रैं फ्रखभ्रौं हसखफ्रक्ष्रीं हसखफ्रूं ख्फ्रीं महातुरीये अस्त्राय फट्।

षट्स्वपि मन्त्रेषु क्रमशः मूलमन्त्रस्य त्रीणि द्वे त्रीणि द्वे त्रीणि चत्वारि च वर्णानि पञ्चभिर्बीजैः प्रटितानि कृत्वा देयानि। इति विशेषः।

३३. निर्वाणमनोः षडङ्गन्यासः

ह्रीं ओं फ्रखक्ष्रौं ह्रीं परमहंस्यै ह्रीं हृदयाय नमः। छ्रीं रक्षमछरूं फ्रें फ्रखक्ष्रैं चिन्मात्रायै छ्रीं शिरसे स्वाहा। हूं छ्रीं सतरलयक्षकवरयीं रहक्षमलवरयीं निस्त्रैगुण्ये हूं शिखायै वषट्। स्त्रीं जनहसलक्षह्रीं सहक्षमलवरयूं हसलक्षकमकरब्रूं अपुनर्भवे स्त्रीं कवचाय हूं। फ्रें हसकहलह्रीं फ्रखक्ष्रैं छ्रीं अविग्रहे फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें सतरलयक्षकरवयीं रहक्षमलवरयीं जनहसलक्षह्रीं सहसमलवरयूं चैतन्यमयि ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें अस्त्राय फट्।

३४. महानिर्वाण मन्त्रस्य षडङ्गन्यासः

ब्लहतहसचैं ह्क्षम्लफ्रयूं रसकमह्लक्षछ्रीं हम्लकक्षव्य्रलछ्रौं रक्षरजक्ष्मक्ष्मरह्म्लव्य्रछ्रीं यस्हप्लमक्षहूं ओं म्लक्षकसहहूं ह्क्षम्लस्त्रयूं सहब्रह्खफ्रयीं थमक्ष्लकब्रह्स्त्रूं लमकक्षहईं टलतलक्षफ्र खफछ्रीं खफ्रक्ष्रीं रजक्षमब्लहूं ह्क्षम्लक्रयूं क्लह्क्षलहक्षमव्य्रईं क्लश्रमक्षह्म्लऊं हलमकक्षह्फ्रछ्रीं द्लत्लद्लक्षफ्रखफ्रछ्रीं ऐं क्षम्लब्रसहस्हक्षक्लस्त्रीं ह्क्षम्लग्रयूं व्रतह्क्षह्रीं ज्लकहलक्षव्रमथ्रीं कप्रम्लक्षयल्कीं जसदनस्हक्षग्लूं अवासने हृदयाय नमः।

क्षम्लव्रसहस्हक्षक्लस्त्रीं ह्क्षम्लझ्रयूं कब्रम्लक्षस्हक्लूं फ्रलक्ष्मकहूं म्लगक्षएफ्रीं टरक्षप्लमहूं फ्रखभ्रूं लह्कक्ष्मस्हव्य्रएं ह्क्षम्लब्रयूँ छ्रमकश्रहयहूं डम्लक्षब्रखफस्त्रीं टरयलह्ब्लछ्रीं मकक्षह्ग्लब्लईं हौं हलक्षकमह्सव्य्रऊं रक्षफ्रभ्रध्रम्लऊं छ्रममश्रहयहूं नजरमकह्क्ष्लश्रीं चफक्षलकमयह्रीं हलमणकमह्रीं क्षरहूं क्षम्लकस्हरयव्रूं ओं श्रें क्लीं स्हक्लक्ष्मह्ग्लूं ह्क्षफ्रकम्लईं व्रतरयह्क्षम्लूं गपटतयजक्लूं क्ष्रौं स्हश्रैं क्ष्लफ्लओं ह्सग्लक्षव्य्रऊं ह्क्षमकह्छ्रीं छ्लक्षकम्लह्रीं चमरगक्षफ्रस्त्रीं बोधातीते शिरसे स्वाहा।

खलह्वनगक्षरछ्रीं सहक्षलक्षें ज्रलह्फ्रव्य्रऊं मब्लयटतक्षईं फलयक्षकयब्लूं भलनएदक्ष्रीं हसफ्रौं टक्षसनरम्लैं ह्क्ष्मलीं क्ष्मक्ल क्षलहक्षव्य्रऊं क्षलहक्षभलम्लूं झ्रकस्त्रक्षथ्रीं छ्रडतजलूं ख्फ्रें स्हश्रैं हलफ्रकह्रीं ज्रलह्फ्रव्यऊं रसमयक्षह्स्त्री टसमनहक्षमखरऊं छतक्षठनह्ब्लींरजझ्रक्ष्रूं नदक्षटक्षब्य्रउं छलहक्षलक्षफ्रग्लऊं डम्लव्रीं छ्रम्लक्षफ्लहहम्रीं नमहक्षव्य्रहूं नपटजक्षफ्रऊं खतक्लक्ष्मव्य्रहूं छ्रक्लव्य्रमक्षयूं झसखग्रमऊं वम्लव्रीं थहरखफ्रह्मब्लूं समलक्षग्लस्त्रीं गसनहक्षब्रईं ठक्षमलखछ्रीं उपशान्ते शिखायै वषट्।

बलहक्षबलऊं लम्लव्रीं रहहक्लव्य्रऊं पपक्षम्लस्हखफ्रां कह्ब्लजूं गमह्लयक्ष्लम्रीं स्हक्षम्लव्य्रऊं फ्रतक्षमलहक्षहथलहक्षहूं कम्लव्रीं हम्लक्षव्रसह्रीं पंटक्षम्लस्हखफ्रूं क्षव्लकस्त्रीं मसफ्लभरक्षव्य्रहूं सक्लहहसखफ्रक्ष्रीं रच्रें सम्लव्रीं सफक्ष्लमहप्रक्ली यरक्षम्लब्लीं स्त्रहफ्रम्रीं करयनप्लक्षफ्रीं क्षस्हम्लव्य्रईं सलहक्षचलहक्षजक्षजैं हम्लव्रीं व्रहठ्रम्लहूं क्षलहक्षक्लस्त्रूं ग्लमक्षसक्लह्रीं ह्क्लक्षम्लश्रूं ब्लयक्ष्मझ्रग्लथूं रहफ्रसमक्षक्रीं तलठलहक्ष थलहक्ष दलहक्षक्षरह म्लव्य्रईऊं यम्लव्रीं रक्षलहव्य्रईं डम्लक्ष ब्रखफस्त्री बसरझ्रमक्षव्रक्लीं क्लसमयग्लह्फ्रूं सहक्षम्लव्यईं दलडक्षवल्रहसखफ्रौं रलहक्षफ्रूं सनहलक्ष्मब्लूं डम्लक्षब्रखफस्त्रीं हूं जलयकक्षग्लफ्रूं रगहलक्षम्लयछ्रूं हससक्लह्रीं फ्लक्षहस्हव्य्रऊं म्रलक्षकहखछ्रीं फ्रदमहयनहूं सलहक्षहूं कहफ्लमहव्य्रऊं लसर्क्षकमव्य्रद्रीं सत्त्वरूपे कवचाय हूं।

मक्षक्रस्हखफछ्रूं क्षलहक्षझ्रूं चमटक्षव्य्रछ्री स्हएंक्लरक्षीं खफछ्रम्लग्रक्लीं समरगक्षहसखफ्रीं स्हजहलक्षम्लवनऊं ग्लरक्षफ्रथरक्लीं रक्षस्त्रम्रधम्लऊं क्लक्ष्मग्लव्य्रहूं दरजभ्रम्लकक्ष्रीं ठक्लक्ष्मलव्य्रहूं रसमयक्षक्लह्रीं स्हव्य्रख्रक्ष्मक्रूं ह्सलहसकह्रीं रक्षह्भ्रधम्लऊं मथहलक्षप्रहूं क्लम्लक्षस्हश्रीं ग्लकमलहक्षक्रीं खरगवक्ष्मलयव्य्रईं मह्क्ष्लव्य्रऊं पलहक्षक्ष्मझ्रहच्रूं रक्षब्रभ्रधम्लऊं ब्लक्षफहमछ्व्रीं खक्ष्मरक्षलहक्षब्लह्रीं मकक्षह्ग्लब्लईं सफक्षयक्लमस्त्रश्रीं क्षक्षकह्स्हझ्रयूं रक्षझ्रभ्रधम्लऊं सरम्लक्षहसखफ्रीं हलकझ्रक्षश्रीं डखछ्रक्षहममफ्रीं संमगक्षलयब्लूं क्ष्रौं स्हक्ष्मह्क्षग्लूं रक्षक्रभ्रधम्लऊं छ्रम्लक्षव्रकह्रीं द्रैंजमरब्लह्यूं फ्लमधहक्षक्षव्य्रऊं रसमयरक्षक्षग्लीं ब्रह्माहमस्मि स्हक्ष्मह्क्षग्लीं रक्षभ्रधग्रम्लऊं सल्कएह्रीं सहठलक्षह्मक्रीं ब्लमक्षमफख्रछ्रीं क्लपटक्षमव्य्रईं हौं (बहुसुवर्णकूटम्) रक्षभ्रम्लऊं तमहल हक्ष क्ल फ्रग्लूं खफ्रक्ष्लब्लयह्म्रीं मक्षब्लह्कमव्य्रई कब्लयसमक्षख्रछ्रूं ब्रह्ममयि नेत्रत्रयाय वौषट्।

क्षक्षक्ष्लफ्रचक्षक्षौं रलक्षध्रम्लऊं हम्लक्ष्मप्लब्रूं ठफक्षथलमकस्त्रूं झरकस्त्रक्षथीं ....(धूतपापानदी) हसखफ्रैं मश्रां रसखग्रमूं मक्लक्षकसखफ्रूं धग्लक्षकमह्व्य्रऊं झ्रकस्त्रक्षथीं कहलजमक्षरव्य्रऊं ऐं ह्श्रीं क्षम्लीं महलक्षक्षखफ्रव्य्रह्रीं ह्क्षम्लझ्रयूं क्षस्हम्लव्य्रईं क्षह्म्लव्य्रईं नमब्लह्क्षम्रग्लूं हसखफ्रौं फहलक्षीं क्षक्लीं चफक्लह्मक्ष्रूं ब्लहतह्सचैं क्ललफ्ररसभक्षक्लछ्रूं डपतसगमक्षब्लूं म्लह्क्षस्त्रूं क्षहलीं रमयछ्रक्षक्लह्रीं व्य्रल्कक्षह्म्लूं छ्रक्षग्लमस्त्रव्य्रऊ क्ष्लभर झ्रथीं हह्छ्ररक्षह्रीं रलहक्षहलक्लीं क्षफ्लीं ....(अविग्रहानाड़ी) चम्लहक्षसकहूं ऐक्षकसखफ्रव्य्रऊं छ्रडक्षसहफ्रक्लीं क्षरस्त्रखफ्रूं महलक्षग्लक्लीं क्षम्लूं ब्रक्षम्लसह्छ्रूं क्षलहक्षक्लस्त्रूं ग्लमक्षसक्लह्रीं जनथक्षकक्लव्रईं फ्रपक्षग्लम्रीं ...(सायुज्यबीज) डलहक्षम्लां सखह्क्ष्मक्रैं यसम्लक्षसकह्व्य्रईं थफखक्षलव्य्रईं गसनहक्षव्रईं ब्लयरठह्मक्ष्रूं क्षह्म्लव्य्रऊं क्षस्हब्लव्य्रऊं रलहक्षक्लस्हफ्रईं सखह्क्ष्मधीं हंसम्लक्षप्रक्लीं हरसकक्षम्लस्त्रीं शम्लक्लयक्षहूं नहरक्षस्त्रम्लह्रीं अपवर्गे अस्त्राय फट्।

|| अथ विविध न्यास प्रयोगा: ||

|| १. वक्त्रन्यास: ||

ब्रह्मरन्ध्रे न्यास - ओं ह्रीं फ्रें हूं छ्रीं स्हौः क्रीं र्‌क्ष्रों खफ्रें महाचण्डयोगेश्वरी मूर्तये ऊर्ध्ववक्त्राय प्रज्वलद्दीपकारिणे ह्स्खफ्रें क्षौं सौः क्रों क्लीं फट् नमः स्वाहा।

मुखे हृदयेच न्यास - ऐं श्रीं क्लीं हौं क्षौं ग्लूं ग्लौं ब्लूं रख्रध्रैं महावज्रदंष्ट्रायुधमूर्तये सिंहवक्त्राय उग्राय मृत्युमृत्यवे ह्रीं हूं क्ष्रीं क्ष्रूं ज्क्रीं फट् नमः स्वाहा।

दक्षिणलोचनेन्यास - आं प्रीं हस्फ्रें छ्पख्फ्रें ज्रीं फ्रीं श्रीं स्फ्ल्क्षूं वमदुल्काघोरमुखमूर्तये फेरुवक्त्राय फेरुरवभीषणाय छ्रीं हस्खफ्रीं र्‌क्ष्छ्रीं र्‌झ्रौं खफ्रें फट् नमः स्वाहा।

वामलोचने न्यास - क्रीं (ईं) ज्रौं फ्रूं फ्रौं हैं हौं क्ष्रूं क्षूं हस्खफ्रं नखरदशनायुधमूर्तये कपिवक्त्राय महापिङ्गलसटाय थीं थींफ्रें प्रीं सौः फट् नमः स्वाहा।

दक्षनासापुटे न्यास - लं र्‌स्त्रीं ज्रौं चूं र्‌ख्रैं र्‌ख्रौं खफ्रीं खफ्रूं खफ्रैं लावण्यनिधानदिव्यमूर्तये नरवक्त्राय सर्वभोगवैभवाय छ्ररक्षहैं र्‌छ्रां रहछ्ररक्षहैं रहछ्ररक्षहौं र्‌क्ष्रीं फट् नमः स्वाहा।

वामनासापुटे न्यास - हफ्रीं हफ्रूं ख्फ्रह्रीं ख्फ्रह्रीं ख्फ्रक्षीं ख्फ्रक्षीं ख्फ्रक्षीं ख्फ्रक्षीं रजझ्रक्षैं विकरालनखदन्तमूर्तये ऋक्षवक्त्राय मेचकसटाभारिणे ब्लैं हस्फ्रीं हस्फ्रूं क्षफ्लह्रीं ख्फ्रौं फट् नमः स्वाहा।

दक्षकपोले न्यास - क्रौं ख्रौं ब्रीं खफछ्रीं खफछ्रूं क्षरस्त्रीं क्षरस्त्रूं खफछ्रौं क्षरस्त्रौं घोरतरचञ्चु पक्षमूर्तये तार्क्ष्यवक्त्राय खरनखरतुण्डाय प्रूं रक्षफ्रछ्रीं ह्खफ्रां स्त्रखफ्रीं फट् नमः स्वाहा।

वामकपोले न्यास - रभ्रां हलक्षूं पौं फहलक्षूं सफहलक्षीं सफहलक्षूं रक्षफ्रछ्रैं रक्षफ्रछ्रौं रजझ्रक्ष्रूं दीर्घशितदंष्ट्रायुधमूर्तये ग्राहवक्त्राय महाभोगभासुराय क्षज्रीं रत्रौं क्षखफ्रैं खफ्रह्न खफ्रहैं फट् नमः स्वाहा।

दक्षकर्णे न्यास - रथीं रथीं रठ्रीं रठ्रीं श्रैं श्रैं रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्ष्रूं रकक्षैं वज्रिक्रूरदन्तायुधमूर्तये पञ्चगजवक्त्राय नागराजाय शुण्डाय ह्क्षम्लैं ह्क्षम्लौं ह्ग्लौं ह्ग्लैं क्षक्लूं फट् नमः स्वाहा।

वामकर्णेन्यास - ह्खफ्रैं स्त्रखफ्रौं क्लखफ्रौं क्लखफ्रैं ह्भ्रां क्षस्फ्रौं ग्लब्लौं क्षख्रौं क्षुफ्रहौं हेषादन्तशंफायुधमूर्तये हयवक्त्राय निगालकेशरोद्धर्वाय ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नमः फट् स्वाहा।

॥ २. अस्त्र न्यास:॥

दक्षशङ्खे न्यास	–	ह्क्ष्म्लैं रग्रें ग्रैं रत्नमालायै नमः फट् स्वाहा।
वामशङ्खे न्यास	–	ऐं रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्ष्रूं रत्नमालायै नमः फट् स्वाहा।
दक्षभ्रुवि न्यास	–	ह्रीं हसखफ्रौं हूं रभ्रीं दक्षभ्रुवे नमः फट् स्वाहा।
वामभ्रुवि न्यास	–	श्रीं रख्रूं थीं थीं वामभ्रुवे नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणलोचने न्यास	–	क्लीं रख्रौं ज्रां ज्रां दक्षिणलोचनाय फट् नमः स्वाहा।
वामलोचने न्यास	–	खफ्रां क्रौं चैं चैं वामलोचनाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षनासापुटे न्यास	–	हफ्रीं क्षौं हस्ख्फ्रें हस्ख्फ्रें दक्षनासापुटाय नमः फट् स्वाहा।
वामनासापुटे न्यास	–	ख्फ्रीं क्रूं आं आं वामनासापुटाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणगण्डे न्यास	–	हफ्रूं क्षूं क्रों क्रों दक्षिणगण्डाय नमः फट् स्वाहा।
वामगण्डे न्यास	–	हफ्रौं ख्फ्रूं ब्लूं ब्लूं वामगण्डाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षकपोले न्यास	–	ख्फ्रौं ख्फ्रें ह्वां ह्वां दक्षिणकपोलाय नमः फट् स्वाहा।
वामकपोले न्यास	–	क्रैं क्रौं र्म्रैं र्म्रैं वामकपोलाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणहनौ न्यास	–	क्ष्स्त्रैं क्ष्स्त्रौं ख्फ्छ्रूं ख्फ्छ्रूं दक्षिणहनवे नमः फट् स्वाहा।
वामहनौ न्यास	–	भ्रीं हफ्रौं क्ष्स्त्रूं क्ष्स्त्रूं वामहनवे नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणांसे न्यास	–	ख्फ्रक्लीं ख्फ्रक्लीं ख्फ्छ्रीं ख्फ्छ्रीं दक्षिणांसाय नमः फट् स्वाहा।
वामांसे न्यास	–	र्ध्रूं प्रूं क्ष्ज्रूं ल्क्षां ल्क्षां वामांसाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणजत्रुणि न्यास	–	श्रखफ्रूं श्रखफ्रीं क्हल्श्रौं क्हल्श्रौं दक्षिणजत्रुणे नमः फट् स्वाहा।
वामजत्रुणि न्यास	–	सहलक्रूं स्हल्क्रीं भ्रीं भ्रीं वामजत्रुणे नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणकक्षायां न्यास	–	ग्लख्रीं ह्स्त्रौं रप्रीं रप्रीं दक्षिणकक्षायै नमः फट् स्वाहा।
वामकक्षायां न्यास	–	जूं क्षौं रफ्लीं रफ्लीं वामकक्षायै नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणपार्श्वे न्यास	–	ट्रीं ब्लैं पं पं दक्षिणपार्श्वाय नमः फट् स्वाहा।
वामपार्श्वे न्यास	–	म्रीं हीं स्हौः (बालप्रेतम) वामपार्श्वाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणचूचुके न्यास	–	श्लीं हां क्ष्स्त्रों क्ष्स्त्रौं दक्षिणचूचुकाय नमः फट् स्वाहा।
वामचूचुके न्यास	–	क्ष्रीं ह्रीं फ्रम्रग्लऐं फ्रम्रग्लऐं वामचूचुकाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणकफोणौ न्यास	–	फ्रें म्रां ज्लीं (पुष्पमाला) दक्षिणकफोणाये नमः फट् स्वाहा।
वामकफोणौ न्यास	–	श्रौं द्रौं ट्रीं ट्रीं वामकफोणाये नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणप्रगण्डे न्यास	–	जूं ज्रीं खफछ्रां खफछ्रां दक्षिणप्रगण्डाय नमः फट् स्वाहा।
वामप्रगण्डे न्यास	–	ज्रां रफ्लूं त्रीं त्रीं वामप्रगण्डाय नमः फट् स्वाहा।

दक्षमणिबन्धे न्यास	-	श्रूं व्रूं फ्लीं (फ्लीं) दक्षिणमणिबन्धाय नमः फट् स्वाहा।
वाममणिबन्धे न्यास	-	रफ्रैं क्रह्रां रश्रें (सर्पम्) वाममणिबन्धाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणाङ्गुलिमूले न्यास	-	खफ्रछ्रैं क्रप्रीं स्फ्हल्क्षौं कमण्डलु दक्षिणाङ्गुलिमूलाय नमः फट् स्वाहा।
वामाङ्गुलिमूले न्यास	-	रब्रीं रभ्रीं वंश उन्मादवंशी वामाङ्गुलिमूलाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षाङ्गुल्यग्रे न्यास	-	खफ्रभ्रूं रश्रों स्हौं (मांस खण्डम्) दक्षाङ्गुल्यग्राय नमः फट् स्वाहा।
वामाङ्गुल्यग्रे न्यास	-	रक्रैं रख्रैं क्हल्श्रः क्हल्श्रः वामाङ्गुल्यग्राय नमः फट् स्वाहा।
दक्षकुक्षौ न्यास	-	ओं खस्त्रैं सों सों दक्षकुक्षये नमः फट् स्वाहा।
वामकुक्षौ न्यास	-	रक्षश्रीं रस्फ्रौं रक्ष्रूं अग्निकुण्डम् वामकुक्षये नमः फट् स्वाहा।
दक्षिण स्फिचि न्यास	-	रत्रैं रत्रौं रं बीजपूरं दक्षिणस्फिचे नमः फट् स्वाहा।
वामस्फिचि न्यास	-	रझ्रीं रट्रूं खफ्छ्रां खफ्छ्रां वामस्फिचे नमः फट् स्वाहा।
दक्षकटौ न्यास	-	हसफ्रूं हसफ्रैं श्रैं श्रैं दक्षकट्यै नमः फट् स्वाहा।
वामकटौ न्यास	-	रस्त्रैंरस्त्रौं क्ष्स्त्रैं क्ष्स्त्रैं वामकट्यै नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणवंक्षणे न्यास	-	स्फ्हल्क्षीं स्फ्हल्क्षूं क्हल्श्रं क्हल्श्रं दक्षिणवंक्षणाय नमः फट् स्वाहा।
वामवंक्षणे न्यास	-	फ्हल्क्षैं फ्हल्क्षां क्हल्श्रां क्हल्श्रां वामवंक्षणाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणजानौ न्यास	-	व्ययं रकक्षौं क्ष्स्त्रैं क्ष्स्त्रैं दक्षिणजानवे नमः फट् स्वाहा।
वामजानौ न्यास	-	फ्रम्रग्लईं फ्रम्रग्लईं क्हल्श्रैं क्हल्श्रैं वामजानवे नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणगुल्फे न्यास	-	मोदक क्ष्लक्ष्रूं यष्टिं यष्टिम् दक्षिणगुल्फाय नमः फट् स्वाहा।
वामगुल्फे न्यास	-	म्लैं म्लैं क्ष्स्त्रं क्ष्स्त्रं वामगुल्फाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणपार्ष्णौ न्यास	-	म्लीं म्लूं धं धं दक्षिणपार्ष्णये नमः फट् स्वाहा।
वामपार्ष्णौ न्यास	-	स्त्रीं स्त्रूं क्ष्स्त्रौ क्ष्स्त्रौं वामपार्ष्णये नमः फट् स्वाहा।
दक्षपादाङ्गुलिमूलेन्यास	-	स्त्रैं स्त्रौं ज्रौं ज्रौं दक्षपादाङ्गुलिमूलाय नमः फट् स्वाहा।
वामपादाङ्गुलिमूले न्यास	-	क्ष्लक्ष्रैं क्ष्लक्ष्रैं ङंङं वामपादाङ्गुलिमूलाय नमः फट् स्वाहा।
दक्षिणप्रपदे न्यास	-	क्ष्स्त्रैं रस्त्रां छ्रौं छ्रौं दक्षिणप्रपदाय नमः फट् स्वाहा।
वामप्रपदे न्यास	-	फ्रखभ्रैं हसखफ्रक्षीं क्षरस्त्रखफ्रूं स्त्रैं वामप्रपदाय नमः फट् स्वाहा।

॥ इति अस्त्र न्यासः ॥

॥ अन्यप्रकारेण अस्त्रन्यासस्याभिधानम् ॥

दक्षशंखे न्यास	-	ओं फ्रें क्ष्लफ्लओं रत्नमालायै स्वाहा।
वामशंखे न्यास	-	ओं फ्रें ओंश्रेंक्लीं रत्नमालायै स्वाहा।
दक्षभ्रुवि न्यास	-	ओं फ्रें स्हक्ष्लक्षें हस्फ्रें दक्षभ्रुवे स्वाहा।

****

वामभ्रुवि न्यास - ओं फ्रें ह्क्ष्मलीं वामभ्रुवे स्वाहा।

दक्षिणलोचने न्यास - ओं फ्रें सम्लव्रीं दक्षिणलोचनाय स्वाहा।

वामलोचने न्यास - ओं फ्रें ह्लफ्रकह्री वामलोचनाय स्वाहा।

दक्षनासापुटे न्यास - ओं फ्रें कम्लव्रीं दक्षनासापुटाय स्वाहा।

वामनासापुटे न्यास - ओं फ्रें ङ्म्लव्रीं वामनासापुटाय स्वाहा।

दक्षिणगण्डे न्यास - ओं फ्रें लम्लव्रीं दक्षिणगण्डाय स्वाहा।

वामगण्डे न्यास - ओं फ्रें वम्लव्रीं वामगण्डाय स्वाहा।

दक्षकपोले न्यास - ओं फ्रें रम्लब्रीं दक्षकपोलाय स्वाहा।

वामकपोले न्यास - ओं फ्रें हम्लव्रीं वामकपोलाय स्वाहा।

दक्षहनौ न्यास - ओं फ्रें ह्क्षम्लब्रयूं दक्षिणहनवे स्वाहा।

वामहनौ न्यास - ओं फ्रें ह्क्षम्लह्रयूं वामहनवे स्वाहा।

दक्षांसे न्यास - ओं फ्रें यम्लव्रीं दक्षिणांसाय स्वाहा।

वामांसे न्यास - ओं फ्रें रलहक्षफ्रूं वामांसाय स्वाहा।

दक्षिणजत्रुणि न्यास - ओं फ्रें ह्क्षम्लस्त्रयूं दक्षिणजत्रुणे स्वाहा।

वामजत्रुणि न्यास - ओं फ्रें ह्क्षम्लफ्रयूं वामजत्रुणे स्वाहा।

दक्षकक्षायां न्यास - ओं फ्रें क्ष्लहक्षझ्रूँ दक्षिणकक्षायै स्वाहा।

वामकक्षायां न्यास - ओं फ्रें ह्क्षम्लझ्रयूं वामकक्षायै स्वाहा।

गले न्यास - ओं फ्रें ह्क्षम्लग्रयूं (तैमिरास्त्रम्) गलाय स्वाहा।

दक्षपार्श्वे न्यास - ओं फ्रें सलहक्षह्रूं दक्षिणपार्श्वाय स्वाहा।

वामपार्श्वे न्यास - ओं फ्रें ह्क्षम्लक्रयूं वामपार्श्वाय स्वाहा।

दक्षिणचूचुके न्यास - ओं फ्रें रक्षफ्रभ्रघ्रम्लऊं दक्षिणचूचुकाय स्वाहा।

वामचूचुके न्यास - ओं फ्रें रक्षझ्रभ्रघ्रम्लऊं वामचूचुकाय स्वाहा।

दक्षकफोणौ न्यास - ओं फ्रें खमह्रीं दक्षिणकफोणये स्वाहा।

वामकफोणौ न्यास - ओं फ्रें रलक्षघ्रम्लऊं वामकफोणये स्वाहा।

दक्षिणप्रगण्डे न्यास - ओं फ्रें रक्षभ्रघ्रय्रम्लऊं दक्षिणप्रगण्डाय स्वाहा।

वामप्रगण्डे न्यास - ओं फ्रें रक्षक्रभ्रध्रम्लऊं वामप्रगण्डाय स्वाहा।

दक्षिणमणिबन्धे न्यास - ओं फ्रें रलक्षघ्रम्लऊं दक्षिणमणिबन्धाय स्वाहा।

वाममणिबन्धे न्यास - ओं फ्रें रसखग्रमूं वाममणिबन्धाय स्वाहा।

दक्षाङ्गुलिमूले न्यास - ओं फ्रें क्षम्लूं दक्षिणाङ्गुलिमूलाय स्वाहा।

वामाङ्गुलिमूले न्यास	-	ओं फ्रें क्षक्लूं वामाङ्गुलिमूलाय स्वाहा।
दक्षाङ्गुल्यग्रे न्यास	-	ओं फ्रें क्षक्लीं दक्षाङ्गुल्यग्राय स्वाहा।
वामाङ्गुल्यग्रे न्यास	-	ओं फ्रें गणास्त्रं वामाङ्गुल्यग्राय स्वाहा।
दक्षकुक्षौ न्यास	-	ओं फ्रें क्षह्रीं दक्षकुक्षये स्वाहा।
वामकुक्षौ न्यास	-	ओं फ्रें क्षह्लीं वामकुक्षये स्वाहा।
दक्षिणस्फिचि न्यास	-	ओं फ्रें क्षव्लूं दक्षिणस्फिचे स्वाहा।
वामस्फिचि न्यास	-	ओं फ्रें क्षम्लीं वामस्फिचे स्वाहा।
दक्षकटौ न्यास	-	ओं फ्रें क्षफ्लीं दक्षकट्यै स्वाहा।
वामकटौ न्यास	-	ओं फ्रें क्षग्लूं वामकट्यै स्वाहा।
दक्षिणवंक्षणे न्यास	-	ओं फ्रें प्रमथास्त्रं दक्षिणवंक्षणाय स्वाहा।
वामवंक्षणे न्यास	-	ओं फ्रें क्षह्लूं वामवंक्षणाय स्वाहा।
दक्षिणजानौ न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्मग्लीं दक्षिणजानवे स्वाहा।
वामजानौ न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्मश्रीं वामजानवे स्वाहा।
दक्षिणगुल्फे न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्मह्रीं दक्षिणगुल्फाय स्वाहा।
वामगुल्फे न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्मस्त्रीं वामगुल्फाय स्वाहा।
दक्षिणपार्ष्णौ न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्मस्फ्रों दक्षिण पार्ष्णये स्वाहा।
वामपार्ष्णौ न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्मजूं वामपार्ष्णये स्वाहा।
दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्मफों दक्षपादाङ्गुलिमूलाय स्वाहा।
वामपादाङ्गुलिमूले न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्मध्रीं वामपादाङ्गुलिमूलाय स्वाहा।
दक्षिणप्रपदे न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्महौं दक्षिणप्रपदाय स्वाहा।
वामप्रपदे न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्मथ्रीं वामप्रपदाय स्वाहा।
पादयोः न्यास	-	ओं फ्रें सखह्क्ष्मह्रीं पादाभ्यां स्वाहा॥

॥ इति ॥

॥ ३. दूतीन्यास:॥

आं आं आं प्रकटविकटरूपिणि ह्रीं क्लीं क्रीं अट्टाट्टहासिनि श्रीं क्रों हूं नरमुण्डमालिनि चराचरं जगत् स्तम्भय स्तम्भय क्षूं क्रौं हौं चण्डशिवदूति श्रीपादुकां पूजयामि ललाटाय नमः।

आं आं आं महाश्मशानवासिनि फ्रें छ्रीं स्त्रीं नरकङ्कालधारिणि कलङ्किनि फेरुमुखि ख्फ्रें हस्फ्रें हस्ख्फ्रें प्रलम्बोदरिं ऋक्षकर्णि फेरुशिवदूति श्रीं पादुकां पूजयामि चिबुकाय नमः।

आं आं आं दंष्ट्राकराले लोलजिह्वे क्ष्रौं स्हौः सौः रुधिरवसापिशितभोजिनि क्रीं क्रूं ख्रौं घोररावे महाचण्डकापालि

****

ब्लूं व्लफ्रस्त्रूं ब्लौं रक्तशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि दक्षिणकर्णाय नमः।

आं ईं ईं ईं ईं महापिङ्गलजटाभारभासुरे ज्क्रीं श्रीं फ्रीं श्मशानधावनविमुक्तकेशि हाहाराविणि जरक्रीं रश्रीं रफ्रूं खरमुखि पिशाचिनि कुलमतभूयः प्रवर्तिनि हूं हूं हूं क्रोध शिवदूति श्री पादुकां पूजयामि वामकर्णाय नमः

आं ईं ईं ईं ईं महाभैरवि खट्वाङ्गधारिणि महामांसबलिप्रिये क्ष्रीं रक्ष्रीं क्षरह्रीं रह्छ्ररक्षह्रीं महामारीत्रैलोक्यडामरि निशाचरि कहलश्रीं कहलश्रूं क्षहूंरह्छ्ररक्षहूं घोरशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि कूर्चाय नमः।

आं ईं ईं ईं ईं विकटतुङ्गकोकामुखि जालन्धरि म्रीं रक्षैं छ्रक्षहैं रह्छ्ररक्षहैं सदाशिवप्रेतारूढ़े पातालतुलितोदरि क्षौं रक्षौं छ्ररक्षह्रौं रहछ्ररक्षहौं कृतान्त शिवदूति श्री पादुकां पूजयामि ओष्ठाय नमः।

आं ईं ईं ईं ईं भुजङ्गराजकटिसूत्रिणि वह्निस्फुलिङ्गपिङ्गलाक्षि खफ्रछ्रीं क्षस्त्रीं हस्फ्रीं रजझक्षीं द्वीपिचर्मावृताङ्गि शिववाहिनि चण्डकापालेश्वरि खफ्छ्रूं क्षस्त्रूं हस्फ्रूं रजझक्ष्रूं कापालशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि दक्षिण नेत्राय नमः।

ऊं ऊं ऊं ऊं ऊं प्रलयकालानलज्वालाजटालचितिमध्यसंस्थे र्क्षछ्रीं खफ्रें ख्फ्रैं ह्स्फ्रैं कल्पान्तरङ्गनृत्यमहानाटकिनि खफ्रह्रीं खफ्रछ्रीं खफ्रक्ष्रीं खफ्रक्लीं चर्चरीकरतालिकावादिनि वज्रशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि वामनेत्राय नमः।

ऊं ऊं ऊं ऊं ऊं परापररहस्यसमयचारिणि ज्वालामालिनि ह्क्षफ्लीं छ्ररक्षह्रां झमरयऊं ह्स्ख्फ्रौं प्रलयसमयकोटयर्कदुर्निरीक्ष्ये मृत्युवदनि रस्फ्रौं छ्ररक्षह्रौं रकक्ष्रौं रक्षफ्रछ्रौं जयझङ्कारिणि उल्काशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि दक्षिणगण्डाय नमः।

ऊं ऊं ऊं ऊं ऊं कोटिचामुण्डामध्यचारिणि प्रेतकङ्कालधारिणि हसखफ्रुं हसखफ्रिं स्फ्हल्क्षूं कहलश्रूं रक्षफ्रछ्रूं दिगम्बरि कपिलचञ्चलंक्रू रतारेभ्रमरि भ्रामरि फ्रस्त्रूं स्फ्हल्क्षूं ह्क्षम्लौं क्हल्श्रौं भगवति श्मशानशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि वामगण्डाय नमः।

ऊं ऊं ऊं ऊं ऊं आकर्षिणि आवेशिनि सन्तोषिणि संमोहिनि फ्रौं ब्रच्रौं ह्स्फ्रौं ह्स्ख्फ्रौं चण्डिनि चाण्डालिनि चण्डि चण्डिके क्लूं ग्लूं ब्लूं ज्लैं मदोन्मत्ते उग्र शिवदूति श्री पादुकां पूजयामि दक्षिणांसाय नमः।

ऊं ऊं ऊं ऊं ऊं कालि महाकालवञ्चनि विच्चे घोरे परापरसंभेदिनि संतर्जिनि बलाहकिनि ट्रीं ठ्रीं ड्रीं ढ्रीं ण्रीं त्रीं थ्रीं द्रीं ध्रीं न्रीं खण्डिनी मुण्डिनि रौद्रशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि वामांसाय नमः।

ओं ओं ओं ओं ओं ब्रह्मकपालवद्धपद्मासने चर्चितमहाविष्णुकपाले क्ष्रूं क्ष्लौं श्लौं ज्लौं ह्लौं सार्द्रनारान्त्रकृतयोगपट्टिनि शेषयज्ञोपवीतिनि छ्रौं थ्रौं फ्रौं श्रौं स्त्रौं विकरालिनि उन्मत्तशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि वामवंक्षणाय नमः।

ओं ओं ओं ओं ओं खरकर्णि महापिशाचिनि खद्योतपिङ्गले ज्वलदक्षि फें फां हीं हैं हौं यमजिह्वे वडवामुखि अवर्णेश्वरि वज्रव्योमकेशि छ्रैं थैं फ्रैं श्रैं स्त्रैं रहस्य रक्षिणि कालशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि दक्षिणपौरस्त्यवंक्षणाय नमः।

ओं ओं ओं ओं ओं जय जय जीव जीवकामाङ्कुशे कामद्राविणि सर्वमदभञ्जिनिं खफ्रछ्रीं खफ्रछ्रूं खफ्रह्रीं खफ्रहूं ब्रूं अनाख्येयस्वरूपिणि चर्पटिनि नगदन्त ब्रह्माण्डे क्लफ्रीं क्लफ्रूं क्लरहैं क्लह्रौं कक्ष्रौं क्षपणिके मुण्डशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि। गलाय नम॥

ओं ओं ओं ओं ओं सकलदैत्यवलमर्दिनि निपीतरुधिरछर्दिनि क्लखफ्रां क्लखफ्रीं क्लखफ्रूं क्लखफ्रैं क्लखफ्रौं शवाङ्गुलीपुञ्जकृतकाञ्चिते हूं हूं कारनादभीषणे ह्रखफ्रां ह्रक्लां ह्रखफ्रीं ह्रखफ्रूं ह्रफ्रौं शूलिनि महाराक्षसि शिवदूति श्री पादुकां पूजयामि। वामपार्श्वाय नमः ॥

ओं ओं ओं ओं ओं वातवेगजयिनि वेतण्डतुण्डि परमप्रचण्डि रह्रछ्ररक्षह्रां रक्षफ्रछ्रां खफ्रक्ष्रां खफ्रछ्रां खफ्रह्रां महाशंखमालिनि त्रिलोकीपालिनि संवर्तक कालानलज्वालिनि कर्कशभुजभीमे क्षफ्रह्रां क्ष्लौः क्रप्रै क्षफ्रह्रें क्षफ्रह्रैं घोरतासीमे बलशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि। वस्तये नमः ॥

ओं ओं ओं ओं ओं अणिमादि प्रभावप्रकाशिनि चण्डातिचण्डतरचण्डयोगेश्वरि फ्रथां फ्रथीं फ्रथूं फ्रथें फ्रथैं सकलजनमनोरञ्जनि दुष्टदुरभिप्रायभञ्जिनि प्रणतवाञ्छितप्रदे फ्रम्रग्लऔं क्ष्लक्ष्रौं (उरकम्) फ्रख्भ्रैं फ्रख्भ्रौं सौम्यमूर्ते भगवति सिद्धिशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि दक्षिणपार्श्वाय नमः।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं कालि कालि महाकालि मांसशोणितभोजिनि ह्रीं ह्रीं ह्रूं रक्तकृष्णमुखि देवि मां मां शत्रवः नश्यन्तु हृदयशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि ह्रां हृदयाय नमः।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं नमो भगवति दुष्टचाण्डालिनि रुधिरमांसभक्षिणि कपालखट्वाङ्गधारिणि हन हन दह दह पच पच मम शत्रून् ग्रस ग्रस मारय मारय हूं हूं हूं फट् शिरः शिवदूति श्री पादुकां पूजयामि ह्रीं शिरसे स्वाहा।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ह्स्फ्रां ह्स्फ्रीं ह्स्फ्रूं महापिङ्गलजटाभारे विकटरसनाकराले सर्वसिद्धिं देहि देहि दापय दापय शिखाशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि ह्रूं शिखायै वषट्।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं महाश्मशानवासिनि घोराट्टहासिनि विकटतुङ्गकोकामुखि ह्रीं क्लीं श्रीं महापातालनुलितोदरि भूतवेतालसहचारिणि कवचशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि कवचाय हूं।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं लेलिहानरसनास्याभयानके वितस्तचिकुरभारभासुरे चामुण्डाभैरवी डाकिनीगण परिवृते फ्रें ख्फ्रें हूं आगच्छ आगच्छ सान्निध्यं कल्पय कल्पय त्रैलोक्यडामरि महापिशाचिनि नेत्रशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि नेत्रत्रयाय वौषट्।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं गुह्यातिगुह्यकुब्जिके हूं हूं हूं फट् मम सर्वोपद्रवान मन्त्रतन्त्रयन्त्र चूर्णप्रयोगादिकान् परकृतान् कारितान् करिष्यन्ति तान् सर्वान् हन हन मथ मथ मर्दय मर्दय दंष्ट्राकरालि फ्रें ह्रीं हूं फट् गुह्यातिगुह्यकुब्जिके अस्त्रशिवदूति श्री पादुकां पूजयामि अस्त्राय फट्।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हूं हूं हूं हूं हूं कार घोरनादवित्रासितजगत्त्रये ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रसारितायुतभुजे महावेगप्रधाविते क्लीं क्लीं क्लीं पदविन्यासत्रासिते सकलपाताले श्रींश्रीं श्रीं व्यापकशिवदूति परमशिवपर्यङ्कशायिनि छ्रीं छ्रीं छ्रीं गलद्रुधिरमुण्डमालाधारिणि घोरघोरतररूपिणि फ्रें फ्रें फ्रें ज्वालामालिपिङ्गजटाजूटे अचिन्त्यमहिमबलप्रभावे स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं दैत्यदानवनिकृन्तनि सकलसुरकार्यसाधिके ओं ओं ओं फट् नमः स्वाहा।

व्यापक न्यास करें।

॥ ४. डाकिनीन्यास ॥

ग्रीवान्यास - ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं फट् फ्रें हसफ्रें हसखफ्रें स्हौं स्हौः सौः डां डीं डूं टम्लव्य्रईं कोलागिरिस्थने चित्रघण्टे डाकिनि मां रक्ष रक्ष मम त्वग्धातून् रक्ष रक्ष पाहि पाहि हौं क्रों क्रौं क्षौं छ्रीं मह्रक्ष्लव्य्रऊं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं सर्व सत्त्ववशंकरि हूं हूं हूं फट् फट् नमः स्वाहा।

****

हृदय न्यास – **ओं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लैं ग्लौं ब्लौं क्षौं ख्रौं हसफ्रें हसखफ्रां तम्लव्र्यईं मुञ्जगिरिस्थाने उल्कामुखि राकिनि रां रीं रूं मां रक्ष रक्ष मम रक्तधातून् रक्ष रक्ष फ्रों फ्रौं स्फ्रौं ब्लीं ब्लूं सखक्लक्ष्मध्रयब्लीं ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रैं ज्रौं सर्वदेववशंकरि फ्रें फ्रें फ्रें फट् फट् नमः स्वाहा।**

नाभिन्यास – **ओं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं स्त्रीं स्त्रूं प्रीं प्रूं हैं हैं रज्रीं जरक्रीं हसखफ्रैं कम्लव्र्यईं विन्ध्यगिरिस्थाने घोरनादे डाकिनि लां लीं लूं मां रक्ष रक्ष मम मांसधातून् रक्ष रक्ष सर्वसिद्धिवशंकरि स्त्रैं स्त्रौं रहैं रह्रौं क्षरह्रीं रहक्षम्लव्र्य अखफ छ्रस्त्रह्रीं ह्लक्षफ्लीं ह्लक्षफ्लूं ह्लक्षफ्लैं ह्ग्लैं ह्ग्लैं छ्रीं छ्रीं छ्रीं फट् फट् नमः स्वाहा।**

लिङ्ग न्यास – **ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं फ्रें फ्रें फ्रें खफ्रें खफ्रें फ्रीं खफ्रह्रौं खफ्रह्रौं खफ्रछ्रीं म्रव्र्यवऊं नीलगिरिस्थाने पिङ्गजटे काकिनि मां रक्ष रक्ष मम मेदोधातून् रक्ष रक्ष सर्वदैत्यवशंकरि झमरयऊं रक्षछ्रीं हसखफ्रौं रस्फ्रौं स्हक्लरक्ष मजह्रखफरयूं क्लं क्लं रछ्रीं रछ्रीं रप्रीं रप्रीं रफ्रीं रफ्रीं फट् फट् नमः स्वाहा।**

उपान न्यास – **ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं रक्षफ्रछ्रैं रकक्षैं रहछ्ररक्षहैं छ्ररक्षहैं छ्ररक्षहैं हफ्रीं हफ्रूं हफ्रैं हफ्रौं म्लव्र्यहऊं श्वेतगिरिस्थाने वेगाकुले शाकिनि मां रक्ष रक्ष ममास्थिधातून् रक्ष रक्ष सर्वग्रहवशंकरि रक्रीं रक्रूं रखैं रखौं रखं फ्रक्लां हसखफ्रें खफछ्रें व्रह्रक्ष्मक्रऋरयीं (त्र्यस्त्रवीजयुगलम्) खफछ्रैं खफछ्रैं हलैं हलैं फ्लीं फट् फट् नमः स्वाहा।**

भ्रूमध्य न्यास – **ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं क्रूं क्रैं क्रों क्रौं फीं फां क्षीं क्षैं क्षौं शम्लव्र्यईं सह्यगिरिस्थाने एकपादे हाकिनि मां रक्ष रक्ष मम मज्जाधातून् रक्ष रक्ष सर्वपशुवशंकरि रहैं रहैं रक्षैं रक्षैं क्रैं क्रौं स्हौः सौः ठः ठः ठः (गह्वर कूटम्) रजझ्रक्षी रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्षैं रजझ्रक्षौं खफ्रक्लैं खफ्रक्लौं ह्लक्षम्लैं फट् फट् नमः भ्रीं स्वाहा।**

गले न्यास – **ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं छ्रीं छ्रीं छ्रीं खफ्रक्षैं खफ्रक्षौं क्षखफ्रें क्षखफ्रैं खफ्रक्लौं यम्लव्र्यईं दर्दुरगिरिस्थाने त्रिशीर्षे डाकिनि मां रक्ष रक्ष मम वसागोर्दान्त्रधातून् रक्ष रक्ष सर्वनागवशंकरि स्त्रखफ्रीं स्त्रखफ्रूं स्त्रखफ्रैं स्त्रखफ्रौं ह्फ्रैं ह्फ्रैं क्षत्रैं क्षत्रैं हसखफ्रम्लक्षव्र्यऊं क्षरस्त्रीं क्षरस्त्रूं खफछ्रीं खफछ्ररूं हसखफ्रौं फट् फट् हूं।**

तालु न्यास – **ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं फ्रें फ्रें हूं रठ्रीं रठ्रीं रठ्रीं फ्रों रह्रूं क्षरह्रीं क्षरह्रूं म्लव्र्यवईं महेन्द्रगिरिस्थाने धटोदरि शाकिनि मां रक्ष रक्ष मम क्लोमय हृत्पद्मस्नायुपुरीतति रक्ष रक्ष सर्वरक्षोवरशंकरि जूं श्रीं क्षौं क्षौः व्रीं फ्लक्रूं क्रौं क्रौं हसखफ्रैं क्षस्हम्लव्र्यईऊं कहलश्रौं कहलश्रूं हसफ्रौं रकक्षौं रहछ्ररक्षह्रौं फट् फट् नमः स्वाहा।**

सहस्त्रदलकमल न्यास – **ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं श्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं फ्रम्रग्लऐं फ्रम्रग्लऊं फ्रम्रग्लऔं क्ष्लक्षों (उरङ्कितम्) क्षब्लकस्त्रीं मलयगिरिस्थाने सूचीमुखि याकिनि मां रक्ष रक्ष मम शुक्रधातून् रक्ष रक्ष सर्वजगद्वशंकरि फ्रखभ्रीं हसखफ्रक्षीं खफ्रों मोदकम् क्षरस्त्रखफ्रूं क्ष्लक्ष्रूं फ्रखभ्रूं हसखफ्रः फ्रखभ्रौं क्ष्लक्षैं क्ष्लक्षौं फ्रखभ्रैं फ्रम्रग्लईं धम्रब्लक्ष फ्रखछ्रीं खफ्रह्रीं खफ्रक्ष्रूं खफ्रक्षैं रजझ्रक्षौं रहछ्ल रक्षहो रक्षफ्रछ्रौं रक्षौं छ्ररक्षह्रौं रकक्षौं हसफ्रौं खफ्रौं फट् फट् नमः स्वाहा।**

॥ इति डाकिनी न्यासः॥

॥ ५. योगिनी न्यासः॥

ब्रह्मरन्ध्रे न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं चर्चिकायै हूं फट् स्वाहा।
ललाटे न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं क्षौं क्रौं क्रीं डामर्ये हूं फट् स्वाहा।
कूर्चेयोः न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं क्रैं ख्रौं आं सूर्यकर्ण्यै हूं फट् स्वाहा।
दक्षिणलोचने न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं क्ष्रौं स्हौः ब्लूं तापिन्यै हूं फट् स्वाहा।
वामलोचने न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं थ्रीं फ्रीं फ्रौं कुम्भोदर्यै हूं फट् स्वाहा।
दक्षगण्डे न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं फें फीं म्रूं फेरुमुख्यै हूं फट् स्वाहा।
वामगण्डे न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं मर्दिन्यै हूं फट् स्वाहा।
दक्षकर्णे न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं क्ष्री क्ष्रूं क्ष्रौं जातहारिण्यै हूं फट् स्वाहा।
वामकर्णे न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं कहलश्री कहलश्रूं कहलश्रैं विडालाक्ष्यै हूं फट् स्वाहा।
तालुके न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं क्षरह्रीं जरक्रीं क्षरह्रूं दीर्घनखायै हूं फट् स्वाहा।
हृदये न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं हसखफ्रें खफ्रें हसखफ्रौं सूचीतुण्डयै हूं फट् स्वाहा।
जठरे न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं क्षरह्रीं रहछ्ररक्षह्रूं क्षरह्रूं शोषिण्यैहूं फट् स्वाहा।
नाभौ न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं रक्षफ्रछ्रीं रकक्ष्रूं रजझ्रक्ष्रैं कपालिन्यै हूं फट् स्वाहा।
लिङ्गे न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं खफ्रह्रौं खफ्रह्रैं खफ्रछ्रौं चण्डघण्टायै हूं फट् स्वाहा।
गुदे न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं खफ्रह्रों हसफ्रौं प्रीं कुरुकुल्लायै हूं फट् स्वाहा।
सर्वव्यापक न्यास	-	ओं फ्रें छ्रीं छ्रखफ्रीं खफ्रक्ष्रैं क्ष्लौः बलाकिन्यै हूं फट् स्वाहा।

इह स्थानानि पञ्चदश एव निर्दिष्टानि अत ऊहत अन्तिम न्यास स्थानं कल्पितम्।

॥ ६. कुलतत्त्वन्यासः॥

ओं ह्रीं क्षौं हूं ह्रीः हें रक्रूं र्क्षछ्रीं लगमक्षखफ्रसह्रूं इडानाड्यधिष्ठात्री काली देवता आनन्दकुलतत्त्वक्रमसिद्धा मायाकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। प्रपदे न्यास॥।

ऐं ह्रौं श्रीं फ्रें ह्रों र्छ्रूं र्क्षछ्रीं र्छ्रैं ग्रमहलक्षखफ्रग्लैं ह्क्ष्म्लस्त्रयूं पिङ्गलानाड्यधिष्ठात्री काली देवता नियमकुलतत्त्वक्रमसिद्धा शक्तिकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। गुल्फे न्यास॥।

आं क्रीं क्लीं क्रौं रछ्रौं रस्फ्रों र्स्फ्रौं रक्षश्रीं सखक्लक्ष्मध्रयब्लीं सुषुम्णानाडयधिष्ठात्री काली देवता प्रमाणकुलतत्त्वक्रमसिद्धा सिद्धिकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। जङ्घायां न्यास॥।

क्रूं ईं श्रीं फ्रों ग्लैं र्ज्रौं र्झ्रौं ज्रैं च्लक्ष्मस्हव्यख्रीं गान्धारीनाड्यधिष्ठात्री काली देवता प्रकृतिकुलतत्त्वक्रमसिद्धा पराकौलिकीं देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। जानुन्यासः॥

फ्रौं स्फ्रों क्लौं क्लूं र्फ्रें र्फ्रौं र्स्त्रौं र्स्त्रैं भक्ष्लरमह् स्ख्फ्रूं हस्तिजिह्वानाड्यधिष्ठात्री काली देवता निवृत्तिकुलतत्त्वक्रमसिद्धा नित्याकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। उर्वो र्न्यास॥।

ब्जैं थ्रीं नौं नौं जूं ज्रैं स्हौः सौः क्ष्मलरसहव्य्रह्रूं अलम्बुषानाड्यधिष्ठात्री काली देवता वैराग्यकुलतत्त्वक्रमसिद्धां

****

सूक्ष्माकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। वंक्षणे न्यासः॥

ज्रौं रह्लछ्ररक्षह्रीं र्क्लीं र्क्लूं ख्फ्रूं ख्फ्रीं ख्फ्रैं ख्फ्रौं ब्लक्क्षहमस्त्रछ्रूं विश्वोदरानाड्यधिष्ठात्री काली देवता अविद्याकुलतत्त्वक्रमसिद्धा भद्राकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। कटौ न्यासः॥

ह्स्फ्रों ह्स्फ्रूं क्ष्रूं त्रीं ब्लों ब्लूं ख्रौं ज्रीं सहक्लर्क्षमजह्लखफरयूं सरस्वतीनाड्यधिष्ठात्री काली देवता ऐश्वर्यकुलतत्त्वक्रमसिद्धा जयाकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। पार्श्वे न्यास॥।

ट्रीं ब्लैं ह्स्फ्रैं र्छ्रां ह्स्फ्रौं छ्र्क्षह्रैं त्रैं स्हौः खफछ्रैंवह्लक्ष्मत्ररयईं कुहूनाड्यधिष्ठात्री काली देवता प्रतिष्ठाकुलतत्त्वक्रमसिद्धा रौद्रीकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। कक्षायां न्यासः॥

सौः रस्त्रूं रह्ल छ्ररक्षह्रीं रह्लछ्ररक्षह्रूं रह्लछ्ररक्षह्रौं रह्लछ्र रक्षह्रैं र्क्क्ष्रीं रक्क्ष्रूं रहक्षम्लव्य्रज खफछ्रस्त्र ह्लीं वारणानाड्यधिष्ठात्रीं काली देवता उपाधिकुलतत्त्वक्रमसिद्धा प्रभाकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। स्कन्धे न्यास॥

र्क्क्ष्रैं र्क्क्ष्रौं क्ष्रौं छ्रीं क्रैं स्हौं रक्षफ्रछ्रैं रक्षफ्रछ्रूं (गह्वर कूटम्) रण्डानाड्यधिष्ठात्री काली देवता अद्वैतकुलतत्त्वक्रमसिद्धा विद्याकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। जत्रुणि न्यास॥

श्र्ख्फ्रौं स्फ्रें क्ष्लौं रक्षफ्रछ्रौं प्रीं ब्रूं रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्ष्रीं शम्लह्लव्य्र ख्फ्रें मार्तण्डानाड्यधिष्ठात्री काली देवता आशयकुलतत्त्वक्रमसिद्धा ज्येष्ठा कौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। हनौ न्यास॥।

रजझ्रक्ष्रौं रजझ्रक्ष्रैं फ्रीं ब्री फ्रूं थ्रौं थ्रां क्रप्रां ह्स्ख् फ्रम्लक्षव्य्रऊं शङ्खिनीनाड्यधिष्ठात्री काली देवता वासनाकुलतत्त्वक्रमसिद्धा क्रियाकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। सृक्किणि न्यासः॥

ख्फ्रछ्रीं ह्क्ष्प्लीं ख्फ्रह्रीं ख्फ्रह्रूं प्रौं ह्स्ख्फ्रां ख्फ्रह्लां ख्फ्रह्लौं स्हछ्र्क्ष्लम्रव्य्रईं मनुनाड्यधिष्ठात्री काली देवता संकल्पकुलतत्त्वक्रमसिद्धा दीप्ताकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। कपोले न्यासः॥

दां दां दां ख्फ्रह्रीं ह्स्ख् फ्रीं ह्रूं हैं ह्लां तफल्क्षकमश्रव्रीं पयस्विनीनाड्यधिष्ठात्री काली देवता विकल्पकुलतत्त्वक्रमसिद्धा शान्तिकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। गण्डे न्यास॥

ल्रौं ह्लौं ह्स्ख्फ्रौं क्ष्रां ख्फ्रह्रूं ख्फ्रह्रैं ख्फ्रह्लौं ख्फ्रक्ष्रां मफ्रलहलहखफ्रूं मधुमतीनाड्यधिष्ठात्री काली देवता विशुद्धिकुलतत्त्वक्रमसिद्धा सृष्टिकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। कर्णेन्यासः॥

हसखफ्रैं क्ष्रीं ख्फ्रक्ष्रीं ख्फ्रक्ष्रूं ख्फ्रक्ष्रैं ख्फ्रक्ष्रौं क्ष्र्ह्रूं पूंसकह्ललमक्षखव्रूं चेतनानाड्यधिष्ठात्री काली देवता निमित्तकुलतत्त्वक्रमसिद्धा स्थितिकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। नासापुटे न्यासः॥

ख्फ्रक्लू ख्फ्रक्लां ख्फ्रक्लीं ख्फ्रक्लैं छ्र्क्ष्ह्रीं भ्रीं जरक्रीं रह्लां (ध्वजकूटम्) गालिनीनाड्यधिष्ठात्री काली देवता आभासकुलतत्त्वक्रमसिद्धा कालीकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। नेत्रे न्यास॥।

ख्फ्रछ्रां ख्फ्रछ्रीं खफछ्रूं ख्फ्रक्लौं रह्रूं ह्स्फ्रें ह्स्ख्फ्रें रह्रीं स्हक्लव्य्रक्ष्रीं धमनीनाड्यधिष्ठात्री काली देवता चैतन्यकुलतत्त्वक्रमसिद्धा मेधाकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। भ्रुवौन्यासः॥

ख्फ्रछ्रूं ख्फ्रें रह्रौं फ्रम्रग्लऊं ध्रीं ख्फ्रछ्रौं रह्रें फ्रम्रग्लईं कम्लक्षसहब्लूँ कपिलानाड्यधिष्ठात्री काली देवता प्रत्ययकुलतत्त्वक्रमसिद्धा पुष्टिकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। मणिबन्धे न्यास॥

फ्रम्रम्लऐं फ्रम्रग्लओं रक्ष्रीं रथ्रीं रफ्रीं फ्रखभ्रां जरक्रां रक्ष्रैं (सेतु कूटम्) विश्वदूतानाड्यधिष्ठात्री काली देवता प्रबोधकुलतत्त्वक्रमसिद्धा श्रद्धाकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। शङ्खेन्यासः॥

फ्रखभ्रूं फ्रखभ्रीं रछ्रीं रक्ष्रूं रझ्रीं छ्रखफ्रीं (वक्त्र कवचे) ज्रम्लक्षह्छ्रीं धारिणीनाड्यधिष्ठात्री काली देवता आवेशकुलतत्त्वक्रमसिद्धा पूर्णाकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। ब्रह्मरन्ध्रेन्यास॥

(पारिजात इष्टि सेतु बीजानि) फ्रखभ्रैं रक्षौं फ्रखभ्रों (जगदावृत्तिकं ब्रह्मकपालं) म्ररयक्षक्षस्हफ्रीं धोरिणी नाड्यधिष्ठात्री काली देवता निर्वाणकुलतत्त्वक्रमसिद्धा चन्द्राकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। शिखा न्यासः॥

रत्रीं च्रीं रफ्रें खफ्रछ्रीं फ्रखभ्रौं हसखफ्रक्ष्रीं ह्स्खफ्रौं खफ्रीं छ्रस्हक्षब्लश्री लम्बिकानाड्यधिष्ठात्री काली देवता समयकुलतत्त्वक्रमसिद्धा नन्दाकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। कन्धरे न्यासः॥

ह्स्खफ्रें खफ्छ्रूं खफछ्रैं क्षरस्त्रीं खफ्छ्रों क्षरस्त्रखफ्रूं ब्लूं ह्ल्क्षें मह्क्ष्लव्य्रऊं कैवल्यानाड्यधिष्ठात्री काली देवता जीवात्मकुलतत्त्वक्रमसिद्धा कल्पाकौलिकी देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः। व्यापके सर्वशारीरे न्यासः॥

शतद्वयमावश्यकमपेक्षितं च बीजानां किन्तु इह ततोऽधिकानि दश बीजानि अधोलिखितानि तेषां प्रसङ्गे विचार आवश्यकः। ह्फ्रीं ह्फ्रूँ क्ष्रस्त्रैं क्ष्रस्त्रं छ्ररक्षह्रां इफ्रौं हफ्रें हसखफ्रुं (महाकल्पस्थायी)

॥ इति कुल तत्वन्यासः॥

॥ ७. सिद्धिचक्रन्यासः॥

ओं क्लीं श्रीं ह्रीं फ्रें कामरूपगह्वरे महानुभावायै योगिनी देवतायै स्तम्भन सिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। ब्रह्मरन्ध्रे॥

ओं क्रीं क्लूं स्त्रीं फ्रें पूर्णगिरौ महानुभावायै अप्सरस देवतायै मोहन सिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। हृदये॥

ओं स्फ्रों हूं मां आनर्तविषये महानुभावायै डाकिनी देवतायै वशीकरण सिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। जठरे॥

ओं क्षौं ग्लौं ग्लूं फ्रें सौराष्ट्रदेशे महानुभावायै चामुण्डा देवतायै मारण सिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। कफोणिद्वये न्यासः॥

ओं जूं ह्रों ह्रें फ्रें कश्मीरमण्डले महानुभावायै भैरवी देवतायै आकर्षण सिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। पार्श्वद्वये न्यासः॥

ओंस्हौः क्लं (वटी) फ्रें कोलापुरे महानुभावायै राक्षसी देवतायै उच्चाटन सिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। अंसयोर्न्यासः॥

ओं रक्षश्रीं झमरयऊं ज्रौं फ्रें कोशलपत्तने महानुभावायै भूतिनी देवतायै द्वेष सिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। कपोलयोर्न्यासः॥

ओं प्रैं र्प्रौं रस्फ्रौं फ्रें काञ्चीनगरे महानुभावायै गुह्यकीदेवतायै द्रावणसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। नेत्रयोर्न्यासः॥

ओं रह्रैं रफ्रै रक्ष्रैं फ्रें काश्यूषरे महानुभावायै जम्भकीदेवतायै शोषणसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। कर्णयोर्न्यासः॥

ओं क्ष्रौं क्लैं रफ्रौं फ्रें वाराहक्षेत्रे महानुभावायै गन्धर्वादेवतायै मूर्च्छनसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। नासापुटयोर्न्यासः॥

ओं रक्ष्रौं रस्त्रैं रस्त्रौं फ्रें जालन्धरतटेमहानुभावायै किन्नरीदेवतायै क्षोभणसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। सृक्कद्वये॥

ओं खफ्रीं ब्रीं ब्लौं फ्रें काम्पिल्यप्रदेशे महानुभावायै कूष्माण्डीदेवतायै सन्त्राससिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा।

भ्रुवोर्न्यासः ॥

ओं प्रीं छ्रीं फ्रैं फ्रें मथुरापुर्यां महानुभावायै विद्याधरीदेवतायै उन्मादसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। ललाटे॥

ओं प्रूं हूं फ्रूं फ्रें नैमिषारण्ये महानुभावायै यक्षिणीदेवतायै व्यजनसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। चिबुके॥

ओं थीं सौः स्त्रों फ्रें लंकापर्वते महानुभावायै वैष्णवीदेवतायै खड्गसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। जानुद्वये॥

ओं रक्षीं प्रौं भ्रीं अवन्तीनगर्यां महानुभावायै सिद्धादेवतायै खेचरीसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। गुदे न्यासः॥

ओं खफ्रूं हस्फ्रीं हस्फ्रूं फ्रें कोङ्कणजनपदे महानुभावायै महेश्वरीदेवतायै कामरूपत्वसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। लिङ्गे न्यासः॥

ओं खफ्रें हक्षम्लैं छ्ररक्षह्रीं फ्रें पाञ्चालग्रामे महानुभावायै घोणकी देवतायै वेताल सिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। नाभौ न्यासः॥

ओं खफ्रौं रश्रीं रप्रीं फ्रें उड्डियानपृष्ठे महानुभावायै ब्राह्मणीदेवतायै हूं फट् नमः स्वाहा। बिन्दौ न्यासः॥

ओं हस्फ्रों छ्ररक्षहैं रह्छ्ररक्षह्रौं फ्रें गोमन्थशिखरे महानुभावायै कौमारीदेवतायै यक्षिणीसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। मूलाधारे न्यासः।

ओं हस्फ्रौं रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं फ्रें पौण्ड्रककानने महानुभावायै वाराहीदेवतायै गुटिकासिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। वदने न्यासः॥

ओं रजझ्रक्ष्रीं रजझ्रक्ष्रौं रछ्रीं फ्रें करवीर राजधान्यां महानुभावायै नारसिंही देवतायै धातुवाद सिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। कराग्रयो र्न्यासः॥

ओं रजझ्रक्ष्रूं हस्खफ्रीं हस्खफ्रौं फ्रें कलिङ्गभूभागे महानुभावायै ऐन्द्रीदेवतायै अन्तर्धानसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। पादाग्रयोर्न्यासः॥

ओं हस्खफ्रैं रजझ्रक्ष्रीं क्षरह्रूं फ्रें मेदिनीतले महानुभावायै गुह्यकालीदेवतायै अणिमाद्यष्टसिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। सर्वशरीरव्यापके न्यास॥।

॥ इति सिद्धि चक्र न्यासः ॥

॥ ८. कैवल्य न्यासः॥

ओं ऐं क्लीं श्रीं छ्रीं क्रों क्रीं ह्रौं हूं रक्षक्रींऊं कुण्डलिनीचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा ब्रह्मवस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। गुदे न्यास॥।

आं क्षौं क्रौं स्त्रीं ह्रीं फ्रें जूं स्हौः सौः सहक्षम्लव्र्यईऊं स्वाधिष्ठानचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा विष्णुवस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। लिङ्गे न्यास॥

ईं रक्षछ्रीं रक्षछ्रीं क्लां क्लां रछ्रीं रछ्रीं नौं नौं क्षस्हम्लव्र्यईऊं मणिपूरकचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा रुद्रवस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। नाभौ न्यासः॥

फ्रों रफ्रों फ्रौं रफ्रौं फ्रीं फ्रूं ब्लौं स्हौं क्षौं क्षरहम्लव्र्यईऊं अनाहतचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा कुमारवस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। जठरे न्यासः॥

हूं हैं हौं रश्रीं रश्रूं रश्रें रश्रों रफ्रीं रब्रीं क्षस्हम्लव्य्रईऊं क्षहम्लव्य्रईऊं विशुद्धचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा ईश्वरवस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। हृदये न्यासः॥

रथीं रघ्रीं खफ्रें जरक्रीं (एकावली) क्षरह्रीं क्षरहूं रज्रीं रझ्रीं क्षरहम्लव्य्रईऊं रक्षस्हम्लव्य्रईऊं आज्ञाचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा कुलवस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। घण्टिकायां न्यासः॥

क्ष्रीं क्ष्रूं क्ष्रैं हसखफ्रीं हसखफ्रूं रह्रीं रहूं रहैं डां लक्षमह्र जरक्रंव्य्रऊं पराचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा शक्तिवस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। कण्ठे न्यासः॥

रस्त्रैं रस्त्रौं रक्ष्रीं रक्ष्रीं रस्त्रीं रस्त्रूं हसखफ्रें ह्सखफ्रैं ह्स्खफ्रौं ब्रकम्लबलक्लऊ पश्यन्तीचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा शिवावस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। वदने न्यास॥।

छ्ररक्षहैं छ्ररक्षहौं रहछ्ररक्षह्रीं रहछ्ररक्षहूं खफ्रीं खफ्रूं खफ्रैं खफ्रां ह्स्फ्रौं हस्लक्षकमहब्रूं मध्यमाचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा सिद्धिवस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। कूर्चे न्यासः॥

ह्स्फ्रीं ह्स्फ्रूं ह्स्फ्रैं रहछ्ररक्षहैं रहछ्ररक्षहौं र्क्क्ष्रीं र्क्क्ष्रूं र्क्क्ष्रैं र्क्क्ष्रौं स्हजहलक्षम्लवनऊं वैखरीचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा ज्ञानवस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। इत्यलिके न्यासः॥

खफ्रक्ष्रीं खफ्रक्ष्रूं खफ्रक्ष्रैं खफ्रक्ष्रौं खफ्छ्रीं खफ्छ्रूं खफ्छ्रैं क्प्रीं खफ्रीं सग्लक्षमहरहूं ब्रह्मरन्ध्रचक्रे योगमार्गेण कैवल्यदायिनी गुह्यातिगुह्यतरशक्तिरूपा मोक्षवस्तुप्रत्ययाम्बा प्रसीदताम् ओं स्वाहा। ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः॥

॥ इति कैवल्य न्यासः॥

॥ ९. अमृतन्यासः॥

इह पञ्चविंशतिस्थानेषु न्यासनिर्देशः। तत्रादौ चत्वारिंशन्मिताः बीजकूटाः सर्वस्थानन्यासेषु निवेश्याः। अत एवार्दिन्यासमन्त्रे एवं केवलं तन्निर्देशोऽत्र विधीयते। एवमन्ते 'इदममृतीकृत्य परमात्मनि हुत्वा स्वयं जुषस्य स्वाहा' इत्यपि सर्वस्मिन् मन्त्रे योज्यम्। परिवर्तनीयमन्त्राः उभयोरुक्तयोर्मध्ये निवेश्यास्ते चाधो निर्दिश्यन्त स्थानानि चात्रोल्लिखितानि यथाक्रमं न्यसनीयानि।

(१) ओं ऐं ह्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं आं क्रों क्षूं स्फ्रों हौं ब्लौं स्हक्लह्रीं फ्रों ग्लूं स्हो: ह्स्खफ्रें फ्रें क्लूं क्षमब्लहकयह्रीं रजहलक्षमऊं हक्लहवडकखऐं कसवहलक्षमऔं ब्रकम्लब्लक्लऊं क्रैं सौः ज्रं रम्लब्रीं स्फ्लह्क्षूं प्रीं ज्रौं ह्म्रीं ठ्रीं ध्रीं ल्क्ष्मह्ज्रक्रंव्य्रऊं थ्रीं द्रैं भ्रूं क्रौं ज्ञाननामात्मने शिवाय इदममृतीकृत्य परमात्मनि हुत्वा स्वयं जुषस्व स्वाहा। शिरसि न्यास॥

आगे के सभी न्यास इसी तरह से करें। शिरसि न्यास में जहां ज्ञानात्मने नमः शिवाय आया है उस स्थान पर व अन्त में न्यास का नाम पृथक होगा।

(२) इच्छानामात्मने ईश्वराय........स्वाहा। ललाटे न्यास॥

(३) कृतिनामात्मने शुद्धये........आस्ये न्यासः॥

(४) धर्मनामात्मने विद्यायै........स्वाहा। स्वाहा कण्ठे न्यासः।

(५) वैराग्यनामात्मने लिङ्गाय........स्वाहा। दक्षस्कन्धे न्यासः।

(६) ऐश्वर्यनामात्मने जीवाय........ स्वाहा। वामस्कन्धेन्यासः।

****

(७) शक्तिनामात्मने आत्मने ....स्वाहा। दक्षकफोणौन्यासः।

(८) कैवल्यनामात्मने सूक्ष्माय........स्वाहा। वामकफोणौन्यासः।

(९) उत्साहनामात्मने अविद्यायै........स्वाहा। दक्षमणिबन्धेन्यासः।

(१०) धैर्यनामात्मने नियत्यै........स्वाहा। वाममणिबन्धेन्यासः।

(११) गुह्यनामात्मने कालाय........स्वाहा। दक्षकराङ्गुलिमूलेन्यासः।

(१२) विवेकनामात्मने कलायै........स्वाहा। वामकराङ्गुलिमूलेन्यासः।

(१३) विकारनामात्मने रागाय.......स्वाहा। दक्षकराग्रेन्यासः।

(१४) सुखनामात्मने कुलाय........स्वाहा। वामकराग्रे न्यासः।

(१५) आनन्दनामात्मने अमृताय.......स्वाहा। दक्षवंक्षणे न्यासः।

(१६) संज्ञानामात्मने बुद्धये........स्वाहा। वामवंक्षणेन्यासः।

(१७) पुण्यनामात्मने मायायै........स्वाहा। दक्षजानौन्यासः।

(१८) क्रियानामात्मने मनसे........स्वाहा। वामजानौन्यासः।

(१९) विकृतिनामात्मने कामाय........स्वाहा। दक्षगुल्फेन्यासः।

(२०) प्रकृतिनामात्मने रजसे........स्वाहा। वामगुल्फेन्यासः।

(२१) अहङ्कारनामात्मने सत्त्वाय........स्वाहा। दक्षपादेन्यासः।

(२२) महन्नामात्मने तमसे........स्वाहा। वामपादेन्यासः।

(२३) तन्मात्रनामात्मने युक्तये........स्वाहा। दक्षचरणाग्रेन्यासः।

(२४) लिङ्गनामात्मने सिद्धये........स्वाहा। वामचरणाग्रेन्यासः।

(२५) परमात्मने सामरस्याय........स्वाहा। व्यापके न्यासः।

॥ इत्यमृतन्यासः॥

अमृतन्यासानुकल्पः – ओं रजझ्रक्षैं रजझ्रक्षौं रछ्रीं फ्रें करवीर राजधान्यां महानुभावायै नारसिंही देवतायै धातुवाद सिद्धये हूं फट् नमः स्वाहा। इति कराग्रयो र्न्यासः।

इहामृतन्यासानुकल्पे चत्वारिंशन्मन्त्रस्थाने नवैवाधो निर्दिष्टाः मन्त्राः प्रत्येकस्मिन् मन्त्रे भविष्यन्ति अन्यत्सर्वं यथापूर्वं स्यात्।

ते चादिस्थाः मन्त्राः – 'ओं ऐं ह्रीं छ्रीं क्ष्रौं खफ्रें फ्रें हूं हौं' इति

॥ १०. जयविजय न्यासः॥

ओं ह्रीं क्लीं हौं श्रीं हूं क्रौं क्रों क्षौं शिवलोके सदाशिवाराधितायै एकवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां स्हज्हल्क्षम्लवनऊं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। ललाटे न्यासः।

ऐं स्त्रीं ईं फ्रें फ्रों ग्लूं ग्लैं क्रीं छ्रीं वरुणलोके वरुणाराधितायै त्रिवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां ब्लक्षमम कह्झ्व्रऊ

तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। मुखवृत्ते न्यासः।

आं फ्रौं स्फ्रों ग्लीं ग्लौं क्ष्लौं क्ष्लौं क्लौं ह्रीः अदितिलोके अदित्याराधितायै पञ्चवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां म्लकहक्षरस्त्रीं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। कूर्चे न्यासः।

क्रौं हः नैं नौं क्रीं क्रूं जूं सः सौः शचीलोके शच्याराधितायै षट्वक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां हलक्षकमहमव्य्रऊं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। चिबुके न्यासः।

स्हौः क्ष्रौं ब्लैं ब्लौं ज्रैं ज्रौं क्रैं स्हौं खफ्रीं सप्तर्षिलोके सप्तर्ष्याराधितायै सप्तवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां खहलक्षक्रक्षलहक्ष तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। ग्रीवायां न्यासः।

रक्षछ्रीं क्ष्रूं क्लं औं ज्रूं ठ्रीं ध्रीं थ्रीं वसुलोके वस्वाराधितायै अष्टवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां नद्क्षट्क्षव्य्राऊं छ्लहक्ष्ल्क्ष फ्रग्लऊं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। कण्ठे न्यासः।

रक्ष्श्रीं रस्फ्रौं प्रीं फ्रीं ट्रीं त्रीं द्रीं ण्रीं श्रीं यमलोके मृत्युकालाराधितायै नववक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां हलक्षकमब्रूं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। हृदये न्यासः।

वूः झमरयऊं स्त्रैं स्त्रौं फीं फां क्ष्लौं व्रूं म्रां भूलोके मुनिभूताराधितायै दशवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां ट्क्षसन्रम्लें तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। जठरे न्यासः।

छ्रैं छ्रौं रक्रां रक्रीं रक्रूं ड्रीं ढ्रीं फ्रां थ्रूं रुद्रलोके रुद्राराधितायै एकादशवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां सहठ्लक्षहभक्रीं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। नाभौ न्यासः।

फ्रूं फ्रैं प्रूं प्रैं प्रौं थ्रैं थ्रौं क्लैं ख्रैं सूर्यलोके द्वादशादित्याराधितायै द्वादशवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां लहकक्ष्मस्हव्य्रऐं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। गुदे न्यासः।

क्ष्रौं क्ष्रूः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं क्लां क्लां विश्वेदेवलोकेविश्वेदेवाराधितायै त्रयोदशवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां रजक्षमब्लहूं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। दक्षकटौ न्यासः।

रश्रीं रफ्रें ख्फ्छ्रीं ख्फ्छ्रूं हस्ख्फ्रें ख्फ्छ्रें रह्रां रह्रीं रह्रूं इन्द्रलोके इन्द्राराधितायै चतुर्दशवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां रक्षलहमस्हकब्रूं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। वामकटौ न्यासः।

रह्रैंरह्रौं रक्ष्रां रक्ष्रीं रक्ष्रूं रक्ष्रैं रक्ष्रौं क्ष्रां क्ष्रीं अग्निलोके अग्न्याराधितायै पञ्चदशवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां रक्षम्लहकसछव्य्रऊं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। वंक्षणे न्यासः।

क्ष्रूं ह्स्ख्फ्रां ह्स्ख्फ्रीं ह्स्ख्फ्रूं ह्स्ख्फ्रैं ह्स्ख्फ्रौं ह्स्ख्फ्रिं ह्स्ख्फ्रुं ह्स्ख्फ्रों सिद्धलोके सिद्धाराधितायै षोडशवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां खल्हब्नग्क्षरछ्रीं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। दक्षोरौ न्यासः।

ह्स्ख्फ्रौं ह्स्ख्फ्रः रझ्रीं स्हेः ल्यूं फ्लीं रप्रां रप्रूं रप्रें साध्यलोके साध्याराधितायै सप्तदश वक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां खक्षमब्लई तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। वामारौ न्यासः।

रप्रैं रप्रों रप्रौं खफ्रां खफ्रीं खफ्रूं खफ्रैं खफ्रों खफ्रौं यक्षलोके कुबेराराधितायै अष्टादशवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां लक्षहमकस्हव्य्रऊं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। दक्षजंघे न्यासः।

ख्फ्छ्रौं रक्लीं रक्लूं रक्लैं रछ्रीं रछ्रूं रछ्रैं रछ्रौं रस्त्रैं निर्ऋतिलोके राक्षसाराधितायै ऊनविंशतिवक्त्रायै

****

गुह्यकाली प्रीयतां कमहलचहलक्षज्रीं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। वामजंघे न्यासः।

रस्त्रौं क्ष्रस्त्रीं क्ष्रस्त्रूं क्ष्रस्त्रैं रजूं ज्रैं ह्स्ख्फ्रौं रक्लैं रक्लौं किन्नरलोके किन्नाराराधितायै विंशतिवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां ट्हल्क्षद्रड्लरफ्रीं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। दक्षपार्ष्णौं न्यासः।

ब्रचां रझ्रौं क्ष्रस्त्रौं परिघः रफ्रां रफ्रीं रफ्रूं रफ्रैं रफ्रौं अक्षरलोके अक्षरनिवहाराधितायै एकविंशतिवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां खफ्लक्षह्मह्कब्रूं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। वामपार्ष्णौं न्यासः।

ह्स्फ्रीं ह्स्फ्रूं ह्स्फ्रैं ह्स्फ्रौं रब्रीं रब्रीं रब्रूं रब्रों रभ्रीं भासुरलोके भासुराराधितायै द्वाविंशतिवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां ग्लक्षकमह्ल्व्य्रऊं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। दक्षप्रपदे न्यासः।

रभ्रूं खफ्रभ्रूं रभ्रौं क्ष्लौः रम्रीं रम्रूं रम्रैं रम्रौं स्हें गन्धर्वलोके गन्धर्वाराधितायै चतुर्विंशतिवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां च्लक्ष्मस्हव्य्रख्रीं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। वामप्रपदे न्यासः।

ल्यूं प्लूं प्लीं फ्लीं छ्ररक्षह्रां क्ष्रह्रीं क्ष्रह्रूं छ्ररक्षह्रैं रछ्रां विद्याधरलोके विद्याधराराधितायै त्रिंशत्वक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां भक्ष्लरम ह्स्ख्फ्रूं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। दक्षांसे न्यासः।

ह्फ्रीं ह्फ्रूं ह्फ्रैं ह्फ्रौं रह्छ्ररक्षह्रां रह्छ्ररक्षह्रीं रह्छ्ररक्षह्रूं रह्छ्ररक्षह्रैं रह्छ्ररक्षह्रौं प्रजापतिलोके प्रजापत्याराधितायै षट्त्रिंशत्वक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां प्क्षलव्रझ्रफ्रूं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। वामांसे न्यासः।

हलक्षीं हल्क्षूं हल्क्षैं हल्क्षौं रक्क्षीं रक्क्ष्रूं रक्क्षैं रक्क्षौं रम्रैं तुषितलोके तुषिताराधितायै षष्टिवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां रक्षक्रीं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। पार्श्वे न्यासः।

फहलक्ष्रूं फहलक्षैं फहलक्षौं क्षरस्त्रौं रक्षफ्रछ्रां रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्ररूं रक्षफ्रछ्रैं रक्षफ्रछ्रौं वायुलोके वाय्वाराधितायै अशीतिवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां क्षम्लकस्हरयब्रूं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। पृष्ठे न्यासः।

(रजझ्रक्षीं रजझ्रक्ष्ररूं रजझ्रक्षैं रजझ्रक्षौं) खफ्रक्षां खफ्रक्षीं खफ्रक्ष्ररूं खफ्रक्षैं खफ्रक्षौं फ्रखभ्रीं फ्रखभ्रूं खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं दानवलोके दानवाराधितायै शतवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां ह्मक्षब्रलखफ्रऊं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः।

खफ्रछ्रीं खफ्रछ्ररूं फ्रखभ्रैं खफ्रह्रौं फ्रखभ्रौं ह्स्खफ्रक्षीं ह्स्खफ्रक्ष्ररूं खफ्रीं क्षरस्त्रखफ्रूं प्रलयकाले महाभैरवाराधितायै सहस्त्रवक्त्रायै गुह्यकाली प्रीयतां क्षमक्लह्रहसव्य्रऊं तस्यै जयानुविजयप्रदायै जयायै विजयायै नमः स्वाहा। सार्वशरीर व्यापके न्यासः।

॥ ११. भावना न्यासः॥

ओं ह्रीं श्रींक्लीं हौं क्षौं हूं क्षूं स्हजूह्ल्क्षभ्लवनऊं धूमकाली रलहक्षम्लखफछ्रूं दक्षपादाङ्गुल्यग्रं भावयामि तेनाहं नागलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्लफ्रीं फट् नमः स्वाहा।

क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रः हक्लह्वडकखऐं जयकाली क्ष्लसहमव्रयूं वामपादाङ्गुल्यग्रं भावयामि तेनाहं भूलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्लफ्रूं फट् नमः स्वाहा।

ऐं रक्रां रक्रीं रक्रूं रक्रें रक्रैं रक्रों रक्रौं क्षमब्लहकयह्रीं उग्रकाली समहलक्षरक्षमस्त्रूं दक्षपादाङ्गुलीमूलं भावयामि

तेनाहं भुवर्लोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्लफ्रैं फट् नमः स्वाहा।

आं फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रें फ्रैं फ्रों फ्रौं कसवहलक्षमऔं ज्वालाकाली क्षग्लफ्रस्हरफ्रीं वामपादाङ्गुलीमूलं भावयामि तेनाहं स्वर्लोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्लफ्रों फट् नमः स्वाहा।

ईं रच्रां रच्रीं रच्रूं रच्रें रच्रैं रच्रों रच्रौं लक्षमह्लजरक्रव्य्रऊं धनकाली क्लह्व क्षलहक्षमव्य्रईं दक्षगुल्फं भावयामि तेनाहं सूर्यलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्लफ्रीं फट् नमः स्वाहा।

ऊं ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लैं ग्लौं स्फ्रों स्फ्रौं रजहलक्षमऊं घोरनादकाली हक्षम्लब्रसहरक्लीं वामगुल्फं भावयामि तेनाहं चन्द्रलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्लफ्रूं फट् नमः स्वाहा।

ओं रट्रां रट्रीं रट्रूं रट्रें रट्रैं रट्रों रट्रौं सग्लक्षमहरह्लूं कल्पान्तकाली ह्लसग्लक्षव्य्रऊं दक्षजङ्घां भावयामि तेनाहं भूतलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्लफ्रौं फट् नमः स्वाहा।

नौं ब्लूं क्लूं क्लैं क्लौं ब्लां श्रह्रैं ब्लौं ब्रकम्लव्लक्लऊं वेतालकाली सहब्रह्लखफ्रयीं वामजङ्घां भावयामि तेनाहं प्रेतलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्लफ्रैं फट् नमः स्वाहा।

रत्रां रत्रीं रत्रूं रत्रें रत्रैं रत्रों रत्रौं क्लां क्ललह्लझकह्लनसक्लईं कङ्कालकाली क्ष्मक्लरक्षलहक्षव्य्रऊं दक्षजानु भावयामि तेनाहं पैशाचलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्लखफ्रां फट् नमः स्वाहा।

ह्रीं स्त्रीं जूं सः स्हौः सौः स्हें स्हौं ब्लक्षमकह्लव्य्रईं नग्नकाली छ्रम्लक्षफ्लह्लहम्रीं वामजानु भावयामि तेनाहं पितृलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्लखफ्रीं फट् नमः स्वाहा।

श्रीं रप्रां रप्रीं रप्रूं रप्रें रप्रैं रप्रों रप्रौं क्लक्षसहमव्य्रऊं घोरघोरतराकाली ज्रलह्व फ्रव्य्रऊं दक्षोरुं भावयामि तेनाहम अप्सरोलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्लखफ्रूं फट् नमः स्वाहा।

ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रैं ज्रौं क्ष्रूं क्ष्रूः क्ष्रौः ह्लसहकमक्षब्रऐं दुर्जयकाली हम्लक्षब्रसह्रीं वामोरुं भावयामि तेनाहं गन्धर्वलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्लखफ्रैं फट् नमः स्वाहा।

रख्रां रख्रीं रख्रूं रख्रें रख्रैं रख्रों रख्रौं ज्रं सहठ्लक्षह्लमक्रीं मन्थानकाली म्लक्षफ्लछ्रीं दक्षवंक्षणं भावयामि तेनाहं कैन्नरलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि स्त्रखफ्रीं फट् नमः स्वाहा।

क्षां क्षीं क्षैं प्रां प्रीं प्रूं प्रैं प्रौं स्हलकह्लक्ष्रूं संहारकाली थहरखफ्रह्लमब्लूं वामवंक्षणं भावयामि तेनाहं वैद्याधरलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि स्त्रखफ्रूं फट् नमः स्वाहा।

रछ्रां रछ्रीं रछ्रूं रछ्रें रछ्रैं रछ्रों रछ्रौं म्रीं हस्लक्षकमह्लब्रूं आज्ञाकाली रहहक्लव्य्रऊं दक्षकटिं भावयामि तेनाहं यक्षलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि स्त्रखफ्रैं फट् नमः स्वाहा।

ट्रीं ठ्रीं ड्रीं ढ्रीं ण्रीं भ्रूं ध्रीं म्रैं महव्य्रएं रौद्रकाली सफक्ष्लमहप्रक्लीं वामकटिं भावयामि तेनाहं वासवलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि स्त्रखफ्रौं फट् नमः स्वाहा।

रग्रां रग्रीं रग्रूं रग्रें रग्रैं रग्रों रग्रौं फ्हल्क्षां लक्षह्लमकसहव्य्रऊं तिग्मकाली व्रहठ्रम्लह्लूं दक्षककुन्दरं भावयामि तेनाहं वैश्वलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि श्रखफ्रूं फट् नमः स्वाहा।

म्लैं म्लूं म्लौं थ्रां थ्रीं थ्रूं थ्रैं थ्रौं सक्षलहमयव्रूं कृतान्तकाली रक्षलहव्य्रईं वामककुन्दरं भावयामि तेनाहं सिद्धलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि श्रखफ्रैं फट् नमः स्वाहा।

****

हलां हलीं हलूं हलैं हलौं ब्जीं ब्जूं ब्जैं सकहलमृक्षखब्रूं महारात्रिकाली चमट्क्षव्य्रछ्रीं दक्षिणस्फिचं भावयामि तेनाहं साध्यलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि श्रखफ्रौं फट् नमः स्वाहा।

रज्रां रज्रीं रज्रूं रज्रें रज्रैं रज्रों रज्रौं फ्यूं सहक्ष्लमहज्रूं सङ्ग्रामकाली कहफ्लमहव्य्रऊं वामस्फिचं भावयामि तेनाहं बुधलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्लखफ्रीं फट् नमः स्वाहा।

ज्लां ज्लीं ज्लूं ज्लैं ज्लौं ज्लूः ब्रूं फ्लूं रक्षखरऊं भीमकाली सनहलक्ष्मब्लूं गुदं भावयामि तेनाहं शुक्रलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्लखफ्रूं फट् नमः स्वाहा।

क्ष्लौं ब्रैं म्रां रझ्रां रझ्रीं रझ्रूं रझ्रें रझ्रैं रक्षक्रूं शवकाली सरम्लक्षहस्खफ्रीं लिङ्गं भावयामि तेनाहं भौमलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्लखफ्रैं फट् नमः स्वाहा।

रझ्रों रझ्रौं श्लां श्लीं श्लूं श्लैं श्लौं छ्रह्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं चण्डकाली ब्लक्षफहमछ्रव्रीं वस्तिंभावयामि तेनाहं वृहस्पतिलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्लखफ्रौं फट् नमः स्वाहा।

स्काः फ्लीं रश्रां रश्रीं रश्रूं रश्रें रश्रैं रश्रौं क्षस्हम्लव्य्रऊं रुधिरकाली छ्रम्लक्षव्रकह्रीं नाभिं भावयामि तेनाहं शनिलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि फ्लक्रूं फट् नमः स्वाहा।

रश्रौं ह्लीं स्त्रूं स्त्रें स्त्रैं स्त्रों स्त्रौं स्त्रं क्षहम्लव्य्रऊं घोरकाली क्लक्ष्मग्लव्य्रहूं जठरं भावयामि तेनाहं तपोलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि फ्लक्रैं फट् नमः स्वाहा।

रह्रां रह्रीं रह्रूं रह्रें रह्रैं रह्रों रह्रौं स्त्रः भक्ष्लरमहस्खफ्रूं भयङ्करकाली मथहलक्षप्रहूं हृदयं भावयामि तेनाहं सप्तर्षिलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि फ्लक्रों फट् नमः स्वाहा।

हीं हभ्रीं हैं क्लौं रक्षं यं प्लीं ठः क्लक्ष्मसहखव्रीं सन्त्रासकाली हम्लक्ष्मप्लव्रूं दक्षपार्श्वं भावयामि तेनाहं वैराजलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि फ्रक्लों फट् नमः स्वाहा।

रस्त्रां रस्त्रीं रस्त्रूं रस्त्रें रस्त्रैं रस्त्रों क्ष्मलरसहव्य्रहूं प्रेतकाली मक्लक्षकसखफ्रूं वामपार्श्वं भावयामि तेनाहं ध्रुवलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि स्वातिः फट् नमः स्वाहा।

च्रां च्रीं च्रूं च्रैं च्रौं भ्रां भ्रैं भ्रौं लगमक्षखफ्रसहूं करालकाली तमहलक्षक्लफ्रग्लूं दक्षचूचुकं भावयामि तेनाहं चन्द्रलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि [यमलम्] फट् नमः स्वाहा।

क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं भ्लां भ्लीं भ्लूं फग्लसहमक्षब्लूं विकरालकाली खहक्षमहब्रह्रीं वामचूचुकं भावयामि तेनाहं अग्निलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि [यमलम्] फट् नमः स्वाहा।

रक्ष्रां रक्ष्रीं रक्ष्रूं रक्ष्रैं रक्ष्रौं रम्रां रम्रीं रम्रैं सखक्लक्ष्मध्रयब्लीं प्रलयकाली समतरक्षखफछ्रक्लीं दक्षस्कन्धं भावयामि तेनाहं यमलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ज्रैं फट् नमः स्वाहा।

लक्ष्रां लक्ष्रीं लक्ष्रूं लक्ष्रें लक्ष्रैं लक्ष्रों लक्ष्रौं ज्रक्रां म्ररयक्षक्षसहफ्रीं विभूतिकाली चफ्रक्लहमक्ष्रूं वामस्कन्धं भावयामि तेनाहं निर्ऋति लोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्षफ्रह्रौं फट् नमः स्वाहा।

हग्लां हग्लीं हग्लूं हग्लैं हग्लौं ज्रक्रीं ज्रक्रूं [अर्गलं] स्हक्षक्षकमफ्रब्रूं भोगकाली दमनडतक्षसहव्य्रईं दक्षजत्रु भावयामि तेनाहं वरुणलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्रख्रीं फट् नमः स्वाहा।

हल्क्षां हल्क्षीं हल्क्षूं हल्क्षें हल्क्षैं हल्क्षों हल्क्षौं ज्रक्रें रसमस्त्रहव्य्रऊं कालकाली महलक्षलखफ्रव्य्रह्रीं

वामजत्रु भावयामि तेनाहं वायुलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्रख्रूं फट् नमः स्वाहा।

र्क्लां र्क्लीं र्क्लूं र्क्लें र्क्लैं र्क्लौं ज्रक्रों ज्रम्लक्षहछ्रीं वज्रकाली नरक्षलहक्षमव्रईं दक्षकक्षं भावयामि तेनाहं कौबेरलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्रख्रैं फट् नमः स्वाहा।

फ्ह्ल्क्षां फ्ह्ल्क्षीं फ्ह्ल्क्षें फ्ह्ल्क्षें फ्ह्ल्क्षैं फ्ह्ल्क्षों फहलक्षौं ज्रक्रौं ब्लक्क्षहमस्त्रछ्रूं विकटकाली ग्लक्षकमहस्हव्य्रऊं वामकक्षं भावयामि तेनाहं ईशानलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि क्रख्रौं फट् नमः स्वाहा।

खफ्रां खफ्रीं खफ्रूं खफ्रें खफ्रैं खफ्रों झ्रहब्रक्ष्मसह्रीं विद्याकाली रलहक्षड्म्लव्रखफ्रीं दक्षहनु भावयामि तेनाहं डाकिनीलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि खफ्रभ्रीं फट् नमः स्वाहा।

छ्रक्ष्ह्रां छ्ररक्षह्रीं छ्ररक्षह्रूं छ्ररक्षह्रैं सफहलक्षें सफहलक्षीं सफहलक्षूं रहक्षम्लव्य्रअखफछ्रस्त्रह्रीं शक्तिकाली मनटतक्षफ्लव्य्रऊं वामहनु भावयामि तेनाहं योगिनीलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि खफ्रम्रूं फट् नमः स्वाहा।

सफहलक्षैं ह्स्फ्रां ह्स्फ्रीं ह्स्फ्रूं ह्स्फ्रें ह्स्फ्रैं ह्स्फ्रों ह्स्फ्रौं शम्लहव्य्रखफ्रें कामकलाकाली सनटमतक्षब्लभ्रीं दक्षसृक्कं भावयामि तेनाहं भैरवीलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि खफ्रभ्रैं फट् नमः स्वाहा।

क्षखफ्रें रहछ्ररक्षह्रां रहछ्ररक्षह्रीं रहछ्ररक्षह्रूं रहछ्ररक्षह्रें रहछ्ररक्षह्रैं क्षखफ्रैं ढ्रीं हसखफ्रम्लक्षव्य्रऊं दक्षिणकाली जरझ्रहमक्षक्लव्य्रऊं वामसृक्कं भावयामि तेनाहं चामुण्डालोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि खफ्रभ्रौं फट् नमः स्वाहा।

स्फह्लक्षौ ह्सखफ्रां ह्सखफ्रीं ह्सखफ्रूं ह्सखफ्रें ह्सखफ्रैं ह्सखफ्रों ह्सखफ्रौं स्हक्लरक्षमजहखफ्रयूं मायाकाली चखफ्लक्षकस्हखफ्रईंऊं दक्षगण्डं भावयामि तेनाहं लक्ष्मीलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि छ्रह्रीं फट् नमः स्वाहा।

क्षब्लीं रकक्ष्रीं रकक्ष्रूं रकक्ष्रैं रकक्ष्रौं क्षब्लौं हसखफ्रं हसखफ्रः खफ्रछ्रएव्रहक्ष्मत्र्ररयीं भद्रकाली सहम्क्षलखभ्रक्लीं वामगण्डं भावयामि तेनाहं लोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि छ्रह्रूं फट् नमः स्वाहा।

रक्षफ्रछ्रां रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं रक्षफ्रछ्रैं रक्षफ्रछ्रौं क्रह्रां क्रह्रीं क्रह्रूं च्लक्ष्मस्हव्य्रख्रीं महाकाली खफ्रमसलहक्षग्लऊं दक्षकर्णं भावयामि तेनाहं वैशाखलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि छ्रह्रैं फट् नमः स्वाहा।

रजझ्रक्ष्रीं रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्ष्रैं रजझ्रक्ष्रौं क्रह्रीं क्रह्रैं खलफ्रूं स्हछ्रक्ष्लमरव्य्रईं श्मशानकाली व्य्रक्लक्ष्मछ्रीं वामकर्णं भावयामि तेनाहं ब्रह्मलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि छ्रह्रौं फट् नमः स्वाहा।

क्रह्रैं क्रह्रों क्रह्रौं क्रह्रैं क्रह्रौं ह्क्षफ्लीं खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं रक्षफ्रसमहह्व्य्रऊं कुलकाली खरसफ्रम्लक्षछ्रयूं दक्षनासापुटं भावयामि तेनाहं प्रमथलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्छ्रीं फट् नमः स्वाहा।

खस्त्रूं खस्त्रैं खस्त्रौं खफ्रक्ष्रां खफ्रक्ष्रीं खफ्रक्ष्रूं खफ्रह्रं खफ्रक्ष्रैं व्य्रक्षस्हम्लस्त्रीं नादकाली क्ललरसहमश्रीं वामनासापुटं भावयामि तेनाहं मातृलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्छ्रूं फट् नमः स्वाहा।

खफ्रक्ष्रौं छ्रखफ्रां खफ्रछ्रां [विवासः] खफ्रह्रीं [सामुद्रः] म्रैं खफ्रह्रौं खफ्रक्लक्ष्मसभ्रीं मुण्डकाली पतक्षयहक्लखफ्रीं दक्षलोचनं भावयामि तेनाहं उमालोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्छ्रैं फट् नमः

स्वाहा।

खफ्रछ्रां खफ्रछ्रीं खफ्रछ्रूं खफ्रछ्रैं खफ्रछ्रौं ग्लब्लीं ग्लब्लूं ग्लब्लैं फलंयक्षकयब्लूं सिद्धिकाली पतक्षयह्वक्लखफ्रीं वामलोचनं भावयामि तेनाहं शिवलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्वछ्रौं फट् नमः स्वाहा।

खफ्रक्लां खफ्रक्लीं खफ्रक्लूं खफ्रक्लैं खफ्रक्लौं क्ष्रस्फ्रों क्ष्म्लौं क्षस्फ्रौं (सेतुकूटम्) उदारकाली समहक्षव्म्रऊं दक्षकपोल भावयामि तेनाहं महर्लोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्वक्लीं फट् नमः स्वाहा।

क्षख्रीं क्षख्रूं क्षख्रैं क्षख्रौं व्रब्रैं (वाहः) सहलक्रीं सहलक्रूं (गह्वर कूटम्) उन्मत्तकाली जरक्षलहक्षम्लव्म्रईं वामकपोलं भावयामि तेनाहं जनोलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्वक्लूं फट् नमः स्वाहा।

सहलक्रैं सहलक्रौं क्ष्ज्लीं क्ष्ज्लूं क्ष्ज्लैं फ्रक्लां रस्त्रें रस्त्रैं ट्लव्म्रसम्क्षहछ्रीं सन्तापकाली जरक्षलहक्षम्लव्म्रऊं दक्षभ्रुवं भावयामि तेनाहं तपोलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्वक्लैं फट् नमः स्वाहा।

क्रह्रूं रख्रघ्रूं फ्रथां फ्रथीं फ्रथूं फ्रथैं ब्लछ्रैं ब्लछ्रौं सक्लह्वहसखफ्रक्ष्रीं कापालकाली जररलहक्षम्लव्म्रईं वामभ्रुवं भावयामि तेनाहं सत्यलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ह्वक्लौं फट् नमः स्वाहा।

फ्रस्त्रीं फ्रस्त्रूं फ्रस्त्रैं फ्रस्त्रौं क्षब्रीं क्षब्रूं चफलकैं चफलकौं सफ्रकह्वरक्षमश्रीं आनन्दकाली लकछ्रजरक्रीं दक्षशङ्खं भावयामि तेनाहं रुद्रलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ब्लछ्रूं फट् नमः स्वाहा।

फ्रम्रग्लीं फ्रम्रग्लूं फ्रम्रग्लैं फ्रम्रग्लौं (मोदकं) क्षक्ष्लूं क्ष्लक्ष्रैं क्ष्लक्ष्रौं तलम्क्षफलहक्षव्रीं भैरवकाली ब्रक्षम्लसह्वछ्रूं वामखङ्खं भावयामि तेनाहं गोलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ब्लछ्रैं फट् नमः स्वाहा।

फ्रखभ्रीं फ्रखभ्रूं फ्रखभ्रैं फ्रखभ्रौं हसखफ्रक्ष्रीं हसखफ्रक्ष्रूं खफ्रीं क्षरस्त्रखफ्रूं गलहंक्षम्लजक्रूं निर्वाणकाली यसम्लक्षसकह्वव्म्रईं ब्रह्मरन्ध्रं भावयामि तेनाहं सदाशिवलोके ओं विरजस्तमाभामि ब्रह्मभूयाय यामि ब्लछ्रौं फट् नमः स्वाहा।

॥ इति भावना न्यासः ॥

॥ १२. समयन्यासः ॥

ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः - ओं ऐं आं ईं ऊं ऋग्वेदमूर्त्या होतृसमयपालिनी ज्वालिन्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

मुखे न्यासः - क्रीं हूं फ्रें हौं क्रौं यजुर्वेदमूर्त्या आध्वर्यवसमयपालिनी विमलाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

दक्षकर्णे न्यासः - ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं छ्रीं सामवेदमूर्त्या औद्गात्रसमयपालिनी प्रचण्डाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वामकर्णे न्यासः - क्ष्रौं सौः स्हौः ब्लीं ब्लूं अथर्ववेदमूर्त्या कृत्याशान्तिसमयपालिनी विकटाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

दक्षकपोले न्यासः - फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं सत्ययुगमूर्त्या तपस्समयपालिनी पिङ्गलाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वामकपोले न्यासः - ख्फ्रीं ख्फ्रूं ख्फ्रैं ख्फ्रौं त्रेतामूर्त्या ज्ञानसमयपालिनी मोक्षदाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

दक्षनयने न्यासः - ह्स्ख्फ्रीं ह्स्ख्फ्रूं ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रैं ह्स्ख्फ्रौं द्वापरमूर्त्या यज्ञसमयपालिनी स्वाहाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वामनयने न्यासः - ह्स्फ्रां ह्स्फ्रीं ह्स्फ्रूं ह्स्फ्रैं ह्स्फ्रौं कलियुगमूर्त्या दानसमयपालिनी श्रद्धाम्बा प्रसीदतां

स्वाहा।

दक्षभ्रुवि न्यासः - ऱ्हां ऱ्हीं ऱ्हूं ऱ्हौं गायत्रीमूर्त्या ब्राह्मण्यसमयपालिनी मोदिन्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वामभ्रुवि न्यासः - छ्रक्षह्रां छ्रक्षह्रीं छ्रक्षह्रूं छ्रक्षह्रैं छ्रक्षह्रौं त्रय्यध्ययनमूर्त्या ब्रह्मचर्यसमय पालिनी विजयाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

दक्षनासापुटे न्यासः - रझ्रां रझ्रीं रझ्रूं रझ्रैं रझ्रौं षट्कर्ममूर्त्या गार्हस्थ्यसमयपालिनी कापालिन्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वामनासापुटेन्यासः - रक्ष्रां रक्ष्रीं रक्ष्रूं रक्ष्रैं रक्ष्रौं वैखानसमूर्त्या वानप्रस्थसमयपालिनी चण्डिकाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

चिबुके न्यासः - रफ्रां रफ्रीं रफ्रूं रफ्रैं रफ्रौं वैराग्यमूर्त्या सन्याससमयपालिनी सुभगाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

दक्षहनौ न्यासः - खफ्रछ्रां खफ्रछ्रीं खफ्रछ्रूं खफ्रछ्रैं खफ्रछ्रौं परमात्ममूर्त्या उपनिषत्समयपालिनी भ्रामर्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वामहनौ न्यासः - रहछ्ररक्षह्रां रहछ्ररक्षह्रीं रहछ्ररक्षह्रैं रहछ्ररक्षह्रौं कौलिकीमूर्त्या कुलसमयपालिनी मोहिन्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

गले न्यासः - क्षरस्त्रां क्षरस्त्रीं क्षरस्त्रूं क्षरस्त्रैं क्षरस्त्रौं चण्डेश्वरीमूर्त्या पूर्वाम्नायसमय पालिनी महाकाल्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

दक्षस्कन्धे न्यासः - रज्रां रज्रीं रज्रूं रज्रैं रज्रौं कुब्जिकामूर्त्या पश्चिमाम्नाय समयपालिनी कालरात्र्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वामस्कन्धे न्यासः - रप्रां रप्रीं रप्रूं रप्रैं रप्रौं कालीमूर्त्या उत्तराम्नाय समयपालिनी चण्डघण्टाम्बिका प्रसीदतां स्वाहा।

दक्षकरे न्यासः - रक्क्ष्रीं रक्क्ष्रूं रक्क्ष्रैं रक्क्ष्रौं प्रीं बाभ्रवीमूर्त्या दक्षिणाम्नायसमयपालिनी कुरुकुल्लाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वामकरे न्यासः - खफ्रक्ष्रां खफ्रक्ष्रीं खफ्रक्ष्रूं खफ्रक्ष्रैं खफ्रक्ष्रौं त्रिपुरसुन्दरीमूर्त्या ऊर्ध्वाम्नायसमयपालिनी भीषणाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वक्षसि न्यासः - रक्षफ्रछ्रां रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं रक्षफ्रछ्रैं रक्षफ्रछ्रौं राजराजेश्वरीमूर्त्या अधआम्नायसमयपालिनी तेजोवत्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

दक्षपार्श्वे न्यासः - खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रह्रैं खफ्रह्रौं खफ्रह्रूं सदाशिवमूर्त्या षडाम्नाय समयपालिनी भगमालिन्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वामपार्श्वे न्यासः - रश्रां रश्रीं रश्रें रश्रैं रश्रों रश्रौं हिरण्यगर्भमूर्त्या चतुर्वेद समयपालिनी चर्चिकाम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

दक्षचरणे न्यासः - खफ्रछ्रां खफ्रछ्रीं खफ्रछ्रूं खफ्रछ्रैं खफ्रछ्रौं मन्त्रमूर्त्या सिद्धिसमयपालिनी महोदर्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

वामचरणे न्यासः - खफ्रह्रां खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रह्रैं खफ्रह्रौं धर्ममूर्त्या स्वर्गसमयपालिनी संहारिण्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

लिङ्गे न्यासः - खफ्रक्लां खफ्रक्लीं खफ्रक्लूं खफ्रक्लैं खफ्रक्लौं पापमूर्त्या नरकसमयपालिनी दिगम्बराम्बा प्रसीदतां स्वाहा।

व्यापके न्यासः - ह्क्षफ्लीं छ्रखफ्रां छ्रखफ्रीं फ्रखभ्रीं फ्रखभ्रूं अदृष्टमूर्त्या कर्मसमयपालिनी महामार्यम्बा प्रसीदतां स्वाहा इति॥

॥ १३. सृष्टिन्यासः॥

दक्षपादे न्यासः - आं क्लीं श्रीं ह्रीं क्रीं क्रों क्रौं प्रजापतिरूपा प्रजासृष्टिकर्त्री अदितिदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

वामपादे न्यासः - ओं फ्रें फ्रौं हूं स्त्रीं फ्रों छ्रीं वेदरूपा यागसृष्टिकर्त्री वेदवतीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

दक्षजंघे न्यासः - रक्रीं रक्रूं रक्रैं रक्रौं रक्षश्रीं झमरयऊं रक्षछ्रीं प्रकृतिरूपा पुरुषसृष्टिकर्त्री चैतन्यभैरवीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

वामजंघे न्यासः - रत्रीं रत्रूं रत्रैं रत्रौं रस्फ्रों रस्फ्रौं ज्रौं मायारूपा भोगसृष्टिकर्त्री भोगवतीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

दक्षजानौ न्यासः - ऐं ह्रीं क्षौं स्फ्रौं ग्लूं ग्लैं ग्लौं विवेकरूपा मोक्षसृष्टिकर्त्री पूर्णेश्वरीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

वामजानौ न्यासः - ब्लीं ब्लूं ब्लैं ब्लौं स्हौं स्हौः सौः वासनारूपा जन्मसृष्टिकर्त्री महामोहिनीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

दक्षोरौ न्यासः - प्रीं फ्रीं फ्रूं फ्रैं जूं डें जूं सत्त्वरूपा विष्णुसृष्टिकर्त्री विष्णुमायादेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

वामोरौ न्यासः - थ्रीं थ्रूं थ्रैं थ्रौं प्रूं प्रैं प्रों रजोरूपा ब्रह्मसृष्टिकर्त्री दुर्गादेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

दक्षवंक्षणे न्यासः - रप्रां रप्रीं रप्रूं रप्रैं स्प्रौं क्लं औं तमोरूपा रुद्रसृष्टिकर्त्री चण्डवारुणीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

वामवंक्षणे न्यासः - ह्रां ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रीः ह्रों ह्रः धर्मरूपा सदाचारसृष्टिकर्त्री नित्यक्लिन्नादेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

गुदे न्यासः - रथ्रां रथ्रीं रथ्रूं रथ्रैं रथ्रौं हं लः क्षः गन्धरूपा पृथिवीसृष्टिकर्त्री महिषमर्दिनीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

लिङ्गे न्यासः - क्षां क्षीं क्षरूं क्षैं क्षौं स्त्रैं स्त्रौं रसनारूपा जलसृष्टिकर्त्री त्वरितादेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

नाभौ न्यासः - रफ्रां रफ्रीं रफ्रूं रफ्रें रफ्रैं रफ्रों रूपरूपा तेजस्सृष्टिकर्त्री वाग्वादिनीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु

ओं स्वाहा।

जठरे न्यासः - रह्वां रह्वीं रह्वूं रह्वैं रह्वौं हलक्षीं हलक्षूं स्पर्शरूपा वायुसृष्टिकर्त्री उग्रचण्डादेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

दक्षकरे न्यासः - रछ्रां रछ्रीं रछ्रूं रछ्रें रछ्रैं रछ्रों रछ्रौं शब्दरूपा आकाशसृष्टिकर्त्री कुब्जिकादेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

वामकरे न्यासः - रक्ष्रां रक्ष्रीं रक्ष्रूं रक्ष्रैं रफ्लैं रफ्लौं मृत्युरूपा मारीसृष्टिकर्त्री राजराजेश्वरीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

मणिबन्धे न्यासः - रज्रां रज्रीं रज्रूं रज्रें रज्रैं रज्रों रज्रौं कुण्डलिनीरूपा नादबिन्दुसृष्टिकर्त्री कात्यायनीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

वाममणिबन्धे न्यासः - रझ्रां रझ्रीं रझ्रूं रझ्रें रझ्रैं रझ्रों रझ्रौं आत्मरूपा ज्ञानसृष्टिकर्त्री चण्डयोगेश्वरीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

दक्षकफोणौ न्यासः - खफ्रां खफ्रीं खफ्रूं खफ्रें खफ्रैं खफ्रों खफ्रौं पुण्यरूपा स्वर्गसृष्टिकर्त्री चण्डयोगेश्वरी देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

वामकफोणौ न्यासः - ग्लब्लां ग्लब्लीं ग्लब्लूं ग्लब्लैं ग्लब्लौं क्षखफ्रें क्षखफ्रैं पापरूपा नरकसृष्टिकर्त्री फेत्कारीदेवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

दक्षस्कन्धे न्यासः - हसफ्रां हसफ्रीं हसफ्रूं हसफ्रें हसफ्रैं हसफ्रों हसफ्रौं शरीररूपा सुखः दुःख सृष्टिकर्त्री सरस्वती देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

वामस्कन्धे न्यासः - हसखफ्रां हसखफ्रीं हसखफ्रूं हसखफ्रें हसखफ्रैं हसखफ्रों हसखफ्रौं आदिसर्गरूपा मानससृष्टिकर्त्री सिद्धि लक्ष्मी देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

ग्रीवायां न्यासः - रश्रां रश्रीं रश्रूं रश्रें रश्रैं रश्रों रश्रौं स्वेदजरूपा दंशमशकादिसृष्टिकर्त्री तुम्बुरेश्वरी देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

कण्ठे न्यासः - छ्ररक्षह्रां छ्ररक्षह्रीं छ्ररक्षह्रूं छ्ररक्षह्रैं छ्ररक्षह्रौं हसखफ्रें हसखफ्रः जरायुजरूपा नरपशुसृष्टिकर्त्री जयलक्ष्मी देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

चिबुके न्यासः - खफ्रह्रां खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रह्रैं खफ्रह्रौं छ्रखफ्रां छ्रखफ्रीं अण्डजरूपा खगसृष्टिकर्त्री धनदा देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

मुखे न्यासः - रक्षफ्रछ्रां रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं रक्षफ्रछ्रैं रक्षफ्रछ्रौं (संकुलम्) पौं उद्भिज्जरूपा अंकुरसृष्टिकर्त्री चण्डेश्वरी देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

नासायां न्यासः - रहछ्ररक्षह्रां रहछ्ररक्षह्रीं रहछ्ररक्षह्रूं रहछ्ररक्षह्रैं रहछ्ररक्षह्रौं ह्रक्षफ्लीं फहलक्षैं अयनरूपा षडर्तुसृष्टिकर्त्री छिन्नमस्ता देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

कूर्चे न्यासः - खफ्रक्ष्रां खफ्रक्ष्रीं खफ्रक्ष्रूं खफ्रक्ष्रैं खफ्रक्ष्रौं सफहलक्षीं सफहलक्षूं त्रुट्यादिकालरूपा कल्पसृष्टिकर्त्री दिगम्बरी देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

ललाटे न्यासः - रकक्ष्रीं रकक्ष्रूं रकक्ष्रैं रकक्ष्रौं सफहलक्ष्रैं सफहलक्षों सफहलक्षौं नानादर्शनरूपा नानामतसृष्टिकर्त्री मातङ्गी देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

आत्मन्यासः - खफ्रक्लां खफ्रक्लीं खफ्रक्लूं खफ्रक्लैं खफ्रक्लौं रजझ्रक्ष्रीं रजझ्रक्ष्रूं उपनिषद्रूपा आत्मप्रकाशसृष्टिकर्त्री डामरी देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः - खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रह्रैं खफ्रह्रौं खफ्रह्रं रजझ्रक्ष्रैं रजझ्रक्ष्रौं ब्रह्मविद्यारूपा कैवल्यसृष्टिकर्त्री धूमावती देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

व्यापक न्यासः - खफ्रछ्रां खफ्रछ्रीं खफ्रछ्रूं खफ्रछ्रैं खफ्रछ्रौं हलक्षौं फहलक्षौं गुह्यकालीरूपा कोटिब्रह्माण्डसृष्टिकर्त्री विश्वरूपा देवी देवी सिद्धिं प्रयच्छतु ओं स्वाहा।

॥ १४. स्थिति न्यासः॥

ओं लगमृक्षखफ्रसहूं ऐं आं ह्रीं श्रीं क्लीं यम्हप्लमृक्षहूं ओं भूकल्पे वलाकासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री कपिलनरसिंहसहिता आनन्दकाली ग्लीं ग्लूं ग्लैं चिरं मामवतु स्वाहा - ब्रह्मरन्ध्रे।

ओं फग्लसहमक्षब्लूं ओं छ्रीं हूं फ्रें हौं ट्लत्लक्षफ्रखफ्छ्रीं ओं भुवःकल्पे गगनमूर्धासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री पुष्करनरसिंहसहिता समयकाली क्रीं क्रूं क्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - ललाटे।

ओं सखक्लक्ष्मध्रयब्लीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं ट्लत्लट्लक्षफ्रखफ्छ्रीं ओं कल्पकल्पे वेहण्डासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री तीव्रनखनरसिंहसहिता भद्रकाली ज्रीं जूं ज्रैं चिरं मामवतु स्वाहा-कूर्चे।

ओं रक्षफ्रससहह्व्य्रऊं क्षौं श्रूं फ्रों फ्रौं स्फ्रौं गमहलयक्ष्लम्रीं ओं तपःकल्पे उल्मुकासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री पाण्डरनरसिंहसहिता नियमकाली छ्रूं छ्रौं छ्रूं चिरं मामवतु स्वाहा - नासिकायाम्।

ओं स्हछ्क्ष्लमरव्य्रईं क्लां क्लीं क्लूं क्लैं क्लौं ख्लभक्ष्मलव्य्रईं ओं क्रतुकल्पे मेघनादासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री जम्बालनरसिंहसहिता त्रिदशकाली क्ष्रूं क्ष्रौं क्ष्रूः चिरं मामवतु स्वाहा-कपोलयोः।

ओं य्रमहलक्षखफ्रग्लैं ज्रां ज्रीं जूं ज्रैं ज्रौं भलनएदक्ष्रीं ओं वह्निकल्पे धूम्रासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री सम्मोहनरसिंहसहिता हिरण्यकाली ख्रस्त्रीं ख्रस्त्रूं ख्रस्त्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - नयनयोः।

ओं भक्ष्लरमहसख फ्रूं थ्रां थ्रीं थ्रूं थ्रैं थ्रौं क्लसमयग्लह्रफ्रूं ओं षट्क्रमकल्पे त्रिशिरासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री भूतादिनरसिंहसहिता विकृतकाली क्रथ्रीं क्रथ्रूं चिरं क्रथ्रैंमामवतु स्वाहा - कर्णयोः।

ओं ख्फ्रध्रव्य्रओं छ्रध्रीं ख्फ्छ्रां ख्फ्छ्रीं ख्फ्छ्रूं ख्फ्छ्रैं ख्फ्छ्रौं छतक्षठन ह्रब्लीं औं दर्शकल्पे अरुणासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री हेतुकनरसिंह सहिता क्रोधकाली क्रफ्रीं क्रफ्रूं क्रफ्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - हनौ।

ओं व्य्रक्षस्हम्लस्त्रीं झमरयऊं रक्षश्रीं रस्फ्रों रक्षछ्रीं रस्फ्रौं रगहलक्षम्लयछ्रूं ओं कृष्णाकल्पे दाण्डिकासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री लोहिताक्षनरसिंहसहिता उल्काकाली सहलक्रीं सहलक्रूं सहलक्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - चिबुके।

ओं मफ्रलहलहखफ्रूं रफ्रीं रफ्रूं रफ्रें रफ्रैं गसधमरयब्लूं ओं चित्रकल्पे वायुध्वजासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री दुर्द्धर्षनरसिंहसहिता फेरुकालीं ह्रस्त्रीं ह्रस्त्रूं ह्रस्त्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - गले।

ओं च्लक्ष्मस्हव्य्रख्रीं ख्रीं ख्रैं स्हौः स्हीं सौः खतक्लक्ष्मव्य्रहूं ओं रक्तोदकल्पे जंभलासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री बभ्रुनरसिंहसहिता जीमूतकाली ह्रछ्रीं ह्रछ्रूं ह्रछ्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - ग्रीवायाम्।

ओं तफरक्षम्लह्रौं रक्ष्रां रक्ष्रीं रक्ष्रूं रक्ष्रैं रक्ष्रौं रसमयक्षक्लह्रीं ओं हरिकेशकल्पे किरीटासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री सर्वेश्वरनरसिंहसहिता विग्रहकाली क्लरहैं क्लफ्रीं क्लफ्रूं चिरं मामवतु स्वाहा - हृदये।

ओं रहक्षम्लव्य्रअखफछ्रस्त्रह्रीं हसखफ्रीं हसखफ्रूं हसखफ्रें हसखफ्रैं हसखफ्रौं टरक्षप्लमह्रूं ओं लोहितकल्पे रक्ततुण्डासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री विश्वबाहुनरसिंहसहिता गुप्तकाली ह्फ्रीं ह्फ्रूं ह्फ्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - जठरे।

ओं शम्लह्व्य्रखफ्रैं रह्रां रह्रीं रह्रूं रह्रैं रह्रौं जसदनस्हक्षग्लूं ओं शिपिविष्टकल्पे किर्मीरासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री अनन्तनरसिंहसहिता चैतन्यकाली ह्खफ्रां ह्खफ्रीं ह्खफ्रूं चिरं मामवतु स्वाहा - नाभौ।

ओं हसखफ्रम्लव्य्रऊं खफ्रीं खफ्रूं खफ्रें खफ्रैं खफ्रौं चमरगक्ष्फ्रस्त्रीं ओं वृहद्रथकल्पे वाष्कलासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री जटालनरसिंहसहिता विश्वकाली क्रह्रीं क्रह्रूं क्रहैं चिरं मामवतु स्वाहा - करे।

ओं प्रस्हम्लक्षक्लीं क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रूं क्ष्रैं क्ष्रौं ह्मक्षकमह्रीं ओं औपलकल्पे खर्जूररोमासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री तपननरसिंहसहिता कुलकाली सफहलक्षीं सफलहलक्ष्रूं सफहलक्षैं चिरं मामवतु स्वाहा - लिङ्गे।

ओं म्ररयक्ष्क्षसह्रफ्रीं रस्त्रां रस्त्रीं रस्त्रूं रस्त्रैं रस्त्रौं क्लपट्क्षमव्य्रईं ओं खार्जूरीयकल्पे नादान्तकासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री सिन्धुनादनरसिंहसहिता प्रतप्तकाली हलक्षीं हलक्ष्रूं हलक्षैं चिरं मामवतु स्वाहा - गुदे।

ओं रसमस्त्रह्व्य्रऊं छ्ररक्षह्रां छ्ररक्षह्रीं छ्ररक्षह्रूं छ्ररक्षहैं छ्ररक्षह्रौं ओं (धूतपापा) संभ्रमकल्पे काकवर्णासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री मृत्युमुखनरसिंहसहिता ज्योतीरूपकाली रजझ्रक्षीं रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्षैं चिरं मामवतु स्वाहा - ऊरौ।

ओं फ्रखरक्षक्लह्रीं हसफ्रां हसफ्रीं हसफ्रूं हसफ्रैं हसफ्रौं डपतसगमक्ष्ब्लूं ओं नैयग्रोधकल्पे अन्धकासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री हेमाम्भनरसिंहसहिता मेधाकाली क्ष्लक्षीं क्ष्लक्ष्रूंक्ष्लक्षैं चिरं मामवतु स्वाहा - जानौ।

ओं व्लक्क्षहमस्त्रछ्रूं रक्षफ्रछ्रां रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं रक्षफ्रच्छ्रैं रक्षफ्रछ्रौं रसमयरक्ष्क्षग्लीं ओं सिंहकल्पे सरभासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री रौरवनरसिंहसहिता उत्तरकाली फ्रम्रग्लईं फ्रम्रग्लऊं फ्रम्रग्लऐं चिरं मामवतु स्वाहा - जंघायाम्।

ओं ट्लव्य्रसम्क्षहछ्रीं क्षखफ्रां क्षखफ्रीं क्षखफ्रूं क्षखफ्रें क्षखफ्रैं ईक्षक्षएएक्लह्रीं ओं स्थूलाकल्पे शङ्कुकर्णासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री हव्यवाहनरसिंहसहिता व्यालकाली क्ष्लक्षीं क्ष्लक्ष्रूं क्ष्लक्षैं चिरं मामवतु स्वाहा - पादे।

ओं कह्क्लक्षखफ्रीं खफ्रक्ष्रां खफ्रक्ष्रीं खफ्रक्ष्रूं खफ्रक्ष्रैं खफ्रक्ष्रौं कब्लयसमक्षखछ्रूं ओं चित्याकल्पे वज्रचर्मासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री पूर्णभद्रनरसिंहसहिता आवर्तकाली क्ष्रस्त्रीं क्ष्रस्त्रूं खस्त्रैं क्ष्रस्त्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - कटे।

ओं रलहक्षसमहफ्रछ्रीं क्रह्रां क्रह्रीं क्रह्रूं क्रहैं क्रह्रौं छ्रडक्षसहफ्रक्लीं ओं औलूककल्पे प्रतर्दनासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री मणितारनरसिंहसहिता सिंहनादकाली फ्रखभ्रीं फ्रखभ्रूं फ्रखभ्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - पृष्ठे।

ओं (मैनाक कूटम्) खफ्रछ्रां खफ्रछ्रीं खफ्रछ्रूं खफ्रछ्रैं खफ्रछ्रौं क्ष्लमरझ्ररथ्रीं ओं वैमानकल्पे जालन्धरासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री दैत्यान्तकनरसिंहसहिता मन्त्रकाली हसखफ्रक्षीं हसखफ्रक्ष्रूं हसखफ्रक्षैं चिरं मामवतु स्वाहा - असे।

ओं लयक्षकहस्त्रव्रह्रीं क्षूक्लां क्षूक्लीं क्षक्लूं क्षब्लीं क्षब्लूं ब्लयक्ष्मझ्रग्लथ्रूं ओं कीलालकल्पे शकुन्तकासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री उद्योतनरसिंहसहिता कल्पकाली खफ्रीं क्षरस्त्रखफ्रूं (जगदावृत्तिः) चिरं मामवतु स्वाहा - जत्रुणि।

ओं जनहमरक्षयह्रीं खफ्रक्लां खफ्रक्लीं खफ्रक्लूं खफ्रक्लैंखफ्रक्लौं कपयनप्लक्षफ्रीं ओं तपनकल्पे पूतिकञ्जासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री विभूतिनरसिंहसहिता उत्पातकाली खफछ्रीं खफछ्रूं खफछ्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - शिखायाम्।

ओं धशङ्इलझ्रह्रीं क्षज्रां क्षज्रीं क्षज्रूं क्षज्रैं क्षज्रौं परमक्षलहक्षऐं छ्रीं ओं संघातकल्पे विराधासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री शबलनरसिंहसहिता सम्मोहकाली क्षरस्त्रीं क्षरस्त्रूं क्षरस्त्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - करव्यापके।

ओं छ्रक्लव्य्रमक्षयूं खफ्रह्रां खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रह्रैं खफ्रह्रौं गपटतयजक्लूं ओं वटकल्पे विश्वमर्दनासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री धनञ्जयनरसिंहसहिता चक्रकाली हसखफ्रीं हसखफ्रूं हसखफ्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - पादव्यापके।

ओं दलव्य्रक्षक्रभ्रीं हस्त्रां हस्त्रीं हस्त्रूं हस्त्रैं हस्त्रौं कहलक्षश्रक्षम्लब्रईं ओं रुद्रकल्पे कोलतुण्डासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री शोणाक्षनरसिंहसहिता आधारकाली कहलश्रौं कहलश्रूं कहलश्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - सर्वाङ्गव्यापके।

ओं श्लव्य्रछ्रखीं क्लह्रीं क्लह्रूं क्लह्रैं क्लह्रों क्लह्रौं फ्रदमहयनह्रं ओं मन्दारकल्पे जम्बुजालासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री चित्राङ्गनरसिंहसहिता समरकाली हसखफ्रों हसखफ्रं हसखफ्रः चिरं मामवतु स्वाहा - हृदय।

ओं सक्लह्र हसखफ्रक्षीं ह्रफ्रां ह्रफ्रीं ह्रफ्रूं ह्रफ्रैं ह्रफ्रौं व्य्रधरमक्षच्लीं ओं अजिरकल्पे चञ्चुमुखासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री उत्साहनरसिंहसहिता विनाशकाली फ्रम्रग्लऔं क्ष्लक्ष्मौं (उरङ्क) चिरं मामवतु स्वाहा - हृदये।

ओं एसकहलक्षांव्य्रम्रूं स्त्रखफ्रां स्त्रखफ्रीं स्त्रखफ्रूं स्त्रखफ्रैं स्त्रखफ्रौं धमसरव्लयक्ष्रूं ओं श्रुतिकल्पे पिटकासुरवधेन जगत्स्थितिकर्त्री रक्तरेखनरसिंहसहिता रक्षाकाली स्त्रखफ्रौं क्लखफ्रौं ह्रथ्रैं चिरं मामवतु स्वाहा - हृदये।

॥ १५. संहार न्यासः॥

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें प्रकाशरूपेण तमःसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्रम्लव्य्रईं स्हक्षम्लव्य्रऊं ओं क्रों सौः मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - प्रपदन्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें महाप्रलयरूपेण ब्रह्माण्डसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्रम्लव्य्रईं स्हक्षम्लव्य्रऊं श्रीं क्रौं क्लीं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - गुल्फन्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें वाडवरूपेण सप्ताब्धिसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्रम्लव्य्रईं स्हक्षम्लव्य्रऊं फ्रों फ्रौं ज्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - पार्ष्णि न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें षट्चक्रभेदरूपेण भवबन्धसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्रम्लव्य्रईं स्हक्षम्लव्य्रऊं रछ्रीं रछ्रूं रछ्रैं छ्रीं ह्रीं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं नमः स्वाहा - जंघायां।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें प्रमारूपेण भ्रमसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्रम्लव्य्रईं स्हक्षम्लव्य्रऊं छ्ररह्रूं छ्रह्रैं छ्रह्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रौं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - जानुन्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें तपोरूपेण दुरितसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्लरह्रों क्लरहैं क्लरहौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं नमः स्वाहा - वंक्षण न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें विद्यारूपेण अज्ञानसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा स्त्रह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं स्त्रखफ्रूं स्त्रखफ्रैं स्त्रखफ्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - कटि न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें दहनारूपेण तृणतरुसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हःम्लव्र्यऊं ग्लब्लूं ग्लब्लैं ग्लब्लौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - स्फिग् न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें गायत्रीजपरूपेण सकलपातक संहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्फ्रों क्षस्फ्रौं रक्षश्रीं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - कुक्षि न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें लक्ष्मीरूपेण दैन्य संहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं स्हौं स्हौः ख्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - पार्श्वन्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें परमात्मविचाररूपेण मायासंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं प्रीं क्ष्लौं फ्रीं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - चूचुक न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें भेषजरूपेणाधिव्याधिसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्ष्रूं क्ष्रैं क्ष्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - अंसन्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें तत्वजिज्ञासारूपेणाधिसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं रझ्रूं रझ्रैं रझ्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - जत्रु न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें शान्तिरूपेण त्रिविधोत्पातसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं रप्रीं रप्रूं रप्रैं मम शत्रून् संहरतु फ्रैं स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - कक्ष न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें होमरूपेण ग्रहदोषसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं रह्रूं रह्रैं रह्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - कफोणि न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें सत्यरूपेण मिथ्यासंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं रफ्रीं रफ्रूं रफ्रैं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - मणिबन्धन्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें सदाचाररूपेणा अधर्मसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं ख्फ्रीं ख्फ्रूं ख्फ्रैं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - कराङ्गुली न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें निगमरूपेण संशयसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं रक्षीं रक्षें रक्षों मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - कराङ्गुल्यग्र न्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें कालरूपेण सर्वसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षरह्रीं क्षरह्रूं क्षरह्रौं (हारबीजं किम्) मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - प्रगण्डन्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें प्रणवरूपेण जन्ममृत्युसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं हस्ख्फ्रूं हस्ख्फ्रैं हस्ख्फ्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं नमः स्वाहा - नासान्यासः।

ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें आवर्तनरूपेण अग्न्याहारसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्म्लव्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षरस्त्रूं

****

क्ष्रस्त्रैं क्ष्रस्त्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - ओष्ठाधर न्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें प्राणायामरूपेण आहारसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं ह्स्फ्रीं ह्स्फ्रूं ह्स्फ्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - दन्तन्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें जलरूपेण अग्निसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं ख्रत्रूं ख्रस्त्रैं ख्रस्त्रों मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - कपोल न्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें जाठरपावकरूपेणाहार संहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं ख्फछ्रीं खफ्रछ्रूं ख्फछ्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - गण्डन्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें सन्तोषरूपेण लोभसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं छ्रक्षह्रां छ्रक्षह्रैं छ्रक्षह्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - हनु न्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें त्रिवेदरूपेण पाषण्डसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं रक्षफ्रछ्रैं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - सृक्कन्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें तितिक्षारूपेण भूतसर्गसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्ष्रैं रजझ्रक्ष्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - कर्णन्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें निदाघरूपेण षडूर्मिसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं रह्छ्ररक्षह्रैं रह्छ्ररक्षह्रौं रजझ्रक्ष्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - भ्रू न्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें क्रूररूपेण मृदुसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं खफ्रछ्रौं खफ्रछ्रैं रह्छ्र रक्षह्रों मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - शङ्खे न्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें मोहरूपेण संवित्तिसंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं ख्फ्रक्ष्रां ख्फ्रक्ष्रैं ख्फ्रक्ष्रौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - शिरः न्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें अध्यात्मचिन्तनरूपेण वासनासंहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं ख्फ्रक्लूं ख्फ्रक्खैं ख्फ्रक्लौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः।

ह्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें उग्रचण्डा रूपेण सकलासुर संहारकर्त्री गुह्यकाली देव्यम्बा क्षह्मल्व्र्यईं स्हक्षम्लव्र्यऊं ख्फ्रह्लूं ख्फ्रह्लैं ख्फ्रह्लौं मम शत्रून् संहरतु फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्लीं नमः स्वाहा - व्यापक न्यासः।

॥ १६. अनाख्या न्यासः॥

ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं स्त्रीं परमाणवेऽवयबानाख्यारूपा ह्ग्लूं ह्ग्लैं ह्ग्लौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता स्हजह्लक्ष्म्लवनऊं ब्रकम्लव्लक्लऊं महव्र्यऐं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। शिरसि न्यासः।

आं हूं क्षौं क्रूं क्षूँ अग्रये शैत्यानाख्यारूपा कह्रां कह्रीं कह्रूं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता ह्लक्षक मह्सव्र्यऊ क्षम्लकस्हरयब्रूं स्हक्ष्ल मह्ज्रूं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। तालौ न्यासः।

झमरयऊं र्क्ष्श्रीं र्स्फ्रों र्स्फ्रौं र्क्ष्छ्रीं चक्षुषे दर्शनानाख्यारूपा क्ष्क्लां क्ष्क्लीं क्ष्क्लूं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता स्हछ्क्ष्लमर्व्र्यईं ग्रम्ह्ल्क्षख्फ्रग्लैं र्क्षफ्रसमड ह्व्र्यऊं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। कण्ठे न्यासः।

हूं हैं हौं हं हः लिङ्गशरीराय भोगानाख्यारूपा (क्ष्ब्लीं क्ष्ब्लूं क्ष्ब्लैं) क्ष्ब्लीं क्ष्ब्लैं क्ष्ब्लौं चराचरे जगति

स्वशक्ति सहिता तफलृक्ष कमश्रब्रीं लगमृक्षखफ्रसहूं च्लक्ष्म स्हव्य्रख्रीं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। शङ्खे न्यासः।

रृध्रां रृध्रीं रृध्रूं रृध्रैं रृध्रौं परमात्मने चैतन्यानाख्यारूपा क्रहूं क्रहैं क्रहौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता सग्ल क्षमहरृहूं क्लहह्रझकहृनसक्लई क्षमब्लहकयह्रीं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। कूर्चे न्यासः।

रृब्रां रृब्रीं (घाटी भावः) रृब्रूं रृब्रैं रृब्रौं विष्वक्प्रपञ्चाय ज्ञेयानाख्यारूपा छ्रहूं छ्रहैं छ्रहौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता ब्लक्षमकहव्य्रईं लक्षमहृजरृक्रव्य्रऊं हलक्षमहम्लूं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। नासिकायां न्यासः।

ग्लीं ग्लूं ग्लैं ग्लौं स्फ्रौं अज्ञानाय अतीन्द्रियानाख्यारूपा क्लरृहीं क्लरृहैं क्लरृहौं (क्लरृहूं क्लरृहैं क्लरृहौं?) चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता रजहलक्षमऊं कसवहलक्षमऔं हक्लहवडकखऐं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। गण्डे न्यासः।

ज्रैं ज्रौं स्हौं स्हौः सौः इन्द्रजालाय अध्यासानाख्यारूपा क्रहीं क्रहूं क्रहौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता रृक्षम्लहकसछव्य्रऊं क्षम्लब्रसहस्हक्षक्लस्त्रीं म्लक्षकहहूं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। जत्रुणि न्यासः।

द्रैं भ्रूं ब्रीं घीं फ्रीं निराकाराय प्रतीत्यनाख्यारूपा हफ्रूं हफ्रैं हफ्रौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता ग्लक्षकमहव्य्रऊं हलक्षकमब्रूं ख्रफसहक्ष्लब्रू क्रौं सहकक्ष्क्षहमव्य्रऊं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। हनौ न्यासः।

ब्लां ब्लीं ब्लूं ब्लैं ब्लौं अभ्यासाय असंभावनानाख्यारूपा श्रखफ्रीं श्रखफ्रूं श्रखफ्रैं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता सहठृलक्षहमक्रीं हलसहकमक्षब्रऐं क्लक्षसहमव्य्रऊं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। स्कन्धे न्यासः।

रृम्रीं रृम्रूं रृम्रैं सहलौं हलः क्रिया समीराय आनन्दमयानाख्यारूपा हखफ्रीं हखफ्रूं हखफ्रैं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता रलृहक्षहृक्षक्षसक्लहीं मव्रटतृक्षसहहीं क्लपृक्षहमब्रूं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। कक्षे न्यासः।

रृश्रों रृश्रीं रृश्रें रृश्रों रृश्रौं व्यक्तये धारणानाख्यारूपा क्लहीं क्लहूं क्लहौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता प्रस्हम्लक्षक्लीं ग्लक्लमझ्रस्त्रीं खफ्रक्लक्ष्मसभ्रीं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। हृदि न्यासः।

ट्रीं ठ्रीं ड्रीं ढ्रीं ण्रीं आम्नायाय जात्यनाख्यारूपा क्लक्ष्रीं क्लक्ष्रूं क्लक्ष्रौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता (मन्दकूटम्) सम्लब्लकक्षव्य्रऊं फ्रत्तभ्रआं क्लमझ्रऊं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। जठरे न्यासः।

फ्रूं फ्रों फ्रौं स्त्रौं स्त्रैं (स्त्रैं स्त्रौं ?) अध्वराय प्रामाण्यानाख्यारूपा क्लखफ्रीं क्लखफ्रूं क्लखफ्रैं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता खलहव्रगृक्षरृछ्रीं झसखग्रमऊँ कमहलचहलृक्षरृग्रीं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। नाभौ न्यासः।

हसखफ्रीं हसखफ्रूं हसखफ्रें हसखफ्रैं हसखफ्रौं बीजाङ्कुराय अपूर्वानाख्यारूपा छ्रक्रीं छ्रक्रूं छ्रक्रैं छ्रक्रौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता रृक्षख्रूं रृक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। वस्तौ न्यासः।

रृहीं रृहूं रृहैं रृहौं क्षैं कलिलाय रसाद्यनाख्यारूपा क्रफ्रीं क्रफ्रूं क्रफ्रें चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षहम्लव्य्रऊं नद्क्षट्क्षव्य्रऊं छलृहक्षलक्षफ्रग्लऊं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। गुदे न्यासः।

रृस्त्रां रृस्त्रों रृस्त्रूं रृस्त्रैं रृस्त्रौं क्षीराय विश्वोत्पत्तिहर्यनाख्यारूपा क्रख्रीं क्रख्रूं क्रख्रैं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता क्षहम्लव्य्रईं क्षस्हम्लवृग्रईं क्षहम्लवृग्रईं क्षहम्लवृग्रईं क्षस्हम्लव्य्रई परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा ।

मेहने न्यासः।

ह्ल्क्षीं ह्ल्क्षूं ह्ल्क्षें ह्ल्क्षैं ह्ल्क्षौं आहाराय बलादिपरिपाकानाख्यारूपा ग्लखूं ग्लखें ग्लखैं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता म्रयक्ष्सह्फ्री प्रस्हम्लक्षक्लीं स्हक्ष्क्षकमफ्रब्रूं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। वंक्षणे न्यासः।

खफ्रीं खफ्रूं खफ्रें खफ्रैं खफ्रौं तेजसे उष्णतानाख्यारूपा भ्लूं भ्लैं भ्लौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता रसमस्त्रह्व्रऊं ग्रम्लक्षहछ्रीं फलयक्षकयब्लूं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। इत्यूरौ न्यासः।

र्क्क्षीं र्क्क्षरूं र्क्क्षैं र्क्क्षों ह्ल्क्षौं द्रवद्रव्याय क्लिन्नतानाख्यारूपा भ्लीं भ्लूं भ्लैं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता ह्स्खफ्रम्लक्षव्रऊं र्हक्षम्लव्रअखफ्छ्स्त्रह्रीं शम्लह्व्रखफ्रैं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। जानौ न्यासः।

क्रह्रां क्रह्रीं क्रह्रूं क्रह्रैं क्रह्रौं होमाय विश्वोत्पत्यनाख्यारूपा च्रीं च्रूं च्रौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता (सेतूकूटम्) स्हक्लर्क्षमजह्रखफरयूं ब्लक्क्षहमस्त्रछ्रूं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। जंघायां न्यासः।

छ्र्क्षह्रां छ्र्क्षह्रीं छ्र्क्षह्रूं छ्र्क्षह्रौं प्रपञ्चाय आविर्भावानाख्यारूपा र्फ्लूं र्फ्लैं र्फ्लौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता र्क्षखरईऊं स्हक्षम्लव्रईं क्षस्हम्लव्रईं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। प्रपदे न्यासः।

रक्षफ्रछ्रां रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं रक्षफ्रछ्रैं रक्षफ्रछ्रौं मेघादये तिरोभावानाख्या रूपा र्ख्रूं र्ख्रैं र्ख्रौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता क्षस्हम्लव्रईऊं क्षह्रम्लव्रईऊं क्षर्ह्म्लव्रईऊं क्षर्ह्म्लव्रईऊं क्षस्हम्लव्रईऊं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। पार्ष्णौ न्यासः।

रह्रछ्रक्षह्रां रह्रछ्रक्षह्रीं रह्रछ्रक्षह्रूं रह्रछ्रक्षह्रैं रह्रछ्रक्षह्रौं मादकादये आवरकानाख्यारूपा रह्रूं रह्रैं रह्रौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता स्हक्षम्लव्रईऊं र्क्षक्रीऊं क्षस्हम्लव्रईऊं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। गुल्फे न्यासः।

खफ्रक्षां खफ्रक्षीं खफ्रक्षूं खफ्रक्षैं खफ्रक्षौं मयूखाय विक्षेपनाख्यारूपा र्द्रूं र्द्रें र्द्रैं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता प्क्षलव्रझ्रफ्रूं खमस्हक्षवलीं स्हकह्लह्रीं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। पादाङ्गुल्यग्रे न्यासः।

खफ्रछ्रां खफ्रछ्रीं खफ्रछ्रूं खफ्रछ्रैं खफ्रछ्रौं क्रियादये उन्नमनानाख्यारूपा र्ध्रीं र्ध्रूं र्ध्रें चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता खलक्षक्षव्र खफ्छ्रें ग्लक्क्षह्लैं ठ्लब्रखफ्छ्रीं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। पृष्ठे न्यासः।

खफ्रक्लां खफ्रक्लीं खफ्रक्लूं खफ्रक्लैं खफ्रक्लौं सत्त्वगुणाय विभागानाख्यारूपा र्भ्रीं र्भ्रूं र्भ्रैं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता फ्रखर्क्षक्लह्रीं ट्फ्रकम्क्षज्स्त्रीं धशड्लझ्रह्रीं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। ग्रीवायां न्यासः।

खफ्रह्रां खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रह्रैं खफ्रह्रौं रजोगुणाय पालनानाख्यारूपा फ्रक्लें फ्रक्लों फ्रक्लौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता ज्लक्ह्लक्षव्रमथ्रीं (विद्याकूटम्) ह्रखफ्रूं र्च्रांव्रक्रीं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। वामहस्तव्यापके न्यासः।

रजझ्रक्षीं रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्षैं रजझ्रक्षौं खफ्रछ्रीं तमोगुणाय सृष्ट्यनाख्यारूपा ब्लछ्रूं ब्लछ्रैं ब्लछ्रौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता मघस्त्रक्क्षलक्रीं व्रमक्ल यस्क्षक्ली सफ्रक्षक्लमखछ्रीं परमात्मनि विलीये ओं नमः

स्वाहा। दक्षिणहस्तव्यापके न्यासः।

फ्रम्रग्लआं फ्रम्रग्लईं फ्रम्रग्लऊं फ्रम्रग्लऐं फ्रम्रग्लओं जन्यपदार्थाय संहारानाख्यारूपा ह्स्त्रूं ह्स्त्रैं ह्स्त्रौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता खह्लक्षम्र ब्लईं म्लव्यस्हईं ज्लह्क्षस्त्रौं छप्ग्रह्स्फ्रीं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। वामपादव्यापके न्यासः।

क्ष्लक्ष्मां क्ष्लक्ष्मीं क्ष्लक्ष्रूं क्ष्लक्ष्मैं क्ष्लक्ष्मौं आकाशाय ध्वंसानाख्यारूपा व्रफ्रथीं व्रफ्रथैं व्रफ्रथौं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता फ्रत्क्षम्लह् क्षहथ्लह्क्षहूं इ्लह्क्षच्लद्रक्ष्मऐं ब्लह्क्षब्लऊं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। दक्षिणपादव्यापके न्यासः।

हस्ख्फ्रीं हसखफ्रूं खफ्रीं क्षरस्त्रखफ्रूं (सायुज्यम्) सर्वत्र शून्यतानाख्यारूपा ख्लफ्रीं ख्लफ्रूं ख्लफ्रूं चराचरे जगति स्वशक्ति सहिता एसकहल्क्षांव्यभ्रूं म्लछ्लह्ख खफ्रक्रीं सवलह् ह्नख्फ्रक्ष्मीं परमात्मनि विलीये ओं नमः स्वाहा। सर्वशरीरव्यापके न्यासः।

त्रिबीजनिर्देश स्थले षट्बीजानि अधिकानि निर्दिष्टानि सन्ति तानि कथं सङ्गमनीयानि तानि चाधो लिख्यन्ते-

(क) १. एकवली २. वज्रकवचम्, ३.ब्रह्मकपालकम्, ४. सन्तापनम्, ५. जगदावृत्तिः, ६. महाकल्प स्थायि चेति।

(ख) इह चतुर्थ्यन्तवचनस्थाने सप्तम्यैकवचनान्तपाठ उचितः प्रतीयते।

॥ १७. भासा न्यासः॥

ओं फ्रें ह्रीं ख्फ्रें छ्रीं हसफ्रें स्त्रीं हसखफ्रें ओं ज्ञानशक्तौ भ्रमभासाकारायां निराभासा ओं ऐं आं ईं ऊं ज्ञानविज्ञानरूपा रक्ष्मीं रक्ष्रूं रक्ष्मैं भगवती गुह्यकाली धशड्लझ्रह्रीं मयि लीयतां स्वाहा। शिरसि न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्सफ्रें स्त्रीं हसखफ्रें ओं इच्छाशक्तौ संयमभासाकारायां निराभासा श्रीं ह्रीं क्लीं क्रों क्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा हसफ्रीं हसफ्रूं हसफ्रौं भगवती गुह्यकाली ई सकहमरक्षक्रीं मयि लीयतां स्वाहा। तालुनि न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं हसफ्रें स्त्रीं हसखफ्रें ओं क्रियाशक्तौ वितर्कभासाकारायां निराभासा फ्रें फ्रैं फ्रों फ्रौं फ्रं ज्ञानविज्ञानरूपा फहलक्ष्मीं फहलक्ष्मूं फहलक्ष्मैं भगवती गुह्यकाली क्षम्लजरस्त्रीं मयि लीयतां स्वाहा। कण्ठे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं हसफ्रें स्त्रीं हसखफ्रें ओं श्रद्धाशक्तौ जुगुप्साभासाकारायां निराभासा क्षां क्षीं क्ष्रूं क्षैं क्षौं ज्ञानविज्ञानरूपा लक्ष्मीं लक्ष्मूं लक्ष्मैं भगवती गुह्यकाली जनहमरक्षयह्रीं मयि लीयतां स्वाहा। शङ्खे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं हसफ्रें स्त्रीं हसखफ्रें ओं धृतिशक्तौ पतनभासाकारायां निराभासा क्रीं क्रूं क्रैं क्रं क्रः ज्ञानविज्ञानरूपा सकहलक्ष्मीं सफहलक्ष्मूं सफहलक्ष्मैं भगवती गुह्यकाली ईंसमक्लक्षहूं मयि लीयतां स्वाहा। कूर्चे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं हसफ्रें स्त्रीं हसखफ्रें ओं मेधाशक्तौ जाड्यभासाकारायां निराभासा ह्ग्लां ह्ग्लीं ह्ग्लूं ह्ग्लैं ह्ग्लौं ज्ञानविज्ञानरूपा रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं रक्षफ्रछ्रैं भगवती गुह्यकाली इ्लखलहक्षखम मयि लीयतां स्वाहा। नासिकायां न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं हसफ्रें स्त्रीं हसखफ्रें ओं अणिमाशक्तौ महद्बन्धनभासाकारायां निराभासा क्रहां क्रहीं क्रहूं क्रहैं क्रहौं ज्ञानविज्ञानरूपा रकक्ष्मीं रक्रक्ष्रूं रक्रक्ष्मैं भगवती गुह्यकाली मधस्त्रकक्षलक्रीं मयि लीयतां

****

स्वाहा। गण्डे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं हसफ्रें स्त्रीं हसखफ्रें ओं मायाशक्तौ तिमिरभासाकारायां निराभासा हफ्रां हफ्रीं हफ्रूं हफ्रैं हफ्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा रस्त्रीं रस्त्रूं रस्त्रैं भगवती गुह्यकाली व्रमक्लयसखक्लीं मयि लीयतां स्वाहा। जत्रुणि न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं प्रभाशक्तौ अध्वरभासाकारायां निराभासा त्र्यां त्र्यीं त्र्यूं त्र्यैं त्र्यौं ज्ञानविज्ञानरूपा छ्रर्क्षहूं छ्ररर्क्षह्रीं छ्रर्क्षहैं भगवती गुह्यकाली सफ्रक्षक्लमखछ्रीं मयि लीयतां स्वाहा। हनौ न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं विशुद्धिशक्तौ अकिञ्चनभासाकारायां निराभासा छैं छों छौं छं छः ज्ञानविज्ञानरूपा रह्छरक्षह्रीं रह्छरक्षहूं रह्छरक्षहैं भगवती गुह्यकाली पख्रसम्क्षस्त्रक्रीं मयि लीयतां स्वाहा। स्कन्धे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं ऋद्धिशक्तौ नश्वरभासाकारायां निराभासा त्र्यां त्र्यीं त्र्यूं त्र्यैं त्र्यौं ज्ञानविज्ञानरूपा ख्फ्रह्रीं ख्फ्रहूं ख्फ्रहैं भगवती गुह्यकाली झ्रमस्त्रयग्लह्रीं मयि लीयतां स्वाहा। कक्षे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं नित्याशक्तौ विस्मरणभासाकारायां निराभासा ह्स्ख्फ्रां ह्स्ख्फ्रीं ह्स्ख्फ्रूं ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रैं ज्ञानविज्ञानरूपा रजझ्रक्ष्रीं रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्ष्रैं भगवती गुह्यकाली लयक्षकहस्त्रव्रह्रीं मयि लीयतां स्वाहा। हृदि न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं स्मृतिशक्तौ अबोधभासाकारायां निराभासा ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रौं ह्स्ख्फ्रां ह्स्ख्फ्रं ह्स्ख्फ्रः ज्ञानविज्ञानरूपा भगवती गुह्यकाली ख्फ्रक्ष्रीं ख्फ्रक्ष्रूं ख्फ्रक्ष्रैं कस्हलह्रखक्ष्रीं मयि लीयतां स्वाहा। जठरे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं प्रज्ञाशक्तौ द्वेषभासाकारायां निराभासा क्ष्रीं ह्भ्रीं भ्रूं ख्रौं क्षौः ज्ञानविज्ञानरूपा छ्रखफ्रीं ह्रक्षफ्लीं ख्फ्रहं भगवती गुह्यकाली सफ्रकह्रर्क्षमश्रीं मयि लीयतां स्वाहा। नाभौ न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं प्रीतिशक्तौ हर्षभासाकारायां निराभासा क्ष्रां पूं भ्रीं क्ष्रूं क्ष्रूः ज्ञानविज्ञानरूपा ख्फ्रछ्रीं ख्फ्रछ्रूं ख्फ्रछ्रैं छज्रमक्रव्य्रऊं भगवती गुह्यकाली मयि लीयतां स्वाहा। वस्तौ न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं नीतिशक्तौ जन्यभासाकारायां निराभासा रह्रां ऱ्ह्रीं ऱ्ह्रूं ऱ्ह्रैं ऱ्ह्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा ख्फ्रक्लीं ख्फ्रक्लूं ख्फ्रक्लें ट्लसकम्लक्षट्व्रीं भगवती गुह्यकाली मयि लीयतां स्वाहा। गुदे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं कूटस्थशक्तौ मोहभासाकारायां निराभासा रफ्लां रफ्लीं रफ्लूं रफ्लैं रफ्लौं ज्ञानविज्ञानरूपा ख्फ्रह्रीं ख्फ्रहूं ख्फ्रहैं भगवती गुह्यकाली फ्रर्क्षस्त्रमक्रूं मयि लीयतां स्वाहा। मेहने न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं चेतनाशक्तौ अलीकभासाकारायां निराभासा प्रां प्रीं प्रूं प्रैं प्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा श्लीं श्लूं श्लैं भगवती गुह्यकाली छ्रक्लव्य्रमक्षयूं मयि लीयतां स्वाहा। वंक्षणे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं धृतिशक्तौ लोभभासाकारायां निराभासा म्लां म्लीं म्लूं म्लैं ज्ञानविज्ञानरूपा क्रीं क्रूं क्रैं भगवती गुह्यकाली थ्लव्य्रप्रछ्रख्रीं मयि लीयतां स्वाहा। उरौ न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं सत्यशक्तौ अनध्यवसायभासाकारायां निराभासा खफछ्रां खफ्छ्रीं ख्फ्छ्रूं ख्फ्छ्रैं ख्फ्छ्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा ज्लीं ज्लूं ज्लैं भगवती गुह्यकाली ग्लां ग्लहथयीं मयि लीयतां स्वाहा। जानौ न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं शान्तिशक्तौ रूक्षभासाकारायां निराभासा रस्फ्रों रस्फ्रौं रक्षछ्रीं झमरयऊं रक्षश्रीं ज्ञानविज्ञानरूपा ह्लीं ह्लूं ह्लैं भगवती गुह्यकाली द्लव्य्रक्षक्रभ्रीं मयि लीयतां स्वाहा इति जंघायां न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं उत्साहशक्तौ अमृर्तभासाकारायां निराभासा रग्रीं रग्रूं रग्रें रग्रैं रग्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा लीं लूं लैं भगवती गुह्यकाली थ्लहक्षकहमव्रयीं मयि लीयतां स्वाहा। प्रपदे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं स्नेहशक्तौ वियोगभासाकारायां निराभासा स्त्रीं रत्रूं रत्रैं रत्रों रत्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा च्रीं च्रूं च्रैं भगवती गुह्यकाली ज्लह्क्षट्लझव्रीं मयि लीयतां स्वाहा। पार्ष्णौं न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं परिमित शक्तौ अनुपलब्धिभासाकारायां निराभासा ह्छ्रां ह्छ्रीं ह्छ्रूं ह्छ्रैं ह्छ्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा फ्रीं फ्रूं फ्रैं भगवती गुह्यकाली ग्ल्ह्क्षम्लजक्रूं मयि लीयतां स्वाहा। गुल्फे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं संयोगशक्तौ अहङ्कारभासाकारायां निराभासा छ्क्रां छ्क्रीं छ्क्रूं छ्क्रैं छ्क्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा प्रीं प्रूं प्रैं भगवती गुह्यकाली ब्ल ट्लह्क्षस्त्रमब्रयीं मयि लीयतां स्वाहा। पादाङ्गुल्यग्रे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं संस्कारशक्तौ आशयभासाकारायां निराभासा सहलक्रीं सहलक्रूं सहलक्रें सहलक्रैं सहलक्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा थ्रीं थ्रूं थ्रैं भगवती गुह्यकाली प्लड्लहक्षमव्रयीं मयि लीयतां स्वाहा। पृष्ठे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं विवेकशक्तौ च्युतिभासाकारायां निराभासा ख्फ्रभ्रां ख्फ्रभ्रीं ख्फ्रभ्रूं ख्फ्रभ्रैं ख्फ्रभ्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा क्षीं क्षूं क्षैं भगवती गुह्यकाली तत्त्वमसि रत्रों ओं मयि लीयतां स्वाहा। ग्रीवायां न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं प्रमितिशक्तौ धर्मभासाकारायां निराभासा हलक्रीं हलक्रूं हलक्रैं हलक्रों हलक्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा स्त्रीं स्त्रूं स्त्रैं भगवती गुह्यकाली सक्लहहसखफ्रक्षीं मयि लीयतां स्वाहा। दक्षिणहस्तव्यापके न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं योगशक्तौ अधर्मभासाकारायां निराभासा फ्रथां फ्रथीं फ्रथूं फ्रथैं फ्रथौं ज्ञानविज्ञानरूपा कहलश्रूं कहलश्रैं कहलश्रौं भगवती गुह्यकाली रहफ्रसमक्षक्रीं मयि लीयतां स्वाहा। वामहस्त व्यापके न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं सुखशक्तौ असंभावितभासाकारायां निराभासा क्षब्रीं क्षब्रूं क्षब्रैं क्षब्रों क्षब्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा रभ्रीं रभ्रूं रभ्रैं भगवती गुह्यकाली हससक्लह्रीं मयि लीयतां स्वाहा। दक्षपाद व्यापके न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं हस्फ्रें स्त्रीं हस्ख्फ्रें ओं दुःखशक्तौ अदृष्टभासाकारायां निराभासा खलफ्रीं खलफ्रूं

खलफ्रैं खलफ्रों खलफ्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा रथ्रीं रथ्रूं रथ्रैं भगवती गुह्यकाली स्हव्य्रख्रक्ष्मक्रूं मयि लीयतां स्वाहा। वामपाद व्यापके न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं खफ्रें छ्रीं ह्स्फ्रें स्त्रीं ह्स्ख्फ्रें ओं प्रलयशक्तौ कैवल्यभासाकारायां निराभासा क्ष्स्त्रीं क्ष्स्त्रूं क्ष्स्त्रें क्ष्स्त्रैं क्ष्स्त्रौं ज्ञानविज्ञानरूपा रत्रीं रत्रूं रत्रैं भगवती गुह्यकाली सफक्षयक्लमस्त्रश्रीं मयि लीयतां स्वाहा। सर्वशरीर व्यापके न्यासः।

॥ १८. मन्त्र न्यासः॥

गुह्यकाली के ३२ विशिष्ट उपासक हुये, उनके मन्त्र प्रारम्भ में दिये गये हैं। न्यास के लिये अमुक अमुक स्थान पर अमुक अमुक उपासक मन्त्र से न्यास करें।

१. विध्युपास्यैकाक्षरमन्त्रेण चरणयोरङ्गुलीमूलयोर्न्यासः।
२. कामोपास्यत्र्यक्षरमन्त्रेण द्वयोः प्रपदयोर्न्यासः।
३. वरुणोपास्यत्र्यक्षरमन्त्रेण गुल्फयोर्न्यासः।
४. पावकोपास्य पञ्चाक्षर मन्त्रेण पार्ष्णिद्वयोर्न्यासः।
५. अदित्युपास्यपञ्चाक्षरमन्त्रेण जान्वोर्न्यासः।
६. शच्युपास्यपञ्चाक्षरमन्त्रेण वंक्षणयोर्न्यासः।
७. दानवोपास्यनवाक्षरमन्त्राभ्यां श्रोणियुगलयोः पिण्डद्वयोश्च न्यासः।
८. मृत्युकालोपास्यनवाक्षरमन्त्रेण स्फिग्युगलयोर्न्यासः।
९. भरतोपास्यषोडशाक्षरमन्त्रेण कुक्षियुगलयोर्न्यासः।
१०. च्यवनोपास्यषोडशार्ण मन्त्रेण पार्ष्णियुगलयोर्न्यासः।
११. हारीतोपास्यषोडशाक्षरमन्त्रेण चूचुकयोर्न्यासः।
१२. जाबालोपास्यषोडशाक्षर मन्त्रेण अंसयोर्न्यासः।
१३. दक्षोपास्यषोडशाक्षरमन्त्रेण जत्रुणो र्न्यासः।
१४. रामोपास्यसप्तदशाक्षरमन्त्रेण कक्षयोर्न्यासः।
१५. हिरण्यकशिपूपास्यषोडशाक्षर मन्त्रेण कफोणिद्वयोर्न्यासः।
१६. ब्रह्माराध्यमहासप्तदशी मन्त्रेण मणिबन्धयोर्न्यासः।
१७. वसिष्ठाराध्यसप्तदशाक्षर मन्त्रेण कराङ्गुलीमूलयोर्न्यासः।
१८. विष्णुतत्त्वाख्यपञ्चाक्षर मन्त्रेण कराङ्गुल्यग्रयोर्न्यासः।
१९. अम्बाहृदयाख्याष्टाक्षर मन्त्रेण गण्डयोर्न्यासः।
२०. रुद्रोपास्यषोडशाक्षर मन्त्रेण नासापुटयोर्न्यासः।
२१. विश्वेदेवोपास्यषट्त्रिंशदक्षर मन्त्रेण अधरोष्ठयोर्न्यासः।

२२. रावणोपास्यसप्तदशाक्षर मन्त्रेण दन्तपंक्तियुगल योर्न्यासः।

२३. रावणोपास्यषट्त्रिंशदक्षर मन्त्रेण गण्डयोर्न्यासः।

२४. अग्न्युपास्याष्टपञ्चाशदक्षर मन्त्रेण कपोलयोर्न्यासः।

२५. द्विशताधिकसप्ताशीत्यक्षरमन्त्रेण हन्वोर्न्यासः।

२६. किन्नरोपास्यशताक्षरमन्त्रेण कर्णयोर्न्यासः।

२७. शाम्भैवमन्त्रेण लोचनयोर्न्यासः।

२८. महाशाम्भव मन्त्रेण कूर्चन्यासः।

२९. तुरीयामन्त्रेण ललाटन्यासः।

३०. महातुरीयामन्त्रेण शिरसि न्यासः।

३१. निर्वाणमन्त्रेण ब्रह्मरन्ध्रेन्यासः।

३२. महानिर्वाणमन्त्रेण सर्वशरीरव्यापके न्यासः।

॥ १९. सिद्धि न्यासः॥

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं एकवक्त्रा गुह्यकाली देवता विधात्रे सृष्टिकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी पृक्ष्ल्व्रझ्र फ्रूं फां फीं फूं डम्लव्रीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं त्रिवक्त्रा गुह्यकाली देवता अनङ्गाय त्रैलोक्य मोहनकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखहक्ष्मस्फ्रों क्लीं श्रीं ह्रीं लम्लव्रीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। भ्रुवोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं त्रिवक्त्रा गुह्यकाली देवता वरुणाय जगत्स्निग्धकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी कम्लव्रीं फ्रें फ्रैं फ्रौं सम्लव्रीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। दक्षकपोले न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं पञ्चवक्त्रा गुह्यकाली देवता पावकाय दाहकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी रम्लव्रीं ग्लूं ग्लैं ग्लौं हम्लव्रीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। वामकपोले न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं पञ्चवक्त्रा गुह्यकाली देवता अदितये अखिलदेहोद्भवकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखहक्ष्मस्त्रीं ब्लूं ब्लैं ब्लौं यम्लव्रीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। नेत्रयोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं षट्वक्त्रा गुह्यकाली देवता शच्यै इन्द्रसाम्राज्यकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखहक्ष्मजूं स्हौं स्हौः सौः रलहक्षफ्रूं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। नासापुटयोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं अष्टवक्त्रा गुह्यकाली देवता दानवेभ्यः देवपराभवकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी वम्लव्रां ज्रूं ज्रैं ज्रौं रक्षफ्रभ्रधम्लूं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। कर्णयोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं नववक्त्रा गुह्यकाली देवता मृत्युकालभ्यां भूतान्तःकरणकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखहक्ष्मथ्रीं क्ष्रूं क्ष्रैं क्ष्रौं रक्षहभ्रधम्लूं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। गण्डयोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं दशवक्त्रा गुह्यकाली देवता भरताय सप्तद्वीपसाम्राज्यकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखहक्ष्मस्हौं हूं हैं हौं रक्षझ्रप्रधम्लूं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहाद्ध सृक्कयोर्न्यासः।

****

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं दशवक्त्रा गुह्यकाली देवता च्यवनाय अभिचारकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखह्रक्ष्मक्रीं हस्खफ्रें हस्खफ्रैं हस्खफ्रौं रक्षभ्रम्लूं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। हन्वोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं दशवक्त्रा गुह्यकाली देवता हारीताय योगवश्यकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखह्रक्ष्मध्रीं रह्रूं रह्रैं रह्रौं क्ष्क्लीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। कक्षयोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं दशवक्त्रा गुह्यकाली देवता जाबालाय ब्रह्मविद्याप्रकाशकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी ह्रक्ष्मलीं रक्ष्रूं रक्ष्रैं रक्ष्रौं क्षभ्लीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। जत्रुन्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं दशवक्त्रा गुह्यकाली देवता दक्षाय प्रजसर्ग कर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सलहक्षह्रूं रछ्रीं रज्रीं रक्रीं क्षब्लीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। स्कन्धयोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं दशवक्त्रा गुह्यकाली देवता रामाय रावणवधकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी ह्रक्ष्म्लक्रयूं खफछ्रूं खफछ्रैं खफछ्रौं क्ष्ग्लीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। चूचुकयोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं शतवक्त्रा गुह्यकाली देवता हिरण्यकशिपवे त्रैलोक्यैश्वर्यकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी रक्षभ्रधग्रम्लूं रफ्लूं रफ्लैं रफ्लौं क्ष्फ्लीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। पार्श्वयोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं रावक्त्रा गुह्यकाली देवता ब्रह्मणे ब्रह्माण्डोत्पत्तिकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी क्ष्लफ्लओं क्षरस्त्रूं क्षरस्त्रैं क्षरस्त्रौं क्ष्क्लूं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। हृदये न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं राववक्त्रा गुह्यकाली देवता वसिष्ठाय कामक्रोधवशीकरणकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखह्रक्ष्मफ्रों क्षरह्रीं क्षरह्रूं क्षरह्रैं क्षग्लूं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। जठरे न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं दशवक्त्रा गुह्यकाली देवता विष्णवे चतुर्दशभुवनपालनकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी ओं श्रें क्लींरक्ष्श्रीं रक्षछ्रीं रस्फ्रौं क्षह्लूं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। नाभौ न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं द्वादशवक्त्रा गुह्यकाली देवता स्वस्मै शिवमोहनकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखह्रक्ष्मह्रीं खफ्रीं रस्फ्रों झभ्रयूं खम्ह्रीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। वस्तौ न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं एकादशवक्त्रा गुह्यकाली देवता रुद्राय संहारकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सहक्षलक्षखफ्रीं क्लूं स्त्रीं फ्रं क्षफ्लूं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। लिङ्गे न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं त्रयोदशवक्त्रा गुह्यकाली देवता विश्वेदेवेभ्यः श्राद्धाधिष्ठानकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखह्रक्ष्मठ्रीं रछ्रूं रछ्रैं रछ्रौं क्षह्रीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। गुदे न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं दशवक्त्रा गुह्यकाली देवता रावणाय शिवदास्यकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी ह्क्षम्लग्रयूं रज्रूं रज्रैं रज्रौं स्हक्ष्ल क्षह्स्फ्रें ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। कटौ न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं दशवक्त्रा गुह्यकाली देवता रावणाय जगज्जयकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी क्षग्लीं रझ्रूं रझ्रैं रझ्रौं सखहक्ष्मक्लां ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। वंक्षणयोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं षोडशवक्त्रा गुह्यकाली देवता सिद्धेभ्यः कामगतिकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी रक्षब्रभ्रध्रम्लूं रप्रूं रप्रैं रप्रौं सखहक्ष्मग्लीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। उर्वोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं एकाशीतिवक्त्रा गुह्यकाली देवता सप्तर्षिभ्यः कल्पावधिस्थितिकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी क्ष्म्लूं रफ्रूं रफ्रैं रफ्रौं सखहक्ष्मक्लीं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। जान्वोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं विंशतिवक्त्रा गुह्यकाली देवता किन्नरेभ्यः संगीतकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी सखहक्ष्मश्रीं रस्त्रूं रस्त्रैं रस्त्रौं सखहक्ष्महूं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। जंघयोर्न्यासः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं फ्रें हूं स्त्रीं छ्रीं ऐं अयुतवक्त्रा गुह्यकाली देवता कालाग्निरुद्रेभ्यः महाप्रलयकर्तृत्वरूप सिद्धिदायिनी रलक्षध्रम्लूं खफ्रूं खफ्रें खफ्रौं सखहक्ष्मक्रैं ऐं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्लीं श्रीं ह्रीं ओं मम सिद्धिं प्रयच्छतु स्वाहा। व्यापके न्यासः॥

॥ इति सिद्धि न्यासः ॥

॥ २०. विराट् न्यासः॥

ओं रहक्षम्लव्र्यअखफ्छ्स्त्रह्रीं ह्लीं क्ष्लफ्लओं हस्खफ्रां क्ष्मसकह्रीं रक्रां क्लश्रमक्षह्म्लूं रधां शम्लक्लयक्षहूं खफ्रां ट्लत्लट्लक्षफ्रखफ्छ्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः जटाजूटाय ब्रह्माण्डाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं ह्ग्लीं ह्ग्लूं ह्ग्लैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ऐं शम्लह्व्र्यखफ्रैं हलूं ह्क्ष्मलीं हस्खफ्रीं रलहक्षम्लखफ्रछ्रूं रक्रीं फ्लक्ष्मकहूं रधीं शम्लक्लयक्षहूं खफ्रीं टरक्षप्लमहूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः मस्तकाय ऊर्ध्व कपालाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं क्षब्लीं क्षब्लूं क्षब्लैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

आं रक्षफ्रसमहह्व्र्यऊं ह्लैं स्हक्ष्लक्षखफ्रीं ह्सखफ्रूं रसक्षस्त्रक्ह्लह्रीं रक्रूं स्त्रहलक्षह्मव्रीं रधूं रक्षरजक्ष्मक्ष्मरह्म्लव्र्यछ्रीं खफ्रूं जसदनस्हक्षग्लूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः ललाटाय देवीलोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं क्रह्रीं क्रहूं क्रहैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ईं लगमक्षखफ्रसहूं हलौं डम्लव्रीं हस्खफ्रें जरक्षलहक्षम्लव्र्यऊं रक्रें हम्लक्क्षव्र्यलछ्रौं रधें शम्लक्लयक्षहूं खफ्रें हलमक्षकमह्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः सीमन्तदण्डाय मेरुशैलाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं क्रह्रीं क्रहूं क्रहैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ह्रीं फग्लसहमक्षब्लूं मूं सम्लव्रीं हस्खफ्रैं सरहखफ्रम्लव्रीं रक्रैं स्हलकहक्ष्रूं रधैं कमक्षव्र्यकछ्रूं खफ्रैं ट्लत्लक्षफ्रखफ्छ्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः दक्षिणभुवे अजवीथ्यै रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं हक्षम्लीं हक्षम्लूं हक्षम्लौं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

श्रीं ह्स्ख्फ्रम्लक्षव्य्रऊं श्लीं कम्लव्रीं ह्स्ख्फ्रों लह्क्षकमव्य्रह्रीं रक्रों नजरमकह्क्ष्लश्रीं रध्रों ह्क्लक्षम्लश्रूं ख्फ्रों मक्क्षह्ग्लव्लीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः वामभ्रुवे नागवीथ्यै रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं क्षुक्लीं क्ष्ख्फ्रें क्षखफ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्लीं ग्रमह्लक्षफ्रग्लैं श्लूं वम्लव्रीं ह्स्ख्फ्रौं क्षकभ्रह्लह्मव्य्रई रक्रौं (तौषितं सूक्तं) रध्रौं लमकक्षह्रीं ख्फ्रौं गपटतयजक्लूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः दक्षिणकर्णाय शिवलोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं क्ष्ज्रीं क्ष्जूं क्ष्ज्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्रीं ख्फ्रध्रव्य्रओं छ्ध्रीं श्लैं लम्लव्रीं ह्स्ख्फ्रं रहह्लव्य्रक्लीं रख्रां रमयपक्षब्रूं रप्रां लमकक्षह्रीं ह्स्फ्रां ह्लमक्षकमह्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः वामकर्णाय वैकुण्ठलोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं ह्स्त्रीं ह्स्त्रूं ह्स्त्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्रूं क्ष्मलरसहव्य्रहूं श्लौं यम्लव्रीं ह्स्ख्फ्रः सक्ष्मह्लख्फ्रह्रीं रख्रीं ख्लह्वनगक्षरछ्रीं रप्रीं गसनहक्षव्रीं ह्स्फ्रीं चमरगृक्षफ्रस्त्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः तिलकाय रोहिताय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं ह्छ्रीं ह्छ्रूं ह्छ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्रों भक्ष्लरमह्स्ख्फ्रूं फ्लीं र्ल्ह्क्षफ्रूं ह्स्ख्फ्रिं हक्षम्लव्रस्हरक्लीं र्ख्रूं क्षलहक्षमलम्लूं र्प्रूं शम्लक्लयक्षहूं ह्स्फ्रूं फ्रदमहयनहूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः नासिकायै मन्दाकिन्यै रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं छ्ह्रीं छ्हूं छ्हैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्रौं स्हछ्रक्ष्लमर्व्य्रीं फ्यूं सलहक्षहूं हसखफ्रूं क्लह्क्षलहक्षमव्य्रीं र्ख्रें रसमय क्षह्स्त्रीं र्प्रें गसनहक्षव्रीं ह्स्फ्रें छ्डतजलूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः दक्षिण चक्षुषे सूर्याय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं ह्क्लीं ह्क्लूं ह्क्लैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

स्त्रीं तफलक्षकमश्रव्रीं छ्रूं क्षलहक्षझ्रूं म्लीं हम्लक्षव्रसह्रीं रख्रैं (भौमसूक्तं) रप्रैं म्लगक्षश्रफ्रीं हसफ्रैं भलनएदक्ष्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः वामचक्षुषे चन्द्राय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं क्लह्रीं क्लहूं क्लैहैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

फ्रें (ध्वज कूटम्) छ्रैं ह्क्षम्लफ्रयूं म्लूं रहहक्लव्य्रऊं रख्रौं हक्षमकह्छ्रीं रप्रों गसनहक्षव्रीं हसफ्रों रगहलक्षम्लयछ्रूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः पक्ष्मभ्यः किरणेभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं क्लक्ष्रीं क्लक्ष्रूं क्लक्ष्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

फ्रों प्रस्हम्लक्षक्लीं छ्रौं हसफ्रौं म्लैं सफक्ष्लमहप्रक्लीं रख्रौं मब्लयटत्क्षईं र्प्रौं कप्रम्लक्षयक्लीं छत्क्षठ्नह्ल्लीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः दक्षिणगण्डाय तपोलोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं क्लरह्रीं क्लरहूं क्लरहैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

फ्रौं समब्लकक्षव्य्रऊं स्त्रूं रक्षफ्रभ्रधम्लऊं म्लौं थहरखफ्रह्मब्लूं र्ग्रां पटक्षम्लस्हखफ्रूं रफ्रां करह्रखफछ्रभ्रीं ह्लक्ष्रीं क्लसमयग्लह्फ्रूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः वामगण्डाय सत्यलोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हेंक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं ह्फ्रीं ह्फ्रूं ह्फ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

हौं भ्ररयक्ष्क्षसहफ्रीं स्त्रैं रक्षक्रम्रधम्लूं खफ्रछ्रीं क्ष्मक्लरक्षव्य्रऊं रग्रीं ह्क्षफ्रकम्लीं रफ्रीं झ्रकस्त्रक्षथीं ह्ल्क्ष्रीं ख्लभक्ष्मलव्य्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः दक्षिण कपोलाय जनलोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्म्लव्य्रऊं ह्खफ्रां ह्खफ्रीं ह्खफ्रूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

हूं ब्लक्क्षहमस्त्रछ्रूं स्त्रौं क्ष्क्लीं खफ्छ्रूं म्लक्षफ्लछ्रीं रग्रूं (शारीरं सूक्त) रफ्रूं टरयलहब्लछ्रीं हलक्षूं गमहलयक्ष्लम्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः वामकपोलाय महर्लोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं स्त्रखफ्रां स्त्रखफ्रीं स्त्रखफ्रूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

स्फ्रों रसमस्त्रह्व्य्रऊं थां क्षफ्लीं खफछ्रें त्रलहफ्रव्य्रऊं रग्रें पपक्षम्लस्हखफ्रां रफ्रें डखछ्रक्षहममफ्रीं हलक्षें खतक्लक्षमव्य्रहूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः दक्षिणकुण्डलाय हिमाद्रये रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं श्रखफ्रीं श्रखफ्रूं श्रखफ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

स्फ्रौं धशङ्लझ्रह्रीं थ्रीं क्षम्लूं खफछ्रैं सहब्रहखफ्रयीं रग्रैंसमलक्षग्लस्त्रीं रफ्रैं चफक्षलकमयह्रीं हलक्षैं ठक्ष्मलखछ्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः वामकुण्डलाय कैलासाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं क्लखफ्रीं क्लखफ्रूं क्लखफ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्षौं टफ्रकम्क्षजस्त्रीं थूं क्षक्लूं खफछ्रों छ्रम्लक्षफ्लहहम्रीं रग्रों (नक्षत्र सूक्तम्) रफ्रों स्त्रहफ्रम्रीं हलक्षों ब्लयक्षमझ्रग्लथूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः ओष्ठाय स्वर्लोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं हथीं हथूं हथैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ग्लीं ट्लव्य्रसम्क्षहछ्रीं थ्रैं रक्षभ्रम्लऊं खफछ्रौं ट्क्षलहव्य्रईं रग्रौं नमह्क्षव्य्रहूं रफ्रौं व्रतरयहक्षम्लूं हल्क्षौं मसफ्लभरक्षव्य्रहूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः अधराय भुवर्लोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं हभ्लीं हभ्लूं हभ्लैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ग्लूं ज्लकहलक्षव्रमथीं थौं रक्षस्त्रभ्रध्रम्लऊं खफछ्ररं व्रहठ्रम्लहूं रच्रां यरक्षम्लब्लीं रब्रां छ्लक्षकम्लह्रीं ट्रैं करयनप्लक्षफ्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः अधोदन्तपंक्तये दिक्पालग्रहलोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं श्रब्लूं श्रब्लैं श्रब्लौं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्लूं क्षम्लजरस्त्रीं च्रीं क्षह्रीं क्षरस्त्रां क्ष्लसहमव्रयूं रच्रीं खरसफ्रम्लछ्रयूं रब्रीं फलयक्षकयब्लूं फहलक्षीं रसमयक्षक्लह्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः ऊर्ध्वदन्तपंक्तये सप्तर्षिध्रुवलोकाय् रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं ग्लब्लीं ग्लब्लूं ग्लब्लैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ग्लौं जनहमर्क्षयह्रीं च्रूं सखहक्षमक्रीं क्षरस्त्रीं चफक्लहमक्षरूं रच्रूं (पितृसूक्तम्) रब्रूं हक्लक्षम्लश्रूं फहलक्षूं समगक्षलयब्लूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः मुखमण्डलाय रोदस्यै रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं क्षख्रीं क्षख्रूं क्षख्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ब्रच्रां लयक्षकहस्त्रव्रह्रीं च्रैं सखहक्षमजूं क्षरस्त्रूं क्लक्षमग्लव्य्रहूं रच्रें खफसहलक्षूं रब्रें मक्षब्लहकमव्य्रईं फहलक्षें खरगवक्ष्मलयव्य्रईं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः चिबुकाय द्यौर्लोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं क्रथीं क्रथूं क्रथैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्लौं पख्रसमक्षस्त्रक्रीं च्रौं सखहक्षमथीं क्षरस्त्रूं तमहलहक्षक्लफ्रग्लूं रच्रैं क्षलहक्षक्लस्त्रूं ग्लमक्षसक्लह्रीं रब्रैं टसमनहक्षमखरयूं फहलक्षैं समरगक्षहसखफ्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः गलाय ब्रह्मलोकाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं ग्लठ्रां ग्लठ्रीं ग्लठ्ररूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्लैं कहक्लक्षखफ्रीं ह्रां हम्लव्रीं क्षरस्त्रैं मथहलक्षप्रहूं रच्रौं डम्लक्षब्रखफस्त्रीं रब्रां (सितकर्वुरः) फहलक्षों मकक्षहग्लब्लीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः वक्षःस्थलाय नभसे रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मलव्य्रऊं त्रब्रां त्रब्रीं त्रब्रूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ब्लीं खरसफ्रम्लक्षच्छ्रयूं ह्रूं ओं श्रें क्लीं क्षरस्त्रां सरम्लक्षहसखफ्रीं रच्रौं च्लक्ष्मस्हव्य्रख्रीं रब्रौं (रक्तनीलः) फहलक्षौं व्य्रधरमक्षच्लीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः हाराय नक्षत्रमालायै रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊंसहलक्रां सहलक्रीं सहलक्रूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ब्लूं रलहक्षसमहफ्रछ्रीं ह्रैं हलफ्रकह्रीं क्षरस्त्रौं छ्रस्त्रौं छ्म्लक्षव्रकह्रीं रछ्रां डम्लक्षब्रखफस्त्रीं ह्रूं रभ्रां ब्लयनहक्षकश्रूं क्ष्लौं धमसरब्लयक्ष्रूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः बाहुभ्यःदिक् विदिक्चयेभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊं फ्लक्रीं फ्लक्रूं फ्लक्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ब्लैं झथक्षमफ्रश्रौं ह्रौं ह्क्षम्लक्रयूं क्षरस्त्रौं सक्लएईह्रीं रछ्रीं (तत्त्वसूक्तं) रभ्रीं नपटजक्षफ्रसफहलक्षीं रजमक्षकम्लीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः पृष्ठाय स्वर्गाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊं फ्लक्रैं फ्लक्रों फ्लक्रौं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ब्लौं ईसकहमरक्षक्रीं रफ्लीं ह्क्षम्लग्रयूं झमरयऊं ख्रहक्षमह्व्रह्रीं रछ्रूंस्हएंक्लरक्षीं रभ्रूं गसनहक्षव्रईं सफहलक्षूं समहहलक्षखफ्रस्त्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः उदराय अन्तरिक्षाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊं फ्रखभ्रां फ्रखभ्रीं फ्रखभ्रूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्रीं झक्ररहक्ष्मव्य्रऊं रफ्लूं ह्क्षम्लझ्रयूं (कौणपी) महलक्षलखफ्रव्य्रह्रीं रछ्रें लसरक्षकमव्य्रह्रीं रभ्रें क्षब्लकस्त्रीं सफलक्षैं कब्लयसमक्षख्रछ्रूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः अन्त्रेभ्यः पर्वतेभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊं फ्रथीं फ्रथूं फ्रथैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्रूं झक्ररहक्ष्मव्य्रऊं रफ्लैं ह्क्षम्लब्रयूं रस्फ्रों चफक्लह्ममक्षत्रूं रछ्रैं (नभ सूक्तम्) रभ्रैं क्षब्लकस्त्रीं सफहलक्षैं रसमयरक्षक्षग्लीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः जठराय सिन्धुभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊं ग्लख्रीं ग्लख्रूं ग्लख्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्रैं गरमश्रब्लक्षश्रीं रफ्लौं क्षहलूं रक्षश्रीं समतरक्षखफछ्रक्लीं रछ्रों (कैवल्य सूक्तम्) रभ्रों वसरझ्रमक्षव्रक्लीं ढ्रीं क्लपद्क्षमव्रईं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः प्राणेभ्यः वायुभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊं क्ष्व्रीं क्ष्व्रूं क्ष्व्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्रौं फ्रखस्हहभव्रयूं क्षां ह्क्षम्लहयूं रक्षछ्रीं दमनडतक्ष सहव्य्रईं रछ्रौं (अमृत सूक्तम्) रभ्रौं कह्मब्लजूं सफहलक्षौं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः रोमभ्यः वनस्पत्योषधीभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊं ख्फ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रह्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ख्रौं क्लमयक्षलहक्षव्रीं क्षीं ह्क्षम्लस्त्रयूं रस्फ्रौं (उत्तरानाडी) रज्रां क्लम्लक्षस्हश्रीं रम्रां ह्क्लक्षम्लश्रूं रजझ्रक्षीं नमव्लहक्षम्रग्लूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः दृष्ट्यै विद्युते रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊं ख्फ्रह्रीं ख्फ्रह्रूं ख्फ्रह्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

घ्रीं क्लमयक्षलहक्षव्रीं क्ष्रूं रक्षस्त्रभ्रध्रम्लऊं (रम्भा) नरक्षलहक्षकम्लव्य्रह्रीं रज्रीं दरजभ्रम्लफक्ष्रीं रम्रीं स्त्रह्मफ्रम्रीं रजझ्रक्षूं डपतसगमक्षब्लूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः निमेषोन्मेषाय अहोरात्राय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊं खफ्रक्षीं खफ्रक्षैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ज्रीं फनमयसक्षछ्रीं क्षैं रक्षहभ्रध्रम्लऊं (वटी) ग्लक्षकमहस्हव्य्रऊं रज्रूं तफरक्षम्लह्रौं रम्रूं म्रलक्षकह्खफ्रछ्रीं रजझ्रक्षैं क्षीं क्षें क्लें ह्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः हृदयाय चतुर्दशभुवनाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मम्लव्य्रऊं खफ्रक्लीं खफ्रक्लूं खफ्रक्लैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

****

ज्रूं फनमयसक्षछ्रीं क्ष्रौं रक्षझ्रभ्रधम्लऊं स्हौं मनटतृक्षफ्लव्र्यऊं रज्रें ह्लकझ्रक्षश्रीं रम्रें म्रलक्षकह्खफ्रछ्रीं रजझ्रक्ष्रीं कह्लजमक्षरव्र्यऊं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः चरणाभ्यां पृथिव्यै रक्षख्रूं रक्षक्ष्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं खफ्रछ्रीं खफ्रछ्रूं खफ्रछ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ज्रैं कस्हलह्खक्ष्रीं ज्रीं रक्षब्रभ्रधम्लऊं प्लैं रलहक्षडम्लव्रख्फ्रीं रज्रैं जमरब्लह्यूं रम्रैं जलयकक्षग्लफ्रूं छ्रक्षह्रां छ्रडक्षअहफ्रक्लीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः पादाङ्गुलीभ्यः सप्तपातालेभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं रख्रध्रीं रख्रध्रूं रख्रध्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ज्रौं ड्लखलहक्षख्रम ज्रूं रक्षभ्रधग्रम्लऊं प्लीं सहमृक्षलखभ्रक्लीं रज्रों (नादबैन्दवम्) रम्रों खफ्र छ्रम्लग्रक्लीं छ्रक्षह्रीं क्ष्लमरझ्ररथीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः वाचे वेदेभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं खलफ्रीं खलफ्रूं खलफ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

छ्रीं मधस्त्रकक्षलक्रीं ज्रैं क्षम्लीं ट्रीं सनटमतृक्षभ्रीं रज्रौं द्रैं जमरल्हूं रम्रौं ठक्लक्षमव्र्यहूं क्षरहूं कहलक्षश्रक्षम्लव्रईं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः नाड्यै नदीभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं व्रफ्लीं व्रफ्लैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

स्हौः व्रमक्लयसक्षक्लीं ज्रौं रसखग्रमूं ठ्रीं चखफ्लक्षकस्हख्फ्र (रझ्रां) ठफक्षथलमकस्त्रूं रश्रां (शोणपीतम्) छ्रक्षहैं नमयल्लक्षरश्रूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः कफोणिभ्यां कलाभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं ख्रस्त्रीं ख्रस्त्रूं ख्रस्त्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

(परा) सफ्रक्षक्लमखछीं रह्रीं क्षब्लीं ड्रीं स सहलक्ष ह्कमर रझ्रीं खफ्रक्ष्लब्लयह्म्रीं रश्रीं ठक्लक्षमलव्र्यहूं छ्रक्षह्रौं मब्लक्षफ्रध्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः मणिबन्धाभ्यां काष्ठाभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं फ्रम्लग्लीं फ्रम्लग्लूं फ्रम्लग्लैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्ष्रूं छज्रमकव्र्यऊं रहूं क्षग्लीं द्रीं टनतमृक्षब्लयछ्रूं रझ्रूं (महाप्रस्थान सूक्तम्) रश्रूं ग्लकमलहक्षक्रीं रक्षफ्रछां परमक्षलहक्षऐं छ्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः जंघाभ्यां मुहूर्तेभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं क्ष्लक्ष्रीं क्ष्लक्ष्रूं क्ष्लक्ष्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

प्रीं फ्ररक्षस्त्रमक्रूं रहैं क्षब्लूं ण्रीं ग्रमहलक्षखफ्रग्लैं रझ्रें भ्रमलक्षव्र्यकरह्रीं रश्रों डखछ्रक्षहममफ्रीं रक्षफ्रछ्रीं फ्रपक्षग्लप्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः ऊरूभ्यां मृतुभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं क्षस्त्रीं क्षस्त्रूं क्षस्त्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

फ्रीं रब्लकममृक्षग्लीं रह्रौं क्षग्लूं त्रीं नक्ष्मज्लहक्षखफ्रव्र्यऊं रझ्रैं ब्लहतहसचैं रश्रैं फ्लमधहक्ष क्षव्र्यऊं रक्षफ्रछ्रूं जपतरक्ष्मलयकनईं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः कट्यै पक्षाभ्यां रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं फ्रखभ्रीं फ्रखभ्रूं फ्रखभ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ब्रीं ट्लसकम्लक्षटब्रीं स्त्रीं कम्लव्रीं द्रीं चफसलहक्षमव्र्यऊं रझ्रों व्र्यक्लक्षह्म्लूं रश्रौं ब्लमक्षमफख्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रैं शक्ष्मब्लयक्लऊं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः वंक्षणाभ्यामयनाभ्यां रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं हअखफ्रक्ष्रीं हअखफ्रक्ष्रूं हअखफ्रक्ष्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

भ्रीं थलहक्षकह्मव्रयीं स्त्रूं (प्रामथम्) ध्रीं वरकजझ्रमक्षलऊं रझ्रौं साहमेवास्मि श्रौं झ्रकस्त्रक्षथीं रक्षफ्रछ्रौं व्रतहक्षह्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः प्रपदाभ्यां मासेभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्र्यऊं क्षस्हम्लव्र्यऊं क्षह्म्लव्र्यऊं क्षरस्त्रखफ्रीं क्षरस्त्रखफ्रूं क्षरस्त्रखफ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

****

म्रीं ओं तत्त्वमसि स्त्रैं खमह्रीं त्रीं ब्लक्षफ्लव्य्रछ्रीं रथां चम्लहक्षसकह्लूं रस्त्रां हक्षहब्लकमह्रश्रीं रकक्ष्रीं ज्लह्रक्षगमछ्रखफ्रीं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः स्फिग्भ्यांमब्दाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्रम्लव्य्रऊं ह्फ्रीं हफ्रूं हफ्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

द्रैं दलव्य्रक्षक्र भ्रीं स्त्रौं क्षफ्लूं घ्रीं ग्लमकक्षह्रछ्रब्रीं रथीं धग्लक्षकमह्रव्य्रऊं रस्त्रीं ब्लकक्षग्रमवरहस्त्रूं रकक्ष्रूं ब्लयरठह्रमक्ष्रूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः सर्वाङ्गाय चतुर्युगाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्रम्लव्य्रऊं क्षस्त्रीं क्षस्त्रूं क्षस्त्रैं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

भ्रूं छ्रक्लव्य्रम्क्षयूं रक्ष्रीं सखह्रक्ष्मग्लीं म्रैं पतक्षयह्रक्लखफ्रीं रथूं रक्षगम्लरह्रीं रस्त्रूं फ्रक्षब्लूं रकक्ष्रैं क्षफ्रगकह्रनमह्रूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः जिह्वात्रयेभ्यः वैश्वानरकालमृत्युभ्यः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्रम्लव्य्रऊं क्षफ्लह्रीं ख्रफ्रहं छ्रखफ्रां फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

क्ष्लौं सक्लह्र हसखफ्रक्ष्रीं कहलश्रीं सखह्रक्ष्मह्रीं हभ्रीं पतक्षयह्रक्लखफ्रीं रथें थफखक्षलव्य्रईं रस्त्रें क्रफ्ररसम्क्षक्लछ्रूं रकक्ष्रौं गसधमरयब्लूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः अन्नाय आब्रह्मस्तम्बाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्रम्लव्य्रऊं ह्रग्लौं क्षब्लौं क्रह्रौं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ब्रूं त्लमक्षफलहक्षव्रीं सखह्रक्ष्मह्रूं ब्जूं समहक्षव्य्रऊं रथैं क्लटव्य्रक्षम्लीं रस्त्रैं छ्रक्षग्लमस्त्रव्य्रऊं रह्रछ्ररक्षह्रां यरब्लमक्षहरूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः भोजनसमयाय प्रलयाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्रम्लव्य्रऊं ह्रग्लौं क्षब्लौं क्रह्रौं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

म्रां गलहक्षम्लजक्रूं प्रैं सखह्रक्ष्मस्त्रीं स्कीं जररलहक्षम्लव्य्रऊं रथों रस्त्रों शम्लक्लयक्षह्रूं रह्रछ्ररक्षह्रूं यरब्लमक्षह्रूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः पार्श्वपरीवर्ताय महाकल्पाय रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्रम्लव्य्रऊं क्रह्रौं क्षज्रौं ह्रस्त्रौं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

प्लूं हससक्लह्रीं प्रौं सखह्रक्ष्मठ्रीं द्रौं जरक्षलहक्षम्लव्य्रऊं रथों हरसकक्षम्लस्त्रीं रस्त्रौं जनथक्षकम्लव्रईं रह्रछ्ररक्षह्रैं यस्हप्लमक्षह्रूं विराट्रूपायाः गुह्यकाल्याः रक्षख्रूं रक्षक्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्रम्लव्य्रऊं क्लह्रौं ह्रखफ्रैं स्त्रखफ्रौं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

॥ २१. बीज न्यासः॥

ओं ह्रीं श्रीं चिद्बीजाय ब्रह्माण्डाय रछ्रूं रछैं रछ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। ललाटे न्यासः।

ऐं श्रीं क्लीं आत्मबीजाय आकाशाय रज्रूं रज्रैं रज्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। मुखवृत्ते न्यासः।

आं क्रों क्रौं आवापोद्वापबीजाय वायवे रङ्रूं रङ्रैं रङ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। ग्रीवायां न्यासः।

हूं क्रीं स्त्रीं ज्योतिर्बीजाय तेजसे रथ्रूं रथ्रैं रथ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। गले न्यासः।

हौं क्ष्रूं क्ष्रौं पातालबीजाय जलाय रप्रूं रप्रैं रप्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। उरसि न्यासः।

ग्लूं ग्लैं ग्लौं उदधिबीजायै पृथिव्यै रफ्रूं रफ्रैं रफ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। जठरे न्यासः।

क्लूं क्लैं क्लौं सङ्कल्पविकल्पबीजाय मनसे रश्रीं रश्रें रश्रों गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। नाभौ न्यासः।

ब्लीं ब्लूं ब्लौं कालबीजायै ओषध्यै रहूं रहैं रहौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। वस्तौ न्यासः।

फ्रौं स्फ्रों स्फ्रौं रूपबीजाय चक्षुषे रक्ष्रूं रक्ष्रैं रक्ष्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। मेढ्रे न्यासः।

स्हौं स्हौः सौः शब्दबीजाय श्रोत्राय रस्त्रूं रस्त्रैं रस्त्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। वंक्षणयोर्न्यासः।

छ्रीं फ्रें रछ्रौं ओं गन्धबीजाय घ्राणाय खफ्रूं खफ्रैं खफ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। उर्वोर्न्यासः।

ज्रूं ज्रैं ज्रौं रसबीजायै रसनायै ह्स्फ्रूं ह्स्फ्रैं ह्स्फ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। जान्वोर्न्यासः।

त्रीं त्रूं त्रैं स्पर्शबीजाय त्वच छ्रक्षहूं छ्रक्षहैं छ्रक्षहौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। जङ्घायां न्यासः।

क्रूं क्रैं क्रौं मैथुनबीजाय प्रजासर्गाय रहछ्रक्षहूं रहछ्रक्षहैं रहछ्रक्षहौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। गुल्फयोर्न्यासः।

प्रीं प्रूं प्रैं अन्नबीजाय प्राणाय रकक्ष्रूं रकक्ष्रैं रकक्ष्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। पार्ष्ण्योर्न्यासः।

फीं फूं फैं अग्निबीजाय सुवर्णाय रक्षफ्रछ्रूं रक्षफ्रछ्रैं रक्षफ्रछ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। प्रपदयोर्न्यासः।

क्रीं क्रूं क्रैं पाप बीजाय नरकाय रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्ष्रैं रजझ्रक्ष्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। पार्श्वयोर्न्यासः।

जूं सः क्ष्रूं पुण्यबीजाय स्वर्गाय खफ्रहूं खफ्रहैं खफ्रहौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। बाहुमूलयोर्न्यासः।

व्रीं व्रूं व्रैं अज्ञानबीजायै मायायै खफ्रक्ष्रूं खफ्रक्ष्रैं खफ्रक्ष्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा इत्यंसयोर्न्यासः।

म्रां म्रीं म्रूं ज्ञानबीजाय मोक्षाय खफ्रछ्रूं खफ्रछ्रैं खफ्रछ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। हन्वोर्न्यासः।

छ्रूं छ्रैं छ्रौं वासनाबीजाय जन्मने खफ्रक्लूं खफ्रक्लैं खफ्रक्लौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। सृक्कयोर्न्यासः।

श्रूं श्रैं श्रौं कर्मबीजाय मरणाय खफ्रह्लूं खफ्रह्लैं खफ्रह्लौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। गण्डयोर्न्यासः

च्रूं च्रैं च्रौं ध्यानबीजाय लयाय ह्ग्लूं ह्ग्लैं ह्ग्लौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। चक्षुयोर्न्यासः।

स्त्रूं स्त्रैं स्त्रौं सत्वबीजाय विष्णवे फ्रम्रग्लूं फ्रम्रग्लैं फ्रम्रग्लौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। श्रवणयोर्न्यासः।

थ्रूं थ्रैं थ्रौं रजोबीजाय ब्रह्मणे फ्रखभ्रूं फ्रखभ्रैं फ्रखभ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। कूर्चे न्यासः।

श्लूं श्लैं श्लौं तमोबीजाय रुद्राय ह्स्खफ्रूं ह्स्खफ्रैं ह्स्खफ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये हूं फट् स्वाहा। ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः।

ज्लीं ज्लैं ज्लौं गुह्यकालीबीजाय चराचराय क्षरस्त्रखफ्रूं क्षरस्त्रखफ्रैं क्षरस्त्रखफ्रौं गुह्यकाल्यै अनन्तशक्तिमूर्तये

****

हूं फट् स्वाहा। व्यापके न्यासः।

॥ २२. कूट न्यासः॥

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं स्हज्ह्ल्क्षम्लवनऊं रजहलक्षमऊं क्लहझकहनसक्लईं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। पादयोः न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं हक्लह्वडकखऐं क्षमब्लहकयह्रीं कसवह्लक्षम औं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। जंघायुगले न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं क्लक्षसहमव्य्रऊं ह्लसहकमक्षव्रऐं सहठ्लक्षह्मक्रीं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। जानुयुगले न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं सखक्लक्ष्मध्रयब्लीं र्क्षफ्रसमहह्वव्य्रऊं ख्फ्रध्व्य्रओं छ्ध्रीं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। उरुयुगले न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं म्लकह्लक्षरस्त्रीं (नद्क्षट्क्षव्य्रईंऊं) टक्षसन्रम्लैं क्लकह्लक्षरस्त्रीं (चहलक्षट्लहसखफ्रूं) फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। लिङ्गे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं लगम्क्षखफ्रसहूं फग्लसहमक्षब्लूँ ख्फ्रध्व्य्रओं छ्ध्रीं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। जठरे न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं रक्षखरऊं रक्ष्क्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। वक्षसि न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं क्लक्ष्मसहख्व्रीं क्ष्मलरसहव्य्रहूँ भ्रक्ष्लरमह्स्ख्फ्रूं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। अंसयुगले न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं क्षस्हम्लव्य्रऊं च्लक्रथ्ल्ह्क्षह्रीं क्षह्म्लव्य्रऊं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। हनुयुगले न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं स्हक्षम्लव्य्रईं रल्ह्क्षह्क्षक्षसक्लह्रीं क्लप्क्षह्मब्रूं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। कपोलद्वये न्यासः।.

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं क्षह्म्लव्य्रईं क्षस्हम्लव्य्रईं क्षह्म्लव्य्रईं क्षह्म्लव्य्रईं क्षस्हम्लव्य्रईं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। दन्तेषु न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं स्हछ्क्ष्लप्रव्य्रईं....... (ध्वज कूटम्) झ्रहक्ष्मस्ह्रीं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। नेत्रयुगले न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं रक्षक्रींऊं स्हक्षम्लव्य्रईंऊं स्हक्षम्लव्य्रईऊं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। कर्णयुगले न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं ख्फ्रक्लक्ष्मसभ्रीं....... (वक्त्रकूटम्) ग्लक्समझ्रस्त्रीं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। नासापुटयोर्न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं ख्लक्ष्क्षय्व्रख्फ्छ्रें ग्लकक्षह्लैं ठ्लव्रखफ्छ्रों फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। भ्रुवोर्न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं स्त्रीं रहक्षम्लव्य्रअख्फ्छ्रें स्त्रह्रीं....... (गह्वर कूटम्) शम्लह्वव्य्रख्फ्रैं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। शङ्खयोन्यासः।

****

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं सक्लहकह्रीं सक्लह्रीं छ्क्षक्ह्ल्क्षप्रौं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। शिरसि न्यासः।

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं ख्फ्छ्एंव्रहक्ष्मऋरयीं स्हक्लरक्षमजह्लखफरयूं ब्लक्क्ष हमस्त्रछ्रूं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। शिखायां न्यासः।

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं फ्रत्क्षम्ल्ह्क्षहथल्ह्क्षहूं त्रैं स्ल्ह्क्षव्ल्ह्क्ज्ल्ह्क्ष ज्क्षड्ल्ह्क्षच्ल्व्रक्ष्मऐं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। मणिबन्धयोर्न्यासः।

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं धशड्लझ्रह्रीं टफ्रकम्क्षजस्त्रीं रल्ह्क्षसमहफ्रछ्रीं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। कक्षयोर्न्यासः।

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं क्ष्मां क्रीं गरमश्रल्क्षश्रीं झक्ररहक्ष्मव्य्रऊं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। पृष्ठे न्यासः।

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं द्लड्क्षवल्र हस्ख्फ्रौं म्क्षक्रस्हख्फ्छ्रूं फ्लक्षहस्हव्य्रऊं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। कटौ न्यासः।

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं व्रमक्लयस्क्षक्लीं ड्लख्ल्ह्क्षख्रम.......मधस्त्रक्क्षलक्रीं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। दक्षकरेषु न्यासः।

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं प्ल्ह्क्षक्ष्मझ्रहच्रूं ह्ररलहसकह्लीं क्ष्क्षक्लफ्रच्क्षक्षौं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। वामकरेषु न्यासः।

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं जनहमरक्षयह्लीं लयक्षकहस्त्रव्रह्लीं पख्रसम्क्षस्त्रक्रीं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। दक्षपादादौ न्यासः।

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं थल्ह्क्षकहमव्रयीं तत्त्वमसि रत्रौं ओं जनमहरक्षयह्रीं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। वामपादादौ न्यासः।

ओं फ्रें ह्लीं छ्रीं स्त्रीं हससक्लह्रीं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षहम्लव्य्रऊं क्षहम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं फ्रें ख्फ्रें हूं फट् नमः स्वाहा। व्यापके सर्वशरीरे न्यासः।

॥ २३. क्रम न्यासः ॥

(१. दक्षपार्श्वे न्यासः)

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं हूं छ्रीं स्हौः सौः फ्रें ख्फ्रें हसफ्रें हसखफ्रें हूं फट् स्वाहा।

ओं ऐं श्रीं क्लीं स्त्रीं ह्रीं क्रों ईं स्फौं चण्डेश्वरि छ्रीं फ्रें हूं फट् स्वाहा।

ओं ह्रीं श्रीं हूं क्रों क्रीं स्त्रीं क्लीं स्हज्ह्ल्क्षम्लवनऊं क्षमक्लहहसव्य्रऊं क्लहझकहनसक्लईं हस्लक्षकमहब्रूं क्ष्लहमव्य्रऊं चण्डेश्वरि ख्रौं छ्रीं फ्रें फ्रें क्रौं क्रौं हूं फट् स्वाहा।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं क्रीं आं क्रों फ्रों हूं क्ष्रूं हस्ख्फ्रें फ्रें हरसिद्धे सर्वसिद्धिं कुरु कुरु देहि देहि दापय दापय हूं हूं फट् फट् फट् स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हस्ख्फ्रें हूं कुक्कुटि क्रीं आं क्रों फ्रें फ्रों फट् फट् स्वाहा।

ओं क्रों क्रौं हस्ख्फ्रें हूं छ्रीं फेत्कारि दद दद देहि दापय दापय स्वाहा।

ऐं स्हौः खफ्रें हस्फ्रों.......(वाडव कूटम्) एह्येहि भगवति बाभ्रवि महाप्रलयताण्डवकारिणि गगनग्रासिनि

****

ह्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें शत्रून् हन हन सर्वैश्वर्यं दद दद महोत्पातान् विध्वंसय विध्वंसय सर्वरोगान् नाशय नाशय ओं श्रीं क्लीं ह्रौं आं महाकृत्याभिचारग्रहदोषान् निवारय निवारय मथ मथ क्रों जूं ग्लूं हस्फ्रें हस्खफ्रें स्वाहा।

ओं श्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रीं फ्रें हूं फट् ब्रह्मवेतालराक्षसि क्रीं क्षूं फ्रों विष्णुशरावतंसिके योगिनि स्हौः......(अमा) महारुद्रकुणपारूढे ऐं ओं ह्रौं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ओं ह्रीं हूं ऐं श्रीं क्लीं आं क्रों ह्रौं भगवति महाघोरकरालिनि तामसि महाप्रलय ताण्डविनि चर्चरी करतालिके जय जय जननि जम्भ जम्भ महाकालि कालनाशिनि भ्रमरि भ्रामरि डमरुभ्रामिणि ऐं क्लीं स्फ्रों छ्रीं स्त्रीं फ्रें खफ्रें हस्फ्रें हस्खफ्रें फट् नमः स्वाहा।

क्रीं ओं हूं फ्रें स्त्रीं फ्रों चण्डखेचरि ज्वल ज्वल प्रज्वल निर्मांसदेहे नमः स्वाहा।

ओं ह्रीं क्लीं हूं भगवति महाडामरि डमरुहस्ते नीलपीतमुखि जीवब्रह्मगल निष्पेषिणि छ्रीं स्त्रीं फ्रें खफ्रें महाश्मशानरङ्गचर्चरीगायिके तुरु तुरु मर्द मर्द मर्दय मर्दय हस्खफ्रें स्वाहा।

ओं ह्रीं आं शबरेश्वर्ये नमः ह्रीं पद्मावति स्वाहा।

ओं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

ओं ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां मुखं वाचं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ओं स्वाहा।

ओं नमः श्वेतपुण्डरीकासनायै प्रतिपदसमरविजयप्रदायै भगवत्यै अपराजितायै ह्रीं श्रीं क्लीं फट् स्वाहा ओं।

ओं ऐं आं क्रीं श्रीं क्लींहू फ्रें खफ्रें हस्खफ्रें पिङ्गले पिङ्गले महापिङ्गले हूं हूं फट् फट् स्वाहा।

ओं ह्रीं क्षौं क्रों हं हं हं हयग्रीवेश्वरि चतुर्वेदमयि फ्रें छ्रीं स्त्रीं हूं सर्वविद्यानां मय्यधिष्ठानं कुरु कुरु स्वाहा ओं।

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं हूं छ्रीं स्हौः सौः फ्रें खफ्रें हस्फ्रें हस्खफ्रें हूं फट् स्वाहा दक्षपार्श्वे न्यासः।

(२. वामपार्श्वे न्यासः)

ओं श्रीं क्लीं ह्रीं छ्रीं फ्रें हूं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर सान्निध्यं कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं ओं नमो भगवति मातङ्गेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखरञ्जनि सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वग्रहवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकममुकं मे वशमानय स्वाहा।

ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

आं ह्रीं क्रों ओं ह्रीं श्रीं हूं क्लीं आं अश्वारूढायै फट् फट् स्वाहा।

ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रहं ग्रस ग्रस स्वाहा।

श्रीं ह्रीं क्लीं ओं ह्रीं ऐं ह्रीं ओं सरस्वत्यै नमः।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रौं क्रों वज्रप्रस्तारिणि स्वाहा।

ओं ह्रीं हूं आं क्रों स्त्रीं हूं क्षौं ह्रीं फट्।

ओं ऐं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ऐं ह्रीं स्वाहा।

हूं खें क्षः ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं मुण्डमधुमत्यै शक्तिभूतिन्यै ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट्।

ओं ऐं समरविजयदायिनि मत्तमातङ्गयायिनि श्रीं आं ह्रीं भगवति जयन्ति समरे जयं देहि देहि मम शत्रून् विध्वंसय विध्वंसय विद्रावय विद्रावय भञ्ज भञ्ज मर्दय मर्दय तुरु तुरु श्रीं क्लीं स्त्रीं नमः स्वाहा।

ओं ऐं रक्ताम्बरे रक्तस्त्रगनुलेपने महामांसरक्तप्रिये महाकान्तारे मां त्राहि त्राहि श्रीं क्लीं ह्रीं हूं फ्रें फट् स्वाहा।

ह्रीं सां सीं सूं सङ्कटादेवि सङ्कटेभ्यो मां तारय तारय श्रीं क्लीं हौं हूं आं फट् स्वाहा।

वदवद वाग्वादिनि स्हौं क्लिन्नक्लेदिनि महाक्षोभं कुरु क्ष्मां ओं मोक्षं कुरु स्हौं।

ओं ऐं क्रीं हूं ह्रीं क्लीं रक्ष्रीं रहैं रक्ष्रूं रक्क्ष्रैं रक्क्ष्रौं रक्षफ्छ्रां दृष्टि निवेशय निवेशय हूं फट् स्वाहा।

ओंश्रीं क्लीं ह्रीं छ्रीं फ्रें हूं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर सान्निध्यं कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा। वामपार्श्वे न्यासः।

(३. उदरे न्यासः)

ओं ऐं आं ह्रीं छ्रीं (अमा) हूं रजझ्रक्ष्रैं रजझ्रक्ष्रौं खफ्रक्ष्रीं खफ्रक्ष्रूं खफ्रहूँ भगवति आगच्छ आगच्छ सन्निहिता भव भव फ्रें खफ्रें हस्खफ्रौं खफ्रछ्रीं खफ्रक्लैं हूं फट् स्वाहा।

ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं फ्रें हस्फ्रें हस्खफ्रैं क्षह्लम्लव्य्रईं भगवति विच्चे घोरे श्रीकुब्जिके हस्खफ्रैं रह्रीं रह्रूं स्हौं ङ्मणनम अघोरामुखि छां छीं छूं किणि किणि विच्चे स्त्रीं हूं स्हौः पादुकां पूजयामि नमः स्वाहा।

ह्रीं श्रीं क्रों क्लीं स्त्रीं ऐं क्रौं छ्रीं फ्रें क्रीं हस्खफ्रें हूं अघोरे सिद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।

ओं श्रीं आं क्रों क्लीं हूं क्ष्रूँ हैं एकानंशे डमरुडामरि नीलाम्बरे नीलविभूषणे नीलनागासने सकलसुरासुरान् वशं कुरु कुरु जल्पिके कल्पिके सिद्धिदे वृद्धिदे छ्रीं स्त्रीं हूं क्लीं फ्रें हौं फट् स्वाहा।

ओं नमश्चामुण्डे करङ्किणि करङ्कमालाधारिणि किं किं विलम्बसे भगवति शुष्काननि ख ख अन्त्रकरावनद्धे भो भो स्कीः स्कीः कृष्णभुजङ्गवेष्टिततनो लम्बकपाले हुड्ड हुड्ड हट्ट हट्ट पट पट पताकाहस्ते ज्वल ज्वल ज्वालामुखि (निष्कं) हस्खफ्रं हस्खफ्रं हस्खफ्रं खट्वाङ्गधारिणि हा हा चट्ट चट्ट हूं हूं अट्टाट्टहासिनि उड्ड उड्ड वेतालमुखि सिकि सिकि स्फुलिङ्ग पिङ्गलाक्षि चल चल चालय चालय करङ्क मालिनि नमोऽस्तु ते स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं आं ग्लूं ईं आं म्लव्य्रवऊं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि ऐं ग्लूं अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्‌चित्त चक्षुश्रोत्रमुख गतिजिह्वा स्तम्भं कुरु कुरु शीघ्रं वशं कुरु कुरु ऐं क्रीं श्री ठः ओं ओं ओं ओं ओं (अमा) हूं फट् स्वाहा।

ह्रीं फ्रें खफ्रें क्लीं पूर्णेश्वरि सर्वान् कामान् पूरय ओं फट् स्वाहा खहल्क्ष्मरव्लईं खमस्हक्षव्लीं सखह्क्ष्मक्लीं (कालिकं कूटम्)।

ओं ह्रीं फ्रें हूं महादिगम्बरि ऐं श्रीं क्लीं आं मुक्तकेशि चण्डाट्टहासिनि छ्रीं स्त्रीं क्रीं ग्लूं मुण्डमालिनि ओं स्वाहा।

ह्रीं श्रीं क्रों क्लीं स्त्रीं ऐं क्रौं छ्रीं फ्रें क्रीं हस्खफ्रें हूं अघोरे सिद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।

क्रीं क्रीं हूं हूं हूं हूं क्रों क्रों क्रों श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं चण्डघण्टे शत्रून् जम्भय जम्भय मारय मारय हूं फट् स्वाहा।

ओं ऐं आं श्रीं हूं क्रों क्षूं क्रीं क्रौं फ्रें अनङ्गमाले स्त्रियम् आकर्षय आकर्षय त्रुट त्रुट छेदय छेदय हूं हूं फट् फट्

****

स्वाहा।

ओं ऐ आं ईं ऊं एह्येहि भगवति किरातेश्वरि विपिनकुसुमावतंसितकर्णे पादभुजगनिर्मोककञ्चुकिनि ह्रीं ह्रीं ह्रीः ह्रीः कह कह ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वसिद्धिं दद दद देहि देहि दापय दापय सर्वशत्रून् दह दह बन्ध बन्ध पच पच मथ मथ विध्वंसय विध्वंसय हूं हूं हूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ओं ह्रीं हं हां महाविद्ये विश्वं मोहय मोहय ऐं श्रीं क्लीं त्रैलोक्यमावेशय हूं फट् फट् स्वाहा।

आं ईं ऊं ऐं औं क्षेमङ्कर्ये स्वाहा।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं स्त्रीं क्रीं ख्फ्रें हूं फट् करालिनि मायूरि शिखिपिच्छिकाहस्ते ख्रौं क्लौं ब्लौं ऋक्षकर्णि जालन्धरि मां मां द्विषन्तु शत्रवो न तुदन्तु भूपतयः भयं मोचय हूं फट् स्वाहा।

ओं क्रीं फ्रें वेतालमुखि चर्चिके हूं छ्रीं स्त्रीं ज्वालामालिनि विस्फुलिङ्गवमनि महाकापालिनि कात्यायनि श्रीं क्लीं ख्फ्रें कह कह धम धम ग्रस ग्रस आं क्रो हौं नरमांसरुधिर परिपूरित कपाले (अमा) क्लौं ब्लूं हूं हूं हूं फट् फट् स्वाहा।

ह्रीं क्लीं ऐं ओं ह्स्ख्फ्रीं च्रां रह्छररक्षह्रीं रह्ख्ररक्षह्रूं र्क्षक्ष्रीं र्क्क्ष्रूं रक्षफ्रछ्रीं रक्षफ्रछ्रूं रजझ्रक्ष्रीं रजझ्रक्ष्रूं खफक्ष्रींख्फ्रक्ष्रूं भगवति महाबलपराक्रमे एह्येहि सान्निध्यं कुरु कुरु हूं हूं फट् फट् मम सर्वमनोरथान् पूरय पूरय पालय पालय सर्वोपद्रवेभ्यो मां रक्ष रक्ष स्वाहा उदरे न्यासः

(४. हृदये न्यासः)

ऐं फ्रें ओं ह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रीः ह्रः क्ष्ख्फ्रें र्क्क्ष्रैं ह्लखफ्रां ह्लखफ्रीं ब्लक्क्षहमस्त्रछ्रूं ख्फ्छ्रेंब्रह्क्ष्मत्रऋरयीं क्लक्ष्मफहसौः (गह्वरकूटम्) स्हक्लर्क्षमजह्लखफरयूं (महाकल्पस्थायिबीजं) ख्फ्रीं हसखफ्रक्ष्रैं (जगदावृत्तिः) (ब्रह्मकपलाम्) जय जय जीव जीव ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल महाभैरवशिवा सनसंविष्टे विकरालरूपधारिणि र्क्ष्रीं र्क्ष्रूं र्क्ष्रैं र्क्ष्रौं हूं फट् फट् स्वाहा।

श्रीं ह्रीं ह्ह्रीं ह्स्ख्फ्रीं क्षरहम्लव्य्रईऊं ख्फ्रें ज्र्र् क्रीं झमरयऊं र्क्ष्रीं स्त्रीं छ्रीं सिद्धिकरालि फट्।

ह्रीं हूं फ्रें छ्रीं स्हौः क्रीं क्रों फ्रें स्त्रीं श्रीं फ्रों जूं ब्लौं ब्रीं स्वाहा।

ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ज्र्क्रीं ओं ह्रीं फें चण्डयोगेश्वरि क्रीं फ्रें नमः।

श्रीं ह्रीं ऐं ब्लूं सः अं इं आं ईं राजदेवीषु राजलक्ष्मीषु भैरवीषु मारीषु ऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रें ह्सौः ओं ह्रीं हूं फ्रें राज्यप्रदे ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें उग्रचण्डे रणमर्दिनि हूं फ्रें छ्रीं स्त्रीं सदा रक्ष रक्ष त्वं मां जूं सः मृत्युहरे नमः स्वाहा।

ओं ह्रीं नमः परमभीषणे हूं हूं करङ्ककङ्कालमालिनि फ्रें फ्रें कात्यायनि व्याघ्रचर्मावृतकटि कालि कालि श्मशानचारिणि नृत्य नृत्य गाय गाय हस हस हूं हूंकारनादिनि क्रों क्रों शववाहिनि मां रक्ष रक्ष फट् फट् हूं हूं नमः स्वाहा।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं क्लीं हूं श्रीं क्ष्रीं महिषमर्दिनि श्लीं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ओं क्षीं पीं थीं भगवति (मर्यादाकूटम्) स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं चण्डहुङ्कारकापालिनि जय रङ्केश्वरि नमः स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रें स्हौं वीं ड्रौं चूं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्हक्षम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं शिवशक्ति समरसे चण्डकापालेश्वरि हूं नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं म्लकहक्षरस्त्रीं ऋं ॠं महासुवर्णकूटेश्वरि म्लकहक्षरस्त्रीं म्लहक्षस्त्रूं म्लकहक्षरस्त्रैं म्लकहक्षस्त्रौं श्रीं ह्रीं ऐं नमः स्वाहा।

ओं ऐं श्रीं ह्रीं फ्रें स्हौः क्रीं चफक्लह्रमक्ष्रूं ब्लहतहसचैं क्षब्लकस्त्रीं जयवागीश्वरि ज्ञानं प्रकटय प्रकटय बुद्धिं मे देहि देहि ह्लमक्षकमह्रीं क्लक्ष्मस्हख्ब्रीं फ्रखरक्षक्लह्रीं ऐं छ्रीं फ्रें क्लीं हूं फट् फट् स्वाहा।

ओं क्रीं क्रों फ्रें फ्रों छ्रीं ख्रौं हूं ह्स्ख्फ्रें ब्लौं खफ्रौं ह्रीं ह्रीं ब्रीं क्षूं क्रौं चामुण्डे ज्वल ज्वल हिलि हिलि किलि किलि मम शत्रून् त्रासय त्रासय मारय मारय हन हन पच पच भक्षय भक्षय क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं फट् फट् स्वाहा ह्रीं क्रों हूं फट् ओं श्रीं ह्रीं ऐं ध्रीं (वैरोचन बीजम्) हूं हूं फट् स्वाहा।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं हूं हूं हूं हूं हूंकारघोरनादवित्रासितजगत्त्रये ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रसारितायुतभुजे महावेगप्रधाविते क्लीं क्लीं क्लीं पदविन्यासत्रासित सकलपाताले श्रीं श्रीं श्रीं व्यापकशिवदूति परमशिवपर्यङ्कशायिनि छ्रीं छ्रीं छ्रीं गलद्रुधिरमुण्डमालाधारिणि घोरघोरतररूपिणि फ्रें फ्रें फ्रें ज्वालामालि पिङ्गजटाजूटे अचिन्त्यमहिमबलप्रभावे स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं दैत्यदानवनिकृन्तनि सकलसुरकार्यसाधिके ओं ओं ओं फट् नमः स्वाहा।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्रों क्रीं आं हूं क्षूं हौं (अमा) क्रौं ह्स्ख्फ्रें क्ष्रूं फ्रीं छ्रीं फ्रें क्लौं ब्लौं क्लूं स्हौः स्फ्रों ख्रौं जूं ब्रीं कालसङ्कर्षिणि हूं हूं स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं फ्रें र्फ्रें र्फ्रीं र्प्रीं र्क्रीं र्त्रों ह्स्त्रीं ह्छ्रौं क्लफ्रीं क्लफ्रूं क्लफ्रैं क्लफ्रौं ह्फ्रीं ह्फ्रूं ह्फ्रैं ह्फ्रौं फ्रम्रग्लईं फ्रम्रग्लऊं क्ष्लक्ष्रीं क्ष्लक्ष्रूं आगच्छ आगच्छ हस हस बला बला महाकुणपभोजिनि दृष्टिं निवेशय निवेशय ह्रीं हौं क्रों क्रौं स्हौः सौः श्रीं फ्रें हूं फट् फट् फट् स्वाहा इति हृदये न्यासः।

(५. ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः)

ओं ओं ओं ऐं ऐं ऐं श्रीं क्लीं ब्लैं ब्लौं ह्रीं र्क्ष्रैं र्क्ष्रौं छ्रीं जय जय जीव जीव मम सर्वमनोरथान् पूरय पूरय वर्द्धय वर्द्धय अधिष्ठानं कुरु कुरु रजझ्रक्ष्रीं रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्ष्रैं रजझ्रक्ष्रौं क्लीं स्त्रीं र्छ्रूं र्छ्रैं नमः फट् स्वाहा।

स्हक्लह्रीं सफ्रक्षक्लमखछ्रीं सक्लह्रीं ऐं क्लीं स्हौः ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं भगवति महामोहिनि ब्रह्मविष्णुशिवादिसकल सुरासुरमोहिनि सकलं जनं मोहय मोहय वशीकुरु वशीकुरु कामाङ्गद्राविणि कामाङ्कुशे स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ओं ऐं क्रीं क्लैं ख्फ्रें क्लैं फ्रें ऐं ह्रीं श्रीं त्रैलोक्यविजयायै नमः स्वाहा।

झसखग्रमऊं (चूड़ाकूटम्) ह्स्ख्फ्रें सहक्षलक्षें क्ष्लह्रमव्य्रऊं ख्फ्रक्ष्रीं ख्फ्रक्ष्रूं ख्फ्रक्ष्रैं ख्फ्रक्ष्रौं ख्फ्रह्रीं ख्फ्रह्रूं नित्यानित्यभोगप्रिये नित्योदितवैभवे आं ह्रीं श्रीं क्लीं स्हौं सौः हूं नमः स्वाहा।

ओं नमः कामेश्वरि कामाङ्कुशे कामप्रदायिके भगवति नीलपताके भगान्तिके क्लूं नमः परमगुह्ये हूं हूं हूं मदने मदनान्तकदेहे त्रैलोक्यमावेशय हूं फट् स्वाहा।

ओं ऐं आं ह्रीं परमब्रह्महंसेश्वरि कैवल्यं साधय स्वाहा।

ओं नमः प्रचण्डघोरदावानलवासिन्यै ह्रीं हूं समयविद्याकुलतत्त्वधारिण्यै महामांस रुधिरबलिप्रियायै छ्रीं स्त्रीं क्लीं धूमावत्यै सर्वज्ञतासिद्धिदायै फ्रें फट् स्वाहा।

ओं आं ऐं ह्रीं श्रीं शक्तिसौपर्णि कमलासने उच्चाटय उच्चाटय विद्वेषय विद्वेषय हूं फट् स्वाहा।

ओं क्लीं ग्लूं ह्रीं स्त्रीं हूं फ्रें छ्रीं फ्रों कामाख्यायै फट् स्वाहा।

ऐं आं हौं स्हौः क्रों जूं चतुरशीतिकोटिमूर्तये विश्वरूपायै ब्रह्माण्डजठरायै ओं स्वाहा।

ऐं ह्रीं क्लैं ख्फ्रें क्लैं फ्रें ऐं ह्रीं श्रीं त्रैलोक्यविजयायै नमः स्वाहा।

ओं ह्रीं नमः चित्राम्बरे चिन्तामणिं प्रकटय परमद्धिं दद दद जलहक्षछपग्रहसखफ्रीं क्ष्मलरसहव्य्रहं क्लक्ष्मसहख्रब्रीं छ्रीं क्लूं ख्फ्रें हूं फट् स्वाहा।

ओं क्लीं ह्रां क्लीं ब्रह्मविद्ये जगद्ग्रसनशीले महाविद्ये ह्रीं हूं ह्लीं विष्णुमाये क्षोभय क्षोभय क्लीं क्रों आं ह्लीं सर्वास्त्राणि ग्रस ग्रस हूं फट्।

ओं ह्लीं बगलामुखि सर्वशत्रून् स्तम्भय स्तम्भय ब्रह्मशिरसे ब्रह्मास्त्राय हूं क्लीं ह्लीं ओं नमः स्वाहा।

ओं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं निर्विकारस्थचिदानन्दघनरूपायै मोक्षलक्ष्म्यै अमितानन्तशक्ति तत्त्वायै क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ओं।

ऐं श्रीं ह्रीं स्हौः सौः ख्फ्रहूं ख्फ्रह्रीं रक्ष्क्षैं रक्षफ्रछ्रां रहछ्रक्षहैं रहछ्रक्षहौं रहक्ष्म्लव्य्रअख्फ्छ्रस्त्रह्रीं हस्ख्फ्रम्लक्षव्य्रऊं शम्लहव्य्रखफ्रैं खेचरीमुद्रां प्रकटय प्रकटय सान्निध्यमावेशय छ्रीं ख्फ्रें हूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा इति ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः।

(६. पादयो न्यासः)

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ओं ओं ओं ओं ओं आं आं आं आं आं ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं छ्रीं कहूं फ्रें ख्फ्रें हस्फ्रें हस्ख्फ्रें हस्ख्फ्रौं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर जय जय जीव जीव एह्येहि भगवति कापालिनि करालि खफ्रक्लीं ख्फ्रक्लूं (त्यस्त्रबीजम्) ख्फ्रह्रौं ख्फ्रछ्रें ख्फ्रछ्रौं हछ्रीं हछ्रूं ज्रम्लक्षहछ्रीं झ्रहव्रक्ष्मसह्रीं खफछ्रएव्रहक्ष्मऋरयीं रहक्ष्म्लव्य्रअखफछ्रस्त्रह्रीं फ्रस्त्रीं (केतुबीजम्) क्रहूं रख्रधूं हूं हूं हूं फट् फट् फट् स्वाहा।

ऐं ह्रीं श्रीं हूं क्लीं फ्रें छ्रीं स्त्रीं हस्ख् फ्रें भीमादेवि भीमनादे भीमकरालि महाप्रलयचण्डलक्ष्मि सिद्धेश्वरि सक्लह्रीं स्हक्ह्लह्रीं सक्लहकह्रीं महाघोरघोरतरे भगवति भयहारिणि द्विषतः निर्मूलय निर्मूलय विद्रावय विद्रावय उत्सादय उत्सादय महाराज्यलक्ष्मीं वितर वितर देहि देहि दापय दापय ख्फ्रें हस्फ्रें (अमा) स्हौः आं क्रीं क्षौं ब्लूं हौं जय जय राक्षसक्षयकारिणि ओं ह्रीं हूं ठः ठः ठः फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ऐं ह्रीं आं क्रों सौः क्लीं महाभोगिराजभूषणे सृष्टिस्थितिप्रलयकारिणि हूंहूंकारनादभूरिदारुणि भगवति हाटकेश्वरि ग्लूं ब्लूं भ्रूं द्रैं श्रीं ऐं फ्रों फ्रें ख्फ्रें मम शत्रून् भारय मारय बन्धय बन्धय मर्दय मर्दय पातय पातय धनधान्यायुरारोग्यैश्वर्य देहि देहि दापय दापय ठ्रीं ध्रीं थ्रीं प्रीं हौं आं क्रों ऐं ओं नमः स्वाहा।

ओं ऐं श्रीं ह्रीं हूँ फ्रें ख्फ्रें हस्फ्रें हसखफ्रें स्फ्रें प्रविश संसारं महामाये स्फ्रेंफट् ब्रह्मशिरोनिकृन्तनि विष्णुतनुनिर्दलिनि (श्रद्धा) जम्भिके (पेटी) स्तम्भिके छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि दह दह मथ मथ पञ्चशवारूढे पञ्चागमप्रिये ग्लूं ब्लूं ख्रौं श्रीं क्लीं स्फ्रें पञ्चपाशुपतास्त्रधारिणि हूं हूं हूं फट् फट् स्वाहा।

ऐं आं ओं नमः परमशिवविपरीताचारकारिणि ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं स्त्रीं महाघोरविकरालिनि खण्डार्धशिरोधारिणि भगवत्युग्रे फ्रें ख्फ्रें हस्फ्रेंहस्ख्फ्रेंस्हक्ष्म्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रईं हूं ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

आं ह्रीं हूं क्लीं श्रीं ऐं ओं जूं सः फ्रें ख्फ्रें क्षज्रीं क्षज्रूं क्षज्रैं क्षज्रौं (त्र्यस्त्र) ख्फ्रक्षैं ख्फ्रक्षैं ख्फ्रछ्रैं ख्फ्रछ्रैं हग्लैं हग्लैं (सान्तम्) वज्रचण्डि महाकापालिनि कपालमालिनि कापालिकाचार प्रवर्तिनि तुरु तुरु धम धम

गगनग्रासिनि महामाये महामायाप्रवर्तिनि सर्वैश्वर्यं देहि देहि दापय दापय सर्वापदं निर्मूलय निर्मूलय क्रों क्रौं जूं सः स्हौः स्हौं हूं फट् स्वाहा॥

ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं हूं छ्हीं छ्हूं छ्हैं छ्हौं ह्थूं ह्थैं ह्थौं स्ह्ल्क्रीं स्ह्ल्क्रूं स्ह्ल्क्रैं स्ह्ल्क्रौं ज्वालेश्वरि ज्वलज्ज्वलनवासिनि चिताङ्गारहारिणि मृतचेलावृतशरीरे ब्रह्मास्त्रं प्रकटय शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय सर्वान् कामान् पूरय पूरय हूं ह्रीं फट् स्वाहा।

आं ह्रीं क्रों स्हौः फ्रों ग्लूं ब्लौं हूं कुलेश्वरि कौलिकानां सर्वसमयलाभं कुरु द्विषदो जहि जहि नमः स्वाहा।

ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कालेश्वरि सर्वमुखस्तम्भिनि सर्वजनमनोहरि सर्वजनवशङ्करि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्री पुरुषाकर्षिणि बन्दिशृङ्खलां त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रून् जम्भय जम्भय द्विषान् निर्दलय निर्दलय मोहनास्त्रेण सर्वान् स्तम्भय स्तम्भय द्वेषिणः उच्चाटय उच्चाटय सर्ववश्यं कुरु कुरु शीर्षं देहि देहि कालरात्र्यै कामिन्यै गणेश्वर्यै नमः।

ओं ओं ओं ऐं ऐं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं छ्रीं हूं फ्रें खफ्रें ह्स्फ्रें ह्स्खफ्रें भ्रामरि भ्रमराकारधारिणि जय जय जीव जीव स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुरज्ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल भीषणाकारधारिणि भगवति प्रचण्डतर दावानलज्वलितवक्त्रे हूं हूंकार नादिनि देवेशि खेचरीचक्रवासिनि ख्फ्रीं ख्फ्रूं ह्स्फ्रीं ह्स्फ्रूं क्षक्लीं क्षक्लूं क्लख्फ्रीं क्लख्फ्रूं ह्क्लीं ह्क्लूं क्लक्षीं क्लक्ष्रूं फ्रखभ्रें फ्रखभ्रैं मम शत्रून् ग्रस ग्रस भक्षय भक्षय साम्राज्यं देहि देहि दापय दापय हूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ऐं ओं ह्रीं हूं क्लीं स्त्रीं ग्लूं श्रीं फ्रें खफ्रें छ्रीं ख्रौं श्मशानकापालिनि खेचरी सिद्धिदायिनि परापरकुलचक्रनायिके क्रों क्रौं क्षों फ्रौं स्फ्रौं त्रिशूलझङ्कारिणि डामरमुखि वज्रशरीरे रफ्रें रफ्रें नमः स्वाहा।

ओं ऐं छ्रीं स्त्रीं ह्रीं फ्रें श्रीं क्लीं खफ्रें हूं क्लफ्रीं ह्स्खफ्रें खफ्रक्ष्रौं खफ्रछ्रौं खफ्रहौं खफ्रहौं भगवति रक्तदन्तिके लेलिहानरसनाभयानके घोरतरदशनचर्चितब्रह्माण्डे चण्डयोगेश्वरीशक्तितत्त्वमहिते रहछ्रक्षहैं रहछ्रक्षहौं छ्रक्षहौं छ्रक्षहौं रक्षफ्रछ्रौं प्रचण्डचण्डिनि महामारीसहायिनि चामुण्डायोगिनी डाकिनीशाकिनी भैरवीमातृगणमध्यगे जय जय कह कह हस हस प्रहस प्रहस जृम्भ जृम्भ तुरु तुरु धाव धाव श्मशानवासिनि शववाहिनि नरमांसभोजिनि कङ्कालमालिनि रक्षफ्रछ्रां रक्षफ्रछ्रूं रजझ्रक्षीं रजझ्रक्षूं ह्क्षफ्लीं नमो नमः स्वाहा ओं हूं हूं हूं फट् फट् फट् स्वाहा।

ओं सहठ्लक्षह्मक्रीं नमश्चण्डातिचण्डे शाम्बरि कालवञ्चनि महाङ्कुशे रक्षम्लह्कसछव्य्रऊं पातालनागवाहिनि गगनग्रासिनि ब्रह्माण्डनिष्पेषिणि ल्क्षें ल्क्षें ल्क्षें स्वाहा हीं हीं हीं हूं हूं हूं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं छ्रीं स्त्रीं फ्रें खफ्रें हसफ्रें हसखफ्रें रक्ष्रीं जर्क्रीं र्ह्रीं भगवति महामारि जगदुन्मूलिनि कल्पान्तकारिणि शिरोनिविष्ट वामचरणे दिगम्बरि सगय कुलचक्रचूडालये मां रक्ष रक्ष त्राहि त्राहि पालय पालय प्रज्वलद्दावानल ज्वालाजटालजटिले..........(त्रिगुणं) नमः स्वाहा।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं छ्रीं फ्रें क्लफ्रीं हसखफ्रें हूं हौं क्षौं फ्रौं ग्लूं ब्लौं क्षौं स्हौः स्हौं सौः फ्रीं र्क्षीं र्ज्रीं हस्फ्रैं हस्फ्रौं क्लखफ्रीं ह्खफ्रां फ्रम्रग्लऊ क्ष्लक्ष्रीं फ्रखभ्रीं ह्स्खफ्रक्ष्रीं खफ्रीं ह्स्खफ्रूं ह्स्खफ्रक्ष्रैं......... (ब्रह्मकपालम्)......... (महाकल्पस्थायिबीजम्) रक्तमुण्डेश्वरि ओं फ्रें सर्वाभयप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे सर्वसिद्धिं दद दद मृत्युं हर हर मृत्युञ्जयगृहिणि नमः स्वाहा।

ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं आं क्रों स्हौः ......(परा?) ख्रौं ब्लौं हैं महाडाकिन्यै निपीतबालनररुधिरायै त्वगस्थिचर्माविष्टितायै

महाश्मशानधावन प्रचलितपिङ्गजटाभारायै क्षौं थौं चौं फ्रौं ख्रौं ममाभीष्टसिद्धिं देहि देहि वितर वितर हूं फ्रें डाकिनि काकिनी शाकिनि राकिनि लाकिनि हाकिनि नररुधिरं पिब पिब महामांसं खाद खाद ओं श्रीं ह्रीं क्लीं हूं फ्रें छ्रीं स्त्रीं फट् फट् स्वाहा।

ओं आं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्त्रीं छ्रीं फ्रेंखफ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रीं र्क्षां र्क्षीं भगवति महाभोगभासुरे भीमविकरालिनि कालि कापालिनि गुह्यकालि घोररावे विकटदंष्ट्रे सम्मोहिनि शोषिणि करालवदने मदनोन्मादिनि ज्वालामालिनि शिवासने इमं बलिं प्रयच्छामि गृहण गृहण खाद खाद मम सिद्धिं कुरु कुरु मम शत्रून् नाशय नाशय नाशय क्लेदय क्लेदय मारय मारय ग्लापय ग्लापय स्तम्भय स्तम्भय उच्चाटय उच्चाटय हन हन विध्वंसय विध्वंसय त्रासय त्रासय पिब पिब विद्रावय विद्रावय पच पच छिन्धि छिन्धि शोषय शोषय त्रुट त्रुट मोहय मोहय उन्मूलय उन्मूलय भस्मीकुरु भस्मीकुरु जृम्भय जृम्भय स्फोटय स्फोटय भक्ष भक्ष विभ्रामय विभ्रामय हर हर विक्षोभय विक्षोभय तुरु तुरु दम दम मर्दय मर्दय पातय पातय सर्वभूतवशङ्करि सर्वजनमनोहारिणि सर्वशत्रुक्षयङ्करि ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ब्रह्मरूपिणि कालि कापालि महाकापालि खफ्रक्ष्रूं खफ्रक्ष्रैं ख्फ्रह्रीं रख्फ्रह्रीं रजझ्रक्ष्रैं राज्यं मे देहि देहि किलि किलि क्रैं यमघण्टे हिलि हिलि मम सर्वाभीष्टं साधय साधय संहारिणि सम्मोहिनि कुरुकुल्ले किरिकिरि हूं हूं फट् फट् स्वाहा। इति पदयोर्न्यासः।

॥ २४. धातु न्यासः॥

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें मन्त्रमयविग्रहायाः विभूतिगुह्यकाल्याः ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं ''दक्षिणपादाङ्गुल्यग्राय'' खफ्रें डाकिन्यै ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें मन्त्रमयविग्रहाया विभूतिगुह्यकाल्याः ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं ''वामपादाङ्गुल्यग्राय'' केकराक्ष्यै ओं फ्रें ह्रीं छ्री हूं स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा।

एवंरीत्या सप्तबीजानि मन्त्रविग्रहाया विभूतिगुह्यकाल्याः ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं इत्यादि सर्वत्रैव प्रदाय पुनः डेविभक्तियुतं शरीराङ्गवाचकपदं यथानिर्दिष्टं देयम्। अथ चैकैकं बीजं तद्बोधकपदस्य च चतुर्थ्येकवचोरूप दत्वा एकादशाक्षर मन्त्रनिवेशः कर्तव्यः षष्ट्यधिकशतसंख्याकान्यङ्गानि शरीरस्य तावन्ति मन्त्रनिर्माणानि कार्याणि दिक्प्रदर्शनार्थ मन्त्रद्वयमूर्ध्व प्रदर्शितम्।

॥ २५. तत्त्वन्यासः॥

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं पृथिवीतत्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं क्लीं श्रीं हौं खफ्रें हस्फ्रें गुह्यकालि प्रसीद क्षह्रम्लव्य्रऊं फट् स्वाहा। गुल्फयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं आपस्तत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं आं फ्रों फ्रौं ग्लूं ग्लौं गुह्यकालि प्रसीद स्ह्क्षम्लव्य्रऊं फट् स्वाहा। जङ्घयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं तेजस्तत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं ईं ब्लीं ब्लूं ब्लैं ब्लौं गुह्यकालि प्रसीद क्ष्स्ह्म्लव्य्रऊं फट् स्वाहा। जान्वोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं वायुतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं ख्रौं स्हौः सौः जूं सः गुह्यकालि प्रसीद खह्रम्लव्य्रइं फट् स्वाहा। ऊर्वोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं आकाशतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं प्रीं प्रूं फ्रीं फ्रूंक्ष्रूं गुह्यकालि प्रसीद क्षस्हम्लव्य्रईं क्षह्रम्लव्य्रईं फट् स्वाहा। वंक्षणयोर्न्यासः

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं गन्धतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं स्हौं झम्रयूं रस्फ्रौं रक्ष्श्रीं रक्ष्छ्रीं गुह्यकालि प्रसीद क्षह्रम्लव्य्रईं क्षस्हम्लव्य्रईं फट् स्वाहा। गुह्ये न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं रसतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं ख्फ्रीं ख्फ्रूं ख्फ्रैं ख्फ्रों ख्फ्रौं गुह्यकालि प्रसीद स्हक्षम्लव्य्रईं फट् स्वाहा। वस्तौ न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं (रूप) चक्षुस्तत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं थ्रां थ्रीं थ्रूं थ्रैं थ्रौं गुह्यकालि प्रसीद क्षस्हम्लव्य्रईं फट् स्वाहा। नाभौ न्यासः

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं स्पर्शतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं ह्स्ख्फ्रां ह्स्ख्फ्रीं ह्स्ख्फ्रूं ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रैं गुह्यकालि प्रसीद खफसहक्ष्लब्रूँ क्रौं सहकक्ष्क्षह्रमव्य्रऊं फट् स्वाहा। जठरे न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं शब्दतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं ह्स्फ्रीं ह्स्फ्रूं ह्स्फ्रैं ह्स्फ्रों ह्स्फ्रौं गुह्यकालि प्रसीद सकह्लमक्ष्खब्रूं फट् स्वाहा। पार्श्वयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं आत्मतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं रप्रीं रप्रूँ रप्रैं रप्रों रप्रौं गुह्यकालि प्रसीद स्हक्लह्रीं फट् स्वाहा। हृदये न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं जीवात्मतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रूं क्ष्रैं क्ष्रौं गुह्यकालि प्रसीद सक्ष्लहमयव्रूं फट् स्वाहा। स्कन्धौ न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं परमात्मतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं रफ्रीं रफ्रूं रफ्रैं रफ्रों रफ्रौं गुह्यकालि प्रसीद लगमक्षखफ्रसह्रूँ फट् स्वाहा। जत्रुणोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं सत्तातत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं रह्रां रह्रीं रह्रूं रह्रैं रह्रौं गुह्यकालि प्रसीद फग्लसहमक्षब्लूं फट् स्वाहा। शिरायां न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं विद्यातत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं रस्त्रीं रस्त्रूं रस्त्रैं रस्त्रों रस्त्रौं गुह्यकालि प्रसीद खफ्रधव्य्रओं छ्रध्रीं फट् स्वाहा। हन्वोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं निवृत्तितत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं रक्ष्रां रक्ष्रीं रक्ष्रूं रक्ष्रैं रक्ष्रौं गुह्यकालि प्रसीद मफ्रलह्लह्ख्फ्रूं फट् स्वाहा। कपोलयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं प्रकृतितत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं स्फ्ह्ल्क्षीं स्फ्ह्ल्क्षूं स्फ्ह्ल्क्षैं स्फ्ह्ल्क्षों स्फ्ह्ल्क्षौं गुह्यकालि प्रसीद भक्ष्लरमह्स्ख्फ्रूं फट् स्वाहा। सृक्कण्योर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं महतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं छ्र्क्षह्रां छ्र्क्षह्रीं छ्र्क्षह्रूं छ्र्क्षह्रैं छ्र्क्षह्रौं गुह्यकालि प्रसीद क्ष्मलरसहव्य्रह्रूँ फट् स्वाहा। ओष्ठे न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं अहङ्कारतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं क्षफ्लह्रीं खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रह्रैं खफ्रह्रौं गुह्यकालि प्रसीद म्ररयक्ष्क्षसह्फ्रीं फट् स्वाहा। अधरे न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं पञ्चतन्मात्रातत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं रह्छ्रक्षह्रां रह्छ्रक्षह्रीं रह्छ्रक्षह्रूं रह्छ्रक्षह्रैं रह्छ्रक्षह्रौं गुह्यकालि प्रसीद फट् स्वाहा। ऊर्ध्वदन्तेषु न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं भावप्रपञ्चतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं खफ्रक्ष्रां खफ्रक्ष्रीं खफ्रक्ष्रूं खफ्रक्ष्रैं खफ्रक्ष्रौं गुह्यकालि प्रसीद ब्लक्क्षहमस्त्रछ्रूं फट् स्वाहा। अधोदन्तेषुन्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं अभावप्रपञ्चतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं रक्क्ष्रां रक्क्ष्रीं रक्क्ष्रूं रक्क्ष्रैं रक्क्ष्रौं गुह्यकालि प्रसीद ख्फ्छ्रएव्रह्क्ष्मत्रररयीं फट् स्वाहा। गण्डयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं अद्वैततत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं खफ्रछ्रां खफ्रछ्रीं खफ्रछ्रूं खफ्रछ्रैं खफ्रछ्रौं गुह्यकालि प्रसीद स्हक्लरक्षमजह्लखफरयूं फट् स्वाहा। नासापुटयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं वासनातत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं रक्ष्फ्रछ्रां रक्ष्फ्रछ्रीं रक्ष्फ्रछ्रूं रक्ष्फ्रछ्रैं रक्ष्फ्रछ्रौं गुह्यकालि प्रसीद शम्लह्व्य्रखफ्रैं फट् स्वाहा इति नेत्रयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं प्रज्ञातत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं खफ्रक्लां खफ्रक्लीं खफ्रक्लूं खफ्रक्लैं खफ्रक्लौं गुह्यकालि प्रसीद रहक्ष्म्लव्य्रअख्फ्छ्स्त्रह्रीं फट् स्वाहा। कर्णयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं प्रमाणतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं रजझ्रक्ष्रां रजझ्रक्ष्रीं रजझ्रक्ष्रूं रजझ्रक्ष्रैं रजझ्रक्ष्रौं गुह्यकालि प्रसीद धशड्लझ्रह्रीं फट् स्वाहा इति भ्रुवोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं परमार्थतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं खफ्रह्रां खफ्रह्रीं खफ्रह्रूं खफ्रह्रैं खफ्रह्रौं गुह्यकालि प्रसीद ट्फ्रकम्क्षजस्त्रीं फट् स्वाहा। मणिबन्धयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं आभासतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं ह्ग्लां ह्ग्लीं ह्ग्लूं ह्ग्लैं ह्ग्लौं गुह्यकालि प्रसीद क्षस्हम्लव्य्रऊं क्षह्मल्व्य्रऊं फट् स्वाहा। कूर्चयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं प्रतिबिम्बतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं क्ष्ज्रां क्ष्ज्रीं क्ष्ज्रूं क्ष्ज्रैं क्ष्ज्रौं गुह्यकालि प्रसीद क्षह्म्लव्य्रऊं क्षस्हम्लव्य्रऊं फट् स्वाहा। भाले न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं सूक्ष्मतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं ह्स्त्रां ह्स्त्रीं ह्स्त्रूं ह्स्त्रैं ह्स्त्रौं गुह्यकालि प्रसीद ईसकहमरक्षक्रीं फट् स्वाहा। शिरसि न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं कैवल्यतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं ह्छ्रां ह्छ्रीं ह्छ्रूं ह्छ्रैं ह्छ्रौं गुह्यकालि प्रसीद झक्ररहक्ष्मव्य्रऊं फट् स्वाहा। शिखायां न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं चैतन्यतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं ह्खफ्रां ह्खफ्रीं ह्खफ्रूं ह्खफ्रैं ह्खफ्रौं गुह्यकालि प्रसीद लयक्षकहस्त्रव्रह्रीं फट् स्वाहा। बाह्वोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं प्रबोधतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं फ्रम्रग्लीं फ्रम्रग्लूं फ्रम्रग्लैं फ्रम्रग्लों फ्रम्रग्लौं गुह्यकालि प्रसीद जनहम्रक्षयह्रीं फट् स्वाहा। पादयोर्न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं आशयतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं फ्रखभ्रां फ्रखभ्रीं फ्रखभ्रूं फ्रखभ्रैं फ्रखभ्रौं गुह्यकालि प्रसीद थ्ल्हक्षक्हमव्रयीं फट् स्वाहा। सर्वशारीर न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं आनन्दतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं हस्खफ्रक्ष्रां हस्खफ्रक्ष्रीं हस्खफ्रक्ष्रूं हस्खफ्रक्ष्रैं हस्खफ्रक्ष्रौं गुह्यकालि तत्त्वभसि प्रसीद रत्रों ओं फट् स्वाहा। व्यापके न्यासः।

ओं ऐं ह्रीं छ्रीं फ्रें स्त्रीं हूं ब्रह्ममयतत्त्वे अशेषकर्माणि संशमयाम्यपनयामि भवबन्धं खफ्रां खफ्रीं खफ्रूं खफ्रैं खफ्रौं गुह्यकालि प्रसीद सफलक्षयक्लमस्त्रश्री फट् स्वाहा इति व्यापके न्यासः।

|| अथ लघुषोढा न्यासः ||

|| १. उग्रमातृकान्यासः ||

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें अं आं महाचण्डयोगेश्वरि अङ्गुष्ठाय नमः।
ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें इं ईं परमप्रचण्डयोगेश्वरी तर्जन्यं स्वाहा।
ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें उं ऊं नरमुण्डमहामारी योगेश्वरी मध्यमायै वषट्।
ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें एं ऐं महामाया योगेश्वरी अनामिकायै हूं।
ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें ओं औं उन्मत्तचण्डोग्रयोगेश्वरी कनिष्ठायै वौषट्।
ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें अं अः कालरात्रियोगेश्वरी करपृष्ठाय फट्। इति करषडङ्गन्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ओं नमः परमशिवतमविपरीताचारमहाभैरव काल निसूदन कालमुख खाहि खाहि भुङ्क्ष्व भुङ्क्ष्व कालि कालि महाकालि महाकालि हां हां हां हासिनि रह्रीं हं हां ह्रीं हृदयाय नमः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें कं खं गं घं ङं ओं नमः सदाशिवाय भगवते हां एह्येहि परमात्मने सर्वशत्रुनिसूदनाय (तद्ब्रह्म शिरसे स्वाहा) परमव्योमवासिनि खं खं खं व्योमरूपे सत्ये ध्रुवे गुह्ये (वाविधानी) क्षौं क्ष्रूं ह्रीं ब्रह्मशिरसे स्वाहा।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें चं छं जं झं ञं चण्डकापालिनी हूं हूं हूं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हिक्ति हिक्ति छिक्ति छिक्ति भिक्ति भिक्ति योजय योजय ग्रन्थाग्रं गृहण गृहण नमः जम्भिते स्तम्भिते मोहिते चर्चिते जम्भय जम्भय परमचण्डे शीघ्रमानय ओं ह्रीं पूं हलां (लागुड्म्) भगवच्छक्तयै ह्वं शिखायै वषट्।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें टं ठं डं ढं णं ओं ओं ओं भीमरावे भगवति एह्येहि मातर्देवि तर तर तुरु तुरु प्रस्फुर प्रस्फुर (व्योष) ह्रीं मेघमाले महामारीश्वरि विद्युत्कटाक्षे क्षपितदुरिते अरूपे बहुरूपे विरूपे ज्वलितमुखि चण्डेश्वरि हट्ट हट्ट वज्रायुधधारिणि हन हन हूं डामरमुखि हसफ्रां हसफ्रीं वज्रशरीरे कवचाय हूं।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें तं थं दं धं नं वज्रमध्ये फट् फट् फट् ओं हूं हूं फट् महाकिरातचाण्डाले अवतर अवतर आवाहनमुखि (मौञ्जबलं) ब्लूं म्लूं वज्रसारमुखे ह्रीं जहि जहि कालि कालि कालविध्वंसिनि हूं (स्तोकम्) रध्रों फट् नेत्रत्रयाय वौषट्।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें पं फं बं भं मं आगच्छ आगच्छ हूं हूं हूं महाचक्रराजेश्वरि तर तर रों लक्ष्ें ज्रैं ज्वल ज्वल महारौद्रे रौषिकानलं पत पत तापय तापय कट्ट कट्ट हट्ट हट्ट घोराचारे महाघोरे वाडवाग्निं ग्रस ग्रस ज्वालय ज्वालय रफ्रैं (कुलधरम्) (प्रमीतम्) अस्त्राय फट्।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ओं महाबलाय नमोरुद्राय हसखफ्रें रह्रीं ह्रीं

हूं फट् महाचण्डयोगेश्वरि श्रीपादुकां पूजयामि गलाधोनाभिपर्यन्त व्यापक न्यासः।

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङंचं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं। आब्रह्मरन्ध्रपादान्तव्यापक न्यासः।

॥ २. कालीकुल क्रम न्यासः॥

ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं ख्फ्रें ओं खफ्रें ह्रीं ......क्ष्रूं फां क्ष्रूं फीं काली श्री पादुकायै नमः।

अत्र त्रयोदशतमेन वर्णेन हल्युतस्य स्वरस्यैकस्य सर्वत्र यथायथं ग्रहणमचला मातृकास्थानानि चात्रानुसन्धाय न्यसनीयानि।

सर्वशेषे तु चतुर्दशतमबीजतः पूर्व ओं फ्रें खफ्रें इति बीजत्रयमधिकमभिधेयम्।

सर्वाङ्गव्यापकस्य न्यासे विशेषोऽस्ति योऽत्र निर्दिश्यते ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं क्लीं खफ्रें ओं फ्रें खफ्रें फां फीं क्ष्रूँ अं इत्यारभ्य षोडशस्वराः कं इत्यारभ्व सर्वाणि हल्वर्णानि सानुस्वाराणि निवेशनीयानि पुनश्च महागुह्यकाल्यै मात्रे प्रपञ्चरूपायै महायोगिनि डाकिनि शबरि श्रीपादुकायै नमः एतेन वारत्रयं सर्वाङ्ग व्यापकं न्यसनीयम्।

अथ ६७१ तम श्लोकादारम्य ६७७ तम श्लोकानामर्थः नैव परिज्ञातः अत एव सुधीभिरत्र विचारणीयम्।

॥ ३. पीठ न्यासः॥

ओं ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं अं आं इं सिद्धियोनि महाराविणीपीठे सिद्धिकालि महाचर्चिके परातिपरगुह्यमङ्गले शक्तिश्रीपादुकायै नमः। भ्रूमध्ये न्यासः।

ओं ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं इं उं ऊं ओड्डियानमहापीठे महाचण्डयोगेश्वरी कालकालि छिप्पिणि शङ्खिनि मोहिनि गुह्यातिगुह्यपरापरशक्ति श्रीपादुकायै नमः। वक्त्रमध्ये न्यासः।

ओं ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं ऋं ॠं लृं जालन्धरमहापीठे महाचण्डकापालिनी कालान्तककाली धीवरी गुह्यान्तरान्तरा शक्ति श्रीपादुकायै नमः। ललाटे न्यासः।

ओं ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं लॄं एं ऐं कामरूपमहापीठे महाचण्डराविणी यमान्तककाली फेत्कारिणी असन्धानातिगुह्याचिन्त्या शक्ति श्रीपादुकायै नमः। मुखे न्यासः।

ओं ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं ओं औं पूर्णागिरिमहापीठे पुलिन्दी महाचण्डरोषिणी काली कालवञ्चनीपरापरगुह्यातिगुह्य शक्ति श्रीपादुकायै नमः। विशुद्धौ न्यासः।

ओं ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं अं अः प्रयागमहापीठे वेश्या ब्रह्मवती महाचण्डदण्डिनि अतिगुह्यरहस्यशक्ति श्रीपादुकायै नमः। अनाहतचक्रे न्यासः।

ओं ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं कं खं गं घं ङं वाराणसी महापीठे रुद्रवती महाचण्डशूलिनी शौण्डिनी गुह्यातिगुह्ययोगिनी शक्ति श्रीपादुकायै नमः। मणिपूरचक्रे न्यासः।

ओं ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं चं छं जं झं ञं कोलापुरमहापीठे कैवर्ती गुहेशी महाचण्डातिवेगिनी शक्ति श्रीपादुकायै नमः। स्वाधिष्ठानचक्रे न्यासः।

ओं ख्फ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं टं ठं डं ढं णं अट्टहासमहापीठेखड्गकी नारायणी चक्रिणी गुह्यकालीशक्ति

****
श्रीपादुकायै नमः। मूलाधारे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं तं थं दं धं नं जयन्तीमहापीठे बन्धकी घोणवती महाचण्डाङ्कुशवती गुह्यातिगुह्यपातालचारिणी शक्ति श्रीपादुकायै नमः। कुण्डलिनीचक्रे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं पं फं बं भं मं हस्तिनापुरमहापीठे रजकी शक्रवती महाचण्डवज्रिणी अतिगुह्याशक्ति श्रीपादुकायै नमः। उरसि न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं यं रं लं वं एकाम्रनाथमहापीठे चामुण्डाशिवदूति महाचण्डकर्तरीकुलार्णवचारिणी शक्ति श्रीपादुकायै नमः। जानुद्वितये न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं शं षं सं हं क्षं देवीकोटमहापीठे कोटवी चण्डिका महाचण्डखड्गिनी अतिगुह्ययोगेश्वरीशक्ति श्रीपादुकायै नमः। जंघयोर्न्यासः।

ऐं खफ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं हूं छ्रीं स्त्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं करवीर महापीठे चण्डचण्डेश्वरी महागुह्या शक्ति श्रीपादुकायै नमः। लिङ्गे न्यासः।

ऐं खफ्रें ह्रीं फ्रें श्रीं कं इत्यारभ्य क्षं यावत् सानुस्वरं पञ्चत्रिंशद्धलं पटित्वा राजगृहमहापीठे सृष्टिस्थिति संहारानाख्याभासा कालीकुला महाचण्डयोगेश्वरी परापरपरमरहस्यकालीक्रमशक्ति श्रीपादुकायै नमः। व्यापके न्यासः।

॥४. योगिनी न्यासः॥

ओं खफ्रें ह्रीं डां डीं डूं डम्लव्रीं महाचण्डकालि डाकिनि योगिनि मम त्वग्धातून् रक्ष रक्ष ह्रीं हूं महाकालि कापालिनि विशुद्धपीठे षोडशशक्त्यै नमः। विशुद्धचक्रे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं रां रीं रूं रम्लव्रीं महाचण्डकालि राकिनि योगिनि ममासृग्धातून् रक्ष रक्ष ह्रीं हूं महाकालि कापालिनि अनाहतपीठे द्वादशशक्त्यै नमः। अनाहतचक्रे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं लां लीं लूं लम्लव्रीं महाचण्डकालि लाकिनि योगिनि मम मांस धातून् रक्ष रक्ष ह्रीं हूं महाकालि कापालिनि मणिपूरकपीठे दशशक्त्यै नमः। नाभौ न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं कां कीं कूं कम्लव्रीं महाचण्डकालि काकिनी योगिनि मम मेदोधातून् रक्ष रक्ष ह्रीं हूं महाकालि कापालिनि स्वाधिष्ठान पीठे षट्शक्त्यै नमः। स्वाधिष्ठाने न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं सां सीं सूं सम्लव्रीं महाचण्डकालि शाकिनि योगिनि ममास्थिधातून् रक्ष रक्ष ह्रीं हूं महाकालि कापालिनि मूलाधार पीठे चतुःशक्त्यै नमः। मूलाधारे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं हां हीं हूं हम्लव्रीं महाचण्डकालि हाकिनि योगिनि मम मज्जाधातून् रक्ष रक्ष ह्रीं हूं महाकालि कापालिनि आज्ञापीठे द्विशक्त्यै नमः। आज्ञाचक्रे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं यां यीं यूं यम्लव्रीं महाचण्डकालि याकिनि योगिनि मम शुक्रधातून् रक्ष रक्ष ह्रीं हूं महाकालि कापालिनि व्योमपीठे सर्वशक्त्यै नमः। ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं ऐं क्रीं छ्रीं स्त्रीं हूं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं अनन्त कोटिकालिकामहासिद्धिचक्रे योगिनी

शक्तियुक्तायै गुह्यकाल्यै नमः। सर्वाङ्गव्यापके न्यासः।

॥ ५. दैवत न्यासः॥

ओं खफ्रें ह्रीं भगवते रुद्राय जूं सः परमात्मने नमः। ललाटे।

ओं खफ्रें ह्रीं औं क्ष्रौं हूं क्षपिततमा नरसिंहाय जूं सः ज्ञानात्मने नमः इति दृशोः।

ओं खफ्रें ह्रीं ओं ह्रौं वीर्यनिर्जितदिक्क्राय जूं सः धर्माय नमः। गण्डयोः।

ओं खफ्रें ह्रीं ठ्रीं क्ष्रौं चण्डतेजसे जूं सः वैराग्याय नम। कर्णयोः।

ओं खफ्रें ह्रीं क्ष्रूं स्त्रौं सः अमृतात्मने जूं सः ऐश्वर्याय नमः। स्कन्धयोः।

ओं खफ्रें ह्रीं ओं छ्रीं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल गीर्वाणमुखाय जूं सः अधर्माय नमः । बाह्वोः।

ओं खफ्रें ह्रीं ह्रां फ्रम्लग्लैं ज्वालामालिने वज्रमहाबलाय जूं सः अज्ञानाय नमः। कराङ्गुलिषु।

ओं लां ब्रह्मणे जूं सः । वक्षसि।

ओं वां अं विष्णवे जूं सः। जंघायाम्।

ओं हां रां रुद्राय जूं सः। पादयोः

ओं यां ईश्वराय जूं सः। पादाङ्गुलीषु।

ओं फां सदाशिवाय जूं सः। अनाहतचक्रे।

ओं शां आत्मज्ञानाय जूं सः। तालुनि।

ओं क्षां परज्ञानाय जूं सः। बिन्दौ।

ओं ह्रां अघोराय जूं सः। अर्धचन्द्रे।

ओं चैं घोराय जूं सः । नादे।

ओं हौं घोररूपाय जूं सः। निरोधिकायाम्।

ओं हूं भैरवाय जूं सः। व्यापिन्याम्।

ओं ह्रौं वीरभद्राय जूं सः। रसनायाम्।

ओं स्हौः शरभवनाय जूं सः। कुलकूले।

ओं स्हौः बलप्रमथनाय जूं सः। मनोन्मन्याम्।

ओं स्हौः प्रचण्डदण्डाय जूं सः। उन्मन्याम्।

ओं स्हौः परमात्मने जूं सः। शाम्भवान्तिमे।

ओं स्हौः वाक्पतये जूं सः। षोडशान्ते।

ओं स्हौः भूतलपातालवासिभ्यः जूं सः। सूक्ष्मान्ते।

ओं स्हौः प्रचण्डभैरवाय जूं सः। परान्ते।

ओं स्हौः सर्वात्मने नमो रुद्राय जूं सः। कूले।

ओं खफ्रें ह्रीं ओं प्रचण्डचण्डाय महाघोराय भैरवाय मर्दय मर्दय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल खफ्रें क्षह्म्लव्य्रऊं श्लौं हूं फें कालनाशक मां रक्ष रक्ष नमो महाप्रचण्डाय भैरवाय। सर्वव्यापक न्यासः।

॥ ६. मन्त्रक्रम न्यासः॥

ओं खफ्रें ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि ठ्रीं ध्रीं थ्रीं द्वीपिवक्त्राय नमः। ब्रह्मरन्ध्रे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि ओं छ्रीं हूं स्त्रीं (मर्मरि) फ्रें सिंहवक्त्राय नमः। ललाटे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि रह्रीं फट् फट् फट् फेरु वक्त्राय नमः। दक्षनेत्रे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि ओं हूं बान्धवः रह्रीं ह्थ्रां हूं फें फट् कपिवक्त्राय नमः। वामनेत्रे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि बान्धवः (माण्डिल्य बीजम्) क्ष्रीं सैं हूं दिव्यभालः फें फट् हूं हूं हूं फट् फट् फट् ऋक्षवक्त्राय नमः। दक्षकर्णे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि ज्रैं जरक्रीं श्लौं खफ्रक्ष्रूं भ्रीं हूं हूं हूं फट् फट् फट् नरवक्त्राय नमः। वामकर्णे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि छ्रीं ब्लौं ग्लूं रक्ष्रीं जरक्रीं स्फौं फें हूं हूं हूं फट् फट् फट् गरुडवक्त्राय नमः। दक्षकपोले न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि फ्रें हसखफ्रीं क्षरह्रूं हसफ्रें हैं खफ्रीं फें फट् हूं हूं हूं फट् फट् फट् मकरवक्त्राय नमः। वामकपोले न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि स्हौः क्षम्लीं ह्रां क्रीं श्लीं ग्लां गजवक्त्राय नमः। हृदये न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं स्त्रीं महाचण्डयोगेश्वरि श्लीं क्लीं ह्लीं रग्रें ग्लीं फलकम् (दिव्यभालः) ज्रैं फें हूं हूं हूं फट् फट् फट् हयवक्त्राय नमः। शिरसि न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं नमश्चामुण्डे करङ्कमालिनि करङ्कमालाधारिणि भगवति फां फीं फूं चण्डकापालिन्यै महाकालिकायै नमः। मूलाधारे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं हूं फट् महाचण्डभैरवि खफ्रीं रफ्रें फट् रसखग्रमूं रज्रीं रफ्रां टं रक्ष्रीं खमह्रीं रक्ष्रीं चण्डकापालिन्यै महाकालिकायै नमः। स्वाधिष्ठाने न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं ओं ह्रीं क्ष्रीं ग्रीं ल्रीं फ्रीं क्रीं हूं फट् चण्डकापालिन्यै महाकालिकायै नमः। मणिपूरे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं रक्षभ्रम्लऊं क्रीं ह्रीं क्रीं ठ्रीं फ्रीं थ्रीं ध्रीं फट् चण्डकापालिन्यै महाकालिकायै नमः। अनाहते न्यासः॥

ओं खफ्रें ह्रीं क्लूं व्रीं म्रीं जरक्रीं रक्ष्रीं ग्रां व्रां स्त्रां ह्रां कालिकायै नमः। विशुद्धचक्रे न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं जरक्रीं यममुखि यमहस्ते रह्रीं रफ्रीं रक्रीं फट् फट् फट्। आज्ञाचक्रे न्यासः।

पुनर्भारतीमन्त्रस्य विहितेन षडङ्गेनात्रापि षडङ्गं सम्पादनीयम्।

ओं फ्रें सिद्धिकरालि दक्षिणवक्त्राय नमः इति दक्षिणभागे न्यासः।

ह्रीं हूं छ्रीं वामवक्त्राय नमः इति वामभागे न्यासः।

स्त्रीं फ्रें नमः स्वाहा मध्यमवक्त्राय नमः। मध्यभागे न्यासः।

मूलमन्त्रस्यै कैकमक्षरमादाय फ्रेंबीजेन संपुटितं कृत्वा अङ्गानामधोनिर्दिष्टानां स्थानपादुकां पूजयामि इत्यनेनान्वितं विधाय न्यासः करणीयः।

शिरः, हृदयं, नाभिः, दक्षिणनेत्रं, वामनेत्रं, वामनासापुटं, दक्षनासापुटं, वामकर्णः, दक्षकर्णः, लिङ्गं, गुह्यं, भ्रूमध्यम्, ब्रह्मरन्ध्रम्, शिरः, मस्तकात्, पादान्तम्, पादान्मस्तकान्तम्।

ओं श्रीं फें क्षग्लीं रफ्रैं हूं नमः स्वाहा। शिरसि न्यासः।

ओं खफ्रें ह्रीं ऐं खफ्रें ह्रीं श्रीं खफ्रें हः अं रछ्रैं रत्रां फट् खफ्रें हूं सिद्धिकरालि ओं फ्रें सः स्वाहा ह्रीः महाचण्डयोगेश्वरि श्रीपादुकायै नमः। सर्वाङ्गव्यापक न्यासः।

॥ ७. लघुषोढा समाप्तौ बलिद्वयदानमन्त्रौ ॥

१. ह्रीं श्रीं सर्वपीठे चक्रयोगेश्वरीं चन्द्रपीठे व्योमकाली सिद्धिपीठे मातङ्गिनी योगपीठे भीमकाली कामरूपपीठे सिद्धिकाली पूर्णगिरिपीठे चण्डकाली ओड्डियानपीठे रक्तकाली फ्रें स्हौः सौः सर्वसमयलाभं कुरु कुरु सुसिद्धिं प्रसर प्रसर प्रसारय प्रसारय हैं हैं सः सः खः खः खाहि खाहि क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं वाहि वाहि काहि काहि खाहि खाहि थूं हूं लां खां लां छां हूं हां रस्फ्रों ह्रीं श्रीं हूं सौंः ह्रीः हं हूं हूं हैं हूं फट् नमः स्वाहा। प्रथम बलिदानमन्त्रः।

२. ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें खफ्रें हसखफ्रें क्षरहम्लव्र्यईऊं रूं क्षीं जरक्रीं रह्रीं स्हौः ब्लूं क्रों ट्रीं ध्रीं थ्रीं फट् फट् फट् एहि एहि भगवति गुह्यकालि सकलपरापर कुलचक्रमन्त्रयन्त्रमय देहे समांसरक्तबलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय भक्ष भक्ष भक्षय भक्षय खाद खाद खाहि खाहि प्रत्यक्षं परोक्षं द्वेषिणी मम शत्रून् दह दह मर्दय मर्दय पातय पातय मूर्च्छय मूर्च्छय त्रासय त्रासय शोषय शोषय स्वखपरे स्थापय स्थापय दीर्घदंष्ट्रया भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि फट् फट् फट् आं ईं ऊं ऐं औं मम राज्यं देहि देहि दापय दापय पुत्रपौत्रधनैश्वर्यायुः स्त्रीबाजिगजरत्न सौभाग्यारोग्यसमृद्धया मां पूरय पूरय वर्ष वर्ष वर्षापय वर्षापय ओं ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फट् फट् फट् नमो नमः स्वाहा। द्वितीयबलिदान मन्त्रः।

॥ इति लघुषोढा न्यास समाप्तम् ॥

॥ अथ महाषोढा न्यास:॥

॥ १. तीर्थशिवलिङ्ग न्यास:॥

ओमस्य तीर्थ शिवलिङ्गन्यासस्य गौतमऋषिरनुष्टुप्छन्दः महातीर्थशिवलिङ्गे देवता, ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ऐं क्रीलकम् आं तत्वम् तीर्थन्यासे जपे विनियोगः।

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं क्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें खफ्रें हसफ्रें ह्खफ्रें प्रयागतीर्थे महेश्वरशिवलिङ्गसहितायै ललितादेविशक्तिरूपिण्यै नवकोटिकुलाकुलक्रेश्वर्यै सकलगुह्यानन्त तत्त्वधारिण्यै गुह्यकाल्यै ग्लूं ब्लूं क्ष्रूं ज्लूं स्हौः अं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

अपरत्र परिवर्तनीयांशमात्रं निर्दिश्यते शेषं पूर्ववज्ज्ञेयमथ च न्यासस्थानं मातृकान्यासवद्बोध्यम् फट् इत्यतः पूर्वं यथाक्रमं मातृकाया एकस्याः सानुस्वारायाः निवेशः कार्यः।

सभी मन्त्रों से पहले पूर्वोक्त बीजाक्षर लगायें तथा नाम बाद में **नमः स्वाहा** कहें।

नैमिषारण्यतीर्थे देवदेवशिवलिङ्ग सहितायै लिङ्गधारिणी देविशक्तिरूपिण्यै।

शूकरक्षेत्रतीर्थे भारभूतेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै वेगवती देविशक्तिरूपिण्यै।

एकाम्बरतीर्थे कृत्तिवासेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै मातङ्गीं देविशक्तिरूपिण्यै।

बदरिकाश्रमतीर्थे त्रिलोचनशिवलिङ्ग सहितायै वेदवतीदेविशक्तिरूपिण्यै।

कुरुक्षेत्रतीर्थे स्थाणुशिवलिङ्ग सहितायै भवानीदेविशक्तिरूपिण्यै।

प्रभासतीर्थे सोमनाथशिवलिङ्ग सहितायै राजराजेश्वरी देविशक्तिरूपिण्यै।

अमरकण्टकतीर्थे ओङ्कारेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै निगमबोधिनीदेविशक्तिरूपिण्यै।

पुष्करतीर्थे अयोगन्धेश्वर शिवलिङ्ग सहितायै पुरुहूतादेविशक्तिरूपिण्यै।

गयातीर्थे पितामहशिवलिङ्ग सहितायै हरप्रियादेविशक्तिरूपिण्यै।

वाराणसीतीर्थे महादेवशिवलिङ्ग सहितायै विशालाक्षी देविशक्तिरूपिण्यै।

अयोध्यातीर्थे चन्द्रशेखरशिवलिङ्ग सहितायै मोहिनी देविशक्तिरूपिण्यै।

मथुरातीर्थे भूतेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै पार्वतीदेविशक्तिरूपिण्यै।

मायापुरतीर्थे महालिङ्गेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै रक्ताम्बरादेविशक्तिरूपिण्यै।

शिवकाञ्चीतीर्थे व्योमकेशशिवलिङ्ग सहितायै झङ्कारिणी देविशक्तिरूपिण्यै।

उज्जयिनीतीर्थे महाकालशिवलिङ्ग सहितायै भोगवतीदेविशक्तिरूपिण्यै।

द्वारकातीर्थे पिनाकीश्वर शिवलिङ्ग सहितायै अश्वारूढादेविशक्तिरूपिण्यै।

****

पुरुषोतमतीर्थे बिल्वकेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै बिल्वपत्रिकादेविशक्तिरूपिण्यै।
मरुत्कोटितीर्थे कमलेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै कमलादेविशक्तिरूपिण्यै।
अट्टहासतीर्थे नीललोहितशिवलिङ्ग सहितायै कुन्ददादेविशक्तिरूपिण्यै।
शङ्कुकर्णतीर्थे एकाम्रनाथ शिवलिङ्ग सहितायै कीर्तिमती देविशक्तिरूपिण्यै।
रुद्रकोटितीर्थे जम्बुकेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै देविशक्तिरूपिण्यै।
छगलाण्डतीर्थे जटीश्वर शिवलिङ्ग सहितायै वज्रप्रस्तारिणी देविशक्तिरूपिण्यै।
आम्रातकतीर्थे अमरेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै भद्रकर्णिका देविशक्तिरूपिण्यै।
अरुणाचलतीर्थे महोत्कटशिवलिङ्ग सहितायै हसन्तीदेविशक्तिरूपिण्यै।
वृन्दावनतीर्थे अट्टहासशिवलिङ्ग सहितायै सरस्वतीदेविशक्तिरूपिण्यै।
भद्रकर्णह्रदतीर्थे महातेजाशिवलिङ्ग सहितायै भद्रावती देविशक्तिरूपिण्यै।
हरिश्चन्द्रतीर्थे महायोगशिवलिङ्ग सहितायै प्राणप्रदादेविशक्तिरूपिण्यै।
मध्यमेश्वरतीर्थे कपर्दीश्वरशिवलिङ्ग सहितायै सिद्धिदायिनी देविशक्तिरूपिण्यै।
वस्त्रापथतीर्थे सूक्ष्मेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै रुद्राणीदेविशक्तिरूपिण्यै।
कनखलतीर्थे सर्वज्ञेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै ओजस्विनीदेविशक्तिरूपिण्यै।
देवदारुवनतीर्थे गोपीश्वरशिवलिङ्ग सहितायै विद्येश्वरीदेविशक्तिरूपिण्यै।
नेपालतीर्थे शिवशिवलिङ्ग सहितायै भीमादेविशक्तिरूपिण्यै।
कर्णिकारतीर्थे हरशिवलिङ्ग सहितायै राधादेविशक्तिरूपिण्यै।
त्रिसन्ध्यातीर्थे सर्वशिवलिङ्ग सहितायै शान्तादेविशक्तिरूपिण्यै।
........तीर्थे भवशिवलिङ्ग सहितायै जयमङ्गलादेविशक्तिरूपिण्यै।
........तीर्थे उग्रेस्वरशिवलिङ्ग सहितायै शर्वाणीदेविशक्तिरूपिण्यै।
........तीर्थे दण्डीश्वरशिवलिङ्ग सहितायै शिवादेविशक्तिरूपिण्यै।
........तीर्थे पशुपतिशिवलिङ्ग सहितायै चण्डवतीदेविशक्तिरूपिण्यै।
........तीर्थे गणाध्यक्षशिवलिङ्ग सहितायै सावित्रीदेविशक्तिरूपिण्यै।
........तीर्थे ताम्रकेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै गुह्येश्वरीदेविशक्तिरूपिण्यै।
........तीर्थे मणिमहेशशिवलिङ्ग सहितायै कल्याणीदेविशक्तिरूपिण्यै।
कुलूततीर्थे घुसृणेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै पद्मावतीदेविशक्तिरूपिण्यै।
शिवालयतीर्थे वामदेवशिवलिङ्ग सहितायै शाकम्भरीदेविशक्तिरूपिण्यै।
पृथूदकतीर्थे लगुडीश्वरशिवलिङ्ग सहितायै सिद्धेश्वरी देविशक्तिरूपिण्यै।
कायावतारतीर्थे कपिलेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै तेजोवतीदेविशक्तिरूपिण्यै।

करवीरतीर्थे श्रीकण्ठशिवलिङ्ग सहितायै विजयादेविशक्तिरूपिण्यै।

मण्डलेश्वरतीर्थे ...शिवलिङ्ग सहितायै प्रभावतीदेविशक्तिरूपिण्यै।

हर्षपथतीर्थे हर्षितेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै नारायणी प्रमोदिनी देविशक्तिरूपिण्यै।

अलकापुरतीर्थे प्रहासेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै मायामयीदेविशक्तिरूपिण्यै।

बड़वामुखतीर्थे अनलेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै मेधादेविशक्तिरूपिण्यै।

॥ २. पर्वतनरसिंह न्यासः॥

बहिर्मातृका न्यास करें।

(१) औं क्षां क्षीं क्ष्रूं क्षौं ठ्रीं चैं थ्रीं प्रीं रह्रीं जरक्रीं रक्ष्रीं रब्रीं रफ्रीं क्षह्म्लव्य्रऊं हिमालयपर्वते ज्वालामालीनरसिंहसहितायै विद्युत्केशी शक्ति स्वरूपायै चतुरशीतिकोटिब्रह्माण्डसृष्टिकारिण्यै प्रज्वल ज्वलनलोचनायै वज्रनखदंष्ट्रायुधायै दुर्निरीक्ष्याकारायै भगवत्यै गुह्यकाल्यै खफ्रें हसखफ्रीं ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं ह्रीं रहक्षमलवरयईऊं श्रीं ओं ह्रीं हसखफ्रें खफ्रें द्रैं जूं श्लीं क्रप्रूं (संदीपनी बीजम्) खं खं खं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

अन्यत्राग्रे सर्वत्र सर्वं पूर्ववत् बोध्यम् केवल पूर्वत्इत्यतः पूर्व नरसिंह इत्यतः पूर्वं शक्तिपदतश्च पूर्वं परिवर्तनमपेक्षितं तन्मात्रस्यात्र निर्देशो विधीयते।

(२) ....गन्धमादनपर्वते कराल नरसिंह ....कालरात्रिशक्ति........

(३) ....भद्राश्वपर्वते भीमनरसिंह ....उल्कामुखशक्ति........

(४) ....केतुमाल पर्वते अपराजितनरसिंह ....पिङ्गजटाशक्ति........

(५) ....सुमेरु पर्वते क्षोभणनरसिंह ....कुण्डोदरीशक्ति........

(६) ....विन्ध्यपर्वते सृष्टिनरसिंह ....प्रेतासना शक्ति........

(७) ....निषधपर्वते स्थितिनरसिंह ....कपालकुण्डलाशक्ति........

(८) ....हेमकूटपर्वते कल्पान्तनरसिंह ....चण्डचामुण्डाशक्ति........

(९) ....पारिपात्रपर्वते अनन्तनरसिंह ....धूमावतीशक्ति........

(१०)........कैलासपर्वते विरूपनरसिंह ....शुष्कोदरीशक्ति........

(११)........उदयपर्वते वज्रायुधनरसिंह ....ज्वालाकुलाशक्ति........

(१२)........अस्तपर्वते परापरनरसिंह ....अञ्जनप्रभाशक्ति........

(१३)........माल्यवन्तपर्वते प्रध्वंसननरसिंह ....वज्रवाराहीशक्ति........

(१४)........सह्यपर्वते विश्वमर्दननरसिंह ....कालमर्दिनीशक्ति........

(१५)........मलयपर्वते उग्रनरसिंह ....नागहारिणीशक्ति........

(१६)........दर्दुरपर्वते भद्रनरसिंह ....घोरनादाशक्ति........

****

(१७)........ऋष्यमूकपर्वते मृत्युनरसिंह ....करालिनीशक्ति........

(१८)........शुक्तिमन्तपर्वते सहस्त्रभुजनरसिंह ....मुण्डचर्चिकाशक्ति........

(१९)........महेन्द्रपर्वते विद्युज्जिह्व नरसिंह ....श्मशानचारिणीशक्ति........

(२०)........अर्बुदपर्वते घोरदंष्ट्रनरसिंह ....शववाहिनीशक्ति........

(२१)........द्रोणपर्वते महाकालाग्निनरसिंह ....रक्तपायिनीशक्ति........

(२२)........रैवतपर्वते मेघनादनरसिंह ....चण्डघण्टाशक्ति........

(२३)........कौञ्चपर्वते विकटनरसिंह ....अट्टाट्टहासिनीशक्ति........

(२४)........चित्रकूटपर्वते पिङ्गसट नरसिंह ....कङ्कालिनीशक्ति........

(२५)........काश्मीरपर्वते प्रदीप्त नरसिंह ....भूतोन्मादिनीशक्ति........

(२६)........कालञ्जरपर्वते विश्वरूपनरसिंह ....पिशाचिनीशक्ति........

(२७)........श्रीशैलपर्वते विद्युद्दशन नरसिंह ....विकटदंष्ट्राशक्ति........

(२८)........मैनाकपर्वते विदारनरसिंह ....मेघमालाशक्ति........

(२९)........मुञ्जगिरिपर्वते विक्रमनरसिंह ....पूतितुण्डाशक्ति........

(३०)........गोमन्थपर्वते प्रवणनरसिंह ....भारुण्डारुण्डशक्ति........

(३१)........त्रिकूटपर्वते सर्वतोमुखनरसिंह ....फेत्कारिणीशक्ति........

(३२)........सुबलपर्वते वज्रनरसिंह ....पिचिण्डनासाशक्ति........

(३३)........सैन्धवपर्वते दिव्यनरसिंह ....हूं हूंकारनादिनीशक्ति........

(३४)........कलिन्दपर्वते भोगनरसिंह ....कोलाननाशक्ति........

(३५)........रविभापर्वते मोक्ष नरसिंह.........निरञ्जनाशक्ति...

(३६)........लोकालोकपर्वते लक्ष्मीनरसिंह ....भ्रमराम्बिकाशक्ति........

(३७)........मन्दरपर्वते विद्रावण नरसिंह ....मूलताटङ्किनीशक्ति........

(३८)........केदारपर्वते कालचक्रनरसिंह ....शूलचण्डिकाशक्ति........

(३९)........नीलाचलपर्वते कृतान्तनरसिंह ....कटंकटाशक्ति........

(४०)........अञ्जनपर्वते तप्तहाटकनरसिंह ....कुक्कुटीशक्ति........

(४१)........वराहपर्वते भ्रामकनरसिंह ....पुक्कसीशक्ति........

(४२)........चैत्ररथपर्वते रौद्रनरसिंह ....विश्वभञ्जिकाशक्ति........

(४३)........कर्णिकार पर्वते विश्वान्तक नरसिंह........ शङ्खिनीशक्ति........

(४४)........मन्दारपर्वते भयङ्करनरसिंह........ नीलाम्बराशक्ति........

(४५)........कोकामुखपर्वते प्रतप्तनरसिंह........ कालसङ्कर्षिणीशक्ति........

करवीरतीर्थे श्रीकण्ठशिवलिङ्ग सहितायै विजयादेविशक्तिरूपिण्यै।

मण्डलेश्वरतीर्थे ...शिवलिङ्ग सहितायै प्रभावतीदेविशक्तिरूपिण्यै।

हर्षपथतीर्थे हर्षितेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै नारायणी प्रमोदिनी देविशक्तिरूपिण्यै।

अलकापुरतीर्थे प्रहासेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै मायामयीदेविशक्तिरूपिण्यै।

बड़वामुखतीर्थे अनलेश्वरशिवलिङ्ग सहितायै मेधादेविशक्तिरूपिण्यै।

॥ २. पर्वतनरसिंह न्यासः॥

बहिर्मातृका न्यास करें।

(१) औं क्षां क्षीं क्ष्रूं क्षौं ठ्रीं चैं थ्रीं प्रीं रह्रीं जरक्रीं रक्षीं रब्रीं रफ्रीं क्षह्म्लव्य्रऊं हिमालयपर्वते ज्वालामालीनरसिंहसहितायै विद्युत्केशी शक्ति स्वरूपायै चतुरशीतिकोटिब्रह्माण्डसृष्टिकारिण्यै प्रज्वल ज्वलनलोचनायै वज्रनखदंष्ट्रायुधायै दुर्निरीक्ष्याकारायै भगवत्यै गुह्यकाल्यै खफ्रें हसखफ्रीं ओं फ्रें ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं श्रीं ह्रीं रहक्षमलवरयईऊं श्रीं ओं ह्रीं हसखफ्रें खफ्रें द्रैं जूं श्लीं क्रपूं (संदीपनी बीजम्) खं खं खं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

अन्यत्राग्रे सर्वत्र सर्वं पूर्ववत् बोध्यम् केवल पूर्वत्इत्यतः पूर्व नरसिंह इत्यतः पूर्वं शक्तिपदतश्च पूर्वं परिवर्तनमपेक्षितं तन्मात्रस्यात्र निर्देशो विधीयते।

(२) ....गन्धमादनपर्वते कराल नरसिंह ....कालरात्रिशक्ति........

(३) ....भद्राश्वपर्वते भीमनरसिंह ....उल्कामुखशक्ति........

(४) ....केतुमाल पर्वते अपराजितनरसिंह ....पिङ्गजटाशक्ति........

(५) ....सुमेरु पर्वते क्षोभणनरसिंह ....कुण्डोदरीशक्ति........

(६) ....विन्ध्यपर्वते सृष्टिनरसिंह ....प्रेतासना शक्ति..........

(७) ....निषधपर्वते स्थितिनरसिंह ....कपालकुण्डलाशक्ति........

(८) ....हेमकूटपर्वते कल्पान्तनरसिंह ....चण्डचामुण्डाशक्ति........

(९) ....पारिपात्रपर्वते अनन्तनरसिंह ....धूमावतीशक्ति........

(१०)........कैलासपर्वते विरूपनरसिंह ....शुष्कोदरीशक्ति........

(११)........उदयपर्वते वज्रायुधनरसिंह ....ज्वालाकुलाशक्ति........

(१२)........अस्तपर्वते परापरनरसिंह ....अञ्जनप्रभाशक्ति........

(१३)........माल्यवन्तपर्वते प्रध्वंसननरसिंह ....वज्रवाराहीशक्ति........

(१४)........सह्यपर्वते विश्वमर्दननरसिंह ....कालमर्दिनीशक्ति........

(१५)........मलयपर्वते उग्रनरसिंह ....नागहारिणीशक्ति........

(१६)........दर्दुरपर्वते भद्रनरसिंह ....घोरनादाशक्ति........

****

(१७)........ऋष्यमूकपर्वते मृत्युनरसिंह ....करालिनीशक्ति........

(१८)........शुक्तिमन्तपर्वते सहस्रभुजनरसिंह ....मुण्डचर्चिकाशक्ति........

(१९)........महेन्द्रपर्वते विद्युज्जिह्व नरसिंह ....श्मशानचारिणीशक्ति........

(२०)........अर्बुदपर्वते घोरदंष्ट्रनरसिंह ....शववाहिनीशक्ति........

(२१)........द्रोणपर्वते महाकालाग्निनरसिंह ....रक्तपायिनीशक्ति........

(२२)........रैवतपर्वते मेघनादनरसिंह ....चण्डघण्टाशक्ति........

(२३)........कौञ्चपर्वते विकटनरसिंह ....अट्टाट्टहासिनीशक्ति........

(२४)........चित्रकूटपर्वते पिङ्गसट नरसिंह ....कङ्कालिनीशक्ति........

(२५)........काश्मीरपर्वते प्रदीप्त नरसिंह ....भूतोन्मादिनीशक्ति........

(२६)........कालञ्जरपर्वते विश्वरूपनरसिंह ....पिशाचिनीशक्ति........

(२७)........श्रीशैलपर्वते विद्युद्दशन नरसिंह ....विकटदंष्ट्राशक्ति........

(२८)........मैनाकपर्वते विदारनरसिंह ....मेघमालाशक्ति........

(२९)........मुञ्जगिरिपर्वते विक्रमनरसिंह ....पूतितुण्डाशक्ति........

(३०)........गोमन्थपर्वते प्रवणनरसिंह ....भारुण्डारुण्डशक्ति........

(३१)........त्रिकूटपर्वते सर्वतोमुखनरसिंह ....फेत्कारिणीशक्ति........

(३२)........सुबलपर्वते वज्रनरसिंह ....पिचिण्डनासाशक्ति........

(३३)........सैन्धवपर्वते दिव्यनरसिंह ....हूं हूंकारनादिनीशक्ति........

(३४)........कलिन्दपर्वते भोगनरसिंह ....कोलाननाशक्ति........

(३५)........रविभापर्वते मोक्ष नरसिंह........निरञ्जनाशक्ति...

(३६)........लोकालोकपर्वते लक्ष्मीनरसिंह ....भ्रमराम्बिकाशक्ति........

(३७)........मन्दरपर्वते विद्रावण नरसिंह ....मूलताटङ्किनीशक्ति........

(३८)........केदारपर्वते कालचक्रनरसिंह ....शूलचण्डिकाशक्ति........

(३९)........नीलाचलपर्वते कृतान्तनरसिंह ....कटंकटाशक्ति.......

(४०)........अञ्जनपर्वते तप्तहाटकनरसिंह ....कुक्कुटीशक्ति........

(४१)........वराहपर्वते भ्रामकनरसिंह ....पुक्कसीशक्ति........

(४२)........चैत्ररथपर्वते रौद्रनरसिंह ....विश्वभञ्जिकाशक्ति........

(४३)........कर्णिकार पर्वते विश्वान्तक नरसिंह........ शङ्खिनीशक्ति.......

(४४)........मन्दारपर्वते भयङ्करनरसिंह........ नीलाम्बराशक्ति.......

(४५)........कोकामुखपर्वते प्रतप्तनरसिंह........ कालसङ्कर्षिणीशक्ति.......

(४६)........कोलागिरिपर्वते विजयनरसिंह........ कुणपभोजिनीशक्ति.......

(४७)........तुषारपर्वते तेजोमयनरसिंह........ दैत्यविध्वंसिनीशक्ति.......

(४८)........बाटधानपर्वते ज्वालाजटालनरसिंह........ विदारिसृक्किणीशक्ति.......

(४९)........नीलगिरिपर्वते खरनखर नरसिंह........ क्षेत्रपालिनीशक्ति.......

(५०)........गोवर्धनपर्वते नाददारुणनरसिंह........ कुलकुट्टनीशक्ति.......

(५१)........हरिश्चन्द्रपर्वते निर्वाण नरसिंह........ आनन्ददायिनीशक्ति.......

न्यासस्थलानि मातृकान्यासवदूह्यानि ॥

इति पर्वतनरसिंहन्यासः ॥

॥ ३. नदीऋषिन्यास : ॥

अन्यत्राग्रे सर्वत्र सर्वं पूर्ववत् केवलं नदीपदतः उपासितापदतः नाम पदतश्च पूर्वं परिवर्तनीयमस्ति तन्मात्रस्याधस्तात् विधीयते निर्देशः।

बहिर्मातृका स्थानों की तरह न्यास करें।

(१) आ ईं ऊं ऐं औं क्लीं स्हौः फ्रों क्रों जूं जों जों जों फट् फट् फट् यमुनानदीतीरे मरीच्युपासितायै कामदानामधारिण्यै भगवत्यै गुह्यकाल्यै लेलिहानरसना भयानकायै विकटदंष्ट्राकराल्यै महाचण्डयोगेश्वर्यै शक्तितत्त्वसहितायै श्रीं ह्रीं रह्रीं हसखफ्रीं क्षरहम्लव्य्रईऊं खफ्रें जरक्रीं झमरयूं रक्ष्रीं स्त्रीं छ्रीं छ्रीं गुह्यकालि फट् यां जूं लं वैं शौं षं सः हलक्ष्रूं नमः स्वाहा।

(२) ....सरस्वती नदीतीरे अत्र्युपासितायै महाविद्यानाम धारिण्यै ....।

(३) .... विपाशा नदीतीरे अङ्गिरसोपासितायै गौरीनाम धारिण्यै ....।

(४) .... ऐरावतीनदीतीरे पुलस्त्योपासितायै कामाख्यानाम धारिण्यै ....।

(५) .... चन्द्रभागानदीतीरे पुलहोपासितायै माहेश्वरीनाम धारिण्यै ....।

(६) .... वितस्तानदीतीरे क्रतूपासितायै विश्वरूपानाम धारिण्यै ....।

(७) .... देविका नदीतीरे वसिष्ठोपासितायै तपस्विनीनाम धारिण्यै ....।

(८) .... गोमती नदीतीरे भृगूपासितायै पुण्यप्रदानाम धारिण्यै ....।

(९) .... नर्मदानदीतीरे भारद्वांजोपासितायै विन्ध्यवासिनी नाम धारिण्यै ....।

(१०) .... क्षिप्रा नदीतीरे कर्दमोपासितायै महामायानाम धारिण्यै ....।

(११) .... कृष्णवेणीनदीतीरे कपिलोपासितायै शिवशक्तिनाम धारिण्यै ....।

(१२) .... तुङ्गभद्रानदीतीरे दुर्वासः उपासितायै क्षेमङ्करी नाम धारिण्यै ....।

(१३) .... काबेरी नदीतीरे दत्तात्रेयोपासितायै भवहारिणीनाम धारिण्यै ....।

(१४) .... गोदावरीनदीतीरे अगस्त्योपासितायै सूक्ष्मानाम धारिण्यै ....।

(१५) .... तापी नदीतीरे पराशरोपासितायै पद्मावती नाम धारिण्यै ....।

(१६) .... पयोष्णी नदीतीरे व्यासोपासितायै कुलेश्वरीनाम धारिण्यै ....।

(१७) .... भीमरथी नदीतीरे विश्वामित्रोपासितायै कौशिकीनाम धारिण्यै ....।

(१८) .... बाहुदा नदीतीरे गर्गोपासितायै महोदयानाम धारिण्यै ....।

(१९) .... करतोया नदीतीरे गौतमोपासितायै विमलानाम धारिण्यै ....।

(२०) .... गण्डकी नदीतीरे शाण्डिल्योपासितायै पद्मासनानाम धारिण्यै ....।

(२१) .... सरयू नदीतीरे असितोपासितायै प्रियङ्करीनाम धारिण्यै ....।

(२२) .... कौशिकी नदीतीरे देवलोपासितायै सर्वाश्रयानाम धारिण्यै ....।

(२३) .... शरावती नदीतीरे शातातपोपासितायै गुणानन्दानाम धारिण्यै ....।

(२४) .... इरावती नदीतीरे कात्यायनोपासितायै कलातीतानाम धारिण्यै ....।

(२५) .... उत्पलिनी नदीतीरे आपस्तम्बोपासितायै नादरूपिणीनाम धारिण्यै ....।

(२६) .... सभङ्गा नदीतीरे शङ्खलिखितोपासितायै नारायणी नाम धारिण्यै ....।

(२७) .... वेत्रवती नदीतीरे हारीतोपासितायै तापसी नाम धारिण्यै ....।

(२८) .... तमसा नदीतीरे जमदग्न्युपासितायै वेदमातानाम धारिण्यै ....।

(२९) .... चर्मण्वती नदीतीरे ऋचीकोपासितायै ज्ञानवेद्यानाम धारिण्यै ....।

(३०) .... धूतपापा नदीतीरे च्यवनोपासितायै भवतारिणीनाम धारिण्यै ....।

(३१) .... सुवर्णरेखा नदीतीरे पैठीनस्युपासितायै मुदिता नाम धारिण्यै ....।

(३२) .... विरजा नदीतीरे उद्दालकोपासितायै नन्दिनी नाम धारिण्यै ....।

(३३) .... निर्विन्ध्या नदीतीरे श्वेतकेतूपासितायै हरप्रियानाम धारिण्यै ....।

(३४) .... महानदी नदीतीरे दधीच्युपासितायै कुण्डलिनी नाम धारिण्यै ....।

(३५) .... मुरला नदीतीरे जैमिन्युपासितायै दयावती नाम धारिण्यै ....।

(३६) .... ज्योतिरसा नदीतीरे वैशम्पायनो पासितायै शाङ्करीनाम धारिण्यै ....।

(३७) .... पारावती नदीतीरे वामदेवोपासितायै अद्वैता नाम धारिण्यै ....।

(३८) .... वाग्मती नदीतीरे गालवोपासितायै नैगमीनाम धारिण्यै ....।

(३९) .... मलप्रहारिणी नदीतीरे सम्वर्तोपासितायै श्रुतिबोधिता नाम धारिण्यै ....।

(४०) .... वरुणा नदीतीरे पर्शुरामोपासितायै शाम्भवी नाम धारिण्यै ....।

(४१) .... मन्दाकिनी नदीतीरे जाबालोपासितायै परापरा नैगमी नाम धारिण्यै ....।

(४२) .... भोगवती नदीतीरे शरभङ्गोपासितायै भोगवती नाम धारिण्यै ....।

(४३) .... शोणनदीतीरे बाल्मीक्युपासितायै नित्यानन्दा नाम धारिण्यै ....।

(४४) .... शतद्रु नदीतीरे नारदोपासितायै तुरीया नाम धारिण्यै ....।

(४५) .... हिरण्याक्ष नदीतीरे कश्यपोपसितायै वागगो चरा नाम धारिण्यै ....।

(४६) .... सिन्धुनदीतीरे अथर्वोपासितायै मोक्षदा नाम धारिण्यै ....।

(४७) .... घर्घर नदीतीरे मार्कण्डेयोपासितायै भोगविद्या नाम धारिण्यै ....।

(४८) .... कोक नदीतीरे लोमशो पासितायै निर्लेपा नाम धारिण्यै ....।

(४९) .... लौहित्य नदीतीरे और्वोपासितायै निरिन्धिनी नाम धारिण्यै ....।

(५०) .... अलकनन्दा नदीतीरे उत्तङ्कोपासितायै मानसी नाम धारिण्यै ....।

(५१) .... गङ्गा नदीतीरे याज्ञवल्क्यो पासितायै सर्वज्ञा नाम धारिण्यै ....।

॥ ४. अस्त्रभैरव न्यासः॥

बहिर्मातृकावत् न्यास करें।

(१) क्षह्म्लव्य्रऊं जरक्रीं चरक्ष्लहमह्रूं क्षरह्रीं मक्ष्लहमयब्रूँ फ्रें क्ष्लह्सक्रूंई खफ्रें ह्लक्षकमब्रूं हसफ्रें क्लक्षह्ब्रमयऊं हसखफ्रें तफरक्षम्लह्रौं क्षरह्रूं जलहक्षछपय्रहसखफ्रीं [चाकोर बीजं] ह्मक्षब्रलखफ्रऊं [आघोषणा बीजम्] खफलक्षह्मकब्रूं [खटी बीजम्] रक्षलह्मसहकव्रूं हसखफ्रूं ब्राह्मास्त्रेण विद्युज्जिह्वासुरघातिन्यै क्रोधभैरवसुरतरसलोलुपायै भैरवीरूपायै गुह्यकाल्यै ह्रीं श्रीं ओं खफ्रें हसखफ्रें रहक्षमलवरयूं रक्ष्रीं जरक्रीं स्त्रीं छ्रीं हूं खफ्रें ठ्रीं भ्रीं नमः श्मशानवासिन्यै ह्रीं ह्रीं छ्रीं छ्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं फ्रें फ्रें फट् फट् फट् नमः नमः नमः स्वाहा स्वाहा स्वाहा।

अग्रे सर्वत्र समानम्, केवलमस्त्रविशेषणम् असुरनाम भैरवनाम च परिवर्तनीयं वर्तते। अतएव तन्मात्रस्य निर्देशोऽधस्ताद् विधीयते।

(२) नारायणास्त्रेण मुण्डासुर.........श्मशानभैरव.......।

(३) प्राजापत्यास्त्रेण रुर्वसुर.........कापालीभैरव.......।

(४) ऐन्द्रास्त्रेण खट्वाङ्गासुर.........कालभैरव.......।

(५) वैष्णवास्त्रेण अञ्जनासुर.........कालान्तकभैरव.......।

(६) कम्पनास्त्रेण दुर्गासुर.........रुरुभैरव.......।

(७) वायव्यास्त्रेण विप्रचित्तासुर.........महाघोरभैरव.......।

(८) वारुणास्त्रेण महिषासुर.........घोरतरभैरव.......।

(९) याम्यास्त्रेण कपोतरोमासुर.........संहारभैरव.......।

(१०) कालास्त्रेण मतङ्गासुर.........चण्डभैरव.......।

(११) आग्नेयास्त्रेण हयग्रीवासुर.........हुङ्कारभैरव.......।

(१२) भौतास्त्रेण वैरन्धमासुर.........नादिभैरव.......।

(१३) कौबेरास्त्रेण चण्डमुण्डासुर.........उन्मत्तभैरव.......।

****

(१४) पार्जन्यास्त्रेण पातालोदरासुर.........आनन्दभैरव.......।

(१५) वैद्युतास्त्रेण गगनशिरासुर.........भूताधिप भैरव.......।

(१६) पार्वतास्त्रेण पतङ्गवेत्रासुर.........कृतान्तभैरव.......।

(१७) पाषाणास्त्रेण मकरास्यासुर.........असिताङ्गभैरव.......।

(१८) नागास्त्रेण रक्तबीजासुर.........कालाग्निभैरव.......।

(१९) त्वाष्ट्रास्त्रेण निकुम्भासुर.........उग्रायुधभैरव.......।

(२०) सौपर्णास्त्रेण पुञ्जमाल्यसुर.........वज्राङ्गभैरव.......।

(२१) तामसास्त्रेण महाहन्वसुर.........करालभैरव.......।

(२२) तैमिरास्त्रेण दर्दुरासुर.........विकरालभैरव.......।

(२३) गान्धर्वास्त्रेण दुर्जयासुर.........महाकालभैरव.......।

(२४) प्रस्वापनास्त्रेण हिरण्यकेशासुर.........कल्पान्तभैरव.......।

(२५) पैशाचास्त्रेण प्रमाथ्यसुर.........विश्वान्तकभैरव.......।

(२६) जृम्भणास्त्रेण मेघमाल्यसुर.........प्रचण्डभैरव.......।

(२७) मातङ्गास्त्रेण निशुम्भासुर.........भगमालीभैरव.......।

(२८) ऐषीकास्त्रेण प्रकम्पनासुर.........उग्रभैरव.......।

(२९) औदुम्बरास्त्रेण वातवेगासुर.........भूतनाथभैरव.......।

(३०) राक्षसास्त्रेण वज्रदंष्ट्रासुर.........सुभद्रभैरव.......।

(३१) भारुण्डास्त्रेण क्राथासुर.........सम्पत्प्रदभैरव.......।

(३२) ब्रह्मशिरोऽस्त्रेण वज्राङ्गासुर.........मृत्युभैरव.......।

(३३) गुह्यकास्त्रेण चन्द्रार्यसुर.........यमान्तकभैरव.......।

(३४) कालकूटास्त्रेण नीलासुर.........उल्कामुखभैरव.......।

(३५) वेतालास्त्रेण शैलजंघासुर.........एकपादभैरव.......।

(३६) वैनायकास्त्रेण वज्रमुष्टयसुर.........प्रेतभैरव.......।

(३७) स्कान्दास्त्रेण यज्ञद्रुडसुर.........मुण्डमालीभैरव.......।

(३८) प्रामथास्त्रेण युगंपचासुर.........वटुकभैरव.......।

(३९) उत्पातास्त्रेण जम्बुकासुर.........क्षेत्रपालभैरव.......।

(४०) कूष्माण्डास्त्रेण तालध्वजासुर.........दिगम्बरभैरव.......।

(४१) भ्रामकास्त्रेण कुम्भमाल्यसुर.........वज्रमुष्टिभैरव.......।

(४२) गालनास्त्रेण सर्पशिरासुर.........घोरनादभैरव.......।

****

(४३) सम्मोहनास्त्रेण पातालकेत्वसुर.........चण्डोग्रभैरव.......।

(४४) बलास्त्रेण चर्चिकासुर.........सन्तापनभैरव.......।

(४५) अतिबलास्त्रेण कुण्डकासुर.........क्षोभणभैरव.......।

(४६) निर्मीलनास्त्रेण असिलोमासुर.........ज्वालाभैरव.......।

(४७) अचेतनास्त्रेण तपनासुर.........संवर्तभैरव.......।

(४८) उन्मादास्त्रेण तुण्डरीकासुर.........वीरभद्रभैरव.......।

(४९) अपस्मारास्त्रेण अशनिपर्वासुर.........त्रिकालाग्निभैरव.......।

(५०) मारणास्त्रेण यज्ञकोपासुर.........शोषणभैरव.......।

(५१) पाशुपतास्त्रेण प्रलयरम्भासुर.........त्रिपुरान्तकभैरव.......।

॥ इत्युस्त्रभैरव न्यासः ॥

॥ ५. यज्ञमहाराज न्यासः॥

बहिर्मातृका स्थानों की तरह न्यास करें।

(१) ओं ह्रीं छ्रीं ओं श्रीं स्त्रीं ओं क्लीं हूं ओं फ्रें ख्फ्रें ओं हसफ्रें हसखफ्रें ओं क्रों क्रीं अग्निष्टोमयज्ञे प्रियव्रतराजाराधितायै जयलक्ष्मीनामधारिण्यै सप्तद्वीपवती पृथ्वीदिग्विजयरूप फल दायिन्यै नक्षत्रनरमुण्डमालालङ्कृतायै चतुर्दशभुवनसेवितपादपद्मायै भगवत्यै गुह्यकाल्यै रह्रीं हसखफ्रें खफ्रें ओं ह्रीं श्रीं फ्रें सिद्धिकरालि छ्रीं क्लीं फ्रें नमः फ्रें स्त्रीं हूं छ्रीं ह्रीं फट् फट् फट् नमः स्वाहा।

एवं सर्वत्रादौ उक्ताष्टादश बीजानि देयानि अन्ते व फलदायिन्यै इत्यारभ्य स्वाहान्तं देयम्। मध्ये परिवर्तनं अपेक्षितं तन्मात्रमुद्धृयते।

(२) .... अत्यग्निष्टोमयज्ञे नहुपराजाराधितायै ऐश्वर्यलक्ष्मीनामधारिण्यै सुरपतित्वरूप........।

(३) .... वाजपेययज्ञे अम्बरीषराजाराधितायै सत्त्वलक्ष्मीनामधारिण्यै परमनिर्वृतिरूप........।

(४) .... षोडशीयज्ञे दिलीपराजाराधितायै ज्ञानलक्ष्मीनामधारिण्यै नागलोकविजयरूप........।

(५) .... पुण्डरीकयज्ञे कार्तवीर्यार्जुनराजाराधितायै धर्मलक्ष्मीनामधारिण्यै पञ्चाशीतिसहस्त्रवर्ष जीवनरूप........।

(६) .... अश्वमेधयज्ञे मरु त्तराजाराधितायै क्रियालक्ष्मीनामधारिण्यै दशदिक्पाल वशीकरणरूप........।

(७) .... राजसूर्ययज्ञे हरिश्चन्द्रराजाराधितायै बुद्धिलक्ष्मीनामधारिण्यै सकलदेवताक्रियमाणस्तुतिरूप........।

(८) .... बहुसुवर्णयज्ञे बलराजाराधितायै मोक्षलक्ष्मीनामधारिण्यै परमसौन्दर्यरूप........।

(९) .... गोसवयज्ञे दिवोदासराजाराधितायै योगलक्ष्मीनामधारिण्यै निःसपत्नराज्यसम्राट्रूप........।

(१०) .... महाव्रतयज्ञे भरतराजाराधितायै सिद्धिलक्ष्मीनामधारिण्यै चक्रवर्तिरूप........।

(११) .... विश्वजितयज्ञे भद्रश्रेण्यराजाराधितायै वृद्धिलक्ष्मीनामधारिण्यै सप्तपाताल विजयरूप........।

(१२) .... प्राजापत्ययज्ञे सुहोत्रराजाराधितायै विद्यालक्ष्मीनामधारिण्यै सरस्वती दासीत्वरूप........।

****

(१३) .... अश्वक्रान्तयज्ञे शशविन्दुराजाराधितायै सन्तानलक्ष्मीनामधारिण्यै शतसहस्त्र पत्नीनियुतकन्या कोटिसुतरूप........।

(१४) .... रथक्रान्तयज्ञे बृहदश्वराजाराधितायै जीवलक्ष्मीनामधारिण्यै लक्षाधिका शीतिसहस्त्रवर्ष जीवनरूप........।

(१५) .... विश्वक्रान्तयज्ञे पौरवराजाराधितायै भोगलक्ष्मीनामधारिण्यै उर्वशीरंभामेनकातिलोत्तमा द्विषष्ट्यप्सराः संभोगरूप........।

(१६) .... सूर्यक्रान्तयज्ञे इक्ष्वाकुराजाराधितायै धर्मलक्ष्मीनामधारिण्यै द्विसप्ततिशाखा वेदधारणरूप........।

(१७) .... गजाक्रान्तयज्ञे ययातिराजाराधितायै अर्थलक्ष्मीनामधारिण्यै अष्टा दशलक्षमहर्षिप्रत्यहार्थ भोजनरूप........।

(१८) .... बलभिद्यज्ञे इन्द्रद्युम्नराजाराधितायै उदयलक्ष्मीनामधारिण्यै महर्लोक पर्तन्रंभातरथगमनरूप........।

(१९) .... नागयज्ञयज्ञे सर्यातिराजाराधितायै विभूतिलक्ष्मीनामधारिण्यै समरविजय पूर्वक कालकेयदितिज कन्या हरणरूप........।

(२०) .... सावित्रीयज्ञे शिविराजाराधितायै दयालक्ष्मीनामधारिण्यै स्वमांसोत्कर्तनधर्मरूप........।

(२१) .... अर्धसावित्रीयज्ञे शत्रुञ्जयराजाराधितायै क्रोधलक्ष्मीनामधारिण्यै गोमुखदैत्यषट्त्रिंशदक्षौहिणी भस्मीकरणरूप........।

(२२) .... सर्वतोभद्रयज्ञे ऋतपर्णराजाराधितायै राज्यलक्ष्मीनामधारिण्यै अप्रतिहताज्ञत्वरूप........।

(२३) .... आदित्यामययज्ञे रामचन्द्रराजाराधितायै नयलक्ष्मीनामधारिण्यै राजत्वत्वरूप........।

(२४) .... गवामययज्ञे विदूरथराजाराधितायै आज्ञालक्ष्मीनामधारिण्यै वासुकितो दण्डग्रहणरूप........।

(२५) .... सर्पामययज्ञे मान्धाता राजाराधितायै धनलक्ष्मीनामधारिण्यै वास वोपकारकरणरूप........।

(२६) .... कोण्डपामययज्ञे भगीरथराजाराधितायै अभयलक्ष्मीनामधारिण्यै सेवकादिखेचरसिद्धित्वरूप........।

(२७) .... अग्निचिद्यज्ञे युवनाश्वराजाराधितायै वरलक्ष्मीनामधारिण्यै लक्षमत्तहस्तिबलरूप........।

(२८) .... द्वादशाहयज्ञे रन्तिदेवराजाराधितायै प्रतापलक्ष्मीनामधारिण्यै चतुर्विधार्थसामग्रीरूप........।

(२९) .... उपांशुयज्ञे आग्नीध्रराजाराधितायै शक्तिलक्ष्मीनामधारिण्यै स्वेच्छाचारित्वरूप........।

(३०) .... अश्वप्रतिग्रहयज्ञे पुरूरवाराजाराधितायै निर्वाणलक्ष्मीनामधारिण्यै अनायास त्रिलोकीरक्षणरूप........।

(३१) .... बर्हिरथयज्ञे गयराजाराधितायै परापरलक्ष्मीनामधारिण्यै स्वेच्छारूपित्वरूप........।

(३२) .... अभ्युदययज्ञे अलर्कराजाराधितायै अद्वैतलक्ष्मीनामधारिण्यै महायोगसिद्धिरूप........।

(३३) .... सर्वस्वदक्षिणयज्ञे पृथुराजाराधितायै इच्छालक्ष्मीनामधारिण्यै चिरजीवित्वरूप........।

(३४) .... दीक्षायज्ञे रघुराजाराधितायै आवेशलक्ष्मीनामधारिण्यै चतुर्विधभूतसंघवृत्ति कल्पनाकुबेर जयरूप........।

(३५) .... सोमयज्ञे प्रतर्दनराजाराधितायै उत्साहलक्ष्मीनामधारिण्यै पुरन्दरसख्यरूप........।

(३६) .... स्वाहाकारयज्ञे सगरराजाराधितायै अमृतलक्ष्मीनामधारिण्यै रिपुविरूपकरणरूप........।

(३७) .... तनूनपात्यज्ञे हर्यक्षराजाराधितायै तत्वलक्ष्मीनामधारिण्यै स्वेच्छाबलसृष्टिरूप........।

***

(३८) .... गोदोहनयज्ञे अजमीढराजाराधितायै मोहलक्ष्मीनामधारिण्यै प्रसभवासुकिकन्यापरिणयरूप........।

(३९) .... नरमेधयज्ञे पुरुकुत्सराजाराधितायै महालक्ष्मीनामधारिण्यै वरुणनिरुद्धजयरूप........।

(४०) .... ज्योतिष्टोमयज्ञे कटुराजाराधितायै काललक्ष्मीनामधारिण्यै वासवासाध्यदैत्यजयरूप........।

(४१) .... दर्शयज्ञ अङ्गराजराजाराधितायै उद्धारलक्ष्मीनामधारिण्यै दिक्पालनिरोधसङ्कटतरणरूप........।

(४२) .... पौर्णमासयज्ञे बलाकाश्वराजाराधितायै कीर्तिलक्ष्मीनामधारिण्यै शच्युद्धाररूप........।

(४३) .... अतिरात्रयज्ञे अयुतायुराजाराधितायै वीरलक्ष्मीनामधारिण्यै निकुम्भदैत्यगर्वभञ्जनरूप........।

(४४) .... सौभरयज्ञे मतिनावराजाराधितायै आनन्दलक्ष्मीनामधारिण्यै अजातशत्रुतांरूप........।

(४५) .... सौभाग्यकृद्यज्ञे जीमूतवाहनराजाराधितायै सौभाग्यलक्ष्मीनामधारिण्यै महावदान्यरूप........।

(४६) .... शान्तिकृद्यज्ञे रम्भराजाराधितायै वश्यलक्ष्मीनामधारिण्यै जगद्वशीकरणरूप........।

(४७) .... सौपर्णयज्ञे नृगराजाराधितायै तपःलक्ष्मीनामधारिण्यै महावदान्यरूप........।

(४८) .... त्रैलोक्यमोहनयज्ञे वीरबाहुराजाराधितायै खड्गलक्ष्मीनामधारिण्यै अतिरथतारूप........।

(४९) .... शङ्खचूडयज्ञे वसुमनाराजाराधितायै उदारलक्ष्मीनामधारिण्यै पूर्वपुरुषोद्धाररूप........।

(५०) .... कन्दर्पबलशातनयज्ञे चित्रायुधराजाराधितायै कान्तिलक्ष्मीनामधारिण्यै सौन्दर्यैकनिधानरूप........।

(५१) .... गजच्छाययज्ञे सप्तसप्ततिराजाराधितायै कैवल्यलक्ष्मीनामधारिण्यै सायुज्यमुक्तिरूप........।

॥ इति यज्ञ महाराज न्यासः ॥

॥ इति महाषोढा न्यास समाप्तम् ॥

॥ अथ आवरण पूजा विधानम् ॥

(महाकाल संहितायाम्)

॥ अङ्गपूजा विधानम् ॥

पञ्चाक्षर मन्त्र से देवी के सभी अङ्गों की पूजा करें।

मन्त्र - ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें।

देवी के अङ्गों में न्यास क्रम से करें। यथा-

तीनों नेत्र, दोनों कान, दोनों नासापुट, भ्रूमध्य, दोनों कपोल, दोनों गण्डस्थल, ठोडी, असृग्, ऊपर नीचे की दंतपंक्ति, ऊपर नीचे के ओष्ठ, जिह्वा, गला, दोनों पार्श्व, वक्षस्थल, पृष्ठ जठराग्नि, नाभिस्थल, वस्तिप्रदेश, दोनों ऊरू, जानु जंघा, गुल्फ तथा चरणों में पूजन कर देवी के मुख का अर्चन कर अङ्ग पूजा करें।

॥ विविध यन्त्रोद्धार ॥

अनेकानेक उपासकों द्वारा भिन्न भिन्न स्वरूपों में यंत्रोद्धार करके पूजा अर्चा की है। उनका यथा उल्लेख के पश्चात् विधि से आवरण पूजाक्रम उल्लेखित किया गया है।

वैसे एक एक आवरण में कई मन्त्रों से पूजा विधान है परन्तु साधारण साधक पञ्चाक्षर, षडाक्षर, नवार्ण या षोडशाक्षर या इष्ट मन्त्र सहित नामावलि से पूजा करें।

यहां पूजाक्रम में केवल नामावलि का उल्लेख किया है।

देवी के साथ सिंह पूजा प्रधान कही है। किसी तन्त्र में सिंह को विष्णु स्वरूप तथा कहीं रुद्ररूप कहा गया है।

कालाग्निरुद्ररूपस्य भीषणस्य महेशितुः ।
आकारो नरसिंहस्य यथातस्य तथैव च ॥
ज्वालामालीनृसिंहेति तस्य नाम तिगद्यते ।
स एव भगवान् रुद्रः सिंहरूपेण संस्थितः ॥

मन्त्र - ॐ हूं श्रीं क्लीं सौं ह्लीं छ्रीं ऐं क्ष्रौं नरसिंहाय हूं फट् स्वाहा।

(१) विधातृ काम वरणोपासित यन्त्रोद्धार

बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, पञ्चकोण, षोडशदल पश्चात् अष्टदल बनायें। उनके बाहर भूपूर बनायें। चारों दिशाओं में शूल (भाले की तरह) एवं गोला (मुण्डाकार) बनायें।

(२) वैश्वानरादितीन्द्राण्युपासित यंत्रोद्धार

बिन्दु, त्रिकोण, पञ्चकोण, षट्कोण, द्वादशदल, अष्टकोण (दो चतुर्भुजों को दिशा व विदिशा में बनाने पर बन

****

जाता है) वृत्त एवं उनके बाहर भूपुर बनायें।

भूपुर के चारों दिशाओं में दो दो शूल तथा दो दो अर्द्धमुण्ड (अर्धवृत्त गोला) बनायें।

(३) दानवाली मृत्युकालोपासिताणां यंत्रोद्धार

बिन्दु, षट्कोण, पञ्चकोण, त्रिकोण, अष्टदल, वृत्त पश्चात् अष्टकोण (दो आयतों को दिशा-विदिशा में बनाकर) एवं उसके बाहर भूपुर बनायें। चारों द्वारों पर दो दो शूल, वज्र, मुण्डि (गोला) बनायें।

(४) भरत, च्यवन, हारीत, जबालज एवं दक्ष पूजित यन्त्रम्

बिन्दु, त्रिकोण, पञ्चकोण उसके बाद वृत्त बनाकर नवकोण बनायें। दो आयतों को दिशा विदिशा में बनाकर उससे अष्टकोण बनायें।

पश्चात् अष्टदल, द्वादशदल, षोडशदल बनाकर भूपुर की रचना करें।

चारों द्वारों पर दो दो शूल, वज्र एवं मुण्ड बनायें।

वह्निज्वाला युक्त श्मशान की कल्पना करें जो शोणित से घिरा हुआ है।

(५) रामयक्षेषनाहुषैः पूज्य यन्त्रम्

बिन्दु, पञ्चकोण, षट्कोण, नवकोण उनके बाहर दो आयतों को दिशा विदिशा में बनाकर अष्टकोण की रचना कर वृत्त बनायें।

पश्चात् भूपुर बनायें, चारों द्वारों पर दो दो शूल एवं मुण्ड बनायें, प्रत्येक द्वार पर ४-४ वज्र बनायें।

(६) हिरण्यकशिपूपास्य मन्त्रस्य यन्त्रम्

बिन्दु, त्रिकोण, पञ्चकोण, षट्कोण, वृत्त बनायें, दो आयतों को दिशा विदिशा में बनाकर उसके ऊपर नवकोण बनायें। उनके बाहर षोडशदल व अष्टदल बनाकर भूपुर बनायें। भूपुर की चारों दिशाओं में वज्र, शूल एवं मुण्डि बनायें।

(७) ब्रह्मोपासितायाः सप्तदश्याः, विष्णुतत्त्वाख्य पञ्चाक्षर मन्त्रस्य च यन्त्रम्

बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, नवकोण पर दो आयतों को दिशा विदिशा में बनाकर उनसे अष्टकोण बनाकर उनके ऊपर पञ्चकोण बनायें, पश्चात् वर्तुल बनाकर षोडशदल व अष्टदल बनाकर भूपुर बनायें। भूपुर की चारों दिशाओं में वज्र, शूल व मुण्डि बनाये।

(८) वसिष्ठ सप्तदश्याः यन्त्रम्

बिन्दु, वर्तुल, त्रिकोण, षट्कोण, नवकोण, षोडशदल पश्चात् अष्टदल बनायें। भूपुर रचना नहीं है। चारों दिशाओं में शूल एवं मुण्ड स्थापित करें।

देवी पीठ में जलता हुआ श्मशान नहीं है। रक्तार्णव के मध्य में पीठ है।

(९) रावणोपासित सप्तदश्याः अम्बहृदयाख्यं यन्त्रम्

बिन्दु, पञ्चकोण, षष्टकोण बनायें। उसके ऊपर दो आयतों को विदिशा दिशा में बनाकर अष्टकोण बनाये। उनके ऊपर त्रिकोण बनाकर वृत्त के ऊपर षोडश, द्वादश एवं अष्टदल बनाये। पश्चात् चारों दिशाओं में शूल व मुण्ड बनायें। भूपुर का यहां अभाव है।

(१०) महारुद्रोपासित षोडशी यन्त्रम्

बिन्दु, वृत्त, त्रिकोण, पञ्चकोण, अष्टकोण एवं नवकोण बनाकर तीन वृत्त बनाये। उन पर अष्टकोण बनायें। उन पर ३-३ रेखा वाले २४,१६,१२,८ दल वाले पद्म बनायें। पश्चात् भूपुर बनाये।

चारों कोणों में २-२ शूल, वज्र तथा एक एक मुण्ड बनायें।

(११) षोडशार्णा पूजन यन्त्रम्

बिन्दु, त्रिकोण, पञ्चकोण, नवकोण बनाकर वृत्त बनायें। उस पर अष्टकोण, पश्चात् षट्कोण, वृत्त एवं अष्टकोण बनायें। उसके ऊपर वृत्त षोडश, अष्ट एवं द्वादश दल बनाकर भूपुर बनायें।

भूपुर के कोणों में २-२ वज्र, शूल एवं एक एक मुण्ड बनायें।

(१२) षट्त्रिंशदक्षर्या यन्त्रम्

बिन्दु, षट्कोण, पञ्चकोण पश्चात् अष्टकोण बनायें। उनके ऊपर त्रिकोण पश्चात् नवकोण बनायें। वृत्त बनायें ३२दल, १२ दल एवं १६ दल का कमल बनाकर वृत्त बनायें पश्चात् चार द्वार युक्त भूपुर की रचना करे। पूर्वादि दिशाओं में २-२ शूल एवं एक एक मुण्ड बनायें।

(१३) अष्टपञ्चाशदर्णा जयमंगला यन्त्रम्

बिन्दु, पञ्चकोण, त्रिकोण, अष्टकोण व नवकोण बनाकर ५ वृत्त बनायें। पश्चात् अष्टदल, षोडशदल एवं द्वात्रिंशद (३२) दल बनाकर ३ वृत्त पश्चात् भूपुर बनायें। पूर्व की तरह २-२ शूल व १-१ मुण्ड बनायें।

(१४) भुवनमोहन (भोगविद्या) यन्त्रम्

बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, त्रिकोण, पञ्चकोण, उसके बाद ३ वृत्त तथा अष्टकोण बनायें। पश्चात् त्रिकोण, नवकोण बनाकर उनके बाहर षोडशदल, अष्टदल एवं चतुविंश दल बनाकर ३ वृत्त बनाकर भूपुर बनायें।

भूपुर के चारों कोणों में अन्दर २-२ वज्र तथा बाहर कोणों में २-२ शूल १-१ मुण्ड की रचना करें।

(१५) शताक्षर्या गुह्येश्वरी यन्त्रम्

बिन्दु, ३वृत्त, षट्कोण, अष्टकोण पश्चात् पञ्चकोण बनाकर वृत्त बनायें। उन पर १६ दल एवं २४ दल का पद्म बनाकर ३ वृत्त बनाकर भूपुर बनायें।

भूपुर के चारों कोणों २-२ शूल १-१ मुण्ड बनायें।

(१६) सहस्राक्षर मंत्रे त्रिंशद्वक्त्रा कालिका यन्त्रम्

बिन्दु, त्रिकोण, पञ्चकोण एवं वृत्त बनायें। पश्चात् षट्कोण, अष्टकोण, वृत्त, नवकोण पुनः वर्तुल बनाकर ८, १२, १६ एवं ३२ दल के पद्म बनायें पश्चात् ५ वृत्त एवं भूपुर बनायें। चारों कोणों के अन्दर २-२ वज्र तथा बाहर २-२ शूल एवं १-१ मुण्ड बनायें।

(१७) विष्णुपास्यायुतार्णस्य यन्त्रम्

बिन्दु, अर्द्धचन्द्राकार, त्रिकोण, पञ्चकोण एवं वृत्त बनायें। नवकोण, षट्कोण एवं अष्टकोण बनाकर ९ वृत्त बनायें। पश्चात् ३२, २४, १६, १२ एवं ८ दल के पद्म बनाये॥ उसके बाहर भूपुर बनायें, पूर्वादि दिशाओं में २-२ शूल बनायें।

(१८) अयुतार्णस्य यन्त्रराज यन्त्रम्

बिन्दु, अर्द्धचन्द्र, ५ वृत्त, ५ कोण पश्चात् अष्टकोण, उनके बाहर ३ वृत्त बनाकर, त्रिकोण बनायें। उसके बाहर ३ वृत्त, षट्कोण ३ वृत्त पश्चात् ९ कोण बनायें। पुनः ५ वृत्त बनायें उन पर ३२, २४, १६, १२ एवं ८ दल के कमल बनाकर भूपुर बनायें। पूर्वादि दिशाओं में १-१ शूल व मुण्ड स्थापित करें।

(१९) शोभव मन्त्राराधन यन्त्रम्

बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण बनाकर आधारहीन वाले नवकोण बनायें। पश्चात् तीन वृत्त बनाकर २४, दल का पद्म बनाकर भूपुर बनायें।

(२०) महाशोभव मन्त्रस्य यन्त्रम्

बिन्दु, अष्टकोण, त्रिकोण, आधारहीन नव कोण, ३ वृत्त पश्चात् षोडशदल युक्त भूपुर बनायें।

(२१) तुरीयायाः यन्त्रम्

बिन्दु उसके नीचे अर्द्धचन्द्राकार, उनके आठों दिशाओं में आठ बिन्दु बनायें पश्चात् ५ वृत्त बनायें। उन पर अष्टकोण बनायें।

उसके बाद बिना वृत्त वाले दो षोडशदल के कमल बनाकर भूपुर की रचना करें।

(२२) महातुरीया यन्त्रम्

बिन्दु में प्रणव लिखकर ३ वृत्त बनायें। उसके बाहर अष्टकोण बनाकर बिना वृत्त वाले २ अष्टदल एक के ऊपर एक बनाकर भूपुर बनायें।

(२३) निर्वाण यन्त्रम्

बिन्दु के बाहर ३ वृत्त बनायें। कुछ वीथिका (गली-दूरी) रखकर ३ वृत्त बनायें पुनः कुछ वीथिका (मार्ग-गली-दूरी) रखकर पुनः ३ वृत्त बनायें। पश्चात् २४ दल कमल एवं भूपुर बनायें।

(२४) महानिर्वाण यन्त्रम्

बिन्दु, ३ वृत्त, त्रिकोण के ऊपर ५ वृत्त बनाकर षट्कोण बनायें। पश्चात् ७ वृत्त बनाकर अष्टकोण बनायें। उसके ऊपर ९ वृत्त बनाकर अष्टदल बनायें। उसके बाद एक के बाद एक ८, १२, १६, २४ ३२, एवं ३६ दल का कमल बनाकर ९ वृत्त बनायें पश्चात् भूपुर की रचना करें।

॥ अथ गुह्यकाली यन्त्रार्चनम् ॥

गुह्यकाली की उपासना संहार क्रम व सृष्टिक्रम दोनों तरह से की जाती है। बिन्दु के बाहर पद्मदलों व भूपुर तक पूजा सृष्टिक्रम की पूजा कही जाती है तथा पद्मदलों के अन्दर त्रिकोण बिन्दु तक की पूजा संहारक्रम की पूजा कही जाती है।

भरत, च्यवन, हारीत, जावाल, दक्ष पूजित यन्त्र की उपासना पद्धति का आराधना क्रम आवरण पूजा इस प्रकार है। दिगम्बर व कापालिक मत में कुछ भेद है जिनका उल्लेख भी किया गया है।

आवरण पूजा हेतु हृदय मन्त्र का हृदय में १० बार जप करें।

मन्त्र :- ॐ श्रीं ह्सखफ्रें गुह्यकालिके हुं फट् फ्रें हूं ह्रीं।

इस मन्त्र के **भारद्वाज ऋषि, पंक्ति छन्द, गुह्यकाली देवता, क्लीं बीज, फ्रें शक्ति, हूं कीलक है।**

आवरण पूजा पूर्व सिंह की अर्चा व ध्यान कर बलि प्रदान करें। देवी व सिंह का सामस्यभाव ध्यान करें।
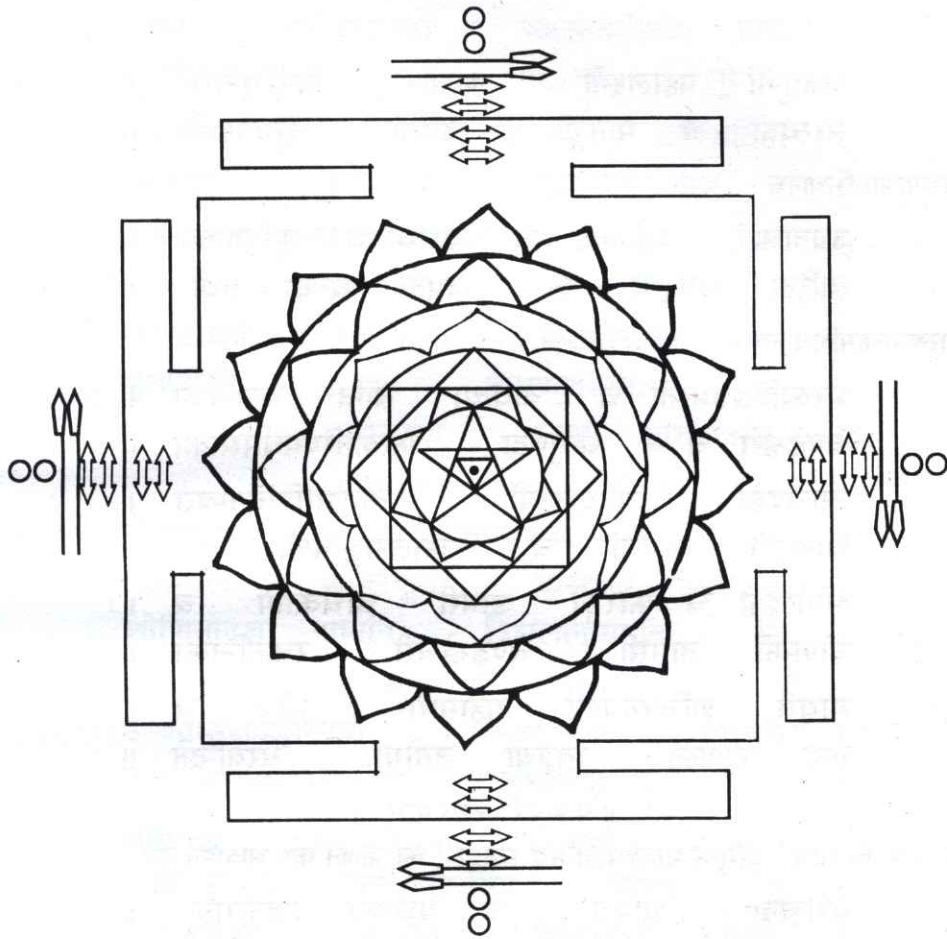
॥ भरतच्यवनहारीतजाबालदक्षपूजितं गुह्यकाली यन्त्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

उद्यन्मार्तण्डकोट्यंशु - समारुणतनुप्रभाम् ।
वर्तुलोल्मुक संकाश नेत्र त्रितय भूषितम् ॥
विदारिसृक्क निर्गच्छद् दंष्ट्रा मन्त्र कलान्वितम् ।
विदीर्णविकरालास्यं ललज्जिह्वा विभीषणम् ॥

आवरण पूजायां मतभेद प्रदर्शनम् । दिव्यौघा तथा सिद्धौघानां मानवसंज्ञिनाम् । परस्परं विवादाः स्युतत्र निर्णय उच्यते।

भगवती के स्थिति, सृष्टि, संहार क्रम से सत्वरूपा रजोरूपा व तमोरूपा क्रम में सौम्य, उग्र एवं उग्रोग्र ध्यान है। उसी स्वरूप के दिव्यौघादि का पूजन करें।

अतः सौम्य, उग्र एवं उग्रोग्र कुल की देवियों के दिव्यौघादि की ''**कालिकामयी**'' व ''**अमुकानन्द**'' जोड़कर

पूजन करें।

देव्याः सौम्यरूपाणामभिधानम् -

अन्नपूर्णा महालक्ष्मी बाला त्रिपुरसुन्दरी ।
सरस्वती च मातङ्गी बगला भुवनेश्वरी ॥

देव्या उग्ररूपाणामभिधानम् -

उग्रतारा शूलिनी च पद्मावत्यथ कुब्जिका ।
त्वरिता जयदुर्गा च त्रिपुटा धनदा तथा ॥

देव्याउग्रतररूपाणामभिधानम् -

भैरव्यश्छिन्नमस्ता च यावत्यः सन्ति कालिका ।
चण्डेश्वरी च चामुण्डा फेत्कारिण्यर्धमस्तका ॥
उग्रचण्डा सिद्धिलक्ष्मी कालरात्रिर्दिगम्बरा ।
शिवदूती बाभ्रवी च कालसङ्कर्षिणी तथा ॥
भीमादेवी च कोरङ्गी डामरी चर्चिकापि च ।
घोणकी तामसी चण्डखेचरी रक्तदन्तिका ॥
मायूरी शक्तिसौपर्णी महामारी तथैव च ।
एता देव्यस्तु विज्ञेया उग्रोग्राः सुरवन्दिते ॥

॥ पञ्चपुरी स्मरणम् ॥

पञ्चपुरी के नाम के साथ ''**अमुक महाश्मशानाय स्वाहा**'' का योजन कर आवाहन करें।

प्रभञ्जना भ्रामरी च प्रचण्डा तदनुस्मृता ।
केकराक्षी कालरात्रिरिति पञ्च पुरः स्मरेत् ॥

प्रत्येक पुर १०० योजन का है।

॥ अष्टश्मशान पूजनम् ॥

भूपुर मण्डल में ''**अष्ट महाश्मशान**'' की पूजा करें। प्रत्येक के नाम के साथ '**ह्रीं छ्रीं हूं स्त्रीं फ्रें**' उच्चारित करें।

महाघोर कालदण्डो ज्वालाकुल इतः परम् ।
चण्डपाशस्तथा कापालिको धूमाकुलस्तथा ।
भीमाङ्गारो भूतनाथो दिक्ष्वित्यष्टसु पूजयेत् ॥

दिग्भाग में नाम मन्त्र के साथ '**हूं फट्**' सहित पूजन करें।

भारुण्डा काकिनी नागश्चक्रमौदुम्बरस्तथा ।
ज्वालाकुल श्मशानाष्ट दिग्भागेभ्य इतीरयेत् ॥

॥ श्मशानानां दिग्विभागः ॥

प्रथम स्वस्तिकावर्तो ज्वालावर्तस्ततः परम् ।
याम्यावर्तस्ततो ज्ञेयो नद्यावर्तः सुरेश्वरि ॥
भद्रार्वतः पुनः सौम्यावर्तोऽपि प्रतिपादितः ।
मंगलावर्त इति च संभ्रमावर्त एव च ॥
इत्येतेऽष्टश्मशाननां दिग्विभागाः क्रमात् प्रिये ॥

॥ द्वारपालानां पूजनम् (भूपुरे) ॥

कालपाशो भीमपाशो यमपाशस्ततः परम् ।
मृत्युपाशो दण्डपाशो नागपाशस्ततः परम् ।
ज्वालापाशो घोरपाश इत्यष्टौ द्वारपालकाः ॥

॥ अष्टत्रिशूल पूजनम् (भूपुरे) ॥

जयावहो विद्युदस्त्रश्चण्डखण्डस्ततः परम् ।
विकरालः कालकूटो घोरनादो विदारणः ।
शोणितोदश्च नामानि त्रिशूलानाममूनि हि ॥

॥ अष्टवज्रानि (भूपुरे) ॥

उल्कामुखोऽङ्गारमयो भस्मान्तक भयङ्करौ ।
ततोऽध्वानविवत्सौ च संभारोऽथास्य पश्चिमे ॥
संयोगश्च वियोगश्च पञ्चैतानि पुरोवदेत् ।
अथोल्कामुख वज्राभिपदैर्धारिन पदस्य च ।
विग्रहीकृत्य युञ्जीत ङेविभक्तिं वरानने ॥

(ङेऽन्त तथा ङेविभक्ति अर्थात् स्वाहा। अतः नाम के आगे स्वाहा सहित आवाहन करें।)

॥ वेतालचतुष्ट्य (भूपुरे कोणेषु) ॥

तान्यग्नितुण्डः प्रथमं मृत्युजिह्वस्ततोऽप्यनु ।
कालदण्डो जम्बुनादः कार्यः सन्ध्यन्वितो ऽग्रगः ॥

॥ सिंहासन पूजनम् (मुण्डिस्थाने) ॥

चारों युग व वेदों का पूजन करे

आदौ कृतयुगं त्रेतायुगं तदनु कथ्यते ।
ततोऽनु द्वापरयुगं ततः कलियुगं मतम् ॥
ऋग्वेदश्च यजुर्वेदः सामवेदस्तथैव च ।
अथर्ववेदः कथितः सर्वशेषे वरानने ।

एतैमुण्डासनस्यापि कर्तव्यो द्वन्द्वविग्रहः ॥
ॐ हीर मौक्तिक सिंहासनाय नमः ॥

॥ अष्ट दिक्पाल पूजनम् (भूपुरे) ॥

पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि दिक्पालों का उनके वाहन व उनके आयुधों सहित पूजन करें।

इन्द्रोऽग्निश्च यमश्चैव निर्ऋतिर्वरुणस्तथा ।
वायुः कुबेर ईशान एतादृग्भिः स्वनामभिः ॥
ऐरावतस्तथा छागो महिषस्तुरगस्तथा ।
मकरो हरिणश्चैव नरो वृषभ एव च ॥
वज्रं शक्तिर्दण्ड खड्ग पाश ध्वज गदाः क्रमात् ।
त्रिशूलश्चेदृशैः शब्दैरायुधस्य च विग्रहः ॥

॥ सिंहासनधराणां पूजनम् ॥

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।
एकैकमेषामेकस्मिन् मंत्रे क्रमत ईरयेत् ॥

॥ शिवासनार्चा मन्त्रः ॥

शिव के १० नामों से सदाशिव की पूजा करें।

शशाङ्कशेखरपदं नागहारिपदं ततः ।
भीमदर्शनमित्येवं वज्रदंष्ट्रानखं ततः ॥
व्याघ्रचर्माम्बरमणि शूलखट्वाङ्गधार्यपि ।
ततो धूमलवर्णश्च पुनः पिङ्गजटाधरः ॥
शिवाकारश्च नवमो दशमश्च शिवासनम् ।

॥ शिवासने चतुर्विंशदलाम्बुजे पूजनम् ॥

शिवासन पर २४ दल की कल्पना करें। २४ दल निर्माण हेतु नहीं कहा है फिर भी -

तथाप्यावरणार्चार्थं पद्मं कल्प्यं धियेदृशम् ।
यस्मिन् यस्मिन् भवेद् यन्त्रे चतुर्विंशदलाम्बुजम् ॥
न तत्रेदृगविधं पद्मं कल्पनीयं धियाऽनघे ।
अभावे यत्र यत्र स्याद् यस्य यस्य सरोरुहः ॥
तत्र तत्र धिया कार्यमेवमाह पुरद्विषः ।
शिवासनोपरि ध्यात्वा चतुर्विंशदलाम्बुजम् ॥

२४ दलों में देवी का नाम मन्त्रों से पूजन करें।

मध्ये काली क्रमाद् वक्ष्ये ताभिरम्बासु संस्थिता ।

उग्रकाली रौद्रकाली ततो वेतालकाल्यपि ॥
संहारकाली तदनु भीमकाली ततः परम् ।
धूमकाली मुण्डकाली नादकाल्यनु कथ्यते ॥
ततो महारात्रिकाली नग्नकाल्यनु कथ्यते ।
ततो दुर्जयकाली च पुनर्मन्थान काल्यपि ॥
कल्पान्तकाली रुधिरकाली कङ्काल कल्यपि ।
सन्त्रासकाली तदनु स्याद् भयङ्करकाल्यपि ॥
स्यात् त्रयोविंशतितमा काली विकटपूर्विका ।
घोरघोरतरार्णानु काली शेषे प्रतिष्ठिता ॥

॥ षोडशदले पूजनम् (देवी षोडशनामावली) ॥

महाज्ञानं महेच्छा च महारम्भ इतः परम् ।
महैश्वर्यं चापि महावैराग्यं कान्त एव च ॥
महाधर्म महाशान्ती तदनन्तरमीरिते ।
महानन्दश्च देवेशि महाधनमतः परम् ॥
महादण्डोऽपि महाप्रभा तदनु कथ्यते ।
महाकौमुद्यपि महास्फुलिङ्गोऽस्यानु वर्णितः ॥
महाघोराऽपि च महारणोऽप्यऽस्यानु कीर्तितः ।
महामोक्षश्चेति शेषे षोडशैवं प्रकीर्तिता ॥

॥ कालीकादिपदक्रम (षोडश दले केसरे) ॥

आदौ विवेक उत्साह उद्यमः सम्भ्रमोऽपि च ।
विग्रहो मङ्गलं चैव नियमः समयोऽपि च ॥
चैतन्यं च समाधिश्च निदानं विस्मयोऽपि च ।
प्रभावोऽनु प्रमाणं च कैवल्यं च प्रकाशयुक् ॥
इति षोडश निर्दिष्टाः कालिकादिपदक्रमे ॥

(कापालिक मतेन षोडशदले पूजा)

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च शक्रो वह्निर्यमस्तथा ।
वायुर्विश्वो वसुर्मृत्युर्यक्षो रक्षश्च साध्ययुक् ॥
मेघो निधिश्च मोक्षश्चत्येते क्रमत ईरिताः ।
ऐभिर्मन्त्रैर्यजन्त्या षोडशच्छद पङ्कजे ॥

॥ द्वादशदले देवी पूजा ॥

मध्ये काली ङेऽन्त (स्वाहा) रूपा भिन्ना भिन्ना उदीरयेत् ।
आद्या दक्षिणकाली च द्वितीया धनकाल्यपि ॥
भद्रकाली सिद्धिकाली चण्डकाली तथैव च ।
ततः कामकलाकाली भीमकाली ततोऽप्यनु ॥
घोरकाल्युग्रकाली च नवमी परिकीर्तिता ।
श्मशानकाली तदनु ज्वालाकाली ततोऽप्यनु ।
सर्वशेषे गुह्यकाली द्वादशी परिकीर्तिता ॥

(कापालिक मतेन)

ब्रह्मास्त्रमाग्नेयास्त्रं च वायव्यास्त्रमनन्तरम् ।
ऐषीकास्त्रं पार्वतास्त्रं नागास्त्रं तदनन्तरम् ॥
प्रवापनास्त्रं तदनु सौपर्णास्त्रं ततोऽप्यनु ।
मतङ्गास्त्रं दानवास्त्रं पैशाचास्त्र मतः परम् ॥
सर्वशेषे ब्रह्मशिरोऽस्त्रं देविपरिकीर्तितम् ॥

प्राकारान्तरेण (कपालडामरोक्त) द्वादशदलाधिष्ठात्री -

उल्कामुख पिङ्गजटो दावनल इतः परम् ।
प्रेतासनश्च शुष्कोदर ज्वालाकुल एव च ॥
चण्डहासस्तथा भूतोन्मादश्चापि महोदय ।
कुलचक्रो मेघनादो विश्वरूपोऽन्तगोचरः ।

(दिगम्बरमते)

कोकामुखी ऋक्षकर्णि पूर्णभद्रा महोदरी ।
कपालिन्येपादा च कुरुकुल्ला तथैव च ।
महामारी चण्डघण्टा जालन्धर्यवलोकिनी ।
संहारिणी सर्वशेषे द्वादशैवं प्रकीर्तिताः ।

॥ अष्टदले देवी पूजा ॥

आदौ महाचण्डयोगेश्वरी भवति देवता ।
वज्रकापालिनी चापि सिद्धिलक्ष्मीस्तथैव च ॥
कालसङ्कर्षणी चापि कुब्जिका तदनन्तरम् ।
चण्डेश्वरी तथा वज्रेश्वरी तदनु कथ्यते ।
सर्वशेषे परिज्ञेया चण्डकापालिनी प्रिये ॥

(१. प्रकारान्तरेण)

उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका ।
चण्ड चण्डवती चैव अतिचण्डा च चण्डिका ॥

(२. प्रकारान्तरेण)

मध्येकाला च कलविकरणी तदनन्तरम् ।
पश्चादस्याश्च बलविकरणी च बला तथा ॥
बलप्रमथिनी चापि तथैवोन्मन्यपि प्रिये ।
मनोन्मन्यप्यघोराणि क्रमादष्टाविमा मताः ॥

(कापालिक मतेन) कपालडामरोक्त –

कलावती कालकर्णी कापालिन्यप्यघोच्यते ।
कालरौद्रीं कौलकिनी ततोऽपि च करालिनी ।
कोकामुखी तथा कामेश्वरी चेत्यष्ट कीर्तिता ॥

(दिगम्बरमतेन)

ज्योतिर्मयी महाशक्तिः प्रभावत्यथ कथ्यते ।
संतापिनी ततो ज्ञेया प्रमादिन्यप्यतः परम् ।
मन्त्रासिनी चापि बलाकिन्यतः शातकर्ण्यपि ॥

॥ अष्टदलोपरि अवस्थित देवादीनां पूजनम् ॥

अष्टदल के ऊपर दिशा विदिशा ८ रेखा कही है।

अष्टपत्राम्बुजस्योद्धर्वं रेखा अष्टौ सुरेश्वरि ।
वर्तन्ते तेन पीठस्य शोणितोदक्रमस्य हि ।
तां रेखा पंक्तिशब्देन कथ्यन्ते यामलादिषु ॥

अष्टदल के ऊपर ८ रेखा कही है अतः ये रेखायें यन्त्र बनाते समय अष्टदल के अन्दर ही नजर आयेगी। अतः वर्गाकार चतुर्भुज की कल्पना करें ऐसे एक पर एक ८ वर्गाकार चतुर्भुज होगें जिनको एक एक पंक्ति के रूप में सम्बोधित किया है। इस वर्ग की एक भुजा को भीति नाम से जाना जाता है।

अगर "**अष्टपत्राम्बुजस्योद्धर्वं रेखा अष्टौ सुरेश्वरि**" का दूसरा भावार्थ साधक समझें तो एक आयत पूर्वादि दिशा में बनाये दूसरा आयत विदिशा कोण से तिरछा बनायें तो दोनों की ४-४ रेखा होकर ८ रेखा कुल हुई। दोनों आयतों के मिलन से अष्टकोण का निर्माण भी हो जाता है।

इस तरह ४-४ आयत दिशा व विदिशा के होगें। कुल ८ आयत होगें उनके पूजन को पङ्क्ति क्रम कहा जायेगा।

॥ प्रथमपङ्क्ति पूजनम् ॥

नैऋत्य से वायव्य की ओर संख्या १, ईशान से अग्निकोण तक के देवता संख्या २, अग्निकोण से नैऋत्यकोण संख्या ३ तथा वायव्य से ईशान तक के देवता संख्या ४ से मन्त्र के साथ सम्बोधित किये गये है। एकएक दिशा में आठ

होने से ३२ देवतओं का पूजन होगा।

पितामहस्तथा नारायणो रुद्रस्तथैव च ।
हेरम्बश्च विशाखश्च मार्तण्डेन्द्रधनास्तथा ॥१॥
राक्षसश्च पिशाचश्च जम्भो मदन एव च ।
मन्दारकाम शकुन विलासास्तदनन्तरम् ॥२॥
धर्मो यमश्च मन्त्रश्च कल्पः पाण्डर एव च ।
चैतन्यं च हिरण्यं च तथा मातङ्ग एव च ॥३॥
संभ्रमः प्रलयः सत्त्वं रागो ललितमेव च ।
प्रपञ्चश्च विवेकश्च निर्वाणं तदनन्तरम् ॥४॥

॥ द्वितीयपङ्क्ति पूजनम् (भैरव पूजा) ॥

॥ ध्यानम् ॥

ज्वलद्धुतवहज्वाल श्मशान स्थलचारिणः ।
पादालंबितजटाभारा मसीपुञ्ज समप्रभाः ॥
ज्वलच्चिताकुण्डनिभ लोचनत्रय भूषिताः ।
लंबोदरा पिङ्गजटाः स्थूलाः खर्वकलेवराः ॥
नृमुण्डमालाघटित हारग्रैवेयकोज्वलाः ।
मज्जासृङ्मांसमेदोऽस्थि वशासंपूरितानना ॥
घोरदंष्ट्राललज्जिह्वा करालमुख मण्डला ।
शवोपरि कृतावासा अट्टहासा भयानका ॥

(पूज्यनामानि)

८-८ संख्या के पूरी होने पर १, २, ३, ४ लिखें हैं। इति सर्वत्र।

कालः श्मशानो हुङ्कारोऽसिताङ्गोरुरुरेव च ।
भूताधिपो कृतान्तश्च कालाग्नि[1] भंगमाल्यपि ॥
उग्रायुधो भूतनाथश्चण्डः क्रोधो यमान्तकः ।
प्रचण्डो विकरालश्च[2] कालान्तक इतः परम् ॥
उन्मत्तश्च कपाली च भद्रो मृत्युस्तथैव च ।
उल्कामुखः प्रेतमाली वज्रमुष्टि[3] दिंगम्बरः ॥
संतापको घोरनादः शोषणस्त्रिपुरान्तकः ।
भीषणश्चापि संहारश्चण्डोग्रः[4] सर्वशेषग ।

॥ तृतीयपंक्त्यौ भैरवी पूजा ॥

लंबोदरी शुष्कमुखी चर्चिका कालमर्दिनी ।

अग्निजिह्वा वज्रतुण्डी वातवेगा प्रभञ्जना[१] ॥
संपतप्रदा मेघमाला फेरुरावा कटङ्कटा ।
ज्वालिनी पिङ्गला चैव चण्डोग्रा कुलकुट्टिनी[२] ॥
उल्कानना दीर्घदंष्ट्रा विकरराली कपालिनी ।
शवाशिनी दीर्घकेशा काकपर्णी भगाकुला[३] ॥
रतिप्रिया पूतना च लेलिहाना विरोधिनी ।
चाण्डालिनी केकराक्षी वह्निकुण्डा महोकटा[४] ॥

॥ चतुर्थपंक्ति डाकिनी पूजा ॥

॥ ध्यानम् ॥

दीर्घकर्णचलद्घोर नृमुण्डाङ्कितकुण्डलाः ।
शुष्कस्तनकपोलोरोजङ्घा ग्रीवा मुखोदराः ॥
नरास्थिकृत सर्वाङ्गभूषणाः घोरदर्शनाः ।
ज्वलच्चिताग्निजिह्वाभ जटामण्डलमण्डिताः ॥
अर्धचन्द्र समुद्धासि ललाटतटपट्टिकाः ।
विदीर्णमुख निर्गच्छाज्जिह्वा दंष्ट्रा विभीषणाः ॥
पाटालंबिजटाभारा दिगम्बर्यः श्मशानगाः ।
भूतप्रेतपिशाचाद्यैः सज्जन्त्यः कामलालसाः ॥

(डाकिनीनां नाम पूजा)

महारात्रिः कालरात्रिर्विरूपा च महोत्सवा ।
गुह्यनिद्रा वज्रिणी च ततो दोर्दण्डखण्डिनी ॥
कोमुदी[१] विमला चैव कौलिनी कालसुन्दरी ।
कुम्भोदरी डमरुका भीमदंष्ट्रा च शूलिनी ॥
तारावती[२] भानुमती मेनका भगमालिनी ।
एकानङ्गा वज्रनखी विद्युत्केशाञ्जनप्रभा ॥
प्रस्वापनी[३] जंभका च ज्वालिनी लिङ्गमर्दिनी ।
एकदंतोल्कामुखी च सर्पजिह्वा रतोत्सवा ।
कबन्धकन्धरा[४] शेषे द्वित्रिंशदिति कार्तिताः ॥

॥ पञ्चमपंक्ति शक्ति देवानाम् पूजनम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

निरङ्कपूर्णिमा पूर्णचन्द्र बिम्बसमाननाः ।
विशालफुल्लराजीव दलशोणायतेक्षणाः ॥

विलसद् रत्नताटङ्क श्रवणभरणोज्वला: ।
मन्दारमाला सन्नद्ध धम्मिलभर गर्विता: ॥
विशालजघनाभोगा अतिक्षीणकटिस्थला: ।
कठोरपीवरोत्तुङ्ग वक्षोयुगलान्विता: ॥
रत्नमंजीर केयूर कङ्कणाङ्गद शोभिता: ।
किङ्किणी हार मुकुट मुद्रिका वलयान्विता: ॥
त्रैलोक्यसार सौन्दर्य यौवनोन्माद गर्विता: ।
सिंहासन समारूढा विचित्र विविधाम्बरा: ॥
भुजाभ्यां धारयन्त्यश्च वराभयमनुत्तमम् ।
आनन्दमुदितोल्लोल लीलान्दोलित लोचना: ॥

॥ शक्ति नामानि ॥

सूक्ष्माजया तथा माया सुप्रभा विजया प्रभा ।
विशुद्धिर्नन्दिनी[१] कान्ति: विभूति: कीर्तिरुन्नति: ॥
अपराजिता जिता ऋद्धि: स्मृति[२] र्लक्ष्मीर्धृति: मति: ।
श्रद्धा मेधा क्रिया दीप्ता प्रीतिरिच्छा[३] च चेतना ।
सत्या शान्तिस्तथा रौद्री ज्येष्ठा भद्रा च विद्युता[४] ॥

॥ षष्ठ्यांपङ्क्तौ योगिनी पूजा: ॥

गौरी शिवा कौशिकी च शाकम्भर्यपि शाङ्करी ।
शान्ताऽम्बिका क्षमा[१] धात्री जयन्ती सर्वमङ्गला ॥
अपर्णा च स्वधा स्वाहा तारोऽमा[२] विजया जया ।
नन्दा हैमवती कल्या तामसी लिङ्गधारिणी ॥
मानसी[३] कुमुदा भद्रा काकाङ्गी पिङ्गलापि च ।
लोहिता कौलिकी वामा सर्वशेषे पतङ्गिनी[४] ॥

॥ सप्तभ्यांपंक्तौ चामुण्डा पूजा नामानि ॥

चण्डिका भैरवी रौद्री शिवदूती च कालिका ।
करालिनी भ्रामरी च भीमा[१] चाऽथ घटोदरी ॥
कूष्माण्डी चण्डघण्टा च चाण्डाली कौणपी तथा ।
कात्यायनी स्कन्दमाता मसीपुञ्जा[२] दिगम्बरी ॥
मातङ्गिनी पिङ्गकेशी बर्बरा रक्तपायिनी ।
प्रेतमाला तारकाक्षी लोलजिह्वा[३] च घर्घरा ॥

कङ्कालिनी कङ्कमुखी राक्षसी च पिशाचिनी ।
व्याघ्रानना च वेताली सर्वशेषे करङ्किणी[४] ॥

॥ अष्टभ्यांपंक्तौ देवी पूजा नामानि ॥

सर्वाद्या तु महालक्ष्मीस्ततो महिषमर्दिनी ।
ततश्च राजमातङ्गी भुवनेश्वर्यनन्तरम् ॥
राजराजेश्वरी चैव शूलिनी त्वरितापि च ।
स्वर्णकोटेश्वरी[१] कात्यायनी वाग्वादिनी तथा ॥
कुब्जिका कालरात्रिश्च शिवदूती च कुक्कुटी ।
जय कङ्केश्वरी चापि तुम्बुरेश्वर्यनन्तरम्[२] ॥
कालसंकर्षिणी भोगवती च धनदा तथा ॥
सिद्धिलक्ष्मी रुग्रतारा ततस्त्रिपुरसुन्दरी ॥
हरसिद्धा छिन्नमस्ता[३] भीमदेवी च बाभ्रवी ।
गुह्येश्वरी डामरी च चण्डेश्वर्यर्द्धमस्तका ।
धूमावती महामारी[४] त्रिंशदेता द्वयाधिका ॥

(कापालिक मतेन नवमी पंक्ति कृत्वा ततः मातृणां पूजा)

रेखाओं में २-२प्रत्येक दिशा के अनुसार षोडशमातृका पूजन करें।

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा तुष्टिः पुष्टिः स्मृतिर्धृतिः ॥
कुलदेव्यात्मदेवी च षोडशेमाः प्रकीर्तिताः ॥

॥ अष्टारबहिर्भागे वर्तुले कालपीठ पूजनम् ॥

अष्टकोण के बाहर वृत्त में काली के चारों पीठों का पूजन करें।

ओडियानं१ तथा जालन्धरं२ पूर्णगिरिस्तथा३ ।
कामरूपं४ ततः शेषे पीठोऽमीमिभिर्विगृह्य हि ॥

॥ अष्टार (अष्टकोण) मध्ये पूजनम् ॥

(छः आवृत्ति में अलग अलग पूजन करें)

॥ १. नाग पूजनम् ॥

वासुकिस्तक्षकश्चैव मणिभद्रश्च कालियः ।
धृतराष्ट्रैरावतौ च कर्कोटक धनञ्जयौ ॥
इत्येते क्रमतो नागा वर्णानतः शृणु ।
श्वेतो रक्तः पाटलश्च श्यामः पाण्डुर एव च ॥

पीतधूसर धूम्राश्च एतैर्वर्णपदस्य हि ।
विग्रहः कथितं ह्येतत् द्वितीयं पदमीश्वरि ॥
जटासूत्रं नुपुरं च केयूरं हार एव च ।
यज्ञोपवीतं तदनु कङ्कण क्षुद्रघण्टिका ।
ताटङ्कं शेषगं चैते रूपिशब्दस्य विग्रहः ॥

कापालिक दिगम्बर मत से नागपूजन की जगह अष्ट दिग्गज की पूजा की जाती है। यथा नामानि -

मध्यं ऐरावतं वाद्यं पुण्डरीकं द्वितीयगम् ।
तृतीयं वामनं चापि चतुर्थं कुमुदं तथा ॥
अंजनं पंचमं षष्ठं पुष्पदन्तथेरयेत् ।
सप्तमं सार्वभौमं च सुप्रतीकमथाष्टमम् ॥

॥ २. अष्टमुद्रा पूजनम् ॥

योनिर्वशीकरणयुगङ्कुशं धेनुरेव च ।
आकर्षणं द्रावणं च सामरस्यं च खेचरी ॥

॥ ३. क्षेत्रपाल पूजनम् ॥

अथ नामानि वक्ष्येऽहं तेषामाद्यस्तु हेतुकः ।
त्रिपुरान्तको द्वितीयस्तु वेतालोऽपि तृतीयकः ॥
हुताशजिह्वस्तुर्यश्च महाकालोपि पञ्चमः ।
कपाली चैकपादश्च भीमरावस्ततः परम् ॥

॥ ४. चतुर्थ आवृत्त्यां गणपती पूजनम् ॥

लम्बोदरो वक्रतुण्डो गजवक्त्रस्तथैव च ।
हेरम्ब एकदन्तश्च महाकायस्ततः स्मृतः ॥
गणाधिपतिरस्यानु विघ्नान्तकः इतः परम् ॥

॥ ५. पञ्चम् आवृत्त्यां शैलराज पूजनम् ॥

स्वास्त्रहृच्छिरांस्यन्ते मध्ये शैलान्निशामय ।
सुमेरुरथ कैलासो हिमालय इतः परम् ॥
गन्धमादन विन्ध्यौ च हेमकूटस्ततोऽप्यनु ।
महेन्द्रमलयौ वाथ चतुर्थ्येकवचोऽन्विता ॥

॥ ६. छष्ठम् आवृत्त्यां अष्ट नद्यां पूजनम् ॥

गङ्गा च नर्मदा तापी गोदावर्यथ कीर्त्यते ।
कृष्णवेल्ला च कावेरी ताम्रपर्णी तथैव च ।
वितस्ता सर्वशेषस्था चतुर्थ्येक वचोऽन्विताः ॥

॥ द्वितीये वर्तुले पूजनम् ॥

अष्टार-१. अष्टकोण पर दूसरे वृत्त में खेचर देवताओं का अष्ट दिशाओं में पूजन करें।

भिन्नाः शब्दाः नाकचरः खेचरो भूचरस्तथा ।
रोदसीचर इत्येवं पातालचर इत्यपि ॥
ततोजलचरश्चापि शाखाचर इतः परम् ।
गोचरः सर्वशेषे तु नानार्थत्वेन वर्णितः ॥

२. वृत्त की द्वितीय आवृत्ति में ऋषि पूजन करें पूजन समय ऋषि नाम के साथ अमुक नाथाय कहें।

नारदो गोतमश्चापि वसिष्ठः कपिलस्तथा ।
कश्यपोऽप्यथ जाबालो हारीतस्तदनन्तरम् ।
संबर्तः सर्वशेषे च ऋषयोऽमी प्रकीतिताः ॥

॥ संप्रदाय भेदेन विभिन्न मताः ॥

कपाल डामर के अनुसार कापालिक, भैरव संहिता व दिगंबर सम्प्रदाय के अनुसार दिगम्बर, शाबर तन्त्र शास्त्र के मौलय मत के आचार्य भाण्डिकेर आदि के अनुसार भिन्न भिन्न क्रम है।

डामरं यामलं चापि तथा भैरव संहिताम् ।
तथा शाबर तन्त्राणि शास्त्रमेषां प्रकीर्तितम् ॥

॥ नवार (नवकोण) पूजा विधि ॥

१. नवकोण हेतु ९ चक्रों का उल्लेख है परन्तु मूलाधार से आज्ञाचक्र सातवां सहस्रार है। अन्य में मूलाधार में कुण्डलिनी व सहस्रार में परंब्रह्म की पूजा करने से ९ देवता पूजन क्रम हो जाता है।

कन्दमूलाधार इति ततः कुण्डलिनीत्यपि । ततःस्वाधिष्ठानमपि मणिपूरकमेव च ॥
अनाहतं विशुद्धं च तत आज्ञा ह्वयं प्रिये । सहस्त्रदलमस्यानु शब्दाः एते नवेरिताः ॥

२. नवशक्ति पूजा करें (द्वितीयावृत्ति)

ब्रह्माणी प्रथमा देवी माहेश्वर्यप्यनन्तरम् । कौमारी वैष्णवी चैव वाराही तदनन्तरम् ॥
नारसिंही तथैन्द्राणी शिवदूतीत्यष्टमी पुनः । चामुण्डा नवमी चापि नवेमा मध्यगाः स्मृताः ॥

३. नवकोण में तृतीय आवृत्ति में नवग्रह का चतुर्थी व स्वाहाकार युक्त पूजन करें।

आदित्यः प्रथमः सोमो मङ्गलो बुध एव च
बृहस्पतिस्तथा शुक्रः शनैश्चर इतः परम् ।
राहुः केतुरितीदृक्षांच्छब्दाडऽन्तान् समुद्धरेत् ॥

॥ पञ्चकोणे पूजा विधान ॥

कोण में २७ तरह की पूजा का भेद है। सृष्टि, स्थिति, संहार, अनाख्या भासा इत्यादि भेद से ३५ तरह का पूजा का भेद है। प्रत्येक कोण में ३, २, ३, २, २ नामों की भी पूजा करें। दशाक्षरी (दशकूट) मन्त्र २-२ वर्णों की पंचकोण

में पूजन करें।

कई जगह, त्रिकोण की ३ रेखाओं में दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ का पूजन करते हैं।

१. देवी विद्या खगो ज्ञानं धर्मः सत्यं सुखं तथा । सिद्धः कल्पकुलं विज्ञो धीरश्च द्वादशैव हि ॥

२. स्थित क्रम से पूजन करें तो निम्न १२ दिव्यौघ का पूजन करें।

नियमः समयश्चापि प्रकाशो मङ्गलं तथा । सम्मोहश्च प्रतापश्च संबर्तो विभवोऽपि च ॥
प्रकृतिः सकृतश्चैव समाधिस्ताण्डवं तथा । स्थिति क्रमे कालिकतः पूर्णशब्दा इति स्मृता ॥

३. सभी उपासकों हेतु दिव्यौघ इस प्रकार है -

दिव्यौघा अथ कथ्यन्ते सर्वदैतदुपासकाः । भुवनश्च विवेकश्च कौलिको दीक्षितोऽपि च ॥
प्रलयश्च प्रमोदश्च संविच्च कमलोदयौ । मर्यादाश्च विवादाश्च सर्वशेषेऽमृतं तथा ॥
अजादिनामभिः सन्धिः कर्तव्यस्तत्तदन्तरे । पूर्वं यथेन्द्रशब्दान्तै दिव्यौघपदमीरिता ॥

सभी के नाम के आगे **अमुक नाथाय पादुकां पूजयामि** कहे।

प्रकारान्तरेण पंचार (पञ्चकोण) पूजा -

१. कापालिक मत से पञ्च इन्द्रियों का पूजन करें।

मध्ये घ्राणाय जिह्वायै चक्षुषे च त्वचे तथा । कर्णयेति च पूजन्ते पंचेन्द्रियगणाः क्रमात् ॥

२. दिगम्बर मत के अनुसार पंच तन्मात्रा का पूजन करें।

मध्ये गन्धो रसो रूपं स्पर्शः शब्दोऽप्यनुक्रमात् ॥

३. मौलेयमत - पञ्च प्राणों का पूजन करें।

नागः कूर्मश्च कृकरो देवदत्तो धनञ्जयः ।

॥ चतुर्थार (चतुष्कोणे) पूजा विधानम् ॥

काली के १२ नामों के साथ दिव्यौघ का पूजन करें

कालीकानां नाममध्ये त्रित्रिवर्णात्मकं प्रिये ।
कालाग्निरथ मार्त्तण्डो विचित्रं मुखरं तथा ॥
ततो निदानमाधारो हिरण्यं भैरवोपि च ।
संक्षोभश्च विरावश्च दुर्गमस्तदनन्तरम् ।
विज्ञेया द्वादशता तुरीया सर्वशेषगा ॥

दिव्यौघ नाम -

पद्मः शङ्खो ध्वजो वज्रः सिद्धिस्तथैव च ।
धर्मो लोकः सत्यनित्यौ शुद्धसूक्ष्मौ ततः परौः ॥

सबके नाम के बाद **अमुकानन्द नाथ** कहें।

॥ त्रिकोण स्थित देवता पूजनम् ॥

१. सृष्टि स्थिति संहार पद अनुसार काली के नामों की पूजा करें।

शवासिनी रक्तमुखी कालरात्रिस्ततः परम् ।
संहारिणी चण्डवृत्तिरावेशिन्यथ कथ्यते ॥
वेगाकुला महामाया ततोऽप्यनु भगप्रिया ।
कामातुरा ततो जालन्धरी त्रिदशवंदिते ।
कल्पमूर्त्तिः सर्वशेषे कालिका पूर्वगा इमा ॥

२. दिव्यौघों का पूजन करें –

कुलाकुलं प्रथमतः परापरमतः परम् ।
धर्म्माधर्म स्ततो ज्ञानाज्ञनं चैव वरानने ॥
नित्योऽनित्यश्च सदसद् विद्याऽविद्या ततः परम् ।
चराचरं ततो भावाऽभावोऽपि च मदामदः ॥
लयालयः शक्त्यशक्तिरित्थं द्वादश कीर्त्तिता ॥

नाम के साथ अमुकानंद नाथाय नमः से पूजन करें।

ॐ संहारकाली संबुद्धि महाचण्डपदा योगेश्वरि चण्डकर्मसाधिनि विश्वग्रास घस्मर्यनु महामारी विग्रहधारिणि जगद्भक्षिणि रुद्रकोधिनि सर्वशत्रु प्रमर्द्दिनि महापाप प्रमोचिनि भोग मोक्षप्रदे संहारेश्वरि संहार कुलक्रमपालिकायै गुह्यकाल्यै नमः।

मन्त्र से गुह्यकाली का पादुका पूजन करें।

॥ प्रकारान्तरेण त्रिकोण पूजा ॥

१. ॐ वज्रकपालिनि सिद्धिकराली महाघोररूपिणि श्मशानचारिणि सर्वभूतभयङ्करि सर्वभूतभयङ्करि हूं फट् सर्वसमयलाभं कुरु कुरु ह्रीं फ्रें स्त्रीं छ्रीं स्वाहा।

२. ॐ महाचण्डयोगेश्वरि घोराट्टहासिनि श्मशानचारिणि फेरुराकिणि विमुक्त चिकुरे नव पञ्चपदात् प्रवदेच्चक्रनिलये नीलमेघप्रभे नमः स्वाहा।

३. ॐ भगवति चण्डकापालिनि कौलमतप्रवर्तिनि कल्पान्तकारिणि महापिङ्गजटाभार भासुर मुण्डमालिनि प्रकृत्ये शिवनिर्वाणप्रदे नमः स्वाहा।

॥ अथ बिन्दु पूजनम् ॥

मूल मन्त्र से पंचाक्षर, नवाक्षर या षोडशाक्षर से गुह्यकाली की पूजा करें। तदन्तर अमुकोपासक मन्त्र इस तरह नहीं कहें। पश्चात् महानिर्वाण मन्त्र से पूजा समापन करें, सहस्राक्षर से नहीं।

सहस्रार्णमनूच्चारं नात्र कुर्याद्वरानने । महानिर्वाण मन्त्रेण बिन्दु पूजा समाप्यते ॥

अन्य मन्त्र का मन्त्रोद्धार इस प्रकार है।–

तारो मेधश्च पाशं च कला माया च शाकिनी । मन्मथः कमला कान्ता कूर्चो डाकिन्यतः परम् ॥

प्रलयश्चापि फेत्कारी व्यञ्जनं हारिणी तथा । रञ्जनी सर्वशेषे च षोडशैवं प्रकीर्तिताः ॥
ङें ऽन्ता ततो गुह्यकाली कूर्चास्त्र हृदयं शिरः । एतेनैवादिभूतेनमन्त्रेण गुणशालिना ॥
प्रथमं पूजयेद् बिन्दुं ततोऽन्यैर्मन्त्र संचयैः ॥

॥ कापालिक मतेन बिन्दु पूजनम् ॥

भैरवो भैरवी चापि चामुण्डा डाकिनी तथा । योगिनी यक्ष यक्षिण्यः खेचरः खेचरी तथा ॥
सिद्धः सिद्धा देवता च गंधर्वस्तदनन्तरम् । गंधर्वी किन्नरश्चापि किन्नरी तदनूद्यते ॥
विद्याधरस्ततो विद्याधरी चापि प्रकीर्त्यते । देवयोनिचाप्सरसो देवी चाप्येकविंशतिः ॥
रावरोषास्त्र हृच्छिर्षाण्यन्ते च विनियोजयेत् । इत्येकविंशति मितैर्मनुभि बिन्दु पूजनम् ॥

॥ दिगम्बर मतेन बिन्दु पूजनम् ॥

३२ देवताओं का पूजन करें।

लिपिर्वायुश्च नक्षत्रं छन्दरतत्त्वं तथैव च । द्वीपो मेघस्तथा यज्ञक्रिया तस्यानु वै तिथिः ॥
भुवनञ्च तथैवेन्द्रो विश्वे च तदनु स्मृताः । आदित्यो राशिरथ वै रुद्रादिरपि कथ्यते ॥
ग्रहो निधिर्वसुततः कुलाचल उदीर्यते । ऋषिः स्वरश्च जिह्वा च ऋतुर्वाणस्ततः परम् ॥
क्लेशः समुद्रस्तदनु आश्रमस्ताप एव च । ज्योतिः कर्म तथा ब्रह्म द्वित्रिंशदिंति कीर्तिताः ॥

॥ मौलेय मतेन बिन्दु पूजनम् ॥

मैधं माया रमा कामो डाकिनी च यथाक्रमम् । शुभाशुभं पुण्यपापं जन्ममृत्यु ततः परम् ॥
ततश्च स्वर्गनरकं शीतोष्णमपि चान्वतः । ततो ज्ञेयश्च जीवात्म परमात्मेति वै पदम् ॥
भावाभावमहोरात्रमावापोद्वाप एव च । ततोऽनु प्रकृति विकृति शिवशक्ति ततः परम् ॥
नादबिन्दु च तस्यानु द्वादशैव प्रकीर्तिताः । राबकूर्चौ ततो ऽस्त्राणां त्रितयं हृदयं शिरः ॥

॥ भाण्डिरेक संप्रदायानुसार बिन्दुपूजनम् ॥

पुनः शाबर तन्त्रज्ञा भाण्डिकेराः प्रयुञ्जते । बीजाक्षरों सहित मन्त्रोद्धार व नामावलि अनुसार पूजन इस प्रकार है।

तारमायारमाः शक्ति सुधा सोमास्ततः परम् । पाशप्रेत पराश्चापि योगिनी शाकिनी स्त्रियः ॥
चूड़ामणि शिखा जम्भास्तुङ्ग मन्दारवेदयः । सुरसः समरो रागः कुटिला रंजिनी घटी ॥
नादान्तकश्चामरश्च व्यंजनं तदनन्तरम् । चर्पटं माणेमाला च हारिणी तदनुस्मृता ॥
मारणडश्च विनादश्च विमर्दस्तदनूदितः । दाक्षिकं सौमतं चापि प्रतानं सर्वशेषगम् ॥
त्रिबीजानि द्वादशैवं तव देवि मयोदिता । ङयन्तानिदानीं कलय शब्दान् क्रमत एव हि ॥
पृथिव्यापश्च वह्निश्च वायुः सूर्यस्तथैव च । चन्द्रो विद्युश्च माया च प्रपञ्चो ब्रह्म तत्परम् ॥
अद्वैतं परमात्मा च क्रमतो व्याहृता इमे । एतेषामुत्तरपदं गौणं हि कलयाधुना ॥
उद्वेतृत्वं क्लेदत्वं दाहिका शोषिकातथा । प्रभा कौमुद्यपि तथा पुनरुद्योतिकापि च ॥

विक्षेपासत्त्वमिति च ततः परमुदीरितम् । आविर्भाव तिरोभावः कैवल्यं तदनन्तरम् ॥
सर्वशेषे परिज्ञेयं निर्वाणमिति वै पदम् । इति कर्तव्यता चास्य पुरैव प्रतिपादिता ।
षडक्षरी तु कूर्चास्त्रे हृदयं शिर एव च क्रमोऽयं भाण्डिकेराणां बिन्दूपूजा विधौ मतः ॥

॥ त्रिपुरघ्न मतेन बिन्दु पूजनम् ॥

तारो माया योगिनी च वधू रावश्च डाकिनी । प्रासादो गरुढश्चापि प्रेतो नरहरिस्तथा ॥
कपालं काकिनी चापि क्षेत्रपालश्च फैरवम् । सूत्रं द्वीपश्च तुङ्गश्च जम्भस्तदनु कर्णिका ॥
भूतिनी केकराक्षी च कालरात्रिरतः परम् । मन्द संमोह पतन संहारास्तदनन्तरम् ॥
सर्वेषां चरमस्था तु ज्ञेया चिच्छक्तिनामिका । नित्या शुद्धाऽक्षरा सूक्ष्माऽग्राह्याऽरूपाप्यनिन्द्रिया ॥
निर्गुणा निर्विकारा च निराभासा निरञ्जनी । अवासना च निर्बंधा कूटस्था चिद्विलासिनी ॥
अनिमित्ता च कैवल्याऽद्वैता ऽबाधप्रकाशिका । वेदान्तवेद्या चैतन्याकारा साक्षिण्यथामृता ॥
परानन्दा गुणातीता ऽनिर्देश्या तदनन्तरम् ।
तुरीया सर्वशेषस्था यया मुक्तिरवाप्यते ॥
इत्येवं बिन्दुगापूजा त्रिपुरघ्नमुखोद्गता ॥

॥ सकलसम्प्रदायानुसार बिन्दु पूजनम् ॥

आदित, भरत, हिरण्यकश्यप, राम, रावण, इत्यादि द्वारा उपासित मन्त्रों के उच्चारण पश्चात् कहा है-

मन्त्र नवनवार्णाख्यं तं सहस्राक्षरीमनुम् । शक्तौ सत्यां सुरामध्ये बीजमालामयिमयि ॥
नोपात्तेयमशक्तौ तु त्रिपुरघ्न वचो यथा । ततोऽनु शांभवी विद्या या महाशाम्भवी तथा ॥
तुरीयाख्या ऽप्यथ महातुरीया तदनन्तरम् । निर्वाणमप्यनु महानिर्वाणं जगदीश्वरि ॥
द्वात्रिंशत् संख्यकैरेतैर्मनुभिः फलदायिभिः ॥

बिन्दु पूजा समापन मन्त्र -

षोडश बीज मन्त्र उच्चारण पश्चात् (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं छ्रीं स्त्रीं हूं फ्रें क्रीं ख्फ्रें ठ्रीं छ्रीं फ्रों रह्रीं स्वाहा) ॐ भगवती गुह्यकाली साङ्गायै सवाहनायै सपरिवारायै हुं फट् स्वाहा।

॥ तदग्रे पूजा विधानम् ॥

आवरण पूजा पश्चात् पात्रा सादन करें।

सभी आवरण देवताओं को गणेश, वटुक, क्षेत्रपाल, मातृगण, योगिनी, डाकिनी व नृसिंहादि देवताओं को बलि प्रदान करें तथा अन्य पूजा क्रम शक्ति पूजा कर शान्ति स्तोत्र का पाठ करें।

॥ इति भरतच्यवनहारीतजाबालदक्षपूजितं गुह्यकाली यन्त्रार्चनम् ॥

॥ अथ शान्ति स्तोत्रम् ॥

काली काली महाकालि कालिके पापहारिणि । धर्ममोक्षप्रदे देवि गुह्यकालि नमोऽस्तुते ॥१॥
संग्रामे विजयं देहि धनं देहि सदा गृहे । धर्मकामार्थसंपत्तिं देहि कालि नमोऽस्तुते ॥२॥
उल्कामुखि ललज्जिह्वे घोररावे भगप्रिये । श्मशानवासिनि प्रेते शवमांसप्रियेऽनघे ॥३॥
अरण्य चारिणि शिवेकुलद्रव्यमयीश्वरि । प्रसन्नांभव देवेशि भक्तस्य मम कालिके ॥४॥
शुभानि सन्तु कौलानांनश्यन्तु द्वेषकारकाः । निन्दाकरा क्षयं पान्तुये च हास्य प्रकुर्वते ॥५॥
ये द्विषन्ति जुगुप्सन्ते ये निन्दन्ति हसन्ति ये । येऽसूयन्ते च शङ्कन्ते मिथ्येति प्रवदन्ति ये ॥६॥
ते डाकिनीमुखे यान्तु सदारसुतबान्धवाः । पिबत्वं शोणितं तस्य चामुण्डा मांसमत्तु च ॥७॥
आस्थीनिचर्वयन्त्वस्य योगिनी भैरवीगणाः । यानिन्दागमतन्त्रादौ या शक्तिषु कुलेषु या ॥८॥
कुलमार्गेषु या निन्दा सा निन्दा तव कालिके । त्वन्निन्दाकारिणां शास्त्री त्वमेव परमेश्वरि ॥९॥
न वेदं न तपो दानं नोपवासादिकं व्रतम् । चान्द्रायणादि कृच्छं च न किञ्चिन्मानयाम्यहम् ॥१०॥
किन्तु त्वच्चरणाम्भोज सेवां जाने शिवाज्ञया । त्वदर्चा कुर्वतो देवि निन्दापि सफला मम ॥११॥
राज्यं तस्य प्रतिष्ठा च लक्ष्मीस्तस्य सदा स्थिरा । तस्य प्रभुत्वं सामर्थ्यं यस्य त्वं मस्तकोपरि ॥१२॥
धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं सफलं जीवतं मम । यस्य त्वच्चरणद्वन्दे मनो निविशते सदा ॥१३॥
दैत्याः विनाशमायान्तु क्षयं यान्तु च दानवाः । नश्यन्तु प्रेतकूष्माण्डा राक्षसा असुरास्तथा ॥१४॥
पिशाच भूत वेतालां क्षेत्रपाला विनायकाः । गुह्यकाः घोणकाश्चैव विलीयन्ता सहस्त्रधा ॥१५॥
भारुण्डा जंभकाः स्कान्दाः प्रमथाः पितरस्तथा । योगिन्यो मातरश्चापि डाकिन्यः पूतनास्तथा ॥१६॥
भस्मीभवन्तु सपदि त्वत् प्रसादात् सुरेश्वरि । दिवाचरा रात्रिचरा ये च संध्याचरा अपि ॥१७॥
शाखाचरा वनचराः कन्दराशैलचारिणः । द्वेष्टारो ये जलचरा गुहाबिलचरा अपि ॥१८॥
स्मरणादेव ते सर्वे खण्डखण्डा भवन्तु ते । सर्पानागा यातुधाना दस्युमायाविनस्तथा ॥१९॥
हिंसका विद्विषो निन्दाकरा ये कुलदूषकाः । मारणोच्चाटनोन्मूल द्वेष मोहन कारकाः ॥२०॥
कृत्याभिचारकर्तारः कौलविश्वासघातकाः । त्वत्प्रसादाज्जगद्धात्रि निधनं यान्तु तेऽखिलाः ॥२१॥
नवग्रहाः सतिथयो नक्षत्राणि च राशयः । संक्रान्तयोऽब्दा मासाश्च ऋतवो द्वे तथायने ॥२२॥
कलाकाष्ठामुहुर्ताश्च पक्षाहोरात्रयस्तथा । मन्वतराणि कल्पाश्च युगानि युगसन्धयः ॥२३॥
देवलाकाः लोकपालाःपितरो वह्नयस्तथा । अध्वरा निधयो वेदाः पुराणागमसंहिता ॥२४॥
एते मया कार्तिता ये ये चान्ये नानुकीर्तिताः । आज्ञया गुह्यकाल्यास्ते मम कुर्वन्तु मङ्गलम् ॥२५॥

भवन्तु सर्वदा सौम्याः सर्वकालं सुखावहाः । आरोग्यं सर्वदा मेऽस्तु युद्धे चैवापराजयः ॥२६॥
दुःखहानिः सदैवास्तां विघ्ननाशः पदे पदे । अकालमृत्यु दारिद्र्यं बंधनं नृपतेर्भयम् ॥२७॥
गुह्यकाल्याः प्रसादेन न कदापि भवेन्मम । सन्त्विन्द्रियाणि सुस्थानि शान्तिः कुशलमस्तु मे ॥२८॥
वाञ्छाप्तिर्मनसः सौख्यं कल्याणं सुप्रजास्तथा । बलं वित्तं यशः कान्तिर्वृद्धिर्विद्या महोदयः ॥२९॥
दीर्घायुरप्रधृष्यत्वं वीर्यं सामर्थ्यमेव च ।
विनाशो द्वेषकर्तृणां कौलिकानां महोन्नतिः ।
जायतां शान्तिपाठेन कुलवर्त्म धृतात्मनाम् ॥

॥ अथ विश्वमङ्गल गुह्यकाली कवचम् ॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीविश्वमङ्गलनाम्नो गुह्यकाली महावज्र कवचस्य संवर्तऋषिरनुष्टुप्छन्दः, एकवक्त्रादि शतवक्त्रान्ता गुह्यकाली देवता, फ्रें बीजं, खफ्रें शक्तिः, छ्रीं कीलकं सर्वाभीष्टसिद्धि पूर्वकात्मरक्षणे जपे विनियोगः।

ॐ फ्रें पातु शिरः सिद्धिकराली कालिका मम । ह्रीं छ्रीं ललाटं मे सिद्धिविकरालि सदावतु ॥१॥
श्रीं क्लीं मुखं चण्डयोगेश्वरी रक्षतु सर्वदा । हूं स्त्रीं कर्णौं वज्रकापालिनी मे कालिकाऽवतु ॥२॥
ऐं क्रौं हनू कालसंकर्षणा मे पातु कालिका । क्रीं क्रौं भ्रुवावुग्रचण्डा कालिका मे सदावतु ॥३॥
हां क्षौं नेत्रे सिद्धिलक्ष्मीरवतु प्रत्यहं मम । हूं ह्रौं नासां चण्डकापालिनी मे सर्वदावतु ॥४॥
आं ईं ओष्ठाधरौ पातु सदा समयकुब्जिका । ग्लूं ग्लौं दन्तान् राजराजेश्वरी मे रक्षतात् सदा ॥५॥
जूं सः सदा मे रसनां पातु श्रीजयभैरवी । स्फ्रें स्फ्रें पातु स्वर्णकूटेश्वरी मे चिबुकं सदा ॥६॥
ब्लूं ब्लौं कण्ठं रक्षतु मे सर्वदा तुम्बुरेश्वरी । क्ष्रूं क्ष्रौं मे राजमातङ्गी स्कन्धौ रक्षतु सर्वदा ॥७॥
फ्रां फ्रौं भुजौ वज्रचण्डेश्वरी रक्षतु मे सदा । स्त्रें स्त्रौं वक्षःस्थलं जयझङ्केश्वरी मम ॥८॥
फिं फां करौ रक्षतु मे शिवदूती च सर्वदा । छ्रैं छ्रौं मे जठरं पातु फेत्कारी घोरराविणी ॥९॥
स्त्रैं स्त्रौं गुह्येश्वरि नाभिं मम रक्षतु सर्वदा । क्षुं क्षौं पार्श्वौ सदापातु बाभ्रवी घोररूपिणी ॥१०॥
ग्रूं ग्रौं कुलेश्वरी पातु मम पृष्ठं च सर्वदा । क्लूं क्लौं कटिं रक्षतु मे भीमादेवी भयानका ॥११॥
हैं हौं मे रक्षतादूरू सर्वदा चण्डखेचरी । स्फ्रों स्फ्रौं मे जानुनी पातु कोरङ्गी भीषणानना ॥१२॥
त्रीं थ्रीं जङ्घायुगं पातु तामसी सर्वदा मम । त्रैं त्रौं पादौ महाविद्या सर्वदा मम रक्षतु ॥१३॥
ड्रीं ठ्रीं वागीश्वरी सर्वान् सन्धीन् देहस्य मे ऽवतु । खें खौं शराराधातून्मे कामाख्या सर्वदावतु ॥१४॥
ब्रीं ब्रूं कात्यायनी पातु दशवायूंस्तनूद्भवान् । ज्लूं ज्लौं पातु महालक्ष्मीः खान्येकादश सर्वदा ॥१५॥
ऐं औं अनूक्तं यत्स्थानं शरीरेऽन्तर्बहिश्च मे । तत्सर्वं सर्वदा पातु हरसिद्धा हरप्रिया ॥१६॥
फ्रें छ्रीं ह्रीं स्त्रीं हूं शरीरसकलं सर्वदा मम । गुह्यकाली दिवारात्रौ सन्ध्यासु परिरक्षतु ॥१७॥

इति ते कवचं प्रोक्तं नाम्ना च विश्वमङ्गलम् । सर्वेभ्यः कवचेभ्यस्तु श्रेष्ठं सारतरं परम् ॥१८॥
इदं पठित्वा त्वं देहं भस्मनैवावगुण्ठ्य च । तत्तत्स्थानेषु विन्यस्य वद्धवादः कवचं दृढम् ॥१९॥
दशवारान् मनुं: जप्त्वा यंत्र कुत्रापि गच्छतु । समरे निपतच्छस्त्रेऽरण्ये स्वापदसङ्कुले ॥२०॥
श्मशाने प्रेतभूताढ्यकान्तारे दस्युसङ्कुले । राजद्वारे सपिशुने गह्वरे सर्पवेष्टिते ॥२१॥
तस्य भीतिर्न कुत्रापि चरतः पृथिवीमिमाम् । न च व्याधिभयं तस्य नैव तस्करजं भयम् ॥२२॥
नाग्न्युत्पातो नैव भूतप्रेतजः संकटस्तथा । विद्युद्वर्षोपलभयं न कदापि प्रबाधते ॥२३॥
न दुर्भिक्षभयं चास्य न च मारिभयं तथा । कृत्याभिचारजा दोषाः स्पृशन्त्येनं कदापि न ॥२४॥
सहस्त्रं जपतश्चास्य पुरश्चरणमुच्यते । तत्कृत्वा तु प्रयुञ्जीत सर्वस्मिन्नपि कर्मणि ॥२५॥
वश्यकार्यो मोहने च मारणोच्चाटने तथा । स्तम्भने च तथा द्वेषे तथा कृत्याभिचारयोः ॥२६॥
दुर्गभंगे तथा युद्धे परचक्र निवारणे । एतत् प्रयोगात् सर्वाणि कार्याणि परिसाधयेत् ॥२७॥
भूतावेशं नाशयति विवादे जयति द्विषः । संकटं तरति क्षिप्रं कलहे जयमाप्नुयात् ॥२८॥
यदीच्छेत् महतीं लक्ष्मीं तनयानायुरेव च । विद्यां कान्तिं तथौन्नत्यं यश आरोग्यमेव ॥२९॥
भोगान् सौख्यं विघ्नहानिमनालस्यं महोदयम् । अधीहि कवचं नित्यममुनामुञ्च च प्रिये ॥३०॥
कवचेनामुना सर्वं संसाधयति साधकः । यद् यद् ध्यायति चित्तेन सिद्ध्ं तत्तत्पुरः स्थितम् ॥३१॥
दुर्धटं घटयत्येतत् कवचं विश्वमङ्गलम् । विश्वस्य मङ्गलं यस्मादतो वै विश्वमङ्गलम् ॥३२॥
सान्निध्यकारकं गुह्यकाल्या एतत् प्रकीर्तितम् । भुक्तवा भोगानघं हत्वा देहान्ते मोक्षमाप्नुयात् ॥३३॥

॥ इति विश्वमङ्गल कवचम् ॥

॥ अथर्गुह्योपनिषत् ॥

यथोर्णनाभिः सूत्राणि सृजत्यपि गिलत्यपि । यथा पृथिव्यामौषध्यः संभवन्ति गरन्त्यपि ॥१॥
पुरुषात् केशलोमानि जायन्ते च क्षरन्त्यपि । उत्पद्यन्ते विलीयन्ते तथा तस्यां जगन्त्यपि ॥२॥
ज्वलतः पावकात् यद्वत् स्फुलिङ्गाः कोटिकोटिशः । निर्गत्य च विनश्यति विश्वं तस्यास्तथा प्रिये ॥३॥
ऋचो यजूंषि सामानि दीक्षा यज्ञाश्च दक्षिणाः । अध्वर्युर्यजमानश्च भुवनानि चतुर्दश ॥४॥
ब्रह्मविष्ण्वादिका देवाः मनुष्याः पशवो वयः । प्राणापानौ व्रीहयश्च सत्यं श्रद्धा विधिस्तपः ॥५॥
समुद्रा गिरयो नद्यः सर्वं स्थावर जङ्गमम् । विसृज्येमानि सर्गादौ स्वं प्रकाशयते ततः ॥६॥
जङ्गमानि विधायार्थं विष्टभ्य प्रतिभूतकम् । नवद्वारं पुरं कृत्वा गवाक्षाणीन्द्रियाणि च ॥७॥
सा पश्यति वदति गच्छति क्रीडतीच्छति । शृणोति जिघ्रति तथा रमते विरमत्यपि ॥८॥

तया मुक्तं पुरं तद्धि मृतमित्यभिधीयते ।
अन्तः शरीरे ज्यातिर्मयीं तां ।
भाग्येनैव पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः ॥९॥

वृहच्च तद्दिव्यमचिन्त्यरूपं-सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरं विभाति ।
दूरात् सुदूरे तदिहान्तिके च पश्यतित्स्विहैव निहितं गुहायाम् ॥१०॥

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्योगैस्तपसा कर्मणा वा ।
ज्ञान प्रसादेन विशुद्धसत्त्व स्ततस्तु तां पश्यति निष्कलां ध्यायमानः ॥११॥

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे अस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय ।
तथा विद्वान्नारूपाद् विमुक्तः परात्परां जगदम्बामुपैति ॥१२॥

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि ॥१३॥

एषैवालम्बनं श्रेष्ठमेषैवालम्बनं परम् । एषैवालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥१४॥

इन्द्रियेभ्यः पराह्यर्था ह्यर्थेभ्यश्च परं मनः । मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः ॥१५॥

महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः । पुरुषात्तु परा देवी सा काष्ठा सा परा गतिः ॥१६॥

यथोदकं गिरौ वृष्टं समुद्रेषु विधावति । एवं धर्मान् पृथक् पश्यँस्तामेवानु विधावति ॥१७॥

एका गुह्या सर्वभूतान्तरात्मा एका रूपं बहुधा या करोति ।
तामात्मस्थां येऽनुपश्यन्ति धीरा-स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् ॥१८॥

नित्या नित्यानां चेतना चेतनानामेका बहुनां या विदधाति कामान् ।
तामात्मस्था येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम् ॥१९॥

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः ।
तामेव भान्तीमनुभाति सर्वं तस्या भासा सर्वमिदं विभाति ॥२०॥

यस्याः परं नापरमस्ति किञ्चित् यस्या नाणीयो न ज्यायोऽस्ति किञ्चित् ।
वृक्ष इव स्तम्भादि वितिष्ठत्येका तयेदं पूर्ण भगवत्या सर्वम् ॥२१॥

ततो युदुत्तरतरं तदरूपमनामयम् । oooooooooooooooooo ॥२२॥

य एतां विदुरमृतास्ते भवन्ति । अथेतरे दुःखमेवापि यन्ति ॥२३॥

सर्वाननशिरोग्रीवा सर्वभूतगुहाशया । सर्वत्रस्था भगवती तस्मात् सर्वगता शिवा ॥२४॥

सर्वतः पाणिपादान्ता सर्वतोऽक्षिशिरोमुखा । सर्वतः श्रुतिमत्येषा सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥२५॥

सर्वेन्द्रियगुणाभासा सर्वेन्द्रियविवर्जिता । सर्वेषां प्रभुरीशानी सर्वेषां शरणं सुहृत् ॥२६॥

****

नवद्वारे पुरे देवी हंसी लीलायते बहिः । ध्येया सर्वस्य स्थावरस्य चरस्य च ॥२७॥
अपाणिपादा जवना गृहीत्री पश्यत्यचक्षुः सा शृणोत्यकर्णा ।
सा वेत्ति वेद्यं न तस्या अस्ति वेत्ता तामाहुरग्र्यां जगतो महीयसीम् ॥२८॥
सा चैवाग्निः सा च सूर्यः सा वायुः सा च चन्द्रमा ।
सा चैव शुक्रं सा ब्रह्म सा चापः सा प्रजापतिः ॥
सा चैव स्त्री सा च पुमान् सा कुमारः कुमारिका ॥२९॥
ऋचोऽक्षरे परमे व्योमन् यस्यां देवा अधिरुद्रा निषेदुः ।
यस्तां न वेद किमृचा करिष्यति ये तां विदुस्तद्वैमे समासते ॥३०॥
छन्दासि यज्ञाः क्रतवो व्रतानि भूतं भव्यं यच्च वेदाः वदन्ति ।
सर्वं देवी सृजते विश्वमेतत् तस्याश्चान्यो मायया सन्निरुद्धः ॥३१॥
मायां तु प्रकृति विद्यात् प्रभुं तस्या महेश्वरीम् ।
अस्या अवयवैः सूक्ष्मैर्व्याप्तं सर्वमिदं जगत् ॥३२॥
या देवानां प्रभवा चोद्भवा च विश्वाधिपा सर्वभूतेषु गूढा ।
हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं सा नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥३३॥
सूक्ष्मातिसूक्ष्मं सलिलस्य मध्ये विश्वस्य स्त्रष्ट्रीं तामनेकामनाख्याम् ।
विश्वस्यैकां परिवेष्टयित्रीं ज्ञात्वा गुह्यां शान्तिमत्यन्तमेति ॥३४॥
सा ह्येव काले भुवनस्य गोप्त्री विश्वाधिपा सर्वभूतेषु गूढा ।
यस्यां मुक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्च तामेव ज्ञात्वा मृत्युपाशांश्छिनत्ति ॥३५॥
घृतात्परं मण्डमिवातिसूक्ष्मां ज्ञात्वा कालीं सर्वभूतेषु गूढाम् ।
कल्पान्ते वै सर्वसंहारकर्त्रीं ज्ञात्वा गुह्यां मुच्यते सर्वपाशैः ॥३६॥
एषा देवी विश्वयोनिर्महात्मा सदा जनानां हृदये सन्निविष्टा ।
हृदा मनीषा मनसाऽभिक्लृप्ता य एतां विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥३७॥
यदा तमस्तं न दिवा न रात्रि-र्न सन्न चासद् भगवत्येव गुह्या ।
तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा च तस्याः प्रसृता पुराणी ॥३८॥
नैनामूर्ध्वं न तिर्यञ्च न मध्ये परिजग्रभत् ।
न तस्याः प्रतिमाप्यस्ति तस्या नाम महद् यशः ॥३९॥
न सदृशं तिष्ठति रूपमस्याः न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनाम् ।
हृदा मनीषा मनसाऽभिक्लृप्ता

य एतां विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥४०॥

अथेतरे दुःखमेवार्पयन्ति ॥

भूयश्च सृष्ट्वा त्रिदशानप्यथैशी सर्वाधिपत्यं कुरुते भवानी ।

सर्वा दिश ऊर्ध्वमधश्च तिर्यक् प्रकाशयन्ती भ्राजते गुह्यकाली ॥४१॥

नैवा स्त्री न पुमानेषा नैव चेयं नपुसंका । यद्यच्छरीरमादत्ते तेन नेनैव युज्यते ॥४२॥

धर्मावहां पापनुदं भगेशीं ज्ञात्वात्म स्थाममृतं विश्वधाम ।

तामीश्वराणां परमें महेश्वरीं तां देवतानां परमां च देवताम् ॥४३॥

पतिं पतीनां परमां पुरस्तात् विदाम तां गुह्यकालीमनीशाम् ।

तस्या न कार्यं करणं च विद्यते न तत्समा चाभ्यधिका च दृश्यते ॥४४॥

परास्याः शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च ।

कश्चिन्न तस्याः पतिरस्ति लोके न चेशिता नैव वा किञ्चिल्लिङ्गम् ॥४५॥

सा कारणं कारणाधिपाधिपा कश्चिन्न चास्याः जनिता न चाधिपा ।

एका देवी सर्वभूतेषु गूढा व्याप्नोत्येतत् सर्वभूतान्तरस्था ॥४६॥

कर्माध्यक्षा सर्वभूताधिवासा साक्षिणी वेत्त्री केवला निर्गुणा च ।

एका वशिनी निष्क्रियाणां बहूना-मेकं बीजं बहुधा या करोति ॥४७॥

नानारूपं या च वक्त्रं विधत्ते नानारूपान् या च बाहून् विभर्ति ।

नित्या नित्यानां चेतना चेतनाना-मेका बहूनां या विदधाति कामान् ॥४८॥

तत्कारणं सांख्ययोगाधिगम्यं ज्ञात्वा देवीं मुच्यते सर्वपाशैः ।

या ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं या वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ॥४९॥

या वै विष्णुं पालने सन्नियुङ्क्ते रुद्रं देवं संहृतौ चापि गुह्या ।

तां वै देवीमात्मबुद्धिप्रकाशां मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ॥५०॥

निष्कलां निष्क्रियां शान्तां निरवद्यां निरञ्जनानाम् ।

अमृतस्य परं सेतुं दग्धेन्धनमिवानलम् ॥५१॥

बह्वाननकरां देवीं गुह्यामेकां समाश्रये ।

इयं हि गुह्योपनिषत् सुगूढा यां वै ब्रह्मा वदन्ते विश्वयोनिः ॥

एतां जल्पन्तश्चान्वहं तन्मया ये सत्यं सत्यममृतास्ते बभूवुः ॥५२॥

वेदवेदान्तयोर्गुह्यं पुराकल्पप्रचोदितम् ।

नाप्रशान्ताय दातव्यं नापुत्रशिष्याय वै पुनः ॥५३॥

यस्य देव्यां परा भक्तिर्यथा देव्यां तथा गुरौ ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥५४॥

॥ इत्यथर्ववेदे गुह्योपनिषत् ॥

॥ अथ कामाख्या कवचम् ॥

॥ श्रीनारद उवाच ॥

कामरूपे महाक्षेत्रे काऽधिष्ठात्री महेश्वरी । विद्यानां दशमूर्तिनां तन्मे ब्रूहि महेश्वर ॥१॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

दशैवैता महाविद्याः क्षेत्रस्था मुनिसत्तम । साधकानां हितार्थाय जपपूजाफलप्रदाः ॥२॥
कामाख्या कालिका देवी स्वयमाद्या सनातनी । तस्याः पार्श्वे स्थिताश्चान्या नव विद्या महामते ॥३॥

सर्वविद्यात्मिका काली कामाख्यारूपिणी यतः ।
ततस्तां तत्र सम्पूज्य पूजयित्वेष्टदेवताम् ॥
इष्टमन्त्रं जपेद्भक्त्या सिद्धमन्त्रो भवेत्तदा ॥३॥

ध्यायतां परमेशानीं कामाख्यां कालिकां पराम् । रक्तवस्त्रपरीधानां घोरनेत्रत्रयोज्ज्वलाम् ॥५॥
चतुर्भुजां भीमदंष्ट्रां युगान्तजलदद्युतिम् । मणिसिंहासने न्यस्तां सिंहप्रेताम्बुजस्थिताम् ॥६॥
हरिः सिंहः शवः शम्भुर्ब्रह्मा कमलरूपधृक् । ललजिह्वां महाघोरां किरीटकनकोज्ज्वलाम् ॥७॥
अनर्घ्यमणिमाणिक्यघटितैर्भूषणोत्तमैः । अलंकृतां जगद्धात्रीं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम् ॥८॥
वामे तारा भगवती दक्षिणे भुवनेश्वरी । अग्नौ तु षोडशीविद्या नैर्ऋत्यां भैरवी स्वयम् ॥९॥
वायव्यां छिन्नमस्ता च पृष्ठतो बगलामुखी । ऐशान्यां सुन्दरी विद्या चोर्द्ध्वमातङ्गनायिका ॥१०॥
याम्यां धूमावती विद्या महापीठस्य नारद । अधस्ताद्भगवान्रुद्रो भस्माचलमयः स्वयम् ॥११॥
ब्रह्मविष्णुमुखाश्चान्ये देवाः शक्तिसमन्विताः । सदा संनिहितास्तत्र पीठे लोके सुदुर्लभे ॥१२॥
तत्र सम्पूजयेद्देवीं परिवारसमन्विताम् । विविधैरुपचारैश्च यथाविभवविस्तरैः ॥१३॥
इच्छन्देव्याः परां प्रीतिं सद्भक्त्या प्रयतो नरः । न पुनर्जननाशङ्का विद्यते मुनिसत्तम ॥१४॥
बिल्वपत्रं महादेव्यै यो दद्याद्भक्तिभावतः । स साक्षाच्छंकरो ज्ञेयः सर्वलोकेश्वरेश्वरः ॥१५॥
त्रिपत्रं बिल्वपत्रं तु ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् । यदात्मकमिदं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥१६॥
तद्ददाति च यो देव्यै पूर्णायै मुनिसत्तम । सम्पूर्णजगतो दानफलं सम्प्राप्नुयान्नरः ॥१७॥
सम्पूर्णकामो भूपृष्ठे विहरेन्मानवोत्तमः । तस्य जन्म च सम्पूर्णं न पुनर्जायते क्वचित् ॥१८॥

तत्र यो भक्तिभावेन भस्माचलमयं शिवम् ।

पूजयेद्भस्मलिप्ताङ्गो बिल्वपत्रैर्महामते ।
स याति परमं मोक्षं भुक्त्वा भोगं मनोरथम् ॥१९॥

रुद्राक्षं बिभृयान्नित्यं शैवः शाक्तोऽथ वैष्णवः । युक्तास्तेन महापुण्यं कृत्वा कर्म समश्नुते ॥२०॥
रुद्राक्षधारी सम्पूज्य रुद्रं संहारकारकम् । रुद्रत्वं समवाप्नोति क्षेत्रेऽस्मिन्नात्र संशयः ॥२१॥
अमायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा दिनक्षये । नवम्यां रजनीयोगे योजयेद्भैरवीमनुम् ॥२२॥
क्षेत्रेऽस्मिन्प्रयतो भूत्वा निर्भयः साहसं वहन् । तस्य साक्षाद्भगवती प्रत्यक्षं जायते ध्रुवम् ॥२३॥
आत्मसंरक्षणार्थाय मन्त्रसंसिद्धयेऽपि च । प्रपठेत्कवचं देव्यास्ततो भीतिर्न जायते ॥२४॥
तस्मात्पूर्वं विधायैवं रक्षां सावहितो नरः । प्रजपेत्स्वेष्टमन्त्रस्तु निर्भीतो मुनिसत्तम ॥२५॥

॥ नारद उवाच ॥

कवचं कीदृशं देव्या महाभयनिवर्तकम् । कामाख्यायास्तु तद्ब्रूहि साम्प्रतं मे महेश्वर ॥२६॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

शृणुष्व परमं गुह्यं महाभयनिवर्तकम् । कामाख्यायाः सुरश्रेष्ठ कवचं सर्वमङ्गलम् ॥२७॥
यस्य स्मरणमात्रेण योगिनीडाकिनीगणाः । राक्षस्यो विघ्नकारिण्यो याश्चान्या विघ्नकारिकाः ॥२८॥
क्षुत्पिपासा तथा निद्रा तथान्ये ये च विघ्नदाः । दूरादपि पलायन्ते कवचस्य प्रसादतः ॥२९॥

निर्भयो जायते मर्त्यस्तेजस्वी भैरवोपमः ।
समासक्तमनाश्चापि जपहोमादिकर्मसु ।
भवेच्च मन्त्रतन्त्राणां निर्विघ्नेन सुसिद्धये ॥३०॥

॥ अथ कवचम् ॥

ओं प्राच्यां रक्षतु मे तारा कामरूपनिवासिनी । आग्नेय्यां षोडशी पातु याम्यां धूमावती स्वयम् ॥३१॥
नैर्ऋत्यां भैरवी पातु वारुण्यां भुवनेश्वरी । वायव्यां सततं पातु छिन्नमस्ता महेश्वरी ॥३२॥
कौबेर्यां पातु मे देवी श्रीविद्या बगलामुखी । ऐशान्यां पातु मे नित्यं महात्रिपुरसुन्दरी ॥३३॥
ऊर्ध्वं रक्षतु मे विद्या मातङ्गी पीठवासिनी । सर्वतः पातु मे नित्यं कामाख्या कालिका स्वयम् ॥३४॥
ब्रह्मरूपा महाविद्या सर्वविद्यामयी स्वयम् । शीर्षे रक्षतु मे दुर्गा भालं श्रीभवगेहिनी ॥३५॥
त्रिपुरा भ्रूयुगे पातु शर्वाणी पातु नासिकाम् । चक्षुषी चण्डिका पातु श्रोत्रे नीलसरस्वती ॥३६॥
मुखं सौम्यमुखी पातु ग्रीवां रक्षतु पार्वती । जिह्वां रक्षतु मे देवी जिह्वाललनभीषणा ॥३७॥
वाग्देवी वदनं पातु वक्षः पातु महेश्वरी । बाहू महाभुजा पातु कराङ्गुलीः सुरेश्वरी ॥३८॥
पृष्ठतः पातु भीमास्या कट्यां देवी दिगम्बरी । उदरं पातु मे नित्यं महाविद्या महोदरी ॥३९॥
उग्रतारा महादेवी जङ्घोरू परिरक्षतु । गुदं मुष्कं च मेढ्रं च नाभिं च सुरसुन्दरी ॥४०॥

पादाङ्गुलीः सदा पातु भवानी त्रिदशेश्वरी । रक्तमांसास्थिमज्जादीन्पातु देवी शवासना ॥४१॥
महाभयेषु घोरेषु महाभयनिवारिणी । पातु देवी महामाया कामाख्या पीठवासिनी ॥४२॥
भस्माचलगता दिव्यसिंहासनकृताश्रया । पातु श्रीकालिकादेवी सर्वोत्पातेषु सर्वदा ॥४३॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं कवचेनापि वर्जितम् । तत्सर्वं सर्वदा पातु सर्वरक्षणकारिणी ॥४४॥
इदं तु परमं गुह्यं कवचं मुनिसत्तम । कामाख्या या मयोक्तं ते सर्वरक्षाकरं परम् ॥४५॥
अनेन कृत्वा रक्षां तु निर्भयः साधको भवेत् । न तं स्पृशेद्भयं घोरं मन्त्रसिद्धिविरोधकम् ॥४६॥
जायते च मनःसिद्धिर्निर्विघ्नेन महामते । इदं यो धारयेत्कण्ठे बाहौ वा कवचं महत् ॥४७॥
अव्याहताज्ञः स भवेत्सर्वविद्याविशारदः । सर्वत्र लभते सौख्यं मङ्गलं तु दिने दिने ॥४८॥
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा कवचं चेदमद्भुतम् । स देव्याः पदवीं याति सत्यं सत्यं न संशयः ॥४९॥

॥ इति श्रीमहाभागवते देवीपुराणे श्रीमहादेवनारद संवादे श्रीमहाकामाख्या कवचम् ॥

॥ अथ कामाख्या मंत्रः॥

१. त्र्यक्षर – त्रीं त्रीं त्रीं

रक्तवस्त्रां वरोद्युक्तां सिन्दूर तिलकान्वितां, निष्कलङ्कां सुधाधाम वदन कमलोज्वलाम् ।
स्वर्णादि मणिमाणिक्य भूषणैर्भूषितां परां, नानारत्नादि निर्माण सिंहासनोपरिस्थिताम् ॥
हास्य वक्त्रां पद्मरागमणिकांति मनुत्तमां, पीनोतुङ्गकुचां कृष्णां श्रुतिमूलगतेक्षणाम् ।
कटाक्षैश्च महासंपददायिनीं हरमोहिनीं, सर्वाङ्ग सुन्दरीं नित्यां विद्याभिः परेवेष्टिताम् ॥
डाकिनी योगिनी विद्याधरीभिः परिशोभितां, कामिनीभिर्युतां नानागंधाये परिगंधिताम् ।
ताम्बूलादि कराभिश्च नायिकाभिर्विराजितां, समस्त सिद्धवर्गाणां प्रणतां च प्रतीक्षणाम् ॥
त्रिनेत्रां संमोहकरीं पुष्पचापेषु विभ्रतीं, भगलिङ्ग समाख्यानां किन्नरीभ्योऽपि नृत्यताम् ।
वाणी लक्ष्मी सुधा वाक्य प्रतिवाक्य महोत्सुकां अशेष गुण संपन्नां करुणासागरां शिवाम् ॥

विनियोग – अस्य मंत्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, कामाख्या देवता, चतुर्वर्गफल प्राप्तये विनियोगः।

२. द्वाविंशाक्षर – त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं कामख्ये प्रसीद स्त्रीं स्त्रीं हूं हूं त्रीं त्रीं त्रीं ॥

मंत्र के ऋष्यादि त्र्यक्षर मंत्र के समान है।

अतिसुललितवेशां हास्यवक्त्रां त्रिनेत्रां, जितजलदसुकांतिं पट्टवस्त्रां प्रकाशाम् ।
अभयवरकराढ्यां रत्नभूषाभिभव्यां, सुरतरुतल पीठे रत्नसिंहासनस्थाम् ।
हरिहरविधि वन्द्यां शुद्धबुद्धि स्वरूपां, मदनशर संयुक्तां कामिनीं कामदात्रीम् ।
निखिलजन विलासां कामरूपां भवानीं, कलिकलुषनिहन्त्रीं योनिरूपां स्मरामि ॥

एक लाख जप कर मधुयुक्त पायस होम करे।

॥ युधिष्ठिर कृत देवी स्तुति ॥

॥ युधिष्ठिर उवाच ॥

नमस्ते परमेशानि ब्रह्मरूपे सनातनि । सुरासुरजगद्वन्द्ये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ।
न ते प्रभावं जानन्ति ब्रह्माद्यास्त्रिदशेश्वराः । प्रसीद जगतामाद्ये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ।
अनादिपरमा विद्या देहिनां देहधारिणी । त्वमेवासि जगद्वन्द्ये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ।
त्वं बीजं सर्वभूतानां त्वं बुद्धिश्चेतना धृतिः । त्वं प्रबोधश्च निद्रा च कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ।
त्वामाराध्य महेशोऽपि कृतकृत्यं हि मन्यते । आत्मानं परमात्माऽपि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ।
दुर्वृत्तवृत्तसंहर्त्रि पापपुण्यफलप्रदे । लोकानां तापसंहर्त्रि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ।
त्वमेका सर्वलोकानां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी । करालवदने कालि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ।
प्रपन्नार्तिहरे मातः सुप्रसन्नमुखाम्बुजे । प्रसीद परमे पूर्णे कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ।
त्वामाश्रयन्ति ये भक्त्या यान्ति चाश्रयतां तु ते । जगतां त्रिजगद्धात्रि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ।
शुद्धज्ञानमये पूर्णे प्रकृतिः सृष्टिभाविनी । त्वमेव मातर्विश्वेशि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ।

॥ परिशिष्टम् ॥

॥ श्रीविद्यायां लक्ष्मीपञ्चक ॥

पृष्ठ १३८ का शेषांश -

श्रीविद्यार्चन में पञ्च-पञ्चिका पूजनान्तर्गत लक्ष्मीपञ्चक भी है इसका पूजन पृष्ठ १३३ पञ्चकोष विद्या के पूर्व करें, अथवा पञ्चरत्नेश्वरी विद्या पृष्ठ १३८ के पश्चात् करें।

॥ १. आद्या लक्ष्मी ॥

इनका त्रिपुरसुन्दरी मन्त्र से आद्य लक्ष्मीरूप में पूजन करें।

॥ २. अथैकाक्षरलक्ष्मी ॥

मन्त्र - श्रीं।

विनियोग - अस्य मन्त्रस्य भृगु ऋषिः, निचृच्छन्दः, श्रीदेवी देवता, शं बीजं, ईं शक्तिं, रं कीलकं स्वाभीष्ट सिद्धये विनियोगः।

षडङ्गन्यास - श्रां, श्रीं, श्रूं, श्रैं, श्रौं, श्रः से क्रमशः हृदयादि न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

तप्तकार्तस्वराभासां दिव्यरत्नविभूषिताम् ।
आसिंच्यमानाममृतैर्मुक्ता रत्नद्रवैरपि ॥
शुभ्राभ्राभेभयुग्मेन मुहुर्मुहुरपि प्रिये ।
रत्नौघबद्धमुकुटां शुद्धक्षौमाङ्गरागिणीम् ॥
पद्माक्षी पद्मनाभेन हृदि चिन्त्यां स्मरेद्बुधः ।
एवं ध्यत्वा जपद्देवीं पद्मयुग्मधरां सदा ।
वरदाभय शोभाढ्यां चतुर्बाहुं सुलोचनाम् ॥

॥ ३. महालक्ष्मी ॥

मन्त्र - ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

विनियोग - अस्य मन्त्रस्य दक्षप्रजापति ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास - श्रां, श्रीं, श्रूं, श्रैं, श्रौं, श्रः से क्रमशः हृदयादि न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

अग्ररत्नावलीराजदादर्श दधतीं पराम् ।
चतुर्भुजां स्फुरद्रत्ननूपुरां मुकुटोज्ज्वलाम् ॥

ग्रैवेयाङ्गदहाराढ्यकङ्कणां रत्नकुण्डलाम् ।
पद्मासनसमासीनां दूतीभिर्मण्डितां सदा ।
शुक्लाङ्गरागवसनां महादिव्याङ्गनानताम् ॥

॥ ४ . त्रिशक्तिलक्ष्मी ॥

मन्त्र - श्रीं ह्रीं क्लीं।

विनियोग - अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, त्रिशक्तिलक्ष्मी देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास - श्रीं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं, ह्रीं, क्लीं से क्रमशः हृदयादि न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

नवहेमस्फुरद्भूमौ रत्नकुट्टिममण्डपे ।
महाकल्पवनान्तःस्थे रत्नसिंहासनेवरे ॥
कमलासनशोभाढ्यां रत्नमञ्जीर मण्डिताम् ।
स्फुरद्रत्नलसन्मौलि रत्नकुण्डल मण्डिताम् ॥
अनर्घ्यरत्नघटित नानामण्डल भूषिताम् ।
दधतीं पद्मयुगलं पाशाङ्कुशधनुःशरान् ।
षड्भुजामिन्दुवदनां दूतीभिः परिवारिताम् ।
चारुचामरहस्ताभी रत्नादर्श सुपाणिभिः ।
ताम्बूलस्वर्णपात्रीभि - र्भूषापेटीसुपाणिभिः ॥
तप्तकार्तस्वरा - भासाम् ॥

॥ ५ . सर्वसाम्राज्य लक्ष्मी ॥

मन्त्र - श्रीं सहकल श्रीं ह्रीं।

विनियोग - अस्य मन्त्रस्य हरि ऋषिः, गायत्री छन्दः, मोहनीलक्ष्मीर्महासाम्राज्यदायिनी देवता, श्रीं बीजं, सहकल शक्तिं, सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास - श्रां, श्रीं, श्रूं, श्रैं, श्रौं, श्रः से क्रमशः हृदयादि न्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

अतसीपुष्पसङ्काशां रत्नभूषण भूषिताम् ।
शङ्खचक्रगदापद्म शार्ङ्गबाणधरांकरै ॥
षड्भिः कराभ्यांदेवेशि वरदाभय शोभिताम् ।

(एवमष्टभुजां ध्यात्वेति)

॥ इति पञ्चलक्ष्म्यः ॥

॥ कौशिकी मन्त्र ॥

पृष्ठ ४६५ से संलग्न

॥ मंत्रोद्धार ॥

मन्त्रमस्याः प्रवक्ष्यामि मूर्तिरूपं च भैरव । समाम्निनान्त्यस्तु षड्वर्गादि सविन्दुभिः । षष्ठस्वरेण संस्पृष्टो बिन्दुना समलंकृतः । कौशिकी मन्त्रतन्त्रोऽयं सर्वकामार्थ दायकः ॥

मन्त्र – सूँ, अं कं चं टं पं ॥

महामाया कवच में अन्य मन्त्र इस प्रकार से है – **यूं सः कौशिके नमः ॥**

महामाया कल्पे – ऐं ह्रीं श्रीं कौशिके नमः ।

॥ श्री अमृतेश्वरी यन्त्रम् ॥
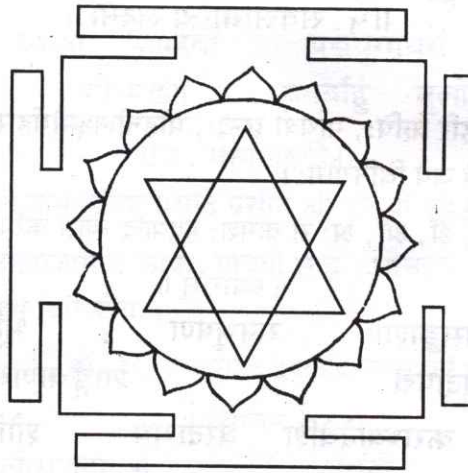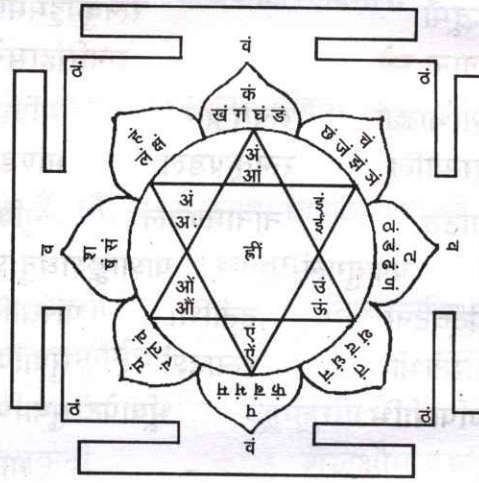
॥ श्री ब्राह्मी यन्त्रम् [पुरश्चर्यार्णवे]॥
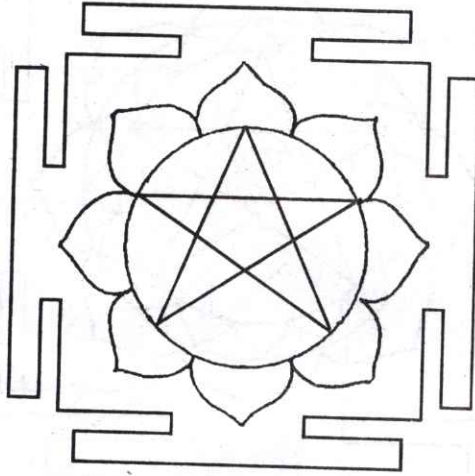
॥ श्री कौमारी यन्त्रम् [पुरश्चर्यार्णवे]॥
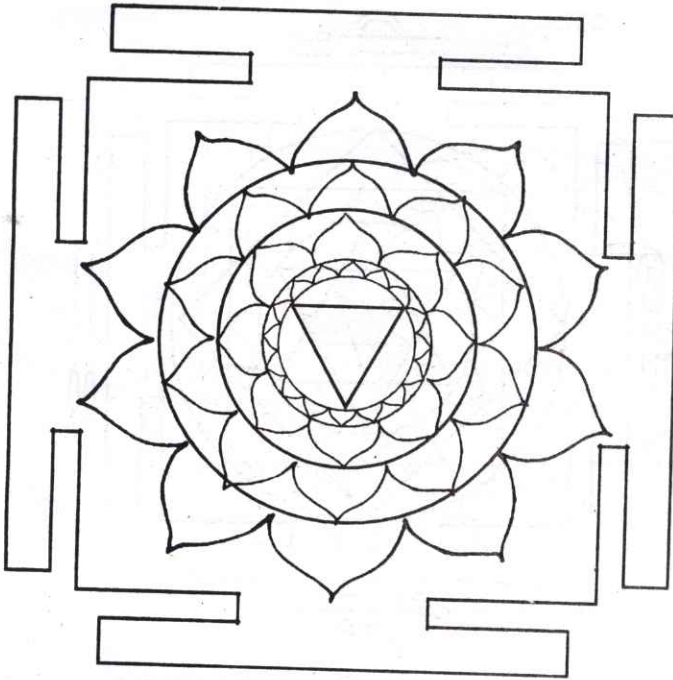
॥ श्री वाराही यन्त्रम् [पुरश्चर्यार्णवे]॥
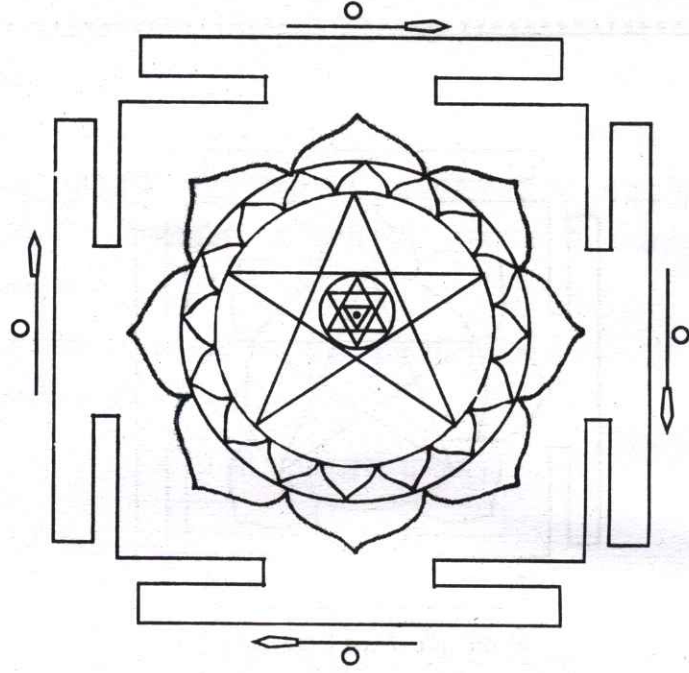
॥ विधातृकामवरुणोपासित यन्त्रम् ॥
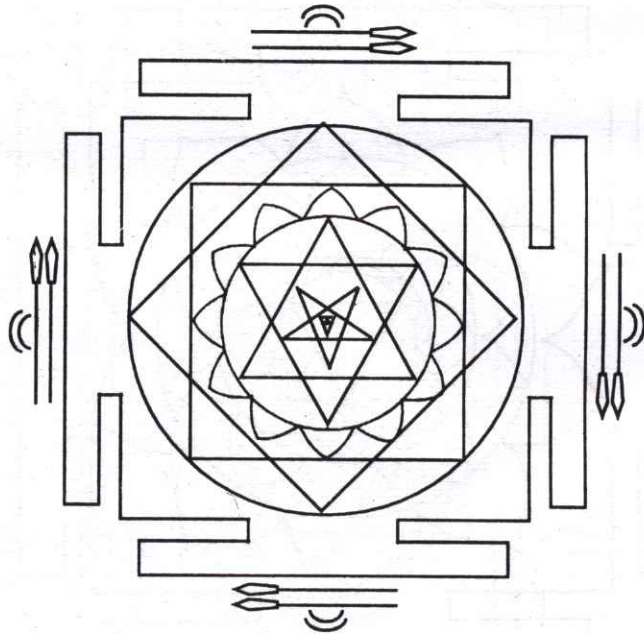
॥ वैश्वानरादितीन्द्राण्युपासित मन्त्राणां यन्त्रम् ॥
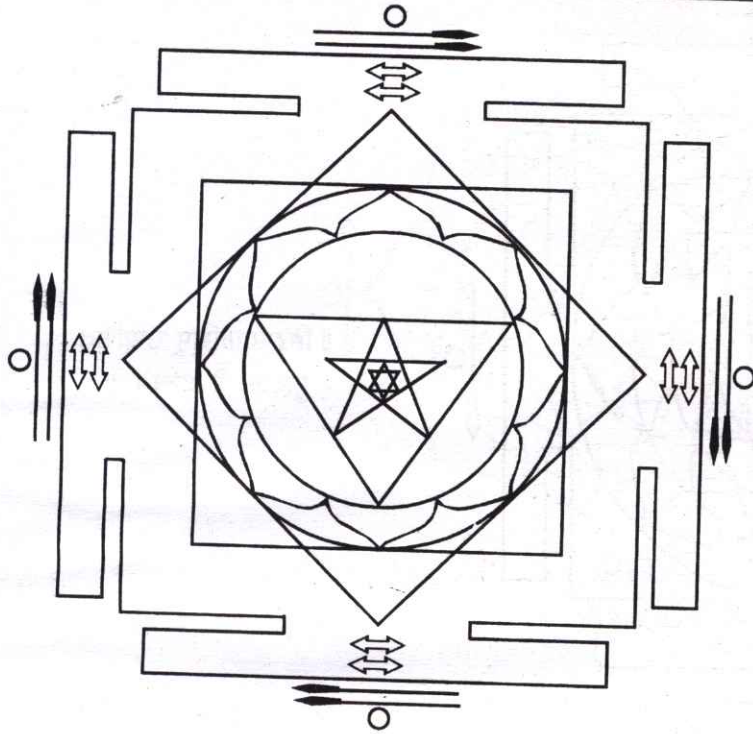
॥ दानवालीमृत्युकाल उपासीत गुह्यकाली यन्त्रम् ॥
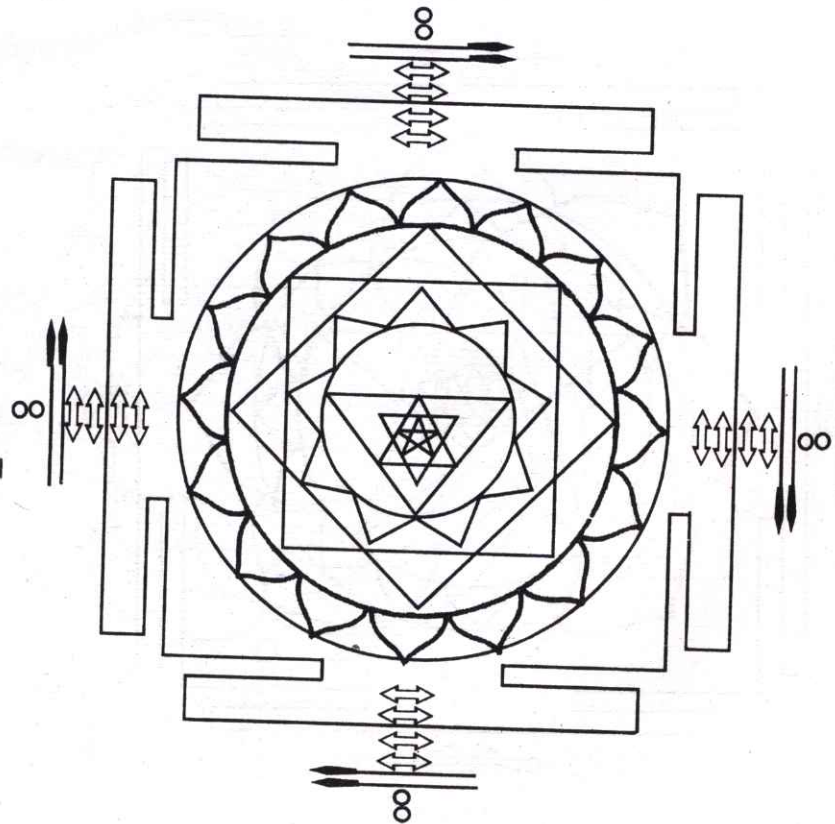
॥ रामयक्षेशनाहुषैः पूज्य यन्त्रम् ॥
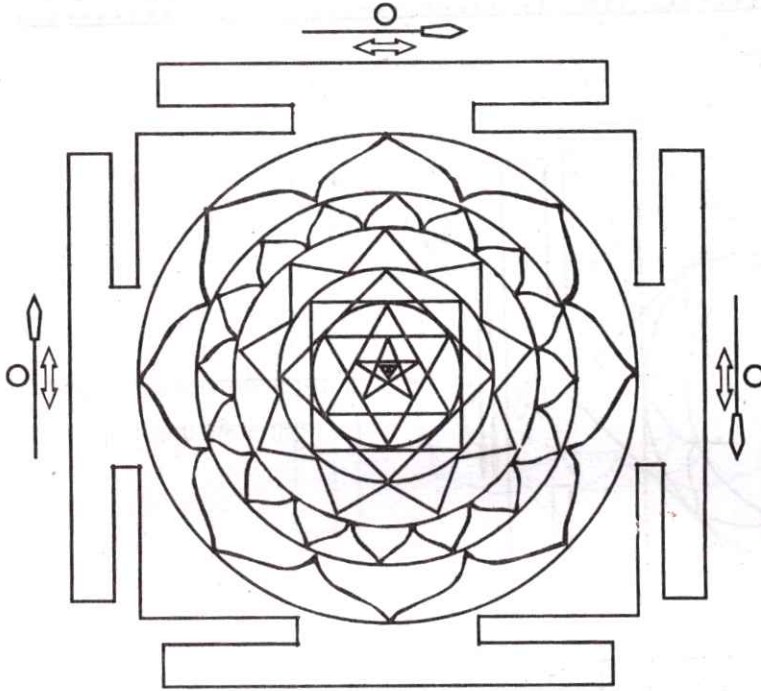
॥ हिरण्यकशिपू उपासित
गुह्यकाली यन्त्रम् ॥
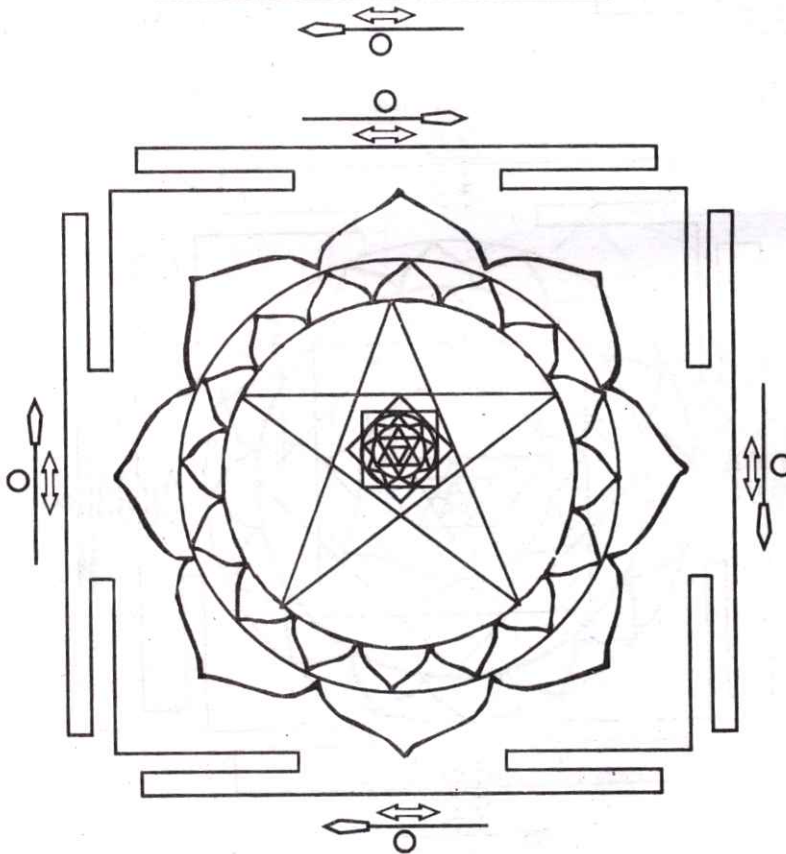
॥ ब्रह्मोपासितायाः सप्तदश्याः
विष्णुतत्त्वाख्य
पञ्चाक्षर मन्त्रस्य यन्त्रम् ॥
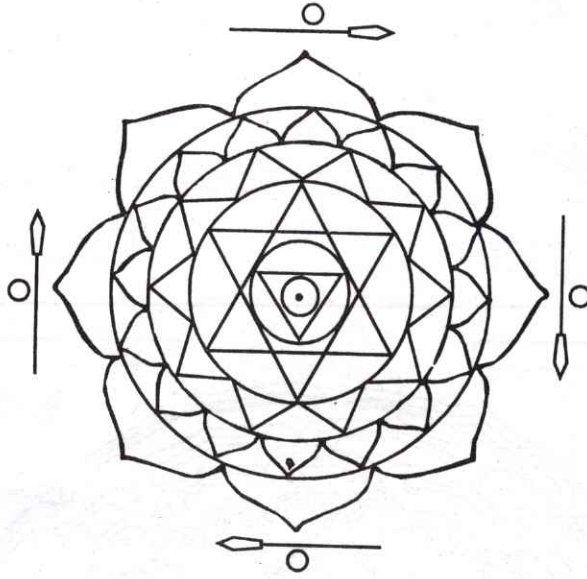
॥ वसिष्ठसप्तदश्याः गुह्यकाली यन्त्रम् ॥
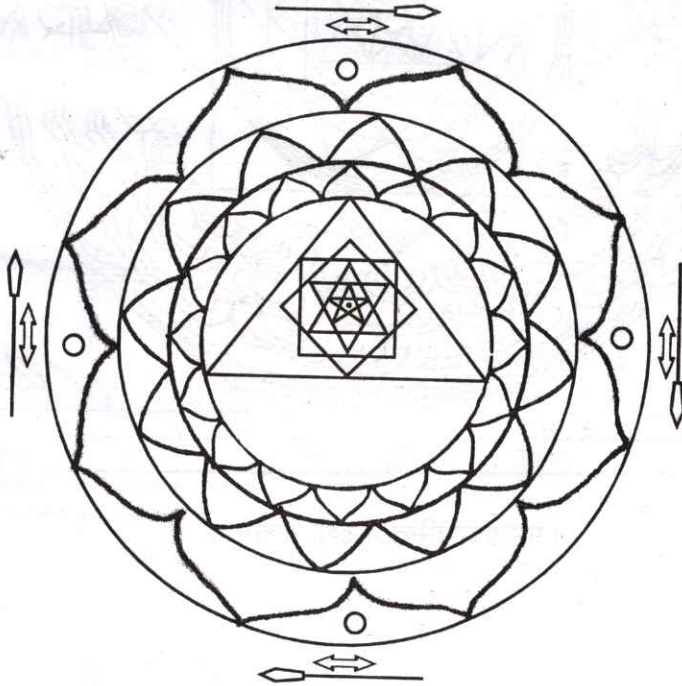
॥ रावणोपासित सप्तदश्याः अम्बाहृदयाख्यं यन्त्रम् ॥
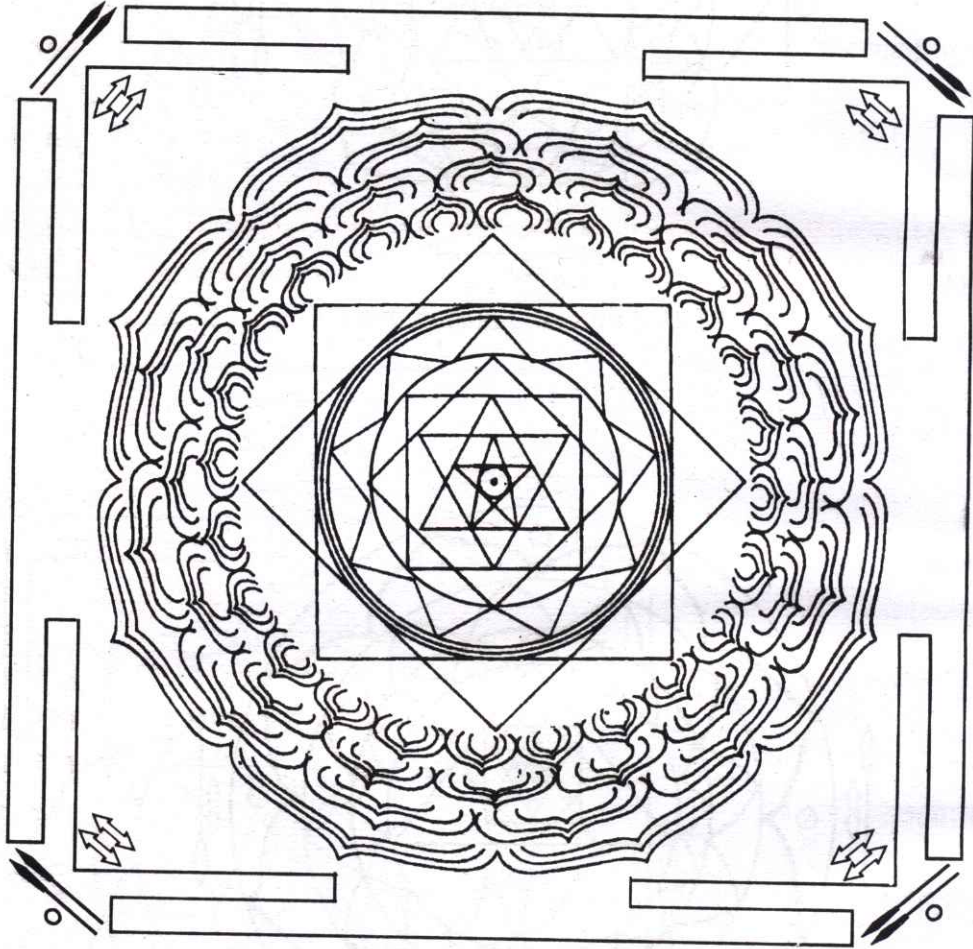
॥ महारुद्रोपासित षोडशी यन्त्रम् ॥

॥ षोडशार्णा गुह्यकाली यन्त्रम् ॥
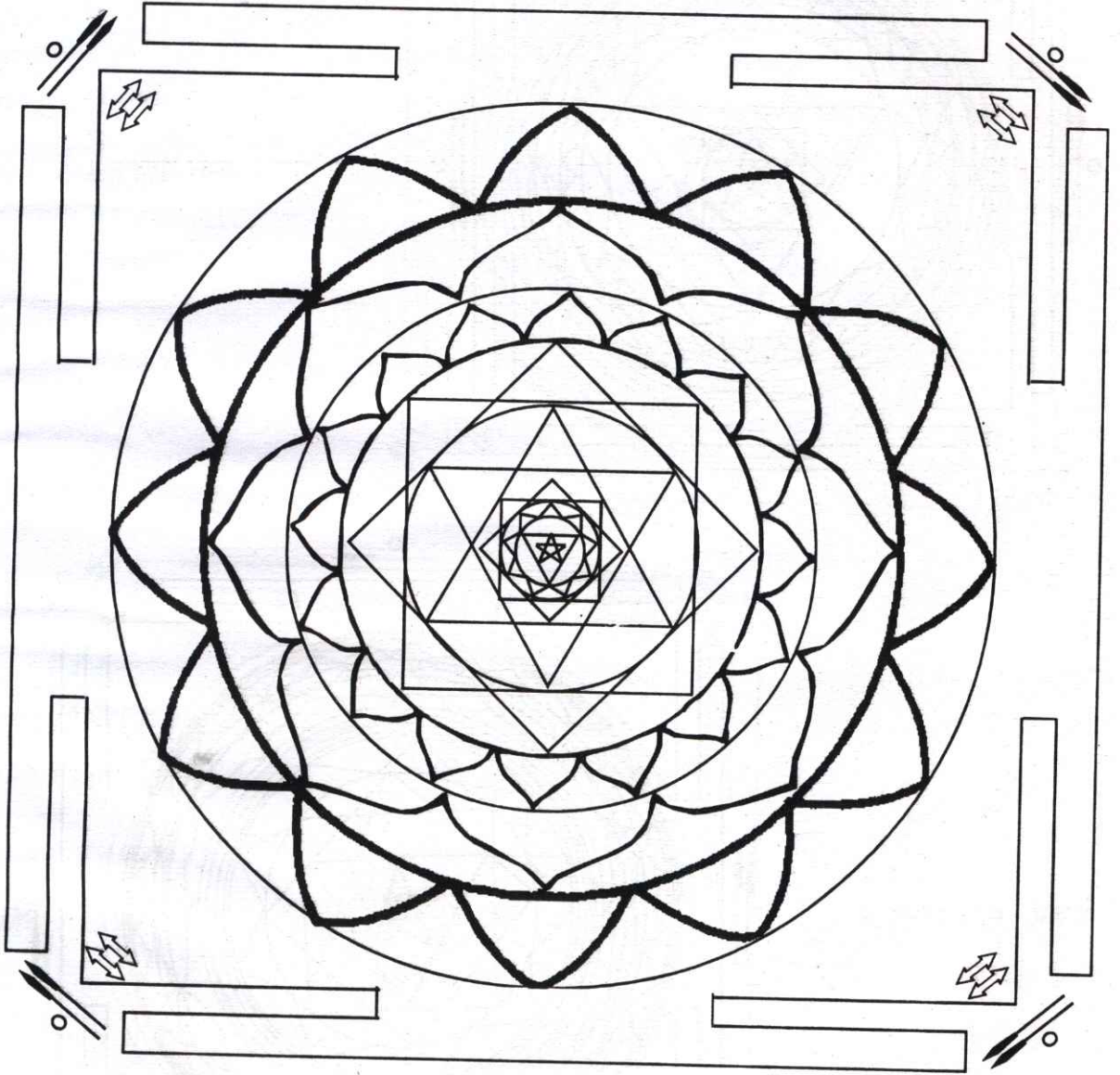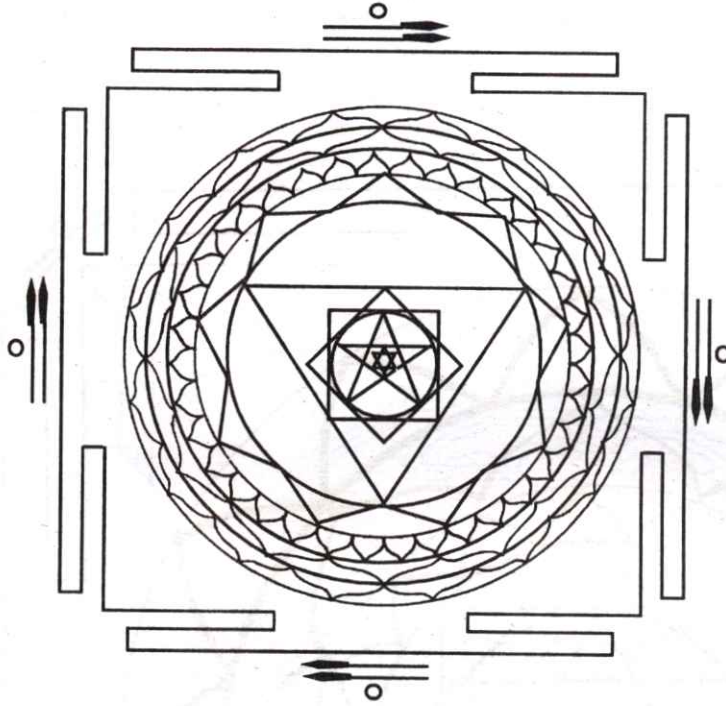
॥ षट्त्रिंशद् अक्षर यन्त्रम् ॥

॥ जय मङ्गला यन्त्रम् ॥
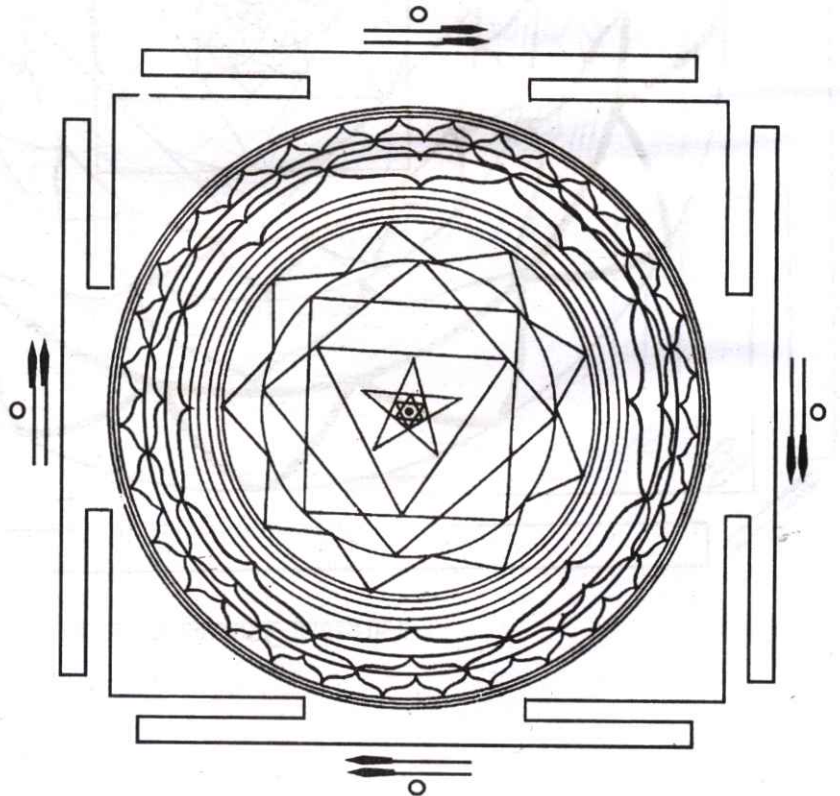
॥ भुवन मोहन महायन्त्रम् ॥
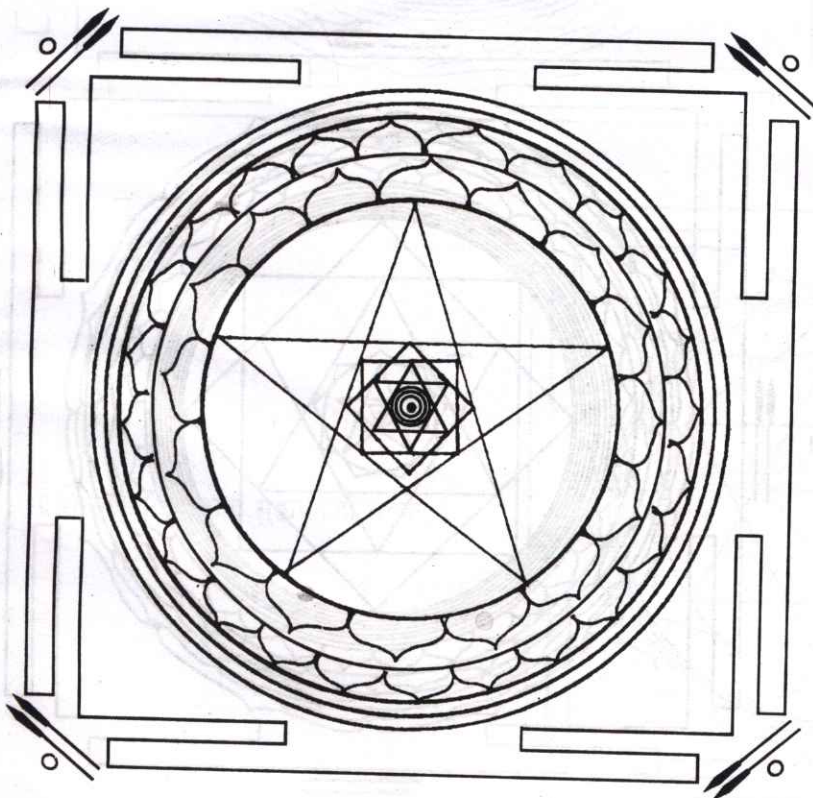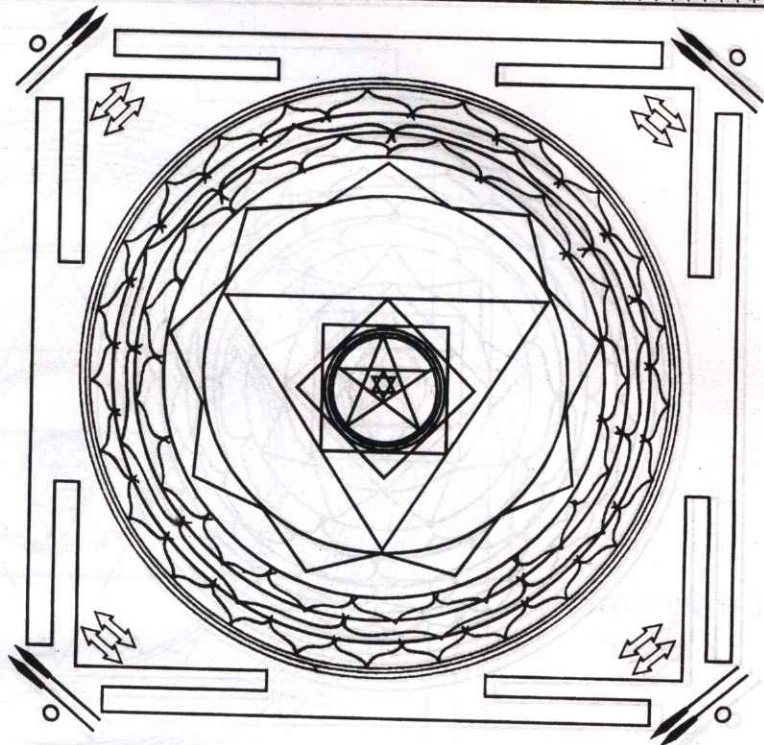
॥ गुह्येश्वरी शताक्षरी यन्त्रम् ॥
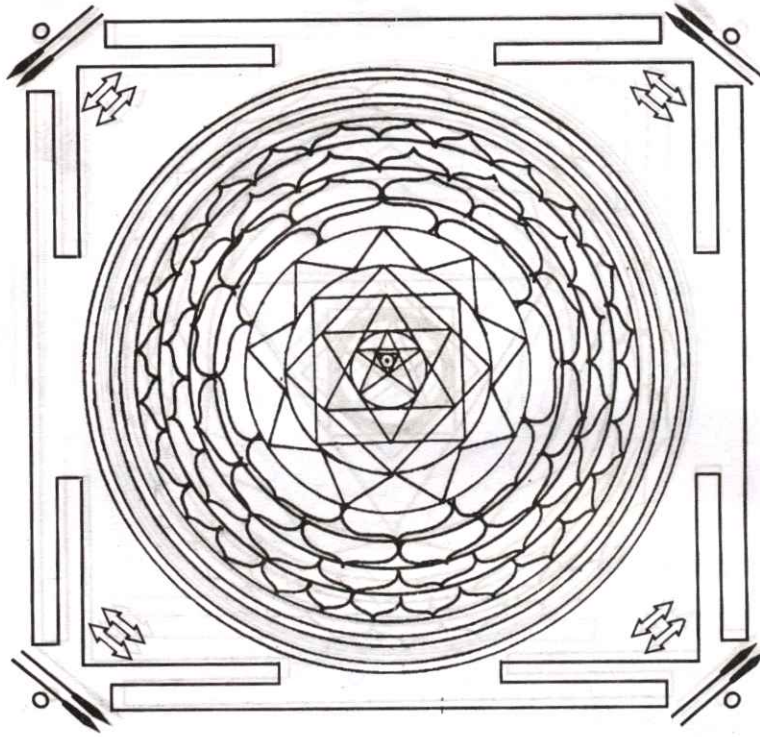
॥ नवनवार्णायाः यन्त्रम् ॥

॥ विष्णुपास्यायुतार्णस्य यन्त्रम् ॥
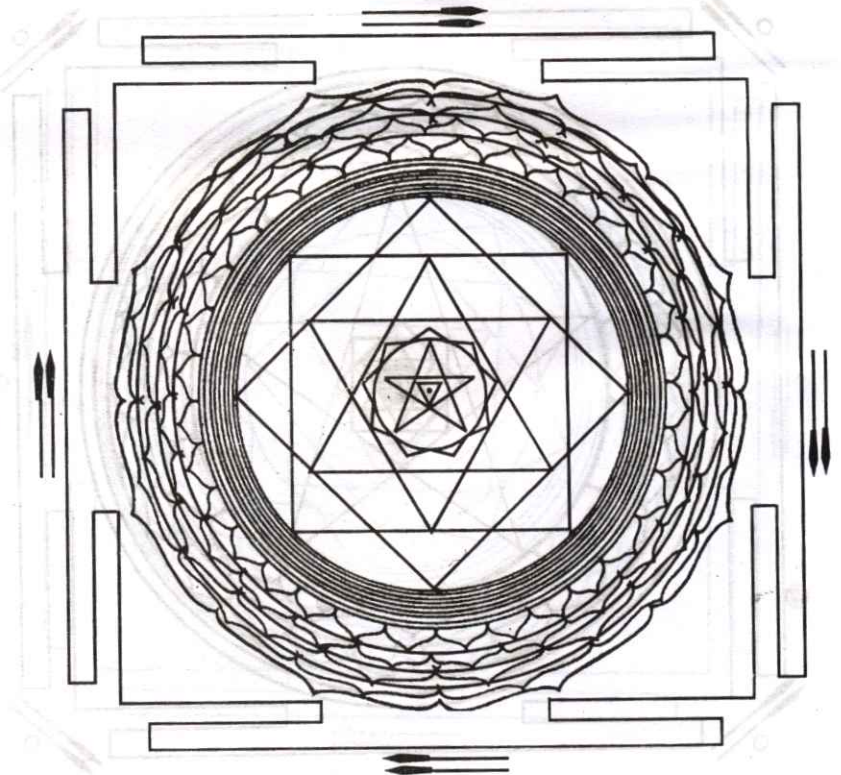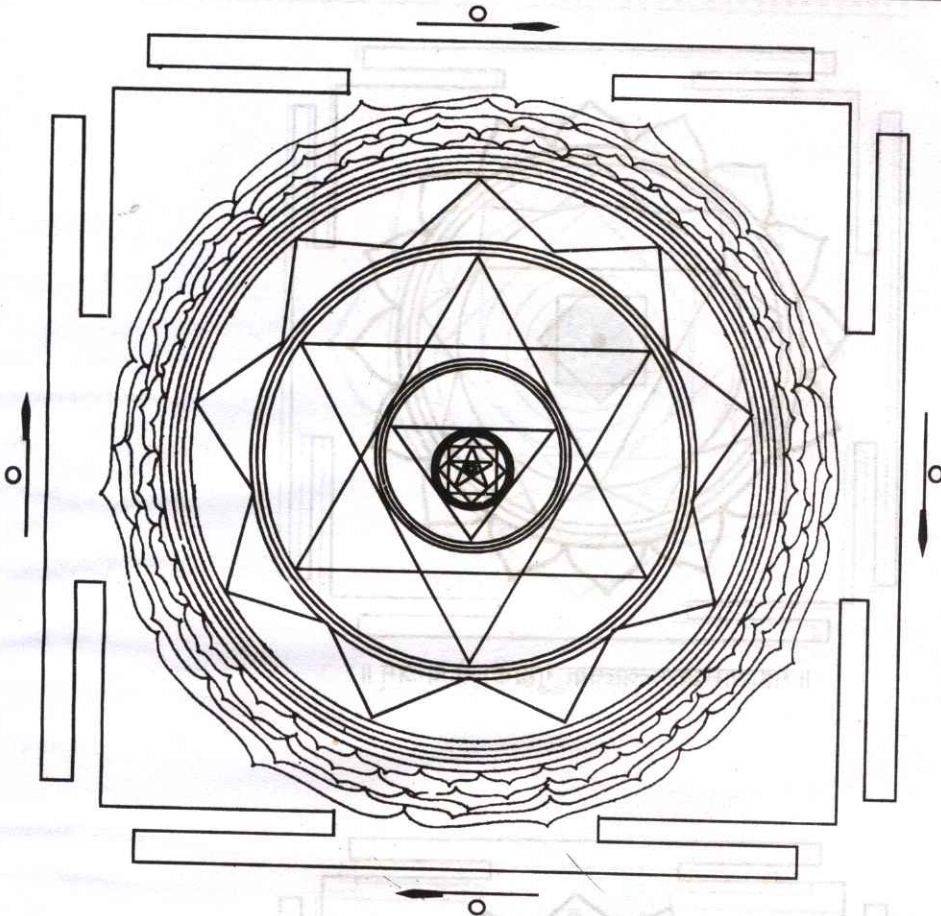
॥ यन्त्रराज गुह्यकाली यन्त्रम् ॥
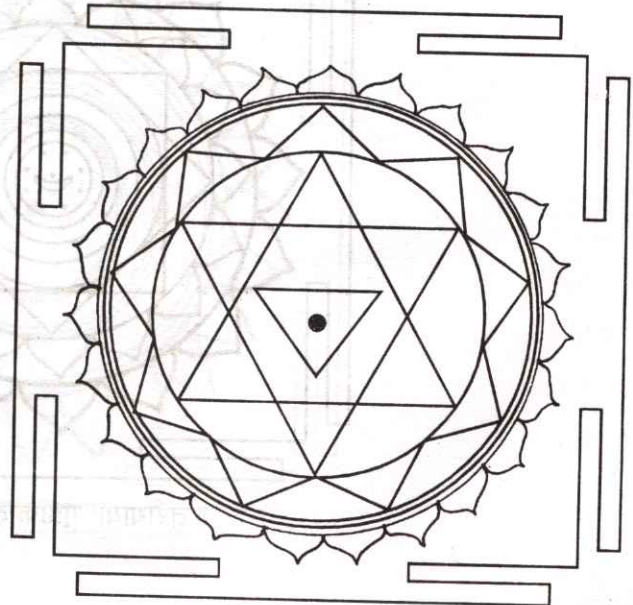
॥ शाम्भव मन्त्रात्मक गुह्यकाली यन्त्रम् ॥
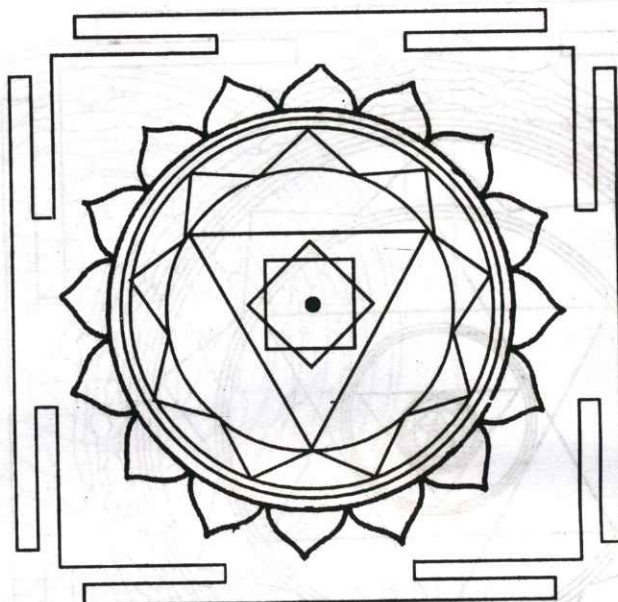
॥ महाशाम्भव मन्त्रात्मक गुह्यकाली यन्त्रम् ॥
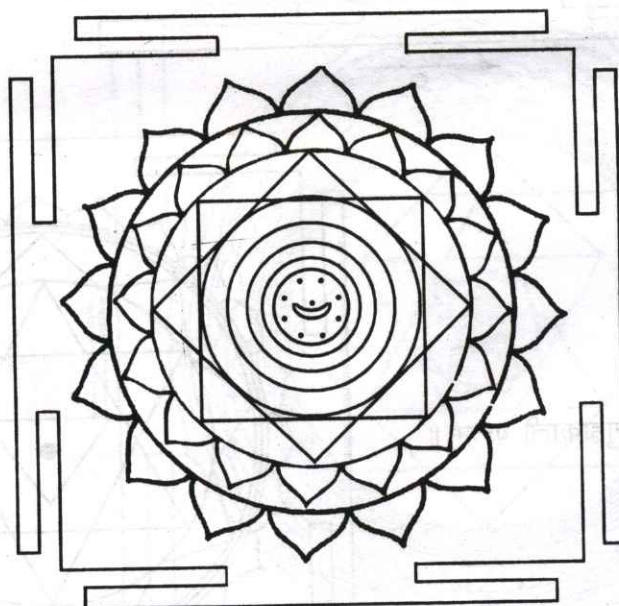
॥ तुरीयाया: गुह्यकाली यन्त्रम् ॥
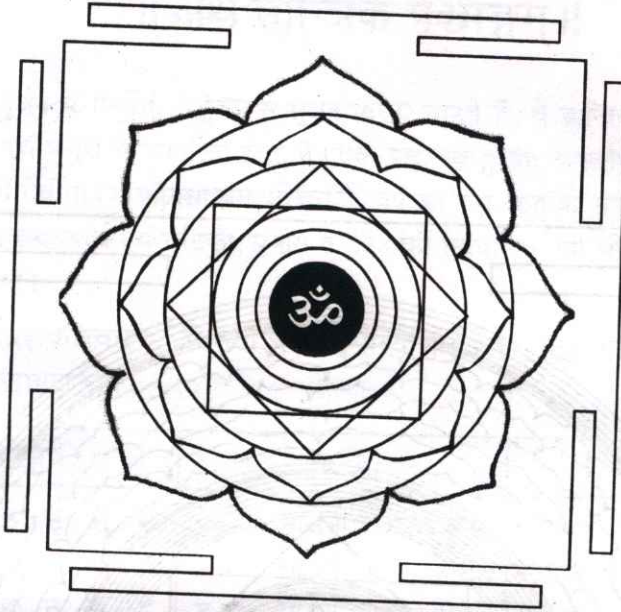
॥ महातुरीया गुह्यकाली यन्त्रम् ॥
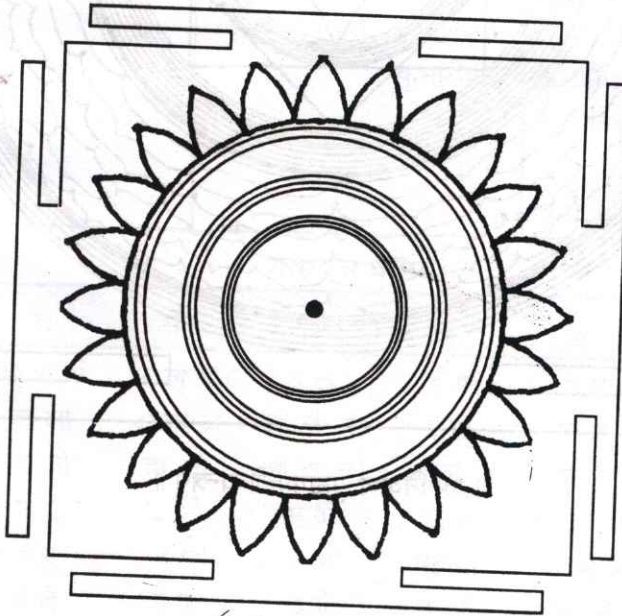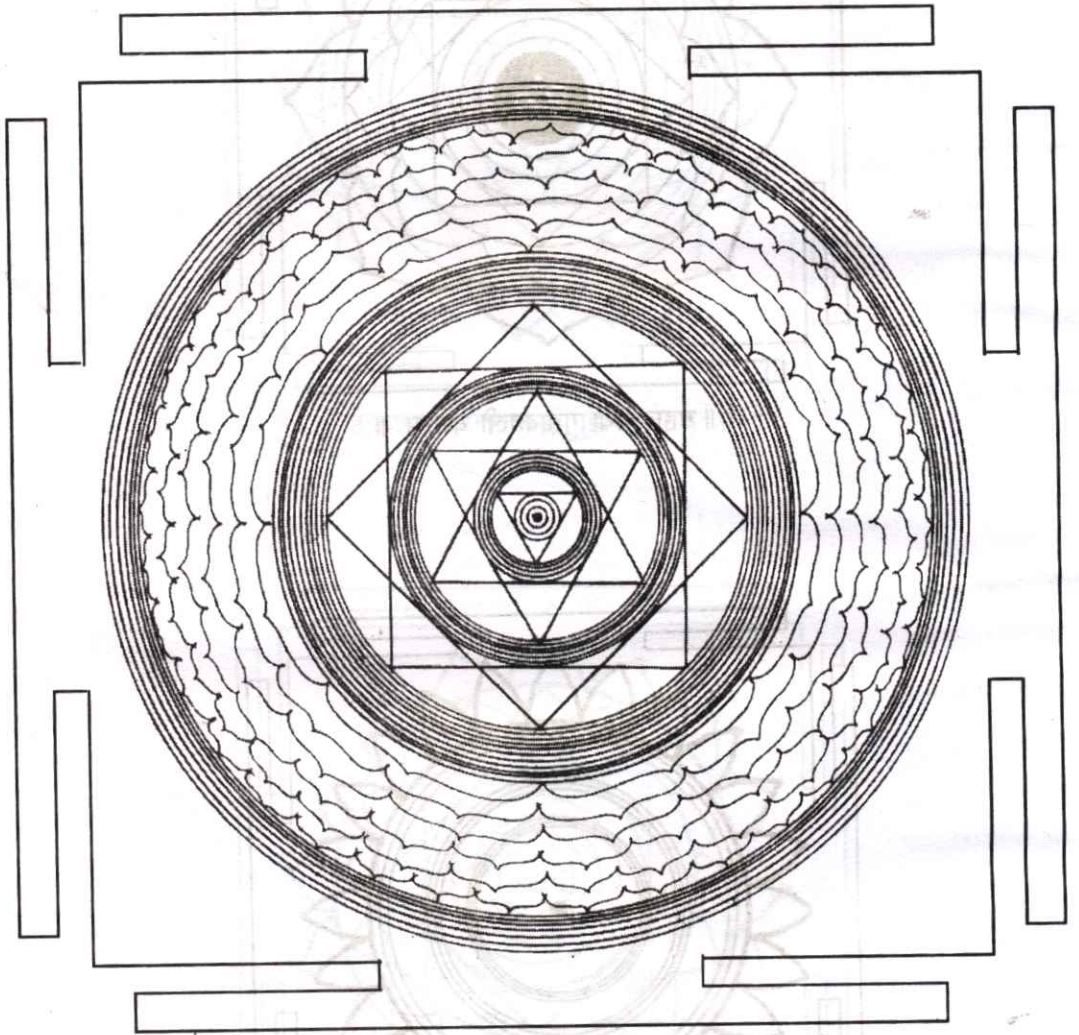
॥ महानिर्वाण गुह्यकाली यन्त्रम् ॥

॥ महानिर्वाण गुह्यकाली यन्त्रम् ॥

॥ अथ तान्त्रिक पञ्चाङ्गम् ॥

जो साधक दैनिक पूजन में तन्त्रोक्त सङ्कल्प से पूजन करना चाहते हैं, वे तान्त्रिक पञ्चाङ्ग का अवलोकन करें। तान्त्रिक पञ्चाङ्ग दतिया एवं मथुरा से प्रकाशित होता है। एक बार पञ्चाङ्ग का अवलोकन कर लेवें। पश्चात् सारणी से सहायता लेवें। सङ्कल्प में देवीमान में कौनसा युग परिवृत्त है, वर्ष का नाम, ऋतु का नाम, मास का नाम, मास की कला का नाम, दिन की नित्या तथा तत्त्व एवं घटिका, प्रयोग के दिन की नित्या का नाम भी उल्लेख करें। इन सभी नाम हेतु साधारण सारणी दी गई है।

वर्तमान में "**खं सदाशिवतत्त्वयुग**" है, तथा **थं त्वक्परिवृत्ति** है। वर्ष, ऋतु, मास, पर्व, वार, नक्षत्र, योग, दिन नित्या हेतु सारणी की सहायता लेवें।

वर्षारम्भ वासराः		ऋतवः	पर्वाणि	
वासरा	र सो मं बु बृ शु श	अ आ मासयोः आं श्रीकरी	पुष्पिणी	वर्ष-मासाक्षरयोर्योगात्
वर्षाणि	ग अ घ क ङ ख च	इ ई मासयोः ईं मोहिनी	मोहिनी	वर्ष-दिनाक्षरयोर्योगात्
	ञ छ ट ज ठ झ ड	उ ऊ मासयोः ऊँ कामिनी	जयिनी	वर्ष-उदययोर्योगात्
	थ ढ द ण ध त न	ऋ ॠ मासयोः ऋं विमला	कुमारी	मास-दिनयोर्योगात्
	भ प म फ य ब र	लृ लॄ मासयोः लृं हारिणी	विमला	मास-उदययोर्योगात्
	ष ळक्षस व ह श ल	ऐ ऐ मासयोः ऐं भ्रामणी	श्रीकरी	दिनोदययोर्योगात्
		ओ औ मासयोः औं गौरी	सूर्यग्रहणं	वर्षमासदिनवारोदययोगात्
		अं अः मासयोः अः लक्ष्मी-कुमारीका	चन्द्रग्रहणं	मासवारनित्योदययोगात्
			श्रीरात्रिः	वारदिननित्योदययोगात्
			नित्यानेलनं	तिथिनित्यादिन-नित्ययोर्योगात्
			वारोदयः	वारोदययोगात्

मासारंभ वासराः

मासारंभ	र.	सौ.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
र.	अ ऋ अं	आ लृ अः	इ लॄ	ई ए	उ ऐ	ऊ ओ	ऋ औ
सौ.	ऋ ओ	अ ऋ अं	आ लृ अः	इ लॄ	ल ए	उ ऐ	ऊ ओ
मं.	ऊ ओ	ऋ औ	आ लृ अः	आ लॄ अ	इ लृ	ई ऐ	उ ऐ
बु.	उ ऐ	उ औ	ऋ औ	ऋ अं	आ लृ अः	इ लृ	ई ए
बृ.	ई ए	उ ऐ	ऊ ओ	ऋ औ	अ ऋ अं	आ लृ अः	इ लृ
शु.	इ लॄ	ई ए	उ ऐ	उ ओ	ऋ औ	अ लृ अं	आ लृ अः
श.	आ लृ अः	इ लॄ	ई ए	उ ए	उ ऐ	ऊ औ	अ ऋ अं

मास नामानि (प्रतिवर्ष १६ मास)

अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं	ऋं	ॠं
अमृता	मानदा	पूषा	तुष्टि	पुष्टि	रति	धृति	शशिनी
लृं	लॄं	एं	ऐं	ओं	औं	अं	अ:
चन्द्रिका	कान्ति	ज्योत्सना	श्री	प्रीति	अङ्गदा	पूर्णा	पूर्णामृता

वर्षाणि	मासा:	मासा:
अ ङ ञ ण न म श क्ष	आ ऋं ऐ	इ ऋ ओ
क च ट त प य ष	अ ऊ ए अ:	आ ॠ ऐ
ख छ ठ थ फ र स	उ लृ अं	अ ऊ ए अ:
ग ज ड द ब ल ह	ई लॄ ओ	उ लृ अं
घ झ ढ ध भ व ळ	इ ऋ औ	इ लृ औ

मासा:	मासा:	मासा:
ई लृ औ	उ लृ अं	अ ऊ ए अ:
इ ऋ ओ	ई लॄ औ	उ लृ अं
आ ऋ ऐ	इ ऋ ओ	ई लॄ औ
अ ऊ ए अ:	आ ऋ ऐ	इ ऋ ओ
उ लॄ अं	अ ऊ ए अ:	आ ऋ ए

रवौ मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३६						

सोमेमासारम्भश्चेत्

सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र
१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३६						

भौमे मासारम्भश्चेत्

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	सो.
१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३६						

बुधे मासारम्भश्चेत्

बु.	बृ.	शु.	श.	र.	सो.	मं.
१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३६						

बृहस्पते मासारम्भश्चेत्						
बृ.	शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.
१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३६						

शुक्रे मासारम्भश्चेत्						
शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.
१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३६						

शनौ मासारम्भश्चेत्						
श.	र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.
१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३६						

वासराः											
१	अं	प्रकाशा	१०	अं	प्रकाशा	१९	अं	प्रकाशा	२८	अं	प्रकाशा
२	लृं	विमर्शा	११	लृं	विमर्शा	२०	लृं	विमर्शा	२९	लृं	विमर्शा
३	कं	आनन्दा	१२	कं	आनन्दा	२१	कं	आनन्दा	३०	कं	आनन्दा
४	चं	ज्ञाना	१३	चं	ज्ञाना	२२	चं	ज्ञाना	३१	चं	ज्ञाना
५	टं	सत्या	१४	टं	सत्या	२३	टं	सत्या	३२	टं	सत्या
६	तं	पूर्णा	१५	तं	पूर्णा	२४	तं	पूर्णा	३३	तं	पूर्णा
७	पं	स्वभावा	१६	पं	स्वभावा	२५	पं	स्वभावा	३४	पं	स्वभावा
८	यं	प्रतिभा	१७	यं	प्रतिभा	२६	यं	प्रतिभा	३५	यं	प्रतिभा
९	षं	सुभगा	१८	षं	सुभगा	२७	षं	सुभगा	३६	षं	सुभगा

संख्या	तत्त्व दिन		नक्षत्र	योग	करण
१	अं	शिव	लृ	अ	ऋ
२	कं	शक्ति	लॄ	आ	ॠ
३	खं	सदाशिव	ए	इ	लृ
४	गं	ईश्वर	ऐ	ई	लॄ
५	घं	शुद्धविद्या	ओ	उ	ए
६	ङं	माया	औ	ऊ	ऐ
७	चं	कला	अं	ऋ	ओ
८	छं	अविद्या	अः	ॠ	औ
९	जं	राग	क	लृ	अं
१०	झं	काल	ख	लॄ	अः
११	ञं	नियति	ग	ए	क
१२	टं	पुरुष	घ	ऐ	ख

संख्या	तत्त्व दिन		नक्षत्र	योग	करण
१३	ठं	प्रकृति	ङ	ओ	ऋ
१४	डं	अहंकार	च	औ	ॠ
१५	ढं	बुद्धि	छ	अं	लृ
१६	णं	मनस्	ज	अः	लृ
१७	तं	श्रोत्र	झ	क	ए
१८	थं	त्वक्	ञ	ख	ऐ
१९	दं	चक्षु	ट	घ	ओ
२०	धं	जिह्वा	ठ	ग	औ
२१	नं	घ्राण	ड	ङ	अं
२२	पं	वाक्	ढ	च	अः
२३	फं	पाणि	ण	छ	क
२४	बं	पाद	त	ज	ख

संख्या	तत्त्व दिन		नक्षत्र	योग	करण
२५	भं	पायु	थ	झ	ऋ
२६	मं	उपस्थ	द	ञ	ॠ
२७	यं	शब्द	ध	ट	लृ
२८	रं	स्पर्श	न	ठ	लृ
२९	लं	रूप	प	ड	ए
३०	वं	रस	फ	ढ	ऐ
३१	शं	गंध	ब	ण	ओ
३२	षं	आकाश	भ	त	औ
३३	सं	वायु	म	थ	अं
३४	हं	वह्नि	य	द	अः
३५	ळं	सलिल	र	ध	क
३६	क्षं	भूमि	ल	न	ख

दिन नित्या		पक्ष	घटिकोदय
अं	कामेश्वरी	शुक्ल	अ
आं	भगमालिनि		ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च
ईं	भेरुण्डा		त
उं	वह्निवासिनि		य
ऊं	महावज्रेश्वरी		अ
ऋं	शिवदूती		ए
ॠं	त्वरिता		च
लृं	कुलसुन्दरी		त
ॡं	नित्या		य
एं	नीलपताका		अ
ऐं	विजया		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
औं	ज्वालामालिनि		त
अं	चित्रा		य
अं	चित्रा	कृष्ण	अ
औं	ज्वालामालिनि		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
ऐं	विजया		त
एं	नीलपताका		य
ॡं	नित्या		अ
लृं	कुलसुन्दरी		ए
ॠं	त्वरिता		च
ऋं	शिवदूती		त
ऊं	महावज्रेश्वरी		य
उं	वह्निवासिनि		अ
ईं	भेरुण्डा		ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च
आं	भगमालिनि		त
अं	कामेश्वरी		य
अं	कामेश्वरी	शुक्ल	अ

दिन नित्या		पक्ष	घटिकोदय
आं	भगमालिनि	शुक्ल	ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च
ईं	भेरुण्डा		त
उं	वह्निवासिनि		य
ऊं	महावज्रेश्वरी		अ
ऋं	शिवदूती		ए
ॠं	त्वरिता		च
लृं	कुलसुन्दरी		त
ॡं	नित्या		य
एं	नीलपताका		अ
ऐं	विजया		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
औं	ज्वालामालिनि		त
अं	चित्रा		य
अं	चित्रा	कृष्ण	अ
औं	ज्वालामालिनि		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
ऐं	विजया		त
एं	नीलपताका		य
ॡं	नित्या		अ
लृं	कुलसुन्दरी		ए
ॠं	त्वरिता		च
ऋं	शिवदूती		त
ऊं	महावज्रेश्वरी		य
उं	वह्निवासिनि		अ
ईं	भेरुण्डा		ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च
आं	भगमालिनि		त
अं	कामेश्वरी		य
अं	कामेश्वरी	शुक्ल	अ
आं	भगमालिनि		ए

दिन नित्या		पक्ष	घटिकोदय
इं	नित्यक्लिन्ना	शुक्ल	च
ईं	भेरुण्डा		त
उं	वह्निवासिनि		य
ऊं	महावज्रेश्वरी		अ
ऋं	शिवदूती		ए
ॠं	त्वरिता		च
लृं	कुलसुन्दरी		त
ॡं	नित्या		य
एं	नीलपताका		अ
ऐं	विजया		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
औं	ज्वालामालिनि		त
अं	चित्रा		य
अं	चित्रा	कृष्ण	अ
औं	ज्वालामालिनि		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
ऐं	विजया		त
एं	नीलपताका		य
ॡं	नित्या		अ
लृं	कुलसुन्दरी		ए
ॠं	त्वरिता		च
ऋं	शिवदूती		त
ऊं	महावज्रेश्वरी		य
उं	वह्निवासिनि		अ
ईं	भेरुण्डा		ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च
आं	भगमालिनि		त
अं	कामेश्वरी		य
अं	कामेश्वरी	शुक्ल	अ
आं	भगमालिनि		ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च

	दिन नित्या	पक्ष	घटिकोदय
ईं	भेरुण्डा	शुक्ल	त
उं	वह्निवासिनि		य
ऊं	महावज्रेश्वरी		अ
ऋं	शिवदूती		ए
ॠं	त्वरिता		च
लृं	कुलसुन्दरी		त
लॄं	नित्या		य
एं	नीलपताका		अ
ऐं	विजया		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
औं	ज्वालामालिनि		त
अं	चित्रा		य
अं	चित्रा	कृष्ण	अ
औं	ज्वालामालिनि		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
ऐं	विजया		त
एं	नीलपताका		य
लॄं	नित्या		अ
लृं	कुलसुन्दरी		ए
ॠं	त्वरिता		च
ऋं	शिवदूती		त
ऊं	महावज्रेश्वरी		य
उं	वह्निवासिनि		अ
ईं	भेरुण्डा		ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च
आं	भगमालिनि		त
अं	कामेश्वरी		य
अं	कामेश्वरी	शुक्ल	अ
आं	भगमालिनि		ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च
ईं	भेरुण्डा		त

	दिन नित्या	पक्ष	घटिकोदय
उं	वह्निवासिनि	शुक्ल	य
ऊं	महावज्रेश्वरी		अ
ऋं	शिवदूती		ए
ॠं	त्वरिता		च
लृं	कुलसुन्दरी		त
लॄं	नित्या		य
एं	नीलपताका		अ
ऐं	विजया		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
औं	ज्वालामालिनि		त
अं	चित्रा		य
अं	चित्रा	कृष्ण	अ
औं	ज्वालामालिनि		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
ऐं	विजया		त
एं	नीलपताका		य
लॄं	नित्या		अ
लृं	कुलसुन्दरी		ए
ॠं	त्वरिता		च
ऋं	शिवदूती		त
ऊं	महावज्रेश्वरी		य
उं	वह्निवासिनि		अ
ईं	भेरुण्डा		ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च
आं	भगमालिनि		त
अं	कामेश्वरी		य
अं	कामेश्वरी	शुक्ल	अ
आं	भगमालिनि		ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च
ईं	भेरुण्डा		त
उं	वह्निवासिनि		य

	दिन नित्या	पक्ष	घटिकोदय
ऊं	महावज्रेश्वरी	शुक्ल	अ
ऋं	शिवदूती		ए
ॠं	त्वरिता		च
लृं	कुलसुन्दरी		त
लॄं	नित्या		य
एं	नीलपताका		अ
ऐं	विजया		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
औं	ज्वालामालिनि		त
अं	चित्रा		य
अं	चित्रा	कृष्ण	अ
औं	ज्वालामालिनि		ए
ओं	सर्वमङ्गला		च
ऐं	विजया		त
एं	नीलपताका		य
लॄं	नित्या		अ
लृं	कुलसुन्दरी		ए
ॠं	त्वरिता		च
ऋं	शिवदूती		त
ऊं	महावज्रेश्वरी		य
उं	वह्निवासिनि		अ
ईं	भेरुण्डा		ए
इं	नित्यक्लिन्ना		च
आं	भगमालिनि		त
अं	कामेश्वरी		य

मयूरेश प्रकाशन

छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज-किशनगढ़
जिला-अजमेर (राज.)
फोन - 01463 244198, 098291 44050

लेखक एवं प्रकाशक **पं० रमेशचन्द्र शर्मा "मिश्र"** के अन्य प्रकाशन

बिना तोड फोड के वास्तुदोष का निवारण

"भवन वास्तुशास्त्र एवं भाग्यफल"

लाल किताब के सिद्धान्तों के आधार पर वास्तु दोष का शमन

(1) जन्म कुण्डली की तरह नूतन मकान कुण्डली सिद्धान्त द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि आपकी कुण्डली के योग से आपके मकान में क्या वास्तु दोष होंगे। (2) वास्तु के समस्त नियमों की उत्पत्ति ज्योतिष सिद्धान्त से सिद्ध करने वाली पहली पुस्तक। (3) धन,जमीन, जायदाद, महल या झोपड़ी के आवास का सुख जातक अपनी जन्मकुण्डली के आधार पर भोगता है। **अतः 50 प्रतिशत भाग्य एवं 50 प्रतिशत वास्तुफल होता है।** (4) अशुभवास्तु का निवारण नहीं कर पाने की स्थिति में किये जाने वाले उपायों का भण्डार पुस्तक में है। (5) आपकी राशी व वास्तु दोष के अनुसार मकान के पर्दे, कांच का रंग व किस तरह के चित्र या खिलौने दोष का निवारण करेगें यह भी दिये गये है। (6) नींव रखने की पंचशिला व नवशिला स्थापन विधि ा विशेष रूप से दी गई है। (7) **पिरामिड़ के निर्माण से स्वास्थ्य लाभ एवं उसके उपयोग की विधियाँ। फेंगशुई सिद्धान्त द्वारा बिना तोड़-फोड़ के वास्तु दोष निवारण एवं अच्छे लाभ की जानकारियाँ इस पुस्तक में उपलब्ध है।** मूल्य २००/-

सुबोध दुर्गासप्तशती एवं याग विधानम्

(तंत्र याग दीपिका)

1. इस पुस्तक की सहायता से साधारण व्यक्ति भी शुद्ध दुर्गापाठ सीख सकता है। 2. हर एक मंत्र के हवनीय द्रव्य दिये गये है। 3. कठिन शब्दों का सरलीकरण रंग भेद व संधि विच्छेद द्वारा आसानी से सीखिये। 4. दुर्गा यंत्र, श्रीयंत्र, काली, बगलामुखी, मृत्युंजय, गायत्र्यादि के यंत्रार्चन की सरल व सम्पूर्ण क्रि यें। 5. पूजन के समस्त रंगीनमंडल देवताओं के आवाहन, स्थापन की सरल विधि। 6. पूजन, अर्चन, 9 कुण्डादि निर्माण, यज्ञ की सम्पूर्ण जानकारी एवं सरल विधि। 7. विभिन्न सूक्त व सिद्ध तांत्रिक स्त्रोतादि। 8. कई मार्मिक रहस्य व तंत्र प्रयोग जो विद्वानों के ध्यान में नहीं है। 9. ऐसी अनूठी पुस्तक जो तंत्र व यज्ञविधान की कुंजिका है, । **मूल्य २७०/-**

डाक द्वारा पुस्तक मंगवाने हेतु लिखें –

मयूरेश प्रकाशन छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज-किशनगढ़ जिला-अजमेर (राज.)

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (२) 'देवखण्ड'

'तन्त्रोक्त देव पूजा रहस्य'

देवखण्ड में गणेश, हनुमान, विष्णु, शिव, भैरव, रुद्रादि देवों के विविधप्रयोग दिये हैं मृत्युञ्जय प्रयोग विविध प्रकार के सविधि दिये गये हैं। शत्रुहंता हेतु भगवान रुद्र के उग्र अवतार भगवान शरभ शालुव पक्षिराज के विविध प्रयोगों का वर्णन है। आशुगरुड़ प्रयोग, गंधर्वराज, कार्त्तवीर्यअर्जुन, परशुरामादि के विविध प्रयोग है। वांछाकल्पलता प्रयोग एवं अन्य कई प्रयोगों का वर्णन किया गया है। **मूल्य ३००/-**

सर्वकर्म-अनुष्ठानप्रकाशः भाग (३)

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य

'देवीखण्ड पूर्वार्द्ध'

देवीखण्ड में उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय पद्धति द्वारा सभी नवरात्र के कर्म का सम्पूर्ण विधान है। भगवती दुर्गा के नवदुर्गा स्वरूपों के प्रयोगों का वर्णन। दशमहाविद्याओं में काली, तारा, षोडशी, त्रिपुरभैरवी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, बगुलामुखी, मातंगी, धूमावती, एवं कमलादि देवियों के यंत्रार्चन का सरल विधान स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम एवं विविध काम्य प्रयोगों का वर्णन साधकों के हित के लिये किया गया है। अन्य तंत्र ग्रंथों (मंत्रमहार्णव, मंत्रमहोदधि,) इत्यादि की जटिल भाषा व जटिलता को दूर कर सरलीकरण किया गया है। **मूल्य ६००/-**

तंत्रात्मक दुर्गासप्तशती

(गुप्तवती टीकानुसार)

१. दुर्गासप्तशती के ७०० मंत्र अलग-अलग ७०० बीजाक्षर मंत्रों से पुटित है। २. प्रत्येक मंत्र के ध्यान, विनियोग, न्यास आदि दिये हैं। ३. प्रत्येक विनियोग में ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक के अलावा महाविद्या, ज्ञानेनेन्द्रिय, रस, स्वाद, धातु, तत्त्व, गुण एवं उनकी मुद्रा का पूर्ण उल्लेख है। ४. प्रत्येक बीजाक्षर युक्त मंत्र के षडंगन्यास दिये गयें है। ४. प्रत्येक मंत्र की आहुति, द्रव्य का उल्लेख है। ५. कामना सिद्धि हेतु प्रत्येक मंत्र का पुरश्चरण का पर्याप्त विधान है। ६. विशिष्ट कामना सिद्धि तथा शीघ्र फल प्राप्ति हेतु यह पुस्तक श्रेष्ठ फलदायी है। ७. ध्यान मंत्रों की पुनरावृत्ति कम से कम हो इस बात का ध्यान रखा गया है। ८. **गुप्तवती टीका** में मंत्रार्थ उसी श्लोक से संबंध रखता है, प्रचलित कात्यायनी टीका में कई स्थान पर, एक मंत्र की पंक्ति का अर्थ दूसरे श्लोक की पंक्ती में पूर्ण होता है। अतः न्यास ध्यान एवं पाठ क्रम में श्लोक क्रम संख्या में पाठान्तर भेद बहुधा बनता है। **मूल्य ३४०/-**

भिन्नपाद दुर्गासप्तशती

मंत्र की शीघ्र सिद्धि हेतु कामना बीज मंत्रों से या व्याहृतियों से भिन्नपाद करके मंत्र जपने का विधान तांत्रिकों में बहुत समय से प्रचलित है। एक मंत्र के साथ कामना मंत्र का संयोग पाद (चरण)भेद के द्वारा करने का मंत्र विधान भी प्रचलित है। दुर्गासप्तशती के भिन्नपाद मंत्रों की यह सर्वप्रथम कृति है जिसका पहले प्रयास नहीं किया गया है। साथ में गायत्री, शिव, दुर्गा, जातवेददुर्गा, मृत्युञ्जय, शरभ, भैरव एवं अन्य देवताओं के भिन्नपाद मंत्र प्रयोग दिये गये हैं।

मूल्य २००/-

श्रीदुर्गासप्तसती सर्वस्वम्

१. सहस्राधिक श्लोकी दुर्गासप्तसती – मेरूतन्त्र के अनुसारप्रथम चरित्र की सप्त शक्तियाँ है। मध्यम चरित्र की सात प्रकट व सात अप्रकट शक्तियाँ है तथा उत्तर चरित्र की भी सात शक्तियाँ है। ये सभी सात शक्तियाँ सप्त सतियों के नाम से जानी जाती है। अत: सप्तसती नाम से चरित प्रख्यात है।

जो आख्यान मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत प्रचलित सप्तशती में हैं उनमें देवी चरित प्रसंगों का पूर्ण वर्णन नहीं है, कुछ प्रसंगों का संक्षिप्त वर्णन है।

इस पुस्तक में तन्त्र ग्रन्थों व देवीभागवत, पुराणादि ग्रन्थों से आख्यान प्रत्येक चरित में समाहित किये गये हैं। जिससे देवी चरित की पूर्ण परिपुष्टि होती है। अत: अनुमानित श्लोक संख्या एक सहस्र है, इनमें उवाच की संख्या सम्मिलित नहीं है।

२. प्रचलित दुर्गा सप्तशती – मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत आधारित श्लोक संख्या सात सौ होने से सप्तशती चरित दिया गया है।

३. विलोम दुर्गा सप्तशती – प्रचलित सप्तशती का सश्लोक विलोम पाठ।

४. उत्कीलित दुर्गा सप्तशती – अध्याय क्रम पर आधारित उत्कीलित दुर्गा सप्तशती।

५. प्रतिलोम दुर्गा सप्तशती – प्रति अध्याय, प्रति श्लोक के लोम-विलोम क्रम से उत्कीलित दुर्गा सप्तशती।

मूल्य ३२०/-

साधक का सत्य

☆ पुस्तक में लेखक की 40 वर्ष की साधना के नीजि अनुभव व दिव्य योग विधियाँ दी गई है ☆ गुरु परंपरा, गुरु की महत्ती कृपा कैसे प्राप्त करें ☆ दीक्षा, शक्तिपात की शक्ति व प्रभाव ☆ कुण्डलिनी जागरण के लक्षण ☆ कुण्डलिनी जागरण की विधियाँ ☆ षट्चक्रों का वर्णन। मन्त्र साधना द्वारा घट्चक्र भेदने की विधियाँ ☆ मन्त्र साधना द्वारा ध्यान, धारणा, समाधि, नादसाधना ☆ ध्यान लगाते समय होने वाली समस्याओं का आनुभविक निराकरण ☆ साधना के मार्ग की दिव्य अनुभूतियों का आनुभविक वर्णन। ☆ त्रिनाड़ी शक्ति का वर्णन, ☆ पञ्चकोषमय शरीर का वर्णन

मूल्य १५०/-

श्रीबगलामुखी चालीसा

अद्वितीय बगलामुखी चालिसा, बगलामुखी सप्तक, आरती व भजन, बगलामुखी कवच, बगलामुखी शतनाम स्तोत्र भी पुस्तक में दिये गये हैं।

मूल्य ७/-

वैदिक पूजन के मन्त्र (दण्डक)

दैनिक पूजन के वैदिक मन्त्रों की कुञ्जिका जिससे कर्मकाण्डी विद्वान सभी कार्य सुगमता से करा सकते हैं।

मूल्य - २५/-

डाक द्वारा पुस्तक मंगवाने हेतु लिखें –

मयूरेश प्रकाशन छावड़ा कॉलोनी, मदनगंज-किशनगढ़ जिला-अजमेर (राज.)
फोन - 01463 244198, 098291 44050, 09214512223

हमारे प्रकाशन
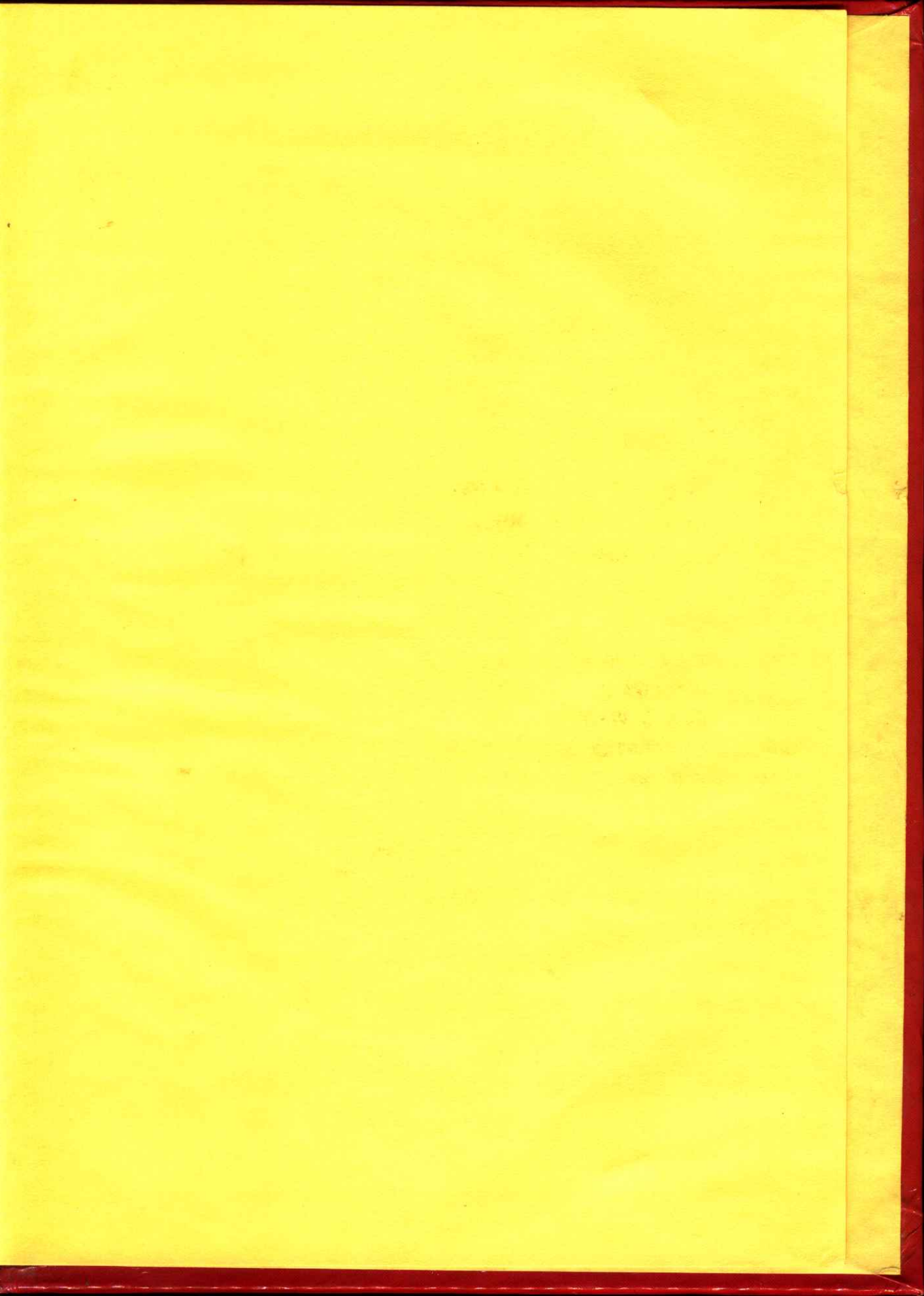
लेखक : पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)

विशेषज्ञ :

ज्योतिष, तंत्रशास्त्र, वास्तुशास्त्र एवं कर्मकाण्ड (डिप्लो. मैकेनिकल इंजि.)

1	सुबोध दुर्गा सप्तशती एवं याग विधानम्	250
2	सचित्र सस्वर रूद्राष्टाध्यायी	100
3	भवन वास्तुशास्त्र एवं भाग्यफल	200
4	सांगोपांग वैवाहिक पद्धति	70
5	नवग्रह एवं नक्षत्र शान्ति	100
6	सर्वकर्म अनु0 भाग 1 पूजा प्रतिष्ठा	250
7	सर्वकर्म अनु0 भाग 2 देवखण्ड	260
8	सर्वकर्म अनु0 भाग 3 देवीखण्ड पूर्वार्द्ध	550
9	सर्वकर्म अनु0 भाग 4 देवीखण्ड उत्तरार्द्ध	450
10	सर्वकर्म अनु0 भाग 5 तंत्रसिद्धि रहस्य	320
11	सर्वकर्म अनु0 भाग 6 सिद्ध विद्या रहस्य	400
12	तंत्रात्मक दुर्गा सप्तशती	320
13	भिन्नपाद दुर्गा सप्तशती	180
14	दुर्गा सप्तशती सर्वस्वम्	300
15	ब्रह्मकर्म सपर्या	300
16	कालसर्प एवं शाप दोष शान्ति	220
17	दैनिक पूजन के वैदिक मंत्र दण्डक	25
18	साधक का सत्य	150
19	बगलामुखी चालीसा	10

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (1)

पूजा-प्रतिष्ठा

सभी देवताओ की प्रतिष्ठा, सम्पूर्ण पूजा विधान तथा हवन कुण्ड निर्माण का विधान।

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (2)

तन्त्रोक्त देव पूजा रहस्य

सभी देवताओ के तन्त्रोक्त कामना सिद्धि प्रयोग।

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (3) देवीखण्ड पूर्वार्द्ध-

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य

गायत्री पुरश्चरण प्रयोग। नवदुर्गा के उत्तर भारत, दक्षिण भारत के चारों नवरात्र विधान। दशमहाविद्याओं के विशेष प्रयोग जो एक साथ अन्य किसी पुस्तक में संकलित नहीं हैं।

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (4) देवी खण्ड उत्तरार्द्ध-

उपमहाविद्या रहस्य (दो भागों में)

नवदुर्गा, ब्राह्मी आदि अष्टमातृका आवरणपूजा, कौशिकी आदि देवीयों के प्रयोग एवं श्रीविद्या की नित्याओं के प्रयोग व अन्य महाविद्याओं की मातृकाओं का पूजन विधान एवं अन्य विद्याओं के प्रयोग सहित गायत्री ब्रह्मदण्ड, ब्रह्मास्त्र आदि विधान पद्मावती उपासना पंचागुली देवी प्रयोग अन्य कई सिद्ध प्रयोग दिये गये है।

तन्त्रात्मक दुर्गासप्तशती

दुर्गा सप्तशती के 700 श्लोकों के न्यास, ध्यान, विनियोग सहित विधान।

भिन्नपाद दुर्गासप्तशती

नवार्ण मंत्र एवं त्रिपुरसुंदरी मंत्र से चरण भेद पुटित दुर्गा पाठ प्रयोग तथा अन्य कई देवताओं के भिन्नपाद प्रयोग।

ब्रह्मकर्म सपर्या

यह पुस्तक कर्मकाण्डी ब्राह्मणों हेतु सरल वैदिक विधि से संकलित है। रुद्राभिषेक प्रयोग, यज्ञोपवीत, विवाह, गृह प्रवेश, ग्रहशांति आदि कई विधान दिये गये हैं।

कालसर्प एवं शाप दोष शांति

राहु केतु जनित उपद्रव शांति, पूर्वजन्मोक्त, प्रेत, पितर, पिशाच शाप विमुक्ति प्रयोग दिये गये हैं।